हमारी नई किताब

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक —सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जाएगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इन्सान-इन्सान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

आज हम योरप और अमरीका के लोगों को एक तरफ़ अपने को ईसा का पैरो कहते और दूसरी तरफ़ कमज़ोर कौमों को गुलाम बनाने के लिये एटम बम और हाइडरोजन बम की रचना करते देख सोचने लगते हैं कि क्या ईसाई धर्म में यह सब ज़ुल्म और नाइन्साफ़ी जायज़ है? लेकिन इस किताब को पढ़ कर इस तरह के सारे भ्रम दूर हो जाएंगे और इंजील की पवित्र तालीम अपने सही रूप में पूरे तौर पर आपके सामने आ जाएगी.

यह किताब कुमारप्पा जी ने सन 1944 में जबलपुर जेल में लिखी थी. इसके बारे में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की राय है—

> "मैं अपने अनुभव के बल पर कह सकता हूँ कि प्रोफ़ेसर कुमारप्पा ने इन सफ़ों में गास्पेल (इंजील) का जो मतलब लगाया है वह सच्चा और सही है..."

महात्मा जी ने यह भी कहा था कि—

> "हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े ..."

अंगरेज़ी में इस किताब के कई एडीशन निकल चुके हैं. अब यह इसका सरल और बामहावरा हिन्दुस्तानी अनुवाद निकल रहा है. किताब के आख़ीर में 'ईसा के जीवन के कुछ क़िस्से' देकर अनुवादक ने इसकी शोभा और भी बढ़ा दी है.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब डेढ़ सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ डेढ़ रुपया.

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द', 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ہماری نئی کتاب

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے. سی. کماریپا.

انوادک—سریش رام بھائی.

اس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری، بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے.

آج ہم یورپ اور امریکہ کے لوگوں کو ایک طرف اپنے کو عیسیٰ کا پیرو کہتے اور دوسری طرف کمزور قوموں کو غلام بنانے کے لئے ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم کی رچنا کرتے دیکھ سوچنے لگتے ہیں کہ کیا عیسائی دھرم میں یہ سب ظلم اور ناانصافی جائز ہے؟ لیکن اس کتاب کو پڑھکر اس طرح کے سارے بھرم دور ہوجائیں گے اور انجیل کی پوتر تعلیم اپنے صحیح روپ میں پورے طور پر آپ کے سامنے آجائیگی.

یہ کتاب کماریپا جی نے سن 1944 میں جبلپور جیل میں لکھی تھی. اسکے بارے میں راشٹر پتا مہاتما گاندھی کی رائے ہے—

> "میں اپنے انوبھو کے بل پر کہہ سکتا ہوں کہ پروفیسر کماریپا نے ان صفحوں میں گاسپل (انجیل) کا جو مطلب لگایا ہے وہ سچا اور صحیح ہے........"

مہاتما جی نے یہ بھی کہا تھا کہ—

> "ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اسے پڑھے......"

انگریزی میں اس کتاب کے کئی ایڈیشن نکل چکے ہیں. اب یہ اس کا سرل اور بامحاورہ ہندستانی انوواد نکل رہا ہے. کتاب کے آخر میں 'عیسیٰ کے جیون کے کچھ قصے' دیکر انوادک نے اسکی شوبھا اور بھی بڑھا دی ہے.

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب ڈیڑھ سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ڈیڑھ روپیہ.

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج، الہ آباد.

Printed and Published by Purushottam Prasad, at the Naya Hind Press 145, Muthiganj, Allahabad.

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें, गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग १५ ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब ५०० आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरह दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर मज़हबी, अख़लाक़ी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक बर्नन. इस छोटीसी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करने [illegible] की सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

[illegible] पता—

[illegible] 1 [illegible], इलाहाबाद.

لیکھک پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اس کتاب میں ھندو دھرم اور اسلام دونوں کے میل کی باتیں، گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ ۱۵ خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب ۵۰۰ آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ھے۔

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاھیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ھے۔

پونے تین سو صفحے کی سُندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ۔

ھندو مسلم ایکتا

اس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ھیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے۔

سو صفحے کی کتاب۔ قیمت صرف بارہ آنے۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر مذھبی، اخلاقی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ھمارے بیچ میں نہ رھنے دیا۔

قیمت بارہ آنے۔

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وھاں کی بھیانک بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن۔ اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ھیں۔ قیمت چار آنے۔

بنگال اور اُس سے سبق

اس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ھے اور ایسے جھگڑوں کو ھمیشہ کے لئے ختم کرنے کی [illegible] سجھائی گئی ھے۔ قیمت صرف دو آنے۔

[illegible]

[illegible]

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृष्ण दास

इस पुस्तक में सन 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिकता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिंदुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रिया मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया.

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सच्चाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है. अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आप के दिल गहराइयों को छुयेगी.

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द. बढ़िया काग़ज़. उम्दा छपाई. दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द', 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا ۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصانوں کو سمجھے اور اس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے ۔

سندر جلد ۔ اچھا کاغذ ۔ دو سو صفحے ۔ قیمت دو روپیہ ۔

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اس کتاب میں آپ کو ملے گی ۔ راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریہ مٹیں گی ۔

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے ۔ آج کی اردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے ۔ اب آپ کو اردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی ۔ غلامی' انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل گہرائیوں کو چھوئیگی ۔

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا ۔ سندر جلد ۔ بڑھیا کاغذ ۔ عمدہ چھپائی ۔ دام صرف تین روپیہ ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج' الہ آباد ۔

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायगी. पूरी जानकारी के लिये लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

'भारत में अंग्रेजी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़ लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिये अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधीजी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख़्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

आज के शहीद

लेखक—श्री रतन लाल बंसल.

उन बहादुरों की कहानियाँ जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छिन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देशभक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की जंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعایت دی جائیگی. پوری جانکاری کے لئے لکھئے.

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا.

بھارت کا ودھان

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انووادت.

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھے بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے.

آسان بامحاورہ بھاشا. رایل اٹھ پیجی بڑا سائز. لگ بھگ چار سو پنّے. کپڑے کی سندر جلد. قیمت کیول ساڑھے سات روپئے.

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام اُنکی آخری وصیت ہے اور اِسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں.

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے. 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے.

آج کے شہید

لیکھک — شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ.

مسلم دیش بھکت

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے.

[illegible]

मगर यह एक तरह की हविस है जिसकी रोक-थाम करनी है. और इस तरह रोक-थाम करनी है कि जियादती करने वाला साँप भी मर जाए और अपनी लाठी भी न टूटे. चीन को जान बूझ कर ग़ैर केन्द्रीकरन और ट्रस्टीशिप और ग़ैर हथियार बन्दी के तरीक़ों को अपनाना होगा. इसके बाद ही ईमानदारी, सादगी और सेवा के उसके व्रत पूरी तरह खिल सकेंगे और तभी अपनी कस्तूरी से वह दुनिया को पूरी तरह मोहित कर सकेगा.

हमें साफ़ मालूम पड़ता है कि चीनी कम्यूनिज़्म—अगर उसे कम्यूनिज़्म कहा जाए—रूसी कम्यूनिज़्म के मुक़ाबले इन्सानियत और दियानतदारी में कहीं ज़ियादा तर है, इतना तर है कि दोनों में पहचान नहीं की जा सकती. और आने वाले ज़माने में सारे मुल्क—चाहे वह कम्यूनिस्ट होने का ही सपना क्यों न देखते हों—रूस की तरफ़ उतना न देखेंगे जितना चीन की तरफ़. दूसरे लफ़्ज़ों में जिस तरह ब्रिटेन की डेमोक्रेसी (लोकराज) हिटलर या मुसोलिनी की नाज़ी शाही से आला और ऊंची चीज़ है, उसी तरह चीन की नई डेमोक्रेसी (नया लोकराज) रूस की सोशलिस्ट रिपबलिक (समाजी प्रजा तन्त्र) से आला और ऊंची चीज़ है.

सौ बातों की एक बात यह है कि इनसानी समाज लगातार आगे बढ़ रहा है. इटली या जर्मनी के नाज़ी वाद के आगे ब्रिटेन या अमरीका का प्रजा तन्त्र, इस प्रजा तंत्र के आगे रूस का प्रजा तंत्र, और इसके भी आगे नए चीन का लोकराज. लेकिन अभी आगे मंज़िल बहुत बाक़ी है—सर्वोदय इनसानी समाज का मक़सद है और सत्याग्रह उस तक पहुँचने का असली और अकेला रास्ता है.

—सुरेश रामभाई

مگر یہ ایک طرح کی ہوس ہے جسکی روک تھام کرنی ہے ۔ اور اِس طرح روک تھام کرنی ہے کہ زیادتی کرنے والا سانپ بھی مر جائے اور اپنی لاٹھی بھی نہ ٹوٹے ۔ چین کو جان بوجھ کر غیر کیندری کرن اور ٹرسٹی شپ اور غیر ہتھیار بندی کے طریقوں کو اپنانا ہوگا ۔ اِسکے بعد ہی ایمانداری، سادگی اور سیوا کے اُسکے ورت پوری طرح کھل سکینگے اور تبھی اپنی کستوری سے وہ دنیا کو پوری طرح موہت کرسکیگا ۔

ہمیں صاف معلوم پڑتا ہے کہ چینی کمیونزم—اگر اسے کمیونزم کہا جائے—روسی کمیونزم کے مقابلے انسانیت اور دیانتداری میں کہیں زیادہ تر ہے، اتنا تر ہے کہ دونوں میں پہچان نہیں کی جاسکتی اور آنے والے زمانے میں سارے ملک—چاہے وہ کمیونسٹ ہونے کا ہی سپنا کیوں نہ دیکھتے ہوں—روس کی طرف اتنا نہ دیکھینگے جتنا چین کی طرف ۔ دوسرے لفظوں میں جس طرح برٹین کی ڈیموکریسی (لوک راج) ہٹلر یا مسولنی کی نازی شاہی سے اعلیٰ اور اونچی چیز ہے، اسی طرح چین کی نئی ڈیموکریسی (نیالوک راج) روس کی سوشلسٹ ریپبلک (سماجی پرجا تنتر) سے اعلیٰ اور اونچی چیز ہے ۔

سو باتوں کی ایک بات یہ ہے کہ انسانی سماج لگاتار آگے بڑھ رہا ہے ۔ اِٹلی یا جرمنی کے نازی واد کے آگے برٹین یا امریکہ کا پرجا تنتر، اِس پرجا تنتر کے آگے روس کا پرجا تنتر، اور اِسکے بھی آگے نئے چین کا لوک راج ۔ لیکن ابھی آگے منزل بہت باقی ہے—سرودے انسانی سماج کا مقصد ہے اور ستیاگرہ اُس تک پہونچنے کا اصلی اور اکیلا راستہ ہے ۔

سریش رامبھائی

जिस की रोशनी से साफ पता चलता है कि हमारे —आज़ादी के चार बरस बाद भी हमारी इतनी ई हालत है—ऐसे नहीं जो हल न किये जा सकते । चीन ललकार कर कहता है कि हमारे देश में जो , तड़क-भड़क, चटक-मटक, पच्छिमी "पेक्सपर्टों" तिर रुपया बहाने और उनके बनाए ख़याली पुलाव का सिलसिला चल रहा है यह झूठा है और मर्ज़ ढ़ाने वाला है. जिसे हमारी हकूमत ने "शान" या नेटी" समझ रखा है वह मुल्क को बरबाद करने ता है. अगर हुकूमत उस पर और चली तो मुल्क जाएगा, चंद देशी और परदेशी पूंजी पतियों के हमको ऐसे ही डाक्टरों से अपना इलाज कराना जो हमारे जैसे रोगों के शिकार हो चुके हैं और हमसे सच्ची हमदर्दी है. यह कोई ऐसी पेचीदा हीं है जिसके हल करने के लिये कम्यूनिज़्म से री की दरकार हो. दीवार पर साफ़ लिखा है—जो ढ़ेगा उसे बाद में पछताना होगा.

इसके बाद अदब के साथ अपने चीनी भाई बहनों से एक बात कहना चाहते हैं. हमें इतमिनान है कि वह चीज़ को पकड़ते हैं पूरे दिल से और पूरी ताक़त से हैं. इसी वजह से हम कुछ अरज़ करने की हिम्मत हैं. नए चीन के कारनामों से साफ़ ज़ाहिर है कि वह नहीं चाहता, मेल मुहब्बत से रहना चाहता है और दर्जे को ही हाथ उठाता है. हम मानते हैं कि ती का हथियार से मुक़ाबला करना मुक़ाबला न करने तर और शानदार चीज़ है. मगर इससे भी पक्की बात यह है कि हथियार के मुक़ाबले से तर और शानदार होता है—बिना हथियार के ला करना, जिसका नाम है सत्याग्रह. यह हथियार जिस्मानी, दिमाग़ी, माली, फ़ौजी वग़ैरा ताक़तों के होते हैं. लेकिन सत्याग्रह हमारी अन्दर की यानी आत्मा की ताक़त का निशान है. सत्याग्रह का भले कुछ देर में असर दिखाए मगर वह असर रों के मुक़ाबले कहीं ज़ियादा साबित और टिकाऊ . सच तो यह है कि हथियारों का जवाब हथियारों देने से मसला हल नहीं होता है, जो उसका हल है वह सिर्फ़ आरज़ी होता है और सवाल को लिये टाल देता है.

हमें यह शक इस वजह से हुआ कि चीन जहां छोटे उद्योग धंदे कारख़ाने संभाल रहा है वहाँ वह कारख़ानों और बड़े पैमानों पर माल तैयार करने के में भी रहता है. ऐसा होना कुछ तो क़ुदरती है कोई दूसरा चारा उसे अपने सामने नहीं दीखता.

سا ہے جسکی روشنی میں صاف پتہ چلتا کہ ہمارے دکھڑے—آزادی کے چار برس بعد بھی ں اتنی بری ہوئی حالت ہے—ایسے نہیں جو حل کئے جاسکتے ہیں ۔ نیا چین للکار کہتا ہے کہ ہمارے ں میں جو نظام، ٹیپ ٹاپ، چٹک مٹک، پچھمی یکس پرٹوں" کی خاطر روپیہ بہانے اور ان کے بنائے الی پلاؤ پکانے کا سلسلہ چل رہا ہے وہ جھوٹا ہے اور ں کو بڑھانے والا ہے ۔ جسے ہماری حکومت نے "شان" تکلفی" سمجھ رکھا ہے، وہ ملک کو برباد کرنے کا راستہ ۔ اگر حکومت اُس پر اور چلی تو ملک بک جائیگا، ندیسی اور ودیشی پونجی پتیوں کے ہاتھ ۔ ہمکو سے ہی ڈاکٹروں سے اپنا علاج کرانا چاہئے تو ہمارے سے روگوں کے شکار ہو چکے ہیں اور جنہیں ہم سے سچی دردی ہے ۔ یہ کوئی ایسی پیچیدہ چیز نہیں ہے جسکے ں کرنے کے لئے کمیونزم سے جانکاری کی درکار ہو. دیوار پر ف لکھا ہے—جو نہیں پڑھیگا اُسے بعد میں پچھتانا ہوگا.

اِس کے بعد ادب کے ساتھ اپنے چینی بھائی بہنوں سے بھی ہم ایک بات کہنا چاہتے ہیں ۔ ہمیں اطمینان ہے کہ وہ جس چیز کو پکڑتے ہیں پورے دل سے اور پوری طاقت سے پکڑتے ہیں. اسی وجہ سے ہم کچھ عرض کرنے کی ہمت کررہے ہیں ۔ نئے چین کے کارناموں سے صاف ظاہر ہے کہ وہ لڑائی نہیں چاہتا، میل محبت سے رہنا چاہتا ہے اور مجبوری درجے کو ہی ہاتھ اُٹھاتا ہے ۔ ہم مانتے ہیں کہ زیادتی کا ہتھیار سے مقابلہ کرنا مقابلہ نہ کرنے سے بہتر اور شاندار چیز ہے ۔ مگر اس سے بھی زیادہ پکی بات یہ ہے کہ ہتھیار کے مقابلے سے بھی بہتر اور شاندار ہوتا ہے— بلا ہتھیار کے مقابلہ کرنا، جسکا نام ہے ستیاگرہ ۔ یہ ہتھیار ہماری جسمانی، دماغی، مالی، فوجی وغیرہ طاقتوں کے نشان ہوتے ہیں، لیکن ستیاگرہ ہماری اندر کی یعنی ہماری آتما کی طاقت کا نشان ہے ۔ ستیاگرہ کا طریقہ بھلے کچھ دیر میں اثر دکھائے مگر وہ اثر ہتھیاروں کے مقابلے کہیں زیادہ ثابت اور ٹکاؤ ہوتا ہے ۔ سچ تو یہ ہے کہ ہتھیاروں کے جواب ہتھیاروں سے ہی دینے سے مسئلہ حل نہیں ہوتا ہے، جو اُس کا حل دیکھتا ہے وہ صرف عارضی ہوتا ہے اور سوال کو آگے کے لئے ٹال دیتا ہے ۔

ہمیں یہ شک اِس وجہ سے ہوا کہ چین جہاں چھوٹے چھوٹے اُدیوگ دھندے کارخانے سنبھال رہا ہے وہاں وہ جناتی کارخانوں اور بڑے پیمانوں پر مال تیار کرنے کے دُھن میں بھی رہتا ہے ۔ ایسا ہونا کچھ تو قدرتی ہے کیونکہ کوئی دوسرا چارا اسے اپنے سامنے نہیں دیکھتا ۔

फ़ायदा उठाया है. उनकी ज़िन्दगी इस बात का बेहतरीन नमूना है कि दूसरों की बातें किस तरह जज़्ब कर के एकदम अपनी बना ली जायें. इसके अलावा माओ ने हर किसी की तालीम से फ़ायदा उठाया है. वह उस पादरी की तरह नहीं हैं जिसके लिये पाल और पीटर की करनी आख़री करनी है, उस कठमुल्ला की तरह नहीं हैं जिसके लिये क़ुरान आख़री किताब है, उस आर्य समाजी की तरह नहीं हैं जिसके लिये वेद ही हर चीज़ का आख़री प्रमान है, उस हिन्दुस्तानी कम्यूनिस्ट की तरह नहीं हैं जिसके लिये मास्को में आख़िरी ज़ियारत-गाह है. माओ दिल के वसी, दिमाग़ के बुलन्द और छाती के चौड़े मालूम होते हैं. वह अपने असली दोस्त और असली दुशमन को पहचानते हैं और उनका कहना है कि इन्क़लाब की कामयाबी या ना-कामयाबी इस बात पर मुनहसिर है कि हम अपने दोस्त और दुशमन में तमीज़ कर सकें ताकि "हम अपने सगे दोस्तों के साथ मिल कर सगे दुशमनों का मुक़ाबला कर सकें." माओ का उसूल है—"मेल में झगड़ा और झगड़े में मेल." यानी हर किसी से मेल, मगर झगड़ा मजबूरी की हालत में जब कोई बुनियादी तौर पर अपने ख़िलाफ़ हो और जब मेल करने में अपने उसूल को ही चोट पहुंचती हो. यही वजह है कि चीन में निजी जायदाद है, निजी दौलत है, निजी कारख़ाने हैं. सब अपनी मेहनत करते और कमाते-खाते, न लेना एक न देना दो. यही वजह है कि वेश्यापन, भिकमंगी और बेरोज़गारी का वहां नाम निशान भी मुश्किल से मिलता है.

नया चीन जीता जागता सबूत है कि दबे पिसे मुल्क किस तरह सीना खोल कर खड़े हो सकते हैं. दो बरस के अपने कारनामों से नया चीन मानो चुनौती देता है—

अमरीका को या लड़ाई की शौक़ीन पच्छिम की दूसरी क़ौमों को—कि अपना हाथ रोक लें, ज़रा होश में आएं, दूसरों के ऊपर अन्दरूनी राज क़ायम करने के ख़याल से मदद करने या दूसरों को आपस में लड़ा कर बेवक़ूफ़ बनाने का जाल वह जहां चाहें बिछाएं, एशिया और ख़ासकर पूरबी एशिया में नहीं बिछा सकते.

एशिया के आज़ाद मुल्कों को—जैसे तुरकी, अरब, ईरान, पाकिस्तान, लंका और हिन्दुस्तान को—कि ज़रा डट कर खड़े हों, दूसरों का सहारा तकना या दूसरों से मांग मांग कर खाने से काम नहीं चलने वाला है. संभलें और अपनी बागडोर सच्ची तरह से अपने हाथ में लेकर अपना वर्तमान और भविश्य ख़ुद ही बनाएं.

हिन्दुस्तान के लिये तो मानो चीन एक सगे बड़े भाई की तरह बहुत कुछ रहबरी कर रहा है. उससे हम काफ़ी बातें सीख कर फ़ायदा उठा सकते हैं. नया चीन एक मशाल

فائدہ اٹھایا ہے. انکی زندگی اس بات کا بہترین نمونہ ہے کہ دوسروں کی باتیں کس طرح جذب کرکے ایکدم اپنی بنا لی جائیں. اسکے علاوہ ماؤ نے ہر کسی کی تعلیم سے فائدہ اٹھایا ہے. وہ اس پادری کی طرح نہیں ہیں جسکے لئے پال اور پیٹر کی کرنی آخری کرنی ہے، اس کٹھ ملا کی طرح نہیں ہیں جس کے لئے قرآن آخری کتاب ہے، اس آریہ سماجی کی طرح نہیں ہیں جسکے لئے وید ہی ہر چیز کا آخری پرمان ہے، اس ہندستانی کمیونسٹ کی طرح نہیں ہیں جسکے لئے ماسکو میں آخری زیارت گاہ ہے. ماؤ دل کے وسیع، دماغ کے بلند اور چھاتی کے چوڑے معلوم ہوتے ہیں. وہ اپنے اصلی دوست اور اصلی دشمن کو پہچانتے ہیں اور ان کا کہنا ہے کہ انقلاب کی کامیابی یا ناکامیابی اس بات پر منحصر ہے کہ ہم اپنے دوست اور دشمن میں تمیز کر سکیں تاکہ "ہم اپنے سگے دوستوں کے ساتھ مل کر سگے دشمنوں کا مقابلہ کر سکیں." ماؤ کا اصول ہے—"میل میں جھگڑا اور جھگڑے میں میل" یعنی ہر کسی سے میل مگر جھگڑا مجبوری کی حالت میں، جب کوئی بنیادی طور پر اپنے خلاف ہو اور جب میل کرنے میں اپنے اپنے اصول کو ہی چوٹ پہنچتی ہو. یہی وجہ ہے کہ چین میں نجی جائداد ہے، نجی دولت ہے، نجی کارخانے ہیں. سب اپنی محنت کرتے اور کماتے کھاتے، نہ لینا ایک نہ دینا دو. یہی وجہ ہے کہ ویشیاپن، بھکمنگی اور بے روزگاری کا وہاں نام نشان بھی مشکل سے ملتا ہے.

نیا چین جیتا جاگتا ثبوت ہے کہ دبے پسے ملک کس طرح سینا کھول کر کھڑے ہو سکتے ہیں. دو برس کے اپنے کارناموں سے نیا چین مانو چنوتی دیتا ہے—

امریکہ کو یا لڑائی کی شوقین پچھم کی دوسری قوموں کو—کہ اپنا ہاتھ روک لیں، ذرا ہوش میں آئیں، دوسروں کے اوپر اندرونی راج قائم کرنے کے خیال سے مدد کرنے یا دوسروں کو آپس میں لڑا کر بیوقوف بنانے کا جال وہ جہاں چاہیں بچھائیں، ایشیا اور خاص کر پوربی ایشیا میں نہیں بچھا سکتے.

ایشیا کے آزاد ملکوں کو—جیسے ترکی، عرب، ایران، پاکستان، لنکا اور ہندستان کو—کہ ذرا ڈٹ کر کھڑے ہوں، دوسروں کا سہارا تکنا یا دوسروں سے مانگ مانگ کر کھانے سے کام نہیں چلنے والا ہے، سنبھلیں اور اپنی باگ ڈور سچی طرح سے اپنے ہاتھ میں لے کر اپنا ورتمان اور بھوشیہ خود ہی بنائیں.

ہندستان کے لئے مانو چین ایک سگے بڑے بھائی کی طرح بہت کچھ رہبری کر رہا ہے. اس سے ہم کافی باتیں سیکھ کر فائدہ اٹھا سکتے ہیں. نیا چین ایک مشعل

इन्क़लाब का सब में आला और रौशन काम है नए चीन का अनाज के मामले में स्वावलम्बी बन जाना और इस नए चीन का झंडा खड़ा करने वाले सब से अव्वल अलमबरदार चेयरमैन माओ-त्से-तुँग हैं.

माओ ने अपनी सारी इमारत तीन खम्बों के बल पर खड़ी की है—एक ईमानदारी, दो-सादगी, तीन-सेवा. चीनी इन्क़लाब की बुनियाद में यही तीन ईंटें हैं—ई-सा-से. वाह! क्या खूब बैठा है—ईसा से या साईं से. यही वह सबक़ है जो दुनिया ने ईसा से सीखा, यही वह सबक़ जो मुहम्मद से सीखा, यही वह जो वेद-गीता से सीखा, यही वह जो बुद्ध से सीखा, यही वह जो कन्फ़ूशियस से सीखा, यही वह जो लाओ-त्से से सीखा—यही उस सबका निचोड़ है जो दुनिया में किसी ने अब तक जो कुछ सिखाया है. ज़रूरत है सिर्फ़ इस सबक़ को अमली जामा पहनाने की, तारीफ़ है इस सबक़ को अमली जामा पहना देने की. यह जामा पहना देने का का काम कौन कर सकता था ? दुनिया की सिर्फ़ दो क़ौमें कर सकती थीं—चीन या हिन्दुस्तान. हिन्दुस्तान अपनी दूसरी मुसीबतों के शिकंजे में था, तैयारी कर रहा था. मगर आज़ादी के बाद ध्यान कुछ बहक गया और इसलिये वह पिछड़ गया. हमारे बड़े भाई, चीन ने ज़ियादा साबित क़दमी के साथ क़दम बढ़ाया और वह कामयाब हो गया. कोई बात नहीं, बड़ा भाई आज कामयाब हुआ तो छोटा कल हो ही जायगा. लेकिन यह तय है कि बड़े के तजुरबे से फ़ायदा उठा कर छोटा कहीं आगे क़दम रखेगा.

आज चीन ईमान, सादगी और सेवा का मानो पुतला बना हुआ है. चेयरमैन माओ चीनी ख़ज़ाने से छै सौ रुपए के क़रीब तनख़्वा लेते हैं. इससे कम तनख़्वा शायद ही दुनिया के किसी देश का राजा या राष्ट्र पति या बड़ा वज़ीर लेता हो. यह क़रीब क़रीब वही आदर्श है जो हमारे बापू ने हमें बताया था और जिसकी बिना पर 1931 में राष्ट्र ने करांची में एक ज़बरदस्त ठहराव पास भी किया था. हम अपने ठहराव से हटे यानी हिन्दुस्तान के हाकिम हिन्दुस्तान की जनता से हटे और दोनों के बीच में एक चौड़ी खाई बन गई जिसको हमारे बड़े वज़ीर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अपनी चार साला रिपोर्ट में क़बूल भी किया है.

उसी हद तक चीन में यह खाई जो दो बरस पहले खूब तरक़्क़ी पर थी, अब पट गई, सरकार और प्रजा एक दूसरे से चिपट गए और फिर जो न हो जाए थोड़ा है.

कोई कहेगा कि यह सब करिश्मा 'कम्यूनिज़्म' का है. हमारी राय में चीन के साथ कम्यूनिज़्म का जोड़ना चीन के साथ नाइन्साफ़ी करना है. लेकिन हां, माओ-त्से-तुँग कम्यूनिस्ट हैं. मार्क्स और लेनिन की तालीम से उन्होंने

انقلاب کا سب میں اعلیٰ اور روشن کام ہے نئے چین کا اناج کے معاملے میں سواولمبی بن جانا اور اس نئے چین کا جھنڈا کھڑا کرنے والے سب سے اوّل علمبردار چیرمین ماؤتسے تنگ ہیں۔

ماؤ نے اپنی ساری عمارت تین کھمبوں کے بل پر کھڑی کی ہے— ایک—ایمانداری، دو—سادگی، تین—سیوا— چینی انقلاب کی بنیاد میں یہی تین اینٹیں ہیں—ای۔ سا۔ سے۔ واہ! وہ کیا خوب بیٹھا ہے— عیسیٰ سے یا سائیں سے۔ یہی وہ سبق ہے جو دنیا نے عیسیٰ سے سیکھا، یہی وہ سبق جو محمد سے سیکھا، یہی وہ جو وید گیتا سے سیکھا، یہی وہ جو بدھ سے سیکھا، یہی وہ جو کنفیوشس سے سیکھا، یہی وہ جو لاؤتسے سے سیکھا—یہی اُس سب کا نچوڑ ہے جو دنیا میں کسی نے اب تک جو کچھ سکھایا ہے۔ ضرورت ہے صرف اس سبق کو عملی جامہ پہنانے کی، تعریف ہے اِس سبق کو عملی جامہ پہنا دینے کی۔ یہ جامہ پہنا دینے کا کام کون کر سکتا تھا؟ دنیا کی صرف دو قومیں کر سکتی تھیں— چین یا ہندستان۔ ہندستان اپنی دوسری مصیبتوں کے شکنجے میں تھا، تیاری کر رہا تھا مگر آزادی کے بعد دھیان کچھ بہک گیا اور اس لئے وہ پچھڑ گیا۔ ہمارے بڑے بھائی، چین نے زیادہ ثابت قدمی کے ساتھ قدم بڑھایا اور وہ کامیاب ہوگیا۔ کوئی بات نہیں، بڑا بھائی آج کامیاب ہوا تو چھوٹا کل ہو ہی جائے گا۔ لیکن یہ طے ہے کہ بڑے کے تجربے سے فائدہ اُٹھا کر کہیں آگے قدم رکھے گا۔

آج چین ایمان، سادگی اور سیوا کا مانو پتلا بنا ہوا ہے۔ چیرمین ماؤ چینی خزانے سے چھ سو روپے کے قریب تنخواہ لیتے ہیں۔ اِس سے کم تنخواہ شاید ہی دنیا کے کسی دیس کا راجہ یا راشٹر پتی یا بڑا وزیر لیتا ہو۔ یہ قریب قریب وہی آدرش ہے جو ہمارے باپو نے ہمیں بتایا تھا اور جسکی بنا پر 1931 میں راشٹر نے کرانچی میں ایک زبردست ٹھہراؤ پاس بھی کیا تھا۔ ہم اپنے ٹھہراؤ سے ہٹے—یعنی ہندستان کے حاکم ہندستان کی جنتا سے ہٹے اور دونوں کے بیچ میں ایک چوڑی کھائی بن گئی جس کو ہمارے بڑے وزیر پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنی چار سالا رپورٹ میں قبول بھی کیا ہے۔

اُسی حد تک چین میں یہ کھائی جو دو برس پہلے خوب ترقی پر تھی، اب پٹ گئی، سرکار اور پرجا ایک دوسرے سے چپٹ گئے اور پھر جو نہ ہوجائے تھوڑا ہے۔

کوئی کہے گا کہ یہ سب کرشمہ 'کمیونزم' کا ہے۔ ہماری رائے میں چین کے ساتھ کمیونزم کو جوڑنا چین کے ساتھ نا انصافی کرنا ہے۔ لیکن ہاں، ماؤتسے تنگ کمیونسٹ ہیں۔ مارکس اور لینن کی تعلیم سے اُنھوں نے

ाखकर दुनिया के एक तिहाई से ज़ियादा होती है. पक्की ौर सच्ची बात है कि हिन्दुस्तान और चीन के बीच एक सली और पायेदार मेल दुनिया के अन्दर अमन-शान्ति ायम रखने की सब से बड़ी ज़मानत है.

—सुन्दरलाल

ए चीन की चुनौती

बड़े ताज्जुब की बात है कि जिस चीन के लोग फ़ीमची नाम से बदनाम थे, जिस के सरकारी हलक़ों में श्वत ख़ोरी और मन मानी बेहद चलती थी, जिसमें लाखों ोड़ों अनाज के दाने दाने के लिये तरसते थे, जिसमें यापन और भिकमंगी और बे-रोज़गारी का बोल ता था, जिसमें सब तरह से मानो तारीकी ही छाई थी—उस चीन में अंधेरे को चीरते हुए यकायक एक ा सवेरा हो गया. यक़ीन नहीं आता, सच्चे जी से ीन नहीं आता कि क़ौम की क़ौम की काया इस तरह ट सकती है. लेकिन आज की दुनिया की सब से बड़ी चाई यही है कि मानिये या न मानिये—बेहतर है कि नेये, आज नहीं तो कल ज़रूर मानियेगा—कि चीन में मुच नया सवेरा हो गया है और उजाला देने वाला सूरज निकल आया है—जो दुनिया के कोने कोने में ा हुए अंधेरे को चुनौती दे रहा है.

इस नए सूरज ने चीन को अब एक नया देश बना ा है और आज चीन सिर्फ़ चीन नहीं, 'नया चीन' लाता है. पहली अक्तूबर 1949 को इस नए चीन जनम हुआ. उसी दिन नया लोकराज या न्यूडेमोक्रेसी ा का जनता का राज चीन में क़ायम हुआ.

चीन के जैसे इन्क़लाब न एक दिन की करनी होती हैं न आदमी की. वह नतीजा होते हैं सारी क़ौम की क़ौम तपस्या और साधना का. वह इशारा होते हैं क़ौम क़ौम के दिल के दर्द और तड़प और उभार का जो जाने-अनजाने बढ़ाए ले जाते हैं. वह नतीजा होते हैं ता के अन्दर की शक्तियों की टक्कर और मेल का, की उमंगों के दबाव और चढ़ाव का, उसके आदर्शों कशिश और गठाव का. यह सब चीज़ें ज्वाला मुखी तरह अन्दर ही अन्दर काम करती हैं और बाहर तभी (आती हैं जब वह कोई ठोस और टिकाऊ और ारी शकल ले लेती हैं. दुनिया को उनका पता अकसर रहता और वह उन्हें कुछ चंद कारनामों से पहचानती उन्हीं चंद हस्तियों के सिर पर सेहरा बांधती है रों के ज़ियादा नुमायां होती हैं. इसी तरह चीनी

ملکر دنیا کی ایک تہائی سے زیادہ ہوتی ہے . پکی اور سچی بات ہے کہ ہندستان اور چین کے بیچ ایک اصلی اور پائیدار میل دنیا کے اندر امن شانتی قائم رکھنے کی سب سے بڑی ضمانت ہے .

—سندر لال

نئے چین کی چنوتی

بڑے تعجب کی بات ہے کہ جس چین کے لوگ افیمچی نام سے بدنام تھے، جسکے سرکاری حلقوں میں رشوت خوری اور من مانی بے حد چلتی تھی، جس میں لاکھوں کروڑوں اناج کے دانے دانے کے لئے ترستے تھے، جسمیں دیشاپن، بھکمنگی اور بے روزگاری کا بول بالا تھا، جس میں سب طرح سے مانو تاریکی ہی چھائی ہوئی تھی — اُس چین میں اندھیرے کو چیرتے ہوئے یکایک ایک نیا سویرا ہوگیا . یقین نہیں آتا، سچے جی سے یقین نہیں آتا کہ قوم کی قوم کی کایا اِس طرح پلٹ سکتی ہے . لیکن آج کی دنیا کی سب سے بڑی سچائی یہی ہے کہ مانئے یا نہ — بہتر ہے کہ مانئے، آج نہیں تو کل ضرور مانیگا — کہ چین میں سچ مچ نیا سویرا ہوگیا ہے اور ایک اُجالا دینے والا ایک نیا سورج نکل آیا ہے — جو دنیا کے کونے کونے میں گھسے ہوئے اندھیرے کو چنوتی دے رہا ہے .

اِس نئے سورج نے چین کو اب ایک نیا دیش بنا دیا ہے اور آج چین صرف چین نہیں 'نیا چین' کہلاتا ہے . پہلی اکتوبر 1949 کو اِس نئے چین کا جنم ہوا . اُسی دن نیا لوک یا نیو ڈیما کریسی نام کا جنتا کا راج چین میں قائم ہوا .

چین کے جیسے انقلاب نہ ایک دن کی کرنی ہوتی ہیں نہ ایک آدمی کی . وہ نتیجہ ہوتے ہیں ساری قوم کی قوم کی تپسیا اور سادھنا کا . وہ اشارہ ہوتے ہیں قوم کی قوم کے دل کے درد اور تڑپ اور اُبھار کا جو اُسے جانے اَنجانے بڑھائے لئے جاتے ہیں . وہ نتیجہ ہوتے ہیں جنتا کے اندر کی شکتیوں کی ٹکر اور میل کا، اُسکی اُمنگوں کے دباؤ اور چڑھاؤ کا، اُسکے آدرشوں کی کشش اور گٹھاؤ کا . یہ سب چیزیں جوالا مکھی کی طرح اندر ہی اندر کام کرتی ہیں اور باہر تبھی نظر آتی ہیں جب وہ کوئی ٹھوس اور ٹکاؤ اور بھاری شکل لے لیتی ہیں . دنیا کو اُن کا پتہ اکثر نہیں رہتا اور وہ اُنہیں کچھ چند کارناموں سے پہچانتی ہے یا اُنہیں چند ہستیوں کے سر پر سہرا باندھتی ہے جو اوروں سے زیادہ نمایاں ہوتی ہیں . اِسی طرح چینی

जाने, धार्मिक मत, जलूस निकालने और प्रदर्शन करने कराने की आज़ादी रहेगी.

नए चीन की सरकार कम्यूनिस्ट सरकार नहीं है. न यह पारटी सरकार है. यह दर असल मिली जुली (को आलीशान) सरकार है जिसमें सभी राजकाजी पारटियों के नुमायन्दे शरीक हैं. सरकारी हाकिमों में सिर्फ़ एक तिहाई ऐसे हैं जो कम्यूनिस्ट पारटी से ताल्लुक़ रखते हैं.

सारे चीन में निजी जायदाद रखने का हक़ माना जाता है और निजी जायदाद लोग रखते भी हैं. निजी व्योपार, लेन देन और कारख़ानों को तरक़्क़ी दी जाती है. हमने देखा कि टिंटसिन, शंघाई और दूसरी जगहों पर अंगरेज़ी कम्पनियां खूब व्योपार कर रही हैं. अगर नया चीन कम्यूनिस्ट है तो उसका कम्यूनिज़म 'चीनी कम्यूनिज़म' है जो उसकी तासीर के मुताबिक़ है और वहां के लोगों के रिवाज से मेल खाता है.

तीन गुन

नए चीन में तीन गुनों पर ख़ास ज़ोर दिया जाता है— "ईमानदारी, सादगी और देश की सेवा". इन तीनों को चीनी विधान में ख़ास तौर से शामिल किया गया है. बाहर से आने वाला कोई भी बेलाग आदमी चीन को देख कर यह महसूस करेगा कि क्या वहां की जनता और क्या सरकार, सब के सब फ़िल हाल एक साथ मिलकर इन तीनों गुनों पर अमल करने पर तुल गये हैं. नए चीन के क़ौमी स्वभाव, दिल और दिमाग़ की बुनियाद इन्हीं तीन अटल चट्टानों पर क़ायम है.

आज कल चीन कोरिया से लड़ाई लड़ रहा है. तिस पर भी चीन में हमने लड़ाई की चर्चा बहुत ही कम सुनी. चीन का आर्थिक संगठन लड़ाई को निशाना बना कर नहीं खड़ा किया गया है बल्कि रोज़ की ज़रूरत की चीज़ों को पैदा करने के इरादे से खड़ा किया गया है. मुकडन के शहर में, जो लड़ाई के हलक़े के नज़दीक था, हमने देखा कि कारोबार बदस्तूर चल रहा है. चीन में लड़ाई के शौक़ीन लोग हैं ही नहीं. नए चीन और उस के नेता दुनिया के हर दूसरे मुल्क के साथ मिल कर और शान्ति के साथ रहना चाहते हैं. चीन के पिछले दो बरस के कारनामों को देख कर हर कोई इसी नतीजे पर पहुँचेगा कि नए चीन के महान और प्यारे नेता माओ-त्से-तुंग केवल एक बहादुर सिपाही ही नहीं हैं बल्कि एक रचनात्मक जौहरी भी हैं.

चीन की तरह से हिन्दुस्तान भी दुनिया के हर देश के साथ मिल कर शान्ति से रहना चाहता है. हमारे प्रधान-मंत्री ने राष्ट्रों के बीच शान्ति रखने की ख़ातिर कोई क़दम उठा नहीं रखा. हिन्दुस्तान और चीन की आबादी

جانے، دھارمک مت، جلوس نکالنے اور پردرشن کرنے کرانے کی آزادی رہے گی."

نئے چین کی سرکار کمیونسٹ سرکار نہیں ہے، نہ یہ پارٹی گورنمنٹ ہے. وہ در اصل ملی جلی (کوالیشن) گورنمنٹ ہے جسمیں سبھی راجکاجی پارٹیوں کے نمائندے شریک ہیں. سرکاری حاکموں میں صرف ایک تہائی ایسے ہیں جو کمیونسٹ پارٹی سے تعلق رکھتے ہیں.

سارے چین میں نجی جائداد رکھنے کا حق مانا جاتا ہے اور نجی جائداد لوگ رکھتے بھی ہیں. نجی بیوپار، لین دین اور کارخانوں کو ترقی دی جاتی ہے. ہم نے دیکھا کہ ٹنٹسن، شنگھائی اور دوسری جگہوں پر انگریزی کمپنیاں خوب بیوپار کر رہی ہیں. اگر نیا چین کمیونسٹ ہے تو اُس کا کمیونزم ' چینی کمیونزم ' ہے جو اُس کی تاثیر کے مطابق ہے اور وہاں کے لوگوں کے رواج سے میل کھاتا ہے.

تین گن.

نئے چین میں تین گنوں پر خاص زور دیا جاتا ہے— "ایمانداری سادگی اور دیش کی سیوا." اِن تینوں کو چینی ودھان میں خاص طور سے شامل کیا گیا ہے. باہر سے آنے والا کوئی بھی بیلاگ آدمی چین کو دیکھکر یہ محسوس کریگا کہ کیا یہاں کی جنتا اور کیا سرکار، سب کے سب فی الحال ایک ساتھ مل کر اِن تینوں گنوں پر عمل کرنے پر تل گئے ہیں. نئے چین کے قومی سوبھاؤ، دل اور دماغ کی بنیاد اِنھی تین اٹل چٹانوں پر قائم ہے.

آج کل چین کوریا سے لڑائی لڑ رہا ہے. تس پر بھی چین میں ہم نے لڑائی کی چرچا بہت ہی کم سنی. چین کا آرتھک سنگٹھن لڑائی کو نشانہ بنا کر نہیں کھڑا کیا گیا ہے بلکہ روز کی ضرورت کی چیزوں کو پیدا کرنے کے ارادے سے کھڑا کیا گیا ہے. مکڈن کے شہر میں، جو لڑائی کے حلقے کے نزدیک تھا، ہم نے دیکھا کہ کاروبار بدستور چل رہا ہے. چین میں لڑائی کے شوقین لوگ ہیں ہی نہیں. نئے چین اور اُسکے نیتا دنیا کے ہر دوسرے ملک کے ساتھ ملکر اور شانتی سے رہنا چاہتے ہیں. چین کے پچھلے دو برس کے کارناموں کو دیکھکر ہر کوئی اِسی نتیجے پر پہونچے گا کہ نئے چین کے مہان اور پیارے نیتا ماؤتسے تنگ کیول ایک بہادر سپاہی ہی نہیں ہیں بلکہ ایک رچناتمک جوہری بھی ہیں.

چین کی طرح سے ہندستان بھی دنیا کے ہر دیش کے ساتھ ملکر شانتی سے رہنا چاہتا ہے. ہمارے پردھان منتری نے راشٹروں کے بیچ شانتی رکھنے کی خاطر کوئی قدم اُٹھا نہیں رکھا. ہندستان اور چین کی آبادی

औरत की सिर्फ़ एक शादी का चाल पड़ गया है. शादी के सिलसिले में पैसे का लेन देन एक दम बन्द हो गया है. आज वहां के समाजी या जीवन के दूसरे किसी पहलू में औरतें मर्दों के बराबर का हिस्सा लेती हैं. टेटसिन से पेकिंग जाने वाली एक रेल है जिस में ड्राईवर से लेकर गार्ड तक सभी चलाने वाले औरतें हैं.

हमने नए चीन के सिनेमा और थेटर देखे. उनसे काफ़ी तालीम हासिल की जा सकती है, और जियादा तर में जागीरशाही, पूँजीशाही व साम्राजशाही की बुराइयां दिखाई जाती है. इन खराब शाहियों के मुक़ाबले चीनी लोग अपनी एक नई शाही पेश करते हैं जिसे उन्होंने "क़ौमी पूँजीशाही'' नाम दिया है और उसकी तरफ़ लोगों की दिलचस्पी बढ़ाते हैं. यहां की फ़िल्मों में मर्द औरत के बराबरी के हक़ पर बेहद ज़ोर दिया जाता है, मेहनत को सबसे बुलन्दी का दर्जा दिया जाता है और तमाम दुनिया के रहने वालों की एकता का विचार फैलाया जाता है. देखने वालों के दिल व दिमाग़ पर असर करने वाली और बहुत सी चीज़ें होती हैं. लेकिन किसी भी फ़िल्म में कोई ऐसी बात हमें नहीं मिली जिसे गन्दी या भद्दी कहा जा सके.

अदालतें

नए चीन ने अपनी अदालतों को एक दम बदल दिया है. उनके यहां तीन तरह की अदालतें होती हैं, जैसे हमारे यहां ज़िला अदालत, सूबा हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट हैं. पच्छिमी ढंग की वकालत का तरीक़ा चीन में रह ही नहीं गया. वकील और बैरिस्टर नदारद हैं. जज फ़रीक़ों या गवाहों से ख़ुद आमने सामने बात करते, मामले की जाँच करते, मौक़ा महल जा कर देखते और फिर फ़ैसला देते हैं. अगर ज़रूरत पड़ी तो कुछ क़ानूनी माहिरों से मदद लेते हैं. इन क़ानूनी माहिरों को "जनता के हक़ों के रखवाले" कहा जाता है. इन्हें सरकार से तनख़ा मिलती है. यह लोग किसी भी पारटी से एक पैसा भी नहीं ले सकते. नतीजा यह है कि नए चीन में इन्साफ़ सस्ता होता है, जल्दी होता है और सच्चा होता है. यह चीज़ शायद ही किसी दूसरे देश में मिले.

चीन में धार्मिक आज़ादी पूरी तरह से मिलती है. हमने कई जगह पर मस्जिद, गुरुद्वारे और मन्दिर देखे जहां लोग आज़ादी के साथ पूजा बन्दगी कर रहे थे. लेकिन बदक़िस्मती है कि चीन में जो मज़हब या बोल चाल की आज़ादी है उसके बारे में अजब अजब ग़लत फ़हमियां फैली हुई हैं. इसलिये हम चीनी विधान की पांचवीं धारा को यहां पेश करते हैं जिससे पता चलता है कि यह ग़लत फ़हमी कितनी बेजा है—

"चीनी लोकराज में लोगों को विचार, बोलचाल, प्रकाशन, मिलना जुलना, चिट्ठी-पत्री, रहन-सहन, आने

عورت کی صرف ایک شادی کا چال پڑ گیا ہے ۔ شادی کے سلسلے میں پیسے کا لین دین ایک دم بند ہوگیا ہے. آج وہاں کے سماجی یا جیون کے دوسرے کسی پہلو میں عورتیں مردوں کے برابر کا حصہ لیتی ہیں ۔ ٹینٹسن سے پیکنگ جانے والی ایک ریل ہے جس میں ڈرائیور سے لے کر گارڈ تک سبھی چلانے والے عورتیں ہیں ۔

ہم نے نئے چین کے سنیما اور تھیٹر دیکھے ۔ اُن سے کافی تعلیم حاصل کی جا سکتی ہے' اور زیادہ تر میں جاگیر شاہی' پونجی شاہی' سامراج شاہی کی برائیاں دکھائی جاتی ہیں ۔ اِن خراب شاہیوں کے مقابلے چینی لوگ اپنی ایک نئی شاہی پیش کرتے ہیں جسے انہوں نے " قومی پونجی شاہی " نام دیا ہے اور اُسکی طرف لوگوں کی دلچسپی بڑھاتے ہیں ۔ یہاں کی فلموں میں مرد عورت کے برابری کے حق پر بے حد زور دیا جاتا ہے ۔ محنت کو سب سے بلندی کا درجہ دیا جاتا ہے اور تمام دنیا کے رہنے والوں کی ایکتا کا وچار پھیلایا جاتا ہے ۔ دیکھنے والوں کے دل و دماغ پر اثر کرنے والی اور بہت سی چیزیں ہوتی ہیں ۔ لیکن کسی بھی فلم میں کوئی ایسی بات ہمیں نہیں ملی جسے گندی یا بھدی کہا جا سکے ۔

عدالتیں ۔

نئے چین نے اپنی عدالتوں کو ایک دم بدل دیا ہے ۔ اُن کے یہاں تین طرح کی عدالتیں ہوتی ہیں' جیسے ہمارے یہاں ضلع عدالت' صوبہ ہائی کورٹ اور سپریم کورٹ ہیں ۔ پچھمی ڈھنگ کی وکالت کا طریقہ چین میں رہ ہی نہیں گیا ۔ وکیل اور بیرسٹر ندارد ہیں' جج فریقوں یا گواہوں سے خود آمنے سامنے بات کرتے' معاملے کی جانچ کرتے' موقع محل جاکر دیکھتے اور پھر فیصلہ دیتے ہیں ۔ اگر ضرورت پڑی تو کچھ قانونی ماہروں سے مدد لیتے ہیں ۔ اِن قانونی ماہروں کو " جنتا کے حقوں کے رکھوالے " کہا جاتا ہے ۔ اِنہیں سرکار سے تنخواہ ملتی ہے ۔ یہ لوگ کسی بھی پارٹی سے ایک پیسہ بھی نہیں لے سکتے ۔ نتیجہ یہ ہے کہ نئے چین میں انصاف سستا ہوتا ہے' جلدی ہوتا ہے اور سچا ہوتا ہے ۔ یہ چیز شاید ہی کسی دوسرے دیش میں ملے ۔

چین میں دھارمک آزادی پوری طرح سے ملتی ہے ۔ ہم نے کئی جگہ پر مسجدیں' گرودوارے اور مندر دیکھے جہاں لوگ آزادی کے ساتھ پوجا بندگی کر رہے تھے ۔ لیکن بدقسمتی ہے کہ چین میں جو مذہب یا بول چال کی آزادی ہے اُسکے بارے میں عجب عجب غلط فہمیاں پھیلی ہوئی ہیں ۔ اس لئے ہم چینی ودھان کی پانچویں دھارا کو یہاں پیش کرتے ہیں جس سے پتہ چلتا ہے کہ یہ غلط فہمی کتنی بیجا ہے—

"چینی لوک راج میں لوگوں کو وچار' بول چال' پرکاشن' ملنا جلنا' چٹھی پتری' رہن سہن' آنے

भाई उनके गांव में गए जहां हमने उनके चरखे व करघे चलते देखे. हमने देखा कि उनकी चीजें हमारे यहां के मुक़ाबले जियादा सीधी-सादी हैं. शंघाई में हमने एक जगह देखा कि पुराने ढंग के 200 चरखों पर ख़राब और बेकार ऊन को कात कर सूत तैयार कर रहे हैं. हमारे मेजबानों को जब पता चला कि हमें हाथ की कती और हाथ की बुनी चीजों में दिलचस्पी है तो हमारे मिशन के हर मेम्बर को चीनी खादी क दो-दो थान भेंट किये गए.

आज चीन में खाने पीने की हर चीज़ काफ़ी तादाद में मिलती है और ऐसे दाम पर कि हर कोई ख़रीद सके— न दाम का कन्ट्रोल है, न कपड़े या अनाज की वहां राशनिंग है. वहां के ट्रेड यूनियन भाव को ठीक रखते हैं. न कोई फ़िक फ़िक होती है, न कोई चोर बाज़ारी करता है और न कोई जमा कर लेता है. सट्टे बाज़ी सरकारी हुक्म से बन्द कर दी गई क्योंकि यह बनावटी तौर पर क़ीमतें घटाती बढ़ाती है.

समाज सुधार.

अब हम उन समाज सुधारों पर विचार करेंगे जो नई सरकार ने किये. पेकिंग के बारे में यह कहा जाता है कि जब नई सरकार ने चार्ज लिया तो वहां तीन हज़ार वेश्याएं थीं, लेकिन आज एक भी नहीं है. यही हाल दूसरे शहरों और क़सबों में भी था. नई सरकार ने इतने बड़े देश से वेश्यापन मानो एक दम उठा ही दिया. यह सुधार भी कोई सरकारी हुक्मनामे से नहीं किया गया, न मजबूरी या ज़बरदस्ती से, बल्कि समझा बुझा कर और लोगों की मरज़ी से. नायब बड़े वज़ीर को-मो-जो ने हमें बताया कि किस तरह उन सब बहनों को समझा बुझा कर, दस्तकारी सिखाने के नए नए दरजे खुलवा कर, जहां वह अपनी रोज़ी इज़्ज़त के साथ कमाने का ज़रिया निकाल लें, और इज़्ज़त वाले लोगों से उनकी शादी करके उन्हें सही रास्ते पर लाया गया. इसी तरह से नए चीन ने भिकमंगी ख़त्म कर दी. पहले के सारी भिकारी आज किसी न किसी पैदावारी प्रोग्राम में काम कर रहे हैं. आज चीन में बे-रोज़गारी नहीं है. जब हमने पेकिंग के मेयर से पूछा—"कहिये, आपके यहां आबादी का मसला कैसा है?" उन्होंने मुस्करा कर जवाब दिया—"हमारे यहां आबादी का मसला है ही नहीं. आप चाहें तो कुछ भाई बहनों को यहां भेज दीजिये."

शहरों में मकान या रहने सहने की पूरी सुविधा है. अफ़ीम खाना या पीना मुल्क भर में मना है. किसी तरह का जुआ, सट्टा या रेस कोर्स वहां नहीं खेले जा सकते. शादी का जो नया क़ानून बना है वह वहां की एक ख़ास चीज़ है. उसके आधार पर औरतों को बराबर के हक़ मिल गए हैं, उनका दर्जा ऊंचा उठ गया है और एक मर्द

بھائی اُن کے گاؤں میں گئے جہاں ہم نے اُن کے چرخے و کرگھے چلتے دیکھے. ہم نے دیکھا کہ اُن کی چیزیں ہمارے یہاں کے مقابلے زیادہ سیدھی سادی ہیں. شنگھائی میں ہم نے ایک جگہ دیکھا کہ پرانے ڈھنگ کے 200 چرخوں پر خراب اور بیکار اُون کو کات کر سوت تیار کر رہے ہیں. ہمارے میزبانوں کو جب پتہ چلا کہ ہمیں ہاتھ کی کتی اور ہاتھ کی بنی چیزوں میں دلچسپی ہے تو ہمارے مشن کے ہر ممبر کو چینی کھادی کے دو دو تھان بھینٹ دئیے گئے.

آج چین میں کھانے پینے کی ہر چیز کافی تعداد میں ملتی ہے اور ایسے دام پر کہ ہر کوئی خرید سکے— نہ دام کا کنٹرول ہے، نہ کپڑے یا اناج کی وہاں راشننگ ہے. وہاں کے ٹریڈ یونین بھاؤ کو ٹھیک رکھتے ہیں. نہ کوئی جھک جھک ہوتی ہے، نہ کوئی چور بازاری کرتا ہے اور نہ کوئی جمع کر لیتا ہے. سٹے بازی سرکاری حکم سے بند کر دی گئی کیونکہ یہ بناوٹی طور پر قیمتیں گھٹاتی بڑھاتی ہے.

سماج سدھار.

اب ہم ان سماج سدھاروں پر وچار کرینگے جو نئی سرکار نے کئے. پیکنگ کے بارے میں یہ کہا جاتا ہے کہ جب نئی سرکار نے چارج لیا تو وہاں تین ہزار ویشیائیں تھیں، لیکن آج ایک بھی نہیں ہے. یہی حال دوسرے شہروں اور قصبوں میں بھی تھا. نئی سرکار نے اِتنے بڑے دیش سے ویشیاپن مانو ایک دم اُٹھا ہی دیا. یہ سدھار بھی کوئی سرکاری حکمنامے سے نہیں کیا گیا، نہ مجبوری یا زبردستی سے بلکہ سمجھا بجھا کر اور لوگوں کی مرضی سے. نائب بڑے وزیر کو مو جو نے ہمیں بتایا کہ کس طرح اُن سب بہنوں کو سمجھا بجھا کر، دستکاری سکھانے کے نئے نئے درجے کھلوا کر، جہاں وہ اپنی روزی عزت کے ساتھ کمانے کا ذریعہ نکال لیں، اور عزت والے لوگوں سے اُن کی شادی کر کے اُنہیں صحیح راستے پر لایا گیا. اِسی طرح سے نئے چین نے بھکمنگی ختم کر دی. پہلے کے سارے بھکاری آج کسی نہ کسی پیداواری پروگرام میں کام کر رہے ہیں. آج چین میں بے روزگاری نہیں ہے. جب ہم نے پیکنگ کے میئر سے پوچھا— "کہئے، آپ کے یہاں آبادی کا مسئلہ کیسا ہے." اُنہوں نے مسکرا کر جواب دیا— "ہمارے یہاں آبادی کا مسئلہ ہے ہی نہیں. آپ چاہیں تو کچھ بھائی بہنوں کو یہاں بھیج دیجئے."

شہروں میں مکان یا رہنے سہنے کی پوری سودھا ہے. افیم کھانا یا پینا ملک بھر میں منع ہے. کسی طرح کا جوا، سٹا یا ریس کورس وہاں نہیں کھیلے جا سکتے. شادی کا جو نیا قانون بنا ہے وہ وہاں کی خاص چیز ہے. اُسکے آدھار پر عورتوں کو برابر کے حق مل گئے ہیں، اُن کا درجہ اونچا اُٹھ گیا ہے اور ایک مرد

चीन के मुख्तलिफ़ हिस्सों में लोगों की चीज़ें ख़रीदने की ताक़त 30 से 53 फ़ीसदी तक बढ़ी है. पिछले दो साल में उत्तर-पूरबी चीन में—जिस में पांच सूबे हैं—किसानों की चीज़ ख़रीदने की ताक़त 69 फ़ीसदी बढ़ी. नई सरकार ने 1949 में चार्ज लिया और 1950 में देश की काया पलट गई. उसी साल अनाज की खेती इतनी बढ़ी कि देहात के साढ़े पच्चीस करोड़ लोग, शहरों के आठ करोड़ और पिछले साल के अकाल कहलाने वाले इलाक़े के चार करोड़ लोगों को खिला कर इतना अनाज बेशी बचा कि साढ़े चार करोड़ लोग साल भर तक और खाते रहें. 1950 में पिछले बरस के मुक़ाबले कुल पैदावार चौदह फ़ीसदी ज़ियादा थी, और 1951 में 1950 के मुक़ाबले आठ फ़ी सदी ज़ियादा. तख़मीना यह है कि 1951 के आख़ीर में चीन के पास इतना अनाज होगा कि अपनी कुल आबादी को खिलाकर और अगली फ़सल के लिये काफ़ी जमा रखकर, उसके पास इतना अनाज बचेगा कि दस करोड़ आदमियों को एक साल तक खिलाता रहे. एक बात यह भी क़ाबिल-तारीफ़ है कि नए चीन में हर सिपाही रोज़ सात आठ घन्टे खेती का या दूसरा धन्दा करता है. सिर्फ़ वह सिपाही जो असली मोरचे में लड़ते हैं इस खेती के काम से बरी रहते हैं. इस से न सिर्फ़ फ़ौज का ख़र्च घटता है बल्कि खेती की पैदावार बढ़ती है और सिपाही और ग़ैर सिपाही में आपस का भाई चारा क़ायम रहता है.

कारख़ाने.

खाने के अलावा ज़रूरत की क़रीब क़रीब दूसरी सभी चीज़ों में चीनी लोग इन दो बरस में स्वावलम्बी हो गए हैं. इस सिलसिले में उन्होंने जो एक ख़ास तरीक़ा अपनाया है, वह है एमुलेशन ड्राइव यानी होड़ बाज़ी. वह मज़दूर या कारीगर जो ख़ास तौर से ज़ियादा पैदा करते हैं या अपने काम में कोई नई ईजाद करते हैं उनकी बहुत वाह वाही होती है और सारे देश में उनके नाम का प्रचार किया जाता है और वह 'आदर्श कार्यकर्ता', 'मज़दूर बहादुर', 'सूबाई मज़दूर बहादुर' या 'कुल चीन मज़दूर बहादुर' के नाम से मशहूर होते हैं.

चीनी नेता अपने देश में कारख़ाने फैलाने की भरसक कोशिश कर रहे हैं. साथ ही साथ वह इतने व्यवहारिक भी हैं कि अपने यहां किसी आदमी को निठल्ला नहीं रहने देते. अपने यहां के देहाती धंदों को उन्होंने ध्यान के साथ संभाल लिया है. पेकिंग राजधानी में एक बाज़ार का बाज़ार ऐसा है जहां रोज़ सुबह छै से नौ बजे तक सिर्फ़ हाथ का बुना कपड़ा मिलता है. सूत कुछ हाथ का होता है और कुछ मिल का. चीनी लोग हथ-कते और हथ-बुने कपड़े को "थुपु" कहते हैं. डाक्टर कुमारप्पा, मैं और कुछ

چین کے مختلف حصوں میں لوگوں کی چیزیں خریدنے کی طاقت 30 سے 53 فی صدی تک بڑھی ہے۔ پچھلے دو سال میں اُتر پورب چین میں—جس میں پانچ صوبے ہیں—کسانوں کی چیز خریدنے کی طاقت 69 فی صدی بڑھی۔ نئی سرکار نے 1949 میں چارج لیا اور 1950 میں دیش کی کایا پلٹ گئی۔ اُسی سال اناج کی کھیتی اتنی بڑھی کہ دیہات کے ساڑھے پچیس کروڑ لوگ، شہروں کے آٹھ کروڑ اور پچھلے سال کے اکال کہلانے والے علاقے کے 4 کروڑ لوگوں کو کھلا کر اتنا اناج بیشی بچا کہ ساڑھے چار کروڑ لوگ سال بھر تک اور کھاتے رہیں۔ 1950 میں پچھلے برس کے مقابلے کل پیداوار چودہ فی صدی زیادہ تھی، اور 1951 میں 1950 کے مقابلے آٹھ فی صدی زیادہ۔ تخمینا یہ ہے کہ 1951 کے آخیر میں چین کے پاس اتنا اناج ہوگا کہ اپنی کل آبادی کو کھلا کر اور اگلی فصل کے لئے کافی جمع رکھکر، اُس کے پاس اتنا اناج بچے گا کہ دس کروڑ آدمیوں کو ایک سال تک کھلاتا رہے۔ ایک بات یہ بھی قابل تعریف ہے کہ نئے چین میں ہر سپاہی روز سات آٹھ گھنٹے کھیتی کا یا دوسرا دھندا کرتا ہے۔ صرف وہ سپاہی جو اصلی مورچے میں لڑتے ہیں اِس کھیتی کے کام سے بری رہتے ہیں۔ اُس سے نہ صرف فوج کا خرچ گھٹتا ہے بلکہ کھیتی کی پیداوار بڑھتی ہے اور سپاہی اور غیرسپاہی میں آپس کا بھائی چارہ قائم رہتا ہے۔

کارخانے۔

کھانے کے علاوہ ضرورت کی قریب قریب دوسری سبھی چیزوں میں چینی لوگ اِن دو برس میں سواولمبی ہوگئے ہیں۔ اِس سلسلے میں اُنہوں نے جو ایک خاص طریقہ اپنایا ہے، وہ ہے ایمولیشن ڈرائیو یعنی ہوڑبازی۔ وہ مزدور یا کاریگر جو خاص طور سے زیادہ پیدا کرتے ہیں یا اپنے کام میں کوئی نئی ایجاد کرتے ہیں اُن کی بہت واہ واہی ہوتی ہے اور سارے دیش میں اُن کے نام کا پرچار کیا جاتا ہے اور وہ 'آدرش کاریہ کرتا' 'مزدور بہادر' 'صوبائی مزدور بہادر' یا 'کل چین مزدور بہادر' کے نام سے مشہور ہوتے ہیں۔

چینی نیتا اپنے دیش میں کارخانے پھیلانے کی بھرسک کوشش کررہے ہیں۔ ساتھ ہی ساتھ وہ اتنے ویوہارک بھی ہیں کہ اپنے یہاں کسی آدمی کو نٹھلا نہیں رہنے دیتے۔ اپنے یہاں کے دیہاتی دھندوں کو اُنہوں نے دھیان کے ساتھ سنبھال لیا ہے۔ پیکنگ راجدھانی میں ایک بازار کا بازار ایسا ہے جہاں روز صبح چھ سے نو بجے تک صرف ہاتھ کا بنا کپڑا ملتا ہے۔ سوت کچھ ہاتھ کا ہوتا ہے اور کچھ مل کا۔ چینی لوگ ہتھ کتے اور ہتھ بنے کپڑے کو "تھپو" کہتے ہیں۔ ڈاکٹر کمارپا، میں اور کچھ

कारखानों और दफ्तरों में भी है. कुछ ही माहिर या खास तालीम पाए ऐसे लोग हैं जिन्हें तनखा के अलावा एक तिहाई ऊपर से भत्ते के तौर पर मिल जाता है. इस चीज़ से जहां एक तरफ़ सरकारी खर्च बहुत कम हो गया, वहां दूसरी तरफ़ जियादा तनखा वालों और कम तनखा वालों के बीच का खाई बहुत कुछ पट गई, ग़रीब अमीर का फ़र्क़ दूर हो गया और समाज के अन्दर जो मालदार और नादार के बीच की दीवार थी वह एक दम ढह गई. इसका नतीजा है कि नए चीन में आप सिर्फ़ कपड़ों को देखकर यह नहीं पहचान सकते कि एक आदमी यूनिवर्सिटी का वाइसचांसलर है या चपरासी, कारखाने का मैनेजर है या मज़दूर, दफ्तर का इन्चार्ज है या कलर्क. यह बात याद रखने की है कि यह क़ुर्बानी जो सब लोगों ने की— लेकिन असल में यह क़ुर्बानी नहीं है क्योंकि अपनी बुनियादी ज़रूरत की सब चीज़ें सब को मिल ही जाती हैं—तो ख़ुशी से की, दिल से की, जानकर की. हर चीनी को नाज़ है कि मैं अपने देश और देशवासियों के लिये कुछ न कुछ कर रहा हूँ.

सवारी,

इसके अलावा नए चीन ने अपने यहां सवारी और माल ढोने का इन्तज़ाम बहुत कुछ संभाल लिया है जो कोमिनटांग राज में चकना चूर हो गया था. 1950 के आख़ीर में 22 हज़ार किलो मटीर सड़कें जो मरम्मत या बन्दोबस्त न होने की वजह से बन्द और बेकार पड़ी थीं फिर से चालू हो गई हैं. बड़े पैमाने पर नई नई लाइनें खोल दी गई हैं. कहा जाता है कि आज़ादी के पहले जितनी सड़कें-रेलें वग़ैरा थीं जनवरी 1951 में उस से पांच गुना जियादा हो गईं. डाक के रास्ते 60 फ़ी सदी बढ़ाए गए, तार 36 फ़ीसदी, टेलीफ़ोन पहले के मुक़ाबले सवा दो गुने ज़ियादा हैं. हवाई रास्ते का भी काफ़ी इस्तेमाल होता है.

स्वावलम्बन.

इन तरीक़ों से और दूसरे ऐसी ही बातों से नए चीन ने मंहगाई और क़ीमतों के घटाव-बढ़ाव पर क़ाबू पा लिया, खेती और कारखानों की पैदावार बढ़ा ली और लोगों का माद्दी और नैतिक दर्जा कहीं जियादा ऊंचा उठा दिया. आज़ादी के पहले एक अमरीकन डालर की क़ीमत जहां कई अरब खरब चीनी यन होती थी वह 1950 में 42,000 यन और 1951 में 22,270 यन रह गई. मार्च 1950 से लेकर मई 1950 तक-तीन माह के अन्दर क़ायदे के साथ क़ीमतों को ठिकाने पर लगा दिया गया जिस की वजह से चीज़ों के औसत दाम 100 गिर कर 98 पर आए और अब और भी गिर रहे हैं. इसके ख़िलाफ़ इस अरसे में अमरीका में यह दाम 100 से बढ़कर 150 हो गए.

کارخانوں اوردفتروں میں بھی ہے. کچھ ہی ماہر یا خاص تعلیم پائے ایسے لوگ ہیں جنہیں تنخواہ کے علاوہ ایک تہائی اوپر سے بھتے کے طور پر مل جاتا ہے . اس چیز سے جہاں ایک طرف سرکاری خرچ بہت کم ہوگیا' دوسری طرف زیادہ تنخواہ والوں اور کم تنخواہ والوں کے بیچ کی کھائی بہت کچھ پٹ گئی' غریب امیر کا فرق دور ہوگیا اور سماج کے اندر جو مالدار اور نادار کے بیچ کی دیوار تھی وہ ایک دم ڈھے گئی . اِس کا نتیجہ ہے کہ نئے چین میں آپ صرف کپڑوں کو دیکھکر یہ نہیں پہچان سکتے کہ ایک آدمی یونیورسٹی کا وائس‌چانسلر ہے یا چپراسی' کارخانے کا منیجر ہے یا مزدور' دفتر کا انچارج ہے یا کلرک . یہ بات یاد رکھنے کی ہے کہ یہ قربانی جو سب لوگوں نے کی — لیکن اصل میں یہ قربانی نہیں ہے کیونکہ اپنی بنیادی ضرورت کی سب چیزیں سب کو مل ہی جاتی ہیں — تو خوشی سے کی' دل سے کی' جان کر کی . ہر چینی کو ناز ہے کہ میں اپنے دیش اور دیش واسیوں کے لئے کچھ نہ کچھ کر رہا ہوں .

سواری.

اِسکے علاوہ نئے چین نے اپنے یہاں سواری اور مال ڈھونے کا انتظام بہت کچھ سنبھال لیا ہے جو کومنتانگ راج میں چکنا چور ہوگیا تھا . 1950 کے آخیر میں 22 ہزار کلومیٹر سڑکیں جو مرمت یا بندوبست نہ ہونے کی وجہ سے بند اور بیکار پڑی تھیں' پھر سے چالو ہوگئی ہیں . بڑے پیمانے پر نئی نئی لائنیں کھول دی گئی ہیں. کہا جاتا ہے کہ آزادی کے پہلے جتنی سڑکیں ریلیں وغیرہ تھیں جنوری 1951 میں اُس سے پانچ گنا زیادہ ہوگئیں. ڈاک کے راستے 60 فی صدی بڑھائے گئے' تار 36 فی صدی' ٹیلی فون پہلے کے مقابلے سوا دو گنے زیادہ ہیں . ہوائی راستے کا بھی کافی اِستعمال ہوتا ہے .

سواولمبن .

اِن طریقوں سے اور دوسری ایسی ہی باتوں سے نئے چین نے مہنگائی اور قیمتوں کے گھٹاؤ بڑھاؤ پر قابو پالیا' کھیتی اور کارخانوں کی پیداوار بڑھا لی اور لوگوں کا مادی اور نیتک درجہ کہیں زیادہ اونچا اُٹھادیا . آزادی کے پہلے ایک امریکن ڈالر کی قیمت جہاں کئی ارب کھرب چینی ین ہوتی تھی وہ 1950 میں 42000 ین اور 1951 میں 22,270 ین رہ گئی . مارچ 1950 سے لیکر مئی 1950 تک تین ماہ کے اندر قاعدے کے ساتھ قیمتوں کو ٹھکانے پر لگا دیا گیا جس کی وجہ سے چیزوں کے اوسط دام 100 سے گر کر 98 پر آئے اور اب اور بھی گر رہے ہیں. اِس کے خلاف اِس عرصے میں امریکہ میں یہ دام 100 سے بڑھکر 150 ہوگیا .

ौर उन्हें तमाम कार्यकर्ताओं ने क्या कमाल के साथ न-जागृति का काम किया है. यह उन्हीं की मेहनत का ल है कि लोगों के अन्दर मेहनत और क़ुरबानी की ावना घर कर गई है. कहने की ज़रूरत नहीं कि बिना इस ावना के ऐसे काम हुआ भी नहीं करते हैं.

नए चीन में तनख़ाहें.

नई चीन सरकार ने चौथी ख़ास बात जो की वह थी हूमत के ख़र्चे को घटाना. आज़ादी के पहले ज़ियादातर फ़सरों को ऊंची तनख़ाहें मिलती थीं और बेतहाशा ख़र्च ाता था. नई सरकार ने जहां ऊपर के हाकिमों की तनख़ा म की, वहां नीचे वालों की बढ़ा दी. ऐसा लगता है कि ए चीन के नेताओं को यह सूझ गई कि रुपए पैसे का हत्व ज़ियादा नहीं होता और इनसान की मेहनत ही सली क़ीमती और क़द्र के क़ाबिल चीज़ है. इसी वजह । नए चीन में तनख़ाहें नोटों के हिसाब से नहीं बल्कि नाज के हिसाब से दी जाती हैं.

सरकारी नौकर दो तरह के हैं—एक वह जिन्हें सपलाई तरीक़े' पर तनख़ा मिलती है, दूसरे वह जिन्हें बाक़ायदा तनख़ा मिलती है. 'सपलाई तरीक़े' में मुलाज़िम और उसके बाल बच्चों को भर-पेट खाना और ख़ास तादाद में कपड़े मिलते हैं. उसके बच्चों को तालीम मुफ़्त, घर बार को दवा-दारू माफ़ और जेब ख़र्च के लिये दस-बीस रुपए हर महीने ऊपर से मिलते हैं. इस सपलाई तरीक़े में सूबे के एक गवर्नर या दफ़्तर के क्लर्क में कोई फ़र्क़ नहीं किया जाता है. दूसरे यानी तनख़ा वाले तरीक़े में सरकारी लोग अन्दाज़ा कर लेते हैं कि फ़लां-नौकर और उसके बाल-बच्चों को कुल कितने अनाज की ज़रूरत होगी, कितना दूध, दवा, कपड़ों वग़ैरा की और फिर सब को जोड़ कर "इकाई" बना लेते हैं. इस तरह वह तय कर लेते हैं कि फ़लां आदमी को हर महीने कितनी 'इकाइयां' या 'पाइन्ट' मिलने चाहियें. असली रक़म की अदायगी ग़ल्ले की शकल में न की जा कर ग़ल्ले की क़ीमत के बराबर नोटों की शकल में की जाती है. अगर किसी महीने चीज़ों के भाव बदलें तो उस महीने की तनख़ा भी उस हिसाब से बदल जाती है.

अब ज़रा देखें कि हमारे हिन्दुस्तानी सिक्के के हिसाब से चीन के सरकारी अफ़सरों को क्या तनख़ा हैं मिलती हैं. चीन में सब से ऊंची तनख़ा 600 रुपए के क़रीब है जो चेयरमैन माओ-त्से-तुंग को मिलती है. सेन्ट्रल केबिनेट के मिनिस्टरों को 440 रुपए मिलते हैं. सरकारी कारख़ानों, फ़ौज, यूनिवर्सिटी, स्कूल, कालिज, दफ़्तरों वग़ैरा में आम तौर पर सब से ऊंची तनख़ा साढ़े तीन सौ रुपए है और सब से कम डेढ़ सौ. यही सूरत निजी

اور اُن کے بے لاگ کاریہ کرتاؤں نے کیا کمال کے ساتھ جن جاگرتی کا کام کیا ہے. یہ اُنہیں کی محنت کا پھل ہے کہ لوگوں کے اندر محنت اور قربانی کی بھاونا گھر کر گئی ہے. کہنے کی ضرورت نہیں کہ بنا اِس بھاونا کے ایسے کام ہوا بھی نہیں کرتے ہیں.

نئے چین میں تنخواہیں.

نئی چین سرکار نے چوتھی خاص بات جو کی وہ تھی حکومت کے خرچ کو گھٹانا. آزادی کے پہلے زیادہ تر افسروں کو اونچی تنخواہیں ملتی تھیں اور بے تحاشا خرچ ہوتا تھا. نئی سرکار نے جہاں اوپر کے حاکموں کی تنخواہ کم کی وہاں نیچے والوں کی بڑھا دی. ایسا لگتا ہے کہ نئے چین کے نیتاؤں کو یہ سوجھ گئی کہ روپے پیسے کا مہتو کوئی زیادہ نہیں ہوتا اور اِنسان کی محنت ہی اصلی قیمتی اور قدر کے قابل چیز ہے. اِسی وجہ سے نئے چین میں تنخواہیں نوٹوں کے حساب سے نہیں بلکہ اناج کے حساب سے دی جاتی ہیں.

سرکاری نوکر دو طرح کے ہیں — ایک وہ جنہیں ' سپلائی طریقے ' پر تنخواہ ملتی ہے' دوسرے وہ جنہیں باقاعدہ تنخواہ ملتی ہے. ' سپلائی طریقے ' میں ملازم اور اُسکے بال بچوں کو بھر پیٹ کھانا اور خاص تعداد میں کپڑے ملتے ہیں. اُسکے بچوں کو تعلیم مفت' گھر بار کو دوا دارو معاف اور جیب خرچ کے لئے دس بیس روپے ہر مہینے اوپر سے ملتے ہیں. اُس سپلائی طریقے میں صوبے کے ایک گورنر یا دفتر کے کلرک میں کوئی فرق نہیں کیا جاتا ہے. دوسرے یعنی تنخواہ والے طریقے میں سرکاری لوگ اندازہ کر لیتے ہیں کہ فلاں نوکر اور اُسکے بال بچوں کو کل کتنے اناج کی ضرورت ہوگی' کتنا دودھ' دوا' کپڑوں وغیرہ کی اور پھر سب کو جوڑ کر " اِکائی " بنا لیتے ہیں. اِسطرح وہ طے کر لیتے ہیں کہ فلاں آدمی کو ہر مہینے کتنی ' اکائیاں ' یا ' پائنٹ ' ملنے چاہئیں. اصلی رقم کی ادائیگی غلے کی شکل میں نہ کی جا کر غلے کی قیمت کے برابر نوٹوں کی شکل میں کی جاتی ہے. اگر کسی مہینے چیزوں کے بھاؤ بدلے تو اُس مہینے کی تنخواہ بھی اُس حساب سے بدل جاتی ہے.

اب ذرا دیکھیں کہ ہمارے ہندستانی سکے کے حساب سے چین کے سرکاری افسروں کو کیا تنخواہیں ملتی ہیں. چین میں سب سے اونچی تنخواہ 600 روپے کے قریب ہے جو چیرمین ماؤتسے تنگ کو ملتی ہے. سنٹرل کیبنٹ کے منسٹروں کو 440 روپے ملتے ہیں. سرکاری کارخانوں' فوج' یونیورسٹی' اسکول' کالج' دفتروں وغیرہ میں عام طور پر سب سے اونچی تنخواہ ساڑھے تین سو روپے ہے اور سب سے کم ڈیڑھ سو. یہی صورت نجی

हालत ठीक करना. आज़ादी के पहले लगान नक़दी शकल में लिया जाता था, लेकिन अब अनाज की शकल में लिया जाता है. पहले लगान पैदावार के तख़मीने के आधे से कम नहीं लिया जाता था. कभी कभी तो पूरी की पूरी पैदावार लगान में खप जाती थी और बेचारे किसान को रोज़ी के लिये कोई दूसरा धंधा खोजना पड़ता था. लेकिन नए निज़ाम में सरकार ने यह मुक़र्रर कर दिया है कि लगान असल पैदावार का 13 फ़ीसदी से ज़ियादा न होगा. पेकिंग के मेयर ने हमें बताया कि लगान में इस कमी कर देने का नतीजा यह हुआ कि दो करोड़ टन ग़ल्ला हमारे किसानों को उनके इस्तेमाल के लिये एक साल में बच गया.

नई सरकार ने इस सिलसिले में तीसरा क़दम जो उठाया वह था सिंचाई के साधनों में सुधार करना. बहुत सी ज़मीनें ऐसी थीं जहां ज़ियादा काश्त तभी हो सकती थी जब कि नए नए कुएं खोदे जाएं और पानी इतमिनान के साथ मिलता रहे. सरकार ने इसके लिये हुक्म दे दिया और लाखों कुएं जगह जगह खुद गए. इस काम में सरकार की तरफ़ से बहुत थोड़ी सी मदद और उभार की ज़रूरत थी. गांव वालों ने सामान अपने पास से लगाया, मेहनत अपने आप की. इसी तरह सरकार ने उन जगहों से पानी निकालने की स्कीमें बनाई जहां अकसर बाढ़ आया करती थी. इस पानी को उन हिस्सों की तरफ़ भेज दिया गया जो अकसर सूखे पड़े रहते थे. यह काम भी गांव वालों की मदद से किया गया. सिर्फ़ ऊपर से सरकारी देख भाल रही. छोटी स्कीमों के अलावा हुआई नदी को बांधने वाली जैसी बड़ी स्कीमों में भी सरकार ने ज़ियादा तर गांव वालों से ही मदद ली. इस हुआई नदी योजना की शुरूआत नवम्बर 1950 में की गई. इस योजना में 30 लाख किसानों ने हिस्सा लिया जिन्होंने नवम्बर 1950 से शुरू करके जुलाई 1951 तक क़रीब 19 करोड़ 50 लाख मीटर मिट्टी हटा फेंकी और नदियों को थामने के लिये जगह जगह हौज़ और कुन्ड बना लिये. इसका नतीजा यह हुआ कि साढ़े पांच करोड़ आदमी (जो लगभग हमारे उत्तर प्रदेश की आबादी के बराबर है) बाढ़ की आफ़त से हमेशा के लिये बच गए. अभी हाल ही में इस इलाक़े में जो पहली बार फ़सल हुई उसे देख कर हर किसी का जी बांसों उछल पड़ता था. यह बात ध्यान देने की है कि इन स्कीमों के लिये चीन के नए नेताओं ने बाहर से एक पैसा भी उधार नहीं लिया. उन्होंने सब काम अपनी जन शक्ति के बल पर किया. हर कोई जो ज़रा नज़दीक से इन चीज़ों को देखता है वह महसूस करता है कि किस जोश व लगन के साथ इन लोगों ने अपना जी-जान लगा दिया. उन्हें ख़ुशी होती है कि हमने अपने देश की ख़ातिर कुछ काम किया. नए चीन के नेता

ی ٹھیک کرنا ۔ آزادی کے پہلے لگان نقدی شکل میں
اتا تھا، لیکن اب اناج کی شکل میں لیا جاتا ہے ۔
گان پیداوار کے تخمینے کے آدھے سے کم نہیں لیا جاتا
کبھی کبھی تو پوری کی پوری پیداوار لگان میں
جاتی تھی اور بیچارے کسان کو روزی کے لئے کوئی
دھندا کھوجنا پڑتا تھا ۔ لیکن نئے نظام میں سرکار
مقرر کر دیا ہے کہ لگان اصل پیداوار کا 13 فی
ے زیادہ نہ ہوگا ۔ پیکنگ کے میئر نے ہمیں بتایا کہ
میں اس کمی کر دینے کا نتیجہ یہ ہوا کہ دو کروڑ
لہ ہمارے کسانوں کو اُن کے استعمال کے لئے ایک
میں بچ گیا ۔

ئی سرکار نے اِس سلسلے میں تیسرا قدم جو اُٹھایا
سینچائی کے سادھنوں میں سدھار کرنا ۔ بہت
زمینیں ایسی تھیں جہاں زیادہ کاشت تبھی ہو
تھی جبکہ نئے نئے کنوئیں کھودے جائیں اور
اطمینان کے ساتھ ملتا رہے ۔ سرکار نے اس کے لئے
ے دیا اور لاکھوں کنوئیں جگہ جگہ کھد گئے ۔ اِس
یں سرکار کی طرف سے بہت تھوڑی سی مدد اور
ی ضرورت تھی ۔ گاؤں والوں نے سامان اپنے پاس سے
محنت اپنے آپ کی ۔ اِسی طرح سرکار نے اُن جگہوں
ی نکالنے کی اسکیمیں بنائیں جہاں اکثر باڑھ آیا
تھی ۔ اِس پانی کو اُن حصوں کی طرف بھیج دیا
اکثر سوکھے پڑے رہتے تھے ۔ یہ کام بھی گاؤں والوں
سے کیا گیا ۔ صرف اوپر سے سرکاری دیکھ بھال رہی ۔
اِسکیموں کے علاوہ ہوآئی ندی کو باندھنے والی
بڑی اسکیموں میں بھی سرکار نے زیادہ تر گاؤں
سے ہی مدد لی ۔ اِس ہوآئی ندی یوجنا کی
نومبر 1950 میں کی گئی ۔ اِس یوجنا میں
کھ کسانوں نے حصہ لیا جنھوں نے نومبر 1950
روع کر کے جولائی 1951 تک قریب 19 کروڑ 50
یٹر مٹی ہٹا پھینکی اور ندیوں کو تھامنے کے لئے
جگہ حوض اور کنڈ بنا لئے ۔ اِس کا نتیجہ یہ ہوا
ڑھے پانچ کروڑ آدمی (جو لگ بھگ ہمارے اُتر
کی آبادی کے برابر ہے) باڑھ کی آفت سے ہمیشہ
بچ گئے ۔ ابھی حال ہی میں اِس علاقے میں جو
بار فصل ہوئی اُسے دیکھ کر ہر کسی کا جی بانسوں
پڑتا تھا ۔ یہ بات دھیان دینے کی ہے کہ اِن اِسکیموں
چین کے نئے نیتاؤں نے باہر سے ایک پیسہ بھی
نہیں لیا ۔ اُنھوں نے سب کام اپنی جن شکتی کے
کیا ۔ ہر کوئی جو ذرا نزدیک سے اِن چیزوں کو
ہے وہ محسوس کرتا ہے کہ کس جوش و لگن کے ساتھ
وں نے اپنا جی جان لگا دیا ۔ اُنھیں خوشی ہوتی ہے کہ
اپنے دیش کی خاطر کچھ کام کیا ۔ نئے چین کے نیتا

अनाज की पैदावार बढ़ाई जाए. नई सरकार ने देखा कि चीन की साढ़े सैंतालीस करोड़ आबादी में इकतालीस करोड़ से ऊपर किसान हैं, जिनका एक मात्र सहारा खेती है. लेकिन ज़मीन की सारी मिलकियत 10 फ़ीसदी ज़मींदार या रईस किसान के हाथ में थी. बाक़ी 90 फ़ी सदी ग़रीब किसान या बेज़मीन वाले मज़दूर थे. चीन में खेती के लायक़ 140 करोड़ मौ (क़रीब 24 करोड़ एकड़) ज़मीन में से 80 फ़ीसदी ज़मींदारों और रईस किसानों के हाथ में थी, बाक़ी 20 फ़ीसदी ग़रीब किसानों और खेतीमज़दूरों में बंटी हुई थी, जिनकी तादाद कुल खेती आबादी की 90 फ़ीसदी के क़रीब थी.

नया ज़मीन सुधार.

नई सरकार ने ठान लिया कि यह अंधाधुँदी तो ख़त्म ही होना चाहिये. 'नया ज़मीन सुधार क़ानून' पास किया गया जिसके मुताबिक़ ज़मींदारों के पास की सारी बेशी ज़मीन उनसे लेकर बेज़मीन वाले खेती मज़दूरों में बांट दी गई. लेकिन नए हाकिमों ने यह एहतियात रखी कि किसी ज़मींदार को रोज़ी के साधनों से महरूम न किया जाए ताकि वह अपने बाल-बच्चों का पेट पाल सके. हर ज़मींदार के पास कम से कम इतनी ज़मीन छोड़ दी गई जितनी एक मामूली किसान को दी जाती थी. कभी कभी उससे ज़्यादा ज़मीन भी ज़मींदार को दे दी गई जिससे वह बड़े मज़े में अपनी और अपने बाल बच्चों की परवरिश कर सकता है. जेवर या नक़दी जिसके पास जो कुछ था रहने दिया गया. इसके अलावा अगर किसी ज़मींदार के पास कोई कारख़ाना था या वह कोई धन्दा करता था तो उसमें भी हाथ नहीं लगाया गया. यही नहीं, सरकार ने ऐसे कामों में पुराने ज़मींदारों की मदद की और उनका हौसला बढ़ाया.

चीन के नए हाकिम इस ज़मीन सुधार क़ानून को अपनी नई अर्थ-व्यवस्था की बुनियाद मानते हैं. यह सब करिशमा सरकारी हाकिमों या हुक्मनामों के ज़रिये से नहीं किया गया बल्कि गांव वालों ने ख़ुद अपने आप किया. वे जमा हो कर आपस में तय कर लेते थे कि अपने इलाक़े में ज़मीन सुधार के सिलसिले में क्या किया जाए और ज़मीनें कैसे तक़सीम की जाएं. इस क़ानून की बदौलत आज चीन में 30 करोड़ बेज़मीन वाले मज़दूर ज़मीन के मालिक बन गए हैं और ठाठ से अपनी ज़मीन पर खेती कर रहे हैं. उम्मीद की जाती है कि 1952 के जून तक यह खेती सुधार सारे चीन में पूरा किया जा सकेगा.

अपने यहां की खेती की पैदावार संभालने के लिये सरकार ने दूसरी चीज़ जो की वह थी लगानबन्दी की

اناج کی پیداوار بڑھائی جائے . نئی سرکار نے دیکھا کہ چین کی ساڑھے سینتالیس کروڑ آبادی میں اکتالیس کروڑ سے اوپر کسان ہیں' جن کا ایک ماتر سہارا کھیتی ہے . لیکن زمین کی ساری ملکیت 10 فی صدی زمیندار یا رئیس کسان کے ہاتھ میں تھی . باقی 90 فی صدی غریب کسان یا بے زمین والے مزدور تھے . چین میں کھیتی کے لائق 140 کروڑ مئو (قریب 24 کروڑ ایکڑ) زمین میں سے 80 فی صدی زمینداروں اور رئیس کسانوں کے ہاتھ میں تھی' باقی 20 فی صدی غریب کسانوں اور کھیتی مزدوروں میں بٹی ہوئی تھی' جن کی تعداد کل کھیتی آبادی کی 90 فی صدی کے قریب تھی .

نیا زمین سدھار .

نئی سرکار نے ٹھان لیا کہ یہ اندھا دھندی تو ختم ہی ہونا چاہئے . ' نیا زمین سدھار قانون ' پاس کیا گیا جسکے مطابق زمینداروں کے پاس کی ساری بیشی زمین اُن سے لے کر بے زمین والے کھیتی مزدوروں میں بانٹ دی گئی . لیکن نئے حاکموں نے یہ احتیاط رکھی کہ کسی زمیندار کو روزی کے سادھنوں سے محروم نہ کیا جائے تاکہ وہ اپنے بال بچوں کا پیٹ پال سکے . ہر زمیندار کے پاس کم سے کم اتنی زمین چھوڑ دی گئی جتنی ایک معمولی کسان کو دی جاتی تھی . کبھی کبھی اُس سے زیادہ زمین بھی زمیندار کو دے دی گئی جس سے وہ بڑے مزے میں اپنی اور اپنے بال بچوں کی پرورش کر سکتا ہے . زیور یا نقدی جسکے پاس جو کچھ تھا رہنے دیا گیا . اِسکے علاوہ اگر کسی زمیندار کے پاس کوئی کارخانہ تھا یا وہ کوئی دھندا کرتا تھا تو اُس میں بھی ہاتھ نہیں لگایا گیا . یہی نہیں' سرکار نے ایسے کاموں میں پرانے زمینداروں کی مدد کی اور اُن کا حوصلہ بڑھایا .

چین کے نئے حاکم اِس زمین سدھار قانون کو اپنی نئی ارتھ ویوستھا کی بنیاد مانتے ہیں . یہ سب کرشمہ سرکاری حاکموں یا حکم ناموں کے ذریعے سے نہیں کیا گیا بلکہ گاؤں والوں نے خود اپنے آپ کیا . وہ جمع ہوکر آپس میں طے کر لیتے تھے کہ اپنے علاقے میں زمین سدھار کے سلسلے میں کیا کیا جائے اور زمینیں کیسے تقسیم کی جائیں . اِس قانون کی بدولت آج چین میں 30 کروڑ بے زمین والے مزدور زمین کے مالک بن گئے ہیں اور ٹھاٹھ سے اپنی زمین پر کھیتی کر رہے ہیں . اُمید کی جاتی ہے کہ 1952 کے جون تک یہ کھیتی سدھار سارے چین میں پورا کیا جا سکے گا .

اپنے یہاں کی کھیتی کی پیداوار سنبھالنے کے لئے سرکار نے دوسری چیز جو کی وہ تھی لگان بندی کی

हमारे इस दौरे से एक ख़याल हर किसी के अन्दर पैदा होता है. वह यह कि क्या हम हिन्दुस्तान के लोग भी नए चीन से कोई सबक़ सीख सकते हैं. और अगर सीख सकते हैं तो वह सबक़ क्या है और उससे किस तरह देश की हालत को संभाला जा सकता है.

चीनी लोग नए लोकराज के क़ायम होने को 'आजादी' (लिबरेशन) नाम से पुकारते हैं. आजादी के पहले वहां पर कोमिनटांग पारटी का राज था जिस के सिरमौर जनरल चियांग काई शेक थे. उस सरकार की राय थी कि चीन की बढ़ती हुई आबादी की जरूरत के मुताबिक़ यहां अनाज नहीं पैदा होता और इसलिये अनाज बाहर से मंगाना चाहिये. सच यह है कि विदेश से, ख़ास कर अमरीका से, करोड़ों मन ग़ल्ला आया करता था. तिस पर भी देश के किसी न किसी हिस्से में अकाल पड़ता था या खाने की कमी की शिकायत रहती थी. कुछ इलाक़ों में बाढ़ की वजह से खेती करना नामुमकिन था. दूसरों में पानी न बरसने की वजह से बंटाधार हो जाता था. फिर ऊपर से सवारी की दिक़्क़त थी जिसकी वजह से मुसीबत ज़दा लोगों की मदद के लिये अनाज इधर से उधर आसानी से आ-जा नहीं सकता था.

आजादी के पहले चीन में काग़ज़ी नोटों की इतनी भरमार थी कि सन 1939 वाली लड़ाई के पहले जितने नोट ज़ियादा चलते थे उसके मुक़ाबले 1770 खरब गुने नोट ज़ियादा चलने लग गए थे. सन 1940 और 1948 के बीच की इस हालत की यह जानकारी हमें चीन के पीपुल्स बैंक के मुखिया से ही मिली है. चीज़ों के भाव इतनी शिद्दत से बढ़ गए थे कि सुनकर तबियत दंग रह जाती थी. लड़ाई के पहले अगर किसी आदमी का सौ इकाई से काम चलता था तो उस वक़्त 1388-4000 खरब इकाइयां चाहिये थीं. इसका मतलब यह है कि अगर किसी के पास दस हजार चीनी डालर होते तो उससे वह दियासलाई की एक कांटी भी नहीं ख़रीद सकता था, पूरी दियासलाई की पेटी की तो बात ही क्या है. इसके अलावा, लोगों का कहना है कि उस ज़माने में चीन के जैसे घूसखोर हाकिम दुनिया में और कहीं मुश्किल से थे. बड़े बड़े कारखाने वाले, फ़ौजी सामान का व्योपार करने वाले, ज़मींदार और रईस लोग ऐश-आराम करते थे और भोग-बिलास की ज़िन्दगी बिताते थे, लेकिन लाखों करोड़ों ग़रीबी और बेकसी में पिसे जा रहे थे. इसका ज़रूरी नतीजा यह था कि बेरोज़गारी, वेश्यापन और भिकमंगी का देश भर में बोल बाला था.

1949 में जब नई सरकार ने राज संभाला तो पहला इरादा उसने यह किया कि देश में से ग़रीबी ख़त्म करके

ہمارے اِس دورے سے ایک خیال ہر کسی کے اندر پیدا ہوتا ہے . وہ یہ کہ کیا ہم ہندستان کے لوگ بھی نئے چین سے کوئی سبق سیکھ سکتے ہیں . اور اگر سیکھ سکتے ہیں تو وہ سبق کیا ہے اور اُس سے کس طرح دیش کی حالت کو سنبھالا جاسکتا ہے .

چینی لوگ نئے لوک راج کے قائم ہونے کو 'آزادی' (لبریشن) نام سے پکارتے ہیں . آزادی کے پہلے وہاں پر کومنتانگ پارٹی کا راج تھا جس کے سرمور جنرل چیانگ کائی شیک تھے . اُس سرکار کی رائے تھی کہ چین کی بڑھتی ہوئی آبادی کی ضرورت کے مطابق یہاں اناج نہیں پیدا ہوتا اور اس لئے اناج باہر سے منگانا چاہئے . سچ یہ ہے کہ ودیش سے' خاص کر امریکہ سے' کروڑوں من غلہ آیا کرتا تھا . تس پر بھی دیش کے کسی نہ کسی حصے میں اکال پڑتا تھا یا کھانے کی کمی کی شکایت رہتی تھی . کچھ علاقوں میں باڑھ کی وجہ سے کھیتی کرنا ناممکن تھا . دوسروں میں پانی نہ برسنے کی وجہ سے بنٹا دھار ہوجاتا تھا. پھر اوپر سے سواری کی دقت تھی جس کی وجہ سے مصیبت زدہ لوگوں کی مدد کے لئے اناج اِدھر سے اُدھر آسانی سے آجا نہیں سکتا تھا .

آزادی کے پہلے چین میں کاغذی نوٹوں کی اتنی بھرمار تھی کہ سن 1939 والی لڑائی کے پہلے جتنے نوٹ زیادہ چلتے تھے اُس کے مقابلے 1770 کھرب گنے نوٹ زیادہ چلنے لگ گئے تھے. سن 1940 اور 1948 کے بیچ کی اِس حالت کی یہ جانکاری ہمیں چین کے پیپلس بینک کے مکھیا سے ہی ملی ہے . چیزوں کے بھاؤ اتنی شدت سے بڑھ گئے تھے کہ سن کر طبیعت دنگ رہ جاتی تھی . لڑائی کے پہلے اگر کسی آدمی کا سو اِکائی سے کام چلتا تھا تو اُس وقت 13884000 کھرب اکائیاں چاہئے تھیں . اِس کا مطلب یہ ہے کہ اگر کسی کے پاس دس ہزار چینی ڈالر ہوتے تو اُس سے وہ دیاسلائی کی ایک کانٹی بھی نہیں خرید سکتا تھا' پوری دیاسلائی کی پیٹی کی تو بات ہی کیا ہے . اِس کے علاوہ' لوگوں کا کہنا ہے کہ اُس زمانے میں چین کے جیسے گھوس خور حاکم دنیا میں اور کہیں مشکل سے تھے . بڑے بڑے کارخانے والے' فوجی سامان کا بیوپار کرنے والے' زمیندار اور رئیس لوگ عیش آرام کرتے تھے اور بھوگ ولاس کی زندگی بتاتے تھے' لیکن لاکھوں کروڑوں غریبی اور بے کسی میں پسے جارہے تھے . اس کا ضروری نتیجہ یہ تھا کہ بے روزگاری' ویشیاپن اور بھکمنگی کا دیش بھر میں بول بالا تھا .

1949 میں جب نئی سرکار نے راج سنبھالا تو پہلا اِرادہ اُس نے یہ کیا کہ دیش میں سے غریبی ختم کرکے

हमारी राय
ہماری رائے

नए चीन का संदेश

पहली अक्तूबर 1951 को नए चीन के लोकराज की दूसरी सालगिरह थी. चीन की कई संस्थाओं की यह इच्छा हुई कि हिन्दुस्तान व दूसरे देशों के डेलीगेशन इस ख़ुशी के मौक़े पर उनके साथ शरीक हों. इसलिये उन संस्थाओं ने, जिनमें पांच ख़ास हैं--कुल चीन पीस कौंसिल, कुल चीन फ़ेडरेशन आफ़ लेबर, कुल चीन डेमोक्रेटिक विमेन्स फ़ेडरेशन, कुल चीन डेमोक्रेटिक वर्कर्स फ़ैडरेशन और कुल चीन फ़ेडरेशन आफ़ लिट्रेचर एन्ड आर्ट सर्किल्ज़ ने नई दिल्ली वाले चीनी राजदूत के ज़रिये हिन्द जनता के एक डेलीगेशन के आने के लिये दावत नामा भेजा और यह इच्छा ज़ाहिर की कि इस डेलीगेशन में हिन्द चीन दोस्ती संघ, कुल हिन्द पीस कौंसिल, ट्रेड यूनियन और विमेन हलक़ों के प्रतिनिधि, और हिन्दुस्तान के नामी विद्वान, लेखक, साइन्सदां, शिक्षाशास्त्री वग़ैरा भी शामिल हों. यह दावत नामा सितम्बर के पहले हफ़्ते के आख़ीर में मिला था और दिल्ली से हवाई जहाज़ में रवाना होने की आख़िरी तारीख़ 20 सितम्बर थी. इसलिये जल्दी जल्दी में सब इन्तज़ाम किया गया. फिर भी यह कोशिश की गई कि डेलीगेशन में सब सूबों के और तरह तरह की विचार धारा वाले लोग हों.

डेलीगेशन के 13 मेम्बर थे और 2 सेक्रेटरी. चीन में हम लोग 39 दिन तक रहे. दक्खिन से लेकर उत्तर तक हमने चीन के सात बड़े बड़े शहर देखे—कैन्टन, पेकिंग, मुकडन, टिन्टसिन, नानकिंग, शंघाई और हांगचू. हम नए चीन की यूनिवर्सिटियों, स्कूलों, कालिजों, निजी और सरकारी कारख़ानों, गांवों और बाज़ार हाटों में भी गए. हमने वहां की अदालतों को काम करते देखा, चीन के नए लोक संगठनों के काम करने के तरीक़ों को देखा समझा. हमने वहां के सिनेमा, थेटर, देहातों और दस्तकारी नुमायशें भी देखीं. हमारे ऊपर कोई पाबन्दी नहीं थी. हम जहां चाहें जा सकते थे, जो चाहें देख सकते थे. क्या सरकार, क्या जनता, सभी हमारे साथ प्रेम से पेश आते और दिल खोल कर बात करते थे.

نئے چین کا سندیش

پہلی اکتوبر 1951 کو نئے چین کے لوک راج کی دوسری سال گرہ تھی. چین کی کئی سنستھاؤں کی یہ اِچھا ہوئی کہ ہندستان و دوسرے دیشوں کے ڈیلی گیشن اِس خوشی کے موقعے پر اُن کے ساتھ شریک ہوں. اس لئے اُن سنستھاؤں نے، جن میں پانچ خاص ہیں—کل چین پیس کونسل، کل چین فیڈریشن آف لیبر، کل چین ڈیموکریٹک ویمنس فیڈریشن، کل چین ڈیموکریٹک ورکرس فیڈریشن اور کل چین فیڈریشن آف لٹریچر اینڈ آرٹ سرکلز نے نئی دلی والے چینی راج دوت کے ذریعے ہند جنتا کے ایک ڈیلی گیشن کے آنے کے لئے دعوت نامہ بھیجا اور یہ اِچھا ظاہر کی کہ اِس ڈیلی گیشن میں ہند چین دوستی سنگھ، کل ہند پیس کونسل، ٹریڈ یونین اور ویمن حلقوں کے پرتی ندھی اور ہندستان کے نامی ودوان، لیکھک، سائنس داں، شکشا شاشتری وغیرہ بھی شامل ہوں. یہ دعوت نامہ ستمبر کے پہلے ہفتے کے آخیر میں ملا تھا اور دلی سے ہوائی جہاز میں روانہ ہونے کی آخری تاریخ 20 ستمبر تھی. اِسلئے جلدی جلدی میں سب انتظام کیا گیا. پھر بھی یہ کوشش کی گئی کہ ڈیلی گیشن میں سب صوبوں کے اور طرح طرح کی وچار دھارا والے لوگ ہوں.

ڈیلی گیشن کے 13 ممبر تھے اور 2 سکریٹری. چین میں ہم لوگ 39 دن تک رہے. دکھن سے لے کر اتر تک ہم نے چین کے سات بڑے بڑے شہر دیکھے—کینٹن، پیکنگ، مکڈن، ٹنٹسن، نانکنگ، شنگھائی اور ہانگ چو. ہم نئے چین کی یونیورسٹیوں، اسکولوں، کالجوں، نجی اور سرکاری کارخانوں، گاؤں اور بازار ہاٹوں میں بھی گئے. ہم نے وہاں کی عدالتوں کو کام کرتے دیکھا. چین کے نئے لوک سنگٹھنوں کے کام کرنے کے طریقوں کو دیکھا سمجھا. ہم نے وہاں کے سنیما، تھیٹر، دیہاتی اور دستکاری نمائشیں دیکھیں. ہمارے اوپر کوئی پابندی نہیں تھی. ہم جہاں چاہیں جاسکتے تھے، جو چاہیں دیکھ سکتے تھے. کیا سرکار، کیا جنتا، سبھی ہمارے ساتھ پریم سے پیش آتے اور دل کھول کر بات کرتے تھے.

शुरू. हिन्दुस्तान की बड़ी अदालत—सुप्रीम कोर्ट के चीफ़ जसटिस का देहान्त हो गया.

7. रूसी इन्क़लाब की 34 वीं सालगिरह—मास्को में परेड. शान्ति के लिये अमरीकी राज पति ट्रूमैन का ब्राडकास्ट—निहत्था करने के लिये तीन मद वाली योजना कश्मीर क़ानून सभा का इजलास ख़त्म.

8. रूसी विदेश मंत्री, विशिन्सकी का पांचों बड़ी ताक़तों की मीटिंग के लिये सुझाव. वर्ल्ड बैन्क मिशन बम्बई पहुंचा—हिन्दुस्तान में पांच हफ़्ते रहेगा.

9. स्वेज़ शहर और पोर्ट सईद में कारोबार बन्द. कनाडा हिन्दुस्तान को एक करोड़ डालर का गेहूँ देगा.

10. सिक्युरिटी कौंसिल ने कशमीर के मामले में डाक्टर ग्राहम को छै हफ़्तों की मोहलत और दी. सीरिया की सरकार ने स्तीफ़ा दे दिया. बीच पूरबी फ़ौजी दल बनाने के लिये फ़्रांस, अमरीका, ब्रिटेन और रूस की तरफ़ से बयान.

11. बीच पूरबी फ़ौजी दल वालों के बयान पर आज़म पाशा का एतराज़. सूडान में "मुश्तरका मोर्चे" के नाम से एक नया आन्दोलन. उत्तर प्रदेश के 11 पूरबी ज़िलों के 13000 गांवों के 31 लाख लोगों के लिये अनाज का टोटा.

12. ब्रिटेन के बड़े वज़ीर अमरीकी राजपति से जनवरी में मिलेंगे. चुनाव ख़ूबसूरती और नेक दिली से चलाने के लिये पंडित जवाहर लाल की देश भर से अपील.

13. मिस्र में तीन दिन के लिये ख़तरे की हालत का एलान. नैपाल के बड़े वज़ीर राना का इस्तीफ़ा. आचार्य विनोबा जी भूदान यज्ञ के सिलसिले में पैदल सफ़र करते हुए दिल्ली पहुँचे.

14. क़ाहिरा में अंगरेज़ों के ख़िलाफ़ दिन मनाने के लिये पाँच लाख का जुलूस—बड़े वज़ीर नहास पाशा आगे आगे. सऊदी अरब और सीरिया मिस्र के हक़ में हैं. नैपाल में श्री कोइरेला नई मिनिस्ट्री बनाएंगे. रिज़र्व बैंक ने सूद की दर तीन फ़ी सदी से बढ़ा कर साढ़े तीन फ़ी सदी कर दी.

15. वाशिंगटन में ईरानी बड़े वज़ीर डाक्टर मुस्सादिक़ का ऐलान—ईरान की माली हालत ख़तरे में—अमरीका ने रुपया देने से इनकार कर दिया. दक्खिनी अफ़रीक़ा में मनी लाल गांधी का गोरे क़ानून पर विरोध.

. هندستان کی بڑی عدالت — سپریم کورٹ — کے
چسٹس کا دیہانت ہوگیا .

. روسی انقلاب کی 34 ویں سال گرہ — ماسکو
ریڈ . شانتی کے لئے امریکی راج پتی ٹرومین کا
ـت — نہتھا کرنے کے لئے تین مد والی یوجنا .
قانون سبھا کا اجلاس ختم .

. روسی ودیش منتری، وشنس کا پانچوں بڑی
ں کی میٹنگ کے لئے سجھاؤ . ورلڈ بینک مشن
ی پہونچا — هندستان میں پانچ ہفتے رہے گا .

. سوئز شہر اور پورٹ سعید میں کاروبار بند .
هندستان کو ایک کروڑ ڈالر کا گیہوں دیگا .

1. سکیورٹی کونسل نے کشمیر کے معاملے میں
راہم کو چھ ہفتوں کی مہلت اور دی . سیریا کی
نے استعفیٰ دے دیا . بیچ پوربی فوجی دل بنانے
فرانس، امریکہ، برٹین اور روس کی طرف سے بیان .

1. بیچ پوربی فوجی دل والوں کے بیان پر اعظم
کا اعتراض . سوڈان میں "مشترکہ مورچے" کے نام
ـے نیا آندولن . اُتر پردیش کے 11 پوربی ضلعوں کے
13 گاؤں میں 31 لاکھ لوگوں کے لئے اناج کا توتا .

1. برٹین کے بڑے وزیر امریکی راج پتی سے جنوری
ملینگے . چناؤ خوبصورتی اور نیک دلی سے چلانے
. پنڈت جواہر لال کی دیش بھر سے اپیل .

1. مصر میں تین دن کے لئے خطرے کی حالت
ان . نیپال کے بڑے وزیر رانا کا استعفیٰ . آچاریہ
جی بھودان یگیہ کے سلسلے میں پیدل سفر کرتے
دلی پہونچے .

1. قاہرہ میں انگریزوں کے خلاف دن منانے کے
نچ لاکھ کا جلوس — بڑے وزیر نحاس پاشا آگے آگے .
ی عرب اور سیریا مصر کے حق میں ہیں . نیپال
شری کوئرالا نئی منسٹری بنائینگے . رزرو بینک نے
کی در تین فی صدی سے بڑھا کر ساڑھے تین فی
کر دی .

1. واشنگٹن میں ایرانی بڑے وزیر ڈاکٹر مصادق
ن — ایران کی مالی حالت خطرے میں — امریکہ
پیہ دینے سے انکار کر دیا . دکھنی افریقہ میں منی
دھی کا گورے قانون پر ورودھ .

26. अंगरेजी चुनाव में कंजरवेटिव दल जीत गया—चरचिल साहब बड़े वज़ीर बने.

27. कोरिया में सुलह की बात चीत जारी. तिब्बत के दलाई लामा ने चीन सरकार को क़बूल किया. गुजरात में अकाल. मध्य भारत का दौरा करते हुए विनोबा जी आगरा ज़िले में घूमे.

28. चीन से एक गुडविल मिशन कलकत्ता पहुँचा.

29. पूरबी उत्तर प्रदेश में फ़सल की खराबी से पांच लाख आदमियों को नुक़सान.

30. कम्बोडिया में फ़्रान्सीसी हाई कमिश्नर मार-डाला गया. ब्रिटेन के फ़ौजी अफ़सरों का आपस में मशवरा.

31. बीच पूरबी पैक्ट में शरीक होने न होने के वास्ते रूस की चेतावनी. नार्वे अटलांटिक पैक्ट में शामिल होगा. श्रीनगर में कश्मीर क़ानून सभा का इजलास शुरू. विलायती खाद बनाने वाले सिन्द्री (बिहार) के कारखाने में काम शुरू.

नवम्बर

1. चीन ने पंच क़ौम सुलहनामे के लिये अपील की. अंगरेज़ी हाकिमों को मिस्र सरकार की चेतावनी. थाई लैंड में कम्यूनिस्ट कारवाई ज़ोरों पर. बंगाल के नए गवर्नर डाक्टर हरेन्द्र कुमार मुकरजी ने चार्ज लिया.

2. मराको में पुलिस और जनता में मुठभेड़—पांच आदमी हलाक. ब्रिटेन ने मिस्र में फ़ौजें पहुँचाईं. हिन्द गुडविल मिशन—सदर पंडित सुन्दर लाल—चीन से नई दिल्ली वापिस आया.

3. मिस्र की नील नदी की घाटी में तेल पर से अंगरेज़ों ने रोक टोक हटा ली. हिन्दुस्तान बरसों तक अनाज के मामले में स्वावलम्बी नहीं हो सकता—ग्वालियार में प्लानिंग कमीशन के एक मेम्बर का बयान.

4. अटलान्टिक पैक्ट में शामिल होने पर रूस की तुरकी को चेतावनी. सीरिया में राजकाजी हल चल. खेती की तालीम के लिये एक कुल हिन्द कौंसिल आफ़ एग्रीकलचरल एजुकेशन बनाई जाएगी.

5. अरब देश मिस्र के साथ हैं—आज़म पाशा का बयान. स्वेज़ नहर के इलाक़े में अंगरेज़ों के खिलाफ़ मिस्र वालों ने "आज़ादी" की कारवाई शुरू की. दिल्ली यूनिवर्सिटी ने चीन गुडविल मिशन के सदर व एक मेम्बर को डाक्टरेट की डिग्री भेंट की.

6. अंगरेजी नई पार्लिमेन्ट के खुलने पर बादशाह की स्पीच. यूनो की जनरल असेम्बली का पैरिस में इजलास

.26 انگریزی چناؤ میں کازرویٹو دل جیت گیا —چرچل صاحب بڑے وزیر بنے ۔

.27 کوریا میں صلح کی بات چیت جاری ۔ تبت کے دلائی لاما نے چین سرکار کو قبول کیا ۔ گجرات میں اکال ۔ مدھیہ بھارت کا دورہ کرتے ہوئے ونوبا جی آگرہ ضلع میں گھومے ۔

.28 چین سے ایک گڈول مشن کلکتہ پہنچا ۔

.29 پوربی اُتر پردیش میں فصل کی خرابی سے پانچ لاکھ آدمیوں کو نقصان ۔

.30 کمبوڈیا میں فرانسیسی ہائی کمشنر مار ڈالا گیا ۔ برٹین کے فوجی افسروں کا آپس میں مشورہ ۔

.31 بیچ پوربی پیکٹ میں شریک ہونے نہ ہونے کے واسطے روس کی چیتاونی. ناروے اٹلانٹک پیکٹ میں شامل ہوگا ۔ شری نگر میں کشمیر قانون سبھا کا اجلاس شروع ۔ ولایتی کھاد بنانے والے سندری (بہار) کے کارخانے میں کام شروع ۔

نومبر

.1 چین نے پانچ قوم صلح نامہ کے لئے اپیل کی ۔ انگریزی حاکموں کو مصر سرکار کی چیتاونی ۔ تھائی لینڈ میں کمیونسٹ کاروائی زوروں پر ۔ بنگال کے نئے گورنر ڈاکٹر ہریندر کمار مکرجی نے چارج لیا ۔

.2 مراکو میں پولیس اور جنتا میں مٹھ بھیڑ — پانچ آدمی ہلاک برٹین نے مصر میں فوجیں پہونچائیں ۔ ہندگڈول مشن — صدر پنڈت سندرلال — چین سے نئی دلی واپس آیا ۔

.3 مصر کی نیل ندی کی گھاٹی میں تیل پر سے انگریزوں نے روک ٹوک ہٹالی. ہندستان برسوں تک اناج کے معاملے میں سواولمبی نہیں ہو سکتا — گوالیار میں پلاننگ کمیشن کے ایک ممبر کا بیان ۔

.4 اٹلانٹک پیکٹ میں شامل ہونے پر روس کی ترکی کو چیتاونی ۔ سیریا میں راج کاجی ہل چل ۔ کھیتی کی تعلیم کے لئے ایک کل ہند کونسل آف اگریکلچرل ایجوکیشن بنائی جائے گی ۔

.5 عرب دیش مصر کے ساتھ ہیں — اعظم پاشا کا بیان ۔ سوئز نہر کے علاقے میں انگریزوں کے خلاف مصر والوں نے '' آزادی '' کی کاروائی شروع کی. دلی یونیورسٹی نے چین گڈول مشن کے صدر و ایک ممبر کو ڈاکٹریٹ کی ڈگری بھینٹ کی ۔

.6 انگریزی نئی پارلیمنٹ کے کھلنے پر بادشاہ کی اسپیچ. یو نو کی جنرل اسمبلی کا پیرس میں اجلاس

देश विदेश की डायरी

(16 अक्तूबर 1951 से 15 नवम्बर 1951 तक)

अक्तूबर

16. क़ाहिरा और सिकंदरिया में अंगरेज़ों के खिलाफ़ सरगरमियां. कश्मीर के बारे में डाक्टर ग्राहम ने अपनी रिपोर्ट सिक्युरिटी कौंसिल में पेश की. पाकिस्तान के बड़े वज़ीर नवाब ज़ादा लियाक़त अली खां रावलपिंडी में गोली से मार दिये गए.

17. ख्वाजा नाज़िमुद्दीन पाकिस्तान के बड़े वज़ीर और सैयद ग़ुलाम मुहम्मद गवरनर जनरल मुक़र्रर किये गए. सत्यवती नगर (नई दिल्ली) में हिन्द कांगरेस का 57 वां इजलास शुरू.

18. मिस्र में स्वेज़ नहर के इलाक़े में अंगरेज़ी और मिस्री फ़ौजों में मुक़ाबला. पंडित नेहरू की सदारत में कांगरेस का खुला इजलास.

19. मिस्र सत्याग्रह करेगा—अंगरेज़ी चीज़ों का बाईकाट शुरू. कांगरेस का इजलास ख़त्म. 24 बरस पुरानी आल इंडिया स्टेटस पीपुल्ज़ कान्फ्रेंस ने अपना संगठन ख़त्म किया.

20. दिल्ली में भारती जन संघ का डाक्टर श्यामा प्रशाद मुकरजी की सदारत में पहला जलसा. गुजरात से लेकर पंजाब तक 1000 मील लम्बे इलाक़े में फ़सल को भारी नुक़सान.

21. कोरिया में अमरीकी और कम्यूनिस्ट अफ़सर सुलह की बात चीत करने को तैयार. बर्मा के बड़े वज़ीर नई दिल्ली पहुंचे.

22. स्वेज़ नहर की जहाज़रानी पर अंगरेज़ों का क़ब्ज़ा. चीनी नेता माओ-त्से-तुंग की अमरीका से ईमानदारी के लिये अपील. फ़ारमूसा में ज़लज़ला.

23. मिस्र अपने हक़ के लिये लड़ने को तैयार—नहासपाशा का एलान. कम्यूनिस्टों ने तेलंगाना (हैदराबाद) में आन्दोलन बन्द किया. तालीम का ढंग बदलने के लिये बम्बई के बड़े वज़ीर बाला साहब की अपील.

24. यूनो डे दुनिया में जगह जगह मनाया गया. मिस्र में अंगरेज़ों के खिलाफ़ जगह जगह जुलूस व मीटिंग. सूबा सरहद में आज़ाद चुनाव के लिये पख़्तूनों की मांग.

25. ब्रिटेन में आम चुनाव. पन-मन-जू. (कोरिया) में सुलह की बात चीत शुरू. हिमाचल प्रदेश में चुनाव शुरू.

دیش ودیش کی ڈائری

(16 اکتوبر 1951 سے 15 نومبر 1951 تک)

اکتوبر

16. قاہرہ اور سکندریا میں انگریزوں کے خلاف سرگرمیاں . کشمیر کے بارے میں ڈاکٹر گراہم نے اپنی رپورٹ سیکیورٹی کونسل میں پیش کی. پاکستان کے بڑے وزیر نواب زادہ لیاقت علی خاں راول پنڈی میں گولی سے مار دئے گئے .

17. خواجہ ناظم الدین پاکستان کے بڑے وزیر اور سید غلام محمد گورنر جنرل مقرر کئے گئے . ستیہ وتی نگر (نئی دلی) میں ہند کانگریس کا 57 واں اجلاس شروع.

18. مصر میں سوئز نہر کے علاقے میں انگریزی اور مصری فوجوں میں مقابلہ . پنڈت نہرو کی صدارت میں کانگریس کا کھلا اجلاس .

19. مصر ستیاگرہ کریگا—انگریزی چیزوں کا بائی کاٹ شروع . کانگریس کا اجلاس ختم . 24 برس پرانی آل انڈیا اسٹیٹس پیوپل کانفرنس نے اپنا سنگھٹن ختم کیا .

20. دلی میں بھارتی جن سنگھ کا ڈاکٹر شیاما پرشاد مکرجی کی صدارت میں پہلا جلسہ . گجرات سے لیکر پنجاب تک 1000 میل لمبے علاقے میں فصل کو بھاری نقصان .

21. کوریا میں امریکی اور کمیونسٹ افسر صلح کی بات چیت کرنے کو تیار . برما کے بڑے وزیر نئی دلی پہونچے .

22. سویز نہر کی جہاز رانی پر انگریزوں کا قبضہ . چینی نیتا ماؤتسے تنگ کی امریکہ سے ایمانداری کے لئے اپیل . فارموسا میں زلزلہ .

23. مصر اپنے حق کے لئے لڑنے کو تیار — نحاس پاشا کا اعلان . کمیونسٹوں نے تیلنگانہ (حیدرآباد). میں آندولن بند کیا . تعلیم کا ڈھنگ بدلنے کے لئے بمبئی کے بڑے وزیر بالا صاحب کی اپیل .

24. یونو ڈے دنیا میں جگہ جگہ منایا گیا . مصر میں انگریزوں کے خلاف جگہ جگہ جلوس و میٹنگ . صوبہ سرحد میں آزاد چناؤ کے لئے پختونوں کی مانگ .

25. برٹین میں عام چناؤ . پن . من . جو . (کوریا) میں صلح کی بات چیت شروع . ہماچل پردیش میں چناؤ شروع .

फिर से दोस्ती क़ायम.

अब हम अपने चीनी दोस्तों से बिदा मांगते हैं. सिर्फ़ अपने मेज़बानों से ही नहीं बल्कि चीन की महान जनता से बिदा मांगते हैं. जनता की तरफ़ से स्वागत और शुभ कामनाएं जहां भी हम गए हर जगह हमें मिलती रहीं—पेकिंग या टिनसिन, नानकिंग या शंघाई, कैन्टन या मुकडन, गांव या कारख़ाने, यूनिवर्सिटी या स्कूल, अदालतें या थेटर. सच यह है कि सड़कों-गलियों तक में अजनबी लोगों ने भाई चारे व दोस्ती की मुस्कान के साथ हमारा स्वागत किया.

अब हम वापस जा रहे हैं. ऐसे वक़्त अपनी अहसान मन्दी दिखलाने का हमारे पास सिर्फ़ एक ही ज़रिया है. वह यह कि अपने लोगों के पास—जिनके प्रतिनिधि बन कर हम यहां आए—जाकर हम वह शुभ कामनाएं पहुंचा दें जो नए चीन की जनता और नेताओं से हमें मिलीं. और उस अचरज भरी हर-पहलू तरक़्क़ी की भी जानकारी उन्हें दें जो आपने इन दो बरसों में की है. इस तरह हमको आपको मिलाने वाले प्रेम और दोस्ती के—जो सम्बन्ध दो हज़ार बरस से चले आते हैं—बन्धन में बांधने वाले धागे को फिर से जोड़ कर हम मज़बूत और पक्का करेंगे.

सुन्दर लाल (सद्र)
आर. के. करंजिया.
टी. चक्रवर्ती.
(बहन) हन्ना सेन.
जे. सी. कुमारप्पा.
ख़्वाजा अहमद अब्बास.
वी. के. आर. वी. राव.
जी. पी. हत्थी सिंह.
निर्मल भट्टाचार्य.
एम. भगेरिया.
वी. कल्यानम.
और पुरुषोत्तम परशाद.

پھر سے دوستی قائم .

اب ہم اپنے چینی دوستوں سے بدا مانگتے ہیں . صرف اپنے میزبانوں سے ہی نہیں بلکہ چین کی مہان جنتا سے بدا مانگتے ہیں . جنتا کی طرف سے سواگت اور شبھ کامنائیں جہاں بھی ہم گئے ہر جگہ ہمیں ملتی رہیں — پیکنگ یا ٹینسن' نانکن یا شنگھائی' کینٹن یا مکڈن' گاؤں یا کارخانے' یونیورسٹی یا اسکول' عدالتیں یا تھیٹر. سچ یہ ہے کہ سڑکوں گلیوں تک میں اجنبی لوگوں نے بھائی چارے و دوستی کی مسکان کے ساتھ ہمارا سواگت کیا .

اب ہم واپس جا رہے ہیں . ایسے وقت اپنی احسان مندی دکھلانے کا ہمارے پاس صرف ایک ہی ذریعہ ہے. وہ یہ کہ اپنے لوگوں کے پاس — جن کے پرتی ندھی بن کر ہم یہاں آئے — جا کر ہم وہ شبھ کامنائیں پہونچا دیں جو نئے چین کی جنتا اور نیتاؤں سے ہمیں ملیں . اور اُس اچرج بھری ہر پہلو ترقی کی بھی جانکاری اُنہیں دیں جو آپ نے ان دو برسوں میں کی ہے . اِسطرح ہمکو آپ کو ملانے والے پریم اور دوستی کے—جو سمبندھ دو ہزار برس سے چلے آتے ہیں— بندھن میں باندھنے والے دھاگے کو پھر سے جوڑ کر ہم مضبوط اور پکا کریں گے .

سندر لال . (صدر)
آر . کے . کرنجیا .
ٹی چکرورتی .
(بہن) ھناسین .
جے . سی . کمارپیا .
خواجہ احمد عباس .
وی . کے . آر . وی . راؤ .
جی . پی . ھتھی سنگھ .
نرمل بھٹا چاریہ .
ایم بھگیریا .
وی . کلیانم .
اور پرشوتم پرشاد .

पुनर्जन्म हो रहा है. हमारे चीनी भाईयों के पास युगों का अनुभव और जानकारी है. उनके अन्दर सदियों पुरानी इनसानी कलचर के संस्कार हैं. सैकड़ों बरसों की जागीरदारी, गुलामी और साम्राजशाही, शोशन के बावजूद उनकी हिम्मत और नेकी में रत्ती भर भी फ़र्क़ नहीं आया है. अब हमारे इन भाईयों को प्रेरना और शक्ति का एक नया सोता मिल गया है जो उन्हें हमेशा मस्त रखता है. यह सोता है चीन की नई सरकार और उसके नेता चेयरमैन माओ-त्से-तुंग जो जी जान से अपने लोगों की सेवा में लगे हुए हैं.

आज़ादी के बाद दो बरस के अन्दर क़ौमी फिर-बनाव के काम के सभी दायरों में जो तरक़्क़ी उन्होंने की है उससे एशिया के सभी देशों को प्रेरना मिलती है.

जो नई बड़ी तबदीलियां हमने यहां देखीं उनमें से सिर्फ़ दो की तरफ़ हम इशारा करेंगे. एक है नए चीन का ज़मीन सुधार जिसकी बदौलत तीस करोड़ चीनी किसान सदियों की गुलामी से मुक्त हो गए. यह ऐसा इन्क़लाबी क़दम है जो दुनिया के इतिहास में कहीं नहीं मिलता. दूसरा है यहां का नया शादी क़ानून, जिसने चीन की औरतों को आज़ादी और बराबरी का दर्जा दे दिया है. उस चीज़ का एक बहुत दूर-गामी असर सारी दुनिया की, ख़ास कर एशिया की औरतों पर पड़ने वाला है.

लोगों की ऊंची भावना.

यहां के मज़दूर और किसान पैदावार के बड़े भारी काम में लगे हैं. उनके देश प्रेम की आग एक-सू हो कर लगन से काम करने की आदत देख कर हम दंग रह गए. नए चीन के नौजवानों की ऊंची भावना और क़ुरबानी का जज़बा देखकर भी हम पर बहुत असर पड़ा. हमने देखा कि अपने देश की आने वाली बेहतरी की ख़ातिर यह जवान मर्द औरत ख़ुशी ख़ुशी तकलीफ़ें सह रहे हैं और जिस आत्म विश्वास के साथ अपने नन्हें कंधों पर भारी से भारी बोझ उठा रहे हैं, वह तो कमाल की बात है.

मज़दूर तबक़े के या जंग आज़ादी के बहादुर मर्द औरतों ने तो हमारे सामने एक नई दुनिया ही पेश कर दी. उनके अन्दर की रचनात्मक बहादुरी में निजी कामयाबी और बढ़ोतरी की शान-अज़मत के साथ साथ कुल देश के लोगों का हित बहुत ही सुन्दर ढंग से पैवस्ता है. और नए चीन के बच्चों को देख कर तो हमारा मन ही मोहित हो गया. उनके चमकते, हंसमुख और प्रसन्न चेहरों पर हमें चीन के इतिहास के नए सवेरे की आभा दिखलाई पड़ी.

جنم ہو رہا ہے ۔ ہمارے چینی بھائیوں کے یگوں کا انوبھو اور جانکاری ہے ۔ اُن کے اندر صدیوں انسانی کلچر کے سنسکار ہیں ۔ سیکڑوں برسوں کی رداری' غلامی اور سامراج شاہی' شوشن کے د اُن کی ہمت اور نیکی میں رتی بھر بھی فرق آیا ہے ۔ اب ہمارے اِن بھائیوں کو پریرنا اور شکتی ے نیا سوتا مل گیا ہے جو اُنھیں ہمیشہ مست رکھتا ہ سوتا ہے چین کی نئی سرکار اور اس کے نیتا ین ماؤتسے تنگ جو جی جان سے اپنے لوگوں ہوا میں لگے ہوئے ہیں ۔

زادی کے بعد دو برس کے اندر قومی پھر بناؤ کے کام سبھی دائروں میں جو ترقی اُنھوں نے کی ہے اُس سے ا کے سبھی دیشوں کو پریرنا ملتی ہے ۔

جو نئی بڑی تبدیلیاں ہم نے یہاں دیکھیں اُن سے صرف دو کی طرف ہم اشارہ کرینگے ۔ ایک ہے چین کا زمین سدھار جس کی بدولت تیس کروڑ ی کسان صدیوں کی غلامی سے مکت ہوگئے ۔ یہ ایسا ی قدم ہے جو دنیا کے اتہاس میں کہیں نہیں ملتا ۔ ا ہے یہاں کا نیا شادی قانون جس نے چین کی ں کو آزادی اور برابری کا درجہ دیا ہے ۔ اُس چیز ا بہت دور گامی اثر ساری دنیا کی' خاصکر ایشیا کی ں پر پڑنے والا ہے ۔

لوگوں کی اونچی بھاونا ۔

یہاں کے مزدور اور کسان پیداوار کے بڑے بھاری کام لگے ہیں ۔ اُن کے دیش پریم کی آشا اور ایک ہو کر لگن سے کام کرنے کی عادت دیکھکر ہم دنگ رہ نئے چین کے نوجوانوں کی اونچی بھاونا اور ی کا جذبہ دیکھکر بھی ہم پر بہت اثر پڑا ۔ ہم نے ا کہ اپنے دیش کی آنے والی بہتری کی خاطر یہ ن مرد عورت خوشی خوشی تکلیفیں سہہ رہے ہیں جس آتم وشواس کے ساتھ اپنے ننھے کندھوں پر بھاری سے ی بوجھ اُٹھا رہے ہیں وہ تو کمال کی بات ہے ۔

مزدور طبقے کے یا جنگ آزادی کے بہادر مرد عورتوں نو ہمارے سامنے ایک نئی دنیا ہی پیش کر دی ۔ ے اندر کی رچناتمک بہادری میں نجی کامیابی اور تری کی شان عظمت کے ساتھ ساتھ کل دیش کے ں کا ہت بہت ہی سندر ڈھنگ سے پیوستہ ہے ۔ اور چین کے بچوں کو دیکھکر تو ہمارا من ہی موہت ا۔ اُن کے چمکتے' ہنس مکھ اور پرسن چہروں میں چین کے اتہاس کے نئے سویرے کی آبھا ائی پڑی ۔

इस काम को अनजाम देने के लिए दस लाख नए मास्टर भरती किये जा रहे हैं. उनको ट्रेनिंग दी जा रही है और कुछ दिनों बाद लोक शिक्षकों की कलचरी फ़ौज की तादाद में कम से कम बीस लाख जवान मर्द औरत होंगे.

तालीम की मिनिस्ट्री अपने इस अहम काम को पूरा करने की कोशिश कर रही है. पहला क़दम उठा लिया गया है. हमें यक़ीन है कि अपने काम में हमें कामयाबी ज़रूर मिलेगी. इस कामयाबी की गारंटी मार्क्स वाद-लेनिन वाद के उसूल हैं, माओ-त्से-तुँग के उपदेश हैं और चीनी कम्यूनिस्ट पारटी की रहनुमाई है.

('शंघाई न्यूज़' से)

चीन की जय

(हिन्द गुडविल मिशन का बयान)

चीन में हम लोग चार हफ़्ते रहे. इसकी याद हमें हमेशा बनी रहेगी. इस अर्से में हमने जो बहुत से अपने दोस्त अज़ीज़ बनाए उनसे अब हमें बिदा होना पड़ रहा है. हम अपने देश वापस जा रहे हैं. लेकिन अपने इस सफ़र की लुभावनी याद भुलाए न भूलेगी. यहां पर जो मुहब्बत, दोस्ती, स्वागत, आव भगत हमारी की गई उनके बोझ से हम दबे जाते हैं, और न हम इन्हें कभी भूल सकते हैं.

चीन की जिन लोक संस्थाओं ने बड़े प्रेम के साथ हमें बुलाया था—जैसे चीन पीस कमेटी, कुल चीन फ़ेडरेशन आफ़ लेबर, कुल चीन फ़ेडरेशन आफ़ डिमाक्रेटिक विमेन, कुल चीन असोसियेशन आफ़ राइटर्स एन्ड आर्टिस्ट और न्यू डेमोक्रेटिक यूथ लीग—उनके हम कितने अहसान मन्द हैं हम कह नहीं सकते. चीनी लोकराज की दूसरी सालगिरह के मौक़े पर हमारे इन मेज़बानों ने हमारी जो ख़ातिर की वह बयान से बाहर है. उन्होंने बेहद तकलीफ़ें बर्दाश्त करके हमें हर तरह का आराम पहुँचाने की कोशिश की. यही नहीं, उन्होंने हमें मौक़ा दिया कि नए चीन के जीवन के जुदा जुदा पहलुओं को अच्छी तरह देखें और समझें.

चीन की इन्क़लाबी तरक़्क़ी.

इस मौक़े के लिये हम ख़ास तौर से अहसान मन्द हैं क्योंकि हमें यह देखने की ख़ुश क़िस्मती हासिल हुई कि किस तरह एक प्राचीन और महान देश का शानदार

نئے چین میں تعلیم کے دو سال

اِس کام کو انجام دینے کے لئے دس لاکھ نئے ماسٹر بھرتی کئے جا رہے ہیں، اُن کو ٹریننگ دی جا رہی ہے اور کچھ دنوں بعد لوک شکشکوں کی کلچری فوج کی تعداد میں کم سے کم بیس لاکھ جوان مرد عورت ہونگے۔

تعلیم کی منسٹری اپنے اِس اہم کام کو پورا کرنے کی کوشش کر رہی ہے۔ پہلا قدم اٹھا لیا گیا ہے۔ ہمیں یقین ہے کہ اپنے کام میں ہمیں کامیابی ضرور ملے گی۔ اِس کامیابی کی گارنٹی مارکس واد—لینن واد کے اُصول ہیں، ماوتسے تنگ کے اُپدیش ہیں اور چینی کمیونسٹ پارٹی کی رہنمائی ہے۔

('شنگھائی نیوز' سے)

چین کی جے

(ہند گڈول مشن کا بیان)

چین میں ہم لوگ چار ہفتے رہے۔ اِسکی یاد ہمیں ہمیشہ بنی رہے گی۔ اِس عرصے میں ہم نے جو بہت سے اپنے دوست عزیز بنائے اُن سے اب ہمیں بدا ہونا پڑ رہا ہے۔ ہم اپنے دیش واپس جا رہے ہیں۔ لیکن اپنے اِس سفر کی لبھاونی یاد بھلائے نہ بھولے گی۔ یہاں پر جو محبت، دوستی، سواگت، آؤ بھگت ہماری کی گئی اُن کے بوجھ سے ہم دبے جاتے ہیں، اور نہ ہم اِنہیں کبھی بھول سکتے ہیں۔

چین کی جن لوک سنستھاؤں نے بڑے پریم کے ساتھ ہمیں بلایا تھا— جیسے چین پیس کمیٹی، کل چین فیڈریشن آف لیبر، کل چین فیڈریشن آف ڈیماکریٹک ویمن، کل چین اسوسیشن آف رائٹرس اینڈ آرٹسٹس اور نیو ڈیمو کریٹک یوتھ لیگ — اُن کے ہم کتنے احسان مند ہیں ہم کہ نہیں سکتے۔ چینی لوک راج کی دوسرے سال گرہ کے موقعے پر ہمارے اِن میزبانوں نے ہماری جو خاطر کی وہ بیان سے باہر ہے۔ اُنہوں نے بے حد تکلیفیں برداشت کر کے ہمیں ہر طرح کا آرام پہونچانے کی کوشش کی۔ یہی نہیں، اُنہوں نے ہمیں موقع دیا کہ نئے چین کے جیون کے جدا جدا پہلوؤں کو اچھی طرح دیکھیں اور سمجھیں۔

چین کی انقلابی ترقی۔

اس موقعے کے لئے خاص طور سے احسان مند ہیں کیونکہ ہمیں یہ دیکھنے کی خوش قسمتی حاصل ہوئی کہ کس طرح ایک پراچین اور مہان دیش کا شاندار

उपदेशों की मदद से चीन के तालीमी कार्यकर्त्ता बड़ी लगन के साथ अपने आदर्शवाद को फिर से नई शकल देने का काम कर रहे हैं.

चीन में धीरे धीरे खेती सुधार का प्रोग्राम पूरा हो रहा है, खेती और दस्तकारी-कारखानों का विकास हो रहा है और वह अपने रंग में आ रहे हैं, जनता के रहन सहन का दर्जा ऊंचा उठ रहा है और क़ौमी रचना के लिये बड़े पैमाने वाली योजनायें भी अमल में आ रही हैं. इनकी वजह से हमारे तालीमी निज़ाम पर बड़ी ज़िम्मेदारी आ पड़ी है—राष्ट्रीय पुनर्रचना के काम के लिए काफ़ी तादाद में जवानों को तैयार करना और साथ ही साथ देश के बच्चों की तालीम की मांग पूरी करना. पिछले दो बरस का काम हमारे आगे के काम के मुक़ाबले में, जैसा चेयरमैन माओ-त्से-तुंग ने एक बार कहा था, "दस हज़ार कोस के सफ़र का सिर्फ़ पहला क़दम" जैसा है.

इन नई बढ़ती हुई मांगों को पूरा करने के लिये चीनी सरकार की इन्तज़ामिया कौन्सिल ने 10 अगस्त 1951 को पुराने स्कूली तरीक़े के सुधार के लिये ठहराव पास किए और चीनी लोकराज की मंज़िल के पहले क़दम के लिये नया स्कूली तरीक़ा जारी किया. यह नया तरीक़ा इस बात की गारंटी होगा कि सब काम करने वालों और उनके बच्चों को तालीमी आसानियों का आनन्द लूटने का पूरा मौक़ा मिले. इसकी बदौलत जनता में का हर मर्द-औरत—जिसमें जो तासीर है—उसके मुताबिक़ सच्चे और पक्के तौर पर देश निर्माण के काम में हाथ बंटा सकेगा.

दस लाख नए मास्टरों की ट्रेनिंग.

लोक तालीम के चीनी कार्यकर्त्ता अपने अन्दर के इन्क़लाबी जज़बे का सही इस्तेमाल कर रहे हैं. इसकी बदौलत वह अपनी आरज़ी अड़चनों और कमियों का मुक़ाबला आसानी से कर लेते हैं. आने वाले कुछ बरसों में उन्हें एक डेढ़ लाख के क़रीब ट्रेन्ड जवान मर्द औरत तैयार करना है जो देश निर्माण में ज़ोरदार हिस्सा ले सकें और पांच लाख मामूली जवान तैयार करना है. इनका काम है कि सारे चीन के किसान और मज़दूर बुनियादी कलचरी तालीम पा जाएं. उनका यह भी काम है कि कारख़ानों में लगे सभी आदमियों को राजकाजी तालीम मिल जाए और उनके बीच से जहालत एक दम ख़त्म हो जाए. राजकाजी तालीम हर किसान को देनी है और लिखना पढ़ना भी उनमें से बहुत से जवानों को सिखाना है. हमारे सामने दूसरा फ़ौरी मक़सद यह है कि स्कूल जाने वाली उमर के बच्चों में से 80 फ़ी सदी के ऊपर बच्चों को तालीम पाने की आसानी मिले और देश के जितने जवान हैं उन सबको तालीम के लिये पूरे पूरे साधन होने चाहियें.

اُپدیشوں کی مدد سے چین کے تعلیمی کاریہ کرتا بڑی لگن کے ساتھ اپنے آدرش واد کو پھر سے نئی شکل دینے کا کام کر رہے ہیں۔

چین میں دھیرے دھیرے کھیتی سدھار کا پروگرام پورا ہو رہا ہے، کھیتی اور دستکاری-کارخانوں کا وکاس ہو رہا ہے اور وہ اپنے رنگ میں آ رہے ہیں، جنتا کے رہن سہن کا درجہ اونچا اٹھ رہا ہے اور قومی رچنا کے لئے بڑے پیمانے والی یوجنائیں بھی عمل میں آرہی ہیں۔ ان کی وجہ سے ہمارے تعلیمی نظام پر بڑی ذمہ داری آ پڑی ہے — راشٹریہ پنر رچنا کے کام کے لئے کافی تعداد میں جوانوں کو تیار کرنا اور ساتھ ہی ساتھ دیش کے بچوں کی تعلیم کی مانگ پوری کرنا۔ پچھلے دو برس کا کام ہمارے آگے کے کام کے مقابلے میں، جیسا چیرمین ماؤتسے تنگ نے ایک بار کہا تھا، "دس ہزار کوس کے سفر کا صرف پہلا قدم" جیسا ہے۔

ان نئی بڑھتی ہوئی مانگوں کو پورا کرنے کے لئے چینی سرکار کی انتظامیہ کونسل نے 10 اگست 1951 کو پرانے اسکولی طریقے کے سدھار کے لئے ٹھہراؤ پاس کئے اور چینی لوک راج کی منزل کے پہلے قدم کے لئے نیا اسکولی طریقہ جاری کیا۔ یہ نیا طریقہ اس بات کی گارنٹی ہوگا کہ سب کام کرنے والوں اور ان کے بچوں کو تعلیمی آسانیوں کا آنند لوٹنے کا پورا موقعہ ملے۔ اسکی بدولت جنتا میں کا ہر مرد عورت — جس میں جو تاثیر ہے اسکے مطابق سچے اور پکے طور پر دیش نرمان کے کام میں ہاتھ بٹا سکے گا۔

دس لاکھ نئے ماسٹروں کی ٹریننگ۔

لوک تعلیم کے چینی کاریہ کرتا اپنے اندر کے انقلابی جذبے کا صحیح استعمال کر رہے ہیں۔ اس کی بدولت وہ اپنی عارضی اڑچنوں اور کمیوں کا مقابلہ آسانی سے کر لیتے ہیں آنے والے کچھ برسوں میں انہیں ایک ڈیڑھ لاکھ کے قریب ٹرینڈ جوان مرد عورت تیار کرنا ہے جو دیش نرمان میں زوردار حصہ لے سکیں اور پانچ لاکھ معمولی جوان تیار کرنا ہے۔ ان کا کام ہے کہ سارے چین کے کسان اور مزدور بنیادی کلچری تعلیم پا جائیں۔ ان کا یہ بھی کام ہے کہ کارخانوں میں لگے سبھی آدمیوں کو راج کاجی تعلیم مل جائے اور ان کے بیچ سے جہالت ایک دم ختم ہو جائے۔ راج کاجی تعلیم ہر کسان کو دینی ہے اور لکھنا پڑھنا بھی ان میں سے بہت سے جوانوں کو سکھانا ہے۔ ہمارے سامنے دوسرا فوری مقصد یہ ہے کہ اسکول جانے والی عمر کے بچوں میں سے 80 فی صدی کے اوپر بچوں کو تعلیم پانے کی آسانی ملے اور دیش کے جتنے جوان ہیں ان سب کی تعلیم کے لئے پورے پورے سادھن ہونے چاہئیں۔

राष्ट्र निर्माण के काम में सब में जियादा फ़ायदेमन्द साबित हो सकते हैं. सच यह है कि आज हमारे कालिजों को रोना रहता है कि पूरी तादाद में विद्यार्थी नहीं मिलते क्योंकि सेकन्ड्री स्कूल में तालीम लेने के बाद वह बाहर काम पर निकल जाते हैं. जमीन के बटवारे के बाद किसान मां-बाप —उनकी आंखें शान से चमकती होती हैं—अपने बच्चों को लेकर स्कूल चलते चले आते हैं और उनके दाखिले की मांग करते हैं. बहुत से प्राईमरी स्कूल तो एक दम भर गए हैं और सब उम्मीद वारों को भरती करने से मजबूर हैं. कुछ किसान—जो ऊपर के बोझों से मुक्त हो कर खुद मुख़तार बन गए हैं—अपने ही बल पर बड़ी तादाद में नए नए स्कूल खोल देते हैं. लोगों की इस तालीमी प्यास से शिक्षकों या मास्टरों के अन्दर शिद्दत की उमंगें पैदा होती हैं. वह सोचते हैं कि हमारी लोक शिक्षा का भविष्य कितना सुन्दर होने जा रहा है और लोक शिक्षक होना कितने गौरव की बात है.

आज चीनी जीवन के हर पहलू में नए व पुराने में कश्मकश हो रही है. इस वजह से समाज के हर दायरे में बड़ी बड़ी तबदीलियां जोरों से हो रही हैं. हमारे तीनों आन्दोलनों—से अमरीकी हमले का मुक़ाबला और कोरिया को इमदाद, खेती सुधार और ग़ैर इन्क़लाबी लोगों को दबाना—जनता की तालीम सफलता से आप से आप होती है. चीन के साढ़े 47 करोड़ भाई बहनों में देश प्रेम के साथ साथ अन्तर क़ौमी भावना अच्छी तरह बढ़ रही है. इतिहास का यह तक़ाज़ा है कि जब दूसरे बढ़े चले जा रहे हों तो एक आदमी खड़ा नहीं रह सकता. चीन की गहरी समाजी तबदिलीयों का असर वहां की तालीम पर भी पड़ा है. आप से आप इस में सुधार हो रहा है और यह ऊंचे दर्जे की तरफ़ जा रही है.

अभी हाल में एक तहरीक चलाई गई. उसमें तालीम के अन्दर "सुधार वाद" पर जो पुराने ख़याल थे उन पर चर्चा और बहस की गई. यह सुधार वाद इन्क़लाबी आन्दोलन के रास्ते में रुकावट पैदा कर देता है. इस तहरीक में हमारे सभी कारकुन शरीक हुए और पुराने आदर्श वाद के असर के ख़िलाफ़ आन्दोलन ने ज़ोर पकड़ा. इस तरह की गम्भीर बहसों से तरह तरह के तालीमी सुधारों के लिये ख़ासा दिमाग़ी मसाला मिलता है. और विशेष कर करीकुलम के और पढ़ाई का कोर्स बनाने में—जो तालीमी इन्क़लाब में सब से जियादा अहमियत रखने वाली चीज़ें हैं. इसके अन्दर यह लाजमी था कि दुनिया या विश्व के बारे में जो दो अलग अलग रायें हैं उनमें मुक़ाबला हो—यानी आदर्श वाद और भौतिक वाद में मुक़ाबला. मार्कस वाद, लेनिन वाद, और माओ-त्से-तुँग के

راشٹر نرمان کے کام میں سب میں زیادہ فائدے مند ثابت ہوسکتے ہیں ۔ سچ یہ ہے کہ آج ہمارے کالجوں کو رونا رہتا ہے کہ پوری تعداد میں ودیارتھی نہیں ملتے کیونکہ سیکنڈری اسکول میں تعلیم لینے کے بعد وہ باہر کام پر نکل جاتے ہیں۔ زمین کے بٹوارے کے بعد کسان ماں باپ—اُن کی آنکھیں شان سے چمکتی ہوتی ہیں— اپنے بچوں کو لے کر اسکول چلتے چلے آتے ہیں اور اُن کے داخلے کی مانگ کرتے ہیں ۔ بہت سے پرائمری اسکول تو ایک دم بھر گئے ہیں اور سب اُمیدواروں کو بھرتی کرنے سے مجبور ہیں۔ کچھ کسان—جو اُوپر کے بوجھوں سے مکت ہوکر خود مختار بن گئے ہیں—اپنے ہی بل پر بڑی تعداد میں نئے نئے اسکول کھول دیتے ہیں ۔ لوگوں کی اِس تعلیمی پیاس سے شکشکوں یا ماسٹروں کے اندر شدت کی اُمنگیں پیدا ہوتی ہیں ۔ وہ سوچتے ہیں کہ ہماری لوک شکشا کا بھوشیہ کتنا سندر ہونے جارہا ہے اور لوک شکشک ہونا کتنے گورو کی بات ہے ۔

آج چینی جیون کے ہر پہلو میں نئے و پرانے میں کشمکش ہورہی ہے ۔ اِس وجہ سے سماج کے ہر دائرے میں بڑی بڑی تبدیلیاں زوروں سے ہورہی ہیں ۔ ہمارے تینوں آندولنوں—سے امریکی حملے کا مقابلہ اور کوریا کو امداد، کھیتی سدھار اور غیر انقلابی لوگوں کو دبانا— جنتا کی تعلیم سپھلتا سے آپ سے آپ ہوتی ہے ۔ چین کے ساڑھے 47 کروڑ بھائی بہنوں میں دیش پریم کے ساتھ ساتھ انتر قومی بھاونا اچھی طرح بڑھ رہی ہے ۔ اتہاس کا یہ تقاضہ ہے کہ جب دوسرے بڑھے چلے جارہے ہوں تو ایک آدمی کھڑا نہیں رہ سکتا ۔ چین کی گہری سماجی تبدیلیوں کا اثر وہاں کی تعلیم پر بھی پڑا ہے ۔ آپ سے آپ اُس میں سدھار ہورہا ہے اور یہ اونچے درجے کی طرف جا رہی ہے ۔

ابھی حال میں ایک تحریک چلائی گئی ۔ اُس میں تعلیم کے اندر '' سدھار واد '' پر جو پرانے خیال تھے اُن پر چرچا اور بحث کی گئی ۔ یہ سدھار واد انقلابی آندولن کے راستے میں رکاوٹ پیدا کر دیتا ہے ۔ اِس تحریک میں ہمارے سبھی کارکن شریک ہوئے اور پرانے آدرش واد کے اثر کے خلاف آندولن نے زور پکڑا ۔ اِسطرح کی گمبھیر بحثوں سے طرح طرح کے تعلیمی سدھاروں کے لئے خاصا دماغی مسالہ ملتا ہے ۔ اور وشیش کر کریکولم کے اور پڑھائی کا کورس بنانے میں — جو تعلیمی انقلاب میں سب سے زیادہ اہمیت رکھنے والی چیزیں ہیں ۔ اِسکے اندر یہ لازمی تھا کہ دنیا یا وشو کے بارے میں جو دو الگ الگ رائیں ہیں اُن میں مقابلہ ہو — یعنی آدرش واد اور بھوتک واد میں مقابلہ ۔ مارکس واد، لینن واد اور ماؤتسے تنگ کے

के लिये पांच बड़े बड़े इन्क़लाबी कालिज खोले गए हैं. इन कालिजों में हज़ारों लाखों मर्द औरत अब तक राज-काजी तालीम पा भी चुके हैं.

1951 के पहले दौर तक चीन के 5100 सेकेन्डरी स्कूलों में पढ़ने वालों की तादाद 15,70,000 थी. ऊंची तालीम की 201 संस्थाएं थीं (यूनिवर्सिटी, कालिज, ख़ास ट्रेनिंग के स्कूल) जिनमें 1951 के शुरू में छै माह में 1,28,000 विद्यार्थी थे. इन सेकेन्डरी स्कूलों और ऊंची विद्या की संस्थाओं में भरती लड़ाई के पहले से कहीं ज़ियादा है.

इन कामयाबियों के साथ साथ यह भी ध्यान देने की बात है कि सारे देश के विद्वान बड़ी लगन के साथ तालीम ले रहे हैं और अपने आदर्श और ख़यालात को फिर से ढाल रहे हैं. आज़ादी के बाद वाले पहले साल में, तालीमी कार्यकर्त्ताओं में से ही, चार लाख से ऊपर लोग शरीक हुए. यहां उन्हें "समाजी विकास का इतिहास", माओ-त्से-तुंग का नया लोकराज" और चीनी क्रांति पर दूसरी अहम किताबों के ज़रिये तालीम दी गई. आज कल सारे देश के तालीमी जवान 'कम्यूनिस्ट पारटी के जवानों की तरह' सरकार में, फ़ौज में, लोक संस्थाओं में रोज़ दो घंटे पढ़ते हैं. पढ़ने वाले विषयों में सरकारी नीति, राजकाजी उसूल और दस्तकारी के हुनर बताये जाते हैं. सारे देश के चीनी विद्वान मार्क्स वाद, लेनिन वाद और माओ-त्से-तुंग के उपदेश पढ़ रहे हैं. चीन के मास्टरों ने अपने सामने यह मक़सद रखा है—जनता के मास्टरों को अच्छे मार्क्स वादी होने के साथ साथ अच्छे मास्टर भी होना चाहिये."

लोक शिक्षा के दायरे में काम करने वालों ने 'एजुकेशनल वर्कर्स ट्रेडयूनियन' नाम का एक संगठन खड़ा किया है. इसके आज दस लाख मेम्बर हैं.

हर ग्रेजुएट को मुलाज़मत.

चीन के तालीमी कार्यकर्त्ताओं को नाज़ है कि अपने देश वासियों की सेवा में वह कुछ कर सकें. पिछले पचास साल में किसी को सपने में भी ख़याल नहीं हो सकता था कि यह बातें मुमकिन हैं. आज वह अपनी आंखों से देखते हैं कि तालीम—जहां यह एक बार इन्क़लाब और क़ौमी पुनर्रचना के अन्दाज़ में ठीक बैठी—जनता की लोकशाही को पक्की शकल देने में ज़बरदस्त मदद करती है. सिर्फ़ दो साल के अन्दर पुरानी हालत काफ़ूर हो गई. कालिज या सेकेन्डरी स्कूल में तालीम पाये किसी भी ग्रेजुएट को अब बेरोज़गारी का सामना नहीं करना पड़ता. ग्रेजुएट बड़ी ख़ुशी के साथ उन कामों पर जाते हैं जो सरकार उनके लिये तय करती है और जिनके अन्दर वह

ئے پانچ بڑے بڑے انقلابی کالج کھولے گئے ھیں ۔ ان جوں میں ھزاروں لاکھوں مرد عورت اب تک راج کاجی لیم پا بھی چکے ھیں ۔

1951 کے پہلے دور تک چین کے 5100 سیکنڈری کولوں میں پڑھنے والوں کی تعداد 15,70,000 تھی ۔ ںچی تعلیم کی 201 سنستھائیں تھیں (یونیورسٹی، ہج، خاص ٹریننگ کے اسکول) جن میں 1951 کے روع کے چھ ماہ میں 1,28,000 ودیارتھی تھے ۔ ان یکنڈری اسکولوں اور اونچی ودیا کی سنستھاؤں میں رتی لڑائی کے پہلے سے کہیں زیادہ ھے ۔

ان کامیابیوں کے ساتھ ساتھ یہ بھی دھیان دینے کی ت ھے کہ سارے دیش کے ودوان بڑی لگن کے ساتھ تعلیم رھے ھیں اور اپنے آدرش اور خیالات کو پھر سے ڈھال ھیں ۔ آزادی کے بعد والے پہلے سال میں، تعلیمی یہ کرتاؤں میں سے ھی، چار لاکھ سے اوپر لوگ شریک ئے جہاں انہیں "سماجی وکاس کا اتہاس" ماؤتسے گ کا "نیا لوک راج" اور چینی کرانتی پر دوسری م کتابوں کے ذریعے تعلیم دی گئی ۔ آج کل سارے دیش تعلیمی جوان، کمیونسٹ پارٹی کے جوانوں کی طرح، رکار میں، فوج میں، لوک سنستھاؤں میں، روز "گھنٹے ھتے ھیں ۔ پڑھنے والے وشیوں میں سرکاری نیتی، ج کاجی اصول اور دستکاری کے ھنر بتائے جاتے ھیں ۔ ارے دیش کے چینی ودوان مارکس واد، لینن واد اور اوتسے تنگ کے اپدیش پڑھ رھے ھیں۔ چین کے ماسٹروں ، اپنے سامنے یہ مقصد رکھا ھے — "جنتا کے ماسٹروں ، اچھے مارکس وادی ھونے کے ساتھ ساتھ اچھے ماسٹر ھونا اھئے ."

لوک شکشا کے دائرے میں کام کرنے والوں نے 'ایجوکیشنل کرس ٹریڈیونین' نام کا ایک سنگھٹن کھڑا کیا ھے ۔ س کے آج دس لاکھ ممبر ھیں ۔

ھر گریجوئیٹ کو ملازمت.

چین کے تعلیمی کاریہ کرتاؤں کو ناز ھے کہ اپنے دیش اسیوں کی سیوا میں وہ کچھ کرسکیں ۔ پچھلے پچاس سال میں کسی کو سپنے میں بھی خیال نہیں ھوسکتا ھا کہ یہ باتیں ممکن ھیں ۔ آج وہ اپنی آنکھوں سے یکھتے ھیں کہ تعلیم—جہاں یہ ایک بار انقلاب اور ومی پنر رچنا کے انداز میں ٹھیک بیٹھی—جنتا کی وک شاھی کو پکی شکل دینے میں زبردست مدد کرتی ے ۔ صرف دو سال کے اندر پرانی حالت کافور ھوگئی ۔ الج یا سیکنڈری اسکول میں تعلیم پائے کسی بھی ریجوئیٹ کو اب بے روزگاری کا سامنا نہیں کرنا پڑتا ۔ ریجوئیٹ بڑی خوشی کے ساتھ اُن کاموں پر جاتے ھیں جو سرکار اُن کے لئے طے کرتی ھے اور جن کے اندر وہ

इन कान्फ्रेंसों में हमारी क़ौमी तालीम के नए ढंगों के मुताबिक़ ठहराव पास किये गए जिनमें अलग अलग दर्जों और क़िसमों की तालीम के तरीक़े और उसूल तय किये गए. इसकी मदद से सारे स्कूल क़दम ब क़दम एक साथ विकास और फिर बनाव के रास्ते पर चल सकते थे. इन कान्फ्रेंसों में तालीम की मिनिस्ट्री ने देश भर से तरह तरह के विशयों के माहिरों और विशेश जानकारों को बुलाया. वे लोग बहुत ज़ोर शोर के साथ इनमें शरीक हुए और सभी अहम व पेचीदा मसलों पर ठहराव पास किये गए. आज नए चीन में मुख़तलिफ़ जगहों पर दस साल से ऊपर कारकर्त्ता जी जान से तालीम की मिनिस्ट्री के आदेशों की पाबन्दी करने में लगे हुए हैं.

इस साल पहली अक्तूबर को तालीम की मिनिस्ट्री अपनी महान जन्म भूमि की जब सालगिरह मनाती है तो वह यह कारनामे पेश करती है—

कुल मिला कर चार लाख चालीस हज़ार से ऊपर प्राईमरी स्कूल हैं जिन में तीन करोड़ सत्तर लाख से ऊपर लड़के लड़की पढ़ते हैं. बीस बरस के कोमिनटांग राज में प्राईमरी स्कूलों में सबसे ज़ियादा पढ़ने वालों की तादाद 1946 में पहुंची थी. लेकिन हमारी यह तादाद इसके मुक़ाबले 45 फ़ी सदी ज़ियादा है.

जहां तक मज़दूरों किसानों की तालीम की बात है उसका तो पुराने चीन में कहीं नाम निशान भी नहीं था. लेकिन 1951 के पहले दौर में मुलाज़िम पेशा मज़दूरों वाले फ़ालतू समय के स्कूलों में पंद्रह लाख किसान मज़दूरों ने तालीम ली.

पिछले जाड़ों में 'शार्ट टर्म विनटर स्टडी' वाले प्रोग्राम में ढाई करोड़ से ज़ियादा किसान शरीक हुए थे. 1951 के पहले दौर में बाक़ायदा स्कूलों में पढ़ने वाले किसानों की तादाद कुल देश में एक करोड़ के ऊपर थी.

1951 के शुरू के छै महीनों में कुछ ख़ास स्कूलों में, जहां कलचरी तालीम दी जाती थी, एक लाख पैंतीस हज़ार से ऊपर किसान मज़दूर भरती हुए. इस ट्रेनिंग से उन्होंने अपनी तालीम में जो कमी बेशी थी वह पूरी कर ली.

हमारे देश में छोटे कोर्स वाले 37 सेकेन्ड्री स्कूल हैं जहां मज़दूरों और किसानों को ख़ास ऊंची तालीम दी जाती है. इन स्कूलों में विद्यार्थियों की तादाद सात हज़ार थी. चीनी लोक यूनिवर्सिटी नए तरीक़े पर क़ायम की गई है. उसमें बड़ी तादाद में मज़दूरों किसानों के जत्थे आते हैं. वहां पर मज़दूरों या किसानों के ख़ानदान के बच्चों को ऊंची तालीम मिलने की सभी सुविधाएं रहती हैं.

पुरानी तालीम पाए विद्वानों को फिर से "तालीम देने"

ان کانفرنسوں میں ہماری قومی تعلیم کے نئے ڈھنگوں کے مطابق ٹھہراو پاس کئے گئے جن میں جدا درجوں اور قسموں کی تعلیم کے طریقے اور اُصول طے کئے گئے. اس کی مدد سے سارے اسکول قدم بہ قدم ایک ساتھ وکاس اور پھر بناؤ کے راستے پر چل سکتے تھے. ان کانفرنسوں میں تعلیم کی منسٹری نے دیش بھر طرح طرح کے وشیوں کے ماہروں اور وشیش جانکاروں کو بلایا. وے لوگ بہت زور شور کے ساتھ ان میں شریک ہوئے اور سبھی اہم و پیچیدہ مسئلوں پر ٹھہراؤ پاس کئے گئے. آج نئے چین میں مختلف جگہوں پر دس سال سے اوپر کارکرتا جی جان سے تعلیم کی منسٹری کے آدیشوں کی پابندی کرنے میں لگے ہوئے ہیں.

اِس سال پہلی اکتوبر کو تعلیم کی منسٹری اپنی مہان جنم بھومی کی جب سال گرہ مناتی ہے تو وہ یہ کارنامے پیش کرتی ہے.

کل ملا کر چار لاکھ چالیس ہزار سے اوپر پرائمری اسکول ہیں جن میں تین کروڑ ستر لاکھ سے اوپر لڑکے لڑکی پڑھتے ہیں. بیس برس کے کومنتانگی راج میں پرائمری اسکولوں میں سب سے زیادہ پڑھنے والوں کی تعداد 1946 میں پہونچی تھی. لیکن ہماری یہ تعداد اِس کے مقابلے 45 فی صدی زیادہ ہے.

جہاں تک مزدوروں کسانوں کی تعلیم کی بات ہے اُس کا تو پرانے چین میں کہیں نام نشان بھی نہیں تھا. لیکن 1951 کے پہلے دور میں ملازم پیشہ مزدوروں فالتو سمے کے اسکولوں میں پندرہ لاکھ کسان مزدوروں نے تعلیم لی.

پچھلے جاڑوں میں 'شارٹ ٹرم ونٹراسٹڈی' والے پروگرام میں ڈھائی کروڑ سے زیادہ کسان شریک ہوئے تھے. 1951 کے پہلے دور میں باقاعدہ اسکولوں میں پڑھنے والے کسانوں کی تعداد کل دیش میں ایک کروڑ کے اوپر تھی.

1951 کے شروع کے چھ مہینوں میں کچھ خاص اسکولوں میں' جہاں کلچری تعلیم دی جاتی تھی' ایک لاکھ پینتیس ہزار سے اوپر کسان مزدور بھرتی ہوئے. اس ٹریننگ سے اُنہوں نے اپنی تعلیم میں جو کمی بیشی تھی وہ پوری کر لی.

ہمارے دیش میں چھوٹے کورس والے 37 سیکنڈری اسکول ہیں جہاں مزدوروں اور کسانوں کو خاص اونچی تعلیم دی جاتی ہے. اِن اسکولوں میں ودیارتھیوں کی تعداد سات ہزار تھی. چینی لوک یونیورسٹی نئے طریقے پر قائم کی گئی ہے. اُس میں بڑی تعداد میں مزدوروں کسانوں کے جتھے آتے ہیں. وہاں پر مزدوروں یا کسانوں کے خاندان کے بچوں کو اونچی تعلیم ملنے کی سبھی سوودھائیں رہتی ہیں.

پرانی تعلیم پائے ودوانوں کو "پھر سے تعلیم دینے"

उनकी एक दम काया पलटने और नए सिरे से तामीर करने की ज़रूरत थी. साथ ही साथ इन्क़लाबी अड्डों के (जिन्हें पुराने आज़ाद इलाक़े कहा जाता है) स्कूलों को भी बदलने की ज़रूरत थी क्योंकि लड़ाई के वक़्त की तालीम को एक बाक़ायदा और हमेशा काम आने वाली शकल देना थी. नए चीन को ऐसे करोड़ों मर्दों औरतों की सख़्त ज़रूरत थी जिनमें तामीरी माद्दा हो. काम करने वाले मज़दूर किसान भी, जिन्हें नई नई राजकाजी और आर्थिक आज़ादी मिली थी, तालीमी आसानियां चाहते थे. इस चीज़ की ज़रूरत उनके बेटे बेटियों को थी. पुराने ढंग के बुद्धि जीवियों को फिर से तालीम देने की ज़रूरत थी. चीन के नए लोकराज की मांग थी की तालीम के दायरे में सोलह आने इन्क़लाब किया जाए. नई सरकार के क़ायम होने पर सभ्यता और तालीम के दायरे का यह ज़बरदस्त काम तालीम की मिनिस्ट्री के सुपुर्द किया गया.

'जन-शिक्षा का सिलसिला' फैलाने के लिये जो प्रोग्राम बना उसकी शुरू की बातें पिछले दो बरस में पूरी कर ली गई हैं. इस प्रोग्राम के बनाते वक़्त हमारे सामने माओ-त्से-तुंग के उसूल रहबर का काम करते थे और इसमें चीनी पोलीटिकल कन्सलटेटिव कान्फ्रेंस के कामन प्रोग्राम का भी ध्यान रखा गया. यह तालीम का काम निहायत पेचीदा और अनोखा है. लेकिन माओ-त्से-तुंग ने जो रास्ता बताया है, इन्क़लाबी अड्डों में जो बीस साल से ज़ियादा का हमें गाढ़ा तजरबा है, रूस के जो ऊंचे तालीमी तजरबे हैं, रूसी शिक्षकों से जो मदद हमें मिल रही है, उनके आधार पर हम बड़े ज़ोरों से तरक़्क़ी कर रहे हैं.

तालीमी मिनिस्ट्री के क़ायम होने के दो महीने के अन्दर, दिसम्बर 1949 में पहली क़ौमी तालीमी कान्फ्रेंस की गई. इस में राष्ट्री पैमाने पर तालीम के बारे में नीति तै हुई. ज़ोर इस बात पर दिया गया कि नई तालीम चीन की तामीरी ज़रूरतों को पूरा करे. दूसरे, इस पर भी ज़ोर दिया गया कि हमारे स्कूल किसानों-मज़दूरों सब के लिये खुले हों. पुरानी तालीम के बारे में भी जो राष्ट्र-निर्मान के काम से अलग थी और बुनियादी तौर पर लोगों के हितों के ख़िलाफ़ जाती थी—नई हिदायतें इस कान्फ्रेंस में की गईं. यह तबदीली बहुत ही बुनियादी अहमियत रखने वाली है. पुराने तालीमी ढंग को सुधारने के लिये भी नीति इसमें तय पाई और यह फ़ैसला किया गया कि आगे किस तरीक़े से कैसे क़दम उठाने हैं.

पिछले दो बरस में चीनी लोकराज की तालीमी मिनिस्ट्री ने और भी कई बड़ी कान्फ्रेंसें बुलाई हैं जैसे किसानों मज़दूरों की तालीम, सेकेन्ड्री तालीम, बुनयादी और नार्मल तालीम, क़ौमी अक़लियत की तालीम वग़ैरा.

ن کی ایک دم کایا پلٹنے اور نئے سرے سے تعمیر کرنے کی رت تھی. ساتھ ہی ساتھ انقلابی اڈوں کے (جنہیں انے آزاد علاقے کہا جاتا ہے) اسکولوں کو بھی بدلنے کی ورت تھی کیونکہ لڑائی کے وقت کی تعلیم کو ایک باقاعدہ ر ہمیشہ کام آنے والی شکل دینا تھی. نئے چین کو یسے کروڑوں مردوں عورتوں کی سخت ضرورت تھی جن یں تعمیری مادہ ہو. کام کرنے والے مزدور کسان بھی نہیں نئی نئی راج کاجی اور آرتھک آزادی ملی تھی' لیمی آسانیاں چاہتے تھے. اس چیز کی ضرورت ان کے یٹے بیٹیوں کو تھی. پرانے ڈھنگ کے بدھی جیویوں پھر سے تعلیم دینے کی ضرورت تھی. چین کے نئے لوک ج کی مانگ تھی کہ تعلیم کے دائرے میں سولہ آنے نقلاب کیا جائے. نئی سرکار کے قائم ہونے پر سبھیتا اور علیم کے دائرے کا یہ زبردست کام تعلیم کی منسٹری کے سپرد کیا گیا.

جن شکشا کا سلسلہ پھیلانے' کے لئے جو پروگرام بنا سکی شروع کی باتیں پچھلے دو برس میں پوری کر لی ئی ہیں. اس پروگرام کے بناتے وقت ہمارے سامنے اوتسے تنگ کے اصول رہبر کا کام کرتے تھے اور اس میں ینی پولیٹکل کنسلٹیٹو کانفرنس کے کامن پروگرام کا ی دھیان رکھا گیا. یہ تعلیم کا کام نہایت پیچیدہ اور نوکھا ہے. لیکن ماوتسے تنگ نے جو راستہ بتایا ہے' انقلابی ڈوں میں جو بیس سال سے زیادہ کا ہمیں گاڑھا تجربہ ہے' روس کے جو اونچے تعلیمی تجربے ہیں' روسی شکشکوں سے جو مدد ہمیں مل رہی ہے' ان کے آدھار پر م بڑے زوروں سے ترقی کر رہے ہیں.

تعلیمی منسٹری کے قائم ہونے کے دو مہینے کے اندر ی دسمبر 1949 میں پہلی قومی تعلیمی کانفرنس کی ی. اس میں راشٹری پیمانے پر تعلیم کے بارے میں یتی طے ہوئی. زور اس بات پر دیا گیا کہ نئی تعلیم ین کی تعمیری ضرورتوں کو پورا کرے. دوسرے' اس پر ی زور دیا گیا کہ ہمارے اسکول کسانوں مزدوروں سب لئے کھلے ہوں. پرانی تعلیم کے بارے میں بھی و راشٹر نرمان کے کام سے الگ تھی اور بنیادی طور پر وں کے ہتوں کے خلاف جاتی تھی—نئی ہدائتیں اس فرنس میں کی گئیں. یہ تبدیلی بہت ہی بنیادی میت رکھنے والی ہے. پرانے تعلیمی ڈھنگ کو سدھارنے لئے بھی نیتی اس میں طے پائی اور یہ فیصلہ کیا ا کہ آگے کس طریقے سے کیسے قدم اٹھانے ہیں.

پچھلے دو برس میں چینی لوک راج کی تعلیمی نسٹری نے اور بھی کئی بڑی کانفرنسیں بلائی ہیں جیسے کسانوں مزدوروں کی تعلیم' سیکنڈری تعلیم' بنیادی اور نارمل تعلیم' قومی اقلیت کی تعلیم وغیرہ.

मालदार कुटम्बों के लड़के-लड़की विदेश जाते थे. जब वह लौट कर आते थे तो जो तालीम उन्हें मिली हुई थी उस से जनता को बहुत कम फ़ायदा पहुंचाया जा सकता था. इस तालीम के बल पर वह सिर्फ़ हाकिम बन सकते थे. सेकेन्ड्री स्कूल के ऊपर की संस्थायें बहुत थोड़ी थीं. फिर भी ग्रेजुएट बे रोजगार रहते थे. कहने की ज़रूरत नहीं कि पिछ घसीटू कोमिनटांग राज में सारी तालीम जागीरदारी शाही और ताना शाही ढंग की थी. इन स्कूलों में चीन के बच्चों और जवानों को कोई आज़ादी हासिल नहीं थी.

जहां तक जन-शिक्षा की बात है उसकी असली जड़ें 1927 वाले इन्क़लाब में क़ायम हो गई थीं. किसानों ने अपने अलग स्कूल खोल दिये थे. सन 1927 से लेकर 1949 यानी आज़ादी के समय तक चीन में दो चीन थे—एक वह जिस में कोमिनटांग का राज था, दूसरा वह जिस में जनता का राज था. यह जनता का राज उन्हीं इन्क़लाबी अड्डों पर था जहां से जनता ने अलग अलग समय बग़ावत की थी. इसी तरह तालीम भी दो तरह की थी—एक जागीर शाही या साम्राज शाही, दूसरी लोक शाही.

पिछले बीसबरस में इन्क़लाबी अड्डों में काफ़ी काम कर डाला गया. बाबा आदम के ज़माने के रीतरिवाज और चीनी तालीम के पुराने ढंग बदल दिए गये और वह नई तालीम जारी की गई जो लड़ाई की हालत से मेल खाती थी और चीनी क्रान्ति में मदद देती थी. इस नई तालीम की ख़ास ख़ूबी यह थी कि यह जनता के दिल को प्यारी थी और उनके हितों को फ़ायदा पहुंचाती थी. तालीम का यह वह तरीक़ा था, जिसे कामरेड माओ-त्से-तुंग अपने नए लोक राज में "क़ौमी, वैज्ञानिक और सब-को-प्यारा" कहते हैं. इन बीस बरस से ऊपर के अरसे में जब चीन में लड़ाई की लपटें जल रही थीं यह तरीक़ा फैलता-बढ़ता गया. इन्क़लाबी काम के लिये इसने हज़ारों लाखों जवान लड़के-लड़की तैयार किये. इस तालीम से करोड़ों लोगों की राज काजी चेतना ऊपर उठी. धीरे धीरे अच्छे अच्छे अनुभव इस तालीम में हुए और यह तरक़्क़ी करती गई. नतीजा यह हुआ कि इसने अपनी जगह बनाली और कोमिनटांग हलक़ों की पुरानी और सड़ी-गली तालीम के मुक़ाबले में, जो लोगों के हित के ख़िलाफ़ जाती थी, इस ने अपनी तरफ़ लोगों का ध्यान खींचा.

मगर पूरे राष्ट्र में यह तालीमी इन्क़लाब तभी लाया जा सकता था जब कुल देश आज़ाद हो, और ऐसा ही हुआ. आज़ादी के बाद उन स्कूलों में—शहर के चाहे देहात के—हाथ लगाया गया जो कोमिनटांग के कन्ट्रोल में थे.

مالدار کٹمبوں کے لڑکے لڑکی ودیش جاتے تھے جب وہ لوٹ کر آتے تھے تو جو تعلیم اُنھیں ملی ہوئی تھی اُس سے جنتا کو بہت کم فائدہ پہونچایا جاسکتا تھا۔ اس تعلیم کے بل پر وہ صرف حاکم بن سکتے تھے۔ سیکنڈری اِسکول کے اوپر کی سنستھائیں بہت تھوڑی تھیں۔ پھر بھی گریجویٹ بےروزگار رہتے تھے۔ کہنے کی ضرورت نہیں کہ پچھگھسیٹو کومنتانگ راج میں ساری تعلیم جاگیر شاہی اور تانا شاہی ڈھنگ کی تھی۔ اِن اسکولوں میں چین کے بچوں اور جوانوں کو کوئی آزادی حاصل نہیں تھی۔

جہاں تک جن شکشا کی بات ہے اُسکی اصلی جڑیں 1927 والے انقلاب میں قائم ہوگئی تھیں۔ کسانوں نے اپنے الگ اِسکول کھول دیئے تھے۔ سن 1927 سے لیکر 1949 یعنی آزادی کے سمے تک چین میں دو چین تھے — ایک وہ جس میں کومنتانگ کا راج تھا، دوسرا وہ جس میں جنتا کا راج تھا۔ یہ جنتا کا راج اُنھیں انقلابی اڈوں پر تھا جہاں سے جنتا نے الگ الگ سمے بغاوت کی تھی۔ اسی طرح تعلیم بھی دو طرح کی تھی — جاگیر شاہی یا سامراج شاہی دوسری لوک شاہی۔

پچھلے بیس برس میں انقلابی اڈوں میں کافی م کر ڈالا گیا۔ بابا آدم کے زمانے کے ریت رواج اور چینی تعلیم کے پرانے ڈھنگ بدل دیئے گئے اور وہ نئی تعلیم جاری کی گئی جو لڑائی کی حالت سے میل کھاتی تھی اور چینی کرانتی میں مدد دیتی تھی۔ اِس نئی تعلیم کی خاص خوبی یہ تھی کہ یہ جنتا کے دل کو پیاری تھی اور اُن کے ہتوں کو فائدہ پہونچاتی تھی۔ تعلیم کا یہ وہ طریقہ تھا، جسے کامریڈ ماوتسے تنگ اپنے نئے لوک راج میں "قومی، ویگیانک اور سب کو پیارا" کہتے ہیں۔ اِن بیس برس سے اوپر کے عرصے میں جب چین میں لڑائی کی لپٹیں جل رہی تھیں تو یہ طریقہ پھیلتا بڑھتا گیا۔ انقلابی کام کے لئے اس نے ہزاروں لاکھوں جوان لڑکے لڑکی تیار کئے۔ اِس تعلیم سے کروڑوں لوگوں کی راج کاجی چیتنا اوپر اُٹھی۔ دھیرے دھیرے اچھے اچھے انوبھو اس تعلیم میں ہوئے اور یہ ترقی کرتی گئی۔ نتیجہ یہ ہوا کہ اس نے اپنی جگہ بنا لی اور کومنتانگ حلقوں کی پرانی اور سڑی گلی تعلیم کے مقابلے میں، جو لوگوں کے ہت کے خلاف جاتی تھی، اِس نے اپنی طرف لوگوں کا دھیان کھینچا۔

مگر پورے راشٹر میں یہ تعلیمی انقلاب تبھی لایا جا سکتا تھا جب کل دیش آزاد ہو، اور ایسا ہی ہوا۔ آزادی کے بعد اُن اسکولوں میں — شہر کے چاہے دیہات کے — ہاتھ لگایا گیا جو کومنتانگ کے کنٹرول میں تھے۔

पूंजी वादी और साम्राज वादी लोग ऐसा कहा करते थे कि चीन एक पिछड़ा हुआ देश है जिसकी कोई सभ्यता नहीं है. एक सदी से ऊपर तक चीन के मज़दूर-किसान पूँजीवादी, साम्राज वादी और जागीर दारी वग़ैरा के नीचे पीसे गए. उनकी सभ्यता और तालीम तबाह कर दी गई. यही नहीं, उनके ज़िन्दा रहने तक का हक़ ख़तरे में था. तालीम का जो पुराना दस्तूर था वह अमीरी और साम्राज शाही ढंग पर रचा गया था. उसका कोई वास्ता काम करने वाली जनता या वहां के लाखों-करोड़ों लोगों से नहीं था. वह महज़ ज़मींदारों और पूँजीपतियों वग़ैरा के फ़ायदे के लिये थी. ज़ियादातर आदमी जो उस तालीम को नहीं पा सकते थे और उन स्कूल-कालिजों के दरवाज़े जिनके लिये बंद थे वह उन्हें नफ़रत और ग़ुस्से की निगाह से देखते थे, और उन्हें व्यंग में "विद्या के विदेशी घर" कहा करते थे.

"विद्या के विदेशी घर" नाम से पुराने चीन की तालीम की साम्राज शाही तासीर का साफ़ साफ़ पता चल जाता है. यही तासीर हमारे देश के राज काजी और माली जीवन की थी. इसकी वजह से चीन के उद्योग-धंदे और कला-कौशल नहीं बढ़ सकते थे. साम्राज शाही और जागीर शाही-प्रधान देश में जिस चीज़ की ज़रूरत रहती है वह हैं कुछ एजेन्ट या दल्लाल, जो लोगों पर क़ाबू रख कर उन पर हकूमत कर सकें. बाक़ायदा तालीम पाए हुए और रचनात्मक अक़ल वाले लोगों की वहां न ज़रूरत रहती है न गुंजायश. असल बात यह है कि पिछ-घसीटू राज यह चाहता ही नहीं था कि लोगों की तहज़ीब या दर्जा ऊंचा उठे क्योंकि यह फिर एक बोझ बन जाता और उस राज के लिये ख़तरा साबित होता.

नतीजा यह है कि आज़ादी के पहले चीन में जन-शिक्षा की पिछले पचास बरस से चर्चा चली आती थी लेकिन 85 फ़ी सदी से ज़ियादा आदमी बिना-पढ़े लिखे थे और पढ़ने-वाली उमर के बच्चों में 40 फ़ी सदी से कम स्कूलों में जाते थे. कालिजों और यूनिवर्सिटियों की तादाद प्राईमरी स्कूलों से ज़ियादा थी लेकिन वह चंद या थोड़े-से लोगों के फ़ायदे के लिये ही थे. पुराने चीन के साम्राज शाही-पसंद समाज में यहां के कालिज और यूनिवर्सिटियां सिर्फ़ शुरुआती स्कूलों की तरह थे जिन में भरती होने के बाद लोग ब्रिटेन, अमरीका वग़ैरा पढ़ने जाते थे. साम्राज शाही देशों के नुमायन्दों ने भी अपने स्कूल-कालिज यहां पर खोल रखे थे—इसी मक़सद से कि चीन के ख़िलाफ़ अपना तहज़ीबी हमला कामयाबी से कर सकें.

चीन के कालिज से ग्रेजुएट की डिग्री लेकर बहुत से

پونجی وادی اور سامراج وادی لوگ ایسا کہا کرتے
ے کہ چین ایک پچھڑا ہوا دیش ہے جسکی کوئی سبھیتا
ہیں ہے . ایک صدی سے اوپر تک چین کے مزدور کسان
ونجی وادی' سامراج وادی اور جاگیرداری وغیرہ کے تلے
یسے گئے . اُنکی سبھیتا اور تعلیم تباہ کردی گئی .
ی نہیں' اُنکے زندہ رہنے تک کا حق خطرے میں تھا .
علیم کا جو پرانا دستور تھا وہ امیری اور سامراج شاہی
ھنگ پر رچا گیا تھا . اُسکا کوئی واسطہ کام کرنے والی
نتا یا وہاں کے لاکھوں کروڑوں لوگوں سے نہیں تھا . وہ
حض زمینداروں اور پونجی پتیوں وغیرہ کے فائدے کے
ے تھی . زیادہ تر آدمی جو اُس تعلیم کو نہیں پاسکتے
ے اور اُن اسکول کالجوں کے دروازے جنکے لئے بند تھے
ہ اُنہیں نفرت اور غصے کی نگاہ سے دیکھتے تھے' اور
ہیں ویئنگ میں "ودیا کے ودیشی گھر" کہا
تے تھے .

"ودیا کے ودیشی گھر" نام سے پرانے چین کی تعلیم
ی سامراج شاہی تاثیر کا صاف صاف پتہ چل جاتا ہے .
ی تاثیر ہمارے دیش کے راج کاجی اور مالی جیون
ی تھی . اِس کی وجہ سے چین کے اُدیوگ دھندے اور
ا کوشل نہیں بڑھ سکتے تھے . سامراج شاہی اور جاگیر
اہی پردھان دیش میں جس چیز کی ضرورت رہتی
ے وہ ہیں کچھ ایجنٹ یا دلال' جو لوگوں پر قابو رکھ
ر اُن پر حکومت کرسکیں . با قاعدہ تعلیم پائے ہوئے
ر رچناتمک عقل والے لوگوں کی وہاں نہ ضرورت رہتی
ے نہ گنجائش . اصل بات یہ ہے کہ پچھ گھسیٹو راج
ہ چاہتا ہی نہیں تھا کہ لوگوں کی تہذیب یا درجہ
ونچا اُٹھے کیونکہ یہ پھر ایک بوجھ بن جاتا اور اُس راج
ے لئے خطرہ ثابت ہوتا .

نتیجہ یہ ہے کہ آزادی کے پہلے چین میں جن شکشا
ی پچھلے پچاس برس سے چرچا چلی آتی تھی لیکن
8 فی صدی سے زیادہ آدمی بنا پڑھے لکھے تھے اور پڑھنے
الی عمر کے 40 فی صدی سے کم اسکولوں میں جاتے تھے.
الجوں اور یونیورسٹیوں کی تعداد پرائمری اسکولوں سے
یادہ تھی لیکن وہ چند یا تھوڑے سے لوگوں کے فائدے کے
ے ہی تھے . پرانے چین کے سامراج شاہی پسند سماج
یں یہاں کے کالج اور یونیورسٹیاں صرف شروعاتی اِسکولوں
ی طرح تھے جن میں بھرتی ہونے کے بعد لوگ برٹین
مریکہ وغیرہ پڑھنے جاتے تھے . سامراج شاہی دیشوں کے
مائندوں نے بھی اپنے اسکول کالج یہاں پر کھول رکھے تھے
- اسی مقصد سے کہ چین کے خلاف اپنا تہذیبی حملہ
امیابی سے کرسکیں .

چین کے کالج سے گریجویٹ کی ڈگری لے کر بہت سے

मैं किस तरह शान्ति से रह सकती हूँ." तान-की के इन शब्दों को सुन कर मैं अपने आपको मन ही मन कोसने लगा.

मुझे पहले जान लेना चाहिये था कि उसके दिल में क्या तूफ़ान उठा हुआ है. कोरिया उसकी मां भूमि है. कोरिया के गांव, उसकी गलियां, वहां के लोग, वहां के खेत, वहां के पहाड़, वहां का पानी, वहां की हवा उसके लिये क्या अहमियत रखती है ? कोरिया की तबाही उसके दिल पर क्या क्या चोट पहुँचाती होगी !

ऐसे वक़्त में जब कि अमरीकी हवाई जहाज सारी कोरिया को तबाह करने पर तुले हुए हैं, अमरीकी सिपाही बच्चों, औरतों और बूढ़ों तक की परवा किये बिना कोरिया को शमसान बना रहे हैं, तान-की चुप चाप किस तरह बैठ सकती है.

अब मुझे तान-की की तरफ़ देखने का साहस नहीं हो रहा था.

यह सच है मैं तान-की से प्रेम करता हूँ, मुझे अपना सुखी जीवन पसन्द है. लेकिन यह भी सच है कि जिस वक़्त तक इस दुनिया में ऐसे लोग मौजूद हैं जो अपने निजी फ़ायदे के लिये समूची दुनिया को लड़ाई की भयानक आग में झोंक देते हैं, हमारे जीवन के सुखी क्षनों को हम से छीन लेते हैं, जो नहीं चाहते हैं कि हम इनसानों की ऐसी जिन्दगी बसर कर सकें, हम अपने बच्चों से मिलने जा सकें—वह हमला आवर यलो के क़रीब तक आ पहुंचे हैं.

+ + +

मेरे दिमाग़ में उठने वाले विचारों के कारन चेहरे पर होने वाली तबदीली को समझ कर तान-की एक बार मुस्करा दी.

میں کس طرح شانتی سے رہ سکتی ہوں." تانکی کے اِن شبدوں کو سن کر میں اپنے آپ کو من ہی من کو سنے لگا .

مجھے پہلے جان لینا چاہئے تھا کہ اُسکے دل میں کیا طوفان اُٹھا ہوا ہے . کوریا اُس کی ماں بھومی ہے . کوریا کے گاؤں، اُسکی گلیاں، وہاں کے لوگ، وہاں کے کھیت، وہاں کے پہاڑ، وہاں کا پانی، وہاں کی ہوا اُسکے لئے کیا اہمیت رکھتے ہیں . کوریا کی تباہی اُس کے دل پر کیا کیا چوٹ پہونچاتی ہوگی !

ایسے وقت میں جبکہ امریکی ہوائی جہاز ساری کوریا کو تباہ کرنے پر تلے ہوئے ہیں، امریکی سپاہی بچوں، عورتوں اور بوڑھوں تک کی پرواہ کئے بنا کوریا کو شمسان بنا رہے ہیں، تانکی چپ چاپ کس طرح بیٹھ سکتی ہے .

اب مجھے تانکی کی طرف دیکھنے کا ساہس نہیں ہو رہا تھا .

یہ سچ ہے کہ میں تانکی سے پریم کرتا ہوں، مجھے اپنا سکھی جیون پسند ہے . لیکن یہ بھی سچ ہے کہ جس وقت تک اِس دنیا میں ایسے لوگ موجود ہیں جو اپنے نجی فائدے کے لئے سموچی دنیا کو لڑائی کی بھیانک آگ میں جھونک دیتے ہیں، ہمارے جیون کے سکھی چھنوں کو ہم سے چھین لیتے ہیں، جو نہیں چاہتے کہ ہم انسانوں کی ایسی زندگی بسر کر سکیں، ہم اپنے بچوں سے ملنے جا سکیں — وہ حملہ آور یلو کے قریب تک آپہونچے ہیں .

× + × ×

میرے دماغ میں اُٹھنے والے وچاروں کے کارن چہرے پر ہونے والی تبدیلی کو سمجھکر تانکی ایک بار مسکرا دی .

नये चीन में तालीम के दो साल

(भाई लिऊ शीह)

पिछले दो बरस में हमारे देश और हमारे लोगों ने बड़ी बड़ी कामयाबियां हासिल की हैं और काफ़ी तरक़्क़ी की है. चीन की नई क्रान्ति ने हमारी समाजी और आर्थिक जिन्दगी में दुनियावी तबदीलियां पैदा कर दी हैं. इसी के साथ साथ तालीम के दायरे में भी बेमिसाल तरक़्क़ी हुई है. सच यह है कि चीन के साढ़े सैंतालीस करोड़ इनसान एक ज़बरदस्त तालीमी इन्क़िलाब में से गुज़र रहे हैं.

نئے چین میں تعلیم کے دوسال

(بھائی لیو شیہ)

پچھلے دو برس میں ہمارے دیش اور ہمارے لوگوں نے بڑی بڑی کامیابیاں حاصل کی ہیں اور کافی ترقی کی ہے . چین کی نئی کرانتی نے ہماری سماجی اور آرتھک زندگی میں بنیادی تبدیلیاں پیدا کردی ہیں . اِسی کے ساتھ ساتھ تعلیم کے دائرے میں بھی بےمثال ترقی ہوئی ہے . سچ یہ ہے کہ چین کے ساڑھے سینتالیس کروڑ انسان ایک زبردست تعلیمی انقلاب میں سے گزر رہے ہیں .

आगे बढ़ते हुए उसने पूछा—"इसका नाम क्या है ?"

"किम ल्यांग च्यू."

नाम सुनते ही उसका चेहरा सुस्त पड़ गया. उसने उसे जमीन पर रख दिया और ग़ौर से पहचानने की कोशिश करने लगी. मैं परेशान था कि आखिर इस बात ने इसे चौंका क्यों दिया. कुछ छन बाद उसने दियासलाई जलाई और घायल के चेहरे को ध्यान से देखा और फिर ऐसा मालूम हुआ कि वह कुछ कह रही है जो मेरी समझ में नहीं आ रहा है.

वह सीधी खड़ी हो गई. मैंने देखा उसकी आंखों में आंसू थे. भर्राए गले से वह बोली—"यह मेरा भाई है."

यह तान-की से मेरी पहली मुलाक़ात थी.

× × ×

इस वक़्त लैम्प की धीमी रोशनी में बैठी अपनी पत्नी तान-की को देख कर मुझे बारह बरस पहले की ज़िन्दगी की याद हो आई. जापान विरोधी लड़ाई की घटनाओं में जान सी पड़ गई.

लेकिन अब तो तान-की आठ बरस के एक लड़के की मां थी. उसका जीवन सुख से भरा पूरा था. हमें अपने काम में आनन्द आता था. हममें काम करने के लिये एक साहस था, एक लगन थी. मुझे ख़याल आया कि अपने फ़र्ज़ को भली भांत समझने और उस पर सख़्ती से क़ायम रहने के कारन ही तान-की अनगिनत कठिनाइयों के बीच सफल रह सकी. उसी के साहस, फ़र्ज़ शनासी और विश्वास के कारन ही मुझे कितनी बार प्रेरना मिली और मैं कामयाबी से अपने रास्ते पर आगे बढ़ने में कामयाब हुआ.

मुझे याद हो आया कि 1942 में जब हम लोग छुप कर काम कर रहे थे, जापानियों ने तान-की को पकड़ लिया. तरह तरह की भयानक तकलीफ़ें दे कर भी वह तान-की से एक शब्द भी न जान पाए.

जितना ही मैं पिछली बातों पर सोचता गया उतना ही मुझे अपने व्योहार के लिये नफ़रत सी होने लगी.

इस दो साल के सुखी जीवन ने जैसे मुझे मेरा फ़र्ज़ भुला दिया हो. मैं कायर बन रहा था.

मैं सोच रहा था जीवन के बारे में मेरा विचार क्यों कर बदल गया. क्यों मैं वह अब नहीं रहा जो मुझे होना चाहिये. जीवन से सदा संघर्ष में ही मुझे आनन्द आना चाहिये.

क्या तान-की से एक बार फिर बिछड़ने का साहस मुझ में नहीं रह गया ?

× + ×

"अपने देश पर इस भयानक संकट के जमाने में

آگے بڑھتے ہوئے اُس نے پوچھا — " اِسکا نام کیا ہے ؟"

" کم لیانگ چیو ."

نام سنتے ہی اُسکا چہرہ سست پڑ گیا . اُس نے اُسے زمین پر رکھ دیا اور غور سے پہچاننے کی کوشش کرنے لگی . میں پریشان تھا کہ آخر اِس بات نے اِسے چونکا کیوں دیا . کچھ چھن بعد اُس نے دیاسلائی جلائی اور گھایل کے چہرے کو دھیان سے دیکھا اور پھر ایسا معلوم ہوا کہ وہ کچھ کہہ رہی ہے جو میری سمجھ میں نہیں آرہا ہے .

وہ سیدھی کھڑی ہوگئی . میں نے دیکھا اُسکی آنکھوں میں آنسو تھے . بھرآئے گلے سے وہ بولی — " یہ میرا بھائی ہے ."

یہ تانکی سے میری پہلی ملاقات تھی .

× × × ×

اِس وقت لیمپ کی دھیمی روشنی میں بیٹھی اپنی پتنی تانکی کو دیکھ کر مجھے بارہ برس پہلے کی زندگی کی یاد ہو آئی . جاپان وِرودھی لڑائی کی گھٹناؤں میں جان سی پڑ گئی .

لیکن اب تو تانکی آٹھ برس کے ایک لڑکے کی ماں تھی . اُس کا جیون سکھ سے بھراپورا تھا . ہمیں اپنے کام میں آنند آتا تھا . ہم میں کام کرنے کے لئے ایک ساہس تھا' ایک لگن تھی . مجھے خیال آیا کہ اپنے فرض کو بھلی بھانت سمجھنے اور اُس پر سختی سے قائم رہنے کے کارن ہی تانکی اَنگِنت کٹھنائیوں کے بیچ سپھل رہ سکی . اُسی کے ساہس' فرض شناسی اور وشواس کے کارن ہی مجھے کتنی بار پریرنا ملی اور میں کامیابی سے اپنے راستے پر آگے بڑھنے میں کامیاب ہوا .

مجھے یاد ہو آیا کہ 1942 میں جب ہم لوگ چھپ کر کام کر رہے تھے' جاپانیوں نے تانکی کو پکڑ لیا . طرح طرح کی بھیانک تکلیفیں دے کر بھی وہ تانکی سے ایک شبد بھی نہ جان پائے .

جتنا ہی میں پچھلی باتوں پر سوچتا گیا اُتنا ہی مجھے اپنے بیوہار کے لئے نفرت سی ہونے لگی .

اِس دو سال کے سکھی جیون نے جیسے مجھے میرا فرض بھلا دیا ہو . میں کایر بن رہا تھا .

میں سوچ رہا تھا جیون کے بارے میں میرا وچار کیوں کر بدل گیا . کیوں میں وہ اب نہیں رہا جو مجھے ہونا چاہئے . جیون سے سدا سنگھرش میں ہی مجھے آنند آنا چاہئے .

کیا تانکی سے ایک بار پھر بچھڑنے کا ساہس مجھ میں نہیں رہ گیا ؟

+ × × ×

" اپنے دیش پر اس بھیانک سنکٹ کے زمانے میں

दो बरस बड़ी एक बहन एक भरोसे के दोस्त के साथ यलो नदी के पार जापान के ख़िलाफ़ लड़ने वाले एक छापा मार दस्ते में शामिल हो गए थे.

किम को पीछे जाने वाले दल के साथ जाने का हुक्म मिला. पर जापानियों से अपनी नफ़रत और पिता की मौत के बदले की प्रबल इच्छा के कारन वह चुप चाप वापिस लौट आया और ठीक उस जगह पहुँचा जहां भयानक गोलाबारी हो रही थी. गोलाबारी के बीच रह कर वह घायल साथियों को अपनी कमर पर रख कर सुरक्षित जगहों पर पहुंचाने में लग गया. उसकी उमर कम थी इसलिये उसको राइफ़ल नहीं दी गई थी. इसी बीच दुश्मन के एक गोले से किम बुरी तरह घायल हो गया. घाव उसके सिर में लगा था. बहुत ज़ियादा ख़ून निकल जाने की वजह से बेहोश हो कर वह गिर पड़ा.

उसे फ़ौरन पीछे हटाने का हुक्म हुआ. उसको अपनी पीठ पर लादे मैं जल्दी जल्दी चल कर पीछे की तरफ़ जाने वाले दस्ते तक पहुंच जाना चाहता था. सारा रास्ता जंगल से हो कर था और एक भयानक अन्धेरा छाया था. बर्फ़ गिरना बन्द थी लेकिन पेड़ों पर जमी बर्फ़ अभी तक गिर रही थी जो मेरे आगे बढ़ने में रुकावट पैदा कर रही थी.

मैंने किम के घाव को एक कपड़े से बांधने की कोशिश की लेकिन ख़ून बहना बन्द नहीं हुआ. सरदी के कारन उसके होंट नीले पड़ गए थे. ठन्ड से बचाने के लिये मैंने उसे अपने कोट में लपेट लिया और तेज़ी से आगे बढ़ने की कोशिश करने लगा. कठिनाइयां मुझे मालूम ही नहीं हो रही थीं. चलते चलते सुबह हो गई. अब मेरा बदन थकावट से चूर चूर हो गया था.

हम अब हेड क्वार्टर्स के क़रीब ही थे. एक कामरेड ने घायल को ले चलने में मेरी सहायता करने को कहा. हम दोनों संभाल कर उसे उठा कर लिये जा रहे थे. अब मैं जान गया था कि मेरी सहायता करने वाली औरत थी, कुछ दूर चलने के बाद उसने अपनी राइफ़िल मुझे देते हुए किम को अपने कन्धे पर रख लिया. उसके पांव कुछ डगमगाए. वह बोली—"हमारा साथी लड़का ही जान पड़ता है."

"हां, इसकी उमर कुल अभी सोलह बरस की ही है." मैंने जवाब दिया.

मैं डर रहा था कि कहीं उसके पांव न लड़खड़ा जाएं और दोनों ही गिर पड़ें. इस विचार से मैं सीधा खड़ा रहने में उसे सहायता देता रहा जब तक उसने भार ठीक नहीं कर लिया.

دو برس بڑی ایک بہن ایک بھروسے کے دوست کے ساتھ یلونڈی کے پار جاپان کے خلاف لڑنے والے ایک چھاپا مار دستے میں شامل ہوگئے تھے۔

کم کو پیچھے جانے والے دل کے ساتھ جانے کا حکم ملا۔ پر جاپانیوں سے اپنی نفرت اور پتا کی موت کے بدلے کی پربل اچھا کے کارن وہ چپ چاپ واپس لوٹ آیا اور ٹھیک اُس جگہ پہونچا جہاں بھیانک گولہ باری ہو رہی تھی۔ گولہ باری کے بیچ رہ کر وہ گھائل ساتھیوں کو اپنی کمر پر رکھکر سرکشت جگہوں پر پہونچانے میں لگ گیا۔ اس کی عمر کم تھی اِسلئے اُسکو رائفل نہیں دی گئی تھی۔ اسی بیچ دشمن کے ایک گولے سے کم بری طرح گھایل ہوگیا۔ گھاؤ اُس کے سر میں لگا تھا۔ بہت زیادہ خون نکل جانے کی وجہ سے بیہوش ہو کر وہ گر پڑا۔

اُسے فوراً پیچھے ہٹانے کا حکم ہوا۔ اُسکو اپنی پیٹھ پر لادے میں جلدی جلدی چل کر پیچھے کی طرف جانے والے دستے تک پہونچ جانا چاہتا تھا۔ سارا راستہ جنگل سے ہو کر تھا اور ایک بھیانک اندھیرا چھایا تھا۔ برف گرنا بند تھی لیکن پیڑوں پر جمی برف ابھی تک گر رہی تھی جو میرے آگے بڑھنے میں رکاوٹ پیدا کر رہی تھی۔

میں نے کم کے گھاؤ کو ایک کپڑے سے باندھنے کی کوشش کی لیکن خون بہنا بند نہیں ہوا۔ سردی کے کارن اُس کے ہونٹ نیلے پڑ گئے تھے۔ ٹھنڈ سے بچانے کے لئے میں نے اُسے اپنے کوٹ میں لپیٹ لیا اور تیزی سے آگے بڑھنے کی کوشش کرنے لگا۔ کٹھنائیاں مجھے معلوم ہی نہیں ہو رہی تھیں۔ چلتے چلتے صبح ہوگئی۔ اب میرا بدن تھکاوٹ سے چور چور ہوگیا تھا۔

ہم اب ہیڈ کوارٹرس کے قریب ہی تھے۔ ایک کامریڈ نے گھایل کو لے چلنے میں میری سہائتا کرنے کو کہا۔ ہم دونوں سنبھال کر اُسے اُٹھا کر لئے جا رہے تھے۔ اب میں جان گیا تھا کہ میری سہائتا کرنے والی عورت تھی۔ کچھ دور چلنے کے بعد اُس نے اپنی رائفل مجھے دیتے ہوئے کم کو اپنے کندھے پر رکھ لیا۔ اُسکے پاؤں کچھ کچھ ڈگمگا گئے۔ وہ بولی —" ہمارا ساتھی لڑکا ہی جان پڑتا ہے۔"

" ہاں، اِسکی عمر کل ابھی سولہ برس کی ہی ہے۔" میں نے جواب دیا۔

میں ڈر رہا تھا کہ کہیں اُسکے پاؤں نہ لڑکھڑا جائیں اور دونوں ہی گر پڑیں۔ اِس وچار سے میں سیدھا کھڑا رہنے میں اُسے سہائتا دیتا رہا جب تک اُس نے بھار ٹھیک نہیں کر لیا۔

हो कर कोरिया जाने वाले साथियों के बारे में सब कुछ पता था. पर मुझे एक छन को भी यह ख़याल न आया था कि तान-की भी कोरिया जाना चाहेगी क्या नर्स का काम उसे पसन्द नहीं है या रेलवे अस्पताल में उनका काम ज़रूरी नहीं है? अगर वह चला गई तो एक बार फिर हमारे जीवन पर दुख ही दुख छा जाएगा. उससे बिछुड़ने का ध्यान आते ही दिमाग़ी उलझन से परेशान हो कर मैं टहलने लगा.

मेरी आंखें उसके क़रीब रखे गाउन पर गई जो वह ल्यांग के लिये ठीक कर रही थी. मुझे अपनी सांस रुकती सी जान पड़ी. यकायक मैं कह उठा– "ल्यांग का क्या होगा, उसकी देख भाल कौन करेगा ?"

उसने अपना आंखों पर से रूमाल हटाते हुए अपना सिर ऊपर उठाया और मेरी तरफ़ देखते हुए कुछ कहने की कोशिश की, पर शब्द उसके मुँह से न निकल सके. उसने अपना सिर फिर नीचे कर लिया.

उसकी चुप्पी देख मुझे अपना दिल फटता सा जान पड़ा. एक तरफ़ मुझे तान-की की बात पर दुख हो रहा था और दूसरी तरफ़ ख़ुद अपने व्योहार के लिये अपने से एक नफ़रत. मैं उठ कर उसके क़रीब पहुँचा और ठीक उस के सामने कुर्सी खेंच कर बैठ गया. मैं कोरिया की इस औरत को ठीक ठीक समझने की कोशिश कर रहा था. उसके साथ मैंने अपने जीवन के दस बरस बिताए थे और पूरा जीवन बिताने की प्रतिज्ञा की थी.

हर छन हम साथ रहे, हमने दुख साथ साथ सहे, सुख में साथ साथ ख़ुशियां मनाईं. पिछली बातें मेरे दिमाग़ में चक्कर काट रही थीं. मैं अपनी तान-की का बारह बरस पहले की भेंट के बारे में सोचने लगा.

1937 के सर्दी के मौसम की बात है चारों तरफ़ पहाड़ियों पर और मैदानों में बर्फ़ की मोटी चादर सी बिछी हुई जान पड़ती थी. मैं उस वक़्त एक गोरिल्ला दस्ते के साथ था. ह्यू-कान के क़रीब हमारी मुठभेड़ जापानियों के जंगल में घूमने वाले एक पेट्रोल से हुई—अचानक एक बम फटा जिसके फटने से आस पास के पेड़ भी गिर पड़े. ऐसे वक़्त में एक दम फ़ैसला करना ज़रूरी था. यह तय हुआ कि हमारी टुकड़ी का एक हिस्सा तो पास ही में ठहरी हुई हमारी फ़ौज से जा मिले और दूसरा वहीं ठहर कर जापानियों को आगे बढ़ने से रोके. मैं उसी ग्रुप में था जो दुश्मन का मुक़ाबला करने के लिये रुक गया था. एक कोरियन साथी किम-ल्यांग-च्यू जिसकी उमर सिर्फ़ सोलह बरस की थी हमारे साथ रुकना चाहता था. उसके पिता को जापानियों ने मार डाला था, उसको तरह तरह की तकलीफ़ें दी गई थीं. किम की मां भी छुट चुकी थी. वह और उससे

ھو کر کوریا جانے والے ساتھیوں کے بارے میں سب کچھ پتہ تھا . پر مجھے ایک چھن کو بھی یہ خیال نہ آیا تھا کہ تانکی بھی کوریا جانا چاہے گی . کیا نرس کا کام اُسے پسند نہیں ھے یا ریلوے اسپتال میں اُس کا کام ضروری نہیں ھے ؟ اگر وہ چلی گئی تو ایک بار پھر ھمارے جیون پر دکھ ہی دکھ چھا جائے گا . اُس سے بچھڑنے کا دھیان کر کے دماغی اُلجھن سے پریشان ھو کر میں ٹہلنے لگا .

میری آنکھیں اس کے قریب رکھے گاؤن پر گئیں جو وہ لیانگ کے لئے ٹھیک کر رہی تھی . مجھے اپنی سانس رکتی سی جان پڑی . یکایک میں کہہ اُٹھا — " لیانگ کا کیا ھوگا . اُس کی دیکھ بھال کون کرے گا ؟"

اُس نے اپنی آنکھوں پر سے رومال ھٹاتے ھوئے اپنا سر اُوپر اُٹھایا اور میری طرف دیکھتے ھوئے کچھ کہنے کی کوشش کی' پر شبد اس کے منہ سے نہ نکل سکے . اس نے اپنا سر پھر نیچے کر لیا .

اسکی چپی دیکھ مجھے اپنا دل پھٹتا سا جان پڑا . ایک طرف مجھے تانکی کی بات پر دکھ ھو رھا تھا اور دوسری طرف خود اپنے ویوہار کے لئے اپنے سے ایک نفرت . میں اُٹھکر اُس کے قریب پہونچا اور ٹھیک اُس کے سامنے کرسی کھینچ کر بیٹھ گیا . میں کوریا کی اِس عورت کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے کی کوشش کر رھا تھا . اسکے ساتھ میں نے اپنے جیون کے دس برس بتائے تھے اور پورا جیون بتانے کی پرتگیا کی تھی .

ھر چھن ھم ساتھ رہے . ھم نے دکھ ساتھ ساتھ سہے' سکھ میں ساتھ ساتھ خوشیاں منائیں . پچھلی باتیں میرے دماغ میں چکر کاٹ رہی تھیں . میں اپنی تانکی کی بارہ برس پہلے کی بھینٹ کے بارے میں سوچنے لگا .

1937 کے سردی کے موسم کی بات ھے چاروں طرف پہاڑیوں پر اور میدانوں میں برف کی موٹی چادر سی بچھی ھوئی جان پڑتی تھی . میں اس وقت ایک گوریلا دستے کے ساتھ تھا . ھیوکان کے قریب ھماری مٹھ بھیڑ جاپانیوں کے جنگل میں گھومنے والے ایک پٹرول سے ھوئی — اچانک ایک بم پھٹا جس کے پھٹنے سے آس پاس کے پیڑ بھی گر پڑے . ایسے وقت میں ایک دم فیصلہ کرنا ضروری تھا . یہ طے ھوا کہ ھماری ٹکڑی کا ایک حصہ تو پاس ھی میں ٹھہری ھوئی ھماری فوج سے جا ملے اور دوسرا وھیں ٹھہر کر جاپانیوں کو آگے بڑھنے سے روکے . میں اُسی گروپ میں تھا جو دشمن کا مقابلہ کرنے کے لئے رک گیا تھا . ایک کوریَن ساتھی کم لیانگ چیو جس کی عمر صرف سولہ برس کی تھی ھمارے ساتھ رکنا چاھتا تھا . اس کے پتا کو جاپانیوں نے مار ڈالا تھا' اُس کو طرح طرح کی تکلیفیں دی گئی تھیں . کم کی ماں بھی چھوٹ چکی تھی . وہ اور اُس سے

हमने अपने बेटे स्यांग को स्कूल भेज दिया था और छुट्टियां आने पर हम दोनों ही उसे वापस लेने गए थे. तान-की और मुझे अब अपने अपने कामों से थोड़ी फ़ुरसत भी मिल जाती थी. हम दोनों बाज़ार जाते, अपनी ज़रूरत की चीजें एक दूसरे की राय से ही खरीदते. किसी दिन फ़ुरसत के समय कोई दूसरा काम न होने पर हम लोग यलो नदी के किनारे टहलने चले जाते और घन्टों पिछली घटनाओं और भविश्य की योजनाओं पर बातें करते रहते. अब हमारा काम भी मुक़र्रर था और उसमें हमें आनन्द आता था. हममें एक नया उत्साह, एक नया जोश पैदा हो रहा था और हम बेहद सुखी थे. ऐसी हालत में मैं तान-की के शब्दों का मतलब नहीं समझ सका.

"तुम कहना क्या चाहती हो ?" मैंने पूछा.

"मैं बहुत सोचती रही हूँ." इतना कह कर वह चुप हो गई उसके चेहरे पर कुछ परेशानी की रेखाएं उभर आई. फिर कुछ छन बाद वह बोली—"मैं कुछ दिन पहले ही तुम से कहना चाहती थी............मैं कोरिया जाना चाहती हूँ."

उसके मुंह से यह शब्द सुनने की आशा मैं नहीं रखता था. मैंने अपनी प्याली मेज़ पर रख दी. मैं सोचने लगा—तान-की मुझे छोड़ कर जाना चाहती है—मेरी पत्नी, मेरी जीवन साथी, मेरी सब कुछ मुझे छोड़ कर.........अपने प्यारे बच्चे को छोड़ कर जाना चाहती है. मैं बहुत अधीर हो उठा. एक गहरी पीड़ा से मेरा मन भर गया.

"तान-की ! क्या सचमुच ही तुम जाना चाहती हो?" मैं एक ही सांस में कह गया. उसने अपना सिर हिलाया.

"नहीं, नहीं ! तुम नहीं जा सकतीं. मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगा." मैं जोश में यकायक ज़ोर से चिल्ला उठा.

कुछ छन हम दोनों के बीच एक उलझन पैदा करने वाली ख़ामोशी छाई रही. तान-की की आंखें खुल कर चौड़ी हो गई थीं और उनमें परेशानी साफ़ झलक रही थी. उसने अपने आपको संभालते हुए कहा—"तुम्हारा क्या मतलब है, क्या तुम मुझे नहीं जाने दोगे ?"

मैंने अपने शब्द दुहरा दिये.

इस पर उसने बहुत ही मीठे शब्दों में कहा—"मुझे विश्वास है तुम मुझे जाने से नहीं रोकोगे. जो कुछ तुम कह रहे हो जोश और मुझको न समझ सकने के कारन कह रहे हो. तुम जानते हो, मैं जाने के लिये कितनी बेचैन हूँ ? न जाकर क्या मैं अपने दिमाग़ को क़ाबू में रख सकूँगी ? क्या मैं इन हालतों में सुखी रह सकती हूँ ?"

कुछ न समझ पा सकने वाले बालक के समान मैं उसकी तरफ़ देख रहा था. मुझे अपने नगर से वालन्टियर

ہم نے اپنے بیٹے لیانگ کو اسکول بھیج دیا تھا اور چھٹیاں آنے پر ہم دونوں ہی اسے واپس لینے گئے تھے۔ تانکی اور مجھے اب اپنے اپنے کاموں سے تھوڑی فرصت بھی مل جاتی تھی۔ ہم دونوں بازار جاتے، اپنی ضرورت کی چیزیں ایک دوسرے کی رائے سے ہی خریدتے۔ کسی دن فرصت کے سمے کوئی دوسرا کام نہ ہونے پر ہم لوگ یلو ندی کے کنارے ٹہلنے چلے جاتے اور گھنٹوں پچھلی گھٹناؤں اور بھوشیہ کی یوجناؤں پر باتیں کرتے رہتے۔ اب ہمارا کام بھی مقرر تھا اور اس میں ہمیں آنند آتا تھا۔ ہم میں ایک نیا اُتساہ، ایک نیا جوش پیدا ہورہا تھا اور ہم بے حد سکھی تھے۔ ایسی حالت میں میں تانکی کے شبدوں کا مطلب نہیں سمجھ سکا۔

"تم کہنا کیا چاہتی ہو؟" میں نے پوچھا۔

"میں بہت سوچتی رہی ہوں۔" اتنا کہہ کر وہ چپ ہوگئی۔ اس کے چہرے پر کچھ پریشانی کی ریکھائیں اُبھر آئیں۔ پھر کچھ چھن بعد وہ بولی—"میں کچھ دن پہلے ہی تم سے کہنا چاہتی تھی.........میں کوریا جانا چاہتی ہوں۔"

اس کے منہ سے یہ شبد سننے کی آشا میں نہیں رکھتا تھا۔ میں نے اپنی پیالی میز پر رکھ دی۔ میں سوچنے لگا — تانکی مجھے چھوڑ کر جانا چاہتی ہے—میری پتنی، میری جیون ساتھی، میری سب کچھ، مجھے چھوڑ کر.........اپنے پیارے بچے کو چھوڑ کر جانا چاہتی ہے۔ میں بہت ادھیر ہو اُٹھا۔ ایک گہری پیڑا سے میرا من بھر گیا۔

"تانکی! کیا سچ مچ ہی تم جانا چاہتی ہو؟" میں ایک ہی سانس میں کہہ گیا۔ اس نے اپنا سر ہلایا۔

"نہیں، نہیں! تم نہیں جاسکتیں۔ میں تمہیں نہیں جانے دونگا۔" میں جوش میں یکایک زور سے چلّا اُٹھا۔

کچھ چھن ہم دونوں کے بیچ ایک اُلجھن پیدا کرنے والی خاموشی چھائی رہی۔ تانکی کی آنکھیں کھل کر چوڑی ہوگئی تھیں اور اُن میں پریشانی صاف جھلک رہی تھی۔ اس نے اپنے آپ کو سنبھالتے ہوئے کہا—"تمہارا کیا مطلب ہے، کیا تم مجھے نہیں جانے دوگے؟"

میں نے اپنے شبد دہرا دیئے۔

اِس پر اس نے بہت ہی میٹھے شبدوں میں کہا—"مجھے وشواس ہے تم مجھے جانے سے نہیں روکو گے۔ جو کچھ تم کہہ رہے ہو جوش اور مجھکو نہ سمجھ سکنے کے کارن کہہ رہے ہو۔ تم جانتے ہو، میں جانے کے لئے کتنی بے چین ہوں؟ نہ جا کر کیا میں اپنے دماغ کو قابو میں رکھ سکونگی؟ کیا میں اِن حالتوں میں سکھی رہ سکتی ہوں؟"

کچھ نہ سمجھ پا سکنے والے بالک کے سمان میں اس کی طرف دیکھ رہا تھا۔ مجھے اپنے نگر سے والنٹیر

आज सभी चीज़ें नियम में बंध गई थीं. सब एक धुरे से चल रही थीं. हमारे लिये भविश्य में आने वाले शुभ-दिनों का यह सन्देश था. हमें अपनी हर चाज़ की रक्षा करनी पड़ेगी. जो हाथ इन्हें तबाह करना चाहते हैं उनसे मुक़ाबला करना पड़ेगा. हम यह नवजीवन पाकर उसे अब खो नहीं सकते! मैं उन्हीं विचारों में खोया, कल्पनाओं में गुमसुम धीमे धीमे वर्क शाप से लौट रहा था.

× × ×

काफ़ी अन्धेरा होने पर ही मैं तान-की के पास पहुंच सका. दरवाज़ा खोल कर मैं अन्दर गया. तान-की बच्चों का सूती गाउन ठीक कर रही थी. लैम्प की रोशनी उसके चेहरे और खुले बालों पर पड़ रही थी. इस समय उसके मुखड़े पर छाई चमक को मैं एक टुक घूरता हुआ उसके क़रीब बैठ गया.

"यह मेरे बिलकुल ठीक आता है." स्वेटर की तरफ़ इशारा करते हुए मैंने कहा.

उसने हाथ की सुई एक तरफ़ रख दी और गाउन को तह करती हुई बोली—"अब ठन्ड पड़ने लगी है. अब की बार जब तुम जाना तो ल्यांग के लिये यह गाउन और दूसरे गर्म कपड़े ले जाना न भूलना." ल्यांग हमारे आठ बरस के बच्चे का नाम है. हमने यह नाम उसके मामा किम-ल्यांग-च्यू की याद सदा अमर रखने के लिये रखा है. तान-की का भाई किम-ल्यांग-च्यू जापानियों के हाथों अपने देश की रक्षा करता हुआ शहीद हुआ था.

मैंने दो प्यालों में गरम पानी डाला और एक तान-की की तरफ़ बढ़ा कर दूसरा ख़ुद उठा लिया. वह उस प्याले को दोनों हाथों से पकड़ते हुए गंभीर निगाहों से मेरी तरफ़ देखने लगी.

उसे कुछ बोलते न देख कर मैंने ख़ुद ही पूछा—"तुम मुझसे क्या कहना चाहती थीं?"

तान-की ने जवाब नहीं दिया. वह उसी तरह मौन बैठी रही. मैंने आशंका से पूछा—"क्या बात है?"

अपने प्याले से एक घूँट लेकर उसने धीमी आवाज़ में कहा—"संसार का हर आदमी सुखी रहना चाहता है." मेरी तरफ़ से आंखें बिना हटाए ही वह कहती गई—"पर वह आदमी सुखी नहीं रह सकता जो अपनी ज़िम्मेदारी को भुला दे."

यह शब्द मैंने अपने दस बरस के विवाहित जीवन में तान-की के मुँह से कई बार सुने थे. पर पिछले कुछ बरस में जो तब्दीलियां हुई थीं वह हमारे पुराने अरमानों को पूरा कर रही थी. तान-की ख़ुद भी बहुत ख़ुश थी, उसमें एक फुरती आ गई थी.........लेकिन फिर.........?

...سبھی چیزیں نیم میں بندھ گئی تھیں . سب
...رے سے چل رہی تھیں . ہمارے لئے بھوشیہ میں
...شبھ دنوں کا یہ سندیش تھا . ہمیں اپنی ہر
... رکشا کرنی پڑے گی . جو ہاتھ انہیں تباہ کرنا
...ہیں اُن سے مقابلہ کرنا پڑے گا . ہم یہ نوجیون پاکر
... کھو نہیں سکتے ! میں اُنہیں وچاروں میں کھویا
... میں گم سم دھیمے دھیمے ورک شاپ سے لوٹ
...

+ × ×

...ی اندھیرا ہونے پر ہی میں تانکی کے پاس پہونچ
...روازہ کھول کر میں اندر گیا . تانکی بچوں کا سوتی
...ھیک کررہی تھی . لیمپ کی روشنی اُس کے
...اور کھلے بالوں پر پڑ رہی تھی . اِس سمے اُس کے
... پر چھائی چمک کو میں ایک ٹک گھورتا ہوا
... قریب بیٹھ گیا .

...ہ میرے بالکل ٹھیک آتا ہے ." سویٹر کی طرف
...رتے ہوئے میں نے کہا .

...ں نے ہاتھ کی سوئی ایک طرف رکھ دی اور گاؤن
...رتی ہوئی بولی—"اب ٹھنڈ پڑنے لگی ہے . اب
... جب تم جانا تو لیانگ کے لئے یہ گاؤن اور دوسرے
...ڑے لے جانا نہ بھولنا ." لیانگ ہمارے آٹھ برس
... کا نام ہے . ہم نے یہ نام اُس کے ماما کم لیانگ
...ی یاد سدا امر رکھنے کے لئے رکھا ہے . تانکی کا
...کم لیانگ چیو جاپانیوں کے ہاتھوں اپنے دیش کی
...رتا ہوا شہید ہوا تھا . میں نے دو پیالوں میں گرم
...ڈالا اور ایک تانکی کی طرف بڑھاکر دوسرا خود
...ا . وہ اُس پیالے کو دونوں ہاتھوں سے پکڑتے ہوئے
... نگاہوں سے میری طرف دیکھنے لگی .

...ے کچھ بولتے نہ دیکھ کر میں نے خود ہی پوچھا—
...جھ سے کیا کہنا چاہتی تھیں ؟"

...نکی نے جواب نہیں دیا . وہ اُسی طرح مون بیٹھی
... میں نے آشنکا سے پوچھا—"کیا بات ہے؟"

...ے پیالے سے ایک گھونٹ لے کر اُس نے دھیمی آواز
...کہا—"سنسار کا ہر آدمی سکھی رہنا چاہتا ہے."
... طرف سے آنکھیں بنا ہٹائے ہی وہ کہتی گئی—
...ہ آدمی سکھی نہیں رہ سکتا جو اپنی ذمے داری
...دے."

...ہ شبد میں نے اپنے دس برس کے وواہت جیون
...تانکی کے منہ سے کئی بار سنے تھے . پر پچھلے کچھ
... میں جو تبدیلیاں ہوئی تھیں وہ ہمارے پرانے
...ں کو پورا کررہی تھیں . تانکی خود بھی بہت
... تھی ' اُس میں ایک پھرتی آگئی تھی.......
...یکن پھر.......؟

मैं उसकी तरफ भेद भरी आंखों से देख रहा था! मन में तरह तरह के सन्देह उठने लगे—वह इस वक़्त क्यों आ रही है? क्या ज़रूरी काम हो सकता है? उसके क़रीब आ जाने पर मैंने सवाल किया 'कामरेड का क्या हाल है?" मेरा मतलब एक रोज़ पहले अमरीकी गोले से ज़ख़्मी होकर अस्पताल में भरती होने वाले एक कामरेड से था.

उसने अपना सर हिला कर मानो मुझे बताया कि कामरेड की हालत ठीक है.

मेरे बिलकुल क़रीब आ कर उसने एक ऊनी स्वेटर मेरे हाथों में थमा दिया. पास पड़े हुए डिब्बों पर गोलियों के गढ़ों को ध्यान से देखते हुए उसने कहा—"सियोल से मेरी मां की चिट्ठी आई है. उसमें उसने लिखा है कि अमरीकी हवाई जहाज कारखाने, स्कूल, मकान, दुकान सारी चीज़ें बरबाद कर रहे हैं, वह कुछ भी नहीं छोड़ रहे हैं."

मैंने उसके चेहरे के भाव पढ़ने की कोशिश की, पर वह मुझे शान्त जान पड़ी, उनमें उबाल नहीं था.

मेरे कोरियन बोलने के मुक़ाबले मेरी पत्नी कहीं अच्छी तरह चीनी भाषा बोल सकती है. इसकी ख़ास वजह यह है कि वह कोरियन होते हुए और यलो नदी के उस पार पैदा होकर भी, छुटपन से ही यलो नदी के इस पार रह कर परवान चढ़ी थी.

अपनी चिन्ता को अधिक न दबा कर मैंने उससे सवाल किया—"आज इस समय कैसे आ धमकीं, तुम्हारी छुट्टी है क्या?"

उस वक़्त वह उन गढ़ों में अपनी उंगलियां डाल कर उनकी गहराई देख रही थी. मेरा सवाल सुनकर वह मुस्कराई. आगे बढ़ कर उसने मेरे हाथ से स्वेटर ले लिया और फिर बोली—"आज रात अस्पताल के आराम घर में मैं तुम्हारा इन्तज़ार करूंगी, मुझे तुमसे कुछ कहना है." यह कह कर वह लाइन पार करती हुई दूसरी तरफ़ खड़े डिब्बों की आड़ में आंखों से ओझल हो गई.

× × ×

शाम के वक़्त सूरज की किरनें चारों तरफ़ फैल रही थीं. दिन भर के बाद इस समय आसमान साफ़ चमक रहा था.

चारों तरफ़—रेलवे लाइन, कोयला गोदाम, पानी की टंकी, वर्क शाप, ऊंची ऊंची चिमनियां और मज़दूरों के आराम घर—देख कर नए निर्माण की एक भावना उमड़ती जान पड़ती थी. पच्छिम की तरफ़ जाते सूरज की लाल किरनें नई बनी इमारतों की लाल ईंटों पर एक चमक पैदा कर रही थीं.

میں اُس کی طرف بھید بھری آنکھوں سے دیکھ رہا تھا! من میں طرح طرح کے سندیہہ اُٹھنے لگے—وہ اِس وقت کیوں آرہی ہے؟ کیا ضروری کام ہو سکتا ہے؟ اس کے قریب آجانے پر میں نے سوال کیا—"کامریڈ کا کیا حال ہے؟" میرا مطلب ایک روز پہلے امریکی گولے سے زخمی ہوکر اسپتال میں بھرتی ہونے والے ایک کامریڈ سے تھا۔

اُس نے اپنا سر ہلاکر مانو مجھے بتایا کہ کامریڈ کی حالت ٹھیک ہے۔

میرے بالکل قریب آکر اُس نے ایک اونی سویٹر میرے ہاتھوں میں تھما دیا۔ پاس پڑے ہوئے ڈبوں پر گولیوں کے گڈھوں کو دھیان سے دیکھتے ہوئے اُس نے کہا—"سیول سے میری ماں کی چٹھی آئی ہے۔ اُس میں اُس نے لکھا ہے کہ امریکی ہوائی جہاز کارخانے، اسکول، مکان، دوکان، ساری چیزیں برباد کررہے ہیں، وہ کچھ بھی نہیں چھوڑ رہے ہیں۔"

میں نے اُس کے چہرے کے بھاؤ پڑھنے کی کوشش کی، پر وہ مجھے شانت جان پڑے، اُن میں اُبال نہیں تھا۔

میرے کورین بولنے کے مقابلے میری پتنی کہیں اچھی طرح چینی بھاشا بول سکتی ہے۔ اس کی خاص وجہ یہ ہے کہ وہ کورین ہوتے ہوئے اور یلو ندی کے اُس پار پیدا ہوکر بھی، چھٹپن سے ہی یلو ندی کے اِس پار رہ کر پروان چڑھی تھی۔

اپنی چنتا کو ادھک نہ دباکر میں نے اُس سے سوال کیا—"آج اِس سمے کیسے آدھمکیں، تمہاری چھٹی ہے کیا؟"

اُس وقت وہ اُن گڈھوں میں اپنی انگلیاں ڈال کر اُن کی گہرائی دیکھ رہی تھی۔ میرا سوال سن کر وہ مسکرائی۔ آگے بڑھ کر اُس نے میرے ہاتھ سے سویٹر لے لیا اور پھر بولی—"آج رات اسپتال کے آرام گھر میں میں تمہارا انتظار کرونگی، مجھے تم سے کچھ کہنا ہے۔" یہ کہ کر وہ لائن پار کرتی ہوئی دوسری طرف کھڑے ڈبوں کی آڑ میں آنکھوں سے اوجھل ہوگئی۔

× × × ×

شام کے وقت سورج کی کرنیں چاروں طرف پھیل رہی تھیں۔ دن بھر کے بعد اِس سمے آسمان صاف چمک رہا تھا۔

چاروں طرف—ریلوے لائن، کوئلہ گودام، پانی کی ٹنکی، ورک شاپ، اونچی اونچی چمنیوں اور مزدوروں کے آرام گھر—دیکھ کر نئے نرمان کی ایک بھاونا اُمڑتی جان پڑتی تھی۔ پچھم کی طرف جاتے سورج کی لال کرنیں نئی بنی عمارتوں کی لال اینٹوں پر ایک چمک پیدا کررہی تھیں۔

लिये हजारों अक्षर होते हैं. अगर हमारी लिखावट की तरह उसमें भी 40-42 अक्षर होते तो शायद चीन ने टाइपों की भी ईजाद कर ली होती.

बारहवीं सदी के आखिर में तो भारत में बौद्ध धर्म का भी सितारा डूबने लगा, इसलिये भारती विद्वानों के चीन जाने की संभावना नहीं रह गई थी. चंगेज़ खाँ हालांकि बौद्ध नहीं था, लेकिन उसकी हमदर्दी बौद्धों के साथ ज़रूर थी. चंगेज़ ने अपने पोते क़ुबलई खां वग़ैरा की तालीम की ज़िम्मेदारी एक बौद्ध भिक्षु को दी थी.

आगे चलकर क़ुबलई (1260-94 ईसवी) ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया. घुमंतू मंगोलों के कलचरी निर्मान में बौद्ध धर्म ने इतनी मदद की कि पीछे चलकर वह मंगोलों का जाती धर्म बन गया. अब भारत में बौद्ध धर्म नहीं था, लेकिन मंगोल में धर्म प्रचार का काम तिब्बती आचार्यों ने किया. मंगोल त्रिपटक का अधिक भाग तिब्बती त्रिपटक (कंजूर, तंजौर) का अनुवाद है.

बाहर के ज़ियादातर देशों से भारत का सम्बन्ध बौद्ध धर्म के ज़रिये हुआ था. वह सम्बन्ध बौद्ध धर्म के ख़त्म होने से जहाँ कमज़ोर होने लगा, वहाँ देश की ग़ुलामी ने भी कलचरी मेल को भुलाने में हाथ बटाया. सदियों बाद भारत इस हालत में है कि वह उस पुराने कलचरी सम्बन्ध को फिर से ज़िन्दा करे.

لئے ہزاروں اکشر ہوتے ہیں. اگر ہماری لکھاوٹ کی طرح اس میں بھی 40-42 اکشر ہوتے تو شاید چین نے ٹائپوں کی بھی ایجاد کرلی ہوتی.

بارہویں صدی کے آخر میں تو بھارت میں بودھ دھرم کا بھی ستارہ ڈوبنے لگا' اس لئے بھارتی ودوانوں کے چین جانے کی سمبھاونا نہیں رہ گئی تھی. چنگیز خاں حالانکہ بودھ نہیں تھا' لیکن اس کی ہمدردی بودھوں کے ساتھ ضرور تھی. چنگیز نے اپنے پوتے قبلئی خاں وغیرہ کی تعلیم کی ذمہ داری ایک بودھ بھکشو کو دی تھی.

آگے چل کر قبلئی (1260-94 عیسوی) نے بودھ دھرم سویکار کیا. گھومنتو منگولوں کے کلچری نرمان میں بودھ دھرم نے اتنی مدد کی کہ پیچھے چل کر وہ منگولوں کا جاتی دھرم بن گیا. اب بھارت میں بودھ دھرم نہیں تھا' لیکن منگول میں دھرم پرچار کا کام تبتی آچاریوں نے کیا. منگول ترپٹک کا ادھک بھاگ تبتی ترپٹک (کنجور' تنجور) کا انوواد ہے.

باہر کے زیادہ تر دیشوں سے بھارت کا سمبندھ بودھ دھرم کے ذریعے ہوا تھا. وہ سمبندھ بودھ دھرم کے ختم ہونے سے جہاں کمزور ہونے لگا' وہاں دیش کی غلامی نے بھی کلچری میل کو بھلانے میں ہاتھ بٹایا. صدیوں بعد بھارت اس حالت میں ہے کہ وہ اس پرانے کلچری سمبندھ کو پھر سے زندہ کرے.

एक चीनी कहानी

प्यार की टक्कर

(भाई याव चुँग)

यालो नदी के उत्तरी किनारे पर एक रेलवे स्टेशन है. मैं उसी स्टेशन की मशीन शाप का चार्जमैन हूँ.

एक रोज़ मैं अमरीकी बम्बारों के हाथों तबाह किये हुए बायलर और डिब्बों पर बमों की चोट से पैदा होने वाले गढ़ों की देख भाल कर रहा था. बायलर और डिब्बे तितरबितर इधर उधर पड़े थे. उसी समय मैंने तान-की को अपनी तरफ़ आते देखा! मुझे बहुत ताज्जुब हुआ रेलवे स्टेशन के बिलकुल क़रीब ही एक अस्पताल है और तान-की उसी में हेड नर्स है. इस वक़्त उसका आना मुझे अचरज में डाले बिना नहीं रह सकता था. क्योंकि बहुत ही ज़रूरी काम होने पर वह अस्पताल की हद छोड़ती है.

ایک چینی کہانی

پیار کی ٹکر

(بھائی یاو چنگ)

یالوندی کے اتری کنارے پر ایک ریلوے اسٹیشن ہے. میں اسی اسٹیشن کی مشین شاپ کا چارج مین ہوں.

ایک روز میں امریکی بمباروں کے ہاتھوں تباہ کئے ہوئے بائلر اور ڈبوں پر بموں کی چوٹ سے پیدا ہونے والے گڈھوں کی دیکھ بھال کر رہا تھا. بائلر اور ڈبے تتر بتر ادھر ادھر پڑے تھے اسی سمے میں نے تانکی کو اپنی طرف آتے دیکھا! مجھے بہت تعجب ہوا. ریلوے اسٹیشن کے بالکل قریب ہی ایک اسپتال ہے اور تانکی اسی میں ہیڈ نرس ہے. اس وقت اس کا آنا مجھے اچرج میں ڈالے بنا نہیں رہ سکتا تھا. کیونکہ بہت ہی ضروری کام ہونے پر وہ اسپتال کی ڈیوڑھی چھوڑتی ہے.

पांचवीं सदी के आखिर में भी दक्खिनी चीन के एक राजकुमार ने कुछ गीत बनाए. इस वंश के इतिहास में लिखा है कि 487 ईसवी में राज कुमार ने "धर्म की गाथाओं के गाने के लिये राग तैयार करने के वास्ते कितने ही भिक्षुओं को इकट्ठा किया." उन्होंने जो गीत तैयार किये थे, उनसे तीन सदी बाद जापान से आने वाले तीर्थ यात्रियों पर बहुत असर पड़ा.

ज्योतिश.

भारती आचार्यों की प्रेरना और सहायता से चीन में ज्योतिश और हिसाब में नई तरक्क़ी हुई. 618 ईसवी में एक भारती विद्वान ने पहले थांग सम्राट के लिये एक नया कलेंडर बनाया. उससे एक सदी पीछे भारती पंडित शुभार सिंह और वज्र बौद्धी के शागिर्द चीनी भिक्षु ई-शिंग (683-747 ईसवी ने हिसाब करके बतलाया कि सूरज के साल में 365-244 दिन और चांद महीने 29-53 दिन होते हैं. 721. ईसवी में सरकार ने इस सुधरे हुए कलेंडर को मान लिया.

वैद्यक.

दवा इलाज की विद्या में बौद्धों का बहुत बड़ा हाथ था. उनके विहार में सभी जगह एक आम डिस्पेन्सरी रहती थी. विहारों से चुनकर नौजवान भिक्षु वैद्यक सीखने के लिये चांग-आन भेजे जाते थे.

छपाई.

जनता का प्यारा धर्म होने के कारन सबसे पहले बौद्ध धर्म ने चीन में छापे का इस्तेमाल किया. बौद्धों के कोई कोई ग्रन्थ पचासों हज़ार की तादाद में दूसरे पाठकों के लिये लिखे जाते थे. उन्होंने देखा कि जिस तरह उल्टे अक्षरों की मुहर बना कर काग़ज़ पर छापा जा सकता है, उसी तरह हम छोटी मोटी किताबों को भी छाप सकते हैं. नवीं सदी के आखिर तक चुंग-तू इस तरह की छपाई का मरकज़ बन गया. 929 ईस्वी में लू-यांग के राज वंश ने जे-च्वान पर क़बज़ा कर लिया और पांच बरस तक राज किया. यहां उनको छापे खाने का पता लगा. 971-83 ईसवी में चीनी बौद्धों ने पांच हज़ार जिल्दों में सारे 'त्रिर पटक' छाप दिये, जिसकी कापियां 985 ईसवी में कोरिया और 986 ईसवी में जापान पहुँचीं.

इस तरह दसवीं सदी के खत्म होते होते चीन में छापे खाने का भारी प्रचार हो गया था. हां, वह इस ज़माने के ढंग की छपाई नहीं थी. अलग अलग बने धात के अक्षरों को कम्पोज़ करके छापने का काम योरप ने किया. ऐसा न करने का कारन यह भी था कि चीनी लिखावट में उचारन (तलफ़्फ़ुज़) का नहीं, मतलब का इशारा होता है. इस

پانچویں صدی کے آخر میں بھی دکھنی چین کے ایک راجکمار نے کچھ گیت بنائے . اِس ونش کے اتہاس میں لکھا ہے کہ 487 عیسوی میں راجکمار نے '' دھرم کی گاتھاؤں کے گانے کے لئے راگ تیار کرنے کے واسطے کتنے ہی بھکشوؤں کو اکٹھا کیا .'' اُنھوں نے جو گیت تیار کئے تھے' اُن سے تین صدی بعد جاپان سے آنے والے تیرتھ یاتریوں پر بہت اثر پڑا .

جیوتش.

بھارتی آچاریوں کی پریرنا اور سہائتا سے چین میں جیوتش اور حساب میں نئی ترقی ہوئی . 618 عیسوی میں ایک بھارتی ودوان نے پہلے تھانگ سمراٹ کے لئے ایک نیا کلنڈر بنایا . اُس سے ایک صدی پیچھے بھارتی پنڈت شبھار سنگھ اور وجر بودھی کے شاگرد چینی بھکشو ای شنگ (683-747 عیسوی) نے حساب کر کے بتلایا کہ سورج کے سال میں 365-244 دن اور چاند مہینے میں 29-53 دن ہوتے ہیں . 721 عیسوی میں سرکار نے اِس سدھرے ہوئے کلنڈر کو مان لیا .

ویدک.

دوا علاج کی ودیا میں بودھوں کا بہت بڑا ہاتھ تھا. اُن کے وہار میں سبھی جگہ ایک عام ڈسپنسری رہتی تھی . وہاروں سے چن کر نوجوان بھکشو ویدک سیکھنے کے لئے چانگ آن بھیجے جاتے تھے .

چھپائی.

جنتا کا پیارا دھرم ہونے کے کارن سب سے پہلے بودھ دھرم نے چین میں چھاپے کا استعمال کیا . بودھوں کے کوئی کوئی گرنتھ پچاسوں ہزار کی تعداد میں دوسرے پاٹھکوں کے لئے لکھے جاتے تھے . اُنھوں نے دیکھا کہ جس طرح اُلٹے اکشروں کی مہر بناکر کاغذ پر چھاپا جاسکتا ہے' اسی طرح ہم چھوٹی موٹی کتابوں کو بھی چھاپ سکتے ہیں . نویں صدی کے آخر تک چنگ تو اِس طرح کی چھپائی کا مرکز بن گیا . 929 عیسوی میں لویانگ کے راج ونش نے چے چوآن پر قبضہ کرلیا اور پانچ برس تک راج کیا . یہاں اُن کو چھاپے خانے کا پتہ لگا . 971-83 عیسوی میں چینی بودھوں نے پانچ ہزار جلدوں میں سارے 'ترپٹک' چھاپ دیئے' جس کی کاپیاں 985 عیسوی میں کوریا اور 986 میں جاپان پہونچیں .

اِس طرح دسویں صدی کے ختم ہوتے ہوتے چین میں چھاپے خانے کا بھاری پرچار ہوگیا تھا . ہاں' وہ اِس زمانے کے ڈھنگ کی چھپائی نہیں تھی . الگ الگ بنے دھات کے اکشروں کو کمپوز کرکے چھاپنے کا کام یوروپ نے کیا . ایسا نہ کرنے کا کارن یہ بھی تھا کہ چینی لکھاوٹ میں اُچارن (تلفظ) کا نہیں' مطلب کا اشارہ ہوتا ہے . اس

में तुन ह्वांग गुफा विहार खास महत्व रखते हैं. यहाँ की कला पर गंधार (तक्ष शिला पेशावर) और मथुरा कला का बहुत असर पड़ा है. यह बहुत मुमकिन है कि जैसे साहित्य के निर्मान में भारती पंडितों ने चीन में जाकर काम किया, उसी तरह भारती कलाकारों ने इन कला की महान यादगारों को तैयार करने में हाथ बटाया हो.

1913-14 ईसवी में कुछ पच्छिमी खोज करने वालों की टोलियां बीच एशिया और चीन के कई भागों में गई थीं. उस समय जरमन टोली का नेता लेलाक, ब्रिटिश टोली का स्टाइन, फ्रेंच टोली का वासी था. रूसी एकेडेमी का भी एक दल आया था, फ्रानसीसी दल अपने काम के लिये बढ़ता सेचूवान में पहुंचा, जहाँ सातवीं सदी से पहले की कई अहम चीजें मिलीं. वहां के गुफा विहार तुन्ह-वांग से कम अहमियत नहीं रखते. यहाँ के सबसे जियादा अहम खंडहर यू-कान (बुद्ध पवित्र स्थान) और क्यान-यू, यन (बुद्ध की चोटी) हैं. ह्वान पू एन का गुफा विहार किवाड़ यू यन नगर के पास एक पहाड़ पर है, जिनमें सात आठ सौ गुफायें हैं. इसे एक चीनी सरकारी ओहदेदार वई-कांग ने बनवाया था. पवित्र स्थानों में से कितने ही बोधी सत्त्वों और भिक्षुओं की मूर्तियां हैं. इन गुफाओं में बहुत से शिला लेख (पत्थर के खम्भे जिन पर इबारत खुदी है), जिन में कितने ही संग युवान, मंग और चंग (मंचू) काल के भी हैं. इस स्थान से कुछ मील दूर हट कर ह्वांग चे-से में कितनी ही गुफाएं हैं, जिनमें बहुत से सुन्दर चित्र हैं. इसी पहाड़ में 16 फीट लम्बी एक ध्यान किये हुए बुद्ध की मूर्ति है.

संगीत.

चीन का अपना एक आजाद संगीत है, जिसका दूसरे देशों से बहुत कम मेल है. भारत में संगीत वीना और वेनू जैसे साजों के सहारे गाया जाता है, पर चीन में जैसा कि आज भी अकसर देखा जाता है, हाथ से बजाने वाले बाजों से मदद ली जाती है. छटी सदी में इन गुफाओं में जो दृश्य दिखाए गए हैं, उनसे पता चलता है कि वीना और वेनू जैसे बाजों का उस समय कुछ कुछ प्रचार होने लगा था, जो पीछे बन्द हो गया. शुरू में बौद्ध धर्म का प्रचार करने वालों के लिये यह बड़ी कठिनाई थी कि कैसे बौद्ध स्तुतियों और प्रार्थनाओं को चीनी संगीत में ढाला जाए. चीनी शब्द एक सलेबली होते थे, जब कि संस्कृत शब्द अधिक सलेबली होते हैं. वहाँ एक ऐसे संगीत की ज़रूरत थी, जिसे विदेशी और स्वदेशी दोनों ही भक्त एक साथ इकट्ठा गा सकें. कहा जाता है एक विई (192-232 ईस्वी) राजकुमार चाव-ची ने ऐसे 42 गीत बनाए थे, जिनमें बहुत से छटी और सातवीं सदी में भी मौजूद थे.

میں تن ہوانگ گپھا وہار خاص مہتو رکھتے ہیں ۔ یہاں کی کلا پر گندھار (تکشلا پیشاور) اور متھرا کلا کا بہت اثر پڑا ہے۔ یہ بہت ممکن ہے کہ جیسے ساہتیہ کے نرمان میں بھارتی پنڈتوں نے چین میں جاکر کام کیا، اسی طرح بھارتی کلا کاروں نے ان کلا کی مہان یادگاروں کو تیار کرنے میں ہاتھ بٹایا ہو۔

1913-14 عیسوی میں کچھ پچھمی کھوج کرنے والوں کی ٹولیاں بیچ ایشیا اور چین کے کئی بھاگوں میں گئیں تھیں ۔ اس سمے جرمن ٹولی کا نیتا لیلاک، برٹش ٹولی کا اسٹائن، فرنچ ٹولی کا واسی تھا ۔ روسی اکیڈیمی کا بھی ایک دل آیا تھا، فرانسیسی دل اپنے کام کے لئے بڑھتا سیچووان میں پہونچا، جہاں ساتویں صدی سے پہلے کی کئی اہم چیزیں ملیں ۔ وہاں کے گپھا وہار تنہ ہوانگ سے کم اہمیت نہیں رکھتے ۔ یہاں کے سب سے زیادہ اہم کھنڈھر یوکان (بدھ پوتر استھان) اور چیان یو ین (بدھ کی چوٹی) ہیں ۔ ہوان ۔ یو ۔ ین کا گپھا وہار کواڑ یو ین نگر کے پاس ایک پہاڑ پر ہے، جن میں سات آٹھ سو گپھائیں ہیں ۔ اسے ایک چینی سرکاری عہدے دار وئی کانگ نے بنوایا تھا ۔ پوتر استھانوں میں سے کتنے ہی بودھی ستوؤں اور بھکشوؤں کی مورتیاں ہیں ۔ ان گپھاؤں میں بہت سے شلا لیکھ (پتھر کے کھمبے جن پر عبارت کھدی ہے)، جن میں کتنے ہی سنگ، یوآن، منگ اور چنگ (منچو) کال کے بھی ہیں ۔ اس استھان سے کچھ میل دور ہٹ کر ہوانگ چے ۔ سے میں کتنی ہی گپھائیں ہیں، جن میں بہت سے سندر چتر ہیں ۔ اسی پہاڑ میں 16 فٹ لمبی ایک دھیان کئے ہوئے بدھ کی مورتی ہے ۔

سنگیت۔

چین کا اپنا ایک آزاد سنگیت ہے، جس کا دوسرے دیشوں سے بہت کم میل ہے ۔ بھارت میں سنگیت وینا اور وینو جیسے سازوں کے سہارے گایا جاتا ہے، پر چین میں جیسا کہ آج بھی اکثر دیکھا جاتا ہے، ہاتھ سے بجانے والے باجوں سے مدد لی جاتی ہے ۔ چھٹی صدی میں ان گپھاؤں میں جو درشیہ دکھائے گئے ہیں، ان سے پتہ لگتا ہے، کہ وینا اور وینو جیسے باجوں کا اس سمے کچھ کچھ پرچار ہونے لگا تھا، جو پیچھے بند ہوگیا ۔ شروع میں بودھ دھرم کا پرچار کرنے والوں کے لئے یہ بڑی کٹھنائی تھی کہ کیسے بودھ استوتیوں اور پرارتھناؤں کو چینی سنگیت میں ڈھالا جائے ۔ چینی شبد ایک سلیبلی ہوتے تھے، جبکہ سنسکرت کے شبد ایک سلیبلی ہوتے ہیں ۔ وہاں ایک ایسے سنگیت کی ضرورت تھی، جسے ودیشی اور سودیشی دونوں ہی بھگت ایک ساتھ اکٹھا گا سکیں ۔ کہا جاتا ہے ایک ویئی (192-232 عیسوی) راجکمار چاؤ چی نے ایسے 42 گیت بنائے تھے، جن میں بہت سے چھٹی اور ساتویں صدی میں بھی موجود تھے۔

धर्मों के विचारों के खिलाफ नहीं है. दोनों के विचार एक ही हैं. एक आदमी दोनों का पालन कर सकता है. हमारे यहां के ऊंचे विचारों के साथ साथ बुद्ध विचारों को मान लिया जाए, तो अच्छा है. बुद्धिमान आदमी जहां भी अच्छी चीजें पाता है, उनको जमा कर लेता है, वह दूसरों से सीख लेने के लिये तैयार रहता है."

भारती विद्वानों में धर्म रक्षक का चीन में अहम स्थान है. यह मेधावी महान विद्वान असल में बीच एशिया के शक वंशी थे और घूमते फिरते भारत आए. यह 36 भाशाएँ जानते थे. भारती कलचर के फैलाने की उनको जबरदस्त लगन थी. 294 ईसवी में यह चीन की एक राजधानी चांग आन में पहुँचे, जहां 29 साल (284-313 ईसवी) रहकर उन्होंने अपना काम किया. हजारों चीनी विद्यार्थियों ने उनसे शिक्षा ली, उनसे भी जियादा लोगों ने उनके उपदेशों से फ़ायदा उठाया. उन्होंने 211 भारती ग्रंथों का चीनी भाशा में अनुवाद किया था, जिनमें से 92 अभी तक मिलते हैं. कुमार जीव का नाम चीन के महान अनुवाद करने वाले की शक्ल में ही नहीं, बल्कि महान साहित्यक (अदीब) के तौर पर भी लिया जाता है. कुमार जीव 385 ईसवी में चीन पहुँचे और 16 बरस तक रह कर वहां ऊंचे साहित्य के निर्मान में लगे रहे.

मूर्ति कला और चित्र कला.

बौद्ध धर्म ने चीनी साहित्य की अनमोल सेवा की. चीनी कला को भी उसकी देन अमर है. उस समय के बने हुए चित्र चीन में बरबाद हो चुके हैं, लेकिन तुन ह्वांग (बीच एशिया) की गुफाओं में जो बौद्ध चित्र मिले हैं, उनसे पता लगता है कि चित्र कला में भी उन्होंने चीन की शान उसी तरह बढ़ाई जैसे मूर्ति कला में. शैन्सी, हियू, शातुँग, होनान, शैन्सी और कान्सी सूबों में उस समय की मूर्ती कला के सुन्दर खंडर हैं. संसार में शायद ही कोई ऐसा बड़ा म्यूज़ियम हो, जहाँ इन सूबों से मिली हुई कोई न कोई मूर्ती न रखी हो. उत्तरी सम्राट 'तो पाचियो' ने और उसके उत्तराधिकारियों ने उस समय की मूर्ति कला की देख रेख का कितना अच्छा इन्तज़ाम किया, कि मनुश्य की तोड़ फाड़ के बाद भी उनमें से कितनी ही मूर्तियाँ बच गई 414-520 ईसवी के बीच तूपा सम्राट ने पहले वई राजधानी के पास फिर आधुनिक था-तुंग (शान्सी) के पास कितने ही विहार पहाड़ों को खोद कर बनवाए. यह वही समय था. जब कि अजन्ता के विहार बन रहे थे. इन गुफ़ा-विहारों को सुन्दर मूर्तियों से सजाया गया था. तूपा और दूसरे राजवंशों ने और कई जगह गुफा विहार बनवाए, जिनमें शैन्सी में ते युन, शान-तुन, ली-चिंग, लूयांग के पास लो-मिन और बीच एशिया

دھرموں کے وچاروں کے خلاف نہیں ہے. دونوں کے وچار ایک ہی ہیں. ایک آدمی دونوں کا پالن کرسکتا ہے. ہمارے یہاں کے اونچے وچاروں کے ساتھ ساتھ بودھ وچاروں کو مان لیا جائے تو اچھا ہے. بدھیمان آدمی جہاں بھی اچھی چیزیں پاتا ہے' اُن کو جمع کر لیتا ہے' وہ دوسروں سے سیکھ لینے کے لئے تیار رہتا ہے."

بھارتی ودوانوں میں دھرم رکشک کا چین میں اہم استھان ہے. یہ میدھاوی مہان ودوان اصل میں بیچ ایشیا کے شک ونشی تھے اور گھومتے پھرتے بھارت آئے. یہ 36 بھاشائیں جانتے تھے. بھارتی کلچر کے پھیلانے کی اُن کو زبردست لگن تھی. 294 عیسوی میں یہ چین کی ایک راج دھانی چانگ آن میں پہونچے' جہاں 29 سال (313 284 عیسوی) رہ کر اُنہوں نے اپنا کام کیا. ہزاروں چینی ودیارتھیوں نے اُن سے شکشا لی' اُن سے بھی زیادہ لوگوں نے اُن کے اُپدیشوں سے فائدہ اُٹھایا. اُنہوں نے 211 بھارتی گرنتھوں کا چینی بھاشا میں انوواد کیا تھا' جن میں سے 92 ابھی تک ملتے ہیں. کمار جیو کا نام چین کے مہان انوواد کرنے والے کی شکل میں ہی نہیں' بلکہ مہان ساہتیک (ادیب) کے طور پر بھی لیا جاتا ہے. کمار جیو 385 عیسوی میں چین پہونچے اور 16 برس تک رہ کر وہاں اونچے ساہتیہ کے نرمان میں لگے رہے.

مورتی کلا اور چتر کلا.

بودھ دھرم نے چینی ساہتیہ کی انمول سیوا کی. چینی کلا کو بھی اس کی دین امر ہے. اُس سمے کے بنے ہوئے چتر چین میں برباد ہوچکے ہیں' لیکن تن ہوانگ (بیچ ایشیا) کی گپھاؤں میں جو بودھ چتر ملے ہیں' اُن سے پتہ لگتا ہے کہ چتر کلا میں بھی اُنہوں نے چین کی شان اُسی طرح بڑھائی جیسے مورتی کلا میں. شینسی' ہیو' شاتنگ' ہونان' شینسی اور کانسی صوبوں میں اُس سمے کی مورتی کلا کے سندر کھنڈر ہیں. سنسار میں شاید ہی کوئی ایسا بڑا میوزیم ہو' جہاں اِن صوبوں سے ملی ہوئی کوئی نہ کوئی مورتی نہ رکھی ہو. اُتری سمراٹ ' تو پاچیو ' نے اور اُس کے اُترادھکاریوں نے اُس سمے کی مورتی کلا کی دیکھ ریکھ کا کتنا اچھا انتظام کیا' کہ منش کی توڑ پھوڑ کے بعد بھی اُن میں سے کتنی ہی مورتیاں بچ گئیں. 414-520 عیسوی کے بیچ توپا سمراٹ نے پہلے وی. ای راجدھانی کے پاس پھر آدھونک تھا. تنگ (شانسی) کے پاس کتنے ہی وہار پہاڑوں کو کھود کر بنوائے. یہ وہی سمے تھا' جبکہ اجنتا کے وہار بن رہے تھے. اِن گپھا وہاروں کو سندر مورتیوں سے سجایا گیا تھا. توپا اور دوسرے راج ونشوں نے اور کئی جگہ گپھا وہار بنوائے' جن میں شینسی میں تے ین' شان تن' لی چنگ' لو یانگ کے پاس لو من اور بیچ ایشیا

81 साल बाद शुरू हुआ, जबकि पारथियन विद्वान अन-सी काओ (76-149 ईसवी में) चीन पहुँचे. उस समय ईरान पर पारथियन वंश का राज था. शक और पारथियन दोनों ही उसी पुराने शक जिनसे सम्बन्ध रखते थे, जिनसे आगे पूरबी योरप की सलाव जातियां निकलीं. अन या अन सी चीनी भाषा में पारथियन को कहते हैं. सी-काओ के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने राज छोड़ कर भिक्षु व्रत लिया था. कश्यप की तरह बीच एशिया के रास्ते वह 149 ईसवी में चीन की राजधानी लो यांग में पहुंचे और वहां के सफ़ेद घोड़े विहार में रहने लगे. अपने बाईस साल के चीन के जीवन में उन्होंने भारती विचार धारा से चीनी विद्वानों को परिचित कराने के लिये अनथक मेहनत की. अन-सी काओ के सिर अगर चीन में बौद्ध धर्म की नींव मज़बूत करने का सेहरा है, तो साथ ही साथ दोनों देशों के कलचरी सम्बन्ध को मज़बूत करने का भी सेहरा उन्हीं के सिर बांधना पड़ेगा. उनके 95 अनुवाद किये ग्रंथों में 55 अबभी मिलते हैं. हान काल में चीन ने सभी मैदानों में बड़ी तरक़्क़ी की थी. राजकाजी और कलचरी दोनों तरह से उसी समय चीन का बहुत दूर तक फैलाव हुआ. साहित्य, कला, नई नई ईजादें सभी तरफ़ चीन ने उस काल में तरक़्क़ी की थी. इसी तरक़्क़ी में भारती बौद्ध धर्म ने भी पहुंच कर हाथ बटाया था. उस काल के दूसरे अनुवाद करने वाले और प्रचार करने वाले चू-अन-ली (भारती महा बल) और तुन-को-ओ भारती थे, खांग के और खांग मुंग-स्यांग ताजिक थे. चीन में उस वक़्त भारती विचार धारा और कलचर का इतना स्वागत हुआ कि आगे इस काम में हाथ बंटाने के लिये खुतन, ताजिकस्तान, भारत और सिंघल से कितने ही विद्वान वहां पहुँचे. चीन में रजवाड़े की सहायता से सब से आगे कुंग-फ़ू-त्सी की तालीम का बहुत प्रचार था, जिस का अध्यात्मिकता (रूहानियत) से गहरा ताल्लुक़ नहीं था. ताओ की तालीम में रहस्यवाद ज़रूर था, पर उसमें दुनिया से अलगाव अधिक था. बौद्ध धर्म की तरफ़ वहां के सोचने विचारने वालों का ध्यान किस लिये गया, इसके बारे में उस समय के एक चीनी विद्वान की राय थी—

"कन फ़ूसी तालीम हकूमत के ज़ियादा गंभीर सवालों का कोई उत्तर नहीं दे सकती. वह न जीवन संग्राम में लड़ने के लिये आदमी को शक्ति दे सकती है, और न मौत के समय तसल्ली ही." चीन की विचार धारा के साथ मिलने और समझौता करने के लिये हमारे भारती नुमाइन्दे बराबर तैयार रहते थे. ईसा की दूसरी सदी में दक्खिनी चीन में मू-चू एक मशहूर बौद्ध विद्वान थे. उनकी राय थी—"कंग फ़ंग-चे धर्म राज धर्म हो सकता है, लेकिन बौद्ध धर्म जनता का धर्म है. बुद्ध की तालीम चीन के पुराने

سال بعد شروع ہوا' جبکہ پارتھین ودوان آن سی .
(149-76 عیسوی میں) چین پہونچے . اُس سمے
ان پر پارتھین ونش کا راج تھا . شک اور پارتھین دونوں
اُسی پرانے شک جن سے سمبندھ رکھتے تھے' جن سے
پوربی یورپ کی سلاد جاتیاں نکلیں . آن یا آن . سی
چینی بھاشا میں پارتھیا کو کہتے ہیں . سی . کاؤ کے
بارے میں کہا جاتا ہے کہ اُنھوں نے راج چھوڑ کر بھکشو
برت لیا تھا . کشیپ کی طرح بیچ ایشیا کے راستے وہ
149 عیسوی میں چین کی راج دھانی لویانگ میں
پہنچے اور وہاں کے سفید گھوڑے وہار میں رہنے لگے . اپنے
بائیس سال کے چین کے جیون میں انھوں نے بھارتی
وچار دھارا سے چینی ودوانوں کو پریچیت کرانے کے لئے
انتھک محنت کی . آن . سی . کاؤ کے سر اگر چین میں
بودھ دھرم کی نیو مضبوط کرنے کا سہرا ہے' تو ساتھ ہی ساتھ
دونوں دیشوں کے کلچری سمبندھ کو مضبوط کرنے کا
بھی سہرا اُنھیں کے سر باندھنا پڑے گا . اُن کے 95
انوواد کئے گرنتھوں میں 55 اب بھی ملتے ہیں .
ہان کال میں چین نے سبھی میدانوں میں بڑی
ترقی کی تھی . راج کاجی اور کلچری دونوں طرح سے
اُسی سمے چین کا بہت دور تک پھیلاؤ ہوا . ساہتیہ'
کلا' نئی نئی ایجادیں' سبھی طرف چین نے اُس کال
میں ترقی کی تھی اِسی ترقی میں بھارتی بودھ دھرم
نے بھی پہونچ کر ہاتھ بٹایا تھا . اُس کال کے دوسرے
انوواد کرنے والے اور پرچار کرنے والے چو . ان . لی (بھارتی
مہا بل) اور تن کو . او . بھارتی تھے' کھانگ کے اور
کھانگ مونگ سیانگ تاجک تھے . چین میں اُس
وقت بھارتی وچار دھارا اور کلچر کا اتنا سواگت ہوا کہ
آگے اِس کام میں ہاتھ بٹانے کے لئے ختن' تاجکستان' بھارت
اور سنگھل سے کتنے ہی ودوان وہاں پہونچے . چین میں
رجواڑے کی سہائتا سے سب سے آگے کنگ فو سی کی
تعلیم کا بہت پرچار تھا' جس کا ادھیاتمکتا (روحانیت)
سے گہرا تعلق نہیں تھا . تاؤ کی تعلیم میں رہسیہ واد
ضرور تھا' پر اُس میں دنیا سے الگاؤ ادھک تھا . بودھ دھرم
کی طرف وہاں کے سوچنے وچارنے والوں کا دھیان کس لئے گیا'
اِس کے بارے میں اُس سمے کے ایک چینی ودوان کی رائے تھی—

"کن فوسی تعلیم حکومت کے زیادہ گمبھیر سوالوں کا
کوئی اُتر نہیں دے سکتی . وہ نہ جیون سنگرام میں
لڑنے کے لئے آدمی کو شکتی دے سکتی ہے اور نہ موت'
کے سمے تسلی ہی ." چین کی وچار دھارا کے ساتھ ملنے
اور سمجھوتا کرنے کے لئے ہمارے بھارتی نمائندے برابر
تیار رہتے تھے . عیسوی کی دوسری صدی میں دکھنی
چین میں مو . چو ایک مشہور بودھ ودوان تھے . اُن کی
رائے تھی—کنگ فنگ . چے دھرم راج دھرم ہوسکتا ہے' لیکن
بودھ دھرم جنتا کا دھرم ہے . بدھ کی تعلیم چین کے پرانے

चीन पर बौद्ध धर्म का असर

(महा पंडित राहुल सांकृत्यायन)

चीन में ऐसी परम्पराएँ मिलती हैं जो ईसा से दो सदी पहले वहाँ बौद्ध धर्म के जाने को साबित करना चाहती हैं, लेकिन उनका आधार ठोस नहीं है. तो भी अगर नए चीनी जनराज की सीमा को ले लें तो सिंक्यांग में बौद्ध धर्म के ईसा से पहले तीसरी सदी में पहुंचने को नामुमकिन नहीं कहा जा सकता. लेकिन हान वंश (220-25 ईसवी) के समय तो जरूर ही चीन में बौद्ध धर्म पहुँच चुका था. इसी वंश का राजा मिंग-ती (58-76 ईसवी) को बौद्ध धर्म का प्रचारक माना जाता है. राजाओं की प्रधानता के जमाने में हर चीज का राजा के साथ नाता जोड़ना जरूरी समझा जाता था.

अगर तुर्क सम्राट 'तू-बा' (568-809) और उसकी प्रजा पर एक जंगी क़ैदी बौद्ध भिक्षु असर डाल सकता था, तो लाखों की तादाद में जो बौद्ध, शक, हुन, जंगी क़ैदी हो कर चीन में जाते थे, उनसे बौद्ध धर्म का परिचय चीनी जनता को नहीं मिला हो, यह नहीं माना जा सकता. मिंग-ती के बौद्ध धर्म को अपनाने का यही मतलब समझना चाहिये कि अब वह चीनी रजवाड़े में भी मान के क़ाबिल हो चला. मिंग-ती ने बौद्ध धर्म की किताबों और भिक्षुओं को लाने के लिये अपने दूत बाहर भेजे. उन्हीं के साथ धरमी किताबें लिये 67 ईसवी में कश्यप मतंग और धर्म रतन दो भारती भिक्षु चीन पहुँचे. भारती ग्रंथ का सब से पुराना अनुवाद कश्यप ही का है, जो अब भी मिलता है. मिंग-ती ने सफ़ेद घोड़ों पर चढ़कर राजधानी लो-यांग पहुंचने वाले इन भिक्षुओं का बड़ा स्वागत किया, और उनके लिये वहां सफ़ेद घोड़ा विहार (पे-मा-से) बनवाया. कश्यप बीच मंडल के निवासी थे. बौद्ध ग्रंथों में कुरुक्षेत्र से संथाल परगना और हिमालय से विन्धयाचल के बीच की भूमि यानी आजकल का उत्तर प्रदेश और बिहार को बीच मंडल कहा जाता है. कश्यप हीन साहित्य के पंडित थे. वह दक्खिन भारत में धर्म प्रचार के लिये गए थे. उनके साथी धर्म रतन भी बीच मंडल के रहने वाले विद्वान थे. अगरचे कश्यप और धर्म रतन ने और भी ग्रंथों का अनुवाद किया था, लेकिन वह अब मिलते नहीं हैं, तो भी उन्होंने अपने पढ़ने पढ़ाने, बहस और सत संग के ज़रिये जो काम किया, वह चीन को भारत के नज़दीक लाने में बड़ा सहायक हुआ, इसमें शक नहीं.

साहित्य के मैदान में सब से ठोस काम कश्यप के

چین پر بودھ دھرم کا اثر

(مہا پنڈت راہل سانکرتیائن)

چین میں ایسی پرمپرائیں ملتی ہیں جو عیسیٰ سے دو صدی پہلے وہاں بودھ دھرم کے جانے کو ثابت کرنا چاہتی ہیں، لیکن اُن کا آدھار ٹھوس نہیں ہے تو بھی اگر نئے چینی جن راج کی سیما کو لے لیں تو سنکیانگ میں بودھ دھرم کے عیسیٰ سے پہلے تیسری صدی میں پہونچنے کو ناممکن نہیں کہا جاسکتا. لیکن ہان ونش (220-25 عیسوی) کے سمے تو ضرور ہی چین میں بودھ دھرم پہونچ چکا تھا. اسی ونش کا راجہ منگ-تی (76-58 عیسوی) کو بودھ دھرم کا پرچارک مانا جاتا ہے. راجاؤں کی پردھانتا کے زمانے میں ہر چیز کا راجہ کے ساتھ ناتا جوڑنا ضروری سمجھا جاتا تھا.

اگر ترک سمراٹ 'توبا' (568-809) اور اُسکی پرجا پر ایک جنگی قیدی بودھ بھکشو اثر ڈال سکتا تھا، تو لاکھوں کی تعداد میں جو بودھ، شک، ہن، جنگی قیدی ہوکر چین میں جاتے تھے، اُن سے بودھ دھرم کا پریچے چینی جنتا کو نہیں ملا ہو، یہ نہیں مانا جا سکتا. منگ تی کے بودھ دھرم کو اپنانے کا یہی مطلب سمجھنا چاہئے کہ اب وہ چینی رجواڑے میں بھی مان کے قابل ہو چلا. منگ تی نے بودھ دھرم کی کتابوں اور بھکشوؤں کو لانے کے لئے اپنے دوت باہر بھیجے. اُنہیں کے ساتھ دھرمی کتابیں لئے 67 عیسوی میں کشیپ متنگ اور دھرم رتن دو بھارتی بھکشو چین پہونچے. بھارتی گرنتھ کا سب سے پرانا انوواد کشیپ ہی کا ہے، جو اب بھی ملتا ہے. منگ تی نے سفید گھوڑوں پر چڑھکر راجدھانی لویانگ پہونچنے والے اِن بھکشوؤں کا بڑا سواگت کیا، اور اُن کے لئے وہاں سفید گھوڑا وہار (پے - ما - سے) بنوایا. کشیپ بیچ منڈل کے نواسی تھے. بودھ گرنتھوں میں کرکشیتر سے سنتھال پرگنہ اور ہمالیہ سے وندھیاچل کے بیچ کی بھومی یعنی آجکل کا اُتر پردیش اور بہار کو بیچ منڈل کہا جاتا ہے. کشیپ ہین ساہتیہ کے پنڈت تھے. وہ دکھن بھارت میں دھرم پرچار کے لئے گئے تھے. اُن کے ساتھی دھرم رتن بھی بیچ منڈل کے رہنے والے ودوان تھے. اگرچہ کشیپ اور دھرم رتن نے اور بھی گرنتھوں کا انوواد کیا تھا، لیکن وہ اب ملتے نہیں ہیں، تو بھی اُنہوں نے اپنے پڑھنے پڑھانے، بحث اور ست سنگ کے ذریعے جو کام کیا، وہ چین کو بھارت کے نزدیک لانے میں بڑا سہائک ہوا، اس میں شک نہیں.

ساہتیہ کے میدان میں سب سے ٹھوس کام کشیپ کے

इस मौसम में कागज़ की किताबें फेंक दो !

गरमी की दोपहर सोने के लिये है.

जाड़े के बरफ़ीले तूफ़ानों में,

पढ़ाई नहीं हो सकती—

फ़जूल किताबें रखने से क्या फ़ायदा—

इन्हें फेंक दो !

चीन क्रान्ति के पहले वहां की सरमायादार सरकार उनकी गाढ़ी कमाई किस तरह छीन लेती थी. इस का ज़िकर नीचे लिखे गीत में किया गया है. ज़रा गौर फ़रमाइये—

संगीत की मीठे सुरों से,

हमने धान खेतों में रोपी.

हमारी आशाओं के साथ,

हमारे धान बढ़े.

कड़ी मेहनत के बाद, हमारे जानवर घास चर रहे हैं,

पर सरकारी अफ़सर, नए चावलों के,

पकवान खा रहे हैं.

और हम किसानों, मेहनत कशों, धरती के लालों को,

धान के छिलकों पर सन्तोश करना पड़ता है.

सरकारी दफ़्तर में जा कर हमें अपनी सारी कमाई,

जबरदस्ती छोड़ देनी पड़ती है.

चीन और हिन्द के यह देहाती गीत कितने मिलते जुलते हैं. आज चीन में पूरा समाजी आज़ादी है और किसानों मज़दूरों के सिरों से दुखों और तकलीफ़ों के काले बादल छट रहे हैं. वहाँ की पूंजी वादी सरकार की तरह अब वह लोक गीत भी बदल जाएंगे जिनमें अपनी तकलीफ़ों का कारन भाग्य और भगवान की इच्छा को समझ कर सन्तोश कर लिया जाता था. क्योंकि अवामी इन्क़लाब ने जनता की ज़ेहनियत को भी बदल दिया है. चीनी किसान और मज़दूर अब अपने हाथों अपनी क़िस्मत बदल चुके हैं और पूंजीवाद और साम्राजवाद के ज़ालिम हाथों कुचली हुई उनकी आत्माओं में आज़ादी की चमक आ गई है और उनमें एक नया जोश पैदा हो गया है. उनके दिल आत्म विश्वास और ख़ुद एतमादी से भर गए हैं.

اِس موسم میں کاغذ کی کتاب پھینک دو !

گرمی کی دوپہر سونے کے لئے ہے ۔

جاڑے کے برفیلے طوفانوں میں،

پڑھائی نہیں ہو سکتی—

فضول کتابیں رکھنے سے کیا فائدہ،

انہیں پھینک دو !

چین کی مہان کرانتی کے پہلے وہاں کی سرمایہ‌دار سرکار انکی گاڑھی کمائی کس طرح چھین لیتی تھی اِسکا ذکر نیچے لکھے گیت میں کیا گیا ہے ۔ ذرا غور فرمایئے—

سنگیت کے میٹھے سروں سے،

ہم نے دھان کھیتوں میں روپی ۔

ہماری آشاؤں کے ساتھ،

ہمارے دھان بڑھے ۔

کڑی محنت کے بعد، ہمارے جانور گھاس چر رہے ہیں،

پر سرکاری افسر، نئے چاولوں کے،

پکوان کھا رہے ہیں ۔

اور ہم کسانوں، محنت کشوں، دھرتی کے لالوں کو،

دھان کے چھلکوں پر سنتوش کرنا پڑتا ہے ۔

سرکاری دفتر میں جاکر ہمیں اپنی ساری کمائی،

زبردستی چھوڑ دینی پڑتی ہے ۔

چین اور ہند کے یہ دیہاتی گیت کتنے ملتے جلتے ہیں. آج چین میں پوری سماجی آزادی ہے اور کسانوں مزدوروں کے سروں سے دکھوں اور تکلیفوں کے کالے بادل چھٹ رہے ہیں ۔ وہاں کی پونجی وادی سرکار کی طرح اب وہ لوک گیت بھی بدل جائیں گے جن میں اپنی تکلیفوں کا کارن بھاگیہ اور بھگوان کی اچھا کو سمجھکر سنتوش کرلیا جاتا تھا ۔ کیونکہ عوامی انقلاب نے جنتا کی ذہنیت کو بھی بدل دیا ہے ۔ چینی کسان اور مزدور اب اپنے ہاتھوں اپنی قسمت بدل چکے ہیں اور پونجی واد اور سامراج واد کے ظالم ہاتھوں کچلی ہوئی انکی آتماؤں میں آزادی کی چمک آگئی ہے اور اُن میں ایک نیا جوش پیدا ہوگیا ہے ۔ انکے دل آتم‌وشواس اور خود اعتمادی سے بھر گئے ہیں ۔

लड़की—मेरे पास तेल नहीं है.

सखी—तू खाना क्यों नहीं खाती ?

लड़की—कोई साथी नहीं है.

सखी—अच्छा ! उठ दिया तो जला.

लड़की—चुप भी रह ! देख, तूफान उठ रहा है.

लड़की की सखी खीज उठती है और आखीर में कहती है—"अच्छा दुखी न हो! तेरा प्रीतम शाम तक जरूर आ जायगा, चुलिन."

अफ़ीम चीन की चीज नहीं है. विदेशियों ने इसका प्रचार चीन में करके चीन को बड़ा नुक़सान पहुँचाया है. अफ़ीम के बारे में भी एक गीत है—

अफ़ीम किसी दूसरे देश से यहाँ आई,
चारों ओर से वह हमारी हत्या कर रही है.
मौत से पहले हम मौत के मुंह में समा रहे हैं,
अफ़ीमचियों का दिया ठीक ऐसा लगता है—
जैसा कि क़ब्र के पास जला करता है,
धन और ताक़त का नाश हो गया,
हमारे पास, हाय ! अन्न तक न बचा.
कपड़े न रहे,
और न कोई सच्चा साथी ही रहा.

एक बूढ़ा चीनी अपनी जिन्दगी की आख़िरी मंज़िलें तय कर रहा है. अपनी बीती हुई जिन्दगी की ओर वह घूम कर देखता है. निराशा से उसका दिल अफ़सोस करने लगता है. जिन्दगी का बहुत सा समय उसने बेकारी में ही बिता दिया. वह कहता है—

सोचा था बचपन में, नगाड़ा बजाऊंगा,
पर यह काम कठिन लगा.
फिर सोचा कि टोपियां ही बुनूँ,
पर मैं एक भी टोपी न बुन सका.
फिर सोचा जुड़ाई का काम ही करूं,
पर एक टूटी केतली भी न जोड़ सका.
ए भगवान ! तूने मुझे औरत क्यों न बनाया ?
हाय ! मैं सीने पिरोने का काम भी तो नहीं कर सका.
इसी सोच में मैं बूढ़ा हो गया हूँ,
जिन्दगी की आख़िरी मंज़िल पर खड़ा हूँ.

चीन में कुछ बच्चे पढ़ाई से जी चुराते हैं. एक ऐसे ही चीनी लड़के का गीत है—

बसन्त, क़ुदरत की किताब पढ़ने का समय है,

لڑکی— میرے پاس تیل نہیں ہے .

سکھی— تو کھانا کیوں نہیں کھاتی ؟

لڑکی—کوئی ساتھی نہیں ہے .

سکھی—اچھا ! اُٹھ دیا تو جلا .

لڑکی—چپ بھی رہ ! دیکھ' طوفان اُٹھ رہا ہے .

لڑکی کی سکھی کھیج اُٹھتی ہے اور آخیر میں کہتی ہے—"اچھا دکھی نہ ہو! تیرا پریتم شام تک ضرور آجائے گا' چلن."

افیم چین کی چیز نہیں ہے . دیشیوں نے اِس کا پرچار چین میں کرکے چین کو بڑا نقصان پہونچایا ہے . افیم کے بارے میں بھی ایک گیت ہے—

افیم کسی دوسرے دیش سے یہاں آئی'
چاروں اور سے وہ ہماری ہتیا کررہی ہے .
موت سے پہلے ہم موت کے منہ میں سمارہے ہیں'
افیمچیوں کا دیا ٹھیک ایسا لگتا ہے'
جیسا کہ قبر کے پاس جلا کرتا ہے .
دھن اور طاقت کا ناش ہوگیا'
ہمارے پاس' ہائے ! اَن تک نہ بچا .
کپڑے نہ رہے'
اور نہ کوئی سچا ساتھی ہی رہا .

ایک بوڑھا چینی اپنی زندگی کی آخری منزلیں طے کررہا ہے . اپنی بیتی ہوئی زندگی کی اور وہ گھوم کر دیکھتا ہے . نراشا سے اس کا دل افسوس کرنے لگتا ہے . زندگی کا بہت سا سمے اُسنے بیکاری میں ہی بتا دیا . وہ کہتا ہے—

سوچا تھا بچپن میں' نگاڑا بجاؤں گا'
پر یہ کام کٹھن لگا .
پھر سوچا کہ ٹوپیاں ہی بنوں'
پر میں ایک بھی ٹوپی نہ بن سکا .
پھر سوچا جوڑائی کا کام ہی کروں'
پر ایک ٹوٹی کیتلی بھی نہ جوڑ سکا .
اے بھگوان ! تونے مجھے عورت کیوں نہ بنایا ؟
ہائے ! میں سینے پرونے کا کام بھی تو نہیں کرسکا .
اِسی سوچ میں میں بوڑھا ہوگیا ہوں'
زندگی کی آخری منزل پر کھڑا ہوں .

چین میں بھی کچھ بچے پڑھائی سے جی چراتے ہیں . ایک ایسے ہی چینی لڑکے کا گیت ہے—

بسنت' قدرت کی کتاب پڑھنے کا سمے ہے'

हैं. ज़रा एक भयावनी लोरी भी सुनिये—

मेरे राजा मुन्ने सोजा,
न तो मां हूँ खाए.
सोजा मेरे राज दुलारे,
न तो भेड़ा खाए.
सोजा मेरे आँख के तारे,
झब्बा बाबा आए.
पीठ पे उसके एक नगाड़ा,
मुन्ने को डरवाए.

चीन में भी चिड़ियों की बोली से शगुन विचार किया जाता है. हमारे देश के नीलकंठ की तरह "दिवी कि की" वहाँ की अच्छी चिड़िया समझी जाती है. एक गीत है—

अच्छी दिवी कि की बोल रही है,
मीठे सुरों में बोल रही है.
अब पिता बहुत सा धन कमाएंगे,
मां के और बेटे होंगे.
भाई का भी विवाह हो जाएगा;
भाभी आएगी, उसे भी बच्चे होंगे,
और मुझे छोटा चाचा कह कर पुकारेंगे.

चीन के मल्लाह अपनी मेहनत और कारीगरी के लिये दुनिया भर में मशहूर हैं. एक मल्लाह का गीत है—

दक्खिन से बादल उठ रहे हैं,
किश्ती समुन्दर से निकाल लो.

× × ×

उत्तर से बादल उमड़े,
बा पानी घरों में ज़रूर घुसेगा.

× × ×

पूरब से बादल आए,
तूफ़ान से बचने को तैयार हो जाओ.

× × ×

पच्छिम में बादल उठे,
मेघों की देवी बारिश के कपड़े पहन रही है.

एक चीनी लड़की अपने प्रीतम के विरह में बैठी है. दुख के मारे उसकी आखें गीली हो उठी हैं. उसकी एक सखी उससे दुख का कारन पूछती है. पर लड़की क्या जवाब दे ? ज़रा उनका सवाल जवाब भी सुनिये—

सखी—दुलिन (गोरी) बाल सँवार लो.

ہیں . ذرا ایک بھیانی لوری بھی سنئے —

میرے راجا منے سوجا'
نہ تو — ماں ہوں — کھائے .
سو جا میرے راج دلارے'
نہ تو بھیڑا کھائے .
سو جا میرے آنکھ کے تارے'
جھبا بابا آئے .
پیٹھ پہ اُس کے ایک نگاڑا'
منے کو ڈر وائے .

چین میں بھی چڑیوں کی بولی سے شگن وچار کیا جاتا ہے . ہمارے دیش کے نیل کنٹھ کی طرح " دوی کی کی " وہاں کی اچھی چڑیا سمجھی جاتی ہے . ایک گیت ہے —

اچھی دوی ککی بول رہی ہے'
میٹھے سوروں میں بول رہی ہے .
اب پتا بہت سا دھن کمائینگے'
ماں کے اور بیٹے ہونگے .
بھائی کا بھی وواہ ہو جائے گا ؛
بھابھی آئے گی اُسے بھی بچے ہونگے'
اور مجھے چھوٹا چاچا کہکر پکارینگے .

چین کے ملاح اپنی محنت اور کاریگری کے لئے دنیا میں مشہور ہیں . ایک ملاح کا گیت ہے —

دکھن سے بادل اُٹھ رہے ہیں'
کشتی سمندر سے نکال لو .

× × × ×

اُتر سے بادل اُمڈے'
باڑھ کا پانی گھروں میں ضرور گھسے گا .

× × × ×

پورب سے بادل آئے'
طوفان سے بچنے کو تیار ہوجا .

× × × ×

پچھم میں بادل اُٹھے'
میگھوں کی دیوی بارش کے کپڑے پہن رہی ہے .

ایک چینی لڑکی اپنے پریتم کے برہ میں بیٹھی ہے . دکھ کے مارے اُس کی آنکھیں گیلی ہو اُٹھی ہیں . اسکی ایک سکھی اُس سے دکھ کا کارن پوچھتی ہے . پر لڑکی کیا جواب دے ؟ ذرا اُن کا سوال جواب بھی سنئے —

سکھی — چلن (گوری) بال سنوار لو .

तू ने दुल्हे को क्या देखा है ?
पहाड़ की तरह पैरों वाले,
जिसके घर में धान तक नहीं है.
ऐसे दूल्हे को क्या देखा है ?
उसे हँसना तक नहीं आता,
ओ री नई दुलहन!
तुझे तो ऊद बिलाव के साथ,
ब्याह दिया जाएगा.

लेकिन शादी की रस्में पूरी होते ही सारी चहल पहल गायब हो जाती है, दुलहन की बिदाई के समय उसकी बचपन की सखियां सब चुहल भूल जाती हैं, प्यारी सखी के बिछोह में उनकी आँखें बरबस गीली हो जाती हैं. भरे हुए गले से वह कहती हैं—

आठ आदमी पल भर में तेरी पालकी उठाएंगे, तुझे ससुराल जाना ही पड़ेगा—

भाई अपनी बहन को पालकी में बिठाएगा, बहिनें आँखों में आँसू भर कर बहन को बिदा करेंगी—

ब्याह की ख़ुशी में, घन्टे बज रहे हैं, आतिशबाजी छूट रही है,

पर सखी तेरे बिछोह में,
हम सब सखियां रो रही हैं.

सौ सवा सौ साल पहले चीन में कभी कभी बड़ी बड़ी लड़कियों की शादी छोटे लड़कों से कर दी जाती थी. इन लड़कियों को अपने पति के घर रहना पड़ता था, और उनकी सास अकसर उनसे कठोरता का बरताव किया करती थी. इस तरह की एक बहू की छोटी बहन कहती है—

मेरी बहन, तेरा सत्रहवां साल पूरा हो गया,
दो चार साल में तू इक्कीस की हो जायगी;
पर तेरा दूल्हा तो सिर्फ़ दस साल का ही रहेगा.

× × × ×

एक दिन दोनों साथ साथ पनघट जाएंगे,

मेरी बहन दूल्हे से कितनी ऊंची लगेगी.

मेरी बहन कहेगी—"अगर तेरी मां मुझे सताएगी—
तो ऐ दूल्हे ! मैं तुझे इसी कुएँ में ढकेल दूंगी."

चीनी माताएँ भी हिन्दुस्तानी माताओं की तरह अपने बच्चों को डरा कर सुलाने की कोशिश करती हैं. वह अपने बच्चों को 'मां हूँ' नाम के दैत्य का नाम लेकर डराया करती

تو نے دولہے کو کیا دیکھا ہے ؟
پہاڑ کی طرح پیروں والے'
جس کے گھر میں دھان تک نہیں ہے .
ایسے دولہے کو کیا دیکھا ہے ؟
اسے ہنسنا تک نہیں آتا'
او ری نئی دولہن!
تجھے تو اود بلاؤ کے ساتھ'
بیاہ دیا جائے گا .

لیکن شادی کی رسمیں پوری ہوتے ہی ساری چہل پہل غائب ہو جاتی ہے' دولہن کی بدائی کے سمے اس کی بچپن کی سکھیاں سب چہل بھول جاتی ہیں' پیاری سکھی کے بچھوڑہ میں اُن کی آنکھیں پربس گیلی ہوجاتی ہیں . بھرے ہوئے گلے سے وہ کہتی ہیں—

آٹھ آدمی پل بھر میں تیری پالکی اُٹھائیں گے' تجھے سسرال جانا ہی پڑے گا —

بھائی اپنی بہن کو پالکی میں بٹھائے گا' بہنیں آنکھوں میں آنسو بھر کر بہن کو بدا کریں گی —

بیاہ کی خوشی میں' گھنٹے بج رہے ہیں' آتش بازی چھوٹ رہی ہے'

پر سکھی تیرے بچھوڑہ میں'
ہم سب سکھیاں رو رہی ہیں .

سو سوا سو سال پہلے چین میں کبھی کبھی بڑی بڑی لڑکیوں کی شادی چھوٹے لڑکوں سے کر دی جاتی تھی. اِن لڑکیوں کو اپنے پتی کے گھر رہنا پڑتا تھا اور اُن کی ساس اکثر اُن سے کٹھورتا کا برتاؤ کیا کرتی تھیں . اِس طرح کی ایک بہو کی چھوٹی بہن کہتی ہے —

میری بہن' تیرا سترھواں سال پورا ہوگیا'
دو چار سال میں تو اکیس کی ہوجائے گی ؛
پر تیرا دولہا تو صرف دس سال کا ہی رہے گا .

× × × ×

ایک دن دونوں ساتھ ساتھ پنگھٹ جائینگے'

میری بہن دولہے سے کتنی اونچی لگے گی .

میری بہن کہے گی --" اگر تیری ماں مجھے ستائے گی — تو اے دولہے ! میں تجھے اِسی کنوئیں میں ڈھکیل دوں گی ."

چینی مائیں بھی ہندستانی ماتاؤں کی طرح اپنے بچوں کو ڈرا کر سلانے کی کوشش کرتی ہیں . وہ اپنے بچوں کو 'ماں ہوں' نام کے دَیتیہ کا نام لے کر ڈرایا کرتی

तुम हमारे प्रतिनिधि हो.

तुम्हारे हाथ में माला है.

तुम घोड़े पर सवार हो.

तीर की तरह उड़कर तुम, स्वर्ग में 'तुम'

यू-हु-आंग से मिलने जाते हो.

तुम पापियों को सजा और पुन्यात्माओं को इनाम दिलाते हो.

तुम महान हो.

और दूसरे ही दिन जैसे ही सूरज की नई किरनें जमीन पर पड़ती हैं, चीनी बच्चे खुशी के मारे नाच उठते हैं, नए साल की खशी में वह गाते हैं—

स्वागत ओ नए साल,

स्वागत ओ नए साल;

तुम्हारे आने की खुशी में,

हम अपने सब दुखों को भूल चुके हैं.

(आज) भाई खुशी से झूल रहा है,

(और) बहन खुशी से कूद रही है,

(क्योंकि) मां बाप ने हमें नए नए इनाम दिये हैं !

और—बड़ों ने मुट्ठी भर पैसे दिये हैं.

साल के पहले दिन दिये गए यह पैसे "या-सुई चईन" कहलाते हैं. बच्चे इन्हें अपनी मरजी के मुताबिक़ खर्च करने के लिये आजाद होते हैं.

चीन में भी हिन्दुस्तान की तरह बेवाओं की जिन्दगी दुखों से भरी हुई होती है. चीन के सुंग राजाओं के समय वहां विधवा विवाह पाप समझा जाता था. मिंग राज में अगर कोई विधवा जिन्दगी भर फिर से विवाह नहीं करती थी तो बड़े आदर से देखी जाती थी. राज की तरफ़ से उसकी इज्जत होती थी और उनके नाम की तख्तियां सड़कों पर टांग दी जाती थीं. राहगीर आदर से अपना सर उनके सामने झुकाते थे. "नियांग" देवी के त्योहार के समय एक बेवा के आंसुओं में डूबे हुए गीत को भी सुनिये—

नियांग देवी का त्योहार आ गया,

सधवायें देवी की पूजा कर रहीं हैं.

सन्तान के लिये प्रार्थना कर रहीं हैं,

पर मैं बेवा पूजा और बिनती करके क्या वरदान मांगूं?

हमारे देश की तरह चीन में भी शादी ब्याह बड़ी धूम धाम से होते हैं. नई दुलहन की सखियाँ उसे कैसे छेड़ती हैं, यह इस गीत में देखिये. सखियां कहती हैं—

ओ री नई दुलहन!

تم ہمارے پرتی ندھی ہو۔

تمہارے ہاتھ میں مالا ہے۔

تم گھوڑے پر سوار ہو۔

تیر کی طرح اُڑکر تم، سورگ میں 'تم'

یو ہو آنگ سے ملنے جاتے ہو۔

تم پاپیوں کو سزا اور پنیہ آتماؤں کو انعام دلاتے ہو،

تم مہان ہو۔

اور دوسرے ہی دن جیسے ہی سورج کی نئی کرنیں
ن پر پڑتی ہیں، چینی بچے خوشی کے مارے ناچ
تے ہیں، نئے سال کی خوشی میں وہ گاتے ہیں—

سواگت او نئے سال،

سواگت او نئے سال؛

تمہارے آنے کی خوشی میں،

ہم اپنے سب دکھوں کو بھول چکے ہیں۔

(آج) بھائی خوشی سے جھول رہا ہے،

(اور) بہن خوشی سے کود رہی ہے،

(کیونکہ) ماں باپ نے ہمیں نئے نئے انعام دیئے ہیں !

اور— بڑوں نے مٹھی بھر پیسے دیئے ہیں۔

سال کے پہلے دن دیئے گئے یہ پیسے "یاسوئی چئین"
تے ہیں۔ بچے انہیں اپنی مرضی کے مطابق خرچ
کے لئے آزاد ہوتے ہیں۔

چین میں بھی ہندستان کی طرح بیواؤں کی زندگی
وں سے بھری ہوئی ہوتی ہے۔ چین کے سونگ راجاؤں
سے وہاں ودھوا وواہ پاپ سمجھا جاتا تھا۔ منگ
میں اگر کوئی ودھوا زندگی بھر پھر سے وواہ نہیں
تھی تو بڑے آدر سے دیکھی جاتی تھی۔ راج کی
ف سے اسکی عزت ہوتی تھی اور اسکے نام کی تختیاں
وں پر ٹانگ دی جاتی تھیں۔ راہگیر آدر سے اپنا
انکے سامنے جھکاتے تھے۔ "نیانگ" دیوی کے تیوہار
سے ایک بیوہ کے آنسوؤں میں ڈوبے ہوئے گیت کو
سنئے—

نیانگ دیوی کا تیوہار آگیا،

سدھوائیں دیوی کی پوجا کررہی ہیں۔

سنتان کے لئے پرارتھنا کررہی ہیں،

پر میں بیوہ پوجا اور بنتی کرکے کیا بردان مانگوں؟

ہمارے دیش کی طرح چین میں بھی شادی بیاہ
دھوم دھام سے ہوتے ہیں۔ نئی دلہن کی سکھیاں
کیسے چھیڑتی ہیں، یہ اِس گیت میں دیکھئے۔
سکھیاں کہتی ہیں—

او ری نئی دلہن !

चीन के देहाती गीत

(भाई श्रवन कुमार पचौरी)

हर एक खेतिहर देश की असली जनता तो वहां के गांवों में ही रहती है. देहातों की जिन्दगी से सम्बन्ध रखने वाले गीतों से हमें उस देश की कलचर को समझने में सब से जियादा मदद मिलती है. सियासी नीति और इनक़लाबों का अगर उन पर असर पड़ता भी है, तो भी वह इन्हें बदलने में सफल नहीं हो पाते. व्याकरन (ग्रामर) और छन्दों में बंधा हुआ साहित्य (लिटरेचर) हमें जनता के एक ख़ास पढ़े लिखे शहरी आदमियों की जिन्दगी और कलचर के बारे में ही बताता है. जनता की असली हालत तो वहां के देहाती साहित्य से ही मालूम हो सकती है. देहाती गीतों में हमें वहां की आम जनता के सुख-दुख, प्रेम-बिरह और रूढ़ियों से भरे हुए रीत रिवाजों का अच्छी तरह से पता चलता है. इसलिये कि किसी भी मुल्क की असली कलचर में वहां के देहाती गीतों का बहुत बड़ा हाथ होता है. हिन्दुस्तान की तरह चीन भी एक खेतिहर देश है. चीनी जनता पूरे साल खेतों में फ़सलें खड़ी करने के काम में मशग़ूल रहती है. वहां की ज़मीन पथरीली है और ठन्ड के मौसम में कड़ी सरदी पड़ने के कारन उन्हें अपने काम को पूरा करने में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है. उनके त्योहार उनकी रोज़ाना की जिन्दगी में नयापन और ताज़गी लाकर, उन्हें मुसीबतों से लड़ने के लिये नया बल और नया जोश दे जाते हैं. इसलिये चीनी जनता त्योहारों का इन्तज़ार बड़ी बेताबी से करती है. इन मौक़ों पर बच्चे, बूढ़े और नौजवान सभी अपने आगे की जिन्दगी में आने वाली मुसीबतों का सामना करने के लिये ख़ुद को तैयार करते हैं. साल के आख़िरी दिन चीन में बड़ी ख़ुशियां मनाई जाती हैं. इस दिन चीनी लोग अपने देवी देवताओं की पूजा करते हैं और उन मुसीबतों को कम करने की प्रार्थना करते हैं. एक चीनी कहानी है, कि उस दिन उनके कुल देवता "त्साओ वांग येह" स्वर्ग के मालिक "यू-हु-आंग" देवता के पास जाते हैं. अपने साथ वह दो घड़े, जिनमें दुनिया के हर इनसान के पाप और पुन्य बन्द रहते हैं, ले जाते हैं. यू-हु-आंग इन घड़ों को खोलते हैं, और हर इनसान के पापों के हिसाब से सज़ा और पुन्यों के हिसाब से इनाम का लेखा करते हैं. "त्साओ-वांग-येह" की तारीफ़ में एक देहाती गीत है—

त्साओ-वांग-येह,

तुम महान हो.

چین کے دیہاتی گیت

(بھائی شرون کمار پچوری)

ہر ایک کھیتیہر دیش کی اصلی جنتا تو وہاں کے گاؤں میں ہی رہتی ہے۔ دیہاتوں کی زندگی سے سمبندھ رکھنے والے گیتوں سے ہمیں اس دیش کی کلچر کو سمجھنے میں سب سے زیادہ مدد ملتی ہے۔ سیاسی نیتی اور انقلابوں کا اگر ان پر اثر پڑتا بھی ہے، تو بھی وہ انہیں بدلنے میں سپھل نہیں ہو پاتے۔ ویاکرن (گرامر) اور چھندوں میں بندھا ہوا ساہتیہ (لٹریچر) ہمیں جنتا کے ایک خاص پڑھے لکھے شہری آدمیوں کی زندگی اور کلچر کے بارے میں ہی بتاتا ہے۔ جنتا کی اصلی حالت تو وہاں کے دیہاتی ساہتیہ سے ہی معلوم ہو سکتی ہے۔ دیہاتی گیتوں میں ہمیں وہاں کی عام جنتا کے سکھ دکھ، پریم برہ اور روڑھیوں سے بھرے ہوئے ریت رواجوں کا اچھی طرح سے پتہ چلتا ہے۔ اسلئے کہ کسی بھی ملک کی اصلی کلچر میں وہاں کے دیہاتی گیتوں کا بہت بڑا ہاتھ ہوتا ہے۔ ہندوستان کی طرح چین بھی ایک کھیتیہر دیش ہے۔ چینی جنتا پورے سال کھیتوں میں فصلیں کھڑی کرنے کے کام میں مشغول رہتی ہے۔ وہاں کی زمین پتھریلی ہے اور ٹھنڈ کے موسم میں کڑی سردی پڑنے کے کارن انہیں اپنے کام کو پورا کرنے میں بہت سی کٹھنائیوں کا سامنا کرنا پڑتا ہے۔ ان کے تہوار ان کی روزانہ کی زندگی میں نیا پن اور تازگی لاکر، انہیں مصیبتوں سے لڑنے کے لئے نیا بل اور نیا جوش دے جاتے ہیں۔ اس لئے چینی جنتا تہواروں کا انتظار بڑی بیتابی سے کرتی ہے۔ ان موقعوں پر بچے، بوڑھے اور نوجوان سبھی اپنے آگے کی زندگی میں آنے والی مصیبتوں کا سامنا کرنے کے لئے خود کو تیار کرتے ہیں۔ سال کے آخری دن چین میں بڑی خوشیاں منائی جاتی ہیں۔ اس دن چینی لوگ اپنے دیوی دیوتاؤں کی پوجا کرتے ہیں۔ اور ان مصیبتوں کو کم کرنے کی پرارتھنا کرتے ہیں۔ ایک چینی کہانی ہے، کہ اس دن ان کے کل دیوتا "تساؤ وانگ یہہ" سورگ کے مالک "یوھو آنگ" دیوتا کے پاس جاتے ہیں۔ اپنے ساتھ وہ دو گھڑے، جن میں دنیا کے ہر انسان کے پاپ اور پنیہ بند رہتے ہیں، لے جاتے ہیں۔ یوھو آنگ ان گھڑوں کو کھولتے ہیں، اور ہر انسان کے پاپوں کے حساب سے سزا اور پنیوں کے حساب سے انعام کا لیکھا کرتے ہیں۔ "تساؤ وانگ یہہ" کی تعریف میں ایک دیہاتی گیت ہے —

تساؤ وانگ یہہ،

تم مہان ہو۔

गलियों तक में घूमा है और अपनी सचेत आंखों से उसने न को देखा है, उस मिशन के सद्र पंडित सुन्दर लाल के बयान से ऊपर की बातों का सबूत मिलता है.

चीनी फ़िल्मों की तकनीक पर लिखने के लिये दूसरा लेख ज़रूरी होगा. हमें तो यहाँ इन फ़िल्मों के सदाचारी पहलू से मतलब है. तकनीक और कैमरे का जहाँ तक ताल्लुक़ है वह सब, चीन ने रूस से लिया है. अमरीकी या अमरीका की नक़ल हिन्दुस्तानी फ़िल्मों की तरह चीनी फ़िल्मों की धुरी "लड़की लड़के का प्रेम" ही नहीं होती—प्रेम और प्रेम वृत्ति का अपना एक महत्त्व है, लेकिन हर चीज़ ज़रूरत के मुताबिक़ और ठीक वक़्त और ठीक जगह पर अच्छी मालूम होती है.

चीन में प्रेम की सतह से ऊपर उठकर दूसरे इनसानी जज़्बे की तरफ़ ध्यान दिया गया है. चीन को देश भक्त पैदा करने हैं, वहाँ रचना करनी है, उसके लिये कामकर्ता पैदा करने हैं. उन "इनसानों" को पैदा करना है जो इनसानियत को एक समूचा समझें और इनसानों के लिये वह सब कुछ कर सकें जो कोई अपने भगवान के लिये करता आया है. चीन वाले इन बातों के लिये फ़िल्म का सही उपयोग करते हैं. यह है चीन का फ़िल्मी सदाचार जिसकी तारीफ़ किये बिना वह लोग भी नहीं रह सके जो फ़िल्मों के सख़्त ख़िलाफ़ हैं. आज आप हिन्दुस्तानी या अमरीकी फ़िल्मों को अपने घर वालों के साथ बैठ कर बिना संकोच अनुभव किये नहीं देख सकते, लेकिन चीन में आप हर छोटे बड़े के साथ बैठ कर फ़िल्म देख सकते हैं. यक़ीन मानिये आपको किसी समय भी लज्जा नहीं आएगी. आप जब हाल से बाहर आएंगे तो आप में निर्मान करने का एक जोश होगा, आप जीवन का एक आदर्श लेकर निकलेंगे, आप त्याग की भावना अपने में महसूस करेंगे. यही हाल चीन की दूसरी कलाओं का भी है.

यह है सदाचार की वह ऊंचाई जहाँ आज वह नया चीन खड़ा है जो सदाचार की बढ़ चढ़ कर बातें नहीं करता, पर हम उसके कारनामे का कुछ अन्दाज़ा कर सकते हैं.

ہوں تک میں گھوما ہے اور اپنی سچیت آنکھوں سے اس چین کو دیکھا ہے، اس مشن کے صدر پنڈت سندر لال بیان سے اوپر کی باتوں کا ثبوت ملتا ہے .

چینی فلموں کی تکنیک پر لکھنے کے لئے دوسرا لیکھ روری ہوگا . ہمیں تو یہاں ان فلموں کے سداچاری پہلو مطلب ہے . تکنیک اور کیمرے کا جہاں تک تعلق ہے سب، چین نے روس سے لیا ہے . امریکی یا امریکہ کی ل ہندستانی فلموں کی طرح چینی فلموں کی دھری لڑکی لڑکے کا پریم " ہی نہیں ہوتی — پریم اور پریم تی کا اپنا ایک مہتو ہے، لیکن ہر چیز ضرورت کے مطابق ر ٹھیک وقت اور ٹھیک جگہ پر اچھی معلوم ہوتی ہے :

چین میں پریم کی سطح سے اوپر اٹھکر دوسرے انسانی ذبے کی طرف دھیان دیا گیا ہے . چین کو دیش بھکت پیدا کرنے ہیں، وہاں رچنا کرنی ہے، اسکے لئے م کرتا پیدا کرنے ہیں . ان " انسانوں " کو پیدا رنا ہے جو انسانیت کو ایک سموچہ سمجھیں اور انسانوں ، لئے وہ سب کچھ کر سکیں جو کوئی اپنے بھگوان کے ئے کرتا آیا ہے . چین والے ان باتوں کے لئے فلم کا صحیح پیوگ کرتے ہیں . یہ ہے چین کا فلمی سداچار جس ی تعریف کئے بنا وہ لوگ بھی نہیں رہ سکے جو فلموں ے سخت خلاف ہیں . آج آپ ہندستانی یا امریکی لموں کو اپنے گھر والوں کے ساتھ بیٹھکر بنا سنکوچ انوبھو ئے نہیں دیکھ سکتے، لیکن چین میں آپ ہر چھوٹے بڑے ے ساتھ بیٹھکر فلم دیکھ سکتے ہیں . یقین مانئے آپ کو سی سمے بھی لجا نہیں آئے گی . آپ جب ہال سے اہر آئیں گے تو آپ میں نرمان کرنے کا ایک جوش ہوگا، آپ جیون کا ایک آدرش لے کر نکلیں گے، آپ تیاگ کی ھاونا اپنے میں محسوس کرینگے . یہی حال چین کی دوسری کلاؤں کا بھی ہے .

یہ ہے سداچار کی وہ اونچائی جہاں آج وہ نیا چین کھڑا ہے جو سداچار کی بڑھ چڑھ کر باتیں نہیں کرتا، پر ہم اس کے کارنامے کا کچھ اندازہ کر سکتے ہیں .

हसियों का इस मैदान में नया नया तजरबा था. क़ानून बनाकर सदाचार क़ायम नहीं हो सकता. सदाचार को जनता में फैलाने के लिये ज़रूरी है कि जनता का नैतिक स्तर ऊंचा किया जाए. चीन में रोज़ी रोज़गार की कमी नहीं रह गई और लोग पेट की मुसीबत से आज़ाद हो गए हैं. अब उन्हें सोचने विचारने और नैतिक स्तर ऊंचा करने का काफ़ी समय मिलता है. यही कारन है कि उनका सदाचार ऊंचा होता जा रहा है.

जिन्सी और दूसरी गड़बड़ियों को दूर करने में चीन में क़ानून से बहुत कम और शुद्ध समाजी दबाव से बहुत ज़ियादा काम लिया गया है. इस तरह का जुर्म करने वालों को अजीब सज़ा दी जाती है. चीन में गए हिन्दुस्तानी गुडविल मिशन को वहाँ पर नीचे दिया हुआ क़िस्सा मालूम हुआ—

एक नौजवान आदमी किसी सरकारी काम से पेकिंग से दूसरे शहर को भेजा गया. वहाँ उसने अपना सरकारी फ़र्ज़ पूरा किया. लेकिन रात को कहीं किसी औरत के पास चला गया. ज़ाहिर है, क़ानूनन यह चीज़ कोई जुर्म नहीं है, फिर भी जब पेकिंग में पुलिस ने यह ख़बर भेजी तो उस महकमे के सारे लोगों को इकट्ठा किया गया, जिस महकमे में वह नौजवान एक अफ़सर था. मीटिंग में चपरासी से लेकर ऊंचे से ऊंचे अफ़सर तक सब जमा हुए. बड़े अफ़सर ने खड़े हो कर सारा क़िस्सा लोगों को बताया और कहा—"हम अपने राष्ट्र का सदाचार ऊंचा करना चाहते हैं और हमारा यह नौजवान यह हरकत करके आया है." वह नौजवान शरमा कर रोने लगा और छलकते आँसुओं के साथ उसने सबसे माफ़ी मांगी और यक़ीन दिलया कि आगे से वह ऐसा काम हरगिज़ नहीं करेगा. यह हैं वह तरीक़े जिनसे चीन की सरकार अपने कर्मचारियों को सदाचारी बनाती है.

किसी देश के साहित्य और सिनेमा में उस देश के जीवन की झलक दिखाई पड़ती है, उनका आदर्श दिखाई पड़ता है, उनके रीतरिवाज और रंग ढंग से परिचय होता है. जब हम चीनी साहित्य और चीनी कला को सामने रखते हैं तो हमें पूरी तरह मालूम होता है कि इन मैदानों में भी मुल्की सदाचार का बहुत ज़ियादा ख़याल रक्खा जाता है. "ईसा की सभ्यता के रक्षक देशों" में नंगी तसवीरों की भरमार होती है, अख़बारों के पन्ने अश्लील तस्वीरों से भरे रहते हैं, दुराचार को प्रोत्साहन देने वाले विज्ञापन हर तरफ़ दिखाई पड़ते हैं. लेकिन चीन में इस तरह की अश्लील बातों का कहीं गुज़र भी नहीं है. यह सिर्फ़ पढ़ी पढ़ाई बातें नहीं हैं या चीनियों का अंधा अन्ध विश्वास नहीं है. हिन्दुस्तान से गया हुआ गुडविल मिशन चीन की

ودھیوں کا اِس میدان میں نیا نیا تجربہ تھا. قانون بنا کر سداچار قائم نہیں ہوسکتا. سداچار کو جنتا میں پھیلانے کے لئے ضروری ہے کہ جنتا کا نیتک استر اونچا کیا جائے. چین میں روزی روزگار کی کمی نہیں رہ گئی اور لوگ پیٹ کی مصیبت سے آزاد ہوگئے ہیں. اب اُنہیں سوچنے بچارنے اور نیتک استر کو اونچا کرنے کا کافی سمے ملتا ہے. یہی کارن ہے کہ اُن کا سداچار اونچا ہوتا جا رہا ہے.

جنسی اور دوسری گڑبڑیوں کو دور کرنے میں چین میں قانون سے بہت کم اور شدھ سماجی دباؤ سے بہت زیادہ کام لیا گیا ہے. اس طرح کا جرم کرنے والوں کو عجیب سزا دی جاتی ہے. چین میں گئے ہندستانی گڈول مشن کو وہیں پر نیچے دیا ہوا قصہ معلوم ہوا—

ایک نوجوان آدمی کسی سرکاری کام سے پیکنگ سے دوسرے شہر کو بھیجا گیا. وہاں اُس نے اپنا سرکاری فرض پورا کیا. لیکن رات کو کہیں کسی عورت کے پاس چلا گیا. ظاہر ہے، قانوناً یہ چیز کوئی جرم نہیں ہے، پھر بھی جب پیکنگ میں پولیس نے یہ خبر بھیجی تو اُس محکمے کے سارے لوگوں کو اکٹھا کیا گیا، جس محکمے میں وہ نوجوان ایک افسر تھا. میٹنگ میں چپراسی سے لے کر اونچے سے اونچے افسر تک سب جمع ہوئے. بڑے افسر نے کھڑے ہوکر سارا قصہ لوگوں کو بتایا اور کہا— "ہم اپنے راشٹر کا سداچار اونچا کرنا چاہتے ہیں اور ہمارا یہ نوجوان یہ حرکت کر کے آیا ہے." وہ نوجوان شرما کر رونے لگا اور چھلکتے آنسوؤں کے ساتھ اُس نے سب سے معافی مانگی اور یقین دلایا کہ آگے سے وہ ایسا کام ہرگز نہیں کرے گا. یہ ہیں وہ طریقے جن سے چین کی سرکار اپنے کرم چاریوں کو سداچاری بناتی ہے.

کسی دیش کے ساہتیہ اور سنیما میں اُس دیش کے جیون کی جھلک دکھائی پڑتی ہے، اُن کا آدرش دکھائی پڑتا ہے، اُن کے ریت رواج اور رنگ ڈھنگ سے پریچے ہوتا ہے. جب ہم چینی ساہتیہ اور چینی کلا کو سامنے رکھتے ہیں تو ہمیں پوری طرح معلوم ہوتا ہے کہ اِن میدانوں میں بھی ملکی سداچار کا بہت زیادہ خیال رکھا جاتا ہے. "عیسیٰ کی سبھیتا کے رکشک دیشوں" میں ننگی تصویروں کی بھرمار ہوتی ہے، اخباروں کے پنے اشلیل تصویروں سے بھرے رہتے ہیں، دراچار کو پروتساہن دینے والے وگیاپن ہر طرف دکھائی پڑتے ہیں. لیکن چین میں اِسطرح کی اشلیل باتوں کا کہیں گذر بھی نہیں ہے. یہ صرف پڑھی پڑھائی باتیں نہیں ہیں یا چینیوں کا اندھا دھند وشواس نہیں ہے. ہندستان سے گیا ہوا گڈول مشن چین کی

के लिये, उसकी सभ्यता और तहज़ीब की तरक़्क़ी के लिये त्याग करना सीख लिया है. आज चीनी जनता को किसी सरकार से घृना भले हां हो लेकिन किसी इनसान से नफ़रत नहीं है. उनके लिये दुनिया की जनता एक है—यह है सदाचार की वह ऊँचाई जो धर्म पुस्तकों में बन्द ज़रूर है लेकिन धर्म का ढंढोरा पीटने वालों ने कभी इसे इस तरह अमल में नहीं अपनाया.

कुछ लोगों का कहना है कि चोरी करना कुछ इनसानों की आदत होती है. लेकिन यह बात सच्चाई से बहुत दूर है. इनसान को अगर जीवन बिताने की सुविधाएं हों और समाज की इस तरह रूप रेखा हो जिसमें वह ईमान्दारी से जीवन बिता सके और लालच से बचा रहे तो वह हरगिज़ हरगिज़ चोरी या बेईमानी नहीं करेगा. चीन में ऐसा समाज काग़ज़ पर ही नहीं अमल में भी पैदा कर दिया गया है. नतीजा यह है कि वहाँ लोगों की ईमानदारी चमक उठी है. चोरी के कारन ही मौजूद नहीं रह गए तो चोरी करने की किसको ज़रूरत !

जिन्सी सदाचार की चरचा बहुत की जाती है और यह भी कहा जाता है कि कम्यूनिस्ट तो इस सदाचार के विरोधी हैं. लेकिन अजीब बात है कि केवल वही देश आज जिन्सी जीवन का आदर्श सा बन गए हैं जो कि अपने को कम्यूनिज़्म का मानने वाला कहते हैं—चीन भी उन्हीं देशों में से एक है. आज चीन में कोई भी वेश्या बाक़ी नहीं रह गई. इन बहिनों को चीनी सरकार ने पतित समझ कर या भले आदमियों के समाज को शुद्ध रखने के लिये ज़रूरी जान कर जन आन्दोलन से बाहर रखने की कोशिश नहीं की. क़ानून पास करके नुमाइशी तरीक़े से वेश्या पन के ख़ात्मे का ढंढोरा भी नहीं पीटा. चीनी सरकार के आदमी इन बहिनों के बीच में गए और सब को इकट्ठा करके इनमें एक नया जोश भर दिया, एक नया आदर्श उनके सामने खड़ा कर दिया. कोई भी वेश्या अपने पेशे से ख़ुश नहीं होती, वह ख़ुश हो भी नहीं सकती. लेकिन अपनी मजबूरियों को क्या करे. नए चीन ने उन मजबूरियों को ख़त्म कर दिया जो किसी स्त्री को वेश्या पन के गढ़े में ढकेलती हैं. उन वेश्याओं को काम सिखा कर फ़ैक्टरियों में भरती कर दिया गया या किसी दूसरे काम में लगा दिया गया ताकि वह ईमानदारी और इज़्ज़त से अपनी रोज़ी कमा सकें. बहुत बड़ी तादाद ने शादियां भी कर लीं और सुघड़ पत्नियां बन गईं.

वेश्यापन के ख़त्म करने या दूसरे ऐसे मोटे सदाचार के उसूलों को ज़िन्दा करने में चीनियों ने रूसियों से बहुत कुछ सीखा है. तरीक़े वही एख़तियार किये हैं लेकिन उन ग़लतियों से बच गए हैं जो रूस में हो चुकी थीं क्योंकि

کے لئے، اُس کی سبھیتا اور تہذیب کی ترقی کے لئے تیاگ کرنا سیکھ لیا ہے۔ آج چینی جنتا کو کسی سرکار سے گھرنا بھلے ہی ہو لیکن کسی انسان سے نفرت نہیں ہے۔ اُن کے لئے دنیا کی جنتا ایک ہے — یہ ہے سداچار کی وہ اونچائی جو دھرم پستکوں میں بند ضرور ہے لیکن دھرم کا ڈھنڈھورا پیٹنے والوں نے کبھی اِسے اِس طرح عمل میں نہیں اپنایا۔

کچھ لوگوں کا کہنا ہے کہ چوری کرنا کچھ انسانوں کی عادت ہوتی ہے۔ لیکن یہ بات سچائی سے بہت دور ہے۔ انسان کو اگر جیون بتانے کی سوودھائیں ہوں اور سماج کی اس طرح روپ ریکھا ہو جس میں وہ ایمانداری سے جیون بتاسکے اور لالچ سے بچا رہے تو وہ ہرگز ہرگز چوری یا بے ایمانی نہیں کرے گا۔ چین میں ایسا سماج کاغذ پر ہی نہیں عمل میں بھی پیدا کردیا گیا ہے۔ نتیجہ یہ ہے کہ وہاں لوگوں کی ایمانداری چمک اُٹھی ہے۔ چوری کے کارن ہی موجود نہیں رہ گئے تو چوری کرنے کی کس کو ضرورت!

جنسی سداچار کی چرچا بہت کی جاتی ہے اور یہ بھی کہا جاتا ہے کہ کمیونسٹ تو اِس سداچار کے ورودھی ہیں۔ لیکن عجیب بات ہے کہ کیول وہی دیش آج جنسی جیون کا آدرش سا بن گئے ہیں جو کہ اپنے کو کمیونزم کا ماننے والا کہتے ہیں—چین بھی اُنہیں دیشوں میں سے ایک ہے۔ آج چین میں کوئی بھی ویشیا باقی نہیں رہ گئی۔ اِن بہنوں کو چینی سرکار نے پتت سمجھ کر یا بھلے آدمیوں کے سماج کو شدھ رکھنے کے لئے ضروری جان کر جن آندولن سے باہر رکھنے کی کوشش نہیں کی۔ قانون پاس کرکے نمائشی طریقے سے ویشیاپن کے خاتمے کا ڈھنڈھورا بھی نہیں پیٹا۔ چینی سرکار کے آدمی اِن بہنوں کے بیچ میں گئے اور سب کو اکٹھا کرکے اِن میں ایک نیا جوش بھر دیا، ایک نیا آدرش اُن کے سامنے کھڑا کردیا۔ کوئی بھی ویشیا اپنے پیشے سے خوش نہیں ہوتی، وہ خوش ہو بھی نہیں سکتی۔ لیکن اپنی مجبوریوں کو کیا کرے۔ نئے چین نے اُن مجبوریوں کو ختم کردیا جو کسی استری کو ویشیاپن کے گڈھے میں ڈھکیلتی ہیں۔ اُن ویشیاؤں کو کام سکھاکر فیکٹریوں میں بھرتی کردیا گیا یا کسی دوسرے کام میں لگادیا گیا تاکہ وہ ایمانداری اور عزت سے اپنی روزی کماسکیں۔ بہت بڑی تعداد نے شادیاں بھی کرلیں اور سگھڑ پتنیاں بن گئیں۔

ویشیا پن کے ختم کرنے یا دوسرے ایسے موٹے سداچار کے اصولوں کو زندہ کرنے میں چینیوں نے روسیوں سے بہت کچھ سیکھا ہے۔ طریقے وہی اختیار کئے ہیں لیکن اُن غلطیوں سے بچ گئے ہیں جو روس میں ہوچکی تھیں کیونکہ

दस्तकारी जैसे पेशे अपना लिये हैं, जो कुछ भी पुराने चीन में उनके लिये मना था आज नए चीन में वह सब उनके क़ब्ज़े में है. चीन में महिला इंजिनियरों की तादाद भी ख़ूब बढ़ रही है.

सचमुच हमारी औरतें ज़मींदार शाही की सताने वाली शादी की रसमों से छुटकारा पा गई हैं. पिछले साल सेन्ट्रल सरकार ने शादी का एक नया क़ानून बनाया है जिसने एक अच्छा और समझदारी का शादी का तरीक़ा क़ायम कर दिया है. इस क़ानून ने तलाक़ की आज़ादी दी है, औरतों को दूसरी शादी करने का हक़ दिया है, औरत को इस क़ानून ने जायदाद में हिस्सा दिया है और उसको जायदाद की विरासत का भी हक़ मिल गया है. क़ानून ने औरतों को न सिर्फ़ काग़ज़ पर यह हक़ दिया है बल्कि उस हक़ की रक्षा भी करता है. चीन में बालपन की शादी सिरे से ख़त्म कर दी गई है. ब्याहता बीवी के अलावा रखेल रखने का रिवाज क़ानूनन ख़त्म कर दिया गया है. वेश्यापन अब गुज़रे ज़माने की चीज़ है. इस क़ानून ने चीनी घरों में ख़ुशहाली की गंगा बहा दी है.

دستکاری جیسے پیشے اپنا لئے ہیں ۔ جو کچھ بھی پرانے چین میں اُن کے لئے منع تھا آج نئے چین میں وہ سب اُن کے قبضے میں ہے ۔ چین میں مہلا انجینیروں کی تعداد بھی خوب بڑھ رہی ہے ۔

سچ مچ ہماری عورتیں زمیندار شاہی کی ستانے والی شادی کی رسموں سے چھٹکارا پا گئیں ہیں ۔ پچھلے سال سنٹرل سرکار نے شادی کا ایک نیا قانون بنایا ہے جس نے ایک اچھا اور سمجھداری کا شادی کا طریقہ قائم کردیا ہے ۔ اِس قانون نے طلاق کی آزادی دی ہے' عورتوں کو دوسری شادی کرنے کا حق دیا ہے' عورت کو اِس قانون نے جائداد میں حصہ دیا ہے اور اُس کو جائداد کی وراثت کا بھی حق مل گیا ہے ۔ قانون نے عورتوں کو نہ صرف کاغذ پر یہ حق دیا ہے بلکہ اُس حق کی رکشا بھی کرتا ہے ۔ چین میں بال پن کی شادی سرے سے ختم کردی گئی ہے ۔ بیاہتا بیوی کے علاوہ رکھیل رکھنے کا رواج قانوناً ختم کردیا گیا ہے ۔ ویشیاپن اب گذرے زمانے کی چیز ہے ۔ اِس قانون نے چینی گھروں میں خوشحالی کی گنگا بہادی ہے ۔

चीन में सदाचार

(भाई मुजीब रिज़वी)

दुनिया में दो तरह के गिरोह हैं—एक वह जो सदाचार का ढोल ख़ूब पीटते हैं लेकिन ख़ुद सदाचार से परे रहते हैं. दूसरे वह जो सदाचार की बढ़ चढ़ कर बातें नहीं करते लेकिन उनके हर काम में सदाचार की ऊंचाई चमकती रहती है. नया चीन आज दूसरे गिरोह में है. वह सदाचार की चरचा कम और उस पर अमल अधिक करता है. सदाचार पर पंडिताऊ बहस से न अब तक कोई नतीजा निकला है और न निकल सकता है. यहाँ हम बारीकियों को छोड़ कर केवल मोटे मोटे अर्थों में सदाचार शब्द का इस्तेमाल करते हैं.

माओ की सरकार से पहले ऐसा कोई जुर्म नहीं था जो चीन में न होता था—लूट मार, रिश्वत ख़ोरी, आपस की चुग़ली, चोरी चमारी, ख़ून ख़राबी, धोका धड़ी, भाईचारे की सिरे से ना पैदगी. लेकिन नए चीन में आज यह सारी चीज़ें गए गुज़रे ज़माने की बातें हो गई हैं. वहां आपसी एका है. भाई चारे की भावना हर चीनी के दिल में हिलोरें ले रही है. वहाँ अब एक दूसरे की मदद करने और फ़ायदा पहुँचाने की बात लोग सोचते हैं, एक दूसरे की जड़ काटने की बातों में बेकार ताक़त नहीं गंवाते. चीनियों ने 'इनसान'

چین میں سداچار

(بھائی مجیب رضوی)

دنیا میں دو طرح کے گروہ ہیں—ایک وہ جو سداچار کا ڈھول خوب پیٹتے ہیں لیکن خود سداچار سے پرے رہتے ہیں ۔ دوسرے وہ جو سداچار کی بڑھ چڑھ کر باتیں نہیں کرتے لیکن اُن کے ہر کام میں سداچار کی اونچائی چمکتی رہتی ہے ۔ نیا چین آج دوسرے گروہ میں ہے ۔ وہ سداچار کی چرچا کم اور اُس پر عمل ادھک کرتا ہے ۔ سداچار پر پنڈتاؤ بحث سے نہ اب تک کوئی نتیجہ نکلا ہے اور نہ نکل سکتا ہے ۔ یہاں ہم باریکیوں کو چھوڑ کر کیول موٹے موٹے ارتھوں میں سداچار شبد کا استعمال کرتے ہیں ۔

ماؤ کی سرکار سے پہلے ایسا کوئی جرم نہیں تھا جو چین میں نہ ہوتا تھا—لوٹ مار' رشوت خوری' آپس کی چغلی' چوری چماری' خون خرابی' دھوکا دھڑی' بھائی چارے کی سرے سے ناپیدگی ۔ لیکن نئے چین میں آج یہ ساری چیزیں گئے گزرے زمانے کی باتیں ہوگئیں ہیں ۔ وہاں آپسی ایکا ہے ۔ بھائی چارے کی بھاونا ہر چینی کے دل میں ہلوریں لے رہی ہے ۔ وہاں اب ایک دوسرے کی مدد کرنے اور فائدہ پہونچانے کی بات لوگ سوچتے ہیں' ایک دوسرے کی جڑ کاٹنے کی باتوں میں بیکار طاقت نہیں گنواتے ۔ چینیوں نے 'انسان'

नए चीन की नई माएं

(मेडम नाई-फी-चुन)

[हिन्दुस्तान में आए हुए चीनी मिशन की मेडम नाई-फ़ी-चुन एक मेम्बर हैं. आप पेकिंग सरकार के उस विभाग की असिस्टेन्ट सिक्रेटरी हैं जिस की मंत्री मेडम सन-यात सेन हैं—एडीटर]

नए चीन में हर चीज़ पर नया पन छा रहा है. वहाँ की औरतें भी नई होती जा रही हैं. मेरा मतलब यह नहीं है कि वह नए तरीक़े से गढ़ी गई हैं बलिक यह है कि अब चीनी औरतों की हालत में इतनी तबदीली आ गई है कि वह बिलकुल नई मालूम होती हैं. नए चीन की औरतों को मरदों के बराबर ही सारे राजकाजी अधिकार हैं. वह किसी मैदान में भी मरदों से पीछे नहीं हैं. गाँव में औरतें अहम सरकारी नौकरियों पर क़ब्ज़ा जमाए हैं और जनहित के कामों में जोश के साथ लगी हुई हैं. ज़मींदार शाही में औरतों की हालत जानवरों से भी गई गुज़री थी. आज जो औरतों को आज़ादी मिल सकी, उनको बराबर का हक़ मिल सका, इसका कारन यह है कि चीन में ज़मीन का सुधार कर दिया गया है, जिसने ज़मींदार शाही को ख़तम कर दिया और उसी के साथ उससे पैदा होने वाले रीतरिवाज, आचार विचार सबको दफ़न कर दिया है.

आज तमाम चीनी जन सभाओं में क़रीब क़रीब एक तिहाई तादाद औरतों की है. बहुत सी औरतें पार्लिमेन्ट में बैठी हुई हैं. दिनों दिन इन्तज़ामी महकमों और सरकारी नौकरियों में औरतों की तादाद बढ़ रही है. गांव में औरतें मुखिया हैं, ज़िलों में ज़िला अफ़सर हैं, शहरों में मेयर हैं—हर जगह उनके लिये है और वह हर जगह पहुंच भी रही हैं. सेन्ट्रल सरकार में मंत्री भी हैं. इस समय तीन औरतें मंत्री मंडल में भी शामिल हैं. इन लोगों ने जन सेवा का बहुत अच्छा परिचय दिया है—अब औरत मर्द की मेहनत और काम में कोई फ़र्क़ नहीं रह गया. एक औरत का काम एक मर्द के काम के बराबर ही समझा जाता है और दोनों को बराबर मज़दूरी भी मिलती है. इसके अलावा छुट्टी, बच्चा पैदा होने की हालत में दवा दारू और इसी तरह की दूसरी रिआयतें भी मिलती हैं.

चीनी औरत को आज न सिर्फ़ राजकाजी बराबरी मिली हुई है बलिक माली बराबरी भी उसको हासिल है. औरतों ने ट्राम ड्राइवरी, पोस्ट मैनी और रेलगाड़ी की

نئے چین کی نئی مائیں

(مہڈم نائی فی چن)

[ہندستان میں آئے ہوئے چینی مشن کی مہڈم
ائی فی چن ایک ممبر ہیں. آپ پیکنگ سرکار
ے اس وبھاگ کی اسسٹنٹ سکریٹری ہیں جس کی
ملتری مہڈم سن یات سین ہیں — ایڈیٹر]

نئے چین میں ہر چیز پر نیا پن چھا رہا ہے . وہاں
، عورتیں بھی نئی ہوتی جا رہی ہیں . میرا مطلب
نہیں ہے کہ وہ نئے طریقے سے گڑھی گئی ہیں بلکہ
ہے کہ اب چینی عورتوں کی حالت میں
ی تبدیلی آگئی ہے کہ وہ بالکل نئی معلوم ہوتی
ں . نئے چین کی عورتوں کو مردوں کے برابر ہی سارے
کاجی ادھیکار ہیں . وہ کسی میدان میں بھی مردوں
پیچھے نہیں ہیں . گاؤں میں عورتیں اہم سرکاری
روں پر قبضہ جمائے ہیں اور جن ہت کے کاموں میں
ش کے ساتھ لگی ہوئی ہیں . زمیندار شاہی میں
توں کی حالت جانوروں سے بھی گئی گزری تھی . آج
عورتوں کو آزادی مل سکی، اُن کو برابر کا حق مل
اس کا کارن یہ ہے کہ چین میں زمین کا سدھار کر
گیا ہے، جس نے زمیندار شاہی کو ختم کر دیا
اسی کے ساتھ اُس سے پیدا ہونے والے ریت رواج، آچار
ار سب کو دفن کر دیا ہے .

آج تمام چینی جن سبھاؤں میں قریب قریب ایک
ائی تعداد عورتوں کی ہے . بہت سی عورتیں پارلیمنٹ
ں بیٹھی ہوئی ہیں . دنوں دن انتظامی محکموں
سرکاری نوکریوں میں عورتوں کی تعداد بڑھ رہی ہے .
ں میں عورتیں مکھیا ہیں، ضلعوں میں ضلع افسر
ں، شہروں میں میئر ہیں — ہر جگہ اُن کے لئے ہے اور
ہر جگہ پہونچ بھی رہی ہیں . سنٹرل سرکار میں
تری بھی ہیں . اس سمے تین عورتیں منتری منڈل
ں بھی شامل ہیں . اِن لوگوں نے جن سیوا کا بہت اچھا
چے دیا ہے — اب عورت مرد کی محنت اور کام میں
ئی فرق نہیں رہ گیا . ایک عورت کا کام ایک مرد کے کام کے
ابر ہی سمجھا جاتا ہے اور دونوں کو برابر مزدوری بھی
تی ہے. اس کے علاوہ چھٹی، بچہ پیدا ہونے کی حالت میں
ا دارو اور اسی طرح کی دوسری رعائتیں بھی ملتی ہیں .

چینی عورت کو آج نہ صرف راج کاجی برابری ملی
وئی ہے بلکہ مالی برابری بھی اس کو حاصل ہے .
ورتوں نے ٹرام ڈرائیوری، پوسٹ مینی اور ریل گاڑی کی

हिन्दुस्तान जो चीन से सबक़ ले सकता है वह यह नहीं है कि अपना माली संगठन या आर्थिक पालिसी क्या बनाए बल्कि यह कि किसी आर्थिक पालिसी के लिये आम जनता का सहयोग किस तरह हासिल किया जाता है, कैसे सारी जनता को उसमें शरीक कर लिया जाता है.

पच्छिम के देशों ने चीन पर जो पाबन्दियाँ लगाई हैं उनका कुछ असर तो लाज़मी तौर पर उस पर पड़ा है. लेकिन वह सब तकलीफ़ें और दिक़्क़तें जो इससे पैदा हुई थीं अब एकदम काफ़ूर हो गई हैं. यही नहीं, लोगों का उस तरफ़ ध्यान भी नहीं जाता है. इसकी वजह है क़ौम की क़ौम का यह इरादा कर लेना कि इस पाबन्दी का ठोस तरीक़े से हम मुक़ाबला करके ही रहेंगे. इस इरादे ने उनके अन्दर अनोखी ताक़त पैदा कर दी है. इसका नतीजा यह हुआ कि चीन में पैदावार ख़ूब बढ़ी है, हर चीज़ जो पच्छिमी देशों से मंगाई जाती थी उसके बदले की चीज़ें निकाल ली गई हैं और दस्तकारी का सामान जुटाने व काम बनाने में चीनियों ने जो महारत हासिल की है उसका तो ख़याल ही अचरज में डालता है. साथ ही साथ रूस और उसके दोस्त देशों के साथ व्योपारी ताल्लुक़ात भी ज़ियादा बढ़े हैं.

कोरिया की लड़ाई का असर चीनियों के आम जीवन व रहन सहन पर कुछ नहीं पड़ा. सरकार ने काला बाज़ार ख़त्म कर दिया और चीज़ों की क़ीमतों को बढ़ने से रोक लिया. इसके अलावा ज़ियादा पैदावार करके कोरिया की लड़ाई की ज़रूरी मांगें भी उन्होंने पूरी कर लीं.

हर आर्थिक दायरे में औरतें एक अहम हिस्सा ले रही हैं. राजकाजी कामों और किसान संगठनों में तो वह ऊंची जगह पर हैं ही, कारख़ानों वग़ैरा में भी असरदार जगह लिये हुए हैं.

जहां तक रूसी इमदाद की बात है, रूस से चीन को तकनीकी ज्ञान के अलावा ज़रूरी मशीनरी सामान भी मिल रहा है. मुझे यक़ीन है कि कारख़ानों और ट्रांसपोर्ट के दायरों में रूस बिला किसी हिचकिचाहट के चीन की मदद कर रहा है. अचरज की बात तो यह है कि चीन में काम करने वाले रूसी माहिर कोई ऊंची नौकरियों पर नहीं हैं. वह चीनी अफ़सरों के नीचे काम करते हैं, वही तनख़ाहें लेते हैं जो चीनियों को मिलती हैं और वैसी ही तकलीफ़ें बर्दाश्त करते हैं. इसी सहयोग का नतीजा है कि चीनी लोग मोटर और रेल, तारीख़ में पहली बार अपने आप बनाने लग गए हैं. अब तो वह जीप कार भी बना रहे हैं.

चीन को बाहर के तैयार माल की ज़रूरत अब भी है. अगर हिन्दुस्तान से यह माल मिले तो बदले में काफ़ी अनाज वह वहां भेज सकता है.

ہندستان جو چین سے سبق لے سکتا ہے وہ یہ نہیں ہے کہ اپنا مالی سنگٹھن یا آرتھک پالیسی کیا بنائے بلکہ یہ کہ کسی آرتھک پالیسی کے لئے عام جنتا کا سہیوگ کسطرح حاصل کیا جاتا ہے، کیسے ساری جنتا کو اس میں شریک کر لیا جاتا ہے۔

پچھم کے دیشوں نے چین پر جو پابندیاں لگائی ہیں ان کا کچھ اثر تو لازمی طور پر اس پر پڑا ہے۔ لیکن وہ سب تکلیفیں اور دقتیں جو اس سے پیدا ہوئی تھیں اب ایک دم کافور ہوگئی ہیں۔ یہی نہیں، لوگوں کا اس طرف دھیان بھی نہیں جاتا ہے۔ اس کی وجہ ہے قوم کی قوم کا یہ ارادہ کر لینا کہ اس پابندی کا ٹھوس طریقے سے ہم مقابلہ کر کے ہی رہیں گے۔ اس ارادے نے ان کے اندر انوکھی طاقت پیدا کر دی ہے۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ چین میں پیداوار خوب بڑھی ہے، ہر چیز جو پچھمی دیشوں سے منگائی جاتی تھی اسکے بدلے کی چیزیں نکال لی گئی ہیں اور دستکاری کا سامان جٹانے و کام بنانے میں چینیوں نے جو مہارت حاصل کی ہے اسکا تو خیال ہی اچرج میں ڈالتا ہے۔ ساتھ ہی ساتھ روس اور اس کے دوست دیشوں کے ساتھ بیوپاری تعلقات بھی زیادہ بڑھے ہیں۔

کوریا کی لڑائی کا اثر چینیوں کے عام جیون و رہن سہن پر کچھ نہیں پڑا۔ سرکار نے کالا بازار ختم کر دیا اور چیزوں کی قیمتوں کو بڑھنے سے روک لیا۔ اس کے علاوہ زیادہ پیداوار کر کے کوریا کی لڑائی کی ضروری مانگیں بھی انہوں نے پوری کر لیں۔

ہر آرتھک دائرے میں عورتیں ایک اہم حصہ لے رہی ہیں۔ راج کاجی کاموں اور کسان سنگٹھنوں میں تو وہ اونچی جگہ پر ہیں ہی، کارخانوں وغیرہ میں بھی اثردار جگہ لئے ہوئے ہیں۔

جہاں تک روسی امداد کی بات ہے، روس سے چین کو تکنیکی گیان کے علاوہ ضروری مشینری سامان بھی مل رہا ہے۔ مجھے یقین ہے کہ کارخانوں اور ٹرانسپورٹ کے دائروں میں روس بلا کسی ہچکچاہٹ کے چین کی مدد کر رہا ہے۔ اچرج کی بات تو یہ ہے کہ چین میں کام کرنے والے روسی ماہر کوئی اونچی نوکریوں پر نہیں ہیں۔ وہ چینی افسروں کے نیچے کام کرتے ہیں، وہی تنخواہیں لیتے ہیں جو چینیوں کو ملتی ہیں اور ویسی ہی تکلیفیں برداشت کرتے ہیں۔ اسی سہیوگ کا نتیجہ ہے کہ چینی لوگ موٹر اور ریل، تاریخ میں پہلی بار اپنے آپ بنانے لگ گئے ہیں۔ اب تو وہ جیپ کار بھی بنا رہے ہیں۔

چین کو باہر کے تیار مال کی ضرورت اب بھی ہے۔ اگر ہندستان سے یہ مال ملے تو بدلے میں کافی اناج وہ یہاں بھیج سکتا ہے۔

संयम का जज़्बा दिखाई देता था. फ़र्क़ सिर्फ़ यह है कि जहां हिन्दुस्तान में राजनीति के अन्दर जन चेतना और जन आन्दोलन का जज़्बा आज़ादी के बाद काफ़ी मुरझा गया मालूम होता है, वहां चीन में चीनी लोकराज के क़ायम हो जाने के बाद यह जज़्बा ज़ियादा बढ़ा है, मज़बूत बना है और तगड़ा पड़ा है.

एक ख़ास बात यह है कि हर एक के अन्दर काम करने की धुन है. उन सबका एक मक़सद दीखता है—ज़ियादा पैदावार. लोग एक दूसरे से रश्क इस बात में करते हैं कि हमारे दायरे में पैदावार दूसरे आदमी से ज़ियादा हो. बहादुर मज़दूरों और आदर्श कारकुनों की आज के चीन में सबसे ज़ियादा इज़्ज़त है. हर नौजवान चीनी लड़के लड़की को यह इच्छा रहती है कि मैं बहादुर मज़दूर या आदर्श कारकुन बन जाऊं.

चीन के अन्दर कम्यूनिस्ट पारटी का जनता पर असर कुछ उन्हीं सूरतों से पैदा हुआ जिनसे महात्मा गांधी और उनके साथियों ने हिन्दुस्तान की जनता पर असर क़ायम किया था. चीन की कम्यूनिस्ट पारटी को चीनियों के ऊपर कोई हुक्म नहीं लादना पड़ता. लोग इस पारटी की नेतागिरी इस वजह से मंज़ूर कर लेते हैं, क्योंकि उस पारटी की तरह दूसरी किसी पारटी ने मेहनत से काम नहीं किया है, और न जनता की सेवा के लिये इतनी लगन दिखाई है.

चीन सरकार की कामयाबी की कुन्जी यह है कि उसकी नीति या पालिसी को जनता का ज़बरदस्त सहयोग मिला है. इसकी वजह थी आम जनता के अन्दर घुस कर देश के बड़े बड़े सवालों पर चर्चा व बहस करना. यही वजह है कि वहां की सरकार कई पारटी हकूमत कामयाबी के साथ चला सकी है.

चीनी यह जानते हैं कि हिन्दुस्तान की सरकार उनसे जुदा ढंग की है. लेकिन इसमें उनको कोई परेशानी नहीं होती क्योंकि उनको मालूम है कि दुनिया के ग़ैर कम्यूनिस्ट देशों में हिन्दुस्तान ही सिर्फ़ ऐसा मुल्क है जिसने चीन के साथ अपनी बेलाग दोस्ती का रिश्ता रखा है और हमेशा उसका एलान किया है—यह सिर्फ़ ज़बान से ही नहीं बल्कि अमली शकल में कर दिखाया है. पंडित जवाहर लाल नेहरू की दूर अन्देशी है—उन्होंने सैनफ़्रांसिसको कान्फ़्रेंस में शरीक होने से इन्कार कर दिया और दुनिया से ऊंची आवाज़ में कहा कि नए चीनी लोकराज को चीन की असली सरकार माना जाए—चीनियों को यह इतमीनान हो गया है कि उनके और हिन्दुस्तान के बीच जो तारीख़ी सम्बन्ध चला आता है वह फिर से जारी ही नहीं होगा बल्कि वह ज़ियादा नज़दीकी और मज़बूत होने जा रहा है.

ہم کا جذبہ دکھائی دیتا تھا ۔ فرق صرف یہ
کہ جہاں ہندستان میں راج نیتی کے اندر جن
بتنا اور جن آندولن کا جذبہ آزادی کے بعد کافی مرجھا
معلوم ہوتا ہے' وہاں چین میں چینی لوک راج کے
م ہوجانے کے بعد یہ جذبہ زیادہ بڑھا ہے' مضبوط
ہے اور تگڑا پڑا ہے ۔

ایک خاص بات یہ ہے کہ ہر ایک کے اندر کام کرنے
دھن ہے ۔ اُن سب کا ایک مقصد دیکھتا ہے—زیادہ
اوار ۔ لوگ ایک دوسرے سے رشک اِس بات میں
ہیں کہ ہمارے دائرے میں پیداوار دوسرے آدمی سے
ہ ہو ۔ بہادر مزدوروں اور آدرش کارکنوں کی آج کے
ن میں سب سے زیادہ عزت ہے ۔ ہر نوجوان چینی
لڑکی کو یہ اِچھا رہتی ہے کہ میں بہادر مزدور یا
ش کارکن بن جاؤں ۔

چین کے اندر کمیونسٹ پارٹی کا جنتا پر اثر کچھ
ہں صورتوں سے پیدا ہوا جن سے مہاتما گاندھی اور اُن
ساتھیوں نے ہندستان کی جنتا پر اثر قائم کیا تھا ۔
ن کی کمیونسٹ پارٹی کو چینیوں کے اُوپر کوئی حکم
ں لادنا پڑتا ۔ لوگ اِس پارٹی کی نیتاگری اِس وجہ
منظور کرلیتے ہیں کیونکہ اُس پارٹی کی طرح دوسری
ی پارٹی نے محنت سے کام نہیں کیا ہے' اور نہ جنتا
سیوا کے لئے اتنی لگن دکھائی ہے ۔

چین سرکار کی کامیابی کی کنجی یہ ہے کہ اُسکی
ی یا پالیسی کو جنتا کا زبردست سہیوگ ملا ہے ۔
ی وجہ تھی عام جنتا کے اندر گھس کر دیش کے
بڑے سوالوں پر چرچا و بحث کرنا ۔ یہی وجہ ہے
ہاں کی سرکار کئی پارٹی حکومت کامیابی کے ساتھ
سکی ہے ۔

چینی یہ جانتے ہیں کہ ہندستان کی سرکار اُن سے
ا ڈھنگ کی ہے ۔ لیکن اِس میں اُن کو کوئی پریشانی
ں ہوتی کیونکہ اُن کو معلوم ہے کہ دنیا کے غیر
ونسٹ دیشوں میں ہندستان ہی صرف ایسا ملک ہے
ں نے چین کے ساتھ اپنی بےلاگ دوستی کا رشتہ رکھا ہے
ہمیشہ اُس کا اعلان کیا ہے—یہ صرف زبان سے ہی
ں بلکہ اصلی شکل میں کر دکھایا ہے ۔ پنڈت جواہر
نہرو کی دور اندیشی ہے—اُنہوں نے سین فرانسسکو
رنس میں شریک ہونے سے اِنکار کردیا اور دنیا سے
چی آواز میں کہا کہ نئے چینی لوک راج کو چین
اصلی سرکار مانا جائے—چینیوں کو یہ اطمینان
یا ہے کہ اُن کے اور ہندستان کے بیچ جو تاریخی
بندھ چلا آتا ہے وہ پھر سے جاری ہی نہیں ہوگا بلکہ
زیادہ نزدیک اور مضبوط ہونے جارہا ہے ۔

दी को ख़त्म कर दिया गया लेकिन कारख़ाने दारों
ं के साथ काम करने दिया जाता है. चीनी लोग
सवाल को बहुत समझदारी से हल करते
े सभी सुधारों में आम जनता को साथ ले चलने
ी कोशिश होती है. वहां के लोग कमाल के काम
ले हैं."

(6)

न्टन में उन्होंने असमत फ़रोशी को चन्द महीनों में
कर दिया और उन सब औरतों को क़ौमी पैदावार के
लगा दिया. बाढ़ के वक़्त जो जज़्बा आम लोगों
ससे उन्होंने फ़ायदा उठाया. इसकी वजह से वह
आफ़तों से बच गए. लेकिन हमारे देश में गांधी
वातावरन तैयार कर गए थे उसे हमने ठंडा पड़
ा. इसका नतीजा यह हुआ कि हम न इधर के रहे
े रहे."

नए चीन की ताक़त

(डाक्टर वी. के. आर. वी. राव)

पंडित सुन्दर लाल की सदारत में सितम्बर के
ं जो हिन्द गुडविल मिशन चीन गया था उसके
बर डाक्टर वी. के. आर. वी. राव भी थे. आप
कूल आफ़ एकोनामिक्स के डायरेक्टर हैं. हिन्दु-
ापस आने पर आपने प्रेस वालों से एक बयान
त में जो कहा उसका ख़ुलासा हम नीचे दे रहे
डीटर]

। नए इन्क़लाब के बाद चीन वालों ने जो कमाल
क़ी की है वह ऐसी अचरज भरी है कि अगर मैंने
ांखों से उसे न देखा होता, और सिर्फ़ किसी के
से सुना ही होता तो मैं उस पर क़तई यक़ीन नहीं
ा था.

भरोसा है कि चीन वालों में जो जोश और लगन
ल पर जल्दी ही उन्हें कारख़ाने चलाने की वह
ारी हासिल हो जाएगी जिसकी बिना पर वह
किसी भी कारख़ाने दार मुल्क से टक्कर ले सकते हैं.

े बड़ी चीज़ जिसने मेरे ऊपर असर किया वह
ि मुझे यह महसूस हुआ कि क़ौम की क़ौम जाग
र अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ रही है. मुझे उस
ौर आन्दोलन की याद हो आई जो हमारे देश
31 में पैदा हुई थी. चीन के अन्दर भी वही
ाम धाका, जोश, लगन, ठोसपन, ख़ुद सख़्ती और

بیوپاری والوں کو ختم کر دیا گیا لیکن کارخانے داروں
کو مزے کے ساتھ کام کرنے دیا جاتا ہے . چینی لوگ ایسے
سوال کو بہت سمجھداری سے حل کرتے ہیں . ایسے
سبھی سدھاروں میں عام جنتا کو ساتھ لے چلنے کی
اُن کی کوشش ہوتی ہے . وہاں کے لوگ کمال کے کام
کرنے والے ہیں ."

(6)

"کینٹن میں اُنہوں نے عصمت فروشی کو چند
مہینوں میں ہی ختم کر دیا اور اُن سب عورتوں کو قومی
پیداوار کے کاموں میں لگا دیا . باڑھ کے وقت جو جذبہ
عام لوگوں میں تھا اُس سے اُنہوں نے فائدہ اُٹھایا . اِس
کی وجہ سے وہ بہت سی آفتوں سے بچ گئے . لیکن ہمارے
دیش میں گاندھی جی جو واتاورن تیار کر گئے تھے اُسے
ہم نے ٹھنڈا پڑ جانے دیا . اِس کا نتیجہ یہ ہوا کہ ہم
نہ ادھر کے رہے نہ اُدھر کے رہے ."

نئے چین کی طاقت

(ڈاکٹر وی . کے . آر . وی . راؤ)

[پنڈت سندر لال کی صدارت میں ستمبر کے
مہینے میں جو ہند گڈول مشن چین گیا تھا اُس
کے ایک ممبر ڈاکٹر وی . کے . آر . وی . راؤ بھی تھے .
آپ دلی اسکول آف ایکونامکس کے ڈائرکٹر ہیں .
ہندستان واپس آنے پر آپ نے پریس والوں سے ایک بیان
کے دوران میں جو کہا اُس کا خلاصہ ہم نیچے دے رہے
ہیں—ایڈیٹر]

اِس نئے انقلاب کے بعد چین والوں نے جو کمال کی
ترقی کی ہے وہ ایسی اچرج بھری ہے کہ اگر میں نے اپنی
آنکھوں سے اُسے نہ دیکھا ہوتا' اور صرف کسی کے منہ سے
اُسے سنا ہی ہوتا' تو میں اُس پر قطعی یقین نہیں کر
سکتا تھا .

مجھے بھروسہ ہے کہ چین والوں میں جو جوش اور
لگن ہے اُس کے بل پر جلدی ہی اُنہیں کارخانے چلانے
کی وہ سب جانکاری حاصل ہو جائیگی جسکی بنا پر
وہ دنیا کے کسی بھی کارخانے دار ملک سے ٹکر لے سکتے
ہیں .

سب سے بڑی چیز جس نے میرے اُوپر اثر کیا وہ یہ
تھی کہ مجھے یہ محسوس ہوا کہ قوم کی قوم جاگ
گئی ہے اور اپنی منزل کی طرف بڑھ رہی ہے . مجھے
اُس جوش اور آندولن کی یاد ہو آئی جو ہمارے دیش
میں 1930-31 میں پیدا ہوئی تھی . چین کے اندر بھی
وہی کام سے کام والا' جوش' لگن' ٹھوس پن' خود سختی اور

बिताने की क़ीमत हम नहीं चुकाना चाहते. हम रहते ही इस तरह से हैं कि लड़ाइयां हों और फिर हाथ उठा कर ईश्वर-अल्लाह से दुआ करते हैं कि लड़ाई और बरबादी से हमें बचा. यह मज़ाक़ नहीं तो क्या है ? शान्ति के लिये जल्दी-वाला-रास्ता हम अपना सकते हैं लेकिन इसकी पीठ पर लम्बी मुद्दत वाली योजना ज़रूर होनी चाहिये. वह योजना ही हमारे जीवन को इस तरह बदल सकेगी कि शान्ति पैदा हो.''

(5)

''आपने मुझसे चीन के खेती सुधार के बारे में पूछा है. ऐसा लगता है कि चीनियों ने इस बारे में बहुत ही सही और मज़बूत क़दम उठाया है. उन्होंने आंख मूँद कर रूस की नक़ल नहीं की है बल्कि वहां के तजरबे से क़ीमती सबक़ लिया है. चीन के अन्दर ज़मीन पर समाजी मिलकियत कहीं नहीं है. निजी मिलकियत यहां का क़ानून है लेकिन इस मिलकियत के इस्तेमाल पर राज का पूरा क़ाबू है. निजी मुनाफ़े का, हालांकि उसकी हद बना दी गई है, बोल बाला है और वही प्रेरक शक्ति है. ज़मींदारी— जिसमें किसान का ख़ून चूसा जाता था—ख़तम कर दी गई है लेकिन उन मालदार किसानों को जो ख़ुद काश्त करते थे छुआ तक नहीं गया. अब तक किसानों को अपनी पैदावार का आठ आने से लेकर सोलह आने तक हिस्सा ज़मींदार को दे देना पड़ता था. लेकिन यह चीज़ ख़तम कर दी गई और अब जोतने वाले को अपनी मेहनत का पूरा फल मिलता है.

लगान पैदावार का क़रीब क़रीब 13 फ़ी सदी है और अनाज की शकल में वसूल किया जाता है. इस तरह करने से उन्हें चीज़ों की चढ़ती क़ीमतों को रोकने में बड़ी मदद मिली है. सिपाहियों और मास्टरों को अनाज की शकल में तनख़ाह मिलती है. आतंक का कहीं नाम नहीं—लेकिन हां, जिन ज़मींदारों ने विद्रोह की कोशिश की उन्हें ज़रूर दबा दिया गया. उनकी ज़मीनें ज़ब्त करली गईं. लेकिन जिन ज़मींदारों को ज़मीन जोतना क़बूल था उनको दूसरों के जैसी सभी सहूलियतें पहुंचाई गईं.

रूसी इन्क़िलाब का आधार मिल मज़दूर थे लेकिन चीनी इन्क़लाब का आधार खेती सुधार है. दोनों में भेद केवल तादाद का नहीं बल्कि क़िस्म का है. नतीजा यह है कि चीन में वैसा कम्यूनिज़्म नहीं है जो हम रूस के साथ नत्थी करते हैं. रूस का चीन की नीति को ढालने में उतना हाथ नहीं है जितना हम समझा करते हैं.

कई तरह से चीनी इन्क़लाब हमारे लिये सबक़-दाता है. दस्तकारी, कारख़ानों के मामले में भी ख़ून चूसने वाले

بتانے کی قیمت ہم نہیں چکانا چاہتے ۔ ہم رہتے ہی اِس طرح سے ہیں کہ لڑائیاں ہوں اور پھر ہاتھ اُٹھا کر ایشور اللہ سے دعا کرتے ہیں کہ لڑائی اور بربادی سے ہمیں بچا ۔ یہ مذاق نہیں تو کیا ہے ؟ شانتی کے لئے جلدی والا راستہ ہم اپنا سکتے ہیں لیکن اسکی پیٹھ پر لمبی مدت والی یوجنا ضرور ہونی چاہئے ۔ وہ یوجنا ہی ہمارے جیون کو اس طرح بدل سکے گی کہ شانتی پیدا ہو ۔"

(5)

" آپ نے مجھ سے چین کے کھیتی سدھار کے بارے میں پوچھا ہے ۔ ایسا لگتا ہے کہ چینیوں نے اِس بارے میں بہت ہی صحیح اور مضبوط قدم اُٹھایا ہے ۔ انہوں نے آنکھ موند کر روس کی نقل نہیں کی ہے بلکہ وہاں کے تجربے سے قیمتی سبق لیا ہے ۔ چین کے اندر زمین پر سماجی ملکیت کہیں نہیں ہے ۔ نجی ملکیت یہاں کا قانون ہے لیکن اِس ملکیت کے استعمال پر راج کا پورا قابو ہے ۔ نجی منافع کا' حالانکہ اُس کی حد بنا دی گئی ہے' بول بالا ہے اور وہی پریرک شکتی ہے ۔ زمینداری -- جس میں کسان کا خون چوسا جاتا تھا — ختم کر دی گئی ہے لیکن اُن مالدار کسانوں کو جو خود کاشت کرتے تھے چھوا تک نہیں گیا ۔ اب تک کسانوں کو اپنی پیداوار کا آٹھ آنے سے لے کر سولہ آنے تک حصہ زمیندار کو دے دینا پڑتا تھا ۔ لیکن یہ چیز ختم کر دی گئی اور اب جوتنے والے کو اپنی محنت کا پورا پھل ملتا ہے ۔

لگان پیداوار کا قریب قریب 13 فی صدی ہے اور اناج کی شکل میں وصول کیا جاتا ہے ۔ اِس طرح کرنے سے اُنہیں چیزوں کی چڑھتی قیمتوں کو روکنے میں بڑی مدد ملی ہے ۔ سپاہیوں اور ماسٹروں کو اناج کی شکل میں تنخواہ ملتی ہے ۔ آتنک کا کہیں نام نہیں — لیکن ہاں' جن زمینداروں نے ودروہ کی کوشش کی انہیں ضرور دبا دیا گیا ۔ اُن کی زمینیں ضبط کر لی گئیں ۔ لیکن جن زمینداروں کی زمین جوتنا قبول تھا اُن کو دوسروں کے جیسی سبھی سہولیتیں پہونچائی گئیں ۔

روسی انقلاب کا آدھار مل مزدور تھے لیکن چینی انقلاب کا آدھار کھیتی سدھار ہے ۔ دونوں میں بھید کیول تعداد کا نہیں بلکہ قسم کا ہے ۔ نتیجہ یہ ہے کہ چین میں ویسا کمیونزم نہیں ہے جو ہم روس کے ساتھ نتھی کرتے ہیں ۔ روس کا چین کی نیتی کو ڈھالنے میں اُتنا ہاتھ نہیں ہے جتنا ہم سمجھا کرتے ہیں ۔

کئی طرح سے چینی انقلاب ہمارے لئے سبق داتا ہے ۔ دستکاری کارخانوں کے معاملے میں بھی خون چوسنے والے

आख़ीर में दुनिया व्यापी लड़ाई की शकल ले लेती है. इसलिये सिर्फ़ लड़ाई का इलाज करना अलामत का इलाज करना है न कि असली बीमारी का. हथियार बन्दी और सुलहों से यह सवाल पूरा हल होने वाला नहीं है. हम यह महसूस करते हैं कि जब अपनी जरूरतों के बनावटी नाम हम खड़े करेंगे और फिर केन्द्री पैदावार के ज़रिये उन जरूरतों को पूरा करने के चक्कर में पड़ेंगे तो लड़ाइयों का होना लाज़मी है. हम यह भी महसूस करते हैं कि ऐसे बनावटी नामों से क़ुदरती लालच और ईर्शा बढ़ते हैं और नफ़रत पैदा होती है जिसका नतीजा लड़ाई है. इसलिये हिन्दुस्तान का तरीक़ा, ख़ास कर वह जिसके रहबर महात्मा गांधी हैं, मुस्तक़िल शान्ति क़ायम करने का तरीक़ा है. लेकिन इतनी बात जरूर है कि यह लम्बी मुद्दत का प्रोग्राम है.

"भाई एहरन बर्ग ने कहा, 'अगर कोई डाकू बच्चे को मारने घर में घुस आए तो क्या बच्चे को बचाना गांधी वादी तरीक़े के ख़िलाफ़ होगा ?' मैंने जवाब दिया, 'माफ़ किजिये, आप की मिसाल ठीक नहीं बैठती है. हमको जड़ पकड़नी चाहिये. अगर बच्चे के बदन पर कोई ऐसी चीज़ है—जैसे जेवर—जिससे डाकू का मन बेजा हरकत करने को होता है तो हम एक डाकू से उसे बचाएंगे तो दूसरा आएगा, तीसरा आएगा. इस तरह सवाल हल नहीं होने वाला है. लड़ाइयां बाढ़ों की तरह होती हैं. और बाढ़ नाम है बरसात के पानी के जमा हो जाने का. बहुत पैसा मेहनत ख़र्च करके बाढ़ रोकने के लिये हम डाम बना सकते हैं. लेकिन जहां यह डाम फूटे कि तबाही फिर से आई. इस लिये बाढ़ रोकने का मुनासिब तरीक़ा यही है कि हम बरसात के पानी से काम शुरू करें. अगर हम ज़मीन जोत लें तो वह पानी सोख कर उपजाऊ बनती है. अगर जंगल बनादें तब भी बारिश का पानी बेकार न जाकर ज़मीन में चला जाता है और आगे सोते के पानी की तरह काम में आ जाता है. ज़मीन ख़ुद एक बड़े हौज़ या तालाब का काम कर लेती है और पानी को भयानक बाढ़ का रूप नहीं लेने देती. छोटे छोटे डामों से भी यह काम चलता है. यह चीज़ें देखने में तो मामूली सी लगती हैं लेकिन इनकी अहमियत से कौन इनकार कर सकता है ?

"गांधी जी का तरीक़ा यही है कि बरसात की बूँदों को रोक कर उनको सुकारज से लगा दिया जाए, न कि उनको जमा होने दे कर बाढ़ की शकल में मुसीबत पैदा करने दें. जो रचनात्मक प्रोग्राम उन्होंने छोड़ा है वह दुनिया की शान्ति के लिये बहुत बड़ी इमदाद है. आपके शान्ति-सम्मेलनों की पहुँच या अपील इस प्रोग्राम के सामने नहीं के बराबर है. मुसीबत असली यह है कि सादा जीवन

آخیر میں دنیا ویاپی لڑائی کی شکل لے لیتی ہے. اِس لئے صرف لڑائی کا علاج کرنا علامت کا علاج کرنا ہے نہ کہ اصلی بیماری کا . ہتھیار بندی اور صلحوں سے یہ سوال پورا حل ہونے والا نہیں ہے . ہم یہ محسوس کرتے ہیں کہ جب اپنی ضرورتوں کے بناوٹی نام ہم کھڑے کریں گے اور پھر کیندری پیداوار کے ذریعے اُن ضرورتوں کو پورا کرنے کے چکر میں پڑیں گے تو لڑائیوں کا ہونا لازمی ہے . ہم یہ بھی محسوس کرتے ہیں کہ ایسے بناوٹی ناموں سے قدرتی لالچ اور اِیرشا بڑھتے ہیں اور نفرت پیدا ہوتی ہے جس کا نتیجہ لڑائی ہے . اس لئے ہندستان کا طریقہ' خاص کر وہ جس کے رہبر مہاتما گاندھی ہیں' مستقل شانتی قائم کرنے کا طریقہ ہے . لیکن اتنی بات ضرور ہے کہ یہ لمبی مدت کا پروگرام ہے .

"بھائی اہرن برگ نے کہا' 'اگر کوئی ڈاکو بچے کو مارنے گھر میں گھس آئے تو کیا بچے کو بچانا گاندھی وادی طریقے کے خلاف ہوگا ؟' میں نے جواب دیا' 'معاف کیجئے' آپ کی مثال ٹھیک نہیں بیٹھتی ہے . ہم کو جڑ پکڑنی چاہئے . اگر بچے کے بدن پر کوئی ایسی چیز ہے—جیسے زیور—جس سے ڈاکو کا من بیجا حرکت کرنے کو ہوتا ہے تو ہم ایک ڈاکو سے اسے بچائیں گے تو دوسرا آئے گا' تیسرا آئے گا . اِس طرح سوال حل نہیں ہونے والا ہے . لڑائیاں باڑھوں کی طرح ہوتی ہیں . اور باڑھ نام ہے برسات کے پانی کے جمع ہو جانے کا . بہت پیسہ محنت خرچ کرکے باڑھ روکنے کے لئے ہم ڈام بنا سکتے ہیں . لیکن جہاں یہ ڈام پھوٹے کہ تباہی پھر سے آئی . اس لئے باڑھ روکنے کا مناسب طریقہ یہ ہے کہ ہم برسات کے پانی سے کام شروع کریں . اگر ہم زمین جوت لیں تو وہ پانی سوکھ کر اُپجاؤ بنتی ہے . اگر جنگل بنادیں تب بھی بارش کا پانی بیکار نہ جاکر زمین میں چلا جاتا ہے اور آگے سوتے کے پانی کی طرح کام میں آجاتا ہے . زمین خود ایک بڑے حوض یا تالاب کا کام کرلیتی ہے اور پانی کو بھیانک باڑھ کا روپ نہیں لینے دیتی . چھوٹے چھوٹے ڈاموں سے بھی یہ کام چلتا ہے . یہ چیزیں دیکھنے میں تو معمولی سی لگتی ہیں لیکن اِن کی اہمیت سے کون انکار کرسکتا ہے ؟

"گاندھی جی کا طریقہ یہی ہے کہ برسات کی بوندوں کو روک کر اُن کو سکارج سے لگا دیا جائے' نہ کہ اُن کو جمع ہونے دیکر باڑھ کی شکل میں مصیبت پیدا کرنے دیں . جو رچناتمک پروگرام اُنہوں نے چھوڑا ہے وہ دنیا کی شانتی کے لئے بہت بڑی امداد ہے . آپ کے شانتی سمیلنوں کی پہنچ یا اپیل اس پروگرام کے سامنے نہیں کے برابر ہے . مصیبت اصلی یہ ہے کہ سادہ جیون

है. यहां की सरकारी मशीनरी समझदार है और सब लोग दिल से उसके साथ हैं. वजह यह है कि सब मुलाज़िम जनता से हिल मिल गए हैं. सब एक ही तरह के कपड़े पहनते और एक ही तरह रहते हैं. ऊंचे और नीचे में कोई बड़ा फ़र्क़ नहीं है. चेयरमैन माओ को हर महीने केवल 2,800 कट्टी मक्का मिलती है (एक कट्टी=10 छटांक), साथ में एक मकान और एक मोटर हमारे हिसाब से चेयरमैन माओ की तनख़ाह 600 रुपया महीना बैठेगी. मैं दो कैबिनट मिनिस्टरों से मिला जो क़रीब क़रीब 450 रुपये के बराबर पाते थे. जो स्वयं सेवक हमारे साथ थे उन्हें क़रीब 150 रुपया मिलता है. इस से आप देख सकते हैं कि चीन में इस तरह के नेता हैं जो जनता का सा जीवन बिताते हैं.

"यहां पर वैसी ही एक जान मालूम होती है जैसी हमारे यहां 1931 में थी. रूस का उतना ज़ियादा असर नहीं है जितना हम समझते हैं. रूसी कम्यूनिज़्म का आधार राष्ट्रीकरण और बड़े पैमाने की तैयारी है. लेकिन चीन ख़ासगी या निजी जायदाद में—चाहे वह कुछ सीमित ही है—यक़ीन करता है. छोटे पैमाने की तैयारी वाले कारख़ाने यहां ख़ूब हैं. यहां का आधार है—नया खेती क़ानून और खेती सुधार. इस बुनियादी फ़र्क़ की वजह से चीन आंख बन्द कर के रूस की नक़ल नहीं कर सकता.

"मुझे यह देख कर ख़ुशी हुई कि यहां वेतन का आधार क़रीब क़रीब वही है जो मैंने अपने पन्ने आश्रम, सेलहोड़ (यह वर्धा से बीस मील के फ़ासले पर है) में रखा है. चीन में खाना, कपड़ा, मकान मुफ़्त और जेब ख़र्च के लिये दस पन्द्रह रुपए महीने. मेरा हिसाब ज़ियादा साइन्टिफ़िक है क्योंकि समतोली ख़ुराक की बिना पर क़ायम किया गया है. लेकिन दोनों का मेल ताज्जुब की बात है."

(4)

"चीन में मेरी मुलाक़ात भाई इलया एहरन बर्ग से हुई जो रूस के नामी लेखक और उपन्यासकार हैं. वह रूस सरकार के एक ऊंचे प्रोपेगेन्डा अफ़सर भी हैं. उन्होंने मुझसे पूछा कि हिन्दुस्तान तो सचमुच शान्ति-पसंद देश है लेकिन फिर भी शान्तिवादी या पैसिफ़िस्ट संस्थाओं की अंतर क़ौमी शान्ति सभाओं में वह कोई ख़ास हिस्सा क्यों नहीं लेता ? मैंने जवाब दियाः

'हमारा नज़रिया ही आपके नज़रिये से जुदा है. हमारी फ़िलासफ़ी और क़ौमी कलचर की तासीर यह है कि हम इनसान की निजी ज़िन्दगी के सुधार की तरफ़ ध्यान देते हैं. हम लड़ाई को एक समाजी बीमारी मानते हैं जो आदमियों के अन्दर की हिंसा का नतीजा है और वही

یہاں کی سرکاری مشینری سمجھ دار ہے اور سب لوگ
ل سے اس کے ساتھ ہیں ۔ وجہ یہ ہے کہ سب ملازم
نتا سے ہل مل گئے ہیں ۔ سب ایک ہی طرح کے کپڑے
ہنتے اور ایک ہی طرح رہتے ہیں ۔ اونچے اور نیچے
یں کوئی بڑا فرق نہیں ہے ۔ چیرمین ماؤ کو ہر مہینے
یول 2,800 کٹی مکا ملتی ہے (ایک کٹی = 10
ھٹانک)' ساتھ میں ایک مکان اور ایک موٹر ہمارے حساب
ے چیرمین ماؤ کی تنخواہ 600 روپے مہینہ بیٹھیگی ۔
یں دو کیبنٹ منسٹروں سے ملا جو قریب قریب 450
وپے کے برابر پاتے تھے ۔ جو سوئم سیوک ہمارے ساتھ تھے
نہیں قریب 150 روپیہ ملتا ہے ۔ اس سے آپ دیکھ
کتے ہیں کہ چین میں اسطرح کے نیتا ہیں جو جنتا
ساجیون بتاتے ہیں ۔

" یہاں پر ویسی ہی ایک جان معلوم ہوتی ہے جیسی
مارے یہاں 1931 میں تھی ۔ روس کا اتنا زیادہ اثر
ہیں ہے جتنا ہم سمجھتے ہیں ۔ روسی کمیونزم کا آدھار
شٹری کرن اور بڑے پیمانے کی تیاری ہے ۔ لیکن چین
اصگی یا نجی جائداد میں — چاہے وہ کچھ سیمت
ی ہے — یقین کرتا ہے ۔ چھوٹے پیمانے کی تیاری
ے کارخانے یہاں خوب ہیں ۔ یہاں کا آدھار ہے —
یا کھیتی قانون اور کھیتی سدھار ۔ اس بنیادی فرق
ی وجہ سے چین آنکھ بند کر کے روس کی نقل نہیں
ر سکتا ۔

"مجھے یہ دیکھکر خوشی ہوئی کہ یہاں ویتن کا آدھار
ریب قریب وہی ہے جو میں نے اپنے پنے آشرم' سیلہوڑ (یہ
ردھا سے بیس میل کے فاصلے پر ہے) ۔ میں رکھا ہے ۔
چین میں کھانا' کپڑا' مکان مفت اور جیب خرچ کے لئے
س پندرہ روپے ہر مہینے ۔ میرا حساب زیادہ سائنٹفک
ے کیونکہ سمتولی خوراک کی بنا پر قائم کیا گیا ہے ۔
یکن دونوں کا میل تعجب کی بات ہے ۔"

(4)

" چین میں میری ملاقات بھائی الیا اہرن برگ سے
وئی جو روس کے نامی لیکھک اور اپنیاس کار ہیں ۔
ہ روس سرکار کے ایک اونچے پروپیگنڈا افسر بھی ہیں ۔
نہوں نے مجھسے پوچھا کہ ہندستان تو سچ مچ شانتی
سند دیش ہے لیکن پھر بھی شانتی وادی یا پیسیفسٹ
نستھاؤں کی انتر قومی شانتی سبھاؤں میں وہ کوئی
خاص حصہ کیوں نہیں لیتا ؟ میں نے جواب دیا :

'ہمارا نظریہ ہی آپ کے نظریئے سے جدا ہے ۔ ہماری
فلسفی اور قومی کلچر کی تاثیر یہ ہے کہ ہم انسان
ی نجی زندگی کے سدھار کی طرف دھیان دیتے
یں ۔ ہم لڑائی کو ایک سماجی بیماری مانتے ہیں
جو آدمیوں کے اندر کی ہنسا کا نتیجہ ہے اور یہی

(2)

"चीन को जितना जियादा मैं देखता हूँ उतना ही मैं स पर मोहित होता जाता हूँ. कैन्टन जब हम पहुँचे तो खा कि हांग कांग के मुक़ाबले वह ग़रीब शहर है लेकिन फ़ाई म कोई कमी नहीं थी. न भिकमंगे थे, न मक्खी, न वे और न कुत्ते. सड़कें एक दम साफ़ थीं. पहरे वाले सपाहियों के नाक मुंह इसी तरह बन्द थे जैसे आपरेशन रने वाले डाक्टरों के. सड़कों पर आम तौर से साइकिलें, साइकल रिक्शे और बस चल रहे थे. कुछ मोटरें थीं लेकिन ह जियादातर सरकारी थीं. टैक्सी या निजी कार नहीं दिखलाई पड़ती थी. हवाई अड्डे झोंपड़ों की तरह थे और हाज़ चढ़ने उतरने के रास्ते पक्के नहीं बने थे, उन पर हज़ कोलतार था. सभी जगह सादगी थी. न ऐसे आदमी देखते थे जो दूसरों के मुक़ाबले बड़े रईस हों, सब क़रीब क़रीब एक से थे.

"कैन्टन की दुकानों के साइन बोर्ड इतने ख़ुशनुमा और ग बिरंगे मालूम हो रहे थे मानो किसी त्योहार की तैयारी . कैन्टन कलकत्ते जैसा बड़ा शहर है. लेकिन कहीं भी ालतू या बेकार ज़मीन नहीं मिलेगी. शहर तक के अन्दर ो ज़मीन ख़ाली है वहां खेती कर ली गई है. हम लोगों मुक़ाबले वहां के आदमी बहुत ही मेहनती हैं. जब मैं ुबह के वक़्त गलियों में घूमने गया तो देखा कि मायें अपने बच्चों को नहला रही हैं."

(3)

"पेकिंग में पहली अक्तूबर का जशन हमने देखा. ायरमैन माओ के पास से दस लाख आदमी उस दिन नेकले होंगे. हम लोग सुबह के साढ़े नौ बजे से शाम के ार बजे तक खड़े ही रहे. फ़ौज, समुन्दरी बेड़ और हवाई हाज़ का मार्च कोई डेढ़ घंटे तक हुआ. इसके बाद रेलवे और कारख़ानों के मज़दूर आए—तब फिर किसान, गांव ाले, स्कूल कालिज के लड़के लड़कियां वग़ैरा. सब लामी देते निकल गए. एक दम शान्ति और डिसिपलिन ा. उनके अन्दर से जोश मानो उमड़ा पड़ रहा हो. ऐसी ावना के लोग कभी ग़ुलाम नहीं रह सकते. इसके ुक़ाबले हिन्दुस्तान गया गुज़रा है. हम गाल फुला कर ह समझते हैं कि पूरब के अगुआ हम ही हैं. लेकिन ीन हम से कोसों आगे है. चीन वाले अपने मक़सद पर क सू होकर चल रहे हैं और उनके अन्दर इरादा मालूम ड़ता है. उन्हें कोई नहीं रोक सकता. हमारे सामने न कोई क़सद है न कोई मंज़िल, इसलिये हम में जोश नहीं है.

"खाना हर जगह बहुतेरा है. ज़रूरत की दूसरी चीज़ें ी बहुत ही सस्ती मिलती हैं. हां, इन्फ़लेशन ज़रूर है, ेकिन सरकार ने इसे दूर करने का रास्ता निकाल लिया

(2)

"چین کو جتنا زیادہ میں دیکھتا ہوں اتنا ہی میں اُس پر موہت ہوتا جاتا ہوں. کینٹن جب ہم پہنچے تو دیکھا کہ ہانگ کانگ کے مقابلے وہ غریب شہر ہے لیکن صفائی میں کوئی کمی نہیں تھی۔ وہاں نہ بھکمنگے تھے، نہ مکھی، نہ کوے اور نہ کتے۔ سڑکیں ایک دم صاف تھیں۔ پہرے والے سپاہیوں کے ناک منھ اسی طرح بند تھے جیسے آپریشن کرنے والے ڈاکٹروں کے۔ سڑکوں پر عام طور سے سائیکلیں، سائیکل رکشہ اور بس چل رہے تھے۔ کچھ موٹریں تھیں لیکن وہ زیادہ تر سرکاری تھیں۔ ٹیکسی یا نجی کار نہیں دکھلائی پڑتی تھی۔ ہوائی اڈے جھونپڑوں کی طرح تھے اور جہاز چڑھنے اُترنے کے راستے پکے نہیں بنے تھے، اُن پر محض کولتار تھا۔ سبھی جگہ سادگی تھی۔ نہ ایسے آدمی دیکھتے تھے جو دوسروں کے مقابلے بڑے رئیس ہوں، سب قریب قریب ایک سے تھے۔

"کینٹن کی دوکانوں کے سائن بورڈ اتنے خوشنما اور رنگ برنگے معلوم ہو رہے تھے مانو کسی تیوہار کی تیاری ہو۔ کینٹن کلکتے جیسا بڑا شہر ہے۔ لیکن کہیں بھی فالتو یا بیکار زمین نہیں ملے گی۔ شہر تک کے اندر جو زمین خالی ہے وہاں کھیتی کر لی گئی ہے۔ ہم لوگوں کے مقابلے وہاں کے آدمی بہت ہی محنتی ہیں۔ جب میں صبح کے وقت گلیوں میں گھومنے گیا تو دیکھا کہ مائیں اپنے بچوں کو نہلا رہی ہیں۔"

(3)

"پیکنگ میں پہلی اکتوبر کا جشن ہم نے دیکھا۔ چیرمین ماؤ کے پاس سے دس لاکھ آدمی اس دن نکلے ہونگے۔ ہم لوگ صبح کے ساڑھے نو بجے سے شام کے چار بجے تک کھڑے ہی رہے۔ فوج، سمندری بیڑے اور ہوائی جہاز کا مارچ کوئی ڈیڑھ گھنٹے تک ہوا۔ اِسکے بعد ریلوے اور کارخانوں کے مزدور آئے — تب پھر کسان، گاؤں والے، اسکول کالج کے لڑکے لڑکیاں وغیرہ۔ سب سلامی دیتے نکل گئے۔ ایک دم شانتی اور ڈسپلن تھا۔ اُن کے اندر سے جوش مانو اُمڈا پڑ رہا ہو۔ ایسی بھاونا کے لوگ کبھی غلام نہیں رہ سکتے۔ اس کے مقابلے ہندستان گیا گذرا ہے۔ ہم گال پھلا کر یہ سمجھتے ہیں کہ پورب کے اگوا ہم ہی ہیں، لیکن چین ہم سے کوسوں آگے ہے۔ چین والے اپنے مقصد پر ایک سو ہو کر چل رہے ہیں اور اُن کے اندر ارادہ معلوم پڑتا ہے۔ اُنہیں کوئی نہیں روک سکتا۔ ہمارے سامنے نہ کوئی مقصد ہے نہ کوئی منزل، اس لئے ہم میں جوش نہیں ہے۔

"کھانا ہر جگہ بہتیرا ہے۔ ضرورت کی دوسری چیزیں بھی بہت ہی سستی ملتی ہیں۔ ہاں، انفلیشن ضرور ہے، لیکن سرکار نے اِسے دور کرنے کا راستہ نکال لیا

नए चीन की झलक

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

[डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा कुल हिन्द ग्राम उद्योग संघ, मगनवाड़ी, वर्धा, के सदर हैं. आप हिन्द गुडविल मिशन के मेम्बर की हैसियत से चीन गए थे. अपने दौरे में उन्होंने जो खत अपनी संस्था के मंत्री को भेजे वह उनके माहवारी परचे "ग्राम उद्योग पत्रिका" में छपे हैं. इन खतों से नए चीन की एक खासी झलक मिलती है. हम उन खतों में से कुछ को यहाँ दे रहे हैं.
—एडीटर]

(1)

"हम लोग हांग कांग शाम को पहुँचे. स्विमिंग हाउस होटल में हमें ठहराया गया. इस होटल के बैरों में हिन्दुस्तानी होटलों के बैरों से बड़ा फ़र्क़ दीखता था. हमारे यहां के बैरे गर्दन झुकाए इनाम या बख़शीश के मुन्तज़िर रहते हैं. लेकिन हांग कांग में चीनी बैरों के चेहरे पर ख़ुशी छाई हुई थी, वह मुस्करा रहे थे और सर ऊंचा करके अपना काम करते थे. उन्हें देखकर हैरत होती थी. उन्हें अपने नए चीन का नाज़ था. उन्होंने हमारा स्वागत किया और इस तरह पेश आए मानो वही हमारे मेज़बान हों.

"दूसरे दिन सवेरे मैं यह देखने निकल गया कि हांग कांग की ग़रीब बस्तियां कैसी हैं. मैं ऐसी जगह गया जहां मुझे उम्मीद थी कि बदबू और गंदगी होगी—मांस मछली बाज़ार और सब्ज़ी मंडी. लेकिन मैं तो दंग रह गया. न मुझे मक्खी दीखी, न कौवे न चील—जो पूरब में गंदगी के मशहूर सफ़ैये समझे जाते हैं. सड़कें साफ़ थीं, हालांकि लोग ग़रीब थे कुछ लोग तो सड़क के पास पटरी पर पड़े थे. न कहीं थूक दिखाई देता था न और कोई गंदगी. न कोई बू आती थी—सिर्फ़ सूखी मछली की क़ुदरती गंध आ रही थी. पच्छिम को छोड़ कर ऐसा साफ़ नगर मैंने कहीं नहीं देखा. नहीं, नहीं, लन्दन के कुछ हिस्से भी यहां से सबक़ ले सकते हैं. इस जगह राज अंगरेज़ी है मगर आबादी ग़रीब चीनियों की है. इनकी हालत हमारे शहरों में पटरी पर रहने वालों से ज़ियादा मुख़तलिफ़ नहीं है. हमारे शहरों का इन्तज़ाम भी अंगरेज़ लोग एक ज़माने में करते थे, मगर भेद ज़मीन आसमान का मालूम पड़ता है. इसकी वजह चीनियों का सहयोग ही हो सकता है. शाम को हम जहाज़ से कैन्टन के लिये रवाना हुए. इस जहाज़ पर क़रीब दो दिन के बाद हमने चाय के वक़्त दो मक्खियां देखीं. मेरे साथी फ़ौरन बोल उठे, 'देखो, देखो! दो मक्खियाँ हैं.'"

نئے چین کی جھلک

(ڈاکٹر جے . سی . کمارپا)

[ڈاکٹر جے . سی . کمارپا کل ہند گرام ادیوگ سنگھ، مگن واڑی، وردھا، کے صدر ہیں . آپ ہند گڈول مشن کے ممبر کی حیثیت سے چین گئے تھے . اپنے دورے میں انہوں نے جو خط اپنی سنستھا کے منتری کو بھیجے وہ اُن کے ماہواری پرچے "گرام ادیوگ پتریکا" میں چھپے ہیں . ان خطوں سے نئے چین کی ایک خاصی جھلک ملتی ہے . ہم اُن خطوں میں سے کچھ کو یہاں دے رہے ہیں — ایڈیٹر]

(1)

" ہم لوگ ہانگ کانگ شام کو پہونچے . سوئمنگ ہاؤس ہوٹل میں ہمیں ٹھہرایا گیا . اِس ہوٹل کے بیروں میں ہندوستانی ہوٹلوں کے بیروں سے بڑا فرق دیکھتا تھا . ہمارے یہاں کے بیرے گردن جھکائے انعام یا بخشیش کے منتظر رہتے ہیں . لیکن ہانگ کانگ میں چینی بیروں کے چہرے پر خوشی چھائی ہوئی تھی' وہ مسکرا رہے تھے اور سر اونچا کر کے اپنا کام کرتے تھے . انہیں دیکھکر حیرت ہوتی تھی . انہیں اپنے نئے چین کا ناز تھا . انہوں نے ہمارا سواگت کیا اور اِس طرح پیش آئے مانو وہی ہمارے میزبان ہوں .

" دوسرے دن سویرے میں یہ دیکھنے نکل گیا کہ ہانگ کانگ کی غریب بستیاں کیسی ہیں . میں ایسی جگہ گیا جہاں مجھے اُمید تھی کہ بدبو اور گندگی ہوگی — مانس مچھلی بازار اور سبزی منڈی . لیکن میں تو دنگ رہ گیا نہ مجھے مکھی دکھی' نہ کوے نہ چیل — جو پورب میں گندگی کے مشہور صفیئے سمجھے جاتے ہیں . سڑکیں صاف تھیں حالانکہ لوگ غریب تھے . کچھ لوگ تو سڑک کے پاس پٹری پر پڑے تھے . نہ کہیں تھوک دکھائی دیتا تھا نہ اور کوئی گندگی . نہ کوئی بو آتی تھی — صرف سوکھی مچھلی کی قدرتی گندھ آتی تھی . پچھم کو چھوڑ کر ایسا صاف نگر میں نے کہیں نہیں دیکھا . نہیں' نہیں' لندن کے کچھ حصے بھی یہاں سے سبق لے سکتے ہیں . اِس جگہ راج انگریزی ہے مگر آبادی غریب چینیوں کی ہے . ان کی حالت ہمارے شہر میں پٹری پر رہنے والوں سے زیادہ مختلف نہیں ہے . ہمارے شہروں کا انتظام بھی انگریز لوگ ایک زمانے میں کرتے تھے مگر بھید زمین آسمان کا معلوم پڑتا ہے . اِس کی وجہ چینیوں کا سہیوگ ہی ہوسکتا ہے . شام کو ہم جہاز سے کینٹن کے لئے روانہ ہوئے . اِس جہاز پر قریب دو دن کے بعد ہم نے چائے کے وقت دو مکھیاں دیکھیں . میرے ساتھی فوراً بول اٹھے' "دیکھو' دیکھو ! دو مکھیاں ہیں !"

लड़की महीने में ढाई सौ यूनिट तनख़्वाह ले रही थी, फ़ैक्टरी के डायरेक्टर की तनख़्वाह साढ़े तीन सौ यूनिट थी, सरकारी महकमों में कम से कम तनख़्वाह डेढ़ सौ यूनिट और ज़ियादा से ज़ियादा तनख़्वाह साढ़े तीन सौ यूनिट है. इसी तरह का फ़र्क़ एक यूनिवर्सिटी के वाइस चान्सलर और एक चपरासी में है. चेयरमैन माओ-त्से-तुंग की तनख़्वाह भारत के राष्ट्रपति की तनख़्वाह के मुक़ाबले में सोलहवाँ हिस्सा है. इस लिहाज़ से हम चीन के अन्दर हर किसी कारख़ाने के मज़दूर और मैनेजर में, एक यूनिवर्सिटी के वाइसचान्सलर और एक चपरासी में पौशाक वग़ैरा के लिहाज़ से कोई तमीज़ नहीं कर सकते.

चीनी हुक्काम देसी उद्योग धंदों की हिम्मत बढ़ाते हैं. पेकिंग में हमने एक पूरा बाज़ार ऐसा देखा जहां हाथ का बना हुआ कपड़ा बिकता है. कुछ देहातों में हमने देखा कि लोग हाथ का कपड़ा बुन रहे थे और उनकी औरतें पुराने तरीक़े पर कात रही थीं. हमने एक बड़ी नुमायश देखी जहां हाथ से तैयार की जाने वाली चीज़ें रखी हुई थीं.

मज़हबी आज़ादी

चीन में पूरी मज़हबी आज़ादी हासिल है. हमने मसजिदें देखीं जहाँ बाक़ायदा नमाज़ अदा की जाती थी, हमने सिक्खों के गुरुद्वारे भी देखे जहाँ ग्रन्थ साहब रखा हुआ था और उसे उसी तरह पढ़ा जाता था जैसे हिन्दुस्तान में. हमने बड़े बड़े बौद्ध मंदिर भी देखे जहां बड़ी बड़ी मूर्तियां रखी हुई थीं. हांग-चू में ऐसे ही एक मंदिर की छत गिर पड़ी थी. हमने देखा कि हकूमत के पैसे से उसे नए सिरे से बनाया जा रहा है.

मैं यह असर लेकर और संतुष्ट हो कर चीन से वापस आया हूँ कि नया चीन और नए चीन के नेता एशिया की हर क़ौम के साथ पुर अमन तौर पर रहना चाहते हैं. चीन का ज़ियादा ध्यान सिर्फ़ जंगी सामान बनाने की तरफ़ ही नहीं है बल्कि ऐसे सामान की तरफ़ भी ध्यान दिया जा रहा है जो रोज़ के इस्तेमाल में आते हैं. इसका कारन यही है कि चीन में कोई जंग को पसंद नहीं करता.

मैं यक़ीन रखता हूँ कि नया चीन हिन्दुस्तान के मुक़ाबले में उन असूलों के ज़ियादा क़रीब है जिनका प्रचार महात्मा गांधी करते थे. आज जो हम अपने मुल्क में देखते हैं उनमें से बहुत सी बुराइयाँ आज से दो साल पहले चीन में भी देखने में आती थीं. मुझे इस बारे में ज़रा भी संदेह नहीं कि अगर हिन्दुस्तान में हम उन बुराइयों को दूर करने का जज़्बा रखते हों तो हम नए चीन से बहुत कुछ सीख सकते हैं.

لڑکی مہینے میں ڈھائی سو یونٹ تنخواہ لے رہی تھی، فیکٹری کے ڈائریکٹر کی تنخواہ ساڑھے تین سو یونٹ تھی۔ سرکاری محکموں میں کم سے کم تنخواہ ڈیڑھ سو یونٹ اور زیادہ سے زیادہ تنخواہ ساڑھے تین سو یونٹ ہے۔ اسی طرح کا فرق ایک یونیورسٹی کے وائس چانسلر اور ایک چپراسی میں ہے۔ چیئرمین ماؤتسے تنگ کی تنخواہ بھارت کے راشٹرپتی کی تنخواہ کے مقابلے میں سولہواں حصہ ہے۔ اِس لحاظ سے ہم چین کے اندر ہر کسی کارخانے کے مزدور اور منیجر میں، ایک یونیورسٹی کے وائس چانسلر اور ایک چپراسی میں پوشاک وغیرہ کے لحاظ سے کوئی تمیز نہیں کر سکتے۔

چینی حکام دیسی اُدیوگ دھندوں کی ہمت بڑھاتے ہیں۔ پیکنگ میں ہم نے ایک پورا بازار ایسا دیکھا جہاں ہاتھ کا بنا ہوا کپڑا بکتا ہے۔ کچھ دیہاتوں میں ہم نے دیکھا کہ لوگ ہاتھ کا کپڑا بن رہے تھے اور اُن کی عورتیں پرانے طریقے پر کات رہی تھیں۔ ہم نے ایک بڑی نمائش دیکھی جہاں ہاتھ سے تیار کی جانے والی چیزیں رکھی ہوئی تھیں۔

مذہبی آزادی

چین میں پوری مذہبی آزادی حاصل ہے۔ ہم نے مسجدیں دیکھیں جہاں باقاعدہ نماز ادا کی جاتی تھی، ہم نے سکھوں کے گوردوارے بھی دیکھے جہاں گرنتھ صاحب رکھا ہوا تھا اور اُسے اُسی طرح پڑھا جاتا تھا جیسے ہندوستان میں۔ ہم نے بڑے بڑے بودھ مندر بھی دیکھے جہاں بڑی بڑی مورتیاں رکھی ہوئی تھیں۔ ہانگ چو میں ایسے ہی ایک مندر کی چھت گر پڑی تھی۔ ہم نے دیکھا کہ حکومت کے پیسے سے اُسے نئے سرے سے بنایا جا رہا ہے۔

میں یہ اثر لے کر اور سنتشٹ ہوکر چین سے واپس آیا ہوں کہ نیا چین اور نئے چین کے نیتا ایشیا کی ہر قوم کے ساتھ پر امن طور پر رہنا چاہتے ہیں۔ چین کا زیادہ دھیان صرف جنگی سامان بنانے کی طرف ہی نہیں ہے بلکہ ایسے سامان کی طرف بھی دھیان دیا جا رہا ہے جو روز کے استعمال میں آتے ہیں۔ اِس کا کارن یہی ہے کہ چین میں کوئی جنگ کو پسند نہیں کرتا۔

میں یقین رکھتا ہوں کہ نیا چین ہندوستان کے مقابلے میں اُن اصولوں کے زیادہ قریب ہے جن کا پرچار مہاتما گاندھی کرتے تھے۔ آج جو ہم اپنے ملک میں دیکھتے ہیں اُن میں سے بہت سی برائیاں آج سے دو سال پہلے چین میں بھی دیکھنے میں آتی تھیں۔ مجھے اِس بارے میں ذرا بھی سندیہ نہیں کہ اگر ہندوستان میں ہم اُن برائیوں کو دور کرنے کا جذبہ رکھتے ہوں تو ہم نئے چین سے بہت کچھ سیکھ سکتے ہیں۔

देखना चाहते थे. हमने देखा कि पूरे मुल्क में निजी मिलिकियतों और निजी मिलिकियत वाले कारखानों की हिम्मत बढ़ाई जाती है. यही नहीं बल्कि सरकार इन निजी कारखानों को कच्चा माल भी मुहैया करती है और इस बात की जमानत देती है कि उनका तैयार किया हुआ माल बेचा जाएगा. विदेशी पूँजी लगाने के लिये भी काफ़ी गुंजायश है. हमने टेन्टसन, शंघाई और दूसरी बहुत सी जगहों पर अंगरेज़ फ़र्मों को काम करते देखा. हमने खास तौर से छान बीन की और हमें बताया गया कि चीन के अन्दर ऐसा कोई एक भी कारखाना या ज़मीन नहीं जो समाजवादी ढंग की मिलिकियत हो. नए चीन की हकूमत कोई कम्यूनिस्ट हकूमत नहीं है और न वह एक पारटी की सरकार है बल्कि वह केवल एक मिली जुली पारटी की सरकार है जिस में देश की तमाम पारटियों के नुमाइन्दे शामिल हैं. सरकार में ऐसे मेम्बरों की गिनती सिर्फ़ एक तिहाई है जिनके बारे में दावे से कहा जा सके कि वह कम्यूनिस्ट हैं. लेकिन अगर इसके बाद भी यह कहा जाए कि चीन एक कम्यूनिस्ट मुल्क है तो मैं कहूँगा कि चीन का कम्यूनिज़्म 'चीनी कम्यूनिज़्म' है जिस में जनता की पुरानी परम्पराओं को बनाए रखा गया है.

क़ानूनी अदालतें

चीन ने अपनी क़ानूनी अदालतों में इन्क़लाबी तबदीली की है और वकालत के पच्छिमी तरीक़े को एक दम बदल दिया है. किसी ज़माने में केवल शंघाई शहर में बारह सौ वकील रहा करते थे. लेकिन आज वहां एक भी वकील नहीं है. इन सबको दूसरे मुहकमों में ले लिया गया है और सिर्फ़ पांच बहुत क़ाबिल वकीलों को सरकार ने खुद नौकर रख लिया है जिन से पेचीदा मामलों में सलाह ली जाती है. इस तरह न सिर्फ़ यह कि चीन से मुक़द्दमे बाज़ी की बीमारी दूर हो गई है बल्कि अब मुक़द्दमों के फ़ैसले भी बहुत जल्द हो जाते हैं और इन्साफ़ सस्ता हो गया है. चीनी सरकार मुजरिमों का सुधार ट्रेनिंग दे कर भी करती है और सज़ा देने के मुक़ाबले में उनको सदाचार की शिक्षा भी देती है. नई चीनी सरकार ने उन लोगों तक को माफ़ कर दिया है जिन्होंने कोमिंटांग सरकार से हथियार लेकर नई सरकार से जंग की थी. इसका नतीजा यह है कि वह नई सरकार के सबसे बड़े वफ़ादार बन गए हैं.

तनख़ाहें

चीन में तनख़ाहें सिक्के की बुनियाद पर नहीं बल्कि ग़ल्ले की बुनियाद पर दी जाती हैं. जिन कारखानों में हम लोग गए, हमने देखा कि आम मज़दूरों और मैनेजर या डायरेक्टर की तनख़ाहों में तीन और आठ का अनुपात (तनासुब) था. एक बिस्कुट फ़ैक्टरी में जहां एक मज़दूर

دیکھنا چاہتے تھے ۔ ہم نے دیکھا کہ پورے ملک میں نجی ملکیتوں اور نجی ملکیت والے کارخانوں کی ہمت بڑھائی جاتی ہے ۔ یہی نہیں بلکہ سرکار ان نجی کارخانوں کو کچا مال بھی مہیا کرتی ہے اور اس بات کی ضمانت دیتی ہے کہ اُن کا تیار کیا ہوا مال بیچا جائے گا ۔ ودیشی پونجی لگانے کے لئے بھی کافی گنجائش ہے ۔ ہم نے ٹنٹسن، شنگھائی اور دوسری بہت سی جگہوں پر انگریز فرموں کو کام کرتے دیکھا ۔ ہم نے خاص طور سے چھان بین کی اور ہمیں بتایا گیا کہ چین کے اندر ایسا کوئی ایک بھی کارخانہ یا زمین نہیں جو سماج وادی ڈھنگ کی ملکیت ہو ۔ نئے چین کی حکومت کوئی کمیونسٹ حکومت نہیں ہے اور نہ وہ ایک پارٹی کی سرکار ہے بلکہ وہ کیول ایک ملی جلی پارٹی کی سرکار ہے جس میں دیش کی تمام پارٹیوں کے نمائندے شامل ہیں ۔ سرکار میں ایسے ممبروں کی گنتی صرف ایک تہائی ہے جنکے بارے میں دعوے سے کہا جاسکے کہ وہ کمیونسٹ ہیں ۔ لیکن اگر اسکے بعد بھی یہ کہا جائے کہ چین ایک کمیونسٹ ملک ہے تو میں کہوں گا کہ چین کا کمیونزم 'چینی کمیونزم' ہے جس میں جنتا کی پرانی پرمپراؤں کو بنائے رکھا گیا ہے ۔

قانونی عدالتیں

چین نے اپنی قانونی عدالتوں میں انقلابی تبدیلی کی ہے اور وکالت کے پچھمی طریقے کو ایک دم بدل دیا ہے ۔ کسی زمانے میں کیول شنگھائی شہر میں بارہ سو وکیل رہا کرتے تھے ۔ لیکن آج وہاں ایک بھی وکیل نہیں ہے ۔ ان سب کو دوسرے محکموں میں لے لیا گیا ہے اور صرف پانچ بہت قابل وکیلوں کو سرکار نے خود نوکر رکھ لیا ہے جن سے پیچیدہ معاملوں میں صلاح لی جاتی ہے ۔ اس طرح نہ صرف یہ کہ چین سے مقدمے بازی کی بیماری دور ہوگئی ہے بلکہ اب مقدموں کے فیصلے بھی بہت جلد ہو جاتے ہیں اور انصاف سستا ہوگیا ہے ۔ چینی سرکار مجرموں کا سدھار ٹریننگ دے کر بھی کرتی ہے اور سزا دینے کے مقابلے میں اُن کو سداچار کی شکشا بھی دیتی ہے ۔ نئی چینی سرکار نے اُن لوگوں تک کو معاف کر دیا ہے جنہوں نے کومنتانگ سرکار سے ہتھیار لے کر نئی سرکار سے جنگ کی تھی ۔ اس کا نتیجہ یہ کہ وہ نئی سرکار کے سب سے بڑے وفادار بن گئے ہیں ۔

تنخواہیں

چین میں تنخواہیں سکے کی بنیاد پر نہیں بلکہ غلے کی بنیاد پر دی جاتی ہیں ۔ جن کارخانوں میں ہم لوگ گئے، ہم نے دیکھا کہ عام مزدوروں اور منیجر یا ڈائریکٹر کی تنخواہوں میں تین اور آٹھ کا انوپات (تناسب) تھا ۔ ایک بسکٹ فیکٹری میں جہاں ایک مزدور

आने जाने, उठने बैठने पर कोई पाबन्दी नहीं थी. हम जहां चाहे जा सकते थे और जो देखना चाहते देख सकते थे. चीनी जनता और चीनी हाकिम भी हमसे खिंचे खिंचे न रहते थे. हमने जो कुछ भी जानकारी हासिल करनी चाही उसमें उन्होंने हमें पूरी पूरी सहूलियत दी.

दो साल की तरक़्क़ी

पिछले दो साल के अन्दर चीन ने जो कुछ किया उसका हम पर बेहद असर पड़ा. जापानी क़ब्ज़े के बीच और बाद में कोमिंटांग राज में देश की समाजी और आर्थिक ज़िन्दगी का ढाँचा बिलकुल टुकड़े टुकड़े हो गया था. चीन के नेताओं को बिलकुल नए सिरे से अपने देश को बनाना पड़ा. इन दो बरसों के अन्दर वह अपने बरबाद हुए उद्योग धंदों को बहाल करने और मुल्क के आर्थिक निज़ाम को संवारने में सफल हो गए हैं. रिश्वत ख़ोरी बन्द कर दी गई है और अब वही अफ़सर जो दो साल पहले तक दुनिया के सब मुल्कों से ज़ियादा घूस ख़ोर थे, पारसा बन गए हैं. यही नहीं, सब मिला कर जनता का सदाचार भी बहुत ऊंचा हो गया है. इसका सबूत इस बात से मिलता है कि इतने लम्बे चौड़े और महान देश से वेश्याओं और भिकमंगों का बिलकुल ख़ात्मा हो चुका है. खेती में सुधार किया गया है और जिन लोगों के पास ज़मीनें नहीं थीं उन्हें ज़मीनें दे दी गई हैं और अब देश की पैदावार इतनी बढ़ गई है कि जो देश सिर्फ़ चन्द साल पहले तक दूसरे देशों से ग़ल्ला मंगाता था अब लाखों टन ग़ल्ला दूसरे देशों को भेजता है. उद्योग धंदों के मैदान में भी उसने इतनी तरक़्क़ी की है कि अब वह ज़िन्दगी के हर क्षेत्र में अपनी ज़रूरत आप पूरी कर लेता है.

समाजी सुधार

चीन में समाजी सुधार भी हुए हैं. ख़ास तौर पर औरतों के सिलसिले में बहुत सुधार हुआ है. चीनी औरत को, जो किसी ज़माने में एक जागीर समझी जाती थी, बराबर के हक़ दिये गए हैं. शादी के बारे में नया क़ानून बनाया गया है और एक से ज़ियादा पत्नी घर में रखने की मनाही कर दी गई है. बेरोज़गारी को ख़त्म करने की कोशिश की जा रही है और जीवन के हर मैदान में मालदारों और ग़रीबों, मालिकों और नौकरों, आक़ा और ग़ुलामों के फ़र्क़ को मिटाया जा रहा है. क़ीमतों को एक सतह पर टिकाया जा रहा है और पैदावार बढ़ा कर सिक्के की बढ़ती के मसले पर क़ाबू पाने की कोशिश की जा रही है.

चीन कम्यूनिस्ट देश नहीं है

यहां हिन्दुस्तान में हम से कहा जाता है कि चीन एक कम्यूनिस्ट देश है. हम इस बात को ऐन मौक़े पर पहुँच कर

آنے جانے اٹھنے بیٹھنے پر کوئی پابندی نہیں تھی ۔ ہم جہاں چاہے جاسکتے تھے اور جو دیکھنا چاہتے دیکھ سکتے تھے ۔ چینی جنتا اور چینی حاکم بھی ہم سے کھنچے کھنچے نہ رہتے تھے ۔ ہم نے جو کچھ بھی جانکاری حاصل کرنی چاہی اس میں انہوں نے ہمیں پوری پوری سہولیت دی ۔

دو سال کی ترقی

پچھلے دو سال کے اندر چین نے جو کچھ کیا اسکا ہم پر بیحد اثر پڑا ۔ جاپانی قبضے کے بیچ اور بعد میں کومنتانگ راج میں دیش کی سماجی اور آرتھک زندگی کا ڈھانچہ بالکل ٹکڑے ٹکڑے ہوگیا تھا ۔ چین کے نیتاؤں کو بالکل نئے سرے سے اپنے دیش کو بنانا پڑا ۔ ان دو برسوں کے اندر وہ اپنے برباد ہوئے ادیوگ دھندوں کو بحال کرنے اور ملک کے آرتھک نظام کو سنوارنے میں سپھل ہوگئے ہیں ۔ رشوت خوری بند کردی گئی ہے اور اب وہی افسر جو دو سال پہلے تک دنیا کے سب ملکوں سے زیادہ گھوس خور تھے' پارسا بن گئے ہیں ۔ یہی نہیں' سب ملاکر جنتا کا سداچار بھی بہت اونچا ہوگیا ہے ۔ اسکا ثبوت اس بات سے ملتا ہے کہ اتنے لمبے چوڑے اور مہان دیش سے ویشیاؤں اور بھک منگوں کا بالکل خاتمہ ہوچکا ہے ۔ کھیتی میں سدھار کیا گیا ہے اور جن لوگوں کے پاس زمینیں نہیں تھیں انہیں زمینیں دے دی گئی ہیں اور اب دیش کی پیداوار اتنی بڑھ گئی ہے کہ جو دیش صرف چند سال پہلے تک دوسرے دیشوں سے غلہ منگاتا تھا اب لاکھوں ٹن غلہ دوسرے دیشوں کو بھیجتا ہے ۔ ادیوگ دھندوں کے میدان میں بھی اسنے اتنی ترقی کی ہے کہ اب وہ زندگی کے ہر چھیتر میں اپنی ضرورت آپ پوری کرلیتا ہے ۔

سماجی سدھار

چین میں سماجی سدھار بھی ہوئے ہیں ۔ خاص طور پر عورتوں کے سلسلے میں بہت سدھار ہوا ہے ۔ چینی عورت کو' جو کسی زمانے میں ایک جاگیر سمجھی جاتی تھی' برابر کے حق دیئے گئے ہیں ۔ شادی کے بارے میں نیا قانون بنایا گیا ہے اور ایک سے زیادہ پتنی گھر میں رکھنے کی مناہی کردی گئی ہے ۔ بے روزگاری کو ختم کرنے کی کوشش کی جارہی ہے اور جیون کے ہر میدان میں مالداروں اور غریبوں' مالکوں اور نوکروں' آقا اور غلاموں کے فرق کو مٹایا جارہا ہے ۔ قیمتوں کو ایک سطح پر ٹکایا جارہا ہے اور پیداوار بڑھاکر سکے کی بڑھتی کے مسئلے پر قابو پانے کی کوشش کی جارہی ہے ۔

چین کمیونسٹ دیش نہیں ہے

یہاں ہندستان میں ہم سے کہا جاتا ہے کہ چین ایک کمیونسٹ دیش ہے ۔ ہم اس بات کو عین موقع پر پہنچ کر

चीन की सैर

पिछले सितम्बर में हमें नई दिल्ली में चीनी दूतवास की मारफ़त चीन की कई लोक संस्थाओं की तरफ़ से दावत नामे मिले कि हम चीनी लोक राज की दूसरी सालगिरह के मौक़े पर होने वाले जलसों में शरीक हों. यह दावत नामे हमने मंजूर कर लिये लेकिन हमारे पास समय बहुत कम था. फिर भी अलग अलग सूबों से सम्बन्ध रखने वाले अलग अलग लोगों को चीन जाने वाले गुडविल मिशन में शामिल करने की कोशिश की गई. मिशन के अकसर मेम्बर जैसे डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा, सदर कुल हिन्द ग्राम उद्योग संघ, वर्धा, डाक्टर वी. के. आर वी. राव, डायरेक्टर देहली स्कूल आफ एकोनामिक्स और श्रीमती हन्ना सेन, सदर कुल हिन्द वीमन्स कान्फ़रेन्स आज़ाद तबक़े और ख़याल से सम्बन्ध रखने वाले थे. मिशन में किसी कम्यूनिस्ट मेम्बर को शामिल नहीं किया गया था. यह इसलिये किया गया कि ख़याल यह था कि कुछ निशपक्ष या ग़ैर-जानिबदार हिन्दुस्तानी चीन देख कर आएं और ख़ुद वहाँ के हालात को देखें. सरकार और चीन की अलग अलग संस्थाओं की तरफ़ से हमारा बहुत शानदार स्वागत किया गया. जहाँ कहीं हम गए, चीनियों ने अपनी मेहमाँ नवाज़ी की हद कर दी और इस बात का उन्होंने ख़ास तौर से ध्यान रखा कि हमें कोई तकलीफ़ न होने पाए.

हम चीन के सात बड़े बड़े शहरों में गए—(1) कैन्टन (2) पेकिंग, (3) मुकदन, (4) टैनट्सन, (5) नानकिंग, (6) शंघाई और (7) हांग-चू. हमने चीन की यूनिवर्सिटियां देखीं, वहाँ के स्कूलों और कालिजों में गए, कारख़ानों में गए—उनमें भी जो सरकारी मिल्कियत थे और उनमें भी जो निजी मिल्कियत थे. हम वहाँ के बाज़ारों में भी घूमे, हमने चीन की अदालतें भी देखीं और यह देखा कि वहां मुक़दमों के फ़ैसले किस तरह किये जाते हैं. हमने चीन की अलग अलग संस्थाओं को देखा और उन संस्थाओं से ताल्लुक़ रखने वाले लोगों और दूसरे असरदार चीनियों से बातचीत की. हमने चीन के सिनेमा भी देखे, उनके थेटरों में भी गए और उनकी खेती बाड़ी और दस्तकारी की नुमाइशों को भी देखा, जिनमें देहाती दस्तकारियों की नुमाइशें भी शामिल थीं. मुख़्तसर यह कि हमने वह सब कुछ देखा जो हम अपने थोड़े से दिनों के दौरे में देख सकते थे. हम चीन में चालीस दिन ठहरे और सच यह है कि इस अरसे में बेहद मसरूफ़ रहे. हमारे कहीं

چین کی سیر

پچھلے ستمبر میں ہمیں نئی دہلی میں چینی دوت واس کی معرفت چین کی کئی لوک سنستھاؤں کی طرف سے دعوت نامے ملے کہ ہم چینی لوک راج کی دوسری سالگرہ کے موقعے پر ہونے والے جلسوں میں شریک ہوں. یہ دعوت نامے ہم نے منظور کر لئے لیکن ہمارے پاس سمے بہت کم تھا. پھر بھی الگ الگ صوبوں سے سمبندھ رکھنے والے الگ الگ لوگوں کو چین جانے والے گڈول مشن میں شامل کرنے کی کوشش کی گئی. مشن کے اکثر ممبر جیسے ڈاکٹر جے. سی. کماریپا، صدر کل ہند گرام اُدیوگ سنگھ، وردھا، ڈاکٹر وی. کے. آر. وی. راؤ، ڈائریکٹر دہلی اسکول آف ایکونامکس اور شری متی ہنا سین، صدر کل ہند ویمنس کانفرنس آزاد طبقے اور خیال سے سمبندھ رکھنے والے تھے. مشن میں کسی کمیونسٹ ممبر کو شامل نہیں کیا گیا تھا. یہ اِس لئے کیا گیا کہ خیال یہ تھا کہ کچھ نشپکش یا غیر جانبدار ہندستانی چین دیکھکر آئیں اور خود وہاں کے حالات کو دیکھیں. سرکار اور چین کی الگ الگ سنستھاؤں کی طرف سے ہمارا بہت شاندار سواگت کیا گیا. جہاں کہیں ہم گئے، چینیوں نے اپنی مہمان نوازی کی حد کردی اور اِس بات کا اُنہوں نے خاص طور سے دھیان رکھا کہ ہمیں کوئی تکلیف نہ ہونے پائے.

ہم چین کے سات بڑے بڑے شہروں میں گئے--(1) کینٹن، (2) پیکنگ، (3) مکدن، (4) ٹینٹسن، (5) نانکنگ، (6) شنگھائی اور (7) ہانگ چو. ہم نے چین کی یونیورسٹیاں دیکھیں، وہاں کے اسکولوں اور کالجوں میں گئے، کارخانوں میں گئے—اُن میں بھی جو سرکاری ملکیت تھے اور اُن میں بھی جو نجی ملکیت تھے. ہم وہاں کے بازاروں میں بھی گھومے، ہم نے چین کی عدالتیں بھی دیکھیں اور یہ دیکھا کہ وہاں مقدموں کے فیصلے کس طرح کئے جاتے ہیں. ہم نے چین کی الگ الگ سنستھاؤں کو دیکھا اور اُن سنستھاؤں سے تعلق رکھنے والے لوگوں اور دوسرے اثردار چینیوں سے بات چیت کی. ہم نے چین کے سنیما بھی دیکھے، اُنکے تھیٹروں میں بھی گئے اور اُنکی کھیتی باڑی اور دستکاری کی نمائشوں کو بھی دیکھا، جن میں دیہاتی دستکاریوں کی نمائشیں بھی شامل تھیں. مختصر یہ کہ ہم نے وہ سب کچھ دیکھا جو ہم اپنے تھوڑے سے دنوں کے دورے میں دیکھ سکتے تھے. ہم چین میں چالیس دن ٹھہرے اور سچ یہ ہے کہ اِس عرصے میں بے حد مصروف رہے. ہمارے کہیں

इसलिये, सदर साहब ! मैं आपको फिर से यक़ीन दिलाता हूँ कि इस शान्ति और एकता के क़ायम करने की आपकी कोशिश में हिन्दुस्तान आपके साथ है. इसके पहले कि मैं खत्म करूं, एक चीज़ और कहना चाहता हूँ, लेकिन वह खासगी या निजी बात है. मैं उसके लिये आपकी माफ़ी चाहता हूँ. वह यह है कि इन पांच हफ़्तों में हम जो चीन में रहे तो जिन चीनी भाई बहिनों से मुझे वास्ता पड़ा उनसे मुझे अपने कुटुम्ब जैसी मुहब्बत पैदा हो गई है. मैं अपनी ही नहीं बल्कि अपने मिशन के हर भाई बहन के दिल की भावना ज़ाहिर करता हूँ जब मैं यह कहता हूँ कि अपने इस सफ़र में जिन लोगों से हमें वास्ता पड़ा है उनमें से कुछ को तो हम कभी नहीं भूल सकेंगे.

आपने जिस प्यार से हमें यहां पर रखा वह हम कभी नहीं भूल सकते. यक़ीन मानिये कि यहां से जाने में हमें तकलीफ़ ही हो रही है. मुझे ऐसा लगता है मानो हमें फिर अपने उस भाई से जुदा होना पड़ रहा है जिससे बरसों के बाद मुलाक़ात हो पाई थी.

सदर साहब ! हम—चीन और हिन्दुस्तान—केवल दो देश ही नहीं हैं जिनमें एकता है, बल्कि हम एक ही खानदान के भाई बहिन हैं. मुझे यक़ीन है कि हमारा रिश्ता महज़ राज काजी रिश्ते के मुक़ाबले कहीं ज़ियादा गहरा और सच्चा है. जिन नौजवान लड़के लड़कियों से मैं यहां मिला उन्हें मैं अपने बेटे और बेटी मानने लग गया हूँ. मैं उन प्यारे बेटों और बेटियों के मुस्कराते चेहरों को कभी नहीं भूल सकता जो हर स्टेशन पर हमें फूलों की मालाएं दिया करते थे. कैसी अनोखी मुहब्बत ! कैसा अनोखा प्यार ! इसके अलावा बड़ी उमर के जो लोग हमारे पास आए और जिन से हमारा ज़ियादा नज़दीक का ताल्लुक़ रहा, वह भी हमारे साथ ऐसे ही ब्योहार करते थे जैसे सगे भाई बहनों के साथ किया जाता है. इन मीठी और लुभावनी यादों को लेकर हम हिन्दुस्तान वापस जा रहे हैं. यह याद हमेशा ही हमारे दिल में बनी रहेगी.

हमारी पुरानी किताबों में लिखा है कि सारा इन्सानी समाज एक कुटुम्ब है. मैं मानता हूं कि इस धरती पर रहने वाले दो सौ करोड़ प्रानी सच मुच एक कुटुम्ब हैं. मैं मानता हूँ वह दिन जल्द आने वाला है जब हम सब एक कुटुम्ब की तरह रहना शुरू कर देंगे. अगर इस में कोई अड़चन है तो उसे दूर कर वह दिन नज़दीक लाने की कोशिश करेंगे. यही असली मतलब है एशिया की एकता का, यही असली मतलब है हिन्दुस्तान और चीन की एकता का.

कैन्टन 29. 10. '51

اس لئے، صدر صاحب ! میں آپ کو پھر سے یقین دلاتا ہوں کہ اس شانتی اور ایکتا کے قائم کرنے کی آپ کی کوشش میں ہندستان آپ کے ساتھ ہے ۔ اس کے پہلے کہ میں ختم کروں ایک چیز اور کہنا چاہتا ہوں، لیکن وہ خاصگی یا نجی بات ہے ۔ میں اس کے لئے آپ کی معافی چاہتا ہوں ۔ وہ یہ ہے کہ ان پانچ ہفتوں میں ہم جو چین میں رہے تو جن چینی بھائی بہنوں سے مجھے واسطہ پڑا اُن سے مجھے اپنے کٹمب جیسی محبت پیدا ہوگئی ہے ۔ میں اپنی ہی نہیں بلکہ اپنے مشن کے ہر بھائی بہن کے دل کی بھاونا ظاہر کرتا ہوں جب میں یہ کہتا ہوں کہ اپنے اس سفر میں جن لوگوں سے ہمیں واسطہ پڑا ہے ان میں سے کچھ کو تو ہم کبھی نہیں بھول سکینگے ۔

آپ نے جس پیار سے ہمیں یہاں پر رکھا وہ ہم کبھی نہیں بھول سکتے ۔ یقین مانئے کہ یہاں سے جانے میں ہمیں تکلیف ہی ہو رہی ہے ۔ مجھے ایسا لگتا ہے مانو پھر اپنے اس بھائی سے جدا ہونا پڑ رہا ہے جس سے برسوں کے بعد ملاقات ہو پائی تھی ۔

صدر صاحب ! ہم — چین اور ہندستان — کیول دو دیش ہی نہیں ہیں جن میں ایکتا ہے، بلکہ ہم ایک ہی خاندان کے بھائی بہن ہیں ۔ مجھے یقین ہے کہ ہمارا رشتہ محض راج کاجی رشتے کے مقابلے کہیں زیادہ گہرا اور سچا ہے ۔ جن نوجوان لڑکے لڑکیوں سے میں یہاں ملا انہیں میں اپنے بیٹے اور بیٹی ماننے لگ گیا ہوں ۔ میں ان پیارے بیٹوں اور بیٹیوں کے مسکراتے چہروں کو کبھی نہیں بھول سکتا، جو ہر اسٹیشن پر ہمیں پھولوں کی مالائیں دیا کرتے تھے ۔ کیسی انوکھی محبت ! کیسا انوکھا پیار ! اس کے علاوہ بڑی عمر کے جو لوگ ہمارے پاس آئے اور جن سے ہمارا زیادہ نزدیک کا تعلق رہا، وہ بھی ہمارے ساتھ ایسے ہی بیوہار کرتے تھے جیسے سگے بھائی بہنوں کے ساتھ کیا جاتا ہے ۔ ان میٹھی اور لبھاونی یادوں کو لے کر ہم ہندستان واپس جا رہے ہیں ۔ — یہ یاد ہمیشہ ہی ہمارے دل میں بنی رہے گی ۔

ہماری پرانی کتابوں میں لکھا ہے کہ سارا انسانی سماج ایک کٹمب ہے ۔ میں مانتا ہوں کہ اس دھرتی پر رہنے والے دو سو کروڑ پرانی سچ مچ ایک کٹمب ہیں ۔ میں مانتا ہوں وہ دن جلد آنے والا ہے جب ہم سب ایک کٹمب کی طرح رہنا شروع کر دینگے ۔ اگر اس میں کوئی اڑچن ہے تو اُسے دور کر وہ دن نزدیک لانے کی کوشش کرینگے ۔ یہی اصلی مطلب ہے ایشیا کی ایکتا کا، یہی اصلی مطلب ہے ہندستان اور چین کی ایکتا کا ۔

29 . 10 . '51 کینٹن

और है. दबी हुई क़ौम होने न होने का कोई सवाल ही नहीं है. आज चीन दुनिया की बड़ी से बड़ी और ऊंची से ऊंची ताक़तों में से है. और चीन की बात छोड़िये, जब हम एशिया का जिकर करते हैं तो मैं पूछता हूं क्या कोरिया के चन्द लाख आदमियों ने ही पच्छिम को एक जबरदस्त सबक़ नहीं सिखा दिया है ? यह वह सबक़ नहीं है जिसे कोई सहज में भूल जाए. कोरिया ने अपनी हिम्मत दिखाई है. चीन ने अपनी ताक़त दिखाई है. अंगरेजी साम्राज वाद के शिकंजे को तोड़ कर हिन्दुस्तान आजाद हुआ है. एशिया की दूसरी क़ौमें भी या तो आजाद हो गई हैं या आजाद होने जा रही .

यहां पर इस जलसे में जिन चार पांच देशों के नुमाइन्दे मौजूद हैं उन देशों की कुल आबादी सौ करोड़ के क़रीब होती है. यह आबादी दुनिया की आबादी का ठीक आधा हिस्सा है. और मैं आपको इतमिनान दिलाता हूं कि अगर दुनिया की यह आधी आबादी एक साथ क़दम उठाती है तो कोई ताक़त ऐसी नहीं है जो इसके आगे ठहर सके. एशिया ने इरादा कर लिया है कि वह आजाद होगा और फिर से बड़ी चीज होगा. साम्राजशाही, पूंजीशाही और जागीरशाही का जमाना लद गया, हमेशा के लिये लद गया. जब तक यह चीजें रहती हैं तब तक दुनिया में असली शान्ति क़ायम ही नहीं हो सकती. और मैं आपसे कहता हूँ, कि एशिया के देशों ने इन शाहियों को खत्म करने का फ़ैसला कर लिया है. इसलिये मैं आपको फिर से यक़ीन दिलाता हूँ कि साम्राजशाही, पूंजीशाही और जागीरशाही के खिलाफ़ आप जो लड़ाई लड़ रहे हैं उसमें हिन्दुस्तान आपके कंधे से कंधा मिलाकर साथ देगा.

एशिया की एकता इस खातिर नहीं है, उसका यह मतलब नहीं है, कि किसी दूसरे देश पर हमला—चढ़ाई की जाए. इसमें कोई शक नहीं कि योरप या अमरीका के किसी देश पर हमें धावा नहीं करना है. हमारी ताक़त एक जबरदस्त और दर्दनाक जरूरत का नतीजा है. सौ-बरस से ऊपर हुआ हम पच्छिमी साम्राजशाही का शिकार बने और मुसीबतें उठाईं. हममें से कुछ तो आज भी, अभी भी, उठा रहे हैं. यही वह खतरा है, यही वह बदक़िस्मती है जिस ने हम सब को एक कर दिया काफ़ी बड़े पैमाने तक हम इस चंगुल से निकल आए हैं और जो कुछ बाक़ी बचा है उससे भी जल्द निकल आएंगे.

इसलिये योरप या अमरीका या और कहीं किसी भी देश को एशिया की एकता से ख़ौफ़ खाने की जरूरत नहीं है ! हमारी एकता का मक़सद है—दुनिया में शान्ति क़ायम करना. हमारी एकता का मक़सद है दुनिया के सब रहने वाले एक हो जाएं.

ہے ۔ دبی ہوئی قوم ہونے نہ ہونے کا کوئی سوال
ہیں ہے ۔ آج چین دنیا کی بڑی سے بڑی اور اونچی سے
نچی طاقتوں میں سے ہے ۔ اور چین کی بات چھوڑیئے'
ب ہم ایشیا کا ذکر کرتے ہیں تو میں پوچھتا ہوں کیا
ریا کے چند لاکھ آدمیوں نے ہی پچھم کو ایک زبردست
بق نہیں سکھا دیا ہے ؟ یہ وہ سبق نہیں ہے جسے کوئی
ہج میں بھول جائے ۔ کوریا نے اپنی ہمت دکھائی ہے ۔
ین نے اپنی طاقت دکھائی ہے ۔ انگریزی سامراج واد کے
کنجے کو توڑ کر ہندستان آزاد ہوا ہے ۔ ایشیا کی دوسری
میں بھی یا تو آزاد ہوگئی ہیں یا آزاد ہونے جارہی
ہیں ۔

یہاں پر اس جلسے میں جن چار پانچ دیشوں کے
ائندے موجود ہیں اُن دیشوں کی کل آبادی سو کروڑ
، قریب ہوتی ہے ۔ یہ آبادی دنیا کی آبادی کا ٹھیک
دھا حصہ ہے ۔ اور میں آپ کو اطمینان دلاتا ہوں کہ اگر
نیا کی یہ آدھی آبادی ایک ساتھ قدم اُٹھاتی ہے تو
وئی طاقت ایسی نہیں ہے جو اس کے آگے ٹھہر سکے. ایشیا
، ارادہ کر لیا ہے کہ وہ آزاد ہوگا اور پھر سے بڑی چیز ہوگا.
سامراج شاہی پونجی شاہی اور جاگیر شاہی کا زمانہ لد
یا ہمیشہ کے لئے لد گیا ۔ جب تک یہ چیزیں رہتی
ہیں تب تک دنیا میں اصلی شانتی قائم ہی نہیں
ہوسکتی ۔ اور میں آپ سے کہتا ہوں' کہ ایشیا کے دیشوں
، ان شاہیوں کو ختم کرنے کا فیصلہ کر لیا ہے ۔ اس لئے
ہیں آپ کو پھر سے یقین دلاتا ہوں کہ سامراج شاہی'
پونجی شاہی اور جاگیر شاہی کے خلاف آپ جو لڑائی
ڑ رہے ہیں اُس میں ہندستان آپ کے کندھے سے کندھا
لا کر ساتھ دے گا ۔

ایشیا کی ایکتا اس خاطر نہیں ہے' اُس کا یہ
مطلب نہیں ہے' کہ کسی دوسرے دیش پر حملہ— چڑھائی
کی جائے ۔ اِس میں کوئی شک نہیں کہ یورپ یا امریکہ
کے کسی دیش پر ہمیں دھاوا نہیں کرنا ہے ۔ ہماری
طاقت ایک زبردست اور دردناک ضرورت کا نتیجہ ہے ۔
سو برس سے اوپر ہوا ہم پچھمی سامراج شاہی کا شکار بنے
ور مصیبتیں اُٹھائیں ۔ ہم میں سے کچھ تو آج بھی'
ابھی بھی' اُٹھا رہے ہیں ۔ یہی وہ خطرہ ہے' یہی وہ
بدقسمتی ہے جس نے ہم سب کو ایک کر دیا ۔ کافی
بڑے پیمانے تک ہم اس چنگل سے نکل آئے ہیں اور جو
کچھ باقی بچا ہے اُس سے بھی جلد نکل آئینگے ۔

اس لئے یورپ یا امریکہ یا اور کہیں کسی بھی دیش
کو ایشیا کی ایکتا سے خوف کھانے کی ضرورت نہیں ہے !
ہماری ایکتا کا مقصد ہے—دنیا میں شانتی قائم کرنا
ہماری ایکتا کا مقصد ہے دنیا کے سب رہنے والے ایک
ہو جائیں ۔

दौरे से हमारा आपका दो हजार बरस का पुराना रिश्ता फिर से हरा हो गया है. हिन्दुस्तान और चीन में जो दोस्ती थी वह पहले के मुक़ाबले कहीं ज़ियादा गहरी और नज़दीक हो गई है. मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि अब यह दोस्ती पक्की और टिकने वाली बन गई है. मैं अपनी तरफ़ से, अपने मिशन की तरफ़ से और हिन्दुस्तान के लोगों की तरफ़ से आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि हमारे इस दौरे के बाद दुनिया में कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो हमारे आपके प्यारे और दोस्ताना ताल्लुक़ात में कोई ख़लल डाल सके. सदर साहब ! चीन की जनता ने पिछले दो बरस में जो कमाल हासिल किये हैं वह हमने देखे. हमने देखा कि अपने मज़दूरों, अपने किसानों, अपनी औरतों और अपनी आम जनता के लिये आप कितना कुछ इस अरसे में कर सके हैं. हमने देखा कि समाजी, आर्थिक और दस्तकारी—कारख़ाने के मामलों में आपने कितनी हैरतनाक तरक़्क़ी की है. इस सबका हम पर गहरा असर पड़ा है. मैं अपने को इतिहास का विद्यार्थी मानता हूँ और मुझे यक़ीन है कि दुनिया के शायद ही किसी मुल्क ने सिर्फ़ दो बरस की मुद्दत में इतनी तरक़्क़ी की होगी जितनी चीन ने की है.

अपनी तरफ़ से, अपने मिशन की तरफ़ से और हिन्दुस्तान की जनता की तरफ़ से मैं चीनी जनता के आगे सिर झुकाता हूँ. जिसने कमाल के कारनामे दिखाए हैं. आपके महान नेता चेयरमैन माओ-त्से-तुंग के आगे सिर झुकाता हूँ. जब ज़रा ख़मोशी के साथ मैं यह सोचता हूँ कि आपके देश में इस बार घूम कर हमने क्या क्या सीखा तो मैं इस नतीजे पर पहुँचता हूँ कि चेयरमैन माओ सिर्फ़ चीन के ही नेता नहीं हैं बल्कि एक तरह से देखा जाए तो एशिया के लीडर हैं जिसमें हिन्दुस्तान भी शामिल है. जैसा मैंने अभी अर्ज़ किया, यहां पर हमने जो कुछ देखा, उससे हमने अपने देश की तरक़्क़ी और बेहतरी के लिये काफ़ी सबक़ लिया है. हमने आपके कारख़ाने देखे, यूनिवर्सिटियां देखीं, गांव देखे, बाज़ार देखे, संगठन सभाएं देखीं. हमने आप के यहां की अदालतें कचहरियां देखीं. इन सबसे हम इसी नतीजे पर पहुंचे कि हमारे देश हिन्दुस्तान को चीन से बहुत कुछ सीखना है.

जहां तक राज नीति का सवाल है उस दायरे में भी चीन ने पिछले चन्द बरसों में जो फ़तह हासिल की है वह कोई छोटी चीज़ नहीं है. मेरा ख़याल है कि पच्छिम के साम्राज वादियों को यह सबक़ अच्छी तरह मिल गया होगा कि चीन अजेय है, इसे कोई नहीं जीत सकता. सदर साहब ! आपने अपनी स्पीच में कहा कि चीन अब दबी हुई क़ौम नहीं रह गई है. लेकिन हमारी राय कुछ

دورے سے ہمارا آپ کا دو ہزار برس کا پرانا رشتہ پھر سے ہرا ہوگیا ہے . ہندستان اور چین میں جو دوستی تھی وہ پہلے کے مقابلے کہیں زیادہ گہری اور نزدیک ہوگئی ہے . میں آپ کو یقین دلاتا ہوں کہ اب یہ دوستی پکی اور ٹکنے والی بن گئی ہے . میں اپنی طرف سے، اپنے مشن کی طرف سے اور ہندستان کے لوگوں کی طرف سے آپکو یقین دلاتا ہوں کہ ہمارے اِس دورے کے بعد دنیا میں کوئی چیز ایسی نہیں ہے جو ہمارے آپکے پیارے اور دوستانہ تعلقات میں کوئی خلل ڈال سکے . صدر صاحب ! چین کی جنتا نے پچھلے دو برس میں جو کمال حاصل کئے ہیں وہ ہم نے دیکھے . ہم نے دیکھا کہ اپنے مزدوروں، اپنے کسانوں، اپنی عورتوں اور اپنی عام جنتا کے لئے آپ کتنا کچھ اِس عرصے میں کرسکے ہیں . ہم نے دیکھا کہ سماجی، آرتھک اور دستکاری—کارخانوں کے معاملے میں آپ نے کتنی حیرتناک ترقی کی ہے . اِس سب کا ہم پر گہرا اثر پڑا ہے . میں اپنے اتہاس کا ودیارتھی مانتا ہوں اور مجھے یقین ہے کہ دنیا نے شاید ہی کسی ملک نے صرف دو برس کی مدت میں اتنی ترقی کی ہوگی جتنی چین نے کی ہے .

اپنی طرف سے، اپنے مشن کی طرف سے اور ہندستان کی جنتا کی طرف سے میں چینی جنتا کے آگے سر جھکاتا ہوں، جس نے کمال کے کارنامے دکھائے ہیں. آپ کے مہان نیتا چیرمین ماؤتسے تنگ کے آگے سر جھکاتا ہوں . جب ذرا خاموشی کے ساتھ میں یہ سوچتا ہوں کہ آپ کے دیش میں اس بار گھوم کر ہم نے کیا کیا سیکھا تو میں اِس نتیجے پر پہونچتا ہوں کہ چیرمین ماؤ صرف چین کے ہی نیتا نہیں ہیں بلکہ ایک طرح سے دیکھا جائے تو ایشیا کے لیڈر ہیں جس میں ہندستان بھی شامل ہے . جیسا میں نے ابھی عرض کیا، یہاں پر ہم نے جو کچھ دیکھا، اُس سے ہم نے اپنے دیش کی ترقی اور بہتری کے لئے کافی سبق لیا ہے . ہم نے آپ کے کارخانے دیکھے، یونیورسٹیاں دیکھیں، گاؤں دیکھے، بازار دیکھے، سنگھٹن سبھائیں دیکھیں . ہم نے آپ کے یہاں کی عدالتیں کچہریاں دیکھیں . اِن سب سے ہم اِسی نتیجے پر پہونچے کہ ہمارے دیش ہندستان کو چین سے بہت کچھ سیکھنا ہے .

جہاں تک راج نیتی کا سوال ہے اس دائرے میں بھی چین نے پچھلے چند برسوں میں جو فتح حاصل کی ہے وہ کوئی چھوٹی چیز نہیں ہے . میرا خیال ہے کہ پچھم کے سامراج وادیوں کو یہ سبق اچھی طرح مل گیا ہوگا کہ چین اجے ہے، اسے کوئی نہیں جیت سکتا . صدر صاحب ! آپ نے اپنی اسپیچ میں کہا کہ چین اب دبی ہوئی قوم نہیں رہ گئی ہے . لیکن ہماری رائے کچھ

करते.'' हिन्दुस्तान यह चाहता है कि इंगलैन्ड हो चाहे अमरीका, या कोई और देश हो, पच्छिम का हो या पूरब का, वह सब के साथ इन्तहाई दोस्ती के ताल्लुक़ रखे. मुझे यक़ीन है कि यही इच्छा चीन की है और यही रूस की भी. हमारा आख़िरी मक़सद 'एक नई दुनिया' बनाना है, ऐसी दुनिया जिसमें लड़ाई की कोई गुंजायश न हो, जिसमें सब मुल्कों के लोग अपना भला बुरा एक सा देखते हों, जिसमें कोई किसी को चूस न सके, जिसमें किसी देश का दूसरे पर राज न हो और जिसमें सब, सब की भलाई के लिये काम करते हों.

हिन्दुस्तान और चीन इस मक़सद के हासिल करने के लिये एक दूसरे के हर तरह साथ हैं. हमें उम्मीद है कि दूसरे सभी देश और राष्ट्र इस नेक काम में हमारा पूरी तरह हाथ बटायेंगे.

(अंगरेज़ी अख़बार 'शंघाई न्यूज़' से)

" ہندستان یہ چاہتا ہے کہ انگلینڈ ہو چاہے امریکہ' یا
ی اور دیش ہو' پچھم کا ہو یا پورب کا' وہ سب کے
ھ انتہائی دوستی کے تعلق رکھے . مجھے یقین ہے کہ
ی اچھا چین کی ہے اور یہی روس کی بھی . ہمارا
ری مقصد 'ایک نئی دنیا' بنانا ہے' ایسی دنیا
ں میں لڑائی کی کوئی گنجائش نہ ہو' جس میں
ب ملکوں کے لوگ اپنا بھلا برا ایک سا دیکھتے ہوں' جس
ں کوئی کسی کو چوس نہ سکے' جس میں کسی
ں کا دوسرے پر راج نہ ہو اور جس میں سب' سب
بھلائی کے لئے کام کرتے ہوں .

ہندستان اور چین اِس مقصد کے حاصل کرنے کے
ایک دوسرے کے ہر طرح ساتھ ہیں . ہمیں اُمید ہے
دوسرے سبھی دیش اور راشٹر اِس نیک کام میں
ارا پوری طرح ہاتھ بٹائینگے .

(انگریزی اخبار 'شنگھائی نیوز' سے)

चीन को अलविदा

मेरे प्यारे चीनी भाइयो और बहनो!

चालीस दिन हुए हम आपके इस कैन्टन शहर में हिन्दुस्तान से आए थे. उस वक़्त जिस मुहब्बत और उदारता के साथ आपने हमारा स्वागत किया था और जो प्यार भरी ख़ातिर तवाज़े आपने हमारी की उससे हमारे दिमाग़ों पर बहुत काफ़ी असर पड़ा था. इसके बाद हम पेकिंग पहुँचे और फिर चीन के दूसरे शहर देखे. मेरा ख़याल है आप यह उम्मीद करते होंगे कि इस अरसे में हमने जो देखा और उसका जो असर हम पर हुआ उसकी कुछ झलक आप को दें. मैं यह काम बहुत ख़ुशी से करता हूँ.

सच बात यह है कि जब आपने हमें बुलाया तो हम दोस्त और हमदर्द बनकर आए. लेकिन हमारे दिमाग़ में कोई लगाव चिपकाव नहीं था. हमने हिन्दुस्तान में आपके देश की बाबत बहुत कुछ सुना था, यहां की बाबत बहुत कुछ पढ़ा था. आप के लिये हमारे दिल में काफ़ी इज़्ज़त और प्यार था. फिर भी, हमें बड़ी ख़ुशी इस बात से हुई कि आप के साक्षात दर्शन करने का मौक़ा हमें मिलेगा. और वह मौक़ा हमें मिला. इसके लिये हम आपके बहुत एहसान मन्द हैं.

अब मैं इस चीज़ पर आऊं कि हम पर क्या असर पड़ा. बहुत थोड़े से में आपको मैं बताऊं कि हमारे इस

چین کو الوداع

میرے پیارے چینی بھائیو اور بہنو !

چالیس دن ہوئے ہم آپ کے اِس کینٹن شہر میں
ہندستان سے آئے تھے . اُس وقت جس محبت اور اُدارتا
ساتھ آپنے ہمارا سواگت کیا تھا اور جو پیار بھری خاطر
ضع آپنے ہماری کی اُس سے ہمارے دماغوں پر بہت
ی اثر پڑا تھا . اِس کے بعد ہم پیکنگ پہونچے اور پھر
ین کے دوسرے شہر دیکھے . میرا خیال ہے آپ یہ اُمید
ے ہوں گے کہ اس عرصے میں ہم نے جو دیکھا اور اُس
جو اثر ہم پر ہوا اُسکی کچھ جھلک آپ کو دیں . میں
کام بہت خوشی سے کرتا ہوں .

سچ بات یہ ہے کہ جب آپنے ہمیں ہندستان سے بلایا تو
دوست اور ہمدرد بن کر آئے . لیکن ہمارے دماغ میں
ئی لگاؤ چپکاؤ نہیں تھا . ہم نے ہندستان میں آپ کے
ش کی بابت بہت کچھ سنا تھا' یہاں کی بابت
ت کچھ پڑھا تھا . آپ کے لئے ہمارے دل میں کافی
ت اور پیار تھا . پھر بھی' ہمیں بڑی خوشی اِس بات
ہوئی کہ آپکے ساکشات درشن کرنے کا موقعہ ہمیں
یگا . اور یہ موقعہ ہمیں ملا . اِسکے لئے ہم آپکے بہت
حسان مند ہیں .

اب میں اس چیز پر آؤں کہ ہم پر کیا اثر پڑا . بہت
وڑے سے میں آپکو میں بتاؤں کہ ہمارے اِس

ीनी कम्यूनिज्म है जो उसकी तबीयत के मुताबिक़ है ीर उसके पुराने आदर्शों से मेल खाता है.

ज़ाहिर है कि चीन के नज़रिये और तर्ज़ में रूस के ज़रिये और तर्ज़ से फ़र्क़ है. तिस पर भी रूसी लोग और सी सरकार चीन की मदद कर रहे हैं. इससे पता चलता कि रूस वालों का दिल कितना बड़ा है और दिमाग़ तना वसी है. चीन की इस नई तामीर में रूस हर तरह ा मदद, तकनीकी हो चाहे कैसी, पहुंचा रहा है. इसके लावा मार्शल स्टालिन ने कई बार यह सुझाव रखा है ; दुनिया के सभी देश धीरे धीरे और एक साथ हथियार म करना शुरू कर दें. यही नहीं, रूस ने अब तक लड़ाई हाथ नहीं डाला है हांलाकि उसके पड़ोस में ही लड़ाई गोले गरज रहे हैं. रूस के इस अलग रहने से बहुतों हैरत भी हुई है.

हम इस सब से इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि कम्यूनिस्ट र और उसके नेता भी शान्ति चाहते हैं और दूसरे देशों मिल कर अमन के साथ रहना चाहते हैं. चीन में मेरी ाक़ात कई असर और इज़्ज़त वाले रूसी विद्वानों से . उन्हें यक़ीन है कि उनका आदर्श शान्ति के वातावरन ही फल फूल सकता है और लड़ाई से उनके पल्ले कुछ नहीं पड़ने वाला है. मुझे इस में ज़रा भी शक नहीं है रूस अमन का पुजारी है.

इन सब बातों के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि स- मार्शल स्टालिन की रहनुमाई में, चीन—चेयरमैन ओ की रहनुमाई में और हिन्दुस्तान—पंडित नेहरू की नुमाई में—तीनों दुनिया की शान्ति की हिफ़ाज़त के ये साथ साथ खड़े हो सकते हैं. लाज़िमी बात है कि ों देशों का विकास अपने अपने ढंग और तरीक़े से होगा. लेकिन शान्ति के लिये तीनों बेचैन हैं. और सच है कि हम एशिया के देशों का एक हो जाना और एक न ताक़त बन जाना देखना चाहते हैं, इस वजह से नहीं एशिया या एशिया के किसी देश की यह तमन्ना है कि सी दूसरे इलाक़े या देश पर अपना राज क़ायम कर ले, क इस वजह से कि एशिया के देशों ने पच्छिमी ताक़तों सम्राजशाही लालसाओं का शिकार बन कर काफ़ी टें खाई हैं और कुछ देश तो आज भी खा रहे हैं. शिया एक हो' की आवाज़ सामने के ख़तरे से बचने के ये सिर्फ़ बचाव की ख़ातिर है. एशियाई एकता इस ख़याल से न इंगलैन्ड को डरने की ज़रूरत है, न रीका को और न पच्छिम के किसी और देश को.

महात्मा गांधी की सीख के मुताबिक़ हिन्दुस्तान लड़ाई नफ़रत करता है. हमारे बड़े वज़ीर नेहरू ने हाल ही कहा है कि "लड़ाइयों से कोई सवाल हल नहीं हुआ

چینی کمیونزم ہے جو اُسکی طبیعت کے مطابق ہے اور اُس کے پرانے آدرشوں سے میل کھاتا ہے ۔

ظاہر ہے کہ چین کے نظریئے اور طرز میں روس کے نظریئے اور طرز سے فرق ہے ۔ تس پر بھی روسی لوگ اور روسی سرکار چین کی مدد کر رہے ہیں ۔ اِس سے پتہ چلتا ہے کہ روس والوں کا دل کتنا بڑا ہے اور دماغ کتنا وسیع ہے ۔ چین کی اِس نئی تعمیر میں روس ہر طرح کی مدد، تکنیکی ہو چاہے کیسی، پہونچا رہا ہے ۔ اِس کے علاوہ مارشل اسٹالن نے کئی بار یہ سجھاو رکھا ہے کہ دنیا کے سبھی دیش دھیرے دھیرے اور ایک ساتھ ہتھیار کم کرنا شروع کردیں ۔ یہی نہیں، روس نے اب تک لڑائی میں ہاتھ نہیں ڈالا ہے حالانکہ اُس کے پڑوس میں ہی لڑائی کے گولے گرج رہے ہیں ۔ روس کے اِس الگ رہنے سے بہتوں کو حیرت بھی ہوئی ہے ۔

ہم اِس سب سے اِس نتیجے پر پہونچتے ہیں کہ کمیونسٹ روس اور اُس کے نیتا بھی شانتی چاہتے ہیں اور دوسرے دیشوں سے مل کر امن کے ساتھ رہنا چاہتے ہیں ۔ چین میں میری ملاقات کئی اثر اور عزت والے روسی ودوانوں سے ہوئی ۔ اُنہیں یقین ہے کہ اُن کا آدرش شانتی کے واتاورن میں ہی پھل پھول سکتا ہے اور لڑائی سے اُن کے پلے کچھ بھی نہیں پڑنے والا ہے ۔ مجھے اس میں ذرا بھی شک نہیں ہے کہ روس امن کا پجاری ہے ۔

اِن سب باتوں کے آدھار پر میں کہہ سکتا ہوں کہ روس—مارشل اسٹالین کی رہنمائی میں، چین—چیرمین ماؤ کی رہنمائی میں اور ہندستان—پنڈت نہرو کی رہنمائی میں—تینوں دنیا کی شانتی کی حفاظت کے لئے ساتھ ساتھ کھڑے ہوسکتے ہیں ۔ لازمی بات ہے کہ تینوں دیشوں کا وکاس اپنے اپنے ڈھنگ اور طریقے سے ہی ہوگا ۔ لیکن شانتی کے لئے تینوں بے چین ہیں ۔ اور سچ یہ ہے کہ ہم ایشیا کے دیشوں کا ایک ہوجانا اور ایک ٹھوس طاقت بن جانا دیکھنا چاہتے ہیں، اِس وجہ سے نہیں کہ ایشیا یا ایشیا کے کسی دیش کی یہ تمنا ہے کہ کسی دوسرے علاقے یا دیش پر اپنا راج قائم کرلے، بلکہ اِس وجہ سے کہ ایشیا کے دیشوں نے پچھمی طاقتوں کی سامراج شاہی لالساؤں کا شکار بن کر کافی چوٹیں کھائی ہیں اور کچھ دیش تو آج بھی کھا رہے ہیں ۔ 'ایشیا ایک ہو' کی آواز سامنے کے خطرے سے بچنے کے لئے صرف بچاؤ کی خاطر ہے ۔ ایشیائی ایکتا کے اِس خیال سے نہ انگلینڈ کو ڈرنے کی ضرورت ہے، نہ امریکہ کو اور نہ پچھم کے کسی اور دیش کو ۔

مہاتما گاندھی کی سیکھ کے مطابق ہندستان لڑائی سے نفرت کرتا ہے ۔ ہمارے بڑے وزیر نہرو نے حال ہی میں کہا ہے کہ " لڑائیوں سے کوئی سوال حل نہیں ہوا

इसी तरह से हिन्दुस्तान भी—जिसे महात्मा गांधी से प्रेरना मिली है—अमन शान्ति से रहना चाहता है और दुनिया की हर क़ौम के साथ भाई चारे का सम्बन्ध रखना चाहता है. हिन्दुस्तान की सरकार ने अपने बड़े वज़ीर पंडित जवाहर लाल नेहरू की रहनुमाई में राष्ट्रों के बीच अमन शान्ति बढ़ाने के लिये जो कुछ किया जा सकता था किया है. जापानी सुलहनामे जैसी निकम्मी चीज़ को हिन्द सरकार ने हाथ भी नहीं लगाया. यूनो में चीन को इज़्ज़तदार जगह मिले, इसके लिये हिन्दुस्तान ने जो हो सका वह किया और कर रहा है. वह कर रहा है इस वजह से क्योंकि हिन्दुस्तान मानता है कि यूनो सब राष्ट्रों का संगठन तब तक नहीं कहला सकती जब तक उसमें चीन पूरी तरह शरीक न हो.

सोशलिज़्म या कम्यूनिज़्म की इल्मी बहस में मैं इस वक़्त नहीं जाऊंगा. लेकिन मुझे यक़ीन है कि शायद ही दुनिया में कोई ऐसा विचारक होगा जो ज़रा आगे की सोचता हो और यह न मानता हो कि दुनिया की आर्थिक बेहतरी तभी हो सकती है जब यहां किसी न किसी तरह का सोशलिस्ट या कम्यूनिस्ट निज़ाम क़ायम हो. इस बारे में जो मत भेद हैं वह आख़िरी मंज़िल के बारे में उतने नहीं हैं जितने इस बात की बाबत कि इस मंज़िल तक पहुंचने के लिये जुदा जुदा देशों में इसकी शक्ल क्या हो और वह कौन तरीक़े इस्तेमाल किये जाएं. चीन कम्यूनिस्ट कहा जाता है और चीनी लोग इस बात से इन्कार नहीं करते. लेकिन हमने देखा कि चीन में हर कारख़ाना, ज़मीन का हर टुकड़ा और हर रोज़गार या तो किसी की निजी मिलकियत है या सरकारी मिलकियत है. निजी मिलकियत का हक़ चीन में माना जाता है और उसकी क़द्र की जाती है. निजी कारख़ाने चलाने के लिये भी लोगों का हौसला बढ़ाया जाता है. हां, इस सबके ऊपर सरकार की निगरानी ज़रूर रहती है. जनता की सरकार यहां तक करती है कि निजी कारख़ाने वालों को कच्चा माल दिलाती है, इनके तैयार माल की बिक्री का ज़िम्मा लेती है और उन के मालिकों को मुनासिब (20 फ़ीसदी तक) मुनाफ़ा भी खाने देती है. यही नहीं, विदेशी पूँजी, विदेशी कारख़ानों और विदेशी कम्पनियों को भी बढ़ने फैलने का काफ़ी मौक़ा नए चीन में दिया जाता है.

चीन की सरकार ग़ैर पारटी और सब पारटियों की मिली हुई सरकार है. चीन के नेता सोचते हैं कि अगर कम्यूनिस्ट आदर्श पर वह कभी पहुँचे भी तो कम से कम तीस साल उन्हें लग जाएंगे. अपने देश के माली बन्दोबस्त को वह कम्यूनिस्ट न कह 'नया लोकराज' (New Democracy) कहते हैं. अगर चीन कम्यूनिस्ट है तो उसका कम्यूनिज़्म

اِسی طرح سے ہندوستان بھی — جسے مہاتما گاندھی سے پریرنا ملی ہے — امن شانتی سے رہنا چاہتا ہے اور دنیا کی ہر قوم کے ساتھ بھائی چارے کا سمبندھ رکھنا چاہتا ہے۔ ہندوستان کی سرکار نے اپنے بڑے وزیر پنڈت جواہر لال نہرو کی رہنمائی میں راشٹروں کے بیچ امن شانتی بڑھانے کے لئے جو کچھ کیا جا سکتا تھا کیا ہے۔ جاپانی صلحنامے جیسی نکمی چیز کو ہند سرکار نے ہاتھ بھی نہیں لگایا۔ یونو میں چین کو عزت دار جگہ ملے، اِس کے لئے ہندوستان نے جو ہوسکا وہ کیا اور کر رہا ہے۔ وہ کر رہا ہے اِس وجہ سے کیونکہ ہندوستان مانتا ہے کہ یونو سب راشٹروں کا سنگٹھن تب تک نہیں کہلا سکتی جب تک اُس میں چین پوری طرح شریک نہ ہو۔

سوشلزم یا کمیونزم کی علمی بحث میں میں اِس وقت نہیں جاؤنگا۔ لیکن مجھے یقین ہے کہ شاید ہی دنیا میں کوئی ایسا وچارک ہوگا جو ذرا آگے کی سوچتا ہو اور یہ نہ مانتا ہو کہ دنیا کی آرتھک بہتری تبھی ہوسکتی ہے جب یہاں کسی نہ کسی طرح کا سوشلسٹ یا کمیونسٹ نظام قائم ہو۔ اس بارے میں جو مت بھید ہیں وہ آخری منزل کے بارے میں اُتنے نہیں ہیں جتنے اس بات کی بابت کہ اس منزل تک پہونچنے کے لئے جدا جدا دیشوں میں اس کی شکل کیا ہو اور وہ کون طریقے استعمال کئے جائیں۔ چین کمیونسٹ کہا جاتا ہے اور چینی لوگ اِس بات سے انکار نہیں کرتے۔ لیکن ہم نے دیکھا کہ چین میں ہر کارخانہ، زمین کا ہر ٹکڑا اور ہر روزگار یا تو کسی کی نجی ملکیت ہے یا سرکاری ملکیت ہے۔ نجی ملکیت کا حق چین میں مانا جاتا ہے اور اُس کی قدر کی جاتی ہے۔ نجی کارخانے چلانے کے لئے بھی لوگوں کا حوصلہ بڑھایا جاتا ہے۔ ہاں، اِس سب کے اوپر سرکار کی نگرانی ضرور رہتی ہے۔ جنتا کی سرکار یہاں تک کرتی ہے کہ نجی کارخانے والوں کو کچا مال دلاتی ہے، اُن کے تیار مال کی بکری کا ذمہ لیتی ہے اور اُن کے مالکوں کو مناسب (20 فیصدی تک) منافع بھی کھانے دیتی ہے۔ یہی نہیں، ودیشی پونجی، ودیشی کارخانوں اور ودیشی کمپنیوں کو بھی بڑھنے پھیلنے کا کافی موقعہ نئے چین میں دیا جاتا ہے۔

چین کی سرکار غیر پارٹی اور سب پارٹیوں کی ملی ہوئی سرکار ہے۔ چین کے نیتا سوچتے ہیں کہ اگر کمیونسٹ آدرش پر وہ کبھی پہونچے بھی تو کم سے کم تیس سال اُنہیں لگ جائینگے۔ اپنے دیش کے مالی بندوبست کو وہ کمیونسٹ نہ کہہ 'نیا لوک راج' (New Democracy) کہتے ہیں۔ اگر چین کمیونسٹ ہے تو اُس کا کمیونزم

ख्वलनियों को खत्म कर दिया. उसने इतने लम्बे-चौड़े देश से भीक मांगने और रंडियों के पेशे को मिटा दिया, सारी जनता का नैतिक स्तर ऊंचा उठा दिया, सब बे जमीन वाले किसानों को जमीन दे कर अपनी खेती की पैदावार इस हद तक बढ़ाली कि जहां तीन बरस पहले उसे दूसरे मुल्कों से लाखों टन अनाज की भीक मांगनी पड़ती थी आज वहां वह लाखों टन अनाज दूसरे देशों को भेज सकता है. उसने अपने कारखानों में पक्का माल इस तरह और इतनी तादाद में तैयार कर लिया कि आज वह अपनी रोज की ज़रूरत की हर चीज़ खुद पैदा कर लेता है. नए चीन ने फ़र्क़ मिटा दिया मालिक और मुलाज़िम का, ग़रीब और अमीर का, आक़ा और ग़ुलाम का. उसने चीज़ों के भाव ठिकाने पर लगा दिये और मंहगाई के सवाल को—जहां क़ीमतें आसमान पर चढ़ती चली जाती थीं—ठीक ठीक हल कर दिया. उसने सारी जनता में एक ऐसी जान डाल दी कि वह जी-जान से काम में जुट गई और देश की खातिर हर क़ुरबानी करने को तैयार हो गई. अगर जनता में क़ुरबानी का यह जज़बा पैदा न हुआ होता तो इतना सब होना नामुमकिन था. इस सब की खास वजह है चेयरमैन माओ त्से-तुंग की अचूक और रचनात्मक रहनुमाई, और उनके बेलाग और सच्चे साथियों का जत्था. चीन का यह एक ऐसा कमाल है जिस पर बिना आंखों देखे यक़ीन करना मुशकिल है. हम अपने देश वापस जा रहे हैं पर पिछले दो बरस के चीनी इतिहास के ज़बरदस्त कारनामे का जो असर हम पर पड़ा है उसे कभी नहीं भूल सकते.

हमें यह भी यक़ीन है कि चीन और उसके नेता दुनिया की हर क़ौम के साथ अमन से रहना चाहते हैं. जहां जहां हम गए, जिन सभाओं में हम बैठे, जिन बाज़ारों में हम घूमे, जो गांव शहर हमने देखे, कहीं भी हमें कोई भी ऐसा न मिला जिसे लड़ाई की धुन हो. वहां लड़ाई की कोई सोचता भी नहीं. चीन में लड़ाई के शौक़ीन या खून के प्यासे लोगों का पता भी नहीं है. यहां का जो आर्थिक संगठन है वह लड़ाई को निशाना बना कर नहीं खड़ा किया जा रहा है, बल्कि रोज़ के बरतने की चीज़ों को तैयार करनेके लिये खड़ा किया गया है. जो देश रचनात्मक कामों में इतनी अच्छी तरह लगा हो उसे कहां इतनी फ़ुरसत कि लड़ाई की बात करे या इस तरह का कोई प्रॉपेगेन्डा रचे. मुकदन तक के नगर में, जो कोरिया की सरहद के पास है, हमने देखा कि सब लोग अपने मामूली कारबार में लगे हुए थे. यही हालत हमने कैन्टन में देखी. हमें मालूम होता है कि चेयर मैन माओ केवल एक दिलेर जनरल ही नहीं हैं बल्कि ऊंचे पाए के रचनात्मक लीडर भी हैं. हमें यक़ीन है कि चीन और उसके नेता सच्चे दिल से अमन शान्ति चाहते हैं.

بدچلنیوں کو ختم کردیا۔ اُسلے اِتنے لمبے چوڑے دیش سے بھیک مانگنے اور رنڈیوں کے پیشے کو مٹادیا' ساری جنتا کا نیتک استر اونچا اُٹھا دیا' سب بے زمین والے کسانوں کو زمین دے کر اپنی کھیتی کی پیداوار اِس حد تک بڑھالی کہ جہاں تین برس پہلے اُسے دوسرے ملکوں سے لاکھوں ٹن اناج کی بھیک مانگنی پڑتی تھی آج وہاں وہ لاکھوں ٹن اناج دوسرے دیشوں کو بھیج سکتا ہے۔ اُس نے اپنے کارخانوں میں پکا مال اِس طرح اور اتنی تعداد میں تیار کر لیا کہ آج وہ اپنی روز کی ضرورت کی ہر چیز خود پیدا کر لیتا ہے۔ نئے چین نے فرق مٹا دیا مالک اور ملازم کا' غریب اور امیر کا' آقا اور غلام کا۔ اُس نے چیزوں کے بھاؤ ٹھکانے پر لگا دیئے اور مہنگائی کے سوال کو — جہاں قیمتیں آسمان پر چڑھتی چلی جاتی تھیں — ٹھیک ٹھیک حل کر دیا۔ اُس نے ساری جنتا میں ایک ایسی جان ڈال دی کہ وہ جی جان سے کام میں جٹ گئی اور دیش کی خاطر ہر قربانی کرنے کو تیار ہوگئی۔ اگر جنتا میں قربانی کا یہ جذبہ پیدا نہ ہوا ہوتا تو اِتنا سب ہونا ناممکن تھا۔ اِس سب کی خاص وجہ ہے چیرمین ماؤتسے تنگ کی اچوک اور رچناتمک رہنمائی اور اُن کے بے لاگ اور سچے ساتھیوں کا جتھا۔ چین کا یہ ایک ایسا کمال ہے جس پر بنا آنکھوں دیکھے یقین کرنا مشکل ہے۔ ہم اپنے دیش واپس جا رہے ہیں پر پچھلے دو برس کے چینی اِتہاس کے زبردست کارنامے کا جو اثر ہم پر پڑا ہے اُسے کبھی نہیں بھول سکتے۔

ہمیں یہ بھی یقین ہے کہ چین اور اُس کے نیتا دنیا کی ہر قوم کے ساتھ امن سے رہنا چاہتے ہیں۔ جہاں جہاں ہم گئے' جن سبھاؤں میں ہم بیٹھے' جن بازاروں میں ہم گھومے' جو گاؤں شہر ہم نے دیکھے' کہیں بھی ہمیں کوئی بھی ایسا نہ ملا جسے لڑائی کی دھن ہو۔ وہاں لڑائی کی کوئی سوچتا بھی نہیں۔ چین میں لڑائی کے شوقین یا خون کے پیاسے لوگوں کا پتہ بھی نہیں ہے۔ یہاں کا جو آرتھک سنگٹھن ہے وہ لڑائی کو نشانہ بناکر نہیں کھڑا کیا جا رہا ہے' بلکہ روز کے برتنے کی چیزوں کو تیار کرنے کے لئے کھڑا کیا گیا ہے۔ جو دیش رچناتمک کاموں میں اتنی اچھی طرح لگا ہو اُسے کہاں اِتنی فرصت کہ لڑائی کی بات کرے یا اِسطرح کا کوئی پروپیگنڈہ رچے۔ مکدن تک کے نگر میں' جو کوریا کی سرحد کے پاس ہے' ہم نے دیکھا کہ سب لوگ اپنے معمولی کاروبار میں لگے ہوئے تھے۔ یہی حالت ہم نے کینٹن میں دیکھی۔ ہمیں معلوم ہوتا ہے کہ چیرمین ماؤ ایک کیول دلیر جنرل ہی نہیں ہیں بلکہ اونچے پائے کے رچناتمک لیڈر بھی ہیں۔ ہمیں یقین ہے کہ چین اور اُس کے نیتا سچے دل سے امن شانتی چاہتے ہیں۔

था, जैसे सर के लिये टोप, जांघिया या पायजामा, छपाई के टाइप, क़ुतबनुमा, आतिशबाज़ी और बारूद. इसी तरह हिन्दुस्तान ने जो दुनिया को बहुत सी चीज़ें दी हैं उनमें से ख़ास हैं हिन्दसे—जो योरप में अरबी हिन्दसे कहलाते हैं, और दशमल तरीक़ा जो सारे हिसाब किताब, ज्योतिश और अर्थशास्त्र की बुनियाद हैं. आज से दो हज़ार साल पहले इन दोनों महान और पुराने देशों में काफ़ी नज़दीकी रिश्ता था. इस रिश्ते पर ब्योपार, कलचर और धर्म की छाप थी. यह दोस्ताना रिश्ता था, भाई चारे का रिश्ता था जिससे दोनों देशों को फ़ायदा पहुँचता था और जो दोनों की शान को बढ़ाता था. समय बीतता गया, दोनों देशों में लेन-देन कम होता गया. यह रिश्ता भी उसी चाल से हलका पड़ता गया. बाद में जब पच्छिम के देश हम दोनों पर हावी हो गए और हमारी अपनी अपनी घरेलू आफ़तें बढ़ गईं तब इस रिश्ते का चिराग़ एकदम गुल हो गया. हिन्दुस्तान अंगरेज़ी साम्राज शाही के शिकंजे में फंस गया और चीन लगभग नौ योरपी ताक़तों के चक्कर में पड़ कर काफ़ी मुसीबतों का शिकार बना. हिन्दुस्तान में विदेशी राज सौ बरस से ऊपर रहा, क़रीब इतने ही अरसे चीन परेशान रहा.

ख़ुश क़िसमती से दोनों देशों ने करवट बदली. महात्मा गांधी की अनमोल रहनुमाई में हिन्दुस्तान ने चार साल हुए आज़ादी हासिल की. चीन भी बहादुरी के साथ विदेशी साम्राजशाहियों और घरेलू पिछ घसीट ताक़तों से लड़ता रहा—लड़ता रहा उस प्रेरना के उभार से जो उसे डाक्टर सन यात सेन से मिली और उस अनमोल रहनुमाई में जो चेयर मैन माओ-त्से-तुंग से चीन को मिली. इसका नतीजा है कि आज से दो बरस पहले चीन ने सच्ची आज़ादी हासिल की. हम इस वक़्त चीन में जनता की इस लोक-शाही की दूसरी सालगिरह को ही देखने आए थे. और हम आए थे चीन के लोगों को उनके इस महान कारनामे पर बधाई देने.

क़रीब एक महीना हम यहां रह चुके. हमें बेहद अचरज और ख़ुशी यह देख कर हुई कि इतने छोटे से अरसे में चीन किस तरह इतनी तरक़्क़ी कर गया और उसने अपनी समाजी और आर्थिक ज़िन्दगी को—जो क़रीब क़रीब बरबाद हो चुकी थी—कैसे फिर से बना डाला. हमें तो यह जादू-सा लगता है कि कैसे दो बरस के अन्दर चीन ने इतना कमाल कर डाला. उसने अपने उन उद्योग धंदों और कारख़ानों को फिर से खड़ा कर लिया जो चकनाचूर हो चुके थे, और बेहद बढ़ा लिया. उसने अपना सारा माली निज़ाम मानो फिर से रच डाला, उसने अपने यहां के हाकिमों और आम जनता की तरह तरह की बेईमानियों और

...جیسے سر کے لئے ٹوپ' جانگھیا یا پائجامہ' چھپائی کے ...پ' قطب نما' آتش‌بازی اور بارود . اِسی طرح ...دستان نے جو دنیا کو بہت سی چیزیں دی ہیں ...میں سے خاص ہیں ہندسے—جو یورپ میں عربی ...ہندسے کہلاتے ہیں' اور دشمل طریقہ جو سارے حساب ...کتاب' جیوتش اور ارتھ شاستر کی بنیاد ہیں . آج سے ... ہزار سال پہلے اِن دونوں مہان اور پرانے دیشوں میں ...ی نزدیکی رشتہ تھا . اِس رشتے پر بیوپار' کلچر اور ...دھرم کی چھاپ تھی . یہ دوستانہ رشتہ تھا' بھائی ...چارے کا رشتہ تھا جس سے دونوں دیشوں کو فائدہ ...پہنچتا تھا اور جو دونوں کی شان کو بڑھاتا تھا . سمے ...بیتتا گیا' دونوں دیشوں میں لین دین کم ہوتا گیا . ...یہ رشتہ بھی اُسی چال سے ہلکا پڑتا گیا . بعد میں ...جب پچھم کے دیش ہم دونوں پر حاوی ہوگئے اور ...ہماری اپنی اپنی گھریلو آفتیں بڑھ گئیں تب اِس ...رشتے کا چراغ ایک دم گل ہوگیا . ہندستان انگریزی ...سامراج شاہی کے شکنجے میں پھنس گیا اور چین لگ ...بھگ نو یورپی طاقتوں کے چکر میں پڑکر کافی ...مصیبتوں کا شکار بنا . ہندستان میں ودیشی راج سو ...برس سے اوپر رہا' قریب اِتنے ہی عرصے چین پریشان رہا .

خوش قسمتی سے دونوں دیشوں نے کروٹ بدلی . مہاتما گاندھی کی انمول رہنمائی میں ہندستان نے چار سال ہوئے آزادی حاصل کی . چین بھی بہادری کے ساتھ ودیشی سامراج شاہیوں اور گھریلو پچھ گھسیٹ طاقتوں سے لڑتا رہا—لڑتا رہا اُس پریرنا کے اُبھار سے جو ...سے ڈاکٹر سن یات سین سے ملی اور اُس انمول رہنمائی ...میں جو چیرمین ماؤتسے تنگ سے چین کو ملی . اِسکا ...نتیجہ ہے کہ آج سے دو برس پہلے چین نے سچی آزادی حاصل کی . ہم اِس وقت چین میں جنتا کی اِس لوک شاہی کی دوسری سالگرہ کو ہی دیکھنے آئے تھے . اور ہم آئے تھے چین کے لوگوں کو اُنکے اِس مہان کارنامے پر بدھائی دینے .

قریب ایک مہینہ ہم یہاں رہ چکے . ہمیں بیحد اچرج اور خوشی یہ دیکھکر ہوئی کہ اِتنے چھوٹے سے عرصے میں چین کس طرح اِتنی ترقی کرگیا اور اُسنے اپنی سماجی اور آرتھک زندگی کو—جو قریب قریب برباد ہوچکی تھی—کیسے پھر سے بنا ڈالا . ہمیں تو یہ جادو سا لگتا ہے کہ کیسے دو برس کے اندر چین نے اِتنا کمال کرڈالا . اُسنے اپنے اُن اُدیوگ دھندوں اور کارخانوں کو پھر سے کھڑا کرلیا جو چکنا چور ہو چکے تھے' اور بےحد بڑھا لیا . اُس نے اپنا سارا مالی نظام مانو پھر سے رچ ڈالا' اُسنے اپنے یہاں کے حاکموں اور عام جنتا کی طرح طرح کی بے‌ایمانیوں اور

हमें यह भी यक़ीन है कि नया चीन हिन्दुस्तान की दोस्ती की बहुत क़द्र करता है. मैं अपने चीनी भाइयों को इतमिनान दिलाता हूँ कि हिन्दुस्तान के लोगों के दिल में भी चीन की नई सरकार के साथ वैसी ही दोस्ती और भाई चारे की भावना है. अपने महान नेता महात्मा गांधी की सीख के मुताबिक़, हिन्दुस्तान शान्ति का हामी है और हमें यक़ीन है कि चीन और हिन्दुस्तान की दोस्ती विश्व-शान्ति के लिये बड़ा भारी सहारा साबित होगी. मुझे उम्मीद है कि हमारे मिशन के आने से इस दोस्ती के बढ़ने में बहुत मदद मिलेगी. आपस में एक दूसरे के यहां ऐसे मिशनों की तादाद आगे चल कर बढ़ेगी. हमारी यूनिवर्सिटियां एक दूसरे के विद्यार्थियों को अपने यहां रखकर उनको कुछ तालीम देने का इन्तज़ाम कर सकती हैं. इसी तरह से तरह तरह के मिशन—साइन्सदानों के, आर्थिक शास्त्रियों के, कलाकारों के, औरतों के, लेखकों के, और मज़दूरों के भी—एक देश से दूसरे देश में आ जा सकते हैं.

मैं यह स्पीच इस उम्मीद के साथ ख़त्म करता हूं—और यह उम्मीद बड़ी पक्की व सच्ची उम्मीद है—कि हिन्दुस्तान और चीन में दोस्ती दिन दूने रात चौगुने बढ़ेगी, दोनों एक दूसरे के ज़ियादा नज़दीक आएंगे और तरह तरह से आपस का यह रिश्ता बढ़ेगा. मैं यह भी उम्मीद करता हूं कि हिन्द-चीन के इस रिश्ते से दुनिया की क़ौमों के बीच एकता क़ायम होने में मदद मिलेगी, उनकी तरक़्क़ी होगी और वह फूले फलेंगे.

नया चीन ज़िन्दाबाद !

10. .10. 1951

दुनिया की शान्ति के अलमबरदार—चीन और हिन्दुस्तान

चीन में हम जहां जहां गए हमारी इतनी ख़ातिर हुई, इतने प्यार और मुहब्बत से यहां के लोग हमारे साथ पेश आए, हमारे हर आराम और आसाइश का इतना ख़याल रखा गया, इतने जोश के साथ हमारी हर छोटी-बड़ी सच्ची-झूठी ज़रूरत को पूरा किया गया कि हम सब के सब इस अनोखी आवभगत पर दंग रह गए. हम हिन्दुस्तान वापस आ रहे हैं पर इन चीज़ों की प्यारी याद हमारे दिल में हमेशा बनी रहेगी.

चीन एक पुराना देश है जिस की सभ्यता का इतिहास कम से कम चार हज़ार बरस से मिलता है. यही हाल हमारे देश का है. चीन ने दुनिया को कई ऐसी नेमतें दी हैं जिनके बिना इनसानी सभ्यता का फलना फूलना नामुमकिन

ہمیں یہ بھی یقین ہے کہ نیا چین ہندستان کی دوستی کی بہت قدر کرتا ہے ۔ میں اپنے چینی بھائیوں کو اطمینان دلاتا ہوں کہ ہندستان کے لوگوں کے دل میں بھی چین کے لوگوں اور چین کی نئی سرکار کے ساتھ ویسی ہی دوستی اور بھائی چارے کی بھاونا ہے ۔ اپنے مہان نیتا مہاتما گاندھی کی سیکھ کے مطابق' ہندستان شانتی کا حامی ہے اور ہمیں یقین ہے کہ چین اور ہندستان کی دوستی وشو شانتی کے لئے بڑا بھاری سہارا ثابت ہوگی' ۔ مجھے امید ہے کہ ہمارے مشن کے آنے سے اِس دوستی کے بڑھنے میں بہت مدد ملیگی ۔ آپس میں ایک دوسرے کے یہاں ایسے مشنوں کی تعداد آگے چل کر بڑھیگی ۔ ہماری یونیورسٹیاں ایک دوسرے کے ودیارتھیوں کو اپنے یہاں رکھ کر اُنکو کچھ تعلیم دینے کا انتظام کرسکتی ہیں ۔ اسی طرح سے طرح طرح کے مشن—سائنسدانوں کے' آرتھک شاستریوں کے' کلاکاروں کے' عورتوں کے' لیکھکوں کے' اور مزدوروں کے بھی—ایک دیش سے دوسرے دیش میں آجا سکتے ہیں ۔

میں یہ اسپیچ اِس اُمید کے ساتھ ختم کرتا ہوں—اور یہ امید بڑی پکی و سچی امید ہے—کہ ہندستان اور چین میں دوستی دن دونی رات چوگنی بڑھیگی' دونوں ایک دوسرے کے زیادہ نزدیک آئینگے اور طرح طرح سے آپس کا یہ رشتہ بڑھے گا ۔ میں یہ بھی امید کرتا ہوں کہ ہند چین کے اِس رشتے سے دنیا کی قوموں کے بیچ ایکتا قائم ہونے میں مدد ملیگی' اُن کی ترقی ہوگی اور وہ پھولے پھلینگے ۔

نیا چین زندہباد !

10. 10. 1951

دنیا کی شانتی کے علمبردار—چین اور ہندستان

چین میں ہم جہاں جہاں گئے ہماری اِتنی خاطر ہوئی' اِتنے پیار اور محبت سے یہاں کے لوگ ہمارے ساتھ پیش آئے' ہمارے ہر آرام اور آسائش کا اتنا خیال رکھا گیا' اِتنے جوش کے ساتھ ہماری ہر چھوٹی بڑی سچی جھوٹی ضرورت کو پورا کیا گیا کہ ہم سب کے سب اِس انوکھی آوبھگت پر دنگ رہ گئے ۔ ہم ہندستان واپس جارہے ہیں پر اِن چیزوں کی پیاری یاد ہمارے دل میں ہمیشہ بنی رہے گی ۔

چین ایک پرانا دیش ہے جسکی سبھیتا کا اِتہاس کم سے کم چار ہزار برس سے ملتا ہے ۔ یہی حال ہمارے دیش کا ہے ۔ چین نے دنیا کو کئی ایسی نعمتیں دی ہیں جنکے بنا انسانی سبھیتا کا پھلنا پھولنا ناممکن

के. कारखानों में हमने देखा कि मामूली मजदूर और मैनेजर की तनख़ाहों में कोई बड़ा फ़र्क़ नहीं है. कैन्टन में जो बड़ी भारी पेपर मिल है वहां पर सब से कम और सबसे ज़ियादा तनख़ाहों में तीन व आठ की निस्बत थी. पेकिंग की एक फ़ैक्टरी में हमने देखा कि एक मजदूर लड़की को जहां ढाई सौ कट्टी अनाज हर महीने मिलता था, डायरेक्टर को सिर्फ़ साढ़े तीन सौ. हमें यह जान कर ख़ुशी हुई कि नए चीन में छोटे से लेकर बड़े तक, ज़ियादातर सरकारी मुलाज़िमों को तनख़ा रुपया या सिक्के के बजाए अनाज की शक्ल में मिलती है. इसी का नतीजा है कि एक कैबिनेट मिनिस्टर या यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर के कपड़ों में और मामूली क्लर्क या फ़ैक्टरी-मजदूर के कपड़ों में क़रीब क़रीब कोई फ़र्क़ नहीं रहता. महज़ देखने से एक दूसरे में तमीज़ करना मुश्किल था. अगर मजदूरों या किसानों की भीड़ में चेयरमैन माओ खड़े हों तो उन्हें कपड़ों के बल पर तो पहचाना भी नहीं जा सकता. हमने देखा कि नया चीन एक अमली लोकराज और सही मानों में लोकराज है.

चीनी लोकराज की सालगिरह के दिन हमने देखा कि लाखों-करोड़ों लोगों में अपने नए लोकराज और उसके चेयरमैन के लिये कितना उत्साह है. उस दिन हमने देखा फ़ौजें क़वायद कर रही हैं, गोला-तोप-सामान चल रहा है, हवाई जहाज़ दौड़ रहे हैं और लोगों के लम्बे चौड़े जलूस चुपचाप ताली बजाते हुए निकल रहे हैं. हमने देखा कि उन सबमें कितनी एकता है, कितनी हिम्मत है और उनके अन्दर क्या कमाल की जान है. हमें यक़ीन है कि नया चीन अजेय है, इसे कोई नहीं जीत सकता. हमें यह समझाया गया और हमने एहतियात से समझा कि इन दो बरसों में नए चीन ने किस तरह अपनी पैदावार बढ़ा ली, दाम गिरा लिये, मंहगाई के सवाल को हल कर लिया, अपने आने-जाने के चकनाचूर साधनों को, जिन में रेलवे भी शामिल है, किस तरह फिर से बना लिया और उनमें तरक़्क़ी भी की, अपने अन्दर आने वाले और बाहर जाने वाले ब्योपार का सिलसिला ठीक बैठा लिया, और सबसे ख़ास बात जो की वह यह कि अपने यहां के बे ज़मीन वालों को ज़मीनें दीं. इस सबसे पता चलता है कि वहां के नेताओं में तामीर का कितना मादा है और लोगों में किस क़दर मुस्तक़िल मिज़ाजी है. जिस पर किसी भी मुल्क को नाज़ हो सकता है. जो कुछ हमने देखा उससे हमारा यह पक्का यक़ीन हो गया है कि नए चीन में न तो दूसरों पर हमला करने की इच्छा है न हो सकती है. हमें यक़ीन है कि नया चीन शान्ति के लिये एक बहुत बड़ा सहारा है और सारी दुनिया के लोगों से मिल कर मेल-मुहब्बत के साथ रहना चाहता है.

ہے. کارخانوں میں ہم نے دیکھا کہ معمولی مزدور اور منیجر کی تنخواہوں میں کوئی بڑا فرق نہیں ہے. کینٹن میں جو بڑی بھاری پیپر مل ہے وہاں پر سب سے کم اور سب سے زیادہ تنخواہوں میں تین و آٹھ کی نسبت تھی. پیکنگ کی ایک فیکٹری میں ہم نے دیکھا کہ ایک مزدور لڑکی کو جہاں ڈھائی سو کٹّی اناج ہر مہینے ملتا تھا، ڈائرکٹر کو صرف ساڑھے تین سو. ہمیں یہ جان کر خوشی ہوئی کہ نئے چین میں چھوٹے سے لے کر بڑے تک زیادہ تر سرکاری ملازموں کو تنخواہ روپیہ یا سکے کے بجائے اناج کی شکل میں ملتی ہے. اِسی کا نتیجہ ہے کہ ایک کیبنٹ منسٹر یا یونیورسٹی کے وائس چانسلر کے کپڑوں میں اور معمولی کلرک یا فیکٹری مزدور کے کپڑوں میں قریب قریب کوئی فرق نہیں رہتا. محض دیکھنے سے ایک دوسرے میں تمیز کرنا مشکل تھا. اگر مزدوروں یا کسانوں کی بھیڑ میں چیئرمین ماؤ کھڑے ہوں تو انہیں کپڑوں کے بل پر تو پہچانا بھی نہیں جاسکتا. ہم نے دیکھا کہ نیا چین ایک عملی لوک راج اور صحیح معنوں میں لوک راج ہے.

چینی لوک راج کی سال گرہ کے دن ہم نے دیکھا کہ لاکھوں کروڑوں لوگوں میں اپنے نئے لوک راج اور اُس کے چیئرمین کے لئے کتنا اُتساہ ہے. اُس دن ہم نے دیکھا فوجیں قواعد کر رہی ہیں، گولہ توپ سامان چل رہا ہے، ہوائی جہاز دوڑ رہے ہیں اور لوگوں کے لمبے چوڑے جلوس چپ چاپ تالی بجاتے ہوئے نکل رہے ہیں. ہم نے دیکھا کہ اُن سب میں کتنی ایکتا ہے، کتنی ہمت ہے اور اُن کے اندر کتنی کمال کی جان ہے. ہمیں یقین ہے کہ نیا چین اجئے ہے، اسے کوئی نہیں جیت سکتا. ہمیں یہ سمجھایا گیا اور ہم نے احتیاط سے سمجھا کہ اِن دو برسوں میں نئے چین نے کس طرح اپنی پیداوار بڑھا لی، دام گرا لئے، مہنگائی کے سوال کو حل کر لیا، اپنے آنے جانے کے چکنا چور سادھنوں کو، جن میں ریلوے بھی شامل ہے، کس طرح پھر سے بنا لیا اور ان میں ترقی بھی کی، اپنے اندر آنے والے اور باہر جانے والے بیوپار کا سلسلہ ٹھیک بٹھا لیا، اور سب سے خاص بات جو کی وہ یہ کہ اپنے یہاں کے بے زمین والوں کو زمینیں دیں. اِس سب سے پتہ چلتا ہے کہ یہاں کے نیتاؤں میں تعمیر کا کتنا مادہ ہے اور لوگوں میں کس قدر مستقل مزاجی ہے، جس پر کسی بھی ملک کو ناز ہوسکتا ہے. جو کچھ ہم نے دیکھا اس سے ہمارا یہ پکا یقین ہوگیا ہے کہ نئے چین میں نہ تو دوسروں پر حملہ کرنے کی اِچھا ہے نہ ہوسکتی ہے. ہمیں یقین ہے کہ نیا چین شانتی کے لئے ایک بہت بڑا سہارا ہے اور ساری دنیا کے لوگوں سے مل کر میل محبت کے ساتھ رہنا چاہتا ہے.

करेगा कि मैं एक खानदान का हिस्सा हूँ और इसी तरह काम करेगा.

हिन्दुस्तान में जो शान्ति आन्दोलन चल रहा है उसका यही मक़सद है. दूसरे प्रोग्राम भी उसकी मातहती में पूरे किये जा रहे हैं—जैसे शान्ति अपील पर दसख़त, पंच ताक़त सुलहनामे पर इसरार, वग़ैरा. हमें यक़ीन है कि दिन दिन हिन्दुस्तान और चीन में सच्ची दोस्ती और भाई चारा बढ़ेगा. और यही वह चीज़ है जिसके बल पर दुनिया में सच्ची और मुस्तक़िल तौर पर शान्ति क़ायम हो सकती है.

[People's Daily में 7. 10. '51 को छपा लेख]

पेकिंग रेडियो से ब्राडकास्ट

22 सितम्बर की सुबह को जब हमारा जहाज़ हांगकांग से चल कर नए चीन की धरती के नज़दीक पहुँच रहा था तो हमने तोपें छूटने की आवाज़ सुनी, कैन्टन के बंदरगाह की सजावट को दूर से देखा और मिलेट्री बैन्ड की मनोहर अवाज़ हमारे कान में पड़ी. इससे हम समझ गए कि हमारे स्वागत की कैसी ज़बरदस्त तैयारियां हैं. उस वक़्त से लेकर अब तक—इस वक़्त तक—जो मुहब्बत, जो उदारता, जो मेहरबानी चीनी सरकार और चीनी भाइयों ने हमारे ऊपर बरसाई है और जिस जोश और ख़ुशी के साथ हमारा स्वागत किया है, उससे हमारे हिन्द मिशन के हर मेम्बर का दिल फूला नहीं समाता. हम अपने देश वापस जा रहे हैं मगर यहां की मीठी याद हमें हमेशा ही बनी रहेगी.

हमने नए चीन के—निजी और सरकारी—दोनों तरह के कारख़ाने देखे. यहां की यूनिवर्सिटियां देखीं. हमने यहां के मज़दूरों के, नौजवानों के, औरतों के और तरह तरह के संगठनों को अमली रूप में देखा. हमने यहाँ की सहयोगी सोसाइटियां देखीं, नाटक देखे, सिनेमा देखे. हम नए चीन के बाज़ारों में, गली-कूचों में और गावों में घूमे. हर जगह हमें महसूस हुआ कि नए लोकराज की सभी जमाअतों के लोगों के दिलों में कितना उत्साह और अपने नेता चेयर मैन माओ-त्से-तुँग के लिये कितना प्यार है. इन दो बरसों में नए चीन ने वह पेचीदा सवाल हल कर लिये जो बहुत से देशों के नेताओं और सरकारों को परेशान किये हुए हैं. चीन की सरकार ने इतने बड़े मुल्क में से भिकमंगी और इसमत फ़रोशी को बिलकुल ख़त्म कर दिया. इसने वह बेईमानी और रिश्वत ख़ोरी ख़त्म कर दी जिसके लिये चीन के हाकिम दो बरस पहले सारी दुनिया में बदनाम

کرے گا کہ میں ایک خاندان کا حصہ ہوں اور اسی طرح کام کرے گا.

ہندستان میں جو شانتی آندولن چل رہا ہے اُس کا یہی مقصد ہے. دوسرے پروگرام بھی اُس کی ماتحتی میں پورے کئے جارہے ہیں—جیسے شانتی اپیل پر دستخط' پنچ طاقت صلحنامہ پر اصرار' وغیرہ . ہمیں یقین ہے کہ دن دن ہندستان اور چین میں سچی دوستی اور بھائی چارہ بڑھیگا . اور یہی وہ چیز ہے جس کے بل پر دنیا میں سچے اور مستقل طور پر شانتی قائم ہوسکتی ہے.

[People's Daily میں 7. 10. '51. کو چھپا لیکھ]

پیکنگ ریڈیو سے براڈکاسٹ

22 ستمبر کی صبح کو جب ہمارا جہاز ہانگ کانگ سے چل کر نئے چین کی دھرتی کے نزدیک پہنچ رہا تھا تو ہم نے توپیں چھوٹنے کی آواز سنی' کینٹن کے بندرگاہ کی سجاوٹ کو دور سے دیکھا اور ملٹری بینڈ کی منوہر آواز ہمارے کان میں پڑی . اِس سے ہم سمجھ گئے کہ ہمارے سواگت کی کیسی زبردست تیاریاں ہیں . اُس وقت سے لے کر اب تک — اِس وقت تک — جو محبت' جو اُدارتا' جو مہربانی چینی سرکار اور چینی بھائیوں نے ہمارے اُوپر برسائی ہے اور جس جوش اور خوشی کے ساتھ ہمارا سواگت کیا ہے' اُس سے ہمارے ہند مشن کے ہر ممبر کا دل پھولا نہیں سماتا . ہم اپنے دیش واپس جا رہے ہیں مگر یہاں کی میٹھی یاد ہمیں ہمیشہ ہی بنی رہے گی .

ہم نے نئے چین کے— نجی اور سرکاری—دونوں طرح کے کارخانے دیکھے . یہاں کی یونیورسٹیاں دیکھیں . ہم نے یہاں کے مزدوروں کے' نوجوانوں کے' عورتوں کے اور طرح طرح کے سنگٹھنوں کو عملی روپ میں دیکھا . ہم نے یہاں کی سہیوگی سوسائٹیاں دیکھیں' ناٹک دیکھے' سنیما دیکھے . ہم نئے چین کے بازاروں میں' گلی کوچوں میں اور گاؤں میں گھومے . ہر جگہ ہمیں محسوس ہوا کہ نئے لوک راج میں سبھی جماعتوں لوگوں کے دلوں میں کتنا اُتساہ اور اپنے نیتا چیرمین ماؤتسے تنگ کے لئے کتنا پیار ہے . اِن دو برسوں میں نئے چین نے وہ پیچیدہ سوال حل کر لئے جو بہت سے دیشوں کے نیتاؤں اور سرکاروں کو پریشان کئے ہوئے ہیں . چین کی سرکار نے اتنے بڑے ملک میں سے بھکمنگی اور عصمت فروشی کو بالکل ختم کر دیا . اِس نے وہ بے ایمانی اور رشوت خوری ختم کر دی جس کے لئے چین کے حاکم دو برس پہلے ساری دنیا میں بدنام

इधर चन्द बरस में अमरीका की दिलचस्पी पूरब के देशों में बढ़ती जा रही है. अमरीका की जो पालिसी है और जो कारनामे हैं उन पर हिन्दुस्तान की पूरी निगाह है. हमें यह देखकर दुख हुआ कि आज कल की सभ्य या शरीफ़ कही जाने वाली सरकारें किस हद तक आपे से बाहर बढ़ती चली जाती हैं. और यह किस लिये है ? सिर्फ़ इसलिये कि दूसरे देशों पर उनका फ़ौजी और आर्थिक असर क़ायम हो जाए. इस अरसे में कोरिया वालों को जो मुसीबतें उठानी पड़ी हैं और जिन आफ़तों का सामना करना पड़ा उसमें हमारी दिली हमदर्दी उनके साथ है. सारे हिन्दुस्तान की यह इच्छा है कि कोरिया एक हो, वहां पर एक राज हो जिसमें किसी बाहर वाले का कोई असर न हो और अपने सब पड़ोसियों से, ख़ास कर चीनी लोकराज से, भाई चारे का उसका ताल्लुक़ हो.

जहां तक विश्व शान्ति आन्दोलन की बात है, उसमें जो रुख चीन ने लिया है हम उसकी ताईद करते हैं. हमने खुद देखा कि चीन के महान नेता, चेयरमैन माओ-त्से-तुंग ने कितने बड़े रचनात्मक काम किये हैं. पिछले दो बरस में उनकी रहनुमाई में चीन ने जो ग़ैर मामूली तरक़्क़ी की है उसे देखकर जहां हमें अचरज होता है वहां बेहद ख़ुशी भी होती है. ऐसा रचनात्मक आदमी अगर अमन का चाहने वाला न होगा तो कौन होगा ? अपने देश वापस जाने पर हम अपने भाइयों को अपनी निजी जानकारी के बल पर बताएंगे कि चेयरमैन माओ शान्ति के बड़े से बड़े खम्बों में हैं. हम जानते हैं कि कोरिया के मामले में चीन ने तभी हाथ डाला जब उसकी अपनी सरहद ख़तरे में पड़ गई थी. लेकिन यह हाथ जो डाला सो महज़ अपने बचाव की ख़ातिर डाला. आप जानते होंगे कि हिन्द सरकार ने यूनो और अमरीका को होशियार कर दिया था कि 38 वीं पड़ी लकीर के आगे न बढ़ना. महात्मा गांधी से हमें जो प्रेरना मिली है उसकी वजह से हिन्दुस्तान क़ौमों के बीच किसी भी तरह की लड़ाई के ख़िलाफ़ है. सोवियत रूस ने जो सुझाव इस सिलसिले में पेश किया है उसकी हम बहुत क़द्र करते हैं. रूस का सुझाव है कि दुनिया के सभी देश धीरे धीरे मगर एक साथ हथियार बन्दी शुरू करदें. इस के अलावा रूस का यह भी कहना है कि सभी एटामिक हथियार एक साथ ख़त्म कर दिये जाएं. हमें इस बात का अफ़सोस है कि दूसरे बड़े मुल्कों को यह सुझाव मंज़ूर न हुए. हिन्दुस्तान दिल से उस दिन का इन्तज़ार कर रहा है जब सारे देश अपनी मरज़ी से हथियार छोड़ देंगे, मुल्क के कुल हथियारों को तोड़ कर हल-बखर की शकल दे दी जाएगी, जब इस धरती पर रहने वाले एक हो जाएंगे और जब हर इनसान यह महसूस

اِدھر چند برس میں امریکہ کی دلچسپی پورب کے دیشوں میں بڑھتی جا رہی ہے۔ امریکہ کی جو پالیسی ہے اور جو کارنامے ہیں اُن پر ہندستان کی پوری نگاہ ہے۔ ہمیں یہ دیکھکر دکھ ہوا کہ آجکل کی سبھیہ یا شریف کہی جانے والی سرکاریں کس حد تک آپے سے باہر بڑھتی چلی جاتی ہیں۔ اور یہ کس لئے؟ صرف اس لئے کہ دوسرے دیشوں پر اُن کا فوجی اور آرتھک اثر قائم ہو جائے۔ اِس عرصے میں کوریا والوں کو جو مصیبتیں اُٹھانی پڑی ہیں اور جن آفتوں کا سامنا کرنا پڑا اُس میں ہماری دلی ہمدردی اُن کے ساتھ ہے۔ سارے ہندستان کی یہ اِچھا ہے کہ کوریا ایک ہو، وہاں پر ایک راج ہو جس میں کسی باہر والے کا کوئی اثر نہ ہو اور اپنے سب پڑوسیوں سے، خاصکر چینی لوک راج سے، بھائی چارے کا اُس کا تعلق ہو۔

جہاں تک وشو شانتی آندولن کی بات ہے، اِس میں جو رخ چین نے لیا ہے ہم اُس کی تائید کرتے ہیں۔ ہم نے خود دیکھا کہ چین کے مہان نیتا، چیرمین ماؤتسے تنگ نے کتنے بڑے رچناتمک کام کئے ہیں۔ پچھلے دو برس میں اُن کی رہنمائی میں چین نے جو غیر معمولی ترقی کی ہے اُسے دیکھکر جہاں ہمیں اچرج ہوتا ہے وہاں بے حد خوشی بھی ہوتی ہے۔ ایسا رچناتمک آدمی اگر امن کا خواہاں نہ ہوگا تو کون ہوگا؟ اپنے دیش واپس جانے پر ہم اپنے بھائیوں کو اپنی نجی جانکاری کے بل پر بتائیں گے کہ چیرمین ماؤ شانتی کے بڑے سے بڑے کھمبوں میں ہیں۔ ہم جانتے ہیں کہ کوریا کے معاملے میں چین نے تبھی ہاتھ ڈالا جب اُسکی اپنی سرحد خطرے میں پڑگئی تھی۔ لیکن یہ ہاتھ جو ڈالا سو محض اپنے بچاؤ کی خاطر ڈالا۔ آپ جانتے ہوں گے کہ ہند سرکار نے یونو اور امریکہ کو ہوشیار کردیا تھا کہ 38 ویں پڑی لکیر کے آگے نہ بڑھنا۔ مہاتما گاندھی سے ہمیں جو پریرنا ملی ہے اُس کی وجہ سے ہندستان قوموں کے بیچ کسی بھی طرح کی لڑائی کے خلاف ہے۔ سوویت روس نے جو سجھاؤ اِس سلسلے میں پیش کیا ہے اُس کی ہم بہت قدر کرتے ہیں۔ روس کا سجھاؤ ہے کہ دنیا کے سبھی دیش دھیرے دھیرے مگر ایک ساتھ ہتھیار بندی شروع کردیں اِسکے علاوہ روس کا یہ بھی کہنا ہے کہ سبھی ایٹامک ہتھیار ایک ساتھ ختم کردئے جائیں۔ ہمیں اِس بات کا افسوس ہے کہ دوسرے بڑے ملکوں کو یہ سجھاؤ منظور نہ ہوئے۔ ہندستان دل سے اُس دن کا انتظار کررہا ہے جب سارے دیش اپنی مرضی سے ہتھیار چھوڑدیں گے، ملک کے کل ہتھیاروں کو توڑ کر ہل بھاڑے کی شکل دے دی جائے گی، جب اِس دھرتی پر رہنے والے ایک ہوجائیں گے اور جب ہر انسان یہ محسوس

शान्ति का आन्दोलन

मुझ से कहा गया है कि चीन में 'अमरीकी हमले का मुक़ाबला करो' और 'कोरिया की मदद करो' वाला जो आन्दोलन चल रहा है और शान्ति के लिये हिन्दुस्तान और चीन में जो तहरीक चल रही है उन पर अपनी राय ज़ाहिर करूं. मैं ख़ुशी से "पीपुल्स डेली" के लिये यह लेख लिख कर यह काम कर रहा हूँ. मुझे यक़ीन है कि जो ख़याल मैं ज़ाहिर कर रहा हूँ वही हिन्दुस्तान के ज़ियादा तर लोगों का ख़याल है.

अन्तर क़ौमी मैदान में हिन्दुस्तान हमेशा शान्ति का पैरोकार रहा है. आज भी वह पूरे दिल के साथ शान्ति का पैरोकार है. थोड़ा अरसा पहले हम अंगरेज़ी हुक्कामी और पूँजीवादी साम्राजशाही के पंजे में फंसे थे और हिन्दुस्तान में विदेशी हुकूमत का रहना हर हिन्दुस्तानी के लिये शर्म और दुख की बात थी. हम तादाद में तो बहुत थे लेकिन निहत्थे थे. पर चार साल हुए अंगरेज़ी साम्राजशाही के शिकंजे में से हम निकल आए और आज़ाद हुए. हमारी आज़ादी की लड़ाई के रहबर महात्मा गांधी थे जिनकी याद हाल ही में साथी को मो-जो ने "शान्ति के लिये शहीद" के नाम से की थी. सचमुच महात्मा गांधी शान्ति के बड़े से बड़े अलमबरदारों में थे. किसी भी सूरत या शकल से कोई देश अगर दूसरे पर चढ़ाई करे तो वह हमें नफ़रत की बात लगती है. हमारा विश्वास है कि आज़ादी पसंद हर मर्द औरत का फ़र्ज़ है कि ऐसी चढ़ाई या हमले का मुक़ाबला करने के लिये जो कुछ उससे बन सके करे. चढ़ाई या हमले का अहिंसात्मक ढंग से मुक़ाबला करने का तरीक़ा हमें महात्मा गांधी ने बताया. हम हिन्दुस्तानियों ने उनके तरीक़ों को अपनाया और कमाल की कामयाबी हासिल की. साथ ही साथ महात्मा गांधी की साफ़ राय थी कि जहां जहां अहिंसात्मक तरीक़े की वाक़फ़ियत लोगों को नहीं है या किसी वजह से वह अमल में नहीं लाया जा सकता तो उस देश के लोगों का यह पाक फ़र्ज़ हो जाता है कि चढ़ाई का मुक़ाबला हथियार के बल से ही करे. उन्होंने हमें सिखाया कि हमले के आगे हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाना कायरता ही नहीं जुर्म है. इसलिये हम हिन्दुस्तान के लोगों की अपने चीनी भाइयों के साथ पूरी हमदर्दी है. भीतरी और बाहरी हमले के मुक़ाबले में उन्होंने जो मोरचा लिया उसका हम हर तरह समर्थन करते हैं और उनकी सफलता पर उन्हें बधाई देते हैं.

شانتی کا آندولن

مجھ سے کہا گیا ہے کہ چین میں 'امریکی حملے کا مقابلہ کرو' اور 'کوریا کی مدد کرو' والا جو آندولن چل رہا ہے اور شانتی کے لئے ہندستان اور چین میں جو تحریک چل رہی ہے اُن پر اپنی رائے ظاہر کروں . میں خوشی سے "پیپلس ڈیلی" کے لئے یہ لیکھ لکھکر یہ کام کر رہا ہوں . مجھے یقین ہے کہ جو خیال میں ظاہر کر رہا ہوں وہی ہندستان کے زیادہ تر لوگوں کا خیال ہے .

انتر قومی میدان میں ہندستان ہمیشہ شانتی کا پیروکار رہا ہے . آج بھی وہ پورے دل کے ساتھ شانتی کا پیروکار ہے . تھوڑا عرصہ پہلے ہم انگریزی حکامی اور پونجی وادی سامراج شاہی کے پنجے میں پھنسے تھے اور ہندستان میں ودیشی حکومت کا رہنا ہر ہندستانی کے لئے شرم اور دکھ کی بات تھی . ہم تعداد میں تو بہت تھے لیکن نہتے تھے . پر چار سال ہوئے انگریزی سامراج شاہی کے شکنجے میں سے ہم نکل آئے اور آزاد ہوئے . ہماری آزادی کی لڑائی کے رہبر مہاتما گاندھی تھے' جن کی یاد حال ہی میں ساتھی کو . مو . جو نے "شانتی کے لئے شہید" کے نام سے کی تھی . سچ مچ مہاتما گاندھی شانتی کے بڑے سے بڑے علمبرداروں میں تھے . کسی بھی صورت یا شکل سے کوئی دیش اگر دوسرے پر چڑھائی کرے تو وہ ہمیں نفرت کی بات لگتی ہے . ہمارا وشواس ہے کہ آزادی پسند ہر مرد عورت کا فرض ہے کہ ایسی چڑھائی یا حملے کا مقابلہ کرنے کے لئے جو کچھ اُس سے بن سکے کرے . چڑھائی یا حملے کا اہنساتمک ڈھنگ سے مقابلہ کرنے کا طریقہ ہمیں مہاتما گاندھی نے بتایا . ہم ہندستانیوں نے اُن کے طریقوں کو اپنایا اور کمال کی کامیابی حاصل کی . ساتھ ہی ساتھ مہاتما گاندھی کی صاف رائے تھی کہ جہاں جہاں اہنساتمک طریقے کی واقفیت لوگوں کو نہیں ہے یا کسی وجہ سے وہ عمل میں نہیں لیا جا سکتا تو اُس دیش کے لوگوں کا یہ پاک فرض ہو جاتا ہے کہ چڑھائی کا مقابلہ ہتھیار کے بل سے ہی کرے . اُنہوں نے ہمیں سکھایا کہ حملے کے آگے ہاتھ پر ہاتھ دھر کر بیٹھ جانا کائرتا ہی نہیں جرم ہے . اِس لئے ہم ہندستان کے لوگوں کی اپنے چینی بھائیوں کے ساتھ پوری ہمدردی ہے . بھیتری اور باہری حملے کے مقابلے میں اُنہوں نے جو مورچہ لیا اُس کا ہم ہر طرح سمرتھن کرتے ہیں اور اُن کی سپھلتا پر اُنہیں بدھائی دیتے ہیں .

चलती है और दूसरी कोई नहीं चलती. पूरब या पच्छिम के सभी क़ानूनदानों का यह ख़याल है. हिन्दुस्तान की यह कोशिश हमेशा रहेगी कि चीनी लोक राज को दुनिया की एक बड़ी ताक़त समझा जाए. हम यहाँ पर आपके नए राज को अपनी तरफ़ से सलामी देने आए हैं. आपने जो काम अब तक किये हैं और जो आगे करने का वादा करते हैं वह ताज्जुब जैसे लगते हैं. पिछले दो दिन में आपकी सरकार के प्रोग्राम के कुछ पहलुओं से जानकारी हासिल करने का मौक़ा हमें मिला. हम आपकी कामयाबी चाहते हैं."

जब यह पूछा गया कि चीन के बारे में हिन्दुस्तान में जानकारी कितनी है तो पंडित सुन्दरलाल ने जवाब दिया:

"चीन के बारे में हमारे अख़बारों में ख़बरें आती तो लगातार हैं मगर दूरन्देशी उनमें कम रहती है. इसके मुक़ाबले पेकिंग का विदेशी भाशा प्रेस कमाल का काम कर रहा है. चेयरमैन माओ की किताबें हिन्दुस्तान में छपी हैं और उनके कई कई एडीशन निकल गए हैं. हिन्दुस्तान में ऐसी किताबों की मांग बढ़ती जाती है जिनसे नए चीन के सब हालात मालूम हों. यह मांग पूरी करनी होगी.

"चीनी लोकराज के बड़े बड़े नेताओं के नाम—चेयरमैन माओ-त्से-तुंग, जनरल चू-तेह, बड़े वज़ीर चू-आंले, नायब-चेयरमैन लिऊ-शाओ-ची—बच्चा बच्चा जानता है. हिन्दुस्तान के लोग चीनियों और उनके नेताओं के बारे में ज़ियादा से ज़ियादा जानकारी हासिल करना चाहते हैं. आजकल आपका सुन्दर अख़बार "पीपुल्स चायना" भी सबको नहीं मिल पाता है. पेकिंग के विदेशी-भाशा प्रेस का काम और बढ़ा देना चाहिये."

पंडित सुन्दरलाल से जब यह पूछा गया कि आपको यहाँ में कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई तो उन्होंने मुस्करा कर जवाब दिया:

"जब आपके महान यात्री ह्वेन-सांग हमारे देश में आए थे तो राजा हर्ष ने उनको ऐसे तोहफ़े दिये थे जो एक राजा ही दे सकता था. अब तेरह सौ साल बाद आप एक हिन्दुस्तानी मिशन का स्वागत कर रहे हैं—ऐसे ज़ोर शोर के साथ, ऐसे खुले दिल के साथ, ऐसी मुहब्बत और इज़्ज़त के साथ—जो जनता का लोकराज ही कर सकता है, जो वही सरकार कर सकती है जो अपनी जनता के काम के अलावा उनके दिल की भी आईना हो."

لتی ہے اور دوسری کوئی نہیں چلتی . پورب یا پچھم
سبھی قانون دانوں کا یہ خیال ہے . ہندستان کی یہ
شش ہمیشہ رہے گی کہ چینی لوک راج کو دنیا کی
ک بڑی طاقت سمجھا جائے . ہم یہاں پر آپ کے نئے
ج کو اپنی طرف سے سلامی دینے آئے ہیں . آپ جو کام
تک کئے ہیں اور جو آگے کرنے کا وعدہ کرتے ہیں وہ
عجب جیسے لگتے ہیں . پچھلے دو دن میں آپ کی
رکار کے پروگرام کے کچھ پہلوؤں سے جان کاری حاصل کرنے کا
وقع ہمیں ملا . ہم آپ کی کامیابی چاہتے ہیں ."

جب یہ پوچھا گیا کہ چین کے بارے میں ہندستان
میں جانکاری کتنی ہے تو پنڈت سندر لال نے جواب دیا :

" چین کے بارے میں ہمارے اخباروں میں خبریں
تو لگاتار ہیں مگر دوراندیشی ان میں کم رہتی ہے .
کے مقابلے پیکنگ کا ودیشی بھاشا پریس کمال کا کام
رہا ہے . چیرمین ماؤ کی کتابیں ہندستان میں
چھپی ہیں اور ان کے کئی کئی ایڈیشن نکل گئے ہیں .
ہندستان میں ایسی کتابوں کی مانگ بڑھتی جاتی
جن سے نئے چین کے سب حالات معلوم ہوں . یہ مانگ
پوری کرنی ہوگی .

" چینی لوک راج کے بڑے بڑے نیتاؤں کے نام—
چیرمین ماؤتسے تنگ، جنرل چو تہ، بڑے وزیر چو آن لے
نائب چیرمین لیو شاؤ چی — بچہ بچہ جانتا ہے .
ہندستان کے لوگ چینیوں اور ان کے نیتاؤں کے بارے
میں زیادہ سے زیادہ جانکاری حاصل کرنا چاہتے ہیں . آج
آپ کا سندر اخبار "پیپلس چائنا" بھی سب کو نہیں
مل پاتا ہے . پیکنگ کے ودیشی بھاشا پریس کا کام اور
بڑھا دینا چاہئے ."

پنڈت سندر لال سے جب یہ پوچھا گیا کہ آپ کو
یہاں میں کوئی تکلیف تو نہیں ہوئی تو انہوں نے
مسکرا کر جواب دیا :

" جب آپ کے مہان یاتری ہیون سانگ ہمارے
دیش میں آئے تھے تو راجہ ہرش نے ان کو ایسے تحفے
دئے تھے جو ایک راجہ ہی دے سکتا تھا . اب تیرہ سو
سال بعد آپ ایک ہندستانی مشن کا سواگت کر رہے ہیں—
ایسے زور شور کے ساتھ ایسے کھلے دل کے ساتھ، ایسی محبت
اور عزت کے ساتھ — جو جنتا کا لوک راج ہی کر سکتا
ہے، جو وہی سرکار کر سکتی ہے جو اپنی جنتا کے کام کے
علاوہ ان کے دل کی بھی آئینہ ہو ."

उनके इस हक़ में कोई भी दख़ल नहीं देगा. मैं जानता हूँ कि दूसरे देशों की तरह हिन्दुस्तान में भी कुछ लोग ऐसे हैं —जैसे गद्दी से हटाए गए रजवाड़े, पूंजीपति वग़ैरा—जो अमरीकी या अंगरेज़ी पूंजीपतियों के साथ मिलकर जनता को अब भी चूसना चाहते हैं और यह सोचते हैं कि अगर दुनिया भर में लड़ाई छिड़ जाए तो इससे उन्हें फ़ायदा होगा. लेकिन ऐसे लोगों का असर आम जनता में रत्ती भर भी नहीं है और न हमें इसे कोई अहमियत देनी चाहिये. आप इतमिनान रखिये कि हिन्दुस्तान हमेशा शान्ति का अलमबरदार रहेगा. हिन्दुस्तान जानता है कि "लड़ाई से" जैसा कि हमारे बड़े वज़ीर पंडित जवाहर लाल नेहरू कहा करते हैं "कोई सवाल हल नहीं हुआ करते."

जब यह पूछा गया कि चीनी लोकराज के बारे में आपका क्या ख़याल है तो पंडित जी ने जवाब दियाः

"मेरा क्या सभी हिन्द बासियों का ख़याल दो मोटे मोटे उसूलों के आधार पर बना करता है. पहले यह कि चीन में कैसी सरकार क़ायम हो इसका फ़ैसला सिर्फ़ चीनी ही कर सकते हैं--वही और सिर्फ़ वही यह फ़ैसला करने के लिये सबसे बढ़ कर और आला मुन्सिफ़ हैं. किसी दूसरे को इस मामले में नहीं पड़ना चाहिये. आपने अपने देश में एक बहुत बड़ी क्रान्ति की और दुनिया को जता दिया कि अपने चेयरमैन माओ-त्से तुंग के बतलाए नए लोकराज के उसूलों में आप का विश्वास है. हिन्दुस्तान दिल खोल कर चीनी लोकराज का स्वागत करता है. हम मानते हैं कि चीन दुनिया की एक बड़ी ताक़त बन गई है जो शान्ति और तरक़्क़ी की पैरोकार है और हमारी दुआ है कि आप को दिन दूनी रात चौगुनी ख़ुशी और कामयाबी हासिल हो और आप सदियों फूलते फलते रहें.

"दूसरे, हम दोनों देशों के आपसी भाईचारे पर पारटीबाज़ी की या स्वार्थी विदेशी ताक़तों की दख़ल-अन्दाज़ी की हवा के झोंकों का कोई असर नहीं पड़ना चाहिये. हिन्दुस्तान से जो बन सका वह उसने किया ताकि सब मुल्क चीन की नई सरकार को चीन की असली सरकार मान लें. फ़ारमूसा या तेवान के हाकिमों को कुल चीन की सरकार का नुमाइन्दा मानने के ख़िलाफ़ हिन्दुस्तान ने हमेशा ही आवाज़ उठाई है. अंगरेज़ी क़ानूनदां, प्रोफ़ेसर ओपेन हाइम का कहना है कि किसी नई अन्तर क़ौमी शक्ति को मानना या न मानना आपके मन की बात नहीं है और न सौदे या चोर बाज़ारी की चीज़ है. अन्तर क़ौमी क़ानून या रिवाज के मुताबिक़ किसी सरकार को 'मानने' का मतलब है कि हम उस सरकार की क़ाबलियत का इक़रार करते हैं, कि हम यह कबूल करते हैं कि फ़लां इलाक़े में वह सरकार और सिर्फ़ वही सरकार सचमुच

اُنکے اِس حق میں کوئی بھی دخل نہیں دے گا. میں جانتا ہوں کہ دوسرے دیشوں کی طرح ھندستان میں بھی کچھ لوگ ایسے ھیں—جیسے گدی سے ھٹائے گئے رجواڑے' پونجی پتی وغیرہ—جو امریکی یا انگریزی پونجی پتیوں کے ساتھ ملکر جنتا کو اب بھی چوسنا چاھتے ھیں اور یہ سوچتے ھیں کہ اگر دنیا بھر میں لڑائی چھڑ جائے تو اُس سے اُنھیں فائدہ ھوگا. لیکن ایسے لوگوں کا اثر عام جنتا میں رتی بھر بھی نہیں ھے اور نہ ھمیں اِسے کوئی اھمیت دینی چاھئے. آپ اطمینان رکھئے کہ ھندستان ھمیشہ شانتی کا علمبردار رھے گا. ھندستان جانتا ھے کہ "لڑائی سے" جیسا کہ ھمارے بڑے وزیر پنڈت جواھر لال نہرو کہا کرتے ھیں "کوئی سوال حل نہیں ھوا کرتے."

جب یہ پوچھا گیا کہ چینی لوک راج کے بارے میں آپ کا کیا خیال ھے تو پنڈت جی نے جواب دیا :

" میرا کیا سبھی ھند باسیوں کا خیال دو موٹے موٹے اُصولوں کے آدھار پر بنا کرتا ھے. پہلے یہ کہ چین میں کیسی سرکار قائم ھو اِس کا فیصلہ صرف چینی ھی کر سکتے ھیں — وھی اور صرف وھی یہ فیصلہ کرنے کے لئے سب سے بڑھکر اور اعلیٰ منصف ھیں. کسی دوسرے کو اِس معاملے میں نہیں پڑنا چاھئے. آپ نے اپنے دیش میں ایک بہت بڑی کرانتی کی اور دنیا کو جتا دیا کہ اپنے چیرمین ماؤ-تسے تنگ کے بتلائے نئے لوک راج کے اصولوں میں آپ کا وشواس ھے. ھندستان دل کھول کر چینی لوک راج کا سواگت کرتا ھے. ھم مانتے ھیں کہ چین دنیا کی ایک بڑی طاقت بن گئی ھے جو شانتی اور ترقی کی پیروکار ھے اور ھماری دعا ھے کہ آپ کو دن دونی رات چوگنی خوشی اور کامیابی حاصل ھو اور آپ صدیوں پھولتے پھلتے رھیں.

"دوسرے' ھم دونوں دیشوں کے آپسی بھائی چارے پر پارٹی بازی کی یا سوارتھی ودیشی طاقتوں کی دخل اندازی کے ھوا کے جھونکوں کا کوئی اثر نہیں پڑنا چاھئے. ھندستان سے جو بن سکا وہ اُس نے کیا تاکہ سب ملک چین کی نئی سرکار کو چین کی اصلی سرکار مان لیں. فارموسا یا تیوان کے حاکموں کو کل چین کی سرکار کا نمائندہ ماننے کے خلاف ھندستان نے ھمیشہ ھی آواز اُٹھائی ھے. انگریزی قانون داں' پروفیسر اوپن ھائم کا کہنا ھے کہ کسی نئی انتر قومی شکتی کو ماننا یا نہ ماننا آپ کے من کی بات نہیں ھے اور نہ سودے یا چور بازاری کی چیز ھے. انتر قومی قانون یا رواج کے مطابق کسی سرکار کو 'ماننے' کا مطلب ھے کہ ھم اُس سرکار کی قابلیت کا اقرار کرتے ھیں' کہ ھم یہ قبول کرتے ھیں کہ فلاں علاقے میں وہ سرکار اور صرف وھی سرکار سچ مچ

"बारहवीं सदी के आते आते हिन्दुस्तानियों की विदेश घूमने की आदत छूट सी गई. तुरकी राज के जमाने में सिन-क्यांग में हो कर जाने वाला खुश्की का रास्ता बन्द हो गया. इस बारे में ज्यादा जानकारी मशहूर अंगरेज़, मरहूम सर ओरेल इस्टाइन की किताबों से मिलती है. साइन-इन्डिया नाम से इन्होंने कई जुंगी किताबें लिखी हैं. तकला मकन के रेगिस्तान में भी उन्होंने खोजें कीं. उन से पता चलता है कि उस जमाने में दोनों देशों में कितना गहरा कलचरी ताल्लुक़ था.

"मेरा मिशन ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के लोग यह चाहते हैं कि यह ताल्लुक़ फिर पैदा किया जाए. लेकिन केवल समाजी और कलचरी दायरे में ही नहीं, आज कल की दुनिया के मुताबिक़ राजकाजी और आर्थिक दायरों में भी यह ताल्लुक़ पैदा किया जाए. मैं जानता हूँ कि दोनों देशों की भाषा अलग अलग होना इसमें एक बड़ी रुकावट साबित होती है लेकिन इस रुकावट पर हम हावी हो जाएंगे. वह दिन दूर नहीं जब चीनी ज़बान और साहित्य के महकमे हमारी सभी यूनिवर्सिटियों में खुल जाएंगे. इस सम्बन्ध में शान्ति निकेतन यूनिवर्सिटी ने, जिसे स्वर्ग-वासी डाक्टर रवीन्द्र नाथ टैगोर ने क़ायम किया था, क़दम उठाया भी है.

"जहाँ तक शान्ति का और तीसरी दुनिया-व्यापी लड़ाई के खतरे का सवाल है, हम हिन्दुस्तान के लोग सोलह आने शान्ति के हामी हैं. हमारे देश के महान नेता महात्मा गांधी ने जो पाठ पढ़ाया है उससे हमें यही प्रेरना मिलती है. इसके अलावा हिन्द सरकार की एलानिया नीति ही अन्तर क़ौमी शान्ति है और यही चीनी लोक राज की भी एलानिया नीति है. लेकिन शान्ति की वकालत के यह माने हरगिज़ नहीं लगाए जा सकते कि अगर किसी रूप या शकल में हम दोनों लोगों के मुल्क पर बाहर से कोई चढ़ाई या हमला करे तो हम उसका मुक़ाबला करने के इरादे में ही कमजोर पड़ जाएंगे. चीनी लोकराज के मुखिया सेना पति जनरल चू-तेह साफ़ साफ़ कह चुके हैं कि चीन के पिछले सभी इलाक़ों को हम एक करके रहेंगे. इस बड़े काम में हम हिन्दुस्तान वालों की शुभ कमानायें आपके साथ हैं. दुनिया में शान्ति का मतलब है कि भाई चारे की बिना पर सारी दुनिया के रहने वालों का संगठन खड़ा किया जाए, अन्तर क़ौमी झगड़े तै करने के लिये लड़ाई के साधन को खारिज कर दिया जाए, सब तरह की शाहियों को, जैसे जागीरशाही, मुल्क-शाही, साम्राजशाही, चाहे वह पूंजी के जोर पर चलती हों या हुकूमत के जोर पर, खत्म कर दिया जाए, और सब देशों को यह हक़ हासिल हो कि वह जैसी चाहें सरकार बनाएं.

"بارہویں صدی کے آتے آتے ہندستانیوں کی ودیش
ملے کی عادت چھوٹ سی گئی. ترکی راج کے زمانے میں
کیانگ میں ہوکر جانے والا خشکی کا راستہ بند ہوگیا.
بارے میں زیادہ جانکاری مشہور انگریز مرحوم سراوریل
ن کی کتابوں سے ملتی ہے. سائن انڈیا نام سے انہوں نے
جنگی کتابیں لکھی ہیں. تکلا مکن کے ریگستان
ں بھی انہوں نے کھوجیں کیں. اُن سے پتہ چلتا ہے کہ
زمانے میں دونوں دیشوں میں کتنا گہرا کلچری
ق تھا.

"میرا مشن ہی نہیں بلکہ ہندستان کے لوگ یہ
ہتے ہیں کہ یہ تعلق پھر سے پیدا کیا جائے. لیکن
ل سماجی اور کلچری دائرے میں ہی نہیں' آج کل
دنیا کے مطابق راج کاجی اور آرتھک دائروں میں
یہ تعلق پیدا کیا جائے. میں جانتا ہوں کہ دونوں
وں کی بھاشا الگ الگ ہونا اِس میں ایک بڑی
ت ثابت ہوتی ہے لیکن اِس رکاوٹ پر ہم حاوی ہو
یںگے. وہ دن دور نہیں جب چینی زبان اور ساہتیہ
محکمے ہماری سبھی یونیورسٹیوں میں کھل جائینگے.
سمبندھ میں شانتی نکیتن یونیورسٹی نے جسے
گ واسی ڈاکٹر رویندر ناتھ ٹیگور نے قائم کیا تھا قدم
یا بھی ہے.

"جہاں تک شانتی کا اور تیسری دنیا ویاپی لڑائی
خطرے کا سوال ہے' ہم ہندستان کے لوگ سولہ آنے
تی کے حامی ہیں. ہمارے دیش کے مہان نیتا
تما گاندھی نے جو پاٹھ پڑھایا ہے اُس سے ہمیں یہی
نا ملتی ہے. اسکے علاوہ ہند سرکار کی علانیہ نیتی
انتر قومی شانتی ہے اور یہی چینی لوک راج کی
علانیہ نیتی ہے. لیکن شانتی کی وکالت کے یہ
نی ہرگز نہیں لگائے جاسکتے کہ اگر کسی روپ یا
ل میں ہم دونوں لوگوں کے ملک پر باہر سے کوئی
ائی یا حملہ کرے تو ہم اُسکا مقابلہ کرنے کے ارادے
ں ہی کمزور پڑجائینگے. چینی لوک راج کے مکھیا
نا پتی جنرل چو تہ صاف صاف کہہ چکے ہیں کہ
ن کے پچھلے سبھی علاقوں کو ہم ایک کرکے رہیں
. اِس بڑے کام میں ہم ہندستان والوں کی شبھ
نائیں آپ کے ساتھ ہیں. دنیا میں شانتی کا مطلب
کہ بھائی چارے کی بنا پر ساری دنیا کے رہنے والوں
سنگھٹن کھڑا کیا جائے' انتر قومی جھگڑے طے کرنے
لئے لڑائی کے سادھن کو خارج کردیا جائے' سب طرح
شاہیوں کو جیسے جاگیر شاہی' ملک شاہی' سامراج
ی' چاہے وہ پونجی کے زور پر چلتی ہوں یا حکومت
زور پر' ختم کردیا جائے' اور سب دیشوں کو یہ حق
صل ہو کہ وہ جیسی چاہیں سرکار بنائیں.

चीन में हिन्द गुडविल मिशन

[20 सितम्बर 1951 को पंडित सुन्दर लाल की सदारत में हिन्दुस्तान से एक गुडविल मिशन चीन गया था जिसमें तेरह मेम्बर और दो सेक्रेटरी थे. इस मिशन का चीन में बहुत ज़ोरदार स्वागत किया गया. मिशन ने चीन के काफ़ी हिस्से का दौरा किया. मिशन के सदर पंडित सुन्दर लाल ने इस दौरे में जो ख़ास ख़ास बयान या भाशन दिये वह यहां तारीख़ वार दिये जाते हैं.

— एडीटर]

कैन्टन में भाशन

(22 सितम्बर 1951 को)

"पहली अक्तूबर 1951 को हमारे पड़ोसी देश, चीन के नए लोकराज की दूसरी सालगिरह है. इस मौक़े पर अपने चीनी भाइयों को हिन्दुस्तान की जनता की तरफ़ से बधाई देने के लिये यह मिशन चीन आ रहा है. हमारे मिशन में हिन्दुस्तान के सब हिस्सों के लोग हैं और जुदा जुदा रोज़गार या काम करने वाले हैं. आपके महान देश में हम इस वजह से आए क्योंकि हम इससे प्रेम करते हैं और हमारे दिल में इसकी इज़्ज़त है. हम दोनों में रिश्ता आज का नहीं बीस सदी या दो हज़ार बरस से ऊपर का है. यह रिश्ता बड़े प्रेम और भाई चारे का क़रीबी रिश्ता है. सच यह है कि हिन्दुस्तान के पुराने इतिहास का काफ़ी हिस्सा उन बयानों के आधार पर तैयार किया गया है जो आपके सरनाम सफ़ीर, ह्वान सांग और फ़ाहियान लिख कर छोड़ गए हैं. हमारे देश के एक विद्वान प्रोफ़ेसर डाक्टर पी. सी. बागची ने "हिन्दुस्तान और चीन" नाम की एक किताब लिखी है, उसके लिये बरसों वह आपके देश में रहे और खोज करके जानकारी हासिल की. दुर्भाग्य से उनकी तबियत आजकल अच्छी नहीं है, इस लिये वह हमारे साथ न आ सके.

"चीनी के बरतन हिन्दुस्तान क्या, दुनिया भर में मशहूर हैं. इसी तरह से आप के यहां का रेशम लासानी है. चीनी कलाकारों और दस्तकारों के काम की तारीफ़ हमेशा से ही दुनिया भर में होती रही है. चित्रकारी में भी चीन का मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता है. लेकिन शायद सारे पूरब को जो चीन की सबसे बड़ी देन थी वह है काग़ज़ बनाना—यह काम हिन्दुस्तान ने दसवीं सदी में आप से सीखा था.

چین میں هند گڈول مشن

[20 ستمبر 1951 کو پنڈت سندر لال کی صدارت میں هندستان سے ایک گڈول مشن چین گیا تھا جس میں تیرہ ممبر اور دو سکریٹری تھے . اِس مشن کا چین میں بہت زوردار سواگت کیا گیا. مشن نے چین کے کافی حصے کا دورہ کیا . مشن کے صدر پنڈت سندر لال نے اِس دورے میں جو خاص خاص بیان یا بھاشن دئے وہ یہاں تاریخ وار دئے جاتے ہیں .

—ایڈیٹر]

کینٹن میں بھاشن

(22 ستمبر 1951 کو)

"پہلی اکتوبر 1951 کو همارے پڑوسی دیش' چین کے نئے لوک راج کی دوسری سالگرہ ہے . اِس موقعے پر اپنے چینی بھائیوں کو هندستان کی جنتا کی طرف سے بدھائی دینے کے لئے یہ مشن چین آ رہا ہے . همارے مشن میں هندستان کے سب حصوں کے لوگ ہیں اور جدا جدا روزگار یا کام کرنے والے ہیں . آپ کے مہان دیش میں هم اِس وجہ سے آئے کیونکہ هم اِس سے پریم کرتے ہیں اور همارے دل میں اِسکی عزت ہے . هم دونوں میں رشتہ آج کا نہیں بیس صدی یا دو هزار برس سے اوپر کا ہے . یہ رشتہ بڑے پریم اور بھائی چارے کا قریبی رشتہ ہے . سچ یہ ہے کہ هندستان کے پرانے اِتہاس کا کافی حصہ اِن بیانوں کے آدھار پر تیار کیا گیا ہے جو آپ کے سرنام سفیر هوان سانگ اور فاهیان لکھکر چھوڑ گئے ہیں . همارے دیش کے ایک ودوان پروفیسر ڈاکٹر پی . سی . باگچی نے "هندستان اور چین" نام کی ایک کتاب لکھی ہے . اُسکے لئے برسوں وہ آپ کے دیش میں رہے اور کھوج کرکے جانکاری حاصل کی . دربھاگیہ سے اُنکی طبیعت آج کل اچھی نہیں ہے' اِس لئے وہ همارے ساتھ نہ آسکے .

"چینی کے برتن هندستان کیا' دنیا بھر میں مشہور ہیں . اِسی طرح سے آپ کے یہاں کا ریشم لاثانی ہے . چینی کلا کاروں اور دستکاروں کے کام کی تعریف دنیا بھر میں هوتی رہی ہے . چترکاری میں بھی چین کا مقابلہ کوئی نہیں کرسکا ہے . لیکن شاید سارے پورب کو جو چین کی سب سے بڑی دین تھی وہ ہے کاغذ بنانا—یہ کام هندستان نے دسویں صدی میں آپ سے سیکھا تھا .

और वह यह जान गए हैं कि दुनिया में शान्ति किस तरह क़ायम रखी जा सकती है और हमलों का मुक़ाबला कैसे किया जा सकता है.

बरमा

(भाई थाकिन कोदा मांग)

आम जनता लड़ाई से नफ़रत करती है. लड़ाई तो केवल मुट्ठी भर लोग चाहते हैं. जो साम्राजशाही पसंद हैं, पूँजी पति हैं और गोला-बारूद का व्योपार करते हैं, उन्होंने ही कोरिया में लड़ाई छेड़ रखी है.

दुनिया में शान्ति क़ायम रखने के लिये बरमा के हम सब लोग जो लड़ाई से नफ़रत करते हैं, सारी दुनिया के अमन-पसंद लोगों के के साथ कंधे से कंधा मिला कर चलने को तैयार हैं.

हिन्दुस्तान

(पंडित सुन्दरलाल)

हमें हमले-चढ़ाई से, चाहे वह किसी तरह या शक्ल की क्यों न हो, बड़ी नफ़रत है. हम मानते हैं कि ऐसे हमले-चढ़ाई का मुक़ाबला करने के लिये जो कुछ किसी आज़ादी-पसंद इन्सान से बन सके वह करना उसका पूरा फ़र्ज़ है. हमले-चढ़ाई का मुक़ाबला करने का एक अहिंसात्मक तरीक़ा महात्मा गांधी ने हमें बताया. साथ ही साथ उनकी साफ़ राय थी कि जहाँ अहिंसात्मक तरीक़े की जानकारी नहीं है या किसी वजह से उसे अमल में नहीं लाया जा सकता तो उस देश का जिस पर हमला किया जाए यह पाक फ़र्ज़ है कि हथियारों की मदद से मुक़ाबला करे. महात्मा गांधी ने हमें सिखाया, कि हमले-चढ़ाई के आगे घुटने टेक देना कायरता ही नहीं, बल्कि एक जुर्म है. इसलिये हम हिन्दुस्तान के लोग अपने चीनी भाइयों का पूरी तरह समर्थन करते हैं और अन्दरूनी व बाहरी दुश्मनों का मुक़ाबला करने में जो कामयाबियां उन्हें मिली हैं उस पर उन्हें बधाई देते हैं ....

.........हमें पूरा विश्वास है कि हिन्दुस्तान और चीन के बीच सच्चा भाई चारा और दोस्ती दिन दिन क़ायम होगी, हमें पूरा विश्वास है कि इस भाई चारे से दुनिया में अमन-शान्ति ठोस और मुस्तक़िल तरीक़े से क़ायम हो सकेगी.

اور وہ یہ جان گئے ہیں کہ دنیا میں شانتی کس طرح قائم رکھی جاسکتی ہے اور حملوں کا مقابلہ کیسے کیا جاسکتا ہے .

برما

(بھائی تھاکن کودا مانگ)

عام جنتا لڑائی سے نفرت کرتی ہے . لڑائی تو کیول مٹھی بھر لوگ چاہتے ہیں . جو سامراج شاہی پسند ہیں' پونجی پتی ہیں اور گولہ بارود کا بیوپار کرتے ہیں' انہوں نے ہی کوریا میں لڑائی چھیڑ رکھی ہے .

دنیا میں شانتی قائم رکھنے کے لئے برما کے ہم سب لوگ جو لڑائی سے نفرت کرتے ہیں' ساری دنیا کے امن پسند لوگوں کے ساتھ کندھے سے کندھا ملا کر چلنے کو تیار ہیں .

ہندستان

(پنڈت سندر لال)

ہمیں حملے چڑھائی سے' چاہے وہ کسی طرح یا شکل کی کیوں نہ ہو' بڑی نفرت ہے . ہم مانتے ہیں کہ ایسے حملے چڑھائی کا مقابلہ کرنے کے لئے جو کچھ کسی آزادی پسند انسان سے بن سکے وہ کرنا اس کا پورا فرض ہے . حملے چڑھائی کا مقابلہ کرنے کا ایک اہنساتمک طریقہ مہاتما گاندھی نے ہمیں بتایا . ساتھ ہی ساتھ اُن کی صاف رائے تھی کہ جہاں اہنساتمک طریقے کی جان کاری نہیں ہے یا کسی وجہ سے اُسے عمل میں نہیں لایا جاسکتا تو اُس دیش کا جس پر حملہ کیا جائے یہ پاک فرض ہے کہ ہتھیاروں کی مدد سے مقابلہ کرے . مہاتما گاندھی نے ہمیں سکھایا' کہ حملے چڑھائی کے آگے گھٹنے ٹیک دینا کائرتا ہی نہیں' بلکہ ایک جرم ہے . اِس لئے ہم ہندستان کے لوگ اپنے چینی بھائیوں کا پوری طرح سمرتھن کرتے ہیں اور اندرونی و باہری دشمنوں کا مقابلہ کرنے میں جو کامیابیاں انہیں ملی ہیں اُس پر انہیں بدھائی دیتے ہیں ....

.... ہمیں پورا وشواس ہے کہ ہندستان اور چین کے بیچ سچا بھائی چارہ اور دوستی دن دن قائم ہوگی . ہمیں پورا وشواس ہے کہ اِس بھائی چارے سے دنیا میں امن شانتی ٹھوس اور مستقل طریقے سے قائم ہوسکے گی .

ठहराव. इसी तरह से हम कोरिया वालों की मदद को तैयार रहे, जापान की हथियार बन्दी के खिलाफ रहे और उस मनचले सुलहनामे को हमने नहीं माना जो जापान के साथ किया गया.

सोवियत रूस ने अमन और लोक राज का जो झंडा उठाया है उसके नीचे अपने प्रेसीडेन्ट होची मिंह की रहनुमाई में काम करना हम फ़र्ज़ मानते हैं. हम दिल व जान से मार्शल स्टालिन के साथ हैं जो दुनिया में अमन के अव्वल दरजे के अलमबरदार हैं और चेयरमैन माओ-त्से-तुंग के साथ हैं जो एशिया के सबसे बड़े नेता हैं. हम वीत नाम वालों का यह पक्का इरादा है कि सारे एशियाई भाइयों के साथ ही नहीं दुनिया भर के लोगों के साथ मिलकर रहेंगे और बहादुरी के साथ अमन-शान्ति की ज़ोरदार लड़ाई में शिरकत करेंगे.

इन्डोनेशिया

(भाई मोहम्मद तहरानी)

हम इन्डोनेशिया के लोग अमन पसंद हैं और हर तरह की लड़ाई के मुख़ालिफ़ हैं. चीन की लोकशाही सरकार की तरह इन्डोनेशिया का भी यही मक़सद है—शान्ति क़ायम करना और हमलों का मुक़ाबला करना.

यह सच बात है—हम बढ़ बढ़ कर बातें नहीं कर रहे हैं—कि चीन की लोकशाही सरकार हमारे सामने मिसाल पेश कर रही है कि किस तरह हमले का मुक़ाबला कर के अपने मुल्क में शान्ति का राज क़ायम किया जाए. मेरे दिल में सब से ज़्यादा इज़्ज़त उस रूहानी और माद्दी मदद की है जो कोरिया को अमरीकी साम्राजशाही के ख़िलाफ़ उसकी लड़ाई में चीन ने दी. जैसी मदद चीनी लोकशाही सरकार ने कोरिया वालों को दी है वह मदद एक ऐसा देश ही दे सकता था जो सचमुच बड़ा है और जिस के नेता सच मुच बड़े नेता हैं.

कोरिया को चीनी मदद मिलने से अमरीकी हमला नाकामयाब रह गया. इसकी वजह से अमरीकी रजअत-पसंदों को बड़े बड़े नुक़सान ही नहीं उठाने पड़े बल्कि अमरीका के नाम को भी बट्टा लगा. दिन पर दिन अमरीका की पोज़ीशन गिरती जा रही है और चीन के लोकशाही राज की पोज़ीशन उठती जा रही है. चीन की इस अन्तर क़ौमी पोज़ीशन के उठाव से न सिर्फ़ चीन को बल्कि एशिया के सब देशों को फ़ायदा पहुँच रहा है और साथ ही साथ दुनिया के उन सभी देशों को जो शान्ति चाहते हैं और लड़ाई के ख़िलाफ़ हैं. यही वजह है कि चीन की लोकशाही सरकार एशिया के देशों के लिये एक मिसाल बन गई है

ٹھہراؤ . اسی طرح سے ہم کوریا والوں کی مدد کو تیار رہے ، جاپان کی ہتھیار بندی کے خلاف رہے اور اس من چلے صلحنامے کو ہم نے نہیں مانا جو جاپان کے ساتھ کیا گیا .

سوویت روس نے امن اور لوک راج کا جو جھنڈا اُٹھایا ہے اُس کے نیچے اپنے پریسیڈنٹ ہو چی منہ کی رہنمائی میں کام کرنا ہم فرض سمجھتے ہیں . ہم دل و جان سے مارشل استالن کے ساتھ ہیں جو دنیا میں امن کے اول درجے کے علم بردار ہیں اور چیرمین ماؤتسے تنگ کے ساتھ ہیں جو ایشیا کے سب سے بڑے نیتا ہیں . ہم ویت نام والوں کا یہ پکا ارادہ ہے کہ سارے ایشیائی بھائیوں کے ساتھ ہی نہیں دنیا بھر کے لوگوں کے ساتھ ملکر رہیں گے اور بہادری کے ساتھ امن شانتی کی زور دار لڑائی میں شرکت کریں گے .

انڈونیشیا

(بھائی محمد تہرانی)

ہم انڈونیشیا کے لوگ امن پسند ہیں اور ہر طرح کی لڑائی کے مخالف ہیں . چین کی لوک شاہی سرکار کی طرح انڈونیشیا کا بھی یہی مقصد ہے — شانتی قائم کرنا اور حملوں کا مقابلہ کرنا .

یہ سچ بات ہے — ہم بڑھ بڑھکر باتیں نہیں کر رہے ہیں — کہ چین کی لوک شاہی سرکار ہمارے سامنے مثال پیش کر رہی ہے کہ کس طرح حملے کا مقابلہ کر کے اپنے ملک میں شانتی کا راج قائم کیا جائے . میرے دل میں سب سے زیادہ عزت اس روحانی اور مادی مدد کی ہے جو کوریا کو امریکی سامراج شاہی کے خلاف اُس کی لڑائی میں چین نے دی . جیسی مدد چینی لوک شاہی سرکار نے کوریا والوں کو دی ہے وہ مدد ایک ایسا دیش ہی دے سکتا تھا جو سچ مچ بڑا ہے اور جس کے نیتا سچ مچ بڑے نیتا ہیں .

کوریا کو چینی مدد ملنے سے امریکی حملہ ناکامیاب رہ گیا . اس کی وجہ سے امریکی رجعت پسندوں کو بڑے بڑے نقصان ہی نہیں اُٹھانے پڑے بلکہ امریکہ کے نام کو بھی بٹا لگا . دن پر دن امریکہ کی پوزیشن گرتی جا رہی ہے اور چین کے لوک شاہی راج کی پوزیشن اُٹھتی جا رہی ہے . چین کی اس انتر قومی پوزیشن کے اُٹھاؤ سے نہ صرف چین کو بلکہ ایشیا کے سب دیشوں کو فائدہ پہونچ رہا ہے اور ساتھ ہی ساتھ دنیا کے اُن سبھی دیشوں کو جو شانتی چاہتے ہیں اور لڑائی کے خلاف ہیں . یہی وجہ ہے کہ چین کی لوک شاہی سرکار ایشیا کے دیشوں کے لئے ایک مثال بن گئی ہے

मंगोलिया

(भाई दामदिन सुरीन)

आज दुनिया में शान्ति और आज़ादी के सोशलिस्ट पड़ाव का रहबर रूस देश ही है. चीनी जनता ने अपनी विजय के ज़रिये इस पड़ाव को और भी मज़बूत बना दिया है. एशिया के अन्दर शान्ति की हिफ़ाज़त करने का भारी काम चीन वालों ने ही अपने कंधों पर उठा लिया है.

हम मंगोल वाले चीनी भाइयों की शानदार कामयाबियों पर फूले नहीं समाते. उन्होंने एशिया के सब देशों के आगे यह मिसाल हमेशा के लिये क़ायम कर दी कि आज़ादी और स्वराज की लड़ाई में साम्राजशाही लुटेरों का किस तरह मुक़ाबला किया जाए. हम मंगोल वाले साथ हैं चीनी भाइयों के, कोरियन भाइयों के और अमन चाहने वाले सब भाइयों के—और जब तक हमारे अन्दर जान बाक़ी है हम मुक़ाबला करेंगे—जापान के साथ अलग सुलहनामे का, जापान को दोबारा हथियार बन्द करने का और कोरिया में चढ़ाई करने का.

منگولیا

(بھائی دام دین سرین)

آج دنیا میں شانتی اور آزادی کے سوشلسٹ پڑاؤ کا رہبر روس دیش ہی ہے . چینی جنتا نے اپنی وجے کے ذریعے اس پڑاؤ کو اور بھی مضبوط بنا دیا ہے . ایشیا کے اندر شانتی کی حفاظت کرنے کا بھاری کام چین والوں نے ہی اپنے کندھوں پر اٹھا لیا ہے .

ہم منگول والے چینی بھائیوں کی شاندار کامیابیوں پر پھولے نہیں سماتے . انہوں نے ایشیا کے سب دیشوں کے آگے یہ مثال ہمیشہ کے لئے قائم کر دی کہ آزادی اور سوراج کی لڑائی میں سامراج شاہی لٹیروں کا کس طرح مقابلہ کیا جائے . ہم منگول والے ساتھ ہیں چینی بھائیوں کے' کوریئن بھائیوں کے اور امن چاہنے والے سب بھائیوں کے— اور جب تک ہمارے اندر زبان باقی ہے ہم مقابلہ کرینگے — جاپان کے ساتھ الگ صلحنامے کا' جاپان کو دوبارہ ہتھیار بند کرنے کا اور کوریا میں چڑھائی کرنے کا .

वीत नाम

(भाई दीन थाम)

हम वीत नाम वाले यह मानते हैं कि अमरीकी साम्राजशाही ने हाल में जो कारनामे दिखाए हैं—वीत नाम में दख़ल देना, कोरिया पर चढ़ाई करना और तैवान पर क़ाबू जमा लेना, जापान को हथियार बन्द करना और उसके साथ अलग से 'सुलहनामा' करना—वह उसकी एक योजना का हिस्सा है. यह योजना है एशिया पर हावी होने की और एक नई लड़ाई दुनिया में छेड़ देने की. हम वीत नामियों का विश्वास है कि हम ख़ुद जो आज मुक़ाबला कर रहे हैं, जो मुक़ाबला हमारे कोरियन भाई कर रहे हैं और जो मुक़ाबला हमारे चीनी भाई कर रहे हैं वह एशिया में क्या, सारी दुनिया में ही शान्ति क़ायम रखने का सबसे असरदार साधन है.

साथ ही साथ हम वीतनाम वालों ने बड़े जोश और शान के साथ हर ऐसे आन्दोलन का स्वागत किया है जो दुनिया में शान्ति लाने में मददगार साबित हो. हमने एटलान्टिक पैक्ट का विरोध किया, पच्छिमी जर्मनी की हथियार बन्दी के हम हमेशा ख़िलाफ़ रहे. यही नहीं शान्ति की हिफ़ाज़त के लिये जो बड़े बड़े क़दम उठाए गए उनमें भी हमने दिल खोलकर शिरकत की, जैसे स्टाकहाम की अमन कान्फ़रेंस का एटामिक हथियारों को रोकने का ठहराव या बर्लिन पीस कौन्सिल का पांच-ताक़तों-की सुलह का

ویت نام

(بھائی دین تھام)

ہم ویت نام والے یہ مانتے ہیں کہ امریکی سامراج شاہی نے حال میں جو کارنامے دکھائے ہیں—ویت نام میں دخل دینا' کوریا پر چڑھائی کرنا اور تیوان پر قابو جما لینا' جاپان کو ہتھیار بند کرنا اور اس کے ساتھ الگ سے 'صلحنامہ' کرنا— وہ اس کی ایک یوجنا کا حصہ ہے . یہ یوجنا ہے ایشیا پر حاوی ہونے کی اور ایک نئی لڑائی دنیا میں چھیڑ دینے کی . ہم ویت نامیوں کا وشواس ہے کہ ہم خود جو آج مقابلہ کر رہے ہیں' جو مقابلہ ہمارے کوریئن بھائی کر رہے ہیں اور جو مقابلہ ہمارے چینی بھائی کر رہے ہیں وہ ایشیا میں کیا' ساری دنیا میں ہی شانتی قائم رکھنے کا سب سے اثردار سادھن ہے .

ساتھ ہی ساتھ ہم ویت نام والوں نے بڑے جوش اور شان کے ساتھ ہر ایسے آندولن کا سواگت کیا ہے جو دنیا میں شانتی لانے میں مددگار ثابت ہو . ہم نے اٹلانٹک پیکٹ کا ورودھ کیا' پچھمی جرمنی کے ہتھیار بندی کے ہم ہمیشہ خلاف رہے . یہی نہیں شانتی کی حفاظت کے لئے جو بڑے بڑے قدم اٹھائے گئے ان میں بھی ہم نے دل کھول کر شرکت کی' جیسے اسٹاک ہام کی امن کانفرنس کا اٹامک ہتھیاروں کو روکنے کا ٹھہراؤ یا برلن پیس کونسل کا پانچ طاقتوں کی صلح کا

ऐशिया की आवाज़—शान्ति

[पहली अक्तूबर सन '51 को चीन के नए लोक-राज की सालगिरह के जलसे में योरप और एशिया के चौदह मुल्कों के गुडविल मिशन ने शिरकत की थी. जलसे की ख़ुशी में चेयरमैन माओ-त्से-तुंग की तरफ़ से सब को दावत दी गई थी. उस दावत में एशिया के मुल्कों से गए लीडरों ने छोटी छोटी तक़रीरें कीं. अजीब बात है कि हर एक एशियाई मुल्क की तरफ़ से दो ही बातों पर ज़ोर दिया गया—एशिया की एकता और शान्ति. नीचे दिये बयानों को पढ़ कर ऐसा लगता है कि सारे एशिया की ज़बान एक हो गई हो, दिल एक हो गया हो, दिमाग़ एक हो गया हो और एक साथ आवाज़ निकल रही हो—एशिया एक हो, शान्ति क़ायम हो—एडीटर]

कोरिया

(भाई हून हुन)

चीन के लोग हमारे पड़ोसी हैं, बड़े भाई हैं. यही नहीं, हम दोनों ने एक लम्बी मुद्दत से विदेशी साम्राजशाही के हमलों के ख़िलाफ़ एक दूसरे के कंधे से कंधा मिला कर मोरचा लिया है और इसलिये हम सिपाही साथी हैं. आज भी अमरीकी हमलों का सामना करने और कोरिया को मदद पहुँचाने के इरादे से हम साढ़े सैंतालीस करोड़ चीनी भाइयों ने अपनी जन्म भूमि की शान और अपने घरों की आबरू क़ायम रखने के लिये कोई कसर उठा नहीं रखी है. अपने इस दौरे में हमने इन ज़बरदस्त कोशिशों को अपनी आंखों से देखा. हम पर सब से ज़्यादा असर उस जन आन्दोलन का पड़ा जो देश सेवा के अहदनामों पर दस्तख़तों के लिये किया जा रहा है. यह बेहतरीन सबूत है यहां के लोगों की ऊंची देश भक्ति का और उनके सच्चे अन्तरक़ौमी प्रेम का.

हमारा और चीन का चोली दामन का साथ है जिसे न कोई तोड़ सकता है और न मिटा सकता है. जो लड़ाई हम इस वक़्त लड़ रहे हैं वह ईमान और इन्साफ़ की लड़ाई है. यह लड़ाई तरक़्क़ी की तरफ़ ले जाने वाली है. इस घमासान लड़ाई में हम दोनों का ख़ून एक साथ बह कर जो एका हम में क़ायम हो गया है उसके अधार पर हम बिना किसी शक के यह कह सकते हैं कि साम्राजशाही के ख़िलाफ़ आख़ीर में जीत हमारी ही होने वाली है और होगी.

ایشیا کی آواز — شانتی

[پہلی اکتوبر سن '51 کو چین کے نئے لوک راج کی سالگرہ کے جلسے میں یورپ اور ایشیا کے چودہ ملکوں کے گڈول مشن نے شرکت کی تھی۔ جلسے کی خوشی میں چیرمین ماؤتسے تنگ کی طرف سے سب کو دعوت دی گئی تھی۔ اس دعوت میں ایشیا کے ملکوں سے گئے لیڈروں نے چھوٹی چھوٹی تقریریں کیں۔ عجیب بات ہے کہ ہر ایک ایشیائی ملک کی طرف سے دو ہی باتوں پر زور دیا گیا — ایشیا کی ایکتا اور شانتی۔ نیچے دیئے بیانوں کو پڑھکر ایسا لگتا ہے کہ سارے ایشیا کی زبان ایک ہوگئی ہو، دل ایک ہوگیا ہو، دماغ ایک ہوگیا ہو اور ایک ساتھ آواز نکل رہی ہو — ایشیا ایک ہو، شانتی قائم ہو — ایڈیٹر]

کوریا

(بھائی ہون ہن)

چین کے لوگ ہمارے پڑوسی ہیں، بڑے بھائی ہیں، یہی نہیں، ہم دونوں نے ایک لمبی مدت سے ودیشی سامراج شاہی کے حملوں کے خلاف ایک دوسرے کے کندھے سے کندھا ملاکر مورچہ لیا ہے اور اس لئے ہم سپاہی ساتھی ہیں۔ آج بھی امریکی حملوں کا سامنا کرنے اور کوریا کو مدد پہونچانے کے ارادے سے ہم ساڑھے سینتالیس کروڑ چینی بھائیوں نے اپنی جنم بھومی کی شان اور اپنے گھروں کی آبرو قائم رکھنے کے لئے کوئی کسر اٹھا نہیں رکھی ہے۔ اپنے اس دورے میں ہم نے ان زبردست کوششوں کو اپنی آنکھوں سے دیکھا۔ ہم پر سب سے زیادہ اثر اس جن آندولن کا پڑا جو دیش سیوا کے عہدناموں پر دستخطوں کے لئے کیا جارہا ہے۔ یہ بہترین ثبوت ہے یہاں کے لوگوں کی اونچی دیش بھکتی کا اور ان کے سچے انترقومی پریم کا۔

ہمارا اور چین کا چولی دامن کا ساتھ ہے جسے نہ کوئی توڑ سکتا ہے اور نہ مٹا سکتا ہے۔ جو لڑائی ہم اس وقت لڑ رہے ہیں وہ ایمان اور انصاف کی لڑائی ہے۔ یہ لڑائی ترقی کی طرف لے جانے والی ہے۔ اس گھماسان لڑائی میں ہم دونوں کا خون ایک ساتھ بہ کر جو ایکا ہم میں قائم ہوگیا ہے اسکے آدھار پر ہم بنا کسی شک کے کہہ سکتے ہیں کہ سامراج شاہی کے خلاف آخیر میں جیت ہماری ہی ہونے والی ہے اور ہوگی۔

नए चीन का क़ौमी गीत

उठो ! उठो !
वह सब उठो
जिन्हें नहीं क़ुबूल है
ग़ुलामी दीन दासता
खड़ी खड़ी !
हां, हो खड़ी
हमारे हाड़ मांस की
दीवार एक बहुत बड़ी
कि इस घड़ी
है आ पड़ी
हमारी चीनी क़ौम पर
बला बहुत बड़ी कड़ी
हर एक दिल से
ज़ोर से
उठे आवाज़ एक साथ
उठो उठो !
उठो उठो !
दसियों लाखों हों पर एक
एक दिल हों एक जान
खोल छातियां जवान
चले चलो चले चलो
दुशमनों की गोलियां
हां, छातियों पे झेलते
बढ़े चलो बढ़े चलो !
बढ़े चलो बढ़े चलो !

نئے چین کا قومی گیت

اُٹھو ! اُٹھو !
وہ سب اُٹھو
جنھیں نہیں قبول ہے
غلامی، دین داستا
کھڑی کھڑی !
ہاں، ہو کھڑی
ہمارے ہاڑ مانس کی
دیوار ایک بہت بڑی
کہ اِس گھڑی
ہے آپڑی
ہماری چینی قوم پر
بلا بہت بڑی کڑی
ہر ایک دل سے
زور سے
اُٹھے آواز ایک ساتھ
اُٹھو اُٹھو !
اُٹھو اُٹھو !
دسیوں لاکھوں ہوں پر ایک
ایک دل ہوں ایک جان
کھول چھاتیاں جوان
چلے چلو چلے چلو
دشمنوں کی گولیاں
ہاں، چھاتیوں پہ جھیلتے
بڑھے چلو بڑھے چلو !
بڑھے چلو بڑھے چلو !

नया हिंद — نیا ہند

चीन नम्बर — **چین نمبر**

जिल्द 11 दिसम्बर, सन् '51 नम्बर 6

نمبر 6 دسمبر، سن '51 جلد 11

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

नए चीन का क़ौमी गीत

[नए चीन ने अभी कोई क़ौमी गीत तैयार नहीं किया. नीचे दिये गीत को ही उन्हों ने क़ौमी गीत की जगह दे रक्खी है. अगले सफ़े पर इसका हिंदुस्तानी रूप दिया जा रहा है.—एडीटर]

نئے چین کا قومی گیت

[نئے چین نے ابھی کوئی قومی گیت تیار نہیں کیا. نیچے دیئے گیت کو ہی انہوں نے قومی گیت کی جگہ دے رکھی ہے. اگلے صفحے پر اس کا ہندستانی روپ دیا جا رہا ہے.—ایڈیٹر]

中華人民共和國國歌
chung hua jen min kung ho kuo kuo ko

起來！不願做奴隸的人們！把我們的血肉，築成我們
ch'i lai pu yüan tso nu li ti jen men pa wo men ti hsueh jou chu ch'eng wo men

新的長城！中華民族到了最危險的時
hsin ti ch'ang ch'eng chung hua min tsu tao liao tsui wei hsien ti shih

候，每個人被迫着發出最後的吼聲。起來！起
hou mei ko jen pei p'o cho fa ch'u tsui hou ti hou sheng ch'i lai ch'i

來！起來！我們萬衆一心，冒着敵人的砲火
lai ch'i lai wo men wan chung i hsin mao cho ti jen ti p'ao huo

前進！冒着敵人的砲火前進！前進！前進！進！
ch'ien chin mao cho ti jen ti p'ao huo ch'ien chin ch'ien chin ch'ien chin chin

नया हिन्द

نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, महमूद अहमद 'हुनर'

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی، محمود احمد 'ہنر'

Ratan Lal

पंडित सुन्दरलाल और चेयरमैन माओ-त्से-तुंग

چیرمین ماؤتسے تنگ اور پنڈت سندرلال

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ہندوستانی کلچر سوسائٹی الٰہ آباد

दिसम्बर 1951 دسمبر

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह खयाली दुनिया को छोड़ कर जिन्दगी की सच्चाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है. अब आप को उरदू कविता में किसानों और मजदूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के खिलाफ़ आप एक ऐसी आवाज सुनेंगे जो आप के दिल को जोश से भर देगी.

इस संग्रह में जिन शायरों की रचनाएं इकट्ठा की गई हैं उनमें से कुछ के नाम:—

'जोश' मलीहाबादी, 'फ़िराक़' गोरखपुरी, 'मुत्तलबी' फ़रीदाबादी, असरारुलहक़ 'मजाज', अली सरदार जाफ़री, 'साहिर' लुधियानवी, अहमद नदीम क़ासिमी, कैफ़ी आज़मी, 'हफ़ीज़' होशियारपुरी. 'वामिक़' जौनपुरी, 'मजरूह' सुलतान पुरी, जाँ निसार अख़तर, मसऊद अख़तर जमाल, 'सलाम' मछलीशहरी, 'वज्द' हैदराबादी, 'मखमूर' जालन्धरी, 'क़तील' शिफ़ाई. 'अदा' बदायूनी, कंवल प्रसाद 'कंवल,' मीराजी, मुख़्तार सिद्दीक़ी, तख़तसिंह, 'शमीम' किरहानी, जमीलुद्दीन 'आली,' ग़ुलाम रब्बानी 'ताबाँ' मसऊद अली 'जौक़ी,' प्रेम धवन, मोहम्मद सफ़दर, ज़हूर नज़र, अहमद रियाज. इन्द्रजीत शर्मा, विश्व मित्र 'आदिल', हबीब तनवीर, 'ताजवर' सामरी, 'अशअर' मलीहाबादी, 'मुज़फ़्फ़र', शाहजहांपुरी, नरेश कुमार 'शाद,' 'स्वामी' मारहवी, सैयदा फ़रहत, 'अफ़सर' आज़री, प्रोफ़ेसर 'शोर', 'राही' मासूम रज़ा, युसुफ़ ज़फ़र, वग़ैरा.

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द. बढ़िया काग़ज़. उम्दा छपाई. दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

नोट—किताब छपते छपते इस में कुछ और नई कविताएं भी जोड़ दी गई हैं और उसके सफ़े दो सौ से भी जियादा हो गए हैं इसलिये अब इस किताब का दाम तीन रुपया रख दिया गया है—मैनेजर

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اُردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے۔ آج کی اُردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے۔ اب آپ کو اُردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی۔ غلامی' انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کو جوش سے بھر دیگی۔

اس سنگرہ میں جن شاعروں کی رچنائیں اکٹھا کی گئی ہیں اُنمیں سے کچھ کے نام :-

'جوش' ملیح آبادی' 'فراق' گورکھپوری' 'مطلبی' فرید آبادی' اسرارالحق 'مجاز' علی سردار جعفری' 'ساحر' لدھیانوی' احمد ندیم قاسمی' کیفی اعظمی' 'حفیظ' ہوشیار پوری' 'وامق' جونپوری' 'مجروح' سلطان پوری' جاں نثار اختر' مسعود اختر جمال' 'سلام' مچھلی شہری' 'وجد' حیدرآبادی' 'مخمور' جالندھری' 'قتیل' شفائی' 'ادا' بدایونی' کنول پرساد 'کنول' میرا جی' مختار صدیقی' تخت سنگھ' 'شمیم' کرہانی' جمیل الدین 'عالی' غلام ربانی 'تاباں' مسعود علی 'ذوقی' پریم دھون' محمد صفدر' ظہور نظر' احمد ریاض' اندر جیت شرما' وشو متر عادل' حبیب تنویر' 'تاجور' سامری' 'اشعر' ملیح آبادی' 'مظفر' شاہجہانپوری' نریش کمار 'شاد' 'سوامی' مارہروی' سیدہ فرحت' 'افسر' آزری' پروفیسر 'شور' 'راہی' معصوم رضا' یوسف 'ظفر' وغیرہ۔

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اُردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا۔ سندر جلد۔ بڑھیا کاغذ۔ عمدہ چھپائی۔ دام صرف تین روپیہ۔

نوٹ—کتاب چھپتے چھپتے اس میں کچھ اور نئی کویتائیں بھی جوڑ دی گئی ہیں اور اسکے صفحے دو سو سے بھی زیادہ ہوگئے ہیں اس لئے اب اس کتاب کا دام تین روپیہ رکھدیا گیا ہے—مینیجر

ملنے کا پتہ—
مینیجر' 'نیا ہند' 145' مٹھی گنج' الہ آباد۔

Printed and Published by [illegible] at the New Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद्

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों .

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों बग़ैरा का छापना .

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना .

—:o:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल .

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये –

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिदुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद .

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे .

هندستانی کلچر سوسائٹی

قصد

(1) ایک ایسی هندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا ر پرچار کرنا جس میں سب هندستانی شامل هوں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں یرہ کا چھاپنا .

(3) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں پس کا میل بڑھانا .

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ ائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . ورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ کریٹری — پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید لیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی جی . ھیر' مسٹر ایس . کے . رودرا' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما ھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار ور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے –

سندر لال

سکریٹری' هندستانی کلچر سوسائٹی.

145' مٹھی گنج' الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی یس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا هند" کے جو گاهک ممبر بننا چاهیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ ینے پر ھی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی یس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو یک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام ی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کراسکینگے .

'नया हिन्द' के परिवार में से कई का लियाक़त अली साहब के साथ काफ़ी रब्त ज़ब्त था. और इसलिये इस नाते भी हम उनके ख़ानदान से आम तौर से और उनके बीवी बच्चों से ख़ास तौर से हमदर्दी ज़ाहिर करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि शहीद की रूह को शान्ति मिले.

—भगवानदीन

'نیا ہند' کے پریوار میں سے کئی کا لیاقت علی خاں صاحب کے ساتھ کافی ربط ضبط تھا ۔ اور اس لئے اس ناتے بھی ہم اُن کے خاندان سے عام طور سے اور اُن کے بیوی بچوں سے خاص طور سے ہمدردی ظاہر کرتے ہیں اور ایشور سے پرارتھنا کرتے ہیں کہ شہید کی روح کو شانتی ملے ۔

—بھگوان دین

'नया हिन्द' का चीन नम्बर

'नयाहिन्द' के प्रेमियों को यह जान कर ख़ुशी होगी कि पंडित सुन्दर लाल जी की सदारत में जो हिन्द गुडविल मिशन चीन गया था दूसरी नवम्बर को दिल्ली वापस आ गया है.

मिशन ने चीन में जो देखा और समझा उसकी कुछ कुछ चर्चा अख़बारों में आई है लेकिन 'नया हिन्द' के प्रेमी हम से पूरी पूरी जानकारी की आशा करेंगे. इसी लिये 'नया हिन्द' का दिसम्बर नम्बर 'चीन नम्बर' के नाम से निकलेगा.

इस नम्बर में पंडित सुन्दर लाल जी के अलावा मिशन के दूसरे मेम्बरों के लेख भी होंगे. हमारी कोशिश होगी कि इस नम्बर में हमारे महान पड़ोसी देश के हर पहलू पर रोशनी पड़े और पाठकों को चीन के बारे में ग़ैर जानिबदार और तजरबेकार आँखों का देखा हाल पढ़ने को मिल जाय और उनके सामने नए चीन की सच्ची तस्वीर आ जाय.

यह नम्बर पहली दिसम्बर तक निकल जायगा और इसका दाम सिर्फ़ दस आने होगा.

—मैनेजर

'نیا ہند' کا چین نمبر

' نیا ہند ' کے پریمیوں کو یہ جان کر خوشی ہوگی کہ پنڈت سندر لال جی کی صدارت میں جو ہند گوڈ ول مشن چین گیا تھا وہ دوسری نومبر کو دلی واپس آگیا ہے ۔

مشن نے چین میں جو دیکھا اور سمجھا اس کی کچھ کچھ چرچا اخباروں میں آئی ہے لیکن ' نیا ہند ' کے پریمی ہم سے پوری پوری جانکاری کی آشا کرینگے ۔ اسی لئے ' نیا ہند ' کا دسمبر نمبر ' چین نمبر ' کے نام سے نکلے گا ۔

اس نمبر میں پنڈت سندر لال جی کے علاوہ مشن کے دوسرے ممبروں کے لیکھ بھی ہونگے ۔ ہماری کوشش ہوگی کہ اس نمبر میں ہمارے مہان پڑوسی دیش کے ہر پہلو پر روشنی پڑے اور پاٹھکوں کو نئے چین کے بارے میں غیر جانبدار اور تجربہ کار آنکھوں کا دیکھا حال پڑھنے کو مل جائے اور انکے سامنے نئے چین کی سچی تصویر آجائے ۔

یہ نمبر پہلی دسمبر تک نکل جائیگا اور اسکا دام صرف دس آنے ہوگا ۔

—مینیجر

इसी ताकीब का तो यह असर है कि अब यह नहीं कहा जा सकता कि यह क़त्ल राजकाजी क़त्ल था और इस ज़रा सी भूल और बे परवाही का यह नतीजा हो सकता है कि और दो चार बे गुनाहों को इसी तरह अपनी जान से हाथ धोना पड़े.

न जाने क्यों हज़रत ईसा, हुसैन और महात्मा गांधी की शहादत इन क़ातिलों को यह सबक नहीं देतीं कि इस तरह के क़त्ल उस उसूल को कोई धक्का नहीं पहुंचा सकते जिस उसूल की जड़ काटने के ख़याल से यह क़ातिल इतना बड़ा गुनाह कर बैठते हैं ? यह क्यों इनकी समझ में नहीं आता कि इनसानी ख़ून से उसूल की जड़ें सिंचती हैं कटती नहीं और जिस इनसान का ख़ून होता है वह इनसान शहीदों में शामिल हो कर उसी उसूल के पौधे में एक शाख़ का और इज़ाफ़ा कर देता है.

क्या क़ातिल और क़ातिल के मददगार अपनी आंखों यह नहीं देख रहे कि एक मिनट भी मक़तूल की गद्दी ख़ाली नहीं रही. फ़ौरन ही तो उन्हीं जितने मज़बूत नाज़िमुद्दीन साहब ने गवरनर जनरैली को लात मार कर वज़ारत की उस गद्दी को संभाल लिया, जिस पर अभी अभी एक शहीद हो चुका था.

क़ातिल के मददगार यह अच्छी तरह समझ लें कि हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानी सरकार लियाक़त अली ख़ाँ के जीते जी भले ही उनके कुछ कामों को शक की नज़र से देखती हों पर उनकी शहादत के बाद तो हिन्दुस्तान और उसकी सरकार उनके हर काम का वह मतलब निकालती है जिस की वजह से शहीद पर कोई शक नहीं रह जाता.

शहीद की ज़िन्दगी में हिन्दुस्तान पर हमले का शोर ज़रूर मचा पर वह हुआ कहां. काश्मीर पर भी जो हमला हुआ था उसके बारे में यह कहना ज़रा मुशकिल है कि इस में उनका हाथ था. असल में राज काजी मैदान में कूद कर कभी कभी कुछ ऐसे काम करने पड़ते हैं जो देखने में बुरे और बेहूदा मालूम होते हैं पर उनके पीछे जो मन्शा रहती है वह बड़ी नेक और समझदारी की हो सकती है. इस लिये उन बुरे और बेहूदा कामों का नतीजा होने से पहले कोई नतीजा निकाल बैठना ख़तरे से ख़ाली नहीं होता और जभी तो मुल्कों की सरकारें आम आदमियों की तरह से न जल्दी भड़कती हैं और न जल्दी कुछ कर बैठती हैं. आज ही हिन्दुस्तान में देख लीजिये आने वाले चुनाव की ख़ातिर क्या क्या शगूफ़े नहीं खिलाये जा रहे हैं.

क़त्ल की तहक़ीक़ात पाकिस्तान में जारी है. अफ़ग़ानिस्तान ने क़ातिल को अफ़ग़ानी मानने से इनकार कर दिया है और यूंही नहीं इनकार किया उसके पास इनकार का पक्का सबूत भी है.

اسی تعلیم کا تو یہ اثر ہے کہ اب یہ نہیں کہا جاسکتا کہ یہ قتل راج کاجی قتل تھا اور اس ذرا سی بھول اور بے پرواہی کا یہ نتیجہ ہوسکتا ہے کہ اور دو چار بے گناہوں کو اسی طرح اپنی جان سے ہاتھ دھونا پڑے ۔

نہ جانے کیوں حضرت عیسی' حسین اور مہاتما گاندھی کی شہادتیں ان قاتلوں کو یہ سبق نہیں دیتیں کہ اس طرح کے قتل اس اصول کو کوئی دھکا نہیں پہونچا سکتے جس اصول کی جڑ کاٹنے کے خیال سے یہ قاتل اتنا بڑا گناہ کر بیٹھتے ہیں ؟ یہ کیوں ان کی سمجھ میں نہیں آتا کہ انسانی خون سے اصول کی جڑیں سینچتی ہیں کٹتی نہیں اور جس انسان کا خون ہوتا ہے وہ انسان شہیدوں میں شامل ہوکر اسی اصول کے پودھے میں ایک شاخ کا اور اضافہ کردیتا ہے ۔

کیا قاتل اور قاتل کے مددگار اپنی آنکھوں یہ نہیں دیکھ رہے کہ ایک منٹ بھی مقتول کی گدی خالی نہیں رہی ۔ فوراً ہی تو انہیں جتنے مضبوط ناظم الدین صاحب نے گورنر جنریلی کو لات مار کر وزارت کی اس گدی کو سنبھال لیا جس پر ابھی ابھی ایک شہید ہوچکا تھا ۔

قاتل کے مددگار یہ اچھی طرح سمجھ لیں کہ ہندستان اور ہندستانی سرکار لیاقت علی خاں کے جیتے جی بھلے ہی ان کے کچھ کاموں کو شک کی نظر سے دیکھتی ہوں پر ان کی شہادت کے بعد تو ہندستان اور اس کی سرکار اس کے ہر کام کا وہ مطلب نکالتی ہے جسکی وجہ سے شہید پر کوئی شک نہیں رہ جاتا ۔

شہید کی زندگی میں ہندستان پر حملے کا شور ضرور مچا پر وہ ہوا کہاں ۔ کاشمیر پر بھی جو حملہ ہوا تھا اس کے بارے میں یہ کہنا ذرا مشکل ہے کہ اس میں ان کا ہاتھ تھا ۔ اصل میں راج کاجی میدان میں کود کر کبھی کبھی کچھ ایسے کام کرنے پڑتے ہیں جو دیکھنے میں برے اور بیہودہ معلوم ہوتے ہیں پر ان کے پیچھے جو منشا رہتی ہے وہ بڑی نیک اور سمجھداری کی ہو سکتی ہے ۔ اسلئے ان برے اور بیہودہ کاموں کا نتیجہ ہونے سے پہلے کوئی نتیجہ نکال بیٹھنا خطرے سے خالی نہیں ہوتا اور جبھی تو ملکوں کی سرکاریں عام آدمیوں کی طرح سے نہ جلدی بھڑکتی ہیں اور نہ جلدی کچھ کر بیٹھتی ہیں ۔ آج ہی ہندستان میں دیکھ لیجئے آنے والے چناؤ کی خاطر کیا کیا شگوفے نہیں کھلائے جا رہے ہیں ۔

قتل کی تحقیقات پاکستان میں جاری ہے ۔ افغانستان نے قاتل کو افغانی ماننے سے انکار کر دیا ہے اور یوں ہی نہیں انکار کر دیا اس کے پاس انکار کا پکا ثبوت بھی ہے ۔

अमरीकी और रूसी गुट से ऐटलांटिक और पैसिफ़िक पैक्टों से या और इसी तरह के गठ बन्धनों से यू. एन. ओ. की शान नहीं बढ़ती, ताक़त तो बढ़ ही कैसे सकती है. जब तक यू. एन. ओ. इन गुटों और पैक्टों को अपने ऊपर कलंक का धब्बा नहीं मानेगा तब तक ऐसे अग्रेशन होते ही रहेंगे जैसा आज स्वेज पर हो रहा है.

यू. एन. ओ. के जन्म लेने के दिन से और किनही मानों में भी ताक़त में आने के बाद से कभी कोई ऐसा अग्रेशन हुआ है जिसको सब मुल्कों ने अग्रेशन माना हो. यू. एन. ओ. में गुटबन्दी के रहते अग्रेशन आग लगने की तरह मूर्ख से मूर्ख आदमी के लिये अग्रेशन रहेगा. पर गुट्ट में बंधे समझदार मुल्कों की नज़र में वह बचाव की लड़ाई या ऐसा ही कुछ नाम पायगा.

यह सब कह कर हम मिस्र को यही सलाह देते हैं कि वह यू. एन. ओ. की तरफ़ आंख न उठा कर अपने दिल को जांचे और अल्लाह पर भरोसा कर के ईमानदारी के साथ अहिंसात्मक लड़ाई छेड़ दे. यही एक ऐसी लड़ाई है जिसकी हार को दुनिया के लोग जीत के नाम से पुकारते हैं.

27 . 10 . '51 —भगवानदीन

लियाक़त अली ख़ां—

16 अक्तूबर को रावलपिंडी में जैसे ही नवाबज़ादा लियाक़त अली ख़ां बोलने के लिये खड़े हुए कि किसी ने उन पर गोली दाग़ दी और वह थोड़ी देर के बाद ही अस्पताल में इस दुनिया को छोड़ कर चल दिये.

जैसे ही यह ख़बर रेडियो से दिल्ली पहुँची तो दिल्ली की सरकार के अन्दर सब बातें भूल कर, शहीद के साथ जो पुरानी हम वतनियत थी वह जाग उठी और उन्हें वैसा ही अफ़सोस हुआ जैसा किसी और मशहूर हमवतन के बारे में होता. और फिर हिन्दुस्तानी सरकार ने उसी ख़याल के मुताबिक़ इज़हार भी किया. यह बहुत ठीक किया.

मौत एक दिन सबको आनी है और किसी न किसी को आए दिन आती ही रहती है, पर इस तरह पिस्तौल की गोली पर सवार हो कर आई हुई मौत दिल या दिलों पर गहरा निशान छोड़े बग़ैर नहीं जाती और उन निशानों से मजबूर हो कर ही दिल को ज़ुबान और क़लम के ज़रिये सामने आना ही पड़ता है.

राजकाजी क़त्ल आज कल ज़ोरों पर हैं और हो सकता है यह क़त्ल भी उसी ज़ंजीर की एक कड़ी हो. पर मुश्किल तो यह है कि पाकिस्तान की जनता कुछ इस तरह की तालीम पाए हुए है कि वह ऐसे नाज़ुक मौक़ों पर अपना समतोल (तवाज़ुन) खो बैठती है और क़ानून को अपने हाथ में लेकर क़ानूनी तहक़ीक़ात को बेकार बना देती है.

امریکی اور روسی گٹ سے اٹلانٹک اور پیسفک پیکٹوں سے یا اور اسی طرح کے گٹھ بندھنوں سے یو . این . او . کی شان نہیں بڑھتی' طاقت تو بڑھ ہی کیسے سکتی ہے . جب تک یو . این . او . ان گٹوں اور پیکٹوں کو اپنے اوپر کلنک کا دھبہ نہیں مانے گی تب تک ایسے اگریشن ہوتے ہی رہیں گے جیسا آج سوئز پر ہورہا ہے .

یو . این . او . کے جنم لینے کے دن سے اور کنہی معنوں میں بھی طاقت میں آنے کے بعد سے کبھی کوئی ایسا اگریشن ہوا ہے جسکو سب ملکوں نے اگریشن مانا ہو . یو . این . او . میں گٹ بندی کے رہتے اگریشن آگ لگنے کی طرح مورکھ سے مورکھ آدمی کے لئے اگریشن رہے گا . پر گٹ میں بندھے سمجھدار ملکوں کی نظر میں وہ بچاؤ کی لڑائی یا ایسا ہی کچھ نام پائے گا .

یہ سب کہکر ہم مصر کو یہی صلاح دیتے ہیں کہ وہ یو . این . او . کی طرف آنکھ نہ اٹھاکر اپنے دل کو جانچے اور اللہ پر بھروسہ کرکے ایمانداری کے ساتھ اہنساتمک لڑائی چھیڑ دے . یہی ایک ایسی لڑائی ہے جس کی ہار کو دنیا کے لوگ جیت کے نام سے پکارتے ہیں .

27 . 10 . '51 —بھگوان دین

لیاقت علی خاں—

16 اکتوبر کو راولپنڈی میں جیسے ہی نواب زادہ لیاقت علی خاں بولنے کے لئے کھڑے ہوئے کہ کسی نے ان پر گولی داغ دی اور وہ تھوڑی دیر کے بعد ہی اسپتال میں اس دنیا کو چھوڑ کر چل دئے .

جیسے ہی یہ خبر ریڈیو سے دلی پہونچی تو دلی کی سرکار کے اندر سب باتیں بھول کر' شہید کے ساتھ جو پرانی ہم وطنیت تھی وہ جاگ اٹھی اور انہیں ویسا ہی افسوس ہوا جیسا کسی اور مشہور ہم وطن کے بارے میں ہوتا . اور پھر ہندستانی سرکار نے اسی خیال کے مطابق اظہار بھی کیا . یہ بہت ٹھیک کیا .

موت ایک دن سب کو آنی ہے اور کسی نہ کسی کو آئے دن آتی ہی رہتی ہے' پر اس طرح پستول کی گولی پر سوار ہوکر آئی ہوئی موت دل یا دلوں پر گہرا نشان چھوڑے بغیر نہیں جاتی . اور ان نشانوں سے مجبور ہوکر ہی دل کو زبان اور قلم کے ذریعے سامنے آنا ہی پڑتا ہے .

راج کاجی قتل آج کل زوروں پر ہیں اور ہوسکتا ہے یہ قتل بھی اسی زنجیر کی ایک کڑی ہو . پر مشکل تو یہ ہے کہ پاکستان کی جنتا کچھ اس طرح کی تعلیم پائے ہوئے ہے کہ وہ ایسے نازک موقعوں پر اپنا سمتول (توازن) کھو بیٹھتی ہے اور قانون کو اپنے ہاتھ میں لے کر قانونی تحقیقات کو بیکار بنادیتی ہے .

बरतानिया के अपरेशन का मुक़ाबला हमले से नहीं करेगा, वह बाईकाट के हथियार से करेगा. पर यह हमारी समझ मे बिलकुल नहीं आता कि वह शान्ति भंजक यानी अमन और खामियत वाली और यू. एन. ओ. की सुरक्षा कौंसिल नाम वाली संस्था के पास क्या मांगने जा रहा है. वहां उसे हाथ आएगा बरसों का झमेला, और जब तक स्वेज़ के मैदान में बरतानिया के हर तरह के अड्डे तैयार हो चुकेंगे और क्या अजब कि उस सुरक्षा कौंसिल के कोई दो टूक फ़ैसला मिलने से पहले तीसरी लड़ाई खड़ी हो जाय और फिर अप्रेशन का सवाल ही न रह जाय.

मिस्र कौन कम है! उसने भी मौक़े बे मौक़े किसी न किसी गुट्ट में मिल कर ऐसे क़दम उठाए हैं जिन से बरतानिया को मदद मिली है और आज बरतानिया उसी मदद से फ़ायदा उठाकर अपने मदद देने वाले मिस्र पर ज़बरदस्ती कर बैठा है.

चर्चिल के हाथ में इस वक़्त बरतानिया की ताक़त की बाग डोर आ जाना कुछ कम मारके की बात नहीं है. अब यह उम्मीद करना मुशकिल है कि स्वेज़ के मैदान से बरतानिया की फ़ौजें जल्दी ही लौट जायंगी.

इस वजह से नहीं कि मिस्र कमज़ोर है बल्कि इस वजह से कि अहिंसा का हथियार कभी न चूकने वाला हथियार है, हम मिस्र को यही सलाह देंगे कि वह स्वेज़ के मामले में ज़रा भी क़दम पीछे न हटाए और इस यज्ञ में शक्ति भर आहुतियां दे डाले. उसकी जीत होगी क्योंकि उसके अहिंसक हथियार पर सच्चाई का पानी चढ़ा हुआ है. पुराने सुलहनामे ग़ुलामी के पट्टे हैं, उन पट्टों को ठीक मानना गुनाह है, उन पर अमल दरामद करना सत्य को पांव से कुचलना है, उनकी इज़्ज़त करना ईश्वर से विमुख होना है, उन पट्टों को ग़लत मानना धर्म है, उन पट्टों पर अमल न करना सच्चाई को सिर पर बिठाना है. उन पट्टों को ठुकराना और बे इज़्ज़ती की नज़र से देखना ईश्वर और अल्लाह पर विश्वास करना है.

उन छोटे छोटे मुल्कों को जो बे समझे बूझे किसी भी गुट्ट में शामिल हो गए हैं मिस्र के इस स्वेज़ नहर के मामले से सबक़ लेना चाहिये और यह अच्छी तरह समझ रखना चाहिये कि किसी भी दिन उनको अपने यहां जहाज़ी और हवाई अड्डों के लिये मजबूर किया जा सकता है. छोटे छोटे मुल्क अब भी गुट्ट से निकल कर एक बहुत बड़ी ताक़त बन सकते हैं और अपनी इख़लाक़ी आवाज़ उठा कर अमरीका और रूस दोनों को ही ठीक राह पर आने के लिये मजबूर कर सकते हैं और यू. एन. ओ. को सच्चे मानों में अमन की संस्था में तबदील कर सकते हैं.

برطانیہ کے آپریشن کا مقابلہ حملے سے نہیں کریگا' وہ بائیکاٹ کے ہتھیار سے کریگا. پر یہ ہماری سمجھ میں بالکل نہیں آتا کہ وہ شانتی بھنجک یعنی امن خور خاصیت والی اور یو. این. او. کی سورکشا کونسل نام والی سنستھا کے پاس کیا مانگنے جا رہا ہے. وہاں اسے ہاتھ آئے گا برسوں کا جھمیلا. اور جب تک سوئز کے میدان میں برطانیہ کے ہر طرح کے اڈے تیار ہوچکیں گے اور کیا عجب کہ اُس سورکشا کونسل کے کوئی دو ٹوک فیصلہ ملنے سے پہلے تیسری لڑائی کھڑی ہوجائے اور پھر آپریشن کا سوال ہی نہ رہ جائے.

مصر کون کم ہے! اُس نے بھی موقعے بے موقعے کسی نہ کسی گٹ میں ملکر ایسے قدم اُٹھائے ہیں جن سے برطانیہ کو مدد ملی ہے اور آج برطانیہ اُسی مدد سے فائدہ اُٹھاکر اپنے مدد دینے والے مصر پر زبردستی کر بیٹھا ہے.

چرچل کے ہاتھ میں اِس وقت برطانیہ کی طاقت کی باگ ڈور آجانا کچھ کم معرکے کی بات نہیں ہے. اب یہ اُمید کرنا مشکل ہے کہ سوئز کے میدان سے برطانیہ کی فوجیں جلدی ہی لوٹ جائیں گی.

اِس وجہ سے نہیں کہ مصر کمزور ہے بلکہ اِس وجہ سے کہ اہنسا کا ہتھیار کبھی نہ چوکنے والا ہتھیار ہے' ہم مصر کو یہی صلاح دیں گے کہ وہ سوئز کے معاملے میں ذرا بھی قدم پیچھے نہ ہٹائے اور اِس یگیہ میں شکتی بھر آہوتیاں دے ڈالے. اُس کی جیت ہوگی کیونکہ اُس کے اہنسک ہتھیار پر سچائی کا پانی چڑھا ہوا ہے. پرانے صلحنامے غلامی کے پٹے ہیں' اُن پٹوں کو ٹھیک ماننا گناہ ہے' اُن پر عمل درآمد کرنا ستیہ کو پاؤں سے کچلنا ہے' اُن کی عزت کرنا ایشور سے وِمکھ ہونا ہے' اُن پٹوں کو غلط ماننا دھرم ہے' اُن پٹوں پر عمل نہ کرنا سچائی کو سر پر بٹھانا ہے. اُن پٹوں کو ٹھکرانا اور بے عزتی کی نظر سے دیکھنا ایشور اور اللہ پر وشواس کرنا ہے.

اُن چھوٹے چھوٹے ملکوں کو جو بے سمجھے بوجھے کسی بھی گٹ میں شامل ہوگئے ہیں مصر کے اِس سوئز نہر کے معاملے سے سبق لینا چاہئے اور یہ اچھی طرح سمجھ رکھنا چاہئے کہ کسی بھی دن اُن کو اپنے یہاں جہازی اور ہوائی اڈوں کے لئے مجبور کیا جاسکتا ہے. چھوٹے چھوٹے ملک اب بھی گٹ سے نکل کر ایک بہت بڑی طاقت بن سکتے ہیں اور اپنی اخلاقی آواز اُٹھاکر امریکہ اور روس دونوں کو ہی ٹھیک راہ پر آنے کے لئے مجبور کرسکتے ہیں اور یو. این. او. کو سچے معنوں میں امن کی سنستھا میں تبدیل کرسکتے ہیں.

चीन की बे परवाही से कुछ इस तरह दबाया गया कि इने गिने ही कुछ आदमी जान पाये. इस दबाने का नतीजा यह हुआ कि दक्खिनी कोरिया की तरफ से छेड़ छाड़ बढ़ती रही और आखिर एक दिन उत्तरी कोरिया को इस छेड़ छाड़ से तंग आ कर अपने बचाव के लिये दक्खिनी कोरिया पर बाक़ायदा हमला करना पड़ा. इस जग ज़ाहिर सच्चाई की हु हुल्लड़ मचा कर कभी जांच न होने दी गई. बस इस वजह से कोरिया का हमला अग्रेशन बन गया. चट पट अमरीका की चालाकी से अमन की संस्था यू. एन. ओ. लड़ाई की संस्था में तबदील हो गई और उसने अपनी फ़ौजों को अमरीकी जनरल की मातहती में कोरिया लड़ने के लिये भेज दिया. उत्तरी और दक्खिनी कोरिया आज इतना मिट चुका है कि अगर विदेशी फ़ौजें वहां से हट जायं तो कोरिया में उल्लू वाली शान्ति और अमन का राज ही दिखाई दे. अगर ऐसी ही शान्ति और अमन यू. एन. ओ. का आदर्श है तो यू. एन. ओ. ज़रूर सफल हुई है और ऐसी सफलता तो वह आसानी से स्वेज़ के मैदान में भी हासिल कर सकती है.

बरतानिया से फ़ौजें चली आ रही हैं, स्वेज़ के मैदान पर इकट्ठी हो रही हैं मानो वहां कोई कठ पुतली का तमाशा था जिसे देखने के लिये वह आई थीं. बरतानिया से जहाज़ी बेड़ा चला आ रहा है, उड़न खटोलों का दस्ता चला आ रहा है मानो स्वेज़ के मैदान में फ़ुटबाल का मैच हो रहा हो. यह कारवाई सारे मुल्क देख रहे हैं और मिस्र को छोड़ वह 51 मुल्क भी देख रहे हैं जो यू. एन. ओ. में शामिल हैं पर इसे वह अग्रेशन नहीं कह सकते क्योंकि अमरीका ने कभी उसे अग्रेशन नहीं कहा. और अगर रूस या और कोई मुल्क उसे अग्रेशन कह भी दे तो उसकी सुनता ही कौन है क्योंकि यू. एन. ओ. में उसकी गुट की गिनती बहुत थोड़ी है. आज कल के नये क़ानून के मुताबिक़ आदमी मरने पर भी मरा हुआ नहीं माना जा सकता, अगर कोई डाक्टर उसे मरने की सनद न दे. बरतानिया अगर मिस्र को तहस नहस भी कर दे तो वह जब तक अग्रेशन नहीं समझा जा सकता जब तक यू. एन. ओ. का मंत्री जी उसे अग्रेशन न कह दे, यह आज की दुनिया का क़ानून है. हिन्दुस्तान में जब अंगरेज़ी राज था तो क़ानून की उस तरह की अनोखी अनोखी बातें सुनने में आया करती थीं. मरने वाला अभी ज़िन्दा है पर उसके मारने वाले को फाँसी की सज़ा हो गई और फांसी पर चढ़ा भी दिया गया और उसकी लाश की आखिरी क्रिया भी कर दी गई. आज यू. एन. ओ. के फ़ैसले भी कुछ ऐसे अनोखे होते हैं. बे दिल की संस्था से और उम्मीद भी क्या की जा सकती है.

मिस्र ने ठीक ही सोचा है कि वह अभी कुछ दिनों

چین کی بے پرواھی سے کچھ اسطرح دبایا گیا کہ اِنے گنے ھی کچھ آدمی جان پائے. اس دبانے کا نتیجہ یہ ھوا کہ دکھنی کوریا کی طرف سے چھیڑ چھاڑ بڑھتی رھی اور آخر ایک دن اُتری کوریا کو اس چھیڑ چھاڑ سے تنگ آکر اپنے بچاو کے لئے دکھنی کوریا پر باقاعدہ حملہ کرنا پڑا. اس جگ ظاھر سچائی کی ھو ھلڑ مچا کر کبھی جانچ نہ ھونے دی گئی. بس اِس وجہ سے کوریا کا حملہ اگریشن بن گیا اور چٹ پٹ امریکہ کی چالاکی سے امن کی سنستھا یو. این. او. لڑائی کی سنستھا میں تبدیل ھوگئی اور اُس نے اپنی فوجوں کو امریکی جنرل کی ماتحتی میں کوریا لڑنے کے لئے بھیج دیا. اُتری اور دکھنی کوریا آج اتنا مٹ چکا ھے کہ اگر ودیشی فوجیں وھاں سے ھٹ جائیں تو کوریا میں اُلو والی شانتی اور امن کا راج ھی دکھائی دے. اگر ایسی ھی شانتی اور امن یو. این. او. کا آدرش ھے تو یو. این. او. ضرور سپھل ھوئی ھے اور ایسی سپھلتا تو وہ آسانی سے سوئز کے میدان میں بھی حاصل کر سکتی ھے.

برطانیہ سے فوجیں چلی آرھی ھیں، سوئز کے میدان پر اکٹھی ھو رھی ھیں مانو وھاں کوئی کٹھ پتلی کا تماشہ تھا جسے دیکھنے کے لئے وہ آئی تھیں. برطانیہ سے جہازی بیڑا چلا آ رھا ھے، اُڑن کھٹولوں کا دستہ چلا آ رھا ھے مانو سوئز کے میدان میں فٹ بال کا میچ ھو رھا ھو. یہ کاروائی سارے ملک دیکھ رھے ھیں اور مصر کو چھوڑ وہ 51 ملک بھی دیکھ رھے ھیں جو یو. این. او. میں شامل ھیں پر اسے وہ اگریشن نہیں کہہ سکتے کیونکہ امریکہ نے کبھی اُسے اگریشن نہیں کہا. اور اگر روس یا اور کوئی ملک اُسے اگریشن کہہ بھی دے تو اُس کی سنتا ھی کون ھے کیونکہ یو. این. او. میں اُسکی گٹ کی گنتی بہت تھوڑی ھے. آجکل کے نئے قانون کے مطابق آدمی مرنے پر بھی مرا ھوا نہیں مانا جاسکتا، اگر کوئی ڈاکٹر اُسے مرنے کی سند نہ دے. برطانیہ اگر مصر کو تہس نہس بھی کر دے تو وہ جب تک اگریشن نہیں سمجھا جا سکتا جب تک یو. این. او. کا منتری جی اُسے اگریشن نہ کہہ دے، یہ آج کی دنیا کا قانون ھے. ھندستان میں جب انگریزی راج تھا تو قانون کی اس طرح کی انوکھی انوکھی باتیں سننے میں آیا کرتی تھیں. مرنے والا ابھی زندہ ھے پر اُس کے مارنے والے کو پھانسی کی سزا ھوگئی اور پھانسی پر چڑھا بھی دیا گیا اور اُسکی لاش کی آخری کریا بھی کر دی گئی. آج یو. این. او. کے فیصلے بھی کچھ ایسے انوکھے ھوتے ھیں. بے دل کی سنستھا سے اور اُمید بھی کیا کی جا سکتی ھے.

مصر نے ٹھیک ھی سوچا ھے کہ وہ ابھی کچھ دنوں

स्वेज़ नहर और मिस्र—

स्वेज़ की नहर जो मिस्र से लगी हुई है और जिस पर मिस्र की मालिकी से शायद ही किसी को इनकार हो अब तक बरतानिया की दुकान बनी हुई थी, दो चार दिन से छावनी हो गई है और क्या अजब कुछ दिनों में नौ-आबादी का रूप लेले.

योरप के छोटे छोटे मुल्क न जाने कब से किसी तरह से एशिया और अफ़रीक़ा के बड़े बड़े मुल्कों के छोटे छोटे हिस्सों के मालिक बन बैठे हैं और हमेशा के लिये उसके मालिक बने रहना चाहते हैं. यह बात अपने आप में तो बुरी है ही पर इस में एक बुराई और है और वह यह कि योरप के जिन मुल्कों के हाथ में एशिया और अफ़रीक़ा के ऐसे हिस्से नहीं हैं उनकी ऐसे हिस्से पाने के लिये राल टपकती रहती है. और अगर वह अमरीका जितने ताक़तवर या चालाक बन जायं तो जल्दी ही एशिया या अफ़रीक़ा के किसी न किसी हिस्से पर क़ब्ज़ा कर बैठें और क्या अजब दो ही दिन में वह उस हिस्से को ऐसा समझने लगें मानों उन्हें मीरास में ही मिला हो.

हाल ही में जापान के दो दक्खिनी टापुओं पर देख रेख के बहाने अमरीका डट गया है और सिर्फ़ इस वजह से कि वह ताक़तवर और चालाक है. अमरीका के मुक़ाबले का चालाक अगर रूस होता तो उन टापुओं का मालिक अमरीका हरगिज़ नहीं होता. या तो फिर रूस ख़ुद होता या अपने गुट के किसी और को वहां बिठा देता. जापान के इन दक्खिनी टापुओं पर अमरीका किसी नाते भी डटा सही डट ज़रूर गया है. और रूस इस मामले में चुप रहा इसकी वजह यह है कि जापान के दो उत्तरी टापुओं पर वह ख़ुद आसन जमाए हुए है.

इस तरह का बेतुका पन सारी दुनिया में छाया हुआ है. और फिर भी यू. एन. ओ. नाम की संस्था न मालूम किस हवाई की चादर ओढ़ कर यह कह रही है कि वह दुनिया भर की पंचायत है, दुनिया भर का भला चाहती है और दुनिया भर में अमन फैलाना चाहती है.

स्वेज़ पर बरतानिया की गोली से मिस्र के आदमी का मरना और आदमियों का घायल होना सुनकर हमें कोरिया की याद आ जाती है. वहां भी शुरू में ख़ुद अमरीकियों ने या अमरीका के इशारे पर दक्खिनी कोरिया के लोगों ने उत्तरी कोरिया के ख़िलाफ़ छेड़ छाड़ शुरू की थी पर उन दिनों दूसरी बड़ी लड़ाई का नशा लोगों के दिल से इतना न उतर पाया था कि दुनिया के और मुल्क उस दक्खिनी कोरिया की छेड़ छाड़ की तरफ़ निगाह डालते, इसलिये यह मामला अमरीका की मदद से और रूस और

سوئز نہر اور مصر—

سوئز کی نہر جو مصر سے لگی ہوئی ہے اور جس پر مصر کی مالکی سے شائد ہی کسی کو انکار ہو' ابھی تک برطانیہ کی دوکان بنی ہوئی تھی' دو چار دن سے چھاونی ہوگئی ہے اور کیا عجب کچھ دنوں میں نوآبادی کا روپ لے لے.

یورپ کے چھوٹے چھوٹے ملک نہ جانے کب سے کسی طرح سے ایشیا اور افریقہ کے بڑے بڑے ملکوں کے چھوٹے چھوٹے حصوں کے مالک بن بیٹھے ہیں اور ہمیشہ کے لئے اُسکے مالک بنے رہنا چاہتے ہیں. یہ بات اپنے آپ میں تو بری ہے ہی پر اِس میں ایک برائی اور ہے اور وہ یہ کہ یورپ کے جن ملکوں کے ہاتھ میں ایشیا اور افریقہ کے ایسے حصے نہیں ہیں اُنکی ایسے حصے پانے کے لئے رال ٹپکتی رہتی ہے. اور اگر وہ امریکہ جتنے طاقتور یا چالاک بن جائیں تو جلدی ہی ایشیا یا افریقہ کے کسی نہ کسی حصے پر قبضہ کر بیٹھیں اور کیا عجب دو ہی دن میں اُس حصے کو ایسا سمجھنے لگیں مانو اُنہیں میراث میں ہی ملا ہو.

حال ہی میں جاپان کے دو دکھنی ٹاپوؤں پر دیکھ ریکھ کے بہانے امریکہ ڈٹ گیا ہے اور صرف اِس وجہ سے کہ وہ طاقتور اور چالاک ہے. امریکہ کے مقابلے کا چالاک اگر روس ہوتا تو اُن ٹاپوؤں کا مالک امریکہ ہرگز نہیں ہوتا. یا تو پھر روس خود ہوتا یا اپنے گٹ کے کسی اور کو وہاں بٹھا دیتا. جاپان کے اِن دکھنی ٹاپوؤں پر امریکہ کسی ناتے بھی ڈٹا سہی' ڈٹ ضرور گیا ہے. اور روس اِس معاملے میں چپ رہا اِسکی وجہ یہ ہے کہ جاپان کے دو اُتری ٹاپوؤں پر وہ خود آسن جمائے ہوئے ہے.

اِس طرح کا بے تکاپن ساری دنیا میں چھایا ہوا ہے. پھر بھی یو. این. او. نام کی سنستھا نہ معلوم کس ہوائی کی چادر اوڑھ کر یہ کہہ رہی ہے کہ وہ دنیا بھر کی پنچایت ہے' دنیا بھر کا بھلا چاہتی ہے اور دنیا بھر میں امن پھیلانا چاہتی ہے.

سوئز پر برطانیہ کی گولی سے مصر کے آدمی کا مرنا اور آدمیوں کا گھائل ہونا سنکر ہمیں کوریا کی یاد آجاتی ہے. وہاں بھی شروع میں خود امریکیوں نے یا امریکہ کے اشارے پر دکھنی کوریا کے لوگوں نے اُتری کوریا کے خلاف چھیڑ چھاڑ شروع کی تھی پر اُن دنوں دوسری بڑی لڑائی کا نشہ لوگوں کے دل سے اتنا نہ اُتر پایا تھا کہ دنیا کے اور ملک اُس دکھنی کوریا کی چھیڑ چھاڑ کی طرف نگاہ ڈالتے' اِسلئے وہ معاملہ امریکہ کی مدد سے اور روس اور

नहीं रह गई कि वह दुनिया की कोई भलाई कर सकती है. इस ऐटम युग में वह संस्था ऐटम बम से मिट भर सकती है, ऐटम की ताक़त से कोई ऐसी करामात नहीं दिखा सकती जिससे दुनिया के सब मुल्कों के खुराक, कपड़े और मकान का सवाल हल हो सके. और उनका इस तरह सोचना ठीक ही है कि अगर यह सवाल पूरी तरह हल हो जाय और आसानी से हल हो जाय तो फिर क्यों अमरीका कोरिया में लड़ने के लिये जाय, और क्यों रूस बरतानिया को आंख दिखाए, और क्यों जापान चीन से घबराए, और क्यों आस्ट्रेलिया जापान से बच न पाए, और क्यों एक मुल्क दूसरे मुल्क में अपने हवाई अड्डे बनाने की सोचे, और क्यों एक मुल्क दूसरे मुल्क के पानी में अपने जहाज़ी बेड़े के लिये अड्डा बनाने की बात चीत करे.

यू. एन. ओ. अगर ज़िन्दा रहना चाहती है तो उसे सच्चे मानों में अमन की संस्था बनना होगा और इन बड़ी बड़ी ताक़तों के आपसी झगड़ों में पड़कर ऐसे मामलों में पड़ने से बचना होगा जो अमन से ताल्लुक़ नहीं रखते. उन मुल्कों को बहुत जल्दी अपने में शामिल करना होगा जो उसमें मिलना चाहते हैं और जो मुल्क किसी वजह से उसमें मिलना नहीं चाहते उनके अमन की ज़िम्मेदारी उसको अपने ऊपर ओढ़नी होगी. इसका यह मतलब हरगिज़ न समझा जाय कि उन मुल्कों के अन्दरूनी झगड़ों में उसे पड़ने की ज़रूरत है. हमारे कहने का सिर्फ़ यही मतलब है कि यू. एन. ओ. की यह ज़िम्मेदारी है कि वह ऐसे मुल्कों पर जो उसमें शामिल नहीं हैं किसी दूसरे मुल्क का हमला न होने दे और अगर किसी वजह से यह उसके बस के बाहर की बात हो तो वह इख़लाक़ी हथियार से काम ले और हमला रोकने के लिये ऐसी बड़ी पंचायत का यह हथियार बड़े काम का साबित होगा.

लाल चीन फिर चाहे वह किसी भी वजह से क्यों न हो अगर यू. एन. ओ. में शामिल नहीं है तब यू. एन. ओ. की यह सब से बड़ी ज़िम्मेदारी है कि वह रूस, जापान, हिन्दुस्तान, बरतानिया, अमरीका या दुनिया के किसी मुल्क का भी चीन पर हमला न होने दे. और अगर कोई हमला कर ही दे तो उसे इख़लाक़ी मदद न दे. फिर चीन को क्या पड़ी कि वह यू. एन. ओ. को बुरी नज़र से देखे. पर यू. एन. ओ. ऐसी भली संस्था बनने से पहले चीन को अपने में मिला ही लेगी क्योंकि चीन तो मिलना चाहता है.

परमात्मा करे नये बरस में क़दम रखते यू. एन. ओ. के मालिकों को सच्ची समझ आए और हमेशा के लिये न सही दस बीस बरसों के लिये ही शान्ति की बहार सारी दुनिया में फैल जाय और दुनिया एक भाई चारे के रिश्ते में बंध जाय.

25-10-'51 —भगवानदीन

نہیں رہ گئی کہ وہ دنیا کی کوئی بھلائی کر سکتی ہے . اس ایٹم یگ میں یہ سنستھا ایٹم بم سے مٹ بھر سکتی ہے' ایٹم کی طاقت سے کوئی ایسی کرامات نہیں دکھا سکتی جس سے دنیا کے سب ملکوں کے خوراک' کپڑے اور مکان کا سوال حل ہوسکے . اور اُن کا اسطرح سوچنا ٹھیک ہی ہے کہ اگر یہ سوال پوری طرح حل ہوجائے اور آسانی سے حل ہوجائے تو پھر کیوں امریکہ کوریا میں لڑنے کے لئے جائے' اور کیوں روس برطانیہ کو آنکھ دکھائے' اور کیوں جاپان چین سے گھبرائے' اور کیوں آسٹریلیا جاپان سے بچ نہ پائے' اور کیوں ایک ملک دوسرے ملک میں اپنے ہوائی اڈے بنانے کی سوچے' اور کیوں ایک ملک دوسرے ملک کے پانی میں اپنے جہازی بیڑے کے لئے اڈا بنانے کی بات چیت کرے .

یو . این . او . اگر زندہ رہنا چاہتی ہے تو اُسے سچے معنوں میں امن کی سنستھا بننا ہوگا اور ان بڑی بڑی طاقتوں کے آپسی جھگڑوں میں پڑ کر ایسے معاملوں میں پڑنے سے بچنا ہوگا جو اُن سے تعلق نہیں رکھتے . اُن ملکوں کو بہت جلدی اپنے میں شامل کرنا ہوگا جو اسمیں ملنا چاہتے ہیں اور جو ملک کسی وجہ سے اسمیں ملنا نہیں چاہتے اُن کے امن کی ذمے داری اُسکو اپنے اوپر اوڑھنی ہوگی . اِسکا یہ مطلب ہرگز نہ سمجھا جائے کہ اُن ملکوں کے اندرونی جھگڑوں میں اُسے پڑنے کی ضرورت ہے . ہمارے کہنے کا صرف یہی مطلب ہے کہ یو . این . او . کی یہ ذمے داری ہے کہ وہ ایسے ملکوں پر جو اُس میں شامل نہیں ہیں کسی دوسرے ملک کا حملہ نہ ہونے دے اور اگر کسی وجہ سے یہ اُس کے بس کے باہر کی بات ہو تو وہ اِخلاقی ہتھیار سے کام لے اور حملہ روکنے کے لئے ایسی بڑی پنچایت کا یہ ہتھیار بڑے کام کا ثابت ہوگا .

لال چین پھر چاہے وہ کسی بھی وجہ سے کیوں نہ ہو اگر یو . این . او . میں شامل نہیں ہے تب یو این . او . کی یہ سب سے بڑی ذمہ داری ہے کہ وہ روس' جاپان' ہندستان' برطانیہ' امریکہ یا دنیا کے کسی ملک کا بھی چین پر حملہ نہ ہونے دے اور اگر کوئی حملہ کر ہی دے تو اُسے اخلاقی مدد نہ دے . پھر چین کو کیا پڑی کہ وہ یو . این . او . کو بری نظر سے دیکھے . پر یو . این . او . ایسی بھلی سنستھا بننے سے پہلے چین کو اپنے میں ملا ہی لے گی کیونکہ چین تو ملنا چاہتا ہے .

پرماتما کرے نئے برس میں قدم رکھتے یو . این . او . کے مالکوں کو سچی سمجھ آئے اور ہمیشہ کے لئے نہ سہی دس بیس برسوں کے لئے ہی شانتی کی بہار ساری دنیا میں پھیل جائے اور دنیا ایک بھائی چارے کے رشتے میں بندھ جائے .

— بھگوان دین 25-10-'51

बरतानिया में इन बड़ी ताक़तों के मिल बैठने के समय और यू. एन. ओ. नाम लेते समय बरतानिया में राजा था और आज भी है. वहां की सरकार पारलिमेन्टरी सरकार थी और आज भी है. इसी तरह अमरीका में अपने ढंग की जमहूरियत थी और आज भी है, फ़्रांन्स में कुछ और ही ढंग की सरकार थी और आज भी है, चीन में अपने ढंग की सरकार थी और आज भी किसी ढंग की है, रूस में किसी और ही ढंग की सरकार थी और आज भी है. यहीं सब तरह की सरकारें मिलकर एक अजब गुलदस्ता बना था और फिर सबको भला लगना ही था पर अब एक फूल को न जाने क्या सूझ बैठी है जो चाहता है कि सब मेरे रंग के हो जायें या कम से कम एक रंग तो मेरा रंग अपना ही ले. यह झगड़े की जड़ नहीं है तो क्या है, और ऐसे झगड़े का इस दुनिया भर की पंचायत में क्या काम है और इसके लिये वीटो और वोट की क्या ज़रूरत ! ऐसा समझौते की सनद (Charter) में कहां ज़िकर है.

यह अपने ढंग का अनोखा झगड़ा कैसे उठ खड़ा, क्यों उठ खड़ा ? इसकी तह में हम न भी जायें तो यह तो साफ़ दिखाई दे रहा है कि झगड़ा अमन से उलटी चीज़ है और यह अमन की संस्था को खा जायगा या अमन की संस्था को झगड़ालू संस्था में बदल देगा. और अमन की यह संस्था यू. एन. ओ. उसी ओर फिसलती जा रही है.

इसमें शक नहीं कि दुनिया भर की पंचायत इस यू. एन. ओ. ने दसियों काम बहुत अच्छे किये हैं और दूर दूर के बहुत से मुल्कों को बहुत पास ला बिठाया है और दोस्ती के रिश्ते में बांध दिया है. पर बड़ी ताक़तों की आपसी ठन्डी लड़ाई के बुरे कामों में वह अच्छे काम इतने दब गए हैं कि दुनिया के आम आदमियों की नज़र उस तरफ़ नहीं जाती. इसलिये जब हिन्दुस्तान जैसे अमन पसन्द और बड़े मुल्क के प्रधान वज़ीर जवाहर लाल यू. एन. ओ. को बनाए रखने की बात कहते हैं और बने रहने के लिये आशीर्वाद देते हैं तब लोग समझ ही नहीं पाते कि जवाहर लाल क्या कह रहे हैं, क्यों इस झगड़ालू संस्था को क़ायम रखना चाहते हैं ? आम लोग करें भी क्या ? कोरिया की बरबादी उनके सामने है, जापान पर अमरीकी फ़ौजों का घेरा उनकी निगाह में है, इन्डो-चीन की लड़ाई की आवाज़ उनके कानों में है, ईरान का तेल का झगड़ा, स्वेज सूडान का झगड़ा आए दिन अख़बारों में पढ़ने को मिलता है. फिर वह कैसे मान लें कि यू. एन. ओ. एक ऐसी संस्था है जिसके लिये ज़िन्दाबाद का नारा लगाया जाय.

यू. एन. ओ. से दुनिया के लोगों को अब यह उम्मीद

برطانیہ میں ان بڑی طاقتوں کے مل بیٹھنے کے سمے اور یو . این . او . نام لینے سے برطانیہ میں راجہ تھا اور آج بھی ہے . وہاں کی سرکار پارلیمنٹری سرکار تھی اور آج بھی ہے . اِسی طرح امریکہ میں اپنے ڈھنگ کی جمہوریت تھی اور آج بھی ہے، فرانس میں کچھ اور ہی ڈھنگ کی سرکار تھی اور آج بھی ہے، چین میں اپنے ڈھنگ کی سرکار تھی اور آج بھی کسی ڈھنگ کی ہے، روس میں کسی اور ہی ڈھنگ کی سرکار تھی اور آج بھی ہے . یہی سب طرح کی سرکاریں مل کر ایک عجیب گلدستہ بنا تھا اور پھر سب کو بھلا لگنا ہی تھا پر اب ایک پھول کو نہ جانے کیا سوجھ بیٹھی ہے جو چاہتا ہے کہ سب میرے رنگ کے ہو جائیں یا کم سے کم ایک رنگ تو میرا رنگ اپنا ہی لے . یہ جھگڑے کی جڑ نہیں ہے تو کیا ہے، اور ایسے جھگڑے کا اس دنیا بھر کی پنچایت میں کیا کام ہے اور اس کے لئے ویٹو اور ووٹ کی کیا ضرورت ! ایسا سمجھوتے کی سند (Charter) میں کہاں ذکر ہے .

یہ اپنے ڈھنگ کا انوکھا جھگڑا کیسے اُٹھ کھڑا، کیوں اُٹھ کھڑا ؟ اِسکی تہہ میں ہم نہ بھی جائیں تو یہ تو صاف دکھائی دے رہا ہے کہ جھگڑا امن سے الٹی چیز ہے اور یہ امن کی سنستھا کو کھا جائے گا یا امن کی سنستھا کو جھگڑالو سنستھا میں بدل دیگا . اور امن کی یہ سنستھا یو . این . او . اُسی اور پھسلتی جا رہی ہے .

اِسمیں شک نہیں کہ دنیا بھر کی پنچایت اس یو . این . او . نے دسیوں کام بہت اچھے کئے ہیں اور دور دور کے بہت سے ملکوں کو بہت پاس لا بٹھایا ہے اور دوستی کے رشتے میں باندھ دیا ہے . پر بڑی طاقتوں کی آپسی ٹھنڈی لڑائی کے برے کاموں میں وہ اچھے کام اِتنے دب گئے ہیں کہ دنیا کے عام آدمیوں کی نظر اُسطرف نہیں جاتی . اسلئے جب ہندستان جیسے امن پسند اور بڑے ملک کے پردھان وزیر جواہرلال یو . این . او . کو بنائے رکھنے کی بات کہتے ہیں اور بنے رہنے کے لئے آشیرواد دیتے ہیں تب لوگ سمجھ ہی نہیں پاتے کہ جواہر لال کیا کہہ رہے ہیں، کیوں اس جھگڑالو سنستھا کو قائم رکھنا چاہتے ہیں؟ عام لوگ کریں بھی کیا ؟ کوریا کی بربادی اُن کے سامنے ہے، جاپان پر امریکی فوجوں کا گھیرا اُن کی نگاہ میں ہے، انڈوچین کی لڑائی کی آواز اُن کے کانوں میں ہے، ایران کا تیل کا جھگڑا، سوئز سوڈان کا جھگڑا آئے دن اخباروں میں پڑھنے کو ملتا ہے . پھر وہ کیسے مان لیں کہ یو . این . او . ایک ایسی سنستھا ہے جسکے لئے زندہ باد کا نعرہ لگایا جائے .

یو . این . او . سے دنیا کے لوگوں کو اب یہ اُمید

कर खाक हुए जा रहे हैं, हिन्दी चीन में आग लगी हुई है, ईरान और मिस्र में न जाने कब क्या हो जाय, काशमीर को ले कर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में भी कोई नया शगूफ़ा खिलाया जा सकता है, पूरबी और पच्छिमी जरमनी दोनों मिलकर न जाने कब क्या कर बैठें. मतलब यह कि दुनिया के हर हिस्से में अमन की जगह अशान्ति का ही राज है. और इस अशान्ति की जिम्मेदार कौन है— अमन की देवी के नाम से पैदा हुई यू. एन. ओ.

किसी पत्थर की मूरत के दो आंख की जगह चार आंख भी हो सकती हैं पर क्या वह देख सकती है ? हां, वह देख सकता है जो उस मूरत का मालिक है. पत्थर की मूरत के दो कान की जगह चार कान हो सकते हैं. पर क्या वह मूरत सुन सकती है ? हां, वह सुन सकता है जो उस मूरत का मालिक है. अब मूरत का मालिक जो देखे या सुने वही मूरत देखे और सुनेगी. यही हाल यू. एन. ओ. का है. उसके दो नहीं दसियों आंखें हैं पर उसे यह दिखाई नहीं देता कि चीन की सरकार कौन है. उसके दो कान नहीं दसियों कान हैं पर उसे यह नहीं सुनाई देता कि हिन्दुस्तान जितना बड़ा मुल्क यह कह रहा है कि चीन का मालिक चीन की लाल सरकार. उस मूरत बनी यू. एन. ओ. का मालिक तो यह देख रहा है कि चीन का मालिक चांग-काई शेक है और वह यही सुन रहा है, इसलिये यू. एन. ओ. यही देख सुन रही है.

दसियों आंखों और दसियों कानों वाली यू. एन. ओ. न कोरिया की बरबादी देख सकती है और न वहां की माओं और बच्चों की कराह सुन सकती है. वह अपने बिलकुल पास के वीटो और वोटों को भी न देख सकती है और न सुन सकती है. अब बताइये ऐसी संस्था की बरस गांठ के मौक़े पर हम उसे क्या बधाई दें.

मिल बैठ कर बात करने के वायदे से यू. एन. ओ. के नाम से जमा हुए थे बरतानिया, अमरीका, फ्रांस, चीन और रूस. पर भूल बैठे अपना वायदा और अब जब भी मिल बैठने को इकट्ठा होते हैं तो वीटो और वोटों के हथियारों से लड़ बैठते हैं. और इस लड़ाई का नाम चल पड़ा है ठन्डी लड़ाई. इस ठन्डी लड़ाई में एक न एक दिन यू. एन. ओ. ऐसी अकड़ कर रह जाएगी जैसे लकवे की मार से आदमी का जिस्म, और फिर न जाने किधर को उसका मुंह होगा और किधर को होंगी आंखों की पुतली. वह मूरत तो उस वक़्त भी रहेगी पर इतनी बदसूरत कि कोई उसे देखना पसन्द न करेगा. हां, तो इन पांच ताक़तों में से चीन नाम की एक ताक़त जो अब सच्चे मानों में एक ताक़त बन गई है उसे उस गुट ने जिस के हाथ का यू. एन. ओ. खिलौना बनी हुई है दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकाल बाहर कर दिया. यह अच्छा मिल बैठना हुआ !

خاک ہوئے جارہے ہیں' انڈو چین میں آگ لگی ہوئی ہے
ان اور مصر میں نہ جانے کب کیا ہو جائے' کاشمیر
لیکر ہندستان اور پاکستان میں بھی کوئی نیا شگوفہ
ایا جاسکتا ہے' پوربی اور پچھمی جرمنی دونوں مل
نہ جانے کب کیا کربیٹھیں. مطلب یہ کہ دنیا کے
حصے میں امن کی جگہ اشانتی کا ہی راج ہے . اور
اشانتی کی ذمہ‌دار کون ہے—امن کی دیوی کے نام
پیدا ہوئی یو . این . او .

کسی پتھر کی مورت کے دو آنکھ کی جگہ چار آنکھ
ہوسکتی ہیں پر کیا وہ دیکھ سکتی ہے؟ ہاں' وہ
ھ سکتا ہے جو اُس مورت کا مالک ہے . پتھر کی
ت کے دو کان کی جگہ چار کان ہوسکتے ہیں' پر کیا
ورت سن سکتی ہے ؟ ہاں' وہ سن سکتا ہے جو اُس
ت کا مالک ہے . اب مورت کا مالک جو دیکھے یا سنے
مورت دیکھے اور سنیگی . یہی حال یو . این . او .
. اس کے دو نہیں دسیوں آنکھیں ہیں پر اُسے یہ
ائی نہیں دیتا کہ چین کی سرکار کون ہے . اُسکے دو
نہیں دسیوں کان ہیں پر اُسے یہ نہیں سنائی
کہ ہندستان جتنا بڑا ملک یہ کہ رہا ہے کہ چین
مالک چین کی لال سرکار. اُس مورت بنی یو. این. او.
مالک تو یہ دیکھ رہا ہے کہ چین کا مالک چانگ
شیک ہے اور وہ یہی سن رہا ہے' اس لئے یو. این. او.
دیکھ سن رہی ہے .

دسیوں آنکھوں اور دسیوں کانوں والی یو . این . او .
وریا کی بربادی دیکھ سکتی ہے اور نہ وہاں کی ماؤں
چوں کی کراہ سن سکتی ہے . وہ اپنے بالکل پاس کے
اور ووٹوں کو بھی نہ دیکھ سکتی ہے اور نہ سن
تی ہے . اب بتائیے ایسی سنستھا کی برس گانٹھ کے
ے پر ہم اُسے کیا بدھائی دیں .

مل بیٹھ کر بات کرنے کے وعدے سے یو . این . او . کے
سے جمع ہوئے تھے برطانیہ' امریکہ' فرانس' چین اور
. پر بھول بیٹھے اپنا وعدہ اور اب جب بھی مل
ھنے کو اکٹھا ہوتے ہیں تو ویٹو اور ووٹوں کے ہتھیاروں
لڑ بیٹھتے ہیں. اور اس لڑائی کا نام چل پڑا ہے
ڈی لڑائی . اس ٹھنڈی لڑائی میں ایک نہ ایک
یو . این . او . ایسی اکڑ کر رہ جائیگی جیسے لقوے
مار سے آدمی کا جسم' اور پھر نہ جانے کدھر کو اُس
منہ ہوگا اور کدھر ہونگی آنکھوں کی پتلی . وہ مورت
اس وقت بھی رہیگی پر اتنی بدصورت کہ کوئی اُسے
یکھنا پسند نہ کریگا . ہاں' تو ان پانچ طاقتوں میں
چین نام کی ایک طاقت جو اب سچے معنوں میں
طاقت بن گئی ہے اُسے اُس گٹ نے جس کے ہاتھ کا
این . او . کھلونا بنی ہوئی ہے دودھ میں پڑی
ی کی طرح نکال باہر کردیا . یہ اچھا مل بیٹھنا ہوا !

यू. एन. ओ. अपने बचपन के पालने में लेटी हुई आशा और निराशा के झोटे लेती रहती है. खुद गीत गाए तो गाए यह चाहती है कि दूसरे इसके गीत गाएं. इसे यह तक नहीं मालूम कि गीत गाने या तारीफ़ के गीत सुनने से आदर्श की मंज़िल तक नहीं पहुंचा जाता और न कोई पहुंचा है. पर कुछ मुल्क हैं जो आए दिन भाट बन कर उसके गीत गाते रहे हैं.

यू. एन. ओ. यह खूब समझ ले कि जो मुल्क उसके गीत गाते हैं वह उसके भक्त भी हैं ऐसी बात नहीं है. उनकी भक्ति गीत गाने तक ही महदूद है. मौक़ा पड़ने पर वह उसे इस तरह छोड़ कर भागेंगे जिस तरह आदमी के साथ हमेशा चलने वाली परछाईं अन्धेरे में उसे छोड़ कर भाग जाती है.

लीग आफ़ नेशन्स जिस तरह जान बुल के हाथ में खेलती थी ठीक उसी तरह यू. एन. ओ. साम काका के हाथ का खिलौना है. जान बुल की लीग अगर कुछ भला न कर पाई तो कम से कम बुरा तो न कर सकी. इतना ही क्यों? पिछली लड़ाई के मौक़े पर लीग केसर्वे सर्वा बरतानिया के प्रधान वज़ीर बाल्डविन ने तो लड़ाई न होने के लिये कोई कोशिश उठा न रखी पर हिटलरी जरमनी और जापान इन दोनों को तो अपने अपने देश में पांव फैलाने के लिये जगह ही न थी इसलिये इन दोनों ने जान बुल की लीग की रत्ती भर परवाह न की और यों लीग आफ़ नेशन्स कराह कराह कर मर गई. काका साम की यू. एन. ओ. ज़ोरदार है. वह जहां चाहे टांग अड़ा बैठती है और टांग अड़ाने में इतनी जल्दबाज़ी करती है कि उसे यह ध्यान ही नहीं रह जाता कि दुनिया के मुल्कों ने उसे अमन फैलाने के लिये पैदा किया है न कि टांग अड़ा कर लड़ाई या लड़ाइयां शुरू करने के लिये.

लीग आफ़ नेशन्स दुनिया को एक करने में नाकामयाब रही यानी सब मुल्कों को न मिला पाई. पर यू. एन. ओ. तो दुनिया के दो टुकड़े करने में कामयाब हो गई. पर वह ऐसे ही दो टुकड़े हैं जैसे मनसल और पोटास. जिस वक़्त भी किसी कंकरी के साथ मिल कर यह मनसल और पोटास ठोकर खावेगी तो सारी दुनिया उसी तरह अनगिनत टुकड़ों में बिखर जायगी जिस तरह मनसल और पोटास से बना हुआ पटाखा दीवार से टक्कर खा कर एक ज़ोर की आवाज़ निकालता हुआ छोटे छोटे टुकड़ों में छितरा जाता है.

यह यू. एन. ओ. है या बड़ी बड़ी ताक़तों के कुश्ती लड़ने का अखाड़ा. वोट और वीटो के हथियारों से आए दिन लड़ाई हारी और जीती जाती है. इन बड़ी ताक़तों की लड़ाई के बीच में आकर कोरिया जैसे छोटे छोटे मुल्क जल

یو. این. او. اپنے بچپن کے پالنے میں لیٹی ہوئی آشا اور نراشا کے جھوٹے لیتی رہتی ہے. خود گیت گائے تو گائے یہ چاہتی ہے کہ دوسرے اِس کے گیت گائیں. اِسے یہ تک نہیں معلوم کہ گیت گانے یا تعریف کے گیت سننے سے آدرش کی منزل تک نہیں پہنچا جاتا اور نہ کوئی پہنچا ہے. پر کچھ ملک ہیں جو آئے دن بھاٹ بنکر اُس کے گیت گاتے رہے ہیں.

یو. این. او. یہ خوب سمجھ لے کہ جو ملک اُس کے گیت گاتے ہیں وہ اُس کے بھکت بھی ہیں ایسی بات نہیں ہے. اُن کی بھکتی گیت گانے تک ہی محدود ہے. موقع پڑنے پر وہ اُسے اس طرح چھوڑ کر بھاگینگے جس طرح آدمی کے ساتھ ہمیشہ چلنے والی پرچھائیں اندھیرے میں اُسے چھوڑ کر بھاگ جاتی ہے.

لیگ آف نیشنس جسطرح جان بل کے ہاتھ میں کھیلتی تھی ٹھیک اُسی طرح یو. این. او. سام کاکا کے ہاتھ کا کھلونا ہے. جان بل کی لیگ اگر کچھ بھلا نہ کر پائی تو کم سے کم برا تو نہ کرسکی. اتنا ہی کیوں؟ پچھلی لڑائی کے موقع پر لیگ کے سروے سروا برطانیہ کے پردھان وزیر بالڈون نے تو لڑائی نہ ہونے کے لئے کوئی کوشش اُٹھا نہ رکھی پر ہٹلری جرمنی اور جاپان اِن دونوں کو تو اپنے اپنے دیش میں پاؤں پھیلانے کے لئے جگہ ہی نہ تھی اس لئے اُن دونوں نے جان بل کی لیگ کی رتی بھر پرواہ نہ کی اور یوں لیگ آف نیشنس کراہ کراہ کر مرگئی. کاکا سام کی یو. این. او. زوردار ہے. وہ جہاں چاہے ٹانگ اڑا بیٹھتی ہے اور ٹانگ اڑانے میں اتنی جلد بازی کرتی ہے کہ اُسے یہ دھیان ہی نہیں رہ جاتا کہ دنیا کے ملکوں نے اُسے امن پھیلانے کے لئے پیدا کیا ہے نہ کہ ٹانگ اڑا کر لڑائی یا لڑائیاں شروع کرنے کے لئے.

لیگ آف نیشنس دنیا کو ایک کرنے میں ناکامیاب رہی یعنی سب ملکوں کو نہ ملا پائی. پر یو. این. او. تو دنیا کے دو ٹکڑے کرنے میں کامیاب ہوگئی. پر وہ ایسے ہی دو ٹکڑے ہیں جیسے منسل اور پوٹاس. جس وقت بھی کسی کنکری کے ساتھ مل کر یہ منسل اور پوٹاس ٹھوکر کھائے گی تو ساری دنیا اُسی طرح انگنت ٹکڑوں میں بکھر جائیگی جس طرح منسل اور پوٹاس سے بنا ہوا پٹاخہ دیوار سے ٹکر کھاکر ایک زور کی آواز نکالتا ہوا چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں میں چھترا جاتا ہے.

یہ یو. این. او. ہے یا بڑی بڑی طاقتوں کے کشتی لڑنے کا اکھاڑہ. ووٹ اور ویٹو کے ہتھیاروں سے آئے دن لڑائی ہاری اور جیتی جاتی ہے. ان بڑی طاقتوں کی لڑائی کے بیچ میں آکر کوریا جیسے چھوٹے ملک جل

हमारी राय

ہماری رائے

यू. एन. ओ. का नया बरस—

यू. एन. ओ. नये बरस में दाखिल हो रहा है. क्या रिवाज के मुताबिक़ इसको बधाई दी जाय ? यू. एन. ओ. एक संस्था है, संस्था जानदार नहीं हुआ करती. उसको बधाई देना इतना भी ठीक नहीं है जितना भैंस के आगे बीन बजाना. भैंस के कान होते हैं, वह सुनती है और हो सकता है भैंस बीन की आवाज़ सुन कर अपने पगुराने में कुछ फ़र्क़ कर ले पर यू. एन. ओ. तो इतना भी नहीं करने की क्योंकि न वह जानदार है, न उसके कान हैं और न वह सुनती है.

यह बिलकुल ठीक है कि यू. एन. ओ. जानदारों की बनाई हुई और जानदारों की बनी हुई है. उसमें सब जानदार ही काम करते हैं और वह जानदार मामूली जानदार नहीं समझदार और खूब समझदार हैं. फिर समझदारों की इस संस्था की बेजा तारीफ़ किस लिये. यही ठीक होगा कि इसकी बरस गांठ के दिन इसकी उन बुराइयों से इसे आगाह किया जाय जो इसमें जगह पा गई हैं और पाती जा रही हैं.

यू. एन. ओ. समझ ले कि वह अपने ढंग की नई संस्था नहीं है. उससे पहले उसी जैसी 'लीग आफ़ नेशन्स' नाम की एक संस्था रह चुकी है जो निकम्मी नाम से बदनाम होकर ऐन उस वक़्त मर गई जब उसे अपने करतब दिखाने के लिये मौक़ा मिला था. कहीं इसी तरह की मौत इस यू. एन. ओ. को भी हासिल न हो.

लीग आफ़ नेशन्स जबकि अपने निकम्मे पन के लिये बदनाम थी तो यू. एन. ओ. अपने बेहद सकम्मे [illegible] के लिये बदनाम होती चली आ रही है. लीग आफ़ नेशन्स जज बनकर जनमी थी, पंचायत बनकर बड़ी हुई और तमाशे की चीज़ बन कर मर गई. यू. एन. ओ. अमन क़ायम करने के लिये पैदा हुई, लड़ लड़ कर बड़ी हो रही है, जल्द [illegible] के लिये मशहूर है. उतावली सो बावली की कहावत के अनुसार बदनाम तो हो ही रही है कभी ऐसी ठोकर भी खायगी जब चारों खाने चित गिरेगी.

یو . این . او . کا نیا برس—

یو . این . او . نئے برس میں داخل ہو رہا ہے . کیا رواج کے مطابق اِسکو بدھائی دی جائے ؟ یو . این او . ایک سنستھا ہے ' سنستھا جاندار نہیں ہوا کرتی . اُسکو بدھائی دینا اتنا بھی ٹھیک نہیں ہے جتنا بھینس کے آگے بین بجانا . بھینس کے کان ہوتے ہیں ' وہ سنتی ہے اور ہو سکتا ہے بھینس بین کی آواز سن کر اپنے پگورانے میں کچھ فرق کرلے پر یو . این . او . تو اتنا بھی نہیں کرنے کی کیونکہ نہ وہ جاندار ہے ' نہ اُس کے کان ہیں اور نہ وہ سنتی ہے .

یہ بالکل ٹھیک ہے کہ یو . این . او . جانداروں کی بنائی ہوئی اور جانداروں کی بنی ہوئی ہے . اُس میں سب جاندار ہی کام کرتے ہیں اور وہ جاندار معمولی جاندار نہیں سمجھ دار اور خوب سمجھ دار ہیں . پھر سمجھ داروں کی اس سنستھا کی بیجا تعریف کس لئے . یہی ٹھیک ہوگا کہ اِس کی برس گانٹھ کے دن اِسکی اُن برائیوں سے اِسے آگاہ کیا جائے جو اِس میں جگہ پا گئی ہیں اور پاتی جارہی ہیں .

یو . این . او . سمجھ لے کہ وہ اپنے ڈھنگ کی نئی سنستھا نہیں ہے . اُس سے پہلے اُسی جیسی 'لیگ آف نیشنس' نام کی ایک سنستھا رہ چکی ہے جو نکمی نام سے بدنام ہوکر عین اُس وقت مر گئی جب اُسے اپنے کرتب دکھانے کے لئے موقع ملا تھا . کہیں اسی طرح کی موت اس یو . این . او . کو بھی حاصل نہ ہو .

لیگ آف نیشنس جبکہ اپنے نکمے پن کے لئے بدنام تھی تو یو . این . او . اپنے بے حد سکمے پن کے لئے بدنام ہوتی چلی جارہی ہے . لیگ آف نیشنس جج بن کر جنمی تھی ' پنچایت بن کر بڑی ہوئی اور تماشے کی چیز بن کر مرگئی . یو . این . او . امن قائم کرنے کے لئے پیدا ہوئی ' لڑ لڑ کر بڑی ہو رہی ہے ' جلد [illegible] کے لئے مشہور ہے . اُتاولی سو باولی کی کہاوت کے انوسار بدنام تو ہو ہی رہی ہے کبھی ایسی ٹھوکر بھی کھائیگی جب چاروں کھانے چت گریگی .

9. मिस्र में अंगरेजी फौजें बनी रहेंगी—अंगरेजी सरकार का फ़ैसला. किसान मजदूर प्रजा पारटी पहले की तरह काम करती रहेगी—आचार्य कृपलानी का फ़ैसला. कलकत्ते में बड़ी ज़बरदस्त आग लग गई—14 आदमी जल कर खाक.

10. डाक्टर अम्बेडकर ने मिनिस्ट्री से इस्तीफ़ा दे दिया.

11. स्वेज़ नहर में ब्रिटेन अपनी फौजें बनाए रखेगा. कम्यूनिस्ट और अमरीकी अफसरों में सुलह बात चीत के लिये चरचा शुरू.

12. ईरान का तेल मामला तय करने के लिये अमरीका की कोशिश. बम्बई सरकार ने बिजली कम खर्च करने का हुक्म दिया. पालियामेन्ट में इन्डस्ट्रीज़ बिल पास.

13. मिडिल ईस्ट कमान में आने के लिये ब्रिटेन, अमरीका, फ्रांस और तुरकी की मिस्र से अपील. ईरान ने अंगरेज़ी ठहराव, कि तेल बात चीत फिर से शुरू की जाए, इन्कार कर दिया. लंका के चीन को रबर बेचने पर अमरीका की लंका को मदद न देने की धमकी.

14. चार ताक़तों का ठहराव मिस्र को नामंजूर. पान मुन जो में सुलह बात चीत शुरू.

15. जापान के तूफ़ान में 385 आदमी मरे, हज़ारों घायल, 30,000 घर बरबाद. पालियामेन्ट में पंचसाला योजना पर बहस. दिल्ली में कांगरेस वर्किंग कमेटी की बैठक.

9. مصر میں انگریزی فوجیں بنی رہیں گی — انگریزی سرکار کا فیصلہ . کسان مزدور پرجا پارٹی پہلے کی طرح کام کرتی رہیگی — آچاریہ کرپلانی کا فیصلہ . کلکتے میں بڑی زبردست آگ لگ گئی — 14 آدمی جل کر خاک .

10. ڈاکٹر امبیدکر نے منسٹری سے استعفا دیدیا .

11. سویز نہر میں برٹین اپنی فوجیں بنائے رکھے گا . کمیونسٹ اور امریکی افسروں میں صلح بات چیت کے لئے چرچا شروع .

12. ایران کا تیل معاملہ طے کرنے کے لئے امریکہ کی کوشش . بمبئی سرکار نے بجلی کم خرچ کرنے کا حکم دیا . پارلیامنٹ میں انڈسٹریز بل پاس .

13. مڈل ایسٹ کمان میں آنے کے لئے برٹین، امریکہ، فرانس اور ترکی کی مصر سے اپیل . ایران نے انگریزی ٹھہراؤ، کہ تیل بات چیت پھر سے شروع کی جائے، انکار کردیا . لنکا کے چین کو ربر بیچنے پر امریکہ کی لنکا کو مدد نہ دینے کی دھمکی .

14. چار طاقتوں کا ٹھہراؤ مصر کو نامنظور . پان من جو میں صلح بات چیت شروع .

15. جاپان کے طوفان میں 385 آدمی مرے، ہزاروں گھایل، 30,000 گھر برباد . پارلیامنٹ میں پنج سالہ یوجنا پر بحث . دلی میں کانگریس ورکنگ کمیٹی کی بیٹھک .

"......हमारे सामने जो कुछ हो रहा है, उसे हम देख रहे हैं. आटे की छोटी छोटी मिलें हाथ की चक्कियों को, तेल की मिलें गाँव की घैंकी को और शकर की मिलें गुड़ बनाने के देहाती साधनों वगैरा को मिटाती जा रही हैं. देहाती मज़दूरी के इस तरह उठ जाने से देहात वाले कंगाल हो रहे हैं और धनी लोग मालदार बन रहे हैं. अगर काफ़ी लम्बे अरसे तक यही सिलसिला चलता रहा तो और किसी जतन के बग़ैर ही देहातों का नाश हो जायगा."

—महात्मा गांधी

"......ہمارے سامنے جو کچھ ہو رہا ہے، اسے ہم دیکھ رہے ہیں. آٹے کی چھوٹی چھوٹی ملیں ہاتھ کی چکیوں کو، تیل کی ملیں گاؤں کی ڈھینکی کو اور شکر کی ملیں گڑ بنانے کے دیہاتی سادھنوں وغیرہ کو مٹاتی جارہی ہیں . دیہاتی مزدوری کے اس طرح اٹھ جانے سے دیہات والے کنگال ہورہے ہیں اور دھنی لوگ مال دار بن رہے ہیں . اگر کافی لمبے عرصے تک یہی سلسلہ چلتا رہا تو اور کسی جتن کے بغیر ہی دیہاتوں کا ناش ہوجائے گا ."

—مہاتما گاندھی

'मुसलिम' यूनिवरसिटी बिल पास. यू. पी. असेम्बली ने 'हिन्दी' के लिये बिल पास किया.

28. अर्जेनटाइन में फ़ौज का विद्रोह. ब्रिटेन ईरान तेल का मामला यू. एन. ओ. की सुरक्षा कौन्सिल में ले जाएगा. लन्दन में कामनवेल्थ के सपलाई मिनिस्ट्रों की बैठक.

29. ईरान की खाड़ी में अपने जहाज़ों को "तैयार" रहने के लिये अंगरेज़ी सरकार का हुक्म. एक बड़े अमरीकी जनरल फ़ौजी मामलों पर बात करने जापान पहुँचे.

30. कांगरेस की तरफ़ से पंडित नेहरू ने लुधियाने में चुनाव का पहला भाशन दिया.

अक्तूबर

1. अंगरेज़ी सरकार ने अंगरेज़ माहिरों को ईरान से हटाना तै कर लिया. चीन में आज़ादी की सालगिरह मनाई गई. तेल के मामले पर सुरक्षा कौन्सिल में बहस होने पर रूस का एतराज़.

2. स्वीडिन में राजा गुस्टव ने नया मंत्री मंडल बनाया. हिन्दुस्तान भर में महात्मा गांधी की सालगिरह मनाई गई. एक हज़ार लड़कों की हड़ताल पर सागर यूनिवरसिटी एक माह के लिये बन्द.

3. हिन्दुस्तान में विदेशी हकूमतों के अड्डे ख़त्म होने चाहियें—लन्दन टाइम्स की अपील. फ़िरक़ाबन्दी का पूरी ताक़त से मुक़ाबला करने का पंडित नेहरू का एलान.

4. बादशाह जार्ज ने पार्लियामेन्ट को बरख़ास्त किया. श्री रफ़ी अहमद क़िदवाई कांगरेस में फिर वापस.

5. ज़मींदारी ख़त्म करने के सिलसिले में विधान सभा का क़ानून जायज़—सुप्रीम कोर्ट का फ़ैसला. अक्तूबर में अमरीका से दो लाख टन गेहूँ हिन्दुस्तान भेजा जायेगा.

6. रूस के पास ऐटम बम होने का स्टालिन का एलान और ऐसे हथियारों की पूरी रोक के लिये रूस तैयार. पार्लियामेन्ट ने प्रेस बिल दो साल के लिये पास किया. नागपुर में 'भारती लोक कांगरेस' नई पारटी का जन्म.

7. सुलह बात चीत फिर से शुरू करने के लिये कम्यूनिस्टों का जनरल रिजवे को ख़त. ईरानी बड़े वज़ीर डाक्टर मुस्सादिक़ तेल मामले पर यू. एन. ओ. में बहस करने के लिये अमरीका को रवाना.

8. अंगरेज़ों के साथ 1936 वाला सुलहनामा मिस्र ने रद्द कर दिया—मिस्री बड़े वज़ीर नहास पाशा का एलान. सुलह बात चीत के लिये पान-मुन-जो नाम की जगह तय हुई.

مسلم' یونیورسٹی بل پاس . یو پی اسمبلی نے هندی کے لئے بل پاس کیا .

28. ارجنٹائن میں فوج کا ودروہ . برٹین ایران تیل کا معاملہ یو . این . او . کی سرکشا کونسل میں لے جائے گا . لندن میں کامن ویلتھ کے سپلائی منسٹروں کی بیٹھک .

29. ایران کی کھاڑی میں اپنے جہازوں کو "تیار" رہنے کے لئے انگریزی سرکار کا حکم . ایک بڑے امریکی جنرل فوجی معاملوں پر بات کرنے جاپان پہنچے .

30. کانگریس کی طرف سے پنڈت نہرو نے لدھیانے میں چناؤ کا پہلا بھاشن دیا .

اکتوبر

1. انگریزی سرکار نے انگریز ماهروں کو ایران سے هٹانا طے کر لیا . چین میں آزادی کی سال گرہ منائی گئی . تیل کے معاملے پر سورکشا کونسل میں بحث ہونے پر روس کا اعتراض .

2. سوئڈن میں راجہ گسٹو نے نیا منتری منڈل بنایا . هندستان بھر میں مہاتما گاندھی کی سالگرہ منائی گئی ایک هزار لڑکوں کی هڑتال پر ساگر یونیورسٹی ایک ماہ کے لئے بند .

3. هندستان میں ودیشی حکومتوں کے اڈے ختم ہونے چاهئیں — لنڈن ٹائمس کی اپیل . فرقہ بندی کا پوری طاقت سے مقابلہ کرنے کا پنڈت نہرو کا اعلان .

4. بادشاہ جارج نے پارلیامنٹ کو برخاست کیا . شری رفیع احمد قدوائی کانگریس میں پھر واپس .

5. زمینداری ختم کرنے کے سلسلے میں ودهان سبھا کا قانون جائز — سپریم کورٹ کا فیصلہ . اکتوبر میں امریکہ سے دو لاکھ ٹن گیہوں هندستان بھیجا جائے گا .

6 روس کے پاس ایٹم بم ہونے کا اسٹالن کا اعلان اور ایسے ہتھیاروں کی پوری روک کے لئے روس تیار . پارلیامنٹ نے پریس بل دو سال کے لئے پاس کیا . ناگپور میں 'بھارتی لوک کانگریس' نئی پارٹی کا جنم .

7. صلح بات چیت پھر سے شروع کرنے کے لئے کمیونسٹوں کا جنرل رجوے کو خط . ایرانی بڑے وزیر ڈاکٹر مصادق تیل معاملے پر یو . این . او . میں بحث کرنے کے لئے امریکہ کو روانہ .

8. انگریزوں کے ساتھ 1936 والا صلحنامہ مصر نے رد کر دیا — مصری بڑے وزیر نحاس پاشا کا اعلان . صلح بات چیت کے لئے پان من جو نام کی جگہ طے پائی .

देश विदेश की डायरी

(16 सितम्बर से 15 अक्तूबर तक)

सितम्बर

16. ईरान और अफ़ग़ानिस्तान के बीच तेल ख़रीदने के लिये समझौता हुआ.

17. कम्यूनिस्टों से दोबारा बात करने के लिये जनरल रिजवे की ख़्वाहिश मंज़ूर. ईरान तेल के मामले में कोई समझौता नहीं कर सकता—डाक्टर मुस्सादिक़. पार्लियामेन्ट में हिन्दू कोड बिल पर बहस.

18. पंच साला योजना चलाने के लिये हिन्द सरकार का सूबा सरकारों को हुक्म.

19. ब्रिटेन में आम चुनाव के लिये 25 अक्तूबर की तारीख़ तय हुई. विनोबा जी को अपने नए दौरे में दो हज़ार एकड़ ज़मीन दान में मिली.

20. ईरानी कैबनेट ने ब्रिटेन को 25 दिन का अल्टीमेटम देना तय किया. स्वामी सीता राम शास्त्री ने अनशन तोड़ा. पंडित सुन्दरलाल की लीडरी में एक ग़ैर सरकारी हिन्द गुडविल मिशन चीन के लिये रवाना.

21. उत्तर एटलांटिक सुरक्षा सुलहनामे में यूनान और तुरकी भी लिये जाएँगे. हज को जाने वाले तीस हज़ार में से तीन हज़ार यात्री इस साल गरमी लू से मर गए.

22. ब्रिटेन का तेल मामले पर बात करने से इनकार. हिन्दुस्तान की मिलों का 25 फ़ीसदी कपड़ा विदेश भेजा जाएगा. इलाहाबाद में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के दफ़्तर में सरकार ने ताला बन्द कर दिया.

23. कम्यूनिस्टों पर पाबन्दी लगाने के लिये आस्ट्रेलियन सरकार को इजाज़त नहीं—आस्ट्रेलियन जनता के बहुमत का फ़ैसला.

24. कोलम्बो योजना के मातहत आस्ट्रेलिया इस साल हिन्दुस्तान को साढ़े चार करोड़ रुपए की मदद देगा. जनरल रिजवे ने सुलह बात चीत के लिये नई जगह की सिफ़ारिश की. हिन्दू कोड बिल पार्लियामेन्ट के इस इजलास में नहीं पास किया जाएगा.

25. नौ दिन के अन्दर ईरान छोड़ देने के लिये ईरान सरकार अंगरेज़ी तेल माहिरों को हुक्म. बम्बई के सूबे में अकाल जैसी हालत.

26. ब्रिटेन की ईरान को चेतावनी.

27. अबादान का तेल कारख़ाना पूरी तरह ईरानियों के क़ब्ज़े में. पार्लियामेन्ट में बनारस 'हिन्दू' और अलीगढ़

دیش ودیش کی ڈائری

(16 ستمبر سے 15 اکتوبر تک)

ستمبر

16. ایران اور افغانستان کے بیچ تیل خریدنے کے لئے سمجھوتہ ہوا۔

17. کمیونسٹوں سے دوبارہ بات کرنے کے لئے جنرل رجوے کی خواہش منظور۔ ایران تیل کے معاملے میں کوئی سمجھوتہ نہیں کر سکتا—ڈاکٹر مصادق۔ پارلیامنٹ میں ہندو کوڈبل پر بحث۔

18. پنچسالہ یوجنا چلانے کے لئے ہند سرکار کا صوبہ سرکاروں کو حکم۔

19. برٹین میں عام چناؤ کے لئے 25 اکتوبر کی تاریخ طے ہوئی۔ ونوبا جی کو اپنے نئے دورے میں دو ہزار ایکڑ زمین دان میں ملی۔

20. ایرانی کیبنٹ نے برٹین کو 25 دن کا الٹیمیٹم دینا طے کیا۔ سوامی سیتارام شاستری نے انشن توڑا۔ پنڈت سندر لال کی لیڈری میں ایک غیر سرکاری ہند گڈول مشن چین کے لئے روانہ۔

21. اتر اٹلانٹک سرکشا صلحنامے میں یونان اور ترکی بھی لئے جائینگے۔ حج کو جانے والے تیس ہزار میں سے تین ہزار یاتری اس سال گرمی لو سے مر گئے۔

22. برٹین کا تیل معاملے پر بات کرنے سے انکار۔ ہندستان کی ملوں کا 25 فی صدی کپڑا ودیش بھیجا جائے گا۔ الہ‌آباد میں ہندی ساہتیہ سمیلن کے دفتر میں سرکار نے تالہ بند کر دیا۔

23. کمیونسٹوں پر پابندی لگانے کے لئے آسٹریلین سرکار کو اجازت نہیں— آسٹریلین جنتا کے بہومت کا فیصلہ۔

24. کولمبو یوجنا کے ماتحت آسٹریلیا اس سال ہندستان کو ساڑھے چار کروڑ روپے کی مدد دے گا۔ جنرل رجوے نے صلح بات چیت کے لئے نئی جگہ کی سفارش کی۔ ہندو کوڈبل پارلیامنٹ کے اس اجلاس میں نہیں پاس کیا جائیگا۔

25. نو دن کے اندر ایران چھوڑ دینے کے لئے ایران سرکار کا انگریزی تیل ماہروں کو حکم۔ بمبئی کے صوبے [illegible] اکال جیسی حالت۔

26. برٹین کی ایران کو چیتاونی۔

27. ابادان کا تیل کارخانہ پوری طرح ایرانیوں کے قبضے میں۔ پارلیامنٹ میں بنارس 'ہندو' اور علی‌گڑھ

पांचवीं खूबी इसमें यह है कि लिखने का जो तरीका काम में लाया गया है वह ऐसा है कि अगर किसी को गीता ज्ञान से ज़रा भी शौक़ हो तो पढ़ने वाले का दिल इस टीका को पढ़ने से जल्दी नहीं उकतायगा. दर्शन जैसे रूखे विशय को भी मन लगतो भाशा में लिखना आसान काम नहीं है. और यह आसानी इस टीका में मौजूद है.

जिन के पास और बड़ी बड़ी टीकाएं हों उनको भी इस टीका पर एक बार नज़र डालजाना चाहिये. हमारा है उन्हें कुछ नफ़ा ही होगा.

— भगवानदीन

राजनीति विज्ञान

लेखक—श्री विनयेन्द्रनाथ बन्धोपाध्याय एम. ए. और श्री केशरी कान्त शर्मा, एम. ए; बी. एल; लिखावट—नागरी; सफ़े 134; दाम दो रुपए; निकालने वाले—विश्वभारती, 6/3 द्वारिकानाथ टैगोर लेन, कलकत्ता 7.

इस किताब को देखते ही यह लगता है कि यह किसी अंगरेज़ी किताब का अनुवाद है या अंगरेज़ी किताब को सामने रखकर लिखी गई है. लेकिन यह कहीं बताया नहीं गया है. इस किताब की भाशा इतनी अधिक संस्कृत भरी है कि कान खड़े हो जाते हैं. नमूने के लिये सफ़ा 72 पर भारत के विधान के बारे में लिखा है—"इसमें शासन-संसार की अशेश लिखित व्यवस्थायें सम्यक रूप से सन्निविश्ट हैं." इसके माने कालिज का विद्यार्थी या कोई दूसरा क्या लगायेगा ?

जहां तक विशय की बात है, किताब में राजनीति के उसूल समझाए गए हैं, लेकिन उन पर अंगरेज़ियत बुरी तरह छाई हुई है. भूमिका के अन्दर लेखकों ने जो एक बात कही है उससे हमें बहुत तकलीफ़ हुई. उनका कहना है कि हिन्दुस्तान की राजनीति के उसूल हमेशा पच्छिम की बुनियाद पर खड़े रहेंगे. हमारा तो ख़याल है कि भारत के मौजूदा विधान के इसी बुनियाद पर खड़े होने की वजह से वह केवल काग़ज़ पर लिखा रह गया है और जनता पर उसका रत्ती भर भी असर नहीं पड़ा है. इस किताब के सोलह आना अंगरेज़ी होने का सबसे बड़ा सबूत यह है कि आख़िर में जो राजनेताओं के परिचय इसमें दिये हैं उनमें ऐरे ग़ैरे तीस नाम गिनाए हैं लेकिन हिन्दुस्तानी एक भी नहीं. मानो हिन्दुस्तान में अब तक एक भी राजनेता नहीं पैदा हुआ.

विश्व भारती (शान्ति निकेतन) जैसी राश्ट्री संस्था से ऐसे ग़ैर-राश्ट्री मसाले से भरी और ऐसी ग़ैर-राश्ट्री भाशा में निकलने वाली किताब देखकर हम अपने देश के भविश्य पर दुख व चिन्ता से सोचने लग जाते हैं.

—सुरेश रामभाई

ںچویں خوبی اس میں یہ ھے کہ لکھنے کا جو طریقہ
یں لایا گیا ھے وہ ایسا ھے کہ اگر کسی کو گیتا گیان
ا بھی شوق ھو تو پڑھنے والے کا دل اس ٹیکا کو پڑھنے
ادی نہیں اُکتائے گا . درشن جیسے روکھے وشے کو بھی
گتي بھاشا میں لکھنا آسان کام نہیں ھے . اور یہ
، اِس ٹیکا میں موجود ھے .

ن کے پاس اور بڑی بڑی ٹیکائیں ھوں اُن کو بھی
ٹیکا پر ایک بار نظر ڈال جانا چاھئے . ھمارا خیال
یں کچھ نفع ھی ھوگا .

— بھگوان دین

نیتی وگیان

یکھک—شری ونیندر ناتھ بندھوپادھیائے ایم . اے .
ری کیشری کانت شرما‘ ایم . اے ؛ بی . ایل ؛
ت—ناگری؛ صفحے 134؛ دام دو روپئے ؛ نکالنے والے—
بھارتی‘ 6/3 دوارکا ناتھ ٹیگور لین‘ کلکتہ—7 .

س کتاب کو دیکھتے ھی یہ لگتا ھے کہ یہ کسی
ی کتاب کا انوواد ھے یا انگریزی کتاب کو سامنے
لکھی گئی ھے . لیکن یہ کہیں بتایا نہیں گیا ھے .
کتاب کی بھاشا اتنی ادھک سنسکرت بھری ھے کہ
ڑے ھو جاتے ھیں. نمونے کے لئے صفحہ 72 پر بھارت
دھان کے بارے میں لکھا ھے—"اِس میں شاسن
ر کی اشیش لکھت ویوستھائیں سمیک روپ سے
شٹ ھیں ." اِس کے معنے کالج کا ودیارتھی یا کوئی
کیا لگائے گا ؟

جہاں تک وشے کی بات ھے‘ کتاب میں راج نیتی
ول سمجھائے گئے ھیں‘ لیکن اُن پر انگریزیت بری
سے چھائی ھوئی ھے . بھومیکا کے اندر لیکھکوں نے جو
بات کہی ھے اُس سے ھمیں بہت تکلیف ھوئی .
کہنا ھے کہ ھندستان کی راج نیتي کے اُصول ھمیشہ
کی بنیاد پر کھڑے رھیں گے . ھمارا تو خیال ھے
ارت کے موجودہ ودھان کے اِسی بنیاد پر کھڑے ھونے
وجہ سے وہ کیول کاغذ پر لکھا رہ گیا ھے اور جنتا پر
ا رتی بھر بھی اثر نہیں پڑا ھے . اِس کتاب کے سولہ آنہ
زی ھونے کا سب سے بڑا ثبوت یہ ھے کہ آخر میں
نیتاؤں کے پریچے اِس میں دیئے ھیں اُن میں
غیرے تیس نام گنائے ھیں لیکن ھندستانی ایک
نہیں . مانو ھندستان میں اب تک ایک بھی راج
نہیں پیدا ھوا .

وشو بھارتی (شانتی نکیتن) جیسی راشٹری
تھا سے ایسے غیر راشٹری مسالے سے بھری اور ایسی غیر
ری بھاشا میں نکلنے والی کتاب دیکھکر ھم اپنے دیش
وشیہ پر دکھ و چنتا سے سوچنے لگ جاتے ھیں .

— سریش رام بھائی

कुछ किताबें — کچھ کتابیں

गीता ज्ञान

टीका लिखने वाले—श्री दीना नाथ दिनेश;

मिलने का पता—मानव धर्म कार्यालय, पीपल महादेव, दिल्ली.

भगवत गीता के पहले तीन अध्यायों की यह टीका है. इसमें मूल श्लोकों के साथ साथ पद छेद और फिर शब्दार्थ भी दिया गया है और उसके नीचे श्लोक का हिन्दी पद्य में अनुवाद है. व्याख्या काफ़ी आसान शब्दों में की गई है. फिर भी इतनी आसान नहीं हो पाई कि मामूली पढ़े लिखे समझ लें. हो सकता है पंडत जी का यह ख़याल रहा हो कि गीता मामूली लोगों के लिये है ही नहीं.

इस टीका में यह बड़ी भारी ख़ूबी है कि यह इस इरादे से नहीं लिखी गई कि लिखने वाले को क्या साबित करना है. बल्कि इस इरादे से लिखी गई मालूम होती है कि गीता के पढ़ने वाले के दिल में यह बात समा जाए कि यह उस लड़ाई की चीज़ नहीं है जो तलवारों से लड़ी जाती है. उस लड़ाई की भी चीज़ है जो आए दिन हमारे अन्दर होती रहती है. इसलिये दिनेश जी ने उन लफ़्ज़ों को जिन पर बड़े बड़े पंडित घंटों बहस करते हैं पढ़ने वालों को यूं समझा दिया है मानो वह लफ़्ज़ इतने मामूली हैं कि उन पर वक़्त खोना बेकार है. उनके कुछ भी माने करने पर आगे बढ़ा जा सकता है. यह ख़ूबी कोई कम ख़ूबी नहीं है. दूसरी ख़ूबी इस टीका में यह है कि जहां जो बात कही गई है अगर उसका हवाला किसी उपनिशद में मौजूद है या किसी और पुराने ग्रंथ में उसका ज़िक्र है तो वह वहां ज़रूर दर्ज कर दिया गया है. और पढ़ने वालों की हर तरह तसल्ली करने की कोशिश की गई है. तीसरी ख़ूबी इस टीका में यह है कि किसी श्लोक को पढ़कर जो जिज्ञासा कुछ और जानने की पढ़ने वाले के दिल में उठती है उसको पूरा करने के लिये इस सिलसिले की और बातें भी वहां दर्ज कर दी गई हैं.

चौथी ख़ूबी इसमें यह है कि जगह जगह पर यह समझाने की कोशिश की गई है कि हमारे अन्दर भीष्म कौन है, द्रोण कौन है, अर्जुन कौन है वग़ैरा वग़ैरा.

گیتا گیان

ٹیکا لکھنے والے — شری دینا ناتھ دنیش؛

ملنے کا پتہ—مانو دھرم کاریالیہ، پیپل مہادیو، دلی.

بھگوت گیتا کے پہلے تین ادھیایوں کی یہ ٹیکا ہے. اِس میں مول اِشلوکوں کے ساتھ ساتھ پد چھید اور پھر شبدارتھ بھی دیا گیا ہے اور اُس کے نیچے اشلوک کا ہندی پدیہ میں انواد ہے. ویاکھیا کافی آسان شبدوں میں کی گئی ہے. پھر بھی اتنی آسان نہیں ہو پائی کہ معمولی پڑھے لکھے سمجھ لیں. ہوسکتا ہے پنڈت جی کا یہ خیال رہا ہو کہ گیتا معمولی لوگوں کے لئے ہے ہی نہیں.

اِس ٹیکا میں یہ بڑی بھاری خوبی ہے کہ یہ اس ارادے سے نہیں لکھی گئی کہ لکھنے والے کو کیا ثابت کرنا ہے. بلکہ اس ارادے سے لکھی گئی معلوم ہوتی ہے کہ گیتا کے پڑھنے والے کے دل میں یہ بات سما جائے کہ یہ اُس لڑائی کی چیز نہیں ہے جو تلواروں سے لڑی جاتی ہے. اُس لڑائی کی بھی چیز ہے جو آئے دن ہمارے اندر ہوتی رہتی ہے. اس لئے دنیش جی نے اُن لفظوں کو جن پر بڑے بڑے پنڈت گھنٹوں بحث کرتے ہیں پڑھنے والوں کو یوں سمجھا دیا ہے مانو وہ لفظ اتنے معمولی ہیں کہ اُن پر وقت کھونا بیکار ہے. اُن کے کچھ بھی معنے کرنے پر آگے بڑھا جا سکتا ہے. یہ خوبی کوئی کم خوبی نہیں ہے. دوسری خوبی اُس ٹیکا میں یہ ہے کہ جہاں جو بات کہی گئی ہے اگر اُس کا حوالہ کسی اُپنشد میں موجود ہے یا کسی اور پرانے گرنتھ میں اُس کا ذکر ہے تو وہ وہاں ضرور درج کر دیا گیا ہے. اور پڑھنے والوں کی ہر طرح تسلی کرنے کی کوشش کی گئی ہے. تیسری خوبی اِس ٹیکا میں یہ ہے کہ کسی اِشلوک کو پڑھکر جو جگیاسا کچھ اور جاننے کی پڑھنے والے کے دل میں اُٹھتی ہے اُسکو پورا کرنے کے لئے اس سلسلے کی اور باتیں بھی وہاں درج کر دی گئی ہیں.

چوتھی خوبی اِس میں یہ ہے کہ جگہ جگہ پر یہ سمجھانے کی کوشش کی گئی ہے کہ ہمارے اندر بھیشم کون ہے، درون کون ہے، ارجن کون ہے وغیرہ وغیرہ.

जाओ तब तक भी कम्पक दूध कोरी के वास्ते जरूर रोज़ जाना चाहिये, दूसरे, वर्ज़िश रोज़ ज़रूर करनी चाहिये. खबर नहीं तुमने वह नई तरह की वर्ज़िश करनी शुरू की या नहीं जो तुम्हें मैंने पिछली दफ़ा बताई थी और कापी पर लिख दी थी. अगर अब तक न शुरू की हो तो अब शुरू करना. अगर तुम लिखने की छत पर जाकर एक दरी बिछा कर रोज़ सुबह ही नई और पुरानी दोनों वर्ज़िशें करो, और वर्ज़िश करने के पाव घंटे बाद रोज़ जितना ज्यादा दूध पिया जा सके उतना पियो तो जो चक्कर वग़ैरा तुम्हें आएं हैं सब दूर हो जाएं और खून भी बढ़ने लगे और ताक़त भी आनी शुरू हो जाय. इस वास्ते तुम फ़ौरन वर्ज़िश करनी ज़रूर शुरू कर दो और बराबर रोज़ सुबह किया करो और लिखो कि तुम्हें वर्ज़िश करने में क्या दिक़्क़त मालूम होती है.

राधे, जापान का तो तुमने हाल बहुत सा सुना होगा और ग्लोब पर यह भी देख लिया होगा कि जापान कहां है और हिन्दुस्तान से किस तरफ़ है. अगर अब तक न देखा हो तो अब देख लेना. जापान की सब औरतें मर्दों की तरह बराबर वर्ज़िश करती हैं और जो वर्ज़िश इस मुल्क में कराई जाती है वह बहुत ही अच्छी होती है. उस में जब वर्ज़िश करते करते ताक़त अच्छी तरह आ जाती है तो फिर ऐसे ऐसे दांव पेच सिखाए जाते हैं कि उनके ज़रिये से औरतें बड़े बड़े पहलवानों को उठा कर ज़मीन पर फेंक सकती हैं. मैंने एक किताब इस जापान की वर्ज़िशों की और दांव पेचों की मंगाई है. उसका नाम जियू जित्सू है. तुम जल्दी जल्दी वर्ज़िश कर के अपने बदन में ताक़त पैदा करो तो अबकी दफ़े जब मैं देहली आऊंगा तो तुम उस किताब को देखना और फिर जो दांव पेंच उसमें लिखे हैं उनकी भी मश्क़ करना.

राधे, तुम्हारा बाहर और शहरों और मुल्कों में फिरने और वहां तरह तरह के आदमियों और चीज़ों को देखने और उनकी अच्छी अच्छी बातें मालूम करने को मन चाहे है या नहीं. अब से तक़रीबन दो बरस में मैं दो बरस की फ़रलो* लूंगा, उस वक़्त अगर तुम्हारा मन होगा तो तुम्हें जापान और चीन ले चलेंगे. मगर उस वक़्त तक तुम्हें अंगरेज़ी बहुत अच्छी तरह पढ़ लेनी चाहिये क्यों कि उन मुल्कों में हिन्दुस्तानी तो कोई भी नहीं जानता इस वास्ते अंगरेज़ी में सब से बातें करनी पड़ेंगी. राधे, तुम अब उस्तानी से रोज़ पढ़ो हो या नहीं. इसका जवाब ज़रूर देना और जब यह चिट्ठी पहुँचे, उसी वक़्त जवाब लिख देना.

*लम्बी छुट्टी

تب تک بھی اول ہوا خوری کے واسطے ضرور روز جانا چاہئے' دوسرے' ورزش روز ضرور کرنی چاہئے ۔ خبر تم نے وہ نئی طرح کی ورزش کرنی شروع کی یا جو تمہیں میں نے پچھلی دفعہ بتائی تھی اور کاپی لکھدی تھی ۔ اگر اب تک نہ شروع کی ہو تو اب شروع اگر تم لکھنے کی چھت پر جاکر ایک دری بچھا کر روز ہی نئی اور پرانی دونوں ورزشیں کرو' اور ورزش کرنے و گھنٹے بعد روز جتنا زیادہ دودھ پیا جاسکے اتنا تو جو چکر وغیرہ تمہیں آئے ہیں سب دور ہو اور خون بھی بڑھنے لگے اور طاقت بھی آنی ہو جائے ۔ اس واسطے تم فوراً ورزش کرنی ضرور کردو اور برابر روز صبح کیا کرو اور لکھو کہ تمہیں کرنے میں کیا دقت معلوم ہوتی ہے ۔

ادھے' جاپان کا تو تم نے حال بہت سا سنا ہوگا اور پر یہ بھی دیکھ لیا ہوگا کہ جاپان کہاں ہے اور ستان سے کس طرف ہے ۔ اگر اب تک نہ دیکھا ہو دیکھ لینا ۔ جاپان کی سب عورتیں مردوں کی برابر ورزش کرتی ہیں اور جو ورزش اس ملک کرائی جاتی ہے وہ بہت ہی اچھی ہوتی ہے ۔ اس جب ورزش کرتے کرتے طاقت اچھی طرح آجاتی ہے ایسے ایسے داؤں پیچ سکھائے جاتے ہیں کہ اُن کے ذریعے رتیں بڑے بڑے پہلوانوں کو اٹھاکر زمین پر پھینک ہیں ۔ میں نے ایک کتاب اس جاپان کی ورزشوں اور داؤں پیچوں کی منگائی ہے ۔ اس کا نام جیو ر ہے ۔ تم جلدی جلدی ورزش کرکے اپنے بدن میں پیدا کرو تو اب کی دفعہ جب میں دہلی آؤنگا اس کتاب کو دیکھنا اور پھر جو داؤں پیچ اس لکھے ہیں اُنکی بھی مشق کرنا ۔

ادھے' تمہارا باہر اور شہروں اور ملکوں میں پھرنے ماں طرح طرح کے آدمیوں اور چیزوں کو دیکھنے اور ی اچھی اچھی باتیں معلوم کرنے کو من چاہے ہے ہیں ۔ اب سے تقریباً دو برس میں میں دو برس کی لونگا' اس وقت اگر تمہارا من ہوگا تو تمہیں جاپان ہیں لے چلیں گے ۔ مگر اس وقت تک تمہیں انگریزی اچھی طرح پڑھ لینی چاہئے ۔ کیونکہ ان ملکوں ہندستانی تو کوئی بھی نہیں جانتا اس واسطے زی میں سب سے باتیں کرنی پڑینگی ۔ رادھے' تم ستانی سے روز پڑھو ہو یا نہیں ۔ اس کا جواب ضرور اور جب یہ چٹھی پہونچے' اسی وقت جواب لکھ

*لمبی چھٹی ۔

बनते हैं और दिल खुश रहता है. अगर तुम वर्जिश बराबर रोज़ ज़्यादा ही ज़्यादा करती जाओ और किसी बात का रंज फ़िक्र न करो तो सब बीमारी तुम्हारी चक्कर आने की, सिर दुखने की, बायँटे आने की, सब की सब हवा हो जावे. मगर साथ ही यह भी याद रखना चाहिये कि वर्जिश करने के थोड़ी देर बाद दूध ज़रूर पीना चाहिये और अगर बुरा मालूम न हो तो मक्खन भी ज़रूर खाना चाहिये. एक बात और तुम्हें करनी चाहिये कि रोज़ चाचा के साथ बग्गी में बैठ कर हवाख़ोरी करने और भागने दौड़ने के वास्ते ज़रूर जाना चाहिये. बावटे* के पास खुली हवा में दौड़ने से भी बड़ा फ़ायदा होता है. ख़बर नहीं कि तुम अब रोज़ हवाख़ोरी करने जाती हो या नहीं. इसके अलावा अब की मैंने तुम्हारे चाचा को लिखा था कि अब की जो उन्हें छुट्टियां हों तो सब को लेकर किसी पहाड़ पर चले जायं. पहाड़ पर जाकर दो महीने रहो और वहां ख़ूब भागो दौड़ो और खेलो और उछलो और कूदो. तुम चाचा से बराबर कहती रहो ताकि वह ज़रूर तुम सब को ले जायं.

मेल्सी

14-6-06

राधे,

कल की चिट्ठी में मैंने लिखा था कि तुम एक तो अपना दिल हर वक़्त ख़ुश रखा करो, दूसरे वर्जिश रोज़ ज़रूर किया करो, तीसरे हवा ख़ोरी को ज़रूर जाया करो, चौथे अब जो तुम्हारे चाचा की छुट्टियां हों तो पहाड़ पर ज़रूर जाना. अब तुम लिखो कि तुमने इन बातों के करने के वास्ते क्या कोशिश की.

मेल्सी

16-6-06

राधे,

तुम ने कभी पहाड़ देखे भी हैं या नहीं. हरिद्वार में तो दो चार छोटी पहाड़ियां हैं वह तो तुम ने देखी ही होंगी, ख़बर नहीं तुम किसी पहाड़ी पर चढ़ीं या नहीं. अब जो तुम चाचा के साथ पहाड़ पर जाओ तो वहां ख़ूब चलना फिरना और वर्जिश करना ताकि ख़ून ठीक हो जाय और ज़्यादा हो जाय. असल में ख़ून के साफ़ और ज़्यादा होने ही से आदमी तन्दुरुस्त रहता है और ताक़त आती है. और ख़ून साफ़ खुली ताज़ी हवा में फिरने और वर्जिश करने से होता है और बढ़ता है. इस वास्ते अब तक पहाड़ पर न

*यह दिल्ली शहर के उत्तर में पहाड़ी के ऊपर एक खुली जगह है, जहां अकसर शहर के लोग सवेरे शाम सैर करने अब तक आते जाते हैं.

بنتے ہیں اور دل خوش رہتا ہے۔ اگر تم ورزش برابر روز زیادہ ہی زیادہ کرتی جاؤ اور کسی بات کا رنج فکر نہ کرو تو سب بیماری تمہاری چکر آنے کی، سر دکھنے کی، بائینٹے آنے کی، سب کی سب ہوا ہوجاوے مگر ساتھ ہی یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ ورزش کرنے کے تھوڑی دیر بعد دودھ ضرور پینا چاہئے اور اگر برا معلوم نہ ہو تو مکھن بھی ضرور کھانا چاہئے۔ ایک بات اور تمہیں کرنی چاہئے کہ روز چاچا کے ساتھ بگی میں بیٹھکر ہوا خوری کرنے اور بھاگنے دوڑنے کے واسطے ضرور جانا چاہئے۔ باوٹے * کے پاس کھلی ہوا میں دوڑنے سے بھی بڑا فائدہ ہوتا ہے۔ خبر نہیں کہ تم اب روز ہوا خوری کرنے جاتی ہو یا نہیں۔ اس کے علاوہ اب کی میں نے تمہارے چاچا کو لکھا تھا کہ اب کی جو انہیں چھٹیاں ہوں، تو سب کو لے کر کسی پہاڑ پر چلے جائیں۔ پہاڑ پر جاکر دو مہینے رہو اور وہاں خوب بھاگو دوڑو اور کھیلو اور اُچھلو اور کودو۔ تم چاچا سے برابر کہتی رہو تاکہ وہ ضرور تم سب کو لے جائیں۔

میلسی

14-6-06

رادھے،

کل کی چٹھی میں میں نے لکھا تھا کہ تم ایک تو اپنا دل ہر وقت خوش رکھا کرو، دوسرے ورزش روز ضرور کیا کرو، تیسرے ہواخوری کو ضرور جایا کرو، چوتھے اب جو تمہارے چاچا کی چھٹیاں ہوں تو پہاڑ پر ضرور جانا۔ اب تم لکھو کہ تم نے اِن باتوں کے کرنے کے واسطے کیا کوشش کی۔

میلسی

16-6-06

رادھے،

تم نے کبھی پہاڑ دیکھے بھی ہیں یا نہیں۔ ہردوار میں تو دوچار چھوٹی پہاڑیاں ہیں وہ تو تم نے دیکھی ہی ہوں گی، خبر نہیں تم کسی پہاڑی پر چڑھیں یا نہیں۔ اب جو تم چاچا کے ساتھ پہاڑ پر جاؤ تو وہاں خوب چلنا پھرنا اور ورزش کرنا تاکہ خون ٹھیک ہوجائے اور زیادہ ہوجائے۔ اصل میں خون کے صاف اور زیادہ ہونے ہی سے آدمی تندرست رہتا ہے اور طاقت آتی ہے۔ اور خون صاف کھلی تازی ہوا میں پھرنے اور ورزش کرنے سے ہوتا ہے اور بڑھتا ہے۔ اِس واسطے جب تک پہاڑ پر نہ

* یہ دلی شہر کے اُتر میں پہاڑی کے اُوپر ایک کھلی جگہ ہے، جہاں اکثر شہر کے لوگ سویرے شام سیر کرنے اب تک آتے جاتے ہیں۔

बच्चों की दुनिया

बादल और चांद

(भाई हामिदुल्ला 'अफ़सर')

नीले सागर वाले चांद ! मुझको पास बुलाले चांद !
बरखा में जाता है कहाँ तू लेकर शाल दुशाले चांद !
तारे हैं ये आस लगाये मुँह परदे से निकाले चांद !
बादल का एक हलका हलका मुंह पर आँचल डाले चांद !
गंगा के धारे में उतर कर फिर कुछ गोते खाले चांद !
ले आया है कहाँ से यह तू रुई के इतने गाले चांद !
कांप रहे हैं तारे, इनको तू कम्बल में छिपाले चांद !

बादल के फन्दे में न फँसना
सुन ए भोले भाले चांद !

(उरदू 'आजकल' से)

किक्री बंगला
13-6-'06

राधे,

मैंने सब से पहली चिट्ठियों में तुम्हें लिखा था कि अपने दिल को हमेशा खुश रखना चाहिये और कोई बात रंजीदा या उदास या सुस्त रहने की हो भी जाय तब भी फ़ौरन उसको अपने मन से अलग कर देना चाहिये, और ऐसी ऐसी बातों की बाबत सोचना चाहिये जिनसे दिल खुश रहे. जो आदमी दिल को हमेशा खुश रखता है वह बीमार बहुत ही कम होता है. दिल खुश रखने के सिवाए हर एक आदमी को वर्जिश भी ज़रूर करनी चाहिये. खबर नहीं कि आज कल तुम वर्जिश भी रोज़ करो हो या नहीं. वर्जिश करनी तो हरगिज़ नहीं छोड़नी चाहिये बल्कि रोज़ बरोज़ ज़्यादा वर्जिश करते जाना चाहिये. वर्जिश करने से ही खून बढ़ता है, बदन में ताक़त आती है, रग पट्ठे मज़बूत

بچوں کی دنیا

بادل اور چاند

(بھائی حامد اللہ 'افسر')

ے ساگر والے چاند ! مجھکو پاس بلا لے چاند !
رکھا میں جاتاہے کہاں تو لیکر شال دوشالے چاند !
ے ھیں یہ آس لگائے منہ پردے سے نکالے چاند !
ل کا اک ھلکا ھلکا منہ پر آنچل ڈالے چاند !
اکے دھارے میں اُتر کر پھر کچھ غوطے کھالے چاند !
آیا ھے کہاں سے یہ تو روئی کے اتنے گالے چاند !
پ رھےھیں تارے' اِنکو تو کمبل میں چھپالے چاند !

بادل کے پھندے میں نہ پھنسنا
سن اے بھولے بھالے چاند

(اُردو 'آجکل' سے)

ککری بنگلہ
13-6-'06

رادھے'

میں نے سب سے پہلی چٹھیوں میں تمہیں لکھا
کہ اپنے دل کو ھمیشہ خوش رکھنا چاھئیے اور کوئی
ت رنجیدہ یا اُداس یا سست رھنے کی ھو بھی جائے
ب بھی فوراً اُس کو اپنے من سے الگ کر دینا چاھئیے' اور
سی ایسی باتوں کی بابت سوچنا چاھئیے جن سے دل
وش رھے . جو آدمی دل کو ھمیشہ خوش رکھتا ھے وہ
مار بہت ھی کم ھوتا ھے . دل خوش رکھنے کے سوائے
ایک آدمی کو ورزش بھی ضرور کرنی چاھئیے . خبر
ھیں کہ آج کل تم ورزش بھی روز کرو ھو یا نہیں . ورزش
ی تو ھرگز نہیں چھوڑنی چاھئیے بلکہ روز بروز زیادہ
زش کرتے جانا چاھئیے . ورزش کرنے سے ھی خون بڑھتا
' بدن میں طاقت آتی ھے' رگ پٹھے مضبوط

शादी में एक कुआं, इस हिसाब से कुएं खोदे जायं तो चालीस साल में होने वाली बीस करोड़ शादियों में बीस करोड़ कुएं खुदेंगे. जहां कुएं खोदना बिलकुल नामुमकिन ही है, वहां की बात अलग है. लेकिन अकसर जमीन में पानी होता ही है, यह नियम है. जमीन के नीचे छिपी हुई यह सरस्वती प्रकट होनी चाहिये.

इसलिये जिनके पास जमीनें जियादा हैं, उनसे लेकर जो जो जमीन मांगते हों और जिनके पास न जमीन है और न कोई दूसरा ही धन्धा, उन्हें वह बांट दी जाय.

गांव के लोग कम से कम दरजे तक रुपए पैसे के आसरे रहें और उनकी जरूरतें गांव में ही पूरी हों, इसका ध्यान अगर रखा जाय तो सब को काम देना नामुमकिन नहीं है. लेकिन गांव वाले रुपए पैसे के आसरे न रहें, इसके लिये हम कहते आए हैं कि लगान गल्ले के रूप में वसूल किया जाय. आप ऐसा क्यों नहीं करते ?

गुरु नानक की बानी

ए साधु, यह सारा संसार राम ने ही बनाया है. कोई तो इस सृष्टि को नाश हो जाने वाली मानता है और कोई इसे सदा बनी रहने वाली समझता है, यह बड़े अचम्भे की बात है, कुछ समझ में नहीं आता ! काम, क्रोध और मोह वग़ैरा के बस में हो कर आदमी ने परमात्मा की मूर्ति को भुला दिया है. रात को दिखाई देने वाले सपने की तरह झूटे शरीर को वह सच्चा मानता है. संसार में जो चीजें हमें दिखाई देती हैं वह सब बादल की छाया की तरह नाश हो जाने वाली हैं. नानक कहते हैं कि इस संसार को झूटा समझो और राम की शरन में रहो.

ए साधु, मन का घमंड छोड़ दो. काम, क्रोध और दुरट आदमियों की संगत से रात दिन दूर ही रहो. सुख दुख और मान अपमान को एक सा ही समझना चाहिये. जो आदमी सुख और दुख दोनों से ऊपर उठा रहता है वही इस संसार के तत्व को पहचान सकता है. तारीफ़ और चुग़ली दोनों को छोड़ कर ही मुक्ति की खोज करनी चाहिये. नानक कहते हैं कि यह सब काम करना बड़ा कठिन है. किसी किसी ने ही गुरु के मुख से यह भेद जाना है.

شادی میں ایک کنواں' اس حساب سے کنوئیں کھودے جائیں تو چالیس سال میں ہونے والی بیس کروڑ شادیوں میں بیس کروڑ کنوئیں کھدینگے. جہاں کنوئیں کھودنا بالکل ناممکن ہی ہے' وہاں کی بات الگ ہے. لیکن اکثر زمین میں پانی ہوتا ہی ہے' یہ نیم ہے. زمین کے نیچے چھپی ہوئی یہ سرسوتی پرکٹ ہونی چاہئیے.

اس لئے جن کے پاس زمینیں زیادہ ہیں' ان سے لے کر جو جو زمین مانگتے ہوں اور جن کے پاس نہ زمین ہے اور نہ کوئی دوسرا ہی دھندہ' انہیں وہ بانٹ دی جائے.

گاؤں کے لوگ کم سے کم درجے تک روپے پیسے کے آسرے رہیں اور ان کی ضرورتیں گاؤں میں ہی پوری ہوں' اس کا دھیان اگر رکھا جائے تو سب کو کام دینا ناممکن نہیں ہے. لیکن گاؤں والے روپے پیسے کے آسرے نہ رہیں' اس کے لئے ہم کہتے آئے ہیں کہ لگان غلے کے روپ میں وصول کیا جائے. آپ ایسا کیوں نہیں کرتے ؟

گرو نانک کی بانی

اے سادھو' یہ سارا سنسار رام نے ہی بنایا ہے. کوئی تو اس سرشٹی کو ناش ہوجانے والی مانتا ہے اور کوئی اسے سدا بنی رہنے والی سمجھتا ہے یہ بڑے اچنبھے کی بات ہے' کچھ سمجھ میں نہیں آتا ! کام' کرودھ اور موہ وغیرہ کے بس میں ہو کر آدمی نے پرماتما کی مورتی کو بھلا دیا ہے. رات کو دکھائی دینے والے سپنے کی طرح جھوٹے شریر کو وہ سچا مانتا ہے. سنسار میں جو چیزیں ہمیں دکھائی دیتی ہیں وہ سب بادل کی چھایا کی طرح ناش ہوجانے والی ہیں. نانک کہتے ہیں کہ اس سنسار کو جھوٹا سمجھو اور رام کی شرن میں رہو.

اے سادھو' من کا گھمنڈ چھوڑ دو. کام' کرودھ اور دشٹ آدمیوں کی سنگت سے رات دن دور ہی رہو. سکھ دکھ اور مان اپمان کو ایک سا ہی سمجھنا چاہئیے. جو آدمی سکھ اور دکھ دونوں سے اوپر اٹھا رہتا ہے وہی اس سنسار کے تتو کو پہچان سکتا ہے. تعریف اور چغلی دونوں کو چھوڑ کر ہی مکتی کی کھوج کرنی چاہئیے. نانک کہتے ہیں کہ یہ سب کام کرنا بڑا کٹھن ہے. کسی کسی نے ہی گرو کے مکھ سے یہ بھید جانا ہے.

सहयोगी खेती की शर्त पर ही वहां के लोगों में जमीन बांटी, लेकिन बाद में मेरे ध्यान में आया कि इस तरीके से काम नहीं होगा. मैंने देखा कि सरकार के जरिये चलाये जाने वाले सहयोगी खेती के अमल को देखकर वह लोग हंस रहे हैं, क्योंकि वह नाकामयाब साबित हुआ है. गरीब लोगों को हिसाब-किताब का ज्ञान नहीं होता. सहयोगी खेती के लिये यह ज्ञान चाहिये, नहीं तो देहात के लोग घबराते हैं. इसलिये मैंने सहयोगी खेती की शर्त छोड़ दी और निजी खेती के लिये ही जमीन बांटनी शुरू कर दी. जिन लोगों ने मुझे सहयोगी खेती की शर्त पर जमीन देने की इच्छा जाहिर की, उनसे मैंने कहा, "पहले आप बड़े बड़े आदमी इस तरह का अमल कर के दिखाइये." सरकारी खेती में यह लोग अपना खासा हिस्सा रखकर अपना असर क़ायम रखना चाहते थे. मैंने उनसे कहा, "आप जमीनें दे डालिये. जमीन के बदले में मालिक की भावना से मुक्त हो जाइये. गरीबों को उसके मालिक बनने दीजिये."

बहस करने वालों ने अनइकानामिक होल्डिंग (माली विचार से नाकाफ़ी) और इकानामिक होल्डिंग (माली विचार से काफ़ी) की दलीलें भी पेश कीं. लेकिन यह माली काफ़ी और नाकाफ़ी का सवाल बैलों की वजह से ही खड़ा होता है, क्योंकि बैल कहता है कि मैं बीस एकड़ से छोटी इकाई पर काम नहीं कर सकता. मैं कहता हूँ कि चार कुटुम्ब मिलकर बैल जोड़ी रखेंगे और उस हद तक सहयोग करेंगे. और भी जिन जिन बातों में सहयोग कर सकेंगे, करेंगे. लेकिन जो-जो खेती करना चाहता है और जो-जो खेत मांगता है, उसे खेत मिलना चाहिये. वहां माली विचार से काफ़ी और नाकाफ़ी होने का सवाल खड़ा नहीं होना चाहिये.

लोग कहते हैं कि बड़ी बड़ी जमीनें चाहियें. लेकिन मेरे पास पौन एकड़ जमीन थी. शुरू शुरू में खाद और बीज का खर्च आया. अब आगे वह भी खर्च नहीं आयगा. इस पौन एकड़ जमीन में से हमने दस हज़ार पौंड साग भाजी निकाली. दो आना पौंड का हिसाब लगायें, तो भी 1250 रुपए की साग भाजी हुई.

हम ने रहट भी हाथ से ही चलाया. बरसात की भी कुछ खेती हम ने की है, लेकिन बारिश के भरोसे रहने से काम नहीं चलेगा. इसीलिये नारद ने धर्म राज से पूछा था, "तेरे राज में खेती सिर्फ़ देवता के भरोसे तो नहीं होती ?" देवता से मतलब है बारिश. अगर हम जमीन के नीचे छिपी हुई गुप्त गंगा प्रकट कर सकें, तो हिन्दुस्तान की जमीन की क़ाबलियत पांच गुनी बढ़ेगी. इसलिये हम ने तेलंगाना की यात्रा में लोगों को सब जगह जमीन में कुएं खोदने का प्रोग्राम ही बतलाया. हर एक

کھیتی کی شرط پر ہی وہاں کے لوگوں میں بانٹی، لیکن بعد میں میرے دھیان میں آیا طریقہ سے کام نہیں ہوگا. میں نے دیکھا کہ کے ذریعہ چلائے جانےوالے سہیوگی کھیتی کے عمل کو دیکھکر وہ لوگ ہنس رہے ہیں، کیونکہ وہ ناکامیاب ہوا ہے. غریب لوگوں کو حساب کتاب کا گیان ہوتا. سہیوگی کھیتی کے لئے یہ گیان چاہئے نہیں ت کے لوگ گھبراتے ہیں. اِس لئے میں نے سہیوگی کی شرط چھوڑ دی اور نجی کھیتی کے لئے ہی بانٹنی شروع کر دی. جن لوگوں نے مجھے سہیوگی کی شرط پر زمین دینے کی اِچھا ظاہر کی، اُن سے نے کہا، "پہلے آپ بڑے بڑے آدمی اسطرح کا عمل دکھائیے." سرکاری کھیتی میں یہ لوگ اپنا خاصا رکھکر اپنا اثر قائم رکھنا چاہتے تھے. میں نے اُن "آپ زمینیں دے ڈالئے. زمین کے بدلے میں کی بھاونا سے مکت ہوجائیے غریبوں کو اُس کے مالک دیجئے."

بحث کرنے والوں نے اَن ایکنامک ہولڈنگ (مالی ے ناکافی) اور ایکنامک ہولڈنگ (مالی وچار سے کی دلیلیں بھی پیش کیں. لیکن یہ مالی کافی فی کا سوال بیلوں کی وجہ سے ہی کھڑا ہوتا ہے، کیونکہ ہتا ہے کہ میں بیس ایکڑ سے چھوٹی اکائی پر کام کر سکتا. میں کہتا ہوں کہ چار کٹمب ملکر بیل رکھینگے اور اُس حد تک سہیوگ کرینگے. اور بھی جن باتوں میں سہیوگ کرسکینگے، کرینگے. لیکن جو کھیتی کرنا چاہتا ہے اور جو جو کھیت ہے، اُسے کھیت ملنا چاہئے. وہاں مالی وچار سے ناکافی ہونے کا سوال کھڑا نہیں ہونا چاہئے.

گ کہتے ہیں کہ بڑی بڑی زمینیں چاہئیں. میرے پاس پون ایکڑ زمین تھی. شروع شروع میں بیج کا خرچ آیا. اب آگے وہ بھی خرچ نہیں. اِس پون ایکڑ زمین میں سے ہم نے دس ہزار پونڈ بھاجی نکالی-دو آنہ پونڈ کا حساب لگائیں، تو بھی روپے کی ساگ بھاجی ہوئی.

م نے رہٹ بھی ہاتھ سے ہی چلایا. برسات کی بھی کچھ ہم نے کی ہے، لیکن بارش کے بھروسے رہنے سے کام چلیگا. اِسی لئے نارد نے دھرم راج سے پوچھا تھا، راج میں کھیتی صرف دیوتا کے بھروسے تو نہیں ؟" دیوتا سے مطلب ہے بارش. اگر ہم زمین کے چھپی ہوئی گپت گنگا پرکٹ کر سکیں، تو ن کی زمین کی قابلیت پانچ گنی بڑھے گی. ئے ہم نے تیلنگانہ کی یاترا میں لوگوں کو سب جگہ زمین میں کوئیں کھودنے کا پروگرام ہی بتلایا. ہر ایک

कोई एक फतवा निकाल दे और गोहत्या बन्दी हो जाय, यह ठीक नहीं." उनका कहना ठीक है. कोई एक मुग़ल सम्राट दिल्ली के तख्त पर से गोहत्या बन्दी का हुक्म जारी कर दे, इस तरह का यह सवाल ही नहीं है. लेकिन प्रधान मंत्री स्वराज में लोकमत का नुमाइन्दा है. अगर वही यह बात न करे तो फिर कौन करे ?

7. बुनियादी तालीम

सिर्फ़ इतना कह देने से कि बेसिक तरीक़ा मन्जूर है, काम नहीं चलेगा. यह दिखाना होगा कि मौजूदा तालीम के मुक़ाबले नई बुनियादी तालीम का खर्च ज़ियादा है या कम. बुनियादी तालीम के कारन लड़कों के मन में एकता का ख़याल घर पकड़ता है, इसलिये शुरू से चाहे बुनियादी स्कूल या शाला स्वावलम्बी भले ही न मालूम होती हो, तो भी आख़िर वह महज़ स्वावलम्बी ही नहीं, बल्कि अमन कुन भी साबित होती है. इसलिये आपको कहना चाहिये कि वह शाला चल सकती है, और प्लानिंग रिपोर्ट में बुनियादी शाला की योजना देनी चाहिये. शाला के पास दो एकड़ ज़मीन होनी चाहिये और लड़कों को अपनी मेहनत से शाला के बग़ीचे में साग, तरकारियां और कपड़े के लिये ज़रूरी कपास पैदा कर लेनी चाहिये. मास्टर को उस ज़मीन में से अपनी गुज़र के लायक़ साग-भाजी और कपास मिलती रहनी चाहिये. गांव के गुरु जी को एक-एक पायली (100 तोला) ग़ल्ला मिलना चाहिये. इतना सब करने पर भी और जो फुटकर ख़र्च आयेगा, वह इस योजना में बतलाना चाहिये.

हरिजन लड़कों के लिये छात्रालय या हास्टल या आश्रमों की योजना आपने सुझाई है. हमारे मत से अब आगे चलकर हरिजनों के लिये अलग छात्रालय या आश्रम नहीं होने चाहियें. हरिजन लड़कों के बारे में सिर्फ़ इतना ही देखना काफ़ी नहीं है कि उनकी तालीम कैसे बढ़ेगी, बल्कि यह भी देखना चाहिये कि छुआ छूत मिटाते हुए तालीम कैसे बढ़ेगी ? इसलिये अलग छात्रालय खोलने के बदले उन्हें सब के लिये चलने वाले छात्रालयों में ही जगह दिलानी चाहिये.

8. ज़मीन के बारे में सरकार की नीति

आप कहते हैं कि छोटे-छोटे टुकड़ों से पैदावार कम होती है. अपनी यह बात आप को साबित करना पड़ेगी. सहयोगी खेती की तालीम सबको देने के बाद ही आइन्दा उस तरह की खेती की जा सकेगी. लेकिन जब तक अपनी जुदा जुदा खेती की तरफ़ लोगों का झुकाव है, तब तक ज़मीन के छोटे-छोटे टुकड़ों के कारन पैदावार में कमी होगी, ऐसा मानने की कोई वजह नहीं है. तेलंगाना में शुरू मैंने

کوئی ایک فتوی نکال دے اور گوھتیا بندی ہوجائے' یہ ٹھیک نہیں .'' اُن کا کہنا ٹھیک ہے . کوئی ایک مغل سمراٹ دلی کے تخت پر سے گو ھتیا بندی کا حکم جاری کر دے' اس طرح کا یہ سوال ہی نہیں ہے . لیکن پردھان منتری سوراج میں لوک، مت کا نمائندہ ہے . اگر وہی یہ بات نہ کرے تو پھر کون کرے ؟

7. بنیادی تعلیم

صرف اتنا کہ دینے سے کہ بیسک طریقہ منظور ہے' کام نہیں چلے گا . یہ دکھانا ہوگا کہ موجودہ تعلیم کے مقابلے نئی بنیادی تعلیم کا خرچ زیادہ ہے یا کم . بنیادی تعلیم کے کارن لڑکوں کے من میں ایکتا کا خیال گھر پکڑتا ہے' اس لئے شروع سے چاہے بنیادی اِسکول یا شالا سواولمبی بھلے ہی نہ معلوم ہوتی ہو' تو بھی آخر وہ محض سواو لمبی ہی نہیں' بلکہ امن کن بھی ثابت ہوتی ہے . اس لئے آپ کو کہنا چاہئے کہ وہ شالا چل سکتی ہے' اور پلاننگ رپورٹ میں بنیادی شالا کی یوجنا دینی چاہئے . شالا کے پاس دو ایکڑ زمین ہونی چاہئے اور لڑکوں کو اپنی محنت سے شالا کے بغیچے میں ساگ' ترکاریاں اور کپڑے کے لئے ضروری کپاس پیدا کر لینی چاہئے . ماسٹر کو اُس زمین میں سے اپنی گذر کے لائق ساگ بھاجی اور کپاس ملتی رہنی چاہئے . گاوں کے گرو جی کو ایک ایک پائلی (100 تولہ) غلہ ملنا چاہئے . اتنا سب کرنے پر بھی اور جو پھٹکر خرچ آئے گا' وہ اِس یوجنا میں بتلانا چاہئے .

ہریجن لڑکوں کے لئے چھاترالے یا ہوسٹل یا آشرموں کی یوجنا آپ نے سجھائی ہے . ہمارے مت سے اب آگے چلکر ہریجنوں کے لئے الگ چھاترالے یا آشرم نہیں ہونے چاہئیں . ہریجن لڑکوں کے بارے میں صرف اِتنا ہی دیکھنا کافی نہیں ہے کہ اُن کی تعلیم کیسے بڑھے گی' بلکہ یہ بھی دیکھنا چاہئے کہ چھواچھوت مٹاتے ہوئے تعلیم کیسے بڑھے گی ؟ اس لئے الگ چھاترالے کھولنے کے بدلے انہیں سب کے لئے چلنے والے چھاترالیوں میں ہی جگہ دلانی چاہئے .

8. زمین کے بارے میں سرکار کی نیتی

آپ کہتے ہیں کہ چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں سے پیداوار کم ہوتی ہے . اپنی یہ بات آپکو ثابت کرنا پڑے گی . سہیوگی کھیتی کی تعلیم سب کو دینے کے بعد ہی آئندہ اِسطرح کی کھیتی کی جا سکیگی . لیکن جب تک اپنی جداجدا کھیتی کی طرف لوگوں کا جھکاؤ ہے' تب تک زمین کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں کے کارن پیداوار میں کمی ہوگی' ایسا ماننے کی کوئی وجہ نہیں ہے . تیلنگانہ میں شروع میں میں نے

की हिम्मत नहीं दिखाई देती. हथियार बन्दी करो, कहने की हिम्मत नहीं है, मशीन बन्दी करो, कहने की भी हिम्मत नहीं है. गो हत्या बन्द करने की जरूरत नहीं है, यह कहने की भी हिम्मत नहीं है. लेकिन आपको यह पहचान लेना चाहिये कि इस मुल्क में गोहत्या चल नहीं सकती. गाय-बैल हमारे समाज में दाखिल हो गये हैं और इसलिये यह हमारा समाजवाद है. लोग मुझसे पूछते हैं कि, "क्या दूसरे जानवरों की तुम्हें दया नहीं आती ?" मैं कहता हूँ, "नहीं. पहले मुझे गाय पर दया कर लेने दो. उसको अगर मैं बचा सका, तो फिर बची हुई दया दूसरों के लिये बरतूँगा. गाय को बचा कर ही मैं दूसरों को बचा सकूँगा." सवाल सीधा है कि आपको अपने देश की हिफ़ाज़त करना है या नहीं ? अगर करना है तो गोवध हिन्दुस्तानी कलचर के मुवाफ़िक़ नहीं बैठता, इसका आपको ध्यान रखना चाहिये. गो हत्या जारी रही, तो हिन्दुस्तान में बग़ावत होगी. इसलिये 'गो हत्या जारी रहे' कहने की हिम्मत आपकी नहीं होती. 'औलाद रोको' के बारे में आप साफ़ बोलते हैं. शराब बन्दी के बारे में 'धीरे चलो' का इसरार करते हैं. इसी तरह यह भी कह डालिये कि गाय मारने में कोई हर्ज नहीं ! लेकिन राष्ट्र की हालत देखकर आप वैसा नहीं कर सकते. हमारा कहना यह है कि गो हत्या-बन्दी करना ही मुनासिब है. राष्ट्र की माली हालत इस बोझ को उठा सकती है. गो सदन में रहने वाले ढोरों के मल मूत्र और हड्डियों की खाद का अच्छी तरह से अगर हम उपयोग कर सकें, तो गो-पालन का बोझ नहीं होगा. और मुसलमानों की तरफ़ से अगर आप इतमीनान चाहते हों, तो मैं लिख कर देता हूँ कि उन्हें गो हत्या नहीं चाहिये.

मेव लोगों से मैंने मस्जिदों में जाकर कहा कि "अल्लाह अगर मांस का भूका होता और मांस से खुश होने वाला होता, तो उसे यह क़साई ही खुश कर लेते. उसका सन्देश सुनाने के लिये पैग़म्बर की ज़रूरत न रही होती. लेकिन वह मांस का भूका नहीं है, भक्ति भाव का भूका है." मेरी यह बात उनकी समझ में आ गई. उस वक़्त सरकार ने वहां गो हत्या-बन्दी का एलान नहीं किया था. मौलवी लोग मेव लोगों से कहते ही थे कि गो-हत्या नहीं होनी चाहिये. लेकिन एक गांव में दो गायें मारी गईं और इस पर वहां तूफ़ान मचने की नौबत आई, तब मैंने लोगों को समझाया और मामला बढ़ने नहीं दिया.

क्या आप ऐसा नहीं मानते कि गो हत्या बन्दी हिन्दुस्तान के लोगों का मैंन्डेट (फ़रमान) है ? आप को दो-टूक कहना चाहिये कि हम गो हत्या बन्दी करेंगे. वैसे, इस मामले पर जवाहरलाल जी का बंगलोर का भाशन मुझे बहुत पसन्द आया. उन्होंने कहा, "दिल्ली में बैठ कर

ہمت نہیں دکھائی دیتی . ہتھیار بندی کرو' کہنے
ہمت نہیں ہے' مشین بندی کرو' کہنے کی بھی ہمت
ں ہے . گو ہتیا بند کرنے کی ضرورت نہیں ہے' یہ
نے کی بھی ہمت نہیں ہے . لیکن آپ کو یہ پہچان
ا چاہئے کہ اس ملک میں گو ہتھیا چل نہیں سکتی .
بیل ہمارے سماج میں داخل ہوگئے ہیں اور اس
یہ ہمارا سماج واد ہے . لوگ مجھ سے پوچھتے ہیں
" کیا دوسرے جانوروں کی تمہیں دیا نہیں آتی ؟"
ں کہتا ہوں' " نہیں . پہلے مجھے گائے پر دیا کر لینے
. اُس کو اگر میں بچا سکا' تو پھر بچی ہوئی دیا
مروں کے لئے برتونگا . گائے کو بچا کر ہی میں دوسروں
بچا سکونگا ." سوال سیدھا ہے کہ آپ کو اپنے دیش
حفاظت کرنا ہے یا نہیں ؟ اگر کرنا ہے تو گو بدھ
دستانی کلچر کے موافق نہیں بیٹھتا' اس کا آپ کو
یان رکھنا چاہئے . گو ہتیا جاری رہی تو ہندستان
ں بغاوت ہوگی . اس لئے 'گو ہتیا جاری رہے' کہنے
ہمت آپکی نہیں ہوتی . 'اولاد روکو' کے بارے میں آپ
ـ بولتے ہیں . شراب بندی کے بارے میں' دھیرے چلو
صرار کرتے ہیں . اِسی طرح یہ بھی کہہ ڈالئے کہ گائے مارنے
ں کوئی حرج نہیں ! لیکن راشٹر کی حالت دیکھکر
ویسا نہیں کر سکتے . ہمارا کہنا یہ ہے کہ گو ہتیا
دی کرنا ہی مناسب ہے . راشٹر کی مالی حالت
ے بوجھ کو اُٹھا سکتی ہے . گو سدن میں رہنے والے
روں کے مل موتر اور ہڈیوں کی کھاد کا اچھی طرح
اگر ہم اُپیوگ کر سکیں' تو گو پالن کا بوجھ نہیں ہوگا .
مسلمانوں کی طرف سے اگر آپ اطمینان چاہتے ہوں'
میں لکھکر دیتا ہوں کہ اُنہیں گوہتیا نہیں چاہئے .

میو لوگوں سے میں نے مسجدوں میں جاکر کہا کہ
اللہ اگر مانس کا بھوکا ہوتا اور مانس سے خوش ہونے
ہوتا تو اُسے یہ قصائی ہی خوش کر لیتے . اُس کا
دیش سنانے کے لئے پیغمبر کی ضرورت نہ رہی ہوتی .
ین وہ مانس کا بھوکا نہیں ہے' بھکتی بھاؤ کا بھوکا ہے ."
ری یہ بات اُن کی سمجھ میں آگئی . اُس وقت سرکار
وہاں گوہتیا بندی کا اعلان نہیں کیا تھا . مولوی
ـ میو لوگوں سے کہتے ہی تھے کہ گوہتیا نہیں ہونی
اہئے . لیکن ایک گاؤں میں دو گائیں ماری گئیں اور
ں پر وہاں طوفان مچنے کی نوبت آئی' تب میں
لوگوں کو سمجھایا اور معاملہ بڑھنے نہیں دیا .

کیا آپ ایسا نہیں مانتے کہ گوہتیا بندی ہندستان
لوگوں کا مینڈیٹ (فرمان) ہے ؟ آپکو دو ٹوک کہنا
اہئے کہ ہم گوہتیا بندی کرینگے . ویسے' اس
املے پر جواہر لال جی کا بنگلور کا بھاشن' مجھے
ت پسند آیا . اُنہوں نے کہا' " دلی میں بیٹھکر

इससे तो बेहतर होता कि आप कह देते कि हमें तलवार के बदले तबला चाहिये! हाय, हाय, कैसी तबाही है यह !

5: हमेशा भीक मांगने का प्लान

आपने प्रतिज्ञा की कि सन '51 के बाद हम बाहर से अनाज नहीं मंगायेंगे. इतनी बड़ी प्रतिज्ञा करने के बाद अब जब यह दिखाई देने लगा कि वह पूरी नहीं हो सकती, तब आप एक प्लानिंग कमीशन क़ायम करते हैं. वह प्लानिंग कमीशन कहता है कि अभी कुछ बरस के लिये हमारा मुल्क अनाज के मामले में स्वावलम्बी नहीं हो सकता है. और इसके बाद सरकार को सारी लाज छोड़ कर कहना पड़ेगा कि प्लानिंग कमीशन कहता है कि अनाज के मामले में देश स्वावलम्बी नहीं हो सकता, इसलिये हम बाहर से अनाज मंगायेंगे !

हम लगातार लिखते आए हैं कि पहले अनाज स्वावलम्बन साध लीजिये. लेकिन उधर ध्यान न दे कर आज आप कहते हैं कि 30 लाख टन अनाज बाहर से मंगाना पड़ेगा. बाहर कोई हमारे बाप की जायदाद रखी है ? बाहर से मंगाने का फ़ैसला करने पर बाहर वालों की मर्ज़ी के मुताबिक़ यहां पर फ़सल पैदा करनी होगी. इस तरह यह हमेशा के लिये भीक मांगने का प्लान होने वाला है. आपने यह भी लिख दिया है कि शायद ज़ियादा भी मंगाना पड़ेगा. क्या आप दरअसल कभी हिन्दुस्तान की हिफ़ाज़त का विचार करते हैं ? अगर करते हों तो क्या कभी यह विचार आप के मनमें आता है कि अनाज की अड़चन आने पर आप क्या करेंगे ? कल अगर पाकिस्तान से आपकी लड़ाई हो गई, तो साफ़ है कि वह आपको अनाज देने से इनकार करेगा. फिर अमरीका वग़ैरा जो कोई आपको अनाज देंगे, वह आपके लिये प्रेम के कारन देंगे या आपको अपने बंधनों में बांधने के लिये देंगे ? इसलिये आप कम से कम इतना क्यों नहीं कहते कि अनाज और कपड़े के बारे में हमें स्वावलम्बन पहले साधना है." प्लानिंग कमीशन की रिपोर्ट पढ़कर आज देहात के लोगों को ज़ियादा अनाज उपजाने का हौसला नहीं हो सकता. संकट के समय देश के लिये कुछ त्याग करने का जोश उन्हें यह रिपोर्ट पढ़कर नहीं पैदा होता.

6. गोवध-बन्दी

आपने अपनी रिपोर्ट में एक जगह कहा है कि क़साई ख़ानों का भी जानवरों की तादाद पर कोई असर नहीं हुआ है. कमज़ोर ढोरों को मार डालने से अर्थशास्त्र की निगाह से बहुत ही ज़ोरदार योजना बनेगी, इसमें कोई शक नहीं. लेकिन वैसा करो, यह कहने की आपकी हिम्मत नहीं है. किसी भी मामले में साफ़ रहनुमाई करने की आप

اس سے تو بہتر ہوتا کہ آپ کہہ دیتے کہ ہمیں تلوار کے بدلے طبلہ چاہئے! ہائے، ہائے، کیسی تباہی ہے یہ !

5. ہمیشہ بھیک مانگنے کا پلان

آپ نے پرتگیا کی کہ سن '51 کے بعد ہم باہر سے اناج نہیں منگائیں گے. اتنی بڑی پرتگیا کرنے کے بعد اب جب یہ دکھائی دینے لگا کہ وہ پوری نہیں ہوسکتی، تب آپ ایک پلاننگ کمیشن قائم کرتے ہیں. وہ پلاننگ کمیشن کہتا ہے کہ ابھی کچھ برس کے لئے ہمارا ملک اناج کے معاملے میں سوالمبی نہیں ہوسکتا ہے. اور اسکے بعد سرکار کو ساری لاج چھوڑکر کہنا پڑے گا کہ پلاننگ کمیشن کہتا ہے کہ اناج کے معاملے میں دیش سوالمبی نہیں ہوسکتا، اسلئے ہم باہر سے اناج منگائیں گے!

ہم لگاتار لکھتے آئے ہیں کہ پہلے اناج سوا لمبن سادھ لیجئے. لیکن ادھر دھیان نہ دے کر آج آپ کہتے ہیں کہ 30 لاکھ ٹن اناج باہر سے منگانا پڑے گا. باہر کوئی ہمارے باپ کی جائداد رکھی ہے؟ باہر سے منگانے کا فیصلہ کرنے پر باہر والوں کی مرضی کے مطابق یہاں پر فصل پیدا کرنی ہوگی. اس طرح یہ ہمیشہ کے لئے بھیک مانگنے کا پلان ہونے والا ہے. آپ نے یہ بھی لکھدیا ہے کہ شاید زیادہ بھی منگانا پڑے گا. کیا آپ دراصل کبھی ہندستان کی حفاظت کا وچار کرتے ہیں؟ اگر کرتے ہوں تو کیا کبھی یہ وچار آپ کے من میں آتا ہے کہ اناج کی اڑچن آنے پر آپ کیا کریں گے؟ کل اگر پاکستان سے آپ کی لڑائی ہوگئی، تو صاف ہے کہ وہ آپ کو اناج دینے سے انکار کرے گا. پھر امریکہ وغیرہ جو کوئی آپ کو اناج دیں گے، وہ آپ کے لئے پریم کے کارن دیں گے یا آپ کو اپنے بندھنوں میں باندھنے کے لئے دیں گے؟ اس لئے آپ کم سے کم اتنا کیوں نہیں کہتے کہ اناج اور کپڑے کے بارے میں ہمیں سوالمبن پہلے سادھنا ہے. پلاننگ کمیشن کی رپورٹ پڑھکر آج دیہات کے لوگوں کو زیادہ اناج اپجانے کا حوصلہ نہیں ہوسکتا. سنکٹ کے سمے دیش کے لئے کچھ تیاگ کرنے کا جوش انہیں یہ رپورٹ پڑھکر نہیں پیدا ہوتا.

6. گو بدھ بندی

آپ نے اپنی رپورٹ میں ایک جگہ کہا ہے کہ قصائی خانوں کا بھی جانوروں کی تعداد پر کوئی اثر نہیں ہوا ہے. کمزور ڈھوروں کو مار ڈالنے سے ارتھ شاستر کی نگاہ سے بہت ہی زوردار یوجنا بنے گی، اس میں کوئی شک نہیں. لیکن ویسا کرو، یہ کہنے کی آپ کی ہمت نہیں ہے. کسی بھی معاملے میں صاف رہنمائی کرنے کی آپ

हाँ, तो फिर आप देहात में से लगान वसूल करके बाहर क्यों ले जाते हैं? आपका काम सिर्फ़ सिफ़ारिशें करना नहीं है. उन पर अमल कराने के लिये मुनासिब रास्ते सुझाने की ताक़त आप में होनी चाहिये. मिल वालों की कोशिशों से सत्तरह गज़ फ़ी आदमी कपड़े की निकासी थी—वह बारह गज़ क्यों रह गई? कहते हैं कि मिल वालों को काफ़ी कपास नहीं मिली, इसलिये कपड़ा कम बना. कारन के बिना काम नहीं होता, यह तो उसूल ही है. लेकिन उन्हें कपास नहीं मिली, इसका मतलब यही है कि उन्हें जो कपास चाहिये, वैसी कपास यहां पैदा नहीं होती; और यहां जो कपास होती है, वह उनके काम की नहीं. अपना बच्चा भावता नहीं, इसलिये दूसरे का बच्चा नहीं लिया जाता!

इस पर कमीशन के मेम्बर ने कहा: पहले भी यहां की कपास से कपड़ा होता था, पर वह मोटा व खुरदरा होता था. बाहर से महीन कपड़ा आने लगा, इसलिये यहां का मोटा कपड़ा बन्द हो गया और बाद में बाहर से कपास मंगा कर यहीं महीन कपड़ा बनना शुरू हो गया.

विनोबा: विदेशी कपड़ा जब आने लगता है, तो उसके मुक़ाबले में आप स्वदेशी मिलों की हिफ़ाज़त करते हैं न? फिर उसी तरह मिलों के मुक़ाबले में खादी की हिफ़ाज़त क्यों नहीं करते?

देहात के जो धन्दे आपने छीन लिये हैं, वह आप देहातियों को वापस नहीं देते. आपकी जो कुछ बुद्धि चलती है, वह अपने बच्चों को मारने के लिये दिमाग़ चलाने वाले बाप की तरह चलती है. आपने देहातियों से कपड़े का धन्दा छीन लिया और मिलें खोलीं, तेल का धन्दा छीन लिया और तेल की मिलें खोलीं, गुड़ का धन्दा छीन कर शक्कर के कारख़ाने खोले. इस तरह देहातों को कंगाल बनाने पर अगर आपने उन पर चढ़ाई की, तो वह उस चढ़ाई के सामने कैसे ठहर सकेंगे? शहर वालों का बचाव तब आप कैसे कर सकेंगे? इसलिये ऐसा कुछ भी नहीं होना चाहिये, जिससे ग्रामोद्योगों को नुकसान हो. इस मामले में हमारा उसूल यही है कि जिन धन्दों का कच्चा माल देहातों में पैदा होता है और जिनके पक्के माल की देहात के लोगों को ज़रूरत होती है, वह धन्दे देहातियों के लिये 'रिज़र्व' यानी महफ़ूज़ रखने चाहियें. 'रिज़र्व' फ़ारेस्ट—महफ़ूज़ जंगलों—की तरह कुछ धन्दे देहातियों के लिये महफ़ूज़ क्यों नहीं रखे जा सकते? जवाब में कहा जाता है कि फिर जीवन में कोई मज़ा नहीं रह जायगा. मौज शौक़ के जीवन के लिये इन्हें गांव-गांवड़ों का नाच-गाना चाहिये. बंगलोर में कुल हिन्द कांगरेस कमेटी की उस बैठक के गंभीर वातावरण में आपने इसके लिये ठहराव पास करा लिया.

ں، تو پھر آپ دیہات میں سے لگان وصول کرکے
ہر کیوں لیجاتے ہیں؟ آپ کا کام صرف سفارشیں
رنا نہیں ہے۔ اُنپر عمل کرانے کے لئے مناسب راستے
جھانے کی طاقت آپ میں ہونی چاہئے۔ مل
لوں کی کوششوں سے سترہ گز فی آدمی کپڑے کی نکاسی
و تھی وہ بارہ گز کیوں رہ گئی؟ کہتے ہیں کہ مل والوں
کافی کپاس نہیں ملی، اِس لئے کپڑا کم بنا۔ کارن کے
ا کام نہیں ہوتا، یہ تو اصول ہی ہے لیکن اُنہیں
اس نہیں ملی، اِسکا مطلب یہی ہے کہ اُنہیں جو
اس چاہئے، ویسی کپاس یہاں پیدا نہیں ہوتی؛ اور
ہاں جو کپاس ہوتی ہے، وہ اُنکے کام کی نہیں۔ اپنا
چہ ناچھا نہیں، اِس لئے دوسرے کا بچہ نہیں لیا جاتا!

اِس پر کمیشن کے ممبر نے کہا: پہلے بھی یہاں کی
اس سے کپڑا ہوتا تھا، پر وہ موٹا و کھردرا ہوتا تھا۔
ہر سے مہین کپڑا آنے لگا، اِسلئے یہاں کا موٹا کپڑا بند
گیا اور بعد میں باہر سے کپاس منگاکر یہیں مہین
ا بننا شروع ہوگیا۔

ونوبا: ودیشی کپڑا جب آنے لگتا ہے، تو اُسکے مقابلے
ں آپ سودیشی ملوں کی حفاظت کرتے ہیں نا؟
ر اُسی طرح ملوں کے مقابلے میں کھادی کی حفاظت
وں نہیں کرتے؟

دیہات کے جو دھندے آپ نے چھین لئے ہیں، وہ
پ دیہاتیوں کو واپس نہیں دیتے۔ آپ کی جو کچھ
دھی چلتی ہے، وہ اپنے بچوں کو مارنے کے لئے دماغ
لانے والے باپ کی طرح چلتی ہے۔ آپ نے دیہاتیوں سے
ڑے کا دھندہ چھین لیا اور ملیں کھولیں، تیل کا
ندہ چھین لیا اور تیل کی ملیں کھولیں، گڑ کا دھندہ
ھین کر شکر کے کارخانے کھولے۔ اِس طرح دیہاتوں کو
نگال بنانے پر اگر آپ نے اُن پر چڑھائی کی، تو وہ اُس
ڑھائی کے سامنے کیسے ٹھہر سکینگے؟ شہر والوں کا
چاو تب آپ کیسے کرسکینگے؟ اِس لئے ایسا کچھ
ی نہیں ہونا چاہئے، جس سے گرام اُدیوگوں کو نقصان
۔ اِس معاملے میں ہمارا اصول یہی ہے کہ جن
ندوں کا کچا مال دیہاتوں میں پیدا ہوتا ہے اور جن
پکے مال کی دیہات کے لوگوں کو ضرورت ہوتی ہے، وہ
ندے دیہاتیوں کے لئے 'ریزرو' یعنی محفوظ رکھنے
ہئیں۔ 'ریزرو' — فارسٹ محفوظ جنگلوں — کی طرح
چھ دھندے دیہاتیوں کے لئے محفوظ کیوں نہیں رکھے
اسکتے؟ جواب میں کہا جاتا ہے کہ پھر جیون میں
ئی مزا نہیں رہ جائیگا۔ موج شوق کے جیون کے لئے
ہیں گاؤں گاؤں میں ناچ گانا چاہئے۔ بنگلور میں
ل ہند کانگریس کمیٹی کی اُس بیٹھک کے گمبھیر
تاورن میں آپ نے اسکے لئے ٹھہراو پاس کرا لیا۔

4. ग्रामोद्योग

ग्रामोद्योगों से आप कहते हैं कि वह अपने पैरों पर खड़े रहें. आप मेरी टांगें तोड़ देते हैं और फिर मुझसे अपनी टांगों पर खड़े होने के लिये कहते हैं! तिस पर भी मैं अपने हाथों के बल चल लेता हूँ, इसके लिये आपको *मुझे शाबाशी देनी चाहिये. आपको यह विचार करना चाहिये कि सरकार जब विदेशी थी, तब उसकी मरज़ी के* और पालिसी के खिलाफ़ गांधी जी ने खादी और ग्रामोद्योग चलाकर दिखाए. लेकिन इसकी क़द्र करने के बदले आप हम से कहते हैं कि गांधी जी जैसे आदमी के पचीस-पचीस बरस कोशिश करने पर भी जो नहीं हो सका, वह आज कैसे मुमकिन है ? मैं आप से पूछता हूँ कि हमें आज जो स्वराज मिला है, उसमें खादी का कोई दस फ़ी सदी हिस्सा भी है या नहीं ? मां कहती है, 'बेटा, मैंने आज तक मेहनत करके तुझे संभाला है. अब तू मुझे संभाल ले.' लेकिन उसे संभालने के बदले आप उसे नसीहत करने लगे हैं ! गांधी जी ने जो किया वह कैसे किया, इसका मुझे अचरज होता है. उन्होंने वह एक चमत्कार ही करके दिखाया.

आपको सोचना यह चाहिये कि गांधी जैसा अकेला आदमी अगर मुशकिल हालत में इतना कर सका तो आज, जब कि अपनी सरकार है, कितना अधिक होना चाहिये ? यह उलटे हिसाब (इनव्हर्स प्रपोर्शन) की मिसाल है, लेकिन आप उसे 'सीधे हिसाब' (डिरेक्ट प्रपोर्शन) की मिसाल बनाकर हल करना चाहते हैं. हिसाब के न जानने का यह नतीजा है.

अपने हाल ही के दौरे में मैंने गांव-गांव से पूछा, समाजवादियों से भी पूछा कि "भैया, यहां खादी के सिवा और कोई उद्योग तुम सुझा सकते हो ?" वह भी मानते हैं कि खादी के सिवा दूसरा कोई उद्योग हम सुझा नहीं सकते और न दे ही सकते हैं. खादी के लिये तेलंगाना में काफ़ी मौजूँ वातावरन है. सौ सौ स्त्रियां तीन-तीन मील से अपने सिर पर चरखे लेकर मुझ से मिलने आती थीं और बड़ी आसानी से दो-दो ढाई-ढाई घंटे कातती थीं. एक तार भी नहीं टूटता था. फिर भी वहां की सरकार इसका विचार भी नहीं करती है. इसका कारन इतना ही है कि आप लोगों ने अपनी कुछ बातें लासबूत मान रखी हैं. अपनी इन लासबूत बातों को अब आप छोड़िये. आप यह क़बूल कीजिये कि हम सब को काम देंगे. फिर आप देखेंगे कि ग्रामोद्योगों के सिवा रास्ता ही नहीं है. आप कहते हैं कि देहात के सब लोगों को काम देने की योजना खुद देहातियों को ही करनी चाहिये. हम तो हर जगह यही बतलाते आए हैं. लेकिन अगर आप यही बतलाने वाले

4. گرام اُدیوگ

گرام اُدیوگوں سے آپ کہتے ہیں کہ وہ اپنے پیروں پر کھڑے رہیں. آپ میری ٹانگیں توڑ دیتے ہیں اور پھر مجھسے اپنی ٹانگوں پر کھڑے ہونے کے لئے کہتے ہیں! تسپر بھی میں اپنے ہاتھوں کے بل چل لیتا ہوں' اِسکے لئے آپ کو مجھے شاباشی دینی چاہئے. آپ کو یہ وچار کرنا چاہئے کہ سرکار جب ودیشی تھی' تب اُسکی مرضی کے اور پالیسی کے خلاف گاندھی جی نے کھادی اور گرام اُدیوگ چلاکر دکھائے. لیکن اِسکی قدر کرنے کے بدلے آپ ہم سے کہتے ہیں کہ گاندھی جی جیسے آدمی کے پچیس پچیس برس کوشش کرنے پر بھی جو نہیں ہوسکا' وہ آج کیسے ممکن ہے؟ میں آپ سے پوچھتا ہوں کہ ہمیں آج جو سوراج ملا ہے' اُس میں کھادی کا کوئی دس فیصدی حصہ بھی ہے یا نہیں؟ ماں کہتی ہے' 'بیٹا' میں نے آج تک محنت کرکے تجھے سنبھالا ہے. اب تو مجھے سنبھال لے.' لیکن اُسے سنبھالنے کے بدلے آپ اُسے نصیحت کرنے لگے ہیں! گاندھی جی نے جو کیا وہ کیسے کیا' اسکا مجھے اچرج ہوتا ہے. اُنہوں نے ایک چمتکار ہی کرکے دکھایا.

آپ کو سوچنا یہ چاہئے کہ گاندھی جیسا اکیلا آدمی اگر مشکل حالت میں اِتنا کرسکا تو آج' جبکہ اپنی سرکار ہے' کتنا ادھک ہونا چاہئے؟ یہ 'اُلٹے حساب' (اِنورس پرپورشن) کی مثال ہے' لیکن آپ اُسے 'سیدھے حساب' (ڈیریکٹ پرپورشن) کی مثال بناکر حل کرنا چاہتے ہیں. حساب کے نہ جاننے کا یہ نتیجہ ہے.

اپنے حال ہی کے دورے میں میں نے گاؤں گاؤں سے پوچھا' سماج وادیوں سے بھی پوچھا کہ "بھیا' یہاں کھادی کے سوا اور کوئی اُدیوگ تم سجھا سکتے ہو؟" وہ بھی مانتے ہیں کہ کھادی کے سوا دوسرا کوئی اُدیوگ ہم سجھا نہیں سکتے اور نہ دے ہی سکتے ہیں. کھادی کے لئے تیلنگانہ میں کافی موزوں واتاورن ہے. سو سو استریاں تین تین میل سے اپنے سر پر چرخے لے کر مجھسے ملنے آتی تھیں اور بڑی آسانی سے دو دو ڈھائی ڈھائی گھنٹے کاتتی تھیں. ایک تار بھی نہیں ٹوٹتا تھا. پھر بھی وہاں کی سرکار اسکا وچار بھی نہیں کرتی ہے. اِسکا کارن اِتنا ہی ہے کہ آپ لوگوں نے اپنی کچھ باتیں لاثبوت مان رکھی ہیں. اپنی اِن لاثبوت باتوں کو اب آپ چھوڑئیے. آپ یہ قبول کیجئے کہ ہم سب کو کام دینگے. پھر آپ دیکھیں گے کہ گرام اُدیوگوں کے سوا راستہ ہی نہیں ہے. آپ کہتے ہیں کہ دیہات کے سب لوگوں کو کام دینے کی یوجنا خود دیہاتیوں کو ہی کرنی چاہئے. ہم تو ہر جگہ یہی بتلاتے آئے ہیں. لیکن اگر آپ ہی بتلانے والے

आप ऐसी प्रतिज्ञा कीजिये और फिर चाहे जैसी प्लानिंग कर लीजिये, चाहे जैसी मशीनें लीजिये, मुझे एतराज नहीं है. पर आप उलटे कहते हैं कि सब को काम देना मुमकिन नहीं है. सारे राष्ट्र को काम देने की जिन पर जिम्मेदारी है, उन्हें अगर यह मुमकिन नहीं मालूम होता, तो उन्हें *इस्तीफ़ा दे देना चाहिये !*

2. शराब ख़ोरी

अभी मैं सारे तेलंगाना में घूमकर आया हूँ. अहिंसा में मेरा विश्वास है, इसलिये मैं अपना काम करता रहा. लेकिन वैसा न होता तो मैं कम्युनिस्टों में दाखिल हुआ दिखाई देता, ऐसी वहां की हालत है. इन पांच-पचास या सौ बरसों में लोग वहां बराबर शराब पीते आए हैं. राष्ट्र के राष्ट्र ऊपर उठे, लेकिन उनमें कहीं जाग्रति नहीं. लेकिन इस बात की प्लानिंग कमीशन की रिपोर्ट में कहीं चर्चा नहीं है. इस बात की तरफ़ उनका कहीं ध्यान नहीं गया है. तेलंगाना के देहात का जीवन मैं देखकर आया हूँ. जिस तरह आश्रम में शाम को प्रार्थना होती हुई दिखाई देती है, उसी तरह वहां रोज झगड़े होते हुए दिखाई देंगे. मैंने खुद लोगों को इस तरह लड़ते हुए देखा है. उनका जीवन कैसे सुधर सकेगा, इसकी फ़िक्र इस कमीशन को बिलकुल नहीं है.

3. आबादी पर रोक

परिवार बढ़ने के बारे आप कहते हैं—बाल-बच्चे कम पैदा कीजिये. मैं कहता हूँ—आप हमारे सेवक हैं या गुरु ? आपका काम हमें खिलाने का है. हिन्दुस्तान में प्रजा जियादा है, ऐसा मैं नहीं मानता. क्या आपका पैदायश-कन्ट्रोल के सम्बन्ध में अनुभव है ? प्रजा अधिक क्यों बढ़ती है, इस पर क्या आपने कभी विचार किया है ? सिंह के औलाद कम होती है, बकरी के जियादा होती है. आपके इस 'औलाद रोको' प्रचार से बच्चे किसके कम होंगे ? देहात में बच्चे कम होने की जरूरत है. और आज तो देहात में ही किसान के बच्चे जियादा होते हैं. गिरी हुई समाजी हालत की बदौलत यह सब हो रहा है. उसका इलाज औलाद-कन्ट्रोल नहीं है, बल्कि जीवन को ठीक दिशा में मोड़ना है. मैं सन्तान बढ़ने देने वाला हूँ, लेकिन साथ साथ यह भी कहने वाला हूँ कि जीवन की रीति ही ऐसी हो, जिससे सन्तान अपने आप ही कम हो और अच्छी हो. सन्तान अच्छी होने के लिये जिन बातों की जरूरत होती है, उन्हीं बातोंकी ज़रूरत सन्तान कम होने के लिये होती है. यह सवाल औलाद-कन्ट्रोल का नहीं है, बल्कि जीवन बदलने का और उसके मुताबिक़ हालात पैदा करने का है.

آپ ایسی پرتگیا کیجئے اور پھر چاہے جیسی پلاننگ کر لیجئے ' چاہے جیسی مشینیں لیجئے ' مجھے اعتراض نہیں ہے. پر آپ اُلٹے کہتے ہیں کہ سب کو کام دینا ممکن نہیں ہے . سارے راشٹر کو کام دینے کی جن پر ذمہ داری ہے ' اُنہیں اگر یہ ممکن نہیں معلوم ہوتا' تو اُنہیں استعفیٰ دے دینا چاہئے !

.2 شراب خوری

ابھی میں سارے تیلنگانہ میں گھوم کر آیا ہوں . اہنسا میں میرا وشواس ہے' اِس لئے میں اپنا کام کرتا رہا . لیکن ویسا نہ ہوتا تو میں کمیونسٹوں میں داخل ہوا دکھائی دیتا' ایسی وہاں کی حالت ہے. اِن پانچ' پچاس یا سو برسوں میں لوگ وہاں برابر شراب پیتے آئے ہیں. راشٹر کے راشٹر اوپر اُٹھے' لیکن اُن میں کہیں جاگرتی نہیں. لیکن اِس بات کی پلاننگ کمیشن کی رپورٹ میں کہیں چرچا نہیں ہے . اِس بات کی طرف اُن کا کہیں دھیان نہیں گیا ہے . تیلنگانہ کے دیہات کا جیون میں دیکھکر آیا ہوں. جس طرح آشرم میں شام کو پرارتھنا ہوتی ہوئی دکھائی دیتی ہے' اُسی طرح وہاں روز جھگڑے ہوتے ہوئے دکھائی دینگے . میں نے خود لوگوں کو اِس طرح لڑتے ہوئے دیکھا ہے . اُن کا جیون کیسے سدھر سکے گا' اِس کی فکر اِس کمیشن کو بالکل نہیں ہے .

.3 آبادی پر روک

پریوار بڑھنے کے بارے میں آپ کہتے ہیں — بال بچے کم پیدا کیجئے . میں کہتا ہوں — آپ ہمارے سیوک ہیں یا گرو ؟ آپ کا کام ہمیں کھلانے کا ہے . ہندستان میں پرجا زیادہ ہے' ایسا میں نہیں مانتا . کیا آپ کا پیدایش کنٹرول کے سمبندھ میں انوبھو ہے ؟ پرجا ادھک کیوں بڑھتی ہے' اِس پر کیا آپ نے کبھی وچار کیا ہے ؟ سنگھ کے اولاد کم ہوتی ہے' بکری کے زیادہ ہوتی ہے . آپ کے اِس 'اولاد روکو' پرچار سے بچے کس کے کم ہونگے ؟ دیہات میں بچے کم ہونے کی ضرورت ہے . اور آج دیہات میں ہی کسان کے بچے زیادہ ہوتے ہیں . گری ہوئی سماجی حالت کی بدولت یہ سب ہو رہا ہے . اُس کا علاج اولاد کنٹرول نہیں ہے' بلکہ جیون کو ٹھیک دشا میں موڑنا ہے . میں سنتان بڑھنے دینے والا ہوں' لیکن ساتھ ساتھ یہ بھی کہنے والا ہوں کہ جیون کی ریت ہی ایسی ہو' جس سے سنتان اپنے آپ ہی کم ہو اور اچھی ہو . سنتان اچھی ہونے کے لئے جن باتوں کی ضرورت ہوتی ہے' اُنہیں باتوں کی ضرورت سنتان کم ہونے کے لئے ہوتی ہے . یہ سوال اولاد کنٹرول کا نہیں ہے' بلکہ جیون بدلنے کا اور اُسکے مطابق حالات پیدا کرنے کا ہے .

ताल्लुक़ क़ायम करने के लिये उसकी सच्ची ख़िदमत की जाये जिसकी ख़ातिर एक नई फ़ौज—जो पुराने माना चाहें उन्हें मुबारक—खड़ी की जाय. हम रह रह कर सोचते हैं कि जवाहर लाल जी इस नेक काम में देरी क्यों कर रहे हैं और देश का दुखड़ा क्यों नहीं दूर करते जब कि वह सहज में दूर कर सकते हैं.

—सुरेश रामभाई

تعلق قائم کرنے کے لئے اُس کی سچی خدمت کی جائے جس کی خاطر ایک نئی فوج— جو پرانے آنا چاہیں اُنہیں مبارک— کھڑی کی جائے. ہم رہ رہ کر سوچتے ہیں کہ جواہر لال جی اِس نیک کام میں دیری کیوں کر رہے ہیں اور دیش کا دکھڑا کیوں نہیں دور کرتے جب کہ وہ سہج میں دور کر سکتے ہیں .

— سریش رام بھائی

'सर्वोदय' से

हिन्द सरकार का पंच साला प्लान

[प्लानिंग कमीशन के एक मेम्बर भाई राम कृष्ण पाटिल, 10 अगस्त 1951 को आचार्य विनोबा जी के आश्रम पौनार में हिन्द सरकार के पंच साला प्लान पर उनकी राय जानने के लिये आए थे. विनोबा जी ने दर्दभरे लहजे में जो अपनी राय ज़ाहिर की वह सितम्बर के 'सर्वोदय' में छपी है. उसका एक हिस्सा हम नीचे दे रहे हैं.—एडीटर]

1. सब को काम

आपकी सारी योजना में यह बात नहीं है कि हर एक को काम और खाना मिलेगा ही. भारत के विधान में आपने यह उसूल मान लिया है, फिर भी आपकी योजना में वह प्रतिज्ञा नहीं है. घर का मालिक हमेशा यह मानता है कि सारे कुनबे को खाना और काम अभी इसी वक़्त मिलना चाहिये. उसी तरह से सारे समाज का विचार करने के लिये सरकार की ज़रूरत होती है. यह उसूल मान कर जब आप योजना बनायेंगे तो सारी दृष्टि ही बदल जायेगी. इस दृष्टि से हमें क्या करना मुमकिन है, इसका विचार करना चाहिये. लेकिन इस दृष्टि से विचार नहीं किया जाता. उन्हें फ़ौज चाहिये, बड़े पैमाने पर उद्योग चाहिये. यह सब मानकर ही यह योजना बनाई गई है, और फिर कहते हैं कि सब को काम देना मुमकिन नहीं है. मैं कहता हूँ कि मैं पहले सब को काम और अनाज दूंगा, सारी योजना इस दृष्टि से तैयार करूंगा.

सब को काम देने के बारे में आपको ऐसी प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि फ़्लाँ तारीख़ से हम सब को काम देंगे.

'سروودے' سے

هند سرکار کا پنچ سالہ پلان

[پلاننگ کمیشن کے ایک ممبر بھائی رام کرشن پاٹل' 10 اگست 1951 کو آچاریہ ونوبا جی کے آشرم پونار میں هند سرکار کے پنچ سالہ پلان پر اُن کی رائے جاننے کے لئے آئے تھے . ونوبا جی نے درد بھرے لہجے میں جو اپنی رائے ظاہر کی وہ ستمبر کے 'سروودے' میں چھپی ہے . اُسکا ایک حصہ ہم نیچے دے رہے ہیں . — اڈیٹر]

1. سب کو کام

آپ کی ساری یوجنا میں یہ بات نہیں ہے کہ ہر ایک کو کام اور کھانا ملے گا ہی . بھارت کے ودھان میں آپ نے یہ اصول مان لیا ہے' پھر بھی آپ کی یوجنا میں وہ پرتگیا نہیں ہے . گھر کا مالک ہمیشہ یہ مانتا ہے کہ سارے کنبے کو کھانا اور کام ابھی اِسی وقت ملنا چاہئے . اُسی طرح سے سارے سماج کا وچار کرنے کے لئے سرکار کی ضرورت ہوتی ہے . یہ اصول مان کر جب آپ یوجنا بنائیں گے تو ساری درشٹی ہی بدل جائیگی . اِس درشٹی سے ہمیں کیا کرنا ممکن ہے' اس کا وچار کرنا چاہئے . لیکن اِس درشٹی سے وچار نہیں کیا جاتا . اُنہیں فوج چاہئے' بڑے پیمانے پر اُدیوگ چاہئے . یہ سب مان کر ہی یہ یوجنا بنائی گئی ہے' اور پھر کہتے ہیں کہ سب کو کام دینا ممکن نہیں ہے . میں کہتا ہوں کہ میں پہلے سب کو کام اور اناج دوں گا' ساری یوجنا اس درشٹی سے تیار کرونگا .

سب کو کام دینے کے بارے میں آپ کو ایسی پرتگیا کرنی چاہئے کہ فلاں تاریخ سے ہم سب کو کام دینگے .

जते हैं तो दूसरी जात तो होना ही जायेगा, लेकिन असली जीतें तभी होंगी—जैसा कि पहले होती रही हैं—जब हम अपनी अक़्ल और जी-जान उस चीज़ के लिये खपा दें जो किसी क़द्र के लायक़ है और हम से बुलन्दी पर है."

इस ख़याल की हम हर तरह से ताईद करते हैं लेकिन देखना यह है कि कांगरेस इस 'असली जीत' के लिये क्या क़दम और किस तरह उठाती है.

सदर के एड्रेस के बाद ठहराव शुरू हुए. दो ठहराव सब-जेक्ट कमेटी में जैसा हुआ था सदर की तरफ़ से पेश किये गए. फिर विदेशी नीति और फ़िरक़े बन्दी वाले ठहराव आला स्पीचों के साथ रखे गये. दूसरे दिन 19 तारीख़ की शाम को आर्थिक प्रोग्राम वाला ठहराव आया जिस पर कुछ चर्चा चली. लेकिन सबजेक्ट कमेटी की इस ठहराव वाली चर्चा के मुक़ाबले यह चर्चा बेजान और कम पुरजोश मालूम होती थी. चर्चा का जवाब तो हुक्कामी लहजे में ही दिया गया. इसके बाद इजलास को ख़त्म करते हुए पंडित जवाहर लाल की तक़रीर हुई और फिर ज़ाब्ते के शुक्रिये माफ़ी के बाद क़ौमी गीत के साथ कांगरेस के 57 वें जलसे की कारवाई ख़त्म हुई.

दिल्ली कांगरेस के दूल्हा जवाहर लाल जी थे, उसके सब कुछ वही थे. सारा जलसा उनके चारों तरफ़ मानो नाच रहा था. कांगरेस के नुमायन्दों की निगाह जवाहर लाल जी पर थी और जवाहर लाल जी की निगाह नुमायन्दों पर. ज़्यादातर नुमायन्दों के हावभाव ऐसे थे मानो जवाहर लाल जी से पूछते हों, "पंडित जी! टिकट हमें दीजियेगा या नहीं?" और पंडित जी का जवाब था, "यह सब क्या वाहियात है? मुल्क में जात पात या भेद भाव फैलाने और तबाही मचाने वाली ताक़तों के ख़िलाफ़ कमर कस कर आप तैयार हैं या नहीं?"

दिल्ली कांगरेस में हमें महसूस हुआ कि आज हिन्दुस्तान की जनता और उसके सिर-मौर जवाहर लाल के बीच में नेताओं की बड़ी दीवार खड़ी हुई है. यह नेता वह हैं जिन्होंने बड़ी हिम्मत और बहादुरी से अंगरेज़ी साम्राज का मुक़ाबला करके उसे चारों ख़ाने चित गिरा दिया. लेकिन इस लड़ाई में ख़ुद भी दम दे गए और अब आराम के अलावा कोई दूसरा काम इनके बूते का नहीं है. अपने जवाहर लाल की बात उन्हें प्यारी ज़रूर लगती है लेकिन वह उस पर अमल करने से मजबूर हैं और इस बुरी तरह मजबूर हैं कि जहां हैं वहां से हटने को भी जी नहीं चाहता, आगे बढ़ने की कौन कहे. शायद इसी वजह से महात्मा गांधी ने वसीयत की थी कि यह नेता बने रहें लेकिन इनका संगठन तोड़ दिया जाय और जनता के साथ सच्चा

لیتے ہیں تو دوسری جیتیں تو ہو ہی جائیں گی، لیکن اصلی جیتیں تبھی ہونگی—جیسا کہ پہلے ہوتی رہی ہیں—جب ہم اپنی عقل اور جی جان اُس چیز کے لئے کھپادیں جو کسی قدر کے لائق ہے اور ہم سے بلندی پر ہے."

اِس خیال کی ہم ہر طرح سے تائید کرتے ہیں لیکن دیکھنا یہ ہے کہ کانگریس اِس 'اصلی جیت' کے لئے کیا قدم اور کس طرح اُٹھاتی ہے۔

صدر کے ایڈریس کے بعد ٹھہراؤ شروع ہوئے۔ دو ٹھہراؤ سبجکٹ کمیٹی میں جیسا ہوا تھا صدر کی طرف سے پیش کئے گئے۔ پھر بدیشی نیتی اور فرقے بندی والے ٹھہراؤ اعلیٰ اِسپیچوں کے ساتھ رکھے گئے۔ دوسرے دن 19 تاریخ کی شام کو آرتھک پروگرام والا ٹھہراؤ آیا جس پر کچھ چرچا چلی۔ لیکن سبجکٹ کمیٹی کی اِس ٹھہراؤ والی چرچا کے مقابلے یہ چرچا بے جان اور کم پرجوش معلوم ہوتی تھی۔ چرچا کا جواب تو حکامی لہجے میں ہی دیا گیا۔ اس کے بعد اجلاس کو ختم کرتے ہوئے پنڈت جواہر لال کی تقریر ہوئی اور پھر ضابطے کے شکریے معافی کے بعد قومی گیت کے ساتھ کانگریس کے 57 ویں جلسے کی کاروائی ختم ہوئی۔

دلی کانگریس کے دولہا جواہر لال جی تھے' اُس کے سب کچھ وہی تھے۔ سارا جلسہ اُن کے چاروں طرف مانو ناچ رہا تھا۔ کانگریس کے نمائندوں کی نگاہ جواہر لال جی پر تھی اور جواہر لال جی کی نگاہ نمائندوں پر۔ زیادہ تر نمائندوں کے ہاؤ بھاؤ ایسے تھے مانو جواہر لال جی سے پوچھتے ہوں' "پنڈت جی! ٹکٹ ہمیں دیجئیے گا یا نہیں؟" اور پنڈت جی کا جواب تھا' "یہ سب کیا واہیات ہے؟ ملک میں جات پات یا بھید بھاؤ پھیلانے اور تباہی مچانے والی طاقتوں کے خلاف کمر کس کر آپ تیار ہیں یا نہیں؟"

دلی کانگریس میں ہمیں محسوس ہوا کہ آج ہندستان کی جنتا اور اُس کے سر مور جواہر لال کے بیچ میں نیتاؤں کی بڑی دیوار کھڑی ہوئی ہے۔ یہ نیتا وہ ہیں جنھوں نے بڑی ہمت اور بہادری سے انگریزی سامراج کا مقابلہ کر کے اُسے چاروں خانے چت گرا دیا۔ لیکن اِس لڑائی میں خود بھی دم دے گئے اور اب آرام کے علاوہ کوئی دوسرا کام اِن کے بوتے کا نہیں ہے۔ اپنے جواہر لال کی بات اُنہیں پیاری ضرور لگتی ہے لیکن وہ اُس پر عمل کرنے سے مجبور ہیں اور اس بری طرح مجبور ہیں کہ جہاں ہیں وہاں سے ہٹنے کو بھی جی نہیں چاہتا' آگے بڑھنے کی کون کہے۔ شاید اِسی وجہ سے مہاتما گاندھی نے وصیت کی تھی کہ یہ نیتا بنے رہیں لیکن اِن کا سنگٹھن توڑ دیا جائے اور جنتا کے ساتھ سچا

गिरामा-इरादा जरूर चाहते हैं जिनके हम खिलाफ हैं जैसे फ़िरक़ा बन्दी वग़ैरा.

छपे हुए एड्रेस के बारे में तो कहना ही क्या ? पंडित जवाहर लाल की गिनती दुनिया के अच्छे से अच्छे लिखने वालों में है. उन्होंने इसमें कहा है कि हम यहां पर असलियत का सामना करने और आगे का प्रोग्राम तय करने के लिये जमा हुए हैं. हमने जो हिन्दुस्तान की सेवा की वह महज़ इस वजह से नहीं की कि यहां हम पैदा हुए बल्कि इस वजह से की कि हमने सोचा कि हमारा हिन्दुस्तान कुछ उसूलों और मक़सदों का नुमायन्दा है, और अलमबरदार है इन्सान की माद्दी और रूहानी तरक़्क़ी का और इन्सानी समाज की एकता का. दुनिया की कशमकश पर रोशनी डालते हुए उन्होंने बताया कि आज बहुत काफ़ी बुराई फैली हुई है जिसका हमें मुक़ाबला करना है लेकिन इसका मुक़ाबला उन्हीं तरीक़ों से नहीं करना चाहिये जो खुद बुराई से लबालब हैं और न नफ़रत या हिंसा से यह काम कामयाबी के साथ किया जा सकता है.

लेकिन अपने देश के सवालों पर उन्होंने जो विचार ज़ाहिर किये हैं वह एक प्रधान मंत्री के हैं न कि लोक नेता के. मसलन ज़मीन के बारे में उन्होंने जो कहा वह एक गोलमोल बात है जिससे न ज़मींदार को शिकायत होगी न किसी हाकिम को, लेकिन किसान को कोई संतोश न होगा. इसी तरह ख़ुराक के मामले में स्वावलम्बन को ज़रूरी बताया है मगर अब तक यह क्यों न हो सका और क्यों करोड़ों मन अनाज बाहर से मंगा कर मुल्क बेच दिया जा रहा है इसका कोई जवाब नहीं दिया. इसके अलावा प्लानिंग की दुहाई देते हुए प्लानिंग कमीशन के कारनामे की तारीफ़ की है और कहा कि "कुछ लोगों की राय जो भी हो, मेरा ख़याल है कि आगे चलकर सोच-विचार या प्लानिंग ज़्यादातर इसी पंचसाला योजना के आधार पर किया जायेगा." कहने की ज़रूरत नहीं कि जैसे यह प्लान बन गया वैसे काग़ज़ी प्लान हमेशा बनते रहेंगे लेकिन मुल्क के अन्दर दरद के ऊपर सफ़ेदी बराबर भी फ़र्क़ नहीं हुआ क्योंकि प्लान बनाने वाले यानी हुक्काम लोग और उनके साझीदार या जी हुज़ूरी करने वाले एक दुनिया में रहते हैं और मासूम दीन दुखी जनता दूसरी दुनिया में. दोनों के बीच की जो खाई है वह दिन दिन चौड़ी ही होती जा रही है.

फ़िरक़े बन्दी के हर ख़याल को—जो जाने अनजाने हमारे अन्दर घर कर लेते हैं—उन्होंने जड़ से उखाड़ फेंकने की अपील की, और आख़िर में कहा है—

"एक चुनाव जीतने या हारने को ज़्यादा महत्व हमें नहीं देना चाहिये. अगर हम अपने अन्दर की लड़ाई जीत

ارادہ ضرور چاہتے ہیں جن کے ہم خلاف ہیں جیسے فرقہ بندی وغیرہ۔

چھپے ہوئے ایڈریس کے بارے میں تو کہنا ہی کیا ؟ پنڈت جواہر لال کی گنتی دنیا کے اچھے سے اچھے لکھنے والوں میں ہے ۔ انہوں نے اِس میں کہا ہے کہ ہم یہاں پر اصلیت کا سامنا کرنے اور آگے کا پروگرام طے کرنے کے لئے جمع ہوئے ہیں ۔ ہم نے جو ہندستان کی سیوا کی وہ محض اِس وجہ سے نہیں کی کہ یہاں ہم پیدا ہوئے بلکہ اس وجہ سے کی کہ ہم نے سوچا کہ ہمارا ہندستان کچھ اصولوں اور مقصدوں کا نمائندہ ہے' اور علمبردار ہے انسان کی مادی اور روحانی ترقی کا اور انسانی سماج کی ایکتا کا ۔ دنیا کی کشمکش پر روشنی ڈالتے ہوئے انہوں نے بتایا کہ آج بہت کافی برائی پھیلی ہوئی ہے جس کا ہمیں مقابلہ کرنا ہے لیکن اِسکا مقابلہ اُنہیں طریقوں سے نہیں کرنا چاہئے جو خود برائی سے لبالب ہیں اور نہ نفرت یا ہنسا سے یہ کام کامیابی کے ساتھ کیا جاسکتا ہے ۔

لیکن اپنے دیش کے سوالوں پر انہوں نے جو وچار ظاہر کئے ہیں وہ ایک پردھان منتری کے ہیں نہ کہ لوک نیتا کے ۔ مثلاً زمین کے بارے میں انہوں جو کہا وہ ایک گول مول بات ہے جس سے نہ زمیندار کو شکایت ہوگی نہ کسی حاکم کو' لیکن کسان کو کوئی سنتوش نہ ہوگا ۔ اِسی طرح خوراک کے معاملے میں سواولمبن کو ضروری بتایا ہے مگر اب تک یہ کیوں نہ ہوسکا اور کیوں کروڑوں من اناج باہر سے منگا کر ملک بیچ دیا جا رہا ہے اس کا کوئی جواب نہیں دیا ۔ اس کے علاوہ پلاننگ کی دہائی دیتے ہوئے پلاننگ کمیشن کے کارنامے کی تعریف کی ہے اور کہا ہے کہ " کچھ لوگوں کی رائے جو بھی ہو' میرا خیال ہے کہ آگے چل کر سوچ وچار یا پلاننگ زیادہ تر اِسی پانچ سالا یوجنا کے آدھار پر کیا جائیگا ۔" کہنے کی ضرورت نہیں کہ جیسے یہ پلان بن گیا ویسے کاغذی پلان ہمیشہ بنتے رہیں گے لیکن ملک کے اندر اَرد کے اوپر سفیدی برابر بھی فرق نہیں ہوا کیونکہ پلان بنانے والے یعنی حکام لوگ اور اُن کے ساجھیدار یا جی حضوری کرنے والے ایک دنیا میں رہتے ہیں اور معصوم دین دکھی جنتا دوسری دنیا میں ۔ دونوں کے بیچ کی جو کھائی ہے وہ دن دن چوڑی ہی ہوتی جا رہی ہے ۔

فرقے بندی کے ہر خیال کو — جو جانے انجانے ہمارے اندر گھر کر لیتے ہیں — انہوں نے جڑ سے اکھاڑ پھینکنے کی اپیل کی' اور آخر میں کہا ہے —

"ایک چناؤ جیتنے یا ہارنے کو زیادہ مہتو ہمیں نہیں دینا چاہئے ۔ اگر ہم اپنے اندر کی لڑائی جیت

ने 'कुछ' की जगह 'बहुत' शब्द कर दिया), किसी भी प्रोग्राम का, जैसे बीमे का ही सही, राष्ट्रीकरन नहीं किया गया है. दूसरे भाई ने कहा कि जमीन के बारे में हमें इस ठहराव में साफ़ साफ़ कहना चाहिये कि वह हवा पानी की तरह सबकी है, ग़रीबों को उसे दे देना चाहिये और इस सिलसिले में आचार्य विनोबा भावे जो क़दम उठा रहे हैं उनकी हम ताईद करते हैं. इसी तरह से एक भाई ने कहा कि हमारे यहां की जो टैक्स सम्बन्धी नीति है उसे हमें 'जांचना' ही नहीं 'बदलना' चाहिये. मगर ऐसा लगता था कि ठहराव वाले लोग कांगरेस प्लेट फ़ार्म से नहीं हकूमत-हिन्द के मंच से बोल रहे थे जो—जैसा हर हकूमत का ढंग होता है—एक चिकने घड़े की तरह है और जो रत्ती भर टस-से-मस नहीं होना चाहती. इस बहस का जवाब वर्किंग कमेटी के नए मेम्बर ने जो दिल्ली केबिनट के नए मिनिस्टर हैं दिया वह अजीब-ग़रीब था. उन्होंने कहा कि बीमे का राष्ट्रीकरन हमें मंजूर है मगर आदमी कहां, जमीन पर सब का हक़ हमें मंजूर है मगर जिनके पास है उनसे लेकर बांटें कैसे, और दूसरी तरमीमें मंजूर तो हैं मगर उन पर अमल अभी मुशकिल है. हमें महसूस हुआ कि आर्थिक प्रोग्राम पर कोई ठहराव कांगरेस के लिये पास करना नामुमकिन है क्योंकि वह इस दायरे में कुछ नहीं कर सकती. अगर कर सकती है तो सिर्फ़ हकूमत की जी-हुज़ूरी और इसलिये अगर नाम के वास्ते करना ही था तो यह ठहराव पास कर देती—

'कांगरेस हकूमते-हिन्द के आर्थिक प्रोग्राम की पूरी तरह ताईद करती है और जनता से अपील करती है कि वह दिन दूने रात चौगुने सरकार के इशारे पर चलती ही रहे.'

खुला इजलास एक दम खुले में हुआ क्योंकि 17 तारीख़ की शाम को सबजेक्ट कमेटी वाला पंडाल बिजली की फ़िटिंग की ख़राबी से जल गया था. जिस फुर्ती से स्वागत समिति ने खुले इजलास का इन्तज़ाम किया वह वाक़ई बधाई की चीज़ है. लेकिन धूप की वजह से यह इजलास शाम को साढ़े पांच बजे ही शुरू किया जा सका. पहले दिन सदर कांगरेस पंडित जवाहर लाल नेहरू का एड्रेस हुआ. लेकिन जवाहर लाल जी ने जो एड्रेस पहले से लिख रखा था और जो छप कर तक़सीम भी हो गया था उसके बजाय उन्होंने एक नया एड्रेस दिया. अपनी स्पीच में उन्होंने मौजूदा हालात पर रोशनी डालते हुए कांगरेस वालों से अपील की कि ज़माने की नई रफ़्तार को देख कर काम करें. उन्होंने कहा कि हमें लड़ने में लुत्फ़ आता है और इसलिये हम चुनाव लड़ेंगे, हमें इस बात की परवाह नहीं कि हम जीतते हैं या हारते हैं. लेकिन हम उन चीज़ों को

نے 'کچھ' کی جگہ 'بہت' لفظ کر دیا)' کسی بھی پروگرام کا، جیسے بیمہ کا ہی سہی، راشٹری کرن نہیں کیا گیا ہے. دوسرے بھائی نے کہا کہ زمین کے بارے میں ہمیں اِس ٹھہراؤ میں صاف صاف کہنا چاہئے کہ وہ ہوا پانی کی طرح سب کی ہے' غریبوں کو اُسے دے دینا چاہئے اور اِس سلسلے میں آچاریہ ونوبا بھاوے جو قدم اُٹھا رہے ہیں اُن کی ہم تائید کرتے ہیں. اِسی طرح سے ایک بھائی نے کہا کہ ہمارے یہاں کی جو ٹیکس سمبندھی نیتی ہے اُسے ہمیں 'جانچنا' ہی نہیں 'بدلنا' چاہئیے مگر ایسا لگتا تھا کہ ٹھہراؤ والے لوگ کانگریس پلیٹ‌فارم سے نہیں حکومت ہند کے منچ سے بول رہے تھے جو — جیسا ہر حکومت کا ڈھنگ ہوتا ہے — ایک چکنے گھڑے کی طرح ہے اور جو رتی بھر ٹس سے مس نہیں ہونا چاہتی. اِس بحث کا جواب ورکنگ کمیٹی کے نئے ممبر نے جو دلی کیبنٹ کے نئے منسٹر ہیں دیا وہ عجیب غریب تھا. انہوں نے کہا کہ بیمے کا راشٹری کرن ہمیں منظور ہے مگر آدمی کہاں' زمین پر سب کا حق ہمیں منظور ہے مگر جن کے پاس ہے اُن سے لیکر بانٹیں کیسے' اور دوسری ترمیمیں منظور تو ہیں مگر اُن پر عمل ابھی مشکل ہے. ہمیں محسوس ہوا کہ آرتھک پروگرام پر کوئی ٹھہراؤ کانگریس کے لئے پاس کرنا ناممکن ہے کیونکہ وہ اِس دائرے میں کچھ نہیں کر سکتی. اگر کرسکتی ہے تو صرف حکومت کی جی حضوری اور اِس لئے اگر نام کے واسطے کرنا ہی تھا تو یہ ٹھہراؤ پاس کردیتی—

'کانگریس حکومت ہند کے آرتھک پروگرام کی پوری طرح تائید کرتی ہے اور جنتا سے اپیل کرتی ہے کہ وہ دن دونے رات چوگنے سرکار کے اِشارے پر چلتی ہی رہے.'

کھلا اجلاس ایک دم کھلے میں ہوا کیونکہ 17 تاریخ کی شام کو سبجیکٹ کمیٹی والا پنڈال بجلی کی فٹنگ کی خرابی سے جل گیا تھا. جس پھرتی سے سواگت سمیتی نے کھلے اجلاس کا انتظام کیا وہ واقعی بدھائی کی چیز ہے. لیکن دھوپ کی وجہ سے یہ اجلاس شام کو ساڑھے پانچ بجے ہی شروع کیا جاسکا. پہلے دن صدر کانگریس پنڈت جواہر لال نہرو کا ایڈریس ہوا. لیکن جواہر لال جی نے جو ایڈریس پہلے سے لکھ رکھا تھا اور جو چھپ کر تقسیم بھی ہو گیا تھا اُس کے بجائے انہوں نے ایک نیا ایڈریس دیا. اپنی اسپیچ میں انہوں نے موجودہ حالات پر روشنی ڈالتے ہوئے کانگریس والوں سے اپیل کی کہ زمانے کی نئی رفتار کو دیکھکر کام کریں. اُنہوں نے کہا کہ ہمیں لڑنے میں لطف آتا ہے اور اِس لئے ہم چناؤ لڑیں گے' ہمیں اِس بات کی پرواہ نہیں کہ ہم جیتتے ہیں یا ہارتے ہیں. لیکن ہم اُن چیزوں کو

अकसर मेम्बर तो आप ही इस फ़िराक़ में थे कि चुनाव में अपनी जगह पक्की या मज़बूत कर लें. यही वजह है कि सबजेक्ट कमेटी की बहसें फीकी और बेजान थीं. सदर की तरफ़ से दो ठहराव होने के बाद—पिछले बरस में गुज़रे हुए कांगरेस के सेवकों पर शोक और कांगरेस विधान में तबदीली के लिये कुल हिन्द कांगरेस कमेटी को अख़तियार—तीन ठहराव पेश किये गये—विदेशी नीति पर, फ़िरक़ेबन्दी पर (यह दोनों 17 तरीख़ को) और आर्थिक प्रोग्राम पर जो 18 तारीख़ को पेश हुआ. जहां तक विदेशी नीति वाले ठहराव की बात है उसमें हकूमत-हिन्द की नीति की सोलह आने ताईद करते हुए कांगरेस ने यूनो में अपना विश्वास ज़ाहिर किया और पाकिस्तान से वास्ता रखने वाले मामलों का शान्ति से फ़ैसला करने की अपील की. फ़िरक़ेबन्दी वाले ठहराव में कांगरेस ने बताया कि धर्म या जात पात या संस्कृति-तहज़ीब, किसी भी शकल में फ़िरक़ेबन्दी उसे मन्ज़ूर नहीं है और उसे वह मुल्क के लिये घातक समझती है.

आर्थिक प्रोग्राम वाले ठहराव को पढ़कर हमें कुछ शरम सी आती है. उससे साफ़ पता चलता है कि कांगरेस ताक़तवर और दौलत मन्दों की जमात है न कि ग़रीबों और बेकसों की. इस ठहराव को जब हम पढ़ते हैं तो ऐसा लगता है कि यह एक निराले दिमाग़ की पैदावार है. इसमें अलल-टप बातें, तुक या बेतुक रखदी गई हैं. ख़ास तौर से लचर बात ज़मीन के बारे में है. उसमें कहा गया है—

'हिन्दुस्तान की आर्थिक बुनियाद ज़मीन ही है. यहां के खेती तरीक़े का इस तरह से संगठन होना चाहिये ताकि जो मेहनत करे उसे उसका फल मिल सके और ज़मीन का उपयोग समाज के लिये एक दौलत के रूप में किया जाए...'

कहने को तो कुछ ज़रूर कहा है मगर ज़ाहिर है कि असली बात नहीं कही गई है—वह यह है कि ज़मीन उसी की समझी जाए जो उस पर ख़ुद मेहनत करे न कि उसकी जो कहता कुछ है और करता कुछ है. इसी तरह देहाती धंदों के बारे में कहा है कि 'उन्हें ऊंची से ऊंची तकनीकी लायक़ी के साथ किया जाना चाहिये.' शायद ठहराव लिखने वाले के दिमाग़ में जापान का ख़याल आ रहा था. इस ठहराव में एकाध बात जो सही है वह महज़ एक उपदेश के तौर पर है जिसका अमल से कोई वास्ता नहीं मालूम पड़ता. हमारा यह ख़याल उस बहस को सुनकर और भी पक्का हो गया जो इस ठहराव के सिलसिले में हुई.

बहस के दौरान में एक भाई ने कहा कि सरकार ने जनता के हित में कुछ भी नहीं किया है (जिस पर सदर साहब ख़फ़ा हो गए और फिर उनके इसरार पर उन भाई

اکثر ممبر تو آپ ہی اس فراق میں تھے کہ چناو میں اپنی جگہ پکی یا مضبوط کر لیں۔ یہی وجہ ہے کہ سبجکٹ کمیٹی کی بحثیں پھیکی اور بے جان تھیں۔ صدر کی طرف سے دو ٹھہراؤ ہونے کے بعد — پچھلے برس میں گذرے ہوئے کانگریس کے سیوکوں پر شوک اور کانگریس ودھان میں تبدیلی کے لئے کل ہند کانگریس کمیٹی کو اختیار — تین ٹھہراؤ پیش کئے گئے — ودیشی نیتی پر، فرقے بندی پر (یہ دونوں 17 تاریخ کو) اور آرتھک پروگرام پر جو 18 تاریخ کو پیش ہوا۔ جہاں تک ودیشی نیتی والے ٹھہراؤ کی بات ہے اس میں حکومت ہند کی نیتی کی سولہ آنے تائید کرتے ہوئے کانگریس نے یو نو میں اپنا وشواس ظاہر کیا اور پاکستان سے واسطہ رکھنے والے معاملوں کا شانتی سے فیصلہ کرنے کی اپیل کی۔ فرقے بندی والے ٹھہراؤ میں کانگریس نے بتایا کہ دھرم یا جات پات یا سنسکرتی تہذیب، کسی بھی شکل میں فرقےبندی اسے منظور نہیں ہے اور اسے وہ ملک کے لئے گھاتک سمجھتی ہے۔

آرتھک پروگرام والے ٹھہراؤ کو پڑھکر ہمیں کچھ شرم سی آتی ہے۔ اس سے صاف پتہ چلتا ہے کہ کانگریس طاقتور اور دولت مندوں کی جماعت ہے نہ کہ غریبوں اور بےکسوں کی۔ اس ٹھہراؤ کو جب ہم پڑھتے ہیں تو ایسا لگتا ہے کہ یہ ایک نرالے دماغ کی پیداوار ہے۔ اس میں الل ٹپ باتیں، تک یا بے تک رکھدی گئی ہیں۔ خاص طور سے لچر بات زمین کے بارے میں ہے۔ اس میں کہا گیا ہے —

'ہندستان کی آرتھک بنیاد زمین ہی ہے۔ یہاں کے کھیتی طریقے کا اس طرح سے سنگھٹن ہونا چاہئے تاکہ جو محنت کرے اسے اس کا پھل مل سکے اور زمین کا اپیوگ سماج کے لئے ایک دولت کے روپ میں کیا جائے...'

کہنے کو تو کچھ ضرور کہا ہے مگر ظاہر ہے کہ اصلی بات نہیں کہی گئی ہے — وہ یہ ہے کہ زمین اسی کی سمجھی جائے جو اس پر خود محنت کرے نہ کہ اس کی جو کہتا کچھ ہے اور کرتا کچھ ہے۔ اسی طرح دیہاتی دھندوں کے بارے میں کہا ہے کہ 'انہیں اونچی سے اونچی تکنیکی لائقی کے ساتھ کیا جانا چاہئیے۔' شاید ٹھہراؤ لکھنے والے کے دماغ میں جاپان کا خیال آرہا تھا۔ اس ٹھہراؤ میں ایک آدھ بات جو صحیح ہے وہ محض ایک اپدیش کے طور پر ہے جس کا عمل سے کوئی واسطہ نہیں معلوم پڑتا۔ ہمارا یہ خیال اس بحث کو سنکر اور بھی پکا ہوگیا جو اس ٹھہراؤ کے سلسلے میں ہوئی۔

بحث کے دوران میں ایک بھائی نے کہا کہ سرکار نے جنتا کے ہت میں کچھ بھی نہیں کیا ہے (جس پر صدر صاحب خفا ہوگئے اور پھر ان کے اصرار پر ان بھائی

चौड़ा साइनबोर्ड कोका-कोला जैसी नशीली चीज़ का था जो अब नई नई फ़ैशन में आ रही है. हमें नहीं मालूम कि इन इश्तिहारों से स्वागत कमेटी ने कितना पैसा कमा लिया या यह कांगरेस के नये अन्दाज़ का—जिसे पंडित जवाहर लाल नेहरू के लफ़्ज़ों में 'Approach' समझना चाहिये—नमूना थे.

कांगरेस वैसे तो 66 बरस की है लेकिन आज़ादी की लड़ाई के दौरान में कई बार इजलास न हो सकने की वजह से यह 57 वां इजलास ही था. इसके करने का फ़ैसला पिछले सितम्बर के महीने में ही किया गया था जब कुल हिन्द कांगरेस कमेटी की एक बैठक में पंडित जवाहर लाल नेहरू कांगरेस के सदर चुने गए. हमें वह दुख भरी कहानी सुनाने की ज़रूरत नहीं कि क्यों पंडित जवाहर लाल ने वर्किंग कमेटी से इस्तीफ़ा दिया, किस तरह पिछले सदर बाबू पुरुशोत्तम दास टंडन ने अपनी वर्किंग कमेटी को बदलने से इनकार किया और फिर किस तरह टंडन जी ने इस्तीफ़ा दिया. लेकिन यह ज़रूर कहेंगे कि कांगरेस वालों ने महसूस किया कि उसकी ख़स्ता हालत में जवाहर लाल के अलावा कोई दूसरा चारा उनके पास नहीं है और इसलिये वह यह जानना चाहते थे कि इस मौक़े पर पंडित जी का हमारे लिये क्या संदेश या हुक्म है.

कांगरेस इजलास का दस्तूर है कि शुरू में सबजेक्ट कमेटी की बैठक होती है जो वर्किंग कमेटी के तैयार शुदा ठहरावों पर ग़ौर बहस करके उन्हें खुले इजलास के लिये मुकम्मल बनाती है. सबजेक्ट कमेटी की यह बैठक 17,18 तारीख़ को सुबह के वक़्त हुई. 17 की सुबह जब बैठक शुरू हुई तो पिछली रात की दर्दभरी घटना—रावलपिंडी में एक पागल का पाकिस्तान के बड़े वज़ीर नवाबज़ादा लियाक़त अली ख़ां को मार देना—का असर सब के दिल पर था और ख़ास कर पंडित जवाहर लाल के दिल पर जो इधर कई महीनों से ऐसी फ़िरके वाराना और जंगली ताक़तों के ख़िलाफ़ लड़ने का बीड़ा उठाए हुए हैं.

पंडित जवाहर लाल ने अपनी शुरू की स्पीच में ही दुनिया की बदलती हालत की चर्चा की, बताया कि इसमें हिन्दुस्तान क्या पार्ट खेल रहा है और इसके अन्दर कांगरेस का क्या फ़र्ज़ है. उन्होंने कहा कि कांगरेस के सामने हाल में होने वाले चुनाव ही सब कुछ नहीं हैं, वह महज़ उसके सौ कामों में से एक काम है, बाक़ी काम हैं जनता के बीच में जाना और उसके दिल में तरह तरह की सेवाओं से घर बनाना. लेकिन हमें यह तसलीम करना चाहिये कि सबजेक्ट कमेटी के मेम्बर भाई लोग कमेटी की कारवाई पर ध्यान न देकर अलग अलग गुटों में बैठकर आपस में मिसकौट कर रहे थे और चुनाव का भूत उन पर सवार था. शायद

زاسائن بورڈ کوکا کولا جیسی نشیلی چیز کا تھا جو اب
نئی فیشن میں آرہی ہے ۔ ہمیں نہیں معلوم کہ ان
ہاروں سے سواگت کمیٹی نے کتنا پیسہ کما لیا یا یہ
ریس کے نئے انداز کا—جسے پنڈت جواہر لال نہرو کے
ں میں 'Approach' سمجھنا چاہئے — نمونہ تھے۔

کانگریس ویسے تو 66 برس کی ہے کہ لیکن آزادی کی
ں کے دوران میں کئی بار اجلاس نہ ہو سکنے کی وجہ
ہ 57 واں اجلاس ہی تھا ۔ اس کے کرنے کا فیصلہ پچھلے
بر کے مہینے میں ہی کیا گیا تھا جب کل ہند کانگریس
ی کی ایک بیٹھک میں پنڈت جواہر لال نہرو
یس کے صدر چنے گئے ۔ ہمیں وہ دکھ بھری کہانی
ے کی ضرورت نہیں کہ کیوں پنڈت جواہر لال نے
ک کمیٹی سے استعفیٰ دیا' کسطرح پچھلے صدر بابو
م داس ٹنڈن نے اپنی ورکنگ کمیٹی کو بدلنے سے
کیا' اور پھر کسطرح ٹنڈن جی نے استعفیٰ دیا ۔
ں یہ ضرور کہینگے کہ کانگریس والوں نے محسوس
ہ اُسکی خستہ حالت میں جواہر لال کے علاوہ کوئی
ا چارہ اُن کے پاس نہیں ہے اور اسلئے وہ یہ جاننا
ے تھے کہ اِس موقعے پر پنڈت جی کا ہمارے لئے کیا
ش یا حکم ہے ۔

کانگریس اجلاس کا دستور ہے' شروع میں سبجکٹ
ی کی بیٹھک ہوتی ہے جو ورکنگ کمیٹی کے تیار
ٹھہراوؤں پر غور بحث کر کے اُنہیں کھلے اجلاس کے
مکمل بناتی ہے ۔ سبجکٹ کمیٹی کی یہ بیٹھک
1' تاریخ کو صبح کے وقت ہوئی ۔ 17 کی صبح
بیٹھک شروع ہوئی تو پچھلی رات کی درد بھری
— راولپنڈی میں ایک پاگل کا پاکستان کے بڑے
نواب زادہ لیاقت علی خاں کو مار دینا — کا اثر
کے دل پر تھا اور خاص کر پنڈت جواہر لال کے دل
و اِدھر کئی مہینوں سے ایسی فرقے وارانہ اور جنگلی
وں کے خلاف لڑنے کا بیڑا اُٹھائے ہوئے ہیں ۔

نڈت جواہر لال نے اپنی شروع کی اسپیچ میں ہی
کی بدلتی حالت کی چرچا کی' بتایا کہ اِس میں
ستان کیا پارٹ کھیل رہا ہے اور اِس کے اندر کانگریس
فرض ہے ۔ اُنہوں نے کہا کہ کانگریس کے سامنے حال
ہونے والے چناؤ ہی سب کچھ نہیں ہیں' وہ محض اُس
کاموں میں سے ایک کام ہے' باقی کام ہیں جنتا کے
میں جانا اور اُس کے دل میں طرح طرح کی
ں سے گھر بنانا ۔ لیکن ہمیں یہ تسلیم کرنا چاہئے
جکٹ کمیٹی کے ممبر بھائی لوگ کمیٹی کی کارروائی
یان نہ دے کر الگ الگ گٹوں میں بیٹھکر آپس میں
ٹ کر رہے تھے اور چناؤ کا بھوت اُن پر سوار تھا ۔ شاید

प्यारे ज़ाकिर, मैं अपना गिलास उठाता हूँ और अब वह गिलास मेरे बाएं हाथ में है और दाएं हाथ से अब मैं लिख रहा हूँ.

तुम्हारा अपना ही
नन्द किशोर मेहरा

लेखक—भ. दी.

پیارے ذاکر' میں اپنا گلاس اُٹھاتا ہوں اور اب وہ گلاس میرے بائیں ہاتھ میں ہے اور دائیں ہاتھ سے اب میں لکھ رہا ہوں .

تمہارا اپنا ہی
نند کشور مہرا

لیکھک — بھ . د .

दिल्ली कांगरेस

कांगरेस के दोस्त हों या मुख़ालिफ़, अकसर लोगों को शिकायत है कि इस वक़्त जब कांगरेस के पास कोई नई बात कहने को नहीं थी तब इतना बड़ा जलसा करके लाखों रुपए बहाने की क्या ज़रूरत थी. लेकिन हमारा ख़याल है कि कांगरेस जब तक ज़िन्दा है तब तक उसे अपना सालाना इजलास करने की परम्परा क़ायम रखनी चाहिये. मगर अहमदाबाद में कुल हिन्द कांगरेस कमेटी की 29,30 जनवरी वाली बैठक में जो कांगरेस का नया विधान बना है उसमें कांगरेस इजलास और चुनाव हर दूसरे साल करने का तय पाया जो एक बदक़िसमती का फ़ैसला है, ख़ास कर आज कल के ज़माने में जब दुनिया के हालात तेज़ी से बदल रहे हैं. हमें यक़ीन है कि अगर साल दर साल का तरीक़ा जारी रहता तो न पंडित जवाहर लाल नेहरू को वर्किंग कमेटी से इस्तीफ़ा देने की ज़रूरत पड़ती और न कांगरेस के अन्दर इतनी बेलुत्फ़ी पैदा होती जो पिछले दो महीनों में हुई. लेकिन अगर हर इजलास के मौक़े पर कांगरेस के पास नई चीज़ ऐसी नहीं है जो वह मुल्क के आगे पेश करे तो यह कांगरेस के बुढ़ापे की अलामत है.

दिल्ली कांगरेस नई दिल्ली में बड़े वज़ीर के बंगले से चन्द फ़रलांग की दूरी पर 17, 18,19 अक्तूबर को हुई— उस जगह का नाम दिल्ली की एक बहादुर और जांनिसार बेटी के नाम पर सत्यवती नगर रखा गया था. वैसे इस जगह पर विदेशी राज दूतों की बस्तियां बसने वाली हैं. देखते ही जो इस कांगरेस की ख़ास बात मालूम पड़ती थी वह यह कि नुमायश नाम की चीज़ का इस मरतबा कहीं पता ही नहीं है. इधर कई बरस से नुमायश कांगरेस इजलास का ख़ास हिस्सा समझी जाती थी. शायद समय की कमी की वजह से स्वागत कमेटी उसका बन्दोबस्त नहीं कर सकी. लेकिन हमें यह देखकर हैरत हुई कि सत्यवती नगर में घुसते ही जो बड़े बड़े साइन-बोर्ड दिखते थे वह दिल्ली के सिनेमाओं के इश्तिहार थे और एक बड़ा लम्बा

دلی کانگریس

کانگریس کے دوست ہوں یا مخالف' اکثر لوگوں کو شکایت ہے کہ اِس وقت جب کانگریس کے پاس کوئی نئی بات کہنے کو نہیں تھی تب اتنا بڑا جلسہ کرکے لاکھوں روپے بہانے کی کیا ضرورت تھی . لیکن ہمارا خیال ہے کہ کانگریس جب تک زندہ ہے تب تک اُسے اپنا سالانہ اجلاس کرنے کی پرمپرا قائم رکھنی چاہئے . مگر احمدآباد میں کل ہند کانگریس کمیٹی کی 29,30 جنوری والی بیٹھک میں جو کانگریس کا نیا ودھان بنا ہے اُس میں کانگریس اجلاس اور چناو ہر دوسرے سال کرنے کا طے پایا جو ایک بدقسمتی کا فیصلہ ہے' خاص کر آجکل کے زمانے میں جب دنیا کے حالات تیزی سے بدل رہے ہیں . ہمیں یقین ہے کہ اگر سال در سال کا طریقہ جاری رہتا تو نہ پنڈت جواہر لال نہرو کو ورکنگ کمیٹی سے استعفیٰ دینے کی ضرورت پڑتی اور نہ کانگریس کے اندر اتنی بے لطفی پیدا ہوتی جو پچھلے دو مہینوں میں ہوئی . لیکن اگر ہر اجلاس کے موقعے پر کانگریس کے پاس نئی چیز ایسی نہیں ہے جو وہ ملک کے آگے پیش کرے تو یہ کانگریس کے بڑھاپے کی علامت ہے .

دلی کانگریس نئی دلی میں بڑے وزیر کے بنگلے سے چند فرلانگ کی دوری پر 17,18,19 اکتوبر کو ہوئی—— اُس جگہ کا نام دلی کی ایک بہادر اور جاں نثار بیٹی کے نام پر ستیہ وتی نگر رکھا گیا تھا . ویسے اس جگہ پر ودیشی راج دوتوں کی بستیاں بسنے والی ہیں . دیکھتے ہی جو اِس کانگریس کی خاص بات معلوم پڑتی تھی وہ یہ کہ نمائش نام کی چیز کا اس مرتبہ کہیں پتہ ہی نہیں ہے . اِدھر کئی برس سے نمائش کانگریس اجلاس کا خاص حصہ سمجھی جاتی تھی . شاید سمے کی کمی کی وجہ سے سواگت کمیٹی اس کا بندوبست نہیں کرسکی . لیکن ہمیں یہ دیکھکر حیرت ہوئی کہ ستیہ وتی نگر میں گھستے ہی جو بڑے بڑے سائن بورڈ دکھتے تھے وہ دلی کے سنیماؤں کے اشتہار تھے اور ایک بڑا لمبا

कम्बख़्त डायरी, अब तू मुझे क्या देख रही है. ले मैं तेरे सारे उन पंखों को नोचे लेता हूँ जो कम्बख़्त इतना भी उड़ना नहीं जानते कि मौक़े बे मौक़े फैल कर तुझे उड़ा ले आएं और मुझे कभी कोई ज़रूरी बात की याद दिला दें. जब यह पंख इतना भी काम नहीं कर सकते तो इन का होना न होना बेकार. लो, मैं तुम्हें चीर चीर कर बिखेरता हूँ, और अभी तो क्या, अभी तो मैं तुम्हें आग के सुपुर्द करूंगा. मैं दुनिया में तुम्हारा कोई भी निशान न रहने दूंगा. तुमने मुझे रमज़ानी की नज़र में गिरा दिया, इतना ही नहीं तुमने मुझे शीला, शंकर और उन की मां की नज़रों में भी गिरा दिया.

ऐ याद, तू यह कह कर बच नहीं सकती कि तू मेरी डायरी छीन कर ले गई थी, यह दलील मेरी है. अब तू मेरी दलील लेकर मेरा मुक़ाबला नहीं कर सकती. मेरे दिमाग़ में तेरे रहने के लिये ये किराए की कोठरी सिर्फ़ इसी काम के लिये तो मिली है कि तू वक़्त बे वक़्त मेरे काम आए और मुझसे ऐसी बे इनसाफ़ी न होने दे जैसी आज हो गई. मैं यह हरगिज़ मानने को तैयार नहीं कि तू ग़ैर हाज़िर थी. तू ग़ैर हाज़िर होना तो जानती ही नहीं. हां, तू अपनी और सहेलियों से बातों में लग जाने में होशियार है और जब कोई उन सहेलियों से बातें करने लगे तब तू झट आ कूदती है. मैं जानता हूँ आज तू ज़रूर किसी सहेली या सहेलियों के साथ रंगरलियां मना रही होगी तभी तो ज़रा सी भूल से तूने मेरी इज़्ज़त को ख़ाक में मिला दिया और सब की नज़रों में नीचे गिरा दिया. डायरी बेजान है उसे माफ़ किया जा सकता था, पर तू तो जानदार है, तुझे माफ़ नहीं किया जा सकता. हां, मुझे मालूम है कि तेरी और मेरी एक जान है पर मैं आज तेरी जान लेने के लिये उस तरफ़ ध्यान ही न दूंगा बल्कि तेरी जान लेकर मैं अपनी जान भी ले लूँगा. जान से भी ज़ियादा प्यारी चीज़ है आबरू. आबरू गई तो जान का होना न होना बेकार. आदमियत बग़ैर आदमी कैसा, इनसानियत बग़ैर इनसान कैसा और आबरू बग़ैर जान कैसी.

ऐ याद, बस अब तू तैयार होजा और अपने मरने से पहले जिस को तुझे याद करना हो याद कर ले. पर क्या तू इस क़ाबिल रह गई है कि किसी को याद कर सके.

मैं डायरी और याद को कोसने में इतनी बुरी तरह लगा कि मैं रमज़ानी के बारे में कुछ सोच ही न पाया. बस मेरे मन ने यह मान लिया कि अब कुछ नहीं हो सकता और जीते जी अब यह चेहरा इस क़ाबिल नहीं है कि उसे रमज़ानी तो क्या उस के बच्चे और उन बच्चों की मां भी उसे देख सके.

مت ڈائری' اب تو مجھے کیا دیکھ رہی ہے ۔ لے میں
سارے اُن پنکھوں کو نوچے لیتا ہوں جو کمبخت اتنا
اُڑنا نہیں جانتے کہ موقعے بے موقعے پھیل کر تجھے
لے آئیں اور مجھے کبھی کوئی ضروری بات کی یاد دلا
. جب یہ پنکھ اتنا بھی کام نہیں کر سکتے تو اِن کا
نہ ہونا بیکار ۔ لو' میں تمہیں چیر چیر کر بکھیرتا
اور ابھی تو کیا' ابھی تو میں تمہیں آگ کے سپرد
۔ میں دنیا میں تمہارا کوئی بھی نشان نہ رہنے
. تم نے مجھے رمضانی کی نظر میں گرا دیا' اتنا ہی
تم نے مجھے شیلا' شنکر اور اُن کی ماں کی نظروں
بھی گرا دیا ۔

اے یاد' تو یہ کہہ کر بچ نہیں سکتی کہ تو میری
ی چھین کر لے گئی تھی' یہ دلیل میری ہے ۔ اب تو
ی دلیل لے کر میرا مقابلہ نہیں کر سکتی ۔ میرے
میں تیرے رہنے کے لئے یہ کرائے کی کوٹھری صرف اسی
کے لئے تو ملی ہے کہ تو وقت بے وقت میرے کام آئے
مجھ سے ایسی بے انصافی نہ ہونے دے جیسی آج
ی ۔ میں یہ ہرگز ماننے کو تیار نہیں کہ تو غیر حاضر
. تو غیر حاضر ہونا تو جانتی ہی نہیں ۔ ہاں' تو اپنی اور
لیوں سے باتوں میں لگ جانے میں ہوشیار ہے ۔ اور جب
اُن سہیلیوں سے باتیں کرنے لگے تب تو جھٹ آ کودتی
میں جانتا ہوں آج تو ضرور کسی سہیلی یا سہیلیوں
ساتھ رنگ رلیاں منا رہی ہوگی تبھی تو ذرا سی بھول
و نے میری عزت کو خاک میں ملا دیا اور سب کی
ں میں نیچے گرا دیا ۔ ڈائری بے جان ہے اُسے معاف
جا سکتا تھا پر تو تو جان دار ہے' تجھے معاف نہیں
جا سکتا ۔ ہاں' مجھے معلوم ہے کہ تیری اور میری
جان ہے پر میں آج تیری جان لینے کے لئے اُس
دھیان ہی نہ دوں گا بلکہ تیری جان لے کر میں اپنی
بھی لے لوں گا ۔ جان سے بھی زیادہ پیاری چیز ہے
. آبرو گئی تو جان کا ہونا نہ ہونا بیکار ۔ آدمیت
آدمی کیسا' انسانیت بغیر انسان کیسا اور آبرو بغیر
کیسی ۔

اے یاد' بس اب تو تیار ہوجا اور اپنے مرنے سے پہلے
کو تجھے یاد کرنا ہو یاد کر لے ۔ پر کیا تو اس قابل
ئی ہے کہ کسی کو یاد کر سکے ۔

میں ڈائری اور یاد کو کوسنے میں اتنی بری طرح لگا
میں رمضانی کے بارے میں کچھ سوچ ہی نہ پایا ۔
میرے من نے یہ مان لیا کہ اب کچھ نہیں ہوسکتا
جیتے جی اب یہ چہرا اِس قابل نہیں ہے کہ اِسے
انی تو کیا اُس کے بچے اور اُن بچوں کی ماں بھی
سکے ۔

ीवन लाल 'से यह मालूम हो गया कि असामी रमज़ानी
ी है. और इसी सिलसिले में यह भी पता लग गया कि
सके पास और भी कौन कौन चांदी की चीज़ें बरा-
द हुई हैं और यह भी मालूम हो गया कि रमज़ानी
ीज़ें चोरी करने का इक़रार करता है. फ़ोन बन्द करने के
ाद तीन मिनट तक फिर मैं अपनी याद से कुश्ती लड़ता
हा. मगर मेरी याद ने दस फ़ीसदी भी मदद न की कि
यह मान सकूं कि मैंने वह चाक़ू रमज़ानी को यादगार
तौर पर दिया था. मैं सोच ही रहा था कि दरवाज़े पर
र थाप पड़ी और शीला बाहर से चिल्लाई कि बाबूजी
ापकी डायरी में सब कुछ लिखा मिल गया. मैंने दरवाज़ा
ोला और डायरी पढ़ी. अब याद एक दम ताज़ा हो गई
ौर रमज़ानी की विदाई का सारा सीन मेरी आंखों के
ामने आ गया. अब शक के लिये ज़रा सी भी जगह
रह गई. शीला के लिये दोबारा फिर मेरा हुक्म हुआ
तुम जाओ. वह फ़ौरन चल दी. इस बार पहले की तरह
उदास नहीं थी. उसके चेहरे पर सच्चाई की खोज की
शी लहरें मार रही थी. मैंने दरवाज़ा फिर बन्द कर
ाया.

डायरी लिखना गुनाह है गुनाह. डायरी लिखना
ददाश्त को किताब में बन्द कर देना है. सब क़ुसूर इस
यरी का है. अगर मैंने डायरी न लिखी होती तो यह
तें मैं कभी न भूलता और आज इतना बड़ा ज़ुल्म मेरे
थों न हुआ होता जो मैं कर बैठा हूँ. जीवन लाल मेरा
त है पर वह मेरी तरह मुसलमानों का दोस्त तो नहीं
रमज़ानी मुझे बेटे जैसा प्यारा है पर जीवनलाल तो
ज़ानी को सांप समझता है. और फिर वह पुलिस का
फ़सर है. उसे अपने मुक़दमे की जीत से काम, सचाई से
सरोकार. और मैं जीवनलाल को कुछ भी कह देने का
ार भी क्यों? मैंने जो बयान दिया है किसी दबाव से
दिया, ख़ुशी से दिया है. ग़लत बयानी में मेरा क़ुसूर है
फिर स[illegible] ज़ियादा क़ुसूर है इस डायरी का. यह
ख़्त डायर[illegible] मेरी याद को अपने वरक़ों में छिपा बैठी
फिर मुझे [illegible] आई शीला की मारफ़त. और बताने
आई तो उस व[illegible] जब मैं अपने हाथ कटा चुका और
ा दस्तख़ती बयान पुलिस इन्स्पेक्टर के हाथ सौंप चुका.
यह डायरी बेजान [illegible] यह कमबख़्त बेजान ही क्यों
ी रही. और अगर [illegible] बोलती ही थी तो शीला से क्यों
. मुझसे बोलती, मेरी डायरी थी. शीला डायरी नहीं
ी इसलिये उसकी याद डायरी का काम देती है और
ज़िन्दा डायरी है. उसने मेरी डायरी की याद शीला को
दी और मैं अपनी डायरी की याद भूल बैठा क्योंकि
कमबख़्त डायरी मेरी याद मुझ से छीन चुकी थी. ऐ

جیون لال سے یہ معلوم ہوگیا کہ اسامی رمضانی ہی
ہے. اور اسی سلسلے میں یہ بھی پتہ لگ گیا کہ
اس کے پاس اور بھی کون کون چاندی کی چیزیں
برآمد ہوئی ہیں اور یہ بھی معلوم ہوگیا کہ رمضانی
چیزیں چوری کرنے کا اقرار کرتا ہے . فون بند کرنے کے بعد
تین منٹ تک پھر میں اپنی یاد سے کشتی لڑتا رہا .
مگر میری یاد نے دس فیصدی بھی مدد نہ کی کہ میں
یہ مان سکوں کہ میں نے وہ چاقو رمضانی کو یادگار کے
طور پر دیا تھا . میں سوچ ہی رہا تھا کہ دروازے پر پھر
تھاپ پڑی اور شیلا باہر سے چلائی کہ بابو جی آپ کی
ڈائری میں سب کچھ لکھا مل گیا . میں نے دروازہ کھولا
اور اپنی ڈائری پڑھی . اب یاد ایک دم تازہ ہوگئی اور
رمضانی کی ودائی کا سارا سین میری آنکھوں کے سامنے
آگیا . اب شک کے لئے ذرا سی بھی جگہ نہ رہ گئی . شیلا
کے لئے دوبارہ پھر میرا حکم ہوا کہ تم جاؤ . وہ فوراً
چل دی . اس بار پہلے کی طرح وہ اداس نہیں تھی .
اس کے چہرے پر سچائی کی کھوج کی خوشی لہریں
مار رہی تھی . میں نے دروازہ پھر بند کر لیا .

ڈائری لکھنا گناہ ہے گناہ . ڈائری لکھنا یادداشت
کو کتاب میں بند کر دینا ہے . سب قصور اس ڈائری کا
ہے . اگر میں نے ڈائری نہ لکھی ہوتی تو یہ باتیں میں
کبھی نہ بھولتا . اور آج اتنا بڑا ظلم میرے ہاتھوں نہ
ہوا ہوتا جو میں کر بیٹھا ہوں . جیون لال میرا دوست
ہے پر وہ میری طرح مسلمانوں کا دوست تو نہیں ہے .
رمضانی مجھے بیٹے جیسا پیارا ہے پر جیون لال تو رمضانی
کو سانپ سمجھتا ہے . اور پھر وہ پولیس کا افسر ہے . اسے
اپنے مقدمے کی جیت سے کام ' سچائی سے کیا سروکار . اور
میں جیون لال کو کچھ بھی کہہ دینے کا حقدار بھی کیوں؟
میں نے جو بیان دیا ہے کسی دباؤ سے نہیں دیا ' خوشی
سے دیا ہے . غلط بیانی میں میرا قصور ہے اور پھر سب سے
زیادہ قصور ہے اس ڈائری کا . یہ کمبخت ڈائری میری
یاد کو اپنے ورقوں میں چھپا بیٹھی اور پھر مجھے بتانے
آئی شیلا کی معرفت . اور بتانے بھی آئی تو اس وقت
جب میں اپنے ہاتھ کٹا چکا اور اپنا دستخطی بیان پولیس
انسپکٹر کے ہاتھ سونپ چکا . جب یہ ڈائری بے جان
تھی تو یہ کمبخت بے جان ہی کیوں نہ بنی رہی .
اور اگر یہ بولتی ہی تھی تو شیلا سے کیوں بولی . مجھ سے
بولتی ' میری ڈائری تھی . شیلا ڈائری نہیں رکھتی اس
لئے اسکی یاد ڈائری کا کام دیتی ہے اور وہ زندہ
ڈائری ہے . اس نے میری ڈائری کی یاد شیلا کو دلا دی
اور میں اپنی ڈائری کی یاد بھول بیٹھا کیونکہ یہ کمبخت
ڈائری میری یاد مجھ سے چھین چکی تھی . اے

मैं अपनी लड़की की यह बात सुन कर सन्न रह गया. मैंने इसके जवाब में कुछ न कहकर शीला से यही कहा कि अच्छा अब तुम जाओ. और उस मेरी आवाज़ में हुक्म की इतनी सख़्ती मौजूद थी कि वह फ़ौरन उठ कर चल दी. उसके जाने के बाद मैंने कमरे का दरवाज़ा बन्द कर लिया.

लड़की के इस बयान से मेरी याद कुछ हरी तो हुई पर भी यह तय न कर पाया कि सचमुच मैंने यह चाक़ू रमज़ानी को पाकिस्तान चलते वक़्त इनाम या यादगार के रूप में दे दिया था. अब मेरे दिल का यह हाल था कि वह कभी यह कहता था कि हां दिया तो था और कभी यह कहता था कि नहीं बिलकुल नहीं दिया था. इनाम में मिला चाक़ू कहीं इस तरह दिया जा सकता है. हां, एक बात ज़रूर है कि उस चाक़ू को मैं न शीला को देता था और न शंकर को. यहां तक कि शंकर की मां को भी इस चाक़ू को देते हुए मैं झिझकता था. पर न जाने क्यों रमज़ानी के हाथ में देते मुझे न कोई झिझक होती और न मैं कुछ सोच में पड़ता था. शायद इसकी यह वजह रही हो कि रमज़ानी उसको ठीक तरह से रखता था और उसका ठीक ठाक इस्तेमाल भी जानता था. फिर यह सब बातें इस बात का सबूत नहीं हैं कि मैं इस इनामी चाक़ू को रमज़ानी को दे डालूँ. ऐसी प्यारी चीज़ किसी दूसरे को नहीं दी जा सकती जब तक कि उससे ज़ियादा प्यारी बात मेरे सामने न हो. इसी तरह सोचते सोचते मुझे यह भी याद आ गया कि रमज़ानी की जुदाई के वक़्त मेरी आंखें तर हो गई थीं पर चाक़ू देने की यह भी कोई ज़ोरदार दलील नहीं थी. भला चाक़ू भी कोई चीज़ है जो ऐसे मौक़े पर दिया जाय. मैं जितना भी सोचता था इसी नतीजे पर पहुँचता था कि वह चाक़ू मैंने रमज़ानी को नहीं दिया. बहुत सोचने पर इतना याद आया कि रमज़ानी के चलते वक़्त मैंने दराज़ खोला था और उसमें से रमज़ानी को देने के लिये पांच रुपये निकाले थे. रुपए, नोट नहीं. तब चाक़ू दराज़ में था और रुपए चाक़ू के नीचे थे. चाक़ू हटा कर रुपए निकाले थे. पर चाक़ू देने की बात याद के किसी कोने में ढूँढे नहीं मिलती थी. बहुत सोचने पर भी मैं यह तय न कर पाया कि मैंने चाक़ू रमज़ानी को दिया. शीला की बात मैं यूं मानने को तैयार न था कि जिस तरह मेरी अगर यह याद ग़लत है कि मैंने रमज़ानी को चाक़ू नहीं दिया तो शीला की यह याद भी तो ग़लत हो सकती है कि मैंने रमज़ानी को चाक़ू दिया था. और फिर यही क्या पता कि असामी रमज़ानी ही है. यह बात न मैंने इन्स्पेक्टर साहब से पूछी थी और न शीला ही ने अपने बयान में बताई. यह ध्यान में आते ही मैंने पुलिस स्टेशन को फ़ोन किया और थोड़ी देर में

میں اپنی لڑکی کی یہ بات سن کر سن رہ گیا . میں
س کے جواب میں کچھ نہ کہکر شیلا سے یہی کہا . کہ
ا اب تم جاؤ . اور اس میری آواز میں حکم کی اتنی
ختی موجود تھی . کہ وہ فوراً اٹھکر چل دی . اس کے
ے کے بعد میں نے کمرے کا دروازہ بند کر لیا .

لڑکی کے اس بیان سے میری یاد کچھ ہری تو ہوئی
جی [illegible] طے نہ کر پایا کہ سچ مچ میں نے یہ چاقو
ضانی کو پاکستان چلتے وقت انعام یا یادگار کے روپ
ں دے دیا تھا . اب میرے دل کا یہ حال تھا کہ وہ
ی یہ کہتا تھا کہ ہاں دیا تو تھا اور کبھی یہ کہتا
ا کہ نہیں بالکل نہیں دیا تھا . انعام میں ملا چاقو
ہیں اس طرح دیا جا سکتا ہے . ہاں ایک بات ضرور
کہ اس چاقو کو میں نہ شیلا کو دیتا تھا اور نہ شنکر
. یہاں تک کہ شنکر کی ماں کو بھی اس چاقو کو
یتے ہوئے میں جھجھکتا تھا . پر نہ جانے کیوں رمضانی
ہاتھ میں دیتے مجھے نہ کوئی جھجھک ہوتی اور
میں کچھ سوچ میں پڑتا تھا . شاید اسکی یہ وجہ
ی ہو کہ رمضانی اسکو ٹھیک طرح سے رکھتا تھا
ر اس کا ٹھیک ٹھیک استعمال بھی جانتا تھا .
ر یہ سب باتیں اس بات کا ثبوت نہیں ہیں کہ
یں اس انعامی چاقو کو رمضانی کو دے ڈالوں .
یسی پیاری چیز کسی دوسرے کو نہیں دی جا سکتی
جب تک کہ اس سے زیادہ پیاری بات میرے سامنے نہ
و . اسی طرح سوچتے سوچتے مجھے یہ بھی یاد آگیا کہ
رمضانی کی جدائی کے وقت میری آنکھیں تر ہوگئی
تھیں پر چاقو دینے کی یہ بھی کوئی زوردار دلیل نہیں
تھی . بھلا چاقو بھی کوئی چیز ہے جو ایسے موقعے پر دیا
جائے . میں جتنا بھی سوچتا تھا اسی نتیجے پر پہنچتا
تھا کہ وہ چاقو میں نے رمضانی کو نہیں دیا . بہت
سوچنے پر اتنا یاد آیا کہ رمضانی کے چلتے وقت میں نے
دراز کھولا تھا اور اس میں سے رمضانی کو دینے کے لئے
پانچ روپے نکالے تھے . روپے، نوٹ نہیں . تب چاقو دراز میں
تھا اور روپے چاقو کے نیچے تھے . چاقو ہٹا کر روپے نکالے
تھے . پر چاقو دینے کی بات یاد کے کسی کونے میں
ڈھونڈے نہیں ملتی تھی . بہت سوچنے پر بھی میں
یہ طے نہ کر پایا کہ میں نے چاقو رمضانی کو دیا . شیلا
کی بات میں یوں ماننے کو تیار نہ تھا کہ جسطرح میری
اگر یہ یاد غلط ہے کہ میں نے رمضانی کو چاقو نہیں دیا تو
شیلا کی یہ یاد بھی تو غلط ہوسکتی ہے کہ میں نے رمضانی
کو چاقو دیا تھا . اور پھر یہی کیا پتہ کہ اسامی رمضانی
ہی ہے . یہ بات نہ میں نے انسپکٹر صاحب سے پوچھی تھی
اور نہ شیلا ہی نے اپنے بیان میں بتائی . یہ دھیان میں
آتے ہی میں نے پولیس اسٹیشن کو فون کیا اور تھوڑی دیر میں

"मैंने कहा न कि एक असामी की तलाशी में मिला है. वह हवालात में है. मैं कल ही उस को मजिस्ट्रेट के सामने पेश करने वाला हूँ."

"यह है कौन जो सिर्फ़ मेरा चाक़ू चुरा ले गया. मेरे कमरे में चाक़ू से ज़ियादा क़ीमती और ज़ियादा हलकी दसियों ऐसी चीज़ें हैं जिनमें से किसी एक को भी ले जाता तो आसानी से कहीं बेच कर अच्छे दाम उठा लेता. यह अजब बेवक़ूफ़ चोर है जो उठा कर ले गया मेरा इनाम में मिला चाक़ू. बेशक उसने मेरी प्यारी चीज़ चुरा कर मुझे तकलीफ़ तो दी पर ख़ुद उसके तो कुछ हाथ न आया."

"डाकू सोने की चीज़ें छोड़ कर बन्दूक़ और कारतूस पर सब से पहले हाथ मारते हैं और गठकटे और मामूली चोर चाक़ू क़ैंची को आपकी घड़ी से ज़ियादा क़ीमती समझते हैं."

"तो क्या मेरा चाक़ू गिरहकटों के काम का है. यह तो भाई क़लम तराश है क़लम तराश."

"तेज़ तो है, जेब तराश का काम भी दे सकता है."

इस तरह थोड़ी देर गप शप हांक कर और मेरा बयान ले कर जीवन लाल जी चल दिये.

अभी उनको गए हुए आधा घंटा भी न बीता होगा कि मेरी लड़की शोला कालिज से वापस आ पहुंची, और सीधी मेरे कमरे में आई और मुझ से बोली :—

"बाबूजी! वह आपका चांदी का चाक़ू तो मैंने आज पुलिस इंस्पेक्टर जीवन लाल के हाथ में देखा, वह उसको हमारी प्रोफ़ेसर नन्दनी को दिखा रहे थे. वह उसके भाई होते हैं न. बाबूजी, जब मेरी नज़र उस चाक़ू पर पड़ी तो मैं पूछ बैठी कि यह चाक़ू आप के पास कैसे. यह चाक़ू तो हमारे बाबूजी ने रमज़ानी को उस वक़्त इनाम में दे दिया था जब वह पाकिस्तान के लिये रवाना हो रहा था. इस चाक़ू को तो हमारे बाबूजी हमारे हाथ में भी नहीं देते थे. इस चाक़ू से तो उनका चपरासी रमज़ानी ही उनकी पेन्सिल बनाया करता था. यह आप के पास कैसे आ गया. क्या उसने आपको बेच दिया? और यह आपके पास कब से है? बाबूजी, इसके जवाब में जीवन लाल जी ने सिर्फ़ इतना ही कहा कि नहीं नहीं, तुम ग़लती पर हो. तुम्हारे पिताजी के कमरे से यह चोरी हुआ है और हम उन से अभी पूछ कर आ रहे हैं. वह चाक़ू कोई और होगा जिसकी तुम बात कर रही हो. बाबूजी, मैंने वह चाक़ू उनसे फिर देखने के लिये मांगा पर उन्होंने मुझे नहीं दिया. और न कुछ आगे और बताया. फ़ौरन उठकर सीधे पुलिस स्टेशन चल दिये."

"انہوں نے کہا نہ کہ ایک اسامی کی تلاشی میں ملا ہے۔ وہ حوالات میں ہے۔ میں کل ہی اسکو مجسٹریٹ کے سامنے پیش کرنے والا ہوں۔"

"یہ ہے کون جو صرف میرا چاقو چرا لے گیا۔ میرے کمرے میں چاقو سے زیادہ قیمتی اور زیادہ ہلکی دسیوں ایسی چیزیں ہیں جن میں سے کسی ایک کو بھی لے جاتا تو آسانی سے کہیں بیچ کر اچھے دام اُٹھا لیتا۔ یہ عجب بیوقوف چور ہے جو اُٹھا کر لے گیا میرا انعام میں ملا چاقو۔ بیشک اُسنے میری پیاری چیز چرا کر مجھے تکلیف تو دی پر خود اُسکے تو کچھ ہاتھ نہ آیا۔"

"ڈاکو سونے کی چیزیں چھوڑ کر بندوق اور کارتوس پر سب سے پہلے ہاتھ مارتے ہیں اور گٹھکٹے اور معمولی چور چاقو قینچی کو آپکی گھڑی سے زیادہ قیمتی سمجھتے ہیں۔"

"تو کیا میرا چاقو گرہ کٹوں کے کام کا ہے۔ یہ تو بھائی قلم تراش ہے قلم تراش۔"

"تیز تو ہے، جیب تراش کا کام بھی دے سکتا ہے۔"

اس طرح تھوڑی دیر گپ شپ ہانک کر اور میرا بیان لے کر جیون لال جی چل دیئے۔

ابھی اُن کو گئے ہوئے آدھا گھنٹہ بھی نہ بیتا ہوگا کہ میری لڑکی شعلہ کالج سے واپس آپہنچی، اور سیدھی میرے کمرے میں آئی اور مجھ سے بولی :—

"بابو جی! وہ آپ کا چاندی کا چاقو تو میں نے آج پولیس انسپکٹر جیون لال کے ہاتھ میں دیکھا، وہ اُسکو ہماری پروفیسر نندنی کو دکھا رہے تھے۔ وہ اُس کے بھائی ہوتے ہیں نہ۔ بابوجی، جب میری نظر اُس چاقو پر پڑی تو میں پوچھ بیٹھی کہ یہ چاقو آپ کے پاس کیسے۔ یہ چاقو تو ہمارے بابو جی نے رمضانی کو اُس وقت انعام میں دے دیا تھا جب وہ پاکستان کے لئے روانہ ہو رہا تھا۔ اس چاقو کو تو ہمارے بابو جی ہمارے ہاتھ میں بھی نہیں دیتے تھے۔ اِس چاقو سے تو اُن کا چپراسی رمضانی ہی اُن کی پنسل بنایا کرتا تھا۔ یہ آپ کے پاس کیسے آگیا۔ کیا اس نے آپ کو بیچ دیا؟ اور یہ آپکے پاس کب سے ہے؟ بابو جی، اِسکے جواب میں جیون لال جی نے صرف اتنا ہی کہا کہ نہیں نہیں، تم غلطی پر ہو۔ تمہارے پتاجی کے کمرے سے یہ چوری ہوا ہے اور ہم اُن سے ابھی پوچھکر آرہے ہیں۔ وہ چاقو کوئی اور ہوگا جس کی تم بات کر رہی ہو۔ بابو جی، میں نے وہ چاقو اُن سے پھر دیکھنے کے لئے مانگا پر انہوں نے مجھے نہیں دیا۔ اور نہ کچھ آگے اور بتایا، فوراً اُٹھکر سیدھے پولیس اسٹیشن چل دیئے۔"

कहां सका. वह तो यहीं रहा और आज भी यहीं है. पर कहां और किस तरह से है यह तुम्हें मेरे ख़त में आगे चल कर मालूम होगा.

11 नवम्बर को न जाने क्यों मुझे उस चाक़ू की याद हो आई जो मुझे दौड़ में अव्वल आने पर इनाम में मिला था और जिसका दस्ता चांदी का था और जिस पर तुमने ख़ुद ही अंगरेज़ी में मेरा नाम एन. के. मेहरा खुदवाया था. यह भी तुम जानते ही हो कि वह चाक़ू मुझे किस क़दर प्यारा था. बस मैं उस चाक़ू को अपने बक्स में तलाश करने लगा. बहुत तलाश किया न मिला. अपने कमरे की सब अलमारियां खोज डालीं, मेज़ के सब दराज़ देख डाले. अगर घर पर शीला या शंकर में से कोई होता तो उनसे भी पूछता पर वह दोनों ग़ैर हाज़िर थे. उनकी मां मुहल्ले में ही अपनी किसी सहेली के यहां गई हुई थीं. इसलिये मेरी पूछ ताछ की ख़्वाहिश मेरे मन में दब कर रह गई. मैं तलाश करने से न थका था न नाउम्मीद हुआ था, बराबर उसे इधर उधर ढूंढ रहा था. इतने में दरवाज़े पर थाप पड़ी. जैसे ही दरवाज़ा खोला तो सामने नज़र आए जीवन लाल इंस्पेक्टर पुलिस. मैं पूछ बैठा कि जनाब इस वक़्त कैसे आ टपके. वह बोले—"बैठिये, बैठिये, अभी सब क़िस्सा बताता हूँ.

"देखिये, यह चाक़ू आप का है?" चाक़ू जेब से निकाल कर मेरे हाथ में थमाते हुए जीवन लाल जी ने कहा.

"है तो मेरा ही. मगर यह आप के पास कैसे पहुँचा? मैं तो दो घंटे से इसी की तलाश में पागल बना हुआ हूँ. इसके लिये मैंने कमरे की सारी चीज़ें उलट पुलट कर डालीं. कहिये तो आप इसे कब उठा कर ले गए थे?"

"ख़ूब! मैं उठा कर ले गया था. अरे भाई यह एक असामी के पास निकला है, उसके पास और भी कई चांदी की चीज़ें निकली हैं पर यह चाक़ू तुम्हारे यार के साथी एक वकील ने पहचान लिया और उसी ने कहा कि यह चाक़ू नंद किशोर मेहरा का है. मैंने उन के पास देखा था. इसे मैं ख़ूब पहचानता हूँ और यह कि यह चाक़ू उन्हें इनाम में मिला था और वह इस को बड़ी अच्छी तरह रखते हैं. इसलिये मैं इस चाक़ू को ले कर आपके पास तहक़ीक़ात के लिये आया हूँ कि अगर यह चाक़ू आपका ही है तो आप एक बयान लिख दीजिये और वक़्त पर गवाह के तौर पर अदालत में हाज़िर होने के लिये तैयार रहिये."

मैंने कहा—"बयान तो मैं लिख दूंगा पर यह तो कहिये कि यह आपको मिला कहां?"

ہاں سکا ۔ وہ تو یہیں رہا اور آج بھی یہیں ہے ۔ پر کہاں ر کسطرح سے ہے یہ تمہیں میرے خط میں آگے چل کر علوم ہوگا ۔

11 نومبر کو نہ جانے کیوں مجھے اُس چاقو کی یاد آئی جو مجھے دوڑ میں اول آنے پر انعام میں ملا ا اور جس کا دستہ چاندی کا تھا اور جس پر تم نے ود ہی انگریزی میں میرا نام این ۔ کے ۔ مہرا کھدوایا ا ۔ یہ بھی تم جانتے ہی ہو کہ وہ چاقو مجھے کس ر پیارا تھا ۔ بس میں اُس چاقو کو اپنے بکس میں ش کرنے لگا ۔ بہت تلاش کیا نہ ملا ۔ اپنے کمرے کی ب الماریاں کھوج ڈالیں، میز کے سب دراز دیکھ ڈالے ۔ گھر پر شیلا یا شنکر میں سے کوئی ہوتا تو اُن سے بھی چھتا پر وہ دونوں غیر حاضر تھے ۔ اُن کی ماں محلے ں ہی اپنی کسی سہیلی کے یہاں گئی ہوئی تھیں ۔ ں لئے میری پوچھ تاچھ کی خواہش میرے من میں ب کر رہ گئی ۔ میں تلاش کرنے سے نہ تھکا تھا نہ نا اُمید ا تھا، برابر اُسے اِدھر اُدھر ڈھونڈھ رہا تھا ۔ اتنے میں وازے پر تھاپ پڑی ۔ جیسے ہی دروازہ کھولا تو سامنے ر آئے جیون لال انسپکٹر پولیس ۔ میں پوچھ بیٹھا جناب اس وقت کیسے آ ٹپکے ۔ وہ بولے—"بیٹھیے، ٹھیے، ابھی سب قصہ بتاتا ہوں ۔

"دیکھئے، یہ چاقو آپ کا ہے؟" چاقو جیب سے نکال کر رے ہاتھ میں تھماتے ہوئے جیون لال جی نے کہا ۔

"ہے تو میرا ہی ۔ مگر یہ آپ کے پاس کیسے پہونچا؟ ں تو دو گھنٹے سے اسی کی تلاش میں پاگل بنا ہوا ں ۔ اس کے لئے میں نے کمرے کی ساری چیزیں ٹ پلٹ کر ڈالیں ۔ کہئے تو آپ اِسے کب اُٹھا کر لے تھے؟"

"خوب! میں اُٹھا کر لے گیا تھا ۔ ارے بھائی یہ ایک امی کے پاس نکلا ہے، اُسکے پاس اور بھی کئی چاندی چیزیں نکلی ہیں، پر یہ چاقو تمہارے یار کے ساتھی ک وکیل نے پہچان لیا اور اُسی نے کہا کہ یہ چاقو د کشور مہرا کا ہے ۔ میں نے اُن کے پاس دیکھا تھا ۔ میں خوب پہچانتا ہوں اور یہ کہ یہ چاقو اُنہیں نام میں ملا تھا اور وہ اِسکو بڑی اچھی طرح رکھتے ں ۔ اس لئے میں اِس چاقو کو لے کر آپکے پاس حقیقات کے لئے آیا ہوں کہ اگر یہ چاقو آپکا ہی ہے تو ایک بیان لکھ دیجئے اور وقت پر گواہ کے طور پر دالت میں حاضر ہونے کے لئے تیار رہئے ۔"

میں نے کہا—"بیان تو میں لکھ دونگا پر یہ تو کہئے یہ آپ کو ملا کہاں؟"

यह तो तुम समझ ही लो कि मैं यह ख़ुदकुशी करने में कोई जल्द बाज़ी नहीं कर रहा और मैं तो अपने तजरबे की बुनियाद पर यह कह सकता हूं कि ख़ुदकुशी जल्दबाज़ी में हो ही नहीं सकती. हाँ, यह किसी दरजे तक ठीक है कि ख़ुदकुशी करने से पहले दिल व दिमाग़ को और भी ज़ियादा बातें करने का मौक़ा दिया जाया करता होता तो हो सकता था कि ख़ुदकुशी से मरने वालों की तादाद कुछ कम हो जाती. फिर भी वह इतनी कम न होती जिसकी बिना पर यह साबित किया जा सकता कि जल्द बाज़ी से भी ख़ुद कुशी की जा सकती है. ख़तरे के एक दम सामने आने पर जो ख़ुद कुशियां होती हैं उन्हें वक़्त के लिहाज़ से जल्द बाज़ी में भले ही गिन लिया जाय पर दिमाग़ के सोचने के लिहाज़ से उन ख़ुदकुशियों के मौक़े पर भी दिमाग़ इतना ही सोच जाता है जितना उसने बहुत वक़्त लगा कर सोचा होता है.

मैं इस बहस को ज़ियादा बढ़ाना नहीं चाहता, और अब मैं थोड़े से लफ़्ज़ों में तुमको यह बता देना चाहता हूँ कि मैं क्यों आत्म-हत्या करने जा रहा हूँ.

तुम यह ख़त मेरे भाई ईश्वर दत्त को भी दिखला देना. और यह लिखने की ज़रूरत नहीं कि अगर वह घबराने लगे तो तुम उसे समझा देना, और तुम हर तरह इस क़ाबिल तो हो ही.

अब मेरी सुनो.

मेरे चपरासी रमज़ानी को तुम अच्छी तरह से जानते होगे. वह कितना छोटा मेरे पास आया था और किस तरह घर भर ने उसको प्यार से अपनाया था. शंकर की मां उसको शंकर जैसा ही प्यार करती थी और शंकर की बड़ी बहन रमज़ानी को कितने प्यार से भय्या कह कर पुकारती थी और तीज-त्योहार के मौक़ों पर रमज़ानी के साथ ऐसा ही व्योहार करती थी जैसा शंकर के साथ. और रमज़ानी को मैंने ही कब चपरासी समझा था. मैं शंकर जैसा प्यार उसे न भी देता हूँ पर और बातों में तो उसे शंकर जैसा रखता था. ख़ैर.

यह भी शायद तुम्हें मालूम होगा कि यह रमज़ानी सन 47 के नवम्बर के महीने में पाकिस्तान जाने के लिये हम को छोड़ गया. और उस वक़्त भी जब उसने घर छोड़ा था तो उसकी आंखें भी डब डबा आई थीं और मेरी आंखें भी तर हो गई थीं और शंकर की मां ने तो अपनी साड़ी आंसुओं से भिगो ली थी और शंकर की बहन शीला तो बाक़ायदा रो पड़ी थी. शंकर अगर उस वक़्त स्कूल न गया होता तो हो सकता है रमज़ानी ने पाकिस्तान जाने की बात न सोची होती. और फिर वह पाकिस्तान जा भी

یہ تو تم سمجھ ہی لو کہ میں یہ خود کشی کرنے میں کوئی جلد بازی نہیں کررہا اور میں تو اپنے تجربے کی بنیاد پر یہ کہہ سکتا ہوں کہ خود کشی جلد بازی میں ہو ہی نہیں سکتی۔ ہاں، یہ کسی درجے تک ٹھیک ہے کہ خود کشی کرنے سے پہلے دل و دماغ کو اور بھی زیادہ باتیں کرنے کا موقع دیا جایا کرتا ہوتا تو ہو سکتا تھا کہ خود کشی سے مرنے والوں کی تعداد کچھ کم ہوجاتی۔ پھر بھی وہ اتنی کم نہ ہوتی جسکی بنا پر یہ ثابت کیا جاسکتا کہ جلد بازی سے بھی خود کشی کی جاسکتی ہے۔ خطرے کے ایک دم سامنے آنے پر جو خودکشیاں ہوتی ہیں انہیں وقت کے لحاظ سے جلد بازی میں بھلے ہی گن لیا جائے پر دماغ کے سوچنے کے لحاظ سے اُن خود کشیوں کے موقعے پر بھی دماغ اتنا ہی سوچ جاتا ہے جتنا اُس نے بہت وقت لگاکر سوچا ہوتا ہے۔

میں اس بحث کو زیادہ بڑھانا نہیں چاہتا، اور اب میں تھوڑے سے لفظوں میں تمکو یہ بتا دینا چاہتا ہوں کہ میں کیوں آتم ہتیا کرنے جارہا ہوں۔

تم یہ خط میرے بھائی ایشور دت کو بھی دکھلا دینا۔ اور یہ لکھنے کی ضرورت نہیں کہ اگر وہ گھبرانے لگے تو تم اُسے سمجھا دینا اور تم ہر طرح اس قابل تو ہو ہی۔
اب میری سنو۔

میرے چپراسی رمضانی کو تم اچھی طرح سے جانتے ہونگے۔ وہ کتنا چھوٹا میرے پاس آیا تھا اور کس طرح گھر بھر نے اُسکو پیار سے اپنایا تھا، شنکر کی ماں اُسکو شنکر جیسا ہی پیار کرتی تھی اور شنکر کی بڑی بہن رمضانی کو کتنے پیار سے بھیا کہہ کر پکارتی تھی اور تیج تیوہار کے موقعوں پر رمضانی کے ساتھ ایسا ہی بیوہار کرتی تھی جیسا شنکر کے ساتھ۔ اور رمضانی کو میں نے ہی کب چپراسی سمجھا تھا۔ میں شنکر جیسا پیار اُسے نہ بھی دیتا ہوں پر اور باتوں میں تو اُسے شنکر جیسا رکھتا تھا۔ خیر۔

یہ بھی شاید تمہیں معلوم ہوگا کہ یہ رمضانی سن 47ء کے نومبر کے مہینے میں پاکستان جانے کے لئے ہمکو چھوڑ گیا۔ اور اُس وقت بھی جب اُس نے گھر چھوڑا تھا تو اُس کی آنکھیں بھی ڈبڈبا آئی تھیں اور میری آنکھیں بھی تر ہوگئی تھیں اور شنکر کی ماں نے تو اپنی ساڑی آنسوؤں سے بھگولی تھی اور شنکر کی بہن شیلا تو باقاعدہ روپڑی تھی۔ شنکر اگر اُس وقت اسکول نہ گیا ہوتا تو ہوسکتا ہے رمضانی نے پاکستان جانے کی بات نہ سوچی ہوتی۔ اور پھر وہ پاکستان جا بھی

जाता है और वह खुले आम कमगिनती जाति के लोगों को सताना शुरू कर देते हैं.

नए चुनाव होने वाले हैं. साम्प्रदायिक जमातों की तरफ़ से नफ़रत फैलाने वाली बातें और ग़लत ढंग से भड़काने वाले नारे लगने शुरू हो गए हैं और उनका नतीजा भी सामने आने लगा है. सरकार का फ़र्ज़ है कि वह ऐसे नफ़रत फैलाने वाले प्रचारों की तरफ़ ख़ास ध्यान रखे और ऐसी बातें न होने दे जिनसे देश की शान्ति को ख़तरा हो. जनता और देश के नेताओं से भी प्रार्थना है कि वह ऐसे प्रचार से बचें और यह समझ लें कि अगर देश में लोकशाही को ज़िन्दा रखना है तो फ़िरक़ाबन्दी के ख़िलाफ़ मोरचा लेना ही होगा. अगर ऐसा न हुआ तो देश में तानाशाही आ जायेगी और देश बरबाद हो जायेगा क्योंकि तानाशाही कुछ दिनों तो चलती है लेकिन अन्त में वह देश को ले डूबती है. जरमनी और इटली की मिसाल हमारे सामने है और हमें उससे सबक़ लेना चाहिये.

ے جو بہت لوگ ہیں اُنہیں ہدایت کرنے کا موقع مل جاتا ہے اور وہ کھلے عام کم گنتی جاتی کے لوگوں کو ستانا شروع کر دیتے ہیں .

نئے چناؤ ہونے والے ہیں . سامپردایک جماعتوں کی طرف سے نفرت پھیلانے والی باتیں اور غلط ڈھنگ سے بھڑکانے والے نعرے لگنے شروع ہوگئے ہیں اور اُن کا نتیجہ بھی سامنے آنے لگا ہے . سرکار کا فرض ہے کہ وہ ایسے نفرت پھیلانے والے پرچاروں کی طرف خاص دھیان رکھے اور ایسی باتیں نہ ہونے دے جن سے دیش کی شانتی کو خطرہ ہو . جنتا اور دیش کے نیتاؤں سے بھی پرارتھنا ہے کہ وہ ایسے پرچار سے بچیں اور یہ سمجھ لیں کہ اگر دیش میں لوک شاہی کو زندہ رکھنا ہے تو فرقہ بندی کے خلاف مورچہ لینا ہی ہوگا . اگر ایسا نہ ہوا تو دیش میں تانا شاہی آجائیگی اور دیش برباد ہوجائیگا کیونکہ تانا شاہی کچھ دنوں تو چلتی ہے لیکن انت میں وہ دیش کو لے ڈوبتی ہے . جرمنی اور اٹلی کی مثال ہمارے سامنے ہے اور ہمیں اُس سے سبق لینا چاہئے .

हानी

एक चिट्ठी

रे भाई ज़ाकिर,

जय हिन्द. तुम आड़े वक़्त में हमेशा मेरे काम आए. हारे समझाने का तरीक़ा हमेशा इतना अच्छा साबित ा कि मैं बड़ी बड़ी ग़लतियों और बदकारियों से बच ा. और आज भी अगर तुम मेरे पास मौजूद होते तो टाशियम सायनाइड पड़े पानी के गिलास को इस ी के ख़तम होने के बाद न पी पाता. जो गिलास मेरी मेज़ मेरे सामने रखा है मुझे बहुत जल्दी वहाँ पहुँचा देगा जाने के मैं क़ाबिल हूँ. तुम समुन्दर पार अफ़रीक़ा में ो और मैं हिन्दुस्तान के शहर दिल्ली से तुम्हें यह लिख रहा हूँ.

आज की इस दुनिया का कैसा अनोखा इन्तज़ाम है री ख़ुद कुशी की तैयारी का यह ख़त तुम्हें उस वक़्त ा जब दो एक हफ़्ते पहले तुम तार के ज़रिये से मेरी का हाल जान चुके होंगे. और अगर तुम मेरी मौत र से कहीं घबरा जाओ और हवाई जहाज़ से सीधे ान चले आओ तो फिर नहीं मालूम तुम्हें कितने बाद यह ख़त मिलेगा और तुम मेरी मौत की ठीक वजह समझ सकोगे.

کہانی

ایک چٹھی

پیارے بھائی ذاکر،

جے ہند. تم آڑے وقت میں ہمیشہ میرے کام آئے. تمہارے سمجھانے کا طریقہ ہمیشہ اتنا اچھا ثابت ہوا کہ میں بڑی بڑی غلطیوں اور بدکاریوں سے بچ گیا . اور آج بھی اگر تم میرے پاس موجود ہوتے تو میں پوٹاشیم سائنائڈ پڑے پانی کے گلاس کو اس چٹھی کے ختم ہونے کے بعد نہ پی پاتا . جو گلاس میری میز پر میرے سامنے رکھا ہے مجھے بہت جلدی وہاں پہونچادیگا جہاں جانے کے میں قابل ہوں . تم سمندر پار افریقہ میں بیٹھے ہو اور میں ہندستان کے شہر دلی سے تمہیں یہ خط لکھ رہا ہوں .

آج کی اس دنیا کا کیسا انوکھا انتظام ہے کہ میری خود کشی کی تیاری کا یہ خط تمہیں اُس وقت ملیگا جب دو ایک ہفتے پہلے تم تار کے ذریعے سے میری موت کا حال جان چکے ہوگے . اور اگر تم میری موت کے تار سے کہیں گھبرا جاؤ اور ہوائی جہاز سے سیدھے ہندستان چلے آؤ تو پھر نہیں معلوم تمہیں کتنے دن بعد یہ خط ملیگا اور تم میری موت کی ٹھیک وجہ سمجھ سکوگے .

यह मानना पड़ेगा कि हिन्दुस्तान के लोगों में साम्प्रदायिक और जात-पात से सम्बन्ध रखने वाले विचारों का बहुत जल्द असर होता है. इसे हम कह सकते हैं कि एक लम्बी मुद्दत की ग़ुलामी ने, ऐसी शिक्षा ने और विदेशी सरकार की तरफ़ से उन्हीं लोगों को बढ़ावा मिलने ने जो साम्प्रदायिक भावना रखने वाले थे, इस पौधे को पनपने दिया. यह ज़रूर है कि अगर अब इस पौधे को जिन चीज़ों से ख़ुराक मिलती है, उसके ख़िलाफ़ प्रेम, मुहब्बत और भाई चारे के विचारों का प्रचार किया जावे और फ़िरक़ावाराना या मज़हबी नफ़रत फैलाने वालों पर रोक हो और उन्हें नफ़रत की निगाह से देखा जावे तो यह पौधा मुरझाकर धीरे धीरे सूख सकता है और हो सकता है कि हमारी आने वाली सन्तान इससे बिलकुल बच जाय.

सवाल पैदा होता है कि क्या इतनी बड़ी ख़ूँरेज़ी से देश ने कोई सबक़ सीखा है और हम में इन ओछे और गंदे ख़यालों को छोड़ने की समझ आई है ? अफ़सोस कि आज भी मुल्क की हालत देखने के बाद जवाब 'नहीं' में ही मिलता है. आज साम्प्रदायिकता की नदी ने छोटी छोटी नालियों का रूप धारन कर लिया है और वह जात-पात के विचार और साम्प्रदायिक संगठन और साम्प्रदायिक नफ़रत के रूप में ज़ाहिर हो रहा है.

मेरा ख़याल है कि असेम्बली वग़ैरा के चुनाव, जहाँ प्रजा तंत्र यानी जमहूरियत के लिये ज़रूरी हैं, उनमें ग़लत प्रचार के लिये ज़रूरी रोक न होने से और उस पर पूरी तरह निगरानी न रखने से जनता में नफ़रत का ज़हर फैलने का डर है. उसकी वजह यह है कि इन जगहों के लिये जो उम्मीदवार होते हैं उनमें कुछ ही लोगों को छोड़ कर बाक़ी सब लोग चुनाव में किसी न किसी तरह जीतना चाहते हैं. हर एक की सेवाओं और चरित्र का इतना प्रभाव नहीं होता कि आम लोगों में उनकी तरफ़ कुछ खिंचाव हो, फिर सबसे ज़ियादा असर करने वाली साम्प्रदायिक या जात धर्म की बातें होती हैं. उनकी बिना पर यह लोग फ़िरक़ावाराना संगठन बनाते हैं, उनके ख़ुद नेता बनते हैं और दूसरे फ़िरक़ों और जातियों के ख़िलाफ़ ज़हर फैलाते हैं. देहातों में, जहाँ लोग ज़ियादातर पढ़े लिखे नहीं होते, उन पर यह जादू ख़ूब चलता है. चुनाव हो जाते हैं और फिर चुने जाने वाले सज्जन के दरशन दूसरे चुनाव से पहले शायद ही कभी होते हों. लेकिन जिन देहातों में उन्होंने यह ज़हर फैला रखा होता है, वह फ़िरक़ाबन्दी और पारटी-बाज़ी में फंस जाते हैं. इसका नतीजा बहुत ख़तरनाक होता है. छोटी जातियाँ बड़ी जातियों से बुरी तरह दबी रहती हैं. गाँव में अकसरियत और अक़लियत के झगड़े शुरू हो जाते हैं. बहुगिनत जाति

یہ ماننا پڑے گا کہ ہندستان کے لوگوں میں سامپردایک اور جات پات سے سمبندھ رکھنے والے وچاروں کا بہت جلد اثر ہوتا ہے . اِسے ہم کہہ سکتے ہیں کہ ایک لمبی مدت کی غلامی نے، ایسی شکشا نے اور ودیشی سرکار کی طرف سے انہیں لوگوں کو بڑھاوا ملنے نے جو سامپردایک بھاونا رکھنے والے تھے، اِس پودھے کو پنپنے دیا . یہ ضرور ہے کہ اگر اب اِس پودھے کو جن چیزوں سے خوراک ملتی ہے، اُسکے خلاف پریم، محبت اور بھائی چارے کے وچاروں کا پرچار کیا جاوے اور فرقہ وارانہ یا مذہبی نفرت پھیلانے والوں پر روک ہو اور اُنہیں نفرت کی نگاہ سے دیکھا جاوے تو یہ پودھا مرجھا کر دھیرے دھیرے سوکھ سکتا ہے اور ہوسکتا ہے کہ ہماری آنے والی سنتان اِس سے بالکل بچ جائے .

سوال پیدا ہوتا ہے کہ کیا اتنی بڑی خونریزی سے دیش نے کوئی سبق سیکھا ہے اور ہم میں اِن اوچھے اور گندے خیالوں کو چھوڑنے کی سمجھ آئی ہے ؟ افسوس کہ آج بھی ملک کی حالت دیکھنے کے بعد جواب 'نہیں' میں ہی ملتا ہے . آج سامپردایکتا کی بڑی ندی نے چھوٹی چھوٹی نالیوں کا روپ دھارن کرلیا ہے اور وہ جات پات کے وچار اور سامپردایک سنگھٹن اور سامپردایک نفرت کے روپ میں ظاہر ہو رہا ہے .

میرا خیال ہے کہ اسمبلی وغیرہ کے چناؤ جہاں پرجا تنتر یعنی جمہوریت کے لئے ضروری ہیں، اُن میں غلط پرچار کے لئے ضروری روک نہ ہونے سے اور اُس پر پوری طرح نگرانی نہ رکھنے سے جنتا میں نفرت کا زہر پھیلنے کا ڈر ہے . اسکی وجہ یہ ہے کہ اِن جگہوں کے لئے جو اُمیدوار ہوتے ہیں اُن میں کچھ ہی لوگوں کو چھوڑ کر باقی سب لوگ چناؤ میں کسی نہ کسی طرح جیتنا چاہتے ہیں . ہر ایک کی سیواؤں اور چرتر کا اِتنا پربھاؤ نہیں ہوتا کہ عام لوگوں میں اُنکی طرف کچھ کھنچاؤ ہو، پھر سب سے زیادہ اثر کرنے والی سامپردایک یا جات دھرم کی باتیں ہوتی ہیں . اُنکی بنا پر یہ لوگ فرقہ وارانہ سنگٹھن بناتے ہیں، اُنکے خود نیتا بنتے ہیں اور دوسرے فرقوں اور جاتیوں کے خلاف زہر پھیلاتے ہیں . دیہاتوں میں، جہاں لوگ زیادہ تر پڑھے لکھے نہیں ہوتے، اُن پر یہ جادو خوب چلتا ہے . چناؤ ہو جاتے ہیں اور پھر چنے جانے والے سجن کے درشن دوسرے چناؤ سے پہلے شاید ہی کبھی ہوتے ہوں . لیکن جن دیہاتوں میں اُنہوں نے یہ زہر پھیلا رکھا ہوتا ہے، وہ فرقہ بندی اور پارٹی بازی میں پھنس جاتے ہیں . اِس کا نتیجہ بہت خطرناک ہوتا ہے . چھوٹی جاتیاں بڑی جاتیوں سے بری طرح دبی رہتی ہیں . گاؤں میں اکثریت اور اقلیت کے جھگڑے شروع ہو جاتے ہیں . بہوگنت جاتی

कोशिशों ने हमें आज़ाद कराया. हम सच्चाई, मुहब्बत और इनसाफ़ की राह पर चल कर दुनिया को यह दिखायेंगे कि इस ज़माने में सबसे बड़ी शख्सियत और हम पर अहसान करने वाले की हमारे दिलों में कितनी इज्ज़त, मुहब्बत और भक्ति है. हिन्दुस्तान ने हमेशा निजी और पब्लिक ज़िन्दगी में रूहानी ताक़तों पर बहुत ज़ोर दिया है.

ईश्वर हमें अच्छी नियत और हमारे इरादों में ख़लूस और मज़बूती दे ताकि हम तंग नज़री, ख़ुद ग़रज़ी से ऊपर उठ कर वतन की ख़िदमत कर सकें. हम एक नाज़ुक ज़माने से गुज़र रहे हैं. दुनिया का राजकाज अमन और जंग के तराज़ू में तुल रहा है. अगर हम हालत को न समझ सके, अगर हमने उन लीडरों का साथ नहीं दिया जो साफ़-दिली और साफ़ गोई से वह कमज़ोरियां दिखाते हैं जिन से हमारी क़ौम की नींव ख़तरे में है, जिन से लोक शाही और ग़ैर फ़िरक़ेवारी राज को धक्का पहुँच रहा है और अपनी हालत सुधारने के लिये हमने उनकी चुनौती को क़बूल नहीं किया तो फिर पछतावे के लिये मोहलत तक न मिलेगी—

"गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं"

شنوں نے ہمیں آزاد کرایا۔ ہم سچائی، محبت اور انصاف کی راہ پر چل کر دنیا کو یہ دکھائیں گے کہ اس زمانے میں سب سے بڑی شخصیت اور ہم پر احسان کرنے والے کی ہمارے دلوں میں کتنی عزت، محبت اور بھکتی ہے۔ ہندستان نے ہمیشہ نجی اور پبلک زندگی میں روحانی طاقتوں پر بہت زور دیا ہے۔

ایشور ہمیں اچھی نیت اور ہمارے ارادوں میں خلوص اور مضبوطی دے تاکہ ہم تنگ نظری، خود غرضی سے اوپر اٹھ کر وطن کی خدمت کرسکیں۔ ہم ایک نازک زمانے سے گزر رہے ہیں۔ دنیا کا راج کاج امن اور جنگ کے ترازو میں تل رہا ہے۔ اگر ہم حالت کو نہ سمجھ سکے، اگر ہم نے ان لیڈروں کا ساتھ نہیں دیا جو صاف دلی اور صاف گوئی سے وہ کمزوریاں دکھاتے ہیں جن سے ہماری قوم کی نیو خطرے میں ہے، جن سے لوک شاہی اور غیر فرقہ واری راج کو دھکا پہونچ رہا ہے اور اپنی حالت سدھارنے کے لئے ہم نے ان کی چنوتی کو قبول نہیں کیا تو پھر پچھتاوے کے لئے مہلت تک نہ ملے گی—

"گیا وقت پھر ہاتھ آتا نہیں"

फ़िरक़ा बन्दी का ज़हर

(भाई त्रिवेनी सहाय)

भारत में स्वराज के बाद साम्प्रदायिकता या फ़िरक़ा-बन्दी का भयानक रूप सामने आया जिससे इनसान की गिरावट की हद मालूम हुई और पता चला कि वह गुमराह होने पर जानवरों से भी बदतर हो सकता है. लेकिन ख़याल होता है कि क्या यह छू मन्तर स्वराज के मिलने ने किया जो एक साथ पूरे मुल्क में दो फ़िरक़े एक दूसरे से लड़ गए और एक दूसरे के ख़ून के प्यासे बन गए. काफ़ी सोचने के बाद भी ऐसा मालूम नहीं होता. बल्कि इसकी जड़ें पिछले चुनावों के समय के साम्प्रदायिक प्रचार और जीतने की धुन में मस्त नेताओं की तरफ़ से एक दूसरे के ख़िलाफ़ नफ़रत फैलाने, प्लेट फ़ारमों से बिना किसी रोक थाम के दूसरों को गालियां देने और पाकिस्तान व अखंड हिन्दुस्तान के गली गली, गांव गांव नारे लगाये जाने के अन्दर दिखाई देती हैं. इसी फ़िरक़ेवाराना प्रचार ने लोगों के अन्दर नफ़रत की आग भर कर हिन्दू मुसलमानों के लाखों घरों को बरबाद किया और बरबाद किया इनसानों की नैतिकता, रहमदिली, भाई चारे के विचारों को जिससे पूरा देश गिरावट के गढ़े में जा गिरा.

فرقہ بندی کا زہر

(بھائی تریبینی سہائے)

بھارت میں سوراج کے بعد سامپردایکتا یا فرقہ بندی کا بھیانک روپ سامنے آیا جس سے انسان کی گراوٹ کی حد معلوم ہوئی اور پتہ چلا کہ وہ گمراہ ہونے پر جانوروں سے بھی بدتر ہوسکتا ہے۔ لیکن خیال ہوتا ہے کہ کیا یہ چھومنتر سوراج کے ملنے نے کیا جو ایک ساتھ پورے ملک میں دو فرقے ایک دوسرے سے لڑ گئے اور ایک دوسرے کے خون کے پیاسے بن گئے۔ کافی سوچنے کے بعد بھی ایسا معلوم نہیں ہوتا۔ بلکہ اسکی جڑیں پچھلے چناؤں کے سمے کے سامپردایک پرچار اور جیتنے کی دھن میں مست نیتاؤں کی طرف سے ایک دوسرے کے خلاف نفرت پھیلانے، پلیٹ فارموں سے بلا کسی روک، تھام کے دوسروں کو گالیاں دینے اور پاکستان و اکھنڈ ہندستان کے گلی گلی، گاؤں گاؤں نعرے لگائے جانے کے اندر دکھائی دیتی ہیں۔ اسی فرقہ وارانہ پرچار نے لوگوں کے اندر نفرت کی آگ بھر کر ہندو مسلمانوں کے لاکھوں گھروں کو برباد کیا اور برباد کیا انسانوں کی نیتکتا، رحم دلی، بھائی چارے کے وچاروں کو جس سے پورا دیش گراوٹ کے گڈھے میں جا گرا۔

हैं. माली ना बराबरी को दूर करने की कोशिश करें जिनसे समाज की नींव हिल रही है. किसान, मज़दूर और ग़रीब तबक़ा अपने लिये सोसाइटी में एक इज़्ज़त की जगह ढूंढ रहा है. अगर हम बदली हुई हालत और अपने रहन सहन के ढंग में मेल पैदा न कर सकेंगे तो एक ज़बरदस्त माली इन्क़लाब आएगा. फ़िरक़ेवारियत पर रोक लगाने के लिये एख़लाक़ी (नैतिक) और रूहानी ताक़तों को मज़बूत किया जाय. इस सिलसिले में हमको धर्म मज़हब से बड़ी मदद मिलेगी. धर्म मज़हब से मेरा मतलब है—सच्ची मज़हबी रवादारी, इनसान दोस्ती, मुहब्बत और क़ुरबानी से न कि उस वहम परस्ती से जिसे ग़लती से धर्म मज़हब का नाम दिया गया है. ख़ुदा का नाम ले ले कर कितने ज़ुल्म नहीं ढाए गए, कितने भयानक जुर्म नहीं किये गए ! अगर मज़हब यही है तो दुनिया से जितनी जल्द मिट जाय उतनी ही इसमें दुनिया की भलाई है. लेकिन अगर मज़हब से मतलब ऊंची रूहानी और एख़लाक़ी ताक़तों से है तो पूरब ने पच्छिम की ताक़तों को अमन शान्ति का हमेशा पैग़ाम दिया है. इस ज़माने में भी महात्मा गांधी ने दुनिया को अमन का पैग़ाम दिया. अच्छाई को जिस्मानी ताक़त से नहीं बल्कि अहिन्सा, प्रेम और बलिदान से हासिल करने का संदेश सुनाया. अगर उनके बताए हुए उसूलों पर चलते रहें तो बेशक पच्छिमी मुल्कों के जंगी विचारों पर अच्छे असर डाले जा सकते हैं और इस तरह दुनिया के अमन और उसकी तरक़्क़ी में हमारा बड़ा हिस्सा होगा. आइये हम तहय्या करें कि पंडित जवाहरलाल की अन्दरूनी और बाहरी पालिसी में उनका हाथ बटायेंगे. वह गांधी जी के सच्चे जानशीन हैं.

आन्ध्र, महाराष्ट्र और करनाटक के नेताओं से मेरी अपील है कि वह ज़बान की बुनियाद पर सूबों के क़ायम करने की बात को क़ौमी निगाह से देखें. कहीं इस आन्दोलन से मुल्क के फ़ायदे को अनजाने तौर पर धक्का न लग जाय. मेरी राय में मिला जुला हैदराबाद जहां तलंगी, मरहटी, कन्नड़ी और हिन्दुस्तानी बोलने वाले और अलग अलग कलचर के मानने वाले अमन चैन की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले आम लोग हैं हिन्दुस्तान के लिये एक ज़बरदस्त ताक़त साबित होगा. ज़बान की बुनियाद पर सूबों के क़ायम किये जाने के बारे में जनता जो भी फ़ैसला करेगी मुसलमान उसका साथ तो देंगे ही. जिसमें आम लोगों का फ़ायदा है उस में मुसलमानों का भी फ़ायदा है. लेकिन हम सबको एक बड़ा और ऊँचा हिन्दुस्तान बनाने की ख़्वाहिश है. यह अच्छा नहीं होगा कि वफ़ादारी सूबेवारियत और फ़िरक़ेवारियत में बंट कर रह जाय.

हम बापू, और आज़ादी की राह में दूसरे शहीद होने वालों की ख़िदमत में श्रद्धांजलि पेश करते हैं. उन्हीं की

مالی نا برابری کو دور کرنے کی کوشش کریں جن سے سماج کی نیو ہل رہی ہے . کسان' مزدور اور غریب طبقہ اپنے لئے سوسائٹی میں ایک عزت کی جگہ ڈھونڈھ رہا ہے . اگر ہم بدلی ہوئی حالت اور اپنے رہن سہن کے ڈھنگ میں میل پیدا نہ کرسکیں گے تو ایک زبردست مالی انقلاب آئے گا . فرقہ‌واریت پر روک لگانے کے لئے اخلاقی (نیتک) اور روحانی طاقتوں کو مضبوط کیا جائے . اِس سلسلے میں ہم کو دھرم مذہب سے بڑی مدد ملے گی . دھرم مذہب سے میرا مطلب ہے — سچی مذہبی رواداری' انسان دوستی' محبت اور قربانی سے نہ کہ اُس وہم پرستی سے جسے غلطی سے دھرم مذہب کا نام دیا گیا ہے . خدا کا نام لے لے کر کتنے ظلم نہیں ڈھائے گئے' کتنے بھیانک جرم نہیں کئے گئے ! اگر مذہب یہی ہے تو دنیا سے جتنی جلد مٹ جائے اُتنی ہی اِس میں دنیا کی بھلائی ہے . لیکن اگر مذہب سے مطلب اونچی روحانی اور اخلاقی طاقتوں سے ہے تو پورب نے پچھم کی طاقتوں کو امن شانتی کا ہمیشہ پیغام دیا ہے . اِس زمانے میں بھی مہاتما گاندھی نے دنیا کو امن کا پیغام دیا . اچھائی کو جسمانی طاقت سے نہیں بلکہ اہنسا' پریم اور بلیدان سے حاصل کرنے کا سندیش سنایا . اگر اُن کے بتائے ہوئے اصولوں پر چلتے رہیں تو بیشک پچھمی ملکوں کے جنگی وچاروں پر اچھے اثر ڈالے جاسکتے ہیں اور اِس طرح دنیا کے امن اور اُس کی ترقی میں ہمارا بڑا حصہ ہوگا . آئیے ہم تہیہ کریں کہ پنڈت جواہر لال کی اندرونی اور باہری پالیسی میں اُن کا ہاتھ بٹائیں گے . وہ گاندھی جی کے سچے جانشین ہیں .

آندھرا' مہاراشٹر اور کرناٹک کے نیتاؤں سے میری اپیل ہے کہ وہ زبان کی بنیاد پر صوبوں کے قائم کرنے کی بات کو قومی نگاہ سے دیکھیں . کہیں اِس آندولن سے ملک کے فائدے کو انجانے طور پر دھکا نہ لگ جائے . میری رائے میں ملا جلا حیدرآباد جہاں تلنگی' مرہٹی' کنڑی اور ہندستانی بولنے والے اور الگ الگ کلچر کے ماننے والے امن چین کی زندگی گزارنے والے عام لوگ ہیں ہندستان کے لئے ایک زبردست طاقت ثابت ہوگا . زبان کی بنیاد پر صوبوں کے قائم کئے جانے کے بارے میں جنتا جو بھی فیصلہ کرے گی مسلمان اُس کا ساتھ تو دیں گے ہی . جس میں عام لوگوں کا فائدہ ہے اُس میں مسلمانوں کا بھی فائدہ ہے . لیکن ہم سب کو ایک بڑا اور اونچا ہندستان بنانے کی خواہش ہے . یہ اچھا نہیں ہوگا کہ وفاداری صوبہ واریت اور فرقہ‌واریت میں بٹ کر رہ جائے .

ہم' باپو اور آزادی کی راہ میں دوسرے شہید ہونے والوں کی خدمت میں شردھانجلی پیش کرتے ہیں . انہیں کی

नौकरियां थीं और जो अब छुटनी में आकर बेरोजगार फिर रहे हैं. वह लोग जो ग़ैरसमाजी लोगों के ज़ुल्म और ज़ियादती का शिकार बने, जिनकी जायदादें छिन गईं, जिनको निकासी जायदाद क़ानून से नुक़सान पहुँचा, जो रोक थाम रखने की कोशिश में गिरफ़्तारियों और दूसरे डर से सहमे हुए हैं उनके दिलों में यह डर बैठ गया है कि दूसरे शहरियों के बराबर हक़ उन्हें हासिल नहीं हैं, उनके साथ इन्साफ़ का बरताव नहीं किया जाता. मेरी राय में इन सवालों की हद मुसलमानों तक ही नहीं है बल्कि उनका ताल्लुक़ लोकशाही से है. यह वह कसौटी है जिस पर ग़ैरफ़िरक़ेवारी राज को, जिससे हम क़ानूनी और एख़लाक़ी दोनों तरह से बंधे हैं, परखा जायगा. अगर हम यह चाहते हैं कि दुनिया की निगाह में हमारी इज़्ज़त बढ़े तो यह ज़रूरी है कि हम लोकशाही के क़ायल भी हों. कोई देश अपने माली, राजकाजी और समाजी मसलों को कामयाबी से हल नहीं कर सकता जब तक कि हर शहरी को इसका यक़ीन न हो जाय कि न सिर्फ़ उसकी ज़िन्दगी, इज़्ज़त और जायदाद महफ़ूज़ है बल्कि हाथ पैर चलाने के उसे बराबर के मौक़े हैं और उसे किसी ऐसी चीज़ से अलग नहीं रखा गया जो दूसरों को हासिल है. अगर कोई तबक़ा बाढ़, छूत की बीमारियों या कठिनाइयों से तबाह हो जाय तो लोकशाही उसूल की मांग है कि ऐसे तबक़े का औरों के मुक़ाबले में ख़ास तौर से लिहाज़ रखा जाय और हमदर्दी की जाय.

फ़िरक़ावारी रोग कई शक्लों में ज़ाहिर होता है. मुझे ज़िलों के दौरों में यह देख कर बड़ा रंज हुआ कि ब्राह्मन ग़ैर ब्राह्मन, लिंगायत ग़ैर लिंगायत, रेड्डी ग़ैर रेड्डी के बीच दुश्मनी के जज़्बे लोगों के दिलों में तेज़ी से लहरें ले रहे हैं. यह फ़िरक़ेवारियत की दूसरी सूरत है. अगर इसकी रोक थाम नहीं की गई, इस पर क़ाबू नहीं पाया गया तो हम कठिनाइयों में फंस जायँगे, जंजाल से निकलना मुहाल हो जायगा. हमें वायदा करना होगा कि कोई क़ुरबानी क्यों न देनी पड़े हम फ़िरक़ेवारियत के ख़िलाफ़ लड़ेंगे और महात्मा गांधी की तरह अपनी जान की बाज़ी तक लगा देंगे. फ़िरक़ेवारियत और जत्था बन्दी के रुजहान हैदराबाद और सारे हिन्दुस्तान के लिये अहम सवाल बन गए हैं. स्वार्थ, अलगाव और पिछड़ेपसीद्ध विचारों को बेलगाम होने से रोकने के लिये हमें कोई असरदार क़दम उठाना पड़ेगा. हम एक आज़ाद मुल्क के रहने वाले हैं जिसकी तारीख़ और जिसकी तहज़ीब ऊंची है. हमें ऐसे ढंग निकालने पड़ेंगे जो न सिर्फ़ हमारी तरक़्क़ी में बल्कि सारी दुनिया की तरक़्क़ी में मददगार साबित हों. एके की ज़ंजीरों को मज़बूत करने और अपनी ताक़तों के बेहतर इस्तेमाल के लिये दो तजवीज़ें पेश करता हूँ: एक तो यह कि हम माली हालत की मांग पर ज़ियादा ध्यान

نوکریاں تھیں اور جو اب چھنٹنی میں آکر بے روزگار پھر رہے ھیں ۔ وہ لوگ جو غیرسماجی لوگوں کے ظلم اور زیادتی کا شکار بنے' جنکی جائدادیں چھن گئیں' جن کو نکاسی جائداد قانون سے نقصان پہونچا' جو روک تھام رکھنے کی کوشش میں گرفتاریوں اور دوسرے ڈر سے سہمے ہوئے ھیں اُن کے دلوں میں یہ ڈر بیٹھ گیا ھے کہ دوسرے شہریوں کے برابر حق اُنھیں حاصل نہیں ھیں' اُن کے ساتھ انصاف کا برتاؤ نہیں کیا جاتا ۔ میری رائے میں اِن سوالوں کی حد مسلمانوں تک ھی نہیں ھے بلکہ اِن کا تعلق لوک شاھی سے ھے ۔ یہ وہ کسوٹی ھے جس پر غیرفرقہ‌واری راج کو' جس سے ھم قانونی اور اخلاقی دونوں طرح سے بندھے ھیں' پرکھا جائے گا ۔ اگر ھم یہ چاھتے ھیں کہ دنیا کی نگاہ میں ھماری عزت بڑھے تو یہ ضروری ھے کہ ھم لوک شاھی کے قائل بھی ہوں ۔ کوئی دیش اپنے مالی' راج کاجی اور سماجی مسئلوں کو کامیابی سے حل نہیں کر سکتا ھے جب تک کہ ھر شہری کو اِس کا یقین نہ ھوجائے کہ نہ صرف اُس کی زندگی' عزت اور جائداد محفوظ ھے بلکہ ھاتھ پیر چلانے کے اُسے برابر کے موقعے ھیں اور اُسے کسی ایسی چیز سے الگ نہیں رکھا گیا جو دوسروں کو حاصل ھے ۔ اگر کوئی طبقہ باڑھ' چھوت کی بیماریوں' یا کٹھنائیوں سے تباہ ھوجائے تو لوک شاھی اصول کی مانگ ھے کہ ایسے طبقے کا اوروں کے مقابلے میں خاص طور سے لحاظ رکھا جائے اور ھمدردی کی جائے ۔

فرقہ‌واری روگ کئی شکلوں میں ظاھر ھوتا ھے ۔ مجھے ضلعوں کے دوروں میں یہ دیکھ کر بڑا رنج ھوا کہ براھمن غیر براھمن' لنگایت غیر لنگایت' ریڈی غیر ریڈی کے بیچ دشمنی کے جذبے لوگوں کے دلوں میں تیزی سے لہریں لے رہے ھیں ۔ یہ فرقہ‌واریت کی دوسری صورت ھے ۔ اگر اِس کی روک تھام نہیں کی گئی' اس پر قابو نہیں پایا گیا تو ھم کٹھنائیوں میں پھنس جائیں گے' جنجال سے نکلنا محال ھو جائے گا ۔ ھمیں وعدہ کرنا ھوگا کہ کوئی قربانی کیوں نہ دینی پڑے ھم فرقہ‌واریت کے خلاف لڑیں گے اور مہاتما گاندھی کی طرح اپنی جان کی بازی تک لگادیں گے ۔ فرقہ‌واریت اور جتھا بندی کے رجحان حیدرآباد اور سارے ھندستان کے لئے اھم سوال بن گئے ھیں ۔ سوارتھ' الگاؤ اور پچھ گھسیٹو وچاروں کو بے لگام ھونے سے روکنے کے لئے ھمیں کوئی اثردار قدم اُٹھانا پڑے گا ۔ ھم ایک آزاد ملک کے رھنے والے ھیں جس کی تاریخ اور جسکی تہذیب اونچی ھے ۔ ھمیں ایسے ڈھنگ نکالنے پڑیں گے جو نہ صرف ھماری ترقی بلکہ ساری دنیا کی ترقی میں مددگار ثابت ھوں ۔ ایکے کی زنجیروں کو مضبوط کرنے اور اپنی طاقتوں کے بہتر استعمال کے لئے دو تجویزیں پیش کرتا ھوں : ایک تو یہ کہ ھم مالی حالت کی مانگ پر زیادہ دھیان

यह एक जागीरदारी समाज की झलक है, इसमें उस समाज की तमाम ख़राबियां मौजूद हैं लेकिन फ़िरक़ेवारियत और तास्सुब की परछाईं दिखाई नहीं पड़ती.

दस बारह साल से मुसलमानों में फ़िरक़ेवारी जज़बा भड़कने की वजह यह थी कि बरतानवी हिन्द में जो गड़बड़ियां हुईं उनकी लहरें हैदराबाद को भी छू गईं. हमारी सरकार स्वार्थी और नाक़ाबिल लोगों के हाथों में थी, वह हालत पर क़ाबू न पासके. मुसलमानों को अपनी तंग-नज़री का काफ़ी ख़मियाज़ा भुगतना पड़ा. अब हैदराबाद की फ़िरक़ेवारियत मर चुकी है. जो रही सही है वह आख़िरी सांसें ले रही है. यक़ीन के साथ कहा जा सकता है कि मुस्तक़बिल में हैदराबाद के राज काज को कम से कम मुस्लिम फ़िरक़ेवारियत की तरफ़ से कोई डर नहीं है.

लोकशाही विचारों और लोकशाही में चीज़ों के ढालने का जहां तक ताल्लुक़ है हमें अभी बहुत दूर जाना है. हिन्दुस्तानी विधान और भारत लोकराज क़ायम होने से लोकशाही की दाग़ बेल पड़ चुकी है. पर हमारे विचारों पर ग़ैरमज़हबी और जागीरदारी असर अभी तक छाए हैं. हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों की वही हालत है. तालीम और प्रोपेगेन्डा से लोकशाही फ़िज़ा पैदा करने की बड़ी*ज़रूरत है. लोकशाही की मांग है कि फ़र्द (व्यक्ति) का आदर किया जाय न कि इन पुराने जागीरदारी ढंगों का जो अब भी इज़्ज़त की निगाह से देखे जाते हैं. इनसान की सेवा के लिये हमें उसी रास्ते पर चलना पड़ेगा जो दुनिया के दूसरे मुल्कों ने जनता की भलाई के लिये अपनाए. यह एक मुशकिल काम और भारी ज़िम्मेदारी है. महात्मा गांधी का हम को एहसान मानना चाहिये कि उनकी लीडरी में हमें राजकाजी आज़ादी मिल गई. पर यह जीत हार बन जायगी अगर हम माली और समाजी आज़ादी हासिल करने में नाकाम हुए. हमारी सारी कोशिशें जनता को कपड़ा, खाना और रहने की आसानियां पहुँचाने में ख़र्च होनी चाहियें. आज़ाद मुल्क के हर शहरी के यह बुनियादी हक़ हैं. हैदराबादी वतन की ख़िदमत में किसी से पीछे नहीं रहेंगे. हमें बहुत कुछ करना है. अगर हर शहरी इनसान की ख़िदमत का सच्चा जज़बा ले कर उठे और मिली जुली कोशिश हो तब भी योरपी मुल्कों के रहन सहन की ऊंचाई तक पहुंचने में कई साल लगेंगे. सोचिये तो हमारा क्या नतीजा होगा अगर हम एक दूसरे से अलग होकर मामूली बातों और मन मुटाव में अपना क़ीमती समय बरबाद करें.

जो मसले आज मुसलमानों को परेशान कर रहे हैं वह चन्द रोज़ा हैं. मिसाल के तौर पर उन लोगों को फिर बसाने का मसला जिनकी रोज़ी का ज़रिया सिर्फ़ सरकारी

یہ ایک جاگیرداری سماج کی جھلک ہے، اس میں اس سماج کی تمام خرابیاں موجود ہیں لیکن فرقہ واریت اور تعصب کی پرچھائیں دکھائی نہیں پڑتی۔

دس بارہ سال سے مسلمانوں میں فرقہ واری جذبہ بھڑکنے کی وجہ یہ تھی کہ برطانوی ہند میں جو گڑبڑیاں ہوئیں اُن کی لہریں حیدرآباد کو بھی چھو گئیں۔ ہماری سرکار سوارتھی اور ناقابل لوگوں کے ہاتھوں میں تھی، وہ حالت پر قابو نہ پاسکے۔ مسلمانوں کو اپنی تنگ نظری کا کافی خمیازہ بھگتنا پڑا۔ اب حیدرآباد کی فرقہ واریت مرچکی ہے۔ جو رہی سہی ہے وہ آخری سانسیں لے رہی ہے۔ یقین کے ساتھ کہا جا سکتا ہے کہ مستقبل میں حیدرآباد کے راج کاج کو کم سے کم مسلم فرقہ واریت کی طرف سے کوئی ڈر نہیں ہے۔

لوک شاہی وچاروں اور لوک شاہی میں چیزوں کے ڈھالنے کا جہاں تک تعلق ہے ہمیں ابھی بہت دور جانا ہے۔ ہندستانی ودھان اور بھارت لوک راج قائم ہونے سے لوک شاہی کی داغ بیل پڑ چکی ہے۔ پر ہمارے وچاروں پر غیر مذہبی اور جاگیرداری اثر ابھی تک چھائے ہیں۔ ہندوؤں اور مسلمانوں دونوں کی وہی حالت ہے۔ تعلیم اور پروپیگنڈہ سے لوک شاہی فضا پیدا کرنے کی بڑی ضرورت ہے۔ لوک شاہی کی مانگ ہے کہ فرد (ویکتی) کا آدر کیا جائے نہ کہ اِن پرانے جاگیرداری ڈھنگوں کا جو اب بھی عزت کی نگاہ سے دیکھے جاتے ہیں۔ انسان کی سیوا کے لئے ہمیں اسی راستے پر چلنا پڑے گا جو دنیا کے دوسرے ملکوں نے جنتا کی بھلائی کے لئے اپنائے۔ یہ ایک مشکل کام اور بھاری ذمہ داری ہے۔ مہاتما گاندھی کا ہم کو احسان ماننا چاہئے کہ ان کی لیڈری میں ہمیں راج کاجی آزادی مل گئی، پر یہ جیت ہار بن جائیگی اگر ہم مالی اور سماجی آزادی حاصل کرنے میں ناکام ہوئے۔ ہماری ساری کوششیں جنتا کو کپڑا، کھانا اور رہنے کی آسانیاں پہونچانے میں خرچ ہونی چاہئیں۔ آزاد ملک کے ہر شہری کے یہ بنیادی حق ہیں۔ حیدرآبادی وطن کی خدمت میں کسی سے پیچھے نہیں رہیں گے۔ ہمیں بہت کچھ کرنا ہے۔ اگر ہر شہری انسان کی خدمت کا سچا جذبہ لے کر اٹھے اور ملی جلی کوشش ہو تب بھی یورپی ملکوں کے رہن سہن کی اونچائی تک پہونچنے میں کئی سال لگیں گے۔ سوچئے تو ہمارا کیا نتیجہ ہوگا اگر ہم ایک دوسرے سے الگ ہو کر معمولی باتوں اور من مٹاؤ میں اپنا قیمتی سمے برباد کردیں۔

جو مسئلے آج مسلمانوں کو پریشان کر رہے ہیں وہ چند روزہ ہیں۔ مثال کے طور پر اُن لوگوں کو پھر سے بسانے کا مسئلہ جن کی روزی کا ذریعہ صرف سرکاری

हों उस पर सोच विचार करें और ईमानदारी से इस बात की कोशिश करें कि मुल्क का कोई तबक़ा यह महसूस न करने पाये कि उसके साथ इनसाफ़ नहीं हुआ.

हैदराबाद में न सिर्फ़ हिन्दुओं और मुसलमानों के आपसी ताल्लुक़ अच्छे थे बलिक बीते दिनों में सरकार भी बेहद बे तास्सुब और ग़ैरजानिबदार थी. पिछले दस बीस बरस को छोड़ कर हैदराबाद की हकूमत ऐसी ही क़ौमी और ग़ैरसम्प्रदाई थी जैसी कि मैसूर की सरकार. रवादारी का यह ज़माना सच्चे मानों में उस समय से ख़तम हो गया जब महाराजा किशन प्रशाद बहादुर रियासत के प्रधान मंत्री के ओहदे से अलग हो गए, जब निज़ामत जंग, राय मुरलीधर, अक़ील जंग और वेन्कट रामा रेड्डी जैसे बड़े लोग पिन्शन लेने या मर जाने के कारन सरकारी ज़िम्मेदारियों से अलहदा हो गए. तारीख़ गवाह है कि पांच सौ साल की लम्बी मुद्दत में फ़िरक़े-वाराना मेल मिलाप इतना मज़बूत था कि हिन्दू और मुसलमान प्रधान मंत्रियों की तादाद लगभग बराबर थी. हिन्दू और मुसलमान जागीरदारों और वालियाने समस्तान को जागीरें दी गईं, मन्दिरों और मस्जिदों को नक़दी और ज़मीन दोनों शकलों में इनाम दिया गया. समाजी ज़िन्दगी में मुसलमान और हिन्दू एक दूसरे से घुल मिल गये थे. माल के महकमे के दफ़्तर में इसका दस्तावेज़ी सबूत मौजूद है कि ईद के साथ दीवाली भी धूम धाम से मनाई जाती थी. ऐसी और भी मिसालें हैं. बाहरी हमला होता या रियासत में बग़ावत होती तो बिना मज़हबी फ़रक़ या किसी दूसरे फ़रक़ के मिला जुला मोरचा क़ायम किया जाता था. हैदराबाद से जब मरहटों की लड़ाई छिड़ी तो हैदराबादी फ़ौजों के कमान्डर मरहटे ही थे. हैदराबादी चाहे वह हिन्दू हों या मुसलमान, ईसाई हों या पारसी, आन्ध्र के रहने वाले हों या महाराष्ट्र या करनाटक के, किसी को भी फ़िरक़े वारियत की छूत नहीं लगी थी. अलग अलग मज़हबों के मानने वाले, अलग अलग ज़बानें बोलने वाले, अलग अलग तहज़ीब के चाहने वाले, एक दूसरे से दूर रह कर भी क़रीब थे. इस अलगाव में भी एकता की शान थी. बेमेल होने में भी एक मेल था. तास्सुब नहीं था. पिछली पांच सदियों में न सिर्फ़ हिन्दुओं और मुसलमानों में बलिक करनाटक, आन्ध्र और महाराष्ट्र में मेल और ख़लूस था. शादी ग़मी की रसमों और दूसरी रसमों में फ़रक़ भी था और मेल भी. रहने सहने के तरीक़े, सोचने विचारने के ढंग पर फ़िरक़ों ने कुछ असर डाला और उन्हीं अलग अलग बातों ने इकट्ठा होकर हमारी राजकाजी, माली और समाजी ज़िन्दगी में एक नई स्प्रिट पैदा कर दी और हैदराबाद और उसके रिवाजों को संवारा. मैं यह नहीं कहता हूँ कि जिस समाज की तस्वीर मैंने खींची है उसमें कालिख बिलकुल नहीं है.

س پر سوچ وچار کریں اور ایمانداری سے اِس بات کی
ں کریں کہ ملک کا کوئی طبقہ یہ محسوس نہ کرنے
ہ اُس کے ساتھ انصاف نہیں ہوا ۔

حیدرآباد میں نہ صرف ہندوؤں اور مسلمانوں کے
تعلق اچھے تھے بلکہ بیتے دنوں میں سرکار بھی بے
ہ تعصب اور غیر جانب‌دار تھی ۔ پچھلے دس بیس
کو چھوڑ کر حیدرآباد کی حکومت ایسی ہی قومی
ہرسمپردائی تھی جیسی کہ میسور کی سرکار ۔
ی کا یہ زمانہ سچے معنوں میں اُس سمے سے ختم
جب مہاراجہ کشن پرشاد بہادر ریاست کے پردھان
ی کے عہدے سے الگ ہوگئے' جب نظامت جنگ'
رلی دھر' عقیل جنگ اور وینکٹ راما ریڈی جیسے
لوگ پنشن لینے یا مرجانے کے کارن سرکاری
داریوں سے علحدہ ہوگئے ۔ تاریخ گواہ ہے کہ پانچ سو
کی لمبی مدت میں فرقہ وارانہ میل ملاپ اتنا مضبوط
ہ ہندو اور مسلمان پردھان منتریوں کی تعداد لگ
ا برابر تھی ۔ ہندو اور مسلمان جاگیرداروں اور والیان
تان کو جاگیریں دی گئیں' مندروں اور مسجدوں
قدی اور زمین دونوں شکلوں میں انعام دیا گیا ۔
جی زندگی میں مسلمان اور ہندو ایک دوسرے سے
مل گئے تھے ۔ مال کے محکمے کے دفتر میں
کا دستاویزی ثبوت موجود ہے کہ عید کے ساتھ
ی بھی دھوم دھام سے منائی جاتی تھی ۔ ایسی اور
مثالیں ہیں ۔ باہری حملہ ہوتا یا ریاست میں
ت ہوتی تو بنا مذہبی فرق یا کسی دوسرے فرق کے
جلا مورچہ قائم کیا جاتا تھا ۔ حیدرآباد سے جب
ٹوں کی لڑائی چھڑی تو حیدرآبادی فوجوں کے کمانڈر
ٹے ہی تھے ۔ حیدرآبادی چاہے وہ ہندو ہوں یا مسلمان'
ائی ہوں یا پارسی' آندھر کے رہنے والے ہوں یا
راشٹر یا کرناٹک کے' کسی کو بھی فرقہ واریت کی چھوت
ں لگی تھی ۔ الگ الگ مذہبوں کے ماننے والے' الگ
ہ زبانیں بولنے والے' الگ الگ تہذیب کے چاہنے
' ایک دوسرے سے دور رہ کر بھی قریب تھے ۔ اِس
ں میں بھی ایکتا کی ایک شان تھی ۔ بے میل ہونے
ں بھی ایک میل تھا ۔ تعصب نہیں تھا ۔ پچھلی
ج صدیوں میں نہ صرف ہندوؤں اور مسلمانوں میں
ہ کرناٹک' آندھر اور مہاراشٹر میں میل اور خلوص
۔ شادی غمی کی رسموں اور دوسری رسموں میں
ق بھی تھا اور میل بھی ۔ رہنے سہنے کے طریقے' سوچنے
ارنے کے ڈھنگ پر فرقوں نے کچھ اثر ڈالا اور انہیں الگ
ب باتوں نے اکٹھا ہوکر ہماری راج‌کاجی' مالی اور سماجی
ی میں ایک نئی اسپرٹ پیدا کردی اور حیدرآباد اور اُسکے
جوں کو سنوارا ۔ میں یہ نہیں کہتا ہوں کہ جس سماج کی
ویر میں نے کھینچی ہے اُس میں کالکھ بالکل نہیں ہے ۔

(5) भारत और चीन के बौद्ध भिक्षुओं में दोस्ती का सम्बन्ध क़ायम हुआ जो भारत और चीन की अटूट दोस्ती का निशान था. चीनी भिक्षु चीन लौट कर वहाँ से भारती भिक्षुओं से पत्र व्योहार के ज़रिये अपनी दोस्ती क़ायम रखते थे. व्हेन-सांग ने चीन से भारती भिक्षुओं के नाम जो ख़त लिखे थे वह आज भी चीनी रैकार्डर्स में रक्खे हुए हैं.

(6) व्हेन-सांग जैसे चीनी भिक्षुओं के असर से भारत और चीन के शासकों ने आपस में राजनैतिक रिश्ता क़ायम किया. सम्राट हर्श ने अपना एक राज दूत चीनी सम्राट के दरबार में भेजा था और चीनी सम्राट ने बदले में अपना एक दूत हर्श के दरबार में भेजा था. इसी तरह समय समय पर भारत और चीन के बीच राजदूतों का आना जाना जारी रहा.

(7) चीनी भिक्षुओं में से कई ने अपने समय के भारत के राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक जीवन का हाल तफ़सील से लिख छोड़ा है. भारत का प्राचीन इतिहास लिखने में इन बयानों से बहुत मदद मिली है. भारती इतिहासकार इन चीनी बयानों को प्राचीन भारती इतिहास का सबसे बड़ा ज़रिया मानते हैं. अगर यह भिक्षु ऐसी किताबें न लिख जाते तो प्राचीन भारत का इतिहास लिखना मुशकिल ही नहीं नामुमकिन हो जाता.

भारत में चीनी भिक्षुओं के आने के यह कुछ ख़ास नतीजे हुए. पर इन चीनी यात्रियों की हिम्मत, बलिदान और बेलगाव त्याग का सब से महत्वपूर्न नतीजा यह हुआ कि भारत और चीन के बीच एक गहरा और टिकाऊ कलचरी सम्बन्ध क़ायम हुआ जिसके निशान आज भी क़ायम हैं.

(5) بھارت اور چین کے بودھ بھکشوؤں میں دوستی کا سمبندھ قائم ہوا جو بھارت اور چین کی اٹوٹ دوستی کا نشان تھا. چینی بھکشو چین لوٹ کر وہیں سے بھارتی بھکشوؤں سے پتر بیوہار کے ذریعے اپنی دوستی قائم رکھتے تھے. وھین سانگ نے چین سے بھارتی بھکشوؤں کے نام جو خط لکھے تھے وہ آج بھی چینی ریکارڈس میں رکھے ہوئے ہیں.

(6) وھین سانگ جیسے چینی بھکشوؤں کے اثر سے بھارت اور چین کے شاسکوں نے آپس میں راج نیتک رشتہ قائم کیا. سمراٹ ہرش نے اپنا ایک راج دوت چینی سمراٹ کے دربار میں بھیجا تھا اور چینی سمراٹ نے بدلے میں اپنا ایک دوت ہرش کے دربار میں بھیجا تھا. اسی طرح سمے سمے پر بھارت اور چین کے راج دوتوں کا آنا جانا جاری رہا.

(7) چینی بھکشوؤں میں سے کئی نے اپنے سمے کے بھارت کے راج نیتک، دھارمک اور ساماجک جیون کا حال تفصیل سے لکھ چھوڑا ہے. بھارت کا پراچین اتہاس لکھنے میں ان بیانوں سے بہت مدد ملی ہے. بھارتی اتہاس کار ان چینی بیانوں کو پراچین بھارتی اتہاس کا سب سے بڑا ذریعہ مانتے ہیں. اگر یہ بھکشو ایسی کتابیں نہ لکھ جاتے تو پراچین بھارت کا اتہاس لکھنا مشکل ہی نہیں ناممکن ہوجاتا.

بھارت میں چینی بھکشوؤں کے آنے کے یہ کچھ خاص نتیجے ہوئے. پر ان چینی یاتریوں کی ہمت، بلیدان اور بے لاگ تیاگ کا سب سے مہتو پورن نتیجہ یہ ہوا کہ بھارت اور چین کے بیچ ایک گہرا اور ٹکاؤ کلچری سمبندھ قائم ہوا، جس کے نشان آج بھی قائم ہیں.

हैदराबाद के मुसलमान

(मीर अकबर अली ख़ां, बैरिस्टर, हैदराबाद)

[15 अगस्त सन '51 आज़ादी के दिन यह लेख हैदराबाद के अख़बारों 'सियासत' और 'दकन क्रानिकल' में निकला था. इसके ख़ास ख़ास हिस्से आसान बोली में हम नीचे दे रहे हैं —एडीटर]

राजकाजी और माली मसलों को हल करते वक़्त हमें इसकी कोशिश करनी चाहिये कि मज़हब की बुनियाद पर इनसानों की गिन्ती करना छोड़ दें. इस पहलू को जितनी अहमियत दी जाय हालत उतनी ही बिगड़ जायगी. लोकशाही का मक़सद यही है कि हम जिस मसले से दो चार

حیدرآباد کے مسلمان

(میر اکبر علی خاں، بیرسٹر، حیدرآباد)

[15 اگست سن '51 آزادی کے دن یہ لیکھ حیدرآباد کے اخباروں 'سیاست' اور 'دکن کرانیکل' میں نکلا تھا. اس کے خاص خاص حصے آسان بولی میں ہم نیچے دے رہے ہیں — ایڈیٹر]

راج کاجی اور مالی مسئلوں کو حل کرتے وقت ہمیں اس کی کوشش کرنی چاہئے کہ مذہب کی بنیاد پر انسانوں کی گنتی کرنا چھوڑ دیں. اس پہلو کو جتنی اہمیت دی جائے حالت اتنی ہی بگڑ جائے گی. لوک شاہی کا مقصد یہی ہے کہ ہم جس مسئلے سے دو چار

पड़ा है. वह हीनयान बौद्धों के सरवस्तिवाद पन्थ की किताब है. इसे मशहूर भारती भिक्षु वासुबन्धु ने लिखा था. व्हेन-सांग ने इसका चीनी भाषा में अनुवाद किया और इसी के नाम से "कोश" पन्थ क़ायम किया.

सन 664 ईसवी में व्हेन-सांग इस संसार से चल बसा.

व्हेन-सांग की मृत्यु के बाद उसकी मूरतियां बना कर बौद्ध मन्दिरों में क़ायम की गईं. बहुत से लोग बुद्ध की मूरती के साथ व्हेन-सांग की मूरती की भी पूजा करते हैं. इन मूरतियों में व्हेन-सांग भिक्षु का बाना पहने, टोपी लगाए, दाहिना हाथ ऊपर उठाए और बाएं हाथ में भिक्षा का बरतन लिये हुए दिखाया गया है.

इ-छिंग

सन 671 ईसवी में इ-छिंग चीन से भारत के लिये रवाना हुआ. उसके साथ कई और भिक्षु आने वाले थे पर चलते समय उन सबने इ-छिंग का साथ छोड़ दिया. इ-छिंग समन्दरी रास्ते से अकेले भारत के लिये चल पड़ा. रास्ते में वह सुमात्रा में कुछ साल ठहरा. यहां वह बौद्धों की ज़िन्दगी, उनके रहन सहन के तरीक़ों और उनके मज़हबी तौर तरीक़ों को समझने की कोशिश करता रहा. बाद में इसके बारे में उसने एक किताब लिख डाली.

भारत आकर वह बौद्ध धर्म की सभी मशहूर पवित्र जगहों को देखने गया. फिर वह नालन्द विश्वविद्यालय में दस साल ठहरा. यहां उसने बहुत सी किताबों की नक़ल की.

सन 695 ईसवी में वह चीन लौट गया. अपने साथ वह बौद्ध धर्म की 400 किताबें ले गया. चीन में उसने मूल सरवस्तिवाद की एक किताब का अनुवाद किया और एक संस्कृत चीनी शब्द कोश तैयार किया.

फ़ाहयान, शुंग युन, व्हेन-सांग और इ-छिंग के अलावा बहुत से और भी चीनी भिक्षु चीन से भारत आए. इनके भारत आने के सात ख़ास नतीजे हुए—

(1) चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार बढ़ा और बौद्ध मठों का संगठन भारती तरीक़े से हुआ.

(2) चीन में भारती साहित्य काफ़ी तादाद में पहुंचा और उसका चीनी अनुवाद किया गया.

(3) चीन में भारती कला को काफ़ी रिवाज दिया गया.

(4) भारत में चीनी भिक्षुओं के बरसों रहने से चीनियों को भारती ज़िन्दगी का अनुभव हुआ और भारतियों को चीनियों के रहन सहन का पता लगा और दोनों ने एक दूसरे की अच्छी बातों को अपनाने की कोशिश की.

. یہ ھینیان بودھوں کے سروستی واد پنتھ کی
ھے . اِسے مشہور بھارتی بھکشو واسو بندھو نے لکھا
ھین سانگ نے اس کا چینی بھاشا میں انوواد
اِسی کے نام سے "کوش" پنتھ قائم کیا .

ن 664 عیسوی میں وھین سانگ اس سنسار سے
سا .

ھین سانگ کی مرتیو کے بعد اُس کی مورتیاں
بودھ مندروں میں قائم کی گئیں . بہت سے لوگ
ی مورتی کے ساتھ وھین سانگ کی مورتی کی پوجا
کرتے ھیں . ان مورتیوں میں وھین سانگ بھکشو
پہنے' ٹوپی لگائے' داھنا ھاتھ اوپر اُٹھائے اور بائیں
میں بھکشا کا برتن لئے ھوئے دکھایا گیا ھے .

چھنگ

ن 671 عیسوی میں ای چھنگ چین سے بھارت
روانہ ھوا . اُس کے ساتھ کئی اور بھکشو آنے والے
چلتے سمے اُن سب نے ای چھنگ کا ساتھ چھوڑ
ی چھنگ سمندری راستے سے اکیلے بھارت کے لئے
ا . راستے میں وہ سماترا میں کچھ سال ٹھہرا .
ہ بودھوں کی زندگی' اُن کے رھن سہن کے طریقوں
ر کے مذھبی طور طریقوں کو سمجھنے کی کوشش
ہا . بعد میں اِسکے بارے میں اُس نے ایک کتاب
الی .

ارت آکر وہ بودھ دھرم کی سبھی مشہور پوتر جگہوں
کھنے گیا . پھر وہ نالند وشو ودیالے میں دس سال
. یہاں اُس نے بہت سی کتابوں کی نقل کی .

ن 695 عیسوی میں وہ چین لوٹ گیا . اپنے ساتھ
دھ دھرم کی 400 کتابیں لے گیا . چین میں اُس
ل سروستی واد کی ایک کتاب کا انوواد کیا اور ایک
رت چینی شبد کوش تیار کیا .

ھیان' شنگ یُن' وھین سانگ اور ای چھنگ کے
ہت سے اور بھی چینی بھکشو چین سے بھارت آئے .
بھارت آنے کے سات خاص نتیجے ھوئے —

1) چین میں بودھ دھرم کا پرچار بڑھا اور بودھ
ں کا سنگٹھن بھارتی طریقے سے ھوا .

2) چین میں بھارتی ساھتیہ کافی تعداد میں
ا اور اُس کا چینی انوواد کیا گیا .

3) چین میں بھارتی کلا کو کافی رواج دیا گیا .

4) بھارت میں چینی بھکشوؤں کے برسوں رھنے
ینیوں کو بھارتی زندگی کا انوبھو ھوا اور بھارتیوں کو
وں کے رھن سہن کا پتہ لگا اور دونوں نے ایک دوسرے
ھی باتوں کو اپنانے کی کوشش کی .

त्रा का ज़िक्र किया और बिना इजाज़त भारत चले आने
। माफ़ी मांगी. सम्राट ने ह्वेन-सांग को माफ़ कर दिया
ोर उसे राजधानी आने की दावत दी. ह्वेन-सांग ने भारत
चीन की इज़्ज़त और चीन का मान बढ़ाया था. इसलिये
ब ह्वेन-सांग राजधानी में पहुंचा तो राजधानी की सारी
नता उसके स्वागत के लिये उमड़ पड़ी. "चीन के इतिहास
किसी भी बौद्ध भिक्षु का इतना शानदार स्वागत नहीं किया
ा था जितना इस तीर्थ यात्री का. उस दिन सम्राट ने, उनके
बार ने, सरकारी नौकरों ने, सौदागरों ने और आम
ाता ने छुट्टी मनाई. सड़कों पर मर्दों और औरतों की
ड़ लग गई. यह लोग झंडे दिखा कर और नाच गाकर
ानी ख़ुशी ज़ाहिर कर रहे थे. क़ुदरत ने भी उस दिन
न-सांग का दिल से इस्तक़बाल किया. आसमान बिलकुल
फ़ था. बादल और पानी के कोई आसार नहीं थे.
समान से ख़ुशी झलक रही थी. ह्वेन-सांग का पुराना चीड़
पेड़ भी झूम झूम कर ख़ुशी मना रहा था. जब से ह्वेन-
ा भारत के लिये चला तभी से वह पच्छिम की ओर झुका
ा था. जब वह भारत से चीन के लिये रवाना हुआ
से वह पेड़ अपने मालिक के घर लौटने की सूचना देने
लिये पूरब की ओर झुक गया, और उसी तरह झुका
जब तक ह्वेन-सांग चांग-गान वापस नहीं पहुंच गया."
यान युआन-च्वांग"—लेखक वाटर्स, सफ़ा—11).

सम्राट ने ह्वेन-सांग को बहुत दिनों तक अपने महल में
। और एक अलग कमरे में बैठ कर वह ह्वेन-सांग से
त का हाल घंटों सुना करता था.

ह्वेन-सांग भारत से अपने साथ महायान बौद्ध धर्म
124 किताबें और 520 दूसरी किताबें बाईस घोड़ों पर
कर चीन ले आया था. ह्वेन-सांग के कहने पर सम्राट
न तमाम किताबों के अनुवाद के लिये विद्वानों की एक
ी नियोजित कर दी थी.

सम्राट के कहने पर ह्वेन-सांग ने अपनी यात्रा का
एक किताब में लिख डाला. इस किताब को "सि-यू-
यानी "पच्छिमी देसों का हाल" कहते हैं. इसे ह्वेन-
ने सन 646 ईसवी में सम्राट को पेश किया था. चीन,
या और जापान में यह बौद्ध धर्म की एक पवित्र
ब मानी जाती है. भारत के इतिहासकारों को भारत
ाचीन इतिहास लिखने में इस किताब से बहुत मदद
ी है. प्राचीन भारत का जितना सच्चा और यक़ीन
लायक़ बयान इस किताब में मिलता है उतना और
ी में नहीं.

चीन में ह्वेन-सांग ने बौद्ध धर्म का एक पन्थ क़ायम
जिसे "किउ-शे" यानी "कोश" पन्थ कहते हैं. इस
का नाम बौद्ध धर्म की किताब "अभिधर्म कोश" से

یاترا کا ذکر کیا اور بلا اجازت بھارت چلے جانے
کی معافی مانگی۔ سمراٹ نے ہیون سانگ کو معاف
کر دیا اور اسے راجدھانی آنے کی دعوت دی۔ ہیون سانگ
نے بھارت میں چین کی عزت اور چین کا مان بڑھایا
تھا۔ اس لئے جب ہیون سانگ راجدھانی میں پہونچا
تو راجدھانی کی ساری جنتا اس کے سواگت کے لئے امڑ
پڑی۔ "چین کے اتہاس میں کسی بھی بودھ بھکشو کا
اتنا شاندار سواگت نہیں کیا گیا تھا جتنا اس تیرتھ یاتری
کا۔ اس دن سمراٹ نے، ان کے دربار نے، سرکاری نوکروں نے،
سوداگروں نے اور عام جنتا نے چھٹی منائی۔ سڑکوں پر
مردوں اور عورتوں کی بھیڑ لگ گئی، یہ لوگ جھنڈے
دکھا کر اور ناچ گا کر اپنی خوشی ظاہر کر رہے تھے۔
قدرت نے بھی اس دن ہیون سانگ کا دل سے استقبال
کیا۔ آسمان بالکل صاف تھا۔ بادل اور پانی کے کوئی آثار
نہیں تھے، آسمان سے خوشی جھلک رہی تھی۔ ہیون
سانگ کا پرانا چیڑ کا پیڑ بھی جھوم جھوم کر خوشی منا
رہا تھا۔ جب سے ہیون سانگ بھارت کے لئے چلا تبھی
سے وہ پچھم کی اور جھکا ہوا تھا۔ جب وہ بھارت سے چین
کے لئے روانہ ہوا تب سے وہ پیڑ اپنے مالک کے گھر لوٹنے کی
سوچنا دینے کے لئے پورب کی اور جھک گیا، اور اسی طرح
جھکا رہا جب تک ہیون سانگ چانگ گان واپس نہیں
پہنچ گیا۔" ("آن یوان چوانگ"—لیکھک—واٹرس،
صفحہ—11)۔

سمراٹ نے ہیون سانگ کو بہت دنوں تک اپنے محل
میں رکھا اور ایک الگ کمرے میں بیٹھ کر ہیون سانگ
سے بھارت کا حال گھنٹوں سنا کرتا تھا۔

ہیون سانگ بھارت سے اپنے ساتھ مہایان بودھ دھرم
کی 124 کتابیں اور 520 دوسری کتابیں بائیس گھوڑوں
پر لاد کر چین لے آیا تھا۔ ہیون سانگ کے کہنے پر سمراٹ
نے ان تمام کتابوں کے انوواد کے لئے ودوانوں کی ایک
کمیٹی نیوجت کر دی تھی۔

سمراٹ کے کہنے پر ہیون سانگ نے اپنی یاترا کا حال
ایک کتاب میں لکھ ڈالا۔ اس کتاب کو "سی یو کی"
یعنی "پچھمی دیسوں کا حال" کہتے ہیں۔ اسے ہیون
سانگ نے سن 646 عیسوی میں سمراٹ کو پیش کیا
تھا۔ چین، کوریا اور جاپان میں یہ بودھ دھرم کی ایک پوتر
کتاب مانی جاتی ہے۔ بھارت کے اتہاس کاروں کو بھارت
کا پراچین اتہاس لکھنے میں اس کتاب سے بہت مدد ملی
ہے۔ پراچین بھارت کا جتنا سچا اور یقین کرنے لائق
بیان اس کتاب میں ملتا ہے اتنا اور کسی میں نہیں۔

چین میں ہیون سانگ نے بودھ دھرم کا ایک پنتھ
قائم کیا جسے "کیو شے" یعنی "کوش" پنتھ کہتے ہیں۔
اس پنتھ کا نام بودھ دھرم کی کتاب "ابھیدھرم کوش" سے

धर्म के अनेक पन्थ क़ायम हो गए थे जो आपस में लड़ा करते थे. इस लिये उसने यह तय किया कि वह भारत जाकर बौद्ध धर्म और बौद्ध दरशन का अध्ययन करेगा और वहां से बौद्ध किताबें लाकर उनका चीनी अनुवाद करेगा.

सन् 629 ईसवी में व्हेन-सांग चीन की राज धानी चांग-गान से भारत के लिये रवाना हुआ. उसने भारत जाने के लिये चीन के सम्राट से इजाज़त नहीं ली. बीच एशिया के रास्ते होकर वह भारत आया.

भारत में व्हेन-सांग सोलह साल ठहरा. इस अरसे में वह भारत की सभी मशहूर जगहों को देखने गया. उसने भारत के पवित्र बौद्ध स्थानों की भी यात्रा की और वहां जाकर अपनी श्रद्धान्जलि अरपित की. नालन्द विश्वविद्यालय में वह पांच साल ठहरा. यहां वह मशहूर बौद्ध शिक्षक आचार्य शीलभद्र के साथ बौद्ध धर्म की किताबों का अध्ययन करता रहा और उसने उनसे बौद्ध दरशन की तालीम हासिल की.

भारत के राजाओं से भी व्हेन-सांग ने गहरी दोस्ती पैदा कर ली थी. जिस समय वह भारत आया था, सम्राट हर्श भारत में राज कर रहा था. हर्श बौद्ध धर्म का मानने वाला था. इसके अलावा वह महायान पन्थ का समर्थक था. व्हेन-सांग भी महायानी था, इसलिये हर्श ने उसे अपने दरबार में रख लिया और उसकी बड़ी आवभगत की. व्हेन-सांग अपनी विद्वता के लिये भारत में भी बहुत जल्द मशहूर हो गया. सम्राट हर्श उसकी विद्वता से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने व्हेन-सांग की बौद्ध दरशन की व्याख्या सुनने के लिये क़न्नौज में एक विशाल धार्मिक सभा का आयोजन किया जिसमें सारे हिन्दुस्तान से बौद्ध भिक्षु और प्रचारक बुलाए गए. इसके अलावा, सभी राजाओं को इस सभा में शामिल होने की दावत दी गई. आसाम के राजा भास्कर-बरमन जो सम्राट हर्श के गहरे दोस्त थे, इस सभा में शामिल हुए थे. यह सभा कई दिन चलती रही. व्हेन-सांग की धर्म व्याख्या से सारी सभा पर बहुत गहरा असर पड़ा और व्हेन-सांग सारे भारत में मशहूर हो गया. इसी सभा में कुछ ब्राह्मनों ने सम्राट हर्श की हत्या करने की कोशिश की थी और उस कमरे में आग लगा दी थी जहां भगवान बुद्ध की सोने की मूर्ति रखी हुई थी.

व्हेन-सांग सन 645 ईसवी में चीन वापस गया. सम्राट हर्श ने बहुत से उपहार के साथ उसे अपने दूतों की देख रेख में भारत की सरहद तक पहुंचा दिया. वहां से फिर वह चीन चला गया.

चीन में व्हेन-सांग का शाही स्वागत किया गया. जब वह चीन के रास्ते में था तभी उसने सम्राट के नाम एक प्रार्थना पत्र लिख कर भेजा जिसमें उसने अपनी भारत

دھرم کے انیک پنتھ قائم ہوگئے تھے جو آپس میں لڑا کرتے تھے ۔ اس لئے اِس نے یہ طے کیا کہ وہ بھارت جاکر بودھ دھرم اور بودھ درشن کا ادھین کرے گا اور وہاں سے بودھ کتابیں لاکر اُن کا چینی انوواد کریگا ۔

سن 629 عیسوی میں وھین سانگ چین کی راجدھانی چانگ گان سے بھارت کے لئے روانہ ہوا ۔ اُس نے بھارت جانے کے لئے چین کے سمراٹ سے اجازت نہیں لی ۔ بیچ ایشیا کے راستے ہو کر وہ بھارت آیا ۔

بھارت میں وھین سانگ سولہ سال ٹھہرا ۔ اِس عرصے میں وہ بھارت کی سبھی مشہور جگہوں کو دیکھنے گیا ۔ اُس نے بھارت کے پوتر بودھ استھانوں کی بھی یاترا کی اور وہاں جاکر اپنی شردھانجلی ارپت کی ۔ نالند وشوودیالیہ میں وہ پانچ سال ٹھہرا ۔ یہاں وہ مشہور بودھ شکشک آچاریہ شیل بھدر کے ساتھ بودھ دھرم کی کتابوں کا ادھین کرتا رہا اور اُس نے ان سے بودھ درشن کی تعلیم حاصل کی ۔

بھارت کے راجاؤں سے بھی وھین سانگ نے گہری دوستی پیدا کر لی تھی ۔ جس سمے وہ بھارت آیا تھا، سمراٹ ہرش بھارت میں راج کر رہا تھا ۔ ہرش بودھ دھرم کا ماننے والا تھا ۔ اس کے علاوہ وہ مہایان پنتھ کا سمرتھک تھا ۔ وھین سانگ بھی مہایانی تھا، اس لئے ہرش نے اسے اپنے دربار میں رکھ لیا اور اس کی بڑی آؤ بھگت کی ۔ وھین سانگ اپنی ودوتا کے لئے بھارت میں بھی بہت جلد مشہور ہوگیا ۔ سمراٹ ہرش اس کی ودوتا سے اتنے پربھاوت ہوئے کہ اُنہوں نے وھین سانگ کی بودھ درشن کی ویاکھیا سننے کے لئے قنوج میں ایک وشال دھارمک سبھا کا آیوجن کیا جس میں سارے ہندستان سے بودھ بھکشو اور پرچارک بلائے گئے ۔ اِس کے علاوہ، سبھی راجاؤں کو اِس سبھا میں شامل ہونے کی دعوت دی گئی ۔ آسام کے راجا بھاسکر ورمن جو سمراٹ ہرش کے گہرے دوست تھے، اس سبھا میں شامل ہوئے تھے ۔ یہ سبھا کئی دن چلتی رہی ۔ وھین سانگ کی دھرم ویاکھیا سے ساری سبھا پر بہت گہرا اثر پڑا اور وھین سانگ سارے بھارت میں مشہور ہوگیا ۔ اسی سبھا میں کچھ براہمنوں نے سمراٹ ہرش کی ہتیا کرنے کی کوشش کی تھی اور اُس کمرے میں آگ لگا دی تھی جہاں بھگوان بدھ کی سونے کی مورتی رکھی ہوئی تھی ۔

وھین سانگ سن 645 عیسوی میں چین واپس گیا ۔ سمراٹ ہرش نے بہت سے اُپہار کے ساتھ اُسے اپنے دوتوں کی دیکھ ریکھ میں بھارت کی سرحد تک پہونچا دیا ۔ وہاں سے پھر وہ چین چلا گیا ۔

چین میں وھین سانگ کا شاہی سواگت کیا گیا ۔ جب وہ چین کے راستے میں تھا تبھی اُس نے سمراٹ کے نام ایک پرارتھنا پتر لکھ کر بھیجا جس میں اُس نے اپنی بھارت

शुंग-युन बीच एशिया होकर भारत आया. भारत के उत्तर पश्चिम के सरहदी राज उदयन के राजा के नाम वह चीन की मलका का ख़त ले आया था. उसने वह ख़त उदयन के राजा को दिया. राजा साहब ने उस ख़त को बड़े आदर से स्वीकार किया और उसे पढ़वा कर सुना. जब राजा साहब को यह मालूम हुआ कि चीन की मलका बौद्ध धर्म की मानने वाली हैं तो उन्होंने फ़ौरन पूरब की ओर (चीन की ओर) मुँह करके, हाथ जोड़ कर और ध्यान मग्न होकर अपना सिर झुका लिया. फिर उन्होंने शुंग-युन की बड़ी ख़ातिर की और चीन के बारे में तरह तरह के सवाल किये. चीन के बौद्ध धर्म के बारे में उन्होंने ख़ास दिलचस्पी ली. चीन के बारे में शुंग-युन की बातें सुनकर राजा साहब बोले—

"आपने जो कुछ बताया अगर वह सब सच है तो आपका देस सचमुच भगवान बुद्ध का देस है. मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि इस जीवन के बाद मैं आपके देस में ही जन्म लूँ." ("बुधिस्ट रेकार्ड्स आफ़ दी वेस्टर्न वर्ल्ड" —बील, सफ़ा—94)

उदयन में कई साल रह कर शुंग-युन बौद्ध धर्म की किताबें इकट्ठा करता रहा, फिर वह गान्धार गया. वहां भी उसने बहुत सी किताबें हासिल कीं. फिर सन 522 ईसवी में वह गान्धार से चीन वापस चला गया. वह अपने साथ बौद्ध धर्म की 170 किताबें चीन ले गया.

ह्वेन सांग

जितने चीनी यात्री भारत आए उनमें ह्वेन-सांग सबसे ज़ियादा विद्वान था, उसने सबसे ज़ियादा शोहरत हासिल की और भारतियों के साथ सबसे ज़ियादा मेल जोल पैदा किया.

ह्वेन-सांग सन 603 ईसवी में पैदा हुआ. उसके घर में सभी कंग फ़ूत्ज़े धर्म के मानने वाले थे. इसलिये शुरू शुरू में वह कंग फ़ूत्ज़ धर्म की ही किताबों का अध्ययन करता रहा. फिर जब वह तेरह साल का हुआ तो उसका बड़ा भाई बौद्ध भिक्षु हो गया. अपने भाई के साथ साथ ह्वेन-सांग भी बौद्ध धर्म का अनुयायी हो गया और उसने बौद्ध साहित्य की पढ़ाई शुरू की. बचपन से ही वह बड़ा होनहार और तेज़ था. याद करने की ताक़त भी उसमें और लोगों से ज़ियादा थी. उसने बौद्ध दरशन का इतना गहरा अध्ययन किया कि बहुत जल्दी सारे चीन में वह अपनी विद्वता के लिये मशहूर हो गया. चीन के दूर दूर हिस्सों से बौद्ध भिक्षु उसके पास तालीम हासिल करने आने लगे.

ह्वेन-सांग बौद्ध किताबों के चीनी अनुवाद से बहुत असंतुष्ट था. उसने यह भी देखा कि चीन में बौद्ध

شنگ یون بیچ ایشیا ہوکر بھارت آیا. بھارت کے اُتر پچھم کے سرحدی راج اُدین کے راجہ کے نام وہ چین کی ملکہ کا خط لے آیا تھا. اُس نے وہ خط اُدین کے راجہ کو دیا. راجہ صاحب نے اُس خط کو بڑے آدر سے سویکار کیا اور اُسے پڑھواکر سنا. جب راجہ صاحب کو یہ معلوم ہوا کہ چین کی ملکہ بودھ دھرم کی ماننے والی ہیں تو انہوں نے فوراً پورب کی اور (چین کی اور) منھ کرکے، ہاتھ جوڑ کر اور دھیان مگن ہوکر اپنا سر جھکا لیا. پھر انہوں نے شنگ یون کی بڑی خاطر کی اور چین کے بارے میں طرح طرح کے سوال کئے. چین کے بودھ دھرم کے بارے میں انہوں نے خاص دلچسپی لی. چین کے بارے میں شنگ یون کی باتیں سن کر راجہ صاحب بولے—

"آپ نے جو کچھ بتایا اگر وہ سب سچ ہے تو آپ کا دیس سچ مچ بھگوان بدھ کا دیس ہے. میں ایشور سے پرارتھنا کرتا ہوں کہ اس جیون کے بعد میں آپ کے دیس میں ہی جنم لوں." ("بدھسٹ ریکارڈس اف دی ویسٹرن ورلڈ"— بیل، صفحہ — 94)

اُدین میں کئی سال رہ کر شنگ یون بودھ دھرم کی کتابیں اکٹھا کرتا رہا. پھر وہ گاندھار گیا. وہاں بھی اُس نے بہت سی کتابیں حاصل کیں. پھر سن 522 عیسوی میں وہ گاندھار سے چین واپس چلا گیا. وہ اپنے ساتھ بودھ دھرم کی 170 کتابیں چین لے گیا.

ہیون سانگ

جتنے چینی یاتری بھارت آئے اُن میں ہیون سانگ سب سے زیادہ ودوان تھا. اُس نے سب سے زیادہ شہرت حاصل کی اور بھارتیوں کے ساتھ سب سے زیادہ میل جول پیدا کیا.

ہیون سانگ سن 603 عیسوی میں پیدا ہوا. اُس کے گھر میں سبھی کنگ فوتزے دھرم کے ماننے والے تھے. اس لئے شروع شروع میں وہ کنگ فوتزے دھرم کی کتابوں کا ادھین کرتا رہا. پھر جب وہ تیرہ سال کا ہوا تو اُس کا بڑا بھائی بودھ بھکشو ہوگیا. اپنے بھائی کے ساتھ ساتھ ہیون سانگ بھی بودھ دھرم کا انویائی ہوگیا اور اُس نے بودھ ساہتیہ کی پڑھائی شروع کی. بچپن سے ہی وہ بڑا ہونہار اور تیز تھا. یاد کرنے کی طاقت بھی اُس میں اور لوگوں سے زیادہ تھی. اُس نے بودھ درشن کا اتنا گہرا ادھین کیا کہ بہت جلدی سارے چین میں وہ اپنی ودوتا کے لئے مشہور ہوگیا. چین کے دور دور حصوں سے بودھ بھکشو اُس کے پاس تعلیم حاصل کرنے آنے لگے.

ہیون سانگ بودھ کتابوں کے چینی انواد سے بہت اسنتشٹ تھا. اُس نے یہ بھی دیکھا کہ چین میں بودھ

ाहाज़ पर यह श्रमन (बौद्ध भिक्षु) सवार है, इसलिये मारे ऊपर इतनी मुसीबतें आ पड़ी हैं. इस श्रमन को िसी पास के टापू पर उतार दिया जायगा जिससे इस क आदमी की वजह से तमाम दूसरे मुसाफ़िरों की जान ातरे में न पड़े.''

जब फ़ाहयान के धार्मिक गुरु धनपति ने ब्राह्मनों का ह इरादा सुना तो वह बहुत नाराज़ हुए. उन्होंने उन ाह्मनों से कहा—"अगर तुम इस भिक्षु को जहाज़ से तारोगे तो इस के साथ तुम्हें मुझे भी उतारना पड़ेगा. ागर तुम मुझे इसके साथ नहीं उतारना चाहते तो मुझे ार डालो क्योंकि अगर तुम इस श्रमन को जहाज़ से तार दोगे, तब मैं चीन पहुँच कर सीधा बादशाह के पास ाऊंगा और उनसे तुम्हारी शिकायत करूंगा. चीन का ादशाह बौद्ध धर्म का कट्टर मानने वाला है और वह भक्षुओं और पुजारियों का बहुत आदर करता है." यह ुनकर वह सब के सब बहुत घबराए और उन्होंने फ़ाहयान ा जहाज़ से उतार देने का इरादा बिलकुल छोड़ दिया.

मौसम अब भी ख़राब रहा. मुसाफ़िरों का राशन और ानी सब ख़तम हो चला. इसलिये मल्लाहों ने जहाज़ ो चीन के किनारे कहीं लगा दिया, जहां कोई बन्दरगाह था. यहीं फ़ाहयान उतर गया. पास के खेत और उड़ती ई चिड़ियों को देख कर वह समझ गया कि यह चीन ा ही देस है. यहां से वह उस ज़िले के हाकिम की मदद चीन की राजधानी चांग-गान चला गया.

पन्द्रह साल बाहर रह कर सन 414 ईसवी में फ़ाहयान पने चांग-गान के मठ में वापस आया.

फ़ाहयान ने अपनी भारत यात्रा का एक बयान लिखा जिसे "फ़ू-कुओ-की" यानी "भगवान बुद्ध के देस की हानी" कहते हैं. इस किताब में फ़ाहयान ने अपने समय भारत में जो कुछ देखा और सुना सब दर्ज किया है. ारत के इतिहासकारों को भारत का प्राचीन इतिहास ाखने में इस किताब से बहुत मदद मिली है.

फ़ाहयान की भारत यात्रा का बयान चीनी भिक्षुओं बड़े चाव से सुना और उससे उनके दिल पर बहुत असर ड़ा. फ़ाहयान की हिम्मत और निडरता से प्रभावित होकर ानेक बौद्ध भिक्षु चीन से भारत आए. सच तो यह है कि ाहयान ने ही चीनियों को भारत आने का रास्ता दिखाया ौर हिम्मत दिलाई.

शुंग-युन

शुंग-युन चीन का एक बौद्ध भिक्षु था. 517 ईसवी में चीन की मलका ने बौद्ध किताबें लाने के लिये उसे अपना दूत बनाकर भारत भेजा था.

جہاز پر یہ شرمن (بودھ بھکشو) سوار ہے' اس لئے ہمارے اوپر اتنی مصیبتیں آ پڑی ہیں. اس شرمن کو کسی پاس کے ٹاپو پر اُتار دیا جائیگا جس سے اِس ایک آدمی کی وجہ سے تمام دوسرے مسافروں کی جان خطرے میں نہ پڑے."

جب فاہیان کے دھارمک گرو دھن پتی نے براہمنوں کا یہ اِرادہ سنا تو وہ بہت ناراض ہوئے. اُنہوں نے اُن براہمنوں سے کہا — "اگر تم اِس بھکشو کو جہاز سے اُتاروگے تو اِس کے ساتھ تمہیں مجھے بھی اُتارنا پڑےگا. اگر تم مجھے اِس کے ساتھ نہیں اُتارنا چاہتے' تو مجھے مارڈالو کیونکہ اگر تم اِس شرمن کو جہاز سے اُتار دوگے' تب میں چین پہونچ کر سیدھا بادشاہ کے پاس جاؤں گا اور اُن سے تمہاری شکایت کروں گا. چین کا بادشاہ بودھ دھرم کا کٹر ماننے والا ہے اور وہ بھکشوؤں اور پجاریوں کا بہت آدر کرتا ہے." یہ سنکر وہ سب کے سب بہت گھبرائے اور اُنہوں نے فاہیان کو جہاز سے اُتار دینے کا اِرادہ بالکل چھوڑ دیا.

موسم ب بھی خراب رہا. مسافروں کا راشن اور پانی سب ختم ہوچلا. اِس لئے ملاحوں نے جہاز کو چین کے کنارے کہیں لگا دیا' جہاں کوئی بندرگاہ نہ تھا. یہیں فاہیان اُتر گیا. پاس کے کھیت اور اُڑتی ہوئی چڑیوں کو دیکھکر وہ سمجھ گیا کہ یہ چین کا ہی دیس ہے. یہاں سے وہ اُس ضلع کے حاکم کی مدد سے چین کی راجدھانی چانگ گان چلا گیا.

پندرہ سال باہر رہکر سن 414 عیسوی میں فاہیان اپنے چانگ گان کے مٹھ میں واپس آیا. فاہیان نے اپنی بھارت یاترا کا ایک بیان لکھا ہے جسے "فو.کواو.کی." یعنی "بھگوان بدھ کے دیس کی کہانی" کہتے ہیں. اِس کتاب میں فاہیان نے اپنے سمے میں بھارت میں جو کچھ دیکھا اور سنا سب درج کیا ہے. بھارت کے اِتہاس کاروں کو بھارت کا پراچین اِتہاس لکھنے میں اِس کتاب سے بہت مدد ملی ہے.

فاہیان کی بھارت یاترا کا بیان چینی بھکشوؤں نے بڑے چاؤ سے سنا اور اُس سے اُنکے دل پر بہت اثر پڑا. فاہیان کی ہمت اور نڈرتا سے پربھاوت ہوکر انیک بودھ بھکشو چین سے بھارت آئے. سچ تو یہ ہے کہ فاہیان نے ہی چینیوں کو بھارت آنے کا راستہ دکھایا اور ہمت دلائی.

شنگ ین

شنگ ین چین کا ایک بودھ بھکشو تھا. 517 عیسوی میں چین کی ملکہ نے بودھ کتابیں لانے کے لئے اُسے اپنا دوت بناکر بھارت بھیجا تھا.

ले आया था, लेकर वह चीन के लिये एक बहुत बड़े सौदागरी जहाज पर सवार हुआ.

फ़ाहयान को लंका से चीन की यात्रा बहुत ही खतरनाक साबित हुई. इस बार उसे जिन मुसीबतों का सामना करना पड़ा वह उसकी चीन भारत यात्रा से कहीं जियादा दुखदाई था.

जिस जहाज पर फ़ाहयान सवार हुआ, उसमें दो सौ मुसाफिर और मल्लाह थे. उस जहाज के साथ एक छोटा जहाज भी बंधा हुआ था जो खतरे के समय इस्तेमाल किया जा सकता था. लंका से जिस समय जहाज चला, मौसम बहुत अच्छा था और दो दिन तक जहाज आसानी से चलता रहा. तीसरे दिन बड़े जोरों का तूफ़ान आया और बड़े जहाज में एक सूराख हो गया. इसी के जरिये जहाज में पानी भरने लगा और अब डर हुआ कि कहीं जहाज डूब न जाए. छोटे जहाज के मल्लाह बड़े जहाज वालों को धोका देकर रस्सा तुड़ा कर अलग निकल गए जिससे बड़े जहाज के मल्लाह बड़ी परेशानी में पड़े. उन्होंने सौदागरों को आदेश दिया कि वह अपना सब सामान पानी में फेंक दें जिससे जहाज का बोझ हलका हो जाय. उन्होंने वैसा किया. फ़ाहयान ने अपनी पानी की सुराही और हाथ धोने का बरतन पानी में फेंक दिया. उसे डर लगा कि कहीं उसकी तमाम किताबें और मूरतियां भी पानी में न फेंक दी जायँ. इसलिये उसने भगवान अवलोकितेश्वर से प्रार्थना करना शुरू की—"हे भगवान! मैं बौद्ध साहित्य की खोज में दूर दूर देसों में घूमता फिरा. आप कृपा कर के अपनी रूहानी शक्ति से मुझे किसी सुरक्षित जगह पर ले चलिये." तेरह दिन तूफ़ान चलता रहा. फिर एक दिन जहाज एक टापू के किनारे लगा. यहां मल्लाहों ने जहाज को रोक कर उसके सूराख को बन्द कर लिया और अब जहाज़ किसी तरह जावा पहुंचा. जावा में फ़ाहयान ने दूसरा जहाज़ किया. इस जहाज़ पर भी दो सौ आदमी थे.

एक महीने सात दिन तक जहाज़ चलने के बाद समन्दर में जोरों का तूफ़ान आया और तूफ़ान के साथ पानी भी. आकाश में बादल घिर आए जिसकी वजह से दिशा का पता लगाना भी मुशकिल हो गया. जाहाज़ खतरे में पड़ गया. किस वक़्त डूब जाय कुछ ठीक नहीं. सौदागर और मल्लाह सभी बहुत परेशान थे. ऐसे समय फ़ाहयान ने भगवान अवलोकितेश्वर की प्रार्थना फिर शुरू कर दी. और इसी समय जहाज़ के ब्राह्मन मुसाफ़िरों ने एक सभा की जिसमें यह विचार किया गया कि जहाज़ पर जो मुसीबत आ पड़ी है, उसका कारन क्या है. बहुत सोच विचार और बहस के बाद यह तय पाया कि सारी मुसीबत की जड़ बौद्ध भिक्षु फ़ाहयान है. उन्होंने एलान किया—"चूंकि हमारे

یا تھا‘ لے کر وہ چین کے لئے ایک بہت بڑے سوداگری ز پر سوار ہوا.

فاھیان کی لنکا سے چین کی یاترا بہت ہی خطر ، ثابت ہوئی. اِس بار اُسے جن مصیبتوں کا سامنا پڑا وہ اُس کی چین بھارت یاترا سے کہیں زیادہ دائی تھی.

جس جہاز پر فاھیان سوار ہوا‘ اُس میں دو سو افر اور ملاح تھے. اُس جہاز کے ساتھ ایک چھوٹا جہاز بندھا ہوا تھا جو خطرے کے سمے استعمال کیا جا تا تھا. لنکا سے جس سمے جہاز چلا‘ موسم بہت اچھا اور دو دن تک جہاز آسانی سے چلتا رہا. تیسرے بڑے زوروں کا طوفان آیا اور بڑے جہاز میں ایک اخ ہوگیا. اِسی کے ذریعے جہاز میں پانی بھرنے لگا اب ڈر ہوا کہ کہیں جہاز ڈوب نہ جائے. چھوٹے جہاز ملاح بڑے جہاز والوں کو دھوکا دے کر رسا توڑا کر الگ ، گئے جس سے بڑے جہاز کے ملاح بڑی پریشانی میں ، . اُنھوں نے سوداگروں کو آدیش دیا کہ وہ اپنا سب مان پانی میں پھینک دیں جس سے جہاز کا بوجھ ہلکا جائے. اُنھوں نے ویسا کیا. فاھیان نے اپنی پانی کی حی اور ہاتھ دھونے کا برتن پانی میں پھینک دیا. ڈر لگا کہ کہیں اس کی تمام کتابیں اور مورتیاں بھی میں نہ پھینک دی جائیں. اِس لئے اُس نے وان اولوکتیشور سے پرارتھنا کرنا شروع کی —" ہے وان! میں بودھ ساھتیہ کی کھوج میں دور دور سوں میں گھومتا پھرا. آپ کرپا کر کے اپنی روحانی تی سے مجھے کسی سرکشت جگہ پر لے چلئے." تیرہ طوفان چلتا رہا. پھر ایک دن جہاز ایک ٹاپو کے ے لگا. یہاں ملاحوں نے جہاز کو روک کر اس کے اخ کو بند کر دیا اور اب جہاز کسی طرح جاوا پہونچا. ا میں فاھیان نے دوسرا جہاز کیا. اِس جہاز پر بھی سو آدمی تھے.

ایک مہینے سات دن تک جہاز چلنے کے بعد سمندر ں زوروں کا طوفان آیا اور طوفان کے ساتھ پانی بھی. ن میں بادل گھر آئے جس کی وجہ سے دشا کا پتہ لگانا ، مشکل ہوگیا. جہاز خطرے میں پڑ گیا. کس ت ڈوب جائے کچھ ٹھیک نہیں. سوداگر اور ملاح سبھی ت پریشان تھے. ایسے سمے فاھیان نے بھگوان اولوکتیشور پرارتھنا پھر شروع کر دی اور اِسی سمے جہاز کے براھمن افروں نے ایک سبھا کی جس میں یہ وچار کیا کہ جہاز پر جو مصیبت آ پڑی ہے‘ اس کا کارن ہے. بہت سوچ وچار اور بحث کے بعد یہ طے کہ ساری مصیبت کی جڑ بودھ بھکشو ان ہے. اُنھوں نے اعلان کیا —" چونکہ ہمارے

उन्होंने सोचा, यह वही जगह है जहां भगवान बुद्ध ने अपनी जिन्दगी के पच्चीस साल गुज़ारे थे. इस समय वह (फ़ाहयान और उसका साथी) अपनी जान ख़तरे में डाल कर बिदेसियों के बीच रह रहे हैं. उनके साथ जो भिक्षु उसी मक़सद से कई देसों से होते हुए भारत आ रहे थे, कुछ तो चीन वापस चले गए और कुछ रास्ते में ही मर गए. और अब उस जगह को देख कर जहां किसी समय भगवान बुद्ध रहा करते थे और अब वहां मौजूद नहीं थे, उनका दिल दर्द से भर आया. उनको इस तरह दुखी होते देख कर, उस मठ के भिक्षु उनके पास आए और उनसे पूछा—"आप लोग किस देस से आ रहे हैं ?"

उन्होंने जवाब दिया—"हम लोग हान देस (चीन) से आ रहे हैं."

यह सुनकर उन भिक्षुओं को बड़ा ताज्जुब हुआ और वह बोले—"कितने अचरज की बात है ! ज़रा सोचिये तो, बौद्ध धर्म की तालीम हासिल करने धरती की सरहद से इतनी दूर यह लोग आए हैं." और फिर आपस में बात करते हुए उन्होंने कहा—"हमारे पुरखे जो इसी जगह समय समय पर रह चुके हैं, उन्होंने हान देस के लोगों को इतनी दूर आते कभी नहीं देखा !" (फ़ू-कुओ-की, लेखक—फ़ाहयान, सफ़ा-45)

जेतवन मठ में फ़ाहयान को बड़े आदर के साथ ठहराया गया. कुछ दिन यहां रह कर फ़ाहयान दूसरी जगहों को देखने चला गया.

फ़ाहयान भारत में बौद्ध धर्म की किताबें इकट्ठा करना चाहता था इसलिये वह पाटली पुत्र गया. पाटली पुत्र में उसका भारत आने का मिशन पूरा हुआ. यहां से उसे 7000 गाथाओं की अर्वस्तिवाद पन्थ की एक किताब, 6000 गाथाओं की संयुक्त अभिधर्म हृदय शास्त्र की एक किताब, 2500 श्लोकों की निरवान सूत्र की एक किताब 5000 श्लोकों की वैपुल्य निरवान सूत्र की एक किताब और महा संघिका पन्थ के अभिधर्मशास्त्र की एक किताब मिली. यहीं उसने बहुत सी बौद्ध मूरतियां भी इकट्ठा कीं जिन्हें वह चीन ले गया. फ़ाहयान तीन साल पाटलीपुत्र में रहा. इस अरसे में उसने संस्कृत का अध्ययन किया और बहुत सी बौद्ध पुस्तकों को नक़ल किया.

पाटली पुत्र में अपना क़ाम पूरा कर के वह चीन के लिये रवाना हुआ. रास्ते में वह लंका में दो साल ठहरा. यहां उसे महीशासक पन्थ के विनय पिटक की एक किताब और दीर्घागम और संयुक्त गम की एक एक किताब मिली. यह किताबें पहली बार चीन लाई गई थीं. इन किताबों को, और उन मूरतियों और किताबों को, जो वह भारत से

انہوں نے سوچا، یہ وہی جگہ ہے جہاں بھگوان بدھ نے اپنی زندگی کے پچیس سال گذارے تھے. اس سمے وہ (فاہیان اور اس کا ساتھی) اپنی جان خطرے میں ڈال کر بدیسیوں کے بیچ رہ رہے ہیں. اُن کے ساتھ جو بھکشو اسی مقصد سے کئی دیسوں سے ہوتے ہوئے بھارت آرہے تھے، کچھ تو چین واپس چلے گئے اور کچھ راستے میں ہی مر گئے. اور اب اُس جگہ کو دیکھکر جہاں کسی سمے بھگوان بدھ رہا کرتے تھے اور اب وہاں موجود نہیں تھے، ان کا دل درد سے بھر آیا. اُن کو اِس طرح دکھی ہوتے دیکھکر، اُس مٹھ کے بھکشو اُن کے پاس آئے اور اُن سے پوچھا—"آپ لوگ کس دیس سے آرہے ہیں ؟"

اُنہوں نے جواب دیا —"ہم لوگ ہان دیس (چین) سے آرہے ہیں."

یہ سن کر اُن بھکشوؤں کو بڑا تعجب ہوا اور وہ بولے— "کتنے اچرج کی بات ہے ! ذرا سوچئے تو، بودھ دھرم کی تعلیم حاصل کرنے دھرتی کی سرحد سے اتنی دور یہ لوگ آئے ہیں." اور پھر آپس میں بات کرتے ہوئے انہوں نے کہا —"ہمارے پرکھے جو اِسی جگہ سمے سمے پر رہ چکے ہیں، اُنہوں نے ہان دیس کے لوگوں کو اتنی دور آتے کبھی نہیں دیکھا !" (فو۔ کواو۔ کی، لیکھک— فاہیان، صفحہ— 45)

جیتون مٹھ میں فاہیان کو بڑے آدر کے ساتھ ٹھہرایا گیا. کچھ دن یہاں رہ کر فاہیان دوسری جگہوں کو دیکھنے چلا گیا.

فاہیان بھارت میں بودھ دھرم کی کتابیں اِکٹھا کرنا چاہتا تھا اِس لئے وہ پاٹلی پتر گیا. پاٹلی پتر میں اس کا بھارت آنے کا مشن پورا ہوا. یہاں سے اُسے 7000 گاتھاؤں کی سروستی واد پنتھ کی ایک کتاب، 6000 گاتھاؤں کی سنیکت ابھیدھرم ہردے شاستر کی ایک کتاب 2500 شلوکوں کی نروان سوتر کی ایک کتاب، 5000 اشلوکوں کی ویپولیہ نروان سوتر کی ایک کتاب اور مہا سانگھکا پنتھ کے ابھیدھرم شاستر کی ایک کتاب ملی. یہیں اُس نے بہت سی بودھ مورتیاں بھی اکٹھا کیں جنہیں وہ چین لے گیا. فاہیان تین سال پاٹلی پتر میں رہا. اِس عرصے میں اُس نے سنسکرت کا ادھین کیا اور بہت سی بودھ پستکوں کو نقل کیا.

پاٹلی پتر میں اپنا کام پورا کرکے وہ چین کے لئے روانہ ہوا. راستے میں وہ لنکا میں دو سال ٹھہرا. یہاں اُسے مہی شاسک پنتھ کے ونے پٹک کی ایک کتاب اور دیرگھ گم اور سنیکت گم کی ایک ایک کتاب ملی. یہ کتابیں پہلی بار چین لائی گئی تھیں. اِن کتابوں کو، اور اُن مورتیوں اور کتابوں کو، جو وہ بھارت سے

फाह्यान अपने समय के चीनी बौद्ध साहित्य से बहुत असंतुष्ट था. भारत से अनेक बौद्ध किताबें आई थीं और उनका चीनी अनुवाद किया गया था पर वह सबके सब ग़लत थे, और उनमें बहुत नुक़्स था. इसके अलावा चीन में बौद्ध दरशन और बौद्ध धर्म के बारे में बहुत सी ग़लत धारनाएं पैदा हो गई थीं. बौद्ध किताबों को सही तरह से समझाने वाला भी चीन में उस समय कोई न था. इसलिये फ़ाह्यान ने यह तय किया कि वह भारत जाकर बौद्ध धर्म की किताबें इकट्ठा करेगा, उनका अनुवाद करेगा और भारत के बौद्ध भिक्षुओं और शिक्षकों से बौद्ध धर्म की तालीम हासिल करेगा.

सन 399 ईसवी में फ़ाह्यान अपने कुछ साथियों के साथ चीन से भारत के लिये रवाना हुआ. बीच एशिया के रास्ते होकर वह भारत आया. रास्ते में उसे अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ा. उसके साथ जो भिक्षु आ रहे थे, उनमें से बहुत तो चीन वापस लौट गए और कुछ रास्ते में ही मर गए. अपनी भारत यात्रा की किताब में उसने इस सफ़र का जो बयान लिखा है वह बहुत दर्द-भरा और दुखदायी है. उससे पता चलता है कि अपना मिशन पूरा करने के लिये फ़ाह्यान अपनी जान कितने जोखिम में डाल कर भारत आया था.

बीच एशिया के लोप रेगिस्तान पार करने के बारे में वह लिखता है—

"इस रेगिस्तान में बहुत से शैतान रहते थे. इनसे मुठभेड़ होने पर यह सब के सब आदमी को मार डालते थे. आसमान में न एक चिड़िया उड़ती दिखाई पड़ती थी और न ज़मीन पर एक जानवर चलता दिखाई देता था. रास्ते का पता लगाना नामुमकिन था. केवल मुरदों की गली हुई हड्डियों से ही राह का पता लगता था." (फ़ू-कुओ-की, लेखक—फ़ाह्यान, अनुवादक—बील, सफ़ा—24)

लोप रेगिस्तान पार करने के बाद उसे रास्ते में जो दिक़्क़तें उठानी पड़ीं उनके बारे में फ़ाह्यान लिखता है—

"सड़कों पर न रहने के मकान थे और न रहने वाले थे. सड़क की कठिनाइयों के कारन उन्हें अपनी यात्रा में जो मुसीबतें उठानी पड़ीं, उनकी तुलना करना आदमी की ताक़त के बाहर है." (फ़ू-कुओ-की, लेखक—फ़ाह्यान, अनुवादक—बील, सफ़ा-25)

भारत आकर फ़ाह्यान ने सारे देश में भ्रमन किया और वह यहां के सभी पवित्र बौद्ध स्थानों को देखने गया. इसी सिलसिले में वह श्रवस्ती (कोशल प्रदेश) के जेतवन मठ भी पहुँचा. जेतवन मठ को देख कर फ़ाह्यान का दिल भर आया. उस वक़्त की अपनी भावनाओं को ज़ाहिर करते हुए वह लिखता है—

"जब फ़ाह्यान और तो-चिंग जेतवन मठ पहुंचे तो

فاہیان اپنے سمے کے چینی بودھ ساہتیہ سے بہت اسنتشٹ تھا . بھارت سے انیک بودھ کتابیں آئی تھیں اور اُن کا چینی انوواد کیا گیا تھا پر وہ سب کے سب غلط تھے، اور اُن میں بہت نقص تھا . اِس کے علاوہ چین میں بودھ درشن اور بودھ دھرم کے بارے میں بہت سی غلط دھارنائیں پیدا ہوگئی تھیں . بودھ کتابوں کو صحیح طرح سے سمجھانے والا بھی چین میں اُس سمے کوئی نہ تھا . اِس لئے فاہیان نے یہ طے کیا کہ وہ بھارت جاکر بودھ دھرم کی کتابیں اِکٹھا کرے گا، اُن کا انوواد کریگا اور بھارت کے بودھ بھکشوؤں اور شکشکوں سے بودھ دھرم کی تعلیم حاصل کرے گا .

سن 399 عیسوی میں فاہیان اپنے کچھ ساتھیوں کے ساتھ چین سے بھارت کے لئے روانہ ہوا . بیچ ایشیا کے راستے ہوکر وہ بھارت آیا . راستے میں اُسے انیک مصیبتوں کا سامنا کرنا پڑا . اُس کے ساتھ جو بھکشو آرہے تھے، اُن میں سے بہت تو چین واپس لوٹ گئے اور کچھ راستے میں ہی مرگئے . اپنی بھارت یاترا کی کتاب میں اُس نے اِس سفر کا جو بیان لکھا ہے وہ بہت درد بھرا اور دکھ دائی ہے . اُس سے پتہ چلتا ہے کہ اپنا مشن پورا کرنے کے لئے فاہیان اپنی جان کتنے جوکھم میں ڈالکر بھارت آیا تھا .

بیچ ایشیا کے لوپ ریگستان پار کرنے کے بارے میں وہ لکھتا ہے —

" اِس ریگستان میں بہت سے شیطان رہتے تھے . اِن سے مٹھ بھیڑ ہونے پر یہ سب کے سب آدمی کو مار ڈالتے تھے . آسمان میں نہ ایک چڑیا اُڑتی دکھائی پڑتی تھی اور نہ زمین پر ایک جانور چلتا دکھائی دیتا تھا . راستے کا پتہ لگانا ناممکن تھا . کیول مردوں کی گلی ہوئی ہڈیوں سے ہی راہ کا پتہ لگتا تھا ." (فو . کواو . کی' لیکھک — فاہیان' انوادک — بیل' صفحہ — 24)

لوپ ریگستان پار کرنے کے بعد اُسے راستے میں جو دقتیں اُٹھانی پڑیں اُن کے بارے میں فاہیان لکھتا ہے —

" سڑکوں پر نہ رہنے کے مکان تھے اور نہ رہنے والے تھے . سڑک کی کٹھنائیوں کے کارن انہیں اپنی یاترا میں جو مصیبتیں اُٹھانی پڑیں' اُن کی تلنا کرنا آدمی کی طاقت کے باہر ہے ." (فو . کواو . کی' لیکھک — فاہیان' انوادک — بیل' صفحہ — 25)

بھارت آکر فاہیان نے سارے دیش میں بھرمن کیا اور وہ یہاں کے سبھی پوتر بودھ استھانوں کو دیکھنے گیا . اِسی سلسلے میں وہ شروستی (کوشل پردیش) کے جیتون مٹھ بھی پہونچا . جیتون مٹھ کو دیکھکر فاہیان کا دل بھر آیا . اُس وقت کی اپنی بھاوناؤں کو ظاہر کرتے ہوئے وہ لکھتا ہے —

" جب فاہیان اور تو چِنگ جیتون مٹھ پہونچے تو

भारत में चीनी बौद्ध भिक्षु

(भाई भान चन्द्र वर्मा)

भारत और चीन के कलचरी मेल को बढ़ाने और मज़बूत करने में उन चीनी बौद्ध यात्रियों ने भी बहुत मदद की जो चीन से समय समय पर भारत आए. यों तो चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार सन 65 ईसवी में शुरू हो चुका था और भारत से बौद्ध प्रचारक भी चीन जाने लगे थे फिर भी चीन से चौथी सदी के अन्त तक कोई भी चीनी भिक्षु भारत नहीं आया. सन 399 ईसवी में पहला चीनी यात्री फ़ाहयान भारत आया. और फिर उसके बाद सैकड़ों चीनी भिक्षु समय समय पर भारत आए. भारत में इन भिक्षुओं ने ख़ासकर चार काम किये—

(1) इन भिक्षुओं ने सारे देश में घूमकर बौद्ध धर्म के पवित्र स्थानों का दरशन किया और वहां अपनी श्रद्धान्जलि अरपित की.

(2) यह भिक्षु ज़ियादातर बौद्ध धर्म की शिक्षा हासिल करने नालन्द बिश्वविद्यालय आते थे और वहीं रह कर अध्ययन करते थे.

(3) भारत में इन भिक्षुओं ने बहुत सी बौद्ध किताबों का अनुवाद किया और बहुतों को नक़ल किया.

(4) इन भिक्षुओं में से कुछ बौद्ध मूर्तियों की तसवीरें बनाकर अपने साथ चीन लेते गए जिससे चीन में भारती कला को काफ़ी रिवाज मिला. बहुत से भिक्षु अपने साथ मूर्तियां भी ले गए.

इन चीनी मुसाफ़िरों में से कुछ ने अपनी यात्रा का हाल लिख छोड़ा है. इन्हीं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इन बौद्ध भिक्षुओं ने कहां कहां क्या क्या किया. पर जो चीनी भिक्षु भारत आए उन से में बहुतों ने इस तरह का कोई बयान नहीं लिखा है, इसलिये तफ़सील में बहुत कम भिक्षुओं की जिन्दगी का सच्चा बयान मिलता है. नीचे उन कुछ चीनी भिक्षुओं के बारे में लिखा जा रहा है जो चीन से भारत आए—

शिह फ़ाहयान

फ़ाहयान चीन के पिंग-याग ज़िले का रहने वाला था. तीन साल की उमर में उसे बौद्ध भिक्षु बना लिया गया. उसके समय में यह रिवाज था कि जिस आदमी को बौद्ध भिक्षु की दीक्षा दी जाती थी उसे 'शिह' यानी 'शाक्यपुत्र' की उपाधि मिलती थी, इसलिये फ़ाहयान भी 'शाक्यपुत्र' यानी 'शिह' फ़ाहयान कहा जाने लगा.

بھارت میں چینی بودھ بھکشو

(بھائی بھان چندر ورما)

بھارت اور چین کے کلچری میل کو بڑھانے اور مضبوط کرنے میں اُن چینی بودھ یاتریوں نے بھی بہت مدد کی جو چین سے سمے سمے پر بھارت آئے . یوں تو چین میں بودھ دھرم کا پرچار سن 65 عیسوی میں شروع ہوچکا تھا اور بھارت سے بودھ پرچارک بھی چین جانے لگے تھے پھر بھی چین سے چوتھی صدی کے انت تک کوئی بھی چینی بھکشو بھارت نہیں آیا . سن 399 عیسوی میں پہلا چینی یاتری فاہیان بھارت آیا . اور پھر اُس کے بعد سیکڑوں چینی بھکشو سمے سمے پر بھارت آئے . بھارت میں اِن بھکشوؤں نے خاص کر چار کام کئے—

(1) اِن بھکشوؤں نے سارے دیش میں گھوم کر بودھ دھرم کے پوتر استھانوں کا درشن کیا اور وہاں اپنی شردھانجلی ارپت کی .

(2) یہ بھکشو زیادہ تر بودھ دھرم کی شکشا حاصل کرنے نالندہ وشوودیالے آتے تھے اور یہیں رہ کر ادھیین کرتے تھے .

(3) بھارت میں اِن بھکشوؤں نے بہت سی بودھ کتابوں کا انوواد کیا اور بہتوں کو نقل کیا .

(4) اِن بھکشوؤں میں سے کچھ بودھ مورتیوں کی تصویریں بناکر اپنے ساتھ چین لیتے گئے جس سے چین میں بھارتی کلا کو کافی رواج ملا . بہت سے بھکشو اپنے ساتھ مورتیاں بھی لے گئے .

اِن چینی مسافروں میں سے کچھ نے اپنی یاترا کا حال لکھ چھوڑا ہے . اِنہیں کے آدھار پر یہ کہا جاسکتا ہے کہ اِن بودھ بھکشوؤں نے کہاں کہاں کیا کیا کیا . پر جو چینی بھکشو بھارت آئے اُن میں سے بہتوں نے اِس طرح کا کوئی بیان نہیں لکھا ہے' اِس لئے تفصیل میں بہت کم بھکشوؤں کی زندگی کا سچا بیان ملتا ہے' نیچے اُن کچھ چینی بھکشوؤں کے بارے میں لکھا جا رہا ہے جو چین سے بھارت آئے---

شیہ فاہیان

فاہیان چین کے پنگ یاگ ضلعے کا رہنے والا تھا . تین سال کی عمر میں اُسے بودھ بھکشو بنالیا گیا . اُس کے سمے میں یہ رواج تھا کہ جس آدمی کو بودھ بھکشو کی دیکشا دی جاتی تھی اُسے 'شیہ' یعنی 'شاکیہ پتر' کی اُپادھی ملتی تھی' اِس لئے فاہیان بھی 'شاکیہ پتر' یعنی 'شیہ' فاہیان کہا جانے لگا .

सूफ़ियों की सोहबत में

(भाई गु. म.)

(5)

शाम का वक़्त था. एक पहाड़ी की चोटी पर एक ख़ुदा के बन्दे के इर्द गिर्द कुछ लोग बैठे हुए थे. सब की आँखें डूबते हुए सूरज पर लगी हुई थीं. ज्यों ही सूरज डूब गया, उस ख़ुदा के बन्दे ने अपना सर ऊँचा किया और आए हुए लोगों से पूछा—"यह ख़ुशबू कहाँ से आ रही है ?" उन का यह सवाल सुनकर सुनने वाले ज़रा हैरानी में पड़ गए क्योंकि उन में से उस वक़्त किसी को भी किसी क़िस्म की ख़ुशबू नहीं महसूस हुई थी. इस लिये उनमें से एक ने हिम्मत कर के थोड़ी देर के बाद जवाब दिया—"साहबे मन! यहाँ तो किसी क़िस्म की ख़ुशबू हमें महसूस नहीं हो रही."

"ख़ूब रही". ख़ुदा के बन्दे ने कुछ मुस्करा कर कहा—"तुम कहते हो किसी क़िस्म की ख़ुशबू तुम्हें महसूस नहीं हो रही और मुझे तो क़रीब एक आध घंटे से हर एक तरफ़ से गुलाब के फूलों की ख़ुशबू ने समझो मस्त और मतवाला कर दिया है."

"गुलाब के फूलों की ख़ुशबू ?" एक दूसरे की तरफ़ नज़र करते हुए उनके आस पास बैठे हुए लोगों में से एक ने शक के लहजे में कहा.

"हाँ, हाँ." ख़ुदा के बन्दे ने जवाब दिया—"गुलाब के फूलों की ख़ुशबू ! मगर तुम लोगों ने तो सिर्फ़ बाहरी बाग़ के गुलाब क फूल ही देखे हैं. इसलिये तुम्हें तो किसी और क़िस्म के गुलाब के फूल का ख़याल ही क्या आ सकता है. मगर हर एक इन्सान के अन्दर भी एक बाग़ है. वहाँ क़िस्म क़िस्म के फूल उगते हैं और उनकी ख़ुशबू हर एक इन्सान को कभी न कभी महसूस होती ही है. जब वह किसी से सच्ची मुहब्बत करता है या किसी की सच्चाई से ख़िदमत करता है या किसी के लिये दिल व जान से क़ुरबानी करता है उस वक़्त उसे इस अन्दरूनी बाग़ के फूलों की ख़ुशबू महसूस होती है अगरचे बहुत दफ़ा वह उसे पहचान भी नहीं सकता. उसे एक अजीब क़िस्म की ख़ुशी मालूम होती है. मगर वह नहीं जानता कि इस ख़ुशी का मूल उसके अपने दिल के बाग़ की ख़ुशबू ही है. इन्सान की रूह क्या है ? अगर वह एक फूल नहीं जिसे ख़ुदाबन्दताला ने अपने दिल के बाग़ में से उखाड़ कर उसके दिल में लगा दिया है, तो वह और क्या है. और मुहब्बत क्या है ? इन्सान की रूह की ख़ुशबू. और जहाँ जहाँ और जब जब जैसे कि इस वक़्त तुम लोगों और मेरे बीच में बंधा है, एक रूहानी रिश्ता (दुनियावी रिश्ता नहीं) बंध जाता है तो उस वक़्त इस अन्दरूनी बाग़ के फूलों की ख़ुशबू लोगों को महसूस होती है."

صوفیوں کی صحبت میں

(بھائی گ . م .)

(5)

شام کا وقت تھا . ایک پہاڑی کی چوٹی پر ایک خدا کے بندے کے اِرد گرد کچھ لوگ بیٹھے ہوئے تھے . سب کی آنکھیں ڈوبتے ہوئے سورج پر لگی ہوئی تھیں . جیوں ہی سورج ڈوب گیا، اُس خدا کے بندے نے اپنا سر اونچا کیا اور آئے ہوئے لوگوں سے پوچھا—'' یہ خوشبو کہاں سے آ رہی ہے ؟'' اُن کا یہ سوال سن کر سننے والے ذرا حیرانی میں پڑ گئے کیونکہ اُن میں سے اُس وقت کسی کو بھی کسی قسم کی خوشبو نہیں محسوس ہوئی تھی . اِس لئے اُن میں سے ایک نے ہمت کر کے تھوڑی دیر کے بعد جواب دیا —'' صاحب من ! یہاں تو کسی قسم کی خوشبو ہمیں محسوس نہیں ہو رہی .''

'' خوب رہی .'' خدا کے بندے نے کچھ مسکرا کر کہا—'' تم کہتے ہو کسی قسم کی خوشبو تمہیں محسوس نہیں ہو رہی اور مجھے تو قریب ایک آدھ گھنٹے سے ہر ایک طرف سے گلاب کے پھولوں کی خوشبو نے سمجھو مست اور متوالا کر دیا ہے .''

'' گلاب کے پھولوں کی خوشبو ؟'' ایک دوسرے کی طرف نظر کرتے ہوئے اُن کے آس پاس بیٹھے ہوئے لوگوں میں سے ایک نے شک کے لہجے میں کہا .

'' ہاں ، ہاں .'' خدا کے بندے نے جواب دیا —'' گلاب کے پھولوں کی خوشبو ! مگر تم لوگوں نے تو صرف باہری باغ کے گلاب کے پھول ہی دیکھے ہیں . اس لئے تمہیں تو کسی اور قسم کے گلاب کے پھول کا خیال ہی کیا آسکتا ہے . مگر ہر ایک انسان کے اندر بھی ایک باغ ہے . وہاں قسم قسم کے پھول اُگتے ہیں اور اُن کی خوشبو ہر ایک انسان کو کبھی نہ کبھی محسوس ہوتی ہی ہے . جب وہ کسی سے سچی محبت کرتا ہے یا کسی کی سچائی سے خدمت کرتا ہے یا کسی کے لئے دل و جان سے قربانی کرتا ہے اُس وقت اُسے اِس اندرونی باغ کے پھولوں کی خوشبو محسوس ہوتی ہے اگرچہ بہت دفعہ وہ اُسے پہچان بھی نہیں سکتا . اُسے ایک عجیب قسم کی خوشی معلوم ہوتی ہے . مگر وہ نہیں جانتا کہ اس خوشی کا مول اُس کے اپنے دل کے باغ کی خوشبو ہی ہے . اِنسان کی روح کیا ہے ؟ اگر وہ ایک پھول نہیں جسے خداوندتعالیٰ نے اپنے دل کے باغ میں سے اُکھاڑ کر اُس کے دل میں لگا دیا ہے، تو وہ اور کیا ہے . اور محبت کیا ہے ؟ اِنسان کی روح کی خوشبو . اور جہاں جہاں اور جب جب جیسے کہ اِس وقت تم لوگوں اور میرے بیچ میں بندھا ہے، ایک روحانی رشتہ (دنیاوی رشتہ نہیں) بندھ جاتا ہے تو اُس وقت اِس اندرونی باغ کے پھولوں کی خوشبو لوگوں کو محسوس ہوتی ہے .''

वह दावत दिये बग़ैर नहीं रहता है. फिर इसरार भी करता है और अगर उसके घर पर पहुँच जाओ तो इतनी ख़ातिर और मदारात करता है कि बयान नहीं किया जा सकता. यानी पहले तो वह अपने घर के तमाम लोगों से परिचय कराता है छोटे बड़े, औरत मर्द सब से. फिर घर के सब लोग मेहमान की ख़ातिर में जी जान से लग जाते हैं और बारी बारी से कहते हैं—आप ने हमें सर फ़राज़ किया है और हमारे घर को रोशन कर दिया है. क़सम ख़ुदा की आप की तशरीफ़ आवरी से हम लोगों को बड़ी बरकत हासिल हुई है. इस का जवाब उलट कर यही होता है कि यह सब कुछ आप हज़रात की बदौलत मुझे हासिल हुआ है. और यह कि यह सब कुछ आपकी ख़ुश इख़लाक़ी, मेहमां नवाज़ी और बंदा परवरी का करिशमा है वग़ैरा वग़ैरा.

मेज़बान के घर के सब नर नारी, बालक और कन्याएं कुछ इस तरह घुल मिल जाती हैं कि मालूम होता है यह अपना ही ख़ानदान है. छोटे बड़े सब बेतकल्लुफ़ी से बातें करने लगते हैं और अनगिनत सवालात करने लग जाते हैं. वह भारत को जानना चाहते हैं और भारत की हर चीज़ के बारे में जानना चाहते हैं. भारत कितना बड़ा मुल्क है, भारत में कितने लोग हैं, भारत में कितने बड़े शहर हैं, कितने छोटे हैं. भारत में अरबी बोली जाती है कि कोई दूसरी भाशा. दूसरी भाशा कैसी भाशा है, एक है कि कई भाशायें हैं. भारत सरकार और पाकिस्तान का क्या झगड़ा है. इस में कौन दोशी है कौन निर्दोश. भारत में मुसलमान कितने हैं ग़ैर मुसलिम कितने. ग़ैर मुसलिम भारतियों का मुसलमानों के साथ क्या बरताव है, यह लोग आपसी झगड़े को क्यों नहीं ख़त्म करते. क्या उन झगड़ों में अंगरेज़ों का भी हाथ है वग़ैरा वग़ैरा. बेशुमार सवालात होते हैं और उनका जवाब देते देते नातक़ा बन्द हो जाता है.

(बाक़ी फिर)

"वह धन को उसके सिंहासन से हटा कर ईश्वर के लिये थोड़ी जगह ख़ाली करे. मेरा ख़याल है कि अमरीका का भविश्य उज्ज्वल है. लेकिन अगर वह धन की ही पूजा करता रहा तो उसका भविश्य अंधकारमय है, फिर लोग चाहे जो कहें. धन आख़ीर तक किसी का सगा नहीं रहा. वह हमेशा बेवफ़ा दोस्त साबित हुआ है."

—महात्मा गांधी

وہ دعوت دیئے بغیر نہیں رہتا ہے . پھر اصرار بھی کرتا ہے اور اگر اُس کے گھر پر پہونچ جاؤ تو اتنی خاطر اور مدارات کرتا ہے کہ بیان نہیں کیا جاسکتا . یعنی پہلے تو وہ اپنے گھر کے تمام لوگوں سے پریچے کراتا ہے چھوٹے بڑے' عورت مرد سب سے . پھر گھر کے سب لوگ مہمان کی خاطر میں جی جان سے لگ جاتے ہیں اور باری باری سے کہتے ہیں — آپ نے ہمیں سرفراز کیا ہے اور ہمارے گھر کو روشن کر دیا ہے . قسم خدا کی آپ کی تشریف آوری سے ہم لوگوں کو بڑی برکت حاصل ہوئی ہے . اس کا جواب اُلٹ کر یہی ہوتا ہے کہ یہ سب کچھ آپ حضرات کی بدولت مجھے حاصل ہوا ہے . اور یہ کہ یہ سب کچھ آپ کی خوش اخلاقی' مہماں نوازی اور بندہ پروری کا کرشمہ ہے وغیرہ وغیرہ .

میزبان کے گھر کے سب نر ناری' بالک اور کنیائیں کچھ اس طرح گھل مل جاتی ہیں کہ معلوم ہوتا ہے یہ اپنا ہی خاندان ہے . چھوٹے بڑے سب بے تکلفی سے باتیں کرنے لگتے ہیں اور ان گنت سوالات کرنے لگ جاتے ہیں . وہ بھارت کو جاننا چاہتے ہیں اور بھارت کی ہر چیز کے بارے میں جاننا چاہتے ہیں . بھارت کتنا بڑا ملک ہے' بھارت میں کتنے لوگ ہیں' بھارت میں کتنے بڑے شہر ہیں' کتنے چھوٹے ہیں . بھارت میں عربی بولی جاتی ہے کہ کوئی دوسری بھاشا . دوسری بھاشا کیسی بھاشا ہے' ایک ہے کہ کئی بھاشائیں ہیں . بھارت سرکار اور پاکستان کا کیا جھگڑا ہے . اس میں کون دوشی ہے کون نردوش . بھارت میں مسلمان کتنے ہیں غیر مسلم کتنے . غیر مسلم بھارتیوں کا مسلمانوں کے ساتھ کیا برتاؤ ہے' یہ لوگ آپسی جھگڑے کو کیوں نہیں ختم کرتے . کیا ان جھگڑوں میں انگریزوں کا بھی ہاتھ ہے وغیر وغیرہ بے شمار سوالات ہوتے ہیں اور ان کا جواب دیتے دیتے ناطقہ بند ہوجاتا ہے .

(باقی پھر)

"وہ دھن کو اُس کے سنگھاسن سے ہٹاکر ایشور کے لئے تھوڑی جگہ خالی کرے . میرا خیال ہے کہ امریکہ کا بھوشیہ اُجول ہے . لیکن اگر وہ دھن کی ہی پوجا کرتا رہا تو اُس کا بھوشیہ اندھکار مے ہے' پھر لوگ چاہے جو کہیں . دھن آخیر تک کسی کا سگا نہیں رہا . وہ ہمیشہ بےوفا دوست ثابت ہوا ہے".

—مہاتما گاندھی

इलाज उसके मज़हब के हुक्म पर चलने में मौजूद है और क्योंकि वह मज़हब के हुक्म नहीं मानता इसलिये मुसीबतों और तकलीफ़ों का शिकार है. मज़हब पर ठीक ठीक चलकर वह अपनी मुसीबतों और तकलीफ़ों को दूर कर सकता है और उसे हर तरह की सुख शांति भी मिल सकती है. हर मिस्री यह मानता है कि दुनिया में उसी का मज़हब सच्चा है और सब झूटे. धर्म के मामले में इसी तरह की तंग ख़याली हिन्दुस्तान के लोगों में भी मिलती है. यह विचार कहाँ तक सही है और कहाँ तक ग़लत है यह एक दूसरी बात है मगर दुनिया के तमाम मज़हबी लोगों में अपने धरम के मामले में इस तरह की विचार धारा ज़रूर पाई जाती है.

इसके बावजूद मिस्र के लोग काफ़ी आज़ाद ख़याल और काफ़ी ज़िन्दा दिल हैं. अभी कल की बात है. मैं ट्राम पर सवार था. एक ख़ातून (महिला) अपनी तेरह चौदह साल की लड़की के साथ ट्राम में सवार हुईं. ख़ातून को पीछे की बेंच पर जगह मिल गई. लड़की खड़ी रही. मेरे बाज़ू में ज़रा सी जगह थी. एक मिस्री ने इशारा किया और लड़की मेरे पास आकर बैठ गई. एक शेख़ ने कहा, जोड़ा अच्छा है. सबलोग खिल खिला कर हंस पड़े. एक दूसरे अरब ने लड़की को मुख़ातिब करते हुए कहा—'तू इस हिन्दी से ब्याह कर ले, बड़ा आदमी मालूम होता है. तुझे गहनों से लाद देगा'. पीछे से उसकी माँ ने कहा—'मुझे मंज़ूर है.' मैंने कहा—'लड़की मुझे बिलकुल पसंद है. भोली भाली भी है और ख़ूबसूरत भी. मैं इसे हिन्दुस्तान ले जाऊंगा. ख़ुदा के फ़ज़ल से मेरे पाँच बेटे हैं. जिसको यह पसंद करेगी उससे इसका ब्याह करदूंगा.' उसकी मां ने कहा—'नहीं जनाब, मैं तो इसका ब्याह आप ही से करूंगी.' इस बीच में पीछे की बेंच पर कुछ जगह ख़ाली हुई. लड़की जो अबतक नीची निगाह किये हुए चुप चाप बैठी हुई थी, उठकर अपनी मां के पहलू में जा बैठी. एक मिस्री ने कहा—'शौहर ने मुँह नहीं लगाया तो भाग खड़ी हुई.' मैंने कहा—'नहीं जनाब, यह मेरी बद क़िस्मती है. लड़की ने मुझे पसन्द नहीं किया. तभी तो वह मेरे पास से उठकर चली गई.' उसकी माँ ने कहा—'नहीं नहीं यह बात नहीं है. लड़की बिलकुल राज़ी है. आख़िर कुंआरी है ना ! ज़रा शरमाती है.'

मिस्र के लोग निहायत सीधे सादे, निहायत मिलनसार, निहायत ख़ुश इख़लाक़ और मेहमाँ नवाज़ होते हैं. दिल्ली में मैं मुद्दतों रहा किसी एक मर्दे-ख़ुदा ने मेरी दावत नहीं की, न किसी हिन्दू भाई ने न किसी मुसलमान ने. यह अलग बात है कि किसी दोस्त के यहाँ खाने के वक़्त पहुँचा तो खा लिया, लेकिन मिस्र में जिससे भी मुलाक़ात होती है

علاج اس کے مذہب کے حکم پر چلنے میں موجود ہے اور کیونکہ وہ مذہب کے حکم نہیں مانتا اس لئے مصیبتوں اور تکلیفوں کا شکار ہے. مذہب پر ٹھیک ٹھیک چل کر وہ اپنی مصیبتوں اور تکلیفوں کو دور کر سکتا ہے اور اُسے ہر طرح کی سکھ شانتی بھی مل سکتی ہے. ہر مصری یہ مانتا ہے کہ دنیا میں اُسی کا مذہب سچا ہے اور سب جھوٹے. دھرم کے معاملے میں اِسی طرح کی تنگ خیالی ہندستان کے لوگوں میں بھی ملتی ہے. یہ وچار کہاں تک صحیح ہے اور کہاں تک غلط ہے یہ ایک دوسری بات ہے مگر دنیا کے تمام مذہبی لوگوں میں اپنے دھرم کے معاملے میں اس طرح کی وچار دھارا ضرور پائی جاتی ہے.

اس کے باوجود مصر کے لوگ کافی آزاد خیال اور کافی زندہ دل ہیں. ابھی کل کی بات ہے. میں ٹرام پر سوار تھا. ایک خاتون (مہیلا) اپنی تیرہ چودہ سال کی لڑکی کے ساتھ ٹرام میں سوار ہوئیں. خاتون کو پیچھے کی بینچ پر جگہ مل گئی. لڑکی کھڑی رہی. میرے بازو میں ذرا سی جگہ تھی. ایک مصری نے اشارہ کیا اور لڑکی میرے پاس آکر بیٹھ گئی. ایک شیخ نے کہا' جوڑا اچھا ہے. سب لوگ کھلکھلا کر ہنس پڑے ایک دوسرے عرب نے لڑکی کو مخاطب کرتے ہوئے کہا—' تو اس ہندی سے بیاہ کر لے' بڑا آدمی معلوم ہوتا ہے. تجھے گہنوں سے لاد دے گا.' پیچھے سے اُس کی ماں نے کہا—' مجھے منظور ہے.' میں نے کہا—' لڑکی مجھے بالکل پسند ہے. بھولی بھالی بھی ہے اور خوبصورت بھی. میں اِسے ہندستان لے جاؤنگا. خدا کے فضل سے میرے پانچ بیٹے ہیں. جس کو یہ پسند کرے گی اُس سے اس کا بیاہ کر دونگا.' اس کی ماں نے کہا—' نہیں جناب' میں تو اس کا بیاہ آپ ہی سے کرونگی.' اس بیچ میں پیچھے کی بینچ پر کچھ جگہ خالی ہوئی. لڑکی جو اب تک نیچی نگاہ کئے ہوئے چپ چاپ بیٹھی ہوئی تھی' اٹھکر اپنی ماں کے پہلو میں جا بیٹھی. ایک مصری نے کہا—' شوہر نے منہ نہیں لگایا تو بھاگ کھڑی ہوئی.' میں نے کہا—' نہیں جناب یہ میری بدقسمتی ہے. لڑکی نے مجھے پسند نہیں کیا. تب ہی تو وہ میرے پاس سے اٹھکر چلی گئی.' اس کی ماں نے کہا—' نہیں نہیں یہ بات نہیں ہے. لڑکی بالکل راضی ہے. آخر کنواری ہے نا! ذرا شرماتی ہے.'

مصر کے لوگ نہایت سیدھے سادے' نہایت ملنسار' نہایت خوش اخلاق اور مہماں نواز ہوتے ہیں. دلی میں میں مدتوں رہا کسی ایک مرد خدا نے میری دعوت نہیں کی' نہ کسی ہندو بھائی نے نہ کسی مسلمان نے. یہ الگ بات ہے کہ کسی دوست کے یہاں کھانے کے وقت پہونچا تو کھا لیا' لیکن مصر میں جس سے بھی ملاقات ہوتی ہے

ऱहनावे ओढ़ावे और रहन सहन में कोई चीज़ भी
पी या इसलामी बाक़ी नहीं रही है. यहां तक कि रंग
और विचार भी पच्छिमी सांचे मे ढल गए हैं. शायरी,
त्रकारी, ललित कला, आर्ट और लिट्रेचर भी योरप के
में रंग गया है. लेकिन ग़रीब मज़दूर, किसान और
म लोगों में अभी तक पूरबी पन और इस्लामी तहज़ीब
रंग नुमायां है, अगरचे पच्छिम के असर से बिलकुल
ली नहीं है. ख़ास कर औरतों की रिहाइश, घरेलू लिबास
र रहन सहन पर मज़हब का गहरा असर पड़ा है. फिर
जब यह औरतें बाहर निकलती हैं तो पूरब का असर
उनके रंग ढंग और लिबास से बड़ी हद तक नुमायां
ा है. परदे का रिवाज उस शक्ल में, जो कि हिन्दुस्तान
मुस्लिम औरतों में पाया जाता है, यहां नहीं है. फिर
यहां जिसको परदा कहा जाता है वह यहां के आम
क़े की औरतों में आमतौर पर देखा जाता है. उसकी
ल यह होती है कि औरतें एक काली चादर थैले की
ल में ओढ़ लेती हैं, जिससे जिस्म का बेशतर हिस्सा
जाता है. सिर्फ़ दोनों पिंडलियों का कुछ हिस्सा,
ों हाथ और मुंह खुला रहता है. बहुत सी औरतों
मुंह बिलकुल खुला रहता है, बहुत सी औरतें
जाली मुंह पर इस तरह रखती हैं कि नाक से
र का आधा चेहरा तो बिलकुल खुला रहता है और
के सिरे पर एक पट्टी होती है जिसमें एक जाली
कती रहती है जो चेहरे के निचले हिस्से को किसी क़दर
लेती है. अगरचे जाली इतनी छिछली और महीन
ी है कि चेहरा झलकता रहता है. बस यही परदा है
र यही पच्छमी या इसलामी कलचर.

कलचर के सिलसिले में यहाँ कुछ चीज़ें एक दूसरे से
हुत उलटी देखने में आती हैं. एक तरफ़ तो मिस्री बे
धड़क सनीमा, थेटर, अधनंगे नाच गाने और शराब ख़ोरी
के मैदान में एक दूसरे से आगे जाते हुए नज़र आते हैं
और दूसरी तरफ़ नमाज़ियों का हजूम भी कुछ कम नहीं
होता. इसी तरह हज करने वालों की तादाद भी तमाम
दुनिया के मुसलमानों से ज़ियादा मिस्री मुसलमानों की
होती है. यानी हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की मिली जुली
हाजियों की गिनती के बराबर. हालांकि गिनती में
हिन्दुस्तान के मुसलमानों से मिस्री आधे से भी कम हैं
और पाकिस्तान से एक चौथाई से भी कम.

इससे ज़ियादा अचरज की चीज़ मिस्रियों की ज़हनियत
और विचार हैं. एक शख़्स जिसको मज़हब से कोई
लगाव नहीं वह यह समझता है कि मज़हब के बग़ैर वह
ज़िन्दा नहीं रह सकता. न वह ज़िंदा रह सकता है न
उसकी क़ौम. उसकी तमाम मुसीबतों और तकलीफ़ों का

کے پہناوے اوڑھاوے اور رہن سہن میں کوئی چیز
بھی پوربی یا اسلامی باقی نہیں رہی ہے۔ یہاں
تک کہ رنگ ڈھنگ اور وچار بھی پچھمی سانچے میں
ڈھل گئے ہیں۔ شاعری، چترکاری، للت کلا، آرٹ اور لٹریچر
بھی یورپ کے رنگ میں رنگ گیا ہے۔ لیکن غریب مزدور،
کسان اور عام لوگوں میں ابھی تک پوربی پن اور اسلامی
تہذیب کا رنگ نمایاں ہے، اگرچہ پچھم کے اثر سے بالکل
خالی نہیں ہے۔ خاص کر عورتوں کی رہائش، گھریلو
لباس اور رہن سہن پر مذہب کا گہرا اثر پڑا ہے۔ پھر بھی
جب یہ عورتیں باہر نکلتی ہیں تو پورب کا اثر بھی
ان کے رنگ ڈھنگ اور لباس سے بڑی حد تک نمایاں
ہوتا ہے۔ پردے کا رواج اس شکل میں، جو کہ ہندستان
کی مسلم عورتوں میں پایا جاتا ہے، یہاں نہیں ہے۔ پھر
بھی یہاں جس کو پردہ کہا جاتا ہے وہ یہاں کے عام طبقے
کی عورتوں میں عام طور پر دیکھا جاتا ہے۔ اسکی شکل
یہ ہوتی ہے کہ عورتیں ایک کالی چادر تھیلے کی شکل
میں اوڑھ لیتی ہیں، جس سے جسم کا بیشتر حصہ ڈھک
جاتا ہے۔ صرف دونوں پنڈلیوں کا کچھ حصہ، دونوں ہاتھ
اور منہ کھلا رہتا ہے۔ بہت سی عورتوں کا منہ بالکل
کھلا رہتا ہے، بہت سی عورتیں ایک جالی منہ پر اس
طرح رکھتی ہیں کہ ناک سے اوپر کا آدھا چہرہ تو بالکل
کھلا رہتا ہے اور ناک کے سرے پر ایک پٹی ہوتی ہے جس
میں ایک جالی لٹکتی رہتی ہے جو چہرے کے نچلے
حصے کو کسی قدر ڈھانک لیتی ہے۔ اگرچہ جالی اتنی
چھچھلی اور مہین ہوتی ہے کہ چہرہ جھلکتا رہتا ہے۔
بس یہی پردہ ہے اور یہی پچھمی یا اسلامی کلچر۔

کلچر کے سلسلے میں یہاں کچھ چیزیں ایک دوسرے
سے بہت الٹی دیکھنے میں آتی ہیں۔ ایک طرف تو
مصری بے دھڑک سنیما، تھیٹر، ادھ ننگے ناچ گانے اور
شراب خوری کے میدان میں ایک دوسرے سے آگے جاتے
ہوئے نظر آتے ہیں اور دوسری طرف نمازیوں کا ہجوم بھی
کچھ کم نہیں ہوتا۔ اسی طرح حج کرنے والوں کی تعداد
بھی تمام دنیا کے مسلمانوں سے زیادہ مصری مسلمانوں
کی ہوتی ہے۔ یعنی ہندستان اور پاکستان کی ملی جلی
حاجیوں کی گنتی کے برابر۔ حالانکہ گنتی میں ہندستان
کے مسلمانوں سے مصری آدھے سے بھی کم ہیں اور پاکستان
سے ایک چوتھائی سے بھی کم۔

اس سے زیادہ اچرج کی چیز مصریوں کی ذہنیت
اور وچار ہیں۔ ایک شخص جس کو مذہب سے کوئی
لگاؤ نہیں وہ یہ سمجھتا ہے کہ مذہب کے بغیر
وہ زندہ نہیں رہ سکتا۔ نہ وہ زندہ رہ سکتا ہے
نہ اس کی قوم۔ اسکی تمام مصیبتوں اور تکلیفوں کا

यहां कम गिनत जातियों के साथ बहुगिनत जाति का बरताव बहुत उदार और हमदर्दाना है. क़िब्ती अपनी आबादी के हिसाब से नौ फ़ीसदी हैं लेकिन सरकारी नौकरियों में इनकी गिनती 30 फ़ीसदी है और बड़ी से बड़ी जगहों पर भी इसी हिसाब से वह काम करते हैं.

मिस्र का बजट 231 मिलयन पौंड का है जिसके 3234,000,000 रुपए होते हैं. इस में से 1148,000,000 रुपया देश बचाव पर खर्च होता है और 448,000,000 शिक्षा पर, 252,000,000 तन्दुरुस्ती पर और बाक़ी दूसरी मदों में.

मिस्र में चार यूनिवरसिटियां, 28 कालिज और क़रीब पांच हज़ार के प्रायमरी मिडिल और हाई स्कूल हैं. सरकारी कालिजों और स्कूलों में इस वक़्त 15 लाख तालिब-इल्म या विद्यार्थी पढ़ते हैं. नई पंच साला स्कीम के मातहत इनकी गिनती 50 लाख की होगी.

इन स्कूलों और कालिजों के अलावा अल-अज़हर यूनिवरसिटी के मातहत भी कई कालिज और बहुत से स्कूल हैं. फिर बहुत से प्राइवेट स्कूल कालिज भी हैं.

मिस्र के सरकारी अस्पतालों में 50 हज़ार मरीज़ों के लिये चारपाइयां हैं. 25 हज़ार ग़ैर सरकारी अस्पतालों में हैं.

मिस्र में तीन सौ से कुछ ऊपर मुख़तलिफ़ सोसाइटियां और क्लब हैं जिनमें बहुत सी सोसाइटियां ऐसी हैं जिनकी शाखें मिस्र के हर हिस्से में फैली हुई हैं. यह सोसाइटियां तरह तरह के प्रोग्राम और मक़सदों के मातहत काम करती हैं. राज काजी, समाजी, आर्थिक, धार्मिक, तिजारती, सनअती हर क़िस्म के काम. इन सोसाइटियों में बहुत सी सोसाइटियां औरतों, बच्चों, बूढ़ों, लंगड़ों, लूलों, अन्धों, बहरों, नादारों और ग़रीबों की इमदाद और सहायता भी करती हैं. इनके लिये खाना कपड़ा भी मुहैया करती हैं और मुनासिब काम भी. फिर ग़रीब तबक़े के दूध पीते बच्चों की देखभाल और आम बच्चों की पढ़ाई लिखाई के लिये भी इन सोसाइटियों का इन्तज़ाम क़ाबिले क़द्र है. इसी तरह बहुत सी सोसाइटियां ग़रीब ख़ानदानों की मुनासिब मदद भी करती हैं और कुछ मज़हबी, इख़लाक़ी और कलचरी सुधार भी.

मिस्र का तमद्दुन, तहज़ीब, संस्कृति और कलचर बिलकुल बदल गया है, ऊंचे तबक़े के लोग और बीच के दरजे के लोग सब के सब पच्छिमी तहज़ीब, पच्छिमी रहन सहन और पच्छिमी लिबास को अपना चुके हैं. मर्दों के लिबास में सिर्फ़ तुरकी टोपी तुरकों के राज के ज़माने की याद दिला रही है लेकिन ऊंचे तबक़े की और नीचे के तबक़े की औरतों

ان کم گنت جاتیوں کے ساتھ بہوگنت جاتی کا برتاؤ بہت
اور ہمدردانہ ہے. قبطی اپنی آبادی کے حساب سے نو
سدی ہیں لیکن سرکاری نوکریوں میں ان کی گنتی
30 فیصدی ہے اور بڑی سے بڑی جگہوں پر بھی اسی
ساب سے وہ کام کرتے ہیں.

مصر کا بجٹ 231 ملین پونڈ کا ہے جس کے
3234,000,00 روپے ہوتے ہیں. اس میں سے
1148,000,00 روپیہ دیش بچاو پر خرچ ہوتا ہے اور
448,000 0 شکشا پر، 252,000,000 تندرستی پر
باقی دوسری مدوں میں.

مصر میں چار یونیورسٹیاں، 28 کالج اور قریب
پچ ہزار کے پرائمری مڈل اور ہائی اسکول ہیں. سرکاری
جوں اور اسکولوں میں اس وقت 15 لاکھ طالب علم یا
ارتھی پڑھتے ہیں. نئی پنچ سالہ اسکیم کے ماتحت ان
گنتی پچاس لاکھ کی ہوگی.

ان اسکولوں اور کالجوں کے علاوہ الازہر یونیورسٹی
ماتحت بھی کئی کالج اور بہت سے اسکول ہیں.
بہت سے پرائیویٹ اسکول کالج بھی ہیں.

مصر کے سرکاری اسپتالوں میں 50 ہزار مریضوں کے
چارپائیاں ہیں. 25 ہزار غیر سرکاری اسپتالوں
ں ہیں.

مصر میں تین سو سے کچھ اوپر مختلف سوسائٹیاں
کلب ہیں جن میں بہت سی سوسائٹیاں ایسی ہیں
کی شاخیں مصر کے ہر حصے میں پھیلی ہوئی
ں. یہ سوسائٹیاں طرح طرح کے پروگرام اور مقصدوں
ماتحت کام کرتی ہیں. راج کاجی، سماجی، آرتھک،
رمک، تجارتی، صنعتی، ہر قسم کے کام. ان سوسائٹیوں
ں بہت سی سوسائٹیاں عورتوں، بچوں، بوڑھوں، لنگڑوں
ں، اندھوں، بہروں، ناداروں اور غریبوں کی امداد اور سہایتا
کرتی ہیں. ان کے لئے کھانا کپڑا بھی مہیا کرتی
اور مناسب کام بھی. پھر غریب طبقے کے دودھ
بچوں کی دیکھ بھال اور عام بچوں کی پڑھائی
ی کے لئے بھی ان سوسائٹیوں کا انتظام قابل قدر ہے.
طرح بہت سی سوسائٹیاں غریب خاندانوں کی
سب مدد بھی کرتی ہیں اور کچھ مذہبی، اخلاقی
لچری سدھار بھی.

مصر کا تمدن، تہذیب، سنسکرتی اور کلچر بالکل
گیا ہے، اونچے طبقے کے لوگ اور بیچ کے درجے کے
سب کے سب پچھمی تہذیب، پچھمی رہن سہن
پچھمی لباس کو اپنا چکے ہیں. مردوں کے لباس
صرف ترکی ٹوپی ترکوں کے راج کے زمانے کی یاد دلا
، لیکن اونچے طبقے کی اور نیچے کے طبقے کی عورتوں

के हाउस आफ़ लार्ड स को हैं. हाँ, मिस्र के बादशाह के अधिकार इंगलैंड के बादशाह के अधिकारों से कुछ ज़ियादा हैं. लेकिन इन एख़तियारों का इस्तेमाल करने की बादशाह को न तो ज़रूरत पड़ती है और न इसकी फ़ुरसत मिलती है.

आम सदन की बहुगिनत पारटी का लीडर प्रधान मंत्री चुना जाता है और दूसरे सब मंत्री प्रधान मंत्री की तरफ़ से चुन लिये जाते हैं और उस समय तक वज़ीरी कुरसियों पर डटे रहते हैं जब तक कि आम सदन में उनकी पारटी का बहुमत होता है और जब तक यह बहुमत उन पर विश्वास करता है.

इस वक़्त हुकूमत की बागडोर वफ़्द पारटी के हाथों में है. वफ़्द पारटी की मिस्र में वही हैसियत है जो हिन्दुस्तान में कांगरेस की. वफ़्द पारटी के सब से बड़े लीडर मरहूम साद ज़ग़लोल बाशा माने जाते हैं. उनकी इज़्ज़त मिस्र वालों के दिलों में वही थी और है, जो हिन्दुस्तान में मरहूम गांधी जी की थी और है. इस समय वफ़्द पारटी के लीडर मुस्तफ़ा नहास बाशा हैं. उनकी हैसियत मिस्र में वही है जो हिन्दुस्तान में पंडित जवाहर लाल नेहरू की है.

मिस्री हुकूमत के अदालती क़ानून ज़ियादातर फ़्रान्स से लिये गए हैं या फिर स्वीटज़रलैंड और इंगलैंड से. हां, परसनल ला सिर्फ़ मुसलमानों के लिये है और इसलामी ढंग से बनाया गया है. यह क़ानून सिर्फ़ मुसलमानों के निकाह, तलाक़, विरासत का बँटवारा और वक़्फ़ (ट्रस्ट) तक सीमित है. यह परसनल ला बहुत कुछ हिन्दुस्तान के मोहमडन ला से मिलता जुलता है. फ़र्क़ बस इतना है कि हिन्दुस्तान में मोहमडन ला से सम्बन्ध रखने वाले मुक़दमों का फ़ैसला भी आम अदालत में होता है लेकिन मिस्र में इसके लिये ख़ास अदालतें हैं. इन ख़ास अदालतों में आम जजों की जगह शरियत के माहिर क़ाज़ी होते हैं और इनके फ़ैसले आख़री माने जाते हैं. इन क़ाज़ियों के पास दूसरे मुक़दमे जाते भी नहीं हैं. आम अदालतों का इन्तज़ाम वैसा ही है जैसे हिन्दुस्तान का है यानी पुलिस कोर्ट, लोअर कोर्ट, हाई कोर्ट वग़ैरा में भी उसी तरह का काम होता है जैसे हिन्दुस्तान में होता है.

मिस्र का रक़बा चार लाख मुरब्बा मील के क़रीब है जिसमें सिर्फ़ चार फ़ीसदी ज़मीन पर खेती बाड़ी हो सकती है. बाक़ी ज़मीन रेगिस्तान है. मिस्र में बारिश न होने के बराबर होती है. खेती दरियाए नील के पानी से होती है. आबपाशी का इन्तज़ाम अच्छा है और इसमें और भी तरक़्क़ी हो रही है.

मिस्र की कुल आबादी क़रीब दो करोड़ के है जिनमें 18 लाख क़िब्ती, दो लाख विदेशी और बाक़ी मुसलमान हैं.

[ہا]ؤس آف لارڈس کو ہیں ۔ ہاں، مصر کے بادشاہ [کے ا]دھیکار انگلینڈ کے بادشاہ کے ادھیکاروں سے کچھ [زیادہ] ہیں ۔ لیکن ان اختیاروں کا استعمال کرنے کی [بادشا]ہ کو نہ تو ضرورت پڑتی ہے اور نہ اس کی فرصت [ملتی] ہے ۔

[ع]ام سدن کی بہوگنت پارٹی کا لیڈر پردھان منتری [چنا] جاتا ہے اور دوسرے سب منتری پردھان منتری کی [طرف] سے چن لئے جاتے ہیں اور اُس سمے تک وزیری [کرسیو]ں پر ڈٹے رہتے ہیں جب تک کہ عام سدن میں [ان کی] پارٹی کا بہومت ہوتا ہے اور جب تک یہ بہومت [ان پر] وشواس کرتا ہے ۔

[ا]س وقت حکومت کی باگ ڈور وفد پارٹی کے ہاتھوں [میں] ہے ۔ وفد پارٹی کی مصر میں وہی حیثیت ہے جو [ہندوس]تان میں کانگریس کی ۔ وفد پارٹی کے سب سے بڑے [لیڈر] مرحوم سعد زغلول باشا مانے جاتے ہیں ۔ اُن کی [عزت] مصر والوں کے دلوں میں وہی تھی اور ہے، جو [ہندوس]تان میں مرحوم گاندھی جی کی تھی اور ہے ۔ اس [سمے] وفد پارٹی کے لیڈر مصطفیٰ نحاس باشا ہیں ۔ اُن کی [حیثی]ت مصر میں وہی ہے جو ہندستان میں پنڈت [جواہر] لال نہرو کی ہے ۔

مصری حکومت کے عدالتی قانون زیادہ تر فرانس [سے ل]ئے گئے ہیں یا پھر سوئٹزرلینڈ اور انگلینڈ سے ۔ ہاں، [پرسن]ل لا صرف مسلمانوں کے لئے ہے اور اسلامی ڈھنگ [سے بن]ایا گیا ہے ۔ یہ قانون صرف مسلمانوں کے نکاح، طلاق، [وراثت] کا بٹوارہ اور وقف (ٹرسٹ) تک سیمت ہے ۔ یہ [پرسن]ل لا بہت کچھ ہندستان کے محمڈن لا سے ملتا [جلتا] ہے ۔ فرق بس اتنا ہے کہ ہندستان میں محمڈن لا [سے س]مبندھ رکھنے والے مقدموں کا فیصلہ بھی عام عدالت [میں] ہوتا ہے لیکن مصر میں اس کے لئے خاص عدالتیں [ہیں] ۔ اِن خاص عدالتوں میں عام ججوں کی جگہ [شریع]ت کے ماہر قاضی ہوتے ہیں اور اِن کے فیصلے آخری [مانے] جاتے ہیں ۔ اِن قاضیوں کے پاس دوسرے مقدمے جاتے [بھی] نہیں ہیں ۔ عام عدالتوں کا انتظام ویسا ہی ہے [جیس]ا ہندستان کا ہے یعنی پولیس کورٹ، لوئر کورٹ، [ہائی] کورٹ وغیرہ میں بھی اُسی طرح کام ہوتا ہے جیسے [ہندس]تان میں ہوتا ہے ۔

مصر کا رقبہ چار لاکھ مربع میل کے قریب ہے جس [میں] صرف چار فیصدی زمین پر کھیتی باڑی ہو سکتی [ہے ۔] باقی زمین ریگستان ہے ۔ مصر میں بارش نہ ہونے [کے] برابر ہوتی ہے ۔ کھیتی دریائے نیل کے پانی سے ہوتی [ہے ۔ آ]ب پاشی کا انتظام اچھا ہے اور اس میں اور بھی [ترقی] ہو رہی ہے ۔

مصر کی کل آبادی قریب دو کروڑ کے ہے جن میں [18 لا]کھ قبطی، دو لاکھ ودیشی اور باقی مسلمان ہیں ۔

मौलाना अब्दुल्ला मिस्री का ख़त—क़ाहिरा से

प्यारे पंडित सुन्दरलाल,

अपने पिछले ख़त में मिस्र का कुछ हाल लिख चुका हूँ. इस ख़त में भी कुछ हाल लिखूँगा. यों अगर लिखा जाय तो यहाँ के एक एक विशय, एक एक चीज़ पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है. हो सकता है आगे चलकर मैं यहाँ की चीज़ों पर बहुत तफ़सील से लिखूं पर अभी तो मैं बहुत कुछ न लिखकर बहुत थोड़े में कुछ लिख रहा हूँ.

मिस्र बीच पूरब के देशों में बहुत उन्नति शील देश है. बीच पूरब के दूसरे कई देशों की तरह यह भी "इसलामी" देश कहलाता है. यहाँ की सरकार भी इसलामी कही जाती है. लेकिन दर असल इसको इसलाम से महज़ नाम का लगाव है. मिस्र की सरकार का ढांचा तीन अहम जुज़ों यानी तत्वों से बना है. इसका विधान तो इंगलैंड का है, अदालती और पुलिस क़ानून फ्रान्स और स्वीटज़रलैंड के हैं और 'परसनल ला' इसलाम. का है.

मिस्र की हकूमत का ऊपरी ढाँचा इस मानी में इंगलैन्ड से बहुत कुछ मिलता जुलता है कि यहाँ भी हकूमत की सब से ऊँची गद्दी पर हिज़ मेजेस्टी शाह फ़ारूक़ बिराजते हैं और बहुत आन बान और शान के साथ बिराजते हैं और मिस्री सरकार का सब काम काज हिज़ मेजेस्टी के नाम से होता है. अगरचे सब काम दूसरे लोग ही करते हैं जैसे इंगलैन्ड में होता है.

सोच विचार और क़ायदे क़ानून बनाने के लिये इंगलैन्ड के हाउस आफ़ कामन्स और हाउस आफ़ लार्ड्स की तरह यहाँ भी दो सदन हैं. एक आम सदन और दूसरा ख़ास सदन. आम सदन के मेम्बरों की गिनती 319 और ख़ास सदन के मेम्बरों की गिनती 180 है. आम सदन के तमाम मेम्बर चुनाव से आते हैं और ख़ास सदन के आधे मेम्बर चुनाव से और आधे सरकार की तरफ़ से नामज़द होकर. चुनाव में राय देने का हक़ यहाँ सिर्फ़ बालिग़ मर्दों को है औरतों को नहीं. औरतों को राज काजी मामलों में भी कोई दख़ल नहीं है, अगरचे औरतें यहाँ काफ़ी पढ़ी लिखी और आज़ाद हैं.

आम सदन की उमर पाँच साल की और ख़ास सदन की दस साल की रक्खी गई है. आम सदन को वह सब अधिकार हैं जो इंगलैन्ड में हाउस आफ़ कामन्स को हैं. मिस्र के ख़ास सदन को भी वही इख़्तियार हैं जो इंगलैन्ड

مولانا عبداللہ مصری کا خط—قاہرہ سے

پیارے پنڈت سندر لال،

اپنے پچھلے خط میں مصر کا کچھ حال لکھ چکا ہوں. اس خط میں بھی کچھ حال لکھوں گا. یوں اگر لکھا جائے تو یہاں کے ایک ایک وشے، ایک ایک چیز پر بہت کچھ لکھا جا سکتا ہے. ہو سکتا ہے آگے چل کر میں یہاں کی چیزوں پر بہت تفصیل سے لکھوں پر ابھی تو میں بہت کچھ نہ لکھکر بہت تھوڑے میں کچھ لکھ رہا ہوں.

مصر بیچ پورب کے دیشوں میں بہت اُنتی شیل دیش ہے. بیچ پورب کے دوسرے کئی دیشوں کی طرح یہ بھی "اسلامی" دیش کہلاتا ہے. یہاں کی سرکار بھی اسلامی کہی جاتی ہے. لیکن دراصل اسکو اسلام سے محض نام کا لگاؤ ہے. مصر کی سرکار کا ڈھانچا تین اہم جزوں یعنی تتووں سے بنا ہے. اس کا ودھان تو انگلینڈ کا ہے، عدالتی اور پولیس قانون فرانس اور سوئٹزرلینڈ کے ہیں اور 'پرسنل لا' اسلام کا ہے.

مصر کی حکومت کا اوپری ڈھانچہ اس معنی میں انگلینڈ سے بہت کچھ ملتا جلتا ہے کہ یہاں بھی حکومت کی سب سے اونچی گدی پر ہز مجسٹی شاہ فاروق براجتے ہیں اور بہت آن بان اور شان کے ساتھ براجتے ہیں اور مصری سرکار کا سب کام کاج ہز مجسٹی کے نام سے ہوتا ہے. اگرچہ سب کام دوسرے لوگ ہی کرتے ہیں جیسے انگلینڈ میں ہوتا ہے.

سوچ وچار اور قاعدے قانون بنانے کے لئے انگلینڈ کے ہاؤس آف کامنس اور ہاؤس آف لارڈس کی طرح یہاں بھی دو سدن ہیں. ایک عام سدن اور دوسرا خاص سدن. عام سدن کے ممبروں کی گنتی 319 اور خاص سدن کے ممبروں کی گنتی 180 ہے. عام سدن کے تمام ممبر چناؤ سے آتے ہیں اور خاص سدن کے آدھے ممبر چناؤ سے اور آدھے سرکار کی طرف سے نامزد ہوکر. چناؤ میں رائے دینے کا حق یہاں صرف بالغ مردوں کو ہے عورتوں کو نہیں. عورتوں کو راج کاجی معاملوں میں بھی کوئی دخل نہیں ہے، اگرچہ عورتیں یہاں کافی پڑھی لکھی اور آزاد ہیں.

عام سدن کی عمر پانچ سال کی اور خاص سدن کی دس سال کی رکھی گئی ہے. عام سدن کو وہ سب ادھیکار ہیں جو انگلینڈ میں ہاؤس آف کامنس کو ہیں. مصر کے خاص سدن کو بھی وہی اختیار ہیں جو انگلینڈ

मुल्क के अन्दर एक इनक़लाब अहिंसात्मक ढंग से आप से आप हो जायेगा.

हमें यक़ीन है कि अहिंसात्मक इनक़लाब करना हिन्दुस्तान की मिट्टी की तासीर है. हिन्दुस्तान के लोगों ने अहिंसा के ज़रिये दुनिया की सबसे बड़ी हुकूमत को ख़त्म कर दिया, वही लोग उसी अहिंसा या सत्याग्रह के ज़रिये विरोधी सरकार या ताक़तों को अपने प्रेम और सेवा से जीत कर हिन्दुस्तान के अन्दर किसान-मज़दूर का सच्चा स्वराज क़ायम करेंगे. यही वह संदेसा है जिसकी तमन्ना आज दुनिया हमारे हिन्दुस्तान से कर रही है. यह संदेसा अमली तौर से देना हिन्दुस्तान के जीवन का मक़सद हमेशा से रहा है और हमेशा तक तक रहेगा.

—सुरेश रामभाई

ملک کے اندر ایک انقلاب اهنساتمک ڈھنگ سے آپ سے آپ هو جائیگا .

همیں یقین هے که اهنساتمک انقلاب کرنا هندستان کی مٹی کی تاثیر هے . هندستان کے لوگوں نے اهنسا کے ذریعے دنیا کی سب سے بڑی حکومت کو ختم کردیا' وهی لوگ اُسی اهنسا یا ستیاگره کے ذریعے ورودهی سرکار یا طاقتوں کو اپنے پریم اور سیوا سے جیت کر هندستان کے اندر کسان مزدور کا سچا سوراج قائم کرینگے . یهی وه سندیسه هے جسکی تمنا آج دنیا همارے هندستان سے کر رهی هے . یه سندیسه عملی طور سے دنیا هندستان کے جیون کا مقصد همیشه سے رها هے اور همیشه تک رهیگا .

—سریش رام بھائی

घास के एक तिनके ने कहा —

(ख़लील जिब्रान)

घास के एक तिनके ने पतझड़ में झड़े पत्ते से कहा—"तुम गिरते समय शोर क्यों मचाते हो ? तुम्हारे इस शोर ने मेरे सुन्दर सपने को तोड़ दिया है."

पत्ता ग़ुस्से में आकर बोला—"ओ नीच, पस्ती में रहने वाले, संगीत से बेबहरा, चिड़चिड़े तिनके ! जब तू ऊंची हवा में नहीं रहता, तो राग की लय को क्या जाने ?"

फिर पतझड़ में गिरा हुआ पत्ता ज़मीन पर सो गया और जब बहार आई तो उसकी आंख खुली पर अब वह घास का एक तिनका बन चुका था !

जब पतझड़ आया और उस पर दूसरे पत्ते गिरने लगे तो उस ने धीरे से कहा—

"यह पतझड़ में गिरे पत्ते कितना शोर मचाते हैं और मेरी मीठी नींद भंग कर देते हैं."

अनुवादक—बेनी माधव

گھاس کے ایک تنکے نے کہا—

(خلیل جبران)

گھاس کے ایک تنکے نے پتجھڑ میں جھڑے پتے سے کہا—"تم گرتے سمے شور کیوں مچاتے هو؟ تمھارے اِس شور نے میرے سندر سپنے کو توڑ دیا هے."

پتا غصے میں بھر کر بولا—"او نیچ' پستی میں رهنے والے' سنگیت سے بے بہرہ' چڑ چڑے تنکے ! جب تو اونچی هوا میں نهیں رهتا' تو راگ کی لے کو کیا جانے؟"

پھر پتجھڑ میں گرا هوا پته زمین پر سو گیا اور جب بہار آئی تو اُس کی آنکھ کھلی پر اب وه گھاس کا ایک تنکا بن چکا تھا !

جب پھر پتجھڑ آیا اور اُس پر دوسرے پتے گرنے لگے تو اُس نے دھیرے سے کہا—

"یه پتجھڑ میں گرے پتے کتنا شور مچاتے هیں اور میری میٹھی نیند بھنگ کردیتے هیں."

انوادک—بینی مادھو

पर और पूरी ईमानदारी के साथ नहीं अपनाया जाता तो कम्यूनिज़्म हिन्दुस्तान में आकर ही रहेगा. उसका आना लाज़मी है, क्योंकि जनता के पास कोई दूसरा चारा नहीं है. आज जनता बेहाल है, बेचैन है, आधी जागी हुई है, उसके पास अपना नेता नहीं है. हुकूमत या लोकशाही या बाक़ायदा इन्तज़ाम के नाम पर जो चीज़ चल रही है उससे मुल्क के अंदर अंधेर और आफ़त मची हुई है. इनको दूर करने के लिये जनता कम्यूनिज़्म को खुली दावत देती है."

आज बदक़िस्मती यह है कि हुकूमत और पढ़े लिखों का मुँह पच्छिम को है तो जनता का पूरब को. दोनों एक दूसरे से मिलते ही नहीं. पंडित जवाहर लाल तक ने क़बूल किया है कि पिछले चार बरस में आपस की यह खाई बढ़ी है, ख़ूब बढ़ी है. इसलिये पहली ज़रूरत तो इस बात की है कि जनता के अन्दर अपना विश्वास पैदा किया जाये, और जो कुछ भी किया जाये सच्चे जी से किया जाये.

किशोर लाल भाई चेतावनी देते हैं—

"हम क़दम क़दम भले चलें, लेकिन अगर यह क़दम ऊपरी दिल से उठाए जाते हैं तो कम्यूनिस्टों की बाढ़ रोके नहीं रुकेगी. और चूँकि आज की हालत कुछ ऐसी नहीं है जिसे क़ायम रखने के लिये कोई भगवान या मालिक से दुआ करे, इसलिये यह बाढ़ पूरी ताक़त से आयेगी और अपने रास्ते में पड़ने वाली हर चीज़ को कहीं का कहीं उखाड़ फेंकेगी."

यह असलियत है. भूके को रोटी चाहिये. अगर कम्यूनिस्ट यह रोटी देता है तो भूका उसके साथ है, अगर सत्याग्रही देता है तो उसके साथ है. अगर दोनों देते हैं तब वह ज़रूर कुछ सोच विचार में पड़ेगा. लेकिन जहां तक मौजूदा सरकार की बात है उसके ऊपर इतमिनान शायद ही किसी को बाक़ी हो. भूके का भगवान रोटी में है, न कम्यूनिज़्म में, न सर्वोदय में.

× × ×

आगे के बारे में कुछ भी कहना ज़ियादती है. मन के लड्डू फोड़ने से भी काम नहीं चलता है. लेकिन जहां आज की हालत से हमें बेचैनी होती है वहां ख़ुशी यह होती है कि सर्वोदय केवल एक विचार ही नहीं है, उसके मानने वाले मैदान में उतर आये हैं. गांधी जी की ज़िन्दगी ही सर्वोदय का एक आला नमूना थी. लेकिन उनके पैरोकार बड़ी ख़ूबी के साथ इस तरफ़ क़दम बढ़ा रहे हैं. विनोबा जी का पैदल घूमना और भू-दान-यज्ञ में शरीक होने के लिये हर ग़रीब अमीर से अपील करना एक ठोस क़दम है. उनका कहना है इससे एक हवा बंध जायेगी जिससे इस

پر اور پوری ایمانداری کے ساتھ نہیں اپنایا جاتا تو کمیونزم ہندستان میں آکر ہی رہیگا . اس کا آنا لازمی ہے' کیونکہ جنتا کے پاس کوئی دوسرا چارہ نہیں ہے . آج جنتا بے حال ہے' بے چین ہے' آدھی جاگی ہوئی ہے' اس کے پاس اپنا نیتا نہیں ہے . حکومت یا لوک شاہی یا باقاعدہ انتظام کے نام پر جو چیز چل رہی ہے اس سے ملک کے اندر اندھیر اور آفت مچی ہوئی ہے . ان کو دور کرنے کے لئے جنتا کمیونزم کو کھلی دعوت دیتی ہے ."

آج بدقسمتی یہ ہے کہ حکومت اور پڑھے لکھوں کا منہ پچھم کو ہے تو جنتا کا پورب کو . دونوں ایک دوسرے سے ملتے ہی نہیں . پنڈت جواہر لال تک نے قبول کیا ہے کہ پچھلے چار برس میں آپس کی یہ کھائی بڑھی ہے' خوب بڑھی ہے . اس لئے پہلی ضرورت تو اس بات کی ہے کہ جنتا کے اندر اپنا وشواس پیدا کیا جائے' اور جو کچھ بھی کیا جائے سچے جی سے کیا جائے .

کشور لال بھائی چیتاونی دیتے ہیں —

" ہم قدم قدم بھلے چلیں' لیکن اگر یہ قدم اوپری دل سے اٹھائے جاتے ہیں تو کمیونسٹوں کی باڑھ روکے نہیں رکے گی . اور چونکہ آج کی حالت کچھ ایسی نہیں ہے جسے قائم رکھنے کے لئے کوئی بھگوان یا مالک سے دعا کرے' اس لئے یہ باڑھ پوری طاقت سے آئے گی اور اپنے راستے میں پڑنے والی ہر چیز کو کہیں کا کہیں اکھاڑ پھینکیگی ."

یہ اصلیت ہے . بھوکے کو روٹی چاہئے . اگر کمیونسٹ یہ روٹی دیتا ہے تو بھوکا اس کے ساتھ ہے' اگر ستیاگرہی دیتا ہے تو اس کے ساتھ ہے . اگر دونوں دیتے ہیں تب وہ ضرور کچھ سوچ وچار میں پڑیگا . لیکن جہاں تک موجودہ سرکار کی بات ہے اس کے اوپر اطمینان شاید ہی کسی کو باقی ہو . بھوکے کا بھگوان روٹی میں ہے' نہ کمیونزم میں' نہ سرودے میں .

× × × ×

آگے کے بارے میں کچھ بھی کہنا زیادتی ہے . من کے لڈو پھوڑنے سے بھی کام نہیں چلتا ہے . لیکن جہاں آج کی حالت سے ہمیں بے چینی ہوتی ہے وہاں خوشی یہ ہوتی ہے کہ سرودے کیول ایک وچار ہی نہیں ہے' اسکے ماننے والے میدان میں اتر آئے ہیں . گاندھی جی کی زندگی ہی سرودے کا ایک اعلیٰ نمونہ تھی . لیکن ان کے پیروکار بڑی خوبی کے ساتھ اس طرف قدم بڑھا رہے ہیں . ونوباجی کا پیدل گھومنا اور بھودان یگیہ میں شریک ہونے کے لئے ہر غریب امیر سے اپیل کرنا ایک ٹھوس قدم ہے . انکا کہنا ہے اس سے ایک ہوا بندھ جائیگی جس سے اس

अभय (निडर रहना), सर्व धर्म समभाव (सब धर्मों के लिये एक सी इज़्ज़त), स्वदेशी का इस्तेमाल करना और छुआ छूत न करना. ज़रा ग़ौर से देखें तो पता चलेगा कि कम्यूनिस्ट भाई इन ग्यारह में से सिर्फ़ असंग्रह पर इसरार करते हैं—ब्रह्मचर्य रखिये या न रखिये उसे कोई शिकायत नहीं होगी, सत्य में तो वह यक़ीन ही नहीं करता, या करता है तो अपने अलग ढंग से, अस्तेय की वह क़द्र करता है, शरीर श्रम को बुरा नहीं कहता, अस्वाद को दीवाना पन समझता है, अभय उसे पसंद है, धर्म को तो वह अफ़ीम मानता है, स्वदेशी उसे बाबा आदम के ज़माने की चीज़ मालूम पड़ती है, छुआ छूत वह उठ गई ख़याल करता है. इस तरह अपनी बेहतरीन से बेहतरीन हालत में भी कम्यूनिज़्म सर्वोदय का महज़ एक छोटा-सा टुकड़ा है. सच तो यह है कि कम्यूनिस्ट भाई जिस चीज़ को माली या आर्थिक दायरे में बुलन्द हालत में देखना चाहते हैं, सत्याग्रही उसे जीवन के हर पहलू में बुलन्द देखना चाहता है. इसी का नतीजा यह होता है कि अपना जिस्म, जो कम्यूनिस्ट को सबसे प्यारी चीज़ है, सत्याग्रही के लिये सबसे बड़ी रुकावट बन जाता है. इसी वजह से सर्वोदय और कम्यूनिज़्म में कोई मेल नहीं रह जाता और दोनों एक दूसरे के कट्टर ख़िलाफ़ पड़ते हैं.

× × × ×

हमने ऊपर कम्यूनिस्ट भाइयों के उसूलों की चर्चा की और यह देखा कि उनमें और सर्वोदय के मानने वालों में कितना गहरा और बुनियादी फ़र्क़ है. "गांधी और मार्क्स" नाम की किताब में किशोरलाल भाई और विनोबाजी, दोनों ने ही, अपने मंझे हुए क़लम और पैनी व दूर पहुँचने वाली निगाह से इस चीज़ को इतने आसान तरीक़े से रख दिया है कि हर कोई ख़ूब अच्छी तरह से समझ सकता है. लेकिन उसूल उसूल ही हैं, असल बात है उनका अमल. आज हमारे हिन्दुस्तान में दोनों विचार मौजूद हैं. उनकी कामयाबी इस बात पर मुनहसिर है कि दोनों के पैरोकार किस तरह अमली रूप में इन्हें अपना कर यहां के दीन दुखियों की सच्ची सेवा कर पाते हैं.

सर्वोदय के दावेदार बहुत बनते हैं, सरकार भी बनती है. लेकिन अगर सर्वोदय की आड़ में सरकार महज़ अमीरों को अमीर और ग़रीबों को ग़रीब बनाने का काम करती है तो वह बदनाम तो होगी ही, चौपट भी हो जायगी, लेकिन यही नहीं, इससे वह विचार भी बदनाम होगा. अगर इस विचार पर ठीक तरह से ईमानदारी के साथ अमल नहीं किया जाता है तो हमें किशोरलाल भाई की भविष्य वाणी की सचाई के बारे में कोई शक नहीं है. उनका कहना है—

"अगर गांधीजी का रास्ता सचमुच अमली तौर

ابھے (نڈر رہنا)' سرو دھرم سمبھاو (سب دھرموں کے لئے ایک
سی عزت)' سودیشی کا استعمال کرنا اور چھواچھوت نہ کرنا.
ذرا غور سے دیکھیں تو پتہ چلے گا کہ کمیونسٹ بھائی ان
گیارہ میں سے صرف اسنگرہ پر اصرار کرتے ہیں— برہمچریہ
رکھئے یا نہ رکھئے اُسے کوئی شکایت نہیں ہوگی' ستیہ
میں تو وہ یقین ہی نہیں کرتا' یا کرتا ہے تو اپنے الگ
ڈھنگ سے' استیہ کی وہ قدر کرتا ہے' شریر شرم کو برا نہیں
کہتا' اسواد کو دیوانہ پن سمجھتا ہے' ابھے اُسے پسند ہے'
دھرم کو تو وہ افیم مانتا ہے' سودیشی اُسے بابا آدم کے
زمانے کی چیز معلوم پڑتی ہے' چھواچھوت وہ اُٹھ گئی
خیال کرتا ہے . اِس طرح اپنی بہترین سے بہترین حالت
میں بھی کمیونزم سرووَدے کا محض ایک چھوٹا سا ٹکڑا
ہے . سچ تو یہ ہے کہ کمیونسٹ بھائی جس چیز کو مالی یا
آرتھک دائرے میں بلند حالت میں دیکھنا چاہتے ہیں'
ستیہ گرہی اُسے جیون کے ہر پہلو میں بلند دیکھنا چاہتا
ہے . اِسی کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ اپنا جسم' جو کمیونسٹ
کو سب سے پیاری چیز ہے' ستیہ گرہی کے لئے سب سے
بڑی رکاوٹ بن جاتا ہے . اِسی وجہ سے سرووَدے اور کمیونزم
میں کوئی میل نہیں رہ جاتا اور دونوں ایک دوسرے کے
کٹر خلاف پڑتے ہیں .

× × × ×

ہم نے اوپر کمیونسٹ بھائیوں کے اُصولوں کی چرچا
کی اور یہ دیکھا کہ اُن میں اور سرووَدے کے ماننے والوں
میں کتنا گہرا اور بنیادی فرق ہے . "گاندھی اور مارکس"
نام کی کتاب میں کشور لال بھائی اور ونوبا جی' دونوں
نے ہی' اپنے منجھے ہوئے قلم اور پینی و دور پہنچنے والی
نگاہ سے اِس چیز کو اِتنے آسان طریقے سے رکھدیا ہے کہ ہر
کوئی خوب اچھی طرح سے سمجھ سکتا ہے . لیکن اصول
اصول ہی ہیں' اصل بات ہے اُن کا عمل . آج ہمارے
ہندستان میں دونوں وچار موجود ہیں . ان کی کامیابی اِس
بات پر منحصر ہے کہ دونوں کے پیروکار کس طرح عملی روپ
میں انہیں اپنا کر یہاں کے دین دکھیوں کی سچی سیوا کر
پاتے ہیں .

سرووَدے کے دعویدار بہت بنتے ہیں' سرکار بھی بنتی
ہے . لیکن اگر سرووَدے کی آڑ میں سرکار محض امیروں
کو امیر اور غریبوں کو غریب بنانے کا کام کرتی ہے تو وہ
بدنام تو ہوگی ہی' چوپٹ بھی ہوجائے گی' لیکن یہی
نہیں' اس سے وہ وچار بھی بدنام ہوگا . اگر اس وچار پر
ٹھیک طرح سے ایمانداری کے ساتھ عمل نہیں کیا جاتا ہے
تو ہمیں کشور لال بھائی کی بھوشیہ بانی کی سچائی کے
بارے میں کوئی شک نہیں ہے . اُن کا کہنا ہے —

"اگر گاندھی جی کا راستہ سچ مچ عملی طور

सकते. यह बात सर्वोदय के विचार से एक दम उलटी है. उसका मानने वाला तो हथियारों के सवा सोलह आने खिलाफ़ है और अहिंसा के बिना एक इन्च भी नहीं खसक सकता.

अपने इस लेख के शुरू में ही हमने जो चार हिसाब दिये हैं उनकी असलियत अब साफ़ समझ में आ जाती है. इन चारों में पहला, दूसरा और चौथा तो दिमाग़ का महज़ फ़ितूर हैं, तीसरा हिसाब यह है—

गांधी वाद—अहिंसा = 0

इस के बारे में हम इतना कहेंगे कि यह ग़लत नहीं है. थोड़ा सा सही है, लेकिन पूरा सही नहीं है. क्योंकि गांधी वाद या सर्वोदय जिस विचार का नाम है वह महज़ अहिंसा ही नहीं है, बल्कि यह वह विचार है जिसका पैरोकार सत्य को पाना चाहता है, सत्य जिसका मक़सद है और उस तक पहुँचने के लिये वह अहिंसा के रास्ते सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ना चाहता है. अहिंसा या प्रेम के रास्ते ही वह उस सत्य या चेतन को पा सकता है जो सारे आलम की जड़ है. यह प्रेम का रास्ता बहुत ही तंग रास्ता है जिसका मज़ा लगातार मश्क़ से ही मिल सकता है. जैसा कबीर ने कहा है—

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित हुआ न कोय,
ढाई अक्खर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय.

इन ढाई अक्खरों का ज्ञान कर लेना कोई मज़ाक़ नहीं है. एक प्राणी की सारी ज़िन्दगी भी नाकाफ़ी है. ज़रा दूर तक देखें तो आख़िरी मंज़िल पर पहुँचने के लिये, प्रेम का पूरी तरह पंडित बनने के लिये, इन्सान का यह बदन भी—जो एक तरह की पूँजी है—उसके लिये एक रुकावट है क्योंकि इसकी वजह से कुछ-न-कुछ हिंसा तो हो ही जाती है, प्रेम में कुछ न कुछ बाधा तो पड़ही जाती है.

इस तरह अपनी ऊंची से ऊंची उड़ान में सर्वोदय के अंदर जिस्म या बदन की भी गुंजायश नहीं है, दूसरी फिर किसी चीज़ का तो कहना ही क्या ? यह वह चीज़ है जिसके बारे में कुछ कहते नहीं बनता और क़लम रुक जाता है. हमारे कम्यूनिस्ट भाई इसे ख़याली पुलाव कहेंगे, लेकिन दर असल यह चीज़ उनकी क्या हर एक की समझ के बाहर की चीज़ हो गई है. दिमाग़ फ़ेल हो जाता है, सिर्फ़ दिल चलता है, दिल की भावना चलती है.

इसी सिलसिले में यह कह देना मुनासिब होगा कि सर्वोदय के विचार पर अमल करने के लिये उसके पैरोकार पर इन ग्यारह क़ायदों की पाबन्दी लाज़मी हो जाती है— अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य (नफ़्स पर क़ाबू), असंग्रह (सामान जमा न रखना), शरीर श्रम (जिस्मानी मेहनत), अस्वाद (ज़बान के चटोरे न बनना),

سکتے . یہ بات سرووَدے کے وچار سے ایک دم اُلٹی ہے . اُس کا ماننے والا تو ھتھیاروں کے سوا سولہ آنے خلاف ہے اور اھنسا کے بنا ایک انچ بھی نہیں کھسک سکتا .

اپنے اِس لیکھ کے شروع میں ہی ہم نے جو چار حساب دیئے ہیں اُن کی اصلیت اب صاف سمجھ میں آجاتی ہے . اِن چاروں میں پہلا' دوسرا اور چوتھا تو دماغ کا محض فتور ہیں' تیسرا حساب یہ ہے —

گاندھی واد — اھنسا = 0

اِسکے بارے میں ہم اتنا کہیں گے کہ یہ غلط نہیں ہے . تھوڑا سا صحیح ہے' لیکن پورا صحیح نہیں ہے . کیونکہ گاندھی واد یا سرووَدے جس وچار کا نام ہے وہ محض اھنسا ہی نہیں ہے' بلکہ یہ وہ وچار ہے جس کا پیروکار ستیہ کو پانا چاہتا ہے' ستیہ جس کا مقصد ہے اور اُس تک پہنچنے کے لئے وہ اھنسا کے راستے سیڑھی در سیڑھی چڑھنا چاہتا ہے . اھنسا یا پریم کے راستے ہی وہ اُس ستیہ یا چیتن کو پاسکتا ہے جو سارے عالم کی جڑ ہے . یہ پریم کا راستہ بہت ہی تنگ راستہ ہے جس کا مزہ لگاتار مشق سے ہی مل سکتا ہے . جیسا کبیر نے کہا ہے —

پوتھی پڑھی پڑھی جگ موا' پنڈت ہوا نہ کوئے
ڈھائی اکھر پریم کا' پڑھے سو پنڈت ہوئے

اِن ڈھائی اکھروں کا گیان کر لینا کوئی مذاق نہیں ہے . ایک پرانی کی ساری زندگی بھی ناکافی ہے . ذرا دور تک دیکھیں تو آخری منزل پر پہنچنے کے لئے' پریم کا پوری طرح پنڈت بننے کے لئے' اِنسان کا یہ بدن بھی — جو ایک طرح کی پونجی ہے — اُس کے لئے ایک رکاوٹ ہے کیونکہ اسکی وجہ سے کچھ نہ کچھ ھنسا تو ہو ہی جاتی ہے' پریم میں کچھ نہ کچھ بادھا تو پڑ ہی جاتی ہے .

اِس طرح اپنی اونچی سے اونچی اُڑان میں سرووَدے کے اندر جسم یا بدن کی بھی گنجائش نہیں ہے' دوسری پھر کسی چیز کا تو کہنا ہی کیا ؟ یہ وہ چیز ہے جس کے بارے میں کچھ کہتے نہیں بنتا اور قلم رک جاتا ہے . ہمارے کمیونسٹ بھائی اِسے خیالی پلاؤ کہیں گے' لیکن دراصل یہ چیز اُن کی کیا ہر ایک کی سمجھ کے باہر کی چیز ہوگئی ہے . دماغ فیل ہوجاتا ہے' صرف دل چلتا ہے' دل کی بھاونا چلتی ہے .

اِسی سلسلے میں یہ کہدینا مناسب ہوگا کہ سرووَدے کے وچار پر عمل کرنے کے لئے اُس کے پیروکار پر اِن گیارہ قاعدوں کی پابندی لازمی ہوجاتی ہے — 'اھنسا' ستیہ' استیہ (چوری نہ کرنا)' برھمچریہ (نفس پر قابو)' اسنگرہ (سامان جمع نہ رکھنا)' شریر شرم (جسمانی محنت)' اسواد (زبان کے چٹورے نہ بننا)'

से पवे सेवा की खातिर इस्तेमाल में लाना है. सच्चा त्याग्रही अपने शरीर का, जो कुछ उसके पास है उसका, वस एक ट्रस्टी है और यह ट्रस्टी शिप उसे जीवन भर निभाना है.

इस तरह सर्वोदय के विचार पर चलने के लिये वर्धा व्यवस्था, ग़ैर केन्द्री करन और ट्रस्टी शिप पर अमल करना होता है. इन तीनों चीज़ों को बहुत ही सफाई के साथ किशोर लाल भाई ने चन्द सफ़ों में रख दिया है. इन से गांधी जी की क्या मुराद थी यह बात बिलकुल साफ़ साफ़ इस में आ गई है.

हमने कहा है कि सर्वोदय में स्वदेशी—क़तई स्वदेशी—का बोलबाला है. सर्वोदय का मानने वाला यानी सत्याग्रही यह चाहेगा कि स्वदेशी का पूरा पूरा इस्तेमाल करूँ यानी अपनी खातिर दूसरों को कम से कम तकलीफ़ दूं. इस लिये वह अपना काम अपने आप करेगा, खाने कपड़े की ज़रूरतें अपने आप पूरी करने की कोशिश करेगा. इसको कामयाबी से निभाने के लिये उसे दो बातें अमली तौर पर करनी होंगी—पहली यह कि ख़ुद चोटी का पसीना एड़ी तक बहाये, यानी बदन से मेहनत का काम ले. मेहनत करने पर ही वह रोटी खायेगा. दूसरी यह कि वह अपनी ज़रूरतें बहुत ही कम कर देगा और जो जो ज़रूरतें होंगी उनको अपनी या गांव के लोगों की मेहनत से पूरी कर लेगा. और जब अपनी ज़रूरतों के लिये उसे बाहर के बाज़ार का मुंह नहीं देखना पड़ता तो पैसे या सोना रखने की उसकी तमन्ना आप से आप कम हो जायगी. इन दोनों चीज़ों को विनोबा जी ने श्रम देवता (मेहनत के देवता) की उपासना पूजा और कांचन-मुक्ति नाम दिया है, जिनकी तरफ़ उन्होंने अपनी भूमिका के आखिर में ध्यान खींचा है और कहा है कि इन दो बातों से ही हिन्दुस्तान की कठिनाइयाँ दूर हो सकती हैं. असल में यह दोनों एक हैं क्योंकि एक के बिना दूसरी नामुमकिन है. इसी चीज़ में, जैसा विनोबाजी ने बताया है, गांधी विचार या सर्वोदय का सार दिखा देता है, साम्यवाद या कम्यूनिज़्म से उसका मेल दिखाई देता है और उसी में क्या कम्यूनिज़्म और क्या पूँजीवाद दोनों का हल दिखाई देता है.

यह क्या ? कम्यूनिज़्म और पूँजीवाद दोनों का हल ? हां, कम्यूनिज़्म और पूँजीवाद में जहां काले-सफ़ेद का फ़र्क़ है वहां दोनों ही हथियारों या हिंसा के मानने वाले हैं और पैसे या सोने को ही सब कुछ मानते हैं, कांचन-मुक्ति दोनों में से किसी में नहीं होती. आगे चलकर भले ही पैसे या सोने का दाम या अहमियत कम्यूनिज़्म में कम हो जाये लेकिन हथियार या हिन्सा तो उसकी जान है, मानो बिना हथियारों के तो कम्यूनिस्ट एक क़दम भी आगे नहीं रख

جسے اپنے سیوا کی خاطر استعمال میں لانا ہے . ستیا گرہی اپنے شریر کا' جو کچھ اسکے پاس ہے اسکا کیول ایک ٹرسٹی ہے اور یہ ٹرسٹی شپ اُسے جیون بھر نبھانا ہے .

اِس طرح سرووَدے کے وچار پر چلنے کے لئے وردھا ویوستھا' غیر کیندری کرن اور ٹرسٹی شپ پر عمل کرنا ہوتا ہے . اِن تینوں چیزوں کو بہت ہی صفائی کے ساتھ کشور لال بھائی نے چند صفحوں میں رکھدیا ہے . اِن سے گاندھی جی کی کیا مراد تھی یہ بات بالکل صاف صاف اِس میں آگئی ہے .

ہم نے کہا ہے کہ سرووَدے میں سودیشی—قطعی سودیشی—کا بول بالا ہے . سرووَدے کا ماننے والا یعنی ستیا گرہی یہ چاہے گا کہ سودیشی کا پورا پورا استعمال کروں یعنی اپنی خاطر دوسروں کو کم سے کم تکلیف دوں اِسلئے وہ اپنا کام اپنے آپ کرے گا' کھانے کپڑے کی ضرورتیں اپنے آپ پوری کرنے کی کوشش کرے گا . اِس کو کامیابی سے نبھانے کے لئے اُسے دو باتیں عملی طور پر کرنی ہونگی—پہلی یہ کہ خود چوٹی کا پسینہ ایڑی تک بہائے' یعنی بدن سے محنت کا کام لے . محنت کرنے پر ہی وہ روٹی کھائے گا . دوسری یہ کہ وہ اپنی ضرورتیں بہت ہی کم کردے گا اور جو جو ضرورتیں رہینگی اُن کو اپنی یا گاؤں کے لوگوں کی محنت سے پوری کرلے گا . اور جب اپنی ضرورتوں کے لئے اُسے باہر کے بازار کا منہ نہیں دیکھنا پڑتا تو پیسے یا سونا رکھنے کی اُسکی تمنا آپ سے آپ کم ہو جائیگی. اِن دونوں چیزوں کو ونوباجی نے شرم دیوتا (محنت کے دیوتا) کی اُپاسنا پوجا اور کانچن مکتی نام دیا ہے' جنکی طرف اُنہوں نے اپنی بھومیکا کے آخر میں دھیان کھینچا ہے اور کہا ہے کہ اِن دو باتوں سے ہی ہندستان کی کٹھنائیاں دور ہوسکتی ہیں . اصل میں یہ دونوں ایک ہیں کیونکہ ایک کے بنا دوسری ناممکن ہے . اِسی چیز میں' جیسا ونوباجی نے بتایا ہے' گاندھی وچار یا سرووَدے کا سار دکھائی دیتا ہے . سامیہ واد یا کمیونزم سے اُسکا میل دکھائی دیتا ہے اور اُسی میں کیا کمیونزم اور کیا پونجی واد دونوں کا حل دکھائی دیتا ہے .

یہ کیا ؟ کمیونزم اور پونجی واد دونوں کا حل ؟ ہاں' کمیونزم اور پونجی واد میں جہاں کالے سفید کا فرق ہے وہاں دونوں ہی ہتھیاروں یا ہنسا کے ماننے والے ہیں اور پیسے یا سونے کو ہی سب کچھ مانتے ہیں' کانچن مکتی دونوں میں سے کسی میں نہیں ہوتی . آگے چلکر بھلے ہی پیسے یا سونے کا دام یا اہمیت کمیونزم میں کم ہو جائے لیکن ہتھیار یا ہنسا تو اُسکی جان ہے' مانو بنا ہتھیاروں کے تو کمیونسٹ ایک قدم بھی آگے نہیں رکھ

क्यों न हों, से फ़ायदा उठाने की कोशिश करता है. वह तीर की तरह हर चीज़ को चीरता हुआ सीधा चला आयेगा. इसी लिये उसे हर तरह के हथियार चाहियें और हर तरह का सामान व कारख़ाने चाहियें. उसे बड़े बड़े मिल चाहिये और वह सब चीज़ चाहिये जिससे वक़्त बचे और कम से कम समय में ज़ियादा से ज़ियादा नतीजा मिले. इसी वजह से उसे खेती में ट्रैक्टर और कीमिया खाद चाहिये. इसी का नतीजा है कि रूस (और शायद चीन भी) हिंसा में सोलह आने यक़ीन रखता है और साइन्स के हर तरह के औज़ारों से अपने आप को महफ़ूज़ और सजा धजा रखना चाहता है. और जब यह सब चीज़ें उसे चाहियें तो इस सारे सामान को बटोरने, संभालने की ख़ातिर पैसा या सोना उसे आप से आप चाहिये. इस तरह कम्यूनिस्ट पूँजी वाद के ख़िलाफ़ होते हुए भी सोने या पूँजी से प्यार करता है.

सर्वोदय की भाषा एकदम उलटी है. पहली मंज़िल पर पहुँचने के लिये सर्वोदयी हर साधन इस्तेमाल नहीं करेगा. चेतन शक्ति को—सत्य को—वह कभी नहीं भूल सकता. इसलिये उसके हर क़दम में, हर काम में और हर सांस में इसी सत्य पर इसरार होगा, इसी सत्य का आग्रह होगा, यानी जिसे गांधी जी के शब्दों में कहें वह सत्याग्रही होगा. दूसरे को मारना वह बुरा समझता है, इसलिये हथियार उठाना गुनाह मानता है. वह पशुबल या हथियार-बल पर आसरा न करके आत्मबल पर आसरा करता है. वह अपना सारा काम ख़ुद करना चाहता है और गुज़र-बसर के लिये कोई एक धंदा—बेहतर हो कि वह बाप-दादों से चला आने वाला धंदा हो—होशियारी व समझ-बूझ के साथ करने लगेगा. उसे कम से कम चीज़ें चाहियें. उसे यह ख़्वाहिश रहेगी कि कहीं वह दूसरों के दिल को चोट न पहुँचाये, वह चीज़ें वह ख़ुद ही तैयार कर ले. इसलिये सत्याग्रही स्वदेशी का मुरीद होगा, स्वदेश माने अपना देश ही नहीं बल्कि अपने प्रदेश का सूबा, अपना ज़िला, अपना घर, अपने हाथ पैर ख़ुद. इसलिये सर्वोदय में केन्द्री करन (Centralism) की जगह ग़ैर-केन्द्री करन (De-Centralism) रहता है. लेकिन सत्याग्रही अपने हाथ से बनाई हुई चीज़ों को, सचमुच किसी चीज़ को भी, अपनी नहीं समझता, किसी माल पर वह अपनी मिलकियत नहीं मानता. सारा माजरा उस शक्ति का है जिसके इशारे पर आलम चल रहा है. सत्याग्रही के पास जो सामान है वह एक तरह की धरोहर है जो उसे एहतियात के साथ बरतनी है ताकि असली मालिक को वैसी की वैसी वापिस कर सके यहां तक कि उसका शरीर भी सही मानों में उसका अपना नहीं है. सत्य की खोज करने के लिये मिला हुआ एक साधन है

کیوں نہ ہوں، سے فائدہ اُٹھانے کی کوشش کرتا ہے. وہ تیر کی طرح ہر چیز کو چیرتا ہوا سیدھا چلا جائیگا. اِسی لئے اُسے ہر طرح کے ہتھیار چاہئیں اور ہر طرح کا سامان و کارخانے چاہئیں اُسے بڑے بڑے مل چاہئیے اور وہ سب چیز چاہئیے جس سے وقت بچے اور کم سے کم سمے میں زیادہ سے زیادہ نتیجہ ملے. اِسی وجہ سے اُسے کھیتی میں ٹریکٹر اور کیمیا کھاد چاہئیے. اِسی کا نتیجہ ہے کہ روس (اور شاید چین بھی) ہنسا میں سولہ آنے یقین رکھتا ہے اور سائنس کے ہر طرح کے اوزاروں سے اپنے آپ کو محفوظ اور سجا دھجا رکھنا چاہتا ہے. اور جب یہ سب چیزیں اُسے چاہئیں تو اس سارے سامان کو بٹورنے، سنبھالنے کی خاطر پیسہ یا سونا اُسے آپ سے آپ چاہئیے. اس طرح کمیونسٹ پونجی واد کے خلاف ہوتے ہوئے بھی سونے یا پونجی سے پیار کرتا ہے.

سروودے کی بھاشا ایک دم اُلٹی ہے. پہلی منزل پر پہونچنے کے لئے سروودئی ہر سادھن استعمال نہیں کریگا. چیتن شکتی کو—ستیہ کو—وہ کبھی نہیں بھول سکتا. اس لئے اسکے ہر قدم میں، ہر کام میں اور ہر سانس میں اسی ستیہ پر اصرار ہوگا، اسی ستیہ کا آگرہ ہوگا، یعنی جسے گاندھی جی کے شبدوں میں کہیں وہ ستیہ گرہی ہوگا. دوسرے کو مارنا وہ برا سمجھتا ہے، اسلئے ہتھیار اُٹھانا گناہ مانتا ہے. وہ پشوبل یا ہتھیار بل پر آسرا نہ کرکے آتم بل پر آسرا کرتا ہے. وہ اپنا سارا کام خود کرنا چاہتا ہے اور گذر بسر کے لئے کوئی ایک دھندہ—بہتر ہو کہ وہ باپ دادوں سے چلا آنے والا دھندہ ہو—ہوشیاری و سمجھ بوجھ کے ساتھ کرنے لگیگا. اُسے کم سے کم چیزیں چاہئیں. اُسے یہ خواہش رہیگی کہ کہیں وہ دوسروں کے دل کو چوٹ نہ پہونچائے، وہ چیزیں وہ خود ہی تیار کرلے. اس لئے ستیہ گرہی سودیشی کا مرید ہوگا، سودیش معنے اپنا دیش ہی نہیں بلکہ اپنے پردیش کا صوبہ، اپنا ضلع، اپنا گھر، اپنے ہاتھ پیر خود. اس لئے سروودے میں کیندری کرن (Centralism) کی جگہ غیر کیندری کرن (De-Centralism) رہتا ہے. لیکن ستیہ گرہی اپنے ہاتھ سے بنائی ہوئی چیزوں کو، سچ مچ کسی چیز کو بھی، اپنی نہیں سمجھتا، کسی مال پر وہ اپنی ملکیت نہیں مانتا. سارا ماجرا اُس شکتی کا ہے جسکے اشارے عالم چل رہا ہے. ستیہ گرہی کے پاس جو سامان ہے ایک طرح کی دھروہر ہے جو اُسے احتیاط کے ساتھ برتنی ہے تاکہ اصلی مالک کو ویسی کی ویسی واپس کرسکے. یہاں تک کہ اسکا شریر بھی صحیح معنوں میں اُس کا اپنا نہیں ہے. ستیہ کی کھوج کرنے کے لئے ملا ہوا ایک سادھن ہے

और तरह तरह की पूँजी या तानाशाहियों का उतना ही बड़ा दुश्मन है जितना कि कम्यूनिज़्म है. सच तो यह है कि इन के ख़िलाफ़ लड़ाई में सर्वोदय और कम्यूनिज़्म एक तरह से साथ साथ हैं, हालांकि जैसा हम ऊपर देख चुके— दोनों में बुनियादी फ़र्क़ है.

× × × ×

कम्यूनिस्टों के बारे में हमने ऊपर कहा है कि वह हो चुके-पन के पैरोकार हैं. मान लीजिये कि सर्वोदयी भी थोड़ी देर के लिये इस हो चुकेपन को मान लेता है. तब दोनों को मैदान में उतर आना चाहिये और समाज को उसके मुक़र्रर रास्ते पर चलने में मदद देना चाहिये.

दोनों उतर आये, और उन्होंने मदद देने के लिये हाथ लगाना भी शुरू कर दिया. लेकिन शुरू में ही सर्वोदयी को एक मुसीबत का सामना करना पड़ा. वह यह कि वह यह देखता है कि कम्यूनिस्ट अपनी मंज़िल पर पहुँचने के लिये जा बेजा या भले बुरे का ख़याल नहीं करता, जो उसके हाथ लगा उसने उठाया, जो बीच में आया उसे उस ने दे मारा और आगे बढ़ने की हविस रखता है. सर्वोदयी यह सोचता है कि जो चेतन शक्ति मुझमें है वह दूसरे में भी है, मैं इस दूसरे को मारने वाला कौन ? मैं उससे कहूँगा कि मेरे रास्ते से हट जा, मुझे जाने दे, मैं अपनी बात पर इसरार करूंगा, अपनी बात मनवाने के लिये उस पर ज़ोर डालूँगा यहां तक कि अपना खाना पीना भी बंद कर सकता हूँ और यही कोशिश करूंगा कि उसका दिल पसीज जाये और वह मुझे जगह दे; लेकिन ख़ुद उसकी जान नहीं लूँगा, उसे किसी तरह की भी चोट नहीं पहुंचाऊंगा, दिल से उसकी बुराई हरगिज़ नहीं बल्कि भलाई ही चाहूँगा.

यह है कम्यूनिस्ट और सर्वोदय वाले के बीच साधन का फ़र्क़. कम्यूनिस्ट साधन के बारे में कोई परहेज़ नहीं मानता, सर्वोदयी—हालांकि उसकी मंज़िल एक हो—साधन पर ही सब दारोमदार रखता है. मंज़िल पर तो जब पहुँचा जायेगा पहुँचा जायेगा. लेकिन उस मंज़िल पर पहुँचने के लिये रास्ते के सभी क़दम अपनी जगह पर मंज़िल हैं. मगर इस पहली मंज़िल पर पहुंचने के लिये कम्यूनिस्ट धड़ से, चटपट क़दम उठाता है, सर्वोदयी ज़रा दायें बायें, आगे पीछे, ऊपर नीचे देख कर. एक को मार काट से कोई एतराज़ नहीं सिर्फ़ अपनी जान सलामत रहे, दूसरे को मार काट से कोई वास्ता नहीं चाहे अपनी जान ही क्यों न चली जाये. इस तरह दोनों के रास्ते अलग अलग हो जाते हैं. एक कहीं का रह जाता है, दूसरा कहीं का.

जब साधन का परहेज़ कम्यूनिस्ट को नहीं तो वह विज्ञान के तैयार शुदा हर औज़ार, चाहे वह एटम बम ही

طرح طرح کی پونجی یا تانا شاهیوں کا اُتنا هی بڑا
ں هے جتنا که کمیونزم هے . سچ تو یه هے که اِن کے
ہ لڑائی میں سروودے اور کمیونزم ایک طرح سے ساتھ
هیں' حالانکه جیسا هم اوپر دیکھ چکے — دونوں
بنیادی فرق هے .

× × × ×

کمیونسٹوں کے بارے میں هم نے اوپر کہا هے که وہ
ے پن کے پیروکار هیں . مان لیجئے که سروودئی بھی
ں دیر کے لئے اس هو چکے پن کو مان لیتا هے . تب
ں کو میدان میں اُتر آنا چاهئے اور سماج کو اُس کے
راستے پر چلنے میں مدد دینا چاهئے .

دونوں اُتر آئے' اور اُنھوں نے مدد دینے کے لئے هاتھ لگانا
شروع کر دیا . لیکن شروع میں هی سروودئی کو
مصیبت کا سامنا کرنا پڑا . وہ یه که وہ یه دیکھتا
ہ کمیونسٹ اپنی منزل پر پہونچنے کے لئے جا بیجا
لے بُرے کا خیال نهیں کرتا جو اُس کے هاتھ لگا اُس نے
یا' جو بیچ میں آیا سے اُس نے دے مارا اور آگے بڑھنے
موس رکھتا هے . سروودئی یه سوچتا هے که جو چیتن
ی مجھ میں هے وہ دوسرے میں بھی هے' میں اِس
رے کو مارنے والا کون ؟ میں اُس سے کہونگا که میرے
ہ سے هٹ جا' مجھے جانے دے' میں اپنی بات پر
ر کرونگا' اپنی بات منوانے کے لئے اُس پر زور ڈالونگا
ں تک که اپنا کھانا پینا بھی بند کر سکتا هوں اور یہی
ش کرونگا که اُس کا دل پسیج جائے اور وہ مجھے جگه
لیکن خود اُسکی جان نهیں لونگا' اُسے کسی طرح
بھی چوٹ نهیں پہونچاؤنگا' دل سے اُسکی بُرائی هرگز
ں بلکه بھلائی هی چاهونگا .

یه هے کمیونسٹ اور سروودے والے کے بیچ سادھن کا فرق.
نسٹ سادھن کے بارے میں کوئی پرهیز نهیں مانتا'
ودئی — حالانکه اُسکی منزل ایک هو — سادھن پر
سب دارومدار رکھتا هے . منزل پر تو جب پہنچا جائے
پہنچا جائے گا . لیکن اُس منزل پر پہونچنے کے لئے
ے کے سبھی قدم اپنی جگه پر منزل هیں . مگر اس
ی منزل پر پہونچنے کے لئے کمیونسٹ دھڑ سے' چٹ
قدم اُٹھاتا هے' سروودئی ذرا دائیں بائیں' آگے پیچھے'
نیچے دیکھکر . ایک کو مارکاٹ سے کوئی اعتراض نهیں
ف اپنی جان سلامت رهے' دوسرے کو مار کاٹ سے کوئی
طه نهیں چاهے اپنی جان هی کیوں نه چلی جائے .
ں طرح دونوں کے راستے الگ الگ هوجاتے هیں ایک
ں کا رہ جاتا هے' دوسرا کہیں کا .

جب سادھن کا پرهیز کمیونسٹ کو نهیں تو وہ
ان کے تیار شدہ هر اوزار' چاهے وہ ایٹم بم هی

पहुँचे वहीं वह डार्विन लामार्क वग़ैरा या जानवरों की साइन्स के ज़रिये पहुँचे. उस वक़्त सभी साइन्सदां पेड़ पौधों को बे जानदार मानते थे और ऐटम नाम की चीज़ को अटूट और बुनियादी इकाई मानने वाले थे. सारे चांद तारे और सैयारों की हरकत न्यूटन के बताये क़ानून के मुताबिक़ मानते थे. कहने की ज़रूरत नहीं कि बीसवीं सदी के शुरू होते होते जगदीश चन्द्र बसु ने यह साबित कर दिया था कि पेड़ पौधों में भी हमारे जैसी जान और तमीज़ होती है. हेनरी बैकरल ने यह साबित कर दिया था कि ऐटम छिन्न भिन्न किया जा सकता है और यह बुनियादी इकाई हरगिज़ नहीं है. और आइन्सटाइन ने यह साबित कर दिया था कि आसमानी चीज़ों की हरकत कोई आम ढंग से, न्यूटन के उसूलों पर नहीं होती. हमारे कहने का मतलब यह है कि उन्नीसवीं सदी दुनिया के इतिहास में सब से ज़ियादा माद्दा पसंद और माद्दा परस्त थी—कोई अचरज की बात नहीं कि इसी सदी ने माली व इन्सानी दायरे में माद्दे के अलमबरदार कार्ल मार्क्स को भी खड़ा कर दिया. हम यहां यह भी बतादें कि मार्क्स ख़ुद चेले थे फ़ोयर बाख़ के जो सोलह आने माद्देवादी या माटीवादी फ़िलासफ़र था. मार्क्स का कहना है—

"मेरे लिये तो आदर्श नाम की चीज़ इस 'माद्दी दुनिया' के अलावा कुछ भी नहीं है. यह माद्दी दुनिया वही है जो इन्सानी दिमाग़ से ज़ाहिर होती है और तरह तरह के विचारों की शक्ल लेती है."

ज़ाहिर है कि चेतन को मानने वाले को यह विचार किसी तरह भी मन्ज़ूर नहीं हो सकता.

× × × ×

हमने ऊपर कहा है कि उन्नीसवीं सदी के विज्ञानी उसूली क़िले को जगदीश चन्द्र बसु, हेनरी बैकरल और आइन्सटाइन ने ढा दिया. उसी तरह से मार्क्स और लेनिन के माली उसूली क़िले को टालसटाय और गांधी ने ढा दिया, और कम्यूनिज़म के बराबर में सर्वोदय का विचार पेश किया और उस पर अमल कर के उसे पायदार बनाया. लेकिन जिस तरह से मोटे कामों में साइन्स में न्यूटन और लाबुआज़िये वग़ैरा के उसूल बरते जाते हैं, उसी तरह से आम बरताव में कम्यूनिज़म के उसूल की गुँजायश बनी है और हमेशा बनी रहेगी. लेकिन उसका कौन सा पहलू? यही कि अमीर ग़रीब के बीच की दीवारें टूटें. यहां यह भी कह देने की ज़रूरत है कि दुनिया में महज़ सर्वोदय और कम्यूनिज़म की टक्कर तो ऐसी बात नहीं है, बल्कि कम्यूनिज़म के ख़िलाफ़ पूँजीवाद, नाज़ीवाद वग़ैरा दूसरी ताक़तें भी थीं जिनसे उनको मोर्चा लेना था और है. जहां तक सर्वोदय की बात है वह इन पूंजी और दूसरे वादों

پہنچے اُسی پر قانون بنیولجی یا جانوروں کی سائنس کے ذریعے پہونچے . اُس وقت سبھی سائنسدان پیڑ پودھوں کو بے جاندار مانتے تھے اور ایٹم نام کی چیز کو اٹوٹ اور بنیادی اکائی ماننے والے تھے . سارے چاند تارے اور سیاروں کی حرکت نیوٹن کے بتائے قانون کے مطابق مانتے تھے . کہنے کی ضرورت نہیں کہ بیسویں صدی کے شروع ہوتے ہوتے جگدیش چندر بسو نے یہ ثابت کر دیا تھا کہ پیڑ پودھوں میں بھی ہمارے جیسی جان اور تمیز ہوتی ہے . ہینری ویکرل نے یہ ثابت کر دیا تھا کہ ایٹم چھن بھن کیا جاسکتا ہے اور یہ بنیادی اکائی ہرگز نہیں ہے. اور آئنسٹائن نے یہ ثابت کر دیا تھا کہ آسمانی چیزوں کی حرکت کوئی عام ڈھنگ سے، نیوٹن کے اصولوں پر نہیں ہوتی. ہمارے کہنے کا مطلب یہ ہے کہ انیسویں صدی دنیا کے اتہاس میں سب سے زیادہ مادہ پسند اور مادہ پرست تھی — کوئی اچرج کی بات نہیں کہ اسی صدی نے مالی و انسانی دائرے میں مادے کے علمبردار کارل مارکس کو بھی کھڑا کر دیا . ہم یہاں یہ بھی بتادیں کہ مارکس خود چیلے تھے فویر باخ کے جو سولہ آنے مادے وادی یا ماٹی وادی فلاسفر تھا . مارکس کا کہنا ہے —

" میرے لئے تو آدرش نام کی چیز اس ' مادی دنیا ' کے علاوہ کچھ بھی نہیں ہے . یہ مادی دنیا وہی ہے جو انسانی دماغ سے ظاہر ہوتی ہے اور طرح طرح کے وچاروں کی شکل لیتی ہے ."

ظاہر ہے کہ چیتن کو ماننے والے کو یہ وچار کسی طرح بھی منظور نہیں ہوسکتا .

× × × ×

ہم نے اوپر کہا ہے کہ انیسویں صدی کے وگیانی اصولی قلعے کو جگدیش چندر بسو، ہینری ویکرل اور آئنسٹائن نے ڈھا دیا . اسی طرح سے مارکس اور لینن کے مالی اصولی قلعے کو ٹالسٹائے اور گاندھی نے ڈھا دیا، اور کمیونزم کے برابر میں سرودیے کا وچار پیش کیا اور اُس پر عمل کرکے اُسے پائدار بنایا. لیکن جس طرح سے موٹے کاموں میں سائنس میں نیوٹن اور لابوازیئے وغیرہ کے اصول برتے جاتے ہیں، اسی طرح سے عام برتاو میں کمیونزم کے اصول کی گنجائش بنی ہے اور ہمیشہ بنی رہیگی . لیکن اُس کا کون سا پہلو ؟ وہی کہ امیر غریب کے بیچ کی دیواریں ٹوٹیں. یہاں یہ بھی کہ دینے کی ضرورت ہے کہ دنیا میں محض سرودیے اور کمیونزم کی ٹکر تو ایسی بات نہیں ہے، بلکہ کمیونزم کے خلاف پونجی واد، نازی واد وغیرہ دوسری طاقتیں بھی تھیں جن سے اُس کو مورچہ لینا تھا اور ہے . جہاں تک سرودیے کی بات ہے وہ ان پونجی اور دوسرے وادوں

का नतीजा नहीं, बल्कि मां और बच्चे के बीच दूध की ख़ातिर आर्थिक मुक़ाबले में बच्चे की जीत का नतीजा है!

इसी से दोनों में एक और नया फ़र्क़ पैदा हो जाता है—व्यक्ति या फ़र्द और समाज का. कम्यूनिस्ट के लिये व्यक्ति की कोई हस्ती नहीं है, वह तो एक वर्ग या दर्जे या मशीन का पुर्ज़ा है. व्यक्ति आया और गया, लेकिन असल और क़ायम चीज़ समाज है, समाज की ही हस्ती बनी रहती है. और समाज के विकास का रास्ता महज़ एक दर्जे का दूसरे को दबा कर आगे बढ़ना है. अब तक के इतिहास में मुट्ठी भर मालदार लोग लखूखा ग़रीबों को दबाते रहे. अब जब ग़रीबों में अक़्ल आ गई है तो वह यह चीज़ बर्दाश्त न कर के समाज का ढांचा बदल देंगे, ग़रीब अमीर का फ़र्क़ नहीं रहेगा और सब लोग मज़े से अपनी ज़िन्दगी गुज़ार सकेंगे.

इस सिलसिले को जारी रखते हुए कम्यूनिस्ट भाई कहते हैं कि इन्सान का अब तक का सारा इतिहास उनके इस ख़याल की गवाही देता है. इन्सान की कोई अलग अहमियत नहीं है, वह समाजी मशीन का पुर्ज़ा बना हुआ है और इस मशीन का ढंग एक तै शुदा बात है. इन्सान चाहे या न चाहे समाज उस तरफ़ बढ़ रहा है. "मुक़ाबले" के तरीक़े से उसका बढ़ना लगातार जारी है और जारी रहेगा. समाज का यह रास्ता बदला या टाला नहीं जा सकता. इसी को कम्यूनिस्ट भाशा में Determinism यानी होचुकापन कहा जाता है, यानी समाज का यह रास्ता मुक़र्रर या तै हो चुका है, यह बदस्तूर जारी रहेगा.

× × × ×

हमने ऊपर कहा है कि कम्यूनिज़्म विचार को कार्ल मार्क्स नामी ज्ञान वान हस्ती ने जानदार बनाने का काम किया. बरसों की पढ़ाई और सर खपाई के बाद वह इस नतीजे पर पहुँचे थे कि दुनिया का इतिहास वर्गों या दर्जों के आपसी मुक़ाबले की कहानी है, और उसकी जड़ कोई ख़ुदा या परमात्मा या बाहरी शक्ति नहीं बल्कि वे जानदार माद्दा है जो हमेशा हमेशा से ही रहा है जब जानदार चीज़ का नाम भी नहीं था. मार्क्स उन्नीसवीं सदी (1818-1883) के रहने वाले थे. यह वही सदी है जब कोयला, भाप और बाद में बिजली ने अन होनी चीज़ें कर दिखाई थीं, साइन्स या विज्ञान का सितारा बुलन्द था, योरप ख़ूब मालामाल हो रहा था और पैसे या माद्दे का बोल बाला था. उन्हीं दिनों में डार्विन नामक साइन्सदां हुए जिन्होंने यह खोज की कि इन्सान का जन्म किसी ख़ास ताक़त से नहीं हुआ बल्कि इन्सान से पहले आई हुई चीज़ों की आपसी टक्कर या मुक़ाबले के कारन आप से आप हो गया. जिस नतीजे पर मार्क्स माली निगाह से

کا نتیجہ نہیں' بلکہ ماں اور بچے کے بیچ دودھ کی خاطر آرتھک مقابلے میں بچے کی جیت کا نتیجہ ہے!

اسی سے دونوں میں ایک اور نیا فرق پیدا ہوجاتا ہے—ویکتی یا فرد اور سماج کا. کمیونسٹ کے لئے ویکتی کی کوئی ہستی نہیں ہے' وہ تو ایک ورگ یا درجے یا مشین کا پرزہ ہے. ویکتی آیا اور گیا' لیکن اصل اور قائم چیز سماج ہے' سماج کی ہی ہستی بنی رہتی ہے. اور سماج کے وکاس کا راستہ محض ایک درجے کا دوسرے کو دبا کر آگے بڑھنا ہے. اب تک کے اتہاس میں مٹھی بھر مالدار لوگ لکھوکھا غریبوں کو دباتے رہے. اب جب غریبوں میں عقل آگئی ہے تو وہ یہ چیز برداشت نہ کر کے سماج کا ڈھانچا بدل دینگے' غریب امیر کا فرق نہیں رہیگا اور سب لوگ مزے سے اپنی زندگی گذار سکینگے.

اس سلسلے کو جاری رکھتے ہوئے کمیونسٹ بھائی کہتے ہیں کہ انسان کا اب تک کا سارا اتہاس اُن کے اس خیال کی گواہی دیتا ہے. انسان کی کوئی الگ اہمیت نہیں ہے' وہ سماجی مشین کا پرزہ بنا ہوا ہے اور اس مشین کا ڈھنگ ایک طے شدہ بات ہے. انسان چاہے یا نہ چاہے سماج اُس طرف بڑھ رہا ہے. "مقابلے" کے طریقے سے اس کا بڑھنا لگاتار جاری ہے اور جاری رہیگا. سماج کا یہ راستہ بدلا یا ٹالا نہیں جاسکتا. اسی کو کمیونسٹ بھاشا میں Determinism یعنی ہو چکا پن کہا جاتا ہے' یعنی سماج کا راستہ مقرر یا طے ہو چکا ہے' یہ بدستور جاری رہیگا.

× × × ×

ہم نے اوپر کہا ہے کہ کمیونزم وچار کو کارل مارکس نامی گیان وان ہستی نے جاندار بنانے کا کام کیا. برسوں کی پڑھائی اور سر کھپائی کے بعد وہ اس نتیجے پر پہونچے تھے کہ دنیا کا اتہاس ورگوں یا درجوں کے آپسی مقابلے کی کہانی ہے' اور اس کی جڑ کوئی خدا یا پرماتما یا باہری شکتی نہیں بلکہ یے جاندار مادہ ہے جو ہمیشہ ہمیشہ سے ہی رہا ہے جب جاندار چیز کا نام بھی نہیں تھا. مارکس انیسویں صدی (1818-1883) کے رہنے والے تھے. یہ وہی صدی ہے جب کوئلہ' بھاپ اور بعد میں بجلی نے ان ہونی چیزیں کر دکھائی تھیں' سائنس یا وگیان کا ستارہ بلند تھا' یورپ خوب مالا مال ہو رہا تھا اور پیسے یا مادے کا بول بالا تھا. انہیں دنوں میں ڈارون نامک سائنسداں ہوئے جنہوں نے یہ کھوج کی کہ انسان کا جنم کسی خاص طاقت سے نہیں ہوا بلکہ انسان سے پہلے آئی ہوئی چیزوں کی آپسی ٹکر یا مقابلے کے کارن آپ سے آپ ہوگیا. جس نتیجے پر مارکس مالی نگاہ سے

लेकिन जब एक दूसरे के [illegible] या बेतालापन न हो कर एक दूसरे में बैठने या सटने की कोशिश करते हैं. इसी का नतीजा है. कि हमें मन को हर लेने वाला राग सुनने को मिलता है. अगर सुरों में यह बुनियादी मेल या ताल न होता तो राग बनना नामुमकिन था. इसी तरह इस सारी दुनिया के विकास का मेल या ताल है.

ऊपर कही बात से फ़ौरन ही दूसरा सवाल यह पैदा होता है कि आख़िर इस विकास की जड़ क्या है. इस सब की बुनियाद में कोई जानदार चीज़ है या बेजानदार मादृदा है. अब हम सर्वोदय और कम्यूनिज़्म के दूसरे फ़र्क़ पर आ पहुँचे. कम्यूनिस्ट भाई कहते हैं कि सारे विकास की जड़ जड़ है, यानी कोई जानदार चीज़ न हो कर बेजानदार मादृदा ही जड़ है. वह बताते हैं कि हज़ारों लाखों बरस पहले जानदार चीज़ थी ही नहीं, बेजानदार मादृदा ही मादृदा था जिसने आगे चल कर जानदार जीव की शक्ल ले ली. जानदार जीव या जीवन की मां बेजानदार मादृदा ही है. बे जानदार मादृदे से विकास हो कर जानदार जीव आए और इसी तरह हज़रत इन्सान आए. यह सब का सब करिश्मा बे जानदार मादृदे का है जो अपने ख़ास ख़ास ढंगों और शक्लों में ज़ाहिर होता रहता है.

लेकिन सर्वोदय विचार के मुताबिक़ सारे विकास की जड़ जड़ न होकर चेतन या जानदार चीज़ है. सारे मादृदे या जड़ पदार्थ का जन्म चेतन से ही है, या अगर चेतन न हो तो जड़ का पता हरगिज़ नहीं चल सकता. यह चेतन ही जीवन है, यही सत्य है. सत्य ही अटल चीज़ या उसूल है. यह सत्य या आत्मा सब में एकसी रहता है और हमेशा रहती है. बाक़ी सारे रूप या मादृदे इसी सत्य से पैदा हैं. इस सत्य की ख़ूबी यह है कि गो यह सत्य या आत्मा सब में रहता है फिर भी इस की तमीज़ नहीं होती, अकसर तो ज़िन्दगी भर इस की तमीज़ नहीं हो पाती.

इसी चीज़ को लेकर सर्वोदयी और कम्युनिस्ट में आत्मा और मन का भेद है. कम्यूनिस्ट आत्मा को नहीं मानता, मन (matter) को मानता है, सर्वोदयी मन को नहीं मानता, आत्मा को मानता है. इसी वजह से कम्यूनिस्ट 'धर्म' नाम की चीज़ में यक़ीन नहीं रखते और आत्मा, परमात्मा, राम, ईश्वर, अल्लाह, ख़ुदा, जेहुवा, गाड—सब के सब को यह ढोंग या ढकोसला मानते हैं जो इन्सान ने अपना मतलब हल करने के लिये गढ़ रखे हैं. सर्वोदयी को जो चीज़ मज़हबी या धार्मिक, रूहानी या आत्मिक महसूस होती है, कम्यूनिस्ट उसे महज़ आर्थिक संघर्ष का नतीजा मानता है. इनके मुताबिक़ मां का दूध, मां की आत्मा और बच्चे की आत्मा के प्यार

[illegible] جو ایک دوسرے کے خلاف ہو یا بےمیل نہ ہو کر
[illegible] دوسرے میں بیٹھنے یا سٹنے کی کوشش کرتے ہیں ۔
[illegible] نتیجہ ہے کہ ہمیں من کو ہر لینے والا راگ سننے
[illegible] ملتا ہے ۔ اگر سروں میں یہ بنیادی میل یا تال نہ
[illegible] تا تو راگ بننا ناممکن تھا ۔ اسی طرح اس ساری
[illegible] یا کے وکاس کا میل یا تال ہے ۔

اوپر کہی بات سے فوراً ہی دوسرا سوال یہ پیدا ہوتا
[illegible] کہ آخر اس وکاس کی جڑ کیا ہے ۔ اس سب کی بنیاد
[illegible] میں کوئی جان دار چیز ہے یا بے جان دار مادہ ہے ۔
[illegible] ہم سرودے اور کمیونزم کے دوسرے فرق پر آ پہونچے ۔
[illegible] کمیونسٹ بھائی کہتے ہیں کہ سارے وکاس کی جڑ جڑ ہے'
[illegible] یعنی کوئی جاندار چیز نہ ہوکر بے جان دار مادہ ہی
[illegible] جڑ ہے ۔ وہ بتاتے ہیں کہ ہزاروں لاکھوں برس پہلے جان
[illegible] دار چیز تھی ہی نہیں' بے جاندار مادہ ہی مادہ تھا
[illegible] جس نے آگے چل کر جاندار جیو کی شکل لے لی ۔ جان
[illegible] دار جیو یا جیون کی ماں بے جان دار مادہ ہی ہے ۔
[illegible] بے جاندار مادے سے وکاس ہو کر جاندار جیو آئے اور اسی
[illegible] طرح حضرت انسان آئے ۔ یہ سب کا سب کرشمہ بے جان
[illegible] دار مادے کا ہے جو اپنے خاص خاص ڈھنگوں اور شکلوں
[illegible] میں ظاہر ہوتا رہتا ہے ۔

لیکن سرودے وچار کے مطابق سارے وکاس کی جڑ
[illegible] جڑ نہ ہوکر چیتن یا جاندار چیز ہے ۔ سارے مادے یا
[illegible] جڑ پدارتھ کا جنم چیتن سے ہی ہے' یا اگر چیتن نہ ہو
[illegible] تو جڑ کا پتہ ہرگز نہیں چل سکتا ۔ یہ چیتن ہی
[illegible] جیون ہے' یہی ستیہ ہے ۔ ستیہ ہی اٹل چیز یا اصول
[illegible] ہے ۔ یہ ستیہ یا آتما سب میں ایک سی رہتی ہے اور
[illegible] ہمیشہ رہتی ہے ۔ باقی سارے روپ یا مادے اسی ستیہ
[illegible] سے پیدا ہیں ۔ اس ستیہ کی خوبی یہ ہے کہ گو یہ ستیہ
[illegible] یا آتما سب میں رہتا ہے پھر بھی اس کی
[illegible] تمیز نہیں ہوتی' اکثر تو زندگی بھر اس کی تمیز نہیں
[illegible] ہو پاتی ۔

اسی چیز کو لے کر سرودئی اور کمیونسٹ میں آتما
[illegible] اور من کا بھید ہے ۔ کمیونسٹ آتما کو نہیں مانتا' من
[illegible] (matter) کو مانتا ہے' سرودئی من کو نہیں مانتا'
[illegible] آتما کو مانتا ہے ۔ اسی وجہ سے کمیونسٹ ' دھرم ' نام
[illegible] کی چیز میں یقین نہیں رکھتے اور آتما' پرماتما' رام'
[illegible] ایشور' اللہ' خدا' جیہوا' گاڈ — سب کے سب کو یہ
[illegible] ڈھونگ یا ڈھکوسلا مانتے ہیں جو انسان نے اپنا مطلب
[illegible] حل کرنے کے لئے گڑھ رکھے ہیں ۔ سرودئی کو جو چیز مذہبی
[illegible] یا دھارمک' روحانی یا آتمک محسوس ہوتی ہے کمیونسٹ
[illegible] اسے محض آرتھک سنگھرش کا نتیجہ مانتا ہے ۔ ان
[illegible] کے مطابق ماں کا دودھ' ماں کی آتما اور بچے کی آتما کے پیار

ऊपर हमने कहा है कि कम्यूनिस्ट यह मानते हैं कि
[illegible]या लगातार विकास की तरफ़ बढ़ रही है. यह बात
[illegible]दियी भी मंज़ूर करेंगे. लेकिन बड़ा सवाल यह है कि
'विकास' किस तरह हो रहा है. मान लीजिये
[illegible]हाबाद के दशहरे के मौक़े पर रात के चार बजे चौक में
[illegible]केयां देखने के लिये भीड़ लगी है. यह भीड़ लगातार
[illegible]ायमान है. कोई नया आदमी अब देखने पहुँचता है.
भीड़ में घुसेगा और रास्ता बनायेगा यानी बढ़ेगा.
[illegible]र बढ़ने के दो तरीक़े हैं. एक तो यह कि वह हवा पर
[illegible]ार है, दायें बायें, आगे-पीछे सब पर लाठी या दूसरी
[illegible]सी चीज़ से वार करता है, धुंआँधार ऊधम मचाता
[illegible]ा, जो आया उसे दबाता हुआ चला जा रहा है और
[illegible] तरह बढ़ रहा है. दूसरा तरीक़ा यह है कि वह ज़रा
[illegible]मे चलेगा, दायें-बायें, आगे-पीछे प्यार से भाई बंदों से
[illegible]गा—"मुझे भी जगह थोड़ी सी दे दीजिये, मैं भी
[illegible]न कर लूं." वह न किसी पर हाथ उठाता है न भला-
[illegible]ा कहता है. और अगर इस बीच भीड़ में वह पिस
[illegible] गया तब भी राम का नाम लेकर सबर कर लेगा, यह
[illegible]ीं कि आपे से बाहर होकर, आव देखे न ताव और
[illegible]गे बढ़ ही जाये. उसे दर्शन हो गये तो भला, न हो गये
[illegible] भला.

हमारे कम्यूनिस्ट भाइयों का यक़ीन है कि दुनिया में
[illegible]विकास' का पहला वाला तरीक़ा काम कर रहा है.
[illegible]शहरे के मेले की मिसाल लें—उनका कहना है कि सब
[illegible]ादमी एक दूसरे के दुशमन हैं या उनमें छोटे बड़े ऐसे
[illegible]र्ग या दर्जे बन गये हैं कि एक दर्जा दूसरे के ख़ून का प्यासा
[illegible], एक दूसरे को देखना बर्दाश्त नहीं कर सकता. इन दर्जों में
[illegible]मेशा ही "मुक़ाबला" या "संघर्ष" मचा हुआ है और
एक दूसरे को चित करने की कोशिश में हैं. इसी तरह से,
[illegible]न भाइयों का कहना है, दुनिया बढ़ रही है. चीज़ों में
बुनियादी तौर से आपसी तनातनी है. जो वाक़यात होते हैं
उनमें बुनियादी तौर से आपसी टक्कर है. इन विरोधी
चीज़ों में मुक़ाबला हर वक़्त जारी है.

इसके ख़िलाफ़ सर्वोदयी का यह विचार है कि सब
आदमी एक दूसरे के दुशमन नहीं भाई भाई हैं, गो यह
ज़रूर है कि उन के रहन-सहन में इतना फ़र्क़ है कि वह
अलग अलग वर्ग या दर्जे के जैसे लगते हैं. लेकिन यह
एक दूसरे के दुशमन बुनियादी तौर पर नहीं हैं. एक दूसरे
का गला दबा कर वह मूर्ति के दर्शन नहीं करना चाहते,
बल्कि मुहब्बत के साथ, एक दूसरे की सुविधा के ख़याल
के साथ—दर्शन करना चाहते हैं. इस सारे आलम
के पीछे एक सिलसिला है. वह कैसा? जैसा कि
संगीत में होता है. सब सुर अलग अलग रंग के होते हैं

اوپر ہم نے کہا ہے کہ کمیونسٹ یہ مانتے ہیں کہ
دنیا لگاتار وکاس کی طرف بڑھ رہی ہے ۔ یہ بات سرودئی
بھی منظور کرینگے ۔ لیکن بڑا سوال یہ ہے کہ یہ 'وکاس'
کس طرح ہو رہا ہے ۔ مان لیجئے الہ آباد کے دشہرے کے
موقعے پر رات کے چار بجے چوک میں چوکیاں دیکھنے کے
لئے بھیڑ لگی ہے ۔ یہ بھیڑ لگاتار چلائمان ہے ۔ کوئی نیا
آدمی اب دیکھنے پہنچتا ہے ۔ وہ بھیڑ میں گھسے گا اور
راستہ بنائے گا یعنی بڑھے گا ۔ مگر بڑھنے کے دو طریقے
ہیں ۔ ایک تو یہ کہ وہ ہوا پر سوار ہے' دائیں بائیں'
آگے پیچھے سب پر لاٹھی یا دوسری کسی چیز سے وار کرتا
ہے' دھواں دھار اودھم مچاتا ہوا' جو آیا اسے دباتا ہوا چلا
جا رہا ہے اور اس طرح بڑھ رہا ہے ۔ دوسرا طریقہ یہ ہے کہ
وہ ذرا دھیمے چلے گا' دائیں بائیں' آگے پیچھے پیار سے
بھائی بندوں سے کہے گا — " مجھے بھی جگہ تھوڑی سی
دیدیجئے' میں بھی درشن کر لوں ۔" وہ نہ کسی پر ہاتھ
اٹھاتا ہے نہ بھلا برا کہتا ہے ۔ اور اگر اس بیچ بھیڑ میں
وہ پس بھی گیا تب بھی رام کا نام لے کر صبر کرلے گا' یہ
نہیں کہ آپے سے باہر ہوکر' آو دیکھے نہ تاو اور آگے بڑھ ہی
جائے ۔ اسے درشن ہوگئے تو بھلا' نہ ہوگئے تو بھلا ۔

ہمارے کمیونسٹ بھائیوں کا یقین ہے کہ دنیا میں
' وکاس ' کا پہلا والا طریقہ کام کر رہا ہے ۔ دشہرے کے میلے
کی مثال لیں— اُن کا کہنا ہے کہ سب آدمی ایک دوسرے
کے دشمن ہیں یا اُن میں چھوٹے بڑے ایسے ورگ یا
درجے بن گئے ہیں کہ ایک درجہ دوسرے کے خون کا پیاسا ہے'
ایک دوسرے کو دیکھنا برداشت نہیں کر سکتا. اِن
درجوں میں ہمیشہ ہی " مقابلہ " یا " سنگھرش "
مچا ہوا ہے اور ایک دوسرے کو چت کرنے کی کوشش
میں ہیں ۔ اسی طرح سے' اُن بھائیوں کا کہنا ہے' دنیا
بڑھ رہی ہے ۔ چیزوں میں بنیادی طور سے آپسی تنا تنی
ہے ۔ جو واقعات ہوتے ہیں اُن میں بنیادی طور سے آپسی
ٹکر ہے ۔ ان ورودھی چیزوں میں مقابلہ ہر وقت
جاری ہے ۔

اس کے خلاف سرودئی کا یہ وچار ہے کہ سب آدمی
ایک دوسرے کے دشمن نہیں بھائی بھائی ہیں' گو یہ
ضرور ہے کہ اُن کے رہن سہن میں اتنا فرق ہے کہ وہ الگ
الگ ورگ یا درجے کے جیسے لگتے ہیں ۔ لیکن یہ ایک
دوسرے کے دشمن بنیادی طور پر نہیں ہیں ۔ ایک
دوسرے کا گلا دبا کر یہ مورتی کے درشن نہیں کرنا چاہتے' بلکہ
محبت کے ساتھ' ایک دوسرے کی سویدھا کے خیال کے
ساتھ—درشن کرنا چاہتے ہیں ۔ اس سارے عالم کے
پیچھے ایک سلسلہ ہے. وہ کیسا ؟ جیسا کہ سنگیت میں
ہوتا ہے ۔ سب سر الگ الگ رنگ کے ہوتے ہیں

चिड़िया को सोना या आराम नसीब नहीं होता. लेकिन इस पर भी सुबह को जब वह उठती है तो पिछली रात से गई गुज़री हालत उसकी होती है. लाखों करोड़ों को तो मानो हर दम रात है, हर दम जागरन करना है. यह एक बहुत ही दर्द भरी हालत है जो बयान के बाहर है और जिसका अन्दाज़ अनुभव करने पर ही मिल सकता है. मैंने देखा कि दुखी प्रानियों के दिल को कबीर के एक भजन से दिलासा दिला सकना नामुमकिन है. भूके पेट को तो बस एक भजन चाहिये—जानदार रोटी. और यह रोटी उन्हें ख़ैरात में नहीं मिल सकती, बल्कि उन्हें अपनी कमाई से पानी चाहिये. और कमाई तभी कर सकेंगे जब सर का पसीना एड़ी तक बहा देंगे."

इससे ज़ियादा किसी का दिल दूसरों के लिये क्या तड़प सकता है? ऐसा दिल कब ऊंच-नीच या अमीर ग़रीब के भोंडे फ़र्क़ बर्दाश्त कर सकता है? इसी वजह से गांधी जी ने अपने ख़याल को 'सर्वोदय' नाम से ज़ाहिर किया. सर्वोदय माने सब का उदय, सब का उरूज, सब की तरक़्क़ी, सब की बेहतरी—सब की, चाहे वह राजा हो या रंक, ज़मींदार हो या किसान, पूंजीपति हो या मज़दूर, ब्राह्मन हो या भंगी, कैसा ही क्यों न हो. और बेहतरी—महज़ रुपये-पैसे पा लेना नहीं, बल्कि जिस्म की, दिमाग़ की, चाल चलन की, आत्मा या रूह की, सारे जीवन की, जीवन के हर छोटे से छोटे और बड़े से बड़े पहलू की—हर तरह से बेहतरी.

कम्यूनिस्ट भी अमीर ग़रीब के बीच की दीवार को तबाहकुन और समाज के लिये घातक मानते हैं. उनका यह बुनियादी ख़याल है कि यह दीवारें एक दम गिरा देनी चाहियें और जब तक आपस में भेद-भाव रहेगा इन्सानी हस्ती को अमन चैन नहीं मिल सकता.

सर्वोदय और कम्यूनिज़्म में दूसरी चीज़ जो एक सी है वह उसूली पहलू से वास्ता रखती है. वह यह कि यह सारी सृष्टि या कायनात एक मिली जुली चीज़ है, एक इकाई की तरह है. इसमें जो घटनायें और बातें होती हैं उनका असर एक दूसरे पर, सारी दुनिया पर पड़ता है. साथ ही साथ, यह दुनिया कोई ठस हालत में नहीं है बल्कि लगातार चलायमान है जिसमें आने-जाने या जीने-मरने का मेला हर दम लगा रहता है. इसके अलावा एक बात यह भी है कि दुनिया जो लगातार चलती है तो विकास या तरक़्क़ी की तरफ़, नीचाई से ऊंचाई की तरफ़ चलती है!

× × × ×

अब हम दोनों के उसूली फ़र्क़ को लें.

چڑیا کو سونا یا آرام نصیب نہیں ہوتا. لیکن اس پر بھی صبح کو جب وہ اٹھتی ہے تو پچھلی رات سے گئی گذری حالت اسکی ہوتی ہے. لاکھوں کروڑوں کو تو مانو ہر دم رات ہے' ہردم جاگرن کرنا ہے. یہ ایک بہت ہی درد بھری حالت ہے جو بیان کے باہر ہے اور جس کا انداز انوبھو کرنے پر ہی مل سکتا ہے. میں نے دیکھا کہ دکھی پرانیوں کے دل کو کبیر کے ایک بھجن سے دلاسا دلاسکنا ناممکن ہے. بھوکے پیٹ کو تو بس ایک بھجن چاہئے — جاندار روٹی. اور یہ روٹی انہیں خیرات میں نہیں مل سکتی' بلکہ انہیں اپنی کمائی سے پانی چاہئے. اور کمائی تبھی کر سکینگے جب سر کا پسینہ ایڑی تک بہا دینگے."

اس سے زیادہ کسی کا دل دوسروں کے لئے کیا تڑپ سکتا ہے؟ ایسا دل کب اونچ نیچ یا امیر غریب کے بھونڈے فرق برداشت کر سکتا ہے؟ اسی وجہ سے گاندھی جی نے اپنے خیال کو 'سروودے' نام سے ظاہر کیا. سروودے معنے سب کا ادے' سب کا عروج' سب کی ترقی' سب کی بہتری — سب کی' چاہے وہ راجہ ہو یا رنک' زمیندار ہو یا کسان' پونجی پتی ہو یا مزدور' براہمن ہو یا بھنگی' کیسا ہی کیوں نہ ہو. اور بہتری — محض روپے پیسے پالینا نہیں' بلکہ جسم کی' دماغ کی' چال چلن کی' آتما یا روح کی' سارے جیون کی' جیون کے ہر چھوٹے سے چھوٹے اور بڑے سے بڑے پہلو کی — ہر طرح سے بہتری.

کمیونسٹ بھی امیر غریب کے بیچ کی دیوار کو تباہ کن اور سماج کے لئے گھاتک مانتے ہیں. ان کا یہ بنیادی خیال ہے کہ یہ دیواریں ایک دم گرا دینی چاہئیں اور جب تک آپس میں بھید بھاؤ رہے گا انسانی ہستی کو امن چین نہیں مل سکتا.

سروودے اور کمیونزم میں دوسری چیز جو ایک سی ہے وہ اصولی پہلو سے واسطہ رکھتی ہے. وہ یہ ہے کہ یہ ساری سرشٹی یا کائنات ایک ملی جلی چیز ہے' ایک اکائی کی طرح ہے. اس میں جو گھٹنائیں اور باتیں ہوتی ہیں ان کا اثر ایک دوسرے پر' ساری دنیا پر پڑتا ہے. ساتھ ہی ساتھ' یہ دنیا کوئی ٹھس حالت میں نہیں ہے بلکہ لگاتار چلائے مان ہے جس میں آنے جانے یا جینے مرنے کا میلہ ہر دم لگا رہتا ہے. اسکے علاوہ ایک بات یہ بھی ہے کہ دنیا جو لگاتار چلتی ہے تو وکاس یا ترقی کی طرف' نیچائی سے اونچائی کی طرف چلتی ہے!

× × × ×

اب ہم دونوں کے اصولی فرق کو لیں.

र्क नहीं है, सिर्फ़ साधन पर ज़ोर अलग अलग है. ांधीवाद का आधार अहिंसा है और कम्यूनिस्ट किसी ास साधन पर इसरार नहीं करते. मोटे तौर पर इस ीज़ को लोग इस तरह ज़ाहिर करते हैं—

कम्यूनिज़्म—अहिंसा = गांधीवाद...........(1) कशोरलाल भाई की किताब का मक़सद यही है कि यह ज़बरदस्त ग़लत-फ़हमी दूर हो. मनचले लोग तो यहां तक कहते हैं जिसकी मुराद यह है.

गांधीवाद—अहिंसा = कम्यूनिज़्म.....................(2) पेशतर इसके कि हम दोनों उसूलों की गहराई पर ग़ौर करें हम यह कह देना चाहते हैं कि ऊपर के दोनों हिसाब सरासर ग़लत हैं. दूसरे की एक शकल यह भले हो सकती है—

गांधीवाद—अहिंसा = 0..............(3) और पहले की यह है—

गांधीवाद + अहिंसा = × (बेमाने).............(4) चौथे और पहले हिसाबों से ही यह साफ़ हो जाता है कि गांधीवाद या सर्वोदय (आगे हम सर्वोदय लफ़्ज़ का ही इस्तेमाल करेंगे क्योंकि असल में गांधी जी की हस्ती को गांधीवाद के घेरे में नहीं बांध कर रखा जा सकता) और कम्यूनिज़्म में कितना बड़ा और कहां तक का फ़र्क़ है.

× × × ×

सर्वोदय और कम्यूनिज़्म के फ़र्क़ पर ग़ौर करने के पहले हम यह बतादें कि दोनों में कहां तक बातें एक सी हैं. सब से पहली चीज़ जो हमें दोनों में बराबर मिलती है वह है ग़रीब या दीन दुखी के लिये दर्द. ग़रीब और अमीर के बीच जो आज ज़बरदस्त दीवार खड़ी है और अमीर जो ग़रीब का शोशन दिन दूने रात चौगने जाने-अनजाने करता है यह बात न कम्यूनिस्टों को गवारा है न सर्वोदयी को. गांधी जी ने 1946 ने कहा था—

"वर्ग वर्ग में और जनता में, राजा में और रंक में जो हैरतनाक भेद है उसे जायज़ ठहराना या यह कहना कि राजा की ज़रूरत ही ज़ियादा के लिये है बेकार की दलील है और मेरी बात का मज़ाक़ उड़ाना है.........आज जो अमीर ग़रीब में फ़र्क़ है उससे मेरे दिल को भारी चोट लगती है. विदेशी सरकार और अपने शहर के भाई बन्धु मिल कर ग़रीब देहातियों का आज शोशन कर रहे हैं.........यह कितना शर्मनाक है ?"

हिन्दुस्तान की दर्द नाक ग़रीबी के बारे में लिखते हुए 1921 में गांधी जी ने लिखा था—

"हिन्दुस्तानी आसमान के नीचे रहने वाली इन्सानी

فرق نہیں ہے' صرف سادھن پر زور الگ الگ ہے . گاندھی واد کا آدھار اہنسا ہے اور کمیونسٹ کسی خاص سادھن پر اصرار نہیں کرتے . موٹے طور پر اس چیز کو لوگ اس طرح ظاہر کرتے ہیں —

کمیونزم—اہنسا = گاندھی واد ...... (1) کشور لال بھائی کی کتاب کا مقصد یہی ہے کہ یہ زبردست غلط فہمی دور ہو . منچلے لوگ تو یہاں تک کہتے ہیں جس کی مراد یہ ہے—

گاندھی واد — اہنسا = کمیونزم . ..... (2) پیشتر اسکے کہ ہم دونوں اصولوں کی گہرائی پر غور کریں ہم یہ کہہ دینا چاہتے ہیں کہ اوپر کے دونوں حساب سراسر غلط ہیں . دوسرے کی ایک شکل یہ بھلے ہوسکتی ہے—

گاندھی واد — اہنسا = 0 ... (3) اور پہلے کی یہ ہے —

گاندھی واد + اہنسا = × (بے معنے) ... (4) چوتھے اور پہلے حسابوں سے ہی یہ صاف ہوجاتا ہے کہ گاندھی واد یا سروودے (آگے ہم سروودے لفظ کا ہی استعمال کرینگے کیونکہ اصل میں گاندھی جی کی ہستی کو گاندھی واد کے گھیرے میں نہیں باندھ کر رکھا جا سکتا) اور کمیونزم میں کتنا بڑا اور کہاں تک کا فرق ہے .

× × × ×

سروودے اور کمیونزم کے فرق پر غور کرنے کے پہلے ہم یہ بتا دیں کہ دونوں میں کہاں تک باتیں ایک سی ہیں . سب سے پہلی چیز جو ہمیں دونوں میں برابر ملتی ہے وہ ہے غریب یا دین دکھی کے لئے درد . غریب اور امیر کے بیچ جو آج زبردست دیوار کھڑی ہے اور امیر جو غریب کا شوشن دن دونے رات چوگنے جانے انجانے کرتا ہے یہ بات نہ کمیونسٹوں کو گوارا ہے نہ سروودئی کو . گاندھی جی نے 1946 میں کہا تھا —

" ورگ ورگ میں اور جنتا میں' راجہ میں اور رنک میں جو حیرت ناک بھید ہے اسے جائز ٹھہرانا یا یہ کہنا کہ راجہ کی ضرورت ہی زیادہ کے لئے ہے بیکار کی دلیل ہے اور میری بات کا مذاق اڑانا ہے .... آج جو امیر غریب میں فرق ہے اس سے میرے دل کو بھاری چوٹ لگتی ہے . ودیشی سرکار اور اپنے شہر کے بھائی بندھو مل کر غریب دیہاتیوں کا آج شوشن کر رہے ہیں .... یہ کتنا شرمناک ہے ؟"

ہندستان کی درد ناک غریبی کے بارے میں لکھتے ہوئے 1921 میں گاندھی جی نے لکھا تھا —

" ہندستانی آسمان کے نیچے رہنے والی انسانی

कम्यूनिज़म से हमारे यहां के लोग बहुत कम वाक़िफ़ हैं, लेकिन कम्यूनिस्ट के बारे में यह ख़याल जम गया है कि यह वाक़ई कुछ कर सकने वालों की टोली है और—क्योंकि रूस व चीन के नक़शे आंखों के सामने आते ही हैं—यह लोग सचमुच हालत में तबदीली ला सकते हैं.

कहने की ज़रूरत नहीं कि जिन महात्मा गांधी ने हिन्दुस्तान में तूफ़ान मचा दिया, अंग्रेज़ी हुकूमत जैसी ताक़तवर हुकूमत के छक्के छुड़ा दिये और दुनिया के सामने पशुबल या अहिंसा के मुक़ाबले आत्म बल या अहिंसा का झंडा खड़ा कर के दिखा दिया, उनके चलाये 'सर्वोदय' पर तो उनके देश वासियों को आप से आप श्रद्धा पैदा होती है. लेकिन आज जिसे देखिये वही 'सर्वोदय' का नारा लगा रहा है—क्या कांग्रेस, क्या किसान मज़दूर प्रजा पारटी, क्या सोशलिस्ट, क्या जन संघी—सभी इसका दम भरते हैं. यही नहीं, कभी कभी तो कम्यूनिस्ट भी अपने को सर्वोदय का हामी कहते हैं. नतीजा यह है कि कोई साफ़ तस्वीर लोगों के सामने नहीं है कि आख़िर सर्वोदय क्या है या गांधी जी क्या चाहते थे और कम्यूनिस्ट क्या चाहते हैं या कम्यूनिज़म क्या है. ख़ुशी की बात है कि यह तसवीर बहुत सफ़ाई और ख़ूबसूरती के साथ हाल ही में श्री किशोरलाल मशरूवाला ने अपनी किताब 'गांधी ऐन्ड मार्क्स' में पेश की है और जो हिन्दी गुजराती में 'गांधी और साम्यवाद'※ नाम से निकली है. ऊपर से सोने में सुहागा यह कि इस किताब की भूमिका आचार्य विनोबा ने लिखी है. पूरी किताब में किशोरलाल भाई के लिखे 56 सफ़े हैं, 34 विनोबा जी के लिखे और बाक़ी 18 सफ़े अपैनडिक्स के हैं जिनमें किशोरलाल भाई और गांधी जी के सेक्रेटरी प्यारे लाल भाई के चार लेख हैं जो गांधी जी के सामने छप चुके थे. इस तरह हम इस किताब को विनोबा जी और किशोरलाल भाई दोनों के विचारों का इज़हार मानते हैं, जिन्हों ने मिलकर हमेशा के लिये एक इमारत खड़ी करदी है. आज इस वक़्त जहां तक हमारी जानकारी है हमारे देश में इन दोनों महारथियों के मुक़ाबले गांधी जी को ज़ियादा समझने और उनकी राह पर बेहतर चलने वाले दूसरे लोग नहीं हैं. हम तो यहां तक कहेंगे कि गांधी जी या गांधीवाद के बारे में जो यह नहीं जानते वह कोई दूसरा नहीं जानता. इस किताब को हम विनोबा जी और किशोरलाल भाई की ठोस व बेहतरीन सेवा का नमूना मानते हैं.

आमतौर से यह कहा जाता है कि कम्यूनिज़म और गांधी जी की बातों में जहां तक मक़सद का सवाल है कोई

※ यह किताब नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद ने छापी है.

کمیونزم سے ہمارے یہاں کے لوگ بہت کم واقف ہیں، لیکن کمیونسٹ کے بارے میں یہ خیال جم گیا ہے کہ یہ واقعی کچھ کر سکنے والوں کی ٹولی ہے اور — کیونکہ روس و چین کے نقشے آنکھوں کے سامنے آتے ہی ہیں — یہ لوگ سچ مچ حالت میں تبدیلی لاسکتے ہیں.

کہنے کی ضرورت نہیں کہ جن مہاتما گاندھی نے ہندوستان میں طوفان مچا دیا، انگریزی حکومت جیسی طاقتور حکومت کے چھکے چھڑا دیئے اور دنیا کے سامنے پشوبل یا ہنسا کے مقابلے آتم بل یا اہنسا کا جھنڈا کھڑا کر کے دکھا دیا، ان کے چلائے 'سرودے' پر تو ان کے دیش واسیوں کو آپ سے آپ شردھا پیدا ہوتی ہے. لیکن آج جسے دیکھئے وہی 'سرودے' کا نعرہ لگا رہا ہے — کیا کانگریس، کیا کسان مزدور پرجا پارٹی، کیا سوشلسٹ، کیا جن سنگھی — سبھی اس کا دم بھرتے ہیں. یہی نہیں، کبھی کبھی تو کمیونسٹ بھی اپنے کو سرودے کا حامی کہتے ہیں. نتیجہ یہ ہے کہ کوئی صاف تصویر لوگوں کے سامنے نہیں ہے کہ آخر سرودے کیا ہے یا گاندھی جی کیا چاہتے تھے اور کمیونسٹ کیا چاہتے ہیں یا کمیونزم کیا ہے. خوشی کی بات ہے کہ یہ تصویر بہت صفائی اور خوبصورتی کے ساتھ حال ہی میں شری کشور لال مشرو والا نے اپنی کتاب 'گاندھی اینڈ مارکس' میں پیش کی ہے اور جو ہندی گجراتی میں 'گاندھی اور سامیہ واد'* نام سے نکلی ہے. اوپر سے سونے میں سہاگا یہ کہ اس کتاب کی بھومکا آچاریہ ونوبا نے لکھی ہے. پوری کتاب میں کشور لال بھائی کے لکھے 56 صفحے ہیں، 34 ونوبا جی کے لکھے اور باقی 18 صفحے اپینڈکس کے ہیں جن میں کشور لال بھائی اور گاندھی جی کے سکریٹری پیارے لال بھائی کے چار لیکھ ہیں جو گاندھی جی کے سامنے چھپ چکے تھے. اس طرح ہم اس کتاب کو ونوبا جی اور کشور لال بھائی دونوں کے وچاروں کا اظہار مانتے ہیں، جنہوں نے ملکر ہمیشہ کے لئے ایک عمارت کھڑی کر دی ہے. آج اس وقت جہاں تک ہماری جانکاری ہے ہمارے دیش میں ان دونوں مہارتھیوں کے مقابلے گاندھی جی کو زیادہ سمجھنے اور ان کی راہ پر بہتر چلنے والے دوسرے لوگ نہیں ہیں. ہم تو یہاں تک کہینگے کہ گاندھی جی یا گاندھی واد کے بارے میں جو یہ نہیں جانتے وہ کوئی دوسرا نہیں جانتا. اس کتاب کو ہم ونوبا جی اور کشور لال بھائی کی ٹھوس و بہترین سیوا کا نمونہ مانتے ہیں.

عام طور سے یہ کہا جاتا ہے کہ کمیونزم اور گاندھی جی کی باتوں میں جہاں تک مقصد کا سوال ہے کوئی

* یہ کتاب نوجیون پرکاشن مندر احمدآباد نے چھاپی ہے.

न हो वह धोके की टट्टी है, गुलाह है. यह बात सब लोग महसूस भी करते हैं और इसलिये इस तबाही को दूर करने के लिये अमली रूप से क़दम उठाना चाहते हैं. अब सवाल यह है कि वह क़दम कैसा और क्या हो. यह बहुत बड़ा सवाल है जिससे हिन्दुस्तान के लाखों करोड़ों की ही नहीं बल्कि सारी दुनिया की बेहतरी का वास्ता है.

ज़ाहिर है कि मौजूदा सरकार से किसी को कोई आस ज़रा भी नहीं है कि वह जनता के दर्द को दूर करेगी. लिहाज़ा आम पबलिक में से ही कोई ताक़त उठनी है जो इस तरफ़ कुछ काम कर सकेगी. थोड़े अरसे से दो नाम लोगों की ज़बान पर आने शुरू हुए हैं—एक सर्वोदय और दूसरा कम्यूनिस्ट. पहला शब्द एक विचार है, दूसरा एक ख़ास तरह के लोगों का नाम है. पहला शब्द महात्मा गांधी की ईजाद है, दूसरा अंग्रेज़ी भाषा का यूं तो बहुत पुराना शब्द है मगर उसमें जान डालने का काम एक नामी जर्मन ज्ञानवान आचार्य ने किया जो कार्ल मार्क्स नाम से सरनाम है. सर्वोदय विचार महात्मा गांधी ने पेश किया, अपने ढंग से पचास पचपन बरस तक उस पर अमल किया और उसके आधार पर दक्खिनी अफ़्रीक़ा और हिन्दुस्तान में बड़ी बड़ी हुकूमतों से टक्करें लीं. हज़ारों लाखों लोग इन टक्करों में शरीक हुए जिन्होंने बड़ी से बड़ी क़ुरबानियां कर के अपने पैदायशी अधिकार वापिस लिये. कम्यूनिस्ट उन लोगों का नाम है जो कम्यूनिज़्म नाम के उसूल में यक़ीन रखते हैं. यह वही उसूल है जिस पर कार्ल मार्क्स की नसीहतों के मुताबिक़ अमल करके लोगों ने रूस में 1917 में इन्क़लाब किया और लेनिन नामी बुलन्द हस्ती ने दुनिया में सब से पहली कम्यूनिस्ट हुकूमत रूस में क़ायम की जो अब तक क़ायम है. यह वही उसूल है जिसकी रोशनी में काम कर के अभी दो बरस ही हुए चीन में माओत्से नामी बहादुर शख़्सियत ने कम्यूनिस्ट सरकार क़ायम की और बेहाल, बदहवास, बहकी हुई जनता की काया पलट दी. इसी उसूल के पैरोकार कम्यूनिस्ट भाइयों ने हिन्दुस्तान में भी जगह जगह जनता के बीच कुछ सेवा कर के अपना असर क़ायम किया है, ख़ास कर हैदराबाद रियासत के पूर्वी हिस्से में जहां की मातृ भाषा तेलुगू होने की वजह से उसे तेलंगाना कहा जाता है और जिनका दावा है कि हम समाज के अन्दर से छोटे बड़े ऊंच नीच के भेद ख़तम करके एक वर्ग हीन समाज बनाना चाहते हैं जिसमें सब को रोटी, कपड़ा, मकान मिलेगा और सब ख़ुशी ख़ुशी रह सकेंगे. लेकिन कम्यूनिस्ट भाइयों का काम कुछ इस तरह दौड़ धूप, लुकने छिपने का रहा है कि वह खुल कर कोई चीज़ या नमूना हिन्दुस्तान की जनता के आगे नहीं रख सके हैं. यही वजह है कि

ہ هو وہ دهوکے کی ٹٹی هے' گناہ هے . یہ بات سب لوگ محسوس بهي کرتے هیں اور اس لئے اس تباهی کو دور کرنے کے لئے عملی روپ سے قدم اٹھانا چاهتے هیں . اب سوال یہ هے کہ وہ قدم کیسا اور کیا هو . یہ بہت بڑا سوال هے جس سے هندستان کے لاکھوں کروڑوں کي هی نہیں بلکہ ساری دنیا کی بہتری کا واسطہ هے .

ظاهر هے کہ موجودہ سرکار سے کسی کو کوئی آس ذرا ‌ی نہیں هے کہ وہ جنتا کے درد کو دور کرے گی . لہذا ‌ام پبلک میں سے هی کوئی طاقت اٹھنی هے جو اس ‌طرف کچھ کام کر سکیگی . تھوڑے عرصے سے دو نام ‌وگوں کی زبان پر آنے شروع هوئے هیں — ایک سرودے ‌ور دوسرا کمیونسٹ . پہلا شبد ایک وچار هے' دوسرا ‌یک خاص طرح کے لوگوں کا نام هے . پہلا شبد مہاتما ‌اندھی کی ایجاد هے' دوسرا انگریزی بھاشا کا یوں تو بہت ‌رانا شبد هے مگر اس میں جان ڈالنے کا کام ایک نامی ‌جرمن گیان وان آچاریہ نے کیا جو کارل مارکس نام سے سر ‌ام هے . سرودے وچار مہاتما گاندھی نے پیش کیا' اپنے ‌ھنگ سے پچاس پچپن برس تک اس پر عمل کیا اور ‌سکے آدھار پر دکھنی افریقہ اور هندستان میں بڑی بڑی ‌حکومتوں سے ٹکریں لیں . هزاروں لاکھوں لوگ ان ٹکروں ‌میں شریک هوئے جنھوں نے بڑی سے بڑی قربانیاں کرکے اپنے ‌پیدائشی ادھیکار واپس لئے . کمیونسٹ ان لوگوں کا نام ‌ہے جو کمیونزم نام کے اصول میں یقین رکھتے هیں . یہ ‌وهي اصول هے جس پر کارل مارکس کی نصیحتوں کے ‌مطابق عمل کر کے لوگوں نے روس میں 1917 میں ‌انقلاب کیا اور لینن نامی بلند هستی نے دنیا میں سب ‌سے پہلی کمیونسٹ حکومت روس میں قائم کی جو اب ‌تک قائم هے . یہ وهی اصول هے جس کی روشنی میں کام ‌کر کے ابھي دو برس هی هوئے چین میں ماؤتسے نامی ‌بہادر شخصیت نے کمیونسٹ سرکار قائم کی اور بے حال' ‌بد حواس' بہکی هوئی جنتا کی کایا پلٹ دی . اسی ‌اصول کے پیروکار کمیونسٹ بھائیوں نے هندستان میں بھی ‌جگہ جگہ جنتا کے بیچ کچھ سیوا کر کے اپنا اثر قائم کیا ‌ہے' خاص کر حیدرآباد ریاست کے پوربی حصے میں جہاں ‌کی ماتر بھاشا تیلگو هونے کی وجہ سے اسے تیلنگانہ کہا ‌جاتا هے اور جن کا دعوی هے کہ هم سماج کے اندر سے چھوٹے ‌بڑے اونچ نیچ کے بھید ختم کر کے ایک ورگ هین سماج ‌بنانا چاهتے هیں جس میں سب کو روٹی' کپڑا' مکان ‌ملے گا اور سب خوشی خوشی رہ سکینگے . لیکن کمیونسٹ ‌بھائیوں کا کام کچھ اس طرح دوڑ دھوپ' لکنے چھپنے کا ‌رہا هے کہ وہ کھل کر کوئی چیز یا نمونہ هندستان کی ‌جنتا کے آگے نہیں رکھ سکے هیں . یہی وجہ هے کہ

सर्वोदय और कम्यूनिस्ट

हमारे हिन्दुस्तान में क्या, विदेश में क्या, सब जगह का समाज दो मोटे हिस्सों में बँटा है. एक की तादाद कम है लेकिन उसके पास पैसा है, दौलत है और ताक़त है. दूसरे हिस्से की तादाद बहुत ज़ियादा है लेकिन उसके पास न पैसा है न दौलत और न ताक़त. मगर दुखी दोनों हिस्सों के लोग हैं क्योंकि मालदार लोगों के पास जो कुछ भी है वह उनके पेट को पूरा नहीं पड़ता और उन्हें दिन दूना रात चौगना चाहिये ताकि उनकी उमंगें पूरी हो सकें, और ग़रीब लोग तो फिर ग़रीब हैं ही, उनको तो सचमुच दो जून खाना मुशकिल से नसीब होता है. दोनों खेंचतान करते हैं कि हमारे पल्ले कुछ और पड़ जाये और हमारा काम बने. इन्सान के सारे इतिहास को इस कशमकश की कहानी एक तरह से कहा जा सकता है.

मसल मशहूर है कि पांचों उंगलियां एक सी नहीं होतीं. लेकिन उनमें जो फ़र्क़ है वह कितना थोड़ा है यह सब जानते हैं. इसी तरह समाज के लोगों की हालत में थोड़ा बहुत फ़र्क़ हो तो कोई शिकायत की बात नहीं, लेकिन अगर ज़मीन आसमान का भेद हो तो फिर वह हालत बर्दाश्त के बाहर हो जाती है. बदक़िस्मती से हमारे देश में यह फ़र्क़ ज़मीन आसमान के फ़र्क़ से भी बढ़कर है. जब अंग्रेज़ी हुकूमत यहां थी तो यह समझा जाता था कि यह फ़र्क़ उसने कर रखा है. इसलिये ले दे कर सब लोग उसे हटाने में लग गए. मगर उसके हटने के बाद अपनी ही सरकार आई तो यह फ़र्क़ किसी तरह भी कम नहीं हुआ. रईस रईस होते चले जा रहे हैं और ग़रीब ग़रीब. उलटे चीज़ों के दाम इतने चढ़ गए कि मामूली ज़रूरतें पूरी होना भी दुशवार हो गया और आम जनता की निगाह में आज़ादी न मिली बरबादी मिली. मौजूदा सरकार हैरान है और लाख कोशिश करने पर भी इस चक्कर से नहीं निकल पा रही है. इसके ख़िलाफ़ वह विदेशों से अनाज की भीक मांग मांग कर और पैसा उधार ले लेकर अपने देश को एक तरह से गिरवी रखे दे रही है. कोई सूरत सरकारी हलक़े में ऐसी नज़र नहीं आती जिससे यह उम्मीद हो कि यह तबाही भी ख़तम होगी और दिन पलटेंगे.

क़ुदरत का यह अमिट क़ानून है कि जो चीज़ शुरू होती है वह ख़तम भी होती है. तो यह तबाही या बरबादी भी एक न एक दिन ख़तम होगी. मगर इस आशा को मन में बांधकर या इसके पूरा होने के लिये दुआ मिन्नतें करने भर से काम नहीं चल सकता. जिस दुआ के पीछे अमल

سروودے اور کمیونسٹ

ہمارے ہندستان میں کیا، ودیش میں کیا، سب جگہ کا سماج دو موٹے حصوں میں بٹا ہے ۔ ایک کی تعداد کم ہے لیکن اُس کے پاس پیسہ ہے، دولت ہے اور طاقت ہے ۔ دوسرے حصے کی تعداد بہت زیادہ ہے لیکن اُس کے پاس نہ پیسہ ہے نہ دولت اور نہ طاقت ۔ مگر دکھی دونوں حصوں کے لوگ ہیں کیونکہ مالدار لوگوں کے پاس جو کچھ بھی ہے وہ اُن کے پیٹ کو پورا نہیں پڑتا اور انہیں دن دونا رات چوگنا چاہئے تاکہ اُن کی اُمنگیں پوری ہو سکیں، اور غریب لوگ تو پھر غریب ہیں ہی، اُن کو تو سچ مچ دو جون کھانا مشکل سے نصیب ہوتا ہے ۔ دونوں کھینچ تان کرتے ہیں کہ ہمارے پلے کچھ اور پڑ جائے اور ہمارا کام بنے ۔ انسان کے سارے اِتہاس کو اس کشمکش کی کہانی ایک طرح سے کہا جا سکتا ہے ۔

مثل مشہور ہے کہ پانچوں اُنگلیاں ایک سی نہیں ہوتیں۔ لیکن اُن میں جو فرق ہے وہ کتنا تھوڑا ہے یہ سب جانتے ہیں ۔ اسی طرح سماج کے لوگوں کی حالت میں تھوڑا بہت فرق ہو تو کوئی شکایت کی بات نہیں، لیکن اگر زمین آسمان کا بھید ہو تو پھر وہ حالت برداشت کے باہر ہوجاتی ہے ۔ بدقسمتی سے ہمارے دیش میں یہ فرق زمین آسمان کے فرق سے بھی بڑھکر ہے ۔ جب انگریزی حکومت یہاں تھی تو یہ سمجھا جاتا تھا کہ یہ فرق اُس نے کر رکھا ہے ۔ اس لئے لے دے کر سب لوگ اُسے ہٹانے میں لگ گئے ۔ مگر اُس کے ہٹنے کے بعد اپنی ہی سرکار آئی تو یہ فرق کسی طرح بھی کم نہیں ہوا ۔ رئیس رئیس ہوتے چلے جا رہے ہیں اور غریب غریب ۔ اُلٹے چیزوں کے دام اتنے چڑھ گئے کہ معمولی ضرورتیں پوری ہونا بھی دشوار ہوگیا اور عام جنتا کی نگاہ میں آزادی نہ ملی بربادی ملی ۔ موجودہ سرکار حیران ہے اور لاکھ کوشش کرنے پر بھی اِس چکر سے نہیں نکل پا رہی ہے ۔ اس کے خلاف وہ دیشوں سے اناج کی بھیک مانگ کر اور پیسہ اُدھار لے لے کر اپنے دیش کو ایک طرح سے گروی رکھے دے رہی ہے ۔ کوئی صورت سرکاری حلقے میں ایسی نظر نہیں آتی جس سے یہ اُمید ہو کہ یہ تباہی بھی ختم ہوگی اور دن پلٹیں گے ۔

قدرت کا یہ اَمٹ قانون ہے کہ جو چیز شروع ہوتی ہے وہ ختم بھی ہوتی ہے ۔ تو یہ تباہی یا بربادی بھی ایک نہ ایک دن ختم ہوگی ۔ مگر اس آشا کو من میں باندھ کر یا اس کے پورا ہونے کے لئے دعا منتیں کرنے بھر سے کام نہیں چل سکتا ۔ جس دعا کے پیچھے عمل

पहचान अहिन्सा की है यह,
जो हिन्सा से बढ़ कर रन ले,
दाबें उंगली सब दांत तले,
जब वह धन दे, तन दे, मन दे.

पहचान अहिन्सा की है यह
जिसको सब ही होवें अपने,
जो सह न सके अन्याय कभी
जो आँख न दे उससे झपने.

पहचान अहिन्सा की है यह
जो प्रानों को प्रानी माने,
दुख को मेटे, क्यों दे नौबत,
प्रानों के जाने की आने.

पहचान अहिन्सा की है यह
जो लेती ही आराम नहीं,
फिर रहे लड़ाई, अमन रहे,
उसका तो घटता काम नहीं.

पहचान अहिन्सा की है यह
जो पग पग पर देखे काँटे,
फिर बड़े रहें या हों छोटे,
पुचकारे, मुस्कादे, डाँटे.

पहचान अहिन्सा की है यह
जो प्रेमामृत में डूबी हो,
जो न्याय, दया, सच, जोड़ सके
जिस में ऐसी भी ख़ूबी हो.

पहचान अहिन्सा की है यह
जो लिये जा रही हो हमको,
काँटों में, मगर तसल्ली भी
जो दिये जा रही हो हमको.

पहचान अहिन्सा की है यह
जो रब का हमें पथ दिखलाए,
खोटे रस्ते पर चले नहीं
सच की ख़ातिर जो मिट जाए.

—भगवानदीन

پہچان اہنسا کی ہے یہ،
جو ہنسا سے بڑھ کر رن لے،
دابیں انگلی سب دانت تلے،
جب وہ دھن دے، تن دے، من دے۔

پہچان اہنسا کی ہے یہ
جس کو سب ہی ہوویں اپنے،
جو سہہ نہ سکے انیائے کبھی
جو آنکھ نہ دے اُس سے جھپنے۔

پہچان اہنسا کی ہے یہ
جو پرانوں کو پرانی مانے،
دکھ کو میٹے، کیوں دے نوبت،
پرانوں کے جانے کی آنے۔

پہچان اہنسا کی ہے یہ
جو لیتی ہی آرام نہیں،
پھر رہے لڑائی، امن رہے،
اُس کا تو گھٹتا کام نہیں۔

پہچان اہنسا کی ہے یہ
جو پگ پگ پر دیکھے کانٹے،
پھر بڑے رہیں یا ہوں چھوٹے،
پچکارے، مسکادے، ڈانٹے۔

پہچان اہنسا کی ہے یہ
جو پریم امرت میں ڈوبی ہو،
جو نیائے، دیا، سچ، جوڑ سکے
جس میں ایسی بھی خوبی ہو۔

پہچان اہنسا کی ہے یہ
جو لئے جا رہی ہو ہم کو،
کانٹوں میں، مگر تسلی بھی
جو دیئے جا رہی ہو ہم کو۔

پہچان اہنسا کی ہے یہ
جو رب کا ہمیں پتھ دکھلائے،
کھوٹے رستے پر چلے نہیں
سچ کی خاطر جو مٹ جائے۔

— بھگوان دین

नया हिन्द

نیا ہند

जिल्द 11 नवम्बर, सन् '51 नम्बर 5

جلد 11 نومبر، سن '51 نمبر 5

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

अहिन्सा भक्तों से

सौ बार तसल्ली दिल को दो
संतोश करो, हाँ, सब्र करो,
औरों को तसल्ली तो दो ही
सौ जब्र सहो मत जब्र करो.

बद्कारों को तुम गले लगा
बद्कारी उनकी पी डालो,
तुम तो दो उनको नेक बना
उनकी नेकी में जी डालो.

नेकों को बढ़ने दो आगे
उनकी जग पर जय होने दो,
हिन्सा, चोरी, बद्कारी को
अपनी अपनी पत खोने दो.

हिन्सा के पाँव न जमने दो
पर कायरता का ध्यान रहे!

वह कहीं अहिन्सा देवि बनी
न जमाती झूटी शान रहे!

पुज ही जाती है कायरता,
हाँ, पहन अहिन्सा का चोला,
लाती ही है बदनामी वह,
[illegible] पर, कर उनको पोला.

اہنسا بھکتوں سے

سو بار تسلی دل کو دو
سنتوش کرو، ہاں، صبر کرو،
اوروں کو تسلی تو دو ہی
سو جبر سہو مت جبر کرو.

بدکاروں کو تم گلے لگا
بدکاری اُن کی پی ڈالو،
تم تو دو اُن کو نیک بنا
اُن کی نیکی میں جی ڈالو.

نیکوں کو بڑھنے دو آگے
اُن کی جگ پر جے ہونے دو،
ہنسا، چوری، بدکاری کو
اپنی اپنی پت کھونے دو.

ہنسا کے پاؤں نہ جمنے دو
پر کایرتا کا دھیان رہے!

وہ کہیں اہنسا دیوی بنی
نہ جماتی جھوٹی شان رہے!

پج ہی جاتی ہے کایرتا،
ہاں، پہن اہنسا کا چولا،
لاتی ہی ہے بدنامی وہ،
ملکوں پر، کر اُن کو [illegible].

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

नवम्बर 1951

क्या किससे — सफ़ा

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

نومبر 1951

کیا کس سے — صفحہ

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल. एक परचा दस आने.

मैनेजर 'नया हिन्द'

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

قیمت — ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے۔

مینیجر "نیا ہند"

145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

गीता और क़ुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों हवाले दे दे कर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को ान किया गया है.

इसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को र गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को ान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर ायतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया ा है कि क़ुरान में जेहाद, आक़बत, आख़रत, जन्नत, ज़ख़, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या ू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को र पढ़ना चाहिये.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की मत सिर्फ़ ढाई रुपया.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस में वह चार लेक्चर जमा कर दिये गये हैं जो त जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर ाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और का इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

گیتا اور قرآن

لیکھک—پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے۔

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے۔

آخر میں قرآن سے پہلے کی عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے۔ اس میں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے۔ یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے۔

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ۔

ہندو مسلم ایکتا

اس میں وہ چار لیکچر جمع کر دئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیئٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے۔

سو صفحے کی کتاب۔ قیمت صرف بارہ آنے۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک—پنڈت سندر لال

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا۔

قیمت بارہ آنے۔

ने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी की किताबें

नीचे लिखी सब किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती हैं. जो किताब एक ही लिखावट में छपी है उसका ज़िकर कर दिया गया है.

दस रुपए से ज़्यादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायगी.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

نیچے لکھی سب کتابیں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہیں ۔ جو کتاب ایک ہی لکھاوٹ میں چھپی ہے اُس کا ذکر کر دیا گیا ہے ۔

دس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں اور بکسیلروں کو خاص رعایت دی جائیگی ۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمہ ہوگا ۔

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन् 1950 से सारे भारत में लागू हुआ

'भारत में अंगरेजी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेजी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले.

यदि आप आने वाले आम चुनाव में, जिस पर भारत का सारा भविष्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आज़ाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो ज़रूरी है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आसानी के लिये किताब के आख़ीर में हिन्दी से अंगरेज़ी और अंगरेज़ी से हिन्दी साठ पन्ने की शब्दमाला दे दी गई है.

भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا۔

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انووادت ۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اِس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھ لے ۔

یدی آپ آنے والے عام چناؤ میں' جس پر بھارت کا سارا بھوشیہ نربھر ہے' سمجھ کر حصہ لینا چاہتے ہیں اور آزاد بھارت میں اپنے ادھیکار سمجھنا چاہتے ہیں تو ضروری ہے آپ اس پستک کو دھیان سے پڑھ لیں ۔

آسانی کے لئے کتاب کے آخیر میں ہندی سے انگریزی اور انگریزی سے ہندی ساٹھ پنے کی شبد مالا دے دی گئی ہے ۔

بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے ۔

آسان بامحاورہ بھاشا ۔ رایل اٹھ پیجی بڑا سائز ۔ لگ بھگ چار سو پنے ۔ کپڑے کی سندر جلد ۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے ۔

अगर सचमुच आज चीन आज़ाद न हुआ होता और उस ताक़त के हाथ में होता जो अमरीका के हाथ में खेल रही थी तो हिन्दुस्तान की वह शान न होती जो एशिया में उसको आज हासिल है. और इसमें भी कोई शक नहीं कि जापान के गिर जाने के बाद चीन की आज की आज़ादी इतनी मज़बूत न होती अगर हिन्दुस्तान बरतानिया की मुट्ठी में होता. असल में हिन्दुस्तान की आज़ादी और मज़बूती चीन की आज़ादी और मज़बूती है. चीन की आज़ादी और मज़बूती हिन्दुस्तान की आज़ादी और मज़बूती है. हिन्दुस्तान के पास, अगर वह सलाह देने की हैसियत रखता है और अगर चीन उसे इस क़ाबिल समझता है कि वह हिन्दुस्तान से सलाह ले, तो हिन्दुस्तान यही सलाह दे सकता है कि बस दुनिया में अमन रखने के लिये किसी ब्लाक में न फंसो. और उस बात के कहने से कभी न डरो जिस बात के कहने से दुनिया में अमन और शान्ति क़ायम रह सकती है.

हिन्दुस्तानी क़ौम के बापने अमन की बेदी पर जान देदी थी. हिन्दुस्तान भी अमन की बेदी पर जान देना पसन्द करता है और यही सबक़ चीन को दे सकता है और यही उसकी भेंट है जो चीन की आज़ादी के नए बरस के दिन वह चीन को दे रहा है.

25. 9. '51. — भगवानदीन

नया प्रेस बिल—

अगस्त की आख़री तारीख़ को नई दिल्ली की पार्लिमेन्ट में हमारे होम मिनिस्टर ने एक नया प्रेस बिल पेश किया है जिसकी बिना पर सरकार हिन्दुस्तान के अख़बारों और लिखने वालों को एक नए शिकंजे में कसना चाहती है या सरकार के पहलू से देखा जाय तो नए सांचे में ढालना चाहती है. हिन्दुस्तान का शायद ही कोई समझदार अख़बार होगा जिसने इस बिल की तरफ़दारी की हो. क्या सम्पादक मंडल कानफ़रेन्स, क्या पत्रकार मंडल फ़ेडरेशन, सभी ने इसका विरोध किया है. लेकिन एक लायक़ वकील की तरह हुकूमत की तरफ़ से उसकी पैरवी होती चली जा रही है और हुकूमत की पारटी के मेम्बर—पार्लिमेन्ट तो फिर एक तरह की रखैल होती ही है—उसके पीछे हैं. हमें नहीं मालूम कि इस बिल की भी गत हिन्दू कोड बिल की तरह तो नहीं होगी. मगर इसमें कोई भी शुबहा नहीं कि एक आज़ाद जमहूरी देश के लिये ऐसा प्रेस बिल उसके माथे पर कलंक का टीका है.

—सुरेश राम भाई

اگر سچ مچ آج چین آزاد نہ ہوا ہوتا اور اس طاقت کے ہاتھ میں ہوتا جو امریکہ کے ہاتھ میں کھیل رہی تھی تو ہندستان کی وہ شان نہ ہوتی جو ایشیا میں اس کو آج حاصل ہے. اور اس میں بھی کوئی شک نہیں کہ جاپان کے گر جانے کے بعد چین کی آج کی آزادی اتنی مضبوط نہ ہوتی اگر ہندستان برطانیہ کی مٹھی میں ہوتا. اصل میں ہندستان کی آزادی اور مضبوطی چین کی آزادی اور مضبوطی ہے. چین کی آزادی اور مضبوطی ہندستان کی آزادی اور مضبوطی ہے. ہندستان کے پاس، اگر وہ صلاح دینے کی حیثیت رکھتا ہے اور اگر چین اسے اس قابل سمجھتا ہے کہ وہ ہندستان سے صلاح لے، تو ہندستان یہی صلاح دے سکتا ہے کہ بس دنیا میں امن رکھنے کے لئے کسی بلاک میں نہ پھنسو. اور اس بات کے کہنے سے کبھی نہ ڈرو جس بات کے کہنے سے دنیا میں امن اور شانتی قائم رہ سکتی ہے.

ہندستانی قوم کے باپ نے امن کی ویدی پر جان دے دی تھی. ہندستان بھی امن کی ویدی پر جان دینا پسند کرتا ہے اور یہی سبق چین کو دے سکتا ہے اور یہی اس کی بھینٹ ہے جو چین کی آزادی کے نئے برس کے دن وہ چین کو دے رہا ہے.

25-9-'51 — بھگوان دین

نیا پریس بل—

اگست کی آخری تاریخ کو نئی دلی کی پارلیمنٹ میں ہمارے ہوم منسٹر نے ایک نیا پریس بل پیش کیا ہے جسکی بنا پر سرکار ہندستان کے اخباروں اور لکھنے والوں کو ایک نئے شکنجے میں کسنا چاہتی ہے یا سرکار کے پہلو سے دیکھا جائے تو نئے سانچے میں ڈھالنا چاہتی ہے. ہندستان کا شاید ہی کوئی سمجھدار اخبار ہوگا جس نے اس بل کی طرفداری کی ہو. کیا سمپادک منڈل کانفرنس، کیا پترکار منڈل فیڈریشن، سبھی نے اس کا ورودھ کیا ہے لیکن ایک لائق وکیل کی طرح حکومت کی طرف سے اسکی پیروی ہوتی چلی جارہی ہے اور حکومت کی پارٹی کے ممبر—پارلیمنٹ تو پھر ایک طرح کی رکھیل ہوتی ہی ہے — اسکے پیچھے ہیں. ہمیں نہیں معلوم کہ اس بل کی بھی گت ہندو کوڈ بل کی طرح تو نہیں ہوگی. مگر اسمیں کوئی بھی شبہ نہیں کہ ایک آزاد جمہوری دیش کے لئے ایسا پریس بل اسکے ماتھے پر کلنک کا ٹیکہ ہے.

—سریش رام بھائی

अन्धेरा था. हिन्दुस्तान खुद आज़ाद न था. उन दिनों का चीन बरतानिया और अमरीका के हाथ में खेल रहा था और उस बरतानिया के हाथ में जो हिन्दुस्तान की छाती पर सवार था. और उस अमरीका के हाथ में जिसकी हिन्दुस्तान के लिये राल टपक रही थी.

हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ पर उसकी आज़ादी ऐसी न थी जिसके ऊपर खड़ा होकर हिन्दुस्तान वह शानदार जगह ले सके जो एशिया में जापान को मिली हुई थी. इसी अन्धेरे में एशिया महाद्वीप में एक चमक नज़र आई और वह चमक ही चीन की आज़ादी की शकल में टिकने वाली चांदनी का रूप ले बैठी.

आज चीन उसी चांदनी में विदेशियों की ग़ुलामी से क़रीब क़रीब सारा आज़ाद हो चुका है. बस दो एक कांटे ही ऐसे रह गए हैं जो उसके पांव में चुभ रहे हैं.

चीन की बहादुर जनता ने चीन को सिर्फ़ आज़ाद ही नहीं किया बलिक उसको इख़लाक़ी गुनों में इतना ऊंचा उठा दिया है कि अमरीका और दो एक मुलकों को छोड़ दुनिया के सभी मुलकों ने उसको आज़ाद क़बूल कर लिया है और उसके इख़लाक़ की तारीफ़ करते हैं.

चीन की आज़ादी से हिन्दुस्तान की आज़ादी को ऐसी ख़ुराक मिली और बराबर मिल रही है जिसकी वजह से हिन्दुस्तान की आज़ादी में जो नुक़्स रह गए थे वह आपो आप दूर होते जा रहे हैं और बहुत थोड़ी कोशिश से ही हिन्दुस्तान उस रुतबे की तरफ़ बढ़ता चला जा रहा है जो कभी जापान को हासिल था. इसमें कोई शक नहीं कि चीन की आज़ादी ने हिन्दुस्तान की उस हैरानी को एक दम दूर कर दिया जो हिन्दुस्तान को जापान के ग़ुलाम हो जाने से हो गई थी.

पहली अक्तूबर को चीन अपनी आज़ादी का दूसरा बरस ख़तम करके तीसरे बरस में क़दम रक्खेगा और उसी दिन चीन अपनी राजधानी पेकिंग में धूम धाम से एक जलसा मनायगा जिसमें हिन्दुस्तान से गया हुआ पीसमिशन हिस्सा लेगा और हिस्सा लेकर यह साबित करेगा कि हिन्दुस्तान की जनता और चीन की जनता कलचरी ख़याल से उतनी ही पास है जितने दो भाई हों. जनता हम इसलिये कह रहे हैं कि जो शान्ति मिशन यहां से गया है वह चीन की जनता का ही बुलाया हुआ है. और जो यहां से गए हैं वह भी जनता की संस्थाओं के भेजे हुए आदमी हैं. उस मिशन में इस 'नया हिन्द' के एडीटर पंडित सुन्दर लाल भी शामिल हैं और उनके वापस आने पर 'नया हिन्द' के परिवार को ज़रूर वहां के मुफ़स्सिल हालात आगे के नम्बरों में पढ़ने को मिलेंगे.

اندھیرا تھا۔ ہندستان خود آزاد نہ تھا۔ اُن دنوں کا چین برطانیہ اور امریکہ کے ہاتھ میں کھیل رہا تھا اور اُس برطانیہ کے ہاتھ میں جو ہندستان کی چھاتی پر سوار تھا اور اُس امریکہ کے ہاتھ میں جس کی ہندستان کے لئے رال ٹپک رہی تھی۔

ہندستان آزاد ہوا پر اُس کی آزادی ایسی نہ تھی جس کے اوپر کھڑا ہو کر ہندستان وہ شاندار جگہ لے سکے جو ایشیا میں جاپان کو ملی ہوئی تھی۔ اِسی اندھیرے میں ایشیا مہا دیپ میں ایک چمک نظر آئی اور وہ چمک ہی چین کی آزادی کی شکل میں ٹکنے والی چاندنی کا روپ لے بیٹھی۔

آج چین اُسی چاندنی میں ودیشیوں کی غلامی سے قریب قریب سارا آزاد ہو چکا ہے۔ بس دو ایک کانٹے ہی ایسے رہ گئے ہیں جو اس کے پاؤں میں چبھ رہے ہیں۔

چین کی بہادر جنتا نے چین کو صرف آزاد ہی نہیں کیا بلکہ اس کو اخلاقی گنوں میں اتنا اونچا اُٹھا دیا ہے کہ امریکہ اور دو ایک ملکوں کو چھوڑ دنیا کے سبھی ملکوں نے اُس کو آزاد قبول کر لیا ہے اور اُس کے اخلاق کی تعریف کرتے ہیں۔

چین کی آزادی سے ہندستان کی آزادی کو ایسی خوراک ملی اور برابر مل رہی ہے جس کی وجہ سے ہندستان کی آزادی میں جو نقص رہ گئے تھے وہ آپو آپ دور ہوتے جا رہے ہیں اور بہت تھوڑی کوشش سے ہی ہندستان اُس رتبے کی طرف بڑھتا چلا جا رہا ہے جو کبھی جاپان کو حاصل تھا۔ اِس میں کوئی شک نہیں کہ چین کی آزادی نے ہندستان کی اُس حیرانی کو ایک دم دور کر دیا جو ہندستان کو جاپان کے غلام ہو جانے سے ہو گئی تھی۔

پہلی اکتوبر کو چین اپنی آزادی کا دوسرا برس ختم کرکے تیسرے برس میں قدم رکھے گا اور اُسی دن چین اپنی راجدھانی پیکنگ میں دھوم دھام سے ایک جلسہ منائے گا جس میں ہندستان سے گیا ہوا پیس مشن حصہ لے گا اور حصہ لے کر یہ ثابت کرے گا کہ ہندستان کی جنتا اور چین کی جنتا کلچری خیال سے اُتنی ہی پاس ہے جتنے دو بھائی ہوں۔ جنتا ہم اس لئے کہہ رہے ہیں کہ جو شانتی مشن یہاں سے گیا ہے وہ چین کی جنتا کا ہی بلایا ہوا ہے۔ اور جو یہاں سے گئے ہیں وہ بھی جنتا کی سنستھاؤں کے بھیجے ہوئے آدمی ہیں۔ اُس مشن میں اِس 'نیا ہند' کے ایڈیٹر پنڈت سندر لال بھی شامل ہیں اور اُن کے واپس آنے پر 'نیا ہند' کے پریوار کو ضرور وہاں کے مفصل حالات آگے کے نمبروں میں پڑھنے کو ملیں گے۔

चीन की आज़ादी ने हमारे दिल पर यह बात पत्थर की लकीर की तरह अमिट बना दी कि बहुत से ऐब मुल्कों में सिर्फ़ ग़ुलामी की वजह से हुआ करते हैं और वह ऐब ग़ुलामी के ख़त्म होने के बाद अगर फ़ौरन ही नहीं मिट जाते तो कुछ दिनों में ज़रूर मिट जाते हैं. सैकड़ों बुरी आदतों के लिये बदनाम चीन आज उन बुरी आदतों से इतना दूर हो गया है कि बरसों पुराने आज़ाद मुल्क उस साल भर की उमर वाले मुल्क से सबक़ ले सकते हैं. इसे तो हम चमत्कार कहें, करिश्मा कहें या जादू कहें कि साल भर पहले भूकों मरने वाला चीन दूसरों की भूक मिटाने के लिये खुले हाथों मदद करने के लिये तैयार मिलता है. एक साल में चीन की यह काया पलट !

इसमें कोई शक नहीं जापान ने कोरिया दबा रक्खा था, चीन पर बड़े ज़ुल्म कर रहा था. और इसमें भी कोई शक नहीं कि जापान के ज़ुल्म उन ज़ुल्मों से बढ़ कर थे जो बरतानिया ने मोपला ट्रेन ट्रेजिडी, जलियान वाला बाग़, चिमूर आश्टी हत्या कान्ड और बलिया बरबादी नाम से हिन्दुस्तान में किये थे, या जो और पच्छिमी मुल्क अपने मातहत मुल्कों पर कर रहे थे. और जापान को वैसा करना भी चाहिये था क्योंकि उसने इन ज़ुल्मों की कला सीखी भी तो इन पच्छिमी मुल्कों से थी.

इसमें शक नहीं जापान अपने ज़माने में बड़ा ज़ालिम रहा. पर सभी धाक जमाने वाले मुल्क ज़ालिम ही हुआ करते हैं. इसलिये ज़ुल्म की ऐसी बात जो सभी मुल्कों में यकसां पाई जाती है अगर निकाल दी जाय तो जापान और दूसरे मुल्कों जैसा ही रह जाता है. और फिर यह कहना ही पड़ेगा कि जापान अपने ज़माने में एशिया की शान था. अपने गिरने से पहले वह रूस जैसे बड़े मुल्क का दोस्त था. और उसी रूस का दोस्त था जिसे आज अमरीका अपने लिये ख़तरा समझता है और अमरीका और बरतानिया जैसे बड़े मुल्कों से दुश्मनी मोल ले बैठा था. और इसमें शक नहीं कि वह इन दोनों दुश्मनों से न जाने कब तक और लोहा लेता अगर एटम बम जैसी ग़ैर क़ानूनी चीज़ उसके मुल्क पर न गिराई गई होती.

जापान के हार जाने और एक दम ग़ुलाम हो जाने से उस समय की हिन्दुस्तान की विदेशी अंगरेज़ी सरकार भले ही ख़ुश हुई हो पर हिन्दुस्तानी जनता का दिल तो एक दम बैठ गया था. जापान की हार के वक़्त हिन्दुस्तानियों में एशियाई ख़ून जोश मारने लगा था और इस वजह से हिन्दुस्तानियों को जापान से हमदर्दी पैदा हो गई थी और उसी हमदर्दी की वजह से उनके दिल से एक सर्द आह निकल गई थी कि जापान के गिरने से एशिया की शान गिर गई. और अब हिन्दुस्तानियों की आंखों के सामने एक

چین کی آزادی نے ہمارے دل پر یہ بات پتھر کی لکیر کی طرح اَمِٹ بنا دی کہ بہت سے عیب ملکوں میں صرف غلامی کی وجہ سے ہوا کرتے ہیں اور وہ عیب غلامی کے ختم ہونے کے بعد اگر فوراً ہی نہیں مٹ جاتے تو کچھ دنوں میں ضرور مٹ جاتے ہیں ۔ سیکڑوں بری عادتوں کے لئے بدنام چین آج اُن بری عادتوں سے اتنا دور ہو گیا ہے کہ برسوں پرانے آزاد ملک اُس سال بھر کی عمر والے ملک سے سبق لے سکتے ہیں ۔ اِسے تو ہم چمتکار کہیں، کرشمہ کہیں یا جادو کہیں کہ سال بھر پہلے بھوکوں مرنے والا چین دوسروں کی بھوک مٹانے کے لئے کھلے ہاتھوں مدد کرنے کے لئے تیار ملتا ہے ۔ ایک سال میں چین کی یہ کایا پلٹ !

اس میں کوئی شک نہیں جاپان نے کوریا دبا رکھا تھا، چین پر بڑے ظلم کر رہا تھا ۔ اور اس میں بھی کوئی شک نہیں کہ جاپان کے ظلم اُن ظلموں سے بڑھکر تھے جو برطانیہ نے موپلا ٹرین ٹریجیڈی، جلیان والا باغ، چمور آشٹی ہتیا کانڈ اور بلیا بربادی نام سے ہندستان میں کئے تھے، یا جو اور پچھمی ملک اپنے ماتحت ملکوں پر کر رہے تھے ۔ اور جاپان کو ویسا کرنا بھی چاہئے تھا کیوں کہ اُس نے اِن ظلموں کی کلا سیکھی بھی تو اِن پچھمی ملکوں سے تھی ۔

اِس میں شک نہیں جاپان اپنے زمانے میں بڑا ظالم رہا ۔ پر سبھی دھاک جمانے والے ملک ظالم ہی ہوا کرتے ہیں ۔ اِس لئے ظلم کی ایسی بات جو سبھی ملکوں میں یکساں پائی جاتی ہے اگر نکال دی جائے تو جاپان اور دوسرے ملکوں جیسا ہی رہ جاتا ہے ۔ اور پھر یہ کہنا ہی پڑے گا کہ جاپان اپنے زمانے میں ایشیا کی شان تھا ۔ اپنے گرنے سے پہلے وہ روس جیسے بڑے ملک کا دوست تھا ۔ اور اُسی روس کا دوست تھا جسے آج امریکہ اپنے لئے خطرہ سمجھتا ہے اور امریکہ اور برطانیہ جیسے بڑے ملکوں سے دشمنی مول لے بیٹھا تھا ۔ اور اِس میں شک نہیں کہ وہ اِن دونوں دشمنوں سے نہ جانے کب تک اور لوہا لیتا اگر ایٹم بم جیسی غیر قانونی چیز اُس کے ملک پر نہ گرائی گئی ہوتی ۔

جاپان کے ہار جانے اور ایک دم غلام ہوجانے سے اُس سمے کی ہندستان کی ودیشی انگریزی سرکار بھلے ہی خوش ہوئی ہو پر ہندستانی جنتا کا دل تو ایک دم بیٹھ گیا تھا ۔ جاپان کی ہار کے وقت ہندستانیوں میں ایشیائی خون جوش مارنے لگا تھا اور اس وجہ سے ہندستانیوں کو جاپان سے ہمدردی پیدا ہوگئی تھی اور اُسی ہمدردی کی وجہ سے اُن کے دل سے ایک سرد آہ نکل گئی تھی کہ جاپان کے گرنے سے ایشیا کی شان گر گئی ۔ اور اب ہندستانیوں کی آنکھوں کے سامنے ایک

के क़ायम करने में तीसरा नम्बर है. अमरीका और ब्रिटेन के बाद सब में ज़्यादा पैसा इसमें चीन ने ही लगाया है. इसलिये इतने नुमायां मेम्बर के ख़िलाफ़ पाबन्दी लगाना सरासर नाइनसाफ़ी है. हमें नहीं मालूम कि चीन को ख़ुद वर्ल्ड बैंक से कितनी मदद की तमन्ना है, लेकिन जो भी हो, वर्ल्ड बैंक का इस तरह हाथ खींच लेना शराफ़त से हटी हुई हरकत है और इनसानी भाई चारे के ख़िलाफ़ है.

मगर हम यह भी बता दें कि अगर दुनिया के साहूकार यह सपना देखते हों कि इस तरह उत्तर कोरिया व चीन का गला दबाकर वह उनसे तोबा बुलवालेंगे तो वह एक झूटा सपना देख रहे हैं जिसका आंखें खुलते ही नाम निशान भी नहीं रहेगा.

इसी सिलसिले में एक ख़याल हमें यह और आता है कि अगर यह साहूकार सचमुच कमज़ोर की मदद के हामी हैं और जिसने पहले चढ़ाई की हो उसकी अक़्ल ठिकाने पर लगा देना चाहते हैं तो फिर वह दुनिया के दामन पर पड़े दूसरे धब्बों को क्यों नहीं देखते. और जो उन धब्बों के लिये ज़िम्मेदार हैं उनके ऊपर भी कुछ पाबन्दी क्यों नहीं लगाते.

वर्ल्ड बैंक जैसे साहूकार का फ़र्ज़ है कि ईमान से ले और ईमान से दे.

—सुरेश रामभाई

चीन की आज़ादी का दूसरा बरस

यों तो चीन हज़ारों बरस आज़ाद रहा पर दसियों बार ग़ुलामी से आज़ाद भी हुआ. पर इस बार की आज़ादी बीती हुई हज़ारों बरस की आज़ादी से और दसियों बार पाई हुई आज़ादी से अलहदा ही क़िस्म की है. और उन सब आज़ादियों से ऊंचे दरजे की भी है. अगर वह कांटे भी जो नई पाई हुई आज़ादी के पांव में लगे हुए हैं निकल गए होते तब तो यह बीसवीं सदी की चीन की आज़ादी अपने ढंग की ऐसी आज़ादी होती कि पच्छिमी दुनिया, दाँतों तले उंगली दबाकर रह जाती और पूरबी दुनिया इस आज़ादी को देखकर जामे में फूली न समाती.

बरतानिया और अमरीका अफ़ीम के नशे में मस्त चीन से यह कभी उम्मीद नहीं कर सकते थे कि इसका पीलापन कभी इतना सुर्ख़ भी हो सकता है कि कहीं भी पीलापन न रह पाए. बरतानिया और अमरीका ही नहीं एशिया में रहने वाले हम हिन्दुस्तानी भी सचमुच पहले पहल तो ऐसा समझे थे मानो हम सपना देख रहे हों. पर जब हमारे बहादुर प्रधान मंत्री ने बरतानिया और अमरीका जैसे हाल ही में लड़ाई में जीत का सेहरा बांधे हुए मुल्कों से पहले चीन की आज़ादी को क़बूल किया और वहां के राजदूत हमारे देश में आ गए तब हम यह समझे कि जिसे हम सपना समझ रहे थे वह सपना न था सच्ची बात थी.

کے قائم کرنے میں تیسرا نمبر ہے. امریکہ اور برٹین کے بعد سب میں زیادہ پیسہ اس میں چین نے ہی لگایا ہے . اس لئے اتنے نمایاں ممبر کے خلاف پابندی لگانا سراسر ناانصافی ہے . ہمیں نہیں معلوم کہ چین کو خود ورلڈ بینک سے کتنی مدد کی تمنا ہے' لیکن جو بھی ہو' ورلڈ بینک کا اس طرح ہاتھ کھینچ لینا شرافت سے ہٹی ہوئی حرکت ہے اور انسانی بھائی چارے کے خلاف ہے .

مگر ہم یہ بھی بتا دیں کہ اگر دنیا کے ساہوکار یہ سپنا دیکھتے ہوں کہ اِس طرح اُتر کوریا و چین کا گلا دباکر وہ اُن سے توبہ بلوا لینگے تو وہ ایک جھوٹا سپنا دیکھ رہے ہیں جس کا آنکھیں کھلتے ہی نام نشان بھی نہیں رہے گا .

اسی سلسلے میں ایک خیال ہمیں یہ اور آتا ہے کہ اگر یہ ساہوکار سچ مچ کمزور کی مدد کے حامی ہیں اور جس نے پہلے چڑھائی کی ہو اُسکی عقل ٹھکانے پر لگا دینا چاہتے ہیں تو پھر وہ دنیا کے دامن پر پڑے دوسرے دھبوں کو کیوں نہیں دیکھتے. اور جو اُن دھبوں کے لئے ذمے دار ہیں اُن کے اُوپر بھی کچھ پابندی کیوں نہیں لگاتے .

ورلڈ بینک جیسے ساہوکار کا فرض ہے کہ ایمان سے لے اور ایمان سے دے .

—سریش رام بھائی

چین کی آزادی کا دوسرا برس—

یوں تو چین ہزاروں برس آزاد رہا پر دسیوں بار غلامی سے آزاد بھی ہوا . پر اِس بار کی آزادی بیتی ہوئی ہزاروں برس کی آزادی سے اور دسیوں بار پائی ہوئی آزادی سے علیحدہ ہی قسم کی ہے . اور اُن سب آزادیوں سے اُونچے درجے کی بھی ہے . اگر وہ کانٹے بھی جو نئی پائی ہوئی آزادی کے پاؤں میں لگے ہوئے ہیں نکل گئے ہوتے تب تو یہ بیسویں صدی کی چین کی آزادی اپنے ڈھنگ کی ایسی آزادی ہوتی کہ پچھمی دنیا دانتوں تلے انگلی دبا کر رہ جاتی اور پوربی دنیا اِس آزادی کو دیکھکر جامے میں پھولی نہ سماتی .

برطانیہ اور امریکہ افیم کے نشے میں مست چین سے یہ کبھی اُمید نہیں کر سکتے تھے کہ اِس کا پیلا پن کبھی اتنا سرخ بھی ہوسکتا ہے کہ کہیں بھی پیلا پن نہ رہ پائے . برطانیہ اور امریکہ ہی نہیں ایشیا میں رہنے والے ہم ہندستانی بھی سچ مچ پہلے پہل تو ایسا سمجھے تھے مانو ہم سپنا دیکھ رہے ہیں . پر جب ہمارے بہادر پردھان منتری نے برطانیہ اور امریکہ جیسے حال ہی میں لڑائی میں جیت کا سہرا باندھے ہوئے ملکوں سے پہلے چین کی آزادی کو قبول کیا اور وہاں کے راجدوت ہمارے دیش میں آگئے تب ہم یہ سمجھے کہ جسے ہم سپنا سمجھ رہے تھے وہ سپنا نہ تھا سچی بات تھی .

देश	पूँजी लाख डालर में
चीन	60, 00
फ्रांस	52, 50
हिन्दुस्तान	40, 60 (लगभग दो अरब रुपया)

बैंक के पास कुल पूँजी आठ अरब से भी जियादा है. इसमें से अपने मेम्बर देशों की बेहतरी और तरक़्क़ी की ख़ातिर बैंक साढ़े चार फ़ी सदी सूद लेकर पैसा उधार दिया करता है. हिन्दुस्तान को भी तीन बार करके 5 करोड़ 98 लाख डालर (लगभग 25 करोड़ रुपया) मिल चुका है जिसका मोटा हिसाब यह है—

1. 3 करोड़ 28 लाख डालर वास्ते...........रेलवे
2. 85 लाख डालर वास्ते...........खेती मशीनरी
3. 1 करोड़ 85 लाख डालर वास्ते..... ..दामोदर घाटी योजना.

इस साहूकार के जन्म से ही इसके ख़िलाफ़ शिकायत यह रही है कि यह अमरीका के हाथ का खिलौना है जो उसने दूसरों को ललचा कर फांसने के लिये बना रखा है. अभी हाल में निकली बैंक की रिपोर्ट में कहा गया है कि यह बैंक उन्हीं की मदद करेगा जिनका "मक़सद और इच्छा" दोनों ही अपने देश के साधन बढ़ाने की हो. हमें नहीं मालूम कि कौन सिर फिरा ऐसा देश होगा जो साधन न बढ़ाने के बजाय किसी दूसरे देश की ख़ातिर इतना भारी सूद देकर उधार लेगा. लेकिन ज़ाहिर है, असल में इसके पीछे राजनीत है और बैंक खुल्लम खुल्ला यह चाहता है कि जो उसकी मदद ले वह उसी का राग अलापे.

हमारी यह राय इस बात से भी पक्की हो जाती है कि 14 सितम्बर को वाशिंगटन में इस कर्ज़ के गवर्नरों ने यह तय किया कि चीन और उत्तर कोरिया के ख़िलाफ़ पाबन्दी लगाई जाय. यह पाबन्दी यूनो की जनरल असेम्बली की उस सिफ़ारिश पर की गई है कि उत्तर कोरिया और लाल चीन ने कोरिया के मामले में पहले चढ़ाई करके दुनिया की अमन शान्ति को ख़तरे में डाला है. हमें इसमें ज़रा भी शक नहीं कि राजनीति के फेर में पड़ कर बैंक का चीन व उत्तर कोरिया के ख़िलाफ़ यह क़दम उठाना एक ज़बरदस्त ज़्यादती है. कहने की ज़रूरत नहीं कि उत्तर कोरिया आज दुनिया का सबसे दुखी इलाक़ा है, वहां पर जो तबाही हुई है उसके लिये इनसानियत की अदालत में एक न एक दिन अमरीका से जवाब तलब किया जायगा. बजाय इसके कि उसकी मदद की जाय उस पर यह बंदिशें बांधी जा रही हैं. और चीन—भले ही वह लाल चीन हो गया हो—का दुखड़ा भी अगर किसी से कम है तो सिर्फ़ उत्तर कोरिया से. फिर चीन का तो इस बैंक

دیش	پونجی لاکھ ڈالر میں
چین	60,00
فرانس	52,50
ہندستان	40,60 (لگ بھگ دو ارب روپیہ)

بینک کے پاس کل پونجی آٹھ ارب سے بھی زیادہ ہے . اس میں سے اپنے ممبر دیشوں کی بہتری اور ترقی کی خاطر بینک ساڑھے چار فی صدی سود لیکر پیسہ ادھار دیا کرتا ہے . ہندستان کو بھی تین بار کر کے 5 کروڑ 98 لاکھ ڈالر (لگ بھگ 25 کروڑ روپیہ) مل چکا ہے جس کا موٹا حساب یہ ہے—

1. 3 کروڑ 28 لاکھ ڈالر واسطے............ ریلوے
2. 85 لاکھ ڈالر واسطے ....کھیتی مشینری
3. 1 کروڑ 85 لاکھ ڈالر واسطے....... دامودر گھاٹی یوجنا .

اس ساہوکار کے جنم سے ہی اس کے خلاف شکایت یہ رہی ہے کہ یہ امریکہ کے ہاتھ کا کھلونہ ہے جو اس نے دوسروں کو للچا کر پھانسنے کے لئے بنا رکھا ہے . ابھی حال میں نکلی بینک کی رپورٹ میں کہا گیا ہے کہ یہ بینک انہیں کی مدد کریگا جن کا " مقصد اور اچھا " دونوں ہی اپنے دیش کے سادھن بڑھانے کی ہو . ہمیں نہیں معلوم کہ کون سر پھرا ایسا دیش ہوگا جو سادھن نہ بڑھانے کے بجائے کسی دوسرے دیش کی خاطر اتنا بھاری سود دے کر ادھار لے گا . لیکن ظاہر ہے' اصل میں اس کے پیچھے راج نیت ہے اور بینک کھلم کھلا یہ چاہتا ہے کہ جو اس کی مدد لے وہ اسی کا راگ الاپے .

ہماری یہ رائے اس بات سے بھی پکی ہوجاتی ہے کہ 14 ستمبر کو واشنگٹن میں اس بینک کے گورنروں نے یہ طے کیا کہ چین اور اتر کوریا کے خلاف پابندی لگائی جائے . یہ پابندی یونو کی جنرل اسمبلی کی اس سفارش پر کی گئی ہے کہ اتر کوریا اور لال چین نے کوریا کے معاملے میں پہلے چڑھائی کر کے دنیا کی امن شانتی کو خطرے میں ڈالا ہے . ہمیں اس میں ذرا بھی شک نہیں کہ راج نیت کے پھیر میں پڑ کر بینک کا چین و اتر کوریا کے خلاف یہ قدم اٹھانا ایک زبردست زیادتی ہے . کہنے کی ضرورت نہیں کہ اتر کوریا آج دنیا کا سب سے دکھی علاقہ ہے' وہاں پر جو تباہی ہوئی ہے اس کے لئے انسانیت کی عدالت میں ایک نہ ایک دن امریکہ سے جواب طلب کیا جائے گا . بجائے اس کے کہ اسکی مدد کی جائے اس پر یہ بندشیں باندھی جا رہی ہیں . اور چین — بھلے ہی وہ لال چین ہوگیا ہو — کا دکھڑا بھی اگر کسی سے کم ہے تو صرف اتر کوریا سے . پھر چین کا تو اس بینک

आज विनोबा भी इतना धरती का दान मांगने नहीं निकला जितना अभय दान देने निकला है. वह कम्युनिस्टों को चुनौती देता है कि वह छिपे छिपे क्यों काम करते हैं, आएं उसके साथ. एक तरह से विनोबा तो ऐसा कहता हुआ मालूम होता है कि ऐ कम्युनिस्टो सरकार तुम्हें क्या अभय दान देगी, तुम ही आकर सरकार को अभय दान दो और उससे कह दो कि हां, हम कम्युनिस्ट हैं और इस तरह की सरकार चाहते हैं जिस में कोई दुखी न हो. पर अभय दान देने का ऊंचा काम कम्युनिस्ट उसी वक़्त कर सकते हैं जब खुद डरना छोड़ दें. और खुद डरना वह जभी छोड़ सकते हैं जब ज़मींदारों, पैसे वालों और सरकारी अफ़सरों को डराना छोड़ दें. और ऐसा वह जभी कर सकते हैं जब सच्चे मानों में बहादुर बन जायं. और सच्चे मानों में बहादुर वही होता है जो अपने पर ही भरोसा करता है जो उसे क़ुदरत ने पैदा होते वक़्त दिया है और वह है इनसानियत और प्रेम से भरा हुआ दिल.

विनोबा कम्युनिस्टों से ऐसा कहते हुए मालूम होता है कि देखो गांधी इनसानियत और प्रेम से भरा हुआ दिल लेकर ख़तरे के गढ़ नोआखाली में भी जाते हुए नहीं डरता. पर आज ट्रूमैन जैसा नक़ली बहादुर रूस में जाते हुए डर मानता है और स्टालिन जैसा नक़ली बहादुर अमरीका जाने की हिम्मत नहीं कर सकता.

यह सब कह कर हम इतना ही कहना चाहते हैं कि दान वही दे सकता है जो दुनिया दारों की नज़र में नंगा और भिकारी दिखाई देता है. उसी के दिये हुए दान से दुनिया में अमन चैन फैल सकता है. कपड़ों से लदे ज़ेवरों से सजे पूँजीपतियों के दान से पेट भर सकता है, कुछ बीमारियां अच्छी हो सकती हैं पर हमेशा मांगने का डर बना रहेगा. और लड़ाई का भूत सवार रहने की वजह से न रात को सुख की नींद आ सकेगी न दिन को चैन मिल सकेगा.

25. 9. '51. —भगवानदीन

वर्ल्ड बैंक की ज़्यादती—

दुनिया के 44 देशों के मशविरे से हुई 1944 वाली ब्रेटन वुड्स कानफ़रेन्स के आधार पर क़ायम हुआ वर्ल्ड बैंक नाम का बैंक दुनिया भर के साहूकार का काम कर रहा है. आजकल इस बैंक के 47 मेम्बर हैं जिन्होंने अपना पैसा जमा करके उसे खड़ा किया है. इसके पांच बड़े बड़े साझीदारों और उनकी लगाई पूँजी का ब्योरा यह है—

देश	पूँजी लाख डालर में
अमरीका	3, 17, 50
ब्रिटेन	1, 30, 00

آج ونوبا بھی اِتنا دھرتی کا دان مانگنے نہیں نکلا جتنا ابھے دان دینے نکلا ہے . وہ کمیونسٹوں کو چنوتی دیتا ہے کہ وہ چھپے چھپے کیوں کام کرتے ہیں' آئیں اُس کے ساتھ . ایک طرح سے ونوبا تو ایسا کہتا ہوا معلوم ہوتا ہے کہ اے کمیونسٹو سرکار تمہیں کیا ابھے دان دے گی' تم ہی آکر سرکار کو ابھے دان دو اور اُس سے کہہ دو کہ ہاں' ہم کمیونسٹ ہیں اور اِسطرح کی سرکار چاہتے ہیں جس میں کوئی دکھی نہ ہو . پر ابھے دان دینے کا اونچا کام کمیونسٹ اُسی وقت کر سکتے ہیں جب خود ڈرنا چھوڑ دیں . اور خود ڈرنا وہ جبھی چھوڑ سکتے ہیں جب زمیںداروں' پیسے والوں اور سرکاری افسروں کو ڈرانا چھوڑ دیں . اور ایسا وہ جبھی کر سکتے ہیں جب سچے معنوں میں بہادر بن جائیں . اور سچے معنوں میں بہادر وہی ہوتا ہے جو اپنے پر ہی بھروسہ کرتا ہے جو اُسے قدرت نے پیدا ہوتے وقت دیا ہے اور وہ ہے اِنسانیت اور پریم سے بھرا ہوا دل .

ونوبا کمیونسٹوں سے ایسا کہتے ہوئے معلوم ہوتا ہے کہ دیکھو گاندھی اِنسانیت اور پریم سے بھرا ہوا دل لے کر خطرے کے گڑھ نواکھالی میں بھی جاتے ہوئے نہیں ڈرتا . پر آج ٹرومین جیسا نقلی بہادر روس میں جاتے ہوئے ڈر مانتا ہے اور اسٹالن جیسا نقلی بہادر امریکہ جانے کی ہمت نہیں کر سکتا .

یہ سب کہہ کر ہم اتنا ہی کہنا چاہتے ہیں کہ دان وہی دے سکتا ہے جو دنیا داروں کی نظر میں ننگا اور بھکاری دکھائی دیتا ہے . اُسی کے دیئے ہوئے دان سے دنیا میں امن چین پھیل سکتا ہے . کپڑوں سے لدے زیوروں سے سجے پونجی پتیوں کے دان سے پیٹ بھر سکتا ہے' کچھ بیماریاں اچھی ہوسکتی ہیں پر ہمیشہ مانگنے کا ڈر بنا رہے گا . اور لڑائی کا بھوت سوار رہنے کی وجہ سے نہ رات کو سکھ کی نیند آسکے گی نہ دن کو چین مل سکے گا .

25-9-'51 —بھگوان دین

ورلڈ بینک کی زیادتی—

دنیا کے 44 دیشوں کے مشورے سے ہوئی 1944 والی برٹین وڈس کانفرنس کے آدھار پر قائم ہوا ورلڈ بینک نام کا بینک دنیا بھر کے ساہوکار کا کام کر رہا ہے . آج کل اس بینک کے 47 ممبر ہیں جنہوں نے اپنا پیسہ جمع کر کے اسے کھڑا کیا ہے . اس کے پانچ بڑے بڑے ساجھی داروں اور ان کی لگائی پونجی کا بیورا یہ ہے—

دیش	پونجی لاکھ ڈالر میں
امریکہ	3,17,50
برٹین	1,30,00

दान कौन दे सकता है—

एक रिशी ने दान चार तरह के बताए हैं— (1) भोजन दान (2) दवा दान (3) ज्ञान दान (4) अभय दान.

(1) खाना खिलाना सब से कम दरजे का दान है क्योंकि इसका असर कम से कम दो तीन घंटे और बहुत रहा तो चौबिस घंटे रहता है.

(2) दवाई के दान का असर हफ़्तों, महीनों और बरसों भी रह सकता है.

(3) ज्ञान दान यानी सीख के दान का असर उमर भर रहता है. तभी तो दुनिया दारी का तजरबा हासिल किये हुए लोगों का यह कहना है कि चाहे टुकड़े देने वाला मर जाए पर सीख देने वाला न मरे.

(4) अभय दान का असर यानी किसी को बे ख़ौफ़ बना देने का असर उमर भर तो रहता ही है और अगर मरने के बाद दूसरी जिन्दगी है तो उस जिन्दगी के लिये भी चला जाता है.

बस सीख का दान और अभय दान यही दो दान तो गांधी जी करते रहे. और यही दान करने के लिये तो बिनोबा निकले हैं.

भोजन दान और दवा दान करने वाले भुलाए जा सकते हैं और भुलाए जाते रहे हैं, पर ज्ञान दान और अभय दान करने वाले न भुलाए जा सकते हैं, न भुलाए जाने का रिवाज है.

हिन्दू यूनिवर्सिटी खुलने के अवसर पर बनारस में गांधी जी ने तभी तो यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को यह उपदेश दिया था कि अगर तुम सच्चे जी से हिन्सा के ज़रिये हिन्दुस्तान को आज़ाद करने में विश्वास करते हो तो चुपके से छिप कर क्यों बम फेंकते हो. बम लेकर सामने मैदान में आओ और जान पर खेल जाओ.

यह कह कर उन्होंने यही तो समझाया था कि तुम डरपोक हो, तुम्हारे अन्दर डर भरा हुआ है. तुम बम फेंक कर भी लोगों को बहादुरी की जगह डर सिखा सकते हो, बहादुरी की तालीम नहीं दे सकते.

और फिर गांधी जी ने किया ही क्या—हिन्दुस्तानियों में अंगरेज़ों का जो डर भरा हुआ था उसे निकाल बाहर किया. हो सकता है गांधी जी अपने जीते जी आज़ादी न दिला सकते. पर इससे क्या ? वह उस दरवाज़े में लगे ताले की कुंजी हिन्दुस्तानियों के हाथ सौंप चुके थे जिस ताले में आज़ादी बन्द थी. और वही ताला था अंगरेज़ों का डर.

دان کون دے سکتا ھے—

ایک رشی نے دان چار طرح کے بتائے ھیں — (1) بھوجن دان (2) دوا دان (3) گیان دان (4) ابھے دان ۔

(1) کھانا کھلانا سب سے کم درجے کا دان ھے کیونکہ اِس کا اثر کم سے کم دو تین گھنٹے اور بہت رھا تو چوبیس گھنٹے رھتا ھے ۔

(2) دوائی کے دان کا اثر ھفتوں، مہینوں اور برسوں بھی رہ سکتا ھے ۔

(3) گیان دان یعنی سیکھ کے دان کا اثر عمر بھر رھتا ھے ۔ تبھی تو دنیا داری کا تجربہ حاصل کئے ھوئے لوگوں کا یہ کہنا ھے کہ چاھے ٹکڑے دینے والا مر جائے پر سیکھ دینے والا نہ مرے ۔

(4) ابھے دان کا اثر یعنی کسی کو بے خوف بنا دینے کا اثر عمر بھر تو رھتا ھی ھے اور اگر مرنے کے بعد دوسری زندگی ھے تو اُس زندگی کے لئے بھی چلا جاتا ھے ۔

بس سیکھ کا دان اور ابھے دان یہی دو دان تو گاندھی جی کرتے رھے ۔ اور یہی دان کرنے کے لئے تو ونوبا نکلے ھیں ۔

بھوجن دان اور دوا دان کرنے والے بھلائے جا سکتے ھیں اور بھلائے جاتے رھے ھیں، پر گیان دان اور ابھے دان کرنے والے نہ بھلائے جا سکتے ھیں، نہ بھلائے جانے کا رواج ھے ۔

ھندو یونیورسٹی کھلنے کے اوسر پر بنارس میں گاندھی جی نے تبھی تو یونیورسٹی کے ودیارتھیوں کو یہ اُپدیش دیا تھا کہ اگر تم سچے جی سے ھنسا کے ذریعے ھندستان کو آزاد کرنے میں وشواس کرتے ھو تو چھپکے سے چھپ کر کیوں بم پھینکتے ھو ۔ بم لے کر سامنے میدان میں آو اور جان پر کھیل جاؤ ۔

یہ کہکر اُنھوں نے یہی تو سمجھایا تھا کہ تم ڈرپوک ھو، تمھارے اندر ڈر بھرا ھوا ھے ۔ تم بم پھینک کر بھی لوگوں کو بہادری کی جگہ ڈر سکھا سکتے ھو، بہادری کی تعلیم نہیں دے سکتے ۔

اور پھر گاندھی جی نے کیا ھی کیا — ھندستانیوں میں انگریزوں کا جو ڈر بھرا ھوا تھا اُسے نکال باھر کیا ۔ ھوسکتا ھے گاندھی جی اپنے جیتے جی آزادی نہ دلا سکتے ۔ پر اِس سے کیا ؟ وہ اُس دروازے میں لگے تالے کی کنجی ھندستانیوں کے ھاتھ سونپ چکے تھے جس تالے میں آزادی بند تھی ۔ اور وھی تالا تھا انگریزوں کا ڈر ۔

विनोबा के लिये दान करी भीख के रूप में जो जमींदारों को मिल रहे हैं अगर वह सीख उनमें से किसी एक के मन में भी कहीं कभी भी जड़ पकड़ गई तो वह रंग लायगी जिसका बयान करना क़लम की ताक़त से बाहर है.

याद रहे, विनोबा किसी के लिये टुकड़े खाने वाला नहीं, वह तो राम के टुकड़े खाता है और वही टुकड़े खा सकता है. वह पेट भरने के लिये टुकड़े ज़रूर खाता है पर वह उनको खाकर हाथ से जो मेहनत कर डालता है वह उन टुकड़ों से ज़ियादा ही होती है कम नहीं. वह टुकड़ों का हिसाब अपनी अन्तरात्मा या अपने राम को समझाये बिना, रात के लिये अपनी आँखें बंद करने की बात नहीं सोचता.

सन 1923 में झंडा सत्याग्रह के अवसर पर जब उसने रसोई घर का काम संभाला था तब शिस्त की पूरी पाबन्दी की वजह से अपने सब साथियों को नाराज़ करके ही वह उनको ख़ुश कर सका था.

उन ही दिनों जेल में उसने अपने साथी क़ैदियों को सिर्फ़ इस वजह से नाराज़ कर दिया था कि वह उस राम बाँस को पूरा कूट डालता था जो उसको सज़ा के तौर पर कूटने को मिलता था. उसे कर्तव्य का सच्चा ज्ञान है इसी कारन पहले लोग उस से बिगड़ते हैं और फिर उसके मित्र बन जाते हैं.

भीख या दान के टुकड़ों को राम के टुकड़ों में बदलना कोई सीखना चाहे तो उस से सीख ले.

विनोबा न कम्युनिस्टों का दुशमन है न कम्युनिज़्म का. वह तो दुशमन है उस आपसी लड़ाई (क्लास वार) का जो कम्युनिज़्म और कम्युनिस्टों को एक-मेक नहीं होने देती. जिस दिन कम्युनिज़्म और कम्युनिस्ट दोनों एक हो जायंगे उस दिन सारी दुनिया कम्युनिस्ट हो जायगी. विनोबा हिन्दुस्तान के राजकाजी शरीर में भरे वर्ग युद्ध (क्लास वार) के ज़हर को चूसने के लिये निकल पड़े हैं, धरती का दान लेना तो एक बहाना है. अब देखना यह है कि वह इस ज़हर को कहां तक चूस पाते हैं. विनोबा पर निगाह लगाने वाले जितनी सफलता चाहते हैं उसका सौवां या हज़ारवां अंश भी सफलता विनोबा को मिलने वाली नहीं. पर जितनी सफलता मिलेगी वह ऐसे बीज का काम करेगी जो आगे वर्ग युद्ध के ज़हर को वर्ग प्रेम के अमृत में बदल कर विश्व भाई चारे की खेती लहलहाने का काम करेगी.

25. 9. '51. —भगवानदीन

ونوبا کے لیئے دان کری بھیکھ کے روپ میں جو زمینداروں کو مل رہے ہیں اگر وہ سیکھ اُن میں سے کسی ایک کے من میں بھی کہیں کبھی بھی جڑ پکڑ گئی تو وہ رنگ لائیگی جسکا بیان کرنا قلم کی طاقت سے باہر ہے.

یاد رہے، ونوبا کسی کے لیئے ٹکڑے کھانے والا نہیں، وہ تو رام کے ٹکڑے کھاتا ہے اور وہی ٹکڑے کھاسکتا ہے. وہ پیٹ بھرنے کے لئے ٹکڑے ضرور کھاتا ہے پر وہ اُن کو کھاکر ہاتھ سے جو محنت کر ڈالتا ہے وہ اُن ٹکڑوں سے زیادہ ہی ہوتی ہے کم نہیں. وہ ٹکڑوں کا حساب اپنی انتر آتما یا اپنے رام کو سمجھائے بنا رات کے لئے اپنی آنکھیں بند کرنے کی بات نہیں سوچتا.

سن 1923 میں جھنڈا ستیا گرہ کے اوسر پر جب اُس نے رسوئی گھر کا کام سنبھالا تھا تب شست کی پوری پابندی کی وجہ سے اپنے سب ساتھیوں کو ناراض کرکے ہی وہ اُن کو خوش کرسکا تھا.

اُن ہی دنوں جیل میں اُس نے اپنے ساتھی قیدیوں کو صرف اِس وجہ سے ناراض کردیا تھا کہ وہ اُس رام بانس کو پورا کوٹ ڈالتا تھا جو اُس کو سزا کے طور پر کوٹنے کو ملتا تھا. اُسے کرتویہ کا سچا گیان ہے، اسی کارن پہلے لوگ اُس سے بگڑتے ہیں اور پھر اُسکے مِتر بن جاتے ہیں.

بھیک یا دان کے ٹکڑوں کو رام کے ٹکڑوں میں بدلنا کوئی سیکھنا چاہے تو اُس سے سیکھ لے.

ونوبا نہ کمیونسٹوں کا دشمن ہے نہ کمیونزم کا. وہ تو دشمن ہے اُس آپسی لڑائی (کلاس وار) کا جو کمیونزم اور کمیونسٹوں کو ایک میک نہیں ہونے دیتی. جس دن کمیونزم اور کمیونسٹ دونوں ایک ہو جائینگے اُس دن ساری دنیا کمیونسٹ ہو جائیگی. ونوبا ہندستان کے راج کاجی شریر میں بھرے ورگ یدھ (کلاس وار) کے زہر کو چوسنے کے لئے نکل پڑے ہیں، دھرتی کا دان لینا تو ایک بہانا ہے. اب دیکھنا یہ ہے کہ وہ اِس زہر کو کہاں تک چوس پاتے ہیں. ونوبا پر نگاہ لگانے والے جتنی سپھلتا چاہتے ہیں اُس کا سوواں یا ہزارواں انش بھی سپھلتا ونوبا کو ملنے والی نہیں. پر جتنی سپھلتا ملیگی وہ ایسے بیج کا کام کریگی جو آگے ورگ یدھ کے زہر کو ورگ پریم کے امرت میں بدل کر وشو بھائی چارے کی کھیتی لہلہانے کا کام کریگی.

—بھگوان دین 25 . 9 . '51

धेती की बुराई भलाई आदमी की आदमियत के कम जियादा नंगे होने के सिर है, न कि आदमी या उसमें बैठे ईश्वर अल्लाह के सिर.

विनोबा को सफलता जरूर होगी. कम होगी या जियादा इस झंझट में हम पड़ना नहीं चाहते, क्योंकि हम सफलता के पीछे कम जियादा लगाना निरी दुनियादारी की बात समझते हैं और उस दुनिया दारी की तराजू में इनसानियत नहीं तुला करती, और न हम चाहते हैं कि हम ऐसी भूल करें.

25. 9. '51. —भगवानदीन.

भूमि दान—

कोई मनचला कह सकता है कि यह जमीन की ख़रात मांगने वाला फ़क़ीर, विनोबा सब अख़बारों में जगह पा जाता है, पर इसको जमीन का दान देने वाले अख़बार के किसी कोने में ही नहीं बैठ पाते, यह मामला क्या है ?

कोई सर फिरा सोच सकता है कि यह वर्धा के सेठ जमनालाल बजाज के टुकड़ों पर पला विनोबा प्रसिद्धी के मैदान में अपने दानी सेठ से भी कहीं आगे निकल गया है, यह बात क्या है ?

यह जानकी बाई बजाज और उनके बेटे कमल नयन बजाज की रोटियां तोड़ने वाला दिन दूनी रात चौगुनी, बीसवीं सदी के भारत में, अपनी जगह बनाता चला जा रहा है, यह भेद क्या है ?

समझने के लिये तो बात बड़ी सीधी है. शहरी छोड़ हर गांव का रहने वाला यह अच्छी तरह जानता है कि पैसा हाथ का मैल है. इसी नाते धन भी हाथ का मैल हुआ और धनों में से एक धन है धरती धन, वह भी हाथ का मैल हुआ. है तो चांदी सोना भी मिट्टी क्योंकि मिट्टी से पैदा है, पर धरती तो साफ़ मिट्टी है उसका दान भी कोई दान है ! बस यही वजह है कि दान देने वाले अख़बार में कहीं नहीं और दान लेने वाला अख़बार के पहले सफे पर शब्दों में ही नहीं, शकल में भी मौजूद मिलता है.

असल में विनोबा दान लेता कहां है, वह तो धरती मोल ख़रीदता है और उसकी इतनी क़ीमत देता है जितनी न कोई सेठ दे सकता है और न सरकार. और वह क़ीमत है आदमी के दिल में इन्सानियत जगा देना यानी आदमी को उसके राम से मिलने की राह पर लगा देना. और फिर विनोबा उस धरती को अपनाता कहां है, वह तो पोस्टमैन की तरह 'इधर आई, उधर धर दे दी' यह काम करता रहता है.

بھی کی برائی بھلائی آدمی کی آدمیت کے کم زیادہ ننگے ہونے کے سر ہے' نہ کہ آدمی یا اُس میں بیٹھے ایشور اللہ کے سر.

ونوبا کو سپھلتا ضرور ہوگی. کم ہوگی یا زیادہ اس جھنجھٹ میں ہم پڑنا نہیں چاہتے' کیونکہ ہم سپھلتا کے پیچھے کم زیادہ لگانا نری دنیاداری کی بات سمجھتے ہیں اور اُس دنیاداری کی ترازو میں انسانیت نہیں تلا کرتی' اور نہ ہم چاہتے ہیں کہ ہم ایسی بھول کریں.

25 . 9 . '51 —بھگوان دین

بھومی دان—

کوئی من چلا کہہ سکتا ہے کہ یہ زمین کی خیرات مانگنے والا فقیر' ونوبا سب اخباروں میں جگہ پا جاتا ہے' پر اسکو زمین کا دان دینے والے اخبار کے کسی کونے میں ہی نہیں بیٹھ پاتے' یہ معاملہ کیا ہے ؟

کوئی سر پھرا سوچ سکتا ہے کہ یہ وردھا کے سیٹھ جمنا لال بجاج کے ٹکڑوں پر پلا ونوبا پرسدھی کے میدان میں اپنے دانی سیٹھ سے بھی کہیں آگے نکل گیا ہے' یہ بات کیا ہے ؟

یہ جانکی بائی بجاج اور اُن کے بیٹے کمل نین بجاج کی روٹیاں توڑنے والا دن دونی رات چوگنی' بیسویں صدی کے بھارت میں' اپنی جگہ بناتا چلا جا رہا ہے' یہ بھید کیا ہے ؟

سمجھنے کے لئے تو بات بڑی سیدھی ہے. شہری چھوڑ ہر گاؤں کا رہنے والا یہ اچھی طرح جانتا ہے کہ پیسہ ہاتھ کا میل ہے. اسی ناتے دھن بھی ہاتھ کا میل ہوا اور دھنوں میں سے ایک دھن ہے دھرتی دھن' وہ بھی ہاتھ کا میل ہوا. ہے تو چاندی سونا بھی مٹی کیونکہ مٹی سے پیدا ہے' پر دھرتی تو صاف مٹی ہے اُسکا دان بھی کوئی دان ہے! بس یہی وجہ ہے کہ دان دینے والے اخبار میں کہیں نہیں اور دان لینے والا اخبار کے پہلے صفحے پر شبدوں میں ہی نہیں' شکل میں بھی موجود ملتا ہے.

اصل میں ونوبا دان لیتا کہاں ہے' وہ تو دھرتی مول خریدتا ہے اور اُسکی اتنی قیمت دیتا ہے جتنی نہ کوئی سیٹھ دے سکتا ہے اور نہ سرکار. اور وہ قیمت ہے آدمی کے دل میں انسانیت جگا دینا یعنی آدمی کو اُس کے رام سے ملنے کی راہ پر لگا دینا. اور پھر ونوبا اُس دھرتی کو اپناتا کہاں ہے' وہ تو پوسٹ مین کی طرح 'ادھر آئی' ادھر دے دی' یہ کام کرتا رہتا ہے.

लोग बहुत पहले से उस तरह की हवा तैयार कर चुके थे. हम तो विनोबा की या अहिन्सा की सफलता या जीत उस वक़्त समझेंगे जब विनोबा किसी दूसरे प्रान्त में कुछ सफलता हासिल कर के दिखा दें.'

यह हमने कम्युनिस्टों की चुनौती का अपने शब्दों में खुलासा दिया है.

विनोबा के मन की बनावट से जितनी हमारी जानकारी है उसके बल पर हम यह कह सकते हैं कि विनोबा इस तरह की चुनौतियों को ध्यान में रखकर कभी किसी मैदान में नहीं कूदा करते. वह तो अपने मन में बैठे ईश्वर से ही सलाह करते हैं और उसी के हुक्म की परवाह करते हैं, और उसी को मान कर वह किसी भी काम में लग जाते हैं. अब जो वह दूसरे प्रान्तों में ज़मीन मांगने निकले हैं तो वह कम्युनिस्टों की चुनौती के जवाब में नहीं निकले हैं. उनके मन ने अपने अन्दर बैठे ईश्वर से काफ़ी बहस की और जब हर तरह उनके ईश्वर ने उनके मन की तसल्ली कर दी तो वह ज़मीन मांगने के लिये निकल पड़े. हो सकता है अब भी विनोबा की पूरी हार हो और कहीं से भी चप्पा भर ज़मीन उन्हें न मिले, इससे वह न हिम्मत हारेंगे और न अपने ईश्वर को दोश देने बैठेंगे. इस तरह की असफलता में वह अपने ही मन को दोशी मानेंगे. क्योंकि जो काम दुनिया में कोई भी कर सके और उसको विनोबा न कर सकें तो उसमें विनोबा के ईश्वर का क्या दोश. विनोबा के मन और उसके करने के तरीक़ों को ही दोश दिया जा सकता है. और अगर विनोबा को इस काम में सफलता हुई तो विनोबा अपने को, अपने मन को या उसकी तरकीबों को सराहने वाले नहीं. सफलता का यश उस अन्तरात्मा या उस ईश्वर के पांव में पटक दिया जायगा जो ईश्वर उनके अन्दर बैठा है.

विनोबा या सत्य और अहिन्सा पर सच्चे जी से विश्वास करने वाले जब भी किसी मैदान में क़दम रखते हैं तो इस सचाई को ही ध्यान में रखकर क़दम रखते हैं कि हर आदमी में आदमियत मौजूद रहती है. और उसी नंगी आदमियत का नाम अन्तरात्मा, ज़मीर, कानशन्स, इनसानियत या ईश्वर है. उस नंगी आदमियत तक अगर कोई आदमी अपनी बुराइयों का जामा उतार कर और नंगा होकर पहुंच सके तो वह ज़रूर दूसरी आत्मा अपनी बुराई का जामा उतार कर उससे मिलती है, उसकी बात अपनाती है और जितनी देर तक वह बुराई के जामे से अलग रहती है ऐसे काम कर जाती है जो उसके लिये तो भले होते ही हैं दुनिया भर के लिये भी भले होते हैं. अब अगर विनोबा अपने नंगे होने में कमी कर जायँगे तो उतने ही कम लोगों की नंगी आदमियत तक पहुँच पायंगे और उतनी ही कम सफलता पायंगे. सफलता की कमी

لوگ بہت پہلے سے اُس طرح کی ہوا تیار کرچکے تھے. ہم تو ونوبا کی یا اہنسا کی سپھلتا یا جیت اُس وقت سمجھینگے جب ونوبا کسی دوسرے پرانت میں کچھ سپھلتا حاصل کرکے دکھادیں.'

یہ ہم نے کمیونسٹوں کی چنوتی کا اپنے شبدوں میں خلاصہ دیا ہے.

ونوبا کے من کی بناوٹ سے جتنی ہماری جانکاری ہے اُسکے بل پر ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ ونوبا اِس طرح کی چنوتیوں کو دھیان میں رکھ کر کبھی کسی میدان میں نہیں کودا کرتے. وہ تو اپنے من میں بیٹھے ایشور سے ہی صلح کرتے ہیں اور اُسی کے حکم کی پرواہ کرتے ہیں' اور اُسی کو مان کر وہ کسی بھی کام میں لگ جاتے ہیں. اب جو وہ دوسرے پرانتوں میں زمین مانگنے نکلے ہیں تو وہ کمیونسٹوں کی چنوتی کے جواب میں نہیں نکلے ہیں. اُن کے من نے اپنے اندر بیٹھے ایشور سے کافی بحث کی اور جب ہر طرح اُن کے ایشور نے اُن کے من کی تسلی کردی تو وہ زمین مانگنے کے لئے نکل پڑے. ہوسکتا ہے اب بھی ونوبا کی پوری ہار ہو اور کہیں سے بھی چپا بھر زمین اُنہیں نہ ملے' اِس سے نہ وہ ہمت ہارینگے اور نہ اپنے ایشور کو دوش دینے بیٹھینگے. اس طرح کی اسپھلتا میں وہ اپنے ہی من کو دوشی مانینگے. کیونکہ جو کام دنیا میں کوئی بھی کرسکے اور اُس کو ونوبا نہ کر سکیں تو اُس میں ونوبا کے ایشور کا کیا دوش. ونوبا کے من اور اُس کے کرنے کے طریقوں کو ہی دوش دیا جاسکتا ہے. اور اگر ونوبا کو اس کام میں سپھلتا ہوئی تو ونوبا اپنے کو' اپنے من کو یا اُسکی ترکیبوں کو سراہنے والے نہیں. سپھلتا کا یش اُس انترآتما یا اُس ایشور کے پاؤں میں پٹخ دیا جائیگا جو ایشور اُن کے اندر بیٹھا ہے.

ونوبا یا ستیہ اور اہنسا پر سچے جی سے وشواس کرنے والے جب بھی کسی میدان میں قدم رکھتے ہیں تو اس سچائی کو ہی دھیان میں رکھ کر قدم رکھتے ہیں کہ ہر آدمی میں آدمیت موجود رہتی ہے. اور اُسی ننگی آدمیت کا نام انترآتما' ضمیر' کان‌شنس' انسانیت یا ایشور ہے. اُس ننگی آدمیت تک اگر کوئی آدمی اپنی برائیوں کا جامہ اُتار کر اور ننگا ہوکر پہونچ سکے تو وہ ضرور دوسری آتما اپنی برائی کا جامہ اُتار کر اُس سے ملتی ہے' اُسکی بات اپناتی ہے اور جتنی دیر تک وہ برائی کے جامے سے الگ رہتی ہے ایسے کام کر جاتی ہے جو اُسکے لئے تو بھلے ہوتے ہی ہیں دنیا بھر کے لئے بھی بھلے ہوتے ہیں. اب اگر ونوبا اپنے ننگے ہونے میں کمی کرجائینگے تو اُتنے ہی کم لوگوں کی ننگی آدمیت تک پہونچ پائینگے اور اُتنی ہی کم سپھلتا پائینگے. سپھلتا کی کمی

हम नहीं समझते कि इसमें कहाँ सिद्धान्त की हार हुई, कहां शख्सियत की जीत हुई और कहां लोकशाही की बेक़दरी हुई. यह नासमझ लोकशाही ही थी जो अंगरेज़ों को अपने सिर पर बिठाए हुए थी और यह भी नासमझ लोकशाही ही थी जिसने अंगरेज़ों को निकाल बाहर किया. और अब भी नासमझ लोकशाही न जाने क्या कर बैठे. शराब के नशे में जिस तरह आदमी अपनी समझ खो बैठता है उससे कहीं ज़ियादा समझ वह रुपए के नशे में खो बैठता है.

किसी ने ठीक कहा है—

कनक कनकते सौ गुनी मादकता अधिकाय

खाय खाय बौरात है पाय पाय बौराय.

सचमुच धतूरा (कनक) खाने से नशा होता है पर सोना (कनक) तो हाथ में आने से ही पागल बना देता है.

सिद्धान्त यह है कि वरकिंग कमेटी को आल इंडिया चुने. यह है आल इंडिया का रिआयत, कि वह सभापति को अपनी वरकिंग कमेटी बना लेने दे. सिद्धान्त यह है कि आल इंडिया अपने सभापति को कभी बरखास्त कर दे, यह है आल इंडिया की रिआयत कि वह सभापति को मौक़ा दे कि वह अपना स्तीफ़ा पेश कर दे. पर यह रिआयतें रिवाज में आकर क़ायदा क़ानून बन बैठती हैं और फिर सिद्धान्त सी जचने लगती हैं और बहस का मज़मून बन जाती हैं.

लोकशाही में पहाड़ की तलहटी उसकी घाटियाँ, उसके मैदान, उसकी चोटियाँ सब शामिल हैं. सिद्धान्त में सिर्फ़ चोटियाँ शामिल हैं, शख्सियत में सिर्फ़ इनी गिनी चोटियाँ शामिल हैं. सिद्धान्त और चोटियाँ बनती बिगड़ती रहती हैं और तलहटी अटल खड़ी उनका तमाशा देखती रहती है. असल में बिगाड़ती बनाती तो वही है.

लोकशाही की सदा जय होती है और दिल्ली में लोकशाही की ही जय हुई.

24 . 9 . '51 —भगवानदीन

ہم نہیں سمجھتے کہ اس میں کہاں سدھانت کی
ار ہوئی' کہاں شخصیت کی جیت ہوئی اور کہاں لوک
ساھی کی بے قدری ہوئی. یہ ناسمجھ لوک شاہی ہی
ی جو انگریزوں کو اپنے سر پر بٹھائے ہوئے تھی اور یہ
ی ناسمجھ لوک شاہی ہی تھی جس نے انگریزوں کو
ال باہر کیا. اور اب بھی ناسمجھ لوک شاہی نہ جانے کیا
ر بیٹھے. شراب کے نشے میں جس طرح آدمی اپنی سمجھ
بیٹھتا ہے اس سے کہیں زیادہ سمجھ وہ روپے کے نشے
یں کھو بیٹھتا ہے.

کسی نے ٹھیک کہا ہے—

کنک کنکتے سو گنی مادکتا ادھکائے

وا ے کھائے بورات ہے پائے پائے بورائے.

سچ مچ دھتورا (کنک) کھانے سے نشہ ہوتا ہے پر
ونا (کنک) تو ہاتھ میں آنے سے ہی پاگل بنا دیتا ہے.

سدھانت یہ ہے کہ ورکنگ کمیٹی کو آل انڈیا چنے.
ہے آل انڈیا کی رعایت' کہ وہ سبھا پتی کو اپنی ورکنگ
یٹی بنا لینے دے. سدھانت یہ ہے کہ آل انڈیا اپنے
بھا پتی کو کبھی برخاست کر دے' یہ ہے آل انڈیا کی
ایت کہ وہ سبھا پتی کو موقع دے کہ وہ اپنا استعفی
یش کر دے. پھر یہ رعایتیں رواج میں آکر قاعدہ قانون
ن بیٹھتی ہیں اور پھر سدھانت سی جچنے لگتی
یں اور بحث کا مضمون بن جاتی ہیں.

لوک شاہی میں پہاڑ کی تلہٹی اس کی گھاٹیاں' اس
میدان' اس کی چوٹیاں سب شامل ہیں. سدھانت
یں صرف چوٹیاں شامل ہیں' شخصیت میں صرف اِنی
ی چوٹیاں شامل ہیں. سدھانت اور چوٹیاں بنتی
ڑتی رہتی ہیں اور تلہٹی اٹل کھڑی ان کا تماشہ دیکھتی
تی ہے. اصل میں بگاڑتی بناتی تو وہی ہے.

لوک شاہی کی سدا جے ہوتی ہے اور دلی میں لوک
اہی کی ہی جے ہوئی.

24 . 9 . 51 —بھگوان دین

कम्युनिस्टों की चुनौती—

बहुत दिन नहीं बीते जब कम्युनिस्टों ने विनोबा को यह चुनौती दी थी:—

'विनोबा तेलंगाना में ज़मींदारों से किसानों को ज़मीन दिलवा रहे हैं और उसमें उन्हें जो थोड़ी बहुत सफलता मिली है वह सिर्फ़ इस वजह से है कि वहां हम कम्युनिस्ट

میونسٹوں کی چنوتی—

بہت دن نہیں بیتے جب کمیونسٹوں نے ونوبا کو یہ
نوتی دی تھی:—

'ونوبا تلنگانہ میں زمینداروں سے کسانوں کو زمین
وا رہے ہیں اور اس میں انہیں جو تھوڑی بہت سپھلتا
ی ہے وہ صرف اس وجہ سے ہے کہ وہاں ہم کمیونسٹ

ख़ास है. पटेल शख़्सियत ने चुनाव में थोड़ा हिस्सा लिया. यों टंडन जी की शख़्सियत कांगरेस के सभापति के आसन पर जा बैठी. अगर यह कहा जाय तो बेजा न होगा कि टंडन जी पटेल की गोदी में बैठ गए. ख़ुलासा यह कि नासिक कांगरेस में शख़्सियत की जीत हुई सिद्धान्त की नहीं.

नासिक की कांगरेस में कांगरेस का जो प्रोग्राम पास हुआ उस में भी सिद्धान्त की जीत नाम को भी नहीं थी. उस में थी जीत नेहरू शख़्सियत की. या तो उस समय कांगरेस की लोकशाही अपने में नहीं थी या दूसरे में थी तभी तो ऐसी चीज़ वहाँ पास होगई, जिसे कांगरेस की लोकशाही जी से ठीक नहीं समझती थी. पर इससे क्या वह जी से ठीक समझे या न समझे उसे जीतने से काम. लोकशाही हारना जानती ही नहीं. उसकी हार कभी नहीं होती. फ़ारसी की एक कहावत है कि "इकट्ठे होकर मरने में भी बड़ा आनन्द आता है." फिर लोकशाही क्या हारेगी. यह लोकशाही के बायें हाथ का खेल है कि वह चाहे सिद्धान्त को जिता दे, चाहे शख़्सियत को. अगर सिद्धान्त और शख़्सियतों में कुछ भी दम होता तो क्या आज दुनिया में झूट, हिन्सा, चोरी, पूंजीवाद, ऐयाशी, शराब ख़ोरी, सूद जैसी चीज़ें कहीं देखने को भी मिलतीं. जैसी रूह वैसे फ़रिश्ते यह कहावत किसे नहीं मालूम. वैसे ही, जैसी लोकशाही वैसे ही सिद्धान्त या वैसी ही शख़्सियत.

सिद्धान्त और शख़्सियत का काम है कि वह लोकशाही की मानें और लोकशाही का हुकम मानना ही दुनिया में सब से बड़ा सिद्धान्त है. जो इसको नहीं मानता वह सिद्धान्त मानने वाला आदमी नहीं कहा जा सकता, और वही अपनी शख़्सियत खो बैठता है. दिल्ली में यही भूल टंडन जी ने की और उन्होंने इस भूल से अपनी शख़्सियत खोई नहीं तो उसे धक्का ज़रूर पहुँचाया. वह लोकशाही तो थी जिसने टंडन जी का इस्तीफ़ा मंज़ूर किया. वह लोकशाही तो थी जिसने नेहरू जी को सभापति चुना. वह, दो या चार, सचमुच, अलग अलग तानाशाह हैं, जिन्होंने इन दोनों प्रस्तावों के ख़िलाफ़ राय दी अगर उनके दिल में यह बात थी कि दुनिया उनकी माने और लोकशाही को न माने. बेशक, राय देने तक वह लोकशाही के अंश थे लेकिन अगर वह उसे अब भी सिद्धान्त समझे हुए हैं तो बेशक वह तानाशाही की तरफ़ दौड़े चले आ रहे हैं. शुक्ला जी ने नागपुर पहुँच कर क्या ठीक बात कही—"मैंने लोकशाही के नाते ख़िलाफ़ राय दी और लोकशाही के नाते अब लोकशाही के साथ हूँ और नेहरू को अपना नेता मानता हूँ."

خاص ہے ۔ پٹیل شخصیت نے چناؤ میں تھوڑا حصہ لیا ۔ یوں ٹنڈن جی کی شخصیت کانگریس کے سبھاپتی کے آسن پر جا بیٹھی ۔ اگر یہ کہا جائے تو بیجا نہ ہوگا کہ ٹنڈن جی پٹیل کی گودی میں بیٹھ گئے ۔ خلاصہ یہ کہ ناسک کانگریس میں شخصیت کی جیت ہوئی سدھانت کی نہیں ۔

ناسک کی کانگریس میں کانگریس کا جو پروگرام پاس ہوا اُس میں بھی سدھانت کی جیت نام کو بھی نہیں تھی ۔ اُس میں تھی جیت نہرو شخصیت کی ۔ یا تو اُس سمے کانگریس کی لوک شاہی اپنے میں نہیں تھی یا دوسرے میں تھی تبھی تو ایسی چیز وہاں پاس ہوگئی جسے کانگریس کی لوک شاہی جی سے ٹھیک نہیں سمجھتی تھی ۔ پر اس سے کیا وہ جی سے ٹھیک سمجھے یا نہ سمجھے اُسے جیتنے سے کام ۔ لوک شاہی ہارنا جانتی ہی نہیں ۔ اُسکی ہار کبھی نہیں ہوتی ۔ فارسی کی ایک کہاوت ہے کہ "اکٹھے ہوکر مرنے میں بھی بڑا آنند آتا ہے ۔" پھر لوک شاہی کیا ہاریگی ۔ یہ لوک شاہی کے بائیں ہاتھ کا کھیل ہے کہ وہ چاہے سدھانت کو جتادے' چاہے شخصیت کو ۔ اگر سدھانت اور شخصیتوں میں کچھ بھی دم ہوتا تو کیا آج دنیا میں جھوٹ' ہنسا' چوری' پونجیواد' عیاشی' شراب خوری' سود جیسی چیزیں کہیں دیکھنے کو بھی ملتیں ۔ جیسی روح ویسے فرشتے یہ کہاوت کسے نہیں معلوم ۔ ویسے ہی' جیسی لوک شاہی ویسے ہی سدھانت یا ویسی ہی شخصیت ۔

سدھانت اور شخصیت کا کام ہے کہ وہ لوک شاہی کی مانیں اور لوک شاہی کا حکم ماننا ہی دنیا میں سب سے بڑا سدھانت ہے ۔ جو اِس کو نہیں مانتا وہ سدھانت ماننے والا آدمی نہیں کہا جاسکتا' اور وہی اپنی شخصیت کھو بیٹھتا ہے ۔ دلی میں یہی بھول ٹنڈن جی نے کی اور انہوں نے اِس بھول سے اپنی شخصیت کھوئی نہیں تو اُسے دھکا ضرور پہونچایا ۔ یہ لوک شاہی تو تھی جس نے ٹنڈن جی کا استعفیٰ منظور کیا ۔ یہ لوک شاہی تو تھی جس نے نہرو جی کو سبھاپتی چنا ۔ وہ' دو یا چار' سچ مچ' الگ الگ تانا شاہ ہیں' جنہوں نے ان دونوں پرستاؤں کے خلاف رائے دی اگر اُن کے دل میں یہ بات تھی کہ دنیا اُن کی مانے اور لوک شاہی کی نہ مانے ۔ بیشک' رائے دینے تک وہ لوک شاہی کے انش تھے لیکن اگر اُسے وہ اب بھی سدھانت سمجھے ہوئے ہیں تو بیشک وہ تانا شاہی کی طرف دوڑے چلے جارہے ہیں ۔ شکلا جی نے ناگپور پہونچ کر کیا ٹھیک بات کہی—"میں نے لوک شاہی کے ناتے خلاف رائے دی اور لوک شاہی کے ناتے اب لوک شاہی کے ساتھ ہوں اور نہرو کو اپنا نیتا مانتا ہوں ۔"

शराब बेहद खराब चीज़ है. इस बात को सभी खूब समझते हैं. यहाँ सभी से हमारी मुराद उन सभी से है जिनको हमने नासमझ लोकशाही के तीसरे दरजे में रखा है.

इसी शराब को लेकर अमरीका में बड़े ज़ोरों का आन्दोलन उठा और एक मरतबा सारे अमरीका में शराब बन्द कर दी गई. बेशक यह काम लोकशाही की मदद से हुआ, लेकिन उस लोकशाही की मदद से जिसे यह ज्ञान तो था कि शराब इनसान और इनसानियत के लिये बेहद खराब चीज़ है पर यह पता न था कि उसे इस तरह का ज्ञान है. बस, अमरीका की समझदार लोकशाही की एक या कुछ शख्सियतों ने उस जनता को उसके ज्ञान का ज्ञान कराया और अमरीका में शराब बन्दी के लिये राय ले ली और सरकार ने क़ानून के ज़रिये शराब बन्द कर दी. यह शराब बन्दी की बात सुनकर बरतानिया के धूर्तों ने चोरी से अमरीका शराब पहुंचाना शुरू की और पहले और दूसरे नम्बर की नासमझ लोकशाही को भड़काना शुरू किया और तीसरे नम्बर की लोकशाही की खोपड़ी पर जादू का डन्डा फेर कर अमरीका में फिर शराब शुरू करा दी. जिसने शराब शुरू कराई वह भी लोकशाही थी और जिसने बन्द कराई वह भी लोकशाही थी. फ़रक़ इतना था कि जिसने बन्द कराई वह समझदार समझदार लोकशाही थी और जिसने फिर शुरू कराई वह समझदार नासमझ लोकशाही थी.

हम यह सब कहकर यह कहना चाहते हैं कि हम सब को समझदार समझदार लोकशाही के फ़ैसलों को ही सच्ची लोकशाही के फ़ैसले समझना चाहिये. और समझदार ना समझ लोकशाही के फ़ैसलों को समझना तो ग़लत फ़ैसला ही होगा, पर बेबसी से उन्हें सर पर तो चढ़ाना ही पड़ेगा. बन्दरों की नासमझ लोकशाही ने क्या समझदार बया का घोंसला नहीं तोड़ दिया था. और जिस तरह बया ने उस लोकशाही का ज़ुल्म सहा था उसी तरह नासमझ लोकशाही के ज़ुल्म औरों के साथ साथ समझदारों को भी सहने पड़ते हैं.

टंडन जी को लोकशाही ने सभापति चुना. और जब चुना तब सिद्धान्त जैसी कोई चीज़ लोकशाही के सामने नहीं थी. उसके सामने थीं दो शख्सियतें—एक कृपलानी जी और दूसरे टंडन जी—इन दोनों की शख्सियतों को भी हिन्दुस्तान की सारी जनता पूरी तरह नहीं जानती थी. वह किन ही और दो शख्सियतों को ठीक ठीक समझती थी. और वह दो थीं—नेहरू और पटेल. नेहरू शख्सियत उस वक़्त चुप रही. सुनते हैं यही उस शख्सियत की

شراب بے حد خراب چیز ہے. اس بات کو سبھی خوب
سمجھتے ہیں . یہاں سبھی سے ہماری مراد اُن سبھی سے
جن کو ہم نے ناسمجھ لوک شاہی کے تیسرے درجے
ں رکھا ہے .

اِسی شراب کو لیکر امریکہ میں بڑے زوروں کا آندولن
ا اور ایک مرتبہ سارے امریکہ میں شراب بند کردی
. بیشک یہ کام لوک شاہی کی مدد سے ہوا' لیکن
لوک شاہی کی مدد سے جسے یہ گیان تو تھا کہ
اب انسان اور انسانیت کے لئے بے حد خراب چیز ہے
یہ پتہ نہ تھا کہ اُسے اس طرح کا گیان ہے . بس' امریکہ
سمجھدار لوک شاہی کی ایک یا کچھ شخصیتوں نے
جنتا کو اُس کے گیان کا گیان کرایا اور امریکہ میں
ب بندی کے لئے رائے لے لی اور سرکار نے قانون کے ذریعے
ب بند کردی . یہ شراب بندی کی بات سنکر برطانیہ
دھورتوں نے چوری سے امریکہ شراب پہونچانا شروع
اور پہلے اور دوسرے نمبر کی ناسمجھ لوک شاہی کو
کانا شروع کیا اور تیسرے نمبر کی لوک شاہی کی
پڑی پر جادو کا ڈنڈا پھیر کر امریکہ میں پھر شراب
رع کرادی . جس نے شراب شروع کرائی وہ بھی لوک
ہی تھی اور جس نے بند کرائی وہ بھی لوک شاہی تھی.
ں اتنا تھا کہ جس نے بند کرائی وہ سمجھدار سمجھدار
ک شاہی تھی اور جس نے پھر شروع کرائی وہ سمجھدار
مجھ لوک شاہی تھی .

ہم یہ سب کہہ کر یہ کہنا چاہتے ہیں کہ ہم سب
سمجھدار سمجھدار لوک شاہی کے فیصلوں کو ہی
ی لوک شاہی کے فیصلے سمجھنا چاہئیے . اور سمجھدار
سجھ لوک شاہی کے فیصلوں کو سمجھنا تو غلط فیصلہ
ہوگا' پر بے بسی سے اُنہیں سر پر تو چڑھانا ہی پڑیگا.
روں کی ناسمجھ لوک شاہی نے کیا سمجھدار بیا کا
سلہ نہیں توڑ دیا تھا . اور جس طرح بیا نے اُس
، شاہی کا ظلم سہا تھا اُسی طرح ناسمجھ لوک شاہی
ظلم اوروں کے ساتھ ساتھ سمجھداروں کو بھی سہنے
ہیں .

ٹنڈن جی کو لوک شاہی نے سبھا پتی چنا . اور
ب چنا تب سدھانت جیسی کوئی چیز لوک شاہی کے
ے نہیں تھی . اُس کے سامنے تھیں دو شخصیتیں—ایک
ی جی اور دوسرے ٹنڈن جی—ان دونوں کی شخصیتوں
بی ہندستان کی ساری جنتا پوری طرح نہیں جانتی
. وہ کن ہی اور دو شخصیتوں کو ٹھیک ٹھیک سمجھتی
. اور وہ دو تھیں—نہرو اور پٹیل. نہرو شخصیت
ولت چپ رہی ، سنتے ہیں یہی اُس شخصیت کی

के किसी न किसी कोने में पाए जाते हैं. उन में और कितनी ही भलाइयां क्यों न हों पर दुनिया के सब लोग एक हैं, उनकी भलाई ही में सब की भलाई है, यह भलाई उनमें नाम को भी नहीं पाई जाती. ऐसी जनता से फ़ौजी सिपाहियों का काम भी मुशकिल से लिया जा सकता है.

(2) वह लोग जो अपनी भलाई बुराई भी बिलकुल नहीं समझते, पर उन्हें इतनी तमीज़ ज़रूर है कि वह यह समझते हैं कि वह अज्ञानी हैं और अपना भला बुरा नहीं समझते.

बस यही जनता का वह भाग है जिसे कुछ मन-चले बहका लेते हैं और उससे पके चारे का काम लेते हैं. जिसमें इनके बहकाने की जितनी क़ाबलियत है वह उतनी ही फ़ौजें खड़ी कर सकता है. कोई इन्हें धर्म के नाम पर बहकाता है, कोई देश के नाम पर, कोई इनसानियत के नाम पर, कोई प्रेम के नाम पर, कोई ईश्वर के नाम पर, कोई सत्य अहिन्सा के नाम पर और कोई लोकशाही के नाम पर. इन लोगों में यह तमीज़ तो होती नहीं कि यह ख़ुद सोच सकें कि इनकी भलाई बुराई किस बात में है, इसलिये जो जैसा समझा देता है वैसा यह मान लेते हैं और उसके लिये जान लड़ाने के लिये तैयार हो जाते हैं. अगर ऐसा न होता तो क्या आज हिन्दुस्तान की गोरखा पलटनें हिन्दुस्तान ने बरतानिया के हाथ सौंप दी होतीं और क्या वही गोरखा पलटनें बरतानिया की मातहती में जगह जगह ऐसा काम कर रही होतीं जिससे बरतानिया की जगह हिन्दुस्तान बदनाम हो रहा होता. और क्या वह गोरखा पलटनें बरतानिया की मातहती में बिना सोचे समझे कोरिया के मैदान में अपनी लड़ाई के करतब दिखा रही होतीं. इसी तरह की हर मुल्क की नासमझ लोकशाही कोरिया में फ़ौजी हैसीयत से जा डटी है और कोरिया को तहस नहस करके दुनिया के तहस नहस होने की बुनियाद डाल रही है.

(3) वह जनता जो अपना भला बुरा ख़ूब समझती है पर उसे यह पता नहीं कि उसे अपने भले बुरे का ज्ञान है.

बस ऐसी नासमझ जनता को समझदार लोकशाही की शख़सियतें समझाती हैं और उनका नशा उतार देती हैं और अगर वह मुल्क ग़ुलाम होता है तो वह उनके ज़रिये उसको आज़ाद करालेती हैं और फिर उन्हीं लोगों से वह हकूमत का काम लेती हैं. हज़रत मुहम्मद ने यही किया और महात्मा गांधी ने भी यही किया. रूस, चीन, जापान, अमरीका सभी मुल्कों में लोकशाही की समझदार शख़सियतें जन्म लेती रहीं और इसी तरह अपना काम करती रहीं.

کے کسی نہ کسی کونے میں پائے جاتے ہیں ۔ اُن میں اور کتنی ہی بھلائیاں کیوں نہ ہوں پر دنیا کے سب لوگ ایک ہیں، اُن کی بھلائی ہی میں سب کی بھلائی ہے، یہ بھلائی اُن میں نام کو بھی نہیں پائی جاتی ۔ ایسی جنتا سے فوجی سپاہیوں کا کام بھی مشکل سے لیا جا سکتا ہے ۔

(2) وہ لوگ جو اپنی بھلائی برائی بھی بالکل نہیں سمجھتے، پر انہیں اتنی تمیز ضرور ہے کہ وہ یہ سمجھتے ہیں کہ وہ اگیانی ہیں اور اپنا بھلا برا نہیں سمجھتے ۔

بس یہی جنتا کا وہ بھاگ ہے جسے کچھ من چلے بہکا لیتے ہیں اور اُس سے پکے چارے کا کام لیتے ہیں ۔ جس میں ان کے بہکانے کی جتنی قابلیت ہے وہ اتنی ہی فوجیں کھڑی کر سکتا ہے ۔ کوئی انہیں دھرم کے نام پر بہکاتا ہے، کوئی دیش کے نام پر، کوئی انسانیت کے نام پر، کوئی پریم کے نام پر، کوئی ایشور کے نام پر، کوئی ستیہ اہنسا کے نام پر اور کوئی لوک شاہی کے نام پر ۔ اِن لوگوں میں یہ تمیز تو ہوتی نہیں کہ یہ خود سوچ سکیں کہ اِن کی بھلائی برائی کس بات میں ہے، اِس لئے جو جیسا سمجھا دیتا ہے ویسا یہ مان لیتے ہیں اور اُس کے لئے جان لڑانے کے لئے تیار ہوجاتے ہیں ۔ اگر ایسا نہ ہوتا تو کیا آج ہندستان کی گورکھا پلٹنیں ہندستان نے برطانیہ کے ہاتھ سونپ دی ہوتیں اور کیا وہی گورکھا پلٹنیں برطانیہ کی ماتحتی میں جگہ جگہ ایسا کام کر رہی ہوتیں جس سے برطانیہ کی جگہ ہندستان بدنام ہو رہا ہوتا ۔ اور کیا وہ گورکھا پلٹنیں برطانیہ کی ماتحتی میں بنا سوچے سمجھے کوریا کے میدان میں اپنی لڑائی کے کرتب دکھا رہی ہوتیں ۔ اِسی طرح کی ہر ملک کی ناسمجھ لوک شاہی کوریا میں فوجی حیثیت سے جا ڈٹی ہے اور کوریا کو تہس نہس کر کے دنیا کے تہس نہس ہونے کی بنیاد ڈال رہی ہے ۔

(3) وہ جنتا جو اپنا بھلا برا خوب سمجھتی ہے پر اُسے یہ پتہ نہیں کہ اُسے اپنے بھلے برے کا گیان ہے ۔

بس ایسی ناسمجھ جنتا کو سمجھدار لوک شاہی کی شخصیتیں سمجھاتی ہیں اور اُن کا نشہ اُتار دیتی ہیں اور اگر وہ ملک غلام ہوتا ہے تو وہ اُن کے ذریعے اُس کو آزاد کرا لیتی ہیں اور پھر انہیں لوگوں سے وہ حکومت کا کام لیتی ہیں ۔ حضرت محمد نے یہی کیا اور مہاتما گاندھی نے بھی یہی کیا ۔ روس، چین، جاپان، امریکہ سبھی ملکوں میں لوک شاہی کی سمجھدار شخصیتیں جنم لیتی رہیں اور اسی طرح اپنا کام کرتی رہیں ۔

हमारी राय

ہماری رائے

लोकशाही, सिद्धान्त और शख़्सियत—

लोकशाही के नाम पर नेहरू टंडन मामले को लेकर कितने ही नोट पढ़ने को मिले. समझदार लिखने वालों में शायद ही कोई बचा हो जिसने इस पर कुछ लिखा न हो. सब लेखों का निचोड़ इतना ही है कि इस मामले में शख़्सियत की जीत हुई, सिद्धान्त (उसूल) की हार हुई. और सिद्धान्त की हार में लोकशाही की बेक़दरी हुई.

हम इस बारे में लिखने से पहले लोकशाही यानी डेमोक्रेसी को हम क्या समझे हैं इसे साफ़ कर देना चाहते हैं. उसके साफ़ कर देने से हमें उम्मीद है कि शख़्सियत और सिद्धान्त की लोकशाही में क्या जगह है यह भी साफ़ हो जायगा.

लोकशाही यानी लोकमत को हम दो तरह का मानते हैं—एक समझदार लोकमत—दूसरा ना समझ लोकमत—समझदार लोक मत जैसी चीज़ दुनिया में कहीं नहीं है. जब वैसा हो जायगा तब सरकार नाम की कोई चीज़ नहीं रह जायगी. समझदार लोकमत से हमारा मतलब है ऐसी जनता से जो अपनी भलाई बुराई को अच्छी तरह समझती है और यह भी समझती है कि वह उसे ख़ूब समझती है. ऐसी जनता दुनिया के परदे पर कहीं नहीं है. हां, ऐसी शख़्सियतें ज़रूर मिलती हैं. वह ही जनता में रूह फूँकती हैं, उन्हें लोकशाही की जानकारी कराती हैं और कुछ दूर तक उन्हें लोकशाही की तरफ़ बढ़ा देती हैं.

नासमझ लोकशाही दुनिया के सब देशों में ख़ूब फैली हुई है. यह लोकशाही भी तीन तरह की होती है—

(1) वह जो अपना भला बुरा बिलकुल नहीं जानती और जिस को यह भी तमीज़ नहीं है कि वह यह समझती हो कि वह अपना भला बुरा नहीं जानती. इस में वह सब लोग शामिल हैं जो जंगली हालत में दुनिया के हर मुल्क

ک شاهی' سدهانت اور شخصیت—

لوک شاهی کے نام پر نہرو ٹنڈن معاملے کو لے کر کتنے نوٹ پڑھنے کو ملے. سمجهدار لکھنے والوں میں شاید کوئی بچا هو جس نے اس پر کچھ لکھا نہ هو. ں لیکھوں کا نچوڑ اِتنا هی هے کہ اِس معاملے میں صیت کی جیت هوئی' سدهانت (اصول) کی هار ں. اور سدهانت کی هار میں لوک شاهی کی بے ی هوئی.

هم اِس بارے میں لکھنے سے پہلے لوک شاهی یعنی وکریسی کو هم کیا سمجھے هیں اِسے صاف کر دینا چاهتے ں. اُسکے صاف کر دینے سے همیں اُمید هے کہ شخصیت سدهانت کی لوک شاهی میں کیا جگہ هے یہ بھی ب هوجائے گا.

لوک شاهی یعنی لوک مت کو هم دو طرح کا مانتے ں — ایک سمجهدار لوک مت—دوسرا ناسمجھ لوک ـ — سمجهدار لوک مت جیسی چیز دنیا میں ں نہیں هے. جب ویسا هوجائے گا تب سرکار نام کی ں چیز نہیں رہ جائے گی. سمجهدار لوک مت سے را مطلب هے ایسی جنتا سے جو اپنی بھلائی برائی اچھی طرح سمجھتی هے اور یہ بھی سمجھتی هے کہ سے خوب سمجھتی هے. ایسی جنتا دنیا کے پردے پر ں نہیں هے. هاں' ایسی شخصیتیں ضرور ملتی هیں. ی جنتا میں روح پھونکتی هیں' اُنہیں لوک شاهی جانکاری کراتی هیں اور کچھ دور تک اُنہیں لوک ی کی طرف بڑھا دیتی هیں.

ناسمجھ لوک شاهی دنیا کے سب دیشوں میں خوب پھیلی ں هے. یہ لوک شاهی بھی تین طرح کی هوتی هے—

(1) وہ جو اپنا بھلا برا بالکل نہیں جانتی اور ں کو یہ بھی تمیز نہیں هے کہ وہ یہ سمجھتی هو وہ اپنا بھلا برا نہیں جانتی. اس میں وہ سب لوگ ل هیں جو جنگلی حالت میں دنیا کے هر ملک

6. कोरिया आर्मिस्टेस कानफ़रेन्स एक नई जगह करने के लिये जनरल रिजवे की तजवीज़. सैन फ़ान्सिस्को में जापानी सुलहनामे पर रूस के एतराज़. नई दिल्ली में कांगरेस वरकिंग कमेटी की बैठक शुरू. वरकिंग कमेटी के सभी मेम्बरों ने अपना स्तीफ़ा कांगरेस सदर को दे दिया.

7. आचार्य विनोबा जी का दिल्ली पैदल जाने का फ़ैसला. टंडन जी ने नई दिल्ली में प्रेस कानफ़रेन्स में एलान किया कि मैं कांगरेस सदर की जगह से स्तीफ़ा दे दूंगा मगर वरकिंग कमेटी हरगिज़ नहीं बदल सकता.

8. नई दिल्ली में कुल हिन्द कांगरेस कमेटी की "गुप्त" बैठक में टंडन जी ने स्तीफ़ा दिया और बड़े वज़ीर पंडित जवाहर लाल नेहरू कांगरेस सदर चुने गए. सैनफ़्रांसिस्को में जापानी सुलहनामे का रूस, जेकोसलोवाकिया और पोलैंड ने बाईकाट किया.

9. कांगरेस वालों से ईमानदारी और नेक नीयती से काम करने के लिये कांगरेस सदर जवाहर लाल की अपील. कांगरेस का सालाना इजलास 18, 19 अक्तूबर को दिल्ली में होगा.

10 अंगरेज़ी सरकारी खज़ाने ने ईरान की स्टलिंग रोकड़ को डालर में बदलने के खिलाफ़ कारवाई की. कनाडा इस साल डेढ़ करोड़ डालर की मदद हिन्दुस्तान को देगा.

11. कम्युनिस्टों ने रिजवे की तजवीज़ नामंज़ूर कर दी. पाकिस्तानी बड़े वज़ीर ने कशमीर के चुनाव को मखौल बताया.

12. अमरीका के डिफ़ेन्स मंत्री जनरल मारशल ने स्तीफ़ा दे दिया. आचार्य विनोबा जी अपने पौनार आश्रम से नई दिल्ली पैदल रवाना.

13. अबादान के कारखाने के अंगरेज़ी इंजीनियर को ईरान सरकार का हुक्म कि अपना चार्ज ईरानी इंजीनियर के सपुर्द करें. ईद के मौक़े पर शेख़ अब्दुल्ला का एलान कि कशमीर हमारा है.

14. कांगरेस से हटे लोगों को वापस आने के लिये पंडित नेहरू की अपील. जरनलिस्ट फ़ेडरेशन का प्रेस बिल के खिलाफ़ ठहराव.

15. पंडित नेहरू ने अपनी नई वरकिंग कमेटी के पंद्रह मेम्बरों के नामों का एलान किया. प्रजा पारटी की कौंसिल ने तय किया कि वह कांगरेस में शामिल नहीं होगी. वर्ल्ड बैंक की चीन और उत्तर कोरिया के खिलाफ़ कारवाई. नई दिल्ली की कैबिनेट में प्लानिंग मिनिस्टर का नया तक़र्रुर.

.6 کوریا آرمسٹس کانفرنس ایک نئی جگہ کرنے کے لئے جنرل رجوے کی تجویز۔ سین فرانسسکو میں جاپانی صلح نامے پر روس کے اعتراض۔ نئی دلی میں کانگریس ورکنگ کمیٹی کی بیٹھک شروع۔ ورکنگ کمیٹی کے سبھی ممبروں نے اپنا استعفیٰ کانگریس صدر کو دے دیا۔

.7 آچاریہ ونوبا جی کا دلی پیدل جانے کا فیصلہ۔ ٹنڈن جی نے نئی دلی میں پریس کانفرنس میں اعلان کیا کہ میں کانگریس صدر کی جگہ سے استعفیٰ دے دوں گا مگر ورکنگ کمیٹی ہرگز نہیں بدل سکتا۔

.8 نئی دلی میں کل ہند کانگریس کمیٹی کی "گپت" بیٹھک میں ٹنڈن جی نے استعفیٰ دیا اور بڑے وزیر پنڈت جواہر لال نہرو کانگریس صدر چنے گئے۔ سین فرانسسکو میں جاپانی صلح نامے کا روس، زیکو سلوواکیہ اور پولینڈ نے بائی کاٹ کیا۔

.9 کانگریس والوں سے ایمانداری اور نیک نیتی سے کام کرنے کے لئے کانگریس صدر جواہرلال کی اپیل۔ کانگریس کا سالانہ اجلاس 18، 19 اکتوبر کو دلی میں ہوگا۔

.10 انگریزی سرکاری خزانے نے ایران کی اسٹرلنگ روکڑ کو ڈالر میں بدلنے کے خلاف کاروائی کی۔ کناڈا اِس سال ڈیڑھ کروڑ ڈالر کی مدد ہندستان کو دے گا۔

.11 کمیونسٹوں نے رجوے کی تجویز نامنظور کر دی۔ پاکستانی بڑے وزیر نے کشمیر کے چناو کو مخول بتایا۔

.12 امریکہ کے ڈفنس منتری جنرل مارشل نے استعفیٰ دے دیا۔ آچاریہ ونوبا جی اپنے پونار آشرم سے نئی دلی پیدل روانہ۔

.13 اباداں کے کارخانے کے انگریزی انجینیر کو ایران سرکار کا حکم کہ اپنا چارج ایرانی انجینیر کے سپرد کریں۔ عید کے موقع پر شیخ عبداللہ کا اعلان کہ کشمیر ہمارا ہے۔

.14 کانگریس سے ہٹے لوگوں کو واپس آنے کے لئے پنڈت نہرو کی اپیل۔ جرنلسٹ فڈریشن کا پریس بل کے خلاف ٹھہراو۔

.15 پنڈت نہرو نے اپنی نئی ورکنگ کمیٹی کے پندرہ ممبروں کے ناموں کا اعلان کیا۔ پرجا پارٹی کی کونسل نے طے کیا کہ وہ کانگریس میں شامل نہیں ہوگی۔ ورلڈ بینک کی چین اور اتر کوریہ کے خلاف کارروائی۔ نئی دلی کی کیبنٹ میں پلاننگ منسٹر کا نیا تقرر۔

26. आसाम के पास रेल गाड़ी पटरी से उतर गई. कुल हिन्द शिया कानफ़रेन्स का पंडित नेहरू पर 'पूरा यक़ीन' रखने का एलान.

27. हिन्दुस्तान जापान से अलग सुलह करेगा—बड़े वज़ीर का हिन्द पार्लिमेन्ट में एलान.

28. पंडित जवाहर लाल की नई दिल्ली में प्रेस कानफ़रेन्स—मजबूरी की हालत में कांगरेस सद्र बनने को तैयार. हिन्दुस्तान के विदेशी ट्रेड बैलेन्स की हालत में काफ़ी तरक़्क़ी. जापान और अमरीका में अलग फ़ौजी सुलहनामे पर रूसी प्रेस में नाराज़गी.

29. कांगरेस की गुत्थी सुलझती नज़र नहीं आती—नई दिल्ली की ख़बर. बनस्पति की चीज़ों पर बाहर भेजने के लिये एक्सपोर्ट ड्यूटी हिन्द सरकार ने हटा ली.

30. इसराईल और अरब के देशों को आठ करोड़ डालर देने का अमरीका का फ़ैसला. टंडन जी का वरकिंग कमेटी को बदलने से लखनऊ में इनकार.

31. कशमीर के नए चुनाव में शेख़ अबदुल्ला और नेशनल कांनफ़रेन्स के पच्चीस नामज़द उम्मीदवार बिला मुक़ाबला चुन लिये गए. हिन्द पार्लिमेन्ट में प्रेस बिल होम मिनिस्टर ने पेश किया. यू. पी. असेम्बली में बच्चों की बेहतरी के बारे में बिल पास.

1. सितम्बर—यू. एन. ओ. की सिक्योरिटी कौन्सिल ने मिस्र को स्वेज़ नहर में इसराईल जाने वाले जहाज़ों को रोक देने पर मिस्र की बुराई की और उन्हें छोड़ देने के लिये ठहराव पास किया. मिस्र का यह फ़ैसला मानने से इनकार. डाक्टर मुसादिक़ का एलान कि ईरान अपनी जगह पर अटल रहेगा. श्रीनगर में कशमीर यूनिवरसिटी के कनवोकेशन में होम मिनिस्टर राज गोपालाचार्य की स्पीच. आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और अमरीका ने आपस में एक हिफ़ाज़ती पैक्ट पर दस्तख़त किये.

2. ब्लैक पूल में अंगरेज़ी लेबर पारटी की कानफ़रेन्स.

3. ईरान सरकार अबादान वाला तेल का कारख़ाना चालू करेगी. पार्लिमेन्ट में सी. रियासतों का बिल पास. दिल्ली के पास रेल गाड़ी लड़ गई.

4. सैन फ़्रांसिस्को में जापानी सुलह कानफ़रेन्स शुरू हुई.

5. अफ़ग़ानी बड़े वज़ीर का नई दिल्ली में पंडित नेहरू द्वारा सत्कार. अंगरेज़ी ट्रेड यूनियन कानफ़रेन्स में बायें दल का ठहराव ख़ारिज. अहमदाबाद में गो हत्या बन्द आन्दोलन करने वालों पर पुलिस ने गोली चलाई.

26. آسام کے پاس ریل گاڑی پٹری سے اُتر گئی. کل ندشیعہ کانفرنس کا پنڈت نہرو پر " پورا یقین " رکھنے اعلان ۔

27. ہندستان جاپان سے الگ صلح کرے گا — بڑے یر کا ہند پارلیمنٹ میں اعلان ۔

28. پنڈت جواہر لال کی نئی دلی میں پریس نفرس — مجبوری کی حالت میں کانگریس صدر بننے و تیار ۔ ہندستان کے ودیشی ٹریڈ بیلنس کی حالت یں کافی ترقی ۔ جاپان اور امریکہ میں الگ فوجی صلح امے پر روسی پریس میں ناراضگی ۔

29. کانگریس کی گتھی سلجھتی نظر نہیں آتی — ئی دلی کی خبر ۔ بنسپتی کی چیزوں پر باہر بھیجنے کے لئے ایکسپورٹ ڈیوٹی ہند سرکار نے ہٹالی ۔

30. اسرائیل اور عرب کے دیشوں کو آٹھ کروڑ ڈالر یئے کا امریکہ کا فیصلہ ۔ ٹنڈن جی کا ورکنگ کمیٹی کو دلنے سے لکھنؤ میں انکار ۔

31. کشمیر کے نئے چناؤ میں شیخ عبداللہ اور یشنل کانفرنس کے پچیس نامزد اُمیدوار بلا مقابلہ چن ئے گئے ۔ ہند پارلیمنٹ میں پریس بل ہوم منسٹر نے یش کیا ۔ یو ۔ پی ۔ اسمبلی میں بچوں کی بہتری کے ارے میں بل پاس ۔

1. ستمبر — یو ۔ این ۔ او ۔ کی سکیورٹی کونسل نے صر کو سوئز نہر میں اسرائیل جانے والے جہازوں کو روک یئے پر مصر کی برائی کی اور انہیں چھوڑ دینے کے لئے ٹھہراو اس کیا ۔ مصر کا یہ فیصلہ ماننے سے انکار ۔ ڈاکٹر مصادق کا علان کہ ایران اپنی جگہ پر اٹل رہے گا ۔ شری نگر میں کشمیر ونیورسٹی کے کنووکیشن میں ہوم منسٹر راج گوپالا چاریہ کی اسپیچ ۔ آسٹریلیا، نیوزی لینڈ اور امریکہ نے آپس یں ایک حفاظتی پیکٹ پر دستخط کئے ۔

2. بلیک پول میں انگریزی لیبر پارٹی کی کانفرنس ۔

3. ایران سرکار ابادان والا تیل کا کارخانہ چالو کرے ی ۔ پارلیمنٹ میں سی ۔ ریاستوں کا بل پاس ۔ دلی کے اس ریل گاڑی لڑ گئی ۔

4. سین فرانسسکو میں جاپانی صلح کانفرنس روع ہوئی ۔

5. افغانی بڑے وزیر کا نئی دلی میں پنڈت ہرو دوارا ستکار ۔ انگریزی ٹریڈ یونین کانفرنس میں ائیں دل کا ٹھہراو خارج ۔ احمدآباد میں گو ہتیا بند ندولن کرنے والوں پر پولیس نے گولی چلائی ۔

देश विदेश की डायरी

16. अगस्त—ईरान में तेल की बात चीत अटक गई. कांगरेस सदर टंडन जी का बम्बई में एलान कि चाहे जो हो मैं अपना फ़र्ज़ अदा करूंगा. स्वामी सीताराम शास्त्री का आन्ध्र सूबा बनाने के मामले पर गुन्टूर में अनशन शुरू.

17. पार्लिमेन्ट ने पंजाब में गवरनरी हकूमत के लिये बिल पास किया.

18. ईरान ने अंगरेज़ी सुझाव रद्द कर दिये. इलाहाबाद के पास रेल गाड़ी (छोटी लाइन) पटरी से उतर गई. मद्रास में आचार्य कृपलानी ने तामिलनाद प्रजा पारटी के पहले जलसे का उद्घाटन किया.

19. कोरिया में अमरीकी फ़ौजों का एक अचानक (लेकिन छोटे इलाक़े में) धावा.

20. पख़्तून जिरगए-हिन्द के सदर की डाक्टर फ़्रान्क ग्राहम से आज़ाद पख़्तूनिस्तान के बारे में ग़ौर करने के लिये दरख़्वास्त. जिनेवा में यू. एन. ओ. की आर्थिक और समाजी बैठक में विदेशी पूँजी के मामले पर हिन्दुस्तान और अमरीका के नुमाइन्दों में मत भेद.

21. कांगरेस की पार्लिमेन्टरी बैठक में पंडित जवाहर लाल की दिल खोल कर बात चीत. नैपाल के राजा हिन्दुस्तान आए.

22. मध्य प्रदेश के होम मिनिसटर द्वारिका प्रसाद मिश्र का पंडित जवाहर लाल की भीतरी बाहरी पालिसी के ख़िलाफ़ बयान और डिक्टेटर होने का इलज़ाम.

23. केसांग में बमबारी किये जाने पर कम्युनिस्टों को एतराज़—बात चीत बन्द. ईरान में मामला तय न हो सका. अंगरेज़ी नुमाइन्दे स्टोक्स लन्दन को वापस रवाना. मिस्र के बड़े वज़ीर नहास पाशा का एलान कि हम सन 36 वाला समझौता क़बूल नहीं कर सकते.

24. जापान के अमरीकी कमान्डर जनरल रिजवे की कम्युनिस्टों से बात चीत करने के लिये नई शर्तें. ईरान के मामले में जब तक वहां की सरकार कोई ख़ास क़दम न उठाए तब तक आगे और कुछ न बढ़ने का अंगरेज़ी कैबिनेट का फ़ैसला. मध्य प्रदेश के होम मिनिस्टर द्वारिका प्रसाद मिश्र का मिनस्टरी से स्तीफ़ा.

25. सैन फ़्रांसिसको कानफ़रेन्स में हिन्दुस्तान के शरीक न होने का एलान. नई दिल्ली में टंडन-नेहरू गुत्थी को सुलझाने की कोशिशें जारी.

دیش ودیش کی ڈائری

16. اگست—ایران میں تیل کی بات چیت اٹک گئی. کانگریس صدر ٹنڈن جی کا بمبئی میں اعلان کہ چاہے جو ہو میں اپنا فرض ادا کرونگا ۔ سوامی سیتا رام شاستری کا آندھر صوبہ بنانے کے معاملے پر گنٹور میں ان شن شروع ۔

17. پارلیمنٹ نے پنجاب میں گورنری حکومت کے لئے بل پاس کیا ۔

18. ایران نے انگریزی سجھاو رد کر دیئے. الہ آباد کے پاس ریل گاڑی (چھوٹی لائن) پٹری سے اتر گئی ۔ مدراس میں آچاریہ کرپلانی نے تامل ناد پرجا پارٹی کے پہلے جلسے کا اُدگھاٹن کیا ۔

19. کوریا میں امریکی فوجوں کا ایک اچانک (لیکن چھوٹے علاقے میں) دھاوا ۔

20. پختون جرگۂ ہند کے صدر کی ڈاکٹر فرانک گراہم سے آزاد پختونستان کے بارے میں غور کرنے کے لئے درخواست ۔ جنیوا میں یو ۔ این ۔ او ۔ کی آرتھک اور سماجی بیٹھک میں ودیشی پونجی کے معاملے پر ہندستان اور امریکہ کے نمائندوں میں مت بھید ۔

21. کانگریس کی پارلیمنٹری بیٹھک میں پنڈت جواہر لال کی دل کھول کر بات چیت ۔ نیپال کے راجہ ہندستان آئے ۔

22. مدھیہ پردیش کے ہوم منسٹر دوارکا پرساد مشر کا پنڈت جواہر لال کی بھیتری باہری پالیسی کے خلاف بیان اور ڈکٹیٹر ہونے کا الزام ۔

23. کیسانگ میں بمباری کئے جانے پر کمیونسٹوں کو اعتراض— بات چیت بند ۔ ایران میں معاملہ طے نہ ہوسکا ۔ انگریزی نمائندے اسٹوکس لندن کو واپس روانہ. مصر کے بڑے وزیر نحاس پاشا کا اعلان کہ ہم سن 36 والا سمجھوتہ قبول نہیں کر سکتے ۔

24. جاپان کے امریکی کمانڈر جنرل رجوے کی کمیونسٹوں سے بات چیت کرنے کے لئے نئی شرطیں ۔ ایران کے معاملے میں جب تک وہاں کی سرکار کوئی خاص قدم نہ اٹھائے تب تک آگے اور کچھ نہ بڑھنے کا انگریزی کیبنٹ کا فیصلہ ۔ مدھیہ پردیش کے ہوم منسٹر دوارکا پرساد مشر کا منسٹری سے استعفیٰ ۔

25. سین فرانسسکو کانفرنس میں ہندستان کے شریک نہ ہونے کا اعلان. نئی دلی میں ٹنڈن نہرو گتھی کو سلجھانے کی کوششیں جاری ۔

हैं कि जिन लोगों को सयानों की शिक्षा से दिलचस्पी हो वह इन किताबों से ज़रूर लाभ उठाएँ. सब किताबें सोलह सोलह सफ़े की हैं और हर किताब का दाम पांच आना है.

काम धंदे

गोपी तांगे वाला

सम्पत कहार

अब्दुर्रहमान राज

छोटे लाल बढ़ई

कल्लू हलवाई

धूल जी रसोइया

द्वारका प्रसाद नाई

प्यारे लाल दर्ज़ी

फूलचन्द मूल चन्द पंसारी

जीवन-चरित्र

श्री कृष्न जी

श्री राम चन्द्र जी (दो भाग)

महात्मा गौतम बुद्ध

भक्त कबीर

अमीर ख़ुसरो

निज़ामुद्दीन औलिया

गुरु नानक देव जी

करबला के शहीद

स्वामी दयानन्द सरस्वती

मुस्तफ़ा कमाल पाशा (दो भाग)

प्रसिद्ध पुस्तकें

रामायन (दो भाग)

हातिम ताई (तीन भाग)

आल्हा ऊदल (दो भाग)

शकुन्तला और दुश्यन्त

पद्मावत

पंच तंत्र (दो भाग)

अलिफ़ लैला (चार भाग)

मिलने का पता—

मकतबा जामिआ लिमिटेड, जामिआ नगर, देहली

ں کہ جن لوگوں کو سیانوں کی شکشا سے دلچسپی ہو اِن کتابوں سے ضرور لابھ اُٹھائیں . سب کتابیں سولہ سولہ صفحے کی ہیں اور ہر کتاب کا دام پانچ آنہ ہے .

کام دھندے

گوپی تانگے والا

سمپت کہار

عبدالرحمان راج

چھوٹے لال بڑھئی

کلو حلوائی

دھول جی رسوئیا

دوارکا پرساد نائی

پیارے لال درزی

پھول چند مولچند پنساری

جیون چرتر

شری کرشن جی

شری رام چندر جی (دو بھاگ)

مہاتما گوتم بدھ

بھگت کبیر

امیر خسرو

نظام الدین اولیا

گرو نانک دیوجی

کربلا کے شہید

سوامی دیانند سرسوتی

مصطفیٰ کمال پاشا (دو بھاگ)

پرسدھ پستکیں

راماین (دو بھاگ)

حاتم طائی (تین بھاگ)

آلہا اودل (دو بھاگ)

شکنتلا اور دشینت

پدماوت

پنچ تنتر (دو بھاگ)

الف لیلہ (چار بھاگ)

ملنے کا پتہ—

مکتبہ جامعہ لمیٹیڈ، جامعہ نگر، دھلی .

इस ज़रूरत को पूरा कर रहे हैं. इस सम्बंध में वह 'शेर-ओ-शायरी' नामी किताब बहुत पहले निकाल चुके हैं, उससे लोगों की प्यास नहीं बुझी. गोयलीय जी ने अब तय किया है कि उरदू की शायरी के इतिहास को सामने रख वह उरदू शायरों को हिन्दी में पेश करेंगे ताकि कोई छूटने न पाए. यह बहुत बड़ी योजना है. 'शेर-ओ-सुख़न' उस सिलसिले की पहली किताब है. किताब मोटी होने की वजह से उसे छै भागों में बांटा गया है. शुरू से लेकर 1900 ई० तक के सब मशहूर और इतिहासी अहमियत रखने वाले 'ग़ज़ल गो' शायरों का इस में ज़िक्र है. हर शायर की ग़ज़ल का नमूना देने से पहले उसकी ज़िन्दगी का भी थोड़ा थोड़ा सा परिचय दिया गया है, उस के वातावरन और माहौल का भी अनुमान कराया गया है. सम्पादक के नोट तो बहुत मारके के हैं. उरदू शायरी से इस तरह की जानकारी इससे कम में कोई किताब अभी तक नहीं पेश कर सकी. गोलीय जी को इस मेहनत पर जितनी बधाई दी जाय कम है.

किताब की जिल्द बेहद सुन्दर है और पीछे इन्डेक्स दिया हुआ है. किताब के लाभ के बारे में जो कुछ भी कहा जाय कम है. मेरी निगाह में तो बस इतना ही कहना काफ़ी है कि इस किताब को हर उस आदमी को पढ़ना चाहिये जो उरदू साहित्य की एक प्रनाली के बारे में एक ही किताब पढ़कर बहुत कुछ जानना चाहता है. मन बहलाव के लिये तो यह ज़बरदस्त साधन है. हमें अब 'शेर-ओ-सुख़न' के दूसरे भागों का बेचैनी से इन्तज़ार है.

—मुजीब रिज़वी

प्रौढ़ शिक्षामाला की किताबें

जामिआ मिल्लिआ देहली के प्रौढ़ शिक्षा विभाग (इदारए-तालीम व तरक़्क़ी) ने दस साल तक सियानों में शिक्षा फैलाने का काम किया है. इस सिलसिले में उसने जो तजरबे किये हैं वह बहुत सफल रहे हैं. मक्तबा जामिआ देहली ने बालिग़ों की शिक्षा के लिये बहुत सी किताबें भी छापी हैं. इन किताबों की ख़ूबी यह है कि इन्हें अक्षर पहचान सकने वाले लोग भी बड़े मज़े में पढ़ सकते हैं. किताबों की भाशा बहुत आसान है और इन छोटी छोटी किताबों के ज़रिये हर तरह की जानकारी बढ़ सकती है.

अलग अलग विशयों की किताबों के अलग अलग कवर हैं जो बहुत सुन्दर हैं. टाइप काफ़ी मोटा इस्तेमाल किया गया है और तस्वीरों की वजह से यह किताबें और भी उपयोगी बन गई हैं. किताबों के नाम ही से उनके अन्दर क्या है, यह मालूम हो जायगा. हम सिफ़ारिश करते

اس ضرورت کو پورا کر رہے ھیں۔ اس سمبندھ میں وہ 'شعر و شاعری' نامی کتاب بہت پہلے نکال چکے ھیں۔ اس سے لوگوں کی پیاس نہیں بجھی۔ گوئلیہ جی نے اب طے کیا ھے کہ اُردو کی شاعری کے اتہاس کو سامنے رکھ وہ اُردو شاعروں کو ھندی میں پیش کریں گے تاکہ کوئی چھوٹنے نہ پائے یہ بہت بڑی یوجنا ھے۔ 'شعر و سخن' اس سلسلے کی پہلی کتاب ھے۔ کتاب موٹی ھونے کی وجہ سے اُسے چھ بھاگوں میں بانٹا گیا ھے۔ شروع سے لے کر 1900 عیسوی تک کے سب مشہور اور اتہاسی اھمیت رکھنے والے 'غزل گو' شاعروں کا اس میں ذکر ھے۔ ھر شاعر کی غزل کا نمونہ دینے سے پہلے اُس کی زندگی کا بھی تھوڑا تھوڑا سا پریچے دیا گیا ھے' اُس کے واتاورن اور ماحول کا بھی انومان کرایا گیا ھے۔ سمپادک کے نوٹ تو بہت معرکے کے ھیں۔ اُردو شاعری سے اِس طرح کی جانکاری اِس سے کم میں کوئی کتاب ابھی تک نہیں پیش کر سکی۔ گوئلیہ جی کو اِس محنت پر جتنی بدھائی دی جائے کم ھے۔

کتاب کی جلد بے حد سندر ھے اور پیچھے انڈیکس دیا ھوا ھے۔ کتاب کے لابھ کے بارے میں جو کچھ بھی کہا جائے کم ھے۔ میری نگاہ میں تو بس اتنا ھی کہنا کافی ھے کہ اِس کتاب کو ھر اُس آدمی کو پڑھنا چاھئے جو اُردو ساھتیہ کی ایک پرنالی کے بارے میں ایک ھی کتاب پڑھکر بہت کچھ جاننا چاھتا ھے۔ من بہلاو کے لئے تو یہ زبردست سادھن ھے۔ ھمیں اب 'شعروسخن' کے دوسرے بھاگوں کا بے چینی سے انتظار ھے۔

— مجیب رضوی

پروڑھ شکشا مالا کی کتابیں

جامعہ ملیہ دھلی کے پروڑھ شکشا و بھاگ (اِدارہ تعلیم و ترقی) نے دس سال تک سیانوں میں شکشا پھیلانے کا کام کیا ھے۔ اِس سلسلے میں اُس نے جو تجربے کئے ھیں وہ بہت سپھل رہے ھیں۔ مکتبہ جامعہ دھلی نے بالغوں کی شکشا کے لئے بہت سی کتابیں بھی چھاپی ھیں۔ اِن کتابوں کی خوبی یہ ھے کہ اِنہیں اکشر پہچان سکنے والے لوگ بھی بڑے مزے میں پڑھ سکتے ھیں۔ کتابوں کی بھاشا بہت آسان ھے اور اِن چھوٹی چھوٹی کتابوں کے ذریعے ھر طرح کی جانکاری بڑھ سکتی ھے۔

الگ الگ وشیوں کی کتابوں کے الگ الگ کور ھیں جو بہت سندر ھیں۔ ٹائپ کافی موٹا اِستعمال کیا گیا ھے اور تصویروں کی وجہ سے یہ کتابیں اور بھی اُپیوگی بن گئی ھیں۔ کتابوں کے نام ھی سے اُن کے اندر کیا ھے' یہ معلوم ھوجائے گا۔ ھم سفارش کرتے

कुछ किताबें — کچھ کتابیں

सितारों से ज़र्रों तक

लिखने वाले—जगन्नाथ आज़ाद.

निकालने वाले—मकतबा शाहराह, देहली.

लिखावट—उरदू, सफ़े 192, क़ीमत दो रुपए बारह आने.

'बेकरां' के बाद जगन्नाथ आज़ाद का यह दूसरा मजमूआ है. सन '47 के बाद बहुत सी चीज़ों में तबदीली हुई है. आज़ाद की शायरी में भी काफ़ी तबदीली हुई है. इस दीवान का नाम "सितारों से ज़र्रों तक" ही इस तबदीली का परिचय देता है. इस किताब में सन '47 के बाद की कही हुई नज़्में, ग़ज़लें और रुबाइयाँ शामिल हैं. कमज़ोर से कमज़ोर इनसान की ताक़त का आज़ाद क़ायल है और कहता है—

वही इनसान, साहिल पर जिन्हें तूफ़ां का धोका हो
अगर अड़ जायं, तूफ़ानों को भी साहिल समझते हैं.

आज सिक्कों की चमक हमारे साहित्यकों की नीयत डांवांडोल कर देती है, मजबूरी के धारे उन्हें बहा ले जाते हैं. आज़ाद उन्हें यह पैग़ाम देता है—

अपना पैग़ाम ज़माने को सुनाने के एवज़
ताज और तख़्त भी मिलते हों तो इनकार करें.

आज़ाद का माहौल तो आज हम सबका माहौल है. लेकिन इस माहौल ने आज़ाद पर जो असर डाला है, उसकी शायरी को जो रूप दिया है, उसे जानने के लिये इस किताब को पढ़ना बहुत ही ज़रूरी है.

—मुजीब रिज़वी

शेर-ओ-सुख़न

सम्पादक—श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय

निकालने वाले—भारतीय ज्ञान पीठ, काशी.

लिखावट—हिन्दी, सफ़े 754, क़ीमत आठ रुपया.

उरदू साहित्य को सिर्फ़ नागरी लिखावट जानने वालों के सामने लाने की आज सख़्त ज़रूरत है. गोयलीय जी

تاروں سے ذروں تک

لکھنے والے—جگن ناتھ آزاد .

نکالنے والے—مکتبہ شاہراہ' دھلی .

لکھاوٹ—اُردو' صفحے 192' قیمت دو روپے بارہ آنے .

'بیکراں' کے بعد جگن ناتھ آزاد کا یہ دوسرا مجموعہ
سن '47 کے بعد بہت سی چیزوں میں تبدیلی
ی ہے . آزاد کی شاعری میں بھی کافی تبدیلی ہوئی
. اس دیوان کا نام ''ستاروں سے ذروں تک'' ہی اس
یلی کا پریچے دیتا ہے . اِس کتاب میں سن '47 کے
کی کہی ہوئی نظمیں' غزلیں اور رباعیاں شامل ہیں .
ر سے کمزور انسان کی طاقت کا آزاد قائل ہے اور کہتا
—

ی انسان' ساحل پر جنھیں طوفاں کا دھوکا ہو
ر اَڑ جائیں' طوفانوں کو بھی ساحل سمجھتے ہیں .

آج سکوں کی چمک ہمارے ساھتیکوں کی نیت
ڈانواڈول کردیتی ہے' مجبوری کے دھارے اُنھیں بہا لیجاتے
ں . آزاد اُنھیں یہ پیغام دیتا ہے —

اپنا پیغام زمانے کو سنانے کے عوض
تاج اور تخت بھی ملتے ہوں تو انکار کریں

آزاد کا ماحول تو آج ہم سب کا ماحول ہے . لیکن
ماحول نے آزاد پر جو اثر ڈالا ہے' اُس کی شاعری کو
روپ دیا ہے' اُسے جاننے کے لئے اِس کتاب کو پڑھنا
ت ہی ضروری ہے .

— مجیب رضوی

عروسخن

سمپادک — شری ایودھیا پرساد گوئلیہ

نکالنے والے — بھارتیہ گیان پیٹھ' کاشی .

لکھاوٹ — ھندی' صفحے 754' قیمت آٹھ روپیہ .

اُردو ساھتیہ کو صرف ناگری لکھاوٹ جاننے والوں کے
سامنے لانے کی آج سخت ضرورت ہے . گوئلیہ جی

ब्योपारी ने थाने में ड्राइवर के खिलाफ़ रिपोर्ट लिखाई और ड्राइवर को गिरफ़्तार कराने के लिये अपनी सारी कोशिश लगादी मगर वह कामयाब न हुआ.

बहुत दिन बीत गए. कई बरस के बाद सी. आई. डी. की रिपोर्ट पर एक आदमी पकड़ा गया. सी. आई. डी. के अफ़सरों को पूरा यक़ीन था कि यह आदमी वही चोर ड्राइवर है.

उस आदमी को अदालत में पेश किया गया और धोका देने का इलज़ाम लगा कर मुक़दमा चलाया गया. मगर उसने ड्राइवर होने से ही इनकार कर दिया और कहा कि मैंने आज तक ड्राइवरी नहीं की है. वह आदमी ज़मानत पर रिहा हो गया और मुक़दमा चलने लगा. कई बार अदालत में पेशी हुई, मगर वह इनकार ही करता रहा. वह इतनी सफ़ाई से बहस का जवाब देता था कि मुख़ालिफ़ वकील की कुछ न चलती. आख़िर नौबत यहाँ तक पहुंची कि मुक़दमे को ख़त्म करने की बात होने लगी.

लेकिन सच सच है और झूट झूट. एक दिन उस आदमी के पाप का भंडा फूट ही गया. हुआ यह कि एक दिन अदालत ही में ब्योपारी ने उस आदमी को यह कह-कर बुलाया—"ड्राइवर साहब ! मेरी एक बात तो सुनिये ."

वह आदमी मुलज़िमों के कटघरे में खड़ा था. ब्योपारी की बात सुनकर उसी तरह चौंक पड़ा जैसे कोई हमारा नाम लेकर पुकारे तो हम चौंक कर देखने लगते हैं. उसने झट ब्योपारी की तरफ़ देखा और कहा—"कहिये क्या कहते हैं ?"

हाकिम बैठा हुआ यह सब देख रहा था. उसे विश्वास हो गया कि यह आदमी पहले ज़रूर ड्राइवर रहा होगा. और फिर उसे चोरी और धोका देने के जुर्म में सात बरस की सज़ा दे दी गई और उसका माल सरकार ने ज़ब्त करके ब्योपारी को दिला दिया.

('पयाम तालीम' से)

بیوپاری نے تھانے میں ڈرائیور کے خلاف رپورٹ لکھائی اور ڈرائیور کو گرفتار کرانے کے لئے اپنی ساری کوشش لگادی مگر وہ کامیاب نہ ہوا۔

بہت دن بیت گئے. کئی برس کے بعد سی. آئی. ڈی. کی رپورٹ پر ایک آدمی پکڑا گیا ۔ سی ۔ آئی ۔ ڈی کے افسروں کو پورا یقین تھا کہ یہ آدمی وہی چور ڈرائیور ہے.

اُس آدمی کو عدالت میں پیش کیا گیا اور دھوکہ دینے کا الزام لگاکر مقدمہ چلایا گیا ۔ مگر اُس نے ڈرائیور ہونے سے ہی انکار کر دیا اور کہا کہ میں نے آج تک ڈرائیوری نہیں کی ہے ۔ وہ آدمی ضمانت پر رہا ہوگیا اور مقدمہ چلنے لگا ۔ کئی بار عدالت میں پیشی ہوئی' مگر وہ انکار ہی کرتا رہا ۔ وہ اتنی صفائی سے بحث کا جواب دیتا تھا کہ مخالف وکیل کی کچھ نہ چلتی ۔ آخر نوبت یہاں تک پہنچی کہ مقدمے کو ختم کرنے کی بات ہونے لگی :

لیکن سچ سچ ہے اور جھوٹ جھوٹ ۔ ایک دن اُس آدمی کے پاپ کا بھنڈا پھوٹ ہی گیا ۔ ہوا یہ کہ ایک دن عدالت ہی میں بیوپاری نے اُس آدمی کو یہ کہکر بلایا— "ڈرائیور صاحب ! میری ایک بات تو سنئے."

وہ آدمی ملزموں کے کٹگھرے میں کھڑا تھا ۔ بیوپاری کی بات سن کر اُسی طرح چونک پڑا جیسے کوئی ہمارا نام لے کر پکارے تو ہم چونک کر دیکھنے لگتے ہیں ۔ اُس نے جھٹ بیوپاری کی طرف دیکھا اور کہا—"کہئے کیا کہتے ہیں ؟"

حاکم بیٹھا ہوا یہ سب دیکھ رہا تھا ۔ اُسے وشواس ہوگیا کہ یہ آدمی پہلے ضرور ڈرائیور رہا ہوگا ۔ اور پھر اُسے چوری اور دھوکہ دینے کے جرم میں سات برس کی سزا دیدی گئی اور اُس کا مال سرکار نے ضبط کرکے بیوپاری کو دلا دیا.

('پیام تعلیم' سے)

चुटकुला

बाप—बेटा, रास्ते में देख कर चला करो, नहीं तो किसी दिन मोटर के नीचे आ जाओगे.

बेटा—इससे क्या ? मैंने न जाने कितनी बार हवाई जहाज़ के नीचे आ गया हूँ.

—बेनी माधो प्रसाद

چٹکلہ

باپ — بیٹا' راستے میں دیکھکر چلا کرو' نہیں تو کسی دن موٹر کے نیچے آجاؤ گے ۔

بیٹا — اِس سے کیا ؟ میں نہ جانے کتنی بار ہوائی جہاز کے نیچے آگیا ہوں ۔

—بینی مادھو پرساد

लौटने से पहले उन लोगों ने मल्लोरी का बर्फ़ हटाने का बेलचा देखा जो एवरेस्ट की चोटी के पास के टीले से 30 फ़ीट नीचे पड़ा था. यह बेलचा पत्थरों पर इस तरह पड़ा था मानो किसी ने कल ही उसे वहाँ रखा हो. यही बेलचा उन दो वीरों मल्लोरी और इरविन का आख़िरी निशान था जो सन 1924 में एवरेस्ट की चोटी तक पहुँचते पहुँचते बादलों में खो गए थे. एवरेस्ट की ऊंची चोटी तक पहुंचने की यह कोशिश भी नाकामयाब रही.

सन 1933 में एवरेस्ट की चोटी को हवाई जहाज़ से फ़तह किया गया. महीनों की तैयारी के बाद, दो हवाई जहाज़ 3 अप्रैल को बिहार के ज़िला पूरनीया से एवरेस्ट के लिये रवाना हुए. उनका नेता लार्ड क्लैडस डेल था. उस दिन मौसम कुछ अच्छा था और चोटी भी साफ़ दिखाई दे रही थी. आहिस्ता आहिस्ता हवाई जहाज़ 30,000 फ़ीट ऊपर उड़े और एवरेस्ट की चोटी पर चक्कर काटने लगे. सारी दुनिया यह सुनकर ताज्जुब में पड़ गई कि एवरेस्ट की ऊंची चोटी को आदमी ने हवाई जहाज़ से फ़तह कर लिया है.

सन 1936 में पाँचवीं बार एवरेस्ट पहाड़ पर पैदल चढ़ने की कोशिश की गई. इस बार रिटल्ज ही यात्रियों का नेता बना. 27 अप्रैल को चढ़ाई शुरू हुई. मौसम बहुत अच्छा था. ऐसा लगता था इस बार सफलता ज़रूर मिलेगी. यात्रियों ने पहाड़ पर अपना चौथा कैम्प 23,000 फ़िट की ऊंचाई पर लगा लिया था. पर इसी बीच ज़ोरों का बर्फ़ गिरने लगा और पहाड़ पर चढ़ना नामुमकिन हो गया. इस तरह यह यात्रा भी नाकामयाब रही.

इन पाँच कोशिशों की असफलता के बावजूद एवरेस्ट फ़तह करने की कोशिशें अब भी जारी हैं.

لوٹنے سے پہلے اُن لوگوں نے مللوری کا برف ہٹانے کا
یہ دیکھا جو ایورسٹ کی چوٹی کے پاس کے ٹیلے سے
ٹ نیچے پڑا تھا . یہ بیلچہ پتھروں پر اس طرح
ا مانو کسی نے کل ہی اُسے وہاں رکھا ہو . یہی بیلچہ
و ویروں مللوری اور اروِن کا آخری نشان تھا جو سن
1 میں ایورسٹ کی چوٹی تک پہونچتے پہونچتے
ں میں کھو گئے تھے . ایورسٹ کی اونچی چوٹی تک
چنے کی یہ کوشش بھی ناکامیاب رہی .

سن 1933 میں ایورسٹ کی چوٹی کو ہوائی جہاز
تح کیا گیا . مہینوں کی تیاری کے بعد دو ہوائی جہاز
پریل کو بہار کے ضلع پورنیا سے ایورسٹ کے لئے روانہ
. اُن کا نیتا لارڈ کلیڈس ڈیل تھا . اُس دن موسم
اچھا تھا اور چوٹی بھی صاف دکھائی دے رہی تھی.
تہ آہستہ ہوائی جہاز 30,000 فٹ اوپر اُڑے اور
ٹ کی چوٹی پر چکر کاٹنے لگے . ساری دنیا یہ سن
جب میں پڑ گئی کہ ایورسٹ کی اونچی چوٹی کو
ی نے ہوائی جہاز سے فتح کر لیا ہے .

سن 1936 میں پانچویں بار ایورسٹ پہاڑ پر پیدل
ھنے کی کوشش کی گئی . اس بار بھی رٹلز ہی
وں کا نیتا بنا . 27 اپریل کو چڑھائی شروع ہوئی .
م بہت اچھا تھا . ایسا لگتا تھا اِس بار سپھلتا ضرور
گی . یاتریوں نے پہاڑ پر اپنا چوتھا کیمپ 23,000
کی اونچائی پر لگا لیا تھا . اسی بیچ زوروں کا برف
لگا اور پہاڑ پر چڑھنا ناممکن ہوگیا . اس طرح یہ
ا بھی نا کامیاب رہی .

ان پانچ کوششوں کی اسپھلتا کے باوجود ایورسٹ
ح کرنے کی کوششیں اب بھی جاری ہیں .

झूट कैसे छिपता ?

एक व्योपारी ने कुछ सामान ख़रीद कर एक किराये की मोटर ली और उसी पर माल रखकर आप भी उसी पर बैठ गया. थोड़ी दूर चलने के बाद उसने ड्राइवर से गाड़ी रुकवाई और पेशाब करने के लिये मोटर से नीचे उतर गया.

वह जैसे ही पेशाब करने बैठा, ड्राइवर ने गाड़ी स्टार्ट करदी और कुल सामान लेकर चलता बना. व्योपारी सैकड़ों बार इस तरह अपनी दुकान तक सामान ले गया था, लेकिन कभी ऐसा संजोग न हुआ था. सामान के अलावा व्योपारी का थैला भी मोटर में था जिसमें क़रीब तीस या बत्तीस हज़ार रुपए के नोट थे.

جھوٹ کیسے چھپتا ؟

ایک بیوپاری نے کچھ سامان خرید کر ایک کرائے کی
ر لی اور اسی پر مال رکھکر آپ بھی اسی پر بیٹھ گیا .
ی دور چلنے کے بعد اُس نے ڈرائیور سے گاڑی رکوائی
پیشاب کرنے کے لئے موٹر سے نیچے اُتر گیا .

وہ جیسے ہی پیشاب کرنے بیٹھا' ڈرائیور نے گاڑی
ٹارٹ کردی اور کل سامان لےکر چلتا بنا . بیوپاری
کڑوں بار اس طرح اپنی دوکان تک سامان لے گیا تھا'
ن کبھی ایسا سنجوگ نہ ہوا تھا . سامان کے علاوہ
پاری کا تھیلا بھی موٹر میں تھا جسمیں قریب تیس
تیس ہزار روپے کے نوٹ تھے .

कड़ी बर्फ़ीली हवा के कारन उन लोगों को कैम्प में थोड़े दिन रुकना पड़ा और फिर वह आगे न बढ़ सके. जब बरफ़ का तूफ़ान आता है तो हर चीज़ बर्फ़ से ढक जाती है और आगे के रास्ते का पता नहीं लगता इसलिये इन लोगों को लौट आना पड़ा. सन 1921 की यात्रा सफल न हुई तो भी उन लोगों ने एवरेस्ट पहाड़ के आस पास का एक नक़शा बना लिया और एवरेस्ट जाने का रास्ता ढूँढ लिया.

सन 1922 में दूसरी यात्रा शुरू हुई. जी. सी. ब्रूस ने 25,000 फ़िट ऊँचाई पर एक कैम्प लगाया. वहां से यह लोग और आगे बढ़े और 26,985 फ़िट की ऊँचाई पर पहुंचे. वहां मौसम बहुत ख़राब था. फिर भी उन लोगों ने हिम्मत न हारी और 27,300 फ़िट तक पहुंच गए. मौसम और ज़ियादा ख़राब होने के कारन उन्हें लौटना पड़ा. उन्होंने फिर ऊपर चढ़ने की कोशिश की. इस बार जब वह ऊपर चढ़ रहे थे तब बर्फ़ के एक पहाड़ के बीच वह फंस गए और दब गए. सात क़ुली मर गए मगर एक भी अंगरेज़ पहाड़ बाज़ नहीं मरा.

सन 1924 में तीसरी यात्रा शुरू हुई जिस का नेता ब्रूस था. उसने पहले 16,800 फ़िट की ऊँचाई पर कैम्प लगाया. फिर आख़िर में उसने क़रीब 27,000 फ़िट की ऊँचाई पर कैम्प लगाया. यहाँ से एवरेस्ट की चोटी बहुत नज़दीक थी. मशहूर यात्री मल्लोरी जो पहली कोशिशों में हिस्सा ले चुका था, अपने साथी एन्ड्रिव इरविन के साथ, जो अभी अभी आक्सफ़ोर्ड से पढ़ाई ख़तम कर के आया था, एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने की कोशिश की. 6 जून को सुबह साढ़े सात बजे मल्लोरी और इरविन अपने छै नम्बर कैम्प से रवाना हुए. एवरेस्ट की चोटी के वह नज़दीक पहुँच गए और उसके पास चलते हुए दिखाई पड़े. मगर थोड़ी देर के बाद बादल घिर आया और तब से इरविन और मल्लोरी का कुछ पता न मिला. हो सकता है कि उनको सांस लेने के लिये आक्सीजन की कमी पड़ी हो या दोनों बर्फ़ के नीचे आ गए हों. इन दो वीरों की याद में कैम्प के पास उनके साथियों ने एक यादगार क़ायम की.

सन 1933 में चौथी बार पहाड़ बाज़ों के एक दल ने एवरेस्ट जीतने की कोशिश की. इस दल का नेता रिटलज था. 17 मार्च को एवरेस्ट पर चढ़ाई शुरू हुई. उन्होंने अपना छटा कैम्प 27,400 फ़िट की ऊंचाई पर लगाया. इस के बाद वह और भी ऊंचे गए और 28,100 फ़िट की ऊंचाई तक पहुंच गए. एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने के लिये केवल 1000 फ़िट बाक़ी था. लेकिन अब ऊपर चढ़ना ख़तरनाक और मुशकिल हो गया. बड़े ज़ोरों का बरफ़ गिरने लगा और तूफ़ान आ गया जिसकी वजह से पहाड़ बाज़ों को वापस लौटना पड़ा.

ڑی برفیلی ہوا کے کارن اُن لوگوں کو کیمپ میں تھوڑے دن رکنا پڑا اور پھر وہ آگے نہ بڑھ سکے. جب برف کا طوفان آتا ہے تو ہر چیز برف سے ڈھک جاتی ہے اور آگے کے راستے کا پتہ نہیں لگتا اس لئے ان لوگوں کو لوٹ آنا پڑا. سن 1921 کی یاترا سپھل نہ ہوئی تو بھی اُن لوگوں نے ایورسٹ پہاڑ کے آس پاس کا ایک نقشہ بنالیا اور ایورسٹ جانے کا راستہ ڈھونڈھ لیا.

سن 1922 میں دوسری یاترا شروع ہوئی. جی. سی. بروس نے 25,000 فٹ اونچائی پر ایک کیمپ لگایا. وہاں یہ لوگ اور آگے بڑھے اور 26,985 فٹ کی اونچائی پر پہونچے. وہاں موسم بہت خراب تھا. پھر بھی اُن لوگوں نے ہمت نہ ہاری اور 27,300 فٹ تک پہونچ گئے. موسم اور زیادہ خراب ہونے کے کارن اُنہیں لوٹنا پڑا. انہوں نے پھر اوپر چڑھنے کی کوشش کی. اس بار جب وہ اوپر چڑھ رہے تھے تب برف کے ایک پہاڑ کے بیچ وہ پھنس گئے اور دب گئے. سات قلی مرگئے مگر ایک بھی انگریز پہاڑ باز نہیں مرا.

سن 1924 میں تیسری یاترا شروع ہوئی جس کا نیتا بروس تھا. اُس نے پہلے 16,800 فٹ کی اونچائی پر کیمپ لگایا. پھر آخر میں اس نے قریب 27,000 فٹ کی اونچائی پر کیمپ لگایا. یہاں سے ایورسٹ کی چوٹی بہت نزدیک تھی. مشہور یاتری ملوری جو پہلی کوششوں میں حصہ لے چکا تھا' اپنے ساتھی اینڈریو اِروِن کے ساتھ' جو ابھی ابھی آکسفورڈ سے پڑھائی ختم کر کے آیا تھا' ایورسٹ کی چوٹی پر پہونچنے کی کوشش کی. 6 جون کو صبح ساڑھے سات بجے ملوری اور اِروِن اپنے چھ نمبر کیمپ سے روانہ ہوئے. ایورسٹ کی چوٹی کے وہ نزدیک پہونچ گئے اور اُس کے پاس چلتے ہوئے دکھائی پڑے. مگر تھوڑی دیر کے بعد بادل گھر آیا اور تب سے اِروِن اور ملوری کا کچھ پتہ نہ ملا. ہو سکتا ہے کہ اُن کو سانس لینے کے لئے آکسیجن کی کمی پڑی ہو یا دونوں برف کے نیچے آگئے ہوں. اِن دو ویروں کی یاد میں کیمپ کے پاس اُن کے ساتھیوں نے ایک یادگار قائم کی.

سن 1933 میں چوتھی بار پہاڑ بازوں کے ایک دل نے ایورسٹ جیتنے کی کوشش کی. اِس دل کا نیتا رٹلز تھا. 17 مارچ کو ایورسٹ پر چڑھائی شروع ہوئی. اُنہوں نے اپنا چھٹا کیمپ 27,400 فٹ کی اونچائی پر لگایا. اِس کے بعد وہ اور بھی اونچے گئے اور 28,100 فٹ کی اونچائی تک پہونچ گئے. ایورسٹ کی چوٹی پر پہونچنے کے لئے کیول 1000 فٹ باقی تھا. لیکن اب اوپر چڑھنا خطرناک اور مشکل ہوگیا. بڑے زوروں کا برف گرنے لگا اور طوفان آگیا جس کی وجہ سے پہاڑ بازوں کو واپس لوٹنا پڑا.

एवरेस्ट की कहानी

(भाई सी. वी. कृशनन)

दुनिया का सबसे ऊँचा पहाड़ "एवरेस्ट" है. यह 29,141 फ़िट ऊँचा है और नैपाल के उत्तर में है. इस पहाड़ की ऊँची चोटी तक पहुँचने के लिये पाँच बार कोशिशें की गई. लेकिन हर एक कोशिश नाकामयाब रही. एवरेस्ट को फ़तह करने का जतन अब भी जारी है. अगस्त के महीने में इंगलैंड से चार पहाड़ बाज़ों का एक दल एवरेस्ट पर चढ़ने के लिये भारत आया है. इस दल के नेता एरिक शिप्टन हैं. दिल्ली में इनका बड़ा स्वागत किया गया है.

एवरेस्ट पहाड़ का नाम सर जार्ज एवरेस्ट के नाम से पड़ा है. उन्होंने ही सबसे पहले इस मशहूर पहाड़ की ऊँचाई का पता लगाया था. सन 1841 में जब वह हिमालय की मशहूर चोटियों की ऊँचाई का पता लगा रहे थे तब एक दिन एक हिन्दुस्तानी अफ़सर उनके कमरे में भागा भागा पहुँचा और चिल्लाने लगा—"मैंने दुनिया के सबसे ऊँचे पहाड़ का पता लगा लिया है." उसने सही कहा था. वह पहाड़ 29,000 फ़िट ऊँचा था. तब से वह पहाड़ "माउन्ट एवरेस्ट" कहा जाने लगा.

यह बात योरप में सन 1841 में ही मालूम थी तो भी किसी योरोपियन ने सन् 1920 से पहले एवरेस्ट को नहीं देखा था. इसकी वजह यह थी कि तिब्बत के लोग किसी परदेसी को अपने देस में नहीं आने देते थे. सन 1920 में तिब्बत के दलाई लामा ने अंगरेज़ी यात्रियों को तिब्बत आने की इजाज़त दी.

सन 1921 में एवरेस्ट की चोटी तक पहुँचने की पहली कोशिश की गई. एवरेस्ट का रास्ता खोजने के लिये नौ आदमी चले जिनके नेता कर्नल होवर्ड बेरिंग थे. जी. एल. मल्लोरी भी उनमें थे. वह लोग 18 मई को दारजिलिंग से रवाना हुए और जेलप घाटी पार करने के बाद तिब्बत पहुँचे. तिब्बत पहुँचने पर उन्हें पता लगा कि एवरेस्ट जाने के दो रास्ते हैं—एक नज़दीक का रास्ता और दूसरा दूर का रास्ता. नज़दीक का रास्ता तंग घाटी के बीच से निकलता था इसलिये उन्हें लम्बे रास्ते से होकर जाना पड़ा जो तिब्बत के गांवों से होकर जाता था. यह रास्ता आसान था.

एक महीना चलने के बाद वह खारटा घाटी पहुंचे और बड़ी मुशकिल से उन्होंने वहां एक कैम्प लगाया. इसके बाद 20,000 फ़िट की ऊँचाई पर उन लोगों ने एक और कैम्प लगाया और वहां से वह एवरेस्ट की जाँच करने लगे. जल्दी ही उन लोगों ने और ऊँचाई पर दूसरा कैम्प लगाया. इस कैम्प से उन्हें एवरेस्ट का पूरा दृश्य दिखाई पड़ा. मगर

ایورست کی کہانی

(بھائی سی . وی . کرشنن)

دنیا کا سب سے اونچا پہاڑ "ایورست" ہے . یہ 29,141 فٹ اونچا ہے اور نیپال کے اُتتر میں ہے . اِس پہاڑ کی اونچی چوٹی تک پہونچنے کے لئے پانچ بار کوششیں کی گئیں لیکن ہر ایک کوشش نا کامیاب رہی . ایورست کو فتح کرنے کا جتن اب بھی جاری ہے . اگست کے مہینے میں انگلینڈ سے چار پہاڑ بازوں کا ایک دل ایورست پر چڑھنے کے لئے بھارت آیا ہے . اس دل کے نیتا ایریک شپٹن ہیں . دلی میں اِن کا بڑا سواگت کیا گیا ہے .

ایورست پہاڑ کا نام سر جارج ایورست کے نام سے پڑا ہے . اُنہوں نے ہی سب سے پہلے اس مشہور پہاڑ کی اونچائی کا پتہ لگایا تھا . سن 1841 میں جب وہ ہمالے کی مشہور چوٹیوں کی اونچائی کا پتہ لگا رہے تھے تب ایک دن ایک ہندستانی افسر اُن کے کمرے میں بھاگا بھاگا پہونچا اور چلانے لگا---"میں نے دنیا کے سب سے اونچے پہاڑ کا پتہ لگا لیا ہے." اُس نے صحیح کہا تھا . وہ پہاڑ 29,000 فٹ اونچا تھا . تب سے وہ پہاڑ "ماونٹ ایورست" کہا جانے لگا .

یہ بات یورپ میں سن 1841 میں ہی معلوم تھی تو بھی کسی یوروپین نے سن 1920 سے پہلے ایوریست کو نہیں دیکھا تھا . اسکی وجہ یہ تھی کہ تبت کے لوگ کسی پردیسی کو اپنے دیس میں نہیں آنے دیتے تھے . سن 1920 میں تبت کے دلائی لاما نے انگریزی یاتریوں کو تبت آنے کی اجازت دی .

سن 1921 میں ایورست کی چوٹی تک پہونچنے کی پہلی کوشش کی گئی . ایورست کا راستہ کھوجنے کے لئے نو آدمی چلے جنکے نیتا کرنل ہوورڈ بیرنگ تھے . جی . ایل . ملوری بھی اُن میں تھے . وہ لوگ 18 مئی کو دارجلنگ سے روانہ ہوئے اور جیلپ گھاٹی پار کرنے کے بعد تبت پہونچے . تبت پہونچنے پر اُنہیں پتہ لگا کہ ایورست جانے کے دو راستے ہیں—ایک نزدیک کا راستہ اور دوسرا دور کا راستہ . نزدیک کا راستہ تنگ گھاٹی کے بیچ سے نکلتا تھا اس لئے اُنہیں لمبے راستے سے ہوکر جانا پڑا جو تبت کے گاؤں سے ہوکر جاتا تھا . یہ راستہ آسان تھا .

ایک مہینہ چلنے کے بعد وہ کھارتا گھاٹی پہونچے اور بڑی مشکل سے اُنہوں نے وہاں ایک کیمپ لگایا . اسکے بعد 20,000 فٹ کی اُونچائی پر اُن لوگوں نے ایک اور کیمپ لگایا اور وہاں سے وہ وہ ایوریست کی جانچ کرنے لگے . جلدی ہی اُن لوگوں نے اور اونچائی پر دوسرا کیمپ لگایا . اس کیمپ سے اُنہیں ایوریست کا پورا درشیہ دکھائی پڑا . مگر

बच्चों की दुनिया

शाम का गीत

हे मन अपने को धो डालो
बैर बुराई मार निकालो
खोलो ऐंठन, गुस्सा थूको
लोभ जलापा दोनों फूँको
देखो, अब तुमको है सोना
है न, ज़रूरी हलका होना ?
बोलो, अम्मां सुख से सोए
छोटी जीजी नेक न रोए
नींद पिता जी को जो आए
मीठी हो वह सुख सरसाए
गहरी नींदें भाई सोएं
सपने बुरे न देखें रोएं
रहें बुरे कामों से डरते
सुस्ती पास न आए मरते
सबका भला मनाकर सोना
बैर विरोध मिटा कर सोना
सब से प्रीत बढ़ा कर सोना
बहुत असीसें पाकर सोना
सोकर देखो उठना ऐसे
जनम हुआ हो अब हो जैसे
ओम, आमीन सहज से बोलो
वक़्त हो गया, आओ, सोलो.

—भगवानदीन

بچوں کی دنیا

شام کا گیت

ہے من اپنے کو دھو ڈالو
بیر برائی مار نکالو
کھولو اینٹھن غصہ تھوکو
لوبھ جلاپا دونوں پھونکو
دیکھو، اب تم کو ہے سونا
ہے نہ، ضروری ہلکا ہونا ؟
بولو، اماں سکھ سے سوئے
چھوٹی جی جی نیک نہ روئے
نیند پتاجی کو جو آئے
میٹھی ہو وہ سکھ برسائے
گہری نیندیں بھائی سوئیں
سپنے برے نہ دیکھیں روئیں
رہیں برے کاموں سے ڈرتے
سستی پاس نہ آئے مرتے
سب کا بھلا مناکر سونا
بیر ورودھ مٹاکر سونا
سب سے پریت بڑھاکر سونا
بہت اسیسیں پاکر سونا
سوکر دیکھو اٹھنا ایسے
جنم ہوا ہو اب ہو جیسے
اوم، آمین سہج سے بولو
وقت ہوگیا، آؤ سولو۔

—بھگوان دین

सवाल उठता है कि वह किस तरह का अब काम चलाने वाली है ? मैं कांगरेस का दुशमन नहीं हूँ. अब मैं उसके नियम के मुताबिक़ मेम्बर नहीं रहा हूँ, लेकिन आज़ादी के लिये उसके बड़े बड़े आन्दोलनों में मैंने उसकी सेवा की है. लेकिन अगर वह सही रास्ते से भटक रही है, तो मैं उसका साथ नहीं दे सकता, और न मुझे देना चाहिये.

वर्धा, 11-9-'51 —किशोरलाल मशरूवाला

सफ़ेद क़ौम की नफ़रत

सफ़ेद क़ौम सब कुछ भूल सकती है लेकिन शायद यह नहीं भूल सकती कि उसका रंग सफ़ेद है. वक़्त पड़ने पर कालों को बाप भी बना सकती है लेकिन नफ़रत के भाव में कोई कमी नहीं होगी. एशिया को बचाने की तरकीबें हो रही हैं, एशिया को "आज़ाद" रखने की कोशिश में वह तन मन धन सब लुटा रहे हैं. वह कालों के दोस्त हैं, उनके शुभ चिंतक हैं. लेकिन नफ़रत करना भी उनका धर्म है ! यह लोग किसी को 'नेटिव' कहते हैं, किसी को 'क़ुली' का नाम देते हैं और अब दक्खिनी कोरिया वालों को नफ़रत से 'गुक' कहते हैं. अमरीकी और अंगरेज़ी फ़ौजें कोरिया में लड़ने गई हैं. अपने लिये या कोरिया वालों के लिये इसका फ़ैसला नीचे दिया बयान ज़ोर ज़ोर से सुना रहा है. दक्खिनी कोरिया वालों के साथ जिस तरह का सलूक यह लोग कर रहे हैं उसे ख़ुद कनाडा के जंगी ख़बर देने वाले श्री बिल रास से, जो अभी कोरिया के मोर्चे से लौटे हैं और अपना बयान रेडियो से बिखेरा है, सुनिये और यक़ीन कर लिजिये कि सफ़ेद क़ौम सब कुछ भूल सकती है लेकिन कालों से नफ़रत करना नहीं भूल सकती.

"मैं यह नहीं कहता हूँ कि दक्खिनी कोरिया वाले हम से नफ़रत करते हैं. मेरा कहने का मतलब यह है कि वह हम को पसंद नहीं करते. लेकिन मैं यह ज़रूर कहता हूँ कि अगर हमने अपने व्योहार को न बदला तो धीरे धीरे वह सचमुच हम से नफ़रत करने लगेंगे............यू. एन. ओ. की फ़ौजों का ध्यान कम्युनिज़्म से लड़ने पर ही है. दक्खिनी कोरिया वालों की मदद करने से उनको कोई सरोकार नहीं है. एक बार तो मैंने ख़ुद एक यू. एन. ओ. के पुलिस वाले को एक दक्खिनी कोरियाई को ठोकर मार कर सड़क से हटाते हुए देखा था. दक्खिनी कोरिया वाले अपना सब कुछ खो चुके हैं. उनका घर बरबाद हो गया, उनकी जायदाद लुट गई, उनका कुटुम्ब तितर बितर हो गया. कम से कम हमको उनसे उनका आत्म सम्मान न छीनना चाहिये ! हम ने उनसे उनकी शान भी छीन ली है. इस को न वह माफ़ कर सकते हैं और न भूल सकते हैं. पी. टी. आई. आर".

کھتا ھے کہ وہ کس طرح کا کام چلانے والی ھے ؟ میں
س کا دشمن نھیں . اب میں اُس کے نیم کے مطابق
نھیں رھا ھوں' لیکن آزادی کے لئے اس کے بڑے بڑے
لوں میں میں نے اُس کی سیوا کی ھے . لیکن اگر وہ
م راستے سے بھٹک رھی ھے' تو میں اُس کا ساتھ نھیں
سکتا' اور نہ مجھے دینا چاھئے .

ردھا' 11-9-'51 کشور لال مشروروالا

سفید قوم کی نفرت

سفید قوم سب کچھ بھول سکتی ھے لیکن شاید یہ
بھول سکتی کہ اُس کا رنگ سفید ھے . وقت پڑنے
ں کو باپ بھی بنا سکتی ھے لیکن نفرت کے بھاؤ
کوئی کمی نھیں ھوگی . ایشیا کو بچانے کی ترکیبیں
ی ھیں' ایشیا کو "آزاد" رکھنے کی کوشش میں وہ
ن دھن سب لٹا رھے ھیں . وہ کالوں کے دوست ھیں'
کے شبھ چنتک ھیں . لیکن نفرت کرنا بھی اُن کا
ھے ! یہ لوگ کسی کو 'نیٹو' کہتے ھیں' کسی کو
' کا نام دیتے ھیں اور اب دکھنی کوریا والوں کو نفرت
گک' کہتے ھیں . امریکی اور انگریزی فوجیں کوریا
لڑنے گئی ھیں . اپنے لئے یا کوریا والوں کے لئے اِس کا
ہ نیچے دیا بیان زور زور سے سنا رھا ھے . دکھنی
والوں کے ساتھ جس طرح کا سلوک یہ لوگ کر رھے
اُسے خود کناڈا کے جنگی خبر دینے والے شری بل
سے' جو ابھی کوریا کے مورچے سے لوٹے ھیں اور اپنا
ریڈیو سے بکھیرا ھے' سنئے اور یقین کرلیجئے کہ سفید
سب کچھ بھول سکتی ھے لیکن کالوں سے نفرت کرنا
بھول سکتی .

"میں یہ نھیں کہتا ھوں کہ دکھنی کوریا والے ھم سے
کرتے ھیں . میرا کہنے کا مطلب یہ ھے کہ وہ ھم کو
د نھیں کرتے . لیکن میں یہ ضرور کہتا ھوں کہ اگر
نے اپنے بیوھار کو نہ بدلا تو دھیرے دھیرے وہ سچ مچ
ے نفرت کرنے لگیں گے.......... یو . این . او . کی
ں کا دھیان کمیونزم سے لڑنے پر ھی ھے. دکھنی کوریا
کی مدد کرنے سے اُن کو کوئی سروکار نھیں ھے .
بار تو میں نے خود ایک یو . این . او . کے پولیس
کو ایک دکھنی کوریائی کو ٹھوکر مارکر سڑک سے ھٹاتے
دیکھا تھا . دکھنی کوریا والے اپنا سب کچھ کھو
ھیں . اُن کا گھر برباد ھوگیا' اُن کی جائداد لٹ
اُن کا کٹمب تتر بتر ھوگیا . کم سے کم ھم کو اُن سے
آتم سمان نہ چھیننا چاھئے ! ھم نے ان سے اُن کی شان
چھین لی ھے . اِس کو نہ وہ معاف کرسکتے ھیں
ہ بھول سکتے ھیں. پی . ٹی . آئی . آر".

मेरे देखने में अभी तक कोई ऐसी चीज़ नहीं आई, जिससे जाहिर होता हो कि इस योजना में उन्होंने कोई जाती दिलचस्पी ली थी. सच तो यह है कि उनका मन उस तरफ़ जा ही नहीं सकता था. हम सब जानते हैं कि वह उस समय साम्प्रदायिक एकता के निर्मान में 'करूंगा या मरूंगा' की भावना से लगे हुए थे, और ऐसी किसी चीज़ का ख़याल ही नहीं कर सकते थे, जिससे कुछ भी ग़लतफ़हमी पैदा होने का डर हो.

बाबा राघव दास मशहूर रचनात्मक काम करने वाले और उत्तर प्रदेश की विधान सभा और सूबा कांगरेस कमेटी के ख़ास मेम्बर हैं. साथ ही असरदार बोलने वाले और एक मठ के महंत भी हैं. हुकूमत के अधिकारियों पर उनका बड़ा असर है, और उससे भी जियादा असर हमारी भोली जनता पर है. अयोध्या की बाबरी मस्जिद के बारे में जो झगड़ा हुआ, उसमें उनका हाथ था. लेकिन उनका यह क़दम उससे भी जियादा शरारत भरा है. अपने इस भाव का मुक़ाबला उन्होंने, सन् 1947-'48 में गांधी जी ने दिल्ली के हिन्दुओं से मुसलमानों को उनकी मस्जिदें लौटाने की बात कही थी, उसके साथ किया है. बाबा जी यह ख़ूब जानते हैं कि वह बात बिलकुल अलग तरह की थी. उसमें गड़े पत्थर उखाड़ने की, एक पुराना और भूला हुआ झगड़ा उभारने की कोशिश नहीं थी. हिंसा और बेरहमी भरी वह गांधी जी की आंखों के सामने हुई एक हाल की घटना थी, और जिन लोगों से उन्होंने यह मस्जिदें लौटाने को कहा, वह ही इसके लिये जिम्मेदार थे. उसमें कोई दो सौ बरस पुराना झगड़ा फिर से शुरू नहीं किया जा रहा था.

बाबा राघव दास के बारे में मुझे कड़े शब्दों का इस्तेमाल करना पड़ रहा है, इसका मुझे दुख है. क्योंकि उनके लिये मेरे मन में काफ़ी निजी आदर रहा है. लेकिन मैं यह कहने के लिये मजबूर हूँ कि उनका रुजहान बहुत जियादा फ़िरक़ेवाराना है. और हमारी भोली जनता में फ़िरक़ेवाराना ज़हर फैलाने वाले वह अकेले कांगरेसी नहीं हैं. ख़ासकर उत्तर प्रदेश में इस क़िस्म के अनेक लोग हैं. एक ने तो श्री महादेव देसाई और गांधी जी के नाम पर जाली चिट्ठी और लेख भी तैयार करने की ढिटाई की है. अगर कांगरेस, जैसा कि वह दावा करती है, हिन्दुओं की साम्प्रदायिक संस्था नहीं है, तो मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसे लोग उसमें कैसे रह सकते हैं. क्या उसे यह महसूस हुआ है कि यह एक गम्भीर सवाल है और इसके कारन देश में फिर साम्प्रदायिक दंगों की आग भड़क सकती है और ख़ून बह सकता है ? कांगरेस दावा करती है कि वही एक राजनीती संस्था है, जो देश का काम चला सकती है.

میرے دیکھنے میں ابھی تک کوئی ایسی چیز نہیں آئی' جس سے ظاہر ہوتا ہو کہ اس یوجنا میں انہوں نے کوئی ذاتی دلچسپی لی تھی . سچ تو یہ ہے کہ اُن کا من اُس طرف جا ہی نہیں سکتا تھا . ہم سب جانتے ہیں کہ وہ اُس سمے سامپردائک ایکتا کے نرمان میں 'کرونگا یا مرونگا' کی بھاونا سے لگے ہوئے تھے' اور ایسی کسی چیز کا خیال ہی نہیں کر سکتے تھے' جس سے کچھ بھی غلط فہمی پیدا ہونے کا ڈر ہو .

بابا راگھو داس مشہور رچناتمک کام کرنے والے ہیں اور اُتر پردیش کی ودھان سبھا اور صوبہ کانگریس کمیٹی کے خاص ممبر ہیں . ساتھ ہی اثر دار بولنے والے اور ایک مٹھ کے مہنت بھی ہیں . حکومت کے ادھیکاریوں پر اُن کا بڑا اثر ہے' اور اُس سے بھی زیادہ اثر ہماری بھولی جنتا پر ہے . ایودھیا کی بابری مسجد کے بارے میں جو جھگڑا ہوا' اُس میں اُن کا ہاتھ تھا . لیکن اُن کا یہ قدم اُس سے بھی زیادہ شرارت بھرا ہے . اپنے اِس سجھاو کا مقابلہ اُنھوں نے' سن 1947-'48 میں گاندھی جی نے دلی کے ہندوؤں سے مسلمانوں کو اُن کی مسجدیں لوٹانے کی بات کہی تھی' اس کے ساتھ کیا ہے . بابا جی یہ خوب جانتے ہیں کہ وہ بات بالکل الگ طرح کی تھی . اُس میں گڑے پتھر اُکھاڑنے کی' ایک پرانا اور بھولا ہوا جھگڑا اُبھارنے کی کوشش نہیں تھی . ہنسا اور بے رحمی بھری وہ گاندھی جی کی آنکھوں کے سامنے ہوئی ایک حال کی گھٹنا تھی' اور جن لوگوں سے اُنھوں نے یہ مسجدیں لوٹانے کو کہا' وہ ہی اس کے لئے ذمے دار تھے . اُس میں کوئی دو سو برس پرانا جھگڑا پھر سے شروع نہیں کیا جارہا تھا .

بابا راگھو داس کے بارے میں مجھے کڑے شبدوں کا استعمال کرنا پڑ رہا ہے' اِس کا مجھے دکھ ہے . کیونکہ اُن کے لئے میرے من میں کافی نجی آدر رہا ہے . لیکن میں یہ کہنے کے لئے مجبور ہوں کہ اُن کا رجحان بہت زیادہ فرقہ وارانہ ہے . اور ہماری بھولی جنتا میں فرقے وارانہ زہر پھیلانے والے وہ اکیلے کانگریسی نہیں ہیں . خاص کر اُتر پردیش میں اس قسم کے انیک لوگ ہیں . ایک نے تو شری مہا دیو دیسائی اور گاندھی جی کے نام پر جعلی چٹھی اور لیکھ بھی تیار کرنے کی ڈھٹائی کی ہے . اگر کانگریس' جیسا کہ وہ دعویٰ کرتی ہے' ہندوؤں کی سامپردائک سنستھا نہیں ہے' تو میری سمجھ میں نہیں آتا کہ ایسے لوگ اُس میں کیسے رہ سکتے ہیں . کیا اُسے یہ محسوس ہوا ہے کہ یہ ایک گمبھیر سوال ہے اور اِس کے کارن دیش میں پھر سے سامپردائک دنگوں کی آگ بھڑک سکتی ہے اور خون بہہ سکتا ہے؟ کانگریس دعویٰ کرتی ہے کہ وہی ایک راج کاجی سنستھا ہے' جو دیش کا کام چلا سکتی ہے .

"चुनाव आने वाला है. करोड़ों औरतों मर्दों को इनसाफ़ का आश्वासन देना है. और हम यह पूरा विश्वास करते हैं कि इन तीन महान इतिहासी स्थानों का फिर से सम्मान होते देख भारती जनता न्याय में अधिक विश्वास करेगी."

बाबा राघव दास ने यह साफ़ नहीं किया है कि वह काशी, अयोध्या और मथुरा में ठीक क्या करना चाहते हैं. वह किन मन्दिरों का उद्धार चाहते हैं? क्या उनका इशारा यह है कि काशी में औरंगज़ेब की बनवाई हुई बड़ी मस्जिद, या अयोध्या में हनुमान गढ़ी या मथुरा में इसी तरह की मस्जिदों को 'दुबारा' जैसा कि अयोध्या में करने की कोशिश हुई है, मन्दिरों में बदल देना चाहिये?

इस सिलसिले में गांधी जी और सरदार का नाम लेना बिलकुल ही ग़लत था. सोमनाथ का मन्दिर खंडहर की हालत में था और हिन्दुओं के अधिकार में था. वहां कोई मस्जिद नहीं थी, और न किसी मुसलमान ने उस जगह के अधिकार का ही दावा किया था. कुछ बड़े बड़े हिन्दुओं ने, जिनका काफ़ी असर था, उसका फिर से निर्मान करना चाहा. इसका उन्हें पूरा अधिकार था. इन हिन्दुओं में सरदार जैसे कुछ केन्द्र या रियासती सरकारों के मंत्री भी थे. चूँकि जूना गढ़ राज भारत संघ में शामिल हुआ और उसी के साथ इस काम का आरम्भ हुआ, और चूँकि सोमनाथ के इतिहास में साम्प्रदायिक अनबन की पुरानी याद जुड़ी हुई है, इसलिये इसमें ग़लतफ़हमी पैदा हो सकती थी और हुई भी. यह कहा जा सकता है कि सरकार से सम्बन्ध रखने वाले हिन्दू नेताओं ने इसमें हिस्सा न लिया होता, तो अच्छा होता. लेकिन ऐसा नहीं कहा जा सकता कि उन्हें ऐसा हिस्सा लेने का हक़ नहीं था. गांधी जी ने इसमें जो हिस्सा लिया, वह यह समझने के लिये ही कि मन्दिर के फिर से निर्मान का यह काम सरकारी ख़र्च पर न हो. तारीख़ 7 दिसम्बर '47 के 'हरिजन सेवक' में उनका तारीख़ 28 नवम्बर '47 का प्रार्थना प्रवचन निकला है, उसमें इस विशय का ज़िक्र है. उसे मैं यहां नक़ल करता हूँ:

"एक भाई लिखते हैं कि सोमनाथ के मन्दिर का जो फिर से उद्धार होने वाला है, उसमें सरकारी पैसा नहीं लगाना चाहिये. मुझे बताया गया है कि शामलदास गांधी ने आरज़ी हुकूमत बनाई है और इस काम के लिये जनता से इकट्ठे किये पैसे में से 50 हज़ार रुपए देना मंज़ूर किया है. जाम साहब एक लाख देने वाले हैं. सरदार पटेल ने कहा कि सरदार ऐसा नहीं है कि जो चीज़ हिन्दुओं के लिये ही है, उसके लिये सरकारी ख़ज़ाने से पैसा निकाले. हम सब हिन्दी हैं, मगर धर्म हमारी अपनी चीज़ है. सोमनाथ के फिर से उद्धार के लिये हिन्दू जो पैसा ख़ुशी से देंगे, उसी से काम चल जायगा. पैसा नहीं मिलेगा, तो वह काम पड़ा रहेगा. मैं यह सुनकर ख़ुश हुआ."

"چناؤ آنے والا هے . کروڑوں عورتوں مردوں کو انصاف
شواسن دینا هے . اور هم یه پورا وشواس کرتے هیں که
تین مہان اِتہاسی استھانوں کا پھر سے سمان هوتے دیکھ
ی جنتا نیائے میں ادھک وشواس کریگی ."
بابا راگھو داس نے یه صاف نہیں کہا هے که وہ کاشی'
ھیا اور متھرا میں ٹھیک کیا کرنا چاهتے هیں . وہ
مندروں کا اُددھار چاهتے هیں ؟ کیا اُن کا اِشارہ یه هے
کاشی میں اورنگ زیب کی بنوائی هوئی بڑی مسجد'
یودھیا میں هنومان گڑھی یا متھرا میں اِسی طرح
مسجدوں کو 'دوبارا' جیسا که ایودھیا میں کرنے کی
ش هوئی هے' مندروں میں بدل دینا چاهئے ؟
اِس سلسلے میں گاندھی جی اور سردار کا نام لینا
ل هی غلط تھا . سومناتھ کا مندر کھنڈھر کی حالت
تھا اور هندوؤں کے ادھیکار میں تھا . وهاں کوئی
جد نہیں تھی' اور نه کسی مسلمان نے اُس جگه کے
یکار کا هی دعویٰ کیا تھا . کچھ بڑے بڑے هندوؤں نے'
کا کافی اثر تھا' اس کا پھر سے نرمان کرنا چاها . اِس
نہیں پورا ادھیکار تھا . ان هندوؤں میں سردار جیسے
کیندر یا ریاستی سرکاروں کے منتری بھی تھے . چونکه
گڑھ راج بھارت سنگھ میں شامل هوا اور اُسی کے
اس کام کا آرمبھ هوا' اور چونکه سومناتھ کے اِتہاس
سامپردایک ان بن کی پرانی یاد جڑی هوئی هے'
لئے اِس میں غلط فہمی پیدا هو سکتی تھی اور
بھی . یه کہا جا سکتا هے که سرکار سے سمبندھ رکھنے
هندو نیتاؤں نے اس میں حصه نه لیا هوتا' تو اچھا
. لیکن ایسا نہیں کہا جا سکتا که انہیں ایسا
لینے کا حق نہیں تھا . گاندھی جی نے اس میں
حصه لیا' وہ یه سمجھنے کے لئے هی که مندر کے پھر
نرمان کا یه کام سرکاری خرچ پر نه هو . تاریخ 7 دسمبر
کے 'هریجن سیوک' میں اُن کا تاریخ 28 نومبر '47
پرارتھنا پروچن نکلا هے' اس میں اس وشے کا ذکر هے .
میں یہاں نقل کرتا هوں :
" ایک بھائی لکھتے هیں که سومناتھ کے مندر کا جو
سے اُددھار هونے والا هے' اس میں سرکاری پیسه نہیں
چاهئے . مجھے بتایا گیا هے که شامل داس گاندھی
عارضی حکومت بنائی هے اور اس کام کے لئے جنتا سے
کئے پیسے میں سے 50 هزار روپے دینا منظور کیا
. جام صاحب ایک لاکھ دینے والے هیں . سردار پٹیل
کہا که سردار ایسا نہیں هے که جو چیز هندوؤں کے لئے
هے' اُس کے لئے سرکاری خزانے سے پیسه نکالے . هم سب
ی هیں' مگر دھرم هماری اپنی چیز هے . سومناتھ
پھر سے اُددھار کے لئے هندو جو پیسه خوشی سے دینگے'
سے کام چل جائے گا . پیسه نہیں ملے گا' تو وہ کام پڑا
گا . میں یه سن کر خوش هوا".

शरारत भरा क़दम

उत्तर प्रदेश के मशहूर कांगरेसी काम करने वाले बाबा राघवदास के इलाहाबाद की हिन्दी 'अमृत पत्रिका' के तारीख़ 29-7-'51 के परचे में छपे एक लेख का हिस्सा नीचे देता हूँ.

"स्वर्गीय सरदार पटेल ने भारत के मशहूर इतिहासी पुन्य स्थान श्री सोमनाथ जी का फिर से उद्धार करके यह बता दिया कि पुराने पवित्र स्थानों का उद्धार आज़ाद भारत में ज़रूर होगा. वह हमें अमली आश्वासन दे गए हैं. पूज्य बापू जी ने भारत के आज़ाद होने पर जो मस्जिदें हिन्दुओं के क़ब्ज़े में थीं, उन मस्जिदों को मुसलमानों को वापस दिलाकर हमें यह आशा दिलाई कि मुसलमानों के राज के समय हिन्दुओं के जो मन्दिर अपवित्र कर दिये गए थे, या जिन पर मुसलमानों ने क़ब्ज़ा कर लिया था, उनका भी कभी उद्धार होगा.........

"हम यहां पर यह भी नम्रता से कहना चाहते हैं कि उत्तर प्रदेश के तीन ख़ास स्थान काशी, अयोध्या और मथुरा के साथ भारतीय जनता और उसके कलचरी जीवन का गहरा सम्बन्ध है. श्री राम, श्री कृश्न और श्री विश्वनाथ भारत के दिल के राजा हैं. घर घर इनकी चरचा है. श्री सोमनाथ जी के बारे में भारती जनता बहुत कम जानकारी रखती है, इसलिये भी इन स्थानों का फिर से उद्धार अपना एक ख़ास महत्त्व रखता है.

"यहां कभी कभी यह बात कही जाती है कि यह साम्प्रदायिक सवाल है. पर इतिहास इस बात का गवाह है कि यह साम्प्रदायिक सवाल नहीं है. यह जीतने वाले और हारने वाले के बीच का सवाल है. अगर यूनियन जैक (अंगरेजी झंडा) जा सकता है और उसकी जगह पर तिरंगा झंडा आ सकता है, अगर वाइसराय की जगह को राष्ट्रपति शोभा दे सकते हैं, तो इन गौरव वाले पवित्र स्थानों का फिर से उद्धार भी हो सकता है. अगर भारत सरकार की देख रेख में एक हज़ार बरस पहले के विजेता (जीतने वाले) के ज़रिये बरबाद किये गए सोमनाथ जी के मन्दिर का उद्धार मुमकिन है, तो फिर उत्तर प्रदेश के इन तीनों स्थानों के फिर से उद्धार में रुकावट क्यों कर होगी?

"सवाल महत्त्व का है. उसको जितना जल्दी हल किया जाय, उतना ही अच्छा है. हमें श्री सोमनाथ जी के मन्दिर का फिर से उद्धार देखकर जितनी ख़ुशी होती है, उतनी ही इन महान तीर्थ स्थानों से लापरवाही देखकर बेचैनी होती है."

شرارت بھرا قدم

اُتر پردیش کے مشہور کانگریسی کام کرنے والے بابا راگھو داس کے الہ‌آباد کی ہندی ' امرت پتریکا ' کے تاریخ 29-7-'51 کے پرچے میں چھپے ایک لیکھ کا حصہ نیچے دیتا ہوں .

'' سورگیہ سردار پٹیل نے بھارت کے مشہور اِتہاسی پنیہ استھان شری سومناتھ جی کا پھر سے اُددھار کرکے یہ بتا دیا کہ پرانے پوتر استھانوں کا اُددھار آزاد بھارت میں ضرور ہوگا . وہ ہمیں عملی آشواسن دے گئے ہیں . پوجیہ باپو جی نے بھارت کے آزاد ہونے پر جو مسجدیں ہندوؤں کے قبضے میں تھیں' اُن مسجدوں کو مسلمانوں کو واپس دلا کر ہمیں یہ آشا دلائی کہ مسلمانوں کے راج کے سمے ہندوؤں کے جو مندر اپوتر کر دیئے گئے تھے' یا جن پر مسلمانوں نے قبضہ کر لیا تھا' اُن کا بھی کبھی اُددھار ہوگا..........

''ہم یہاں پر یہ بھی نمرتا سے کہنا چاہتے ہیں کہ اُتر پردیش کے تین خاص استھان کاشی' ایودھیا . اور متھرا کے ساتھ بھارتیہ جنتا اور اُس کے کاچری جیون کا گہرا سمبندھ ہے . شری رام' شری کرشن اور شری وشو ناتھ بھارت کے دل کے راجہ ہیں . گھر گھر ان کی چرچا ہے . شری سومناتھ جی کے بارے میں بھارتی جنتا بہت کم جانکاری رکھتی ہے' اِس لئے بھی اِن استھانوں کا پھر سے اُددھار اپنا خاص مہتو رکھتا ہے .

''یہاں کبھی کبھی یہ بات کہی جاتی ہے کہ یہ سامپردایک سوال ہے . پر اِتہاس اِس بات کا گواہ ہے کہ یہ سامپردایک سوال نہ ں ہے . یہ جیتنے والے اور ہارنے والے کے بیچ کا سوال ہے . اگر یونین جیک (انگریزی جھنڈا) جاسکتا ہے اور اُس کی جگہ پر ترنگا جھنڈا آسکتا ہے' اگر وایسرائے کی جگہ کو راشٹر پتی شوبھا دے سکتے ہیں تو اِن گورو والے پوتر استھانوں کا پھر سے اُددھار بھی ہو سکتا ہے . اگر بھارت سرکار کی دیکھ ریکھ میں ایک ہزار برس پہلے کے وجیتا (جیتنے والے) کے ذریعہ برباد کئے گئے سومناتھ جی کے مندر کا اُددھار ممکن ہے' تو پھر اُتر پردیش کے اِن تینوں استھانوں کے پھر سے اُددھار میں رکاوٹ کیوں کر ہوگی ؟

'' سوال مہتو کا ہے اس کو جتنا جلدی حل کیا جائے' اتنا ہی اچھا ہے . ہمیں شری سومناتھ جی کے مندر کا پھر سے اُددھار دیکھکر جتنی خوشی ہوتی ہے' اُتنی ہی اِن مہان تیرتھ استھانوں سے لاپرواہی دیکھکر بے چینی ہوتی ہے ."

शुद किया और फिर आपकी देखा देखी आप के पास रहने वाले और आप के भक्त भी करने लगे. कुछ न कुछ यह हवा सारे देश में फैल गई. बापू, यह सुनकर आप को कितनी खुशी होगी कि ऐसे अनेकों बाल गांधी पैदा हो गए हैं जिन्हों ने मेहतर के काम में पुश्तहा पुश्त के मेहतरों को कहीं पीछे छोड़ दिया है. और वह बाल गांधी ऐसे कुल के हैं जिनके कुल में मेहतर की परछाईं से भी छून हो जाती थी. आखिर जब मेहतर अपना काम छोड़ेंगे तो उनका काम अपनाने के लिये कोई और होना ही चाहिये. और बापू यह सुन कर आप को बड़ी खुशी होगी कि यह नए मेहतर बाल गांधी इस मेहतर के काम के बदले में एक पैसा भी नहीं लेते. कोई अखबार में उनकी तस्वीर देदे, यह तस्वीर खेंचने वाला जाने. कोई उन्हें म्युनिसपलटी के लिये वोट दे दे, यह वोटर जाने. कोई उन्हें सूबा कांगरेस कमेटी का सभापति चुन दे, यह कांगरेसी मेम्बर जाने, कोई उन्हें मिनिस्टर चुन दे, यह क़ानून सभा जाने. कोई उन्हें 3000 तनख़ाह और मोटरें देदे, तो यह विधान की लाल किताब जाने. और अगर अब उन से कोई मेहतर का काम न ले तो यह काम लेने वाले जानें. बोलिये बापू, इन बाल गांधियों से आप और क्या चाहते हैं. आप सोचिये तो सही, आप भी तो दुनिया भर की फ़िकर, दुनिया भर के सुधार और अनगिनत झंझट अपने कंधों पर संभाल बैठे थे. आप ने भूल की या आप ने ठीक किया यह आप जानें. पर यह बाल गांधी तो एक वक़्त में एक ही काम संभाल सकते हैं. अब जब आप के बराबर हो जायंगे तब शायद आप के जितना बोझ संभाल सकें. हो सकता है उस वक़्त के लिये बोझ ही न रह जाय ! यह उनकी क़िस्मत !

बापू, आप के नाम पर मरने वाले यह बाल गांधी क्या बड़े होकर इतने क़िस्मत वाले भी न निकलेंगे कि इन बोझों से बचे रहें !

बापू, अब तो आप की दूर तक पहुँच है. इन बाल गांधियों के हक़ में दुआ कीजिये.

—भगवान दीन

"श्रद्धा की कसौटी यह है कि अपना फ़र्ज़ अदा करने के बाद जो कुछ भी भला या बुरा नतीजा हो, इनसान उसे मानले. सुख आए या दुख आए, उसके लिये सब बराबर होना चाहिये."

—महात्मा गांधी

خود کیا اور پھر آپ کی دیکھا دیکھی آپ کے پاس رہنے والے اور آپکے بھگت بھی کرنے لگے. کچھ نہ کچھ یہ ہوا سارے دیش میں پھیل گئی. باپو' یہ سنکر آپ کو کتنی خوشی ہوگی کہ ایسے انیکوں بال گاندھی پیدا ہوگئے ہیں جنھوں نے مہتر کے کام میں پشتہا پشت کے مہتروں کو کہیں پیچھے چھوڑ دیا ہے. اور وہ بال گاندھی ایسے کل کے ہیں جن کے کل میں مہتر کی پرچھائیوں سے بھی چھوت ہو جاتی تھی. آخر جب مہتر اپنا کام چھوڑینگے تو اُنکا کام اپنانے کے لئے کوئی اور ہونا ہی چاہئے. اور باپو یہ سنکر آپکو بڑی خوشی ہوگی کہ یہ نئے مہتر بال گاندھی اِس مہتر کے کام کے بدلے میں ایک پیسہ بھی نہیں لیتے. کوئی اخبار میں اُن کی تصویر دے دے' یہ تصویر کھینچنے والا جانے. کوئی اُنہیں میونسپلٹی کے لئے ووٹ دے دے' یہ ووٹر جانے. کوئی اُنہیں صوبہ کانگریس کمیٹی کا سبھاپتی چن دے' یہ کانگریسی ممبر جانے' کوئی انہیں منسٹر چن دے' یہ قانون سبھا جانے' کوئی اُنہیں 3000 تنخواہ اور موٹریں دےدے' تو یہ ودھان کی لال کتاب جانے. اور اگر اب اُن سے کوئی مہتر کا کام نہ لے تو یہ کام لینےوالے جانیں. بولئےباپو' ان بال گاندھیوں سے آپ اور کیا چاہتے ہیں. آپ سوچئے تو سہی' آپ بھی تو دنیا بھر کی فکر' دنیا بھر کے سدھار اور اَن گنت جھنجھٹ اپنے کندھوں پر سنبھال بیٹھے تھے آپ نے بھول کی یا آپ نے ٹھیک کیا یہ آپ جانیں. پر یہ بال گاندھی تو ایک وقت میں ایک ہی کام سنبھال سکتےہیں. اب جب آپ کے برابر ہوجائینگے تب شاید آپ کے جتنا بوجھ سنبھال سکیں. ہوسکتا ہے اُس وقت کے لئے بوجھ ہی نہ رہ جائے! یہ اُن کی قسمت!

باپو' آپکے نام پر مرنے والے یہ بال گاندھی کیا بڑے ہوکر اتنے قسمت والے بھی نہ نکلینگے کہ ان بوجھوں سے بچے رہیں!

باپو' آپ تو آپ کی دور تک پہونچ ہے. ان بال گاندھیوں کے حق میں دعا کیجئے.

—بھگوان دین

"شردھا کی کسوٹی یہ ہے کہ اپنا فرض ادا کرنے کے بعد جو کچھ بھی بھلا یا برا نتیجہ ہو' اِنسان اُسے مان لے. سکھ آئے یا دکھ آئے' اُس کے لئے سب برابر ہونا چاہئے."

—مہاتما گاندھی

दूसरे के पढ़े लिखे और हर तरह समझदार ही समझदार थे. वह हमें घेर कर बैठ गए, और लगे अपना अपना हाल सुनाने. एक साहब बोले, मैं पाँचसौ रुपए महीने का नौकर था और पांच रुपए रोज़ अपने खाने पर खर्च करता था. अब आपको मालूम है मैं क्या खर्च करता हूँ ? सिर्फ़ बारह आने रोज़ ! और बहुत जल्दी आठे आने पर आ जाऊँगा.

दूसरे साहब बोले, मेरी आप क्या पूछते हैं, मैं तो दस रुपए रोज़ खर्च कर देता था तो कम, और पन्द्रह कर देता था तो कम. और अब तो मैं सिर्फ़ बारह आने पर रहता हूँ !

तीसरे साहब बोले, मुझे तो साहब डेढ़ सौ रुपए मिलते थे, डेढ़ रुपया मेरा खर्च था और अब मैं पूरे पाँच आने में अपनी गुज़र कर लेता हूँ !

बापू, आपको इन त्यागियों का हाल सुनकर कितनी ख़ुशी हुई होगी. खाने में ही नहीं, पहनने के मामले में भी वह आप से हर तरह आगे बढ़े हुए थे. बापू, हमारे मन पर भी इन सबका बड़ा असर पड़ा और जी में लहर उठी कि ऐसे त्यागियों के साथ ही रहना चाहिये. और अब हम उन से ख़ूब घुल घुल कर बातें करने लगे. और फिर हमने पूछा कि आप सब कितने कितने गज़ सूत कात लेते हैं. तो पाँच रुपए से खर्च घटाने वाले त्यागी ने बताया कि वह दिन भर में 300 गज़ सूत कात लेता है, और दस पन्द्रह रुपए रोज़ खर्च से घटाकर बारह आने तक पहुँचने वाले ने बताया कि वह 200 गज़ सूत रोज़ कात लेता है. और डेढ़ रुपए वाले ने बताया कि वह 600 गज़ सूत रोज़ कात लेता है. फिर हमने पूछा कि अगर यही सूत आप किसी और से कतवाते तो कताई क्या देते. जवाब मिला ज़ियादा से ज़ियादा फ़ी सौ गज़ एक पैसा ! यानी आश्रम की कुल कमाई ग्यारह पैसे रोज़ थी और खर्च 116 पैसे रोज़. अब रहे उनके उस मेहनत के दाम जो वह कीर्तन करने और गीता पढ़ने में करते थे उन दामों का अन्दाज़ा तो बापू कोई लगा नहीं सकता. उनके तो इतने ही दाम होते हैं जितनी मां की मुहब्बत के और गुरू की सीख के. हां, तो बापू यह आप के चरखे, रामधुन और गीता पाठ की बगिया को लहलहाए हुए हैं और फिर इन्हें हक़ है कि बाल गांधी होते हुए भी अपने को बापू समझें.

बापू, आप की सूझ कमाल की थी. आप जी से चाहते थे कि अछूतों का उद्धार हो और यह ख़ूब समझते थे कि अछूतों में से तरह तरह के और अछूतों का उद्धार तो आसानी से हो सकता है पर मेहतरों का उद्धार कोरे उपदेश से नहीं हो सकता और इस मामले में आदेश की तो ज़रा भी पहुंच नहीं हो सकती. इसलिये आप ने अपने आश्रम से मेहतर का बाईकाट किया और मेहतर का काम आप ने

دوسرے کے پڑھے لکھے اور ہر طرح سمجھدار ہی سمجھدار تھے . وہ ہمیں گھیر کر بیٹھ گئے' اور لگے اپنا اپنا حال سنانے. ایک صاحب بولے' میں پانچ سوروپے مہینے کا نوکر تھا اور پانچ روپے روز اپنے کھانے پر خرچ کرتا تھا . اب آپ کو معلوم ہے میں کیا خرچ کرتا ہوں ؟ صرف بارہ آنے روز ! اور بہت جلدی آٹھ آنے پر آجاؤنگا .

دوسرے صاحب بولے' میری آپ کیا پوچھتے ہیں' میں تو دس روپے روز خرچ کر دیتا تھا تو کم' اور پندرہ کر دیتا تھا تو کم. اور اب تو میں صرف بارہ آنے پر رہتا ہوں !

تیسرے صاحب بولے' مجھے تو صاحب ڈیڑھ سو روپے ملتے تھے' ڈیڑھ روپیہ میرا خرچ تھا اور اب میں پورے پانچ آنے میں اپنی گذر کر لیتا ہوں !

باپو' آپ کو ان تیاگیوں کا حال سنکر کتنی خوشی ہوئی ہوگی . کھانے میں ہی نہیں' پہننے کے معاملے میں بھی یہ آپ سے ہر طرح آگے بڑھے ہوئے تھے . باپو' ہمارے من پر بھی ان سب کا بڑا اثر پڑا اور جی میں لہر اٹھی کہ ایسے تیاگیوں کے ساتھ ہی رہنا چاہئیے . اور اب ہم اُن سے خوب گھل گھل کر باتیں کرنے لگے . اور پھر ہم نے پوچھا کہ آپ سب کتنے کتنے گز سوت کات لیتے ہیں . تو پانچ روپے سے خرچ گھٹانے والے تیاگی نے بتایا کہ وہ دن بھر میں 300 گز سوت کات لیتا ہے' اور دس پندرہ روپے روز خرچ سے گھٹا کر بارہ آنے تک پہونچنے والے نے بتایا کہ وہ 200 گز سوت روز کات لیتا ہے. اور ڈیڑھ روپے والے نے بتایا کہ وہ 600 گز سوت روز کات لیتا ہے . پھر ہم نے پوچھا کہ اگر یہی سوت آپ کسی اور سے کتواتے تو کتائی کیا دیتے . جواب ملا زیادہ سے زیادہ فی سو گز ایک پیسہ ! یعنی آشرم کی کل کمائی گیارہ پیسے روز تھی اور خرچ 116 پیسے روز . اب رہے ان کے اس محنت کے دام جو وہ کیرتن کرنے اور گیتا پڑھنے میں کرتے تھے . اُن داموں کا اندازہ تو باپو کوئی لگا نہیں سکتا . اُن کے تو اتنے ہی دام ہوتے ہیں جتنی ماں کی محبت کے اور گرو کی سیکھ کے. ہاں' تو باپو یہ آپ کے چرخے' رام دھن اور گیتا پاٹھ کی بگیا کو لہلہائے ہوئے ہیں اور پھر انہیں حق ہے کہ بال گاندھی ہوتے ہوئے بھی اپنے کو باپو سمجھیں .

باپو' آپ کی سوجھ کمال کی تھی . آپ جی سے چاہتے تھے کہ اچھوتوں کا اُدھار ہو اور یہ خوب سمجھتے تھے کہ اچھوتوں میں سے طرح طرح کے اور اچھوتوں کا اُدھار تو آسانی سے ہوسکتا ہے پر مہتروں کا اُدھار کورے اُپدیش سے نہیں ہوسکتا اور اس معاملے میں آدیش کی تو ذرا بھی پہونچ نہیں ہوسکتی . اس لئے آپ نے اپنے آشرم سے مہتر کا بائیکاٹ کیا اور مہتر کا کام آپ نے

जैसे शराबबन्दी, छुआछूत का अन्त, लड़कियों का जायदाद में हिस्सा, किसानों का जमीन पर हक़. बापू, अगर किसी दिन सचमुच यह बाल सरकार ऐसा कर बैठी तब क्या होगा ! बापू, आप तो मुस्करा रहे हैं—हमारा दम निकला जा रहा है. आपने तो बड़े बड़े उलझे मामले सुलझाए हैं, आप तो मुस्कराएंगे ही. पर हम तो उलझन में और उलझ गए हैं और हमने ऐसी उलझनें कहाँ सुलझाई हैं. आप हम पर हंसिये नहीं. कोई राह बताइये. यह आपकी सत्य और अहिन्सा की बात तो हम से सधती नहीं. कोई और नुसख़ा बताइये जिस में यह दोनों दवाएँ तो बिलकुल न हों.

बापू, इन बाल गांधियों की नजर में तो आप उसी दिन से महात्मा हैं जिस दिन आपने जन्म लिया. इसलिये यह आपके बचपन की किसी भी बात की नक़ल करके अपने आपको बापू मानने लगते हैं. और जिस काम को आपने कभी भूल से एक दिन कर डाला उसे यह बरसों करने के अपने आपको हक़दार समझते हैं. और जब आपको यह महात्मा समझते हैं तो ऐसा करने के हक़दार भी हैं. यहां हमें शेख़ सादी की कही हुई एक बात याद आगई.

बापू, एक दिन एक बादशाह जंगल में शिकार खेल रहा था. जब उसके लिये जंगल में खाना बनने लगा तो मालूम हुआ साथ में नमक बिलकुल नहीं है. बादशाह ने पास लगे गांव से नमक लाने के लिये एक आदमी भेजा और उसे हिदायत की, देखो, पैसा देकर नमक लाना. दरबारी लोग यह सुनकर हंस पड़े. बादशाह ने पूछा, हंसते क्यों हो. दरबारियों ने जवाब दिया, हुजूर जरा सा नमक लाना है पैसे देने की क्या जरूरत, और गांव वाले पैसा लेंगे भी कब ? बादशाह ने जवाब दिया कि याद रखो, अगर बादशाह रैयत के बाग़ से एक सेब तोड़कर खाले तो बादशाह के नौकर जाकर पेड़ का पेड़ उखाड़ लेंगे. इसी तरह अगर बादशाह आधे अन्डे का जुल्म ठीक समझे तो उसके दरबारी लोग सैकड़ों मुरग़ों को कबाब बना कर खा जायंगे. याद रखो, जुल्म की जड़ बहुत छोटी होती है पर उसका पेड़ सारी दुनिया घेर लेता है. हां, तो बापू, यह बाल-गांधी आपकी एक एक बात को ख़ूब खींच कर अपनाते हैं और अपने को बापू समझते हैं और चाहे कहते न हों, मन में तो यह अपने को आप से बड़ा समझते हैं.

बापू, कुछ लोगों ने आपका चरख़ा अपना रक्खा है. और ऐसा अपना रक्खा है कि वह चरख़ा चलाने के सिवाय हाथ का और कोई काम नहीं करते. और चरख़ा भी वह दिन में घंटे दो घंटे से जियादा नहीं चलाते. बाक़ी वक़्त गीता के पढ़ने और कीर्तन में ख़र्च करते हैं. बापू एक दिन हम ऐसे एक आश्रम में जा निकले. उस आश्रम में सब ऊँचे

جیسے شراب بندی، چھوا چھوت کا انت، لڑکیوں کا جائداد میں حصہ، کسانوں کا زمین پر حق. باپو، اگر کسی دن سچ مچ یہ بال سرکار ایسا کر بیٹھی تب کیا ہوگا ! باپو، آپ تو مسکرا رہے ہیں— ہمارا دم نکلا جارہا ہے. آپ نے تو بڑے بڑے اُلجھے معاملے سلجھائے ہیں آپ تو مسکرائینگے ہی. پر ہم تو اُلجھن میں اور اُلجھ گئے ہیں اور ہم نے ایسی اُلجھنیں کہاں سلجھائی ہیں. آپ ہم پر ہنسئے نہیں. کوئی راہ بتائیے. یہ آپ کی ستیہ اور اہنسا کی بات تو ہم سے سدھتی نہیں. کوئی اور نسخہ بتائیے جس میں یہ دونوں دوائیں تو بالکل نہ ہوں.

باپو، ان بال گاندھیوں کی نظر میں تو آپ اُسی دن سے مہاتما ہیں جس دن آپنے جنم لیا. اس لئے یہ آپ کے بچپن کی کسی بھی بات کی نقل کر کے اپنے آپ کو باپو ماننے لگتے ہیں. اور جس کام کو آپنے کبھی بھول سے ایک دن کر ڈالا اُسے یہ برسوں کرنے کے اپنے آپ کو حقدار سمجھتے ہیں. اور جب آپ کو یہ مہاتما سمجھتے ہیں تو ایسا کرنے کے حقدار بھی ہیں. یہاں ہمیں شیخ سعدی کی کہی ہوئی ایک بات یاد آگئی.

باپو، ایک دن ایک بادشاہ جنگل میں شکار کھیل رہا تھا. جب اُس کے لئے جنگل میں کھانا بننے لگا تو معلوم ہوا ساتھ میں نمک بالکل نہیں ہے. بادشاہ نے پاس لگے گاؤں سے نمک لانے کے لئے ایک آدمی بھیجا اور اُسے ہدایت کی، دیکھو، پیسہ دے کر نمک لانا. درباری لوگ یہ سن کر ہنس پڑے. بادشاہ نے پوچھا، ہنستے کیوں ہو. درباریوں نے جواب دیا، حضور ذرا سا نمک لانا ہے پیسے دینے کی کیا ضرورت، اور گاؤں والے پیسہ لینگے بھی کب ؟ بادشاہ نے جواب دیا کہ یاد رکھو، اگر بادشاہ رعیت کے باغ سے ایک سیب توڑ کر کھا لے تو بادشا کے نوکر چاکر پیڑ کا پیڑ اُکھاڑ لینگے. اسی طرح اگر بادشاہ آدھے انڈے کا ظلم ٹھیک سمجھے تو اُس کے درباری لوگ سیکڑوں مرغوں کو کباب بناکر کھا جائینگے. یاد رکھو، ظلم کی جڑ بہت چھوٹی ہوتی ہے پر اُس کا پیڑ ساری دنیا گھیر لیتا ہے. ہاں، تو باپو، یہ بال گاندھی آپ کی ایک ایک بات کو خوب کھینچ کر اپناتے ہیں اور اپنے کو باپو سمجھتے ہیں اور چاہے کہتے نہ ہوں، من میں تو یہ اپنے کو آپ سے بڑا سمجھتے ہیں.

باپو، کچھ لوگوں نے آپ کا چرخہ اپنا رکھا ہے. اور ایسا اپنا رکھا ہے کہ وہ چرخہ چلانے کے سوائے ہاتھ کا اور کوئی کام نہیں کرتے. اور چرخہ بھی وہ دن میں گھنٹے دو گھنٹے سے زیادہ نہیں چلاتے. باقی وقت گیتا کے پڑھنے اور کیرتن میں خرچ کرتے ہیں. باپو ایک دن ہم ایسے ایک آشرم میں جا نکلے. اس آشرم میں سب اونچے

घबरा उठती है और कभी बौखला जाती है. और बापू, सरकार भी क्या करे, वह ही कौन सौ बरस की बुढ्ढी, या तीस पैंतीस की अधेड़, या अठ्ठारह बरस की जवान है! उसकी भी तो उमर लेदेके चार बरस या इस से कुछ ऊपर है।

बापू, यह तीन तीन बरस के गांधी बड़ी जल्दी भूक हड़ताल पर उतर आते हैं. आप तो भूक सत्याग्रह को आखिरी हथियार मानते थे और उसको सबसे पैना और बड़ा हथियार समझते थे. पर यह बाल गांधी तो हर दम उसी हथियार को बांधे फिरते हैं. और छोटा मोटा नहीं आमरण अनशन की हट कर के बैठ जाते हैं. इससे तो हमारी सरकार और भी घबरा जाती है. बापू इन बाल गांधियों का यह काम नहीं कि वह यह सोचते फिरें कि सत्याग्रह क्या चीज़ है? सत्य किसे कहते हैं? राजकाजी ज़रूरत और चीज़ होती है, सत्य बिलकुल दूसरी चीज़ है? आग्रह सत्य पर किया जाता है. राजकाजी ज़रूरतों पर आग्रह कर बैठना सत्याग्रह नहीं दुराग्रह होता है. इस बात से उन्हें क्या लेना देना. और बाल गांधियों को ऐसा कभी सोचना भी नहीं चाहिये. अगर वह ऐसा सोचने लगें तो उनके आगे बढ़ने का रास्ता ही रुक जाय.

बापू, आजकल आमरण अनशनों की बहार आ रही है. आप का यह एक एक गुण एक एक आदमी में अलग अलग अपने अपने तरीक़े से फल फूल रहा है. यह देख कर तो आपकी बाछें खिल जाती होंगी और आप फूले न समाते होंगे. कभी कोई इस बात को लेकर भूकों मरने को तैयार हो जाता है कि इधर जब तक रेल नहीं निकलेगी मैं खाना नहीं खाऊंगा, कोई नहर निकलने की बात पर हट कर बैठता है, कोई भाशा वार सूबों के न बनने पर मरने को तैयार हो जाता है, कोई कालिज की फ़ीस कम कराने के लिये खाना छोड़ बैठता है. कोई बरख़ास्त होने पर फिर अपनी जगह पाने के लिये डट जाता है. खुलासा यह कि आज कल हर काम पूरा कराने के लिये भूके मरने के हथियार से काम लिया जाता है. इन बाल गांधियों से कोई स्वार्थ और परमार्थ के समझने की आशा भी क्या करे। और इनको समझाने को भी कौन तैयार हो। हां, अगर कोई इन सब बाल लीलाओं को देख कर मुस्कराने वाला इनकी पीठ ठोंक कर इनकी हिम्मत बंधाने वाला होता तो यह बाल गांधी आप ही ऊधम का रस लेते और बाल सरकार भी इनकी लीलाओं पर बौखलाहट का तमाशा न दिखाती.

बापू, हमें तो यह डर लगा हुआ है कि कहीं किसी दिन यह बाल सरकार आमरण सत्याग्रह न कर बैठे. और इस सत्याग्रह के लिये ऐसे ही दो चार विशय हो सकते हैं.

گھبرا اٹھتی ہے اور کبھی بوکھلا جاتی ہے۔ اور باپو سرکار بھی کیا کرے، وہ ہی کون سو برس کی بڈھی، یا تیس پینتیس کی ادھیڑ، یا اٹھارہ برس کی جوان ہے! اُس کی بھی تو عمر لے دے کے چار برس یا اِس سے کچھ اوپر ہے!

باپو، یہ تین تین برس کے گاندھی بڑی جلدی بھوک ہڑتال پر اُتر آتے ہیں۔ آپ تو بھوک ستیاگرہ کو آخری ہتھیار مانتے تھے اور اُس کو سب سے پینا اور بڑا ہتھیار سمجھتے تھے۔ پر یہ بال گاندھی تو ہر دم اُسی ہتھیار کو باندھے پھرتے ہیں۔ اور چھوٹا موٹا نہیں آمرن انشن کی ہٹ کر کے بیٹھ جاتے ہیں۔ اِس سے تو ہماری سرکار اور بھی گھبرا جاتی ہے۔ باپو اِن بال گاندھیوں کا یہ کام نہیں کہ وہ یہ سوچتے پھریں کہ ستیاگرہ کیا چیز ہے؟ ستیہ کسے کہتے ہیں؟ راج کاجی ضرورت اور چیز ہوتی ہے؟ ستیہ بالکل دوسری چیز ہے؟ آگرہ ستیہ پر کیا جاتا ہے۔ راج کاجی ضرورتوں پر آگرہ کر بیٹھنا ستیاگرہ نہیں دوراگرہ ہوتا ہے۔ اِس بات سے اُنہیں کیا لینا دینا۔ اور بال گاندھیوں کو ایسا کبھی سوچنا بھی نہیں چاہئے۔ اگر وہ ایسا سوچنے لگیں تو اُن کے آگے بڑھنے کا راستہ ہی رک جائے۔

باپو، آج کل آمرن انشنوں کی بہار آرہی ہے۔ آپ کا یہ ایک ایک گن ایک ایک آدمی میں الگ الگ اپنے اپنے طریقے سے پھل پھول رہا ہے۔ یہ دیکھکر تو آپ کی باچھیں کھل جاتی ہونگی اور آپ پھولے نہ سماتے ہونگے۔ کبھی کوئی اِس بات کو لے کر بھوکوں مرنے کو تیار ہوجاتا ہے کہ اِدھر جب تک ریل نہیں نکلے گی میں کھانا نہیں کھاؤں، کوئی نہر نکلنے کی بات پر ہٹ کر بیٹھتا ہے، کوئی بھاشا وار صوبوں کے نہ بننے پر مرنے کو تیار ہوجاتا ہے، کوئی کالج کی فیس کم کرانے کے لئے کھانا چھوڑ بیٹھتا ہے، کوئی برخاست ہونے پر پھر اپنی جگہ پانے کے لئے ڈٹ جاتا ہے۔ خلاصہ یہ کہ آج کل ہر کام پورا کرانے کے لئے بھوکے مرنے کے ہتھیار سے کام لیا جاتا ہے۔ اِن بال گاندھیوں سے کوئی سوارتھ اور پرمارتھ کے سمجھنے کی آشا بھی کیا کرے! اور اِن کو سمجھانے کو بھی کون تیار ہو! ہاں، اگر کوئی اِن سب بال لیلاؤں کو دیکھکر مسکرانے والا ان کی پیٹھ ٹھونک کر ان کی ہمت بندھانے والا ہوتا تو یہ بال گاندھی آپ ہی اودھم کا رس لیتے اور بال سرکار بھی ان کی لیلاؤں پر بوکھلاہٹ کا تماشہ نہ دکھاتی۔

باپو، ہمیں تو یہ ڈر لگا ہوا ہے کہ کہیں کسی دن یہ بال سرکار آمرن ستیاگرہ نہ کر بیٹھے۔ اور اس ستیاگرہ کے لئے ایسے ہی دو چار وشے ہوسکتے ہیں۔

जाय, उसको उमर क़ैद की सज़ा दी जाय, उसको फांसी के तख्ते पर लटका दिया जाय, उसको थोते तीरों से बींधा जाय या यह कि उसको आधा जमीन में दफ़न करके उस पर कुत्ते छोड़ दिये जायं. और फिर बापू, यह भी आपको मालूम है कि जब बादशाह अकबर ने यही सवाल बीरबल से पूछा तो बीरबल ने यह जवाब दिया था कि नहीं, उस बादशाह की दाढ़ी पकड़ने वाले को मिठाई खिलाई जाय. और यह जवाब सुन कर सारे दरबारी हक्के बक्के रह गए थे, और बादशाह यह जवाब सुनकर मुस्करा दिये थे. पर दरबारी क्या फिर भी कुछ समझ पाए थे ? आखिर बीरबल को ही उन बेवक़ूफ़ों को यह समझाना पड़ा था कि बादशाह के बेटे के सिवा कौन हो सकता है जो बादशाह की दाढ़ी पकड़े और वह गोद में बिठाकर बड़े प्यार के साथ सिवाय मिठाई के और किस बात का मुस्तहक़ हो सकता है.

बापू, ठीक इसी तरह से आज कोई मामूली अमीरज़ादा अपने दोस्तों से यह पूछ बैठे कि अगर मेरी औरत को कोई हलवाई के हाथ चार आने में बेच कर जलेबी खाने की बात कह बैठे तो उसके साथ मैं क्या बरताव करूं. बाहर उसके ना समझ दोस्त कुछ ऐसी ही सज़ा तजवीज़ कर देंगे जैसी अकबर के दरबारियों ने की थी. और मुशकिल से ही कोई एक ऐसा निकलेगा जो बीरबल जैसा ठीक और चुस्त जवाब दे सके. और बापू अगर आज आप हिन्दुस्तान के चोटी के समझदारों से कहीं यह सवाल कर बैठें कि अगर कोई भारत माता को अमरीका के हाथ कुछ मोटरों और बड़े बड़े मकानों के लोभ में आकर गिरवी रखने की बात सोच बैठे तो उसको क्या सज़ा दी जाय. तो क्या अजब, सारे चोटी के नेता, अपनी समझ को धता बता कर एक आवाज़ में चिल्ला पड़ें कि ऐसे आदमी को फ़ौरन गोली से मार देना चाहिये. और जब जैसे ही उनके इस फ़ैसले की चिल्लाहट खत्म हो तब वैसे ही कहीं एक सीधा सादा आदमी यह कह बैठे कि नहीं, उसको तो पुचकार कर गोदी में लेना चाहिये, और उसकी इस हिम्मत पर उसकी बलाएं लेनी चाहियें. तो बापू उस वक़्त सिवाय आप के कौन मुस्करायगा. चोटी के नेता तो आग बबूला होकर ऐसी सलाह देने वाले के ऊपर कूद पड़ेंगे और न जाने उसका क्या हाल कर देने के लिये तैयार हो जायंगे. बापू, यह तो आप ही समझते हैं कि आखिर तीन बरस के गांधी के सिवाय और कौन ऐसी बात सोच सकता है.

बापू, इन तीन तीन बरस के गांधियों ने सारे हिन्दुस्तान में उधम मचा रखा है. इनके उधम को, आप ज़िन्दा होते, तो हँसते हँसते देखते रहते और अब भी आप जहां कहीं हैं वहीं से इस तमाशे को हंस हंस देख रहे होंगे. पर आज की हमारी सरकार तो ऐसे तमाशे देख कर कभी

جائے، اس کو عمر قید کی سزا دی جائے، اس کو پھانسی کے تختے پر لٹکا دیا جائے، اس کو تھوتے تیروں سے بیندھا جائے یا یہ کہ اس کو آدھا زمین میں دفن کرکے اس پر کتے چھوڑ دئے جائیں. اور پھر باپو، یہ بھی آپ کو معلوم ہے کہ جب بادشاہ اکبر نے یہی سوال بیربل سے پوچھا تو بیربل نے یہ جواب دیا تھا کہ نہیں، اس بادشاہ کی داڑھی پکڑنے والے کو مٹھائی کھلائی جائے. اور یہ جواب سن کر سارے درباری ہکے بکے رہ گئے تھے، اور بادشاہ یہ جواب سن کر مسکرا دئے تھے. پر درباری کیا پھر بھی کچھ سمجھ پائے تھے؟ آخر بیربل کو ہی ان بیوقوفوں کو سمجھانا پڑا تھا کہ بادشاہ کے بیٹے کے سوا کون ہوسکتا ہے جو بادشاہ کی داڑھی پکڑے اور وہ گود میں بٹھاکر بڑے پیار کے ساتھ سوائے مٹھائی کے اور کس بات کا مستحق ہو سکتا ہے.

باپو، ٹھیک اسی طرح سے آج کوئی معمولی امیرزادہ اپنے دوستوں سے یہ پوچھ بیٹھے کہ اگر میری عورت کو کوئی حلوائی کے ہاتھ چار آنے میں بیچ کر جلیبی کھانے کی بات کہہ بیٹھے تو اس کے ساتھ میں کیا برتاؤ کروں. باہر اس کے ناسمجھ دوست کچھ ایسی ہی سزا تجویز کردیں گے جیسی اکبر کے درباریوں نے کی تھی. اور مشکل سے ہی کوئی ایک ایسا نکلے گا جو بیربل جیسا ٹھیک اور چست جواب دے سکے. اور باپو اگر آج آپ ہندستان کے چوٹی کے سمجھداروں سے کہیں یہ سوال کر بیٹھیں کہ اگر کوئی بھارت‌ماتا کو امریکہ کے ہاتھ کچھ موٹروں اور بڑے بڑے مکانوں کے لوبھ میں آکر گروی رکھنے کی بات سوچ بیٹھے تو اس کو کیا سزا دی جائے. تو کیا عجب، سارے چوٹی کے نیتا، اپنی سمجھ کو دھتا بتاکر ایک آواز میں چلا پڑیں کہ ایسے آدمی کو فوراً گولی سے ماردینا چاہئے. اور جب جیسے ہی ان کے اس فیصلے کی چلاہٹ ختم ہو تب ویسے ہی کہیں ایک سیدھا سادا آدمی یہ کہہ بیٹھے کہ نہیں، اس کو تو پچکار کر گودی لے لینا چاہئے، اور اس کی اس ہمت پر اس کی بلائیں لینی چاہئیں. تو باپو اس وقت سوائے آپ کے کون مسکرائے گا. چوٹی کے نیتا تو آگ ببولا ہوکر ایسی صلاح دینے والے کے اوپر کود پڑیں گے اور نہ جانے اس کا کیا حال کر دینے کے لئے تیار ہو جائیں گے. باپو، یہ تو آپ ہی سمجھتے ہیں کہ آخیر تین برس کے گاندھی کے سوائے اور کون ایسی بات سوچ سکتا ہے.

باپو، ان تین تین برس کے گاندھیوں نے سارے ہندستان میں اودھم مچا رکھا ہے. ان کے اودھم کو، آپ زندہ ہوتے، تو ہنستے ہنستے دیکھتے رہتے اور اب بھی آپ جہاں کہیں ہیں وہیں سے اس تماشے کو ہنس ہنس دیکھ رہے ہونگے. پر آج کی ہماری سرکار تو ایسے تماشے دیکھکر کبھی

उसके बहुत बारीक टुकड़े कर दिये जायं और काटने से जो छोटे छोटे रेशे बनें उनमें से कहीं एक रेशा बो दिया जाय तो वह पानी पा कर केले का पेड़ बन जाता है. खुलासा यह कि पका केला सब का सब बीज होता है. आपके शहीद होने के बाद, हमारा ऐसा ख़याल है, कि हिन्दुस्तान के चोटी के नेताओं ने, आपके इस पाँच भूत से बने तन के बारे में भी कुछ ऐसा ही अन्दाज़ा लगाया, इसीलिये उन्होंने आपकी हड्डियों के फूल जगह जगह नदियों में डाल दिये. और विनोबा के परमधाम के नीचे बहने वाली पौनार नदी में भी उनमें से कुछ फूलों को जगह मिल गई. और बापू, यह सुनकर तो तुम्हें कितनी ख़ुशी होगी कि चोटी के नेताओं का अन्दाज़ा आपकी मुट्ठी भर राख के बारे में बिलकुल ठीक निकला ! बापू, तीन बरस के इस अरसे में हिन्दुस्तान के कोने कोने में अनगिनत गांधी पैदा हो गए हैं. उमर के लिहाज़ से तो वह अभी बच्चे हैं क्योंकि तीन बरस की उमर होती ही क्या है, लेकिन यह सुनकर तो बापू आपको बेहद ख़ुशी होगी कि उनमें से हर एक अपने आपको बापू समझता है. यह दूसरी बात है कि दूसरे लोग उन्हें बापू कह कर नहीं पुकारते.

बापू, कैनी बाल (आदमख़ोर) बनना, अगर बुरी बात न हो और समाज की दौड़ में पीछे हटने वाली बात न हो, तो हम कहे देते हैं, हमारे मन में आज यह बात ज़रूर उठी कि अगर आपके शहीद होने के वक़्त हम हिन्दुस्तानी कैनीबाल होते तो हम किसी न किसी तरह आपकी बुद्धि, आपका सत्य, आपकी अहिन्सा हज़म किये बिना न मानते. आपकी हिन्दुस्तान भर में फैलाई हुई राख के ज़रिये आपकी बुद्धि का या सत्य और अहिन्सा का भी कुछ अंश हमारे हिस्से में आया है या नहीं यह हम नहीं कह सकते. पता नहीं ईश्वर का इसमें क्या भेद था कि हम आपकी शहादत के वक़्त कैनीबाल नहीं थे.

बापू, यह ठीक है कि अभी जितने गांधी पैदा हुए हैं वह उमर में चाहे कितने बड़े क्यों न हों, गांधी बनने की उनकी उमर अभी तीन बरस नौ ही महीने की है. और उस उमर के लिहाज़ से वह जो कुछ कर रहे हैं वह इस क़ाबिल ज़रूर है कि उनको बढ़ावा दिया जाय और उनकी हिम्मत बढ़ाई जाय. और इसमें शक नहीं कि आप जहां भी होंगे वहां से ऐसा ज़रूर कर रहे होंगे.

बापू, अब आप से तो हम क्या कहें, आपको तो बादशाह अकबर की वह बात मालूम ही है जिस वक़्त उसने अपने दरबारियों से यह सवाल किया कि अगर कोई हमारी दाढ़ी पकड़ ले तो उसका हम क्या करें. और दरबारियों ने जो जवाब दिया था वह भी आपको मालूम है. उन नासमझों ने यही तो जवाब दिया था कि उसको बेंत की सज़ा दी

اُس کے بہت باریک کردئیے جائیں اور کاٹنے سے جو چھوٹے چھوٹے ریشے بنیں اُن میں سے کہیں ایک ریشا بو دیا جائے تو وہ پانی پاکر کیلے کا پیڑ بن جاتا ہے . خلاصہ یہ کہ پکا کیلا سب کا سب بیج ہوتا ہے . آپ کے شہید ہونے کے بعد، ہمارا ایسا خیال ہے، کہ ہندستان کے چوٹی کے نیتاؤں نے، آپ کے اِس پانچ بھوت سے بنے تن کے بارے میں بھی کچھ ایسا ہی اندازہ لگایا، اِسی لئے اُنہوں نے آپ کی ہڈیوں کے پھول جگہ جگہ ندیوں میں ڈال دئے . اور ونوبا کے پرم‌دھام کے نیچے بہنے والی پونار ندی میں بھی اُن میں سے کچھ پھولوں کو جگہ مل گئی . اور باپو، یہ سن کر تو تمہیں کتنی خوشی ہوگی کہ چوٹی کے نیتاؤں کا اندازہ آپ کی مٹھی بھر راکھ کے بارے میں بالکل ٹھیک نکلا ! باپو، تین برس کے اِس عرصے میں ہندستان کے کونے کونے میں اَن گنت گاندھی پیدا ہوگئے ہیں . عمر کے لحاظ سے تو وہ ابھی بچے ہیں کیونکہ تین برس کی عمر ہوتی ہی کیا ہے، لیکن یہ سن کر تو باپو آپ کو بے حد خوشی ہوگی کہ اُن میں سے ہر ایک اپنے آپ کو باپو سمجھتا ہے . یہ دوسری بات ہے کہ دوسرے لوگ اُنہیں باپو کہکر نہیں پکارتے .

باپو، کینی بال (آدم‌خور) بننا، اگر بری بات نہ ہو اور سماج کی دوڑ میں پیچھے ہٹنے والی بات نہ ہو، تو ہم کہے دیتے ہیں، ہمارے من میں آج یہ بات ضرور اُٹھی کہ اگر آپ کے شہید ہونے کے وقت ہم ہندستانی کینی بال ہوتے تو ہم کسی نہ کسی طرح آپ کی بدھی، آپکا ستیہ، آپ کی اہنسا ہضم کئے بنا نہ مانتے . آپ کی ہندستان بھر میں پھیلائی ہوئی راکھ کے ذریعے آپ کی بدھی کا یا ستیہ اور اہنسا کا بھی کچھ انش ہمارے حصے میں آیا ہے یا نہیں یہ ہم نہیں کہہ سکتے. پتہ نہیں ایشور کا اِس میں کیا بھید تھا کہ ہم آپ کی شہادت کے وقت کینی بال نہیں تھے .

باپو، یہ ٹھیک ہے کہ ابھی جتنے گاندھی پیدا ہوئے ہیں وہ عمر میں چاہے کتنے بڑے کیوں نہ ہوں، گاندھی بننے کی اُن کی عمر ابھی تین برس نو ہی مہینے کی ہے . اور اُس عمر کے لحاظ سے وہ جو کچھ کر رہے ہیں وہ اِس قابل ضرور ہے کہ اُن کو بڑھاوا دیا جائے اور اُن کی ہمت بڑھائی جائے . اور اِس میں شک نہیں کہ آپ جہاں بھی ہونگے وہاں سے ایسا ضرور کررہے ہونگے .

باپو، اب آپ سے تو ہم کیا کہیں، آپ کو تو بادشاہ اکبر کی وہ بات معلوم ہی ہے جس وقت اُس نے اپنے درباریوں سے یہ سوال کیا کہ اگر کوئی ہماری داڑھی پکڑلے تو اُس کا ہم کیا کریں . اور درباریوں نے جو جواب دیا تھا وہ بھی آپ کو معلوم ہے . اُن ناسمجھوں نے بھی تو جواب دیا تھا کہ اُس کو بینت کی سزا دی

ख़ुश करने के लिये उन्होंने इस होस्टल को जमीन दे दी थी. लाखों रुपया इस भट्टी से कमाते हैं. हजारों कांगरेस को चंदा दे देते हैं. उन से बोल ही कौन सकता है. आए दिन मिनिस्टरों की दावत होती रहती है. भला उनके खिलाफ किस की दाल गल सकती है."

"भ्रष्टाचार तमाम फैल गया है, यह सही है. लेकिन हाई कोर्ट में तो अपील हो सकती है. वहाँ तो तुम अपनी तन्दुरुस्ती और सदाचार की दुहाई दे कर इन्साफ मांग सकते हो." मैंने जैसे उसकी अड़चन दूर करने के लिये जबरदस्त सुझाव पेश करते हुए कहा.

"जी, जरूर! हाई कोर्ट क़ानून के शब्दों को मानता है, उसकी आत्मा को नहीं. होस्टल के बनने से पहले यह भट्टी यहाँ थी इसलिये इसे यहाँ रहना चाहिये. ग़लती उन लोगों की है जिन्होंने यहाँ होस्टल बनवाया था. इसलिये हाई कोर्ट का फ़ैसला हो जायगा कि अगर आप चाहें तो होस्टल दूसरी जगह खिसका लीजिये. आपको पूरी आजादी है............और तुम जानते हो शराब की भट्टी के लिये जगह मिल सकती है, मंदिर मस्जिद बनाने के लिये जगह मिल सकती है, बनस्पति घी की फ़ैक्टरी खोलने की जगह मिल सकती है, सिगरेट की फ़ैक्टरी के लिये जगह पैदा की जा सकती है, लेकिन विद्यार्थियों के होस्टल बनाने के लिये जगह नहीं मिल सकती, स्कूल खोलने के लिये जगह नहीं मिल सकती, जनता के वास्ते अस्पताल खोलने की जगह नहीं मिल सकती, रहने के लिये मकान बनाने की जगह नहीं मिल सकती. जमीन तो किसी न किसी जमींदार की ही है. वह धन चाहता है जनता का फ़ायदा नहीं. सरकार भी तो उसी की है. जो कुछ करेगी उसके फ़ायदे का बचाव करके ही तो करेगी............"

मेरे मुँह से आवेश में निकल गया—

"जय स्वराज! जय भारत!! जय रिशियों मुनियों की संतान!!!

बापू से

बापू,

गेहूँ का एक दाना जमीन में दफ़न होकर अपने जैसे सैकड़ों हजारों पैदा कर लेता है. और हमने यह भी सुन रखा है कि एक पके हुए केले को अगर एक सुतली पर सूंत दिया जाय और फिर उस सुतली को सुखा कर कैंची से

خوش کرنے کے لئے اُنھوں نے اس ہوسٹل کو زمین دے دی تھی ۔ لاکھوں روپیہ اِس بھٹی سے کماتے ھیں ۔ ہزاروں کانگریس کو چندہ دے دیتے ھیں ۔ اُن سے بول ھی کون سکتا ھے ۔ آئے دن منسٹروں کی دعوت ہوتی رہتی ھے ۔ بھلا اِن کے خلاف کس کی دال گل سکتی ھے ۔"

" بھرشٹا چار تمام پھیل گیا ھے' یہ صحیح ھے ۔ لیکن ہائیکورٹ میں تو اپیل ہوسکتی ھے ۔ وہاں تو تم اپنی تندرستی اور سداچار کی دہائی دے کر انصاف مانگ سکتے ہو ۔" میں نے جیسے اُس کی اڑچن دور کرنے کے لئے زبردست سجھاؤ پیش کرتے ہوئے کہا ۔

" جی' ضرور ! ہائیکورٹ قانون کے شبدوں کو مانتا ھے' اُس کی آتما کو نہیں ۔ ہوسٹل کے بننے سے پہلے یہ بھٹی یہاں تھی اس لئے اِسے یہاں رہنا چاہئے ۔ غلطی اُن لوگوں کی ھے جنھوں نے یہاں ہوسٹل بنوایا تھا ۔ اِس لئے ہائیکورٹ کا فیصلہ ہوجائے گا کہ اگر آپ چاہیں تو ہوسٹل دوسری جگہ کھسکا لیجئے آپ کو پوری آزادی ھے ...... اور تم جانتے ہو شراب کی بھٹی کے لئے جگہ مل سکتی ھے' مندر مسجد بنانے کے لئے جگہ مل سکتی ھے' بنسپتی گھی کی فیکٹری کھولنے کے لئے جگہ مل سکتی ھے' سگریٹ کی فیکٹری کے لئے جگہ پیدا کی جا سکتی ھے' لیکن ودیارتھیوں کے ہوسٹل بنانے کے لئے جگہ نہیں مل سکتی' اسکول کھولنے کے لئے جگہ نہیں مل سکتی' جنتا کے واسطے اسپتال کھولنے کی جگہ نہیں مل سکتی' رہنے کے لئے مکان بنانے کی جگہ نہیں مل سکتی ۔ زمین تو کسی نہ کسی زمیندار کی ھی ھے ۔ وہ دھن چاہتا ھے جنتا کا فائدہ نہیں ۔ سرکار بھی تو اُسی کی ھے ۔ جو کچھ کرے گی اُس کے فائدے کا بچاؤ کر کے ھی تو کرے گی ..."

میرے منہ سے آویش میں نکل گیا —

"جے سوراج ! جے بھارت!! جے رشیوں منیوں کی سنتان!!!

باپو سے

باپو'

گیہوں کا ایک دانا زمین میں دفن ہوکر اپنے جیسے سیکڑوں ہزاروں پیدا کرلیتا ھے ۔ اور ہم نے یہ بھی سن رکھا ھے کہ ایک پکے ہوئے کیلے کو اگر ایک سُتلی پر سونت دیا جائے اور پھر اُس سُتلی کو سکھا کر قینچی سے

वह सड़क पर बैठा क़ै कर रहा था. सामने कोतवाली पर एक सिपाही संगीन से लैस खड़ा था. क़ानून टूट चुका था और वह खड़ा था.......मुजरिम सामने खड़ा था और वह खड़ा देख रहा था. उसकी ख़ता ही क्या है. क़ानून ही कुछ ऐसा है—इस हिन्दुस्तान में सब मन के हाथों मजबूर हैं !

उन के उतरने से एक मुसीबत हल हो गई. मैं ठंडी हवा का मज़ा ले सका. ख़ूब ही सीन हैं. हम सड़कों को पार करते हुए टी. जी. होस्टल पहुँच गए. तेज बहादुर कमरे में नहीं थे. बग़ल वालों से मालूम हुआ वह गोमती किनारे घूमने गए हैं. मैंने उनके कमरे के सामने सामान फेंका और गोमती की तरफ़ चल दिया. सौ गज़ के फ़ासले पर गोमती लहरें मार रही थी. मैं तेज बहादुर तक पहुँच गया. हम दोनों गले मिले. मैंने जिज्ञासा से लदे स्वर में पूछा—"क्या गम्भीर मामला है, तेज?"

"मामला तो कोई गम्भीर नहीं है. सिर्फ़ सतीश की शादी होने वाली है. आज ही होगी. तुम्हें वह बुलाना चाहता था. मुझ से तार दिलवा दिया. तुम घबरा तो उठे होगे ?"

मैंने उसके कंधे पर हाथ मारते हुए कहा—"धत तेरी के ! ऐसा भी कहीं मज़ाक़ किया जाता है."

दरिया का सीन बहुत मोहक था. बहाव में तेज़ी थी और लहरों में जवानी की अंगड़ाई. हरियाली किनारे के दोनों तरफ़ थी. यह सुन्दर दृश्य मुझे बहुत भा रहा था. लेकिन शराब की बू हवा में मिल गई थी. मैंने दो चार बार सूँघ कर पता लगाने की कोशिश की कि बू किधर से आ रही है. कुछ पता न लग पाया. फिर तेज से पूछा—"शराब की महक कहाँ से आ रही है तेज?"

"हमारे होस्टल के बिलकुल बग़ल में एक भट्टी है." तेज ने उत्तर दिया.

"लखनऊ में शराब पीने पर तो पाबन्दी है और होस्टल के बग़ल में भट्टी जल रही है. यह दुरंगी हमारी समझ से दूर है." मैंने गम्भीर स्वर में तेज से कहा.

"यह कांगरेस राज है कांगरेस राज." तेज ने व्यंग किया.

"तुम लोग लड़ते क्यों नहीं हो. सरकार से मांग करो कि इस भट्टी को बन्द कर दे." मैंने आवेश भरे लहजे में सुझाव रखा.

तेज के मुँह पर हलकी सी मुस्कराहट आ गई और उसने कहा—"तुम नहीं जानते कि भट्टी के मालिक बड़े ज़मींदार हैं. यह सारी ज़मीन उन्हीं की है. गवरनर साहब को

وہ سڑک پر بیٹھا قے کر رہا تھا . سامنے کوتوالی پر ایک سپاہی سنگین سے لیس کھڑا تھا . قانون ٹوٹ چکا تھا اور وہ کھڑا تھا .... مجرم سامنے کھڑا تھا اور وہ کھڑا دیکھ رہا تھا . اُس کی خطا ہی کیا ہے . قانون ہی کچھ ایسا ہے — اِس ہندستان میں سب من کے ہاتھوں مجبور ہیں !

اُن کے اُترنے سے ایک مصیبت حل ہوگئی . میں ٹھنڈی ہوا کا مزا لے سکا . خوب ہی سین ہیں . ہم سڑکوں کو پار کرتے ہوئے ٹی . جی . ہوسٹل پہونچ گئے . تیج بہادر کمرے میں نہیں تھے . بغل والوں سے معلوم ہوا وہ گومتی کنارے گھومنے گئے ہیں . میں نے اُن کے کمرے کے سامنے سامان پھینکا اور گومتی کی طرف چل دیا . سو گز کے فاصلے پر گومتی لہریں مار رہی تھی . میں تیج بہادر تک پہونچ گیا . ہم دونوں گلے ملے . میں نے جگیاسا سے لدے سور میں پوچھا —" کیا گمبھیر معاملہ ہے تیج ؟"

"معاملہ تو کوئی گمبھیر نہیں ہے . صرف ستیش کی شادی ہونے والی ہے . آج ہی ہوگی . تمہیں وہ بلانا چاہتا تھا . مجھ سے تار دلوا دیا . تم گھبرا تو اٹھے ہوگے ؟"

میں نے اُس کے کندھے پر ہاتھ مارتے ہوئے کہا —"دھت تیری کے ! ایسا بھی کہیں مذاق کیا جاتا ہے"

دریا کا سین بہت موہک تھا . بہاؤ میں تیزی تھی اور لہروں میں جوانی کی انگڑائی . ہریالی کنارے کے دونوں طرف تھی . یہ سندر درشیہ مجھے بہت بھا رہا تھا . لیکن شراب کی بو ہوا میں مل گئی تھی . میں نے دو چار بار سونگھکر پتہ لگانے کی کوشش کی کہ بو کدھر سے آرہی ہے . کچھ پتہ نہ لگ پایا . پھر تیج سے پوچھا —" شراب کی مہک کہاں سے آرہی ہے تیج ؟"

" ہمارے ہوسٹل کے بالکل بغل میں ایک بھٹی ہے ." تیج نے اُتر دیا .

" لکھنؤ میں شراب پینے پر تو پابندی ہے اور ہوسٹل کے بغل میں بھٹی جل رہی ہے . یہ دورنگی ہماری سمجھ سے دور ہے ." میں نے گمبھیر سور میں تیج سے کہا .

" یہ کانگریس راج ہے کانگریس راج ." تیج نے ویَنگ کیا .

" تم لوگ لڑتے کیوں نہیں ہو . سرکار سے مانگ کرو کہ اِس بھٹی کو بند کر دے ." میں نے آویش بھرے لہجے میں سجھاؤ رکھا .

تیج کے منہ پر ہلکی سی مسکراہٹ آگئی اور اُس نے کہا —" تم نہیں جانتے کہ بھٹی کے مالک بڑے زمیندار ہیں . یہ ساری زمین اُنہیں کی ہے . گورنر صاحب کو

था. देरी मेरे दिमाग़ में उलझन पैदा कर रही थी. मैंने झुँझला कर कहा—"बाबा जलदी भी करो, बैठा भी लो.

उसने दूसरी सवारी को बैठा लिया. अभी कुछ ही क़दम रिक्शा चला होगा कि उन सज्जन ने मेरी तरफ़ अपना मुँह घुमाया और बोले—"आप जानते हैं, मैं कौन हूँ. मैं महाराजा ग्वालियार का 'एयर ऐपरेन्ट' हूँ." मुँह से शराब का भभका निकल रहा था. मुझे शराबी से एक तरह की हमदर्दी है. जब कोई शराब पी लेता है तो वह सच बोलता है. सच शायद बिना नशे के कोई बोलता ही नहीं है. नशे नशे में फ़रक़ जरूर है लेकिन हैं तो सब नशे ही की बातें. लेकिन यह आदमी साफ़ झूट बोल रहा था. यह कोई ग़रीब क्लर्क मालूम हो रहा था. अपनी पत्नी को रुला कर, बच्चों का दूध और खाना छीन कर इसने शराब पी थी. शराब पी थी तो भी यह झूट बोल रहा था. मुझे चिढ़ सी हो गई. मैंने मुँह मोड़ लिया. वह बकवास करता रहा. थोड़ी देर बाद मुझे चुहल सूझी. उसकी तरफ़ मुँह घुमा कर मैंने पूछा—"लखनऊ में तो शराब पीना मना है. आप कहां से चढ़ा कर आ रहे हैं?"

"जी, लखनऊ में मना है लखनऊ में......आस पास के गांव में कोई मनाही नहीं है. जब मन चाहता है....... एक दो स्टेशन इधर उधर निकल जाता हूँ.......सेर हो आता हूँ..."

"पुलिस कुछ नहीं करती? शहर में आप इस तरह पी कर घूम रहे हैं. आप को तो जरूर पकड़ लेना चाहिये." मैंने सवाल किया.

"हाँ गिरफ़्तार तो कर लेना चाहिये.......लेकिन...... लेकिन.......पुलिस जो ठहरी......और वह भी स्वराज की पुलिस...... हा हा हा हा.......बस जो सामने आया कुछ टिका दिया. सारा मामला ठीक हो जाता है." वह ठहाका लगा लगाकर हंसता रहा. मैं सुकड़ा हुआ नशे में डूबे व्यंग का मज़ा लेता रहा.

ठीक क़ैसर बाग़ पुलिस चौकी के सामने वह सज्जन उतर गए. रिक्शे से उतरते ही उनको क़ै हो गई. अच्छा हुआ रिक्शे पर उनको उलटी नहीं हुई. एक तो क़ै दूसरे शराब की क़ै. दिमाग़ भन्ना उठा. जी चाहा उन को एक चपत लगाऊँ. मैंने ग़ुस्से में कहा—"जब हज़म नहीं कर पाते तो ढकोसले क्यों हो? अपना पेट काटते हो, तन जलाते हो, दुख सहते हो, सिर्फ़ कम्बख़्त नशे के लिये."

"बात तो ठीक है.......मन को क्या किया जाय!...... मन के हाथों हम सब मजबूर हैं ...... !!" शराबी ने नीचे गरदन किये हुए मुझे उत्तर दिया.

. دیری میرے دماغ میں اُلجھن پیدا کر رہی تھی .
ں نے جھنجھلا کر کہا — " بابا جلدی بھی کرو،
ٹھا بھی لو ."

اُس نے دوسری سواری کو بیٹھا لیا . ابھی کچھ قدم
رکشا چلا ہوگا کہ اُن سجن نے میری طرف اپنا منہ
مایا اور بولے — " آپ جانتے ہیں، میں کون ہوں . میں
ہاراجہ گوالیار کا ' ایرایپرنت ' ہوں ." منہ سے شراب
بھبکا نکل رہا تھا . مجھے شرابی سے ایک طرح کی
مدردی ہے . جب کوئی شراب پی لیتا ہے تو وہ سچ بولتا
. سچ شاید بنا نشے کے کوئی بولتا ہی نہیں ہے . نشے
میں فرق ضرور ہے لیکن ہیں تو سب نشے ہی کی
تیں . لیکن یہ آدمی صاف جھوٹ بول رہا تھا . یہ
وئی غریب کلرک معلوم ہو رہا تھا . اپنی پتنی کو رلاکر،
چوں کا دودھ اور کھانا چھین کر اِس نے شراب پی تھی .
راب پی تھی تو بھی یہ جھوٹ بول رہا تھا . مجھے چڑھ
ی ہوگئی . میں نے منہ موڑ لیا . وہ بکواس کرتا رہا .
ھوڑی دیر بعد مجھے چہل سوجھی . اُس کی طرف منہ
ما کر میں نے پوچھا —" لکھنؤ میں تو شراب پینا
منع ہے . آپ کہاں سے چڑھا کر آ رہے ہیں؟"

" جی، لکھنؤ میں منع ہے لکھنؤ میں ....
س پاس کے گاؤں میں کوئی مناہی نہیں ہے . جب من
چاہتا ہے .. .. ایک دو اسٹیشن اِدھر اُدھر نکل جاتا
ہوں .... سیر ہو آتا ہوں ...."

" پولیس کچھ نہیں کرتی؟ شہر میں آپ اِس طرح
ی کر گھوم رہے ہیں . آپ کو تو ضرور پکڑ لینا چاہئے ."
میں نے سوال کیا .

" ہاں گرفتار تو کر لینا چاہئے .... لیکن.......
یکن .... پولیس جو ٹھہری ...... اور وہ بھی سوراج
ی پولیس .... ہا ہا ہا ہا .... بس جو سامنے
آیا کچھ ٹکا دیا . سارا معاملہ ٹھیک ہوجاتا ہے ." وہ ٹھہاکا
گا لگا کر ہنستا رہا . میں سکڑا ہوا نشے میں ڈوبے وینگ
کا مزا لیتا رہا .

ٹھیک قیصر باغ پولیس چوکی کے سامنے وہ سجن
اتر گئے . رکشے سے اُترتے ہی اُن کو قے ہوگئی . اچھا ہوا
رکشے پر اُن کو اُلٹی نہیں ہوئی . ایک تو قے دوسرے
شراب کی قے . دماغ بھنّا اُٹھا . جی چاہا اُن کو ایک
چپت لگاؤں . میں نے غصے میں کہا —" جب ہضم نہیں
کر پاتے تو ڈھکوسلے کیوں ہو؟ اپنا پیٹ کاٹتے ہو، خون
جلاتے ہو، دکھ سہتے ہو، صرف کمبخت نشے کے لئے ."

" بات تو ٹھیک ہے .... من کو کیا کیا جائے ! ...
من کے ہاتھوں ہم سب مجبور ہیں ...... !!" شرابی
نے نیچے گردن کئے ہوئے مجھے اُتر دیا .

डाक्टर साहब ने बात काट कर कहना शुरू किया—"अंगरेज़ का ज़माना रह रह के याद करना पड़ता है. मामूली मामूली डाक्टर तीन तीन सौ चार चार सौ की आमदनी कर लेते थे. बिना कहे सुने रुपए मिलते थे. लेकिन आज कल कमबख्तों से मुँह खोल के कहो भी तो कोई नहीं देता.आप तो डाक्टर ही हैं, मैं तो सिविल सर्जन हूँ. लेकिन पहले के मुक़ाबले में कुछ आमदनी नहीं होती. कहीं किसी क़त्ल वग़ैरा के मुक़दमे में मौक़ा भी मिलता है तो किसी न किसी खद्दर धारी को भी शामिल करना पड़ता है...... मैं तो अब साफ़ कह देता हूँ सर्टीफ़िकेट लिखने, ख़तरनाक चोट का सर्टीफ़िकेट वग़ैरा देने का मेरा रेट मुक़र्रर है. खरा काम खरा दाम. किसी के साथ रिआयत नहीं. परसों एक गाँव में लाठी चल गई. एक आदमी की हड्डी टूट गई. मैंने उसकी पारटी वालों से साफ़ कह दिया कि पाँच सौ रुपया दो नहीं तो मैं 'ख़तरनाक" चोट नहीं लिखूँगा. लगे इधर उधर की पट्टी पढ़ाने. मैंने एक भी नहीं सुनी. बिना लिये मैंने क़लम नहीं उठाया."

"हम जैसे छोटों का तो कुछ बस ही नहीं चलता. मुक़दमे वग़ैरा हम तक पहुंचने ही नहीं पाते. ऊपर ही ऊपर सब तय हो जाता है. मरीज़ों से पान फूल के लिये भी कुछ नहीं मिलता. मैं तो बताऊँ साफ़, आप से क्या छिपाना. दवाएँ ब्लैक मार्केट में बिकवा लेता हूँ, और पानी रोगियों को देता हूं. लेकिन इतने हिस्सेदार हो जाते हैं कि कोई ख़ास आमदनी नहीं होती."

"आख़िर किया ही क्या जाय. भई कुछ न कुछ अपने और बच्चों के लिये करना ही पड़ेगा. फिर किसी सूरत क्यों न हो. पेट पालना भी कोई जुर्म है.' 'सिविल सरजन साहब ने डाक्टर साहब की करतूत को ठीक ठहराते हुए कहा.

मेरे मुंह से एक बारगी निकल गया—"जय स्वराज ! जय भारत !! जय महारिशियों की सन्तान !!! "

मेरी आवाज़ से दोनों चौंक पड़े और चुप हो गए. मैंने किताब मुँह पर रखकर करवट बदल ली.

सुबह सुबह गाड़ी लखनऊ पहुंच गई. मेरे पास था ही क्या. झट से स्टेशन से बाहर आया. मेडिकल कालिज जाने के लिये रिक्शा किया. इस समय मैं प्रसन्न था, मेरी उमंग लौट आई थी. ऐसा लग रहा था कि मैंने अपने दोस्त को फाँसी से बचा लिया है, या ख़ुद किसी झूटे इलज़ाम से बरी कर दिया गया हूँ. मैं बेहद ख़ुश था. रिक्शा अभी जगह से हिला भी न था कि पीछे से आवाज़ आई —"रिक्शाख़ाली है ?"

रिक्शे वाले ने पूछा, अगर मैं राज़ी हूँ तो वह यह सवारी भी बैठा ले. उसको पैसे मिल जायँगे. वह अपनी ग़रीबी का रोना रोने लगा. मुझे उस वक़्त तेज तक पहुंचना

ڈاکٹر صاحب نے بات کاٹ کر کہنا شروع کیا—"انگریز کا زمانہ رہ رہ کے یاد کرنا پڑتا ہے . معمولی معمولی ڈاکٹر تین تین سو چار چار سو کی آمدنی کر لیتے تھے . بنا کہے سنے روپے ملتے تھے لیکن آج کل کمبختوں سے منہ کھول کے کہو بھی تو کوئی نہیں دیتا . آپ تو ڈاکٹر ہی ہیں' میں تو سول سرجن ہوں . لیکن پہلے کے مقابلے میں کچھ آمدنی نہیں ہوتی . کہیں کسی قتل وغیرہ کے مقدمے میں موقع بھی ملتا ہے تو کسی نہ کسی کھدر دھاری کو بھی شامل کرنا پڑتا ہے......میں تو اب صاف کہ دیتا ہوں . ... سرٹیفکٹ لکھنے' خطرناک چوٹ کا سرٹیفکٹ دینے وغیرہ کا میرا ریٹ مقرر ہے . کھرا کام کھرا دام . کسی کے ساتھ رعائت نہیں . پرسوں ایک گاؤں میں لاٹھی چل گئی . ایک آدمی کی ہڈی ٹوٹ گئی . میں نے اُس کی پارٹی والوں سے صاف کہ دیا کہ پانچ سو روپیہ دو نہیں تو میں ' خطرناک " چوٹ نہیں لکھوں گا . لگے اِدھر اُدھر کی پٹی پڑھانے . میں نے ایک بھی نہیں سنی بنا لئے میں نے قلم نہیں اُٹھایا ."

" ہم جیسے چھوٹوں کا تو کچھ بس ہی نہیں چلتا . مقدمے وغیرہ ہم تک پہونچنے ہی نہیں پاتے . اوپر ہی اوپر سب طے ہوجاتا ہے . مریضوں سے پان پھول کے لئے بھی کچھ نہیں ملتا . میں تو بتاؤں صاف' آپ سے کیا چھپانا . دوائیں بلیک مارکیٹ میں بکوا لیتا ہوں' اور پانی روگیوں کو دیتا ہوں . لیکن اتنے حصے دار ہو جاتے ہیں کہ کوئی خاص آمدنی نہیں ہوتی ."

" آخر کیا ہی کیا جائے . بھئی کچھ نہ کچھ اپنے اور بچوں کے لئے کرنا ہی پڑے گا . پھر کسی صورت کیوں نہ ہو . پیٹ پالنا بھی کوئی جرم ہے ." سول سرجن صاحب نے ڈاکٹر صاحب کی کرتوت کو ٹھیک ٹھہراتے ہوئے کہا .

میرے منہ سے یکبارگی نکل گیا — " جے سوراج ! جے بھارت !! جے مہارشیوں کی سنتان !!! "

میری آواز سے دونوں چونک پڑے اور چپ ہوگئے . میں نے کتاب منہ پر رکھکر کروٹ بدل لی .

صبح صبح گاڑی لکھنؤ پہونچ گئی . میرے پاس تھا ہی کیا . جھٹ سے اسٹیشن سے باہر آیا . میڈیکل کالج جانے کے لئے رکشا کیا . اِس سمے میں پرسن تھا' میری امنگ لوٹ آئی تھی . ایسا لگ رہا تھا کہ میں نے اپنے دوست کو پھانسی سے بچا لیا ہے' یا خود کسی جھوٹے الزام سے بری کر دیا گیا ہوں . میں بے حد خوش تھا . رکشا ابھی جگہ سے ہلا بھی نہ تھا کہ پیچھے سے آواز آئی —" رکشا خالی ہے ؟"

رکشے والے نے پوچھا' اگر میں راضی ہوں تو وہ یہ سواری بھی بیٹھا لے . اُس کو پیسے مل جائیں گے . وہ اپنی غریبی کا رونا رونے لگا. مجھے اُس وقت تیج تک پہونچنا

ही चाहिये, अपनी सरकार होगई है न.' वह बोले—'क्या बात करते हैं दारोग़ा जी आप भी, अब ही तो मौक़ा है हाथ की सफ़ाई का.' मैंने संकोच ज़ाहिर करते हुए कहा—'क्या किया जाय.' वह मुस्करा कर बोले—'ख़ूब धड़ाके से हाथ चलाइये. हम तो हैं ही. कोई ऊँच नीच पड़ेगा तो देखा जायगा. लेकिन......आधो आध रहेगा दारोग़ा जी.' मेरी तो बाछें खिल गईं. यक़ीन मानो एक साल में उस थाने से दस हज़ार रुपये मैंने कमाए थे. सेक्रेटरी साहब के हवाले भी इतना ही कर दिया. अब तो मेरी हिम्मत खुल गई है. जहां जाता हूँ वहां के सबसे असरदार कांगरेसी से मामला तय करलेता हूं."

"यही हाल तो अपना भी है दारोग़ा जी ! लेकिन अब तो इन कांगरेसियों का लालच बढ़ता ही जाता है. ज़ियादा से ज़ियादा हिस्सा मांगते हैं. मेहनत करें हम और मुफ़्त का हिस्सा इन को बटाएं. अच्छे आए कहीं के......"

मुझे हंसी आ रही थी और साथ ही ग़ुस्सा भी. लेकिन मैं कर ही क्या सकता था. बात तो सच थी. गाड़ी ने ज़ोर ज़ोर से सीटी देनी शुरू कर दी थी. मैंने दारोग़ा लोगों को उन के हाल पर छोड़ा और सीधा अपने बिस्तरे पर आ गया. कुछ ही देर में गाड़ी रुक गई. यह रायबरेली स्टेशन था. लोग इतनी रात गए भी गाड़ी के लिये यहां खड़े थे. दो साहब मेरे डिब्बे में भी घुस आए. दोनों के साथ काफ़ी सामान था. सफ़ेद पतलून और सफ़ेद क़मीज़ दोनों पहने थे. अन्दर आकर उन्होंने चारों तरफ़ नज़र डाली. कोई जगह ख़ाली नहीं थी. नाक भौं चढ़ा कर उन्होंने फ़र्श पर बिस्तर खोल दिया और मेरी बग़ल में ही दोनों बैठ गए. गाड़ी रायबरेली से चल पड़ी.

मैं किताब पढ़ता रहा और वे दोनों बातें करते रहे. पहले मैंने कोई ध्यान नहीं दिया लेकिन एक जगह कहानी बड़ी ढल हो गई. मेरा चित्त वहाँ से हट गया. बिन चाहे ही मेरा ध्यान उनकी बातों की तरफ़ होगया.

"चलते चलाते अच्छी मुलाक़ात होगई. कहीं आने जाने का मौक़ा ही नहीं मिलता जो लोगों से मुलाक़ात हो सके.........."

"क्या कहा जाय डाक्टर साहब. बहुत बुरा ज़माना लगा है. आप तो जानते हैं मैं कितना घुमक्कड़ था. लेकिन उस वक़्त मरीज़ों से आमदनी होती थी, महँगाई भी नहीं थी. हाथ खोलकर ख़र्च करता था. अब तो कोई कमबख़्त पैसे ही नहीं देता. जो है सो मुफ़्त काम लेने की सोचता है. किसी सूरत गाड़ी चली जा रही है. शरीफ़ आदमियों की किसी सूरत इज़्ज़त बची जा रही है........"

ہی چاہئے' اپنی سرکار ہوگئی ہے نہ'. وہ بولے—'کیا بات کرتے ہیں داروغہ جی آپ بھی' اب ہی تو موقع ہے ہاتھ کی صفائی کا'. میں نے سنکوچ ظاہر کرتے ہوئے کہا—'کیا کیا جائے.' وہ مسکرا کر بولے—'خوب دھڑاکے سے ہاتھ چلائیے. ہم تو ہیں ہی. کوئی اونچ نیچ پڑے گا تو دیکھا جائے گا. لیکن.....آدھو آدھ رہے گا داروغہ جی.' میری تو باچھیں کھل گئیں. یقین مانو ایک سال میں اس تھانے سے دس ہزار روپئے میں نے کمائے تھے. سکریٹری صاحب کے حوالے بھی اتنا ہی کردیا. اب تو میری ہمت کھل گئی ہے. جہاں جاتا ہوں وہاں کے سب سے اثردار کانگریسی سے معاملہ طے کرلیتا ہوں."

"یہی حال تو اپنا بھی ہے داروغہ جی! لیکن اب تو اِن کانگریسیوں کا لالچ بڑھتا ہی جاتا ہے. زیادہ سے زیادہ حصہ مانگتے ہیں. محنت کریں ہم اور مفت کا حصہ اِن کو بٹائیں. اچھے آئے کہیں کے....."

مجھے ہنسی آرہی تھی اور ساتھ ہی غصہ بھی. لیکن میں کر ہی کیا سکتا تھا. بات تو سچ تھی. گاڑی نے زور زور سے سیٹی دینی شروع کردی تھی. میں نے داروغہ لوگوں کو اُن کے حال پر چھوڑا اور سیدھا اپنے بستر پر آگیا. کچھ ہی دیر میں گاڑی رک گئی. یہ رائے بریلی اسٹیشن تھا. لوگ اتنی رات گئے بھی گاڑی کے لئے یہاں کھڑے تھے. دو صاحب میرے ڈبے میں بھی گھس آئے. دونوں کے ساتھ کافی سامان تھا. سفید پتلون اور سفید قمیض دونوں پہنے تھے. اندر آکر اُنہوں نے چاروں طرف نظر ڈالی. کوئی جگہ خالی نہیں تھی. ناک بھوں چڑھا کر اُنہوں نے فرش پر بستر کھول دیا اور میری بغل میں ہی دونوں بیٹھ گئے. گاڑی رائے بریلی سے چل پڑی.

میں کتاب پڑھتا رہا اور وہ دونوں باتیں کرتے رہے. پہلے میں نے کوئی دھیان نہیں دیا لیکن ایک جگہ کہانی بڑی ڈل ہوگئی. میرا چت وہاں سے ہٹ گیا. بن چاہے ہی میرا دھیان اُن کی باتوں کی طرف ہوگیا.

"چلتے چلاتے اچھی ملاقات ہوگئی. کہیں آنے جانے کا موقع ہی نہیں ملتا جو لوگوں سے ملاقات ہو سکے......"

"کیا کہا جائے ڈاکٹر صاحب. بہت برا زمانہ لگا ہے. آپ تو جانتے ہیں میں کتنا گھمکڑ تھا. لیکن اُس وقت مریضوں سے آمدنی ہوتی تھی' مہنگائی بھی نہیں تھی. ہاتھ کھول کر خرچ کرتا تھا. اب تو کوئی کمبخت پیسے ہی نہیں دیتا. جو ہے سو مفت کام لینے کی سوچتا ہے. کسی صورت گاڑی چلی جارہی ہے. شریف آدمیوں کی کسی صورت عزت بچی جارہی ہے..."

फुसफुसाहट कान में आई. लोगों ने लाइट बुझा दी थी. अंधेरे में मेरा ध्यान उन बातों की तरफ़ गया. बाथ रूम के बिलकुल क़रीब ही कोई दो आदमी बात कर रहे थे. मैं धोती ठीक करने के बहाने वहीं रुक गया और बात सुनने की कोशिश में लग गया. उनकी बातों से मालूम हुआ कि दोनों पुलिस के आदमी हैं. जब दो आदमी एक ही महकमे के मिलते हैं तो अपनी कारगुज़ारियां गिनवाते हैं. बड़े अफ़सरों की बुराई और अच्छाई की चरचा करते हैं, पूरे महकमे का रिविव्यु हो जाता है. वह लोग अपने महकमे के बारे में बे सर पैर की बातें करते रहे. मैं चलने ही वाला था कि मुझे सुनाई पड़ा—

"दारोग़ा जी ! अंगरेज़ अंगरेज़ ही था और यह देसी साहब देसी साहब ही हैं. क्या कहने उसके इन्तज़ाम के. क्या शान थी उसकी. भई हम लोगों को तो बादशाह बना गया था बादशाह..............."

बात काटते हुए दूसरे ने जवाब दिया—"सच बात तो यह है कि अंगरेज़ ही की देन है जो हम लोगों का कुछ रोब अब तक चला जा रहा है. नहीं तो इन लोगों का बस चले तो हम लोगों को भंगी बना कर छोड़ें. अंगरेज़ हमें शाही सवारी घोड़ा दे गया था, और यह घोड़ा छीन कर मोटर साइकिल दे रहे हैं. यार घोड़ा घोड़ा ही है. मोटर साइकिल का उसका क्या मुक़ाबला. घोड़े पर थानेदार जिधर निकल जाता था लोग रोब से दब जाते थे."

"तभी तो इनके राज में गड़बड़ी फैली है.....कोई पुलिस का रोब तो मानता ही नहीं है....बिना पुलिस के किसी ने शान से हकूमत की है !.....लेकिन दारोग़ा जी, कांगरेस सरकार ही क्या करे. बात इन्साफ़ की कहना चाहिये. क़ानून के हथियारों से उसने तो हम को ख़ूब लैस कर दिया है. अधिकार पर अधिकार हम को देती जाती है. किया क्या जाय, लोगों में ही न जाने कहाँ से हिम्मत आगई है. लाल पगड़ी का कोई रोब ही नहीं मानता. भई रोब का ज़माना तो गया. कमाने के अलबत्ता मौक़े हैं. वह भी सब के लिये नहीं. जो तरकीब जान गया है उसके पौ बारे हैं......

"बात तो ईमान की है. कांगरेस में कोई और बुराई हो तो हो लेकिन अपने लोगों को तो काफ़ी मौक़ा हाथ की सफ़ाई के लिये दिया गया है. मैं तो डर गया था. अंगरेज़ के जाते ही मैंने रिशवत से छै महीने के लिये हाथ खींच लिया था. लेकिन भगवान की भी लीला ख़ूब है. एक दिन कांगरेस के सेक्रेटरी साहब मुझ से मिलने आए और अलग ले जाकर बोले—'दारोग़ा जी, कुछ मामला चल नहीं रहा आजकल.' मैंने कहा—'आप लोगों से साहब डर लगता है. और अब हमको अपनी आदत बदल लेनी

پھسپھساہٹ کان میں آئی. لوگوں نے لائٹ بجھا دی تھی. اندھیرے میں میرا دھیان اُن باتوں کی طرف گیا . باتھ روم کے بالکل قریب ہی کوئی دو آدمی بات کر رہے تھے . میں دھوتی ٹھیک کرنے کے بہانے وہیں رک گیا اور بات سننے کی کوشش میں لگ گیا . اُن کی باتوں سے معلوم ہوا کہ دونوں پولیس کے آدمی ہیں . جب دو آدمی ایک ہی محکمے کے ملتے ہیں تو اپنی کارگزاریاں گنواتے ہیں' بڑے افسروں کی برائی اور اچھائی کی چرچا کرتے ہیں . پورے محکمے کا ریویو ہوجاتا ہے . وہ لوگ اپنے محکمے کے بارے میں بے سر پیر کی باتیں کرتے رہے . میں چلنے ہی والا تھا کہ مجھے سنائی پڑا—

"داروغہ جی ! انگریز انگریز ہی تھا اور یہ دیسی صاحب دیسی صاحب ہی ہیں . کیا کہنے اُس کے انتظام کے . کیا شان تھی اُس کی . بھئی ہم لوگوں کو تو بادشاہ بنایا گیا تھا بادشاہ.........."

بات کاٹتے ہوئے دوسرے نے جواب دیا—"سچ بات تو یہ ہے کہ انگریز ہی کی دین ہے جو ہم لوگوں کا کچھ رعب اب تک چلا جارہا ہے . نہیں تو اِن لوگوں کا بس چلے تو ہم لوگوں کو بھنگی بناکر چھوڑیں . انگریز ہمیں شاہی سواری گھوڑا دے گیا تھا' اور یہ گھوڑا چھین کر موٹر سائکل دے رہے ہیں . یار گھوڑا گھوڑا ہی ہے . موٹر سائکل کا اُس کا کیا مقابلہ . گھوڑے پر تھانیدار جدھر نکل جاتا تھا لوگ رعب سے دب جاتے تھے."

"تبھی تو اِن کے راج میں گڑ بڑی پھیلی ہے........ کوئی پولیس کا رعب تو مانتا ہی نہیں ہے.........بنا پولیس کے کسی نے شان سے حکومت کی ہے !...... لیکن داروغہ جی' کانگریس سرکار ہی کیا کرے . بات انصاف کی کہنا چاہئیے . قانون کے ہتھیاروں سے اُس نے تو ہم کو خوب لیس کردیا ہے . ادھیکار پر ادھیکار ہم کو دیتی جاتی ہے . کیا کیا جائے' لوگوں میں ہی نہ جانے کہاں سے ہمت آگئی ہے . لال پگڑی کا کوئی رعب ہی نہیں مانتا . بھئی رعب کا زمانہ تو گیا' کمانے کے البتہ موقعے ہیں . وہ بھی سب کے لئے نہیں . جو ترکیب جان گیا ہے اُس کے پوبارے ہیں..... "

"بات تو ایمان کی ہے . کانگریس میں کوئی اور برائی ہو تو ہو لیکن اپنے لوگوں کو تو کافی موقع ہاتھ کی صفائی کے لئے دیا گیا ہے . میں تو ڈر گیا تھا . انگریز کے جاتے ہی میں نے رشوت سے چھ مہینے کے لئے ہاتھ کھینچ لیا تھا . لیکن بھگوان کی بھی لیلا خوب ہے . ایک دن کانگریس کے سکریٹری صاحب مجھ سے ملنے آئے اور الگ لے جاکر بولے—'داروغہ جی' کچھ معاملہ چل نہیں رہا آجکل.' میں نے کہا—آپ لوگوں سے صاحب ڈر لگتا ہے. اور اب ہم کو اپنی عادت بدل لینی

विचार ही विचार निकला. देस का यह नक्शा देखकर मेरे दिल पर तो सांप लोट जाता है. लेकिन क्या करूँ. बूढ़ा हो गया हूँ. कुछ बस भी तो नहीं चलता......स्वराज क्या हुआ मुसीबत आ गई. मैं अगर यह सब जानता तो कभी भी घर बार न उजाड़ता, न जेल जाता, न पुलिस की लाठी खाता. इस भारत के लिये थोड़े ही हमने त्याग किया था."

"मुझे भी कुछ कुछ याद पड़ता है. मैं सोचता हूं मैं भी कितना बेवकूफ़ था उस वक़्त. हर एक से यही सवाल किया करता था. मुझे असल में फ़िकर हो गई थी. तुम्हें याद हो या न याद हो मुझे याद पड़ता है कि मैंने दूसरे दिन फिर पूछा था कि भई स्वराज के बाद आख़िर होगा क्या..........?"

पंडित जी बात काट कर बोल उठे—"ख़ूब याद है ख़ाँ साहब! आप के बार बार पूछने से मुझे भी चिन्ता हो गई थी. मैंने आप को फिर समझाया था कि जब स्वराज हो जायगा तो देस भर में दूध और घी न बिकने पायगा. सबके घर में भैंस गाय होंगी. बाहर से कोई ख़रीदेगा ही नहीं. दूध घी का रेला पेला होगा. सचमुच ही भारत में दूध की नदियाँ बहेंगी. तुम ने फिर पूछा था ख़ाँ साहब कि अगर किसी का जानवर तुड़ा गया तो क्या होगा? मैंने कहा था तुम भी ख़ाँ साहब अजीब आदमी हो. एक के यहाँ कुछ कमी होगी तो दूसरे के यहाँ से सौग़ात में आ जाएगा. मिल जुल कर सब का काम चलेगा. लेकिन यार कुछ भी न हुआ, कोई बात भी तो सच्ची होती. जो कुछ हुआ सब उलटा ही हुआ......"

"लेकिन पंडित इतना तो ज़रूर हुआ कि देश में दूध घी बिकना सचमुच बन्द हो गया." ख़ाँ साहब ने व्यंग भरे स्वर में कहा.

"हाँ भई हुआ तो कुछ ज़रूर ही! यह दूसरी बात है कि वह नहीं हुआ जो कि होना चाहिये था." पंडित जी ने एक ठहाका लगाया. दोनों की ऊँची हंसी डिब्बे में गूँज रही थी. भारत के स्वराज का मज़ाक़ उड़ा रही थी. चुनौती दे रही थी. मैं इस चुनौती पर सोच रहा था, शायद सारा भारत सोच रहा था. मैं इन पुराने त्यागियों के स्वराज पर सोचता रहा, नए नेताओं के स्वराज पर सोचता रहा. मेरे सामने भारत का एक ही रुख़ आ खड़ा हुआ था. भारत में ख़ुशहाली महज़ बकवास है, सुख सम्पन्नता महज़ सपना. लेकिन चोर बाज़ारी, लूट, जोंकपन, रिश्वत, बदमाशों, चालबाज़ी, ज़ुल्म अत्याचार सच्ची बातें हैं, आज के भारत की बातें हैं, आज़ाद भारत की बातें हैं. मैं उसी रुख़ पर सोच रहा था. और उसी सोच में न जाने कब सोगया.

रात को एक बार पेशाब करने के लिये उठा और बाथ रूम से लौट रहा था कि रात के सन्नाटे में कुछ

وچاروں وچار نکلا. دیس کا یہ نقشہ دیکھکر میرے دل پر تو سانپ لوٹ جاتا ہے . لیکن کیا کروں . بوڑھا ہوگیا ہوں . کچھ بس بھی تو نہیں چلتا......سوراج کیا ہوا مصیبت آگئی. میں اگر یہ سب جانتا تو کبھی بھی گھر بار نہ اُجاڑتا' نہ جیل جاتا' نہ پولیس کی لاٹھی کھاتا . اِس بھارت کے لئے تھوڑے ہی ہم نے تیاگ کیا تھا ."

"مجھے بھی کچھ کچھ یاد پڑتا ہے . میں سوچتا ہوں میں بھی کتنا بیوقوف تھا اُس وقت . ہر ایک سے یہی سوال کیا کرتا تھا . مجھے اصل میں فکر ہوگئی تھی . تمھیں یاد ہو یا نہ یاد ہو مجھے یاد پڑتا ہے کہ میں نے دوسرے دن پھر پوچھا تھا کہ بھئی سوراج کے بعد آخر ہوگا کیا......؟"

پنڈت جی بات کاٹ کر بول اُٹھے—"خوب یاد ہے خاں صاحب! آپ کے بار بار پوچھنے سے مجھے بھی چنتا ہوگئی تھی. میں نے آپ کو پھر سمجھایا تھا کہ جب سوراج ہوجائیگا تو دیس بھر میں دودھ اور گھی نہ بکنے پائے گا . سب کے گھر میں بھینس گائے ہونگی. باھر سے کوئی خریدیگا ھی نہیں. دودھ گھی کا ریلا پیلا ہوگا . سچ مچ ھی بھارت میں دودھ کی ندیاں بہیں گی . تم نے پھر پوچھا تھا خاں صاحب کہ اگر کسی کا جانور تڑا گیا تو کیا ہوگا ؟ میں نے کہا تھا تم بھی خاں صاحب عجیب آدمی ہو . ایک کے یہاں کچھ کمی ہوگی تو دوسرے کے یہاں سے سوغات میں آجائے گا . مل جل کر سب کا کام چلے گا . لیکن یار کچھ بھی نہ ہوا' کوئی بات بھی تو سچی ہوتی . جو کچھ ہوا سب اُلٹا ھی ہوا......"

"لیکن پنڈت اتنا تو ضرور ہوا کہ دیش میں دودھ گھی بکنا سچ مچ بند ہوگیا." خاں صاحب نے ویَنگ بھرے سور میں کہا .

"ہاں بھئی ہوا تو کچھ ضرور ھی ! یہ دوسری بات ہے کہ وہ نہیں ہوا جو کہ ہونا چاھئے تھا ." پنڈت جی نے ایک ٹھہاکا لگایا . دونوں کی اونچی ہنسی ڈبے میں گونج رہی تھی . بھارت کے سوراج کا مذاق اُڑا رہی تھی. چنوتی دے رہی تھی. میں اِس چنوتی پر سوچ رہا تھا' شاید سارا بھارت سوچ رہا تھا . میں اِن پرانے تیاگیوں کے سوراج پر سوچتا رہا' نئے نیتاؤں کے سوراج پر سوچتا رہا . میرے سامنے بھارت کا ایک ھی رخ آکھڑا ہوا تھا . بھارت میں خوشحالی محض بکواس ہے' سکھ سمپنتا محض سپنا . لیکن چور بازاری' لوٹ' جونک پن' رشوت' بدمعاشی' چالبازی' ظلم اتیاچار سچی باتیں ہیں' آج کے بھارت کی باتیں ہیں' آزاد بھارت کی باتیں ہیں . میں اُسی رخ پر سوچ رہا تھا . اور اسی سوچ میں نہ جانے کب سوگیا .

رات کو پیشاب کرنے کے لئے اُٹھا . باتھ روم سے لوٹ رہا تھا کہ رات کے سناٹے میں کچھ

पर खिंच गईं और आवाज़ में ज़रा आवेश भर गया और उन्होंने फिर बात शुरू की—"लेकिन आज सारे सपने टूट गए.......हम ने तुमने जिसके लिये क़ुरबानी की थी वह भारत कहीं दिखाई ही नहीं पड़ता." बूढ़े पंडित ने फिर एक ठंडी सांस खींची और किसी विचार में खो गए.

ख़ाँ साहब भी दुखी मालूम पड़ रहे थे. शायद वह भी किसी बीते दिन की याद ताज़ा कर रहे थे. मैं उनकी तरफ़ टकटकी बांधे देख रहा था. उनकी बुढ़ाई के पास मेरी जवानी को देने के लिये बहुत कुछ था. मैं लेना चाहता था. उनकी उमर मैं लेना नहीं चाहता था, मैं उनका अनुभव लेना चाहता था, उनकी लगन और क़ुरबानी लेना चाहता था, उनका भाई चारा और प्रेम लेना चाहता था. लेकिन जवानी के पास देने को क्या था—फूट, स्वार्थ, चाल बाज़ी और द्वेश—मेरी आंख उनसे एक बार मिली और शरम से किताब के पन्नों में गड़ गई.

डिब्बे में सन्नाटा था. सब पर नींद अपना जादू फेर रही थी. पंखों की भन भन ज़रूर कानों में आती थी. फिर भी पूरी शान्ति फैली हुई थी.

"पंडितजी, नैनी जेल में एक दिन खाना खाते वक़्त की बात याद है न ?"

"हां, हां, ख़ाँ साहब ! मेरे लिये तो वह कल की सी बात है. आप का उस दिन का सवाल भी मुझे याद है. उस समय तो मैं आप पर हंसा था. लेकिन अब सोचता हूँ कितना मौक़े का वह सवाल था."

"मेरी याददाश्त इतनी कमज़ोर हो गई है कि कुछ याद ही, नहीं रहता. बताओ तो पंडित क्या बात थी. भई अब ज़िन्दगी में रह ही क्या गया है. बुझते चिराग़ हैं हम लोग. यही मिल बैठ के पिछले दिनों की याद के सहारे तो चले जा रहे हैं."

"तुम चिन्ता में डूबे हुए आए उस दिन. उदास बैठ गए. फिर झट से पूछ बैठे कि स्वराज में क्या होगा ? सब लोग हंस पड़े. मैंने भी मन ही मन सोचा था कि ख़ाँ साहब भी क्या बेवक़ूफ़ आदमी हैं. लेकिन तुम्हारी चिन्ता देखकर मेरी हिम्मत मज़ाक़ उड़ाने की नहीं हुई. मैंने तुमसे कहा था, भई जब स्वराज हो जायगा तो हमारे यहां अनाज और कपड़े की बिलकुल कमी न रह जायगी. सब को काफ़ी कपड़ा मिलेगा. अनाज की रेल पेल होगी. कोई भूका नंगा न रह पायगा. हमारे देश में कमी ही किस बात की है. यह तो सब अंगरेज़ की लूट है जो हम पर ग़रीबी का राज है. स्वराज मिलते ही हम अनाज और कपड़े के मालिक ख़ुद हो जायेंगे. अपनी ज़रूरत पूरी किये बिना दमड़ी की भी चीज़ बाहर न जाने पायगी. लेकिन ख़ाँ साहब, वह सब

پر کھنچ گئیں اور آواز میں ذرا آویش بھر گیا اور انہوں نے پھر بات شروع کی—" لیکن آج سارے سپنے ٹوٹ گئے ...... ہم نے تم نے جس کے لئے قربانی کی تھی وہ بھارت کہیں دکھائی ہی نہیں پڑتا ." بوڑھے پنڈت نے پھر ایک ٹھنڈی سانس کھینچی اور کسی وچار میں کھو گئے.

خاں صاحب بھی دکھی معلوم پڑ رہے تھے . شاید وہ بھی کسی بیتے دن کی یاد تازہ کر رہے تھے. میں اُن کی طرف ٹکٹکی باندھے دیکھ رہا تھا . اُن کی بڑھائی کے پاس میری جوانی کو دینے کے لئے بہت کچھ تھا . میں لینا چاہتا تھا . اُن کی عمر میں لینا نہیں چاہتا' میں اُن کا انوبھو لینا چاہتا تھا' اُن کی لگن اور قربانی لینا چاہتا تھا' اُن کا بھائی چارہ اور پریم لینا چاہتا تھا . لیکن جوانی کے پاس دینے کو کیا تھا — پھوٹ' سوارتھ' چالبازی اور دویش — میری آنکھ اُن سے ایک بار ملی اور شرم سے کتاب کے پنوں میں گڑ گئی .

ڈبے میں سناٹا تھا . سب پر نیند اپنا جادو پھیر رہی تھی . پنکھوں کی بھن بھن ضرور کانوں میں آتی تھی . پھر بھی پوری شانتی پھیلی ہوئی تھی .

" پنڈت جی' نینی جیل میں ایک دن کھانا کھاتے وقت کی بات یاد ہے نہ؟"

"ہاں' ہاں' خاں صاحب ! میرے لئے تو وہ کل کی سی بات ہے . آپ کا اُس دن کا سوال بھی مجھے یاد ہے . اُس سمے تو میں آپ پر ہنسا تھا . لیکن اب سوچتا ہوں کتنا موقع کا وہ سوال تھا ."

" میری یاد داشت اتنی کمزور ہوگئی ہے کہ کچھ یاد ہی نہیں رہتا . بتاؤ تو پنڈت' کیا بات تھی . بھئی اب زندگی میں رہ ہی کیا گیا ہے . بجھتے چراغ ہیں ہم لوگ . یہی مل بیٹھ کے پچھلے دنوں کی یاد کے سہارے تو چلے جا رہے ہیں ."

" تم چنتا میں ڈوبے ہوئے آئے اُس دن . اُداس بیٹھ گئے . پھر جھٹ سے پوچھ بیٹھے کہ سوراج میں کیا ہوگا ؟ سب لوگ ہنس پڑے . میں نے بھی من ہی من سوچا تھا کہ خاں صاحب بھی کیا بیوقوف آدمی ہیں . لیکن تمہاری چنتا دیکھکر میری ہمت مذاق اُڑانے کی نہیں ہوئی . میں نے تم سے کہا تھا' بھئی جب سوراج ہوجائے گا تو ہمارے یہاں اناج اور کپڑے کی بالکل کمی نہ رہ جائے گی . سب کو کافی کپڑا ملے گا . اناج کی ریل پیل ہوگی . کوئی بھوکا ننگا نہ رہ پائے گا . ہمارے دیش میں کمی ہی کس بات کی ہے . یہ تو سب انگریز کی لوٹ ہے جو ہم پر غریبی کا راج ہے . سوراج ملتے ہی ہم اناج اور کپڑے کے مالک خود ہوجائیں گے . اپنی ضرورت پوری کئے بنا دمڑی کی بھی چیز باہر نہ جانے پائے گی . لیکن خاں صاحب' وہ سب

मिली जुली इनसानी आवाज़ मेरे कानों में गूँज उठी—
ाय गंगा माई की !"

पुल पर से जब गाड़ी गुज़रती है, देश का कुछ न
कुछ धन ज़रूर इस नदी के पेटे में दफ़न कर दिया जाता है.
दियां भी कितनी भागवान हैं. नील हो या गंगा या कोई
और जल धारा, सभी का भाग अच्छा है. इनसान किस किस
रह इनकी पूजा करता रहा है. आज भी वह इनकी
ूजा करता है. पेट काटता है, भूकों मरता है, दुख
सहता है, लेकिन गंगा के पेट में कुछ न कुछ ज़रूर
सेरा देता है. काश इसके आधा भी इनसान इनसान की
ूजा कर सके, मानवता की भक्ति कर सके ! लेकिन
ेवताओं को फिर कौन पूछेगा, उनकी पूजा कौन करेगा,
नकी इच्छा कौन पूरी करेगा यही तो ट्रेजडी है ! मैंने मन से
वाल किया—आख़िर यह लोग क्यों अपना धन इस तरह
राब करते हैं ? मेरे मन ने उनकी तरफ़ से उत्तर दिया—
न के हाथों मजबूर हैं—इन्हें रोशनी की ज़रूरत है, इनकी
ात्मा को विकास की ज़रूरत है.

एकाएक धक्के के साथ गाड़ी रुक गई. मैं भी यथार्थ
ातावरन में लौट आया. इधर उधर नज़र डाली. दो
ादमी मेरी बग़ल वाली सीटों पर आमने सामने बैठे थे.
ोनों बूढ़े थे, दोनों नंगे सर थे, दोनों के मुंह पर रोब छाया
ुआ था. हड्डी की चौड़ाई और बुढ़ापे में सुरख़ी साफ़ बता
ही थी कि ज़रूर उन्नीसवीं सदी के माडल हैं. पांच सेर
ा घी खाने वालों की ऐसी शकल होती थी. अब तो ऐसी
ाकलें अजायब घर की चीज़ें हैं. भाग से ही कहीं देखने
ो मिल जाती हैं. मैंने उन पर आँखें गड़ा दीं. उनके
ाहनावे उढ़ावे, शकल सूरत और हाव भाव में कोई ख़ास
न्तर नहीं था. सन-सी सफ़ेद दाढ़ियां दोनों के चेहरों पर
ंखे की हवा से लहरा रही थीं. मैं उस समय तक कुछ न
ान सका कि वह कौन हैं और क्या हैं जब तक उन्होंने
ुद ही बात करनी शुरू न कर दी—

"कहो, पंडित ! जेल की पहली मुलाक़ात याद है न ?"

"जीवन के अंग को कभी भुलाया भी जा सकता है
ाँ साहब. क्या ज़माना था वह भी और हम लोग भी
्या थे." बूढ़े पंडित ने ठंडी सांस लेते हुए कहा और इस
रह की मुद्रा बनाई जैसे सारा अतीत उनके सामने एक
ार नाच गया हो.

कुछ देर चुप रहने के बाद ख़ाँ साहब ने फिर कहा—
"आज जब मैं उस वक़्त की बातों को याद करता हूँ तो
हंसी आती है पंडित जी. ज़माना ही बिलकुल बदल गया."

"वह तो परलोक की बातें हो गईं. हम लोग क्या
क्या सोचते थे, क्या सपने देखते थे. लेकिन......" दुख
पंडित की आंखों से टपकने लगा, निराशा की रेखाएँ माथे

ملی جلی انسانی آواز میرے کانوں میں گونج اُٹھی—"جے
گنگا مائی کی !"

پل پر سے جب گاڑی گزرتی ہے، دیش کا کچھ نہ کچھ
دھن ضرور اِس ندی کے پیٹے میں دفن کردیا جاتا ہے۔
ندیاں بھی کتنی بھاگوان ہیں۔ نیل ہو یا گنگا یا کوئی
اور جل دھارا، سبھی کا بھاگ اچھا ہے۔ انسان کس
کس طرح اِن کی پوجا کرتا رہا ہے۔ آج بھی وہ اِن کی
پوجا کرتا ہے۔ پیٹ کاٹتا ہے، بھوکوں مرتا ہے، دکھ
سہتا ہے، لیکن گنگا کے پیٹ میں کچھ نہ کچھ ضرور
سرا دیتا ہے۔ کاش اِس کے آدھا بھی انسان انسان کی
پوجا کرسکے، مانوتا کی بھگتی کرسکے ! لیکن دیوتاؤں
کو پھر کون پوچھے گا، اُن کی پوجا کون کرے گا، اُن کی
اِچھا کون پوری کرے گا ! یہی تو ٹریجیڈی ہے۔ میں
نے من سے سوال کیا—آخر یہ لوگ کیوں اپنا دھن اِس
طرح خراب کرتے ہیں ؟ میرے من نے اُن کی طرف سے
اُتر دیا—من کے ہاتھوں مجبور ہیں—اِنہیں روشنی کی
ضرورت ہے، اِن کی آتما کو وکاس کی ضرورت ہے۔

یکایک ایک دھکے کے ساتھ گاڑی رک گئی۔ میں بھی
یتھارتھ واتا ورن میں لوٹ آیا۔ اِدھر اُدھر نظر ڈالی۔ دو
آدمی میری بغل والی سیٹوں پر آمنے سامنے بیٹھے تھے۔
دونوں بوڑھے تھے، دونوں ننگے سر تھے، دونوں کے منہ پر
رعب چھایا ہوا تھا۔ ہڈی کی چوڑائی اور بڑھاپے میں
سرخی صاف بتا رہی تھی کہ ضرور اُنیسویں صدی کے
ماڈل ہیں۔ پانچ سیر کا گھی کھانے والوں کی ایسی شکل
ہوتی تھی اب تو ایسی شکلیں عجائب گھر کی چیزیں
ہیں۔ بھاگ سے ہی کہیں دیکھنے کو مل جاتی ہیں۔ میں
نے اُن پر آنکھیں گڑا دیں۔ اُن کے پہناوے اُڑھاوے، شکل
صورت اور ہاو بھاو میں کوئی خاص انتر نہیں تھا۔ سن سی
سفید ڈاڑھیاں دونوں کے چہروں پر پنکھے کی ہوا سے لہرا
رہی تھیں۔ میں اس سمے تک کچھ نہ جان سکا کہ وہ
کون ہیں اور کیا ہیں جب تک اُنہوں نے خود ہی بات
کرنی شروع نہ کر دی—

"کہو، پنڈت ! جیل کی پہلی ملاقات یاد ہے نہ؟"

"جیون کے انگ کو کبھی بھلایا بھی جا سکتا ہے
خاں صاحب۔ کیا زمانہ تھا وہ بھی اور ہم لوگ بھی کیا
تھے۔" بوڑھے پنڈت نے ٹھنڈی سانس لیتے ہوئے کہا اور
اِسطرح کی مدرا بنائی جیسے سارا اتیت اُن کے سامنے
ایک بار ناچ گیا ہو۔

کچھ دیر چپ رہنے کے بعد خاں صاحب نے پھر کہا—
"آج جب میں اُس وقت کی باتوں کو یاد کرتا ہوں تو
ہنسی آتی ہے پنڈت جی۔ زمانہ ہی بالکل بدل گیا۔"

"وہ تو پرلوک کی باتیں ہوگئیں۔ ہم لوگ کیا
کیا سوچتے تھے، کیا سپنے دیکھتے تھے۔ لیکن ......"
دکھ پنڈت کی آنکھوں سے ٹپکنے لگا، نراشا کی ریکھائیں ماتھے

कहना चाहते हैं?" उनकी मुद्रा से गुस्सा और चुनौती का पता चल रहा था.

"मैं कुछ नहीं कहूँगा. आप ही सोचिये. मैं क़ानून की बात नहीं करता. सिर्फ़ भाई-चारे के नाते कहता हूँ......"

"आप क्या चाहते हैं, साफ़ साफ़ क्यों नहीं कहते?" झुंझलाहट भरे स्वर में उन सज्जन ने सवाल किया.

"मैं क़ानून की बात नहीं करता हूँ. सिर्फ़ सदाचार की निगाह से......"

"आपका मतलब है कि हम चार बर्थ छोड़ दें."

"जैसा आप ठीक समझें. मैंने कहा न कि मैं क़ानून की बात नहीं कर रहा हूँ. सिर्फ़ आपके भाईचारे और न्याय से अपील कर रहा हूँ. आप जो ठीक समझिये कीजिये. मैं कुछ कह नहीं रहा हूँ. माफ़ कीजियेगा मैं आप से कह भी कैसे सकता हूँ. आप ही विचार कीजिये. आप लोग तो जनता के आदमी हैं. आपको तो कष्ट उठाकर लोगों को आराम पहुँचाना चाहिये......माफ़ कीजियेगा मैं कुछ कहता नहीं हूँ. जो आप ठीक समझें. देखिये न एक मुसाफ़िर को बैठने तक के लिये सीट नहीं है. उसने पैसे ख़र्च किये हैं और आप ढाई टिकट में आधे डिब्बे पर क़ब्ज़ा जमाए हैं. आप ही सोचिये न."

"जैसा आप कहिये." खद्दर धारी सज्जन के स्वर से लज्जा टपक रही थी.

"मैं कुछ नहीं कहूँगा. जो आपका सदाचार और भाई चारा कहे!" अब टिकट कलक्टर की आवाज़ में व्यंग भर गया था.

मुझे इस बात चीत से दिलचस्पी पैदा हो गई. एक टिकट कलक्टर एक खद्दर धारी के सदाचार और उसके इन्साफ़ से अपील कर रहा था. उसके मन को, उसकी आत्मा को जीतने की कोशिश कर रहा था. लेकिन खादी के खोल के नीचे आत्मा नहीं थी, अधिकार था, स्वार्थ था. कांग्रेसी सज्जन ने चादर खोलकर ओढ़ ली और चुप हो गए. उनका यह मौन उत्तर था—"बकवास बन्द करो, हम लाखों को रोज़ यह पाठ पढ़ाते हैं, इन चीज़ों से लोगों को ख़ूब बेवक़ूफ़ बनाते हैं, तुम चले हो हमारा ही जादू हम पर आज़माने." टिकट कलक्टर उनकी इस बेशरमी पर चकित खड़ा रहा. उसके चेहरे पर एक कटीली मुस्कराहट थी और उस मुस्कराहट में छिपा हुआ मेरे लिये एक संदेश.

न जाने कब तक मैं खोया रहता कि गाड़ी फाफामऊ के पुल पर आ गई. लगा शोर मचने. मैंने आंख बन्द कर ली, कानों में उंगली ठूँस ली. मन ही मन कोसने लगा—कमबख़्त यह शोर ख़तम भी हो—इस शोर में

کہنا چاہتے ہیں؟" اُن کی مدرا سے غصہ اور چنوتی کا پتہ چل رہا تھا۔

"میں کچھ نہیں کہونگا۔ آپ ہی سوچئے۔ میں قانون کی بات نہیں کرتا۔ صرف بھائی چارے کے ناتے کہتا ہوں........"

"آپ کیا چاہتے ہیں، صاف صاف کیوں نہیں کہتے؟" جھنجھلاہٹ بھرے سور میں اُن سجن نے سوال کیا۔

"میں قانون کی بات نہیں کرتا ہوں۔ صرف سداچار کی نگاہ سے........"

"آپ کا مطلب ہے کہ ہم چار برتھ چھوڑ دیں۔"

"جیسا آپ ٹھیک سمجھیں۔ میں نے کہا نہ کہ میں قانون کی بات نہیں کر رہا ہوں۔ صرف آپ کے بھائی چارے اور نیائے سے اپیل کر رہا ہوں۔ آپ جو ٹھیک سمجھئے کیجئے۔ میں کچھ کہہ نہیں رہا ہوں۔ معاف کیجئے گا میں آپ سے کہہ بھی کیسے سکتا ہوں۔ آپ ہی وچار کیجئے۔ آپ لوگ تو جنتا کے آدمی ہیں۔ آپ کو تو کشٹ اُٹھاکر لوگوں کو آرام پہونچانا چاہئے......معاف کیجئے گا میں کچھ کہتا نہیں ہوں۔ جو آپ ٹھیک سمجھیں۔ دیکھئے نہ ایک مسافر کو بیٹھنے تک کے لئے سیٹ نہیں ہے۔ اُس نے پیسے خرچ کئے ہیں اور آپ ڈھائی ٹکٹ میں آدھے ڈبے پر قبضہ جمائے ہیں۔ آپ ہی سوچئے نہ۔"

"جیسا آپ کہئے۔" کھدر دھاری سجن کے سور سے لجا ٹپک رہی تھی۔

"میں کچھ نہیں کہونگا۔ جو آپ کا سداچار اور بھائی چارہ کہے!" اب ٹکٹ کلکٹر کی آواز میں ویَنگ بھرگیا تھا۔

مجھے اِس بات چیت سے دلچسپی پیدا ہوگئی۔ ایک ٹکٹ کلکٹر ایک کھدر دھاری کے سداچار اور اُس کے انصاف سے اپیل کر رہا تھا۔ اُس کے من کو، اُس کی آتما کو جیتنے کی کوشش کر رہا تھا۔ لیکن کھادی کے خول کے نیچے آتما نہیں تھی، ادھیکار تھا، سوارتھ تھا۔ کانگریسی سجن نے چادر کھول کر اوڑھ لی اور چپ ہوگئے۔ اُن کا یہ مون اُتر تھا "بکواس بند کرو، ہم لاکھوں کو روز یہ پاٹھ پڑھاتے ہیں، اِن چیزوں سے لوگوں کو خوب بیوقوف بناتے ہیں، تم چلے ہو ہمارا ہی جادو ہم پر آزمانے۔" ٹکٹ کلکٹر اُن کی اِس بے شرمی پر چکت کھڑا رہا۔ اُس کے چہرے پر ایک کٹیلی مسکراہٹ تھی اور اُس مسکراہٹ میں چھپا ہوا میرے لئے ایک سندیش۔

نہ جانے کب تک میں کھویا رہتا کہ گاڑی پھاپھامئو کے پل پر آگئی۔ لگا شور مچنے۔ میں نے آنکھ بند کرلی، کانوں میں انگلی ٹھونس لی۔ من ہی من کوسنے لگا—کمبخت یہ شور ختم بھی ہو— اِس شور میں

डिब्बे में घुस आए. पहले वह दरवाज़े पर आकर इस तरह खड़े हो गए जैसे कोई बिना टिकट मुसाफ़िर किसी डिब्बे में घुसता है और अपने में झूट वहम अनुभव करके सहमा सहमा इधर उधर दबक कर बैठ जाने की कोशिश में कुछ देर खड़ा रहता है. उन्हें बेटिकट मुसाफ़िर हरगिज़ नहीं समझा जा सकता था. उनकी वरदी ही सफ़ाई की गवाह थी. पांच मिनट के बाद उन्होंने मुसाफ़िरों से टिकट मांगना शुरू कर दिया. मैं डिब्बे के बीच में आसन जमाए था. मेरा टिकट देख कर वह मेरे दाहिने हाथ की तरफ़ बढ़े. इस तरफ़ दो ऊपर की और दो नीचे की बर्थ थीं. एक पर एक मर्द लेटा था. दूसरी पर एक औरत ने क़ब्ज़ा जमा रखा था. बाक़ी दोनों बर्थों पर छोटे छोटे अनगिनत बच्चों ने आसन जमा रखे थे. जैसे ही टिकट कलक्टर ने उधर का रुख़ किया, ऊपर की बर्थ से एक सज्जन ने झुक कर कहा—"यह लीजिये."

टिकट कलक्टर टिकट देखने लगा. मेरी नज़र उन सज्जन की तरफ़ गई. सफ़ेद खादी में सजे हुए थे. आंख पर मोटे फ़रेम का चश्मा चढ़ा हुआ था. सर पर आड़ी तिरछी टोपी थी और होटों की सुरख़ी बता रही थी कि पान भी खाते हैं. मैंने अनुमान किया, हो न हो कोई छोटा मोटा कांगरेसी नेता ही हो सकता है. 1947 के बाद यह चिकनाहट और यह हुलिया उनकी ही हो सकती है.

"चारों बर्थ पर आप ही लोग हैं?" टिकट कलक्टर ने पूछा.

"जी हाँ."

"लेकिन टिकट तो आप ने कुल ढाई ही लिये हैं."

"जी, बाक़ी बच्चे हैं और तीन बरस से छोटे हैं."

टिकट कलक्टर ने एक बार उन्हें घूर कर देखा. चेहरे से ऐसा लगा कि वह कहना चाह रहा हो—हुज़ूर, मुझे सब क़ानून मालूम है. क़ानून की बात न कीजिये तो अच्छा है—लेकिन न जाने क्यों उसने वह नहीं कहा जो शायद वह कहना चाहता था. नौकरी जाने का ग़ज़ब का डर होता है. मुसाफ़िरों के लिये वह क्यों मुसीबत मोल ले. खद्दर धारी के मुक़ाबले पर क्यों आए. अधिकार के छत्ते को क्यों छेड़े. कहीं इन सज्जन ने झूट मूट किसी अफ़सर से कुछ कह दिया तो उसकी कौन सुनेगा. फ़ौरन बोरिया बिस्तर बंध जायगा. शायद कुछ मिनट की ख़ामोशी इसी उधेड़ बुन की वजह से थी. वह वहीं खड़ा था और वह सज्जन रह रह कर उसकी तरफ़ देख रहे थे.

आख़िरकार ख़ामोशी टूटी और टिकट कलक्टर ने कहा—"मैं कुछ न कहूँगा, आप ही सोचिये." उसकी आवाज़ से आत्मा की घुटन की बू आ रही थी.

खद्दर धारी सज्जन बोले—"कहिये कहिये, क्या

ڈبے میں گھس آئے . پہلے وہ دروازے پر آکر اِس طرح کھڑے ہوگئے جیسے کوئی بنا ٹکٹ مسافر کسی ڈبے میں گھستا ہے اور اپنے میں جھوٹ وہم انوبھو کر کے سہما سہما اِدھر اُدھر دبک کر بیٹھ جانے کی کوشش میں کچھ دیر کھڑا رہتا ہے ۔ انہیں بے ٹکٹ مسافر ہرگز نہیں سمجھا جا سکتا تھا ۔ اُن کی وردی ہی صفائی کی گواہ تھی ۔ پانچ منٹ کے بعد انہوں نے مسافروں سے ٹکٹ مانگنا شروع کر دیا ۔ میں ڈبے کے بیچ میں آسن جمائے تھا ۔ میرا ٹکٹ دیکھکر وہ میرے داہنے ہاتھ کی طرف بڑھے ۔ اِس طرف دو اوپر کی اور دو نیچے کی برتھ تھیں ۔ ایک پر ایک مرد لیٹا تھا ۔ دوسری پر ایک عورت نے قبضہ جما رکھا تھا ۔ باقی دونوں برتھوں پر چھوٹے چھوٹے اَن گنت بچوں نے آسن جما رکھے تھے ، جیسے ہی ٹکٹ کلکٹر نے اُدھر کا رخ کیا' اوپر کی برتھ سے ایک سجن نے جھک کر کہا —" یہ لیجئے ."

ٹکٹ کلکٹر ٹکٹ دیکھنے لگا ۔ میری نظر اُن سجن کی طرف گئی ۔ سفید کھادی میں سجے ہوئے تھے ۔ آنکھ پر موٹے فریم کا چشمہ چڑھا ہوا تھا ۔ سر پر آڑی ترچھی ٹوپی تھی اور ہونٹوں کی سرخی بتا رہی تھی کہ پان بھی کھاتے ہیں ۔ میں نے انومان کیا' ہو نہ ہو کوئی چھوٹا موٹا کانگریسی نیتا ہی ہوسکتا ہے ۔ 1947 کے بعد یہ چکناہٹ اور یہ حلیہ اُن کی ہی ہوسکتی ہے ۔

" چاروں برتھ پر آپ ہی لوگ ہیں؟" ٹکٹ کلکٹر نے پوچھا ۔

" جی ہاں ۔ "

" لیکن ٹکٹ تو آپ نے کل ڈھائی ہی لئے ہیں ."

" جی' باقی بچے ہیں اور تین برس سے چھوٹے ہیں ."

ٹکٹ کلکٹر نے ایک بار اُنہیں گھور کر دیکھا ۔ چہرے سے ایسا لگا کہ وہ کہنا چاہ رہا ہو — حضور' مجھے سب قانون معلوم ہے ۔ قانون کی بات نہ کیجئے تو اچھا ہے — لیکن نہ جانے کیوں اُس نے وہ نہیں کہا جو شاید وہ کہنا چاہتا تھا ۔ نوکری جانے کا غضب کا ڈر ہوتا ہے ۔ مسافروں کے لئے وہ کیوں مصیبت مول لے. کھدر دھاری کے مقابلے پر کیوں آئے ۔ ادھیکار کے چھتے کو کیوں چھیڑے ۔ کہیں اِن سجن نے جھوٹ موٹ کسی افسر سے کچھ کہ دیا تو اُس کی کون سنے گا ۔ فوراً بوریا بستر بندھ جائے گا ۔ شاید کچھ منٹ کی خاموشی اِسی اُدھیڑ بن کی وجہ سے تھی. وہ وہیں کھڑا تھا اور وہ سجن رہ رہ کر اُس کی طرف دیکھ رہے تھے ۔

آخرکار خاموشی ٹوٹی اور ٹکٹ کلکٹر نے کہا — " میں کچھ نہ کہونگا' آپ ہی سوچئے ." اُس کی آواز سے آتما کی گھٹن کی بو آ رہی تھی ۔

کھدر دھاری سجن بولے — " کہئے کہئے' کیا

तो क्या सोचता, आज सोचता हूँ इच्छा भी कितनी प्रबल है. मैं स्टेशन से दो सौ गज और आगे बढ़ गया. रास्ते में होटल हैं, उन पर रेडियो बजा करते हैं. पटरी पर नटों के डेरे लगे होते हैं. लेकिन मुझे किसी का पता नहीं चला, किसी का ज्ञान नहीं हुआ. मेरे लिये जैसे उस समय कोई चीज़ मौजूद ही न थी. एक रिक्शा वाला जन्नाटे से चला आ रहा था. मैंने पूछा—"राम बाग़ स्टेशन चलोगे?" उसने ताज्जुब से कहा—"राम बाग़?..........राम बाग़? .... यह राम बाग़ ही तो है." मैंने फ़ौरन ग़लती भांप ली और बोला—"नहीं भई प्रयाग, प्रयाग."

रिक्शा तेज़ी से सड़कों की छाती को रौंदता हुआ चला जा रहा था. वह किन सड़कों से गुज़र रहा था उस समय मुझे यह भी पता न था. मेरी आंखें घड़ी पर ठहरी थीं और बार बार मुंह से निकल जाता था—"रिक्शे वाले तेज़ चलाओ" शायद रिक्शे वाले ने मेरी बेचैनी भांप ली थी. वह सिर्फ़ इतना कह कर चुप हो जाता था—"बस आ गया प्रयाग, प्रयाग ही तो है आगे, मिन्टों में पहुँचाता हूँ बाबू जी, मिन्टों में."

दिमाग़ी उलझन और अशान्ति साथ लिये मैं प्रयाग स्टेशन पहुँच गया. मेरी घड़ी के अनुसार सिर्फ़ दो मिनट गाड़ी छूटने में थे. जल्दी जल्दी टिकट ख़रीदा. भागता हुआ प्लेटफ़ारम पर पहुँचा. वहाँ गाड़ी मौजूद नहीं थी. जान सी ही निकल गई. कमज़ोर दिल होता तो ज़रूर दौरा पड़ गया होता. मैंने पागलों की तरह एक क़ुली से पूछा—"लखनऊ की गाड़ी चली गई क्या ?" वह दो सेकेन्ड चुप रहा, मेरी तरफ़ देखता रहा और फिर बोला—"अभी चार पाँच मिनट की देर है आने में." दम में दम आया. टहलता हुआ स्टेशन मास्टर के कमरे की तरफ़ गया. घड़ी पर नज़र डाली. मेरी घड़ी पाँच मिनट तेज़ चल रही थी. मेरे मुँह पर हँसी दौड़ गई और मैंने मन ही मन कहा—चलो एक तो फ़ायदा हुआ तेज़ घड़ी रखने से.

गाड़ी आते ही बिना ख़ाली डिब्बे का लालच किये हुए मैं एक इन्टर क्लास के डिब्बे में झट घुस गया. सारी बर्थों पर लोग बिस्तरा बिछाए हुए थे. कोई जगह दिखाई न पड़ी. अभी घबराहट का पसीना सूखा नहीं था. थकावट ने मेरी उमंग और ताज़गी छीन ली थी. मैं लेटना चाहता था. फ़र्श पर ही होल्डाल खोल दिया. मुझे अजीब से ख़ुशी महसूस हुई. इस ख़ुशी में मस्ती नहीं थी फिर भी यह ख़ुशी ही थी—बाधाओं से लड़ाई जीतने की ख़ुशी ! मैं लेटे लेटे फिर सोचने लगा—अगर मैं इसी वक़्त तार न पढ़ता, अगर रिक्शा न मिलता, अगर गाड़ी न मिलती, तो क्या होता.........??

प्रयाग स्टेशन से गाड़ी जैसे ही रेंगी एक नए साहब

ا' آج سوچتا ہوں اچھا بھی کتنی پربل ہے . میں
، دو سو گز اور آگے بڑھ گیا . راستے میں ہوٹل
ر ریڈیو بجا کرتے ہیں . پٹری پر نٹوں کے ڈیرے
ں . لیکن مجھے کسی کا پتہ نہیں چلا' کسی کا
ہوا . میرے لئے جیسے اس سمے کوئی چیز
نہ تھی . ایک رکشا والا زناٹے سے چلا آرہا تھا .
وچھا —" رام باغ اسٹیشن چلو گے؟". اس
، کہا—" رام باغ؟...... رام باغ؟...... یہ رام
و ہے .' میں نے فوراً غلطی بھانپ لی اور
ں بھئی پریاگ' پریاگ ."

زی سے سڑکوں کی چھاتی کو روندتا چلا جا رہا
ی سڑکوں سے گزر رہا تھا اس سمے مجھے یہ بھی
میری آنکھیں گھڑی پر ٹھہری تھیں اور بار
نکل جاتا تھا - " رکشے والے تیز چلاؤ ." شاید
، میری بے چینی بھانپ لی تھی . وہ صرف
چپ ہوجاتا تھا —" بس آگیا پریاگ' پریاگ
کے' منٹوں میں پہونچاتا ہوں بابو جی.
."

الجھن اور اشانتی ساتھ لئے میں پریاگ اسٹیشن
میری گھڑی کے انوسار صرف دو منٹ گاڑی
تھے . جلدی جلدی ٹکٹ خریدا. بھاگتا ہوا
پر پہونچا . وہاں گاڑی موجود نہیں تھی .
ہی نکل گئی . کمزور دل ہوتا تو ضرور دورا
تا . میں نے پگلوں کی طرح ایک قلی
— "لکھنؤ کی گاڑی چلی گئی کیا ؟" وہ
چپ رہا' میری طرف دیکھتا رہا اور پھر بولا—
پانچ منٹ کی دیر ہے آنے میں.' — دم میں
ٹہلتا ہوا اسٹیشن ماسٹر کے کمرے کی طرف
پر نظر ڈالی . میری گھڑی پانچ منٹ تیز چل
. میرے منہ پر ہنسی دوڑ گئی اور میں نے
ن کہا — چلو ایک تو فائدہ ہوا تیز گھڑی

تے ہی بنا خالی ڈبے کا لالچ کئے ہوئے میں
کلاس کے ڈبے میں جھٹ گھس گیا . ساری
لوگ بستر بچھائے ہوئے تھے . کوئی جگہ دکھائی
بھی گھبراہٹ کا پسینہ سوکھا نہیں تھا .
میری امنگ اور تازگی چھین لی تھی . میں
تا تھا . فرش پر ہی ہولڈال کھول دیا . مجھے
خوشی محسوس ہوئی . اِس خوشی میں مستی
پھر بھی یہ خوشی ہی تھی — بادھاؤں سے لڑائی
خوشی ! میں لیٹے لیٹے پھر سوچنے لگا —
ی وقت تار نہ پڑھتا' اگر رکشا نہ ملتا' اگر گاڑی
و کیا ہوتا ....؟؟

اسٹیشن سے گاڑی جیسے ہی رینگی ایک نئے صاحب

की बात ही सामने न आती थी. झट से घड़ी पर नज़र डाली. सवा दस बज चुके थे. मन के जलते तवे पर जैसे किसी ने पानी डाल दिया. ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे रह गई. मेरा दिमाग़ भन्ना उठा, झुँझलाहट ने भाव बदल दिये. मैं जल्दी घबराता नहीं हूँ लेकिन न जाने क्यों घबराहट ने मुझे आ दबोचा—शान्ति जो मुझ से छिन गई थी !! मुझे ऐसा लगा, अगर मैं लखनऊ न पहुँचा तो तेज को फांसी हो जायगी, मैं उस से फिर कभी न मिल सकूँगा. आशा और निराशा की चोटें दिमाग़ में चल रही थीं. छनों में सैकड़ों तरकीबें मेरे दिमाग़ में आईं. और सनीमा के परदे के समान दिमाग़ के पटल को कोरा छोड़ कर चली गईं. इलाहाबाद स्टेशन से दस बज कर बाईस मिनट पर गाड़ी जाती थी. वहां इस समय पहुँचना नामुमकिन था. यकबारगी दिमाग़ में विचार आया क्यों न प्रयाग स्टेशन से कोशिश करूं. संजोग ही तो है. शायद गाड़ी मिल जाय.

मुझ में बिजली सी भर गई. मेरे पट्ठे ख़ुद बख़ुद काम में लग गए. मुझ में एक फुरती थी जो इस से पहले मैंने कभी अनुभव नहीं की थी. बिस्तरा बांधा और एक झोला लेकर रिकशा की खोज में चल दिया. दरवाज़ा बन्द किया या नहीं इसकी सुध नहीं थी. उस समय मेरे दिमाग़ में एक ही विचार था—मुझे लखनऊ ज़रूर पहुँचना चाहिये—मेरा दिमाग़ हर समय कुछ न कुछ सोचा करता है. उस वक़्त सोचने का अवसर नहीं था. सारी शक्ति खिंच कर पैरों में आ गई थी. पल पल मुझे घंटों मालूम हो रहे थे. उलझन बढ़ती ही जा रही थी. मैं दौड़ हरगिज़ नहीं रहा था लेकिन फिर भी सांस ऐसी ही तेज़ थी जैसे सौ गज़ की दौड़ लगा रहा हूँ.

बाधाएँ इकट्ठा रास्ता रोकती हैं और जब हटने लगती हैं तो इकट्ठा हट भी जाती हैं. कौन जानता था कि इस समय चौराहे पर रिकशा भी न मिलेगा. इधर उधर नज़र घुमाई दूर दूर किसी रिकशे का नाम निशान न था. सोचने और इन्तज़ार के लिये वक़्त कहाँ था. मैं राम बाग़ स्टेशन पहुंच गया. वहाँ तो रिकशा मिलना ही चाहिये था. लेकिन संजोग को क्या कहा जाय. वहाँ भी मैदान साफ़ था. निराशा का घोर अंधियारा मेरे सामने छा गया. मेरी कनपटी जलने लगी. नाक के बजाए मैंने मुँह से सांस लेना शुरू कर दिया. अधिक थकावट के कारन ख़ुद बख़ुद मेरे मुँह से सांस निकलने लगती है. आँखों में आँसू डब डबा रहे थे. कोई मेरी शकल देखता तो ज़रूर पागल समझ कर कतराने की कोशिश करता, लेकिन मुझे हरगिज़ हरगिज़ ख़बर न होती. मेरा ध्यान ही किसी तरफ़ नहीं जा सकता था. प्रबल इच्छा ने मुझे बे क़ाबू कर दिया था. उस समय

کی بات ہی سامنے نہ آتی تھی. جھٹ سے گھڑی پر نظر ڈالی. سوا دس بج چکے تھے. من کے جلتے توے پر جیسے کسی نے پانی ڈال دیا. اوپر کی سانس اوپر اور نیچے کی سانس نیچے رہ گئی. میرا دماغ بھنّا اٹھا، جھنجھلاہٹ نے بھاؤ بدل دیئے. میں جلدی گھبراتا نہیں ہوں لیکن نہ جانے کیوں گھبراہٹ نے مجھے آ دبوچا — شانتی جو مجھ سے چھن گئی تھی!! مجھے ایسا لگا، اگر میں لکھنؤ نہ پہونچا تو تیج کو پھانسی ہوجائے گی، میں اس سے پھر کبھی نہ مل سکوں گا. آشا اور نراشا کی چوٹیں دماغ میں چل رہی تھیں. چھنوں میں سیکڑوں ترکیبیں میرے دماغ میں آئیں اور سنیما کے پردے کے سمان دماغ کے پٹل کو کورا چھوڑ کر چلی گئیں. الہ‌آباد اسٹیشن سے دس بجکر بائیس منٹ پر گاڑی جاتی تھی. وہاں اِس سمے پہونچنا نامُمکن تھا. یکبارگی دماغ میں وچار آیا کیوں نہ پریاگ اسٹیشن سے کوشش کروں. سنجوگ ہی تو ہے. شاید گاڑی مل جائے.

مجھ میں بجلی سی بھر گئی. میرے پٹھے خود بخود کام میں لگ گئے. مجھ میں ایک پھرتی تھی جو اِس سے پہلے میں نے کبھی انوبھو نہیں کی تھی. بستره باندھا اور ایک جھولا لے کر رکشا کی کھوج میں چل دیا. دروازہ بند کیا یا نہیں اِس کی سدھ نہیں تھی. اُس سمے میرے دماغ میں ایک ہی وچار تھا — مجھے لکھنؤ ضرور پہونچنا چاہئے — میرا دماغ ہر سمے کچھ نہ کچھ سوچا کرتا ہے. اُس وقت سوچنے کا اوسر نہیں تھا. ساری شکتی کھنچ کر پیروں میں آگئی تھی. پل پل مجھے گھنٹوں معلوم ہو رہے تھے. الجھن بڑھتی ہی جا رہی تھی. میں دوڑ ہرگز نہیں رہا تھا لیکن پھر بھی سانس ایسی ہی تیز تھی جیسے سو گز کی دوڑ لگا رہا ہوں.

بادھائیں اکٹھا راستہ روکتی ہیں اور جب ہٹنے لگتی ہیں تو اکٹھا ہٹ بھی جاتی ہیں. کون جانتا تھا کہ اِس سمے چوراہے پر رکشا بھی نہ ملے گا. ادھر اُدھر نظر گھمائی دور دور کسی رکشے کا نام نشان نہ تھا. سوچنے اور انتظار کے لئے وقت کہاں تھا. میں رام باغ اسٹیشن پہونچ گیا. وہاں تو رکشا ملنا ہی چاہئے تھا. لیکن سنجوگ کو کیا کہا جائے. وہاں بھی میدان صاف تھا. نراشا کا گھور اندھیارا میرے سامنے چھا گیا. میری کنپٹی جلنے لگی. ناک کے بجائے میں نے منہ سے سانس لینا شروع کر دیا. ادھک تھکاوٹ کے کارن خود بخود میرے منہ سے سانس نکلنے لگتی ہے. آنکھوں میں آنسو ڈبڈبا رہے تھے. کوئی میری شکل دیکھتا تو ضرور پاگل سمجھکر کترانے کی کوشش کرتا، لیکن مجھے ہرگز ہرگز خبر نہ ہوتی. میرا دھیان ہی کسی طرف نہیں جاسکتا تھا. پربل اِچھا نے مجھے بے قابو کر دیا تھا. اُس سمے

मैं सारा गुस्सा भूल गया. चीजों को ठीक रखने के मन ही मन वादे शराबी की बातों की तरह एकदम दिमाग़ से उतर गए. लेकिन देवताओं को कब यह पसन्द था. उन्होंने पहले से ही साजिश कर रखी थी. मन में शान्ति निवास करेगी तो उन का गुजर कहां होगा ! दरवाजे के दरारे से गिरा हुआ एक तार दिखाई पड़ा. मेरा नाम क्यों क्यों लिखावट में ऊपर लिखा था. बरसों से पढ़ते पढ़ते और लिखते लिखते फ़ौरन अपना नाम पढ़ लेने की आदत सी पड़ गई है. किसी तरह भी लिख दीजिये मैं अपना नाम तो पढ़ ही लूंगा. हर खराब लिखावट वाला जरूर कुछ न कुछ बड़ा आदमी होता है. मैं भी बड़ा आदमी हूँ. लेकिन अगर बहुत से बड़े आदमी हो जाएं तो बड़प्पन में मजा ही क्या. भला जमघट को कभी किसी ने पूछा है. गुरु घंटाल अपनी बानी में कह गए हैं 'जो कुछ भी रहो अकेले रहो, यही सफलता का गुर है.' जिस क्लर्क ने मेरा नाम लिखा था वह भी बड़ा आदमी मालूम होता था. लिखावट देखते ही मेरा पारा चढ़ गया. मैं तो मैं यह कम्बख्त कहां से आ गया. बड़ों में एक की जियादती मेरे लिये सहन से बाहर है. दूसरे इस बात पर भी गुस्सा आ रहा था कि इतनी रात गए तार क्यों आया है. पहले तो बेनाम निशान तार देने वाले को मैंने कोसा, फिर उस आदमी को कोसने लगा जो इस रात में आराम करने के बजाय तार बांटता फिरता है—कोई मौज से सोता है और कोई उसकी सेवा के लिये रात भर जागता है, यही तो इस जग का नियम है. तार का मतलब ही है कि कोई न कोई असाधारन बात है. नहीं तो किस के पास इस महंगाई में पैसे बढ़े हुए हैं. मैं इस समय किसी असाधारन घटना के लिये तैयार न था. मैं सोना चाहता था, दिमाग़ की शान्ति चाहता था, मन की शान्ति चाहता था. लेकिन धत तेरी जिज्ञासा की ! एक भी न चली. लाख कोशिश की कि तार उठाकर रख दूं, सुबह फ़ुरसत से खोल लूँगा, लेकिन इच्छा तेज होती गई. तरह तरह के बहाने गढ़ने शुरू कर दिये. मेरा आराम चैन छिन गया. जिस बात से डर रहा था आखिर वही सामने आई. लगी दिमाग़ में धमा चौकड़ी होने. इच्छा के आगे घुटने टेकने ही पड़े. तार खोला. लिखा था—"मामला बहुत गंम्भीर तुम्हारा आना बहुत जरूरी तेज."

तेज बहादुर मेरा पुराना दोस्त है. मेडिकल कालेज में तीसरे साल में पढ़ता है. मैं उसकी आदत जानता हूँ. बिना मतलब तो वह खत भी न लिखता तार देने की कौन कहे. मैं सोचने लगा. जरूर मामला गम्भीर है. मुझे लखनऊ जरूर जाना चाहिये. दिमाग़ में जैसे एक ही धुन घुस गई, मन में एक ही इच्छा समा गई—मुझे लखनऊ जरूर जाना चाहिये और फ़ौरन जाना चाहिये—दूसरे पच

غصہ بھول گیا . چیزوں کو ٹھیک رکھنے کے من
دے شرابی کی باتوں کی طرح ایکدم دماغ سے اتر
ن دیوتاؤں کو کب یہ پسند تھا . انہوں نے پہلے
ازش کر رکھی تھی . من میں شانتی نواس کرے
ن کا گزر کہاں ہوگا ! دروازے کے درارے سے گرا ہوا
دکھائی پڑا . میرا نام کیوں کیوں لکھاوٹ میں
ھا . برسوں سے پڑھتے پڑھتے اور لکھتے لکھتے فوراً
ھ لینے کی عادت سی پڑگئی ہے . کسی طرح بھی
ے میں اپنا نام تو پڑھ ہی لونگا . ہر خراب لکھاوٹ
کچھ نہ کچھ بڑا آدمی ہوتا ہے . میں بھی بڑا
ں . لیکن اگر بہت سے بڑے آدمی ہوجائیں
میں مزا ہی کیا . بھلا جمگھٹ کو کبھی کسی
ہے . گرو گھنٹال اپنی بانی میں کہ گئے ہیں
بھی رہو اکیلے رہو، یہی سپھلتا کا گر ہے' . جس
میرا نام لکھا تھا وہ بھی بڑا آدمی معلوم ہوتا
اوٹ دیکھتے ہی میرا پارہ چڑھ گیا . میں
یہ کمبخت کہاں سے آگیا . بڑوں میں ایک
ی میرے لئے سہن سے باہر ہے . دوسرے اس
بھی غصہ آرہا تھا کہ اتنی رات گئے تار کیوں آیا
ے تو بے نام نشان تار دینے والے کو میں نے کوسا
آدمی کو کوسنے لگا جو رات کو آرام کرنے کے
بانٹتا پھرتا ہے—کوئی موج سے سوتا ہے اور کوئی
سیوا کے لئے رات بھر جاگتا ہے' یہی تو اس
یم ہے . تار کا مطلب ہی ہے کہ کوئی نہ کوئی
بات ہے . نہیں تو کس کے پاس اس مہنگائی
یسے بڑھے ہوئے ہیں . میں اس سمے کسی
گھٹنا کے لئے تیار نہ تھا . میں سونا چاہتا
غ کی شانتی چاہتا تھا' من کی شانتی چاہتا
کن دھت تیری جگیاسا کی ! ایک بھی نہ چلی.
ش کی کہ تار اُٹھاکر رکھ دوں' صبح فرصت سے
لگا' لیکن اچھا تیز ہوتی گئی . طرح طرح کے
وھنے شروع کردیئے . میرا آرام چین چھن گیا.
ت سے ڈر رہا تھا آخر وہی سامنے آئی . لگی
میں دھما چوکڑی ہونے . اچھا کے آگے گھٹنے
ی پڑے . تار کھولا . لکھا تھا—"معاملہ بہت
تمہارا آنا بہت ضروری تیج."

ر بہادر میرا پرانا دوست ہے . میڈیکل کالج میں
سال میں پڑھتا ہے میں اس کی عادت جانتا
ا مطلب تو وہ خط بھی نہ لکھتا تار دینے کی
. میں سوچنے لگا— ضرور معاملہ گمبھیر ہے .
ھنؤ ضرور جانا چاہئے . دماغ میں جیسے ایک ہی
ں گئی' من میں ایک ہی اچھا سما گئی—مجھے
رور جانا چاہئے اور فوراً جانا چاہئے—دوسرے پکش

गंगा से गोमती तक

(भाई मयंक राज)

देवता जब नाराज़ होते हैं तो सफ़र करवाते हैं. ज़ियादा नाराज़ होते हैं तो पैदल चलवाते हैं. बहुत ज़ियादा नाराज़ होते हैं तो बोझ लदवा कर पैदल चलवाते हैं. ग़नीमत जानिये, न मुझे पैदल चलना पड़ा और न बोझ ही लादने की नौबत आई. फिर भी मैं सोचता हूँ देवता मुझ से नाराज़ थे. ऐसे भी, हम इनसानों की ज़िन्दगी से खेलने में उन्हें कुछ मज़ा सा आता है, तंग करने की उनकी आदत सी हो गई है. तंग करने के एक दो साधन थोड़े ही हैं उनके पास. खोज के लिये पूरा मुहकमा खोल दिया है.

इनसान से शान्ति छीन लो तो उसके पास बाक़ी ही क्या रह जाता है. वह मुर्दा हो जाता है, वह बेकार हो जाता है, वह सोच नहीं सकता, वह चल नहीं सकता, वह सो नहीं सकता. अशान्ति की पीड़ा से कराहने के सिवा वह कुछ नहीं कर सकता.........यही तो शैतान के अवतारों का हथियार है !

मैं ख़ुश ख़ुश सात बजे रात को घूमने चला गया. दोस्तों से मुलाक़ात हुई. गप सड़ाक चल पड़ी. बातों का न सर था और न पैर. कोई विशय छूटने नहीं पाया. यह भी बताना मुशकिल है कि बात कहां से शुरू हुई थी और कहां उस का अंत हुआ. सब बातें तुक ही की की जाएं तो बात करने का मज़ा ही क्या. किसी सूरत गप की कड़ी टूटी. दस बजे सब ने रुख़सत ली. मेरी आंखें नींद से बन्द होती जा रही थीं. नींद अपनी मरज़ी से मेरे पास आती है, मेरी इच्छा की वह ताबेदार नहीं है. डर था कहीं उचट गई तो रात भर करवटें बदल बदल कर सुबह होगी. साइकिल से जल्द कूद पसीना पोंछते हुए दरवाज़ा खोला. कमरे में घोर अन्धियारा छाया था. पानी के डर से खिड़कियां भी बन्द थीं. चीज़ों को ठीक रखने की बुरी आदत मुझे छू तक नहीं गई. लाइट ढूँढने के चक्कर में दो एक चीज़ों से टकराया, कुछ आपस में टकरा कर अपनी जगहों पर ही रह गईं और कुछ रात के सन्नाटे में शोर मचाती नीचे आ रहीं. मुझे लाइट की खोज थी, उन के उठाने की चिन्ता नहीं. मैं पहले से ही हांप रहा था, झुँझलाहट ने सांस और तेज़ कर दी. ग़ुस्सा कुछ अपनी लापरवाही पर आ रहा था और कुछ बेचारे टेबिल लैम्प पर. ग़ुस्सा और झुँझलाहट के साथ अन्धों की तरह इधर उधर हाथ घुमा रहा था. लैम्प कम्बख़्त जाता कहां. मिल ही गया. एक खट की आवाज़ हुई और कमरे में रोशनी ही रोशनी पैदा हो गई.

گنگا سے گومتی تک

(بھائی مینک راج)

دیوتا جب ناراض ہوتے ہیں تو سفر کرواتے ہیں۔ زیادہ ناراض ہوتے ہیں تو پیدل چلواتے ہیں۔ بہت زیادہ ناراض ہوتے ہیں تو بوجھ لدوا کر پیدل چلواتے ہیں۔ غنیمت جانئے، نہ مجھے پیدل چلنا پڑا اور نہ بوجھ ہی لادنے کی نوبت آئی۔ پھر بھی میں سوچتا ہوں دیوتا مجھ سے ناراض تھے۔ ایسے بھی، ہم انسانوں کی زندگی سے کھیلنے میں انہیں کچھ مزا سا آتا ہے، تنگ کرنے کی اُن کی عادت سی ہوگئی ہے۔ تنگ کرنے کے ایک دو سادھن تھوڑے ہی ہیں اُن کے پاس۔ کھوج کے لئے پورا محکمہ کھول دیا ہے۔

انسان سے شانتی چھین لو تو اُس کے پاس باقی ہی کیا رہ جاتا ہے۔ وہ مردہ ہو جاتا ہے، وہ بیکار ہو جاتا ہے، وہ سوچ نہیں سکتا، وہ چل نہیں سکتا، وہ سو نہیں سکتا۔ اشانتی کی پیڑا سے کراہنے کے سوا وہ کچھ نہیں کرسکتا......یہی تو شیطان کے اوتاروں کا ہتھیار ہے!

میں خوش خوش سات بجے رات کو گھومنے چلا گیا۔ دوستوں سے ملاقات ہوئی۔ گپ سڑاک چل پڑی۔ باتوں کا نہ سر تھا اور نہ پیر۔ کوئی وشے چھوٹنے نہیں پایا۔ یہ بھی بتانا مشکل ہے کہ بات کہاں سے شروع ہوئی تھی اور کہاں اُس کا انت ہوا۔ سب باتیں تک ہی کی کی جائیں تو بات کرنے کا مزا ہی کیا۔ کسی صورت گپ کی کڑی ٹوٹی۔ دس بجے سب نے رخصت لی۔ میری آنکھیں نیند سے بند ہوتی جارہی تھیں۔ نیند اپنی مرضی سے میرے پاس آتی ہے، میری اِچھا کی وہ تابعدار نہیں ہے۔ ڈر تھا کہیں اُچٹ گئی تو رات بھر کروٹیں بدل بدل کر صبح ہوگی۔ سائکل سے جلد کود پسینہ پونچھتے ہوئے دروازہ کھولا۔ کمرے میں گھور اندھیارا چھایا تھا۔ پانی کے ڈر سے کھڑکیاں بھی بند تھیں۔ چیزوں کو ٹھیک رکھنے کی بری عادت مجھے چھو تک نہیں گئی۔ لائٹ ڈھونڈھنے کے چکر میں دو ایک چیزوں سے ٹکرایا، کچھ آپس میں ٹکرا کر اپنی جگہوں پر ہی رہ گئیں اور کچھ رات کے سناٹے میں شور مچاتی نیچے آرہیں۔ مجھے لائٹ کی کھوج تھی، اُن کے اُٹھانے کی چنتا نہیں۔ میں پہلے سے ہی ہانپ رہا تھا، جھنجھلاہٹ نے سانس اور تیز کردی۔ غصہ کچھ اپنی لاپرواہی پر آرہا تھا اور کچھ بیچارے ٹیبل لیمپ پر۔ غصہ اور جھنجھلاہٹ کے ساتھ اندھوں کی طرح اِدھر اُدھر ہاتھ گھما رہا تھا۔ لیمپ کمبخت جاتا کہاں۔ مل ہی گیا۔ ایک کھٹ کی آواز ہوئی اور کمرہ میں روشنی ہی روشنی پیدا ہوگئی۔

समझ में नहीं आया कि नमाज़ का सवाब और असर दुगना हो जाता है अगर अपनी ज़बान में पढ़ी जाए. वेद प्रचार पर लाखों रुपए खर्च हो रहे हैं और बड़ी बड़ी टीकाएं लिखी जा रही हैं जिन्हें संस्कृतदाँ ही पढ़ सकते हैं. ऐसा कोई तरजुमा नहीं किया गया जो मेरे जैसा साधारन आदमी समझ सके. गीता के तरजुमे और टीकाएं तो बहुत हैं लेकिन साफ़ सुथरा कोई नहीं. अभी तक संध्या और गीता का पाठ संस्कृत में ही करना पुन्य समझा जाता है. क्यों न हो हिन्दू और मुसलमान ब्राह्मनों के पेट का भी सवाल है. अगर हम आप समझ सकें तो इन्हें कौन पूछेगा ? इस पेट की आग के लिये ही आजकल के ब्राह्मनों (जन्म के और कर्म के दोनों) की कोशिश है कि राष्ट्र भाशा संस्कृत हो, नहीं तो मुशकिल संस्कृती हिन्दी हो ताकि वह और उनकी सन्तान भोले भाले किसानों और मज़दूरों को मन्दिरों में ही नहीं बल्कि कचहरियों, दफ़्तरों, बनिज ब्योपार और हर एक पेशे में लूट सकें. यह देस सेवा और साहित्य सेवा क्या सुन्दर जाल है !........(बाक़ी लेखक की किताब 'भाशा' में पढ़िये)

سمجھ میں نہیں آیا کہ نماز کا ثواب اور اثر دگنا ہو جاتا ہے اگر اپنی زبان میں پڑھی جائے ۔ وید پرچار پر لاکھوں روپئے خرچ ہو رہے ہیں اور بڑی بڑی ٹیکائیں لکھی جارہی ہیں جنہیں سنسکرت داں ہی پڑھ سکتے ہیں ۔ ایسا کوئی ترجمہ نہیں کیا گیا جو میرے جیسا سادھارن آدمی سمجھ سکے ۔ گیتا کے ترجمے اور ٹیکائیں تو بہت ہیں لیکن صاف ستھرا کوئی نہیں ۔ ابھی تک سندھیا اور گیتا کا پاٹھ سنسکرت میں ہی کرنا پنیہ سمجھا جاتا ہے ۔ کیوں نہ ہو ہندو اور مسلمان براہمنوں کے پیٹ کا بھی سوال ہے ۔ اگر ہم آپ سمجھ سکیں تو انہیں کون پوچھیگا ؟ اِس پیٹ کی آگ کے لئے ہی آجکل کے براہمنوں (جنم کے اور کرم کے دونوں) کی کوشش ہے کہ راشٹر بھاشا سنسکرت ہو، نہیں تو مشکل سنسکرتی ہندی ہو تاکہ وہ اور اُنکی سنتان بھولے بھالے کسانوں اور مزدوروں کو مندروں میں ہی نہیں بلکہ کچہریوں، دفتروں، بنج بیوپار اور ہر ایک پیشے میں لوٹ سکیں ۔ یہ دیس سیوا اور ساہتیہ سیوا کیا سندر جال ہیں !........(باقی لیکھک کی کتاب ' بھاشا ' میں پڑھئے)

"बैल गाड़ी नहीं जा सकती"

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

प्लानिंग कमीशन एडवाइज़री बोर्ड की बैठक में शामिल होने के लिये मैं नई दिल्ली गया था. उसी समय वह हथकंडे मेरे सामने चमक उठे जिन से धनवान ग़रीबों से नाजायज़ फ़ायदा उठाते हैं. प्लानिंग कमीशन का दफ़्तर 'राष्ट्रपति भवन' के उत्तरी हिस्से में है. मैंने स्टेशन से एक तांगा किया और अपने ठहरने की जगह पर सामान उतारने के बाद तांगेवान को "लाट साहब के महल" चलने का हुक्म दिया. तांगेवान ने उत्तर दिया—"मैं एक ग़रीब आदमी हूँ, अगर आप को वहां ले चलूँगा तो एक झंझट में फँस जाऊँगा, क्योंकि वहां तांगा ले जाने की इजाज़त नहीं है." मैंने उसे विश्वास दिलाया कि मैं सब कुछ समझ बूझ लूँगा. उसकी हिम्मत बंधी और वह मुझे लेकर चल दिया. सेक्रेटेरियट के दो ब्लाकों को पार करने के बाद जब वह वाइसरीगल लाज के गेट में बाईं तरफ़ मुड़ने वाला था, एक नवजवान सिख ने अधिकार भरी आवाज़ से उसको सड़क से हटने का आदेश दिया. मैंने उस भाई को बताया कि यह एक पब्लिक सड़क है और मुझे इसके इस्तेमाल का पूरा हक़ है. वह नौजवान पुलिस की वरदी भी नहीं पहने था जिससे

"بیل گاڑی نہیں جاسکتی"

(ڈاکٹر جے . سی . کمارپپا)

پلاننگ کمیشن اڈوائزری بورڈ کی بیٹھک میں شامل ہونے کے لئے میں نئی دلی گیا تھا ۔ اُسی سمے وہ ہتھکنڈے میرے سامنے چمک اُٹھے جن سے دھن وان غریبوں سے ناجائز فائدہ اُٹھاتے ہیں ۔ پلاننگ کمیشن کا دفتر 'راشٹر پتی بھون' کے اُتری حصے میں ہے ۔ میں نے اسٹیشن سے ایک تانگہ کیا اور اپنے ٹھہرنے کی جگہ پر سامان اُتارنے کے بعد تانگےوان کو "لاٹ صاحب کے محل" چلنے کا حکم دیا ۔ تانگےوان نے اُتر دیا— "میں ایک غریب آدمی ہوں، اگر آپ کو وہاں لے چلونگا تو ایک جھانجھٹ میں پھنس جاؤنگا، کیونکہ وہاں تانگہ لے جانے کی اجازت نہیں ہے"۔ میں نے اُسے وشواس دلایا کہ میں سب کچھ سمجھ بوجھ لونگا ۔ اُس کی ہمت بندھی اور وہ مجھے لے کر چل دیا ۔ سکریٹریٹ کے دو بلاکوں کو پار کرنے کے بعد جب وہ وائسریگل لاج کے گیٹ میں بائیں طرف مڑنے والا تھا، ایک نوجوان سکھ نے ادھیکار بھری آواز سے اُس کو سڑک سے ہٹنے کا آدیش دیا ۔ میں نے اُس بھائی کو بتایا کہ یہ ایک پبلک سڑک ہے اور مجھے اِس کے استعمال کا پورا حق ہے ۔ وہ نوجوان پولیس کی وردی بھی نہیں پہنے تھا جس سے

तरजुमा पहले सलेवानिक में हुआ था. वहां के ब्राह्मनों ने इसे बहुत दिनों तक क़ायम रखा. लेकिन गो किताबें इस में लिखी जाती रहीं, आम आदमी अपनी अपनी लोकल बोली बोलते रहे. रूस की राजधानी मास्को हुआ करती थी. पीटर बड़े के दिनों में इस शाही शहर की बोली ने अपना सिक्का जमा लिया लेकिन अब भी इस में बाइबिल की वजह से सलेवानिक की काफ़ी चाशनी है. रूसी ब्राह्मनों ने इस सलेवानिक के लिये बहुतेरे हाथ पाँव मारे लेकिन जुग़राफ़िये के सामने उनकी कुछ न चली. अगर दिल्ली हमारी राजधानी रही तो दिल्ली की बोली को राज करने का काफ़ी मौक़ा है.

योरप की ज़बानों में से इतालवी एक ऐसी ज़बान है जो राजधानी से नहीं निकली बल्कि फ़्लोरेन्स की बोली थी. इसकी बड़ी वजह तो यह है कि चौदहवीं सदी में तीन चोटी के शायर दाँते (Dante), पेटरार्क (Petrarch) और बोकैशियो (Bocacio) फ़्लोरेन्स में पैदा हुए और इन के मुक़ाबले में कोई सिर न उठा सका. दूसरी वजह यह बताई जाती है कि इटली की और बोलियों के मुक़ाबले में फ़्लोरेन्स की बोली लातीनी से ज़ियादा मिलती जुलती थी.

इस सरसरी नज़र से हमें एक सबक़ यह मिलता है कि अकसर वही ज़बान मुल्क में आम होती है जो राजधानी की हो. कहीं कहीं लेकिन बहुत कम यह भी होता है कि ऐसे शहर की बोली आम हो जाती है जहाँ कोई ख़ास महाकवि या बड़ा मज़हबी रिफ़ारमर पैदा हुआ हो. हिन्दुस्तान की ज़बानों से भी यही सबक़ मिलता है. पुराने ज़माने में बुद्ध की वजह से मागधी ने पांव फैलाए. तुलसी की वजह से अवधी ने कुछ दिनों सिर उठाया. बंगाल में कम से कम तीन बोलियाँ बोली जाती थीं. राजधानी कलकत्ते में थी इसलिये वहाँ की बोली तमाम बंगाल में आम हुई. पंजाब में चार पाँच क़िसिम की बोलियाँ थीं लेकिन लाहौर राज-धानी था इसलिये जितनी किताबें पंजाबी में छपती हैं वह लाहौरी पंजाबी में छपती हैं. शिवाजी के बाद उस के वज़ीर ने पूना को राजधानी बनाया इसलिये पूना की मरहटी सारे मरहटी देस में आम हुई. चूँकि पूना और कलकत्ते दोनों शहरों में संस्कृत के कालेज भी राजधानी के साथ ही साथ खोले गए इसलिये इन दोनों ज़बानों में संस्कृत ने ज़ियादा ज़ोर किया.

दूसरा सबक़ हमें यह मिलता है कि जिस किसी ज़बान में अंजील (बाइबिल) का ऐसा तरजुमा किया गया हो जो आसान हो और जो पूजा पाठ में बरता जा सके तो उस तरजुमे की ज़बान का उस मुल्क की ज़बान पर बड़ा असर पड़ता है. क़ुरान के उरदू में तीन चार तरजुमे हुए लेकिन उनकी ज़बान एक सी नहीं. अभी तक यहाँ के मुसलमानों की

ترجمہ پہلے سلیوانک میں ہوا تھا ۔ وہاں کے براہمنوں نے اِسے بہت دنوں تک قائم رکھا ۔ لیکن گو کتابیں اِس میں لکھی جاتی رہیں، عام آدمی اپنی اپنی لوکل بولی بولتے رہے ۔ روس کی راجدھانی ماسکو ہوا کرتی تھی ۔ پیٹر بڑے کے دنوں میں اِس شاہی شہر کی بولی نے اپنا سکہ جما لیا لیکن اب بھی اِس میں بائبل کی وجہ سے سلیوانک کی کافی چاشنی ہے ۔ روسی براہمنوں نے اس سلیوانک کے لئے بہتیرے ہاتھ پاؤں مارے لیکن جغرافیے کے سامنے اُن کی کچھ نہ چلی۔ اگر دلی ہماری راجدھانی رہی تو دلی کی بولی کو راج کرنے کا کافی موقعہ ہے ۔

یورپ کی زبانوں میں سے اطالوی ایک ایسی زبان ہے جو راجدھانی سے نہیں نکلی بلکہ فلورنس کی بولی تھی ۔ اس کی بڑی وجہ تو یہ ہے کہ چودھویں صدی میں تین چوٹی کے شاعر دانتے (Dante)، پیٹرارک (Petrarch) اور بوکیشیو (Bocacio) فلورنس میں پیدا ہوئے اور اُن کے مقابلے میں کوئی سر نہ اُٹھا سکا ۔ دوسری وجہ یہ بتائی جاتی ہے کہ اِٹلی کی اور بولیوں کے مقابلے میں فلورنس کی بولی لاطینی سے زیادہ ملتی جلتی تھی ۔

اس سرسری نظر سے ہمیں ایک سبق یہ ملتا ہے کہ اکثر وہی زبان ملک میں عام ہوتی ہے جو راجدھانی کی ہو ۔ کہیں کہیں لیکن بہت کم یہ بھی ہوتا ہے کہ ایسے شہر کی بولی عام ہو جاتی ہے جہاں کوئی خاص مہا کوی یا بڑا مذہبی رفارمر پیدا ہوا ہو ۔ ہندستان کی زبانوں سے بھی یہی سبق ملتا ہے ۔ پرانے زمانے میں بدھ کی وجہ سے ماگدھی نے پاؤں پھیلائے ۔ تلسی کی وجہ سے اودھی نے کچھ دنوں سر اُٹھایا ۔ بنگال میں کم سے کم تین بولیاں بولی جاتی تھیں ۔ راجدھانی کلکتے میں تھی اسلئے وہاں کی بولی تمام بنگال میں عام ہوئی ۔ پنجاب میں چار پانچ قسم کی بولیاں تھیں لیکن لاہور راجدھانی تھا اسلئے جتنی کتابیں پنجابی میں چھپتی ہیں وہ لاہوری پنجابی میں چھپتی ہیں ۔ شیواجی کے بعد اُس کے وزیر نے پونا کو راجدھانی بنایا اسلئے پونا کی مرہٹی سارے مرہٹی دیس میں عام ہوئی ۔ چونکہ پونا اور کلکتے دونوں شہروں میں سنسکرت کے کالج بھی راجدھانی کے ساتھ ہی ساتھ کھولے گئے اس لئے ان دونوں زبانوں میں سنسکرت نے زیادہ زور کیا ۔

دوسرا سبق ہمیں یہ ملتا ہے کہ جس کسی زبان میں انجیل (بائبل) کا ایسا ترجمہ کیا گیا ہو جو آسان ہو اور جو پوجا پاٹھ میں برتا جا سکے تو اُس ترجمے کی زبان کا اُس ملک کی زبان پر بڑا اثر پڑتا ہے ۔ قرآن کے اُردو میں تین چار ترجمے ہوئے لیکن اُن کی زبان ایک سی نہیں ۔ ابھی تک یہاں کے مسلمانوں کی

लफ़्ज़ आ गए हैं. अंगरेज़ी पढ़े हुओं को कभी आपस में कोई भी देसी बोली बोलते सुनो, चौथाई लफ़्ज़ तो अंग-रेज़ी होंगे. एक दिन आने वाला है जब यह साहब भी अपनी ज़बान में लिखना शुरू करेंगे. इस किताब में भी कुछ अंगरेज़ी लफ़्ज़ भरे गए हैं सिर्फ़ इस लिये कि मेरे अंगरेज़ी पढ़े भाई भी इसे पढ़ सकें.

उरदू और हिन्दी के निकास और विकास की बाबत लिखने से पहले ज़बानों के फलने और फूलने के कुछ मोटे असूल बयान करना मुनासिब है. चूँकि यह असूल योरपी विद्वानों ने योरपी ज़बानों से निकाले हैं इस लिये योरपी ज़बानों की कहानी थोड़ी लिखता हूँ जिस से उन असूलों की बुनियाद समझ में आजाए.

लातीनी ने मुद्दत तक योरप में राज किया रोमन राज के बूते पर. रोमन राज के बाद यह बहुत दिनों तक जी न सकी बावजूद ईसाई धर्म की मदद के. लातीनी के बाद जिस ज़बान ने पहले पहल योरप में अदबी सूरत अख़्तियार की वह स्पेनिश थी. आठवीं सदी के शुरू में जब मुसलमानों ने वहाँ फ़तह हासिल की, स्पेन में कम से कम तीन बोलियां बोली जाती थीं. चूँकि उत्तरी हिस्से के बाशिन्दों की कोशिश से मुसलमान स्पेन से आहिस्ते आहिस्ते निकाले गए इसलिये उत्तरी हिस्से की ज़बान दक्खिन की तरफ़ फैलने लगी और अगरचे इस ने और बोलियों को बिलकुल मिटाया नहीं लेकिन जब तेरहवीं सदी में इस में ऊँचे दरजे की कविताएँ लिखी गईं तो सारे स्पेन में इस का सिक्का जम गया. यानी मौजूदा स्पैनिश के फैलने की वजह दो हैं, एक पोलिटिकल और दूसरी कविता.

परी जिसे अंगरेज़ी में पेरिस कहते हैं मुद्दत से फ़्रान्स की राजधानी चली आती है. परी में दरबार होने की वजह से और इसलिये मंडी होने की वजह से परी की ज़बान सारे फ़्रान्स की ही नहीं बल्कि पास पास के देसों की भी आम ज़बान बन गई. इंगलैंड में भी यही हुआ. लन्दन सदियों से राजधानी है इसलिये वहां की बोली तमाम मुल्क की बोली हो गई.

जरमन की कहानी निराली है. बरलिन को राजधानी बने बहुत अरसा नहीं हुआ और न जरमन के और शहरों से बरलिन में कोई ख़ास ख़ूबी है. लूथर एक मज़हबी रिफ़ारमर था. ज्यों ज्यों उस का मत फैलता गया उसकी ज़बान भी साथ देती रही और सारी जरमनी में ही नहीं आस पास के कुछ देसों में भी फैल गई. बड़ी वजह इस के फैलने की यह थी कि बाइबिल का इस ज़बान में अच्छा और आसान तरजुमा किया गया. सारी पूजा पाठ अब इस में होने लगी.

रूसी की कहानी अजब है. शुरू में मुद्दत तक किताबी ज़बान सलेवानिक रही. वजह यह थी कि वहां बाइबिल का

لفظ آگئے ھیں ۔ انگریزی پڑھے ھوؤں کو کبھی آپس میں کوئی
ی دیسی بولی بولتے سنو' چوتھائی لفظ تو انگریزی ھونگے ۔
یک دن آنے والا ھے جب یہ صاحب بھی اپنی زبان میں
لکھنا شروع کرینگے ۔ اِس کتاب میں بھی کچھ انگریزی لفظ
بھرے گئے ھیں صرف اس لئے کہ میرے انگریزی پڑھے بھائی
ی اِسے پڑھ سکیں ۔

اُردو اور ھندی کے نکاس اور وکاس کی بابت لکھنے سے
پہلے زبانوں کے پھلنے اور پھولنے کے کچھ موٹے اصول بیان کرنا
مناسب ھے. چونکہ یہ اصول یورپی ودوانوں نے یورپی زبانوں
، نکالے ھیں اس لئے یورپی زبانوں کی کہانی تھوڑی لکھتا
ہوں جس سے اُن اصولوں کی بنیاد سمجھ میں آجائے ۔

لاطینی نے مدت تک یورپ میں راج کیا رومن راج
، بوتے پر ۔ رومن راج کے بعد یہ بہت دنوں تک جی نہ
سکی باوجود عیسائی دھرم کی مدد کے ۔ لاطینی کے بعد
جس زبان نے پہلے پہل یورپ میں ادبی صورت اختیار
ی وہ اسپینش تھی ۔ آٹھویں صدی کے شروع میں جب
مسلمانوں نے وھاں فتح حاصل کی' اسپین میں کم سے کم
ن بولیاں بولی جاتی تھیں ۔ چونکہ اُتری حصے کے
باشندوں کی کوشش سے مسلمان اسپین سے آھستے آھستے
نکالے گئے اس لئے اتری حصے کی زبان دکھن کی طرف
پھیلنے لگی اور اگرچہ اس نے اور بولیوں کو بالکل مٹایا نہیں
لیکن جب تیرھویں صدی میں اس میں اونچے درجے کی
کویتائیں لکھی گئیں تو سارے اسپین میں اِس کا سکہ
جم گیا ۔ یعنی موجودہ اسپینش کے پھیلنے کی وجہ دو
ھیں' ایک پولیٹیکل اور دوسری کویتا ۔

پری جسے انگریزی میں پیرس کہتے ھیں مدت سے
فرانس کی راج دھانی چلی آتی ھے ۔ پری میں دربار
ہونے کی وجہ سے اور اس لئے منڈی ہونے کی وجہ سے پری
کی زبان سارے فرانس کی ھی نہیں بلکہ پاس پاس کے
دیسوں کی بھی عام زبان بن گئی ۔ انگلینڈ میں بھی
یہی ھوا ۔ لندن صدیوں سے راجدھانی ھے اسلئے وھاں کی
بولی تمام ملک کی بولی ھوگئی ۔

جرمن کی کہانی نرالی ھے ۔ برلن کو راج دھانی بنے
بہت عرصہ نہیں ھوا اور نہ جرمن کے اور شہروں سے برلن
میں کوئی خاص خوبی ھے ۔ لوتھر ایک مذھبی رفارمر تھا ۔
جیوں جیوں اسکا مت پھیلتا گیا اُسکی زبان بھی ساتھ دیتی
رہی اور ساری جرمنی میں ھی نہیں آس پاس کے کچھ
دیسوں میں بھی پھیل گئی ۔ بڑی وجہ اِسکے پھیلنے کی
، تھی کہ بائبل کا اس زبان میں اچھا اور آسان ترجمہ
کیا گیا ۔ ساری پوجا پاٹھ اب اس میں ھونے لگی ۔

روسی کی کہانی عجب ھے ۔ شروع میں مدت تک
کتابی زبان سلیوانک رھی ۔ وجہ یہ تھی کہ وھاں بائبل کا

बोलियों का ज़ोर बढ़ता गया. नतीजा यह कि इन में एक सलोबली लफ़्ज़ों की गिनती ख़ूब बढ़ी और उन में मिठास आगई. इस पर ब्राह्मन और उनके चेले शोर मचाने लगे और आजकल उलटी गंगा बहाने में लगे हुए हैं. अपनी हिन्दी ही देख लो रात को रात्रि, पूनो को पूर्णिमा, आग को अग्नि और इस तरह सैकड़ों लफ़्ज़ों को मुशकिल बनाया जा रहा है.

बिलकुल इसी तरह हिन्दू और मुसलमान मौलवियों के हाथ हमारी बोली में फ़ारसी अरबी के लफ़्ज़ ठूँसे गए हैं. आस की जगह उम्मीद, ओस की जगह शबनम, पड़ौस की जगह हमसायगी सैंकड़ों लफ़्ज़ों की फ़ज़ूल भरमार. लेकिन यह सब थोड़े दिनों का मामला है. ज़बानें सदा सुधरती रहती हैं. हमारी भी सुधरेगी यानी आसान होगी. इन पंडितों और मौलवियों का दोश नहीं. सब ज़बानों के साथ ऐसा ही होता रहा है और होता रहेगा. ज़बानों का यह अटल क़ानून है कि जब कोई ज़बान इलमी सूरत अख़्तियार करने लगती है तो उसकी शकल शुरू में तो सादा होती है लेकिन जहां उसने ज़रा संभाला लिया तो जो उस देस में पहले इलमी या अदबी ज़बान थी वह उस पर सवार हो जाती है और उसकी डिक्शनरी ही नहीं उसकी ग्रामर और बनावट को बदलने की कोशिश करती है और अगर इस नई ज़बान में लिखने वाले की यह नई ज़बान मातृ भाशा नहीं होती तो उसके लेख में वह पुरानी अदबी ज़बान ख़ूब ज़ोर करती है. अपने ही देस में देखिये एक पंजाबी लेखक उर्दू में जियादा फ़ारसी और हिन्दी में जियादा संस्कृत के लफ़्ज़ बरतेगा बनिस्बत एक दिल्ली वाले के. यही वजह है कि बनारस के लिखने वालों की हिन्दी इतनी हिन्दी नहीं जितनी संस्कृत होती है. योरपी ज़बानों पर इसी तरह शुरू में लातीनी ने ख़ूब अपना सिक्का जमाया था. आहिस्ते आहिस्ते जितने फ़ज़ूल लातीनी लफ़्ज़ उनमें घुस गए थे आप ही आप निकल गए. ईरान में जब अरबों की फ़तह हुई तो वहां की अदबी ज़बान भी अरबी हो गई. दसवीं सदी में जब फ़ारसी में अदब शुरू हुआ तो पहले पहल (जैसे फ़िरदौसी के शाहनामे में) अरबी लफ़्ज़ बहुत कम इस्तेमाल किए गए हैं. इस अदब ने तरक़्क़ी की तो इस में अरबी लफ़्ज़ ही नहीं अरबी तरकीबें भी ख़ूब बरती गईं. आजकल की फ़ारसी में बहुत कम अरबी लफ़्ज़ बरते जाते हैं. तुरकी में भी यही हुआ. अपने ही देस में नज़ीर और ग़ालिब की शायरी में और कबीर और हरिशचंद्र की कविता में फ़रक़ देख लीजिये.

अभी तक हमारी ज़बान पूरी संभली नहीं. इस पर एक और ज़ोरदार हमला होने वाला है. आजकल हमारी इलमी ज़बान अंगरेज़ी है. बोल चाल में तो बहुत से अंगरेज़ी

ہوں کا زور بڑھتا گیا. نتیجہ یہ کہ ان میں ـ سلونی لفظوں کی گنتی خوب بڑھی اور اُن میں ٹھاس آگئی. اِس پر براہمن اور اُن کے چیلے شور مچانے ، اور آج کل اُلٹی گنگا بہانے میں لگے ہوئے ہیں. اپنی دی ہی دیکھ لو رات کو راتری' پونو کو پورنما' آگ کو ی اور اس طرح سیکڑوں لفظوں کو مشکل بنایا جا ہے.

بالکل اِسی طرح ہندو اور مسلمان مولویوں کے ہاتھ اری بولی میں فارسی عربی کے لفظ ٹھونسے گئے ہیں. ـ کی جگہ اُمید' اوس کی جگہ شبنم' پڑوس کی جگہ سائگی سیکڑوں لفظوں کی فضول بھر مار. لیکن یہ ب تھوڑے دنوں کا معاملہ ہے. زبانیں سدا سدھرتی تی ہیں. ہماری بھی سدھریگی یعنی آسان ہوگی. پنڈتوں اور مولویوں کا دوش نہیں. سب زبانوں کے تھ ایسا ہی ہوتا رہا ہے اور ہوتا رہے گا. زبانوں کا یہ اٹل نون ہے کہ جب کوئی زبان علمی صورت اختیار کرنے لگتی تو اُسکی شکل شروع میں تو سادہ ہوتی ہے لیکن جہاں ـ نے ذرا سنبھالا لیا تو جو اُس دیس میں پہلے علمی یا ی زبان تھی وہ اُس پر سوار ہوجاتی ہے اور اُسکی ڈکشنری ـ نہیں اُسکی گرامر اور بناوٹ کو بدلنے کی کوشش کرتی اور اگر اس نئی زبان میں لکھنے والے کی یہ نئی زبان ماتر اشا نہیں ہوتی تو اُسکے لیکھ میں وہ پرانی ادبی زبان خوب کرتی ہے. اپنے ہی دیس میں دیکھئے ایک پنجابی یکھک اُردو میں زیادہ فارسی اور ہندی میں زیادہ نسکرت کے لفظ برتیگا بہ نسبت ایک دلی والے کے. یہی ہ ہے کہ بنارس کے لکھنے والوں کی ہندی اِتنی ہندی نہیں تنی سنسکرت ہوتی ہے. یورپی زبانوں پر اسی طرح روع میں لاطینی نے خوب اپنا سکہ جمایا تھا. آہستے ستے جتنے فضول لاطینی لفظ اُن میں گھس گئے تھے ـ ہی آپ نکل گئے. ایران میں جب عربوں کی فتح ئی تو وہاں کی ادبی زبان بھی عربی ہوگئی. دسویں دی میں جب فارسی میں ادب شروع ہوا تو پہلے پہل جیسے فردوسی کے شاہنامے میں) عربی لفظ بہت کم ستعمال کئے گئے ہیں. اس ادب نے ترقی کی تو اس یں عربی لفظ ہی نہیں عربی ترکیبیں بھی خوب برتی ئیں. آج کل کی فارسی میں بہت کم عربی لفظ برتے اتے ہیں. ترکی میں بھی یہی ہوا. اپنے ہی دیس یں نظیر اور غالب کی شاعری میں اور کبیر اور ہریش ندر کی کویتا میں فرق دیکھ لیجئے.

ابھی تک ہماری زبان پوری سنبھلی نہیں. اس پر ـ اور زوردار حملہ ہونے والا ہے. آج کل ہماری علمی ان انگریزی ہے. بول چال میں تو بہت سے انگریزی

ाहार और यू. पी. में सब जातों के लोग बसते थे और
स लिये यहां की बोलियों को हिन्दुओं की बोलियां कहना
चित होगा. संस्कृत भी उन ही दिनों में बनाई गई लेकिन
शमीर में. उन दिनों कशमीर में सिर्फ़ ब्राह्मन रहते थे.
सा मालूम होता है कि कशमीर में आर्यों की कोई ऐसी
र वीर क़ौम जा बसी थी जिसने वहां के असली रहने
ालों का बीज तक नास कर दिया था और इसलिये उन
ी बोली तीसरी चौथी सदी बी० सी० तक बहुत कुछ वैदिक
ौर पेशाची से मिलती जुलती थी. आर्यों को यहां आए
जार बरस से ज़ियादा हो चुके थे. हज़ार बरसों में हर
ोली में जो कि बोली जाती हो ज़मीन आसमान का फ़रक़
ा जाता है. उस ज़माने की कशमीरी बोली भी बोलने में
ासान हो गई होगी. यू. पी. के ब्राह्मनों को उस कशमीरी
ा तो ज्ञान न था लेकिन वैदिक की सुध बुध थी इसलिये
ौद्ध मत के प्रचार को रोकने के लिये संस्कृत का सहारा
िया गया और उसे वैदिक शकल देने के लिये जान बूझ
र मुशकिल बनाया गया और ऐसा बांधा गया कि वह
ुल न सके. पाली बौद्धों की ज़बान बनी और संस्कृत
्राह्मनों की. पाली आसान, संस्कृत मुशकिल. पाली में आठ
वर अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए और ओ. संस्कृत में सोलह—
ंस्कृत में 'स', 'ष' और 'श' पाली में केवल 'स' जिस से
ाफ़ ज़ाहिर है कि 'ष' और 'श' की आवाज़ हमारे उत्तर
ंड की बोलियों में से निकले हज़ारों बरस हो गए हैं. 'ष'
ो शायद हमें कभी बोलना आया ही नहीं और 'श' बोलना
ी हम ने बहुत कुछ मुसलमानों से सीखा. आम आदमियों
ी बोली में 'श' सिर्फ़ फ़ारसी लफ़ज़ों में बोला जाता है.
ंस्कृत सदियों तक बतौर धरमी और इलमी ज़बान इस्ते-
ाल होती रही. ज्योतिश, गनित धर्म और क़ानून पर
च्छी अच्छी किताबें इस में लिखी जाती रहीं. गो इलमी
़बान यह हज़ार बरस रही, बोली यह कहीं नहीं जाती
ी. जो थोड़े बहुत आदमी इसे जानते थे वह भी दरबार
ा कचहरी या शास्त्रार्थ में चाहे इसे बोल लें, घर में नहीं
ोलते थे. औरत चूंकि कोई इसे बोलती न थी इसलिये यह
भी किसी की मां-बोली नहीं बनी. अगर मातृभाशा के
ाइने हैं मां की बोली तो इसे मातृ भाशा कहना भूल है
ौर अगर मातृ भाशा के माइने हैं हमारी भाशा की मां
ो यह भी ग़लत है क्योंकि यह आप बनाई गई हमारी
ोलियों से.

मुसलमानों के आने के बाद संस्कृत के पुजारियों की
िनती रोज़ बरोज़ घटती गई. यह धरमी ज़बान भी न
ही. अकसर ब्राह्मन शाक्त और शैव हैं. दूसरे हिन्दू अकसर
ैशनव (विश्नू के पुजारी) हैं. शाक्तिक किताबें संस्कृत में
ौर वैशनव पुस्तकें हिन्दुस्तानी बोलियों में बनीं. हिन्दुस्तानी

بہار اور یو . پی. میں سب جاتوں کے لوگ بستے تھے اور اس
لئے یہاں کی بولیوں کو ھندوؤں کی بولیاں کہنا اُچت ھوگا.
سنسکرت بھی اُن ھی دنوں میں بنائی گئی لیکن کشمیر میں.
اُن دنوں کشمیر میں صرف براھمن رھتے تھے . ایسا معلوم
ھوتا ھے کہ کشمیر میں آریوں کی کوئی ایسی شور ویر قوم
جا بسی تھی جس نے وھاں کے اصلی رھنے والوں کا بیج
تک ناس کر دیا تھا اور اس لئے ان کی بولی تیسری چوتھی
صدی بی . سی تک بہت کچھ ویدک اور پیشاچی سے
ملتی جلتی تھی . آریوں کو یہاں آئے ھزار برس سے زیادہ
ھو چکے تھے . ھزار برسوں میں ھر بولی میں جو کہ بولی
جاتی ھو زمین آسمان کا فرق ھوجاتا ھے . اُس زمانے کی
کشمیری بولی بھی بولنے میں آسان ھوگئی ھوگی. یو . پی.
کے براھمنوں کو اُس کشمیری کا تو گیان نہ تھا لیکن ویدک
کی سدھ بدھ تھی اس لئے بودھ مت کے پرچار کو روکنے کے
لئے سنسکرت کا سہارا لیا گیا اور اُسے ویدک شکل دینے
کے لئے جان بوجھکر مشکل بنایا گیا اور ایسا باندھا گیا
کہ وہ ھل نہ سکے . پالی بودھوں کی زبان بنی اور سنسکرت
براھمنوں کی . پالی آسان' سنسکرت مشکل . پالی میں
آٹھ سور अ' आ' इ' ई' उ' ऊ' ए اور ओ . سنسکرت میں
سولہ — 'स' 'ष' اور 'श' پالی میں کیول ' स ' جس سے
صاف ظاھر ھے کہ ष اور श کی آواز ھمارے اُترکھنڈ کی
بولیوں میں سے نکلے ھزاروں برس ھوگئے ھیں . 'ष' تو
شاید ھمیں کبھی بولنا آیا ھی نہیں اور श بولنا تو ھم
نے بہت کچھ مسلمانوں سے سیکھا . عام آدمیوں کی بولی
میں श صرف فارسی لفظوں میں بولا جاتا ھے . سنسکرت
صدیوں تک بطور دھرمی اور علمی زبان استعمال ھوتی
رھی. جیوتش' گنت دھرم اور قانون پر اچھی اچھی کتابیں
اس میں لکھی جاتی رھیں . گو علمی زبان یہ ھزار برس
رھی' بولی یہ کہیں نہیں جاتی تھی . جو تھوڑے بہت
آدمی اِسے جانتے تھے وہ بھی دربار یا کچہری یا شاستر ارتھ
میں چاھے اسے بول لیں' گھر میں نہیں بولتے تھے . عورت
چونکہ کوئی اِسے بولتی نہ تھی اس لئے یہ کبھی کسی کی
ماں بولی نہیں بنی . اگر ماتر بھاشا کے معنے ھیں ماں
کی بولی تو اِسے ماتر بھاشا کہنا بھول ھے. اور اگر ماتر بھاشا
کے معنے ھیں ھماری بھاشا کی ماں تو یہ بھی غلط ھے
کیونکہ یہ آپ بنائی گئی ھماری بولیوں سے .

مسلمانوں کے آنے کے بعد سنسکرت کے پجاریوں کی
گنتی روز بروز گھٹتی گئی . یہ دھرمی زبان بھی نہ رھی.
اکثر براھمن شاکت اور شیو ھیں . دوسرے ھندو اکثر ویشنو
(وشنو کے پجاری) ھیں . شاکتک کتابیں سنسکرت میں اور
ویشنو پستکیں ھندستانی بولیوں میں بنیں . ھندستانی

अभी संस्कृत नहीं बनी थी. उस के पहले भी बहुत से लोग ईरान से और ईरान के रास्ते हिन्दुस्तान में आए. इन लोगों के ज़रिये और ईरानी राज के कारन पुरानी फ़ारसी से बहुत से लफ़्ज़ हिन्दुस्तानी ज़बानों में आए. कुछ तो संस्कृत ने ही अपना लिये और कुछ हमारी पुरानी प्राकृत सूरसैनी में शामिल हो गए. यह आम ख़याल कि संस्कृत एक शुद्ध भाशा यानी परदेसी लफ़्ज़ों से पाक है, ग़लत है. इसी तरह यह ख़याल भी ग़लत है कि फ़ारसी के सारे लफ़्ज़ हमारी बोली में मुसलमान लाए. बहुत से लफ़्ज़ तो मोहम्मद साहब के पैदा होने से पहले आ चुके हैं जैसे अनार, रोटी, तवा, बराबर. इस लिये यह ख़याल भी ग़लत है कि फ़ारसी के लफ़्ज़ों के बरतने से हिन्दी वालों का धर्म बिगड़ता है. यहाँ हिन्दू पानी और मुसलमान पानी तो है ही अब हिन्दू शब्द और मुसलमान लफ़्ज़ भी हो गए हैं ! दुनिया के खेल का चमत्कार देखिये, मुसलमान पानी और हिन्दू पानी का तो भेद कम हो रहा है, लफ़्ज़ों का भेद ज़ोरों पर है.

संस्कृत के बनाए जाने के तीन चार सौ बरस पहले जैन और बौद्ध धर्म यहाँ पैदा हुए बिहार की तरफ़. वहाँ की भाशा में ही प्रचार शुरू हुआ. बौद्ध मत बहुत फैला, यहाँ तक कि रावलपिंडी के पास तक्षशिला में इस की यूनीवर-सिटी बनी. लगभग 250 बी. सी. में अशोक ने एक ऐसी बोली को जो यहाँ की बहुत सी बोलियों के जोड़ से पैदा हुई थी अपनी दरबारी ज़बान बनाली. अब इसे पाली कहते हैं. तक्षशिला में पाली में तालीम दी जाती थी. लेकिन वहाँ यह धर्मी और इलमी ज़बान ही रही. अदबी ज़बान तो यह दक्खिन में जा कर बनी और मँजी यह जा कर लंका में. शुरू तो हुई यह सीधी सादी मागधी प्राकृत से लेकिन जब इस के पैर जम गए और उभरने लगी, इस पर वैदकि ने हमला किया. यह एक और मिसाल है उस अटल क़ुदरती क़ानून की. जब कोई बोली इलमी सूरत अख़तियार करने लगती है तो आस पास जो इलमी भाशा हो वह उस पर छा जाती है. नतीजा यह कि संस्कृत की तरह यह भी शायद किसी देस, शहर या गांव में बोली नहीं जाती थी. इस में और संस्कृत में इतना फ़रक़ ज़रूर रहा कि संस्कृत में तो लफ़्ज़ों को मुश्किल बनाने की कोशिश की गई, पाली में आसान. जैसे संस्कृत का कर्षति जो हिन्दुस्तानी में काढ़े है, पाली में कढ़े; संस्कृत विद्युत, हिन्दी बिजली, पाली बिज्जू ; संस्कृत अक्षी, हिन्दी आंख, पाली और पंजाबी अखी.

पाली आज कल पढ़ाई नहीं जाती नहीं तो यह मालूम हो जाता कि हमारी आज कल के हिन्दुस्तानी लफ़्ज़ों की शकल इतनी संस्कृत के शब्दों से नहीं मिली जितनी पाली के शब्दों से. वजह यह है कि पाली तो बनी थी बिहारी और यू. पी. की बोलियों के जोड़ से. उन दिनों में भी

سکرت نہیں بنی تھی ۔ اُس کے پہلے بھی بہت سے
ران سے اور ایران کے راستے ہندستان میں آئے ۔ ان
ذریعے اور ایرانی راج کے کارن پرانی فارسی سے بہت
ہندستانی زبانوں میں آئے۔ کچھ تو سنسکرت نے ہی
اور کچھ ہماری پرانی پراکرت سورسینی میں شامل
یہ عام خیال کہ سنسکرت ایک شدھ بھاشا
ردیسی لفظوں سے پاک ہے' غلط ہے ۔ اِسی طرح
ں بھی غلط ہے کہ فارسی کے سارے لفظ ہماری بولی
سلمان لائے ۔ بہت سے لفظ تو محمد صاحب کے
ے سے پہلے آچکے ہیں جیسے انار' روٹی' توا' برابر۔
۔ یہ خیال بھی غلط ہے کہ فارسی کے لفظوں کے
ہندی والوں کا دھرم بگڑتا ہے ۔ یہاں ہندو پانی
لمان پانی تو ہے ہی اب ہندو شبد اور مسلمان
، ہوگئے ہیں ! دنیا کے کھیل کا چمتکار دیکھئے'
پانی اور ہندو پانی کا تو بھید کم ہو رہا ہے'
کا بھید زوروں پر ہے ۔

سکرت کے بنائے جانے کے تین چار سو برس پہلے
ر بودھ دھرم یہاں پیدا ہوئے بہار کی طرف ۔
ی بھاشا میں ہی پرچار شروع ہوا ۔ بودھ مت
یلا' یہاں تک کہ راولپنڈی کے پاس تکشلا میں
یونیورسٹی بنی ۔ لگ بھگ 250 بی ۔ سی ۔
وک نے ایک ایسی بولی کو جو یہاں کی بہت
لیوں کے جوڑ سے پیدا ہوئی تھی اپنی درباری
الی ۔ اب اِسے پالی کہتے ہیں ۔ تکشلا میں
یں تعلیم دی جاتی تھی ۔ لیکن وہاں یہ دھرمی
ی زبان ہی رہی ۔ ادبی زبان تو یہ دکھن میں
ی اور منجھی یہ جاکر لنکا میں ۔ شروع تو ہوئی
ھی سادی ماگدھی پراکرت سے لیکن جب اِس کے
گئے اور اُبھرنے لگی' اِس پر ویدک نے حملہ کیا ۔
ے اور مثال ہے اُس اٹل قدرتی قانون کی ۔ جب
ی علمی صورت اختیار کرنے لگتی ہے تو آس
و علمی بھاشا ہو وہ اُس پر چھا جاتی ہے ۔ نتیجہ
سنسکرت کی طرح یہ بھی شاید کسی دیس'
گاؤں میں بولی نہیں جاتی تھی ۔ اِس میں
کرت میں اتنا فرق ضرور رہا کہ سنسکرت میں تو
کو مشکل بنانے کی کوشش کی گئی' پالی میں
جیسے سنسکرت کا کرشتی جو ہندستانی میں کاڑھے
، میں کڑھے؛ سنسکرت ودیوت' ہندی بجلی' پالی
سنسکرت اکشی' ہندی آنکھ' پالی اور پنجابی اکھی۔

ی آجکل پڑھائی نہیں جاتی نہیں تو یہ معلوم ہوجاتا
دی آج کل کے ہندستانی لفظوں کی شکل اتنی
ت کے شبدوں سے نہیں ملی جتنی پالی کے
سے ۔ وجہ یہ ہے کہ پالی تو بنی تھی بہاری اور
، کی بولیوں کے جوڑ سے ۔ اُن دنوں میں بھی

उरदू और हिन्दी

(भाई मदन गोपाल)

[अगस्त और सितम्बर के 'नया हिन्द' में 'ख़ालिस बोली' खिचड़ी बोली और बोली की दीवार' नाम के लेख भाई मदन गोपाल जी की किताब "भाशा" से लिये गए हैं. यह लेख भी उसी किताब का एक हिस्सा है. पूरी किताब छप कर तैयार है और नागरी और उरदू दोनों लिखावटों में मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाबाद से मिल सकती है. क़ीमत डेढ़ रुपया. —एडीटर]

उरदू और हिन्दी का झगड़ा कुछ बहुत पुराना नहीं, लेकिन खिंचता खिंचता इतना लम्बा हो गया है कि अब धर्म का भाग बन गया है. दो बोलियों का आपस में झगड़ा सदा से चला आया है और होता रहेगा. जिस तरह से यह झगड़े और देसों में निपटे हमारे देस में भी निपटेंगे. यह देखने के लिये कि और मुल्कों में यह झगड़े किस तरह तय हुए, यह मुनासिब है कि हिन्दुस्तान की ज़बानों पर और और देसों की ज़बानों पर सरसरी नज़र डाली जाए.

पांच हज़ार बरस हुए हिन्दुस्तान में आर्यों के आने से पहले उत्तरी हिन्दुस्तान की क्या बोली थी उस की बाबत हमें कुछ इल्म नहीं क्योंकि उन लेखों को जो उस ज़माने के हमें मिले हैं अभी तक कोई पढ़ नहीं सका. आर्यों ने यहाँ के रहने वालों को दस्यू, नकफ़ीने, कपटी, जंगली वग़ैरा कहा है. पिछली सदी तक तो जो कुछ वह लिख गए हैं सच माना जाता था लेकिन अब हम जानते हैं कि जब आर्य यहाँ आए थे, वह उठाऊ चूल्हे थे. खेती बाड़ी यहाँ आकर उन्होंने सीखी. उन की शुरू की वैदिक ज़बान भी यहाँ की पहली बोली के मेल से पैदा हुई और वह भी बहुत दिन जी न सकी. बौद्धों और जैनियों ने यहाँ की बोलियों में प्रचार शुरू किया. जब उन के प्रचार से ब्राह्मनों के जात के क़िले गिरने लगे तो उन्होंने संस्कृत बनाई. शुरू में तो यह केवल धर्मी बोली बनी. जब ब्राह्मनों का क़िला जात फिर मज़बूत हो गया, उन्होंने इसे दरबारी ज़बान बनाली. उस के बाद यह अदबी (साहित्यिक) ज़बान बन गई. अदबी बनकर इस ने वह रंग रूप निकाला कि हिन्दुस्तान में ही नहीं आस पास के देसों में भी राज करने लगी.

सातवीं सदी बी. सी. में ईरानियों ने पच्छिम में मिस्र तक और पूरब में सिंध दरिया तक अपनी हकूमत क़ायम की. पांचवीं सदी बी. सी. में उन का दारा के राज में सितारा खूब चमका और झेलम की नदी पर उनका क़ब्ज़ा हो गया.

اُردو اور ھندی

(بھائی مدن گوپال)

[اگست اور ستمبر کے 'نیا ھند' میں 'خالص بولی' کھچڑی بولی اور بولی کی دیوار' نام کے لیکھ بھائی مدن گوپال جی کی کتاب "بھاشا" سے لئے گئے ھیں. یہ لیکھ بھی اُسی کتاب کا ایک حصہ ہے. پوری کتاب چھپ کر تیار ھے اور ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں منیجر 'نیا ھند' '145' مٹھی گنج' الہ آباد سے مل سکتی ھے. قیمت ڈیڑھ روپیہ—ایڈیٹر]

اُردو اور ھندی کا جھگڑا کچھ بہت پرانا نہیں' لیکن کھنچتا کھنچتا اتنا لمبا ھوگیا ھے کہ اب دھرم کا بھاگ بن گیا ھے. دو بولیوں کا آپس میں جھگڑا سدا سے چلا آیا ھے اور ھوتا رھیگا. جس طرح سے یہ جھگڑے اور دیسوں میں نپٹے ھمارے دیس میں بھی نپٹینگے. یہ دیکھنے کے لئے کہ اور ملکوں میں یہ جھگڑے کس طرح طے ھوئے' یہ مناسب ھے کہ ھندستان کی زبانوں پر اور اور دیسوں کی زبانوں پر سرسری نظر ڈالی جائے.

پانچ ھزار برس ھوئے ھندستان میں آریوں کے آنے سے پہلے اُتری ھندستان کی کیا بولی تھی اُسکی بابت ھمیں کچھ علم نہیں کیونکہ اُن لیکھوں کو جو اُس زمانے کے ھمیں ملے ھیں ابھی تک کوئی پڑھ نہیں سکا. آریوں نے یہاں کے رھنے والوں کو دسیو' نکفینے' کپٹی' جنگلی وغیرہ کہا ھے. پچھلی صدی تک تو جو کچھ وہ لکھ گئے ھیں سچ مانا جاتا تھا لیکن اب ھم جانتے ھیں کہ جب آریہ یہاں آئے تھے' وہ اُٹھاؤ چولھے تھے. کھیتی باڑی یہاں آکر اُنہوں نے سیکھی. اُن کی شروع کی ویدک زبان بھی یہاں کی پہلی بولی کے میل سے پیدا ھوئی اور وہ بھی بہت دن جی نہ سکی. بودھوں اور جینیوں نے یہاں کی بولیوں میں پرچار شروع کیا. جب اُن کے پرچار سے براھمنوں کے جات کے قلعے گرنے لگے تو انہوں نے سنسکرت بنائی. شروع میں تو یہ کیول دھرمی بولی بنی. جب براھمنوں کا قلعہ جات پھر مضبوط ھوگیا' اُنہوں نے اِسے درباری زبان بنالی. اُسکے بعد یہ ادبی (ساھتیک) زبان بن گئی. ادبی بن کر اس نے وہ رنگ روپ نکالا کہ ھندستان میں ھی نہیں آس پاس کے دیسوں میں بھی راج کرنے لگی.

ساتویں صدی بی. سی. میں ایرانیوں نے پچھم میں مصر تک اور پورب میں سندھ دریا تک اپنی حکومت قائم کی. پانچویں صدی. بی. سی. میں اُن کا دارا کے راج میں ستارا خوب چمکا اور جھیلم کی ندی پر اُن کا قبضہ ھوگیا.

उनके सुधरने की कोई सूरत नज़र नहीं आती. योजनाएँ (स्कीमें) बनाने में, बन महोत्सव मनाने में और सोमनाथ के शिव मन्दिर पर लाखों रुपया खर्च किया जाता है लेकिन जनता का बढ़ता हुआ दुख दूर करने की तरफ़ किसी का ध्यान नहीं दिखाई देता. कांगरेसी नेता, जिनका सारी जनता सम्मान करती थी, आपस में लड़ रहे हैं. यह झगड़े कम होने की जगह बढ़ते ही जा रहे हैं और हमारी राष्ट्री एकता यानी क़ौमी इत्तहाद की निशानी कांगरेस टूट रही है और जनता का उस पर विश्वास से उठ रहा है.

पिछले चार साल में जो विधान बनाया गया है उसमें जो शहरी आज़ादियाँ दी गई थीं विधान में सुधार करके उन पर भी पाबन्दी लगा दी गई है. लोगों का कहना है कि जिस विधान सभा ने यह विधान बनाया है वह जनता की नुमाइन्दा नहीं थी, क्योंकि उसे बालिग़ वोट से नहीं चुना गया था और उसने जो विधान बनाया है वह जनता का विधान नहीं है बल्कि अंगरेज़ों के बनाए हुए इंडिया ऐक्ट 1935 को नए ढंग से लिख कर जनता के सामने पेश कर दिया गया है. इस विधान से जनता को अपने नुमाइन्दे चुनकर भेजने का अधिकार ज़रूर मिला है लेकिन उन्हें वापस बुलाने का अधिकार नहीं मिला.

इसलिये कांगरेस हो या दूसरी पारटी या पारटियाँ उनका उसी वक़्त विश्वास किया जा सकता है जब वह जनता को अपने नुमाइन्दे चुनने के साथ अपने नुमाइन्दे वापस बुलाने का अधीकार भी दें. जब वोटरों को अपने नुमाइन्दे वापस बुलाने का अधिकार प्राप्त होगा तभी वह असल ताक़त जनता के हाथ में रहेगी और तभी जनता की चुनी हुई सरकार जनता की भलाई के काम करेगी. जनता की भलाई और देस की तरक्क़ी उस वक़्त तक मुमकिन नहीं जब तक समाज के इस पुराने ढाँचे को बदला न जाय. देस की आर्थिक तरक़्क़ी के लिये यह भी ज़रूरी है कि हमारे देस में लगी हुई सारी अंगरेज़ी पूँजी और देस की तमाम अंगरेज़ी और दूसरी जायदादों को जिस तरह भी हो सके ख़तम किया जाय और ज़मीन ग़रीब किसानों में बाँटी जाय. अगर किसी पारटी के मैनिफ़ेस्टो में यह बातें शामिल नहीं हैं तो हमारा ख़याल है कि वह पारटी जनता की भलाई की बात नहीं कर सकती. चुनाव में वोट डालते वक़्त जनता को यह बातें ध्यान में रखनी होंगी.

ان کے سدھرنے کی کوئی صورت نظر نہیں آتی ۔ یوجنائیں (اسکیمیں) بنانے میں، بن مہوتسو منانے میں اور سومناتھ کے شو مندر پر لاکھوں روپیہ خرچ کیا جاتا ہے لیکن جنتا کا بڑھتا ہوا دکھ دور کرنے کی طرف کسی کا دھیان نہیں دکھائی دیتا ۔ کانگرسی نیتا، جن کا ساری جنتا سمان کرتی تھی، آپس میں لڑ رہے ہیں ۔ یہ جھگڑے کم ہونے کی جگہ بڑھتے ہی جا رہے ہیں اور ہماری راشٹری ایکتا یعنی قومی اتحاد کی نشانی کانگریس ٹوٹ رہی ہے اور جنتا کا اس پر سے وشواس اٹھ رہا ہے ۔

پچھلے چار سال میں جو ودھان بنایا گیا ہے اس میں جو شہری آزادیاں دی گئی تھیں ودھان میں سدھار کر کے ان پر بھی پابندی لگا دی گئی ہے ۔ لوگوں کا کہنا ہے کہ جس ودھان سبھا نے یہ ودھان بنایا ہے وہ جنتا کی نمائندہ نہیں تھی، کیونکہ اسے بالغ ووٹ سے نہیں چنا گیا تھا اور اس نے جو ودھان بنایا ہے وہ جنتا کا ودھان نہیں ہے بلکہ انگریزوں کے بنائے ہوئے انڈیا ایکٹ 1935 کو نئے ڈھنگ سے لکھ کر جنتا کے سامنے پیش کر دیا گیا ہے ۔ اس ودھان سے جنتا کو اپنے نمائندے چن کر بھیجنے کا ادھیکار ضرور ملا ہے لیکن انہیں واپس بلانے کا ادھیکار نہیں ملا ۔

اسلئے کانگریس ہو یا دوسری پارٹی یا پارٹیاں ان کا اسی وقت وشواس کیا جاسکتا ہے جب وہ جنتا کو اپنے نمائندے چننے کے ساتھ اپنے نمائندے واپس بلانے کا ادھیکار بھی دیں ۔ جب ووٹروں کو اپنے نمائندے واپس بلانے کا ادھیکار پراپت ہوگا تبھی وہ اصل طاقت جنتا کے ہاتھ میں رہے گی اور تبھی جنتا کی چنی ہوئی سرکار جنتا کی بھلائی کے کام کرے گی ۔ جنتا کی بھلائی اور دیس کی ترقی اسوقت تک ممکن نہیں جب تک سماج کے اس پرانے ڈھانچے کو بدلا نہ جائے ۔ دیس کی آرتھک ترقی کے لئے یہ بھی ضروری ہے کہ ہمارے دیس میں لگی ہوئی ساری انگریزی پونجی اور دیس کی تمام انگریزی اور دوسری جائدادوں کو جس طرح بھی ہوسکے ختم کیا جائے اور زمین غریب کسانوں میں بانٹی جائے ۔ اگر کسی پارٹی کے مینی فسٹو میں یہ باتیں شامل نہیں ہیں تو ہمارا خیال ہے کہ وہ پارٹی جنتا کی بھلائی کی بات نہیں کرسکتی ۔ چناؤ میں ووٹ ڈالتے وقت جنتا کو یہ باتیں دھیان میں رکھنی ہوں گی ۔

वहां लोगों को अपने नुमाइन्दे चुनने का और उन्हें वापस बुलाने का भी अधिकार प्राप्त है. रूस, नया चीन और पूरबी योरप के कुछ देसों पोलैंड, रूमानिया, बलग़ारिया, हंगरी और चेकोसलोवाकिया में सच्ची जनवादी सरकारें क़ायम हैं. वहां की जनता न सिर्फ़ अपने नुमाइन्दे चुन सकती है बल्कि अगर वह चाहे तो उन्हें वापस भी बुला सकती है, जिस से असल ताक़त हमेशा जनता के हाथों में रहती है. यही कारन है कि वह जनता के चुने हुए नुमाइन्दे जनता की सच्ची भलाई के क़ानून बनाते हैं, उन्हें यह ध्यान रहता है कि अगर हमने कोई भी काम जनता की मरज़ी के ख़िलाफ़ किया तो हम से यह ताक़त छिन सकती है. वहां न सिर्फ़ क़ानून बनाने वाली संस्थाओं के मेम्बर और मंत्री जनता के चुने हुए होते हैं बल्कि क़ानूनों को देस में लागू करने वाले सरकारी अफ़सर, जज, मजिस्ट्रेट और पुलिस अफ़सर वग़ैरा भी जनता के चुने हुए होते हैं. अगर कोई अफ़सर अपने ओहदे का ग़लत इस्तेमाल करता है तो जनता उसे अपने पद से हटा सकती है. इस तरह जनता की चुनी हुई जनता की सरकार जनता की भलाई के लिये काम करती है और उसके वज़ीर और अफ़सर सचमुच जनता के सेवक होते हैं.

अंगरेज सामराजियों ने डेढ़ सौ साल से हमारे देस को ग़ुलाम बना रखा था और जनता की तरक़्क़ी रुकी हुई थी. हमारे काम धन्दों और तमाम आर्थिक साधनों पर बिदेसी ब्योपारियों और हुक्मरानों का क़ब्ज़ा था. इसी कारन भूक और बेरोज़गारी बढ़ी, जनता को अनपढ़ रखा गया और देस सभ्यता और कलचर की दौड़ में दुनिया से पिछड़ गया. भूक और बेकारी को दूर करने और अपनी कलचर को आगे बढ़ाने के लिये ही हम अंगरेज सरकार के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे. जब हम देस की आज़ादी की मांग करते थे और अंगरेज सरकार को हटाकर जनता की सरकार बनाने की बात कहते थे तो हमारा मतलब यही होता था कि अंगरेज़ों के चले जाने के बाद जनता की आर्थिक लूट खसोट बन्द होगी और देस तरक़्क़ी करेगा.

15 अगस्त 1947 को ढोल पीट कर एलान किया गया कि अंगरेज चले गए और हमारा देस आज़ाद हो गया. लोगों ने सुख का सांस लिया. अगरचे बँटवारे के कारन देस के टुकड़े हो गए, लाखों आदमी मरे और लाखों के घर बार उजड़ गए. लेकिन फिर भी आज़ादी तो मिली मगर आज़ादी से जनता की जो उम्मीदें बँधी होती हैं, पिछले चार साल में उन पर ओस पड़ गई. बे रोज़गारी और महँगाई कम होने की जगह पहले से कई गुना बढ़ गई. तालीम और महँगी हो गई. रेलों के किराये और टैक्स बढ़ गए. हालात दिन दिन बिगड़ते ही गए. अब भी

جہاں لوگوں کو اپنے نمائندے چننے کا اور انہیں واپس بلانے کا بھی ادھیکار پراپت ہے . روس' نیا چین' اور پوربی یورپ کے کچھ دیسوں پولینڈ' رومانیہ' بلغاریہ' ہنگری اور چیکوسلوواکیا میں سچی جن وادی سرکاریں قائم ہیں . وہاں کی جنتا نہ صرف اپنے نمائندے چن سکتی ہے بلکہ اگر وہ چاہے تو انہیں واپس بھی بلا سکتی ہے' جس سے اصل طاقت ہمیشہ جنتا کے ہاتھوں میں رہتی ہے . یہی کارن ہے کہ وہ جنتا کے چنے ہوئے نمائندے جنتا کی سچی بھلائی کے قانون بناتے ہیں' انہیں یہ دھیان رہتا ہے کہ اگر ہم نے کوئی بھی کام جنتا کی مرضی کے خلاف کیا تو ہم سے یہ طاقت چھن سکتی ہے . وہاں نہ صرف قانون بنانے والی سنستھاؤں کے ممبر اور منتری جنتا کے چنے ہوئے ہوتے ہیں بلکہ قانونوں کو دیس میں لاگو کرنے والے سرکاری افسر' جج' مجسٹریٹ اور پولیس افسر وغیرہ بھی جنتا کے چنے ہوئے ہوتے ہیں . اگر کوئی افسر اپنے عہدے کا غلط استعمال کرتا ہے تو جنتا اسے اپنے پد سے ہٹا سکتی ہے . اس طرح جنتا کی چنی ہوئی جنتا کی سرکار جنتا کی بھلائی کے لئے کام کرتی ہے اور اس کے وزیر اور افسر سچ مچ جنتا کے سیوک ہوتے ہیں .

انگریز سامراجیوں نے ڈیڑھ سو سال سے ہمارے دیس کو غلام بنا رکھا تھا اور جنتا کی ترقی رکی ہوئی تھی . ہمارے کام دھندوں اور تمام آرتھک سادھنوں پر بدیسی بیوپاریوں اور حکمرانوں کا قبضہ تھا . اسی کارن بھوک اور بے روزگاری بڑھی' جنتا کو ان پڑھ رکھا گیا اور دیس سبھیتا اور کلچر کی دوڑ میں دنیا سے پچھڑ گیا . بھوک اور بیکاری کو دور کرنے اور اپنی کلچر کو آگے بڑھانے کے لئے ہی ہم انگریز سرکار کے خلاف لڑ رہے تھے . جب ہم دیس کی آزادی کی مانگ کرتے تھے اور انگریز سرکار کو ہٹا کر جنتا کی سرکار بنانے کی بات کہتے تھے تو ہمارا مطلب یہی ہوتا تھا کہ انگریزوں کے چلے جانے کے بعد جنتا کی آرتھک لوٹ کھسوٹ بند ہوگی اور دیس ترقی کرے گا .

15 اگست 1947 کو ڈھول پیٹ کر اعلان کیا گیا کہ انگریز چلے گئے اور ہمارا دیس آزاد ہوگیا . لوگوں نے سکھ کا سانس لیا . اگرچہ بٹوارے کے کارن دیس کے ٹکڑے ہوگئے' لاکھوں آدمی مرے اور لاکھوں کے گھر بار اجڑ گئے . لیکن پھر بھی آزادی تو ملی مگر آزادی سے جنتا کی جو امیدیں بندھی ہوتی ہیں' پچھلے چار سال میں ان پر اوس پڑ گئی . بے روزگاری اور مہنگائی کم ہونے کی جگہ پہلے سے کئی گنا بڑھ گئی . تعلیم اور مہنگی ہوگئی . ریلوں کے کرائے اور ٹیکس بڑھ گئے . حالات دن دن بگڑتے ہی گئے . اب بھی

भी उसी तरह के गिरोह में है. अब वोटर क्या कर सकते हैं. उसे पांच साल के लिये चुना गया है और पांच साल तक वह उनके सर पर रहेगा.

इस तरह आदमी का आदमी से विश्वास उठ जाता है और सच्चाई, ईमानदारी का कोई मतलब नहीं रह जाता. हालत सुधरने की जगह दिन दिन बिगड़ती जाती है. इस का सिर्फ़ एक ही इलाज है और वह यह है कि असल ताक़त हमेशा वोटरों के पास रहे. वह ऐसे हो सकता है कि जिस तरह जनता किसी भी आदमी को चुनने का अधिकार रखती है, उसी तरह अगर कभी भी उसे यह मालूम हो जाय कि यह आदमी चोरों जुआरियों के गिरोह से मिला हुआ है तो जनता दोबारा अपने वोट डाल कर उसे वापस बुला सके. यानी जनता को न सिर्फ़ चुनने बल्कि पद से हटाने का अधिकार भी मिलना चाहिये.

यह एतराज़ हो सकता है कि आज हम किसी को चुनते हैं, कल उसे वापस बुलाते हैं, परसों दूसरे को चुनते हैं और तरसों उसे वापस बुलाते हैं. इस तरह चुनाव, जमहूरियत और लोकशाही एक खेल और मज़ाक़ बनकर रह जाती है. इसलिये जनता को अपने नुमाइन्दे चुनने का अधिकार दिया जा सकता है लेकिन जनता जब चाहे उसे अपने नुमाइन्दे वापस बुलाने का अधिकार नहीं दिया जा सकता.

किसी जुग में इनसान को अपने नुमाइन्दे चुनने का भी अधिकार प्राप्त नहीं था. उस जुग में सारी राज शक्ति सिर्फ़ एक शख़्स—राजा—के हाथ में होती थी और उसे ईश्वर का अवतार समझा जाता था. जब दुनिया आगे बढ़ी और जनता अपने नुमाइन्दे चुनने का अधिकार मांगने लगी तो उस मांग का मज़ाक़ उड़ाया गया और उस अधिकार के मांगने वालों को जेलों में डाला गया और गोलियों से उड़ाया गया. एक अरसे तक अपने नुमाइन्दे चुन कर भेजने की बात को नामुमकिन माना गया. लेकिन जुग को बदलना था और वह बदला. शहरी आज़ादियां, वोट, प्रेस और पारटियां नए जुग की देन हैं जिनसे जनता ने अपने नुमाइन्दे चुनने का अधिकार हासिल किया है और उस पर अमल होना मुमकिन हो गया है. अब दुनिया और आगे बढ़ी है और पूँजीवादी जुग से नए जनवादी जुग ने जन्म लिया है. जिन देसों में सच्चा जनवादी जुग शुरू हो चुका है वहां जनता को न सिर्फ़ अपने नुमाइन्दे चुनने बल्कि उन्हें वापस बुलाने का अधिकार भी मिल गया है.

बरतानिया, अमरीका और फ़्रांस वग़ैरा में पूंजीवादी सरकारें क़ायम हैं. वहां जनता को सिर्फ़ अपने नुमाइन्दे चुनने का अधिकार है, उन्हें वापस बुलाने का अधिकार नहीं. इसके ख़िलाफ़ दुनिया के लगभग आधे नक़्शे पर कुछ ऐसे देस दिखाई देते हैं जहां सच्ची जनवादी सरकारें बन गई हैं,

بھی اسی طرح کے گروہ میں ہے . اب ووٹر کیا کرسکتے ہیں . اُسے پانچ سال کے لئے چنا گیا ہے اور پانچ سال تک وہ اُن کے سر پر رہے گا .

اس طرح آدمی کا آدمی سے وشواس اُٹھ جاتا ہے اور سچائی' ایمانداری کا کوئی مطلب نہیں رہ جاتا . حالت سدھرنے کی جگہ دن دن بگڑتی جاتی ہے . اِس کا صرف ایک ہی علاج ہے اور وہ یہ ہے کہ اصل طاقت ہمیشہ ووٹروں کے پاس رہے . وہ ایسے ہوسکتا ہے کہ جس طرح جنتا کسی بھی آدمی کو چننے کا ادھیکار رکھتی ہے' اسی طرح اگر کبھی بھی اسے یہ معلوم ہو جائے کہ یہ آدمی چوروں جواریوں کے گروہ سے ملا ہوا ہے تو جنتا دوبارہ اپنے ووٹ ڈال کر اسے واپس بلا سکے . یعنی جنتا کو نہ صرف چننے بلکہ پد سے ہٹانے کا ادھیکار بھی ملنا چاہئے .

یہ اعتراض ہوسکتا ہے کہ آج ہم کسی کو چنتے ہیں' کل اسے واپس بلاتے ہیں' پرسوں دوسرے کو چنتے ہیں اور ترسوں اسے واپس بلاتے ہیں. اِسطرح چناؤ جمہوریت اور لوک شاہی ایک کھیل اور مذاق بن کر رہ جاتی ہے . اس لئے جنتا کو اپنے نمائندے چننے کا ادھیکار دیا جا سکتا ہے لیکن جنتا جب چاہے اُسے اپنے نمائندے واپس بلانے کا ادھیکار نہیں دیا جا سکتا .

کسی جگ میں انسان کو اپنے نمائندے چننے کا بھی ادھیکار پراپت نہیں تھا. اس جگ میں ساری راج شکتی صرف ایک شخص—راجا—کے ہاتھ میں ہوتی تھی اور اُسے ایشور کا اوتار سمجھا جاتا تھا . جب دنیا آگے بڑھی اور جنتا اپنے نمائندے چننے کا ادھیکار مانگنے لگی تو اس مانگ کا مذاق اُڑایا گیا اور اس ادھیکار کے مانگنے والوں کو جیلوں میں ڈالا گیا اور گولیوں سے اُڑایا گیا . ایک عرصے تک اپنے نمائندے چن کر بھیجنے کی بات کو ناممکن مانا گیا . لیکن جگ کو بدلنا تھا اور وہ بدلا . شہری آزادیاں' ووٹ' پریس اور پارٹیاں نئے جگ کی دین ہیں جن سے جنتا نے اپنے نمائندے چننے کا ادھیکار حاصل کیا ہے اور اس پر عمل ہونا ممکن ہوگیا ہے . اب دنیا اور آگے بڑھی ہے اور پونجی وادی جگ سے نئے جن وادی جگ نے جنم لیا ہے . جن دیسوں میں سچا جن وادی جگ شروع ہوچکا ہے وہاں جنتا کو نہ صرف اپنے نمائندے چننے بلکہ انہیں واپس بلانے کا ادھیکار بھی مل گیا ہے .

برطانیہ' امریکہ اور فرانس وغیرہ میں پونجی وادی سرکاریں قائم ہیں . وہاں جنتا کو صرف اپنے نمائندے چننے کا ادھیکار ہے' اُنہیں واپس بلانے کا ادھیکار نہیں. اِسکے خلاف دنیا کے لگ بھگ آدھے نقشے پر کچھ ایسے دیس دکھائی دیتے ہیں جہاں سچی جن وادی سرکاریں بن گئی ہیں'

नहीं है. कहने को कहा जाता है कि जनता की सरकार, जनता की मरज़ी से, जनता की भलाई के लिये काम करेगी. लेकिन जनता के चुने हुए लोगों की सरकारें भी जनता की मरज़ी के ख़िलाफ़ काम करती हैं. शहरी आज़ादियों पर पाबन्दियां लगाती हैं, जनता को उसकी मरज़ी के ख़िलाफ़ लड़ाई में झोंक देती हैं और कलचर और तहज़ीब को तबाह करती हैं.

बात यह है कि नुमाइन्दे चुनने के लिये वोट का अधिकार मिल जाने से ही हकूमत की असल ताक़त, जिसे सावरेन्टी कहते हैं, चुनने वालों के हाथ में नहीं बल्कि चुने हुए लोगों के हाथ में रहती है. वह जैसे चाहें उसे इस्तेमाल करते हैं. एक बार चुने जाने के बाद जनता का उन पर कोई दबाव नहीं रहता और वह दूसरे चुनाव तक अपनी मन मानी करते रहते हैं.

मिसाल के तौर पर हमारे देस में अब जो चुनाव होने जा रहा है दूसरा चुनाव इसके पांच साल बाद होगा और इस होने वाले चुनाव के वोट तीन जनवरी की शाम तक पड़ेंगे. इस चुनाव में कोई आदमी अपने आप को वोटरों के सामने उम्मीदवार के तौर पर पेश करता है और सच्चे दिल से और लच्छेदार भाशा में कहता है कि अगर आप लोग मुझे अपना नुमाइन्दा चुन देंगे तो आइन्दा पांच साल में मैं लोगों के रोज़गार और तालीम का प्रबन्ध करूंगा, उजड़े हुओं को बसाऊंगा, समाजी चोरी नहीं होने दूँगा और देस के काम धंदों को तरक़्क़ी देने के लिये जितनी भी अच्छी अच्छी योजनाएं आज तक बनाई गई हैं उन्हें अमल में लाऊंगा वग़ैरा वग़ैरा.

तीन जनवरी की शाम तक वोटरों के हाथ में असल ताक़त है वह जिसे चाहें चुन सकते हैं और वह उस आदमी को अपना नुमाइन्दा चुन लेते हैं. लेकिन चार जनवरी की सुबह को लोगों को एक दम मालूम होता है कि यह आदमी जितने वादे करता था उनमें से एक भी पूरा नहीं होगा क्यों कि यह ग़रीब जनता के दुश्मनों पूँजीपतियों और समाजी चोरों के एक गिरोह से मिला है. यह गिरोह चीनी और बनस्पति घी के कारख़ानों का मालिक है और चुनाव में इस आदमी को कामयाब बनाने के लिये उन लोगों ने रुपया लगाया था. अब वोटर कुछ नहीं कर सकते. वह अपना गला उसके हाथ में दे बैठे हैं और वह पांच साल तक ज़रूर उन का हाकिम रहेगा. जनता को लूटेगा, लुटवाएगा और लोगों को भूका मारेगा. पांच साल बाद जब फिर चुनाव आयंगे तो उसका कोई दूसरा भाई बन्द जो कभी कभी चोर बाज़ारी के ख़िलाफ़ भाशन भी करता रहा है लोगों से फिर वही वादे करेगा और मेम्बर या हाकिम बन जायगा और चुनाव के बाद यह भेद खुलेगा कि यह

ہیں ہے. کہنے کو کہا جاتا ہے کہ جنتا کی سرکار، جنتا
کی مرضی سے جنتا کی بھلائی کے لئے کام کرے گی. لیکن
جنتا کے چنے ہوئے لوگوں کی سرکاریں بھی جنتا کی
مرضی کے خلاف کام کرتی ہیں. شہری آزادیوں پر پابندیاں
لگاتی ہیں، جنتا کو اسکی مرضی کے خلاف لڑائی میں
جھونک دیتی ہیں اور کلچر اور تہذیب کو تباہ کرتی
ہیں.

بات یہ ہے کہ نمائندے چننے کے لئے ووٹ کا ادھیکار
مل جانے سے ہی حکومت کی اصل طاقت، جسے ساورنٹی
کہتے ہیں، چننے والوں کے ہاتھ میں نہیں بلکہ چنے
ہوئے لوگوں کے ہاتھ میں رہتی ہے. وہ جیسے چاہیں
اسے استعمال کرتے ہیں. ایک بار چنے جانے کے بعد
جنتا کا ان پر کوئی دباؤ نہیں رہتا اور وہ دوسرے چناؤ
تک اپنی من مانی کرتے رہتے ہیں.

مثال کے طور پر ہمارے دیس میں اب جو چناؤ
ہونے جارہا ہے دوسرا چناؤ اسکے پانچ سال بعد ہوگا اور
اس ہونے والے چناؤ کے ووٹ تین جنوری کی شام تک
پڑیں گے. اس چناؤ میں کوئی آدمی اپنے آپ کو ووٹروں
کے سامنے امیدوار کے طور پر پیش کرتا ہے اور سچے دل سے
اور لچھے دار بھاشا میں کہتا ہے کہ اگر آپ لوگ مجھے
اپنا نمائندہ چن دیں گے تو آئندہ پانچ سال میں میں
لوگوں کے روزگار اور تعلیم کا پربندھ کروں گا، اجڑے ہوؤں
کو بساؤں گا، سماجی چوری نہیں ہونے دوں گا اور دیس
کے کام دھندوں کو ترقی دینے کے لئے جتنی بھی اچھی
اچھی یوجنائیں آج تک بنائی گئی ہیں انہیں عمل
میں لاؤں گا وغیرہ وغیرہ.

تین جنوری کی شام تک ووٹروں کے ہاتھ میں اصل
طاقت ہے. وہ جسے چاہیں چن سکتے ہیں اور وہ اس
آدمی کو اپنا نمائندہ چن لیتے ہیں. لیکن چار جنوری
کی صبح کو لوگوں کو ایک دم معلوم ہوتا ہے کہ یہ آدمی
جتنے وعدے کرتا تھا ان میں سے ایک بھی پورا نہیں
ہوگا کیونکہ یہ غریب جنتا کے دشمنوں پونجی پتیوں اور
سماجی چوروں کے ایک گروہ سے ملا ہے. یہ گروہ چینی
اور بنسپتی گھی کے کارخانوں کا مالک ہے اور چناؤ میں
اس آدمی کو کامیاب بنانے کے لئے ان لوگوں نے روپیہ لگایا
تھا. اب ووٹر کچھ نہیں کرسکتے. وہ اپنا گلا اس کے ہاتھ
میں دے بیٹھے ہیں اور وہ پانچ سال تک ضرور ان کا حاکم
رہے گا. جنتا کو لوٹے گا، لٹوائیگا اور لوگوں کو بھوکا مارے گا.
پانچ سال بعد جب پھر چناؤ آئیں گے تو اس کا کوئی
دوسرا بھائی بند جو کبھی کبھی چور بازاری کے خلاف بھاشن
بھی کرتا رہا ہے لوگوں سے پھر وہی وعدے کرے گا اور ممبر
یا حاکم بن جائیگا. اور چناؤ کے بعد یہ بھید کھلے گا کہ یہ

इनसान को—चाहे वह किसी भी धर्म या फ़िरक़े का हो, आस्तिक हो या नास्तिक—ज़िन्दगी के बुनियादी हक़ूक़ या अधिकार हासिल हों. इन अधिकारों में दो बातें ज़रूरी हैं—

(1) हर इनसान को अच्छा भोजन और मकान मिले ताकि वह अपने शरीर को तन्दुरुस्त रख सके और मेंह, आंधी और धूप से बचा सके और काम करने के बाद उसे आराम करने की सहूलियत हो.

(2) हर इनसान को ख़ुद इलमी और कलचरी तरक़्क़ी करने और क़ौम की इलमी और कलचरी तरक़्क़ी में हिस्सा लेने का मौक़ा मिले.

इनसान दूसरे जानदारों की तरह सिर्फ़ पेट भर कर ही सन्तुश्ट नहीं रहता. उसकी ज़िन्दगी का एक इलमी और कलचरी पहलू भी है. वह सोचता है, अपने ज्ञान को आगे बढ़ाता है और उस ज्ञान के ज़रिये दुनिया को समझने और सुन्दर बनाने की कोशिश करता है. रामायन, महाभारत जैसी किताबें, अच्छी अच्छी कहानियां, तसवीरें और हमारा ताजमहल इस ज्ञान और सुन्दरता के रूप हैं. जितना जितना यह ज्ञान बढ़ता है उतना उतना ही आदमी का आत्म सम्मान या ख़ुद्दारी बढ़ती है और अपनी शक्ति पर भरोसा पैदा होता है. आज का इनसान यह बात अच्छी तरह जानता है कि वह अपनी मेहनत और कोशिश से अज्ञान, अंध विश्वास, तअस्सुब, हटधर्मी और हकूमतों की लड़ाइयां ख़त्म करके अपने जीवन को सुखी और शानदार बना सकता है, बशर्तेकि उसे इसका मौक़ा मिले. जब हम यह मांग करते हैं कि जनता के लिये रोटी और अधिकार चाहिये तो इस का मतलब वह सारे साधन जुटाना होता है जो इनसान को इनसान बनाते हैं. इसमें रोज़गार और मकान के अलावा सब के लिये तालीम, बोलने, लिखने और सोचने का हक़ भी शामिल होता है.

किसी सरकार के होते हुए अगर जनता की बड़ी तादाद भूकी और अनपढ़ रहती है, उसे लिखने, पढ़ने, सोचने और मिलने जुलने की आज़ादी हासिल नहीं तो वह सरकार जमहूरी या जनवादी नहीं हो सकती. फिर भूकी जनता उसे अपना सहयोग नहीं देती और उसे बदलने की कोशिश करती है. सरकार से इन सब बातों की गारन्टी लेने के लिये ही इनसान ने सदियों की कोशिशों के बाद वोट का अधिकार प्राप्त किया है. इसी लिये हर जमहूरी, जनवादी या लोकशाही विधान में लिखा रहता है कि सरकार सब के लिये रोज़गार और तालीम का प्रबन्ध करेगी और अपनी कलचर को आगे बढ़ाने के लिये जनता को शहरीआज़ादियां हासिल होंगी.

लेकिन तजरबे से इनसान ने यह भी समझ लिया है कि सिर्फ़ विधान में इन बातों का लिखा रहना ही काफ़ी

انسان کو—چاہے وہ کسی بھی دھرم یا فرقے کا ہو، آستک ہو یا ناستک — زندگی کے بنیادی حقوق یا ادھیکار حاصل ہوں۔ ان ادھیکاروں میں دو باتیں ضروری ہیں —

(1) ہر انسان کو اچھا بھوجن اور مکان ملے تاکہ وہ اپنے شریر کو تندرست رکھ سکے اور مینھہ، آندھی اور دھوپ سے بچا سکے اور کام کرنے کے بعد اُسے آرام کرنے کی سہولیت ہو۔

(2) ہر انسان کو خود علمی اور کلچری ترقی کرنے اور قوم کی علمی اور کلچری ترقی میں حصہ لینے کا موقع ملے۔

انسان دوسرے جانداروں کی طرح صرف پیٹ بھر کر ہی سنتشٹ نہیں رہتا۔ اسکی زندگی کا ایک علمی اور کلچری پہلو بھی ہے۔ وہ سوچتا ہے، اپنے گیان کو آگے بڑھاتا ہے اور اس گیان کے ذریعے دنیا کو سمجھنے اور سندر بنانے کی کوشش کرتا ہے۔ رامائن، مہابھارت جیسی کتابیں، اچھی اچھی کہانیاں، تصویریں اور ہمارا تاج محل اس گیان اور سندرتا کے روپ ہیں۔ جتنا جتنا یہ گیان بڑھتا ہے اتنا اتنا ہی آدمی کا آتم سمان یا خود داری بڑھتی ہے اور اپنی شکتی پر بھروسہ پیدا ہوتا ہے۔ آج کا انسان یہ بات اچھی طرح جانتا ہے کہ وہ اپنی محنت اور کوشش سے اگیان، اندھ وشواس، تعصب، ہٹ دھرمی اور حکومتوں کی لڑائیاں ختم کرکے اپنے جیون کو سکھی اور شاندار بنا سکتا ہے، بشرطیکہ اُسے اِسکا موقع ملے۔

جب ہم یہ مانگ کرتے ہیں کہ جنتا کے لئے روٹی اور ادھیکار چاہئے تو اِس کا مطلب وہ سارے سادھن جٹانا ہوتا ہے جو انسان کو انسان بناتے ہیں۔ اِس میں روزگار اور مکان کے علاوہ سب کے لئے تعلیم، بولنے، لکھنے اور سوچنے کا حق بھی شامل ہوتا ہے۔

کسی سرکار کے ہوتے ہوئے اگر جنتا کی بڑی تعداد بھوکی اور ان پڑھ رہتی ہے، اُسے لکھنے، پڑھنے، سوچنے اور ملنے جلنے کی آزادی حاصل نہیں تو وہ سرکار جمہوری یا جن وادی نہیں ہوسکتی۔ پھر بھوکی جنتا اُسے اپنا سہیوگ نہیں دیتی اور اُسے بدلنے کی کوشش کرتی ہے۔ سرکار سے ان سب باتوں کی گارنٹی لینے کے لئے ہی انسان نے صدیوں کی کوششوں کے بعد ووٹ کا ادھیکار پراپت کیا ہے۔ اِسی لئے ہر جمہوری، جن وادی یا لوک شاہی ودھان میں لکھا رہتا ہے کہ سرکار سب کے لئے روزگار اور تعلیم کا پربندھ کرے گی اور اپنی کلچر کو آگے بڑھانے کے لئے جنتا کو شہری آزادیاں حاصل ہوں گی۔

لیکن تجربے سے انسان نے یہ بھی سمجھ لیا ہے کہ صرف ودھان میں اُن باتوں کا لکھا رہنا ہی کافی

तो सुनो. हर एक आदमी के दो नाम होते हैं. एक वह जिससे दुनिया उसे बुलाती है या पहचानती है और दूसरा वह जिससे खुदा उसे बुलाता है और पहचानता है. यह दूसरा नाम ही सच्चा नाम है. इनसान जो प्रार्थना पूजा करता है वह सिर्फ इसलिये ही कि किसी शुभ घड़ी में वह प्रभू को अपने को बुलाता सुन ले और इसी तरह अपना सच्चा नाम जान ले. हर एक के लिये खुदा ने एक खास नाम रक्खा हुआ है जैसे हर एक घर में मां बाप अपने बच्चों को अलग अलग नाम से बुलाते हैं. दुनिया के लोग अकसर नाम पाने या करने की दौड़ धूप में लगे रहते हैं. क्या ही अच्छा हो अगर वह अपना सच्चा नाम पाने या जानने के लिये रात दिन तड़पें. मगर औरों से मुझे क्या मतलब. मुझे तो अपना नाम तलाश करना है और इसी तलाश के सिलसिले में ही कभी कभी मैं यहाँ इस समुन्दर के किनारे अकेला आधी रात गुजर जाने के बाद आया करता हूँ. आज तक तो मुझे यहां इस वक्त कोई नहीं मिला. मगर मालूम नहीं तुम कहां से आज यहाँ टपक पड़े. क्या तुम भी अपने सच्चे नाम की तलाश में मेरी तरह इधरउधर भटकते रहते हो ?"

मैं कुछ जवाब न दे सका. सिर्फ मेरी दोनों आंखों में से आँसू छल छल बहने लगे और जब मेरी आंखें धुल कर कुछ साफ हो गईं तो मैंने आसमान के तारों की तरफ ताका और पूछा—"भला तुम ही मेरा सच्चा नाम बता दो."

سنو . هر ایک آدمی کے دو نام هوتے هیں . ایک
جس سے دنیا اُسے بلاتی هے یا پہچانتی هے اور دوسرا
جس سے خدا اُسے بلاتا هے اور پہچانتا هے . یہ دوسرا نام
سچا نام هے . انسان جو پرارتهنا پوجا کرتا هے وہ صرف
لئے هی کہ کسی شبھ گهڑی میں وہ پربھو کو اپنے کو بلاتا
لے اور اِسی طرح اپنا سچا نام جان لے . هر ایک کے
خدا نے ایک خاص نام رکھا هوا هے جیسے هر ایک گهر
ماں باپ اپنے بچوں کو الگ الگ نام سے بلاتے هیں .
یا کے لوگ اکثر نام پانے یا کرنے کی دوڑ دهوپ میں لگے
هیں . کیا هی اچها هو اگر وہ اپنا سچا نام پانے یا
ننے کے لئے رات دن تڑپیں . مگر اوروں سے مجھے کیا
طلب . مجھے تو اپنا نام تلاش کرنا هے اور اسی تلاش
سلسلے میں هی کبھی کبھی میں یہاں اس سمندر
کنارے اکیلا آدهی رات گزر جانے کے بعد آیا کرتا هوں .
تک تو مجھے یہاں اِس وقت کوئی نہیں ملا . مگر
علوم نہیں تم کہاں سے آج یہاں ٹپک پڑے . کیا تم بهی
سچے نام کی تلاش میں میری طرح اِدهر اُدهر بهٹکتے
تے هو ؟"

میں کچھ جواب نہ دے سکا . صرف میری دونوں
کهوں میں سے آنسو چھل چھل بہنے لگے اور جب
میری آنکھیں دهل کر کچھ صاف هوگئیں تو میں نے
سمان کے تاروں کی طرف تاکا اور پوچھا—" بهلا تم هی
میرا سچا نام بتا دو ."

चुनाव और जनता

(भाई हंसराज 'रहबर')

बड़े इन्तजार के बाद सन 1952 के शुरू में चुनाव होने का फैसला हो गया. जैसे जैसे चुनाव नजदीक आ रहे हैं नई और पुरानी पारटियां मैदान में उतर रही हैं और अपने अपने एलेक्शन मैनीफेस्टो छाप रही हैं. एलेक्शन मैनीफेस्टो क्या चीज है और जनता को उसे किस निगाह से देखना चाहिये ? इन दो बातों पर विचार करने के बाद ही आदमी अपने वोट का सही इस्तेमाल कर सकता है.

जमहूरियत या लोकशाही का मोटे तौर पर मतलब यह है कि जनता की सरकार, जनता की मरजी से जनता की भलाई के लिये काम करे और उस सरकार के रहते हर

چناؤ اور جنتا

(بهائی هنسراج 'رہبر')

بڑے انتظار کے بعد سن 1952 کے شروع میں چناؤ
ہونے کا فیصلہ هوگیا. جیسے جیسے چناؤ نزدیک آرهے هیں
نئی اور پرانی پارٹیاں میدان میں اتر رهی هیں اور
اپنے اپنے الیکشن مینی فیسٹو چھاپ رهی هیں . الیکشن
مینی فیسٹو کیا چیز هے اور جنتا کو اسے کس نگاہ سے
دیکهنا چاهئے ؟ اِن دو باتوں پر وچار کرنے کے بعد هی
آدمی اپنے ووٹ کا صحیح استعمال کرسکتا هے .

جمہوریت یا لوک شاهی کا موٹے طور پر مطلب یہ
هے کہ جنتا کی سرکار، جنتا کی مرضی سے جنتا کی
بهلائی کے لئے کام کرے اور اُس سرکار کے رهتے هر

छोड़ बाढ़ ज़रा देखो तो, सुख की फ़सल उगादी
तू पक्का एकेश्वर वादी
रहा एक, है एक, यही तय
उसी एक की सदा रही जय
वही प्रगट होता होता लय
प्रानी में कन कन में जगके, उस ही की आबादी
तू पक्का एकेश्वर वादी

—भगवानदीन

सूफ़ियों की सोहबत में

(4)

(भाई गु. म.)

एक दफ़ा समुन्दर के किनारे मैं अकेला सैर कर रहा था. रात बहुत बीत चुकी थी. क़रीब क़रीब सब के सब लोग, जो वहां सैर करने आए थे, अपने अपने घर वापस चले गए थे. एकान्त में बैठकर मैं आनन्द लूट रहा था कि मालूम नहीं कहां से एक फ़क़ीर, जिसने मैले कुचैले कपड़े पहन रक्खे थे, मेरे सामने आकर खड़ा हो गया. उसे देख कर मुझे बड़ी हैरानी हुई, क्योंकि उस वक़्त समुन्दर का किनारा बिलकुल ख़ाली था. तो यह फ़क़ीर कहां से आ गए? मगर इस सवाल का तसल्लीबख़्श जवाब उस वक़्त मैं अपने आपको न दे सका. फिर उनकी इज़्ज़त करने की ख़ातिर मैंने अपने दोनों हाथ जोड़े और सर झुकाया. फिर मैंने उनसे बड़े अदब के साथ उनका नाम पूछा.

"मेरा नाम ?" उन्होंने मेरा सवाल दोहराते हुए कहा—'मैं ख़ुद वह नहीं जानता, तो तुम्हें क्या बतलाऊं ?"

"आपने क्या फ़रमाया ? मैं आपके कहने का मतलब कुछ समझा नहीं." मैंने नम्रता से कहा.

उन्होंने जवाब दिया—"मैं ख़ुद भी तो जो कुछ तुम्हें कह रहा हूँ उसका पूरा पूरा मतलब बड़ी मुद्दत तक नहीं समझ सका था. मगर हाल ही में एक ख़ुदा के बन्दे ने इसका मतलब मुझे समझाया है और तब से मैं दिन रात अपने नाम की तलाश में इधर उधर भटकता हूँ."

"तो क्या मेहरबानी करके आप मुझे भी नाम का राज़ समझाएँगे ?"

"क्यों नहीं." उन्होंने जवाब में कहा—"क्योंकि जो कुछ एक ख़ुदा का बन्दा कहता है वह सब के लिये होता है.

چھوڑو ڈاڑھ ذرا دیکھو تو، سکھ کی فصل اگا دی
تو پکا ایکیشور وادی
رہا ’ایک‘ ہے ’ایک‘ یہی طے
اُسی ایک کی سدا رہی جے
وہی پرگٹ ہوتا ہوتا لے
پرانی میں کن کن میں جگ کے، اُس ہی کی آبادی
تو پکا ایکیشور وادی

—بھگوان دین

صوفیوں کی صحبت میں

(4)

(بھائی گ. م.)

ایک دفعہ سمندر کے کنارے میں اکیلا سیر کر رہا تھا. رات بہت بیت چکی تھی. قریب قریب سب کے سب لوگ، جو وہاں سیر کرنے آئے تھے، اپنے اپنے گھر واپس چلے گئے تھے. ایکانت میں بیٹھ کر میں آنند لوٹ رہا تھا کہ معلوم نہیں کہاں سے ایک فقیر، جس نے میلے کچیلے کپڑے پہن رکھے تھے، میرے سامنے آکر کھڑا ہوگیا. اُسے دیکھکر مجھے بڑی حیرانی ہوئی. کیونکہ اس وقت سمندر کا کنارا بالکل خالی تھا. تو یہ فقیر کہاں سے آگئے؟ مگر اس سوال کا تسلی بخش جواب اُس وقت میں اپنے آپ کو نہ دے سکا. پھر ان کی عزت کرنے کی خاطر میں نے اپنے دونوں ہاتھ جوڑے اور سر جھکایا. پھر میں نے ان سے بڑے ادب کے ساتھ اُن کا نام پوچھا.

" میرا نام؟ " اُنہوں نے میرا سوال دوہراتے ہوئے کہا — " میں خود وہ نہیں جانتا، تو تمہیں کیا بتلاؤں ؟ "

" آپ نے کیا فرمایا ؟ میں آپ کے کہنے کا مطلب کچھ سمجھا نہیں." میں نے نمرتا سے کہا.

اُنہوں نے جواب دیا —. " میں خود بھی تو جو کچھ تمہیں کہہ رہا ہوں اُس کا پورا پورا مطلب بڑی مدت تک نہیں سمجھ سکا تھا. مگر حال ہی میں ایک خدا کے بندے نے اس کا مطلب مجھے سمجھایا ہے اور تب سے میں دن رات اپنے نام کی تلاش میں اِدھر اُدھر بھٹکتا ہوں."

" تو کیا مہربانی کرکے آپ مجھے بھی نام کا راز سمجھا دیںگے ؟ "

" کیوں نہیں." اُنہوں نے جواب میں کہا — " کیوں کہ جو کچھ ایک خدا کا بندہ کہتا ہے وہ سب کے لئے ہوتا ہے.

क्या इन्हीं से पेट भरेंगे, पोसेंगे आज़ादी
तू पक्का एकेश्वर वादी

भाई भाई भला लड़ें क्यों ?
कोट, कचहरी, कीच सड़ें क्यों ?
पंचों के भी पाँव पड़ें क्यों ?
प्रेम प्रीत से बाँटें खाएँ, सस्ती सीख सिखा दी
तू पक्का एकेश्वर वादी

कहीं बड़े हैं मेहतर भाई
कहीं बड़े हैं धोबी नाई
कहीं बड़ी बेशक बनियाई
कहीं पुरोहिताई ठकुराई, जायज़ सब में शादी
तू पक्का एकेश्वर वादी

वली बनी, हाँ, रहे अमीरी
सेवक बनकर रहे वज़ीरी
सीख सिखाने रहे फ़क़ीरी
चूसेगा फिर कौन किसी को, रोबी ऐंठ मिटा दी
तू पक्का एकेश्वर वादी

दारू सूझ बूझ खा जाती
सूझ बूझ ईश्वर से आती
यों ईश्वर की इज़्ज़त जाती
दारू पी पी रब को भूले, फैलाते बरबादी
तू पक्का एकेश्वर वादी

बैठे बैठे करें कमाई
ईश्वर की फिर कौन बड़ाई
ब्याज सूद में यही बुराई
तन का, तेरा, तोड़ ताव तब नर बन जाता मादी
तू पक्का एकेश्वर वादी

तोप बनी खाकर 'तू तेरा'
करे तमंचा तेरा डेरा
तेग़ तीर का कम न तरेरा
जो भी इनको मेट मिटाए, अगला वह ही हादी
तू पक्का एकेश्वर वादी

अपनी धुन का था तू धुनिया
सौ गुनियों का था तू गुनिया
बोला, राम संभालें दुनिया
बदबख़्तो क्यों मरे जा रहे, रो रो नानी दादी
तू पक्का एकेश्वर वादी

अब न गढ़ो ऐटम बम प्यारो
जर्म जला इनसान उबारो
काफ़ी वह, हिम्मत मत हारो

वली ट्रस्टी = जर्म = कीटाणु. हादी = हिदायत देने वाला, उपदेश देने वाला.

کیا انہیں سے پیٹ بھریں گے' پوسیں گے آزادی
تو پکا ایکیشور وادی

بھائی بھائی بھلا لڑیں کیوں ؟
کوٹ' کچہری' کیچ سڑیں کیوں ؟
پنچوں کے بھی پاؤں پڑیں کیوں ؟
پریم پریت سے بانٹیں کھائیں' سستی سیکھ سکھادی
تو پکا ایکیشور وادی

کہیں بڑے ھیں مہتر بھائی
کہیں بڑے ھیں دھوبی نائی
کہیں بڑی بے شک بنیائی
کہیں پروھتائی ٹھکرائی' جائز سب میں شادی
تو پکا ایکیشور وادی

ولی بنی' ھاں' رہے امیری
سیوک بن کر رہے وزیری
سیکھ سکھانے رہے فقیری
چوسے گا پھر کون کسی کو' رعبی اینٹھ مٹادی
تو پکا ایکیشور وادی

دارو سوجھ بوجھ کھا جاتی'
سوجھ بوجھ ایشور سے آتی'
یوں ایشور کی عزت جاتی'
دارو پی پی رب کو بھولے' پھیلاتے بربادی
تو پکا ایکیشور وادی

بیٹھے بیٹھے کریں کمائی
ایشور کی پھر کون بڑھائی
بیاج سود میں یہی برائی
تن کا' تیرا' توڑتاؤ تب نر بن جاتا مادی
تو پکا ایکیشور وادی

توپ بنی کھاکر 'تو تیرا'
کرے طمنچہ تیرا ڈیرا
تیغ تیر کا کم نہ تریرا
جو بھی اِن کو میٹ مٹائے' اگلا وہ ھی ھادی
تو پکا ایکیشور وادی

اپنی دھن کا تھا تو دھنیا
سو گنیوں کا تھا تو گنیا
بولا' رام سنبھالیں دنیا
بدبختو کیوں مرے جا رہے' رو رو نانی دادی
تو پکا ایکیشور وادی

اب نہ گڑھو ایٹم بم پیارو
جرم جلا انسان ابھارو
کافی وہ' ھمت مت ھارو

ولی = ٹرسٹی. = جرم = کیٹانو . ھادی = ھدایت دینے والا' اپدیش دینے والا .

पाया. दाढ़ी वालों की दाढ़ी भी नाम की है. दोनों कल्ले तो साफ़ होते हैं सिर्फ़ ठुड्डी और दोनों मूँछों के बीच में फ्रेंच नुमा बराय नाम ख़शख़शी बाल कुछ इस तरह के होते हैं कि दूर से चेहरा बिलकुल साफ़ मालूम होता है. मगर पास से कुछ बाल मालूम होते हैं, ऐसे जैसे दो तीन दिन से किसी ने शेव न किया हो. अज़हर के हिन्दुस्तानी तालिब इल्मों में दो हिन्दुस्तानी तालिबइल्म ऐसे मिले जिनकी दाढ़ियाँ अच्छी खासी हैं. इन दोनों ने शिकायत की कि हमको यहाँ के लोग कंजूस और पादरी कहकर चिढ़ाते हैं.

16 अगस्त '51 आपका भाई—

अब्दुल्ला मिस्री

(बाक़ी फिर)

बापू

तू पक्का एकेश्वर वादी
एक राम है नाम उसी के रब, रहमान, ख़ुदा, ब्रह्मादी
तू पक्का एकेश्वर वादी
सिर्फ़ अरब का नहीं ख़ुदा है
नहीं हिन्द का राम जुदा है
रूप एक मंज़ूरशुदा है
अब इसमें झगड़ा ही क्या है, सीधी राह बतादी
तू पक्का एकेश्वर वादी
एक ख़ुदा के हम सब बन्दे
जात पात, मत, मज़हब, फन्दे
फाँस लड़ाने के ढब धन्दे
हम न फँसें इनमें बन अंधे, खड़तल बात जतादी
तू पक्का एकेश्वर वादी
काम न मिलने के सब झगड़े
मैं उसको वह मुझको रगड़े
हुए मिलों से लूले लंगड़े
काम बहुत, हम कातें, पहनें, हाथ बनी ही खादी
तू पक्का एकेश्वर वादी
हाथ राम ने इसी लिये तो
हमें दया कर दान दिये दो
मरें भले, पर, अगर जियें तो

پایا۔ داڑھی والوں کی داڑھی بھی نام کی ہے۔ دونوں گلے تو صاف ہوتے ہیں صرف ٹھڈی اور دونوں مونچھوں کے بیچ میں فرنچ نما برائے نام خشخشی بال کچھ اس طرح کے ہوتے ہیں کہ دور سے چہرہ بالکل صاف معلوم ہوتا ہے۔ مگر پاس سے کچھ بال معلوم ہوتے ہیں۔ ایسے جیسے دو تین دن سے کسی نے شیو نہ کیا ہو۔ ازہر کے ہندستانی طالب علموں میں دو ہندستانی طالب علم ایسے ملے جنکی داڑھیاں اچھی خاصی ہیں۔ ان دونوں نے شکایت کی کہ ہمکو یہاں کے لوگ کنجوس اور پادری کہہ کر چڑھاتے ہیں۔

15 اگست '51 آپکا بھائی

عبداللہ مصری

(باقی پھر)

باپو

تو پکا ایکیشور وادی
ایک رام ہے نام اُسی کے رب' رحمان' خدا' برہمادی
تو پکا ایکیشور وادی
صرف عرب کا نہیں خدا ہے
نہیں ہند کا رام جدا ہے
روپ ایک منظور شدا ہے
اب اس میں جھگڑا ہی کیا ہے' سودھی راہ بتادی
تو پکا ایکیشور وادی
ایک خدا کے ہم سب بندے
'جات پات' مت' مذہب' پھندے
پھانس لڑانے کے ڈھب دھندے
ہم نہ پھنسیں ان میں بن اندھے' کھڑتل بات جتادی
تو پکا ایکیشور وادی
کام نہ ملنے کے سب جھگڑے
میں اس کو وہ مجھکو رگڑے
ہوئے ملوں سے لولے لنگڑے
کام بہت' ہم کاتیں' پہنیں' ہاتھ بنی ہی کھادی
تو پکا ایکیشور وادی
ہاتھ رام نے اسی لئے تو
ہمیں دیا کر دان دئے دو
مریں بھلے' پر' اگر جئیں تو

अहसास बरतरी (बड़ वहम) और कमतरी (छुट वहम) दोनों तरह के वहम पाए जाते हैं. अहसास बरतरी मज़हबी एतबार से है और अहसास कमतरी माली या आर्थिक एतबार से है. हम मुसलमान हैं और इसलाम सब से अच्छा मज़हब है यह हर मुसलमान का एक फ़ितरी जज़बा (स्वभाविक भावना) है. हर ईसाई, हर यहूदी, हर हिन्दू और हर दूसरे मज़हब का मानने वाला अपने मज़हब के बारे में यही समझता है. लेकिन मिस्र के मुसलमान बावजूद इस विचार में कट्टर होने के दूसरे मज़हबों के लोगों से कोई बैर नहीं रखते बल्कि सब के साथ एक सा मेल जोल रखते हैं.

अहसास कमतरी योरोपियन क़ौमों की ग़ैर मामूली माद्दी तरक्क़ी, ग़ैर मामूली ताक़त, शान शौकत, ठाठ बाट, सज धज और घमंड वग़ैरा की वजह से है. और वह इस कमी को दूर करने के लिये हद दरजा जद्दो जहद और कोशिश कर रहे हैं. उन्होंने काफ़ी तरक्क़ी भी की है. मिस्र आज मिडिल ईस्ट में तुर्की के बाद सब से बढ़ा चढ़ा मुल्क है. मिस्री सरकार की पिछले साल की कुल आमदनी दो अरब इक्यानवे लाख पचास हज़ार यानी कुछ कम तीन अरब रुपया है और ख़र्च तीन अरब तेईस करोड़ है जबकि मिस्र की कुल आबादी दो करोड़ साढ़े बाईस लाख है यानी हमारे सूबा यू. पी. से आधी आबादी है. मगर आमदनी और ख़र्च पाँच गुने से भी ज़ियादा है. इससे मिस्र की आजकल की माली तरक़्क़ी का कुछ अन्दाज़ा हो सकता है. इसके लिये और भी बहुत से आँकड़े दिये जा सकते हैं.

मिस्र के मुसलमानों में इतनी मज़हबी कड़ाई नहीं है जितनी हिन्दुस्तान के मुसलमानों में. मिस्र की औरतें आम तौर पर सैर तफ़रीह, सिनेमा थेटर, जुमा की नमाज़, ख़रीद फ़रोख़्त के लिये बे झिझक बाहर निकलती हैं. ज़ियादा तर देसी लिबास में होती हैं. मगर पढ़ी लिखी औरतें और लड़कियां सब की सब योरोपियन लिबास में बे झिझक निकलती हैं और बे बुरक़ा होती हैं. बुरक़ा वाली औरतों का बुरक़ा भी नाम को होता है. यानी पूरा जिस्म तो उनका ढका होता है पर पिंडलियों तक दोनों पैर, दोनों हाथ और चेहरे के ऊपर का हिस्सा बिलकुल नंगा रहता है. सिर्फ़ नाक के सिरे से लेकर ठुड्डी तक एक हलकी जाली इस तरह की लटकती है कि पूरा चेहरा ज़रा ग़ौर से देखने पर दिखाई देता है.

मिस्री लोग आमतौर पर दाढ़ी और मूँछें मुँडवाते हैं. बड़े बड़े उलमा और मज़हबी पेशवा भी ऐसा ही करते हैं. क़ाहिरा और असकंदरिया की अकसर मस्जिदों के पेश-इमामों और वाइज़ों से भी मैंने ख़ास तौर से मुलाक़ात की. उनमें दो तीन के सिवा सबको क्लीन-शेव्ड (सफ़ा चट)

احساس برتری (بڑوہم) اور کمتری (چھوٹ وہم) دونوں طرح کے وہم پائے جاتے ہیں. احساس برتری مذہبی اعتبار سے ہے اور احساس کمتری مالی یا آرتھک اعتبار سے ہے. ہم مسلمان ہیں اور اسلام سب سے اچھا مذہب ہے یہ ہر مسلمان کا ایک فطری جذبہ (سوابھاوک بھاونا) ہے. ہر عیسائی، ہر یہودی، ہر ہندو اور ہر دوسرے مذہب کا ماننے والا اپنے مذہب کے بارے میں یہی سمجھتا ہے. لیکن مصر کے مسلمان باوجود اس وچار میں کٹر ہونے کے دوسرے مذہبوں کے لوگوں سے کوئی بیر نہیں رکھتے بلکہ سب کے ساتھ ایک سا میل جول رکھتے ہیں.

احساس کمتری یوروپین قوموں کی غیر معمولی مادی ترقی، غیر معمولی طاقت، شان شوکت، ٹھاٹھ باٹ، سج دھج اور گھمنڈ وغیرہ کی وجہ سے ہے. اور وہ اس کمی کو دور کرنے کے لئے حد درجہ جدو جہد اور کوشش کر رہے ہیں. انہوں نے کافی ترقی بھی کی ہے. مصر آج مڈل ایسٹ میں ترکی کے بعد سب سے بڑھا چڑھا ملک ہے. مصری سرکار کی پچھلے سال کی کل آمدنی دو ارب اکیانوے لاکھ پچاس ہزار یعنی کچھ کم تین ارب روپیہ ہے اور خرچ تین ارب تیئس کروڑ ہے جبکہ مصر کی کل آبادی دو کروڑ ساڑھے بائیس لاکھ ہے یعنی ہمارے صوبہ یو. پی. سے آدھی آبادی ہے مگر آمدنی اور خرچ پانچ گنے سے بھی زیادہ ہے. اس سے مصر کی آج کل کی مالی ترقی کا کچھ اندازہ ہو سکتا ہے. اس کے لئے اور بھی بہت سے آنکڑے دیئے جا سکتے ہیں.

مصر کے مسلمانوں میں اتنی مذہبی کڑائی نہیں ہے جتنی ہندستان کے مسلمانوں میں. مصر کی عورتیں عام طور پر سیر تفریح، سنیما تھیٹر، جمعہ کی نماز، خرید فروخت کے لئے بے جھجک باہر نکلتی ہیں. زیادہ تر دیسی لباس میں ہوتی ہیں. مگر پڑھی لکھی عورتیں اور لڑکیاں سب کی سب یوروپین لباس میں بے جھجک نکلتی ہیں اور بے برقعہ ہوتی ہیں. برقعہ والی عورتوں کا برقعہ بھی نام کو ہوتا ہے. یعنی پورا جسم تو ان کا ڈھکا ہوتا ہے پر پنڈلیوں تک دونوں پیر، دونوں ہاتھ اور چہرے کے اوپر کا حصہ بالکل ننگا رہتا ہے. صرف ناک کے سرے سے لیکر ٹھڈی تک ایک ہلکی جالی اس طرح کی لٹکتی ہے کہ پورا چہرا ذرا غور سے دیکھنے پر دکھائی دیتا ہے.

مصری لوگ عام طور پر داڑھی اور مونچھیں منڈواتے ہیں. بڑے بڑے علما اور مذہبی پیشوا بھی ایسا ہی کرتے ہیں. قاہرہ اور اسکندریہ کی اکثر مسجدوں کے پیش اماموں اور واعظوں سے بھی میں نے خاص طور سے ملاقات کی. ان میں دو تین کے سوا سب کو کلین شیوڈ (صفاچٹ)

की ज़रूरत नहीं. और अगर तू ख़ुदा के हुक्म से चलता है तो ठीक ठीक चल और ख़ुदा की मख़लूक़ को तकलीफ़ न दे." इस तारीख़ी ख़त के अलावा हज़रत उमर ने उमरू बिन आस को एक हिदायतनामा लिखा कि इस साल मेले के दिन दरियाए नील के नाम का यह ख़त नील के बीच धारे में छोड़ दिया जाय और मिस्र की तमाम जनता को इतमिनान दिला दिया जाय कि अब न तो दरिया का पानी कम होगा न बाढ़ आयगी. ईश्वर की कृपा से ऐसा ही हुआ. तब से कन्या भेंट की रसम बन्द हो गई. पर नील देवी की आवभगत, मेला ठेला और जशन अब भी हर साल होता है और बड़े ठाट से होता है जिनमें एक से एक नाच गाने, बाजे गाजे, आतशबाज़ियां वग़ैरा सब कुछ होती हैं, बहुत एहतमाम और धूम धाम से होती हैं— सरकारी तौर पर दरियाए नील की सलामी होती है, तोपें दग़ती हैं और इस पूरे मेले का इन्तज़ाम सरकारी ख़र्च से होता है.

मिस्र के पुराने बासियों में कुछ परिन्दों, चरिन्दों, मगर-मच्छ, सांप, सूरज, चांद, सितारों और गऊ की पूजा भी होती थी. परिन्दों में कौए का ख़ास मान था. पत्थर की पुरानी मूर्तियों में आदमी के धड़ और कौए की सी चोंच और सर वाली बहुत सुन्दर मूर्तियां अब भी मिस्र के अजायब घर में कसरत से मौजूद हैं और उनमें पुरानी मीनाकारी के ख़ुश-नुमा नक़श निगार भी ख़ूब चमकते हैं. कौआ मिस्रियों में अक़ल, हुनर और ज्ञान का देवता माना जाता था. पर अब यह सब बिचार पुराने हो गए और आज के मिस्री उन्हें भूल गए.

मिस्र के लोग आम तौर पर बड़े सीधे सादे, अमन पसन्द, नेक, मेहमांनवाज़ और दयावान होते हैं. इनमें आपसी झगड़े बहुत कम होते हैं. धरम करम के मामले में भी किसी से झगड़ा फ़साद नहीं करते. रंग रूप, हसब नसब, छूत छात और भाशा का भी मिस्र में कोई झगड़ा नहीं. न कलचर, तहज़ीब या संस्कृति का कोई झगड़ा है. मिस्र के लोग हर मुल्क, हर रंग और हर नसल के लोगों से मेल जोल रखते हैं और प्रेम करते हैं. बस यहूदियों और अंगरेज़ों से यह लोग नफ़रत करते हैं. मगर इस नफ़रत के कारन मज़हबी, अख़लाक़ी या तहज़ीबी नहीं हैं बल्कि सिर्फ़ सियासी और इक़्तसादी (आर्थिक) हैं. इसके अलावा अलग अलग निजी तौर पर उनके ताल्लुक़ात अंगरेज़ों और यहूदियों से बुरे नहीं हैं.

मिस्र की सरकारी भाशा अरबी है. लेकिन यहाँ के पढ़े लिखे लोग और बहुत से कारबारी बहुत सी ज़बानें जानते हैं. मसलन फ़्रेंच, अंगरेज़ी, ग्रीक, इटालीं, जरमनी वग़ैरा. फ़्रेंच और अंगरेज़ी जानने वाले ज़ियादा हैं. मिस्रियों में

کی ضرورت نہیں. اور اگر تو خدا کے حکم سے چلتا ہے تو ٹھیک ٹھیک چل اور خدا کی مخلوق کو تکلیف نہ دے." اس تاریخی خط کے علاوہ حضرت عمر نے عمرو بن عاص کو ایک ہدایت نامہ لکھا کہ اِس سال میلے کے دن دریائے نیل کے نام کا یہ خط نیل کے بیچ دھارے میں چھوڑ دیا جائے اور مصر کی تمام جنتا کو اطمینان دلا دیا جائے کہ اب نہ تو دریا کا پانی کم ہوگا نہ باڑھ آئے گی. ایشور کی کرپا سے ایسا ہی ہوا. تب سے کنیا بھینٹ کی رسم بند ہوگئی. پر نیل دیوی کی آؤ بھگت، میلا ٹھیلا اور جشن اب بھی ہر سال ہوتا ہے اور بڑے ٹھاٹ سے ہوتا ہے جن میں ایک سے ایک ناچ گانے، باجے گاجے، آتش بازیاں وغیرہ سب کچھ ہوتی ہیں، بہت اہتمام اور دھوم دھام سے ہوتی ہیں — سرکاری طور پر دریائے نیل کی سلامی ہوتی ہے، توپیں دغتی ہیں اور اس پورے میلے کا انتظام سرکاری خرچ سے ہوتا ہے.

مصر کے پرانے باسیوں میں کچھ پرندوں، چرندوں، مگرمچھ، سانپ، سورج، چاند، ستاروں اور گئو کی پوجا بھی ہوتی تھی. پرندوں میں کوے کا خاص مان تھا. پتھر کی پرانی مورتیوں میں آدمی کے دھڑ اور کوے کی سی چونچ اور سر والی بہت سندر مورتیاں اب بھی مصر کے عجائب گھر میں کثرت سے موجود ہیں اور ان میں پرانی مینا کاری کے خوشنما نقش نگار بھی خوب چمکتے ہیں. کوا مصریوں میں عقل، ہنر اور گیان کا دیوتا مانا جاتا تھا. پر اب یہ سب وچار پرانے ہوگئے اور آج کے مصری انہیں بھول گئے.

مصر کے لوگ عام طور پر بڑے سیدھے سادے، امن پسند، نیک، مہماں نواز اور دیاوان ہوتے ہیں. اِن میں آپسی جھگڑے بہت کم ہوتے ہیں. دھرم کرم کے معاملے میں بھی کسی سے جھگڑا فساد نہیں کرتے. رنگ روپ، حسب نسب، چھوت چھات اور بھاشا کا بھی مصر میں کوئی جھگڑا نہیں نہ کلچر، تہذیب یا سنسکرتی کا کوئی جھگڑا ہے. مصر کے لوگ ہر ملک، ہر رنگ اور ہر نسل کے لوگوں سے میل جول رکھتے ہیں اور پریم کرتے ہیں. بس یہودیوں اور انگریزوں سے یہ لوگ نفرت کرتے ہیں. مگر اِس نفرت کے کارن مذہبی، اخلاقی یا تہذیبی نہیں ہیں بلکہ صرف سیاسی اور اقتصادی (آرتھک) ہیں. اِسکے علاوہ الگ الگ نجی طور پر ان کے تعلقات انگریزوں اور یہودیوں سے برے نہیں ہیں.

مصر کی سرکاری بھاشا عربی ہے. لیکن یہاں کے پڑھے لکھے لوگ اور بہت سے کار باری بہت سی زبانیں جانتے ہیں. مثلاً فرنچ، انگریزی، گریک، اِتالی، جرمن وغیرہ. فرنچ اور انگریزی جاننے والے زیادہ ہیں. مصریوں میں

और दरबारी होते थे. फिर बड़े बड़े पंडित और विद्वान. जनता ठट्ठ के ठट्ठ खड़ी राह देखती थी. जब उसके सामने जलूस पहुँचता तब जनता अक़ीदत और श्रद्धा से बेख़ुद हो जाती और जय जय के नारों से फ़िज़ा गूँज जाती. कन्या पर फूलों की बारिश होती. इस तरह मीलों का सफ़र तय करते हुए जब जलूस नील के किनारे पहुँचता तब लोगों का जोश हद से गुज़र जाता. कन्या भी उस वक़्त बहुत ख़ुश होती और फूट फूट कर रोती और चीख़ती भी क्योंकि मौत की घड़ी अब उसके सामने दिखाई देती. महाराजा, बड़ा वज़ीर और पुरोहित तीनों झुक कर कन्या को प्रनाम करते और उसके रथ से उसको बड़े अदब के साथ उतारते. फिर फूलों से सजी हुई एक नाव पर उसे बिठाते. धूप जलाते, मंत्र पढ़ते और नील देवी की पूजा करने के बाद उससे प्रार्थना कराते और कहते—"हे देवी ! हम तुझे अपनी सबसे सुन्दर कन्या भेंट दे रहे हैं. अब तू हम से साल भर ख़ुश रहना. हम सब तेरे सेवक हैं. हमें बाढ़ से बचाना और सूखे से बचाना (यानी हमारे यहाँ पानी की कमी भी न हो और न बाढ़ आए).

"हम अगले साल फिर इसी दिन तुझे अपनी सबसे सुन्दर कन्या पेश करेंगे." यह कह कर वह लोग उस जीती जागती सुन्दर कन्या को नील नदी की मौजों के हवाले कर देते थे और यह दिन मिस्र का सबसे बड़ा ख़ुशी का दिन होता था.

मिस्रियों में यह रिवाज हज़ारों बरस जारी रहा. मिस्र पर रूमी ईसाइयों का क़ब्ज़ा हुआ. रूमियों ने भी इस रसम को क़ायम रखा. फिर रूमियों को अरब मुसलमानों के मुक़ाबले में हार हुई और मिस्र इसलामी अमलदारी में आया. तब हज़रत उमरू बिन आस को जो मिस्र के अरब हाकिम थे इस जीव हत्या के रोकने की फ़िक्र हुई. लेकिन शरीअत की रू से वह जनता की मज़हबी आज़ादी, उनके रहन सहन और रिवाजों पर किसी तरह की पाबन्दी नहीं लगा सकते थे. उन्होंने मिस्र के पंडितों और सरदारों को बुला कर अपने तौर पर समझाया और कहा आप जशन जिस तरह चाहें करें मगर एक जीती जागती निरदोश कन्या को दरिया में न डुबाएँ. उन लोगों ने कहा कि अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो नील देवी ख़फ़ा हो जायगी और हम सब तबाह हो जायंगे. बाढ़ से खेतियां डूब जायंगी या पानी की कमी से सूख जायंगी. उमरू बिन आस ने इन तमाम बातों की तफ़सील मदीना दारुलख़लाफ़त में भेज दी और ख़लीफ़ा से हिदायत मांगी. ख़लीफ़ा हज़रत उमर ने नील नदी के नाम एक ख़त लिखा. ख़त का मज़मून यह था—"यह ख़त मैं अल्लाह के नाम से लिख रहा हूँ जो बड़ा दयालु और दयावान है. ऐ दरियाए नील, मैं तुझ से कहता हूँ तू अगर अपने मन से चलता है तो तेरे चलने

اور درباری ہوتے تھے . پھر بڑے بڑے پنڈت اور ودوان . جنتا ٹھٹھ کے ٹھٹھ کھڑی راہ دیکھتی تھی . جب اس کے سامنے جلوس پہونچتا تب جنتا عقیدت اور شردھا سے بے خود ہوجاتی اور جے جے کے نعروں سے فضا گونج جاتی . کنیا پر پھولوں کی بارش ہوتی . اس طرح میلوں کا سفر طے کرتے ہوئے جب جلوس نیل کے کنارے پہونچتا تب لوگوں کا جوش حد سے گزر جاتا . کنیا بھی اس وقت بہت خوش ہوتی اور پھوٹ پھوٹ کر روتی اور چیختی بھی کیونکہ موت کی گھڑی اب اس کو سامنے دکھائی دیتی . مہا راجا' بڑا وزیر اور پروہت تینوں جھک کر کنیا کو پرنام کرتے اور اس کے رتھ سے اس کو بڑے ادب کے ساتھ اتارتے . پھر پھولوں سے سجی ہوئی ایک ناؤ پر اسے بٹھاتے . دھوپ جلاتے' منتر پڑھتے اور نیل دیوی کی پوجا کرنے کے بعد اس سے پرارتھنا کراتے اور کہتے — " ہے دیوی ! ہم تجھے اپنی سب سے سندر کنیا بھینٹ دے رہے ہیں . اب تو ہم سے سال بھر خوش رہنا . ہم سب تیرے سیوک ہیں . ہمیں باڑھ سے بچانا اور سوکھے سے بچانا (یعنی ہمارے یہاں پانی کی کمی بھی نہ ہو اور نہ باڑھ آئے) .

" ہم اگلے سال پھر اسی دن تجھے اپنی سب سے سندر کنیا پیش کریں گے ." یہ کہکر وہ لوگ اس جیتی جاگتی سندر کنیا کو نیل ندی کی موجوں کے حوالے کر دیتے تھے اور یہ دن مصر کا سب سے بڑا خوشی کا دن ہوتا تھا .

مصریوں میں یہ رواج ہزاروں برس جاری رہا . مصر پر رومی عیسائیوں کا قبضہ ہوا . رومیوں نے بھی اس رسم کو قائم رکھا . پھر رومیوں کو عرب مسلمانوں کے مقابلے میں ہار ہوئی اور مصر اسلامی عملداری میں آیا . تب حضرت عمرو بن عاص کو جو مصر کے عرب حاکم تھے اس جیو ہتیا کے روکنے کی فکر ہوئی . لیکن شریعت کی رو سے وہ جنتا کی مذہبی آزادی' ان کے رہن سہن اور رواجوں پر کسی طرح کی پابندی نہیں لگا سکتے تھے . انہوں نے مصر کے پنڈتوں اور سرداروں کو بلا کر اپنے طور پر سمجھایا اور کہا آپ جشن جس طرح چاہیں کریں مگر ایک جیتی جاگتی نردوش کنیا کو دریا میں نہ ڈبائیں . ان لوگوں نے کہا کہ اگر ہم ایسا نہیں کریں گے تو نیل دیوی خفا ہو جائے گی اور ہم سب تباہ ہوجائیں گے . باڑھ سے کھیتیاں ڈوب جائینگی یا پانی کی کمی سے سوکھ جائیں گی . عمرو بن عاص نے ان تمام باتوں کی تفصیل مدینہ دارالخلافت میں بھیجدی اور خلیفہ سے ہدایت مانگی . خلیفہ حضرت عمر نے نیل ندی کے نام ایک خط لکھا . خط کا مضمون یہ تھا — " یہ خط میں اللہ کے نام سے لکھ رہا ہوں جو بڑا دیالو اور دیاوان ہے . اے دریائے نیل' میں تجھ سے کہتا ہوں تو اگر اپنے من سے چلتا ہے تو تیرے چلنے

में आम थी. मिस्र के पुराने खंडहरों से हज़ारों मूर्तियाँ निकली हैं जो क़ाहिरा के अजायब घर में अब भी मौजूद हैं. बहुत से मंदिर भी टूटे फूटे ज़मीन के नीचे पाए गए हैं और बहुत से फ़िरऔनों के दरबार और उनके ज़माने के साज़ सामान भी मिले हैं जिनके देखने से साफ़ पता चलता है कि मिस्र की पुरानी तहज़ीब और विचार भारत की पुरानी तहज़ीब और विचारों से बहुत कुछ मिलते जुलते थे. ख़ुद अहरामात की कहानी में इसके बहुत से सबूत मिलते हैं. इन अहरामात की तामीर आवागवन के फ़लसफ़े की बिना पर हुई थी. मिस्र के पुराने पंडितों का अक़ीदा था कि आदमी मरता नहीं बल्कि सिर्फ़ क़ालिब यानी शरीर बदल देता है. फिर एक ज़माने के बाद वह उस संसार में फिर से जनम लेता है. जनम लेते वक़्त अगर उसका पुराना क़ालिब किसी तरह महफ़ूज़ रह जाय तो जनम लेने वाला फिर अपनी पहली शान शौकत से जनम लेगा. इसी फ़लसफ़े के कारन बड़े लोगों और राजाओं की लाशें हमेशा तक महफ़ूज़ रखने के लिये बहुत जतन किये गए. ममी तैयार की गईं और पहाड़ ऐसे मक़बरे बनाए गए जो आँधी, पानी, बाढ़ और भूडोल से भी बचे रह सकें. इसमें शक नहीं कि मिस्रियों की यह पुरानी इमारतें जूँ की तूँ अबतक खड़ी हैं और इसी तरह फ़िरऔनों की लाशें भी पाँच पाँच हज़ार बरस से रक्खी हैं. उस ज़माने से इस ज़माने तक मिस्र में बहुत से इनक़लाब हुए, बेशुमार शाहनशाहियतें वजूद में आईं और मिट गईं मगर फ़िरऔन के समय की यह यादगारें अब तक मौजूद हैं.

भारत के लोग जिस तरह गंगा जमना को पवित्र मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं मिस्र के पुराने बासी भी नील नदी को मुक़द्दस (पाक) मानते और उसकी पूजा करते थे. नील देवी को ख़ुश रखने के लिये मिस्री हर साल गरमियों के मौसम में, जब कि नील की बाढ़ का ज़माना होता है, एक बड़ा जशन करते थे. हमारे यहाँ के कुम्भ के मेले की तरह बहुत बड़ा मेला लगता था. पंडित, विद्वान, राजा, परजा सभी हिस्सा लेते थे. बहुत कुछ दान पुन होता था और नहान होता था. तरह तरह की पूजाएँ होती थीं. हीरोग्लीफ़ी लिखावट में लिखे हुए बहुत से श्लोक और मंत्र पढ़े जाते थे, हर साल मिस्र की एक सुन्दर से सुन्दर कन्या पहले से चुन ली जाती थी जो महारानी की तरह बहुत ठाठ बाट और बाजे गाजे के साथ जशन में घुमाई जाती थी. उसको क़ीमती कपड़े और ज़ेवर पहनाए जाते थे. रंगा रंग फूलों के हार उसके गले में डाले जाते थे. उसका बहुत शानदार जलूस निकलता था. जलूस में कन्या तो रथ पर बैठती थी और राजा पैदल उस रथ के आगे आगे सलामी देता हुआ चलता था. राजा के इर्द गिर्द उसके सब मंत्री

میں عام تھی ۔ مصر کے پرانے کھنڈروں سے ہزاروں مورتیاں نکلی ہیں جو قاہرہ کے عجائب گھر میں اب بھی موجود ہیں ۔ بہت سے مندر بھی ٹوٹے پھوٹے زمین کے نیچے پائے گئے ہیں اور بہت سے فرعونوں کے دربار اور انکے زمانے کے سازوسامان بھی ملے ہیں جن کے دیکھنے سے صاف پتہ چلتا ہے کہ مصر کی پرانی تہذیب اور وچار بھارت کی پرانی تہذیب اور وچاروں سے بہت کچھ ملتے جلتے تھے ۔ خود اہرامات کی کہانی میں اس کے بہت سے ثبوت ملتے ہیں ۔ ان اہرامات کی تعمیر آواگون کے فلسفے کی بنا پر ہوئی تھی ۔ مصر کے پرانے پنڈتوں کا عقیدہ تھا کہ آدمی مرتا نہیں بلکہ صرف قالب یعنی شریر بدل دیتا ہے ۔ پھر ایک زمانے کے بعد وہ اس سنسار میں پھر سے جنم لیتا ہے ۔ جنم لیتے وقت اگر اس کا پرانا قالب کسی طرح محفوظ رہ جائے تو جنم لینے والا پھر اپنی پہلی شان شوکت سے جنم لے گا ۔ اسی فلسفے کے کارن بڑے لوگوں اور راجاؤں کی لاشیں ہمیشہ تک محفوظ رکھنے کے لئے بہت جتن کئے گئے ۔ ممی تیار کی گئی اور پہاڑ ایسے مقبرے بنائے گئے جو آندھی پانی' باڑھ اور بھوڈول سے بھی بچے رہ سکے ۔ اس میں شک نہیں کہ مصریوں کی یہ پرانی عمارتیں جوں کی توں ابتک کھڑی ہیں اور اسی طرح فرعونوں کی لاشیں بھی پانچ پانچ ہزار برس سے رکھی ہیں ۔ اس زمانے سے اس زمانے تک مصر میں بہت سے انقلاب ہوئے' بے شمار شاہنشاہیتیں وجود میں آئیں اور مٹ گئیں مگر فرعون کے سمے کی یہ یادگاریں ابتک موجود ہیں ۔

بھارت کے لوگ جس طرح گنگا جمنا کو پوتر مانتے ہیں اور ان کی پوجا کرتے ہیں مصر کے پرانے باسی بھی نیل ندی کو مقدس (پاک) مانتے اور اسکی پوجا کرتے تھے ۔ نیل دیوی کو خوش رکھنے کے لئے مصری ہر سال گرمیوں کے موسم میں' جبکہ نیل کی باڑھ کا زمانہ ہوتا ہے' ایک بڑا جشن کرتے تھے ۔ ہمارے یہاں کے کمبھ کے میلے کی طرح بہت بڑا میلہ لگتا تھا ۔ پنڈت' ودوان' راجا' پرجا سبھی حصہ لیتے تھے ۔ بہت کچھ دان پن ہوتا تھا اور نہان ہوتا تھا ۔ طرح طرح کی پوجائیں ہوتی تھیں ۔ ہیرو گلیفی لکھاوٹ میں لکھے ہوئے بہت سے اشلوک اور منتر پڑھے جاتے تھے' ہر سال مصر کی ایک سندر سے سندر کنیا پہلے سے چن لی جاتی تھی جو مہارانی کی طرح بہت ٹھاٹھ باٹ اور باجے گاجے کے ساتھ جشن میں گھمائی جاتی تھی ۔ اسکو قیمتی کپڑے اور زیور پہنائے جاتے تھے ۔ رنگا رنگ پھولوں کے ہار اس کے گلے میں ڈالے جاتے تھے ۔ اس کا بہت شاندار جلوس نکلتا تھا ۔ جلوس میں کنیا تو رتھ پر بیٹھتی تھی اور راجا پیدل اس رتھ کے آگے آگے سلامی دیتا ہوا چلتا تھا ۔ راجا کے ارد گرد اس کے سب منتری

अलग अलग तबियतों को समझ कर उन्हें ज्ञान, भक्ति या कर्म की तरफ़ लगावे और दुनिया भर के तालीम देने वालों का फ़र्ज़ है कि वह लड़कों और लड़कियों के अलग अलग स्वभाव को समझ कर उन्हें इनसानी समाज का ज्ञान बढ़ाने या कला और कलचर को तरक़्क़ी देने या अपने अमल से पेशों और दस्तकारियों को बढ़ाने और तरक़्क़ी देने की तरफ़ लगावें. यही मानव धर्म यानी मज़हबे इनसानियत का रास्ता है.❀

मौलाना अब्दुल्ला मिस्री का ख़त—क़ाहिरा से

प्यारे पंडित सुन्दरलाल—आदाब, तसलीमात, नमस्ते और सब कुछ × × × × मुझे तो अपने देस की हर चीज़ सुन्दर मालूम होती है. गंगा जमना, काशी, मथुरा, वृन्दाबन कितने सुन्दर नाम हैं. फिर 'भारत माता' और 'जन्ता' 'भोली भाली देवियाँ' और 'ज्ञानी ध्यानी' 'देवी देवता' सभी तो सुन्दर हैं. सभी तो मनमोहन. आदमी पाप भी करता है और पुन भी, संसार में उजाला भी है और अंधेरा भी. सुख दुख की इस धरती में पाप और पुन दोनों का पाया जाना क़ुदरती है. अगर पाप न हो तो यह संसार स्वर्ग बन कर ख़त्म हो जाय. अगर पुन न हो तो निरा नरक ही नरक. हमें पापियों के साथ जियादा प्रेम करना चाहिये क्योंकि वह कम बुद्धि रखने की वजह से जियादा प्रेम के हक़दार हैं. जैसे बंजर ज़मीन जियादा जल और खाद की हक़दार होती है.

मैं यह ख़त क़ाहिरा (मिस्र) से लिख रहा हूं. इतिहास से मालूम होता है कि यह देस भी हमारे देस की तरह धरती का एक बहुत पुराना देस है. यहाँ के बादशाहों—फ़िरऔनों के मक़बरे, जिन को इस देस वाले अहरामात और फ़िरंगी लोग पेरामिड कहते हैं, पाँच छै हज़ार बरस की तारीख़ बताते हैं और इतिहास के कुछ विद्वान उन्हें और भी पुराना बताते हैं. फ़िरऔन यहाँ के बसने वालों की पुरानी भाशा में राजा महाराजा या बादशाह को कहते थे. मिस्र के उस पुराने ज़माने की संस्कृति, रहन सहन, सोच बिचार और धरम करम भारत के पुराने लोगों की उन चीज़ों से बहुत कुछ मिलते जुलते थे. मूर्ति पूजा मिस्र

❀जियादा जानकारी के लिये लेखक की अंगरेजी किताब 'The Essential Unity of All Religions' पढ़िये.

الگ الگ طبیعتوں کو سمجھکر انہیں گیان' بھکتی یا کرم کی طرف لگاوے اور دنیا بھر کے تعلیم دینے والوں کا فرض ہے کہ وہ لڑکوں اور لڑکیوں کے الگ الگ سوبھاؤ کو سمجھکر انہیں انسانی سماج کا گیان بڑھانے' یا کلا اور کلچر کو ترقی دینے یا اپنے عمل سے پیشوں اور دستکاریوں کو بڑھانے اور ترقی دینے کی طرف لگاویں . یہی مانو دھرم یعنی مذہب انسانیت کا راستہ ہے .*

مولانا عبداللہ مصری کا خط—قاہرہ سے

پیارے پنڈت سندر لال—آداب' تسلیمات' نمستے اور سب کچھ × × × × مجھے تو اپنے دیس کی ہر چیز سندر معلوم ہوتی ہے . گنگا جمنا' کاشی' متھرا' برندابن' کتنے سندر نام ہیں . پھر 'بھارت ماتا' اور 'جنتا' 'بھولی بھالی دیویاں' اور 'گیانی دھیانی' 'دیوی دیوتا' سبھی تو سندر ہیں . سبھی تو من موہن. آدمی پاپ بھی کرتا ہے اور پن بھی' سنسار میں اجالا بھی ہے اور اندھیرا بھی . سکھ دکھ کی اس دھرتی میں پاپ اور پن دونوں کا پایا جانا قدرتی ہے . اگر پاپ نہ ہو تو یہ سنسار سورگ بن کر ختم ہو جائے . اگر پن نہ ہو تو نرا نرک ہی نرک. ہمیں پاپیوں کے ساتھ زیادہ پریم کرنا چاہئے کیونکہ وہ کم بدھی رکھنے کی وجہ سے زیادہ پریم کے حقدار ہیں . جیسے بنجر زمین زیادہ جل اور کھاد کی حقدار ہوتی ہے .

میں یہ خط قاہرہ (مصر) سے لکھ رہا ہوں . اتہاس سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ دیس بھی ہمارے دیس کی طرح دھرتی کا ایک بہت پرانا دیس ہے . یہاں کے بادشاہوں—فرعونوں کے مقبرے' جنکو اس دیس والے اہرامات اور فرنگی لوگ پیرامڈ کہتے ہیں' پانچ چھہ ہزار برس کی تاریخ بتاتے ہیں اور اتہاس کے کچھ ودوان انہیں اور بھی پرانا بتاتے ہیں . فرعون یہاں کے بسنے والوں کی پرانی بھاشا میں راجا مہاراجا یا بادشاہ کو کہتے تھے . مصر کے اس پرانے زمانے کی سنسکرتی' رہن سہن' سوچ بچار اور دھرم کرم بھارت کے پرانے لوگوں کی ان چیزوں سے بہت کچھ ملتے جلتے تھے . مورتی پوجا مصر

---

* زیادہ جانکاری کے لئے لیکھک کی انگریزی کتاب 'The Essential Unity of All Religions' پڑھئے .

यही तीन पहलू दुनिया की हर सभ्यता के होते हैं. एक साइन्स, ज्ञान और विद्या का पहलू. दूसरा लोगों की इच्छाओं, उनके आदर्शों, उनके शौक़ और भावों का पहलू और तीसरे उनके रहन सहन, बरताव और काम काज का पहलू. किसी भी सभ्यता या तहज़ीब का ज्ञान का भंडार जितना बड़ा, जितना तरह तरह का और जितना ठीक और सच्चा होगा, वहाँ के लोगों के भाव, जज़बात, शौक़ और आदर्श जितने ऊँचे, जितने सुन्दर, जितने बेलाग और जितने नेक होंगे, उनका रहन सहन जितना पाक, जितना इनसानियत के असूलों पर क़ायम और उदार और रवादार होगा, उतनी ही वह सभ्यता या वह तहज़ीब बड़ी और ऊँची समझी जायगी. इस तरह हर तहज़ीब का बड़प्पन धर्म या मज़हब के इन तीनों असूलों में ठीक ठीक तरक़्क़ी करने और उन पर ठीक ठीक अमल करने पर है.

दुनिया के उस्तादों, अध्यापकों और तालीम देने वालों का ख़ास फ़र्ज़ है कि वह हमेशा इस बात का ख़याल रक्खें कि उनके विद्यार्थियों का दिमाग़, उनका दिल और उनका जिस्म तीनों ठीक ठीक और एक साथ मिल कर चलें और बढ़ें. वह तालीम ही अच्छी तालीम हो सकती है जो विद्यार्थी के दिमाग़ को सच्चे और काम आने वाले ज्ञान से भर दे, उसके दिल को ऊँचा रक्खे और उसे दिल पर क़ाबू करना सिखावे और उसके रहन सहन को नेक, परोपकारी और मेहनती बनावे जिससे दिमाग़, दिल और जिस्म तीनों सुन्दर दिखाई दें. इसके लिये साइन्स की तालीम ,,मानव धर्म यानी मज़हबे इनसानियत की तालीम और अच्छी दस्तकारियों और पेशे की तालीम तीनों ज़रूरी हैं.

आजकल योरप के बड़े चढ़े देशों में यह बात बड़ी अच्छी होने लगी है कि किस विद्यार्थी में कितने दरजे की और किस तरह की समझ है, इसे वह ख़ूब तजरबे कर कर के पता लगाते हैं. लेकिन अभी शायद उनका ध्यान इस तरफ़ नहीं गया कि हर विद्यार्थी के स्वभाव को भी समझने की कोशिश करें, यानी यह कि विद्यार्थी में ज्ञान को बढ़ाने का पहलू ज़ियादा ज़ोर का है या इच्छा का पहलू ज़ियादा ज़ोरदार है या अमल का पहलू ज़ियादा चमकता हुआ है. इस चीज़ के बग़ैर समझे हर लड़के या लड़की को समाज में उसकी ठीक जगह दे सकना नामुमकिन है. इसके बिना न वह फूल की तरह पूरा खिल सकेगा और न समाज को उससे पूरा फ़ायदा पहुँच सकेगा. जिस तरह हकीम या वैद्य का काम है कि वह अपने रोगी के मिज़ाज को समझ कर यह तय करे कि रोगी के अन्दर कफ़, वात या पित्त में से किस को बढ़ाने और किस को दबाने की ज़रूरत है, वैसे ही धर्म गुरुओं और मज़हबी लीडरों का यह फ़र्ज़ है कि वह अपने लोगों की

یہی تین پہلو دنیا کی ہر سبھیتا کے ہوتے ہیں. ایک سائنس، گیان اور ودیا کا پہلو. دوسرا لوگوں کی اچھاؤں، ان کے آدرشوں، ان کے شوق اور بھاووں کا پہلو اور تیسرے ان کے رہن سہن، برتاؤ اور کام کاج کا پہلو. کسی بھی سبھیتا یا تہذیب کا گیان کا بھنڈار جتنا بڑا، جتنا طرح طرح کا اور جتنا ٹھیک اور سچا ہوگا، وہاں کے لوگوں کے بھاؤ، جذبات، شوق اور آدرش جتنے اونچے، جتنے سندر، جتنے بے لاگ اور جتنے نیک ہونگے، ان کا رہن سہن جتنا پاک، جتنا انسانیت کے اصولوں پر قائم اور ادار اور روادار ہوگا، اتنی ہی وہ سبھیتا یا وہ تہذیب بڑی اور اونچی سمجھی جائے گی. اس طرح ہر تہذیب کا بڑپپن دھرم یا مذہب کے ان تینوں اصولوں میں ٹھیک ٹھیک ترقی کرنے اور ان پر ٹھیک ٹھیک عمل کرنے پر ہے.

دنیا کے استادوں، ادھیاپکوں اور تعلیم دینے والوں کا خاص فرض ہے کہ وہ ہمیشہ اس بات کا خیال رکھیں کہ ان کے ودیارتھیوں کا دماغ، ان کا دل اور ان کا جسم تینوں ٹھیک ٹھیک اور ایک ساتھ مل کر چلیں اور بڑھیں. وہ تعلیم ہی اچھی تعلیم ہوسکتی ہے جو ودیارتھی کے دماغ کو سچے اور کام آنے والے گیان سے بھر دے، اس کے دل کو اونچا رکھے اور اسے دل پر قابو کرنا سکھاوے اور اس کے رہن سہن کو نیک، پروپکاری اور محنتی بناوے جس سے دماغ، دل اور جسم تینوں سندر دکھائی دیں. اس کے لئے سائنس کی تعلیم، مانو دھرم یعنی مذہب انسانیت کی تعلیم اور اچھی دستکاریوں اور پیشے کی تعلیم تینوں ضروری ہیں.

آجکل یورپ کے بڑے چڑھے دیشوں میں یہ بات بڑی اچھی ہونے لگی ہے کہ کس ودیارتھی میں کتنے درجے کی اور کس طرح کی سمجھ ہے، اسے وہ خوب تجربے کر کرکے پتہ لگاتے ہیں. لیکن ابھی شاید ان کا دھیان اس طرف نہیں گیا کہ ہر ودیارتھی کے سوبھاؤ کو بھی سمجھنے کی کوشش کریں، یعنی یہ کہ ودیارتھی میں گیان کو بڑھانے کا پہلو زیادہ زور کا ہے یا اچھا کا پہلو زیادہ زور دار ہے یا عمل کا پہلو زیادہ چمکتا ہوا ہے. اس چیز کے بغیر سمجھے ہر لڑکے یا لڑکی کو سماج میں اس کی ٹھیک جگہ دے سکنا ناممکن ہے. اس کے بنا نہ وہ پھول کی طرح پورا کھل سکے گا اور نہ سماج کو اس سے پورا فائدہ پہونچ سکے گا. جس طرح حکیم یا وید کا کام ہے کہ وہ اپنے روگی کے مزاج کو سمجھکر یہ طے کرے کہ روگی کے اندر کف، وات یا پت میں کس کو بڑھانے اور کسکو دبانے کی ضرورت ہے، ویسے ہی دھرم گروؤں اور مذہبی لیڈروں کا یہ فرض ہے کہ وہ اپنے لوگوں کی

के धर्म का नाम 'ताओ' रक्खा. ताओ का अर्थ भी रास्ता है. चीनी शब्द 'ताओ' के लगभग वह सब अर्थ होते हैं जो संस्कृत शब्द 'धर्म' के. ताओ धर्म और वैदिक धर्म दोनों के जानने वालों की राय है कि दोनों में क़दम क़दम पर एक दूसरे के साथ गहरी समानता है. 'ताओ' शब्द 'ब्रह्म' शब्द के भी अर्थ में आता है.

हम इनमें से किसी रास्ते को भी समझें, परखें और उस पर चलें, नतीजा हर सूरत में हमें एक ही मिलेगा, यानी यह कि धर्म का रास्ता सुख शान्ति का रास्ता है, दुख, मौत और डर से छुटकारे का रास्ता है. वह रास्ता 'तर्के ख़ुदी' या 'अस्मिता त्याग' यानी अपनी छोटी ख़ुदी को समाज की और दुनिया की बेअन्त विशाल आत्मा में लीन या फ़ना कर देने का रास्ता है.

दुनिया के सब धर्मों में तीन अलग अलग मार्ग या तरीक़े मिलते हैं. वैदिक धर्म में इन्हें ज्ञान मार्ग, भक्ति मार्ग और कर्म मार्ग कहा गया है. इसलाम में इन्हीं को 'मारफ़त', 'तरीक़त' और 'शरीअत' कहा जाता है. यही तीन रास्ते ईसाई मजहब में भी मिलते हैं. बौद्ध धर्म में इन्हीं तीन को 'सम्यक दृष्टि', 'सम्यक संकल्प' और 'सम्यक व्यायाम' कहा गया है. जैन तत्वार्थ सूत्र में भी इन्हीं तीनों का जिकर है. सूफ़ी किताब 'गुलशने राज़' में इन तीनों रास्तों को ख़ूब अच्छी तरह समझाया गया है और यह भी कहा गया है कि ये तीनों रास्ते—"बुअद दायम मियाने क़ुफ़्रो ईमाँ" यानी कुफ़्र और इसलाम दोनों में यह एक बराबर हैं.

ऐसे ही महाभारत में लिखा है—

"अपनी जबान को, अपने मन को और अपने शरीर को, जो इन तीनों को अपनी बुद्धि के बस में रख सके वही त्रिदंडी है."

बौद्ध ग्रंथ धम्मपद में भी 'भिक्षु' की ठीक यही तारीफ़ की गई है और इसी को 'साधूपन' कहा गया है. आदमी के स्वभाव के ये तीन पहलू साफ़ हैं—ज्ञान, इच्छा और क्रिया यानी इल्म, ख़ाहिश और अमल. इसी लिये इन तीन के मुताबिक़ तीन रास्ते या रास्ते के तीन पहलू सब धर्मों में बताए गए हैं—ठीक जानना, ठीक चाहना और ठीक अमल करना. पारसी धर्म में इसी को जरा बदल कर 'हुम्त', 'हुख़्त', 'हुवर्श्त' नाम दिये गए हैं जिनके मानी हैं—ठीक सोचना, ठीक बोलना और ठीक बरतना. उपनिशदों में भी यह ख़याल बारबार आता है. यही बात महाभारत में भी बार-बार दोहराई गई है. जेन्दअवस्ता में लिखा है—

"अहुरमज़्द यानी ईश्वर कहता है कि जो लोग भलाई सोचते हैं, भलाई कहते हैं और भलाई करते हैं उनके मैं साथ रहता हूँ और उनके नहीं जो बुराई सोचते हैं, बुराई कहते हैं और बुराई करते हैं."

کے دھرم کا نام 'تاؤ' رکھا۔ تاؤ کا ارتھ بھی راستہ ہے۔ چینی شبد 'تاؤ' کے لگ بھگ وہ سب ارتھ ہوتے ہیں جو سنسکرت شبد 'دھرم' کے۔ تاؤ دھرم اور ویدک دھرم دونوں کے جاننے والوں کی رائے ہے کہ دونوں میں قدم قدم پر ایک دوسرے کے ساتھ گہری سمانتا ہے۔ 'تاؤ' شبد 'برہم' شبد کے بھی ارتھ میں آتا ہے۔

ہم ان میں سے کسی راستے کو بھی سمجھیں، پرکھیں اور اس پر چلیں، نتیجہ ہر صورت میں ہمیں ایک ہی ملے گا، یعنی یہ کہ دھرم کا راستہ سکھ شانتی کا راستہ ہے، دکھ، موت اور ڈر سے چھٹکارے کا راستہ ہے۔ وہ راستہ 'ترک خودی' یا 'اسمتا تیاگ' یعنی اپنی چھوٹی خودی کو سماج کی اور دنیا کی بے انت وشال آتما میں لین یا فنا کر دینے کا راستہ ہے۔

دنیا کے سب دھرموں میں تین الگ الگ مارگ یا طریقے ملتے ہیں۔ ویدک دھرم میں انہیں گیان مارگ، بھکتی مارگ اور کرم مارگ کہا گیا ہے۔ اسلام میں انہیں کو 'معرفت'، 'طریقت' اور 'شریعت' کہا جاتا ہے۔ یہی تین راستے عیسائی مذہب میں بھی ملتے ہیں۔ بودھ دھرم میں انہیں تین کو 'سمیک درشٹی' 'سمیک سنکلپ' اور 'سمیک ویایام' کہا گیا ہے۔ جین تتوارتھ سوتر میں بھی انہیں تینوں کا ذکر ہے۔ صوفی کتاب 'گلشن راز' میں ان تینوں راستوں کو خوب اچھی طرح سمجھایا گیا ہے اور یہ بھی کہا گیا ہے کہ یہ تینوں راستے—"بود دائم میانے کفر و ایماں" یعنی کفر اور اسلام دونوں میں یہ ایک برابر ہیں۔

ایسے ہی مہا بھارت میں لکھا ہے—"اپنی زبان کو، اپنے من کو اور اپنے شریر کو، جو ان تینوں کو اپنی بدھی کے بس میں رکھ سکے وہی تردنڈی ہے۔"

بودھ گرنتھ دھمپد میں بھی 'بھکشو' کی ٹھیک یہی تعریف کی گئی ہے اور اس کو 'سادھوپن' کہا گیا ہے۔ آدمی کے سوبھاؤ کے یہ تین پہلو صاف ہیں — گیان، اچھا اور کریا یعنی علم، خواہش اور عمل۔ اسی لئے ان تین کے مطابق تین راستے یا راستے کے تین پہلو سب دھرموں میں بتائے گئے ہیں — ٹھیک جاننا، ٹھیک چاہنا اور ٹھیک عمل کرنا۔ پارسی دھرم میں اسی کو ذرا بدل کر 'ہمت'، 'ہخت'، 'ہورشت' نام دیئے گئے ہیں جن کے معنی ہیں — ٹھیک سوچنا، ٹھیک بولنا اور ٹھیک برتنا۔ اپنشدوں میں بھی یہ خیال برابر آتا ہے۔ یہی بات مہابھارت میں بھی بار بار دہرائی گئی ہے۔ ژنداوستا میں لکھا ہے—

"اہرمزد یعنی ایشور کہتا ہے کہ جو لوگ بھلائی سوچتے ہیں، بھلائی کہتے ہیں اور بھلائی کرتے ہیں ان کے میں ساتھ رہتا ہوں اور ان کے نہیں جو برائی سوچتے ہیں، برائی کہتے ہیں اور برائی کرتے ہیں۔"

धर्म या रूहानी साइन्स, मानव धर्म या मजहबे इनसानियत जो सब अलग अलग धर्मों का वह हिस्सा है जो सब में पाया जाता है हमें यह साफ़ बताता है कि ईश्वर की इच्छा क्या है. दूसरा यह कि ख़ास सूरतों में अच्छे और समझदारी के क़ानून जो अच्छे और समझदार लोगों के बनाए हुए हों, ऐसे लोगों के जो ईश्वर को यानी सबके घट घट में रहने वाली आत्मा को जानते और प्यार करते हों, और जो बेलाग और बेग़रज़ होकर सब का, सब अलग अलग धर्म वालों का, सब जमातों और सब पेशे वालों का भला चाहते हों, और भला करने की पूरी कोशिश करते हों, जिन पर सबको भरोसा हो—ऐसे लोगों के बनाए हुए क़ानून ही जहाँ तक मुमकिन हो सकता है ईश्वर की इच्छा के अनुसार हो सकते हैं. ऐसे लोग ही अल्लाह के नज़दीक हैं और उसके बेटे कहलाने के हक़दार हैं. वह जनता या समाज की व्यापक आत्मा, 'रूहे कुल' के नुमाइन्दे होते हैं. ऐसे लोगों के बनाए हुए क़ानूनों से ही जनता का भला हो सकता है. ऐसे लोगों की हकूमत ही 'राम राज' या 'हकूमते इलाही' कहला सकती है.

'क्रिश्चियैनिटी' शब्द का भी असल मतलब वही है जो धर्म का. 'क्रिस्टास' का अर्थ है 'ईश्वरी ज्ञान में नहाया हुआ' यानी वह जो अपनी छोटी खुदी को मिटा कर बड़ी खुदी यानी समाज की आत्मा या परमातमा को उसकी जगह बैठा चुका हो.

'वैदिक धर्म' का अर्थ है ज्ञान का धर्म, समझदारी का धर्म. 'सनातन धर्म' का अर्थ है हमेशा का धर्म. 'मानव धर्म' का अर्थ है सब इनसानों का धर्म जिसे आजकल योरप में 'ह्यूमनिज्म' कहते हैं. 'बौद्ध धर्म' का अर्थ है बुद्धि यानी अक़ल का धर्म. 'आर्य धर्म' का अर्थ है भले लोगों का धर्म. मजहब का अर्थ है रास्ता, यानी पथ या पंथ, नेकी का रास्ता, सुख सौख्य का रास्ता.

इस रास्ते पर चलने के लिये रोशनी हर आदमी को अपने अन्दर से ही मिल सकती है. भागवत में लिखा है—

"रोशनी आदमी के अपने अन्दर ही है और कहीं नहीं, और वह रोशनी सब प्रानियों में एक बराबर है."

हज़रत ईसा ने कहा है—"इस बात को समझ लेना ही कि सब की आत्मा ही मेरी आत्मा है सचाई को जानना है, अपनी तरह सबसे प्यार करना ही ठीक जिन्दगी है और सबके लिये वही करना जो आदमी अपने लिये चाहता है यही धर्म का रास्ता है."

जापान के पुराने धर्म का नाम 'शिन्तो' है. 'शिन्तो' का अर्थ भी सब आत्माओं का रास्ता है. लाओत्से ने चीन

دھرم یا روحانی سائنس، مانو دھرم یا مذہب انسانیت جو سب الگ الگ دھرموں کا وہ حصہ ہے جو سب میں پایا جاتا ہے ہمیں یہ صاف بتاتا ہے کہ ایشور کی اچھا کیا ہے ۔ دوسرا یہ کہ خاص صورتوں میں اچھے اور سمجھداری کے قانون جو اچھے اور سمجھدار لوگوں کے بنائے ہوئے ہوں، ایسے لوگوں کے جو ایشور کو یعنی سب کے گھٹ گھٹ میں رہنے والی آتما کو جانتے اور پیار کرتے ہوں، اور جو بے لاگ اور بے غرض ہوکر سب کا، سب الگ الگ دھرم والوں کا، سب جماعتوں اور سب پیشے والوں کا بھلا چاہتے ہوں، اور بھلا کرنے کی پوری کوشش کرتے ہوں، جن پر سب کو بھروسہ ہو—ایسے لوگوں کے بنائے ہوئے قانون ہی جہاں تک ممکن ہوسکتا ہے ایشور کی اچھا کے انوسار ہوسکتے ہیں ۔ ایسے لوگ ہی اللہ کے نزدیک ہیں اور اس کے بیٹے کہلانے کے حقدار ہیں ۔ وہ جنتا یا سماج کی ویاپک آتما، 'روح کل' کے نمائندے ہوتے ہیں ۔ ایسے لوگوں کے بنائے ہوئے قانونوں سے ہی جنتا کا بھلا ہوسکتا ہے ۔ ایسے لوگوں کی حکومت ہی 'رام راج' یا 'حکومت الہی' کہلا سکتی ہے ۔

'کرشچینٹی' شبد کا بھی اصل مطلب وہی ہے جو دھرم کا ۔ 'کرسٹاس' کا ارتھ ہے 'ایشوری گیان میں نہایا ہوا' یعنی وہ جو اپنی چھوٹی خودی کو مٹا کر بڑی خودی یعنی سماج کی آتما یا پرماتما کو اس کی جگہ بیٹھا چکا ہو ۔

'ویدک دھرم' کا ارتھ ہے گیان کا دھرم، سمجھداری کا دھرم ۔ 'سناتن دھرم' کا ارتھ ہے ہمیشہ کا دھرم ۔ 'مانو دھرم' کا ارتھ ہے سب انسانوں کا دھرم جسے آجکل یورپ میں 'ہیومنزم' کہتے ہیں ۔ 'بودھ دھرم' کا ارتھ ہے بدھی یعنی عقل کا دھرم ۔ آریہ دھرم کا ارتھ ہے بھلے لوگوں کا دھرم ۔ مذہب کا ارتھ ہے راستہ، یعنی پتھ یا پنتھ، نیکی کا راستہ، سکھ سوکھیہ کا راستہ ۔

اس راستے پر چلنے کے لئے روشنی ہر آدمی کو اپنے اندر سے ہی مل سکتی ہے ۔ بھاگوت میں لکھا ہے —

" روشنی آدمی کے اپنے اندر ہی ہے اور کہیں نہیں، اور وہ روشنی سب پرانیوں میں ایک برابر ہے ۔"

حضرت عیسیٰ نے کہا ہے — "اس بات کو سمجھ لینا ہی کہ سب کی آتما ہی میری آتما ہے سچائی کو جاننا ہے، اپنی طرح سب سے پیار کرنا ہی ٹھیک زندگی ہے اور سب کے لئے وہی کرنا جو آدمی اپنے لئے چاہتا ہے یہی دھرم کا راستہ ہے ۔"

جاپان کے پرانے دھرم کا نام 'شنتو' ہے ۔ اور 'شنتو' کا ارتھ بھی سب آتماؤں کا راستہ ہے ۔ لاؤ تزے نے چین

त्याग सब इसमें आ जाते हैं. बिना इस तरह की क़ुरबानी या इस तरह के त्याग के कोई आदमी अपनी छोटी छोटी निजी जरूरतों को भी पूरा नहीं कर सकता. स्वार्थ भी परमार्थ के सहारे ही चल सकता है. संसार का यही अटल नियम है. गीता में भी कृष्न ने कहा है:—

"भगवान ने सृष्टि के शुरू में यज्ञ से सब प्रानियों को बना कर उन्हें यह हिदायत करदी कि इस यज्ञ से ही तुम सब फल फूल सकते हो. यही वह कामधेनु गाय है जो तुम्हारी सारी इच्छाओं को पूरा कर सकती है."

यहाँ 'यज्ञ' का मतलब है एक दूसरे की सेवा, एक दूसरे की मदद और एक दूसरे के लिये त्याग यानी अपनी छोटी सी ख़ुदी को दूसरों की या समाज की भलाई में क़ुरबान कर देना. इसी तरह समाज भी हर आदमी के लिये यज्ञ यानी क़ुरबानी करता है. इसी लेन देन को इस तरह के क़ानूनों के ज़रिये क़ायदे में लाया जाता है. जो क़ानून अधिकारों को कर्तव्यों के साथ और इनसानों को एक दूसरे के साथ बाँधते हैं. हर आदमी को यह समझना होता है कि मैं समाज का एक छोटा सा हिस्सा हूँ. मेरी आत्मा उसी बड़ी आत्मा का एक ज़र्रा है, ठीक उसी तरह जिस तरह आदमी के जिस्म का हर अंग और हर ज़र्रा सारे जिस्म का अंग होता है. जिस्म की ज़िन्दगी में उसकी ज़िन्दगी और जिस्म की मौत में उसकी मौत होती है. इस एक बात को समझ लेना ही सारे धर्म, मज़हब या रिलिजन का इत्र है. और आगे चल कर यह जान लेना कि यह सब अलग अलग जानें या अलग अलग वजूद उसी एक बड़े वजूद से निकले और बने हैं और आख़िर में उसी में जाकर मिल जायंगे और इस समझ से जो सच्चा बड़प्पन, ऊँचापन, उदारता और रवादारी आदमी में पैदा होती है यही ऊँचे से ऊँचा धर्म, मज़हब या 'रिलिजन' है.

इसलाम शब्द 'सल्म' से निकला है, जिसके मानी हैं 'शान्ति' या 'अमन'. इन मानों में इसलाम शब्द ही इसलाम धर्म का सार है. इसका मतलब है शान्ति के साथ अल्लाह के सामने झुकना यानी अपने को उसके हवाले कर देना, उसकी सब आज्ञाओं को मानना. संस्कृत में इसी को 'प्रणिधान' या 'प्रपत्ति' कहा गया है, यानी ख़ुदी को मारना और ख़ुदा को उसकी जगह बैठाना. वैदिक असूल है—"नमम किन्तु तव ईहा" यानी हे ईश्वर! तेरी इच्छा पूरी हो मेरी नहीं. इस भाव में डूब कर और उसके अनुसार अमल करके ही आदमी सारी दुनिया के साथ अमन और सुख से रह सकता है.

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि कितने आदमी ईश्वर, ख़ुदा या परमात्मा की इच्छा को जान सकते हैं. इसके दो जवाब हैं. एक यह कि व्यापक बुनियादी धर्म, साइनसी

تیاگ سب اِس میں آجاتے ہیں . بنا اس طرح کی قربانی یا اس طرح کے تیاگ کے کوئی آدمی اپنی چھوٹی چھوٹی نجی ضرورتوں کو بھی پورا نہیں کرسکتا . سوارتھ بھی پرمارتھ کے سہارے ہی چل سکتا ہے . سنسار کا یہی اَٹل نیم ہے . گیتا میں شری کرشن نے کہا ہے :—

''بھگوان نے سرشٹی کے شروع میں یگیہ سے سب پرانیوں کو بنا کر اُنھیں یہ ہدایت کردی کہ اس یگیہ سے ہی تم سب پھل پھول سکتے ہو . یہی وہ کامدھینو گائے ہے جو تمہاری ساری اِچھاؤں کو پورا کرسکتی ہے .

یہاں اِس 'یگیہ' کا مطلب ہے ایک دوسرے کی سیوا' ایک دوسرے کی مدد اور ایک دوسرے کے لئے تیاگ یعنی اپنی چھوٹی سی خودی کو دوسروں کی یا سماج کی بھلائی میں قربان کردینا . اِسی طرح سماج بھی ہر آدمی کے لئے یگیہ یعنی قربانی کرتا ہے . اِسی لین دین کو اس طرح کے قانونوں کے ذریعے قاعدے میں لایا جاتا ہے جو قانون ادھیکاروں کو کرتویوں کے ساتھ اور انسانوں کو ایک دوسرے کے ساتھ باندھتے ہیں . ہر آدمی کو یہ سمجھنا ہوتا ہے کہ میں سماج کا ایک چھوٹا سا حصہ ہوں . میری آتما اُسی بڑی آتما کا ایک ذرہ ہے' ٹھیک اُسی طرح جس طرح آدمی کے جسم کا ہر انگ اور ہر ذرہ سارے جسم کا انگ ہوتا ہے . جسم کی زندگی میں اُسکی زندگی اور جسم کی موت میں اُس کی موت ہوتی ہے . اِس ایک بات کو سمجھ لینا ہی سارے دھرم' مذہب یا ریلیجن کا عطر ہے . اور آگے چل کر یہ جان لینا کہ یہ سب الگ الگ جانیں یا الگ الگ وجود اُسی ایک بڑے وجود سے نکلے اور بنے ہیں اور آخر میں اُسی میں جاکر مل جائیں گے اور اِس سمجھ سے جو سچا بڑپپن' اونچاپن' اُدارتا اور رواداری آدمی میں پیدا ہوتی ہے یہی اونچے سے اونچا دھرم' مذہب یا 'ریلیجن' ہے .

اسلام شبد 'سلم' سے نکلا ہے' جس کے معنی ہیں 'شانتی' یا 'امن'. اِن معنوں میں اسلام شبد ہی اسلام دھرم کا سار ہے . اِس کا مطلب ہے شانتی کے ساتھ اللہ کے سامنے جھکنا یعنی اپنے کو اُس کے حوالے کر دینا' اس کی سب آگیاؤں کو ماننا . سنسکرت میں اِسی کو 'پرنی دھان' یا 'پرپتی' کہا گیا ہے' یعنی خودی کو مارنا اور خدا کو اس کی جگہ بیٹھانا . ویدک اصول ہے—'' نمم کنتو تو ایہا'' یعنی ہے ایشور ! تیری اِچھا پوری ہو میری نہیں . اِس بھاؤ میں ڈوب کر اور اُس کے انوسار عمل کرکے ہی آدمی ساری دنیا کے ساتھ امن اور سکھ سے رہ سکتا ہے .

یہاں یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ کتنے آدمی ایشور' خدا یا پرماتما کی اِچھا کو جان سکتے ہیں . اِس کے دو جواب ہیں . ایک یہ کہ ویاپک بنیادی دھرم' سائنسی

हीरा हरेक को नहीं दिखाया जाता. हरेक असकी क़द्र नहीं कर सकता. इसीलिये असली ज्ञान उपमाओं और मिसालों में बयान किया जाता है.

हज़रत ईसा ने इनजील में एक जगह कहा है:—

"ईश्वर के राज के भेद जानने का तुम्हें मौक़ा दिया गया है, लेकिन उन लोगों को यह मौक़ा नहीं दिया गया. जिस किसी के पास चाबी होगी उसी को मौक़ा दिया जायगा, और उसे बहुतायत के साथ मिलेगा. लेकिन जिस किसी के पास चाबी नहीं है या जिससे डर है कि वह चाबी का ग़लत इस्तेमाल करे उस से कभी कभी जो कुछ उसके पास है वह भी ले लिया जाता है."

लेकिन फिर सवाल सामने आता है कि आख़िर धर्म, मज़हब या रिलिजन है क्या चीज़ ? यहाँ हम इस सवाल पर बहुत सरसरी विचार ही कर सकते हैं.

अंगरेज़ी शब्द 'रिलिजन' दो लातीनी शब्दों 'रि' और 'लिजारे' से बना है जिनके मानी हैं 'फिर से बांधना' यानी जो चीज़ आदमियों को एक दूसरे के साथ और सबको भगवान के साथ हमदर्दी और प्रेम की डोरी में बाँधे वही 'रिलिजन' है. आदमी का निचले दरजे का स्वभाव, उसका मन, उसका नफ़्स उसे बार बार दूसरे आदमियों से और भगवान से फाड़ता रहता है और 'रिलिजन' उसे बार बार फिर से जोड़ता रहता है. इस एकता की तरफ़ बराबर ध्यान जमाए रखना, खाते पीते चलते फिरते इसका ख़याल रखना यही धर्म का सार है. इसी से आदमी के सब काम ठीक और अच्छे रह सकते हैं. इसी से क़ौमों में वह शक्ति पैदा होती है जिससे बड़ी बड़ी सभ्यताएं जन्म लेती हैं और क़ायम रहती हैं. इतिहास में जितनी बड़ी बड़ी सभ्यताएं हुई हैं या हैं हरेक का अपना कोई न कोई ख़ास 'रिलिजन' होता है, कोई न कोई आदर्श होता है जिसको वह मानती और पूजती हैं. हर नए रिलिजन की पैदाइश के साथ साथ यानी धर्म की पुरानी भावना में फिर से जान डाले जाने के साथ साथ लोगों में मिल कर काम करने की इच्छा जागती है और हमेशा इसी से नई सभ्यताओं ने जन्म लिया है.

संस्कृत शब्द 'धर्म' 'धृ' धातु से निकला है जिसके मानी भी 'बाँधे रखना' या 'सँभाले रखना' है, जो अर्थ रिलिजन का है वही धर्म का है.

समाज में लोगों को बाँधे रखना या मिलाए रखना तभी हो सकता है जब सब एक दूसरे को कुछ देते रहें और एक दूसरे से लेते रहें. इसी को 'हक़ और फ़र्ज़' या 'अधिकार और कर्तव्य' अंगरेज़ी में 'राइट एन्ड ड्यूटी' का नाम दिया जाता है. एक दूसरे के लिये छोटी छोटी क़ुरबानियाँ या

ھیرا ھر ایک کو نہیں دکھایا جاتا ۔ ھر ایک اُسکی قدر نہیں کرسکتا ۔ اِسی لئے اصلی گیان اُپماؤں اور مثالوں میں بیان کیا جاتا ھے ۔

حضرت عیسیٰ نے انجیل میں ایک جگہ کہا ھے :—

"ایشور کے راج کے بھید جاننے کا تمہیں موقع دیا گیا ھے، لیکن اُن لوگوں کو یہ موقع نہیں دیا گیا ۔ جس کسی کے پاس چابی ھوگی اُسی کو موقعہ دیا جائیگا اور اُسے بہتایت کے ساتھ ملیگا ۔ لیکن جس کسی کے پاس چابی نہیں ھے یا جس سے ڈر ھے کہ وہ چابی کا غلط استعمال کرے اُس سے کبھی کبھی جو کچھ اُسکے پاس ھے وہ بھی لے لیا جاتا ھے۔"

لیکن پھر سوال سامنے آتا ھے کہ آخر دھرم، مذھب یا رلیجن ھے کیا چیز ؟ یہاں ھم اس سوال پر بہت سرسری وچار ھی کرسکتے ھیں ۔

انگریزی شبد 'رلیجن' دو لاطینی شبدوں 'ری' اور 'لجارے' سے بنا ھے جن کے معنی ھیں 'پھر سے باندھنا' یعنی جو چیز آدمیوں کو ایک دوسرے کے ساتھ اور سب کو بھگوان کے ساتھ ھمدردی اور پریم کی ڈوری میں باندھے وھی 'رلیجن' ھے ۔ آدمی کا نچلے درجے کا سوبھاؤ، اُسکا من، اُسکا نفس اُسے بار بار دوسرے آدمیوں سے اور بھگوان سے پھاڑتا رھتا ھے اور 'رلیجن' اُسے بار بار پھر سے جوڑتا رھتا ھے ۔ اِس ایکتا کی طرف برابر دھیان جمائے رکھنا، کھاتے پیتے چلتے پھرتے اِسکا خیال رکھنا یہی دھرم کا سار ھے ۔ اسی سے آدمی کے سب کام ٹھیک اور اچھے رہ سکتے ھیں ۔ اِسی سے قوموں میں وہ شکتی پیدا ھوتی ھے جس سے بڑی بڑی سبھیتائیں جنم لیتی ھیں اور قائم رھتی ھیں ۔ اِتہاس میں جتنی بڑی بڑی سبھیتائیں ھوئی ھیں یا ھیں ھر ایک کا اپنا کوئی نہ کوئی خاص 'رلیجن' ھوتا ھے، کوئی نہ کوئی آدرش ھوتا ھے جسکو وہ مانتی اور پوجتی ھیں ۔ ھر نئے رلیجن کی پیدائش کے ساتھ ساتھ یعنی دھرم کی پرانی بھاؤنا میں پھر سے جان ڈالے جانے کے ساتھ ساتھ لوگوں میں مل کر کام کرنے کی اچھا جاگتی ھے اور ھمیشہ اِسی سے نئی سبھیتاؤں نے جنم لیا ھے ۔

سنسکرت شبد 'دھرم' 'دھری' (धृ) دھاتو سے نکلا ھے جسکے معنی بھی 'باندھے رکھنا' یا 'سنبھالے رکھنا' ھے ۔ جو ارتھ رلیجن کا ھے وھی دھرم کا ھے ۔

سماج میں لوگوں کو باندھے رکھنا یا ملائے رکھنا تبھی ھوسکتا ھے جب سب ایک دوسرے کو کچھ دیتے رھیں اور ایک دوسرے سے لیتے رھیں ۔ اِسی کو 'حق اور فرض' یا 'ادھیکار اور کرتویہ' انگریزی میں 'رائٹ اینڈ ڈیوٹی' کا نام دیا جاتا ھے۔ ایک دوسرے کے لئے چھوٹی چھوٹی قربانیاں یا

दरख्त लगाने का एक वक़्त होता है और उखाड़ने का दूसरा वक़्त होता है......गिराने का एक वक़्त होता है और बनाने का दूसरा वक़्त होता है, कोई वक़्त रोने का होता है और कोई हंसने का, कोई समय चुप रहने का होता है और कोई बोलने का."

मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है. वह कहा करते थे—"इस समय तुम एक ऐसे ज़माने में हो कि जब जो जो हुकुम तुमको दिये जा रहे हैं उनमें से एक दसवां हिस्सा भी अगर तुम छोड़ दोगे तो तुम बरबाद हो जाओगे. इसके बाद एक ज़माना आयगा कि जब जो आदमी जो जो हुकुम इस वक़्त दिये गए हैं उनके दसवें हिस्से पर भी अमल करेगा वह निजात पायगा." (तिरमिज़ी)

मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने दीन की 'असल' यानी उसके प्रधान अंश को उसके 'फ़रु' या गौण अंश से अलग करते हुए अपनी मसनवी में लिखा है:—

मन ज़ क़ुरां मग़ज़ रा बरदाश्तम
उस्तख़्वां पेशे सगां अन्दाख़्तम

यानी मैंने क़ुरान में से गूदा गूदा ले लिया है और हड्डियां कुत्तों के सामने फेंक दी हैं.

मौलाना रूम की मसनवी को मुसलमान आलिम "फ़ारसी ज़बान का क़ुरान" कहते हैं.

गीता में भी कृष्न ने साफ़ साफ़ शब्दों में वेदों के रीत रिवाजों और कर्म कान्डों पर ज़ोर देने वालों की निन्दा की है और उन्हें 'नासमझ' कहा है.

एक और बात भी है. जिनकी आत्माएं अभी बच्चों की सी हैं उन्हें हम धीरे धीरे कम ज़रूरी चीज़ों से अधिक ज़रूरी चीज़ों की तरफ़ ले जाते हैं. धीरे धीरे उन्हें शब्दों से असल अर्थ की तरफ़ लाते हैं. इनजील में कहा गया है कि—"बच्चों को दूध दो और बड़े आदमियों को खाना दो." हज़रत मूसा और हज़रत मोहम्मद भी बिना नक़ाब या परदे के 'नूर क़ाहिर' यानी उस अल्लाह के चेहरे को न देख सकते थे. अर्जुन की जब एक पल के लिये आँखें खुलीं और उसने 'हज़ारों सूरजों से बढ़कर' चमक वाले उस विराट रूप को देखा तो वह काँप उठा. उस बेअन्त की ज्योति के सामने आदमी की सारी ख़ुदी और उसका सारा वजूद जलकर या पिघल कर ख़तम हो जाता है.

पुरान में लिखा है—

"मामूली आदमियों के देवता नदियों और तालाबों में होते हैं, उन से ज़ियादा सोचने समझने वालों के देवता आकाश और रोशनी में होते हैं, बच्चों के देवता लकड़ी पत्थर में होते हैं और बुद्धिमान आदमी ख़ुद अपनी आत्मा के अन्दर अपने ईश्वर अल्लाह का दर्शन करता है."

درخت لگانے کا ایک وقت ہوتا ہے اور اکھاڑنے کا دوسرا وقت ہوتا ہے.....گرانے کا ایک وقت ہوتا ہے' اور بنانے کا دوسرا وقت ہوتا ہے' کوئی وقت رونے کا ہوتا ہے اور کوئی ہنسنے کا' کوئی سمے چپ رہنے کا ہوتا ہے اور کوئی بولنے کا".

محمد صاحب کی ایک مشہور حدیث ہے . وہ کہا کرتے تھے کہ—"اِس سمے تم ایک ایسے زمانے میں ہو کہ جب جو جو حکم تمکو دیئے جارہے ہیں اُن میں سے ایک دسواں حصہ بھی اگر تم چھوڑ دو گے تو تم برباد ہو جاؤ گے . اِس کے بعد ایک زمانہ آئیگا کہ جب جو آدمی جو جو حکم اِس وقت دیئے گئے ہیں اُن کے دسویں حصے پر بھی عمل کریگا وہ نجات پائیگا ." (ترمذی)

مولانا جلال الدین رومی نے دین کی 'اصل' یعنی اُسکے پردھان انش کو اُس کے 'فروع' یا گون انش سے الگ کرتے ہوئے اپنی مثنوی میں لکھا ہے :—

من ز قرآں مغز را برداشتم
استخواں پیش سگاں انداختم

یعنی میں نے قران میں سے گودا گودا لے لیا ہے اور ہڈیاں کتوں کے سامنے پھینک دی ہیں .

مولانا روم کی مثنوی کو مسلمان عالم "فارسی زبان کا قرآن" کہتے ہیں .

گیتا میں شری کرشن نے صاف صاف شبدوں میں ویدوں کے ریت رواجوں اور کرم کانڈوں پر زور دینے والوں کی نندا کی ہے اور اُنھیں 'ناسمجھ' کہا ہے .

ایک اور بات بھی ہے . جنکی آتمائیں ابھی بچوں کی سی ہیں اُنھیں ہم دھیرے دھیرے کم ضروری چیزوں سے ادھک ضروری چیزوں کی طرف لے جاتے ہیں . دھیرے دھیرے اُنھیں شبدوں سے اصل ارتھ کی طرف لاتے ہیں . انجیل میں کہا گیا ہے کہ—"بچوں کو دودھ دو اور بڑے آدمیوں کو کھانا دو". حضرت موسیٰ اور حضرت محمد بھی بنا نقاب یا پردے کے 'نور قاہر' یعنی اُس اللہ کے چہرے کو نہ دیکھ سکتے تھے . ارجن کی جب ایک پل کے لئے آنکھیں کھلیں اور اُس نے 'ہزاروں سورجوں سے بڑھکر' چمک والے اُس وراٹ روپ کو دیکھا تو وہ کانپ اُٹھا . اُس بے انت کی جیوتی کے سامنے آدمی کی ساری خودی اور اُس کا سارا وجود جل کر یا پگھل کر ختم ہو جاتا ہے .

پران میں لکھا ہے—

"معمولی آدمیوں کے دیوتا ندیوں اور تالابوں میں ہوتے ہیں' اُن سے زیادہ سوچنے سمجھنے والوں کے دیوتا آکاش اور روشنی میں ہوتے ہیں' بچوں کے دیوتا لکڑی پتھر میں ہوتے ہیں اور بدھی مان آدمی خود اپنی آتما کے اندر اپنے ایشور اللہ کا درشن کرتا ہے ."

सूफ़ी ने कहा है—

तफ़रक़ा दर नफ़्से हैवानी बुवद
रूहे वाहिद रूहे इनसानी बुवद

यानी फ़रक़ या भेद भाव जानवरों या जानवरों के से दिमाग़ वालों के अन्दर होता है, इनसानी रूह वह है जो सब रूहों की एकता को समझती है.

अरबी का शब्द 'इनसान' 'उन्स' से निकला है जिसके मानी हैं 'प्रेम' या 'हमदरदी'. इनसान वह है जो सब के साथ प्रेम या हमदरदी करे, जो सब इनसानों का दोस्त हो. ऐसे ही संस्कृत शब्द 'आर्य' 'ऋ' धातू से निकला है जिस का अर्थ 'जाना' है. आर्य शब्द का अर्थ बताते हुए एक विद्वान ने कहा है—

निवारणार्थम अर्ती नाम अर्तम योग्यो भवेततुयः
अर्यंते सततम चार्तैः स आर्य इति कथ्यते.

यानी आर्य उस आदमी को कहना जो दुखियों का दुख दूर करने के क़ाबिल हो और जिसके पास हमेशा दुखी लोग अपने दुख दूर कराने के लिये चल कर आवें.

गीता में बार बार कहा गया है कि जो सब प्रानियों को एक ही निगाह से देखता है और अपने को सब में और अपने अन्दर सब को देखता है, और जो एक ईश्वर के अन्दर सबको और सब के अन्दर एक ईश्वर को देखता है वही ज्ञानी है और वही देखने वाला है.

यह भी ज़ाहिर है कि किसी भी धर्म, मज़हब के सब रीत रिवाज और उसकी सब बातें एक बराबर ज़रूरी या एक सी अहम नहीं होतीं. सब मज़हबों में यह बात बता दी गई है कि उनमें कुछ बातें ज़ियादा ज़रूरी हैं और कुछ कम, कुछ 'नित्य' हैं और कुछ 'काम्य' कुछ पक्के हुकम हैं और कुछ समझाने के लिये मिसाल के तौर पर कहे गए हैं, कुछ 'मोहकमात' हैं और कुछ 'मुतशाबेहात.' सब मज़हबों में यह भी बताया गया है कि देश, काल और हालत के मुताबिक़ आदमी के यह छोटे छोटे फ़र्ज़ या ऊपरी रीत रिवाज बदलते रहते हैं. महाभारत में लिखा है—

देश काल निमित्ता नाम
भेदे धर्मो विभिद्यते

यानी देश और काल, जगह और वक़्त के फ़रक़ से धर्म अलग अलग होते हैं. यहाँ पर धर्म से मतलब इन्हीं ऊपरी रीत रिवाजों से है.

इनजील में लिखा है—

"हर चीज़ के लिये मौसम होता है और दुनिया की हर ग़रज़ के लिये एक वक़्त होता है × × × × पैदा होने का एक वक़्त होता है और मरने का अलग वक़्त होता है,

صوفی نے کہا ہے—

تفرقہ در نفس حیوانی بود
روح واحد روح انسانی بود

یعنی فرق یا بھید بھاؤ جانوروں یا جانوروں کے سے دماغ والوں کے اندر ہوتا ہے، انسانی روح وہ ہے جو سب روحوں کی ایکتا کو سمجھتی ہے۔

عربی کا شبد 'انسان' 'اُنس' سے نکلا ہے جس کے معنی ہیں 'پریم' یا 'ہمدردی'. انسان وہ ہے جو سب کے ساتھ پریم یا ہمدردی کرے، جو سب انسانوں کا دوست ہو۔ ایسے ہی سنسکرت شبد 'آریہ' 'رِی' (ऋ) دھاتو سے نکلا ہے جس کا ارتھ 'جانا' ہے۔ آریہ شبد کا ارتھ بتاتے ہوئے ایک ودوان نے کہا ہے—

نوارنارتھم ارتی‌نام ارتم یوگیو بھویت تویہ
اریتے سنتتم چارتیھ ساریہ اتی کتھیتے۔

یعنی آریہ اُس آدمی کو کہنا جو دکھیوں کا دکھ دور کرنے کے قابل ہو اور جس کے پاس ہمیشہ دکھی لوگ اپنے دکھ دور کرانے کے لئے چل کر آویں۔

گیتا میں بار بار کہا گیا ہے کہ جو سب پرانیوں کو ایک ہی نگاہ سے دیکھتا ہے اور اپنے کو سب میں اور اپنے اندر سب کو دیکھتا ہے، اور جو ایک ایشور کے اندر سب کو اور سب کے اندر ایک ایشور کو دیکھتا ہے وہی گیانی ہے اور وہی دیکھنے والا ہے۔

یہ بھی ظاہر ہے کہ کسی بھی دھرم، مذہب کے سب ریت رواج اور اُسکی سب باتیں ایک برابر ضروری یا ایک سی اہم نہیں ہوتیں۔ سب مذہبوں میں یہ بات بتادی گئی ہے کہ اُن میں کچھ باتیں زیادہ ضروری ہیں اور کچھ کم، کچھ 'نتیہ' ہیں اور کچھ 'کامیہ' کچھ پکے حکم ہیں اور کچھ سمجھانے کے لئے مثال کے طور پر کہے گئے ہیں، کچھ 'محکمات' ہیں اور کچھ 'متشابہات'. سب مذہبوں میں یہ بھی بتایا گیا ہے کہ دیش، کال اور حالت کے مطابق آدمی کے یہ چھوٹے چھوٹے فرض یا اوپری ریت رواج بدلتے رہتے ہیں۔ مہابھارت میں لکھا ہے—

دیش کال نمتّا نام
بھیدے دھرمو وبھدیتے

یعنی دیش اور کال، جگہ اور وقت کے فرق سے دھرم الگ الگ ہوتے ہیں۔ یہاں پر دھرم سے مطلب انہیں اوپری ریت رواجوں سے ہے۔

انجیل میں لکھا ہے—

"ہر چیز کے لئے موسم ہوتا ہے اور دنیا کی ہر غرض کے لئے ایک وقت ہوتا ہے × × × × پیدا ہونے کا ایک وقت ہوتا ہے اور مرنے کا الگ وقت ہوتا ہے،

जापान के एक विद्वान डाक्टर इनाज़ो नितोबे ने अपनी किताब 'जापान' में लिखा है कि सातवीं सदी ईसवी के शुरू में जापान में एक बहुत बड़ा सन्त और राजनेता हुआ है जिसका नाम शोतोकू था. जापान के इतिहास में उसे बड़े से बड़े महात्माओं में गिना जाता है. कहते हैं कि जब वह मरा तो बूढ़े लोग इस तरह रोए कि जिस तरह उनका बच्चा मर गया हो और नौजवान लोग इस तरह रोए कि मानो उनकी मां मर गई हो. उस ज़माने में 'शिनतो' धर्म जापान में पहले से मौजूद था और कनफ़ूशियन धर्म चीन से और बौद्ध धर्म भारत से कोरिया के रस्ते जापान पहुँच चुके थे. इन तीनों मज़हबों के पन्डे पुरोहित आपस में लड़ने लगे थे. डर था कि जापान के रहने वालों में झगड़े न बढ़ जायं. शोतोकू ने उन झगड़ों का फ़ैसला इन शब्दों में किया :—

"शिनतो धर्म, धर्म की जड़ और उसका स्रोत है. ज़मीन और आसमान के पैदा होने के साथ साथ इस धर्म के अंकुर फूटे. यह धर्म आदमी को शुरू का रास्ता सिखाता है. कनफ़ूशियन धर्म, धर्म की शाखें और उसके पत्ते हैं. आदमी की पैदायश के साथ साथ इस धर्म के कल्ले निकले. यह धर्म आदमी को बीच का रास्ता बताता है. बौद्ध धर्म, धर्म का फूल और उसका फल है. आदमी की दिमाग़ी ताक़तों के बढ़ने के साथ साथ इसने जन्म लिया. यह धर्म आदमी को आख़िरी रास्ता दिखाता है. इसलिये इन तीनों में से किसी को छोड़ना और किसी को लेना या एक को दूसरे से ज़ियादा पसन्द करना या बड़ा बताना केवल हट धर्मी और ख़ुदग़रज़ी है. × × × × बाहर से किसी नए धर्म के आने और अपनाए जाने से हमारी क़ौम की दिमाग़ी ऊंचाई एक हाथ बढ़ेगी ही. उससे पहले के धर्मों का अधिकार छिन नहीं जायगा. सच यह है कि हर नया धर्म पुराने धर्म की रोशनी को बढ़ाता और चमकाता है."

एक अंगरेज़ी कवि ने बहुत अच्छा कहा है—"दूसरे का मज़ाक़ उड़ाना छोटे दिल वालों का काम है. बड़े और उदार दिल वालों के तौर तरीक़े भी बड़े और उदार ही होते हैं."

चीनी बौद्ध विद्वान लू-शुन-यान ने लिखा है—

"अलग अलग मज़हबों की तालीम एक दूसरे के ख़िलाफ़ नहीं हैं. बड़े दिल वाले लोग जानते हैं कि सब मज़हबों के अन्दर एक ही सी सचाइयां हैं. छोटे दिल वाले लोग केवल उनके फ़रक़ों को देखते हैं."

हर ज़माने की पाक आत्माओं के अन्दर एक ही सा ज्ञान उतर कर उन सबको एक ईश्वर के और सब रसूलों के दोस्त बना देता है.

جاپان کے ایک ودوان ڈاکٹر انازو نتوبے نے اپنی کتاب 'جاپان' میں لکھا ہے کہ ساتویں صدی عیسوی کے شروع میں جاپان میں ایک بہت بڑا سنت اور راج نیتا ہوا ہے جس کا نام شوتوکو تھا۔ جاپان کے اتہاس میں اسے بڑے سے بڑے مہاتماؤں میں گنا جاتا ہے۔ کہتے ہیں کہ جب وہ مرا تو بوڑھے لوگ اس طرح روئے کہ جس طرح اُن کا بچہ مر گیا ہو اور نوجوان لوگ اس طرح روئے کہ مانو اُن کی ماں مر گئی ہو۔ اُس زمانے میں 'شنتو' دھرم جاپان میں پہلے سے موجود تھا اور کنفوشین دھرم چین سے اور بودھ دھرم بھارت سے کوریا کے رستے جاپان پہونچ چکے تھے۔ ان تینوں مذہبوں کے پنڈے پروہت آپس میں لڑنے لگے تھے۔ ڈر تھا کہ جاپان کے رہنے والوں میں جھگڑے نہ بڑھ جائیں۔ شوتوکو نے اُن جھگڑوں کا فیصلہ ان شبدوں میں کیا :—

''شنتو دھرم' دھرم کی جڑ اور اُس کا سروت ہے۔ زمین اور آسمان کے پیدا ہونے کے ساتھ ساتھ اِس دھرم کے انکر پھوٹے۔ یہ دھرم آدمی کو شروع کا راستہ سکھاتا ہے۔ کنفوشین دھرم' دھرم کی شاخیں اور اُسکے پتے ہیں۔ آدمی کی پیدائش کے ساتھ ساتھ اِس دھرم کے کلے نکلے۔ یہ دھرم آدمی کو بیچ کا راستہ بتاتا ہے۔ بودھ دھرم' دھرم کا پھول اور اُسکا پھل ہے۔ آدمی کی دماغی طاقتوں کے بڑھنے کے ساتھ ساتھ اِس نے جنم لیا۔ یہ دھرم آدمی کو آخری راستہ دکھاتا ہے۔ اس لئے ان تینوں میں سے کسی کو چھوڑنا اور کسی کو لینا یا ایک کو دوسرے سے زیادہ پسند کرنا یا بڑا بتانا کیول ہٹ دھرمی اور خود غرضی ہے۔ × × × × باہر سے کسی نئے دھرم کے آنے اور اپنائے جانے سے ہماری قوم کی دماغی اونچائی ایک ہاتھ بڑھیگی ہی۔ اُس سے پہلے کے دھرموں کا ادھیکار چھن نہیں جائیگا۔ سچ یہ ہے کہ ہر نیا دھرم پرانے دھرم کی روشنی کو بڑھاتا اور چمکاتا ہے۔''

ایک انگریزی کوی نے بہت اچھا کہا ہے —''دوسرے کا مذاق اُڑانا چھوٹے دل والوں کا کام ہے۔ بڑے اور اُدار دل والوں کے طور طریقے بھی بڑے اور اُدار ہی ہوتے ہیں۔''

چینی بودھ ودوان لو شن یان نے لکھا ہے—

''الگ الگ مذہبوں کی تعلیم ایک دوسرے کے خلاف نہیں ہیں۔ بڑے دل والے لوگ جانتے ہیں کہ سب مذہبوں کے اندر ایک ہی سی سچائیاں ہیں۔ چھوٹے دل والے لوگ کیول اُن کے فرقوں کو دیکھتے ہیں۔''

ہر زمانے کی پاک آتماؤں کے اندر ایک ہی سا گیان اُتر کر اُن سب کو ایک ایشور کے اور سب رسولوں کے دوست بنا دیتا ہے۔

इन सब अलग अलग बोलियों, लिबासों और तौर तरीक़ों में इधर से उधर तक फैली हुई और रमी हुई एक बुनियादी एकता है जो इन सब को संभाले और मिलाए हुए है. यह वह सचाई है जिसे कभी हमें अपनी याद से नहीं मिटने देना चाहिये.

घड़े, मटके, सुराही, गिलास, लोटे, जग वग़ैरा बरतन कितनी भी अलग अलग शक्लों के हों उन सब के अन्दर का पानी एक है. लैम्प, लालटेन, दिये, क़न्दील, फ़ानूस और बल्ब कितनी भी अलग अलग शक्लों के हों सब के अन्दर की रोशनी एक है. लकड़ी हो या कोयला, उपले हों या कोई और ईंधन आग सबके अन्दर एक है. चलते फिरते जानवर अनगिनत हैं और अनगिनत ही उनकी शक्लें हैं पर जान सब के अन्दर एक है. इसी तरह मज़हब बहुत से हैं और सबके अलग अलग रीत-रिवाज और नाम रूप हैं पर आलमगीर यानी व्यापक मानव धर्म, मज़हबे इनसानियत एक ही है.

मशहूर अंगरेज़ विद्वान जे. ई. कारपैन्टर ने अपनी किताब 'दि प्लेस आफ़ क्रिशचियानिटी इन दी रिलीजन्स आफ़ दि वर्ल्ड' में चीन का हाल बयान करते हुए लिखा है :—

"चीन में यह रिवाज है कि जब कई देशों या सूबों के लोग एक दूसरे से मिलते हैं तो हर एक दूसरे से पूछता है—'आप किस ऊँचे (सबलाइम) मज़हब के हैं ?' तीन आदमियों में शायद एक कनफ़ूशियन मज़हब का मानने वाला है, दूसरा ताओ धर्म का और तीसरा बौद्ध धर्म का. इसके बाद उन तीनों में से हर एक अपने मज़हब के अलावा किसी दूसरे मज़हब की दिल खोलकर तारीफ़ करना शुरू कर देता है. फिर वह तीनों मिलकर यह कहते हैं—'मज़हब बहुत से हैं, समझ एक है, हम सब भाई हैं.'"

चीन के इस रिवाज को सुनकर एक तरह के आदमी चिल्ला पड़ेंगे—"ढोंगी !" दूसरी तरह के आदमी कह पड़ेंगे—"पुराने खूसट, पागल, काठ के उल्लू !" एक तीसरी तरह के आदमी, जिनकी तादाद आजकल बदक़िस्मती से शायद बहुत कम है, कहेंगे—"कैसी अच्छी इनसाफ़, समझदारी और शराफ़त की बात है !" अलग अलग विद्याओं के माहिर और अलग अलग कलाओं के कलावन्त जो अपनी अपनी विद्या और अपनी अपनी कला में मगन हैं और उसे समझते हैं, अगर वह सच्चे विद्वान और कलावन्त हैं, नीम मुल्ला या नीम हकीम नहीं हैं, तो एक दूसरे की कलाओं और विद्याओं के अन्दर उसी एक इनसानी होशियारी, लगन और बुद्धि की प्रखरता को देख सकते हैं, उस की क़द्र कर सकते हैं और उसके सामने आदर के साथ सर झुका सकते हैं.

ان سب الگ الگ بولیوں، لباسوں اور طور طریقوں میں اِدھر سے اُدھر تک پھیلی ہوئی اور رمی ہوئی ایک بنیادی ایکتا ہے جو ان سب کو سنبھالے اور ملائے ہوئے ہے ۔ یہ وہ سچائی ہے جسے کبھی ہمیں اپنی یاد سے نہیں مٹنے دینا چاہئے ۔

گھڑے، مٹکے، صراحی، گلاس، لوٹے، جگ وغیرہ برتن کتنی بھی الگ الگ شکلوں کے ہوں ان سب کے اندر کا پانی ایک ہے ۔ لیمپ، لالٹین، دیئے، قندیل، فانوس اور بلب کتنی بھی الگ الگ شکلوں کے ہوں سب کے اندر کی روشنی ایک ہے ۔ لکڑی ہو یا کوئلہ، اپلے ہوں یا کوئی اور ایندھن آگ سب کے اندر ایک ہے ۔ چلتے پھرتے جانور ان گنت ہیں اور ان گنت ہی ان کی شکلیں ہیں پر جان سب کے اندر ایک ہے ۔ اسی طرح مذہب بہت سے ہیں اور سب کے الگ الگ ریت رواج اور نام روپ ہیں پر عالم گیر یعنی ویاپک مانو دھرم، مذہب انسانیت ایک ہی ہے ۔

مشہور انگریز ودوان جے ۔ ای ۔ کارپینٹر نے اپنی کتاب ' دی پلیس آف کرشچیانٹی ان دی رلیجنس آف دی ورلڈ' میں چین کا حال بیان کرتے ہوئے لکھا ہے :—

'' چین میں یہ رواج ہے کہ جب کئی دیشوں یا صوبوں کے لوگ ایک دوسرے سے ملتے ہیں تو ہر ایک دوسرے سے پوچھتا ہے —' آپ کس اونچے (سب لائم) مذہب کے ہیں ؟' تین آدمیوں میں شاید ایک کنفوشین مذہب کا ماننے والا ہے، دوسرا تاؤ دھرم کا اور تیسرا بودھ دھرم کا ۔ اسکے بعد ان تینوں میں سے ہر ایک اپنے مذہب کے علاوہ کسی دوسرے مذہب کی دل کھول کر تعریف کرنا شروع کر دیتا ہے ۔ پھر وہ تینوں مل کر یہ کہتے ہیں — ' مذہب بہت سے ہیں، سمجھ ایک ہے، ہم سب بھائی ہیں' ۔''

چین کے اس رواج کو سن کر ایک طرح کے آدمی چلا پڑینگے —'' ڈھونگی ! '' دوسری طرح کے آدمی کہہ پڑینگے — '' پرانے کھوسٹ، پاگل، کاٹھ کے الو ! '' ایک تیسری طرح کے آدمی، جن کی تعداد آجکل بد قسمتی سے شاید بہت کم ہے، کہینگے —'' کیسی اچھی انصاف، سمجھداری اور شرافت کی بات ہے ! '' الگ الگ ودیاؤں کے ماہر اور الگ الگ کلاؤں کے کلاونت جو اپنی اپنی ودیا اور اپنی اپنی کلا میں مگن ہیں اور اسے سمجھتے ہیں، اگر وہ سچے ودوان اور کلاونت ہیں، نیم ملا یا نیم حکیم نہیں ہیں، تو ایک دوسرے کی کلاؤں اور ودیاؤں کے اندر اسی ایک انسانی ہوشیاری، لگن اور بدھی کی پرکھرتا کو دیکھ سکتے ہیں، اس کی قدر کر سکتے ہیں اور اس کے سامنے آدر کے ساتھ سر جھکا سکتے ہیں ۔

नया हिन्द

नया هند

[जिल्द] 11 अक्तूबर, सन् '51 नम्बर 4

نمبر 4 اکتوبر' سن '51 جلد 11

[...] जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی .

राही

(भाई अली अहमद एम० ए०)

राही ! अपनी राह चला जा

[प]ग पर हैं सौ सौ धोके माया के फैले हैं फंदे
[कम] हैं फूल, ज़ियादा कांटे कांटों को भी फूल समझता

राही ! अपनी राह चला जा

[रो]के पथ तेरा नाले टीले बन जाऐंगे हिमाले
[...] को दौड़ेंगे काले इन कालों के सीस कुचलता

राही ! अपनी राह चला जा

[तूफ़ान] उट्ठे, भूकम्प आए परबत से परबत टकराए
[धरती] चलने से रुक जाए रुकने का तू नाम न लेना

राही ! अपनी राह चला जा

[आँखों] के मत ढूंढ इशारे भटका देंगे राह ये तारे
[झूटे] पीत के सपने सारे इन सपनों को झूट समझता

राही ! अपनी राह चला जा

[तारे] आँख झपक सकते हैं दरिया राह भटक सकते हैं
[चांद] और सूरज थक सकते हैं थकना काम नहीं है तेरा

राही ! अपनी राह चला जा

راہی

(بھائی علی احمد ایم . اے .)

راہی ! اپنی راہ چلا جا

پگ پگ پر ہیں سو سو دھوکے مایا کے پھیلے ہیں پھندے
کم ہیں پھول' زیادا کانٹے کانٹوں کو بھی پھول سمجھتا

راہی ! اپنی راہ چلا جا

روکیں گے پتھ تیرا نالے ٹیلے بن جائیں گے ہمالے
ڈسنے کو دوڑیں گے کالے ان کالوں کے سیس کچلتا

راہی ! اپنی راہ چلا جا

طوفاں اٹھے' بھونچال آئے پربت سے پربت ٹکرائے
دھرتی چلنے سے رک جائے رکنے کا تو نام نہ لینا

راہی ! اپنی راہ چلا جا

آنکھوں کے مت ڈھونڈھ اشارے بھٹکا دیں گے راہ یہ تارے
جھوٹے پریت کے سپنے سارے ان سپنوں کو جھوٹ سمجھتا

راہی ! اپنی راہ چلا جا

تارے آنکھ جھپک سکتے ہیں دریا راہ بھٹک سکتے ہیں
چاند اور سورج تھک سکتے ہیں تھکنا کام نہیں ہے تیرا

راہی ! اپنی راہ چلا جا

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

अक्तूबर 1951

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

اکتوبر 1951

नया हिन्द

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تارا چند، بھگوان دین، مظفرحسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, महमूद अहमद 'हुनर'

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی، محمود احمد 'ہنر'

* * * * * *

इस नम्बर के ख़ास लेख

* * *

اِس نمبر کے خاص لیکھ

* * *

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی، الٰہ آباد

अक्तूबर 1951 اکتوبر

क़ीमत दस आना قیمت دس آنہ

हिन्दुस्तानी कलचर

पर

निबन्धों (मक़ालों) के लिये

इनाम

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने तय किया है कि हिन्दुस्तानी कलचर पर तीन सबसे अच्छे निबन्धों (मक़ालों) के लिये तीन इनाम दिये जाएं. पहला इनाम एक हज़ार रुपए, दूसरा इनाम पाँच सौ रुपए और तीसरा इनाम ढाई सौ रुपए.

निबन्धों में उस हिन्दुस्तानी कलचर के, जो पिछले सारे ज़माने में रूप लेती रही है, टिकाऊ पहलुओं को बयान करते हुए आगे के लिये एक हिन्दुस्तानी कलचर के रंग रूप को बताने की कोशिश होनी चाहिये. निबन्ध अंगरेज़ी में या हिन्दुस्तानी में होने चाहियें. पाँच हज़ार से कम या दस हज़ार से अधिक शब्द न हों. फुलस्केप काग़ज़ पर, काग़ज़ के एक तरफ़, एक चौथाई हाशिया छोड़कर, टाइप करके हर निबन्ध की तीन कापियाँ 30 सितम्बर सन 1951 तक नीचे के पते पर आजानी चाहियें. हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी को हक़ होगा कि आए हुए निबन्धों में से जिसे चाहे शाया करे.

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

नोटः—यह निबन्ध पहले 30 जून तक मँगाए गए थे और इनाम की रक़में कुछ कम थीं. अब इस के लिये वक़्त और रक़म दोनों बढ़ा दिये गए हैं.

—सुन्दरलाल

ھندستانی کلچر

پر

نبندھوں (مقالوں) کے لئے

انعام

ھندستانی کلچر سوسائٹی نے طے کیا ھے کہ ھندستانی
چر پر تین سب سے اچھے نبندھوں (مقالوں) کے لئے
ن انعام دئے جائیں . پہلا انعام ایک ہزار روپے، دوسرا
عام پانچ سو روپے اور تیسرا انعام ڈھائی سو روپے .

نبندھوں میں اُس ھندستانی کلچر کے، جو پچھلے
ارے زمانے میں روپ لیتی رہی ھے، ٹکاؤ پہلوؤں کو بیان
تے ہوئے آگے کے لئے ایک ھندستانی کلچر کے رنگ روپ
بتانے کی کوشش ہونی چاھئے . نبندھ انگریزی میں
ھندستانی میں ہونے چاھئیں . پانچ ہزار سے کم یا
س ہزار سے ادھک شبد نہ ہوں . فلسکیپ کاغذ پر، کاغذ
ایک طرف، ایک چوتھائی حاشیہ چھوڑ کر، ٹائپ کر کے
نبندھ کی تین کاپیاں 30 ستمبر سن 1951 تک نیچے
پتے پر آجانی چاھئیں . ھندستانی کلچر سوسائٹی کو
ق ہوگا کہ آئے ہوئے نبندھوں میں سے جسے چاھے شائع
ے .

سندرلال

سکریٹری، ھندستانی کلچر سوسائٹی
145، مٹھی گنج، الہ آباد

نوٹ — یہ نبندھ پہلے 30 جون تک منگائے گئے تھے
انعام کی رقمیں کچھ کم تھیں . اب اِس کے لئے وقت
رقم دونوں بڑھا دئے گئے ہیں .

—سندرلال

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

:) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना
ार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों .

) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों
का छापना .

) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों,
से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में
का मेल बढ़ाना .

—:o:—

साइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा;
प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल
गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास;
ी—पं० सुन्दरलाल.

वर्निंग बाडी के और मेम्बर—

० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद
नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी०
० एस० के० रुद्रा, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा
दीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल
और श्री ओम प्रकाश पालीवाल .

म्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये –

सुन्दरलाल
सेक्रेटरी, हिंदुस्तानी कलचर सोसाइटी
145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद .

—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी
ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द"
ग्राहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया
देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से
की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई
जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या
की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम

...تانی کلچر سوسائٹی

...ک ایسی هندستانی کلچر کا بڑهانا' پهیلانا
...یا جس میں سب هندستانی شامل هیں .

...کتا پهیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں
...ں .

...ی گهروں' کتاب گهروں' سبهاؤں' کانفرنسوں'
...ب دهرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں
...بڑهانا .

—:o:—

...کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛
...پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بهگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق .
...کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بهگوان داس؛
...پنڈت سندرلال .

...باڈی کے اور ممبر—

...سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید
...مسٹر منظر علی سوخته' شری بی جی .
...ایس . کے . رودرا' پنڈت بشمبهر ناتهه' مهاتما
...سیٹهه پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار
...پرکاش پالیوال .

...کے قاعدوں کے لئے لکهئے –

سندرلال
...سکریٹری' هندستانی کلچر سوسائٹی'
145' مٹهی گنج' الهآباد .

...سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی
...ایک روپیه کردی گئی هے . "نیا هند" کے
...ممبر بننا چاهیں ان کو صرف چهه روپیه چنده
...ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی
...سوسائٹی کی نکلی هوئی کوئی کتاب جو
...مفت لے سکیں گے یا زیاده دام
...ایک روپیه کم کرا سکیں گے .

पंजाब हमें क्या सिखाता है

महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटीसी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करनेकी तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

30 जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर यह विधान दिया की वह उनकी तरफ़ से उसे आल इंडिया कांगरेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख़्ता नेकी है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

उन बहादुरों की कहानियाँ जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब. क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल .

उन मुसलमान देशभक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की जंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

...ने का पता—
... 'नयाहिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں ان کا دردناک ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق

اس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہوارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کےلئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک— شری منظر علی سوختہ

30 جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کے جنرل سکریٹری کو بلا کر یہ ودھان دیا کہ وہ ان کی طرف سے اسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کر دیں . یہ چھوٹا سا ودھان دیش کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے اور اِسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں .

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے . 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے .

آج کے شہید

سمپادک— شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنہوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی .

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب . قیمت صرف ڈھائی روپیہ .

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل .

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنہوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی . کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے .

قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے .

... 145 ... الہ آباد

गीता और क़ुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे दे कर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़बत, आख़रत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस में वह चार लेक्चर जमा कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

گیتا اور قران

لیکھک—پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے .

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے .

آخر میں قرآن سے پہلے کی عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قران کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے . اس میں قران کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے . یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ھندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ .

ھندو مسلم ایکتا

اس میں وہ چار لیکچر جمع کر دئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک—پنڈت سندر لال

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذھبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ھند' 145 مٹھی گنج' الہ آباد .

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

नीचे लिखी सब किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती हैं. जो किताब एक ही लिखावट में छपी है उसका ज़िकर कर दिया गया है.

दस रुपए से ज़्यादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायगी.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

نیچے لکھی سب کتابیں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہیں . جو کتاب ایک ہی لکھاوٹ میں چھپی ہے اُس کا ذکر کر دیا گیا ہے .

دس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں اور بکسیلروں کو خاص رعایت دی جائیگی .

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمہ ہوگا .

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन् 1950 से सारे भारत में लागू हुआ

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले.

यदि आप आने वाले आम चुनाव में, जिस पर भारत का सारा भविश्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आज़ाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो ज़रूरी है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आसानी के लिये किताब के आख़ीर में हिन्दी से अंगरेज़ी और अंगरेज़ी से हिन्दी साठ पन्ने की शब्दमाला दे दी गई है.

भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا.

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انووادت .

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اِس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھ لے .

یدی آپ آنے والے عام چناؤ میں' جس پر بھارت کا سارا بھوشیہ نربھر ہے' سمجھ کر حصہ لینا چاہتے ہیں اور آزاد بھارت میں اپنے ادھیکار سمجھنا چاہتے ہیں تو ضروری ہے کہ آپ اس پستک کو دھیان سے پڑھ لیں .

آسانی کے لئے کتاب کے آخیر میں ہندی سے انگریزی اور انگریزی سے ہندی ساٹھ پنّے کی شبد مالا دے دی گئی ہے .

بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے .

آسان بامحاورہ بھاشا . رایل اٹھ پیجی بڑا سائز . لگ بھگ چار سو پنّے. کپڑے کی سندر جلد . قیمت کیول ساڑھے سات روپئے .

[illegible] का पता—

[illegible] 145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

ملنے کا پتہ :—

[illegible] 145' مٹھی گنج' الہ آباد .

बल्कि करोड़ों मन नाज हमारे जैसे दूसरे देशों को भी भेज सके, सारे देश के सदाचार को एक दम ऊपर उठा दिया, और देश भर के सरकारी नौकरों की रिशवत खोरी को एक बीते ज़माने की कहानी बना दिया, उस पड़ोसी लाल चीन या उसके असूलों से हमें किसी तरह का ख़तरा नहीं है.

यह सवाल इस समय कुछ मानी नहीं रखता कि निजी तौर पर टन्डन जी फ़िरक़ापरस्त हैं या नहीं और हैं तो किस दरजे तक हैं. न इस सवाल के कुछ मानी हैं कि टन्डन जी का निजी झुकाव अमरीका की तरफ़ कितना है या रूस की तरफ़ कितना. जिस कांगरेस के टन्डन जी सदर हैं वह अपनी एलान की हुई पालीसी के मुताबिक़ कन्ट्रोल, बनस्पति घी या गाँव के धन्धों के मामले में भी टन्डन जी के साथ न चल रही है, न चलने का वादा करती है और न चल सकती है. सूरत बिलकुल साफ़ है.

एक तरफ़ अमरीका की साम्राजी लालसा, अमरीकी चालें, देश की फ़िरक़ा परस्त ताक़तें, कुछ पूँजीपति और पुराने राजाओं और जागीरदारों का मिला जुला दल है, जिसकी कोशिशें अगर कामयाब हो गईं तो देश को ज़बरदस्त मुसीबतों और हो सकता है फिर एक बार राजकाजी ग़ुलामी में से निकलना पड़े. दूसरी तरफ़ देश को किसी तरह इन सब ख़तरों से बचा ले जाने की कोशिश है, जिसकी सबसे ज़ियादा लगन और सबसे ज़ियादा क़ाबलियत महात्मा गांधी के बाद देश को जवाहरलाल में ही दिखाई देती है. और जवाहरलाल जी का पिछले चार बरस का रवैया साबित कर रहा है कि उन में यह क़ाबलियत है.

हालत काफ़ी नाज़ुक है. हमारी बात अगर टन्डन जी के दिल में उतर सके तो हम नम्रता के साथ उनसे प्रार्थना करेंगे कि वह अपने चारों तरफ़ निगाह डालें, ख़ुद अपनी शक्तियों और कमज़ोरियों को समझें और अपने इस वक़्त के ग़लत आग्रह को छोड़कर देश की बाग पूरी तरह जवाहरलाल जी के हाथों में सौंपने में देश वासियों को ख़ुशी ख़ुशी मदद दें.

आल इंडिया कांगरेस कमेटी या कांगरेस क्या फ़ैसला करेगी इससे हमें अधिक सम्बन्ध नहीं हैं. ज़ियादा बड़ा सवाल देश के फ़ैसले का है, और इसमें ज़रा भी शक नहीं कि इस समय की संकट की हालत में देश का भला, देश की ख़ैरियत और देश की सलामती इस में और केवल इसी में है कि कम से कम आइन्दा कुछ बरसों के लिये देश की बाग पूरी तरह से जवाहर लाल जी के हाथों में दे दी जाय.

31. 8. '51. —सुन्दरलाल

بلکہ کروڑوں من ناج ہمارے جیسے دوسرے دیشوں کو بھی بھیج سکے، سارے دیش کے سداچار کو ایک دم اوپر اٹھا دیا، اور دیش بھر کے سرکاری نوکروں کی رشوت خوری کو ایک بیتے زمانے کی کہانی بنا دیا، اس پڑوسی لال چین یا اس کے اصولوں سے ہمیں کسی طرح کا خطرہ نہیں ہے۔

یہ سوال اس سمے کچھ معنی نہیں رکھتا کہ نجی طور پر ٹنڈن جی فرقہ پرست ہیں یا نہیں اور ہیں تو کس درجے تک ہیں۔ نہ اس سوال کے کچھ معنی ہیں کہ ٹنڈن جی کا نجی جھکاؤ امریکہ کی طرف کتنا ہے یا روس کی طرف کتنا۔ جس کانگریس کے ٹنڈن جی صدر ہیں وہ اپنی اعلان کی ہوئی پالیسی کے مطابق کنٹرول، بناسپتی گھی یا گاؤں کے دھندوں کے معاملے میں بھی ٹنڈن جی کے ساتھ نہ چل رہی ہے، نہ چلنے کا وعدہ کرتی ہے اور نہ چل سکتی ہے۔ صورت بالکل صاف ہے۔

ایک طرف امریکہ کی سامراجی لالسا، امریکی چالیں، دیش کی فرقہ پرست طاقتیں، کچھ پونجی پتی اور پرانے راجاؤں اور جاگیرداروں کا ملا جلا دل ہے، جس کی کوششیں اگر کامیاب ہو گئیں تو دیش کو زبردست مصیبتوں اور ہو سکتا ہے پھر ایک بار راج کاجی غلامی میں سے نکلنا پڑے۔ دوسری طرف دیش کو کسی طرح ان سب خطروں سے بچا لے جانے کی کوشش ہے، جس کی سب سے زیادہ لگن اور سب سے زیادہ قابلیت مہاتما گاندھی کے بعد دیش کو جواہر لال میں ہی دکھائی دیتی ہے۔ جواہر لال جی کا پچھلے چار برس کا رویہ ثابت کر رہا ہے کہ ان میں یہ قابلیت ہے۔

حالت کافی نازک ہے۔ ہماری بات اگر ٹنڈن جی کے دل میں اتر سکے تو ہم نمرتا کے ساتھ ان سے پرارتھنا کریں گے کہ وہ اپنے چاروں طرف نگاہ ڈالیں، خود اپنی شکتیوں اور کمزوریوں کو سمجھیں اور اپنے اس وقت کے غلط آگرہ کو چھوڑ کر دیش کی باگ پوری طرح جواہر لال جی کے ہاتھوں میں سونپنے میں دیش واسیوں کو خوشی خوشی مدد دیں۔

آل انڈیا کانگریس کمیٹی یا کانگریس کیا فیصلہ کرے گی اس سے ہمیں ادھک سمبندھ نہیں ہے۔ زیادہ بڑا سوال دیش کے فیصلے کا ہے، اور اس میں ذرا بھی شک نہیں کہ اس سمے کی سنکٹ کی حالت میں دیش کا بھلا، دیش کی خیریت اور دیش کی سلامتی اس میں اور کیول اسی میں ہے کہ کم سے کم آئندہ کچھ برسوں کے لئے دیش کی باگ پوری طرح جواہر لال جی کے ہاتھوں میں دے دی جائے۔

31 . 8 . '51 —سندر لال

में हैं. महात्मा गांधी ने देश को इस खतरे से साफ़ साफ़ शब्दों में आगाह किया था. दूसरी ताक़त कुछ ऐसे राजाओं महाराजाओं की है जो जनता की इस वक़्त की कमज़ोरियों और तकलीफ़ों से फ़ायदा उठा कर देश की नई एकता को तोड़ कर अपने अपने इलाक़ों में अपनी अपनी मनमानी हकूमतें फिर से क़ायम करना चाहते हैं. राष्ट्रीय संघ के बड़े से बड़े नेता कई बार साफ़ साफ़ कह चुके हैं कि हिन्दू पूंजीपतियों और हिन्दू राजों महाराजों को बढ़ाना और फिर से क़ायम करना उनके ख़ास उद्देशों में से है. हालत जनवरी सन '48 से कहीं नाज़ुक बतलाई जाती है. यहाँ तक कि अगर ज़रूरत हो तो हथियारों की मदद से भी नेहरू सरकार को बदल देने की तय्यारियां सुनने में आ रही हैं. यह चारों ताक़तें साफ़ साफ़ टन्डन जी और उनके दल के पीछे हैं, और जवाहरलाल के ख़िलाफ़ टंडन जी को पूरा पूरा बढ़ावा दे रही हैं.

टन्डन जी और जवाहरलाल का मामला शुरू होते ही नागपुर से ख़बर आई थी कि संघ और महासभा दोनों ने देश भर में अपने आदमियों को यह गश्ती चिट्ठियां भेजी हैं कि जवाहरलाल जी के ख़िलाफ़ टन्डन जी को हर तरह से मदद दी जावे. नागपुर से श्री द्वारका प्रसाद मिश्र के कई बयान इस मामले को और भी साफ़ कर देते हैं. मिश्र जी ने रूस और अमरीका की लागडाट में अमरीका की तरफ़ साफ़ अपना झुकाव ज़ाहिर किया है, रूसी या चीनी कम्यूनिज़्म को भारत के लिये सबसे बड़ा ख़तरा बताया है, अमरीकी ढंग की लोकशाही के बचाव के लिये अपनी आवाज़ उठाई है, जवाहरलाल जी की विदेशी पालीसी को वह ग़लत और बरबाद करने वाली समझते हैं. पाकिस्तान की तरफ़ जवाहरलाल के रुख़ को वह पोच मानते हैं, उनकी राय है कि और कोई बात न सही तो पाकिस्तान के हिन्दुओं के बचाव के नाम पर ही हमें पाकिस्तान पर फ़ौरन धावा बोल देना चाहिये, वग़ैरा. डाक्टर खरे ने भी मिश्र जी को उनके विचारों पर बधाई दी है. मिश्र जी अभी तक टन्डन जी के सबसे बड़े मददगार दिखाई दे रहे हैं.

यह सब बातें काफ़ी गहरी हैं. तफ़सीली बहस की यहां ज़रूरत नहीं. पाकिस्तान हो या कोई और देश हम दुनिया भर के साथ अमन से रहना चाहते हैं. हम जहाँ तक बन पड़े दुनिया की दलबन्दियों में पड़ना नहीं चाहते. और अगर भारत और किसी दूसरे देश में लड़ाई हो ही जावे तो देश मिश्र जी या उनके दल के मुक़ाबले में जवाहर लाल के हाथों में अपने को कहीं ज़ियादा सुरक्षित मानता है. भारत की जनता के सामने यह बात भी बिलकुल साफ़ है कि जिस लाल चीन ने दो बरस के अन्दर ही उस देश को जहाँ करोड़ों लोग नाज की कमी से मर रहे थे इस क़ाबिल कर दिया कि वह न केवल अपना ही पेट पाले

میں ہیں۔ مہاتما گاندھی نے دیش کو اس خطرے سے صاف صاف شبدوں میں آگاہ کیا تھا۔ دوسری طاقت کچھ ایسے راجاؤں مہاراجاؤں کی ہے جو جنتا کی اس وقت کی کمزوریوں اور تکلیفوں سے فائدہ اُٹھا کر دیش کی نئی ایکتا کو توڑ کر اپنے اپنے علاقوں میں اپنی اپنی من مانی حکومتیں پھر سے قائم کرنا چاہتے ہیں۔ راشٹریہ سنگھ کے بڑے سے بڑے نیتا کئی بار صاف صاف کہہ چکے ہیں کہ ہندو پونجی پتیوں اور ہندو راجوں مہا راجوں کو بڑھانا اور پھر سے قائم کرنا ان کے خاص اُدیشوں میں سے ہے۔ حالت جنوری سن '48 سے کہیں نازک بتلائی جاتی ہے۔ یہاں تک کہ اگر ضرورت ہو تو ہتھیاروں کی مدد سے بھی نہرو سرکار کو بدل دینے کی تیاریاں سننے میں آرہی ہیں۔ یہ چاروں طاقتیں صاف صاف ٹنڈن جی اور ان کے دل کے پیچھے ہیں، اور جواہر لال کے خلاف ٹنڈن جی کو پورا پورا بڑھاوا دے رہی ہیں۔

ٹنڈن جی اور جواہر لال کا معاملہ شروع ہوتے ہی ناگپور سے خبر آئی تھی کہ سنگھ اور مہا سبھا دونوں نے دیش بھر میں اپنے آدمیوں کو یہ گشتی چٹھیاں بھیجی ہیں کہ جواہر لال جی کے خلاف ٹنڈن جی کو ہر طرح سے مدد دی جاوے۔ ناگپور سے ہی شری دوارکا پرساد مشر کے کئی بیان اس معاملے کو اور بھی صاف کر دیتے ہیں۔ مشر جی نے روس اور امریکہ کی لاگ ڈاٹ میں امریکہ کی طرف صاف اپنا جھکاؤ ظاہر کیا ہے، روسی یا چینی کمیونزم کو بھارت کے لئے سب سے بڑا خطرہ بتایا ہے، امریکی ڈھنگ کی لوک شاہی کے بچاؤ کے لئے اپنی آواز اٹھائی ہے، جواہر لال جی کی ودیشی پالیسی کو وہ غلط اور برباد کرنے والی سمجھتے ہیں۔ پاکستان کی طرف جواہر لال کے رخ کو وہ پوچ مانتے ہیں، ان کی رائے ہے کہ اور کوئی بات نہ سہی تو پاکستان کے ہندوؤں کے بچاؤ کے نام پر ہی ہمیں پاکستان پر فوراً دھاوا بولدینا چاہئے، وغیرہ۔ ڈاکٹر کھرے نے بھی مشر جی کو ان کے وچاروں پر بدھائی دی ہے۔ مشر جی ابھی تک ٹنڈن جی کے سب سے بڑے مددگار دکھائی دے رہے ہیں۔

یہ سب باتیں کافی گہری ہیں۔ تفصیلی بحث کی یہاں ضرورت نہیں۔ پاکستان ہو یا کوئی اور دیش ہم دنیا بھر کے ساتھ امن سے رہنا چاہتے ہیں۔ ہم جہاں تک بن پڑے دنیا کی دل بندیوں میں پڑنا نہیں چاہتے۔ پر اگر بھارت اور کسی دوسرے دیش میں لڑائی ہو ہی جاوے تو دیش مشر جی یا ان کے دل کے مقابلے میں جواہر لال کے ہاتھوں میں اپنے کو کہیں زیادہ سرکشت مانتا ہے۔ بھارت کی جنتا کے سامنے یہ بات بھی بالکل صاف ہے کہ جس لال چین نے دو برس کے اندر ہی اس دیش کو جہاں کروڑوں لوگ ناج کی کمی سے مر رہے تھے اس قابل کردیا کہ وہ نہ کیول اپنا ہی پیٹ پالے

शख़सियतों से भी है. लेकिन सवाल का राजकाजी या मुल्की पहलू इतना बड़ा है कि उस के सामने शख़सियतों का फ़रक़ बहुत ही कम मानी रखता है.

दोनों से हमारा परिचय एक पीढ़ी से ऊपर का है. दोनों से हमारा घनिश्ट सम्बन्ध है. दोनों से हमें प्रेम है. कुछ बातों में हमारे विचार टन्डन जी से मिलते हैं जवाहरलाल जी से नहीं. दूसरी कुछ बातों में हमारे विचार टन्डन जी के मुक़ाबले में जवाहर लाल जी से ज़ियादा मिलते हैं. कुछ बातों में हमारा दोनों से मतभेद है और ज़ाहिर है बहुत सी बातों में न इन दोनों के विचारों में कोई ख़ास फ़रक़ है और न इन के और हमारे विचारों में.

मिसाल के लिये कंट्रोल, बनस्पति घी और गांव के दूसरे धन्दों के बारे में हमारे विचार जवाहरलाल जी की निस्बत टन्डन जी से ज़ियादा मिलते हैं. इस तरह के सवालों का भी अपना महत्व है. लेकिन इस समय की नाज़ुक हालत में देश को कहीं ज़ियादा बड़े ख़तरों का सामना करना पड़ रहा है. कंट्रोल या बनस्पति घी जैसे सवालों को देश कुछ दिनों के बाद भी हल कर सकता है और करेगा लेकिन जो ज़ियादा बड़े ख़तरे सामने हैं उन्हें अगर हमने जल्दी ही हल न किया या उनके मामले में हम ज़रा भी चूक गए तो डर है कि हम अपने देश और आज़ादी दोनों से हाथ धो बैठेंगे.

हमारी नई आज़ादी की जड़ें अभी तक जमने नहीं पाईं. ख़ासकर अमरीका और इंगलिस्तान की राजकाजी और माली लालसाओं और कोशिशों से हमें हर वक़्त डर लगा हुआ है. हम जानते हैं कि देश का बंटवारा इन्हीं कोशिशों का नतीजा था. दुनिया की सामराज प्रेमी ताक़तें हमेशा से अपने मातहत मुल्कों या कमज़ोर मुल्कों के आपसी झगड़ों ख़ासकर उनकी मज़हबी गिरोह बन्दियों को भड़काती, बढ़ाती और उनसे फ़ायदा उठाती रही हैं. आज भी, हिन्दुस्तान में हो या पाकिस्तान में, हिन्दू फ़िरक़ा परस्ती हो या मुसलिम फ़िरक़ा परस्ती, दोनों को अमरीका के पैसे और अमरीका और इंगलैन्ड के वादों से काफ़ी बढ़ावा मिल रहा है. हम यहाँ इन चीज़ों की तफ़सील में जाना ठीक नहीं समझते. हिन्दू महासभा और राश्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को अमरीका की तरफ़ से बढ़ावे दिये जाने की बातें अख़बारों में आचुकी हैं और वह बे बुनियाद नहीं हैं.

इनके साथ दो और ताक़तें हैं जो, जाने या अनजाने, मुल्क की नई आज़ादी के ख़िलाफ़ इस गहरी और ख़तरनाक साज़िश में हिस्सा ले रही हैं. एक देश के वे पूंजीपति जो महात्मा गांधी के बलिदान के बहुत पहले से अमरीकी पूंजीपतियों के साथ मिलकर और हिस्सा बटा कर देश की करोड़ों चुसी हुई जनता को और अधिक चूसने की कोशिशों

شخصیتوں سے بھی ہے ۔ لیکن سوال کا راج کاجی یا ملکی پہلو اتنا بڑا ہے کہ اُسکے سامنے شخصیتوں کا فرق بہت ہی کم معنی رکھتا ہے ۔

دونوں سے ہمارا پریچے ایک پیڑھی سے اوپر کا ہے ۔ دونوں سے ہمارا گھنشٹ سمبندھ ہے ۔ دونوں سے ہمیں پریم ہے ۔ کچھ باتوں میں ہمارے وچار ٹنڈن جی سے ملتے ہیں جواہر لال جی سے نہیں ۔ دوسری کچھ باتوں میں ہمارے وچار ٹنڈن جی کے مقابلے میں جواہر لال جی سے زیادہ ملتے ہیں ۔ کچھ باتوں میں ہمارا دونوں سے مت بھید ہے اور ظاہر ہے بہت سی باتوں میں نہ اِن دونوں کے وچاروں میں کوئی خاص فرق ہے اور نہ ان کے اور ہمارے وچاروں میں ۔

مثال کے لئے کنٹرول' بنسپتی گھی اور گاؤں کے دھندوں کے بارے میں ہمارے وچار جواہر لال جی کی نسبت ٹنڈن جی سے زیادہ ملتے ہیں ۔ اسطرح کے سوالوں کا بھی اپنا مہتو ہے ۔ لیکن اس سمے کی نازک حالت میں دیش کو کہیں زیادہ بڑے خطروں کا سامنا کرنا پڑ رہا ہے ۔ کنٹرول یا بنسپتی گھی جیسے سوالوں کو دیش کچھ دنوں کے بعد بھی حل کر سکتا ہے اور کرے گا لیکن جو زیادہ بڑے خطرے سامنے ہیں اُنہیں اگر ہم نے جلدی ہی حل نہ کیا یا اُن کے معاملے میں ہم ذرا بھی چوک گئے تو ڈر ہے کہ ہم اپنے دیش اور آزادی دونوں سے ہاتھ دھو بیٹھیں گے ۔

ہماری نئی ازادی کی جڑیں ابھی تک جمنے نہیں پائیں ۔ خاص کر امریکہ اور انگلستان کی راج کاجی اور مالی لالساؤں اور کوششوں سے ہمیں ہر وقت ڈر لگا ہوا ہے ۔ ہم جانتے ہیں کہ دیش کا بٹوارا انہیں کوششوں کا نتیجہ تھا ۔ دنیا کی سامراج پریمی طاقتیں ہمیشہ سے اپنے ماتحت ملکوں یا کمزور ملکوں کے آپسی جھگڑوں خاص کر اُن کی مذہبی گروہ بندیوں کو بھڑکاتی' بڑھاتی اور اُن سے فائدہ اُٹھاتی رہی ہیں ۔ آج بھی' ہندستان میں ہو یا پاکستان میں' ہندو فرقہ پرستی ہو یا مسلم فرقہ پرستی' دونوں کو امریکہ کے پیسے اور امریکہ اور انگلینڈ کے وعدوں سے کافی بڑھاوا مل رہا ہے ۔ ہم یہاں اِن چیزوں کی تفصیل میں جانا ٹھیک نہیں سمجھتے ۔ ہندو مہا سبھا اور راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کو امریکہ کی طرف سے بڑھاوے دیئے جانے کی باتیں اخباروں میں آچکی ہیں اور وہ بے بنیاد نہیں ہیں ۔

اِن کے ساتھ دو اور طاقتیں ہیں جو' جانے یا انجانے' ملک کی نئی آزادی کے خلاف اس گہری اور خطرناک سازش میں حصہ لے رہی ہیں ۔ ایک دیش کے وہ پونجی پتی جو مہاتما گاندھی کے بلیدان کے بہت پہلے سے امریکی پونجی پتیوں کے ساتھ مل کر اور حصہ بٹاکر دیش کی کروڑوں چوسی ہوئی جنتا کو اور ادھک چوسنے کی کوششوں

उस दिल की जगह या तो मूरखता से खुद बैठने की सोची या किसी को बिठाने की सोची. ठीक उसी तरह आज भी मेरा दिल जवाहर लाल, जो मेरी नज़र में, यानी लाखों करोड़ों की नज़र में, उस कसौटी पर काफ़ी खरा उतरता मालूम होता है जिस कसौटी पर गांधी जी परखे गए थे, किसी एक या दस बीस की नज़र में खोटा जंच सकता है, कसौटी पर खोटा परखा तो नहीं जा सकता, और वह या वे मूरख उस जगह बैठने या उस जगह किसी को बिठाने की सोचें तो क्या यह वैसा ही काम न होगा जैसा गांधी जी के साथ हुआ !

"इसमें शक नहीं कि संगठन व्यक्ति से बड़ा होता है. पर असल में संगठन देखने के लिये ही बड़ा होता है और बेजान तो होता ही है. और बेजान कितनी भी बड़ी चीज़ किसी छोटे से छोटे जानदार से बड़ी नहीं मानी जा सकती. मकान कितना ही बड़ा क्यों न हो उसके एक कोने में आ जाने वाले आदमी से हरगिज़ बड़ा नहीं है. कांगरेस कितनी ही बड़ी क्यों न हो वह सरकार की और हर संगठन की तरह बेजान मशीन है. इसीलिये कांगरेस बड़ी नहीं. जवाहर लाल कांगरेस से बहुत बड़े हैं और अगर तुम समझ कर देखो तो जानदार होने के नाते तुम भी कांगरेस से बड़े हो. तुम कांगरेस से बड़े हो यह बात बड़ी आसानी से समझ में आ सकती है अगर तुम अपने आपको जवाहर लाल की पोज़ीशन में ले जा सको और जवाहर लाल को अपनी पोज़ीशन में ला सको. क्या तुमने अनेकों बार पार्लिमेन्ट के मंच से नहीं सुना कि सरकार मशीन होती है और वह दया करना नहीं जानती. इसीलिये सरकार को सरकार के ज़ुल्मों की सज़ा नहीं दी जाती. मेरे ख़याल में मुझ (कांगरेस) से मेरी असलियत समझ कर तुम्हारी तसल्ली हो गई होगी. और तुम्हें यह मालूम हो जायगा कि मैं बड़ी होती हुई भी उन मानों में बड़ी नहीं हूं जिन मानों में तुमने अपना कोई मतलब सीधा करने के लिये मुझे बड़ा कर डाला है."

25. 8. '51. —भगवानदीन

اس دل کی جگہ یا تو مورکھتا سے خود بیٹھنے کی سوچی یا کسی کو بٹھانے کی سوچی. ٹھیک اسی طرح آج بھی میرا دل جواہر لال، جو میری نظر میں، یعنی لاکھوں کروڑوں کی نظر میں، اس کسوٹی پر کافی کھرا اُترتا معلوم ہوتا ہے جس کسوٹی پر گاندھی جی پرکھے گئے تھے، کسی ایک یا دس بیس کی نظر میں کھوٹا جانچ سکتا ہے، کسوٹی پر کھوٹا پرکھا تو نہیں جاسکتا، اور وہ یا وہ مورکھ اس جگہ بیٹھنے یا اس جگہ کسی کو بٹھانے کی سوچیں تو کیا یہ ویسا ہی کام نہ ہوگا جیسا گاندھی جی کے ساتھ ہوا!

" اس میں شک نہیں کہ سنگٹھن ویکتی سے بڑا ہوتا ہے. پر اصل میں سنگٹھن دیکھنے کے لئے ہی بڑا ہوتا ہے اور بے جان تو ہوتا ہی ہے. اور بے جان کتنی بھی بڑی چیز کسی چھوٹے سے چھوٹے جاندار سے بڑی نہیں مانی جاسکتی. مکان کتنا ہی بڑا کیوں نہ ہو اس کے ایک کونے میں آجانے والے آدمی سے ہرگز بڑا نہیں ہے. کانگریس کتنی ہی بڑی کیوں نہ ہو وہ سرکار کی اور ہر سنگٹھن کی طرح بے جان مشین ہے. اسی لئے کانگریس بڑی نہیں. جواہر لال کانگریس سے بہت بڑے ہیں اور اگر تم سمجھ کر دیکھو تو جاندار ہونے کے ناتے تم بھی کانگریس سے بڑے ہو. تم کانگریس سے بڑے ہو یہ بات بڑی آسانی سے سمجھ میں آسکتی ہے اگر تم اپنے آپ کو جواہر لال کی پوزیشن میں لے جا سکو اور جواہر لال کو اپنی پوزیشن میں لا سکو. کیا تم نے انیکوں بار پارلیمنٹ کے منچ سے نہیں سنا کہ سرکار مشین ہوتی ہے اور وہ دیا کرنا نہیں جانتی. اسی لئے سرکار کو سرکار کے ظلموں کی سزا نہیں دی جاتی. میرے خیال میں مجھ (کانگریس) سے میری اصلیت سمجھکر تمہاری تسلی ہوگئی ہوگی اور تمہیں یہ معلوم ہوجائے گا کہ میں بڑی ہوتی ہوئی بھی اُن معنوں میں بڑی نہیں ہوں جن معنوں میں تم نے اپنا کوئی مطلب سیدھا کرنے کے لئے مجھے بڑا کر ڈالا ہے."

25-8-'51 — بھگوان دین

जवाहरलाल और टन्डन जी—

इस समय देश के सामने सब से बड़ा सवाल जवाहर लाल जी और टन्डन जी का आपसी फ़रक़ है. घर घर और गाँव गाँव में इसका चरचा है. लाखों लोगों को ऐसा लगता है कि इस सवाल के निपटारे पर ही एक बड़े दरजे तक मुल्क की आगे की क़िस्मत का फ़ैसला है.

यह नहीं कहा जा सकता कि इस सवाल का सम्बन्ध शख़सियतों से नहीं केवल विचारों या आदर्शों से है. शख़सियतें विचारों और आदर्शों से बिलकुल अलग करके नहीं देखी जा सकतीं. इस सवाल का सम्बन्ध दोनों की

جواہر لال اور ٹنڈن جی—

اس سمے دیش کے سامنے سب سے بڑا سوال جواہر لال جی اور ٹنڈن جی کا آپسی فرق ہے. گھر گھر اور گاؤں گاؤں میں اس کا چرچا ہے. لاکھوں لوگوں کو ایسا لگتا ہے کہ اس سوال کے نپٹارے پر ہی ایک بڑے درجے تک ملک کی آگے کی قسمت کا فیصلہ ہے.

یہ نہیں کہا جا سکتا کہ اس سوال کا سمبندھ شخصیتوں سے نہیں کیول وچاروں یا آدرشوں سے ہے. شخصیتیں وچاروں اور آدرشوں سے بالکل الگ کرکے نہیں دیکھی جا سکتیں. اس سوال کا سمبندھ دونوں کی

चाहे एक हो. अगर वह दस पांच या एक मुझे छोड़ कर चल दें या मुझ में रहते हुए भी निकम्मा बनकर बैठ जायं तो मेरा सारा बड़ा पन छोटे पन में बदल जाता है. मेरा यह हाथी जैसा डील धम से ऐसे ही जमीन पर गिर पड़ता है जैसे हाथी अपने दिल पर एक गोली खाने से गिर पड़ता है और मेरी दहाड़ ऐसे ही हवा में बिला जाती है जैसे उस शेरनी की दहाड़ जिसने अपनी छाती में रक्खे हुए छोटे से दिल पर गोली खाई हो. शेरनी के बड़े और डरावने डील को गिराने के लिये तीर में बंधी हुई मामूली सुई की नोक काफी है.

"प्यारे मित्र, क्या तुम्हें यह याद नहीं कि तुमने अपनी उमर में कई बार लोगों को अपने बड़े डील डौल वाले मां बाप को सिर्फ इस लिये चिता पर जलाते देखा है कि उनके अन्दर रहनेवाला छोटा सा दिल बेकार हो गया होता है. और क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि दिल बड़ी भारी देह का एक छोटा सा हिस्सा होता है, इसे जाने दो. अपनी जेब में पड़ी हुई घड़ी को देखो. उसके अन्दर बाल-कमानी क्या कुछ भी है ? कहां घड़ी और कहां बेचारी बालकमानी ! और फिर उस बालकमानी की उन नोकों को देखो जिनके बल पर वह इधर उधर घूमती है. और उन दोनों नोकों में से सिर्फ एक नोक को लो और अब घड़ी के बड़े पन और उस नोक के छोटे पन का मुक़ाबला करो. वह नोक कुछ भी है ? पर है और बड़ी जरूरी है. वह नोक, चाहे अपनी मरजी से, चाहे दूसरे की ग़लती से अगर अपनी जगह न रह पाए तो फिर क्या तुम उस घड़ी को अपनी जेब में रहने दोगे ? हां, तुम यह कह सकते हो कि तुम दूसरी बालकमानी ले आओगे. पर इससे क्या, उस बालकमानी के आने तक तो वह घड़ी बेकार ही रहेगी. और उस बालकमानी के आने पर तो उलटा यही साबित होगा कि बालकमानी घड़ी के लिये बहुत जरूरी है. और इसलिये एक निगाह से बालकमानी घड़ी से बड़ी है.

"प्यारे, मुझ कांगरेस के लिये, फिर मैं चाहे कितनी बड़ी क्यों न हूं एक ऐसे सच्चे पक्के दिल की हमेशा जरूरत है और रहेगी जो दिल मेरी माँ भारत के सब बेटी बेटों को एक नजर से देखता हो और उन पर अपनी जान न्योछावर करने के लिये हमेशा तैयार रहता हो. तुम जिस तरह से अच्छी घड़ी में खोटी बालकमानी लगा सकते हो वैसे ही मुझ में अच्छे दिल की जगह खोटा दिल बिठा सकते हो. पर उससे मैं घड़ी की तरह कितने दिन चलूँगी ?

"प्यारे मित्र ! क्या तुमने अपनी आंख से यह नहीं देखा कि जो गांधी लाखों करोड़ों की नजर में मेरा ठीक ऐसा दिल बना हुआ था जैसा मुझे जरूरत थी, उसे भी एक मूरख बालक ने क्या का क्या समझ लिया. और

چاہے ایک ہو . اگر وہ دس پانچ یا ایک مجھے چھوڑ کر چل دیں یا مجھ میں رہتے ہوئے بھی نکما بن کر بیٹھ جائیں تو میرا سارا بڑاپن چھوٹےپن میں بدل جاتا ہے میرا یہ ہاتھی جیسا ڈیل دھم سے ایسے ہی زمین پر گر پڑتا ہے جیسے ہاتھی اپنے دل پر ایک گولی کھانے سے گر پڑتا ہے اور میری دہاڑ ایسے ہی ہوا میں بلا جاتی ہے جیسے اس شیرنی کی دہاڑ جس نے اپنی چھاتی میں رکھے ہوئے چھوٹے سے دل پر گولی کھائی ہو . شیرنی کے بڑے اور ڈراونے ڈیل کو گرانے کے لئے تیر میں بندھی ہوئی معمولی سوئی کی نوک کافی ہے .

"پیارے مِتر، کیا تمہیں یہ یاد نہیں کہ تم نے اپنی عمر میں کئی بار لوگوں کو اپنے بڑے ڈیل ڈول والے ماں باپ کو صرف اس لئے چتا پر جلاتے دیکھا ہے کہ اُن کے اندر رہنے والا چھوٹا سا دل بیکار ہو گیا ہوتا ہے . اور کیا تمہیں یہ نہیں معلوم کہ دل بڑی بھاری دیہ کا ایک چھوٹا سا حصہ ہوتا ہے، اسے جانے دو . اپنی جیب میں پڑی ہوئی گھڑی کو دیکھو . اُس کے اندر بال کمانی کیا کچھ بھی ہے ؟ کہاں گھڑی اور کہاں بیچاری بال کمانی ! اور پھر اُس بال کمانی کی اُن دو نوکوں کو دیکھو جن کے بل پر وہ اِدھر اُدھر گھومتی ہیں . اور اُن دونوں نوکوں میں سے صرف ایک نوک کو لو اور اب گھڑی کے بڑےپن اور اُس نوک کے چھوٹےپن کا مقابلہ کرو . وہ نوک کچھ بھی ہے ؟ پر ہے اور بڑی ضروری ہے . وہ نوک، چاہے اپنی مرضی سے، چاہے دوسرے کی غلطی سے اگر اپنی جگہ نہ رہ پائے تو پھر کیا تم اُس گھڑی کو اپنی جیب میں رہنے دو گے ؟ ہاں، تم یہ کہہ سکتے ہو کہ تم دوسری بال کمانی لے آؤ گے . پر اِس سے کیا، اُس بال کمانی کے آنے تک تو وہ گھڑی بیکار ہی رہیگی . اور اُس بال کمانی کے آنے پر تو اُلٹا یہی ثابت ہوگا کہ بال کمانی گھڑی کے لئے بہت ضروری ہے . اور اِس لئے ایک نگاہ سے بال کمانی گھڑی سے بڑی ہے .

" پیارے، مجھ کانگریس کے لئے، پھر میں چاہے کتنی بڑی کیوں نہ ہوں، ایک ایسے سچے پکے دل کی ہمیشہ ضرورت ہے اور رہے گی جو دل میری ماں بھارت کے سب بیٹی بیٹوں کو ایک نظر سے دیکھتا ہو اور اُن پر اپنی جان نیوچھاور کرنے کے لئے ہمیشہ تیار رہتا ہو . تم جس طرح سے اچھی گھڑی میں کھوٹی بال کمانی لگا سکتے ہو ویسے ہی مجھ میں اچھے دل کی جگہ کھوٹا دل بٹھا سکتے ہو . پر اُس سے میں گھڑی کی طرح کتنے دن چلونگی ؟

" پیارے مِتر ! کیا تم نے اپنی آنکھ سے یہ نہیں دیکھا کہ جو گاندھی لاکھوں کروڑوں کی نظر میں میرا ٹھیک ایسا دل بنا ہوا تھا جیسا مجھے ضرورت تھی، اسے بھی ایک مورکھ بالک نے کیا کا کیا سمجھ لیا . اور

उन्होंने मेरी क्या गत बना रक्खी थी उसका हाल तो मेरे वहां के बेटों से पूछिये. उन की लोकशाही में तो मुझे आए दिन खून के आँसू बहाने पड़ते थे, आए दिन सर के बाल नोचने पड़ते थे और न जाने क्या क्या भोगना पड़ता था. मिश्र जी का कभी मुझ से पाला नहीं पड़ा, वह मेरी शकल सूरत से बिलकुल वाक़िफ़ नहीं. हैं तो मेरे बेटे पर उन्होंने मुझ मां को कभी नहीं पहचाना. ठाकुर शाही के साथ ही वह खेले कूदे हैं, उसी के साथ बड़े हुए हैं, उसी से उन्होंने ब्याह रचाया है, उसी के साथ मिलकर उन्होंने अपनी धाक जमाई है और उसी ठाकुर शाही को वह लोकशाही नाम से पुकारते हैं क्योंकि जिस लहजे में वह बोलते हैं न वह लोकशाही का लहजा है और जो काम वह लोकशाही के नाम पर करना चाहते हैं न वह लोकशाही का काम है.

"अच्छा होता अगर वह लोकशाह न बनकर तानाशाह बन कर खड़े होते पर मुशकिल तो यही है कि तानाशाह खड़े नहीं हुआ करते, तानाशाह तो मैं और सिर्फ़ मैं ही खड़े किया करती हूँ.

—भगवानदीन

اُنہوں نے میری کیا گت بنا رکھی تھی اُس کا حال تو میرے وہاں کے بیٹوں سے پوچھئے۔ اُن کی لوک شاہی میں تو مجھے آئے دن خون کے آنسو بہانے پڑتے تھے' آئے دن سر کے بال نوچنے پڑتے تھے اور نہ جانے کیا کیا بھوگنا پڑتا تھا۔ مشر جی کا کبھی مجھ سے پالا نہیں پڑا۔ وہ میری شکل صورت سے بالکل واقف نہیں۔ ہیں تو میرے بیٹے پر اُنہوں نے مجھ ماں کو کبھی نہیں پہچانا۔ ٹھاکر شاہی کے ساتھ ہی وہ کھیلے کودے ہیں' اُسی کے ساتھ بڑے ہوئے ہیں' اسی سے اُنہوں نے بیاہ رچایا ہے' اُسی کے ساتھ مل کر اُنہوں نے اپنی دھاک جمائی ہے۔ اور اُسی ٹھاکر شاہی کو وہ لوک شاہی نام سے پکارتے ہیں کیونکہ جس لہجے میں وہ بولتے ہیں نہ وہ لوک شاہی کا لہجہ ہے اور جو کام وہ لوک شاہی کے نام پر کرنا چاہتے ہیں نہ وہ لوک شاہی کا کام ہے۔

"اچھا ہوتا اگر وہ لوک شاہ نہ بن کر تانا شاہ بن کر کھڑے ہوتے پر مشکل تو یہی ہے کہ تانا شاہ کھڑے نہیں ہوا کرتے' تانا شاہ تو میں اور صرف میں ہی کھڑے کیا کرتی ہوں۔"

— بھگوان دین

कांगरेस बनाम मिश्र जी—

कांगरेस अगर बोल सकती होती तो वह अपने मिश्र जी को बड़े प्यार से यों समझाती—

"प्यारे मिश्र, यह तो तुम बिलकुल ठीक कहते हो कि मैं नेहरू से बहुत बड़ी हूँ और हां, मैं तुम से तो बहुत ही बड़ी हूँ और इसी वजह से मेरा अनुभव नेहरू से बहुत बड़ा और तुम से तो बहुत ही बड़ा है. मुझे अपनी ज़िन्दगी का हाल नेहरू और तुम से कहीं ज़ियादा और कहीं अच्छा मालूम है. और मुझे यह भी मालूम है कि मैं कब छोटी थी, कब बड़ी हुई और कब बड़ी होती हूं और कब छोटी हो जाती हूं. मैं तुम्हारे सूबे नागपुर में सन् '20 में इतनी बड़ी थी जिसका कुछ ठिकाना नहीं. मगर मुझ बड़ी का अंगरेज़ों ने बहुत कम डर माना. पर जब गांधी बाबा ने मुझको दसियों हज़ार से घटा कर छै हज़ार की छोटी बना दिया तब मैं दसियों हज़ार से कई लाख गुना बड़ी हो गई और तब अंगरेज़ मुझसे डरने लगे. असल में मैं बड़ी छोटी गिनती से नहीं होती, अच्छे संगठन से भी नहीं होती, बहुत जोश से भी नहीं होती. मैं तो बड़ी होती हूं सच्चे, पक्के और मेरी मां भारत और उसके सब बच्चों को एक नज़र से और प्यार से देखने वाले दिलों से. फिर चाहे वह दस पाँच ही हों और

کانگریس بنام مشر جی—

کانگریس اگر بول سکتی ہوتی تو وہ اپنے مشر جی کو بڑے پیار سے یوں سمجھاتی—

"پیارے مشر' یہ تو تم بالکل ٹھیک کہتے ہو کہ میں نہرو سے بہت بڑی ہوں اور ہاں' میں تم سے تو بہت ہی بڑی ہوں اور اس وجہ سے میرا انوبھو نہرو سے بہت بڑا اور تم سے تو بہت ہی بڑا ہے۔ مجھے اپنی زندگی کا حال نہرو اور تم سے کہیں زیادہ اور کہیں اچھا معلوم ہے۔ اور مجھے یہ بھی معلوم ہے کہ میں کب چھوٹی تھی' کب بڑی ہوئی اور کب بڑی ہوتی ہوں اور کب چھوٹی ہو جاتی ہوں۔ میں تمہارے صوبے ناگپور میں سن '20 میں اتنی بڑی تھی جسکا کچھ ٹھکانہ نہیں۔ مگر مجھ بڑی کا انگریزوں نے بہت کم ڈر مانا۔ پر جب گاندھی بابا نے مجھکو دسیوں ہزار سے گھٹاکر چھ ہزار کی چھوٹی بنا دیا تب میں دسیوں ہزار سے کئی لاکھ گنا بڑی ہوگئی اور تب انگریز مجھ سے ڈرنے لگے۔ اصل میں میں بڑی چھوٹی گنتی سے نہیں ہوتی' اچھے سنگھٹن سے بھی نہیں ہوتی' بہت جوش سے بھی نہیں ہوتی میں تو بڑی ہوتی ہوں سچے' پکے اور میری ماں بھارت اور اُسکے سب بچوں کو ایک نظر سے اور پیار سے دیکھنے والے دلوں سے۔ پھر چاہے وہ دس پانچ ہی ہوں اور

जवाहर लाल की तानाशाही में मेरे सगे बेटे हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी जो बरतानिया की झूटी लोकशाही के बहकावे में आकर दिल फाड़ बैठे थे खुशी खुशी गले मिल पाते हैं, साथ साथ खा पी लेते हैं और दिन पर दिन यह ऐतबार बढ़ाते जाते हैं कि वह सच-मुच एक लोकशाही के कोख जाए लाल हैं.

"जवाहर लाल की तानाशाही में मैं बापू की तानाशाही की तरह खेल कूद सकती अगर एंग्लो-अमरीकी धूर्तता से भरी लोकशाही ने मेरे बच्चे को बहकाया न होता. मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि मेरे बेटे बहक कर मुझे बदनाम करते हैं, मुझे मार डालते हैं और मेरे मारने का इलजाम तानाशाही के सिर मंढ कर उसे शहनशाह बनने का मौका दे देते हैं. तानाशाह, लोकशाही का पैदा किया हुआ होता है. लोकशाही और तानाशाह में वही रिश्ता होता है जो पानी और मछली में. पानी के सूखने पर यानी पानी में फूट पड़ने पर (क्योंकि सूखने में यही तो होता है कि कुछ पानी पानी रह जाता है, कुछ पानी कीच का रूप ले लेता है, कुछ पानी भाप बन जाता है और कुछ किधर ही भाग जाता है) जैसे मछली तड़पने लगती है वैसे ही लोकशाही में फूट पड़ने पर तानाशाह तड़पने लगता है और लोक-शाही का दम निकलने से पहले ही तानाशाही का दम निकल जाता है. तानाशाह लोकशाही की नफ़रत की चीज बनकर एक पल भी जिन्दा नहीं रह सकता. वह तो उसके प्रेम की मूर्ति बनकर ही जिन्दा रह सकता है. जवाहर लाल तानाशाह नहीं है. लोकशाही ने उसे तानाशाह के आसन पर बिठा रक्खा है. कोई शहनशाह तानाशाह नहीं हो सकता क्योंकि वह दिल से तानाशाह होता है और लोक-शाही को यह बरदाश्त नहीं.

"मैं लोकशाही हूँ पर मैं सरस्वती की तरह अपना पति 'सरस्वता' नहीं रखती. मैं कुवांरी ही पैदा हुई हूँ, कुवांरी ही रहती हूँ और कुवांरी ही मरती हूँ. जो आदमी लोक-शाही होने का दावा करता है वह मेरा पति बनना चाहता है. लोकशाही और लोक पति एक मानी रखते हैं. मुझे (लोकशाही को) कोई लोकशाह धोका नहीं दे सकता. मैं तानाशाह को सिर्फ इस वजह से चाहती हूँ कि वह मेरा बेटा होता है पति नहीं. मैं अपने ढंग की अकेली नारी हूँ. मैं विवाह नहीं करती, मेरा कोई पति नहीं, पर मैं अनगिनत पुत्रों वाली हूँ. लोग समझदार हो कर ही मुझे अपना सकते हैं. मुझको न विवाह करने की जरूरत पड़ती है और न बेटे जनने की.

"मिश्र जी मेरी दुहाई देकर 'लोकशाह' बनना चाहते हैं, तभी तो वह मुझे पार्लमेन्टरी कमेटी से भी बाहर निकाल देना चाहते हैं. और जहाँ वह घर मंत्री थे वहां

ہماری رائے

جواہر لال کی تانا شاہی میں میرے سگے بیٹے ہندو، مسلمان، سکھ، عیسائی، جین، بودھ، پارسی جو برطانیہ کی جھوٹی لوک شاہی کے بہکاوے میں آکر دل پھاڑ بیٹھے تھے خوشی خوشی گلے مل پاتے ہیں، ساتھ ساتھ کھا پی لیتے ہیں اور دن پر دن یہ اعتبار بڑھاتے جاتے ہیں کہ وہ سچ مچ ایک لوک شاہی کے کوکھ جائے لال ہیں۔

" جواہر لال کی تانا شاہی میں میں باپو کی تانا شاہی کی طرح کھیل کود سکتی اگر اینگلو امریکی دھورتتا سے بھری لوک شاہی نے میرے بچوں کو بہکایا نہ ہوتا۔ میں اچھی طرح جانتی ہوں کہ میرے بیٹے بہک کر مجھے بدنام کرتے ہیں، مجھے مار ڈالتے ہیں اور میرے مارنے کا الزام تانا شاہ کے سر منڈھ کر اسے شہنشاہ بننے کا موقع دے دیتے ہیں۔ تانا شاہ لوک شاہی کا پیدا کیا ہوا ہوتا ہے۔ لوک شاہی اور تانا شاہ میں وہی رشتہ ہوتا ہے جو پانی اور مچھلی میں۔ پانی کے سوکھنے پر یعنی پانی میں پھوٹ پڑنے پر (کیونکہ سوکھنے میں یہی تو ہوتا ہے کہ کچھ پانی پانی رہ جاتا ہے، کچھ پانی کیچ کا روپ لے لیتا ہے، کچھ پانی بھاپ بن جاتا ہے اور کچھ کدھر ہی بھاگ جاتا ہے) جیسے مچھلی تڑپنے لگتی ہے ویسے ہی لوک شاہی میں پھوٹ پڑنے پر تانا شاہ تڑپنے لگتا ہے اور لوک شاہی کا دم نکلنے سے پہلے ہی تانا شاہ کا دم نکل جاتا ہے۔ تانا شاہ لوک شاہی کی نفرت کی چیز بن کر ایک پل بھی زندہ نہیں رہ سکتا۔ وہ تو اُس کے پریم کی مورتی بن کر ہی زندہ رہ سکتا ہے۔ جواہر لال تانا شاہ نہیں ہے۔ لوک شاہی نے اُسے تانا شاہ کے آسن پر بٹھا رکھا ہے۔ کوئی شہنشاہ تانا شاہ نہیں ہو سکتا کیونکہ وہ دل سے تانا شاہ ہوتا ہے اور لوک شاہی کو یہ برداشت نہیں۔

" میں لوک شاہی ہوں پر میں سرسوتی کی طرح اپنا پتی 'سرسوتا' نہیں رکھتی۔ میں کنواری ہی پیدا ہوئی ہوں، کنواری ہی رہتی ہوں اور کنواری ہی مرتی ہوں۔ جو آدمی لوک شاہ ہونے کا دعویٰ کرتا ہے وہ میرا پتی بننا چاہتا ہے۔ لوک شاہ اور لوک پتی ایک معنی رکھتے ہیں۔ مجھے (لوک شاہی کو) کوئی لوک شاہ دھوکا نہیں دے سکتا۔ میں تانا شاہ کو صرف اِس وجہ سے چاہتی ہوں کہ وہ میرا بیٹا ہوتا ہے پتی نہیں۔ میں اپنے ڈھنگ کی اکیلی ناری ہوں۔ میں وواہ نہیں کرتی۔ میرا کوئی پتی نہیں، پر میں انگنت پتروں والی ہوں۔ لوگ سمجھدار ہوکر ہی مجھے اپنا سکتے ہیں۔ مجھکو نہ بیاہ کرنے کی ضرورت پڑتی ہے اور نہ بیٹے جننے کی۔

" مشر جی میری دہائی دے کر ' لوک شاہ ' بننا چاہتے ہیں، تبھی تو وہ مجھے پارلیمنٹری کمیٹی سے بھی باہر نکال دینا چاہتے ہیں۔ اور جہاں وہ گھر منتری تھے وہاں

में दाखिल होती हूँ तो मेरा जी थूकने पर उताल होने पर भी थूकने की बात सोचना बन्द कर देता है क्योंकि वहां किसी सरकार का 'थूको मत' का साइनबोर्ड लगा हुआ मैं नहीं पाती. वहां मुझे बिलकुल यह नहीं मालूम होता कि मैं किसी दूसरे की हकूमत के नीचे हूँ. वहां मुझे बिलकुल अपना राज मालूम होता है. इसलिये वहां मैं थूकने को सिर्फ़ बेअदबी ही नहीं समझती गुनाह भी समझती हूँ.

"गांधी जी कहूँ या बापू! नहीं, बापू ही ठीक रहेगा. बापू की तानाशाही में, या बापू की तानाशाही में से, मैं उस हिन्दुस्तान में जहां मैं एक दिन मर चुकी थी, फिर पैदा हुई. बापू की तानाशाही में मैं फली फूली, भूली, खेली और घरों में बन्द माँ, बहनों और बेटियों को अपने साथ खुले मैदान में खेलने के लिये ले आई. बापू की तानाशाही में मैंने खाद और कीच को चन्दन चूरे, स्नो और क्रीम से जा मिलाया. खाद से मीठे मीठे फल पैदा होते रहे हैं और कीच से कमल खिलते रहे हैं, यह तो सभी जानते थे. पर बापू की तानाशाही में मेरी मारफ़त लोग यह भी जान गए कि खाद और कीच इतने प्यारे भी हैं कि उन्हें चन्दन चूरे, स्नो और क्रीम की तरह अपनाया जाय. जिनकी परछाईं से लोग गन्दे हो जाते थे उनके स्पर्श से बापू की तानाशाही में लोग पवित्र होने लगे. बापू की तानाशाही में माँ आमना कृश्न को गोद खिलाने लगीं और जसोदा मैया मुहम्मद को दूध पिलाने लगीं. बापू की तानाशाही में मैं हंसती ही नहीं थी, मेरा दिल उमड़ कर मेरी दोनों आँखों से प्रेम की गंगा और जमना बह निकलती थी, जब मैं सबके मुँह से 'सत्त श्री अकाल' और 'अल्लाहो-अकबर' के नारे एक साथ निकलते सुनती थी. बापू कुछ हिन्दुस्तानियों और दुनिया के और लोगों की नज़र में भी भले ही तानाशाह रहे हों, मेरी नज़र में तो वह ऐसे ही थे जैसे गंगुआ तेली, कलुआ धोबी, घसीटा चमार, खूबी मेहतर और अंगना कन्जर.

"हाँ! जवाहर लाल की तानाशाही में, मैं खुद खेल नहीं पाती. मैं क़हक़हा भी नहीं लगा सकती. पर हंस लेती हूँ, मुस्करा लेती हूँ, खुश रह लेती हूँ और हर तरह अमरीका, बरतानिया और फ्राँस से कहीं ज़ियादा अच्छी रह लेती हूँ. जवाहर लाल की तानाशाही में साइन्सदां ऐसे बन्द नहीं रक्खे जाते जैसे काफ़ूर. जवाहर लाल की तानाशाही में समझदार किसी बात पर राय ज़ाहिर करने से इतने नहीं रोके जाते जितने मेरे नाम से मशहूर रूस में. जवाहर लाल की तानाशाही में ब्राह्मन लड़की को अन्त्यज लड़के से विवाह करके भी हिन्दुस्तान के प्रधान वज़ीर का आशीर्वाद मिलता है. और अन्त्यज लड़का भी ब्राह्मन की लड़की से शादी करके आशीर्वाद से महरूम नहीं रह पाता.

میں داخل ہوتی ہوں تو میرا جی تھوکنے پر اتارو ہونے پر بھی تھوکنے کی بات سوچنا بند کر دیتا ہے کیونکہ وہاں کسی سرکار کا 'تھوکو مت' کا سائن بورڈ لگا ہوا میں نہیں پاتی. وہاں مجھے بالکل یہ نہیں معلوم ہوتا کہ میں کسی دوسرے کی حکومت کے نیچے ہوں. وہاں مجھے بالکل اپنا راج معلوم ہوتا ہے. اس لئے وہاں میں تھوکنے کو صرف بے ادبی ہی نہیں سمجھتی گناہ بھی سمجھتی ہوں.

"گاندھی جی کہوں یا باپو! نہیں، باپو ہی ٹھیک رہے گا. باپو کی تانا شاہی میں، یا باپو کی تانا شاہی میں سے، میں اس ہندستان میں جہاں میں ایک دن مر چکی تھی، پھر پیدا ہوئی. باپو کی تانا شاہی میں میں پھلی پھولی، جھولی، کھیلی اور گھروں میں بند ماں، بہنوں اور بیٹیوں کو اپنے ساتھ کھلے میدان میں کھیلنے کے لئے لے آئی. باپو کی تانا شاہی میں میں نے کھاد اور کیچ کو چندن چورے، اسنو اور کریم سے جا ملایا. کھاد سے میٹھے میٹھے پھل پیدا ہوتے رہے ہیں اور کیچ سے کمل کھلتے رہے ہیں، یہ تو سبھی جانتے تھے. پر باپو کی تانا شاہی میں میری معرفت لوگ یہ بھی جان گئے کہ کھاد اور کیچ اتنے پیارے بھی ہیں کہ انہیں چندن چورے، اسنو اور کریم کی طرح اپنایا جائے. جن کی پرچھائیں سے لوگ گندے ہو جاتے تھے ان کے اسپرش سے باپو کی تانا شاہی میں لوگ پوتر ہونے لگے. باپو کی تانا شاہی میں ماں آمنہ کرشن کو گود کھلانے لگی اور جسودا میا محمد کو دودھ پلانے لگیں. باپو کی تانا شاہی میں میں ہنستی ہی نہیں تھی، میرا دل امڈ کر میری دونوں آنکھوں سے پریم کی گنگا اور جمنا بہ نکلتی تھیں، جب میں سب کے منہ سے 'ست شری اکال' اور 'اللہ اکبر' کے نعرے ایک ساتھ نکلتے سنتی تھی. باپو کچھ ہندستانیوں اور دنیا کے اور لوگوں کی نظر میں بھلے ہی تانا شاہ رہے ہوں، میری نظر میں تو وہ ایسے ہی تھے جیسے گنگوا تیلی، کلوا دھوبی، گھسیٹا چمار، کھوبی مہتر اور انگنا کنجر.

"ہاں! جواہر لال کی تانا شاہی میں، میں خود کھیل نہیں پاتی. میں قہقہہ بھی نہیں لگا سکتی. پر ہنس لیتی ہوں، مسکرا لیتی ہوں، خوش رہ لیتی ہوں اور ہر طرح امریکہ، برطانیہ اور فرانس سے کہیں زیادہ اچھی رہ لیتی ہوں. جواہر لال کی تانا شاہی میں سائنس دان ایسے بند نہیں رکھے جاتے جیسے کافور. جواہر لال کی تانا شاہی میں سمجھدار کسی بات پر رائے ظاہر کرنے سے اتنے نہیں روکے جاتے جتنے میرے نام سے مشہور روس میں. جواہر لال کی تانا شاہی میں براہمن لڑکی کو انتیج لڑکے سے ویواہ کرکے بھی ہندستان کے پردھان وزیر کا آشیرواد ملتا ہے. اور انتیج لڑکا بھی براہمن لڑکی سے شادی کرکے آشیرواد سے محروم نہیں رہ پاتا.

जाय जब वह अदा करने के क़ाबिल हो. अगर इस वक़्त हरजाना वसूल किया गया तो वह इतना कमज़ोर हो जायगा कि अपना मामूली बचाव भी न कर सकेगा. और यह हालत ऐसी ख़तरनाक होगी कि किसी वक़्त भी तीसरी लड़ाई को जन्म दे सकती है.

हिन्दुस्तान की राय में असली बुराई है जापान की बाग दूसरे के हाथ में रहना. यह नहीं होना चाहिये. इसके बाद न तो जापान को इस वक़्त इतना बढ़ाया जाय कि वह चाहे जब दूसरे के इशारे या मामूली मदद से किसी पर हमले की बात सोचे और न इतना कमज़ोर रखा जाय कि कोई भी पड़ोसी मुल्क उसे कुछ दिनों में ही फिर अपने मातहत करने की बात सोचे.

इस सुलहनामे पर रूस, लाल चीन, हिन्दुस्तान और एशिया के दूसरे देश अगर दस्तख़त नहीं करते तो यह सुलहनामा न रहकर सुलहनामे का मज़ाक़ ही रहेगा.

—भगवानदीन

लोकशाही बनाम तानाशाही—

अगर लोकशाही के ज़बान होती और वह बोल सकती तो वह यह कहती—

"मैं न रूस में हूँ न चीन में. अमरीका और बरतानिया में तो जबरन भरती के क़ानून की वजह से मेरे पांव ही कैसे जम सकते हैं. मैं योरप के किसी मुल्क में नहीं हूं. हां, स्विटज़रलैंड की पहाड़ियों में मेरा कुछ कुछ निबाह हो जाता है. एशिया के और मुल्कों में भी मेरा मन नहीं लग पाता. जीवित गांधी के हिन्दुस्तान की बात मैं फिर कहूँगी, पर गांधी के बाद के हिन्दुस्तान में तो फिर मेरी कहीं जगह न रह गई. मैं लोकशाही हूँ, न मैं शहनशाही के ही साथ रह सकती हूँ, न मैं प्रेसीडेन्ट शाही के साथ रह सकती हूँ. तानाशाही में अगर तानाशाह सचमुच अपने दिल का शाह भी हो तो वहां मैं हँस बोल सकती हूँ. पर ऐसे तानाशाह को तो कोई मुल्क आसानी से जन्म नहीं देता. इसलिये तानाशाही के साथ भी मेरा निबाह नहीं हो सकता. असल में मेरा निबाह किसी दूसरी शाही के साथ नहीं हो सकता. सरकार और लोकशाही ऐसे ही बे मेल हैं जैसे अन्धेरा और उजाला.

"मेरा (लोकशाही का) मिज़ाज इस तरह का बना हुआ है कि मैं जब रेल के डब्बे में बैठती हूँ तो बड़ी शान्त होती हूँ. पर जब रेल के डब्बे में 'थूको मत' का साइनबोर्ड लगा देखती हूँ तो मेरा दिल ऐंठ जाता है, और उसी के साथ मेरा पेट ऐंठने लगता है. मेरा जी मतला उठता है. जब मैं किसी मन्दिर, मसजिद, गिरजा या गुरुद्वारे

جائے جب وہ ادا کرنے کے قابل ہو ۔ اگر اِس وقت ھرجانا وصول کیا گیا تو وہ اتنا کمزور ہوجائے گا کہ اپنا معمولی بچاؤ بھی نہ کر سکے گا ۔ اور یہ حالت ایسی خطرناک ہوگی کہ کسی وقت بھی تیسری لڑائی کو جنم دے سکتی ھے ۔

ھندستان کی رائے میں اصلی برائی ھے جاپان کی باگ دوسرے کے ھاتھ میں رھنا ۔ یہ نہیں ہونا چاھئے ۔ اِس کے بعد نہ تو جاپان کو اِس وقت اتنا بڑھایا جائے کہ وہ چاھے جب دوسرے کے اِشارے یا معمولی مدد سے کسی پر حملے کی بات سوچے اور نہ اتنا کمزور رکھا جائے کہ کوئی بھی پڑوسی ملک اُسے کچھ دنوں میں ھی پھر اپنے ماتحت کرنے کی بات سوچے ۔

اِس صلحنامے پر روس' لال چین' ھندستان اور ایشیا کے دوسرے دیش اگر دستخط نہیں کرتے تو یہ صلحنامہ نہ رھکر صلحنامے کا مذاق ھی رہے گا ۔

—بھگوان دین

لوک شاھی بنام تانا شاھی—

اگر لوک شاھی کے زبان ھوتی اور وہ بول سکتی تو وہ یہ کہتی—

"میں نہ روس میں ھوں نہ چین میں ۔ امریکہ اور برطانیہ میں تو جبرن بھرتی کے قانون کی وجہ سے میرے پاؤں ھی کیسے جم سکتے ھیں ۔ میں یورپ کے کسی ملک میں نہیں ھوں ۔ ھاں' سویٹزرلینڈ کی پہاڑیوں میں میرا کچھ کچھ نباہ ھو جاتا ھے ۔ ایشیا کے اور ملکوں میں بھی میرا من نہیں لگ پاتا ۔ جیوت گاندھی کے ھندستان کی بات میں پھر کہونگی' پر گاندھی کے بعد کے ھندستان میں تو پھر میری کہیں جگہ نہ رہ گئی ۔ میں لوک شاھی ھوں' نہ میں شہنشاھی کے ھی ساتھ رہ سکتی ھوں' نہ میں پریسیڈنٹ شاھی کے ساتھ رہ سکتی ھوں. تانا شاھی میں اگر تانا شاہ سچ مچ اپنے دل کا شاہ بھی ھو تو وھاں میں ھنس بول سکتی ھوں ۔ پر ایسے تانا شاہ کو تو کوئی ملک آسانی سے جنم نہیں دیتا ۔ اِس لئے تانا شاھی کے ساتھ بھی میرا نباہ نہیں ھو سکتا ۔ اصل میں میرا نباہ کسی دوسری شاھی کے ساتھ نہیں ھو سکتا ۔ سرکار اور لوک شاھی ایسے ھی بے میل ھیں جیسے اندھیرا اور اُجالا ۔

"میرا (لوک شاھی کا) مزاج اس طرح کا بنا ھوا ھے کہ میں جب ریل کے ڈبے میں بیٹھتی ھوں تو بڑی شانت ھوتی ھوں ۔ پر جب ریل کے ڈبے میں 'تھوکو مت' کا سائن بورڈ لگا دیکھتی ھوں تو میرا دل اینٹھ جاتا ھے' اور اُسی کے ساتھ میرا پیٹ اینٹھنے لگتا ھے. میرا جی متلا اُٹھتا ھے ۔ پر جب میں کسی مندر' مسجد' گرجا گوردوارے

इस सुलहनामे के जरिये सन '43 के क़ाहिरा और सन '45 के याल्टा और पोट्सडम एलानों के ऊपर हरताल फेरी जा रही है जिनकी रू से जापान का उन जज़ीरों पर कोई हक़ नहीं रह जाता था जो उसने हथिया लिये थे और जिन की रू से कोरिया हर तरह से आज़ाद रहना चाहिये था और जिनकी रू से चीन को उसके छिने हुए हिस्से जापानियों से वापस मिल जाने चाहिये थे. उनही एलानों की रू से दक्खिनी सखालीन और क्यूराइल टापू रूस के हाथ में होने चाहिये थे. उन ही एलानों की शरतों की रू से जापान आज बे हथियार वाला होना चाहिये था. पर ऐसा मालूम होता है कि जापानियों ने उन एलानों को इस तरह बरबाद किया है कि उनकी याद तक अमरीका और बरतानिया को नहीं रह गई. तभी तो यह नया जापानी सुलहनामा जापान को अपने हाथों तलवार तमंचों से लैस कर रहा है.

इस नए जापानी सुलहनामे की ख़ास ख़ास शरतें यह हैं:

(1) जापान की हदबन्दी.

(2) जापान को फिर से हथियारों से लैस करना.

(3) जापान से हरजाना वसूल करना.

(4) जापान में अमरीकी फ़ौज का बना रहना. और

(5) फ़ारमूसा की क्या हालत रहेगी ?

इन सब शरतों पर यू. एन. ओ. में शामिल मुल्कों में मतभेद है.

हिन्दुस्तान उन शरतों को ठीक नहीं समझता जो फ़ारमूसा के बारे में की गई हैं. वह जापान से इस वक़्त हरजाना वसूल करने के भी ख़िलाफ़ है. और यह तो वह हरगिज़ पसन्द नहीं करता कि जापान की ज़मीन पर दूसरे मुल्क की फ़ौजें छाई रहें.

हम नहीं समझते जापान भी इस शर्त पर कि उसके मुल्क में दूसरे मुल्क की फ़ौजें बनी रहें कैसे राज़ी हो सकता है.

मालूम हुआ है इस सुलहनामे की रू से जापान के रिक्यू और बोनिन टापू किसी दूसरे मुल्क की देख भाल में रहेंगे. इसके तो यह साफ़ मानी हैं कि जापानी जापान के मालिक रहते हुए भी मिल्कियत के मामले में दूसरे मुल्क से दबे रहेंगे.

एशिया के मुल्क तो यह चाहते हैं कि फ़ारमूसा का टापू उस चीनी सरकार को वापस कर दिया जाय जो इस वक़्त सारे चीन पर क़ाबिज़ है, फिर वह सरकार चाहे किसी भी तरह की क्यों न हो.

हरजाना वसूल करने के बारे में हिन्दुस्तान की यह राय है कि जापान से हरजाना अभी वक़्त वसूल किया

اِس صلحنامے کے ذریعے سن '43 کے قاهرہ اور سن '45 کے یالٹا اور پوٹسڈم کے اعلانوں کے اوپر هرتال پھیری جا رهی هے جن کی رو سے جاپان کا اُن جزیروں پر کوئی حق نہیں رہ جاتا تھا جو اُس نے هتھیا لئے تھے اور جن کی رو سے کوریا هر طرح سے آزاد رهنا چاهئے تھا اور جن کی رو سے چین کو اُس کے چھنے هوئے حصے جاپانیوں سے واپس مل جانے چاهئے تھے ۔ اُنهیں اعلانوں کی رو سے دکھنی سکھالین اور کیورائل ٹاپو روس کے هاتھ میں هونے چاهئے تھے ۔ اُنهیں اعلانوں کی شرطوں کی رو سے جاپان آج بے هتھیار والا هونا چاهئے تھا ۔ پر ایسا معلوم هوتا هے کہ جاپانیوں نے اُن اعلانوں کو اس طرح برباد کیا هے کہ اُن کی یاد تک امریکہ اور برطانیہ کو نہیں رہ گئی ۔ تبھی تو یہ نیا جاپانی صلحنامہ جاپان کو اپنے هاتھوں تلوار طمنچوں سے لیس کر رها هے ۔

اس نئے جاپانی صلحنامے کی خاص خاص شرطیں یہ هیں :

(1) جاپان کی حد بندی ۔

(2) جاپان کو پھر سے هتھیاروں سے لیس کرنا ۔

(3) جاپان سے هرجانا وصول کرنا ۔

(4) جاپان میں امریکی فوج کا بنا رهنا ۔ اور

(5) فارموسا کی کیا حالت رهے گی ؟

اِن سب شرطوں پر یو ۔ این ۔ او ۔ میں شامل ملکوں میں مت بھید هے ۔

هندستان اِن شرطوں کو ٹھیک نہیں سمجھتا جو فارموسا کے بارے میں کی گئی هیں ۔ وہ جاپان سے اِس وقت هرجانا وصول کرنے کے بھی خلاف هے اور یہ تو وہ هرگز پسند نہیں کرتا کہ جاپان کی زمین پر دوسرے ملک کی فوجیں چھائی رهیں ۔

هم نہیں سمجھتے جاپان بھی اِس شرط پر کہ اُس کے ملک میں دوسرے ملک کی فوجیں بنی رهیں کیسے راضی هوسکتا هے ۔

معلوم هوا هے اِس صلحنامے کی رو سے جاپان کے رکیو اور بونن ٹاپو کسی دوسرے ملک کی دیکھ بھال میں رهیں گے ۔ اس کے تو صاف یہ معنی هیں کہ جاپانی جاپان کے مالک رهتے هوئے بھی ملکیت کے معاملے میں دوسرے ملک سے دبے رهیں گے ۔

ایشیا کے ملک تو یہ چاهتے هیں کہ فارموسا کا ٹاپو اُس چینی سرکار کو واپس کر دیا جائے جو اِس وقت سارے چین پر قابض هے، پھر وہ سرکار چاهے کسی بھی طرح کی کیوں نہ هو ۔

هرجانا وصول کرنے کے بارے میں هندستان کی یہ رائے هے کہ جاپان سے هرجانا اُسی وقت وصول کیا

गया कि इन्डोनीशिया जैसा छोटा टापू और बरमा जैसा नया आज़ाद मुल्क हर तरह के हथियारों से लैस जापान से अपना बचाव कैसे करेंगे.

इस जापानी सुलहनामे में तो हम यही पाते हैं कि अमरीका जापानी शहद की मक्खियों के छत्ते को छेड़ कर और अपने और जापान के बीच में धुएं का परदा खड़ा करके खुद मक्खियों का तमाशा देखना चाहता है.

जिसने जापानी इतिहास पर सरसरी नज़र भी डाली है वह अच्छी तरह जानता है कि जापान ने पिछले छयालीस बरस से सिवाय इसके किया ही क्या है कि वह अपने पड़ोसियों पर आए दिन ज़बरदस्ती करता रहे. यह किस को नहीं मालूम कि जापान के पास न खाने के लिये काफ़ी नाज है और न तन ढकने के लिये काफ़ी रुई और न बढ़ती हुई औलाद के लिये काफ़ी जगह. ऐसी हालत में वह उधर की तरफ़ बढ़े बग़ैर कैसे रहेगा जिधर उसे कम से कम ख़तरा हो.

यह किसे नहीं मालूम कि जापान बरसों कोरिया और फ़ारमूसा का मालिक रह चुका है, रूस में ज़ारशाही का मुक़ाबला करके उसको धक्का पहुँचा चुका है और चीन के एक हिस्से पर भी बरसों क़ाबिज़ रह चुका है. फिर इस सुलहनामे में इन सब बातों की रोक थाम का कोई इन्तज़ाम न होने से क्या यह नहीं समझा जा सकता कि अमरीका जापान को बम बना कर पच्छिम के देशों पर फेंकना चाहता है.

किसको नहीं मालूम कि बरतानिया और योरप के और देश और अमरीका भी उस वक़्त सिर्फ़ तमाशा देखा किये जब जापान चीन पर ज़बरदस्ती कर रहा था. जब तक पर्ल हारबर पर जापान का हमला न हुआ जो सन 1941 की बात है तब तक क्या अमरीका मैदान में कूदा ? सिर्फ़ तब और तभी अमरीका ने जापान को सब से बड़ा मुजरिम माना. और क्या अमरीका को यह नहीं मालूम कि वह सौ बरस भी जापान से लड़कर जापान को नहीं हरा सकता था अगर उसने एटम बम के नाजायज़ इस्तेमाल को जायज़ मानकर जापानियों पर न गिराया होता. अमरीका याद रक्खे उसने जापान को धर्म युद्ध में नहीं जीता अधर्म युद्ध में जीता है. अगर कुश्ती में काटना और नोचना अधर्म है तो पिछली लड़ाई में गैस का इस्तेमाल अधर्म रहते हुए एटम बम का इस्तेमाल अधर्म ही रहेगा. हमें याद है कि उस वक़्त एक ईसाई पादरी ने अमरीका के एटम बम गिराने के काम को अधर्म कहा था. पर वही तो सत्य परमेश्वर की आवाज़ थी. ख़ैर, इन सब बातों को छोड़िये. हम तो यही कहेंगे कि अमरीका जान बूझ कर यह भूल कर रहा है और समझ में नहीं आता क्यों कर रहा है.

گیا کہ انڈونیشیا جیسا چھوٹا ٹاپو اور برما جیسا نیا آزاد ملک ہر طرح کے ہتھیاروں سے لیس جاپان سے اپنا بچاؤ کیسے کریں گے .

اِس جاپانی صلحنامے میں تو ہم یہی پاتے ہیں کہ امریکہ جاپانی شہد کی مکھیوں کے چھتے کو چھیڑ کر اور اپنے اور جاپان کے بیچ میں دھوئیں کا پردہ کھڑا کرکے خود مکھیوں کا تماشہ دیکھنا چاہتا ہے

جس نے جاپانی اِتہاس پر سرسری نظر بھی ڈالی ہے وہ اچھی طرح جانتا ہے کہ جاپان نے پچھلے چھیالیس برس سے سوائے اِس کے کیا ہی کیا ہے کہ وہ اپنے پڑوسیوں پر آئے دن زبردستی کرتا رہے . یہ کس کو نہیں معلوم کہ جاپان کے پاس نہ کھانے کے لئے کافی ناج ہے اور نہ تن ڈھکنے کے لئے کافی روئی اور نہ بڑھتی ہوئی اولاد کے لئے کافی جگہ . ایسی حالت میں وہ اُدھر کی طرف بڑھے بغیر کیسے رہے گا جدھر اُسے کم سے کم خطرہ ہو .

یہ کسے نہیں معلوم کہ جاپان برسوں کوریا اور فارموسا کا مالک رہ چکا ہے ، روس میں زار شاہی کا مقابلہ کرکے اُس کو دھکا پہونچا چکا ہے اور چین کے ایک حصے پر بھی برسوں قابض رہ چکا ہے . پھر اِس صلحنامے میں اِن سب باتوں کی روک تھام کا کوئی انتظام نہ ہونے سے کیا یہ نہیں سمجھا جاسکتا کہ امریکہ جاپان کو بم بناکر پچھم کے دیشوں پر پھینکنا چاہتا ہے .

کس کو نہیں معلوم کہ برطانیہ اور یورپ کے اور دیش اور امریکہ بھی اُس وقت صرف تماشہ دیکھا کئے جب جاپان چین پر زبردستی کررہا تھا . جب تک پرل ہاربر پر جاپان کا حملہ نہ ہوا جو سن 1941 کی بات ہے تب تک کیا امریکہ میدان میں کودا ؟ صرف تب اور تبھی امریکہ نے جاپان کو سب سے بڑا مجرم مانا . اور کیا امریکہ کو یہ نہیں معلوم کہ وہ سو برس بھی جاپان سے لڑکر جاپان کو نہیں ہرا سکتا تھا اگر اُس نے ایٹم بم کے ناجائز استعمال کو جائز مان کر جاپانیوں پر نہ گرایا ہوتا. امریکہ یاد رکھے اُس نے جاپان کو دھرم یدھ میں نہیں جیتا ادھرم یدھ میں جیتا ہے . اگر کشتی میں کاٹنا اور نوچنا ادھرم ہے تو پچھلی لڑائی میں گیس کا استعمال ادھرم رہتے ہوئے ایٹم بم کا استعمال ادھرم ہی رہے گا . ہمیں یاد ہے کہ اُس وقت ایک عیسائی پادری نے امریکہ کے ایٹم بم گرانے کے کام کو ادھرم کہا تھا . پر وہی تو ستیہ پرمیشور کی آواز تھی . خیر، اِن سب باتوں کو چھوڑیئے . ہم تو یہی کہیں گے کہ امریکہ جان بوجھ کر یہ بھول کر رہا ہے اور سمجھ میں نہیں آتا کیوں کر رہا ہے .

सुलहनामे में सुलह की जगह लड़ाई के बीज ही दिखाई देते हैं और यही हाल बरमा और इन्डोनीशिया का है.

आस्ट्रेलिया और न्युज़िलैंड जो हर तरह से अमरीकी गुट में हैं वह तक घबराए हुए हैं कि यह जापान को हथियारों से लैस करके किया क्या जा रहा है. मतलब यह कि प्रशान्त महासागर के सारे मुल्क सुलहनामे के इस मसौदे को हर तरह से लड़ाई नामा मानते हैं.

सुना है कि आस्ट्रेलिया और न्युज़िलैंड इस पर दस्तख़त कर रहे हैं. तब तो हम यही कहेंगे कि लड़ने के लिये उनके बाज़ू फड़क रहे हैं और जापान के मुक़ाबले में मरने के लिये उनके पंख निकल आए हैं. लेकिन वह मरना नहीं चाहते और मरने से बचने का इलाज उन्होंने यह सोचा है कि वह दोनों मिलकर अमरीका के साथ जापानी सुलहनामे पर दसख़त करने से पहले अमरीका के साथ एक सुलहनामा और कर लें. यह चाल तो उनकी ठीक है, पर यह इस बात की गारन्टी नहीं है कि तीसरी लड़ाई नहीं होगी.

कितने मज़े की बात है कि अमरीका मरे हुए जापानी शेर में जान डाल कर यह भी समझता है कि वह उसे सरकस का शेर बनाए रखेगा. और अन्दर अन्दर यह भी डरता है कि अजब नहीं वही शेर फिर अमरीका नहीं तो कहीं न्यूज़ीलैंड या आस्ट्रेलिया पर न चढ़ बैठे. क्योंकि उन्हें यह ख़ूब मालूम है कि जापानी शेर का बरसों से आस्ट्रेलिया पर दांत रहा है. जब अमरीका को ख़ुद इस सुलहनामे में लड़ाई दिखाई देती है तो इन्डोनीशिया, बरमा और हिन्दुस्तान को वही चीज़ दिखाई दे, इस में अचरज क्या.

इस सुलहनामे पर दसख़त हो जाने के बाद अगर एशिया के हिन्दुस्तान, बरमा और इन्डोनीशिया जैसे मुल्क दसख़त करने से रह जाते हैं तो उनको इसके सिवाय क्या चारा रह जायगा कि वह या तो किसी दूसरे गुट से मिलें या फिर अमरीका के साथ वैसा ही सुलहनामा करें जैसा आस्ट्रेलिया और न्युज़िलैंड करने जा रहे हैं और फिर अपने पड़ोसी रूस और चीन को दुशमन बनाएं.

इसमें भी कोई शक नहीं किया जा सकता कि जापानी शेर आस्ट्रेलिया की तरफ़ रुख़ न करके पच्छिम या उत्तर पच्छिम की तरफ़ रुख़ करले और क्यांग के साथ सांठगांठ कर के जापानी समंदर को लांघने की सोचने लगे, तो फिर तीसरी लड़ाई शुरू होगी ही और प्रशान्त सागर का अमन ख़तरे में पड़ जायगा. हमारी समझ में नहीं आता कि अमरीका यह सब ख़तरा क्यों मोल ले रहा है. क्या उसके पास एटमी हथियारों और एटमी बम का इतना ढेर लग गया है कि जो उसे चैन से बैठने नहीं देता.

इस सुलहनामे के नए मसौदे में यह कहीं नहीं सोचा

صلحنامے میں صلح کی جگہ لڑائی کے بیج ہی دکھائی دیتے ہیں اور یہی حال برما اور انڈونیشیا کا ہے۔

آسٹریلیا اور نیوزی لینڈ جو ہر طرح سے امریکی گٹ میں ہیں وہ تک گھبرائے ہوئے ہیں کہ یہ جاپان کو ہتھیاروں سے لیس کرکے کیا کیا جا رہا ہے۔ مطلب یہ ہے کہ پرشانت مہاساگر کے سارے ملک صلحنامے کے اس مسودے کو ہر طرح سے لڑائی نامہ مانتے ہیں۔

سنا ہے کہ آسٹریلیا اور نیوزیلینڈ اس پر دستخط کر رہے ہیں۔ تب تو ہم یہی کہیں گے کہ لڑنے کے لئے ان کے بازو پھڑک رہے ہیں اور جاپان کے مقابلے میں مرنے کے لئے ان کے پنکھ نکل آئے ہیں۔ لیکن وہ مرنا نہیں چاہتے اور مرنے سے بچنے کا علاج انہوں نے یہ سوچا ہے کہ وہ دونوں مل کر امریکہ کے ساتھ جاپانی صلحنامے پر دستخط کرنے سے پہلے امریکہ کے ساتھ ایک صلحنامہ اور کرلیں۔ یہ چال تو ان کی ٹھیک ہے، پر یہ اس بات کی گارنٹی نہیں ہے کہ تیسری لڑائی نہیں ہوگی۔

کتنے مزے کی بات ہے کہ امریکہ مرے ہوئے جاپانی شیر میں جان ڈال کر یہ بھی سمجھتا ہے کہ وہ اسے سرکس کا شیر بنائے رکھے گا۔ اور اندر اندر یہ بھی ڈرتا ہے کہ عجب نہیں وہی شیر پھر امریکہ نہیں تو کہیں نیوزیلینڈ یا آسٹریلیا پر نہ چڑھ بیٹھے۔ کیونکہ انہیں یہ خوب معلوم ہے کہ جاپانی شیر کا برسوں سے آسٹریلیا پر دانت رہا ہے۔ جب امریکہ کو خود اس صلحنامے میں لڑائی دکھائی دیتی ہے تو انڈونیشیا، برما اور ہندستان کو وہی چیز دکھائی دے، اس میں اچرج کیا۔

اس صلحنامے پر دستخط ہو جانے کے بعد اگر ایشیا کے ہندستان، برما اور انڈونیشیا جیسے ملک دستخط کرنے سے رہ جاتے ہیں تو ان کو اس کے سوائے کیا چارا رہ جائے گا کہ وہ یا تو کسی دوسرے گٹ سے ملیں یا پھر امریکہ کے ساتھ ویسا ہی صلح نامہ کریں جیسا آسٹریلیا اور نیوزیلینڈ کرنے جا رہے ہیں اور پھر اپنے پڑوسی روس اور چین کو دشمن بنائیں۔

اس میں بھی کوئی شک نہیں کیا جا سکتا کہ جاپانی شیر آسٹریلیا کی طرف رخ نہ کرکے پچھم یا اتر پچھم کی طرف رخ کرلے اور چیانگ کے ساتھ سانٹھ گانٹھ کرکے جاپانی سمندر کو لانگھنے کی سوچنے لگے، تو پھر تیسری لڑائی شروع ہوگی ہی اور پرشانت ساگر کا امن خطرے میں پڑ جائے گا۔ ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ امریکہ یہ سب خطرہ کیوں مول لے رہا ہے۔ کیا اس کے پاس ایٹمی ہتھیاروں اور ایٹمی بم کا اتنا ڈھیر لگ گیا ہے کہ جو اسے چین سے بیٹھنے نہیں دیتا۔

اس صلحنامے کے نئے مسودے میں یہ کہیں نہیں سوچا

हमारी राय

ہماری رائے

जापानी सुलहनामा—

इस सुलहनामे का नाम 'जापानी सुलहनामा' धोके का नाम है. इसमें दिखावा ही दिखावा है. सुलह की असलियत नाम को भी नहीं है. इसका अगर हम नाम रक्खें तो वह हो सकता है 'प्रशान्त महासागरी लड़ाई नामा.' इस सुलहनामे में उस यू. एन. ओ. ने जो आज अमरीका के हाथ में खेल रही है तीसरी लड़ाई का ऐसा बीज बो दिया है जिसमें बहुत जल्दी किल्ले फूटेंगे और जल्दी ही फल लग जायंगे. इस सुलहनामे में सलाह लेने के लिये जापान के पड़ोसी लाल चीन के माओ-त्से-तुँग को बुलावा तक नहीं दिया गया. और अमरीका के हाथ में खेलने वाले च्यांग के मुँह पर पट्टी बांध दी गई है. रहे एशिया के दूसरे मुल्क वह सब जहां तक हमें पता चला है इस सुलहनामे को पसन्द नहीं करते और एशिया के मुल्कों की पसन्दगी तो इसके लिये बेहद ज़रूरी थी. पर न जाने इस बेहद ज़रूरी को यू. एन. ओ. ने बेहद की हद काट कर सिर्फ़ बे ज़रूरी क्यों समझा.

अमरीका और अंगरेज़ दोनों मिलकर इस सुलहनामे के तमाशे को सितम्बर के पहले हफ़्ते में सान फ्राँसिसको में दिखाने वाले हैं और बड़ी आन बान से दिखाने वाले हैं क्योंकि रूस इसके मसौदे के एक दम ख़िलाफ़ है. जो जो मुल्क इस सुलहनामे पर दसख़त करेंगे उनके बारे में हमारी यह राय है कि या तो वह अमरीका से दबकर दसख़त कर रहे हैं या उनके बाज़ू लड़ाई के लिये इतने फड़क रहे हैं कि वह तीसरी लड़ाई में अपने करतब दिखाने की तेज़ी से राह देख रहे हैं.

हिन्दुस्तान और मामलों में चाहे गांधी का देश न भी रहा हो पर दुनिया में सच्चे मानों में शान्ति बनाए रखने में वह सौ फ़ीसदी और पूरी ईमानदारी से गांधी का देश बना हुआ है. साथ ही साथ वह जापान के काफ़ी पास है और उसका जापान से सैकड़ों बरस से कलचरी सम्बन्ध भी रहा है. इतना ही नहीं वह जापान की साम्राजवादी ख़्वाहिशों से भी पूरी तरह वाक़िफ़ है. उसको भी इस

جاپانی صلح نامہ—

اِس صلحنامے کا نام 'جاپانی صلحنامہ' دھوکے کا نام ہے. اِس میں دکھاوا ہی دکھاوا ہے. صلح کی اصلیت نام کو بھی نہیں ہے. اِس کا اگر ہم نام رکھیں تو وہ ہو سکتا ہے 'پرشانت مہاساگری لڑائی نامہ' اِس صلحنامے میں اُس یو. این. او. نے جو آج امریکہ کے ہاتھ میں کھیل رہی ہے تیسری لڑائی کا ایسا بیج بو دیا ہے جس میں بہت جلدی کلے پھوٹیں گے اور جلدی ہی پھل لگ جائیں گے. اِس صلحنامے میں صلاح لینے کے لئے جاپان کے پڑوسی لال چین کے ماؤتسے تونگ کو بلاوا تک نہیں دیا گیا. اور امریکہ کے ہاتھ میں کھیلنے والے چیانگ کے منہ پر پٹی باندھ دی گئی ہے. رہے ایشیا کے دوسرے ملک وہ سب جہاں تک ہمیں پتہ چلا ہے اِس صلحنامے کو پسند نہیں کرتے اور ایشیا کے ملکوں کی پسندگی تو اِس کے لئے بے حد ضروری تھی. پر نہ جانے اِس بے حد ضروری کو یو. این. او. نے بے حد کی حد کاٹ کر صرف بے ضروری کیوں سمجھا.

امریکہ اور انگریز دونوں مل کر اِس صلحنامے کے تماشے کو ستمبر کے پہلے ہفتے میں سان فرانسسکو میں دکھانے والے ہیں اور بڑی آن بان سے دکھانے والے ہیں کیونکہ روس اِس کے مسودے کے ایک دم خلاف ہے. جو جو ملک اِس صلحنامے پر دستخط کریں گے اُن کے بارے میں ہماری یہ رائے ہے کہ یا تو وہ امریکہ سے دب کر دستخط کر رہے ہیں یا اُن کے بازو لڑائی کے لئے اتنے پھڑک رہے ہیں کہ وہ تیسری لڑائی میں اپنے کرتب دکھانے کی تیزی سے راہ دیکھ رہے ہیں.

ہندستان اور معاملوں میں چاہے گاندھی کا دیش نہ بھی رہا ہو پر دنیا میں سچے معنوں میں شانتی بنائے رکھنے میں وہ سو فیصدی اور پوری ایمانداری سے گاندھی کا دیش بنا ہوا ہے. ساتھ ہی ساتھ وہ جاپان کے کافی پاس ہے اور اُس کا جاپان سے سیکڑوں برس سے کلچری سمبندھ بھی رہا ہے. اتنا ہی نہیں وہ جاپان کی سامراج وادی خواہشوں سے بھی پوری طرح واقف ہے. اُس کو بھی اِس

देस बिदेस की ख़बरें

(अगस्त 1951)

1. मास्को के अख़बार "प्रवदा" में अंगरेज़ मिनिस्टर मारीसन का विचार व समाचार की आज़ादी पर एक लेख और उसका जवाब छपा. लोकमान्य तिलक की इकतीसवीं बरसी. वर्धा में गांधी विचार परिशद क़ायम हुई.

2. टू्रमैन चार पाइन्ट योजना के मुताबिक़ हिन्दुस्तान में अमरीकी कारख़ाने खुलने का फ़ैसला. पाकिस्तानी बड़े वज़ीर का बिला किसी शर्त हिन्दुस्तान आने से इनकार.

3. तेल के मसले पर ईरान से बात करने के लिये स्टोक्स मिशन लन्दन से रवाना. दरभंगा ज़िले में ज़बरदस्त बाढ़.

4. केसांग की बात चीत बीच में ही अटक गई. प्रजा पारटी की कौंसिल ने कन्ट्रोल हटाने के मुआफ़िक़ ठहराव पास किया.

5. पंडित जवाहर लाल का पाकिस्तान को जवाब.

6. तेहरान में इंगलैंड और ईरान के बीच बात-चीत शुरू. नई दिल्ली में राजपति ने पार्लिमेन्ट का नया इजलास खोला.

7. रूसी सोवियत के सद्र का विश्व शान्ति के लिये अमरीकी राजपति को ख़त. केसांग की बात चीत फिर से शुरू करने के लिये अमरीकी जनरल रिजवे की शर्तें.

8. आसाम का कुछ हिस्सा भूटान को दे देने का बिल पार्लिमेन्ट में पास. सरकार के पास चावल की कमी—अनाज मिनिस्टर का एलान.

9. मिस्र को ब्रिटेन मिस्र सुलहनामे पर एतराज़. हिन्दुस्तान के अगले चुनाव 3 जनवरी से 24 जनवरी तक होंगे. रेलवे वालों ने हड़ताल फ़िलहाल नहीं करने का फ़ैसला किया.

10. पंडित जवाहर लाल ने कांगरेस वरकिंग कमेटी और सेन्ट्रल कांगरेसी पार्लिमेन्टरी बोर्ड से स्तीफ़ा दे दिया.

11. मौलाना आज़ाद का वरकिंग कमेटी से स्तीफ़ा. दिल्ली में वरकिंग कमेटी की बैठक शुरू.

12. पाकिस्तान सरकार पख़्तूनिस्तान के लोगों को अपना जन्मजात हक़ लेने से नहीं रोक सकती—अफ़ग़ानी राज दूत का एलान.

13. दिल्ली में वरकिंग कमेटी की बैठक जारी. नैपाल के राजा दिल्ली पहुंचे.

14. कांगरेस सदर ने कहा कि पंडित जवाहर लाल का स्तीफ़ा कुलहिन्द कांगरेस कमेटी की एक ख़ास मीटिंग में पेश किया जायगा. हिन्दुस्तान के मुसलमानों का पाकिस्तान की कश्मीर पालिसी पर डाक्टर ग्राहम को मेमोरन्डम.

15. जगह जगह आज़ादी का दिन मनाया गया.

नोट—आइन्दा से एक माह की 15 तारीख़ से दूसरे माह की 15 तारीख़ तक की ख़बरें दी जाया करेंगी.

دیس بدیس کی خبریں

(اگست 1951)

1. ماسکو کے اخبار "پروداؔ" میں انگریز منسٹر ماریسن کا وچار وسماچار کی آزادی پر ایک لیکھ اور اس کا جواب چھپا ۔ لوک مانیہ تلک کی ایکتیسویں برسی ۔ وردھا میں گاندھی وچار پریشد قائم ہوئی ۔

2. ٹرومین چار پائنٹ یوجنا کے مطابق ہندستان میں امریکی کارخانے کھلنے کا فیصلہ ۔ پاکستانی بڑے وزیر کا بلا کسی شرط ہندستان آنے سے انکار ۔

3. تیل کے مسلے پر ایران سے بات کرنے کے لئے اسٹوکس مشن لندن سے روانہ ۔ دربھنگا ضلع میں زبردست باڑھ ۔

4. کیسانگ کی بات چیت بیچ میں ہی اٹک گئی ۔ پرجا پارٹی کی کونسل نے کنٹرول ہٹانے کے موافق ٹھہراو پاس کیا ۔

5. پنڈت جواہرلال کا پاکستان کو جواب ۔

6. تہران میں انگلینڈ اور ایران کے بیچ بات چیت شروع ۔ نئی دلی میں راج پتی نے پارلیمنٹ کا نیا اجلاس کھولا ۔

7. روسی سوویت کے صدر کا وشو شانتی کے لئے امریکی راجپتی کو خط ۔ کیسانگ کی بات چیت پھر سے شروع کرنے کے لئے امریکی جنرل رجوے کی شرطیں ۔

8. آسام کا کچھ حصہ بھوٹان کو دے دینے کا بل پارلیمنٹ میں پاس ۔ سرکار کے پاس چاول کی کمی — اناج منسٹر کا اعلان ۔

9. مصر کو برٹین مصر صلح نامہ پر اعتراض ۔ ہندستان کے اگلے چناو 3 جنوری سے 24 جنوری تک ہونگے ۔ ریلوے والوں نے ہڑتال فی الحال نہیں کرنے کا فیصلہ کیا ۔

10. پنڈت جواہر لال نے کانگریس ورکنگ کمیٹی اور سنٹرل کانگریسی پارلیمنٹری بورڈ سے استعفیٰ دے دیا ۔

11. مولانا آزاد کا ورکنگ کمیٹی سے استعفیٰ ۔ دلی میں ورکنگ کمیٹی کی بیٹھک شروع ۔

12. پاکستان سرکار پختونستان کے لوگوں کو اپنا جنم جات حق لینے سے نہیں روک سکتی — افغانی راج دوت کا اعلان ۔

13. دلی میں ورکنگ کمیٹی کی بیٹھک جاری ۔ نیپال کے راجہ دلی پہونچے ۔

14. کانگریس صدر نے کہا کہ پنڈت جواہر لال کا استعفیٰ کل ہند کانگریس کمیٹی کی ایک خاص میٹنگ میں پیش کیا جائے گا ۔ ہندستان کے مسلمانوں کا پاکستان کی کشمیر پالیسی پر ڈاکٹر گراہم کو میموریندم ۔

15. جگہ جگہ آزادی کا دن منایا گیا ۔

نوٹ — آئندہ سے ایک ماہ کی 15 تاریخ سے دوسرے کی 15 تاریخ تک کی خبریں دی جایا کرینگی ۔

निकालने वाले—चरखा संघ की तामिलनाड शाखा और सर्वोदय प्रचारवालयम, तिरूपुर (दक्खिन भारत), सफ़े 112; दाम—चौदह आने.

जब हमारे पास यह किताब आई तो हम हैरत में रह गए कि यह चीज़ अब तक क्यों नहीं निकली थी. तरह तरह के मसलों पर महात्मा गांधी के विचारों को जमा कर के किताबें निकल चुकी हैं लेकिन खादी पर, जो उनकी ख़ास ईजाद थी, अब तक नदारद ! इसलिये जाजू जी का हम सब पर बड़ा अहसान है कि उन्होंने मेहनत करके यह चीज़ तैयार की और दुनिया के आगे रख दी.

किताब के बारे में कुछ भी कहना सूरज को दीपक दिखाना है. बापू के जो लेख या स्पीचें इस में जमा की गई हैं उनमें वह जान है, वह आग है, वह सच्चाई है कि हर किसी को—अगर उसने पहले से ही इस के ख़िलाफ़ मन में कोई राय न बना ली हो—मानना पड़ेगा कि चरखे और खादी की हिन्दुस्तान को ज़रूरत है, जितनी आज़ाद होने के लिये थी उस से कहीं ज़्यादा आज़ादी पाने के बाद है. खादी के पनपने पर ही हमारे देहाती धंदे पनपेंगे, हमारे देहात पनपेंगे, हिन्दुस्तान पनपेगा वरना सब का बंटा धार होने वाला है, कोई ताक़त नहीं बचा सकती.

बापू में, हिन्दुस्तान में या इनसानी समाज में जिसे ज़रा भी दिलचस्पी है उसने अगर यह किताब नहीं पढ़ी तो हम कहेंगे कि कुछ नहीं पढ़ा. चौदह आने में यह किताब बहुत सस्ती है.

—सुरेश रामभाई

نکالنے والے — چرخہ سنگھ کی تامل ناڈ شاکھا اور سروودیہ پرچارالیم' تروپور (دکھن بھارت)' صفحے 112؛ دام چودہ آنے .

جب ہمارے پاس یہ کتاب آئی تو ہم حیرت میں رہ گئے کہ یہ چیز اب تک کیوں نہیں نکلی تھی . طرح طرح کے مسئلوں پر مہاتما گاندھی کے وچاروں کو جمع کرکے کتابیں نکل چکی ہیں لیکن کھادی پر' جو اُن کی خاص ایجاد تھی' اب تک ندارد ! اس لئے جاجو جی کا ہم سب پر بڑا احسان ہے کہ انہوں نے محنت کرکے یہ چیز تیار کی اور دنیا کے آگے رکھ دی .

کتاب کے بارے میں کچھ بھی کہنا سورج کو دیپک دکھانا ہے . باپو کے جو لیکھ یا اسپیچیں اِس میں جمع کی گئی ہیں اُن میں وہ جان ہے' وہ آگ ہے' وہ سچائی ہے کہ ہر کسی کو — اگر اس نے پہلے سے ہی اس کے خلاف من میں کوئی رائے نہ بنالی ہو — ماننا پڑے گا کہ چرخے اور کھادی کی ہندستان کو ضرورت ہے' جتنی آزاد ہونے کے لئے تھی اُس سے کہیں زیادہ آزادی پانے کے بعد ہے . کھادی کے پنپنے پر ہی ہمارے دیہاتی دھندے پنپیں گے' ہمارے دیہات پنپیں گے' ہندستان پنپے گا ورنہ سب کا بنٹا دھار ہونے والا ہے' کوئی طاقت نہیں بچا سکتی .

باپو میں' ہندستان میں یا انسانی سماج میں جسے ذرا بھی دلچسپی ہے اُس نے اگر یہ کتاب نہیں پڑھی تو ہم کہیں گے کہ کچھ نہیں پڑھا . چودہ آنے میں یہ کتاب بہت سستی ہے .

— سریش رام بھائی

चरखे की तात्विक मीमांसा

निकालने वाले—मंत्री, चरखा संघ, सेवा ग्राम, वर्धा. सफ़े—72, दाम एक रुपया.

यह किताब 'आईडियोलाजी आफ़ दी चरखा' का हिन्दी अनुवाद है. मंत्री, चरखा संघ से इतनी बिनती ज़रूर है कि अगली बार जब इसे छपवाएं तो इस की बोली सब की बोली जैसी कर दें ताकि हर कोई इसे आसानी से समझ सके.

—सुरेश रामभाई

چرخے کی تاتوک میمانسا

نکالنے والے — منتری' چرخہ سنگھ' سیوا گرام' وردھا . صفحے — 72' دام ایک روپیہ .

یہ کتاب 'آئڈیولاجی آف دی چرخہ' کا ہندی انوواد ہے . منتری' چرخہ سنگھ سے اتنی بنتی ضرور ہے کہ کہ اگلی بار جب اسے چھپوائیں تو اِس کی بولی سب کی بولی جیسی کر دیں تاکہ ہر کوئی اِسے آسانی سے سمجھ سکے .

— سریش رام بھائی

खरी कहते हैं, सच्ची कहते हैं, बेधड़क कहते हैं. उन्होंने इस किताब के शुरू में ही बतलाया है कि समाज को रोज़ की ज़िन्दगी के लिहाज़ से पाँच हिस्सों में बांटा जा सकता है—मारखाऊ (चीता-शेर जैसे), लुटेरे (बन्दर जैसे), जफ़ाकश (चिड़िया जैसे), गिरोह बन्द (शहद की मक्खी जैसे) और सेवक (मां जैसे). यही पाँच क़िस्में हकूमतों, राश्ट्रों में भी मिलती हैं. पूँजी पतियों को जो ख़ुद कोई मेहनत न करके दूसरों का पसीना चूसते हैं वह मारखाऊ दरजे में गिनते हैं, नौकर पेशा को लुटेरों में, किसान को जफ़ाकश में, सोवियत रूस को चौथे में. सेवा वाला दरजा वह है जिस की तरफ़ गांधी जी ने हमारा ध्यान खींचा और जिसकी ख़ातिर उन्होंने काम किया. सभ्यता का असली नाप ही यही है कि हम मारखाऊ और लुटेरेपन से किस हद तक सेवा की तरफ़ बढ़े.

डाक्टर कुमारप्पा ने बहुत ही सुन्दर ढंग से सत्य और अहिन्सा के आधार पर समाज के आर्थिक और नैतिक ढाँचे की तसवीर दी है जिसमें इनसान को अपने निजी विकास का पूरा मौक़ा मिलेगा और वह मशीन का एक निकम्मा पुर्ज़ा न रह कर समाज का एक जानदार हिस्सा बनेगा जिसकी सेवाओं के सिले में समाज उसे पालता पोसता है. यही ख़ास चीज़ है जो समाजवाद, साम्यवाद, साम्राजवाद, नाज़ीवाद वग़ैरा को एक तरफ़ और गांधी-वाद को दूसरी तरफ़ अलग कर देती है. अगर सच्चे सुख और शान्ति की इनसान को तमन्ना है तो इस रास्ते पर उसे चलना होगा.

ख़ुशी की बात है कि इस किताब में जो आर्थिक तजवीज़ डाक्टर. कुमारप्पा ने पेश की है उसी को अमल में लाने के लिये वह वर्धा नगरी से बीस मील दूर एक देहात में जाकर बैठ गए हैं और खेती वग़ैरा सब चीज़ों के प्रयोग अपने ढंग से-उन्होंने शुरू कर दिये हैं.

किताब बहुत ही प्यारी है और पढ़ने वाले के मन को हरलेती है. हमारी देशी भाषाओं में इसका अनुवाद ज़रूर किया जाना चाहिये.

—सुरेश रामभाई

کھری کہتے ہیں، سچی کہتے ہیں، بے دھڑک کہتے ہیں۔ اُنہوں نے اس کتاب کے شروع میں ہی بتلایا ہے کہ سماج کو روز کی زندگی کے لحاظ سے پانچ حصوں میں بانٹا جا سکتا ہے — مار کھاؤ (چیتا شیر جیسے)، لٹیرے (بندر جیسے)، جفاکش (چڑیا جیسے)، گروہ بند (شہد کی مکھی جیسے) اور سیوک (ماں جیسے)۔ یہی پانچ قسمیں حکومتوں، راشٹروں میں بھی ملتی ہیں۔ پونجی پتیوں کو جو خود کوئی محنت نہ کرکے دوسروں کا پسینا چوستے ہیں وہ مار کھاؤ درجے میں گنتے ہیں، نوکر پیشہ کو لٹیروں میں، کسانوں کو جفاکش میں، سوویت روس کو چوتھے میں۔ سیوا والا درجہ وہ ہے جس کی طرف گاندھی جی نے ہمارا دھیان کھینچا اور جس کی خاطر اُنہوں نے کام کیا۔ سبھیتا کا اصلی ناپ ہی یہی ہے کہ ہم مار کھاؤ اور لٹیرے پن سے کس حد تک سیوا کی طرف بڑھے۔

ڈاکٹر کماریپا نے بہت ہی سندر ڈھنگ سے ستیہ اور اہنسا کے آدھار پر سماج کے آرتھک اور نیتک ڈھانچے کی تصویر دی ہے جس میں انسان کو اپنے نجی وکاس کا پورا موقع ملے گا اور وہ مشین کا ایک نکما پرزہ نہ رہ کر سماج کا ایک جاندار حصہ بنے گا جس کی سیواؤں کے صلے میں سماج اُسے پالتا پوستا ہے۔ یہی خاص چیز ہے جو سماج واد، سامیہ واد، سامراج واد، نازی واد وغیرہ کو ایک طرف اور گاندھی واد کو دوسری طرف الگ کر دیتی ہے۔ اگر سچے سکھ اور شانتی کی انسان کو تمنا ہے تو اس راستے پر اُسے چلنا ہوگا۔

خوشی کی بات ہے کہ اس کتاب میں جو آرتھک تجویز ڈاکٹر کماریپا نے پیش کی ہے اُسی کو عمل میں لانے کے لئے وہ وردھا نگری سے بیس میل دور ایک دیہات میں جاکر بیٹھ گئے ہیں اور کھیتی وغیرہ سب چیزوں کے پریوگ اپنے ڈھنگ سے اُنہوں نے شروع کر دیئے ہیں۔

کتاب بہت ہی پیاری ہے اور پڑھنے والے کے من کو ہر لیتی ہے۔ ہماری دیشی بھاشاؤں میں اِس کا انوواد ضرور کیا جانا چاہئے۔

— سریش رام بھائی

दि आइडियोलाजी आफ़ दी चरखा

(महात्मा गांधी के खादी के सवाल पर कुछ लेखों और स्पीचों का संग्रह)

सम्पादक—भाई श्री कृष्न दास जाजू;

लिखावट—अंगरेज़ी;

دی آئڈیولاجی آف دی چرخہ

(مہاتما گاندھی کے کھادی کے سوال پر کچھ لیکھوں اور اسپیچوں کا سنگرہ)

سمپادک— بھائی شری کرشن داس جاجو؛

لکھاوٹ — انگریزی؛

मिलते, उनके दिल का हाल पूछते और शाम को प्रार्थना में एक प्रवचन देते थे. रात को आराम कर सुबह फिर निकल पड़ते.

अपने प्रवचनों में विनोबाजी ने सर्वोदय, खेती, तालीम, उद्योग-धंदों, शहर-देहात, क़ुदरती इलाज, सहयोग, खद्दर, हाथ चक्की, जन सेवा वग़ैरा पर रोशनी डाली है और दिल में घर कर जाने वाली बातें कही हैं. मिसाल के तौर पर आदिलाबाद जिले के निमल गांव का प्रवचन लीजिये. इसमें उन्होंने कहा कि "हमारे खेत में तरह तरह के निकम्मे झाड़ लगे हुए थे, उनके काटने का जो काम हुआ उसी का नाम स्वराज था. अब स्वराज पाने के बाद उस खेत में मेहनत करना है और बोना है. लेकिन मैं देख रहा हूँ कि लोगों का यही ख़याल है कि अब तो काटने का समय है. यह बिलकुल ग़लत ख़याल है. तो वह जो खेती में मेहनत करके फ़सल लगाना है इसी का नाम है सर्वोदय." कितने सीधे-सादे लफ़्ज़ों में कितनी बड़ी बात विनोबा जी ने कह दी! इसी तरह के अनमोल रत्नों से यह किताब भरी हुई है. विनोबा जी की सादी, शानदार और और बे लाग ज़िन्दगी की, उनके दिल की तड़प की, उनकी पैनी और दूरदर्शी निगाह की, उनके खुले और ठंडे दिमाग़ की झलक पढ़ने वाले पर असर डाले बिना नहीं रह सकती. यह किताब पढ़ने, समझने और अमल करने की चीज़ है.

ढाई सौ सफ़ों के क़रीब की किताब का दाम सिर्फ़ बीस आने रख कर भारत जैन महामण्डल, वर्धा ने एक बड़ा भारी उपकार किया है. हमें उम्मीद है कि यह विनोबा जी की दूसरी पुस्तकें और इस तरह का और साहित्य भी इसी तरीक़े से निकाल कर सच्ची जन सेवा करते रहेंगे.

—सुरेश रामभाई

ملتے، ان کے دل کا حال پوچھتے اور شام کو پرارتھنا میں ایک پروچن دیتے تھے۔ رات کو آرام کر صبح پھر نکل پڑتے۔

اپنے پروچنوں میں ونوبا جی نے سروودے، کھیتی، تعلیم، ادیوگ دھندوں، شہر دیہات، قدرتی علاج، سہیوگ، کھدر، ہاتھ چکی، جن سیوا وغیرہ پر روشنی ڈالی ہے اور دل میں گھر کر جانے والی باتیں کہی ہیں۔ مثال کے طور پر عادل آباد ضلعے کے نمل گاؤں کا پروچن لیجئے۔ اس میں انہوں نے کہا کہ "ہمارے کھیت میں طرح طرح کے نکمے جھاڑ لگے ہوئے تھے، ان کے کاٹنے کا جو کام ہوا اسی کا نام سوراج تھا۔ اب سوراج پانے کے بعد اس کھیت میں محنت کرنا ہے اور بونا ہے۔ لیکن میں دیکھ رہا ہوں کہ لوگوں کا یہی خیال ہے کہ اب تو کاٹنے کا سمے ہے۔ یہ بالکل غلط خیال ہے۔ تو وہ جو کھیتی میں محنت کرکے فصل لگانا ہے اسی کا نام ہے سروودے۔" کتنے سیدھے سادے لفظوں میں کتنی بڑی بات ونوبا جی نے کہہ دی! اسی طرح کے انمول رتنوں سے یہ کتاب بھری ہوئی ہے۔ ونوبا جی کی سادی، شاندار اور بے لاگ زندگی کی، ان کے دل کی تڑپ کی، ان کی پینی اور دور درشی نگاہ کی، ان کے کھلے اور ٹھنڈے دماغ کی جھلک پڑھنے والے پر اثر ڈالے بنا نہیں رہ سکتی۔ یہ کتاب پڑھنے، سمجھنے اور عمل کرنے کی چیز ہے۔

ڈھائی سو صفحوں کے قریب کی کتاب کا دام صرف بیس آنے رکھ کر بھارت جین مہا منڈل، وردھا نے ایک بڑا بھاری اپکار کیا ہے۔ ہمیں امید ہے کہ یہ ونوبا جی کی دوسری پستکیں اور اس طرح کا اور ساہتیہ بھی اسی طریقے سے نکال کر سچی جن سیوا کرتے رہیں گے۔

— سریش رام بھائی

गांधियन एकोनामिक थाट—

लिखने वाले—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा;

निकालने वाले—वोरा ऐन्ड को, बम्बई 2.

लिखावट—अंगरेज़ी; सफ़े 72; दाम—सवा रुपया.

बम्बई यूनिवरसिटी के 'स्कूल आफ़ एकोनामिक्स ऐन्ड सोशियोलाजी' के डायरक्टर, मशहूर अर्थ शास्त्री प्रोफ़ेसर सी. एन. वकील की निगरानी में 'लायब्रेरी आफ़ इन्डियन एकोनामिक्स' नाम से किताबों की एक माला निकल रही है. यह किताब इस माला का पहला फूल है.

ग्रामोद्योग और देसी या गांधीवादी अर्थ शास्त्र के अलमबरदार होने के नाते डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा के नाम से देश और विदेश के लोग अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं. वह बात

گاندھین ایکونامک تھاٹ—

لکھنے والے — ڈاکٹر جے۔ سی۔ کمارپا؛

نکالنے والے — وورا اینڈ کو، بمبئی 2۔

لکھاوٹ — انگریزی؛ صفحے — 72؛ دام — سوا روپیہ۔

بمبئی یونیورسٹی کے 'اسکول آف ایکونامکس اینڈ سوشیولاجی' کے ڈائرکٹر، مشہور ارتھ شاستری پروفیسر سی۔ این۔ وکیل کی نگرانی میں 'لائبریری آف انڈین ایکونامکس' نام سے کتابوں کی ایک مالا نکل رہی ہے۔ یہ کتاب اس مالا کا پہلا پھول ہے۔

گرام ادیوگ اور دیسی یا گاندھی وادی ارتھ شاستر کے علمبردار ہونے کے ناتے ڈاکٹر جے۔ سی۔ کمارپا کے نام سے دیش اور ودیش کے لوگ اچھی طرح واقف ہیں۔ وہ بات

लिये या बैठते हुए दिल को उभारने के लिये वह आतंक फैलाते थे. उनके दिमाग़ में न जाने क्यों बैठ गया था कि काले लोगों पर शान शौकत दिखा कर असर क़ायम रखा जा सकता है. आतंक फैला कर और शान शौकत दिखा कर अंगरेज़ हिन्दुस्तान पर राज करना चाहते थे. साम्राज की दीवार को जात भेद, रंग भेद और बेजा अभिमान मज़बूत करते हैं. जो अंगरेज़ भी साम्राज की सेवा के लिये इंगलैंड से आता था वह इन्हीं शराबों से बदमस्त यहाँ आता था. साम्राज की यह शराबें डेलाहोरा को बदमस्त नहीं कर पाईं. उसका दिल मज़दूरों के साथ धड़कता है. वह एक अंगरेज़ और एक काले हिन्दुस्तानी में फ़रक़ नहीं करता. मज़दूरों की उसके दिल में इज़्ज़त है, वह उनसे हमदर्दी रखता है. डेलाहोरा को दूसरे अंगरेज़ ग़द्दार समझते हैं. मज़दूरों से हमदर्दी रखने के कारन ही उसे अपनी प्रेमिका को छोड़ना पड़ा, सिविल सर्विस छोड़नी पड़ी, चाय बगान की डाक्टरी छोड़नी पड़ी. लेकिन वह ख़ुश था. उसने दुख सहा था पीड़तों के लिये, मानवता के लिये. पूरी नावेल गंगू नामी किसान की कहानी है और उस कहानी का ख़ात्मा रेगीमेन्ट की गोली खाकर गंगू की मौत पर होता है. गंगू असल में हिन्दुस्तान के किसान समाज का नुमाइन्दा है. इस नावेल में अंगरेज़ी साम्राज से पैदा होनी वाली समस्याओं और चरित्रों का चित्रन सुन्दर ढंग से किया गया है. अंगरेज़ी साम्राज की लूट खसोट और ज़ुल्म की सच्ची कहानी 'दो पत्तियां, एक कली' अपने पन्नों में समो कर विदेशी जनता तक गई है और उन्हें हमारा हमदर्द बनाया है.

—मुजीब रिज़वी

सर्वोदय यात्रा

लिखने वाले—आचार्य विनोबा भावे.

निकालने वाले—भारत जैन महामण्डल, वर्धा.

लिखावट—नागरी, सफ़े 161; दाम सवा रुपया.

यह किताब उन फूलों का हार है जो रोज़ शाम को प्रार्थना के बाद विनोबा जी की बानी से बरसते थे. उन दिनों जब कि वह वर्धा से हैदराबाद तक की तीन सौ मील से ऊपर की यात्रा पैदल पूरी कर रहे थे. यह यात्रा 8 मार्च 1951 से शुरू होकर 7 अप्रैल को ख़त्म हुई, यह यात्रा मध्य प्रदेश के वर्धा और यवतमाल ज़िलों के गांवों में होकर निज़ाम की रियासत हैदराबाद, आदिलाबाद, निज़ामाबाद, मेदक और हैदराबाद ज़िलों के गांवों में हुई. विनोबा जी रोज़ सवेरे साढ़े चार पाँच बजे निकल जाते थे, दस-बारह-सत्रह मील चल कर एक गांव में ठहर जाते, वहां के लोगों से

ا بیٹھتے ہوئے دل کو ابھارنے کے لئے وہ آتنک پھیلاتے تھے . دماغ میں نہ جانے کیوں بیٹھ گیا تھا کہ کالے لوگوں پر شوکت دکھا کر اثر قایم رکھا جاسکتا ہے . آتنک کر اور شان شوکت دکھاکر انگریز ہندستان پر راج چاہتے تھے . سامراج کی دیوار کو جات بھید' رنگ اور بیجا ابھیمان مضبوط کرتے ہیں . جو انگریز بھی اج کی سیوا کے لئے انگلینڈ سے آتا تھا وہ انہیں شرابوں دمست یہاں آتا تھا . سامراج کی یہ شرابیں ڈیلا کو بدمست نہیں کرپائیں . اُس کا دل مزدوروں کے دھڑکتا ہے . وہ ایک انگریز اور ایک کالے ہندستانی فرق نہیں کرتا . مزدوروں کی اُس کے دل میں عزت ہ اُن سے ہمدردی رکھتا ہے . ڈیلا ہورا کو دوسرے انگریز سمجھتے ہیں . مزدوروں سے ہمدردی رکھنے کے ی اُسے اپنی پریمکا کو چھوڑنا پڑا' سول سروس چھوڑنی چائے بگان کی ڈاکٹری چھوڑنی پڑی . لیکن وہ خوش اُس نے دکھ سہا تھا پیڑتوں کے لئے' مانوتا کے لئے . ناول گنگو نامی کسان کی کہانی ہے اور اُس کہانی کا ، ریگی منٹ کی گولی کھاکر گنگو کی موت پر ہوتا گنگو اصل میں ہندستان کے کسان سماج کا نمائندہ اِس ناول میں انگریزی سامراج سے پیدا ہونے والی یاؤں اور چرتروں کا چترن سندر ڈھنگ سے کیا گیا ہے . زی سامراج کی لوٹ کھسوٹ اور ظلم کی سچی کہانی پتیاں' ایک کلی' اپنے پنوں میں سموکر ودیشی جنتا گئی ہے اور اُنہیں ہمارا ہمدرد بنایا ہے .

—مجیب رضوی

رودے یاترا

لکھنے والے — آچاریہ ونوبا بھاوے .

نکالنے والے — بھارت جین مہا منڈل' وردھا .

لکھاوٹ — ناگری' صفحے 161؛ دام سوا روپیہ .

یہ کتاب اُن پھولوں کا ہار ہے جو روز شام کو پرارتھنا عد ونوبا جی کی بانی سے برستے تھے . اُن دنوں جب وہ وردھا سے حیدرآباد تک کی تین سو میل سے اوپر یاترا پیدل پوری کر رہے تھے . یہ یاترا 8 مارچ 1951 شروع ہوکر 7 اپریل کو ختم ہوئی . یہ یاترا مدھیہ ش کے وردھا اور یوت مال ضلعوں کے گاؤں میں ہو ظام کی ریاست حیدرآباد کے عادل آباد' نظام آباد' ک اور حیدرآباد ضلعوں کے گاؤں میں ہوئی . ونوبا روز سویرے ساڑھے چار پانچ بجے نکل جاتے تھے' دس بارہ میل چلکر ایک گاؤں میں ٹھہر جاتے' وہاں کے لوگوں سے

दो पत्तियां, एक कली

लिखने वाले—डाक्टर मुल्कराज आनंद ; लिखावट—नागरी, सफ़े 277; क़ीमत—चार रुपए पांच आने.

निकालने वाले—चेतना प्रकाशन लिमिटेड, आबिद रोड, हैदराबाद दक्खिन.

देश से ज़ियादा विदेश में डाक्टर मुल्कराज आनंद अपनी रचनाओं के लिये मशहूर हैं. उनकी रचनाएं अंगरेज़ी भाशा में होती हैं. डाक्टर आनंद का पहला नावेल 'क़ुली' का तरजुमा लगभग सभी योरपी भाशाओं में हो चुका है. 'दो पत्तियां, एक कली' भी अंगरेज़ी भाशा में है. इस का अनुवाद श्री श्यामू सन्यासी ने किया है. अनुवाद में बहाव और भाशा की स्वाभाविकता दोनों हैं. ज़मींदारों के ज़ुल्म और साहूकारों की लूट से परेशान होकर किसान मज़दूर बनने पर मजबूर हो जाता है. हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी साम्राजवादियों को यहां का कच्चा माल लूटना था, उन्हें सस्ते मज़दूरों की ज़रूरत थी. इसी लूट खसोट, ज़ुल्म ज़ियादती और इन से पैदा होने वाले क़ुदरती असरों का चित्रन इस नावेल में किया गया है.

होशियर पुर गांव के गंगू नामी किसान की जायदाद पर साहूकार क़ब्ज़ा जमा लेता है. ज़मीन का मोह उसे मज़दूरी कर के अपनी ज़मीन वापस लेने का आदेश देता है. उसी गांव के एक बूटा राम नाई के जाल में फंस कर गंगू चाय बगान में आ जाता है. किसान का भ्रम यहां टूट गया. बूटा राम हमदर्द होने के बजाय साहब लोगों का एजन्ट निकला. गंगू ने बड़े दुख से कहा "नाऊ बड़ा छतीसा". नौकर शाही का यह सिद्धान्त है कि हर एक अपने बड़े की गाली सुनता और ख़ुशामद करता है और अपने से छोटों को गाली देता है और ख़ुशामद करवाता है. कहते हैं बिना इस सिद्धान्त के नौकर शाही चल ही नहीं सकती. चाय बगान के साहबों, क्लरकों, सरदारों, चपरासियों, बैरों सभी का यह सिद्धान्त है. सब से कमज़ोर क़ुली है. उसी पर इन सब का ग़ुस्सा उतरता है, और हर एक किसी न किसी तरह क़ुलियों को सताता और रिशवत लेता है, ग़मी और शादी का भी विचार नहीं करता. ग़ुलामी की प्रवृति ने हिन्दुस्तानियों को पत्थर बना दिया था. वह इनसानी भावनाओं से हमदरदी करना भी भूल गए थे. गंगू की पत्नी मरी पड़ी थी, बेचारा कफ़न के लिये क़रज़ा ढूँढ रहा था और हिन्दुस्तानी क्लर्क और चपरासी साहब से मिलवाने और सिफ़ारिश करने के लिये उस दुखी आदमी से रिशवत मांग रहे थे. इस दृश्य का चित्रन रोंगटे खड़े कर देता है. अंगरेज़ हिन्दुस्तान में मुट्ठी भर थे. वह बेहद डरे हुए रहते थे. अपने डर को छुपाने के

دو پتیاں' ایک کلی

لکھنے والے—ڈاکٹر ملک راج آنند ؛ لکھاوٹ—ناگری؛ صفحے 277؛ قیمت—چار روپے پانچ آنے .

نکالنے والے—چیتنا پرکاشن لمیٹڈ عابد روڈ' حیدرآباد دکھن .

دیش سے زیادہ ودیش میں ڈاکٹر ملک راج آنند اپنی رچناؤں کے لئے مشہور ہیں . اُن کی رچنائیں انگریزی بھاشا میں ہوتی ہیں . ڈاکٹر آنند کا پہلا ناول 'قلی' کا ترجمہ لگ بھگ سبھی یورپی بھاشاؤں میں ہو چکا ہے . 'دو پتیاں' ایک کلی' بھی انگریزی بھاشا میں ہے . اِس کا انوواد شری شیامو سنیاسی نے کیا ہے . انوواد میں بہاؤ اور بھاشا کی سوا بھاوکتا دونوں ہیں . زمینداروں کے ظلم اور ساہوکاروں کی لوٹ سے پریشان ہوکر کسان مزدور بننے پر مجبور ہو جاتا ہے . ہندستان میں انگریزی سامراج وادیوں کو یہاں کا کچا مال لوٹنا تھا' انہیں سستے مزدوروں کی ضرورت تھی . اسی لوٹ کھسوٹ' ظلم زیادتی اور ان سے پیدا ہونے والے قدرتی اثروں کا چترن اِس ناول میں کیا گیا ہے .

ہوشیار پور گاؤں کے گنگو نامی کسان کی جائداد پر ساہوکار قبضہ جما لیتا ہے . زمین کا موہ اُسے مزدوری کرکے اپنی زمین واپس لینے کا آدیش دیتا ہے . اُسی گاؤں کے ایک بوٹا رام نائی کے جال میں پھنس کر گنگو چائے بگان میں آجاتا ہے . کسان کا بھرم یہاں ٹوٹ گیا . بوٹا رام ہمدرد ہونے کے بجائے صاحب لوگوں کا ایجنٹ نکلا . گنگو نے بڑے دکھ سے کہا "ناؤ بڑا چھتیسا". نوکر شاہی کا یہ سدھانت ہے کہ ہر ایک اپنے بڑے کی گالی سنتا اور خوشامد کرتا ہے اور اپنے سے چھوٹوں کو گالی دیتا ہے اور خوشامد کرواتا ہے . کہتے ہیں بنا اِس سدھانت کے نوکر شاہی چل ہی نہیں سکتی . چائے بگان کے صاحبوں' کلرکوں' سرداروں' چپراسیوں' بیروں سبھی کا یہ سدھانت ہے . سب سے کمزور قلی ہے . اُسی پر اِن سب کا غصہ اترتا ہے' اور ہر ایک کسی نہ کسی طرح قلیوں کو ستاتا اور رشوت لیتا ہے' غمی اور شادی کا بھی وچار نہیں کرتا . غلامی کی پرورتی نے ہندستانیوں کو پتھر بنا دیا تھا . وہ انسانی بھاوناؤں سے ہمدردی کرنا بھی بھول گئے تھے . گنگو کی پتنی مری پڑی تھی' بے چارا کفن کے لئے قرضہ ڈھونڈھ رہا تھا اور ہندستانی کلرک اور چپراسی صاحب سے ملوانے اور سفارش کرنے کے لئے اُس دکھی آدمی سے رشوت مانگ رہے تھے . اس درشیہ کا چترن رونگٹے کھڑے کر دیتا ہے . انگریز ہندستان میں مٹھی بھر تھے . وہ بے حد ڈرے ہوئے رہتے تھے . اپنے ڈر کو چھپانے کے

"यह लक्षन हिन्दू धर्म के एक बाजू का बहुत ही अच्छी तरह से वर्नन करता है. इससे यह बात सहज ही खुल जाती है कि हिन्दू धर्म की कोई विधायक (Positive) व्यवस्थित, सगंठित और सुसंगत, पारमार्थिक नीव नहीं है. 'प्रामाण्य बुद्धिर्वेदेषु' से यह सूचित होता है कि वेद सारे हिन्दुओं का प्रमान ग्रंथ है परन्तु ऐसे सत्तर प्रतिशत लोग हिन्दू समाज में हैं जिनको वेदाधिकार नहीं है और जिनके रीत रिवाज वैदिक धर्माश्रित नहीं हैं. भला उनके लिये वेद प्रमान ग्रंथ कैसे हो सकता है ? जिन लोगों को वेद सुनने का भी अधिकार नहीं, बल्कि सुनने से महा-पातक और नरक का अधिकारी बनना पड़ता है उन लोगों की वेदों पर प्रामान्य बुद्धि या श्रद्धा है, ऐसा कहने का कुछ अर्थ ही नहीं है. साधनाओं की अनेकता और उपास्यों का अनियम यह व्याख्या हो नहीं हो सकती. प्रत्येक विशिश्ट सम्प्रदाय के हिन्दू के यानी शैव, वैशनव, स्मार्त, शाक्त आदि के विशिश्ट साधन और विशिश्ट उपास्य हैं ही. यह बात ठीक है कि सारे हिन्दुओं के एक तरह के साधन अथवा एक तरह के उपास्य नहीं हैं, परन्तु यह अभावात्मक लक्षन हिन्दू धर्म का सच्चा लक्षन नहीं. जब किसी पदार्थ का अथवा पदार्थ समुदाय का लक्षन कहने की आवश्यकता होती है तब उस पदार्थ के बाहर न मिलने वाले परन्तु उस सारे पदार्थ को व्याप्त करने वाले उस पदार्थ का भाव रूप (Positive) स्वरूप कहना पड़ता है. 'उपास्यानानियम' और 'साधनानाम नेकता' से इतना ही सिद्ध होता है कि सारे हिन्दुओं का हिन्दू धर्म एक विशिश्ट सर्व साधारन धर्म नहीं है. हिन्दुओं के धर्म अनेक हैं और हिन्दुओं के धर्म में एक सूत्रता नहीं है.

हिन्दुओं की समाज संस्था का महत्व का (Positive) लक्षन जाति व्यवस्था है. प्रार्थना समाज, आर्य समाज आदि आधुनिक अपवादों को यदि छोड़ दिया जाय तो हिन्दुओं का बहुजन समाज जाति संस्था को मान कर ही चलता है. आर्य समाज और प्रार्थना समाज में भी जाति मान कर चलने वाले बहुत से लोग हैं. जैन धर्म जाति नहीं मानता है, तो भी जैनी जाति मानते हैं. हिन्दुस्तान के मुसलमानों और क्रिश्चियनों तक में जाति मानने वालों की भारी संख्या है. हिन्दू समाज की इस मुख्य संस्था का असर उनमें भी बाक़ी रह गया है."

बस यह सारी किताब इसी तरह की भाशा और इसी तरह के विचारों से भरी हुई है.

—भगवानदीन

"یہ لکشن ہندو دھرم کے ایک بازو کا بہت ہی اچھی طرح سے ورنن کرتا ہے. اس سے یہ بات سہج ہی کھل جاتی ہے کہ ہندو دھرم کی کوئی ودھائک (Positive) ویوستھت' سنگٹھت اور سوسنگت' پارمارتھک نیو نہیں ہیں. 'پرامانیہ بدھیرویدیشو' سے یہ سوچت ہوتا ہے کہ وید سارے ہندوؤں کا پرمان گرنتھ ہے پرنتو ایسے ستر پرتی شت لوگ ہندو سماج میں ہیں جنکو وید ادھیکار نہیں ہے اور جنکے ریت رواج ویدک دھرم آشرت نہیں ہیں. بھلا اُن کے لئے وید پرمان گرنتھ کیسے ہوسکتا ہے ؟ جن لوگوں کو وید سننے کا بھی ادھیکار نہیں ہے' بلکہ سننے سے مہا پاتک اور نرک کا ادھیکاری بننا پڑتا ہے اُن لوگوں کی ویدوں پر پرامانیہ بدھی یا شردھا ہے' ایسا کہنے کا کچھ ارتھ ہی نہیں ہے. سادھناؤں کی انیکتا اور اُپاسیوں کا انیم یہ ویاکھیا ہی نہیں ہوسکتی. پرتیک وششٹ سمپردائے کے ہندو کے یعنی شیو' ویشنو' اسمارت' شاکت آدی کے وششٹ سادھن اور وششٹ اُپاسیہ ہیں ہی. یہ بات ٹھیک ہے کہ سارے ہندوؤں کے ایک طرح کے سادھن اتھوا ایک طرح کے اُپاسیہ نہیں ہیں' پرنتو یہ ابھاواتمک لکشن ہندو دھرم کا سچا لکشن نہیں. جب کسی پدارتھ کا اتھوا پدارتھ سمودائے کا لکشن کہنے کی آوشیکتا ہوتی ہے تب اُس پدارتھ کے باہر نہ ملنے والے پرنتو اُس سارے پدارتھ کو ویاپت کرنے والے اس پدارتھ کا بھاؤ روپ (Positive) سوروپ کہنا پڑتا ہے. 'اپاسیانانیم' اور 'سادھنا نام نیکتا' سے اتنا ہی سدھ ہوتا ہے کہ سارے ہندوؤں کا ہی دھرم ایک وششٹ سرو سادھارن دھرم نہیں ہے. ہندوؤں کے دھرم انیک ہیں اور ہندوؤں کے دھرم میں ایک سوترتا نہیں ہے.

ہندوؤں کی سماج سنستھا کا مہتو کا (Positive) لکشن جاتی ویوستھا ہے. پرارتھنا سماج' آریہ سماج آدی آدھونک اپوادوں کو یدی چھوڑ دیا جائے تو ہندوؤں کا بہو جن سماج جاتی سنستھا کو مان کر ہی چلتا ہے. آریہ سماج اور پرارتھنا سماج میں بھی جاتی مان کر چلنے والے بہت سے لوگ ہیں. جین دھرم جاتی نہیں مانتا ہے' تو بھی جینی جاتی مانتے ہیں. ہندستان کے مسلمانوں اور کرشچینوں تک میں جاتی ماننے والوں کی بھاری سنکھیا ہے. ہندو سماج کی اس مکھیہ سنستھا کا اثر اُن میں بھی باقی رہ گیا ہے."

بس یہ ساری کتاب اسی طرح کی بھاشا اور اسی طرح کے وچاروں سے بھری ہوئی ہے.

— بھگوان دین

ख़ुद नाथूराम जी प्रेमीने. किताब के नाम से पढ़ने वालों को किताब में क्या लिखा है यह समझने में कोई दिक़्क़त नहीं हो सकती और पंडित सुख लाल संघवी ने यह लिख कर कि ..."ऐसे लेखक का ब्राह्मन परम्परा में जीवित रहना नवयुग का जीवित लक्षन है" यह बता दिया है कि किताब अपने ढंग की ऐसी है जैसी अब तक इससे पहले कभी नहीं लिखी गई. हम श्री संघवी जी की राय में राय मिलाते हुए यह कहेंगे कि अगर यह किताब बोलती हिन्दी में लिख दी जाय तो हिन्दुस्तान में एक क्रान्ति पैदा कर सकती है. और वह क्रान्ति भले के लिये ही होगी.

यह किताब कुछ हिन्दू धर्म से चिढ़कर नहीं लिखी गई. बड़े ठन्डे जी से इतिहास और विज्ञान दोनों को निगाह में रखकर किसी का पक्षपात किये बिना लिखी गई है. जिन्होंने इसको लिखा है और जो कुछ उन्होंने इसमें कहा है वह वैसा कहने के हर तरह अधिकारी हैं क्योंकि वह संस्कृत के अच्छे ज्ञाता और चारों वेदों के पाठी होने के साथ साथ पच्छिमी विद्या अंगरेज़ी के जानकार भी हैं और पच्छिमी दर्शन शास्त्र को भी उन्होंने ख़ूब पढ़ा है. कार्ल मार्क्स का भी किताब में जगह जगह हवाला है. कम से कम पौन सौ किताबों का इस किताब में निचोड़ मौजूद है. इस किताब की भूमिका लिखी है श्री नरेन्द्र देव जी ने.

इस पुस्तक को हमारे पास समालोचना के लिये आए डेढ़ बरस हो चुका. हम तीन बार इसको पढ़ चुके और हर बार कुछ न कुछ हमारी जानकारी बढ़ी ही. हम इस पर एक बड़ी आलोचना लिखना चाहते थे पर किसी वजह से वैसा न कर सके. इस वक़्त तो हम इतना ही कहेंगे कि यह किताब आँखें खोलने वाली किताब है. बस इसमें कमी इतनी है कि इसकी भाशा इतनी संस्कृतमय कर दी गई है कि बी. ए. में हिन्दी लेकर पास करने वाला विद्यार्थी भी इसे आसानी से नहीं समझ सकता. मालूम ऐसा होता है कि साधारन हिन्दी जानकारों के लिये यह किताब लिखी भी नहीं गई. पर धर्म पुस्तकों की तरह यह घर में रखने लायक़ तो है ही.

इस पुस्तक का मसाला उस व्याख्यान-क्रम से लिया गया है जो लेखक ने नागपुर विश्वविद्यालय में दिये थे. इसलिये यह यूनिवरसिटी लायब्रेरियों में रहने के काम की ज़ियादा है और मामूली आदमियों के काम की कम.

ऐसी किताब में इन्डैक्स का न होना बड़ी भारी कमी है. दूसरे एडीशन में प्रकाशक इसका ख़याल रखें. बानगी के तौर पर हम किताब में से नीचे कुछ दिये देते हैं:

"लोकमान्य तिलक ने हिन्दू धर्म का जो निम्न लिखित लक्षन किया है वह सन्तोश जनक नहीं है :—

प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु साधनानामनेकता ।

उपास्यानामनियमः एतद्धर्मस्य लक्षणम् ॥

خود ناتھورام جی پریمی نے. کتاب کے نام سے پڑھنے والوں کو کتاب میں کیا لکھا ہے یہ سمجھنے میں کوئی دقت نہیں ہوسکتی اور پنڈت سکھ لال سنگھوی نے یہ لکھکر کہ ...."ایسے لیکھک کا براہمن پرمپرا میں جیوت رہنا نویگ کا جیوت لکشن ہے" یہ بتا دیا ہے کہ کتاب اپنے ڈھنگ کی ایسی ہے جیسی اب تک اس سے پہلے کبھی نہیں لکھی گئی. ہم شری سنگھوی جی کی رائے میں رائے ملاتے ہوئے یہ کہینگے کہ اگر یہ کتاب بولتی ہندی میں لکھدی جائےتو ہندستان میں ایک کرانتی پیدا کر سکتی ہے. اور وہ کرانتی بھلے کےلئے ہی ہوگی.

یہ کتاب کچھ ہندو دھرم سے چڑھکر نہیں لکھی گئی. بڑے ٹھنڈے جی سے اتہاس اور وگیان دونوں کو نگاہ میں رکھکر کسی کا پکش پات کئے بنا لکھی گئی ہے. جنہوں نے اسکو لکھا ہے اور جو کچھ انہوں نے اس میں کہا ہے وہ ویسا کہنے کے ہر طرح ادھکاری ہیں کیونکہ وہ سنسکرت کے اچھے گیاتا اور چاروں ویدوں کے پاٹھی ہونے کے ساتھ ساتھ پچھمی ودیا انگریزی کے جانکار بھی ہیں اور پچھمی درشن شاستر کو بھی انہوں نے خوب پڑھا ہے. کارل مارکس کا بھی کتاب میں جگہ جگہ حوالہ ہے. کم سے کم پون سو کتابوں کا اس کتاب میں نچوڑ موجود ہے. اس کتاب کی بھومکا لکھی ہے شری نریندر دیو جی نے.

اس پستک کو ہمارے پاس سمالوچنا کے لئے آئے ڈیڑھ برس ہو چکا. ہم تین بار اسکو پڑھ چکے اور ہر بار کچھ نہ کچھ ہماری جانکاری بڑھی ہی. ہم اس پر ایک بڑی آلوچنا لکھنا چاہتے تھے پر کسی وجہ سے ویسا نہ کر سکے. اس وقت تو ہم اتنا ہی کہینگے کہ یہ کتاب آنکھیں کھولنے والی کتاب ہے. بس اس میں کمی اتنی ہے کہ اسکی بھاشا اتنی سنسکرت مے کر دی گئی کہ بی. اے. میں ہندی لے کر پاس کرنے والا ودیارتھی بھی اسے آسانی سے نہیں سمجھ سکتا. معلوم ایسا ہوتا ہے کہ سادھارن ہندی جانکاروں کے لئے یہ کتاب لکھی بھی نہیں گئی. پر دھرم پستکوں کی طرح یہ گھر میں رکھنے لائق تو ہے ہی.

اس پستک کا مسالہ اس ویاکھیان کرم سے لیا گیا ہے جو لیکھک نے ناگپور وشو ودیالے میں دیئے تھے. اسلئے یہ یونیورسٹی لائبریریوں میں رہنے کے کام کی زیادہ ہے اور معمولی آدمیوں کے کام کی کم.

ایسی کتاب میں انڈیکس کا نہ ہونا بڑی بھاری کمی ہے. دوسرے ایڈیشن میں پرکاشک اس کا خیال رکھیں. بانگی کے طور پر ہم کتاب میں سے نیچے کچھ دیئے دیتے ہیں:

"لوک مانیہ تلک نے ہندو دھرم کا جو نمن لکھت لکشن کیا ہے وہ سنتوش جنک نہیں ہے :—

پراماںیہ بدھرویدیشو سادھنانام نیکتا.

اُپاسیانام نیمہ ایتددھرمسیہ لکشنم.

संघवी ने अपना अवलोकन लिखा है. पढ़ने वालों को ग्रन्थ शुरू करने से पहले उसे ज़रूर पढ़ लेना चाहिये. ऐसा करने से किताब के पढ़ने में किसी जगह भी अरुचि का डर नहीं रहेगा. यह किताब मराठी में लिखी गई है, गुजराती रूप इसका दिया जा चुका है और हिन्दी में इसको इस पुस्तक माला ने निकाला है. इस किताब में कोसाम्बी जी ने जहां आलोचना की है वहां खासी पैनी कर दी है. अगर इतनी पैनी न होती तब भी काम चल सकता था. पढ़ने वाले अगर उस पैनी आलोचना से अपने आपको बचालेंगे तो इस किताब में जो सचाई भरी पड़ी है उसका पूरा आनन्द ले सकेंगे.

कोसाम्बी जी ने इस किताब में हजारों बरस पहले से आज के दिन तक भारतीय संसक्रति के अनेकों रूपों को बड़ी गहराई से पढ़ समझ कर अपनी जो राय क़ायम की है वह ऐसी नहीं है जो यूं ही उड़ा दी जाय. उन्होंने संस्कृति को पांच हिस्सों में बांटा है—एक वैदिक, दो श्रमन, तीन पौरानिक, चार पाश्चात्य, पांच संस्कृति और अहिन्सा. और इन का मेल कुछ इस तरह बिठाया है जिस तरह आज तक किसी लेखक ने न किया. इसके पढ़ने में आनन्द तो आता है पर यह कहने के लिये कि कोसाम्बी जी ने जो कुछ लिखा है वही ठीक, इसके लिये इतिहास के बहुत बड़े ज्ञान की ज़रूरत है और उतने ज्ञान का दावा हम नहीं कर सकते. हम तो इस किताब के बारे में इतना कह सकते हैं कि आजकल जितनी ऐसी किताबें लिखी जाती हैं वह या तो इतिहास को निगाह में रखकर या विज्ञान को निगाह में रख कर या दोनों को ही निगाह में रख कर. और यह किताब ज़ियादातर इतिहास को निगाह में रख कर लिखी गई है और इतिहास के बारे में कुछ विद्वानों की यह राय है कि वह कभी सचा नहीं हो सकता और हम भी इस राय के हैं. इसलिये हम को इसके समझने में थोड़ी मुशकिल होती है. हो सकता है यही मुशकिल पाठकों को भी हो.

कुछ भी सही कोसाम्बी जी ने इस किताब में ऐसे विचार दे दिये हैं जिन पर चिन्तन करने के लिये जी मचल उठता है और ऐसी सामग्री इकट्ठी कर दी है जिससे इस विशय पर लिखने वाले लेखकों को बेहद मदद मिल सकती हैं.

किताब बड़े काम की है. भाशा बहुत मुशकिल नहीं है लायब्रे रियों के बड़े काम की है और लेखकों के पास तो यह रहनी ही चाहिये.

हिन्दू धर्म की समीक्षा—

यह इसी पुस्तकमाला का दूसरा फूल है. यह भी असल में मराठी में लिखी गई है और इसके लेखक हैं तर्क तीर्थ पंडित लछमन शास्त्री जोशी. इसका हिन्दी अनुवाद किया है

سنگھوی نے اپنا اولوکن لکھا ہے ۔ پڑھنے والوں کو گرنتھ شروع کرنے سے پہلے اُسے ضرور پڑھ لینا چاہئے ۔ ایسا کرنے سے کتاب کے پڑھنے میں کسی جگہ بھی اَروچی کا ڈر نہیں رہیگا ۔ یہ کتاب مراٹھی میں لکھی گئی ہے' گجراتی روپ اِسکا دیا جا چکا ہے اور ہندی میں اِس کو اس پستک مالا نے نکالا ہے ۔ اس کتاب میں کوسامبی جی نے جہاں آلوچنا کی ہے وہاں خاصی پینی کردی ہے ۔ اگر اتنی پینی نہ ہوتی تب بھی کام چل سکتا تھا ۔ پڑھنے والے اگر اس پینی آلوچنا سے اپنے آپ کو بچالینگے تو اس کتاب میں جو سچائی بھری پڑی ہے اُس کا پورا آنند لے سکینگے ۔

کوسامبی جی نے اس کتاب میں ہزاروں برس پہلے سے آج کے دن تک بھارتیہ سنسکرتی کے انیکوں روپوں کو بڑی گہرائی سے پڑھ سمجھ کر اپنی جو رائے قائم کی ہے وہ ایسی نہیں ہے جو یوں ہی اُڑادی جائے ۔ اُنہوں نے سنسکرتی کو پانچ حصوں میں بانٹا ہے—ایک ویدک' دو شرمن' تین پورانک' چار پاشچاتیہ' پانچ سنسکرتی اور اہنسا ۔ اور ان کا میل کچھ اس طرح بٹھایا ہے جسطرح آج تک کسی لیکھک نے نہ کیا ۔ اِسکے پڑھنے میں آنند تو آتا ہے پر یہ کہنے کے لئے کہ کوسامبی جی نے جو کچھ لکھا ہے وہی ٹھیک' اسکے لئے اتہاس کے بہت بڑے گیان کی ضرورت ہے اور اُتنے گیان کا دعوا ہم نہیں کر سکتے ۔ ہم تو اس کتاب کے بارے میں اتنا کہہ سکتے ہیں کہ آجکل جتنی ایسی کتابیں لکھی جاتی ہیں وہ یا تو اتہاس کو نگاہ میں رکھ کر یا وگیان کو نگاہ میں رکھکر یا دونوں کو ہی نگاہ میں رکھ کر ۔ اور یہ کتاب زیادہ تر اتہاس کو نگاہ میں رکھ کر لکھی گئی ہے اور اتہاس کے بارے میں کچھ ودوانوں کی یہ رائے ہے کہ وہ کبھی سچا نہیں ہوسکتا اور ہم بھی اِس رائے کے ہیں ۔ اس لئے ہمکو اِس کے سمجھنے میں تھوڑی مشکل ہوتی ہے ۔ ہوسکتا ہے یہی مشکل پاٹھکوں کو بھی ہو ۔

کچھ بھی صحیح کوسامبی جی نے اِس کتاب میں ایسے وچار دے دئے ہیں جن پر چنتن کرنے کے لئے جی مچل اُٹھتا ہے اور ایسی سامگری اکٹھی کردی ہے جس سے اس وشے پر لکھنے والے لیکھکوں کو بے حد مدد مل سکتی ہے ۔

کتاب بڑے کام کی ہے ۔ بھاشا بہت مشکل نہیں ہے ۔ لائبریریوں کے بڑے کام کی ہے اور لیکھکوں کے پاس تو یہ رہنی ہی چاہئے ۔

ہندو دھرم کی سمیکشا —

یہ اسی پستک مالا کا دوسرا پھول ہے ۔ یہ بھی اصل میں مراٹھی میں لکھی گئی ہے اور اس کے لیکھک ہیں ترک تیرتھ پنڈت لکشمن شاستری جوشی ۔ اس کا ہندی انوواد کیا ہے

कुछ किताबें

کچھ کتابیں

हेम चन्द्र पुस्तक माला—

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीरा बाग़, गिरगांव, बम्बई के मालिक श्री नाथूराम प्रेमी हिन्दी की अच्छी किताबें निकालने के लिये हिन्दुस्तान भर में मशहूर हैं. इस की एक वजह यह है कि वह ख़ुद एक बड़े ऊंचे दरजे के लेखक हैं. और दूसरी वजह यह है कि उनकी साहित्य की रुचि बड़ी ऊंची है. यह हेम चन्द्र मोदी पुस्तक माला उन्हों ने ही शुरू की है. हेम चन्द्र प्रेमीजी के एकलौते बेटे थे. वह भरी जवानी में उन्हें छोड़ कर चल बसे. प्रेमी जी ने उनकी याद में दुख में गलने की जगह यही ठीक समझा कि उस जवान की मन लगती चीज़ें ही छापकर सस्ते दामों में पढ़ने वालों तक पहुँचा दी जायं. इस के लिये उन्होंने दस हज़ार रुपया अलग कर दिया. और इस तरह से बेटे की जगह बाप ने बेटे का श्राद्ध किया. यादगार का यह क्या ही अच्छा तरीक़ा है.

इस पुस्तक माला की पांच किताबें हमें मिल चुकी हैं जिनके नाम हैं:

1. भारतीय संस्कृति और अहिंसा
2. हिन्दू धर्म की समीक्षा
3. जड़वाद
4. स्वतंत्र चिन्तन
5. नारी का मूल्य

इन में से स्वतंत्र चिन्तन और जड़वाद की आलोचना दिसम्बर सन '50 के 'नया हिन्द' में हो चुकी है. बाक़ी तीन की इसी अंक में दी जा रही हैं.

इस पुस्तक माला के सभी ग्रन्थ ऐसे हैं जो हर लायब्रेरी और हर घर में होना चाहियें.

भारतीय संस्कृति और अहिन्सा

यह हेम चन्द्र मोदी पुस्तक माला का पहला फूल है. इसके लेखक हैं स्वर्गीय धर्मानन्द कोसाम्बी. इसका दाम दो रुपया है. इस पुस्तक के शुरू में मशहूर पंडित सुखलाल

ھیم چندر پستک مالا—

ھندی گرنتھ رتناکر کاریالیہ' ھیرا باغ' گرگاؤں' بمبئی کے مالک شری ناتھورام پریمی ھندی کی اچھی کتابیں نکالنے کے لئے ھندستان بھر میں مشہور ھیں ۔ اِس کی ایک وجہ یہ ھے کہ وہ خود ایک بڑے اونچے درجے کے لیکھک ھیں ۔ اور دوسری وجہ یہ ھے کہ اُن کی ساھتیہ کی رچی بڑی اونچی ھے ۔ یہ ھیم چندر مودی پستک مالا اُنھوں نے ھی شروع کی ھے ۔ ھیم چندر پریمی جی کے اکلوتے بیٹے تھے ۔ وہ بھری جوانی میں اُنھیں چھوڑ کر چل بسے ۔ پریمی جی نے اُن کی یاد میں دکھ میں گلنے کی جگہ یہی ٹھیک سمجھا کہ اُس جوان کی من لگتی چیزیں ھی چھاپ کر سستے داموں میں پڑھنے والوں تک پہونچادی جائیں ۔ اِس کے لئے اُنھوں نے دس ھزار روپیہ الگ کر دیا ۔ اور اِس طرح سے بیٹے کی جگہ باپ نے بیٹے کا شرادھ کیا ۔ یادگار کا یہ کیا ھی اچھا طریقہ ھے ۔

اِس پستک مالا کی پانچ کتابیں ھمیں مل چکی ھیں جن کے نام ھیں :

1. بھارتیہ سنسکرتی اور اھنسا
2. ھندو دھرم کی سمیکشا
3. جڑ واد
4. سوتنتر چنتن
5. ناری کا مولیہ

اِن میں سے سوتنتر چنتن اور جڑواد کی آلوچنا دسمبر سن '50 کے 'نیا ھند' میں ھو چکی ھے ۔ باقی تین کی اسی انک میں دی جارھی ھیں ۔

اِس پستک مالا کے سبھی گرنتھ ایسے ھیں جو ھر لائبریری اور ھر گھر میں ھونا چاھئیں ۔

بھارتیہ سنسکرتی اور اھنسا

یہ ھیم چندر مودی پستک مالا کا پہلا پھول ھے ۔ اسکے لیکھک ھیں سورگیہ دھرمانند کوسامبی ۔ اِسکا دام دو روپیہ ھے ۔ اس پستک کے شروع میں مشہور پنڈت سکھ لال

की. मां ने कहा कि तू जो सुशीला की इतनी तारीफ़ करती है तो फिर तू भी उसकी तरह क्यों नहीं पढ़ना लिखना शुरू करती. कुशीला ने कहा कि मेरा मन तो पढ़ने लिखने में लगता नहीं है. मैं सुशीला की तरह किस तरह काम करूं. मां ने कहा कि जब सुशीला का मन लग जाता है तो तेरा क्यों नहीं लगता. उसी के पास तू भी जा कर बैठा कर और जिस तरह वह सब करती है उसी तरह तू भी करना शुरू कर दे. कुशीला ने कहा कि अच्छी बात है मैं आज शाम को सुशीला से पूछूंगी.

नोटः—सुशीला और कुशीला की कहानी का यह सिलसिला यहाँ ख़त्म हो जाता है, मगर आगे की एक चिट्ठी में इसका नतीजा यह निकला है कि सुशीला के अच्छे असर में आकर कुशीला ने भी अपना मन पढ़ने लिखने में लगाया और अपना हर काम ठीक वक़्त पर सलीक़े से करना और पढ़ना सीखा, और थोड़े ही दिनों में वह भी एक बहुत अच्छी लड़की बन गई.

کی ۔ ماں نے کہا کہ تو جو سوشیلا کی اتنی تعریف کرتی ہے تو پھر تو بھی اُسکی طرح کیوں نہیں پڑھنا لکھنا شروع کرتی، کوشیلا نے کہا کہ میرا من تو پڑھنے لکھنے میں لگتا نہیں ہے ۔ میں سوشیلا کی طرح کس طرح کام کروں ۔ ماں نے کہا کہ جب سوشیلا کا من لگ جاتا ہے تو تیرا کیوں نہیں لگتا ۔ اُسی کے پاس تو بھی جاکر بیٹھا کر اور جس طرح وہ سب کرتی ہے اُسی طرح تو بھی کرنا شروع کردے ۔ کوشیلا نے کہا کہ اچھی بات ہے میں آج شام کو سوشیلا سے پوچھونگی ۔

نوٹ:—سوشیلا اور کوشیلا کی کہانی کا یہ سلسلہ یہاں ختم ہوجاتا ہے، مگر آگے کی ایک چٹھی میں اس کا نتیجہ یہ نکلا ہے کہ سوشیلا کے اچھے اثر میں آکر کوشیلا نے بھی اپنا من پڑھنے لکھنے میں لگایا اور اپنا ہر کام ٹھیک وقت پر سلیقے سے کرنا اور پڑھنا سیکھا اور تھوڑے ہی دنوں میں وہ بھی ایک بہت اچھی لڑکی بن گئی ۔

भारत देस

(बहन सैयदा फ़रहत)

कितना अच्छा, कितना प्यारा
सुन्दर भारत देश हमारा
फूल हैं इसमें रंग बिरंगे
नीले, पीले, सब्ज़ और ऊदे

सब से है इस बाग़ की शोभा
बाग़ का जीवन, सबका एका
भारत माता सबकी मां है
सब में अटकी उसकी जाँ है

हिन्दू, मुसलिम, सिक्ख, ईसाई
उसके पूत, आपस के भाई
सब के सुख से उसको सुख है
कोई दुखी हो, उसको दुख है

भारत बाग़ की नन्ही कलियो
नन्हे मुन्ने, प्यारे बच्चो !
बाग़ को अपने ख़ूब सजाओ
अपनी ख़ुशबू से महकाओ

सब फूलों को अपनाओ तुम
प्रीत भरे नग़मे गाओ तुम

बाग़ की रक्षा फ़र्ज़ है तुम पर
देश की सेवा क़र्ज़ है तुम पर

(उरदू 'आजकल' से)

بھارت دیس

(بہن سیدہ فرحت)

کتنا اچھا، کتنا پیارا
سندر بھارت دیش ہمارا
پھول ہیں اس میں رنگ برنگے
نیلے، پیلے، سبز اور اودے

سب سے ہے اِس باغ کی شوبھا
باغ کا جیون، سب کا ایکا
بھارت ماتا سب کی ماں ہے
سب میں اٹکی اس کی جاں ہے

ہندو، مسلم، سکھ، عیسائی
اس کے پوت، آپس کے بھائی
سب کے سکھ سے اس کو سکھ ہے
کوئی دکھی ہو، اس کو دکھ ہے

بھارت باغ کی ننھی کلیو
ننھے منے، پیارے بچو!
باغ کو اپنے خوب سجاؤ
اپنی خوشبو سے مہکاؤ

سب پھولوں کو اپناؤ تم
پریت بھرے نغمے گاؤ تم

باغ کی رکشا فرض ہے تم پر
دیش کی سیوا قرض ہے تم پر

(اردو 'آج کل' سے)

किफ़ी बंगला

12-6-'06

राधे,

कल की चिट्ठी की तरह आज भी सुशीला कुशीला की बातें लिखी जाती हैं. सुशीला ने कहा कि बालों का गिनना तो आसान है क्योंकि उनको हर तरह से छू सकते हैं, तोल सकते हैं और एक एक अलग कर के गिन सकते हैं. मगर तारों को तो न छू सकते हैं न अलग अलग कर सकते हैं. फिर भी गिनने वालों ने जितने तारे आंख से दिखाई देते हैं उन को तो गिन ही लिया है. उनके अलावा जितने बड़ी से बड़ी दूरबीन से दिखाई देते हैं उनको भी गिन लिया है. और सिर्फ़ गिना ही नहीं है बल्कि हर एक तारे का नाम रख दिया है, और उनकी फ़ेहरिस्तें बना ली हैं और उनको पहचानने की तरकीबें निकाल ली हैं. कुशीला ने पूछा कि तारों को क्यों कर गिन सकते हैं. वह तो इतनी दूर हैं और जहां देखो वहां एक के ऊपर एक पास पास गुच्छे दिखाई देते हैं. सुशीला ने कहा अभी तो मैंने इतना पढ़ा नहीं है कि सब तरह के तारों को गिन लूँ और पहचान लूँ. मगर बड़े बड़े मशहूर मशहूर तारों का पहचानना तो कुछ भी मुशकिल नहीं है. यह जो तरह तरह की शकलें तारों की मैंने कल रात को तुम्हें दिखलाईं यह इसी वास्ते तो बनाई हैं कि जो जो तारे इन शकलों को बनाते हैं वह फ़ौरन पहचाने जा सकें. कुशीला ने पूछा कि अच्छा बताओ कि जितने तारे हमें आंख से दिखाई देते हैं वह कितने हैं. सुशीला ने कहा कि जितने तारे आंख से साफ़ दिखाई देते हैं वह तो सिर्फ़ तीन हज़ार हैं. और इन में से तीन सौ या चार सौ तारे ऐसे हैं कि जो उन शकलों के ज़रिये जो मैंने तुम्हें कल दिखलाईं, बड़ी आसानी से पहचाने जा सकते हैं. बाक़ियों का पहचानना ज़रा मुशकिल है. कुशीला ने कहा कि अरी सुशीला तुझे यह सब बातें क्यों कर और कहां से मालूम हो गईं. सुशीला ने कहा कि कुछ तो किताबों के पढ़ने से और कुछ अपने बड़े भाई से जो कालिज में पढ़ते हैं.

यह बातें हो ही रही थीं कि इतने में पांच बज गए. सुशीला ने कहा कि मेरे तो उठने का वक़्त हो गया. मैं तो अब नहाने धोने जाती हूँ, फिर पढ़ने लिखने का काम करूंगी. बेहतर है कि तुम भी इसी तरह करो. सब काम ठीक वक़्त पर करने चाहियें ताकि फ़ज़ूल वक़्त ज़ाया न हो. तुम मेरी उजली चादर अपने बिस्तरे में बांध कर ले जाओ. मैं तुम्हारी मैली चादर कल तक धुलवा दूंगी. फिर चादरें बदल लेंगे. यह कह कर सुशीला तो उठ कर चली गई और कुशीला अपना बिस्तर बांध कर अपने घर चली गई और अपनी मां से जाकर सुशीला की बड़ी तारीफ़

کِکری بنگلہ

12-6-'06.

رادھے،

کل کی چھٹی کی طرح آج بھی سوشیلا کوشیلا کی باتیں لکھی جاتی ہیں. سوشیلا نے کہا کہ بالوں کا گننا تو آسان ہے کیونکہ اُن کو ہر طرح سے چھو سکتے ہیں، تول سکتے ہیں اور ایک ایک الگ کرکے گن سکتے ہیں. مگر تاروں کو تو نہ چھو سکتے ہیں نہ الگ الگ کر سکتے ہیں. پھر بھی گننے والوں نے جتنے تارے آنکھ سے دکھائی دیتے ہیں اُن کو تو گن ہی لیا ہے. اُن کے علاوہ جتنے بڑی سے بڑی دوربین سے دکھائی دیتے ہیں اُن کو بھی گن لیا ہے. اور صرف گناهی نہیں ہے بلکہ ہر ایک تارے کا نام رکھ دیا ہے، اور اُن کی فہرستیں بنائی ہیں اور اُنکو پہچاننے کی ترکیبیں نکال لی ہیں. کوشیلا نے پوچھا کہ تاروں کو کیوں کر گن سکتے ہیں وہ تو اتنی دور ہیں اور جہاں دیکھو وہاں ایک کے اوپر ایک پاس پاس گچھے دکھائی دیتے ہیں. سوشیلا نے کہا ابھی تو میں نے اتنا پڑھا نہیں ہے کہ سب طرح کے تاروں کو گن لوں اور پہچان لوں. مگر بڑے بڑے مشہور مشہور تاروں کا پہچاننا تو کچھ بھی مشکل نہیں ہے. یہ جو طرح طرح کی شکلیں تاروں کی میں نے کل رات کو تمہیں دکھلائیں یہ اسی واسطے تو بنائی ہیں کہ جو جو تارے ان شکلوں کو بناتے ہیں وہ فوراً پہچانے جاسکیں. کوشیلا نے پوچھا کہ اچھا بتاؤ کہ جتنے تارے ہمیں آنکھ سے دکھائی دیتے ہیں وہ کتنے ہیں. سوشیلا نے کہا کہ جتنے تارے آنکھ سے صاف دکھائی دیتے ہیں وہ تو صرف تین ہزار ہیں. اور ان میں سے تین سو یا چار سو تارے ایسے ہیں کہ جو اُن شکلوں کے ذریعے جو میں نے کل تمہیں دکھلائیں، بڑی آسانی سے پہچانے جاسکتے ہیں. باقیوں کا پہچاننا ذرا مشکل ہے. کوشیلا نے کہا کہ اری سوشیلا تجھے یہ سب باتیں کیوں کر اور کہاں سے معلوم ہوئیں. سوشیلا نے کہا کہ کچھ تو کتابوں کے پڑھنے سے اور کچھ اپنے بڑے بھائی سے جو کالج میں پڑھتے ہیں.

یہ باتیں ہو ہی رہی تھیں کہ اتنے میں پانچ بج گئے. سوشیلا نے کہا کہ میرے تو اٹھنے کا وقت ہوگیا. میں تو اب نہانے دھونے جاتی ہوں، پھر پڑھنے لکھنے کا کام کرونگی. بہتر ہے کہ تم بھی اسی طرح کرو. سب کام ٹھیک وقت پر کرنے چاہئیں تاکہ فضول وقت ضائع نہ ہو. تم میری اُجلی چادر اپنے بستر میں باندھ کر لے جاؤ. میں تمہاری میلی چادر کل تک دھلوا دونگی. پھر چادریں بدل لینگے. یہ کہہ کر سوشیلا تو اُٹھ کر چلی گئی اور کوشیلا اپنا بستر باندھ کر اپنے گھر چلی گئی اور اپنی ماں سے جاکر سوشیلا کی بڑی تعریف

उसको ठीक ठीक पढ़ने और समझने से भगवान का हाल और उसकी मरज़ी मालूम होती है. इस वास्ते छोटी या बड़ी जो चीज़ भगवान की बनाई हुई हम को मिले या दिखाई दे उसका असल हाल मालूम करने की कोशिश करनी चाहिये.

कुशीला ने पूछा कि अच्छा यह जो तरह तरह की शकलें तारों की बनाई हैं इसका क्या फ़ायदा है. सुशीला ने कहा कि यह शकलें कोई असली थोड़ी हैं. यह तो सिर्फ़ तारों को पहचानने और गिनने में और उनको अलग अलग दूरबीन वग़ैरा से देखकर उनका हाल मालूम करने के वास्ते यों ही मुक़र्रर कर ली हैं. इसी वास्ते बाज़ी बाज़ी शकलें तो ठीक ठीक मिल जाती हैं और बाज़ी ठीक नहीं मिलतीं. मसलन बड़े कुत्ते के तो पैर भी मालूम होते हैं, पूंछ भी और कान भी. मगर छोटे कुत्ते का तो सिर्फ़ मुंह और पीठ ही पीठ दिखाई देती है. असल मतलब तो इनका सिर्फ़ यह है कि सारे तारे गिने और पहचाने जा सकें. कुशीला ने हैरान होकर कहा कि हैं! तारों को भी कोई गिन सकता है? यह तो इतने सारे हैं कि कोई सारी उमर गिने जाय तो भी ख़तम न हों. सिर के बाल और आसमान के तारे तो अनगिनत हैं, इनको क्यों कर कोई गिन सकता है. सुशीला ने कहा कि जो पढ़े न लिखे न सोचे न अक़ल को काम में लाए उसके लिये तो कोई काम भी आसान नहीं, सब मुशकिल मालूम होंगे. मगर जो भगवान की दी हुई अक़ल को काम में लाए और अच्छी अच्छी किताबें पढ़ कर जो कुछ उन में लिखा है उसकी बाबत ख़ूब सोचे वह मुशकिल से मुशकिल काम के लिये भी कुछ न कुछ तरीक़ा निकाल लेता है. देखो तुम्हें तो आसमान के तारे और सिर के बाल अनगिनत मालूम होते हैं लेकिन गिनने वालों ने दोनों को गिन लिया है और किताबों में लिख दिया है. सिर के बाल गिनने तो कुछ बहुत मुशकिल भी नहीं हैं. क्योंकि अगर किसी के बाल बिलकुल बराबर काट कर तोल लें और फिर जितने बाल एक रत्ती या एक माशे में हों उन को गिन लें तो फिर सारे बालों की गिनती मालूम हो जायगी. मसलन अगर किसी के सब बाल जो काटे गए आध पाव यानी दो छटांक वज़न में हों, और एक रत्ती में सौ बाल गिने जायं तो सारे बाल आध पाव की रत्तियां बना कर फिर सौ में ज़रब देने से निकल आयंगे. जैसे देखो आध पाव की दो छटांक और दो छटांक के 10 तोले और दस तोलों के 120 माशे और 120 माशों की 960 रत्तियां बनीं. इसलिये अगर एक एक रत्ती में सौ बाल होते हैं तो 960 रत्तियों में 960 × 100 यानी 96000 बाल कुल सिर पर हुए. कुशीला बड़ी अचरज में पड़ी कि अरे तू तो सिर के बाल भी गिन सकती है.

اسکو ٹھیک ٹھیک پڑھنے اور سمجھنے سے بھگوان کا حال اور اُس کی مرضی معلوم ہوتی ہے۔ اِس واسطے چھوٹی یا بڑی جو چیز بھگوان کی بنائی ہوئی ہم کو ملے یا دکھائی دے اُس کا اصل حال معلوم کرنے کی کوشش کرنی چاہئے۔

کوشیلا نے پوچھا کہ اچھا یہ جو طرح طرح کی شکلیں تاروں کی بنائی ہیں اِس کا کیا فائدہ ہے۔ سوشیلا نے کہا کہ یہ شکلیں کوئی اصلی تھوڑی ہیں۔ یہ تو صرف تاروں کو پہچاننے اور گننے میں اور اُن کو الگ الگ دوربین وغیرہ سے دیکھ کر اُن کا حال معلوم کرنے کے واسطے یوں ہی مقرر کرلی ہیں۔ اسی واسطے بعضی بعضی شکلیں تو ٹھیک ٹھیک مل جاتی ہیں اور بعضی ٹھیک نہیں ملتیں۔ مثلاً بڑے کتے کے تو پیر بھی معلوم ہوتے ہیں، پونچھ بھی اور کان بھی۔ مگر چھوٹے کتے کا تو صرف منہ اور پیٹھ ہی پیٹھ دکھائی دیتی ہے۔ اصل مطلب تو اِن کا صرف یہ ہے کہ سارے تارے گنے اور پہچانے جاسکیں۔ کوشیلا نے حیران ہوکر کہا کہ ہیں! تاروں کو بھی کوئی گن سکتا ہے؟ یہ تو اتنے سارے ہیں کہ کوئی ساری عمر گنے جائے تو بھی ختم نہ ہوں۔ سر کے بال اور آسمان کے تارے تو ان گنت ہیں، اِن کو کیونکر کوئی گن سکتا ہے۔ سوشیلا نے کہا کہ جو پڑھے نہ لکھے نہ سوچے نہ عقل کو کام میں لائے اُس کے لئے تو کوئی کام بھی آسان نہیں، سب مشکل معلوم ہونگے۔ مگر جو بھگوان کی دی ہوئی عقل کو کام میں لائے اور اچھی اچھی کتابیں پڑھ کر جو کچھ اُن میں لکھا ہے اُس کی بابت خوب سوچے وہ مشکل سے مشکل کام کے لئے بھی کچھ نہ کچھ طریقہ نکال لیتا ہے۔ دیکھو تمہیں تو آسمان کے تارے اور سر کے بال ان گنت معلوم ہوتے ہیں لیکن گننے والوں نے دونوں کو گن لیا ہے اور کتابوں میں لکھ دیا ہے۔ سر کے بال گننے تو کچھ بہت مشکل بھی نہیں ہیں۔ کیونکہ اگر کسی کے بال بالکل برابر کاٹ کر تول لیں اور پھر جتنے بال ایک رتی یا ایک ماشے میں ہوں اُن کو گن لیں تو پھر سارے بالوں کی گنتی معلوم ہو جائے گی۔ مثلاً اگر کسی کے سب بال جو کاٹے گئے آدھ پاؤ یعنی دو چھٹانک وزن میں ہوں اور ایک رتی میں سو بال گنے جائیں تو سارے بال آدھ پاؤ کی رتیاں بناکر پھر سو میں ضرب دینے سے نکل آئیں گے۔ جیسے دیکھو آدھ پاؤ کی دو چھٹانک اور دو چھٹانک کے 10 تولے اور دس تولوں کے 120 ماشے اور 120 ماشوں کی 960 رتیاں بنیں۔ اِس لئے اگر ایک ایک رتی میں سو بال ہوتے ہیں تو 960 رتیوں میں 100 × 960 یعنی 96000 بال کل سر پر ہوئے۔ کوشیلا بڑی اچنبے میں پڑی کہ اَرے تو تو سر کے بال بھی گن سکتی ہے۔

अपनी सब चादरों को संभाल कर रखो और जहाँ एक ज़रा भी मैली हो उसे फ़ौरन धुलने को देदो और धोबन जब कपड़े लाए तो ख़ूब अच्छी तरह देख कर लो और जो कपड़ा ख़राब धुला हुआ हो उसे फिर धोकर लाने के वास्ते वापस कर दो और उसकी धुलाई न दो, तो आप से आप कपड़े हमेशा उजले रहेंगे और अच्छे धुलने लगेंगे. मेरे पास तीन चादरें और भी धुली हुई रखी हैं, मैं एक तुम्हें लाकर देती हूँ और सुबह तुम्हारी मैली चादर को खड़े घाट अपनी धोबन से धुलवा दूंगी. फिर देखो तुम्हारी चादर भी ऐसी ही उजली हो जाती है कि नहीं. यह कह कर सुशीला ने कुशीला को एक उजली चादर ला दी और मैली चादर मैले कपड़ों में बाँध कर रख दी. फिर जब दोनों अपनी अपनी खाटों पर लेट गईं तो सुशीला ने कुशीला को तारों में बड़ा खटोला, छोटा खटोला, तारों का शेर, सांप और बिच्छू, समुन्दर का सांप, अजदहा, और कव्वा और प्याला यह सब दिखलाया, सफ़ेद और लाल दुनिया दिखलाई और यह भी बतलाया कि यह जो तारे दिखाई देते हैं इन में से जो लपक लपक नहीं करते वह तो दुनियाएं हैं और बाक़ी सब सूरज हैं.

सुबह दिन निकलने से एक घंटा पहले जो सुशीला की आँख खुली तो उस ने कुशीला को तारों का देव, साँड और बड़ा कुत्ता और छोटा कुत्ता दिखाया.

اپنی سب چادروں کو سنبھال کر رکھو اور جہاں ایک ذرا بھی میلی ہو اسے فوراً دھلنے کو دے دو اور دھوبن جب کپڑے لائے تو خوب اچھی طرح دیکھ کر لو اور جو کپڑا خراب دھلا ہوا ہو اُسے پھر دھو کر لانے کے واسطے واپس کر دو اور اُس کی دھلائی نہ دو، تو آپ سے آپ کپڑے ہمیشہ اُجلے رہیں گے اور اچھے دھلنے لگیں گے۔ میرے پاس تین چادریں اور بھی دھلی رکھی ہیں، میں ایک تمہیں لا کر دیتی ہوں اور صبح تمہاری میلی چادر کو کھڑے گھاٹ اپنی دھوبن سے دھلوا دونگی۔ پھر دیکھو تمہاری چادر بھی ایسی ہی اُجلی ہوجاتی ہے کہ نہیں۔ یہ کہہ کر سوشیلا نے کوشیلا کو ایک اُجلی چادر لا دی اور میلی چادر میلے کپڑوں میں باندھ کر رکھ دی۔ پھر جب دونوں اپنی اپنی کھاٹوں پر لیٹ گئیں تو سوشیلا نے کوشیلا کو تاروں میں بڑا کھٹولا، چھوٹا کھٹولا، تاروں کا شیر، سانپ اور بچھو، سمندر کا سانپ، اژدھا اور کوا اور پیالہ یہ سب دکھلایا، سفید اور لال دنیا دکھلائی اور یہ بھی بتلایا کہ یہ جو تارے دکھائی دیتے ہیں اِن میں سے جو لپک لپک نہیں کرتے وہ تو دنیائیں ہیں اور باقی سب سورج ہیں۔

صبح دن نکلنے سے ایک گھنٹہ پہلے جو سوشیلا کی آنکھ کھلی تو اُس نے کوشیلا کو تاروں کا دیو، سانڈ اور بڑا کتا اور چھوٹا کتا دکھایا۔

चेले वहान

11-6-'06

राधे,

कल भी सुशीला कुशीला का हाल लिखा था आज फिर वही.

कुशीला ने जब तारों का देव और कुत्ते और ख़रगोश और सांड और जहाज़ वग़ैरा सब देख लिये तो फिर उसने सुशीला से पूछा कि इन तारों को देखने और पहचानने से फ़ायदा क्या ? सुशीला ने कहा कि सब से बड़ा फ़ायदा तो यह है कि भगवान की बनाई हुई जितनी ज़ियादा चीज़ों को हम देखें, पहचानें और उनका सही सही हाल मालूम करें, उसी क़दर ज़ियादा हमें यह पता लगेगा कि परमेश्वर असल में कौन है, कैसा है, और उसकी क्या मरज़ी है. जिस तरह हम को किसी आदमी की बनाई हुई किताब को पढ़ने से मालूम हो जाता है कि वह आदमी कैसा है और उसका क्या मतलब और उसकी क्या राय है, उसी तरह भगवान की बड़ी भारी किताब, जो इस जगत की शकल में हमारे चारों तरफ़ फैली हुई है,

چیلے وہان

11-6-'06

رادھے،

کل بھی سوشیلا کوشیلا کا حال لکھا تھا آج پھر وہی۔

کوشیلا نے جب تاروں کا دیو اور کتے اور خرگوش اور سانڈ اور جہاز وغیرہ سب دیکھ لئے تو پھر اُس نے سوشیلا سے پوچھا کہ اِن تاروں کو دیکھنے اور پہچاننے سے فائدہ کیا؟ سوشیلا نے کہا کہ سب سے بڑا فائدہ تو یہ ہے کہ بھگوان کی بنائی ہوئی جتنی زیادہ چیزوں کو ہم دیکھیں، پہچانیں اور اُن کا سچی سچی حال معلوم کریں، اُسی قدر زیادہ ہمیں یہ پتہ لگے گا کہ پرمیشور اصل میں کون ہے، کیسا ہے اور اُس کی کیا مرضی ہے۔ جس طرح ہم کو کسی آدمی کی بنائی ہوئی کتاب کو پڑھنے سے معلوم ہو جاتا ہے کہ وہ آدمی کیسا ہے اور اُس کا کیا مطلب اور اُسکی کیا رائے ہے، اُسی طرح بھگوان کی بڑی بھاری کتاب، جو اِس جگت کی شکل میں ہمارے چاروں طرف پھیلی ہوئی ہے،

बच्चों की दुनिया

चेले वहान
10-6-'06.

राधे,

कुशीला का मन सुशीला में ऐसा लगा कि शाम हो गई और उसे घर जाने की याद ही न आई. सुशीला ने कहा कि अगर तुम रात को यहाँ ही सो जाओ तो मैं तुम्हें तारे दिखाऊँगी और उनसे जो तरह तरह की शकलें बनती हैं वह भी. कुशीला ने कहा अच्छा मैं अपने घर कह आऊँ फिर अभी आजाऊँगी. यह कह कर कुशीला ने अपनी माँ से जाकर कहा कि मैं तो आज सुशीला के घर सोऊँगी. माँ ने पूछा कि क्यों. कुशीला ने कहा कि सुशीला ने तो मुझे आज बड़ी अच्छी अच्छी बातें सुनाईं. मेरा मन करता है कि उसके पास ही बैठी रहूँ. माँ ने पूछा, क्या बातें सुशीला ने बताईं. कुशीला ने बताया कि दिन में तो पढ़ने लिखने की बातें बताती रही अब रात को तारे दिखलायगी. माँ ने पूछा तारों को देखने से क्या फ़ायदा है. कुशीला ने कहा मुझे तो खबर नहीं. यह भी सुशीला से पूछ लूंगी. माँ ने कहा अच्छी बात है अगर सुशीला के पास तेरा इतना मन लगता है तो वहां जाकर आज सो रह. बिस्तरा अपना ले जा.

कुशीला अपना बिस्तरा उठा सुशीला के यहाँ पहुँची. दोनों की खाटें छत पर बिछ गईं. सुशीला ने जो अपना बिस्तर बिछाया तो बड़ा उजला और साफ़ था. चादर बिलकुल सफ़ेद धुली हुई जिस में न गुजंलट थी न कोई धब्बा. मगर कुशीला ने जो अपना बिस्तरा खोला तो उस की चादर बिलकुल मैली और बदबूदार निकली. और सारे में गुँजलटें पड़ी हुई. सुशीला ने कहा कि अरे कैसी मैली चादर है, तुम ऐसी खराब चादर पर खबर नहीं कैसे सोती हो. तुम ने इसे धुलवाया क्यों नहीं. कुशीला ने कहा कि हम तो अक्सर ऐसे ही बिस्तरों पर सोया करती हैं और मेरी माँ की चादर भी ऐसी ही मैली कुचैली है. खबर नहीं सुशीला तेरी चादर ऐसी उजली क्यों कर रहती है. हमारी तो जब धोबन भी धोकर लाती है तब भी ऐसी नहीं होती. सुशीला ने कहा यह तो खबर रखने की बात है. अगर

بچوں کی دنیا

چیلے وہان
10–6–'06

رادھے،

کوشیلا کا من سوشیلا میں ایسا لگا کہ شام ہوگئی اور اسے گھر جانے کی یاد ہی نہ آئی۔ سوشیلا نے کہا کہ اگر تم رات کو یہاں ہی سوجاؤ تو میں تمہیں تارے دکھاؤں گی اور ان سے جو طرح طرح کی شکلیں بنتی ہیں وہ بھی۔ کوشیلا نے کہا اچھا میں اپنے گھر کہہ آؤں پھر ابھی آجاؤں گی۔ یہ کہکر کوشیلا نے اپنی ماں سے جا کر کہا کہ میں تو آج سوشیلا کے گھر سوؤنگی۔ ماں نے پوچھا کہ کیوں۔ کوشیلا نے کہا کہ سوشیلا نے تو مجھے آج بڑی اچھی اچھی باتیں سنائیں۔ میرا من کرتا ہے کہ اس کے پاس ہی بیٹھی رہوں۔ ماں نے پوچھا، کیا باتیں سوشیلا نے بتائیں۔ کوشیلا نے بتایا کہ دن میں تو پڑھنے لکھنے کی باتیں بتاتی رہی اب رات کو تارے دکھلائے گی۔ ماں نے پوچھا تاروں کو دیکھنے سے کیا فائدہ ہے۔ کوشیلا نے کہا مجھے تو خبر نہیں۔ یہ بھی سوشیلا سے پوچھ لونگی۔ ماں نے کہا اچھی بات ہے اگر سوشیلا کے پاس تیرا اتنا من لگتا ہے تو وہاں جاکر آج سو رہ۔ بستر اپنا لے جا۔

کوشیلا اپنا بستر اٹھا سوشیلا کے یہاں پہونچی۔ دونوں کی کھاٹیں چھت پر بچھ گئیں۔ سوشیلا نے جو اپنا بستر بچھایا تو بڑا اُجلا اور صاف تھا۔ چادر بالکل سفید دھلی ہوئی جس میں نہ گنجلٹ تھی نہ کوئی دھبہ۔ مگر کوشیلا نے جو اپنا بستر کھولا تو اس کی چادر بالکل میلی اور بدبو دار نکلی۔ اور سارے میں گنجلٹیں پڑی ہوئیں۔ سوشیلا نے کہا ارے کیسی میلی چادر ہے، تم ایسی خراب چادر پر خبر نہیں کیسے سوتی ہو۔ تم نے اسے دھلوایا کیوں نہیں۔ کوشیلا نے کہا کہ ہم تو اکثر ایسے ہی بستروں پر سویا کرتی ہیں اور میری ماں کی چادر بھی ایسی ہی میلی کچیلی ہے۔ خبر نہیں سوشیلا تیری چادر ایسی اُجلی کیونکر رہتی ہے۔ ہماری تو جب دھوبن بھی دھوکر لاتی ہے تب بھی ایسی نہیں ہوتی۔ سوشیلا نے کہا یہ تو خبر رکھنے کی بات ہے۔ اگر

आशा की जाती है कि वह अपनी पूरी शक्ति भर रचनात्मक प्रोग्राम के काम को बढ़ाएंगे. पर वह सर्व सेवा संघ के नुमाइन्दे होने का दावा नहीं कर सकेंगे.

सचमुच थोड़े से योग्य रचनात्मक काम करने वालों का अपने निजी 'आज़ाद' ढंग से या किसी राजकाजी पारटी के मेम्बरों की हैसियत से राजकाज में हिस्सा लेना खुद रचनात्मक प्रोग्राम के हित में अच्छा हो सकता है. ऐसे मौक़े भी आ सकते हैं जब हर रचनात्मक काम करने वाले को रचनात्मक काम के अन्दर अपनी बुनियादी श्रद्धा की रक्षा के लिये राजकाजी आन्दोलन में कूदना पड़े. लेकिन यह सवाल इस समय पैदा नहीं होता.

(6) इन हालतों में सर्व सेवा संघ के लिये एक राजकाजी पारटी की तरह काम करना ठीक नहीं है. लेकिन संघ चाहता है कि वे रचनात्मक काम करने वाले जो किसी राजकाजी संगठन के मेम्बर हैं अपनी पारटियों पर इस बात के लिये ज़ोर डालें कि केवल इस तरह के लोग ही खड़े किये जावें जो बेग़रज़ हों, योग्य हों और जो पैसे के या किसी और तरह के बेजा असर में न आ सकें. केवल इसी तरह हम अपनी धारा सभाओं के मेम्बरों के और उन लोगों के जो देश के अच्छे शासन के लिये ज़िम्मेवार हैं नैतिक-यानी इख़लाक़ी स्तर को ऊँचा कर सकते हैं. वोटरों को आम तौर पर संघ की सलाह यह है कि उन्हें किसी ऐसे उम्मेदवार को वोट देने से इनकार कर देना चाहिये जिसकी पबलिक ज़िन्दगी, उनकी राय में, उतनी पवित्र नहीं है जितनी होनी ज़रूरी है, चाहे वह उम्मेदवार किसी ऐसी पारटी की तरफ़ से भी क्यों न खड़ा किया गया हो जिस पारटी की तरफ़ उस वोटर का निजी झुकाव है. उन्हें यह भी याद रखना चाहिये कि किसी ऐसे उम्मेदवार को वोट देने का, जो फ़िरक़ेवाराना विचार का है या जो अपना मक़सद पूरा करने के लिये हिन्सा के तरीक़ों को काम में लाने में विश्वास रखता है, सवाल ही नहीं उठ सकता क्यों कि यह बातें 'सर्वोदय' के असूलों के बिलकुल ख़िलाफ़ हैं.

آشا کی جاتی ہے کہ وہ اپنی پوری شکتی بھر رچناتمک پروگرام کے کام کو بڑھائینگے۔ پر وہ سرو سیوا سنگھ کے نمائندے ہونے کا دعوا نہیں کر سکینگے ۔

سچ مچ تھوڑے سے یوگیہ رچناتمک کام کرنے والوں کا اپنے نجی ' آزاد ' ڈھنگ سے یا کسی راج کاجی پارٹی کے ممبروں کی حیثیت سے راج کاج میں حصہ لینا خود رچناتمک پروگرام کے ہت میں اچھا ہوسکتا ہے ۔ ایسے موقعے بھی آسکتے ہیں جب ہر رچناتمک کام کرنے والے کو رچناتمک کام کے اندر اپنی بنیادی شردھا کی رکشا کے لئے راج کاجی آندولن میں کودنا پڑے ۔ لیکن یہ سوال اس سمے پیدا نہیں ہوتا ۔

(6) ان حالتوں میں سرو سیوا سنگھ کے لئے ایک راج کاجی پارٹی کی طرح کام کرنا ٹھیک نہیں ہے ۔ لیکن سنگھ چاہتا ہے کہ وہ رچناتمک کام کرنے والے جو کسی راج کاجی سنگٹھن کے ممبر ہیں اپنی پارٹیوں پر اس بات کے لئے زور ڈالیں کہ کیول اس طرح کے لوگ ہی کھڑے کئے جاویں جو بے غرض ہوں' یوگیہ ہوں اور جو پیسے کے یا کسی اور طرح کے بیجا اثر میں نہ آسکیں. کیول اسی طرح ہم اپنی دھارا سبھاؤں کے ممبروں کے اور اُن لوگوں کے جو دیش کے اچھے شاسن کے لئے ذمےوار ہیں نیتک یعنی اخلاقی استر کو اونچا کر سکتے ہیں ۔ ووٹروں کو عام طور پر سنگھ کی صلاح یہ ہے کہ انہیں کسی ایسے اُمیدوار کو ووٹ دینے سے انکار کر دینا چاہئے جسکی پبلک زندگی' اُن کی رائے میں' اُتنی پوتر نہیں ہے جتنی ہونی ضروری ہے' چاہے وہ اُمیدوار کسی ایسی پارٹی کی طرف سے بھی کیوں نہ کھڑا کیا گیا ہو جس پارٹی کی طرف اس ووٹر کا نجی جھکاؤ ہے ۔ اُنہیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ کسی ایسے اُمیدوار کو ووٹ دینے کا' جو فرقہ وارانہ وچار کا ہے یا جو اپنا مقصد پورا کرنے کے لئے ہنسا کے طریقوں کو کام میں لانے میں وشواس رکھتا ہے' سوال ہی نہیں اُٹھ سکتا کیونکہ یہ باتیں ' سروودے ' کے اصولوں کے بالکل خلاف ہیں ۔

प्रेम कुछ नहीं मांगता. बल्कि कुछ न कुछ देता रहता है. प्रेम दुख सहता है कभी नाराज़ नहीं होता और न कभी बदला लेता है. जहाँ प्रेम है, वहां भगवान भी है.

—महात्मा गांधी

پریم کچھ نہیں مانگتا بلکہ کچھ نہ کچھ دیتا رہتا ہے۔ پریم دکھ سہتا ہے' کبھی ناراض نہیں ہوتا اور نہ کبھی بدلہ لیتا ہے۔ جہاں پریم ہے' وہاں بھگوان بھی ہے ۔

— مہاتما گاندھی

---

(4) फिर भी यह ध्यान में रखना ज़रूरी है कि आजकल की हालत में धारा सभाओं और सरकारों का असर जनता की ज़िन्दगी पर हर तरफ़ से पड़ता है और हर जगह और हर स्तर पर धारा सभाएं और सरकारें राष्ट्र की नई रचना को रूप देती हैं. ऐसी हालत में उन पारटियों की सरकारें, जिन्हें ऐसे राजकाजी, समाजी और माली ढाँचे में विश्वास है जिससे 'सर्वोदय' का आदर्श पूरा करने में मदद नहीं मिल सकती, रचनात्मक प्रोग्राम को पूरा करने में खुद बड़ी रुकावट बन जाती हैं और नई नई रुकावटें खड़ी कर देती हैं. इसलिये जब कि रचनात्मक काम करने वालों को अपना काम बेरोक करते रहना चाहिये, उन्हें समझ बूझ के साथ राजकाज में और देश के ठीक ठीक शासन में दिलचस्पी लेने को भी अपनी चौतरफ़ा रचनात्मक सेवा यानी समग्र सेवा का ही एक हिस्सा समझना चाहिये. इसके लिये वोटरों को इस तरह की तालीम देना उनका फ़र्ज़ है जिससे वह अपने वोट की पवित्रता और उसकी शक्ति को समझने लगें और सोच समझ कर और निस्वार्थ ढंग से अपने वोट का इस तरह इस्तेमाल करना सीखें जिससे आम जनता का भला हो और पबलिक ज़िन्दगी में पवित्रता आवे. इसका यह मतलब नहीं है कि हर रचनात्मक काम करने वाला किसी न किसी राजकाजी पारटी का मेम्बर ही हो. असल में अधिक अच्छा यही है कि ज़्यादातर रचनात्मक काम करने वाले किसी भी राजकाजी पारटी के मेम्बर न हों.

(5) इस सवाल पर कि सर्व सेवा संघ के मेम्बरों को राजकाज, चुनाव वग़ैरा में अमली हिस्सा लेना चाहिये या नहीं या खुद उम्मीदवार होना चाहिये या नहीं, संघ अपने 11 और 12 अक्तूबर 1950 के ठहराव की फिर से तसदीक़ करता है. वह ठहराव यह है—

"सर्व सेवा संघ के ओहदेदार और पूरा वक़्त देने वाले कार्य कर्त्ता, चाहे वह तनख़ाह लेते हों या न लेते हों, किसी राजकाजी संगठन में या किसी गवरमेन्ट या लोकल गवरमेन्ट में किसी चुनाव के ओहदे के लिये उम्मेदवार नहीं होंगे, और अगर बिना किसी तरह के विरोध के भी वह इस तरह की किसी जगह के लिये चुन लिये जावें तब भी वह उसे मंज़ूर नहीं करेंगे. वह किसी चुनाव आन्दोलन में अमली हिस्सा नहीं लेंगे."

ज़ाहिर है कि ऊपर की रोक उन मेम्बरों के लिये नहीं है जो संघ के ओहदेदार या पूरा वक़्त देने वाले कार्यकर्त्ता नहीं हैं. ऐसे मेम्बर अगर उनका सम्बन्ध किसी ख़ास रचनात्मक संस्था से है तो उसके नियमों के मातहत रहते हुए, अपनी निजी हैसियत से, जिस तरह वह ठीक समझें राजकाज में हिस्सा लेने के लिये आज़ाद हैं. उनसे यह

(4) پھر بھی یہ دھیان میں رکھنا ضروری ہے کہ آج کل کی حالت میں دھارا سبھاؤں اور سرکاروں کا اثر جنتا کی زندگی پر ہر طرف سے پڑتا ہے اور ہر جگہ اور ہر استر پر دھارا سبھائیں اور سرکاریں راشٹر کی نئی رچنا کو روپ دیتی ہیں۔ ایسی حالت میں اُن پارٹیوں کی سرکاریں' جنہیں ایسے راج کاجی' سماجی اور مالی ڈھانچے میں وشواس ہے جس سے 'سروودے' کا آدرش پورا کرنے میں مدد نہیں مل سکتی' رچناتمک پروگرام کو پورا کرنے میں خود بڑی رکاوٹ بن جاتی ہیں اور نئی نئی رکاوٹیں کھڑی کر دیتی ہیں۔ اس لئے جب کہ رچناتمک کام کرنے والوں کو اپنا کام بے روک کرتے رہنا چاہئے' انہیں سمجھ بوجھ کے ساتھ راج کاج میں اور دیش کے ٹھیک ٹھیک شاسن میں دلچسپی لینے کو بھی اپنی چوطرفہ رچناتمک سیوا یعنی سمگر سیوا کا ہی ایک حصہ سمجھنا چاہئے۔ اس کے لئے ووٹروں کو اس طرح کی تعلیم دینا ان کا فرض ہے جس سے وہ اپنے ووٹ کی پوترتا اور اُسکی شکتی کو سمجھنے لگیں اور سوچ سمجھ کر اور نسوارتھ ڈھنگ سے اپنے ووٹ کا اس طرح استعمال کرنا سیکھیں جس سے عام جنتا کا بھلا ہو اور پبلک زندگی میں پوترتا آوے۔ اس کا یہ مطلب نہیں ہے کہ ہر رچناتمک کام کرنے والا کسی نہ کسی راج کاجی پارٹی کا ممبر ہی ہو۔ اصل میں ادھک اچھا یہی ہے کہ زیادہ تر رچناتمک کام کرنے والے کسی بھی راج کاجی پارٹی کے ممبر نہ ہوں۔

(5) اس سوال پر کہ سرو سیوا سنگھ کے ممبروں کو راج کاج' چناؤ وغیرہ میں عملی حصہ لینا چاہئے یا نہیں یا خود اُمیدوار ہونا چاہئے یا نہیں' سنگھ اپنے 11 اور 12 اکتوبر 1950 کے ٹھہراؤ کی پھر سے تصدیق کرتا ہے۔ وہ ٹھہراؤ یہ ہے—

"سرو سیوا سنگھ کے عہدے دار اور پورا وقت دینے والے کاریہ کرتا' چاہے وہ تنخواہ لیتے ہوں یا نہ لیتے ہوں' کسی راج کاجی سنگٹھن میں یا کسی گورمینٹ یا لوکل گورمینٹ میں کسی چناؤ کے عہدے کے لئے اُمیدوار نہیں ہوں گے' اور اگر بنا کسی طرح کے ورودھ کے بھی وہ اس طرح کی کسی جگہ کے لئے چن لئے جاویں تب بھی وہ اُسے منظور نہیں کرینگے۔ وہ کسی چناؤ آندولن میں عملی حصہ نہیں لینگے۔"

ظاہر ہے کہ اوپر کی روک اُن ممبروں کے لئے نہیں ہے جو سنگھ کے عہدے دار یا پورا وقت دینے والے کاریہ کرتا نہیں ہیں۔ ایسے ممبر اگر اُن کا سمبندھ کسی خاص رچناتمک سنستھا سے ہے تو اُس کے نیموں کے ماتحت رہتے ہوئے' اپنی نجی حیثیت سے' جس طرح وہ ٹھیک سمجھیں راج کاج میں حصہ لینے کے لئے آزاد ہیں۔ اُن سے یہ

'सर्वोदय' से

आने वाले चुनाव के बारे में

(रचनात्मक या तामीरी काम करने वालों और वोटरों को हिदायत)

29 जुलाई सन 1951 को वर्धा में सर्व सेवा संघ की एक बैठक हुई थी जिसमें आने वाले चुनाव के बारे में नीचे लिखा ठहराव पास हुआ :—

चूँकि सब रचनात्मक कामों का आखिरी मंशा 'सर्वोदय' यानी एक ऐसा समाज क़ायम करना है जिसमें कोई दूसरे से बेजा फ़ायदा न उठावे और जिसकी बुनियाद सचाई, अहिन्सा और सबके भले पर हो, और

चूँकि आने वाले चुनावों को निगाह में रखते हुए अलग अलग राजकाजी पारटियों की तरफ़ से प्रोग्राम और एलान निकल रहे हैं जिनमें एक दूसरे से बहुत फ़रक़ नहीं है और जो एक दरजे तक सर्वोदय की भाशा काम में लाते हैं, और

चूँकि बहुत से रचनात्मक काम करने वाले सर्व सेवा संघ से इस बारे में साफ़ साफ़ हिदायत चाहते हैं,

इसलिये इस मौक़े पर सर्व सेवा संघ इन मामलों पर नीचे लिखे मुताबिक़ अपने विचार और अपनी पालिसी ज़ाहिर करता है :

(1) सर्व सेवा संघ राजकाजी पारटियों के इन प्रोग्रामों और एलानों में से किसी को भी 'सर्वोदय' के क़ायम करने के लिये काफ़ी नहीं पाता. सर्व सेवा संघ को यह भी विश्वास नहीं होता कि यह पारटियाँ ताक़त हासिल कर लेने पर इन प्रोग्रामों पर भी पूरी तरह और असरदार ढंग से अमल करेंगी, इसलिये यह संघ आज की राजकाजी पारटियों में से किसी को भी अपनाने के लिये तैयार नहीं है.

(2) संघ को यक़ीन है कि राजसत्ता से बिलकुल अलग रहते हुए और वोटरों की शुद्ध और निस्वार्थ सेवा में अपने को लगाए रखते हुए देश में राजकाजी शक्ति पैदा की जा सकती है और वोटरों पर इस तरह का असर डाला जा सकता है और उनकी इस तरह रहनुमाई की जा सकती है कि वह ठीक तरह के आदमियों को ही चुन कर सत्ता की जगहों में भेजें.

(3) रचनात्मक काम करने वाले हकूमत चलाने की सीधी ज़िम्मेदारी अपने हाथ में लें. यह सवाल तभी पैदा होगा जब लोग खुद इस बात को महसूस करें और कहें कि वह चाहते हैं कि रचनात्मक काम करने वाले ही हकूमत अपने हाथ में लें और दूसरा कोई न ले. पर यह अभी भविष्य की बात है.

'سروودے' سے

آنے والے چناؤ کے بارے میں

(رچناتمک یا تعمیری کام کرنے والوں اور ووٹروں کو ہدایت)

29 جولائی سن 1951 کو وردھا میں سرو سیوا سنگھ کی ایک بیٹھک ہوئی تھی جس میں آنے والے چناؤ کے بارے میں نیچے لکھا ٹھہراو پاس ہوا :—

چونکہ سب رچناتمک کاموں کا آخری منشا 'سروودے' یعنی ایک ایسا سماج قائم کرنا ہے جس میں کوئی دوسرے سے بیجا فائدہ نہ اٹھاوے اور جس کی بنیاد سچائی' اہنسا اور سب کے بھلے پر ہو' اور

چونکہ آنے والے چناؤوں کو نگاہ میں رکھتے ہوئے الگ الگ راج کاجی پارٹیوں کی طرف سے پروگرام اور اعلان نکل رہے ہیں جن میں ایک دوسرے سے بہت فرق نہیں ہے اور جو ایک درجے تک سروودے کی بھاشا کام میں لاتے ہیں' اور

چونکہ بہت سے رچناتمک کام کرنے والے سرو سیوا سنگھ سے اس بارے میں صاف صاف ہدایت چاہتے ہیں'

اس لئے اس موقعے پر سرو سیوا سنگھ ان معاملوں پر نیچے لکھے مطابق اپنے وچار اور اپنی پالیسی ظاہر کرتا ہے :

(1) سرو سیوا سنگھ راج کاجی پارٹیوں کے ان پروگراموں اور اعلانوں میں سے کسی کو بھی 'سروودے' کے قائم کرنے کے لئے کافی نہیں پاتا . سرو سیوا سنگھ کو یہ بھی وشواس نہیں ہوتا کہ یہ پارٹیاں طاقت حاصل کر لینے پر ان پروگراموں پر بھی پوری طرح اور اثردار ڈھنگ سے عمل کرینگی' اس لئے یہ سنگھ آج کی راج کاجی پارٹیوں میں سے کسی کو بھی اپنانے کے لئے تیار نہیں ہے .

(2) سنگھ کو یقین ہے کہ راج سَتّا سے بالکل الگ رہتے ہوئے اور ووٹروں کی شدھ اور نسوارتھ سیوا میں اپنے کو لگائے رکھتے ہوئے دیش میں راج کاجی شکتی پیدا کی جا سکتی ہے اور ووٹروں پر اس طرح کا اثر ڈالا جا سکتا ہے اور اُن کی اس طرح رہنمائی کی جا سکتی ہے کہ وہ ٹھیک طرح کے آدمیوں کو ہی چن کر سَتّا کی جگہوں میں بھیجیں .

(3) رچناتمک کام کرنے والے حکومت چلانے کی سیدھی ذمہ داری اپنے ہاتھ میں لیں . یہ سوال تبھی پیدا ہوگا جب لوگ خود اس بات کو محسوس کریں اور کہیں کہ وہ چاہتے ہیں کہ رچناتمک کام کرنے والے ہی حکومت اپنے ہاتھ میں لیں اور دوسرا کوئی نہ لے . پر یہ ابھی بھوشیہ کی بات ہے .

को मीटिंग करके ओहदेदारों का चुनाव कर लिया जाय. दूसरे इतवार को पास के एक गाँव में सब लोग अपने चरखे साथ ले जाकर कताई करें. लेकिन इस सभा में जो सबसे अहम फ़ैसला हुआ वह यह था कि मन्डल के मेम्बर किसी चुनाव में हिस्सा न लेंगे चाहे वह म्युनिसिपल बोर्ड का हो या डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का, सूबे की असम्बली का हो या सेन्ट्रल असम्बली का. कांगरेस की दलबन्दियों से भी दूर रहेंगे.

आख़िर में सदर साहब ने सब को धन्यवाद दिया फिर मिठाई और नमकीन मंगाकर सब लोगों को जलपान कराया गया और सब लोग अपने अपने घर चल दिये.

दूसरे दिन अख़बार में ख़बर छपी कि गांधी लोकसेवा मन्डल के नाम से शहर में एक संस्था बनी है जो गांधी जी के मिशन को आगे चलाएगी.

फिर सनीचर के अख़बार में ख़बर छपी कि इतवार को मन्डल की मीटिंग होगी सब मेम्बरों से हाजिर होने की प्रार्थना की जाती है. जगह वही पुरानी थी जहाँ पहली मीटिंग हुई थी.

सोमवार के अख़बार में छपा कि मन्डल के सदर वही सज्जन चुने गए जिन के घर पर मीटिंग थी. सेक्रेटरी वह नौजवान चुने गए जिन्हों ने साम्प्रदायिकता का विरोध किया था. साथ ही अगले इतवार का प्रोग्राम छपा था कि शहर के नज़दीक गाँव में कताई होगी.

दूसरे सोमवार को अख़बार में ख़बर आई कि मन्डल की सभा में अधिक लोग न जा सके क्योंकि उस दिन शहर के एक ख़ास रईस की मौत हो गई थी.

तीसरे सोमवार को मन्डल की कोई ख़बर अख़बार में न छपी.

चौथा सोमवार भी ख़ाली गया.

पाँचवें सोमवार को एक ख़ास ख़बर छपी—

"मन्डल के सदर शहर कांगरेस कमेटी के चुनाव में अपने विरोधी को तीन वोटों से हरा कर शहर कांगरेस कमेटी के सदर चुन लिये गए. दोनों पारटियों में बड़ा सख़्त मुक़ाबला हुआ लेकिन विरोधी दल की सारी कोशिशें असफल रहीं.''

और उसके दो दिन बाद यह ख़बर आईकि उन दोनों नौजवानों ने, जिन्होंने साम्प्रदायिकता का विरोध किया था, और जिन में से एक मंडल के सेक्रेटरी चुने गए थे, कांगरेस से इस्तीफ़ा दे दिया.

کو میٹنگ کرکے عہدیداروں کا چناؤ کرلیا جائے . دوسرے اتوارکو پاس کے ایک گاؤں میں سب لوگ اپنے چرخے ساتھ لیجاکر کتائی کریں . لیکن اس سبھا میں جو سب سے اہم فیصلہ ہوا وہ یہ تھا کہ منڈل کے ممبر کسی چناؤ میں حصہ نہ لیں گے چاہے وہ میونسپل بورڈ کا ہو یا ڈسٹرکٹ بورڈ کا صوبے کی اسمبلی کا ہو یا سنٹرل اسمبلی کا . کانگریس کی دلبندیوں سے بھی دور رہیں گے .

آخر میں صدر صاحب نے سب کو دھنیہ واد دیا پھر مٹھائی اور نمکین منگا کر سب لوگوں کو جلپان کرایا گیا اور سب لوگ اپنے اپنے گھر چلدیئے .

دوسرے دن اخبار میں خبر چھپی کہ گاندھی لوک سیوا منڈل کے نام سے شہر میں ایک سنستھا بنی ہے جو گاندھی جی کے مشن کو آگے چلائے گی .

پھر سنیچر کے اخبار میں خبر چھپی کہ اتوار کو منڈل کی میٹنگ ہوگی سب ممبروں سے حاضر ہونے کی پرارتھنا کی جاتی ہے . جگہ وہی پرانی تھی جہاں پہلی میٹنگ ہوئی تھی .

سوموار کے اخبار میں چھپا کہ منڈل کے صدر وہی سجن چنے گئے جن کے گھر پر میٹنگ تھی . سکریٹری وہ نوجوان چنے گئے جنھوں نے سامپردایکتا کا ورودھ کیا تھا . ساتھ ہی اگلے اتوار کا پروگرام چھپا تھا کہ شہر کے نزدیک گاؤں میں کتائی ہوگی .

دوسرے سوموار کو اخبار میں خبر آئی کہ منڈل کی سبھا میں ادھک لوگ نہ جاسکے کیونکہ اس دن شہر کے ایک خاص رئیس کی موت ہوگئی تھی .

تیسرے سوموار کو منڈل کی کوئی خبر اخبار میں نہ چھپی .

چوتھا سوموار بھی خالی گیا .

پانچویں سوموار کو ایک خاص خبر چھپی—

''منڈل کے صدر شہر کانگریس کمیٹی کے چناؤ میں اپنے ورودھی کو تین ووٹوں سے ہرا کر شہر کانگریس کمیٹی کے صدر چن لئے گئے . دونوں پارٹیوں میں بڑا سخت مقابلہ ہوا لیکن ورودھی دل کی ساری کوششیں اسپھل رہیں .“

اور اسکے دو دن بعد یہ خبر آئی کہ ان دونوں نوجوانوں نے جنھوں نے سامپردایکتا کا ورودھ کیا تھا، اور جنمیں سے ایک منڈل کے سکریٹری چنے گئے تھے، کانگریس سے استعفیٰ دے دیا .

मेम्बर इकट्ठा होकर देहातों में जाया करें और वहीं सभा करके अगले इतवार का प्रोग्राम बना लिया करें.

सरदार जी ने कहा—"लेकिन सिर्फ सभा करने से तो काम नहीं चलेगा हमें कोई तामीरी काम भी करना चाहिये."

एक सज्जन ने कहा—"हमें चाहिये कि हम हरिजनों की बस्तियों में जाकर उनका सुधार करें."

सरदार जी ने कहा—"लेकिन हरिजनों में जाकर हमें खाली लेकचर नहीं देना चाहिये. हमें चाहिये कि हम अपने साथ अपनी औरतों को भी ले चलें. जो हरिजन बहनों में काम करें. हमें अपने साथ झाड़ू ले चलना चाहिये, जिससे कि हम उनकी बस्ती की सफाई करके उन्हें सफाई से रहना बता सकें. हमें अपने साथ साबुन और तेल भी ले चलना होगा. हम हरिजन बच्चों को नहलाएंगे, उनके सर में तेल लगाएंगे और उनके कपड़े धोकर उन्हें सिखाएँगे कि इस तरह बच्चों को साफ़ रखना चाहिये. हमारी औरतें यही काम हरिजन औरतों में करेंगी."

सरदार जी के समर्थन में केवल सदर साहब बोले—"सरदार जी ठीक कहते हैं."

बाक़ी सब लोग ख़ामोश रहे.

फिर साम्प्रदायिकता विरोधी नौजवान ने कहा—"हमें मुसलमानों के मुहल्ले में चलकर एकता के लिये काम करना चाहिये."

सरदार जी ने कहा—"एकता के लिये आज मुसलमानों से ज़ियादा हिन्दुओं में काम करने की ज़रूरत है. पाकिस्तान बनने और बापू के शहीद होने से मुसलमानों की फ़िरक़ा परस्ती बिलकुल ख़त्म हो गई है. अब हिन्दुओं की फ़िरक़ा परस्ती ख़त्म करनी है. मैं यह नहीं कहता कि मुसलमानों में हमें न जाना चाहिये पर आप जानते हैं कि अभी दो महीने पहले हमारे शहर में मुसलमानों को कितना नुक़सान पहुँचा है. जिन मुसलमानों की दुकानें जलाई गईं हैं उनमें बहुत से ऐसे हैं जिनकी सारी पूँजी ख़त्म हो गई है. उनके पास जाने से पहले हमें हिन्दुओं के पास जाना चाहिये. प्रायश्चित के रूप में हमें उनसे चन्दा लेकर रुपया इकट्ठा करना चाहिये. जब हम रुपए जमा कर लें तब हम ऐसे मुसलमानों के पास जायं जिन्हें रुपए की ज़रूरत है. हम उनसे माफ़ी मांगें और उनसे दरख़ास्त करें कि वह कुछ रुपए लेकर अपना कारबार शुरू करें. ऐसा करने ही से उनके दिल पर असर होगा और वह महसूस करेंगे कि हिन्दुओं का दिल बदला है. ख़ाली लेकचर उन्हें सन्तोश नहीं दे सकता."

सरदार जी की इस बात का भी केवल सदर साहब को ही समर्थन करना पड़ा. और फिर यह तय हुआ कि इतवार

ممبر اکٹھا ہوکر دیہاتوں میں جایا کریں اور وہیں سبھا کرکے اگلے اتوار کا پروگرام بنا لیا کریں۔

سردار جی نے کہا—"لیکن صرف سبھا کرنے سے تو کام نہیں چلے گا ہمیں کوئی تعمیری کام بھی کرنا چاہئے"۔

ایک سجن نے کہا— "ہمیں چاہئے کہ ہم ہریجنوں کی بستیوں میں جاکر انکا سدھار کریں"۔

سردار جی نے کہا—"لیکن ہریجنوں میں جاکر ہمیں خالی لکچر نہیں دینا چاہئے۔ ہمیں چاہئے کہ ہم اپنے ساتھ اپنی عورتوں کو بھی لے چلیں۔ جو ہریجن بہنوں میں کام کریں۔ ہمیں اپنے ساتھ جھاڑو لے چلنا چاہئے، جس سے کہ ہم انکی بستی کی صفائی کرکے انہیں صفائی سے رہنا بتا سکیں۔ ہمیں اپنے ساتھ صابن اور تیل بھی لے چلنا ہوگا۔ ہم ہریجن بچوں کو نہلائیں گے، انکے سر میں تیل لگائیں گے اور انکے کپڑے دھو کر انہیں سکھائیں گے کہ اس طرح بچوں کو صاف رکھنا چاہئے۔ ہماری عورتیں یہی کام ہریجن عورتوں میں کریں گی۔

سردار جی کے سمرتھن میں کیول صدر صاحب بولے—"سردار جی ٹھیک کہتے ہیں"۔

باقی سب لوگ خاموش رہے۔

پھر سامپردایکتا ورودھی نوجوان نے کہا—"ہمیں مسلمانوں کے محلے میں چلکر ایکتا کے لئے کام کرنا چاہئے"۔

سردار جی نے کہا—"ایکتا کیلئے آج مسلمانوں سے زیادہ ہندوؤں میں کام کرنے کی ضرورت ہے۔ پاکستان بننے اور باپو کے شہید ہونے سے مسلمانوں کی فرقہ پرستی بالکل ختم ہو گئی ہے۔ اب ہندوؤں کی فرقہ پرستی ختم کرنی ہے۔ میں یہ نہیں کہتا کہ مسلمانوں میں ہمیں نہ جانا چاہئے پر آپ جانتے ہیں کہ ابھی دو مہینے پہلے ہمارے شہر میں مسلمانوں کو کتنا نقصان پہنچا ہے۔ جن مسلمانوں کی دکانیں جلائی گئی ہیں ان میں بہت سے ایسے ہیں جن کی ساری پونجی ختم ہو گئی ہے۔ انکے پاس جانے سے پہلے ہمیں ہندوؤں کے پاس جانا چاہئے۔ پرایشچت کے روپ میں ہمیں ان سے چندہ لیکر روپیہ اکٹھا کرنا چاہئے۔ جب ہم روپئے جمع کرلیں تب ہم ایسے مسلمانوں کے پاس جائیں جنہیں روپئے کی ضرورت ہے۔ ہم انسے معافی مانگیں اور ان سے درخواست کریں کہ وہ کچھ روپئے لیکر اپنا کاربار شروع کریں۔ ایسا کرنے ہی سے انکے دل پر اثر ہوگا اور وہ محسوس کریں گے کہ ہندوؤں کا دل بدلا ہے۔ خالی لکچر انہیں سنتوش نہیں دے سکتا"۔

سردار جی کی اس بات کا بھی کیول صدر صاحب کو ہی سمرتھن کرنا پڑا۔ اور پھر یہ طے ہوا کہ اتوار

मैंने अपने मुहल्ले के लोगों से कहा कि यहां अस्सी घंटे अखन्ड कताई होनी चाहिये. लोग अगर पहले ही इनकार कर देते तो कोई बात न थी. मगर सब ने वादा किया और मैंने अपने घर में कताई शुरू की. दूसरे ही दिन से लोगों का आना कम होने लगा. और आखिर में सिर्फ मैं और मेरे लड़के लड़कियां ही चरखा चलाते रहे. तो मेरा मतलब यह है कि हमें सब से पहले यह तय कर लेना चाहिये कि हम यहां जो कुछ तय करेंगे उस पर सच्चे दिल से अमल भी करेंगे. नहीं तो ऐसी किसी संस्था बनाने की कोई ज़रूरत नहीं. जिन को काम करना है वह हर हालत में काम करते रहेंगे. मैंने तीस बरस पहले बापू का संदेश सुना और तब से उनकी हर बात पर जहां तक हो सकता है अमल करता हूं. मुझे अहिंसा पर पूरा विश्वास है. मुझे इसका तजरबा हो चुका है. पंजाब में इतने दंगे हुए पर मेरा अहिंसा पर से विश्वास न डिगा. मेरे मुहल्ले पर कई बार हमले हुए पर मैं हर दफ़ा अकेला हमला करने वालों के पास चला गया और मेरे अकेले समझाने पर वह हर बार लौट गए. मैं उरदू और गुरमुखी जानता था. पर जब गांधी जी ने हिन्दुस्तानी की यह तारीफ़ की कि दोनों लिखावटें सीखनी चाहियें तो मैंने हिन्दी भी लिखना सीख लिया. और अब भी मेरी राय है कि हमें गांधी जी की किसी बात को इस रोशनी में न देखना चाहिये कि हिन्दुस्तान का बटवारा हो गया है. हमें किसी हालत में भी पाकिस्तान की नक़ल न करनी चाहिये. पाकिस्तान में आज एक भी सिख नहीं रह गया है पर मेरे दिल में पाकिस्तान के खिलाफ़ कोई नफ़रत नहीं. अहिंसा पर विश्वास रखने वाले के दिल में नफ़रत तो होनी ही नहीं चाहिये. पाकिस्तान में ग़ैर मुसलिमों के साथ जो बरताव भी हो, हमें अपने यहां की अक़लियतों को खुश रखना अपना धर्म समझ लेना चाहिये. मुझे उम्मीद है कि आप जो भी संस्था बनाएंगे उसमें इन बातों का ज़रूर ध्यान रखेंगे."

सरदार जी के बाद एक दूसरे नौजवान सिख की बारी थी. यह नौजवान शायद सरदार जी के लड़के थे. उन्होंने कुछ न कहा और इस तरह लोगों के बारी बारी अपनी राय ज़ाहिर करने का सिलसिला खत्म हो गया.

अब फिर सदर की जगह बैठे हुए सज्जन की तरफ़ लोगों ने देखा. उन सज्जन ने नौकर को पान लाने का हुकुम दिया और फिर बोले—"आप लोगों ने जो विचार प्रकट किये उनसे हमें आगे काम करने में मदद मिलेगी. अब मैं चाहता हूँ कि संस्था का नाम तय हो जाय और काम की रूप रेखा तैयार हो जाय."

थोड़ी बहस के बाद संस्था का नाम "गांधी लोक सेवा मन्डल" तय हो गया.

आगे के काम के लिये तय हुआ कि हर इतवार को सब

نے اپنے محلے کے لوگوں سے کہا کہ یہاں اسی گھنٹے کی کتائی ہونی چاہئے ۔ لوگ اگر پہلے ہی انکار کر دیتے تو کوئی بات نہ تھی ۔ مگر سب نے وعدہ کیا اور میں نے اپنے گھر میں کتائی شروع کی ۔ دوسرے ہی دن سے لوگوں کا آنا کم ہونے لگا ۔ اور آخیر میں صرف میں اور میرے لڑکے لڑکیاں ہی چرخہ چلاتے رہے ۔ تو میرا مطلب یہ ہے کہ ہمیں سب سے پہلے یہ طے کر لینا چاہئے کہ ہم یہاں جو کچھ طے کریں گے اس پر سچے دل سے عمل بھی کریں گے ۔ نہیں تو ایسی کسی سنستھا بنانے کی کوئی ضرورت نہیں ۔ جن کو کام کرنا ہے وہ ہر حالت میں کام کرتے رہیں گے ۔ میں نے تیس برس پہلے باپو کا سندیش سنا اور تب سے اُن کی ہر بات پر جہاں تک ہو سکتا ہے عمل کرتا ہوں ۔ مجھے اہنسا پر پورا وشواس ہے ۔ مجھے اس کا تجربہ ہو چکا ہے ۔ پنجاب میں اتنے دنگے ہوئے پر میرا اہنسا پر سے وشواس نہ ڈگا ۔ میرے محلے پر کئی بار حملے ہوئے پر میں ہر دفعہ اکیلا حملہ کرنے والوں کے پاس چلا گیا اور میرے اکیلے سمجھانے پر وہ ہر بار لوٹ گئے ۔ میں اردو اور گورمکھی جانتا تھا ۔ پر جب گاندھی جی نے ہندستانی کی یہ تعریف کی کہ دونوں لکھاوٹیں سیکھنی چاہئیں تو میں نے ہندی بھی لکھنا سیکھ لیا ۔ اور اب بھی میری رائے ہے کہ ہمیں گاندھی جی کی کسی بات کو اس روشنی میں نہ دیکھنا چاہئے کہ ہندستان کا بٹوارہ ہو گیا ہے ۔ ہمیں کسی حالت میں بھی پاکستان کی نقل نہ کرنی چاہئے ۔ پاکستان میں آج ایک بھی سکھ نہیں رہ گیا ہے پر میرے دل میں پاکستان کے خلاف کوئی نفرت نہیں ۔ اہنسا پر وشواس رکھنے والے کے دل میں نفرت تو ہونی ہی نہیں چاہئے ۔ پاکستان میں غیر مسلموں کے ساتھ جو برتاؤ بھی ہو، ہمیں اپنے یہاں کی اقلیتوں کو خوش رکھنا اپنا دھرم سمجھ لینا چاہئے ۔ مجھے امید ہے کہ آپ جو بھی سنستھا بنائیں گے اس میں ان باتوں کا ضرور دھیان رکھیں گے ۔"

سردار جی کے بعد ایک دوسرے نوجوان سکھ کی باری تھی ۔ یہ نوجوان شاید سردار جی کے لڑکے تھے ۔ انہوں نے کچھ نہ کہا اور اس طرح لوگوں کے باری باری اپنی رائے ظاہر کرنے کا سلسلہ ختم ہو گیا ۔

اب پھر صدر کی جگہ بیٹھے ہوئے سجن کی طرف لوگوں نے دیکھا ۔ اُن سجن نے نوکر کو پان لانے کا حکم دیا اور پھر بولے—"آپ لوگوں نے جو وچار پرکٹ کئے اُن سے ہمیں آگے کام کرنے میں مدد ملے گی ۔ اب میں چاہتا ہوں کہ سنستھا کا نام طے ہو جائے اور کام کی روپ ریکھا تیار ہو جائے"۔

تھوڑی بحث کے بعد سنستھا کا نام "گاندھی لوک سیوا منڈل" طے ہو گیا ۔

آگے کے کام کے لئے طے ہوا کہ ہر اتوار کو سب

जोश नहीं था बल्कि निराशा थी. उन्होंने ने कहा—"हम में से बहुत से कांगरेसियों का हिन्दू मुसलिम एकता की तरफ से विश्वास उठ गया है. हम मानने लगे हैं कि हिन्दुस्तान का बटवारा होने के बाद हिन्दू मुसलिम एकता पर गांधी जी जोर दे कर गलती कर रहे थे. पाकिस्तान बनने के बाद यह सवाल ही खतम हो गया है. दूसरी बात यह है कि गांधी जी देश की एक राष्ट्र भाशा चाहते थे. वह भाशा हिन्दी नहीं थी. वह भाशा उरदू भी नहीं थी. गांधी जी देश की भाशा हिन्दुस्तानी चाहते थे. आज आप में से कितने हैं जो यह समझते हैं कि गांधी जी की यह मांग सही थी. अभी अभी यहाँ जितने भाइयों ने बातें की हैं वह संस्कृत लदी हिन्दी में की हैं. गांधी जी ऐसी भाशा को पसन्द नहीं करते थे जो एक आम आदमी समझ न सके. मैं जानना चाहता हूँ कि यहाँ कितने भाई हैं जो गांधी जी की हिन्दुस्तानी की हिमायत करते हैं. अगर हम सच्चे गांधी भक्त हैं, हमें गांधी जी के मिशन से प्रेम है तो हमें उनकी उन चीजों को खास तौर पर अपनाना चाहिये जिनकी तरफ से गांधी जी का बार बार नाम लेने वाले राजकाजी लोग बे परवाही बरत रहे हैं. हमारा जो संगठन बने उसके सामने पहला मक़सद यह होना चाहिये कि वह गांधी जी की हिन्दुस्तानी का प्रचार करे. हमारे जो मेम्बर हों उनके लिये पहली शर्त यह हो कि वह नागरी और उरदू दोनों लिपियाँ सीखें. जो लोग गांधी जी के विचारों को पूरी तरह नहीं अपना सकते उन्हें अपने को गांधी जी का भक्त एलान करके जनता को धोका न देना चाहिये. गांधी जी के नाम का नाजायज़ फ़ायदा उठाना किसी तरह भी उचित नहीं है."

एम० एल० ए० साहब ने इन सज्जन की तरफ इस तरह देखा जैसे कह रहे हों कि यह सब बेकार सवाल हैं. दूसरे लोगों ने भी इन सज्जन को झक्की ही समझा और बात आगे बढ़ गई. अब एक सरदार जी की बारी आई. सरदार जी सर से पैर तक खादी के कपड़े पहने थे. उनके कपड़े बहुत साफ न थे. क़मीज, पाजामा और पगड़ी देख कर साफ़ मालूम होता था कि इन कपड़ों ने धोबी का घर नहीं देखा. सब कपड़े हाथ के धुले मालूम होते थे. नील का इस्तेमाल न करने से कपड़ों में सफ़ेदी की चमक न आई थी. सरदार जी ने बड़े दर्द भरे लहजे में अपनी बात शुरू की—"भाइयो! मेरी तरफ से एक विनती है. हम यहां इकट्ठा हुए हैं और यह तय करने के लिये इकट्ठा हुए हैं कि हमें काम करना है. इसलिये जब हम यहां से उठें तब भी हमारे दिलों में यह पक्का इरादा होना चाहिये कि हम काम करेंगे. आज तो हम बात करने में बहुत आगे रहते हैं पर अमल के वक्त सब से पीछे नजर आते हैं. मैं आप को बताऊँ. पिछले अक्तूबर में गांधी जयन्ती के मौक़े पर

جوش نہیں تھا بلکہ نراشا تھی . انہوں نے کہا— "ہم میں سے بہت سے کانگریسیوں کا ہندو مسلم ایکتا کی طرف سے وشواس اٹھ گیا ہے . ہم ماننے لگے ہیں کہ ہندستان کا بٹوارہ ہونے کے بعد ہندو مسلم ایکتا پر گاندھی جی زور دے کر غلطی کر رہے تھے . پاکستان بننے کے بعد یہ سوال ہی ختم ہوگیا ہے دوسری بات یہ ہے کہ گاندھی جی دیش کی ایک راشٹر بھاشا چاہتے تھے . وہ بھاشا ہندی نہیں تھی. وہ بھاشا اُردو بھی نہیں تھی . گاندھی جی دیش کی بھاشا ہندستانی چاہتے تھے. آج آپ میں سے کتنے ہیں جو یہ سمجھتے ہیں کہ گاندھی جی کی یہ مانگ صحیح تھی . ابھی ابھی یہاں جتنے بھائیوں نے باتیں کی ہیں وہ سنسکرت لدی ہندی میں کی ہیں . گاندھی جی ایسی بھاشا کو پسند نہیں کرتے تھے جو ایک عام آدمی سمجھ نہ سکے . میں جاننا چاہتا ہوں کہ یہاں کتنے بھائی ہیں جو گاندھی جی کی ہندستانی کی حمایت کرتے ہیں . اگر ہم سچے گاندھی بھگت ہیں، ہمیں گاندھی جی کے مشن سے پریم ہے تو ہمیں اُن کی اُن چیزوں کو خاص طور پر اپنانا چاہئیے جن کی طرف سے گاندھی جی کا بار بار نام لینے والے راج کاجی لوگ بے پرواہی برت رہے ہیں . ہمارا جو سنگٹھن بنے اُسکے سامنے پہلا مقصد یہ ہونا چاہئیے کہ وہ گاندھی جی کی ہندستانی کا پرچار کرے . ہمارے جو ممبر ہوں اُن کے لئے پہلی شرط یہ ہو کہ وہ ناگری اور اردو دونوں لپیاں سیکھیں. جو لوگ گاندھی جی کے وچاروں کو پوری طرح نہیں اپنا سکتے اُنہیں اپنے کو گاندھی جی کا بھگت اعلان کرکے جنتا کو دھوکا نہ دینا چاہئیے گاندھی جی کے نام کا ناجائز فائدہ اُٹھانا کسی بھی طرح اُچت نہیں ہے ."

ایم . ایل . اے . صاحب نے اِن سجن کی طرف اس طرح دیکھا جیسے کہہ رہے ہوں کہ یہ سب بیکار سوال ہیں. دوسرے لوگوں نے بھی ان سجن کو جھکی ہی سمجھا اور بات آگے بڑھ گئی . اب ایک سردار جی کی باری آئی . سردار جی سر سے پیر تک کھادی کے کپڑے پہنے تھے . اُن کے کپڑے بہت صاف نہ تھے . قمیض پاجامہ اور پگڑی دیکھکر صاف معلوم ہوتا تھا کہ ان کپڑوں نے دھوبی کا گھر نہیں دیکھا . سب کپڑے ہاتھ کے دھلے معلوم ہوتے تھے . نیل کا استعمال نہ کرنے سے کپڑوں میں سفیدی کی چمک نہ آئی تھی . سردار جی نے بڑے درد بھرے لہجے میں اپنی بات شروع کی— "بھائیو! میری طرف سے ایک بنتی ہے . ہم یہاں اکٹھا ہوئے ہیں اور یہ طے کرنے کے لئے اکٹھا ہوئے ہیں کہ ہمیں کام کرنا ہے . اس لئے جب ہم یہاں سے اُٹھیں تب بھی ہمارے دلوں میں یہ پکا ارادہ ہونا چاہئیے کہ ہم کام کریں گے . آج تو ہم بات کرنے میں بہت آگے رہتے ہیں مگر عمل کے وقت سب سے پیچھے نظر آتے ہیں. میں آپ کو بتاؤں. پچھلے اکتوبر میں گاندھی جینتی کے موقع پر

मुझे बहुत कम फ़ुरसत मिलती है. पर मुझसे जो सेवा हो सकेगी उसके लिये मैं तैयार हूँ.

अब जिन सज्जन को बोलना था वह एक नौजवान थे. उन्होंने बड़े जोश के साथ कहा—"हमें यह न भूलना चाहिये कि बापू हिन्दू मुसलिम एकता के लिये काम करते हुए मारे गए हैं. बापू के बलिदान से साम्प्रदायिक दंगों की आग एक दम से ज़रूर बुझ गई है पर यह नहीं कहा जा सकता कि यह आग फिर नहीं सुलग सकती. आज राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और महासभा वाले चुप हो गए हैं पर इस का यह मतलब नहीं कि इनके दिल बदल गए हैं. बापू की हत्या ने जनता में साम्प्रदायिकता के ख़िलाफ़ जो ग़ुस्सा पैदा कर दिया है उससे डर कर ही यह लोग चुप हो गए हैं. हमें इसका ध्यान रखना है कि जहाँ जनता का ग़ुस्सा कम हुआ, यह लोग फिर मैदान में आजाएंगे और साम्प्रदायिकता का ज़हर फैलाना शुरू कर देंगे. हमें चाहिये कि अपनी संस्था में चुन कर ऐसे लोगों को रखें जो दिल से साम्प्रदायिकता के ख़िलाफ़ हों. हमें इस समय सब से अधिक ज़ोर हिन्दू मुसलिम एकता पर देना चाहिये और हिन्दुओं में घुस कर साम्प्रदायिकता के ख़िलाफ़ प्रचार करना चाहिये."

इन के पास जो सज्जन बैठे थे वह भी नौजवान थे और शायद यह दोनों नौजवान आपस में दोस्त थे क्योंकि उन से जब बोलने को कहा गया तो उन्होंने भी हिन्दू मुसलिम एकता पर ख़ास ज़ोर दिया और आख़िर में यह कह कर कि मैं भाई......के प्रत्येक शब्द का समर्थन करता हूँ, चुप हो गए और सब लोगों पर इस तरह निगाह डाली मानो दूसरों से भी अपना समर्थन चाहते हों.

पर उन की आशा पूरी न हुई क्योंकि किसी ने भी साम्प्रदायिकता के विरुद्ध या हिन्दू मुसलिम एकता की बात न की.

एक सज्जन ने हरिजन उद्धार पर ज़ोर दिया.

दूसरे सज्जन ने उन का पूरा समर्थन किया.

तीसरे सज्जन ने कताई मन्डल क़ायम करने का सुझाव रखा.

चौथे सज्जन ने सेवाग्राम आश्रम के ढंग पर ज़िले में एक आश्रम खोलने का प्रस्ताव किया.

पाँचवें सज्जन ने हरिजनों में शिक्षा प्रचार की तरफ़ सब का ध्यान खींचा और रात में हरिजन बच्चों को पढ़ाने के लिये सब से अपना नाम लिखाने की प्रार्थना की.

छटे सज्जन ने 'जो पंचों की राय' के अन्दाज़ में पाँचवें सज्जन का समर्थन किया.

लेकिन सातवें सज्जन की बात पर एक दम सब चौंक पड़े. यह सज्जन भी एक नौजवान थे. उनकी आवाज़ में

مجھے بہت کم فرصت ملتی ہے . پر مجھ سے جو سیوا ہوسکے گی اس کے لئے میں تیار ہوں .

اب جن سجن کو بولنا تھا وہ ایک نوجوان تھے. انہوں نے بڑے جوش کے ساتھ کہا— " ہمیں یہ نہ بھولنا چاہئے کہ باپو ہندو مسلم ایکتا کے لئے کام کرتے ہوئے مارے گئے ہیں . باپو کے بلیدان سے سامپردایک دنگوں کی آگ ایک دم سے ضرور بجھ گئی ہے پر یہ نہیں کہا جا سکتا کہ یہ آگ پھر نہیں سلگ سکتی . آج راشٹری سویم سیوک سنگھ اور مہاسبھا والے چپ ہوگئے ہیں پر اس کا یہ مطلب نہیں کہ ان کے دل بدل گئے ہیں . باپو کی ہتیا نے جنتا میں سامپردایکتا کے خلاف جو غصہ پیدا کر دیا ہے اس سے ڈر کر ہی یہ لوگ چپ ہوگئے ہیں ہمیں اس کا دھیان رکھنا ہے کہ جہاں جنتا کا غصہ کم ہوا، یہ لوگ پھر میدان میں آجائیں گے اور سامپردایکتا کا زہر پھیلانا شروع کر دیں گے . ہمیں چاہئے کہ اپنی سنستھا میں چنکر ایسے لوگوں کو رکھیں جو دل سے سامپردایکتا کے خلاف ہوں . ہمیں اس سمے سب سے ادھک زور ہندو مسلم ایکتا پر دینا چاہئے اور ہندوؤں میں گھس کر سامپردایکتا کے خلاف پرچار کرنا چاہئے ."

ان کے پاس جو سجن بیٹھے تھے وہ بھی نوجوان تھے اور شاید یہ دونوں نوجوان آپس میں دوست تھے کیونکہ اُن سے جب بولنے کو کہا گیا تو انہوں نے بھی ہندو مسلم ایکتا پر خاص زور دیا اور آخر میں یہ کہکر کہ میں بھائی ...... کے پرتیک شبد کا سمرتھن کرتا ہوں' چپ ہوگئے اور سب لوگوں پر اس طرح نگاہ ڈالی مانو دوسروں سے بھی اپنا سمرتھن چاہتے ہوں .

پر اُن کی آشا پوری نہ ہوئی کیونکہ کسی نے بھی سامپردایکتا کے ورودھ یا ہندو مسلم ایکتا کی بات نہ کی .

ایک سجن نے ہریجن اُدھار پر زور دیا .

دوسرے سجن نے اُن کا پورا سمرتھن کیا .

تیسرے سجن نے کتائی منڈل قائم کرنے کا سجھاو رکھا .

چوتھے سجن نے سیواگرام آشرم کے ڈھنگ پر ضلع میں ایک آشرم کھولنے کا پرستاو کیا .

پانچویں سجن نے ہریجنوں میں شکشا پرچار کی طرف سب کا دھیان کھینچا اور رات میں ہریجن بچوں کو پڑھانے کے لئے سب سے اپنا نام لکھانے کی پرارتھنا کی .

چھٹے سجن نے 'جو پنچوں کی رائے' کے انداز میں پانچویں سجن کا سمرتھن کیا .

لیکن ساتویں [illegible] کی بات پر ایک دم سب چونک پڑے . وہ سجن بھی ایک نوجوان تھے . اُن کی آواز میں

इस छोटे से भाषण के बाद उन सज्जन ने एक बार फिर सब लोगों को पान पेश किये. उनके बोलते वक़्त जो ख़ामोशी छाई थी वह टूट गई. सब लोग आपस में धीरे धीरे कुछ बातें करने लगे. आख़िर एक सिरे से लोगों को एक एक करके अपनी राय ज़ाहिर करने को कहा गया.

एक सज्जन, जिन्हें गांधी जी के साथ कुछ समय रहने का सौभाग्य मिल चुका था, कहने लगे—

"मैं भी यही सोचा करता था कि यहां ऐसा कोई संगठन होना चाहिये जो गांधीवादी सिद्धान्तों का प्रचार करे. आप ने हम सब को एक जगह इकट्ठा करके बड़ा अच्छा किया. मेरे विचार में हमें एक नई संस्था बनानी चाहिये. वैसे गांधी सेवा संघ जैसी संस्थाएं बनी हुई हैं पर उनके साथ बंध कर उनके सब उद्देशों को पूरा करने और उसके सब नियमों का पालन करने में सब भाइयों को कठिनाई हो सकती है. इसलिये मेरा सुझाव यह है कि हमें अपनी एक अलग संस्था बनानी चाहिये."

उनके बाद उनकी बग़ल में बैठे हुए दूसरे सज्जन से राय देने को कहा गया. यह सज्जन नगर के कपड़े के बड़े व्योपारी हैं. इन की दुकान पर इटली, इंगलैंड, अमरीका, जापान और भारत की मिलों के हर तरह के कपड़े बिकते हैं लेकिन यह ख़ुद गांधी जी के बड़े भक्त हैं. अपने इस्तेमाल के लिये हमेशा खद्दर भंडार के कपड़े ख़रीदते हैं. एक पान और मुंह में रखते हुए उन्होंने कहा—"यह देश का बहुत बड़ा दुर्भाग्य है कि आज जब देश को बापू की बहुत अधिक ज़रूरत थी तब वह उन से वंचित (महरूम) हो गया. पर बापू अमर हैं. वह कभी मर नहीं सकते. लेकिन अब हमारे ऊपर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी आ गई है. हमारा धर्म है कि बापू जो कुछ कहते थे हम उस पर अमल करें और वह जो काम अधूरा छोड़ गए हैं उसे पूरा करें. मैं सन बाईस से कांगरेस में हूँ और तब से बराबर अपने हाथ के कते सूत का कपड़ा पहनता हूँ. मेरे विचार में हम जो संस्था बनाएं उसके हर सदस्य के लिये यह शर्त हो कि वह एक घन्टा रोज़ चरख़ा चलाए और दूसरों को भी चरख़ा चलाना सिखाए." यह कहकर उन्होंने जेब से सिगरेट केस निकाला फिर माचिस निकाली मगर कुछ सोच कर दोनों चीज़ें जेब में रख लीं और हाथ बढ़ा कर फिर एक पान लेकर खाया और अपने पास बैठे हुए एक सज्जन की तरफ़ इस तरह देखा मानो कह रहे हों कि अब आप कुछ कहिये.

यह सज्जन शहर कांगरेस के ओहदेदार होने के साथ साथ सूबे की असेम्बली और और विधान सभा के भी मेम्बर थे. केवल इतना कहकर चुप हो गए कि मैं ऐसी हर संस्था का स्वागत करता हूँ जो बापू के मिशन को लेकर चले.

اس چھوٹے سے بھاشن کے بعد اُن سجن نے ایک بار پھر سب لوگوں کو پان پیش کئے . انکے بولتے وقت جو خاموشی چھائی تھی وہ ٹوٹ گئی . سب لوگ آپس میں دھیرے دھیرے کچھ باتیں کرنے لگے . آخر ایک سرے سے لوگوں کو ایک ایک کرکے اپنی رائے ظاہر کرنے کو کہا گیا .

ایک سجن، جنہیں گاندھی جی کے ساتھ کچھ سمے رہنے کا سوبھاگیہ مل چکا تھا کہنے لگے—

"میں بھی یہی سوچا کرتا تھا کہ یہاں ایسا کوئی سنگٹھن ہونا چاہئے جو گاندھی وادی سدھانتوں کا پرچار کرے . آپ نے ہم سب کو ایک جگہ اکٹھا کرکے بڑا اچھا کیا . میرے وچار میں ہمیں ایک نئی سنستھا بنانی چاہئے . ویسے گاندھی سیوا سنگھ جیسی سنستھائیں بنی ہوئی ہیں پر انکے ساتھ بندھکر انکے سب اُدیشوں کو پورا کرنے اور اُس کے سب نیموں کا پالن کرنے میں سب بھائیوں کو کٹھنائی ہوسکتی ہے . اسلئے میرا سجھاؤ یہ ہے کہ ہمیں اپنی ایک الگ سنستھا بنانی چاہئے".

اُن کے بعد اُن کی بغل میں بیٹھے ہوئے دوسرے سجن سے رائے دینے کو کہا گیا . یہ سجن نگر کے کپڑے کے بڑے بیوپاری ہیں . اُن کی دوکان پر اٹلی، انگلینڈ، امریکہ، جاپان اور بھارت کی ملوں کے ہر طرح کے کپڑے بکتے ہیں لیکن یہ خود گاندھی جی کے بڑے بھکت ہیں . اور اپنے استعمال کے لئے ہمیشہ کھدر بھنڈار کے کپڑے خریدتے ہیں . ایک پان اور منھ میں رکھتے ہوئے انہوں نے کہا —" یہ دیش کا بہت بڑا دربھاگیہ ہے کہ آج جب دیش کو باپو کی بہت ادھک ضرورت تھی تب وہ اُن سے ونچت (محروم) ہوگیا پر باپو امر ہیں . وہ کبھی مر نہیں سکتے . لیکن اب ہمارے اوپر بہت بڑی ذمہ داری آگئی ہے . ہمارا دھرم ہے کہ باپو جو کچھ کہتے تھے ہم اُس پر عمل کریں اور وہ جو کام ادھورا چھوڑ گئے ہیں اُسے پورا کریں . میں سن بائیس سے کانگریس میں ہوں اور تب سے برابر اپنے ہاتھ کے کتے سوت کا کپڑا پہنتا ہوں . میرے وچار میں ہم جو سنستھا بنائیں اُسکے ہر سدسیہ کے لئے یہ شرط ہو کہ وہ ایک گھنٹہ روز چرخا چلائے اور دوسروں کو بھی چرخا چلانا سکھائے ." یہ کہکر انہوں نے جیب سے سگریٹ کیس نکالا پھر ماچس نکالی مگر کچھ سوچکر دونوں چیزیں جیب میں رکھ لیں اور ہاتھ بڑھاکر پھر ایک پان لے کر کھایا اور اپنے پاس بیٹھے ہوئے ایک سجن کی طرف اس طرح دیکھا مانو کہہ رہے ہوں کہ اب آپ کچھ کہئے .

یہ سجن شہر کانگریس کے عہدے دار ہونے کے ساتھ ساتھ صوبہ کی اسمبلی اور ودھان سبھا کے بھی ممبر تھے کیول اتنا کہکر چپ ہوگئے کہ ہم ایسی ہر سنستھا کا سواگت کرتا ہوں جو باپو کے مشن کو لیکر چلے .

धोती कुरते वाले बिलकुल ग़रीब मालूम होते हैं. बीच
दीवार की तरफ़ एक जगह ख़ाली है. यह शायद इस
जमे के सदर की जगह है. थोड़ी देर बाद एक सज्जन
गले के अन्दर से हाथ में पान की थाली लिये आए और
बको जयहिन्द कर के उस ख़ाली जगह पर बैठ गए.

उन के बैठने के बाद कुछ लोग कहते हैं अब कारवाई
शुरू होनी चाहिये और वह सज्जन कहना शुरू करते हैं—

"मैं पहले तो आप सब लोगों से क्षमा चाहता हूँ कि
आपने यहाँ पधारने का कष्ट किया."—पान की थाली
दूसरी तरफ़ बढ़ा कर उन्होंने लोगों से पान खाने की
प्रार्थना की और एक बार चारों तरफ़ देख कर फिर बात
शुरू की.

"मैंने आप लोगों को एक ख़ास कारन से कष्ट दिया
...हम आज इस लिये इकट्ठा हुए हैं कि राष्ट्र पिता
महात्मा गांधी को स्वर्ग सिधारे अभी पूरे दो महीने भी नहीं
बीते. हमें विचार करना है कि बापू जो मिशन छोड़ गए हैं
उसे हमें क्योंकर आगे बढ़ाना चाहिये. आज कांगरेस में दो
तरह के लोग हैं. एक वह जो बापू के रचनात्मक प्रोग्रामों
को चला रहे हैं और राजनीति में कोई हिस्सा नहीं लेते.
दूसरे वह लोग जो राजनीति में हिस्सा लेते हैं और बापू के
रचनात्मक प्रोग्राम से जिन्हें कोई दिलचस्पी नहीं. पहले
वाले लोग राजनीति में आगे नहीं आते इसलिये उनका
संदेश जनता तक नहीं पहुँच पाता. यह लोग अपने आश्रम
चला रहे हैं और भारत की करोड़ों जनता से इनका
सम्बन्ध बिलकुल कट सा गया है. दूसरे लोग जो राजनीति
की दलदल में फंसे हैं उन्हें दलबन्दी और राजनीति झगड़ों
से इतना समय ही नहीं मिलता कि वह रचनात्मक कामों
की तरफ़ ध्यान दे सकें. होना तो यह चाहिये था कि हर
कांगरेसी गांधी जी के मिशन को आगे बढ़ाने के लिये
उठ खड़ा होता पर ऐसा नहीं है. मैंने यह सोच कर कुछ
मित्रों से बात की और फिर यह तय किया कि हमें अपने
शहर ही में कांगरेस से अलग एक संस्था बनानी चाहिये
और बापू के मिशन को आगे बढ़ाने में लग जाना चाहिये.
हम कांगरेस का विरोध करेंगे न कांगरेस से अलग होंगे
पर हमारी इस संस्था के सदस्य कांगरेस की दलबन्दियों
में भाग न लेंगे. हमारे नगर में ऐसे लोगों की काफ़ी तादाद
है जो गांधीवाद को दिल से मानते हैं पर यह सब लोग
बिखरे हुए हैं और उन के आपस में मिलने जुलने का कोई
तरीक़ा निकल आए तो यही लोग बहुत कुछ कर सकते
हैं. जब हमारा संगठन हो जायगा तो दूसरे लोग भी हमारे
साथ आएंगे और इस तरह हम बापू के मिशन को आगे
बढ़ा सकेंगे. मैं चाहता हूँ कि आप लोग भी इस विशय पर
अपने अपने विचार प्रकट करें."

کے دھوتی کرتے والے بالکل غریب معلوم ہوتے ہیں. بیچ
میں دیوار کی طرف ایک جگہ خالی ہے. یہ شاید اس
مجمع کے صدر کی جگہ ہے. تھوڑی دیر بعد ایک سجن
بنگلے کے اندر سے ہاتھ میں پانوں کی تھالی لئے آئے
اور سب کو جے ہند کرکے اُس خالی جگہ پر بیٹھ گئے.

اُنکے بیٹھنے کے بعد کچھ لوگ کہتے ہیں اب کارروائی
شروع ہونی چاہیے اور وہ سجن کہنا شروع کرتے ہیں—

"میں پہلے تو آپ سب لوگوں سے چھما چاہتا ہوں
کہ آپ نے یہاں پدھارنے کا کشٹ کیا". پان کی تھالی
دوسری طرف بڑھا کر اُنہوں نے لوگوں سے پان کھانے کی
پراتھنا کی اور ایک بار چاروں طرف دیکھکر پھر بات
شروع کی.

"میں نے آپ لوگوں کو ایک خاص کارن سے کشٹ دیا
ہے........ ہم آج اس لئے اکٹھا ہوئے ہیں کہ راشٹر پتا
مہاتما گاندھی کو سورگ سدھارے ابھی پورے دو مہینے
بھی نہیں بیتے. ہمیں وچار کرنا ہے کہ باپو جو مشن
چھوڑ گئے ہیں اُسے ہمیں کیونکر آگے بڑھانا چاہیے. آج
کانگریس میں دو طرح کے لوگ ہیں. ایک وہ جو باپو کے
رچناتمک پروگراموں کو چلا رہے ہیں اور راج نیتی میں
کوئی حصہ نہیں لیتے دوسرے وہ لوگ جو راج نیتی میں
حصہ لیتے ہیں اور باپو کے رچناتمک پروگرام سے جنھیں
کوئی دلچسپی نہیں. پہلے والے لوگ راج نیتی میں
آگے نہیں آتے اسلئے اُنکا سندیش جنتا تک نہیں پہنچ
پاتا. یہ لوگ اپنے آشرم چلا رہے ہیں اور بھارت کی
کروڑوں جنتا سے اِنکا سمبندھ بالکل کٹ سا گیا ہے.
دوسرے لوگ جو راج نیتی کی دلدل میں پھنسے ہیں
اُنھیں دلبندی اور راج نیتک جھگڑوں سے اتنا سمے ہی
نہیں ملتا کہ وہ رچناتمک کاموں کی طرف دھیان
دے سکیں. ہونا تو یہ چاہیے تھا کہ ہر کانگریسی گاندھی
جی کے مشن کو آگے بڑھانے کیلئے اٹھ کھڑا ہوتا پر ایسا
نہیں ہے. میں نے یہی سوچ کر کچھ متروں سے بات کی
اور پھر یہ طے کیا کہ ہمیں اپنے شہر ہی میں کانگریس سے
الگ ایک سنستھا بنانی چاہیے اور باپو کے مشن کو آگے
بڑھانے میں لگ جانا چاہیے. ہم کانگریس کا ورودھ نہیں
کریں گے نہ کانگریس سے الگ ہونگے پر ہماری اس سنستھا
کے سدسیہ کانگریس کی دلبندیوں میں بھاگ نہ لیں گے.
ہمارے نگر میں ایسے لوگوں کی کافی تعداد ہے جو گاندھی
واد کو دل سے مانتے ہیں پر یہ سب لوگ بکھرے ہوئے
ہیں اور اُنکے آپس میں ملنے جلنے کا کوئی ذریعہ نکل
آئے تو یہی لوگ بہت کچھ کرسکتے ہیں. جب ہمارا
سنگھٹن ہو جائے گا تو دوسرے لوگ بھی ہمارے ساتھ آئیں
گے اور اس طرح ہم باپو کے مشن کو آگے بڑھا سکیں گے.
میں چاہتا ہوں کہ آپ لوگ بھی اس وشئے پر اپنے
[illegible] کریں".

खत्म करने के साथ साथ उन्होंने बौद्ध कला के सुन्दर से सुन्दर नमूनों को भी मटियामेट कर डाला. फिर भी कोरिया की सूनसान पहाड़ियों में भारती कला के निशान वहां के बौद्ध मन्दिरों में आज भी मौजूद हैं.

भारत और कोरिया का कलचरी मेल एशिया के कलचरी इतिहास की बड़ी महत्व की घटना है. सदियों पहले भारती कलचर की जो लहर भारत से चीन की तरफ़ बढ़ी थी वह चीन में न रुक कर कोरिया भी पहुंची. फिर कोरिया से वह लहर जापान की तरफ़ बढ़ी और धीरे धीरे जापान भी उसमें समा गया. कोरिया वालों ने ही पहले पहल बौद्ध धर्म का संदेश जापान वालों को सुनाया था. इसमें कोई शक नहीं कि भारत और कोरिया के कलचरी मेल होने पर ही भारत और जापान में भी कलचरी सम्बन्ध क़ायम हुआ. एशिया की कलचरी एकता को, भारत और कोरिया के सम्बन्ध की यही सब से बड़ी देन है.

पिछली कई सदियों से एशिया के मुल्क बिदेसी हुकूमत और बिदेसी बन्दूक़ों के डर से अपनी पुरानी कलचरी एकता और राजनैतिक मित्रता खो बैठे थे. आज वह अपनी पुरानी दोस्ती और पुरानी एकता क़ायम करने को फिर उत्सुक हैं. भारत और चीन अपनी ऐतिहासिक मित्रता को फिर से जगा चुके हैं. अब वह दिन दूर नहीं जब कोरिया भी बिदेसी फ़ौजों को अपने देस से खदेड़ कर आज़ाद होगा और अपने पुराने दोस्त भारत से एक बार फिर सम्बन्ध जोड़ने के लिये हाथ आगे बढ़ाएगा.

ختم کرنے کے ساتھ ساتھ اُنھوں نے بودھ کلا کے سندر سے سندر نمونوں کو بھی مٹیامیٹ کر ڈالا. پھر بھی کوریا کی سنسان پہاڑیوں میں بھارتی کلا کے نشان وہاں کے بودھ مندروں میں آج بھی موجود ھیں.

بھارت اور کوریا کا کلچری میل ایشیا کے کلچری اتہاس کی بڑی مہتو کی گھٹنا ھے. صدیوں پہلے بھارتی کلچر کی جو لہر بھارت سے چین کی طرف بڑھی تھی وہ چین میں نہ رک کر کوریا بھی پہونچی. پھر کوریا سے یہ لہر جاپان کی طرف بڑھی اور دھیرے دھیرے جاپان بھی اس میں سما گیا. کوریا والوں نے ھی پہلے بودھ دھرم کا سندیش جاپان والوں کو سنایا تھا. اِس میں کوئی شک نہیں کہ بھارت اور کوریا کے کلچری میل ھونے پر ھی بھارت اور جاپان میں بھی کلچری سمبندھ قائم ھوا. ایشیا کی کلچری ایکتا کو' بھارت اور کوریا کے سمبندھ کی یہی سب سے بڑی دین ھے.

پچھلی کئی صدیوں سے ایشیا کے ملک بدیسی حکومت اور بدیسی بندوقوں کے ڈر سے اپنی پرانی کلچری ایکتا اور راج نیتک مترتا کھو بیٹھے تھے. آج وہ اپنی پرانی دوستی اور پرانی ایکتا قائم کرنے کو پھر اتسک ھیں. بھارت اور چین اپنی اتہاسک مترتا کو پھر سے جگا چکے ھیں. اب وہ دن دور نہیں جب کوریا بھی بدیسی فوجوں کو اپنے دیس سے کھدیڑ کر آزاد ھوگا اور اپنے پرانے دوست بھارت سے ایک بار پھر سمبندھ جوڑنے کے لئے ھاتھ آگے بڑھائے گا.

गांधी जी के नाम पर

(भाई अनवर अब्दुल्ला)

मार्च सन '48 की बात है. देश पिता महात्मा गांधी को गए पूरे दो महीने भी नहीं हुए थे.

एक बंगले के बाहर के दालान में पन्द्रह बीस आदमी बैठे हैं. खिड़की में एक बड़े फ़्रेम में महात्मा गांधी की तसवीर रखी है. मजमे में हर तबक़े के लोग हैं. कुछ की कुछ की सफ़ेद खादी का कुरता, पायजामा या धोती बतलाती है कि खाने पीने ही नहीं बचा कर भी रखने वाले तबक़े से उन का सम्बन्ध है, कुछ की धारीदार खादी की आधी आस्तीन की क़मीज़ और मैले पैजामे उन्हें निचले बीच के तबक़े का ज़ाहिर करते हैं, दो तीन बिलकुल मैली खादी

گاندھی جی کے نام پر

(بھائی انور عبداللہ)

مارچ سن '48 کی بات ھے. دیش پتا مہاتما گاندھی کو گئے پورے دو مہینے بھی نہیں ھوئے تھے.

ایک بنگلے کے باہر کے دالان میں پندرہ بیس آدمی بیٹھے ھیں. کھڑکی میں ایک بڑے فریم میں مہاتما گاندھی کی تصویر رکھی ھے. مجمع میں ھر طبقے کے لوگ ھیں. کچھ کی شدھ سی سفید کھادی کا کرتا' پاجامہ یا دھوتی بتلاتی ھے کہ کھانے پینے ھی نہیں بچا کر بھی رکھنے والے طبقے سے انکا سمبندھ ھے. کچھ کی دھاری دار کھادی کی آدھی آستین کی قمیض اور میلے پاجامے اُنھیں نچلے بیچ کے طبقے کا ظاہر کرتے ھیں. دو تین بالکل میلی کھادی

पवित्र पुस्तक मानी जाती थी. इस किताब का वहां नाम था "सि-यू-की" (Si-Yu-Ki) यानी "पच्छिमी देसों का हाल." यह किताब कोरिया के हर मठ में और हर किताब घर में पाई जाती थी.

कोरिया में बौद्ध धर्म के पतन के साथ साथ बौद्ध किताबों का भी बुरा हाल हुआ. मन्दिरों और मठों के बरबाद किए जाने के साथ साथ बौद्ध साहित्य भी बरबाद हो गया. फिर भी कुछ किताबें बच रहीं जिन्हें जापानियों ने इकट्ठा किया और उन्हें फिर छपवाया.

6—कोरिया में भारती कला :—

कोरिया में बौद्ध धर्म के फैलने के साथ साथ वहां बौद्ध कला को भी रिवाज दिया गया. कोरिया के बौद्ध मन्दिरों में जो मूरतियां क़ायम की गईं उन पर भारती बौद्ध बुत साज़ी की छाप साफ़ दिखाई देती थी.

सिल्ला की सलतनत के ज़माने में (668–918 ई०) कोरिया में ख़ास तौर से भारती कला का चलन था. इस ज़माने में कोरिया से अनेक बौद्ध भिक्षु भारत आए थे. भारत से वह अपने साथ अनेक बौद्ध मूरतियां और नक़्क़ाशी के नमूने कोरिया लेगए थे.

इसी ज़माने में कोरिया में, अमिताभ बुद्ध और बोधिसत्व कुआन-यिन की मूरतियां जगह जगह मन्दिरों में क़ायम की गईं. दोनों पर भारती कला का असर ज़ाहिर था. अमिताभ बुद्ध आसन पर बैठे, एक पैर पर दूसरा पैर रखे, अपनी गोद में अपना हाथ रखे और ध्यान में मग्न दिखाए गए हैं. बोधिसत्व कुआन-यिन का रूप भी भारत से ही लिया गया है. बोधिसत्व सिंहासन पर शाही ठाठ के साथ आराम से बैठे हैं. उनका दायां पैर सिंहासन पर है और दायां हाथ दायें पैर पर से होता हुआ नीचे लटक रहा है. बायां पैर भी नीचे लटक रहा है और बायां हाथ सिंहासन को पकड़े हुए है.

इस ज़माने की चीनी और कोरियाई कला पर अपनी राय ज़ाहिर करते हुए मशहूर इतिहासकार केनेथ लाटुरेट लिखता है:—

"बौद्ध मन्दिरों में गान्धार की यूनानी बौद्ध कला या गुप्तवंश के ज़माने की भारती कला का असर ख़ास तौर से ज़ाहिर है. इस ज़माने में जितनी सुन्दर मूरतियां बनाई गईं उतनी सुन्दर मूरतियां कोरिया में कभी नहीं बनीं. इसके नमूने आज भी कोरिया और चीन में मौजूद हैं".

कोरिया से मंगोल राज ख़तम होते ही कंगफ़ूत्सू धर्म के मानने वालों ने कोरिया के तमाम बौद्ध मन्दिरों और बौद्ध मठों को गिरा दिया. धातु की जितनी मूरतियां बनी थीं उन सब को उन्होंने गला डाला. बौद्ध धर्म का असर

پوتر پستک مانی جاتی تھی. اس کتاب کا وہاں نام تھا "سی-یو-کی" (Si-Yu-Ki) یعنی "پچھمی دیسوں کا حال". یہ کتاب کوریا کے ہر مٹھ میں اور ہر کتاب گھر میں پائی جاتی تھی.

کوریا میں بودھ دھرم کے پتن کے ساتھ ساتھ بودھ کتابوں کا بھی برا حال ہوا. مندروں اور مٹھوں کے برباد کئے جانے کے ساتھ ساتھ بودھ ساہتیہ بھی برباد ہوگیا. پھر بھی کچھ کتابیں بچ رہیں جنہیں جاپانیوں نے اکٹھا کیا اور انہیں پھر چھپوایا.

6 — کوریا میں بھارتی کلا :—

کوریا میں بودھ دھرم کے پھیلنے کے ساتھ ساتھ وہاں بودھ کلا کو بھی رواج دیا گیا. کوریا کے بودھ مندروں میں جو مورتیاں قائم کی گئیں ان پر بھارتی بودھ بت سازی کی چھاپ صاف دکھائی دیتی تھی.

سلا کی سلطنت کے زمانے میں (668 — 918 عیسوی) کوریا میں خاص طور سے بھارتی کلا کا چلن تھا. اس زمانے میں کوریا سے انیک بودھ بھکشو بھارت آئے تھے. بھارت سے وہ اپنے ساتھ انیک بودھ مورتیاں اور نقاشی کے نمونے کوریا لے گئے تھے.

اسی زمانے میں کوریا میں امتیابھ بدھ اور بودھی ستو کوآن-ین کی مورتیاں جگہ جگہ مندروں میں قائم کی گئیں. دونوں پر بھارتی کلا کا اثر ظاہر تھا. امتیابھ بدھ آسن پر بیٹھے، ایک پیر پر دوسرا پیر رکھے، اپنی گود میں اپنا ہاتھ رکھے اور دھیان میں مگن دکھائے گئے ہیں. بودھی ستو کوآن ان کا روپ بھی بھارت سے ہی لیا گیا ہے. بودھی ستو سنگھاسن پر شاہی ٹھاٹ کے ساتھ آرام سے بیٹھے ہیں. ان کا دایاں پیر سنگھاسن پر ہے اور دایاں ہاتھ دائیں پیر پر سے ہوتا ہوا نیچے لٹک رہا ہے. بایاں پیر بھی نیچے لٹک رہا ہے اور بایاں ہاتھ سنگھاسن کو پکڑے ہوئے ہے.

اس زمانے کی چینی اور کوریائی کلا پر اپنی رائے ظاہر کرتے ہوئے مشہور اتہاس کار کینتھ لاٹوریٹ لکھتا ہے :—

" بودھ مندروں میں گاندھار کی یونانی بودھ کلا یا گپت ونش کے زمانے کی بھارتی کلا کا اثر خاص طور سے ظاہر ہے. اس زمانے میں جتنی سندر مورتیاں بنائی گئیں اتنی سندر مورتیاں کوریا میں کبھی نہیں بنیں. اس کے نمونے آج بھی کوریا اور چین میں موجود ہیں."

کوریا سے منگول راج ختم ہوتے ہی کنگفوتسو دھرم کے ماننے والوں نے کوریا کے تمام بودھ مندروں اور بودھ مٹھوں کو گرا دیا. دھات کی جتنی مورتیاں بنی تھیں ان سب کو انہوں نے گلا ڈالا. بودھ دھرم کا اثر

अवतार लेकर गौतम बुद्ध की शकल में इस संसार में आए थे. अमिताभ शब्द का अर्थ है 'ज्योति ही ज्योति' यानी नूर ही नूर.

इस पंथ की तालीम का निचोड़ यह है: भगवान अमिताभ बुद्ध में पूरी भक्ति और विश्वास रखो, उनकी पूजाकरो और अपने को उनकी मरज़ी पर छोड़ दो. यही निर्वान प्राप्त करने का रास्ता है.

इस पंथ के मानने वाले कोरियाई भक्त भगवान अमिताभ से प्रार्थना करते हुए कहते हैं:—

'ना-मो अमिदो पुल'

यानी:—"हे भगवान अमिताभ! मैं भक्ति भाव से और तुझ पर पूरा विश्वास कर के तेरी शरन में आता हूँ."

महायान बौद्धों के लिये निर्वान हासिल करने का यह भक्ति मार्ग है.

इस पंथ के अलावा, बोधिधर्म के चान पंथ का, तिब्बत के लामा पंथ का और चीन के तियेन-ताई पंथ का भी कोरिया में काफ़ी प्रचार हुआ. इन सब पथों को भारत के और चीन के बौद्ध भिक्षुओं ने क़ायम किया था.

5—कोरिया में बौद्ध साहित्य

बौद्ध धर्म के साथ साथ कोरिया में बौद्ध साहित्य भी पहुँचा. पहले तो चीन से भारत का बौद्ध साहित्य कोरिया ले जाया गया फिर बाद में कोरिया से जो भिक्षु भारत आए, वह अपने साथ बौद्ध धर्म की किताबें कोरिया ले गए. बौद्ध धर्म के हर पंथ का साहित्य कोरिया पहुँचा. वहां के भिक्षुओं ने बहुत सी बौद्ध किताबों का अनुवाद किया.

सन 1000 ईसवी के क़रीब चीन से बौद्ध त्रिपिटक (यानी सूत्रपिटक, और अभिधर्म पिटक) की एक कापी कोरिया लाई गई. यह त्रिपिटक चीन के सम्राट की आज्ञा से सन 971 ई० में तैयार किया गया था. इसमें उस समय तक की बौद्ध धर्म की तमाम किताबें शामिल थीं. कोरिया के राजा ने इस त्रिपिटक का फिर से सम्पादन करने के लिये कोरिया के विद्वानों की एक कमेटी बनाई थी. तैयार होने के बाद इस त्रिपिटक का एक एडीशन कोरिया से निकाला गया. इसी के आधार पर जापान में सन 1880 ई० में बौद्ध त्रिपिटक का एक जापानी एडीशन तैयार किया गया.

सन 1251 ई० में बौद्ध त्रिपिटक कोरिया में पहली बार छापकर निकाला गया.

कोरिया के लोग चीन के मशहूर बौद्ध भिक्षु व्हेन सांग की बड़ी इज़्ज़त करते थे. व्हेन सांग ने अपनी भारत यात्रा की जो किताब लिखी वह कोरिया में बौद्ध धर्म की एक बहुत

اوتار لے کر گوتم بدھ کی شکل میں اس سنسار میں آئے تھے' امیتابھ شبد کا ارتھ ہے "جیوتی ہی جیوتی" یعنی نور ہی نور۔

اس پنتھ کی تعلیم کا نچوڑ یہ ہے: بھگوان امیتابھ بدھ میں پوری بھکتی اور وشواس رکھو' ان کی پوجا کرو اور اپنے کو ان کی مرضی پر چھوڑ دو۔ یہی نروان پراپت کرنے کا راستہ ہے۔

اس پنتھ کے ماننے والے کوریائی بھکت بھگوان امیتابھ سے پرارتھنا کرتے ہوئے کہتے ہیں:—

'نامو امیدو پل'

یعنی:—"ہے بھگوان امیتابھ! میں بھکتی بھاؤ سے اور تجھ پر پورا وشواس کرکے تیری شرن میں آتا ہوں۔"

مہایان بودھوں کے لئے نروان حاصل کرنے کا یہ بھکتی مارگ ہے۔

اس پنتھ کے علاوہ' بودھ دھرم کے چان پنتھ کا' تبت کے لامہ پنتھ کا اور چین کے تی ین تائی پنتھ کا بھی کوریا میں کافی پرچار ہوا۔ ان سب پنتھوں کو بھارت کے اور چین کے بودھ بھکشوؤں نے قائم کیا تھا۔

5—کوریا میں بودھ ساہتیہ

بودھ دھرم کے ساتھ کوریا میں بودھ ساہتیہ بھی پہونچا۔ پہلے تو چین سے بھارت کا بودھ ساہتیہ کوریا لے جایا گیا پھر بعد میں کوریا سے جو بھکشو بھارت آئے' وہ اپنے ساتھ بودھ دھرم کی کتابیں کوریا لے گئے۔ بودھ دھرم کے ہر پنتھ کا ساہتیہ کوریا پہونچا۔ وہاں کے بھکشوؤں نے بہت سی بودھ کتابوں کا انوواد کیا۔

سن 1000 عیسوی کے قریب چین سے بودھ ترپٹک (یعنی سوترپٹک' ونے پٹک اور ابھی دھرم پٹک) کی ایک کاپی کوریا لائی گئی۔ یہ ترپٹک چین کے سمراٹ کی آگیا سے سن 971 عیسوی میں تیار کیا گیا تھا۔ اس میں اس سمے تک کی بودھ دھرم کی تمام کتابیں شامل تھیں۔ کوریا کے راجہ نے اس ترپٹک کا پھر سے سمپادن کرنے کے لئے کوریا کے ودوانوں کی ایک کمیٹی بنائی تھی۔ تیار ہونے کے بعد اس ترپٹک کا ایک اڈیشن کوریا سے نکالا گیا۔ اسی کے آدھار پر جاپان میں سن 1880 عیسوی میں بودھ ترپٹک کا ایک جاپانی اڈیشن تیار کیا گیا۔

سن 1251 عیسوی میں بودھ ترپٹک کوریا میں پہلی بار چھاپ کر نکالا گیا۔

کوریا کے لوگ چین کے مشہور بودھ بھکشو ویہن سانگ کی بڑی عزت کرتے تھے۔ ویہن سانگ نے اپنی بھارت یاترا کی جو کتاب لکھی وہ کوریا میں بودھ دھرم کی ایک بہت

आपादी की लड़ाई के खिलाफ़ क़ुबला ख़ाँ का साथ दिया था. इसलिये वह देस के दुशमन साबित हुए और जनता की सहानुभूति खो बैठे.

मंगोल राज का पतन होने के बाद कंगफ़ूत्सू धर्म के मानने वालों ने ही कोरिया का राज संभाला. उन्होंने क़ानून बना कर बौद्ध धर्म का प्रचार बन्द कर दिया और कोरिया के सब बौद्ध मन्दिरों और मठों को गिरवा दिया. कोरिया के दो छोटे राजाओं ने अब भी बौद्ध धर्म को अपनाए रखने की कोशिश की. उन्हें गद्दी से उतार दिया गया. कोरिया के रहे सहे बौद्ध भिक्षु शहर छोड़ कर पहाड़ों और जंगलों में जा बसे. वहीं उन्होंने अपने मन्दिर और मठ क़ायम किये.

(पांच) जापानी राज का ज़माना (1910—1945 ई०)

कुछ सदियों बाद सन 1910 ई० में जापानियों ने कोरिया पर क़ब्ज़ा कर लिया. बौद्ध धर्म का कोरिया में फिर प्रचार शुरू हुआ. लेकिन इस बार भी विदेशी हकूमत के साथ साथ बौद्ध धर्म कोरिया में फिर से आया और विदेशी हकूमत की मदद से ही उसे फैलाने की कोशिश की गई. शहरों में बौद्ध मन्दिर और बौद्ध मठ फिर से क़ायम किये गए. बौद्ध धर्म की पुरानी किताबों को इकट्ठा करके उन्हें नए सिरे से छपवाया गया. जगह जगह बौद्ध सोसाइटियां क़ायम की गईं. कुछ समय के लिये कोरिया में बौद्ध धर्म का असर बढ़ता दिखाई पड़ा. इसी बीच दूसरा महायुद्ध छिड़ गया और कोरिया से जापानी राज उठ गया. इसके बाद कोरिया में बौद्ध धर्म का क्या हाल हुआ होगा यह कहना अभी कठिन है.

4—कोरिया में बौद्ध धर्म के फ़िरक़े

कोरिया में बौद्ध धर्म की महायान सम्प्रादाय का ही प्रचार हुआ था. इस के कई फ़िरक़े समय समय पर कोरिया में क़ायम हुए जिसमें 'सफ़ेद कमल पंथ' के मानने वाले सबसे ज़्यादा थे.

'सफ़ेद कमल पंथ' को चीनी भिक्षु हुइ-युआन ने भारती भिक्षु बुद्धयश और बुद्धभद्र की मदद से चीन में क़ायम किया था. चूँकि इन भिक्षुओं का मठ एक ऐसे तालाब के किनारे था जिसमें सफ़ेद कमल खिले थे इसलिये उनके फ़िरक़े का नाम 'सफ़ेद कमल पंथ' पड़ गया. उस पंथ का प्रचार कोरिया में भी हुआ.

इस पंथ के लोग यह मानते हैं कि गौतम बुद्ध भगवान अमिताभ बुद्ध के अवतार थे, अमिताभ बुद्ध ही सारी दुनिया के सिरजनहार हैं, उन्हीं की वजह से दुनिया क़ायम है और जो कुछ भी होता है उसके कारन वही हैं, वही

آزادی کی لڑائی کے خلاف قبلا خاں کا ساتھ دیا تھا. اس لئے وہ دیس کے دشمن ثابت ہوئے اور جنتا کی سہانو بھوتی کھو بیٹھے.

منگول راج کا پتن ہونے کے بعد کنگ‌فوتسو دھرم کے ماننے والوں نے ہی کوریا کا راج سنبھالا. اُنہوں نے قانون بنا کر بودھ دھرم کا پرچار بند کردیا اور کوریا کے سب بودھ مندروں اور مٹھوں کو گروا دیا. کوریا کے دو چھوٹے راجاؤں نے اب بھی بودھ دھرم کو اپنائے رکھنے کی کوشش کی. اُنہیں گدی سے اُتار دیا گیا. کوریا کے رہے سہے بودھ بھکشو شہر چھوڑ کر پہاڑوں اور جنگلوں میں جا بسے. وہیں اُنہوں نے اپنے مندر اور مٹھ قائم کئے.

(پانچ) جاپانی راج کا زمانہ (1945-1910 عیسوی)

کچھ صدیوں بعد سن 1910 عیسوی میں جاپانیوں نے کوریا پر قبضہ کرلیا. بودھ دھرم کا کوریا میں پھر پرچار شروع ہوا. لیکن اِس بار بھی ودیشی حکومت کے ساتھ ساتھ بودھ دھرم کوریا میں پھر سے آیا اور ودیشی حکومت کی مدد سے ہی اُسے پھیلانے کی کوشش کی گئی. شہروں میں بودھ مندر اور بودھ مٹھ پھر سے قائم کئے گئے. بودھ دھرم کی پرانی کتابوں کو اکٹھا کرکے اُنہیں نئے سرے سے چھپوایا گیا. جگہ جگہ بودھ سوسائٹیاں قائم کی گئیں. کچھ سمے کے لئے کوریا میں بودھ دھرم کا اثر بڑھتا دکھائی پڑا. اسی بیچ دوسرا مہایدھ چھڑ گیا اور کوریا سے جاپانی راج اُٹھ گیا. اِس کے بعد کوریا میں بودھ دھرم کا کیا حال ہوا ہوگا یہ کہنا ابھی کٹھن ہے.

4—کوریا میں بودھ دھرم کے فرقے

کوریا میں بودھ دھرم کی مہایان سمپردائے کا ہی پرچار ہوا تھا. اس کے کئی فرقے سمے سمے پر کوریا میں قائم ہوئے' جس میں 'سفید کمل پنتھ' کے ماننے والے سب سے زیادہ تھے.

'سفید کمل پنتھ' کو چینی بھکشو ہوئی یوآن نے بھارتی بھکشو بدھ یش اور بدھ بھدر کی مدد سے چین میں قائم کیا تھا. چونکہ اِن بھکشوؤں کا مٹھ ایک ایسے تالاب کے کنارے تھا جس میں سفید کمل کھلتے تھے اس لئے اُن کے فرقے کا نام 'سفید کمل پنتھ' پڑ گیا. اِس پنتھ کا پرچار کوریا میں بھی ہوا.

اِس پنتھ کے لوگ یہ مانتے ہیں کہ گوتم بدھ بھگوان امیتابھ بدھ کے اوتار تھے' امیتابھ بدھ ہی ساری دنیا کے سرجن ہار ہیں' اُنہیں کی وجہ سے دنیا قائم ہے اور جو کچھ بھی ہوتا ہے اُس کے کارن وہی ہیں' وہی

(तीन) कोराई की सलतनत का ज़माना
(918—1392 ई०)

इस ज़माने में बौद्ध धर्म कोरिया का राज धर्म बन चुका था. राज दरबार में बौद्ध धर्म के उत्सव बड़े ठाट से मनाए जाते थे. कोरिया में इसी वक़्त जगह जगह बड़े शानदार बौद्ध मठ क़ायम हुए. क़ानून बनाकर यह हुक्म दिया गया कि जिस आदमी के तीन बेटे हों वह अपना एक बेटा बौद्ध मठ को भिक्षु बनने के लिये सौंप दे. राज कुमारों को पढ़ाने के लिये बौद्ध भिक्षु रखे जाते थे.

चौदहवीं सदी में चीनी सम्राट क़ुबलई खां ने कोरिया पर हमला करके उसे अपने अधीन कर लिया. उसने कोरिया में बौद्ध मत का प्रचार करने में हर तरह की मदद दी. इसी ज़माने में भारती भिक्षु ध्यानभद्र कोरिया आया था.

(चार) चोज़ेन की सलतनत का ज़माना
(1392—1910 ई०)

इस ज़माने में कोरिया के अन्दर यकायक बौद्ध धर्म का पतन शुरू होगया. इस पतन की कहानी भी बौद्ध धर्म के इतिहास में एक अनोखी कहानी है. जब तक कोरिया के अपने देसी राजा ख़ुद बौद्ध धर्म अपनाते रहे और प्रजा को भी उसे अपनाने के लिये हिम्मत दिलाते रहे तब तक कोरिया की जनता का प्रेम बौद्ध धर्म के साथ बना रहा और बढ़ता गया. पर क़ुबलई खां एक विदेशी हमलावर था. कोरिया उससे पहले कभी दूसरों का ग़ुलाम न हुआ था. कोरिया की जनता में क़ुबलई खां के ख़िलाफ़ बग़ावत पैदा होने लगी. क़ुबलई खाँ ने राज का पूरा ज़ोर लगा कर बौद्ध धर्म को फैलाना और मनवाना चाहा. यहाँ तक कि उसके ज़माने में कोरिया के बौद्ध मठ हथियार बन्द फ़ौजों से भरे रहते थे और वहाँ के बौद्ध भिक्षु सिपाहियों की तरह हथियार बाँध कर बाहर निकलते थे. दुराचार और रिश्वत ख़ोरी इनमें और सारे राज के अन्दर बहुत बढ़ी चढ़ी थी. विदेशी राज से नफ़रत बढ़ने के साथ साथ इस तरह बौद्ध धर्म से भी कोरिया वालों के दिलों में नफ़रत पैदा होगई. यही कोरिया के अन्दर बौद्ध धर्म की गिरावट का खुला कारन था. कोरिया वालों ने क़ुबलई खाँ की विदेशी हकूमत को अपने देश से निकाल दिया और उसी के साथ साथ अपने देश के अन्दर से बौद्ध धर्म को भी ख़तम कर दिया.

बौद्ध धर्म की जगह अब कोरिया के अन्दर चीन ही के कंगफ़ूत्सू धर्म ने ली क्योंकि कंगफ़ूत्सू धर्म के मानने वालों ने ही एक क्रान्तिकारी दल बन कर क़ुबलई खाँ के ख़िलाफ़ बग़ावत का झंडा खड़ा किया था. इसीलिये आम जनता कंगफ़ूत्सू दल के साथ होगई. दूसरी तरफ़ बौद्ध भिक्षुओं ने

(تین) کوراٸی کی سلطنت کا زمانہ (918—1392 عیسوی) ۔

اِس زمانے میں بودھ دھرم کوریا کا راج دھرم بن چکا تھا ۔ راج دربار میں بودھ دھرم کے اُتسو بڑے ٹھاٹ سے منائے جاتے تھے ۔ کوریا میں اسی وقت جگہ جگہ بڑے شاندار بودھ مٹھ قائم ہوئے ۔ قانون بناکر یہ حکم دیا گیا کہ جس آدمی کے تین بیٹے ہوں وہ اپنا ایک بیٹا بودھ مٹھ کو بھکشو بننے کے لئے سونپ دے ۔ راج کماروں کو پڑھانے کے لئے بودھ بھکشو رکھے جاتے تھے ۔

چودھویں صدی میں چینی سمراٹ قبلئی خاں نے کوریا پر حملہ کرکے اُسے اپنے ادھین کرلیا ۔ اُس نے کوریا میں بودھ مت کا پرچار کرنے میں ہر طرح کی مدد دی اسی زمانے میں بھارتی بھکشو دھیان بھدر کوریا آیا تھا.

(چار) چوزین کی سلطنت کا زمانہ (1392-1910 عیسوی).

اسی زمانے میں کوریا کے اندر یکایک بودھ دھرم کا پتن شروع ہوگیا ۔ اِس پتن کی کہانی بھی بودھ دھرم کے اتہاس میں ایک انوکھی کہانی ہے ۔ جب تک کوریا کے اپنے دیسی راجہ خود بودھ دھرم اپناتے رہے اور پرجا کو بھی اُسے اپنانے کے لئے ہمت دلاتے رہے تب تک کوریا کی جنتا کا پریم بودھ دھرم کے ساتھ بنا رہا اور بڑھتا گیا ۔ پر قبلئی خاں ایک ودیشی حملہ ور تھا ۔ کوریا اُس سے پہلے کبھی دوسروں کا غلام نہ ہوا تھا ۔ کوریا کی جنتا میں قبلئی خاں کے خلاف بغاوت پیدا ہونے لگی ۔ قبلئی خاں نے راج کا پورا زور لگاکر بودھ دھرم کو پھیلانا اور منوانا چاہا ۔ یہاں تک کہ اُس کے زمانے میں کوریا کے بودھ مٹھ ہتھیار بند فوجوں سے بھرے رہتے تھے اور وہاں کے بودھ بھکشو سپاہیوں کی طرح ہتھیار باندھ کر باہر نکلتے تھے ۔ دراچار اور رشوت خوری اِن میں اور سارے راج کے اندر بہت بڑھی چڑھی تھی ۔ ودیشی راج سے نفرت بڑھنے کے ساتھ اِس طرح بودھ دھرم سے بھی کوریا والوں کے دلوں میں نفرت پیدا ہوگئی تھی ۔ کوریا کے اندر بودھ دھرم کی گراوٹ کا کھلا کارن تھا ۔ کوریا والوں نے قبلئی خاں کی ودیشی حکومت کو اپنے دیش سے نکال دیا اور اُسی کے ساتھ ساتھ اپنے دیش کے اندر سے بودھ دھرم کو ختم کردیا ۔

بودھ دھرم کی جگہ اب کوریا کے اندر چین ہی کے کنگفوتسو دھرم نے لی کیونکہ کنگفوتس دھرم کے ماننے والوں نے ہی ایک کرانتی کاری دل بن کر قبلئی خاں کے خلاف بغاوت کا جھنڈا کھڑا کیا تھا. اسی لئے عام جنتا کنگفوتسو دل کے ساتھ ہوگئی ۔ دوسری طرف بودھ بھکشوؤں نے

(एक) तीन रियासतों का ज़माना (57 बी सी 668 ई०)

इस ज़माने में कोरिया तीन रियासतों में बंटा हुआ था. उत्तर में कोगूरयू, दक्खिन पच्छिम में पाकचे, और दक्खिन पूरब में सिल्ला. सन 372 ईसवी में बौद्ध धर्म का प्रचार उत्तरी राज कोगूरयू में शुरू हुआ. कुछ साल बाद बौद्ध धर्म का संदेश पाकचे रियासत में पहुँचा. और फिर आख़ीर में सन 424 ईसवी में सिल्ला राज में भी बौद्ध धर्म का प्रचार शुरू हुआ.

कोरिया की ज़िन्दगी पर बौद्ध धर्म बहुत जल्दी छा गया क्योंकि उसके मुक़ाबले में उस समय कंगफ़ूत्से या ताओ के समान कोई बड़ा मज़हब कोरिया में न था. फिर जहाँ एक तरफ़ बौद्ध धर्म के शानदार मन्दिर, उसकी असरदार टीमटाम ने कोरिया के सीधे सादे बाशिन्दों को पूरी तौर से अपने बस में कर लिया, दूसरी तरफ़ बौद्ध धर्म के ऊँचे आदर्श कोरिया वालों के दिमाग़ पर छा गए. बौद्ध धर्म ने मर्द और औरत दोनों को बराबरी का दरजा दिया इसलिये औरतें ख़ास तौर से बौद्ध धर्म की तरफ़ झुकीं और उन्होंने कोरिया में बौद्ध धर्म के प्रचार काम में जोश के साथ हिस्सा लिया.

इसी ज़माने में कोरिया के क़रीब क़रीब तमाम शहरों में बौद्ध मन्दिर और बौद्धमठ क़ायम किये गये. कोरिया से बौद्ध भिक्षु भारत गए और वहाँ से बौद्ध साहित्य कोरिया आया.

(दो) सिल्ला की सलतनत का ज़माना (668—918 ई०)

यह ज़माना कोरिया में बौद्ध धर्म के इतिहास का सुनहला ज़माना कहा जाता है. भारत में, चीन में, कोरिया में और एशिया के और देसों में भी इस समय बौद्ध धर्म लोगों की ज़िन्दगी पर पूरी तरह छाया हुआ था. न सिर्फ़ आम जनता ही बल्कि इन देसों के हुक्मरां भी बौद्ध धर्म के कट्टर मानने वाले थे और बौद्ध धर्म के प्रचार में राज की तरफ़ से पूरी मदद दी जाती थी.

चीन में उन दिनों तांग ख़ानदान राज कर रहा था और भारत में सम्राट हर्ष. दोनों बौद्ध थे. कोरिया में सिल्ला का राजा सारे देश पर हुकूमत कर रहा था. सिल्ला में सन 424 ई० में ही बौद्ध धर्म फैल चुका था. इस ज़माने में भी भारत से कोरिया और कोरिया से भारत बहुत से बौद्ध भिक्षु आए और गए. भारती कला का असर इस ज़माने की कोरिया की बुतसाज़ी और नक़्क़ाशी दोनों पर ख़ूब पड़ा.

इसी ज़माने में भारत और कोरिया के बीच समन्दर के ज़रिये तिजारत का भी हाल मिलता है. और इसी समय में चीन के कंगफ़ूत्सू धर्म का प्रचार भी कोरिया में शुरू हुआ.

(ایک) تین ریاستوں کا زمانہ (57 بی . سی — 668 عیسوی)

اس زمانے میں کوریا تین ریاستوں میں بنٹا ہوا تھا . اتر میں کوگوریو' دکھن پچھم میں پاکچے' اور دکھن پورب میں سلہ . سن 372 عیسوی میں بودھ دھرم کا پرچار اتری راج کوگوریو میں شروع ہوا . کچھ سال بعد بودھ دھرم کا سندیش پاکچے ریاست میں پہونچا . اور پھر آخیر میں سن 424 عیسوی میں سلہ راج میں بھی بودھ دھرم کا پرچار شروع ہوا .

کوریا کی زندگی پر بودھ دھرم جلدی چھا گیا کیونکہ اس کے مقابلے میں اُس سمے کنگفوتزے یا تاؤ کے سمان کوئی بڑا مذہب کوریا میں نہ تھا . پھر جہاں ایک طرف بودھ دھرم کے شاندار مندر' اُس کی اثر دار ٹیم ٹام نے کوریا کے سیدھے سادے باشندوں کو پوری طور سے اپنے بس میں کر لیا' دوسری طرف بودھ دھرم کے اونچے آدرش کوریا والوں کے دماغ پر چھا گئے . بودھ دھرم نے مرد اور عورت دونوں کو برابری کا درجہ دیا اِس لئے عورتیں خاص طور سے بودھ دھرم کی طرف جھکیں اور اُنہوں نے کوریا میں بودھ دھرم کے پرچار کام میں جوش کے ساتھ حصہ لیا .

اِسی زمانے میں کوریا کے قریب قریب تمام شہروں میں بودھ مندر اور بودھ مٹھ قائم کئے گئے . کوریا سے بودھ بھکشو بھارت گئے اور وہاں سے بودھ ساہتیہ کوریا آیا .

(دو) سلہ کی سلطنت کا زمانہ (668 — 918 عیسوی)

یہ زمانہ کوریا میں بودھ دھرم کے اتہاس کا سنہلا زمانہ کہا جاتا ہے . بھارت میں' چین میں' کوریا میں' اور ایشیا کے اور دیسوں میں بھی اِس سمے بودھ دھرم لوگوں کی زندگی پر پوری طرح چھایا ہوا تھا . نہ صرف عام جنتا ہی بلکہ اِن دیسوں کے حکمراں بھی بودھ دھرم کے کٹر ماننے والے تھے اور بودھ دھرم کے پرچار میں راج کی طرف سے پوری مدد دی جاتی تھی .

چین میں اُن دنوں تانگ خاندان راج کر رہا تھا اور بھارت میں سمراٹ ہرش . دونوں بودھ تھے . کوریا میں سلہ کا راجہ سارے دیش پر حکومت کر رہا تھا . سلہ میں سن 424 عیسوی میں ہی بودھ دھرم پھیل چکا تھا . اِس زمانے میں بھی بھارت سے کوریا اور کوریا سے بھارت بہت سے بودھ بھکشو آئے اور گئے . بھارتی کلا کا اثر اِس زمانے کی کوریا کی بت سازی اور نقاشی پر خوب پڑا .

اِسی زمانے میں بھارت اور کوریا کے بیچ سمندر کے ذریعہ تجارت کا بھی حال ملتا ہے اور اِسی سمے میں چین کے کنگفوتزو دھرم کا پرچار بھی کوریا میں شروع ہوا .

भिक्षु भारत आए और सैकड़ों यहाँ से चीन गए. चीन में भारती भिक्षुओं ने बौद्ध धर्म के प्रचार में काफ़ी मदद पहुँचाई. इन्हीं भिक्षुओं में से कुछ कोरिया भी गए. कोरिया जाने वाले बौद्ध भिक्षुओं में ध्यानभद्र का नाम ख़ास तौर से लिया जाता है.

ध्यानभद्र बीच भारत का रहने वाला था. उस का चीनी नाम चे-कोंग था. बौद्ध धर्म का प्रचार करने वह चीन गया था. चीन में उस समय मंगोल ख़ानदान राज कर रहा था. मंगोल शब्द से ही मुग़ल शब्द बना है और यह वही ख़ानदान था जिसमें आगे चलकर तैमूर और सम्राट बाबर पैदा हुए. चीन का सम्राट क़ुबलई ख़ाँ जो चंगेज़ ख़ाँ का पोता था बौद्ध धर्म का कट्टर मानने वाला था. मंगोल राजकाल में बौद्ध धर्म चीन का राज धर्म समझा जाता था.

क़ुबलई ख़ाँ ने कोरिया पर हमला कर के उसे अपनी चीनी सलतनत में शामिल कर लिया. बौद्ध धर्म का प्रचार अब वहाँ और ज़ोरों से होने लगा. इस काम में हिस्सा लेने के लिये ध्यानभद्र सन 1326 ईसवी में चीन से कोरिया पहुँचा.

कोरिया में ध्याभद्र 37 साल रहा. इस अरसे में उसने बौद्ध धर्म का प्रचार किया और दो बौद्ध किताबों का अनुवाद चीनी भाषा में किया.

सन 1363 ईसवी में वह कोरिया में ही मरा.

3—कोरिया में बौद्ध धर्म का उठाव और गिराव

भारत और कोरिया के सम्बन्ध को समझने के लिये यह जानना ज़रूरी है कि कोरिया में बौद्ध धर्म का किस तरह प्रचार शुरू हुआ, वह कैसे कोरियाई ज़िन्दगी पर छागया और फिर कैसे और क्यों उसका असर जाता रहा.

कोरिया के इतिहास को आम तौर से पांच हिस्सों में बांटा जाता है :—

(i) तीन रियासतों का ज़माना (57 बी. सी. —668 ईसवी.)

(ii) सिल्ला की सलतनत का ज़माना (668—918 ईसवी.)

(iii) कोराई की सलतनत का ज़माना (918—1392 ईसवी.)

(iv) चोज़ेन की सलतनत का ज़माना 1392 – 1910 ईसवी.)

(v) जापानी राज (1910—1945 ईसवी.)

بھکشو بھارت آئے اور سینکڑوں یہاں سے چین گئے. چین میں بھارتی بھکشوں نے بودھ دھرم کے پرچار میں کافی مدد پہنچائی. انہیں بھکشوں میں سے کچھ کوریا بھی گئے. کوریا جانے والے بودھ بھکشوؤں میں دھیان بھدر کا نام خاص طور سے لیا جاتا ہے.

دھیان بھدر بیچ بھارت کا رہنے والا تھا. اس کا چینی نام چے کونگ تھا. بودھ دھرم کا پرچار کرنے وہ چین گیا تھا. چین میں اس سمے منگول خاندان راج کر رہا تھا. منگول شبد سے ہی مغل شبد بنا ہے اور یہ وہی خاندان تھا جس میں آگے چلکر تیمور اور سمراٹ بابر پیدا ہوئے. چین کا سمراٹ قبلائی خان جو چنگیز خاں کا پوتا تھا بودھ دھرم کا کٹر ماننے والا تھا. منگول راج کال میں بودھ دھرم چین کا راج دھرم سمجھا جاتا تھا.

قبلائی خاں نے کوریا پر حملہ کر کے اُسے اپنی چینی سلطنت میں شامل کر لیا. بودھ دھرم کا پرچار اب وہاں اور زوروں سے ہونے لگا. اِس کام میں حصہ لینے کے لئے دھیان بھدر سن 1326 عیسوی میں چین سے کوریا پہونچا.

کوریا میں دھیان بھدر 37 سال رہا. اِس عرصے میں اُس نے بودھ دھرم کا پرچار کیا اور دو بودھ کتابوں کا انواد چینی بھاشا میں کیا.

سن 1363 عیسوی میں وہ کوریا میں ہی مرا.

3—کوریا میں بودھ دھرم کا اُٹھاؤ اور گراؤ

بھارت اور کوریا کے سمبندھ کو سمجھنے کے لئے یہ جاننا ضروری ہے کہ کوریا میں بودھ دھرم کا کس طرح پرچار شروع ہوا، وہ کیسے کوریائی زندگی پر چھا گیا اور پھر کیسے اور کیوں اس کا اثر جاتا رہا.

کوریا کے اتہاس کو عام طور سے پانچ حصوں میں بانٹا جاتا ہے :—

(i) تین ریاستوں کا زمانہ (57 بی. سی. —668 عیسوی).

(ii) سلہ کی سلطنت کا زمانہ (668 عیسوی — 918 عیسوی)

(iii) کورائی کی سلطنت کا زمانہ (918—1392 عیسوی .)

(iv) چوزین کی سلطنت کا زمانہ (1392—1910 عیسوی .)

(v) جاپانی راج (1910 — 1946 عیسوی .)

कोरिया से आर्यवर्मा पहले चीन की राजधानी चांग-गांन आया. चांग-गांन से वह सन 638 ईसवी में नालन्द पहुँचा. नालन्द में उसने बौद्ध धर्म की बहुत सी किताबों को नक़ल किया. कहा जाता है वह 'विनय पिटक' और 'अभिधर्म शास्त्र' का बहुत बड़ा विद्वान था.

सत्तर बरस की उमर में नालन्द में ही उसकी मृत्यु हो गई.

व्हाई-निये

जिस समय आर्य वर्मा नालन्द में था उसी समय व्हाई-निये नाम नाम का एक और कोरियाई बौद्ध भिक्षु भारत आया. कोरिया से वह भी नालन्द में तालीम हासिल करने आया था.

भारत आकर व्हाई-निये पहले कुछ दिन गया के महा बोधि मन्दिर में रहा. फिर वह नालन्द चला गया. यहीं उसने बौद्ध धर्म की किताबों को नक़ल किया और बौद्ध दरशान की शिक्षा ली.

चीनी यात्री आइ-चिंग सन 671 ई० में चीन से भारत आया था. वह जब नालन्द की लाइब्रेरी में चीनी किताबों को सजा कर रख रहा था तो उसे व्हाई- नियें के हाथ की लिखी कुछ किताबें मिलीं. उसने जिन बौद्ध किताबों को नक़ल किया था वह असल और नक़ल दोनों वहां मौजूद थीं. आइ-चिंग ने मठ के भिक्षुओं से इस बारे में जब पूछ ताछ की तो उसे मालूम हुआ कि व्हाई-नियें नालन्द मठ में रहा करता था और वहीं साठ साल की उमर में उसने शरीर छोड़ा.

व्हेन-ताई

यह भी कोरिया का एक बौद्ध भिक्षु था. इसका भारती नाम सर्वज्ञान देव था. यह सन 650 ईसवी में तिब्बत और नैपाल होकर भारत आया था.

व्हेन-ताई भारत की सभी मशहूर बौद्ध जगहों को देखने गया. भारत में कुछ दिन घूम फिर कर वह कोरिया वापस चला गया.

इन चार भिक्षुओं के अलावा और भी बहुत से बौद्ध भिक्षु कोरिया से भारत आए. कहा जाता है, सातवीं सदी में दो बौद्ध भिक्षु कोरिया से समन्दरी के रास्ते होकर भारत आ रहे थे. पर बदक़िस्मती से श्री विजय (सुमात्रा) पहुँचते ही उनकी मौत हो गई. एक भिक्षु कोरिया से किसी तरह समन्दर के रास्ते भारत पहुँचा पर भारत पहुंचते ही चल बसा.

2 —कोरिया में भारत के भिक्षु

कोरिया में बौद्ध धर्म का प्रचार शुरू होने से पहले चीन में बौद्ध धर्म पहुँच चुका था. चीन से सैकड़ों बौद्ध

کوریا سے آریہ ورما پہلے چین کی راجدھانی چانگ
آیا . چانگ گان سے وہ سن 638 عیسوی میں نالند
نچا . نالند میں اس نے بودھ دھرم کی بہت سی
بوں کو نقل کیا . کہا جاتا ہے وہ 'ونے پیٹک' اور 'ابھی
رم شاستر' کا بہت بڑا ودوان تھا .

ستر برس کی عمر میں نالند میں ہی اسکی مرتیو
ئی .

وھائی نیے

جس سمے آریہ ورما نالند میں تھا اسی سمے وھائی
نام کا ایک اور کوریائی بودھ بھکشو بھارت آیا . کوریا
وہ بھی نالند میں تعلیم حاصل کرنے آیا تھا .

بھارت آکر وھائی نیے پہلے کچھ دن گیا کے مہابودھی
در میں رہا . پھر وہ نالند چلاگیا . یہیں اس نے
دھ دھرم کی کتابوں کو نقل کیا اور بودھ درشن کی
شا لی .

چینی یاتری آئی چنگ سن 671 عیسوی میں
ین سے بھارت آیا تھا . وہ جب نالند کی لائبریری میں
ینی کتابوں کو سجاکر رکھ رہا تھا تو اسے وھائی نیے
ہاتھ کی لکھی کچھ کتابیں ملیں . اس نے
ن بودھ کتابوں کو نقل کیا تھا' وہ اصل اور نقل دونوں
اں موجود تھیں . آئی چنگ نے مٹھ کے بھکشوؤں سے
ں بارے میں جب پوچھ تاچھ کی تو اسے معلوم ہو کہ
ائی نیے نالند مٹھ میں رہا کرتا تھا اور وہیں ساٹھ
ل کی عمر میں اس نے شریر چھوڑا .

وھین تائی

یہ بھی کوریا کا ایک بودھ بھکشو تھا . اِس کا بھارتی نام
وگیان دیو تھا . سن 650 عیسوی میں تبت اور نیپال
کر بھارت آیا تھا .

وھین تائی بھارت کی سبھی مشہور بودھ جگہوں کو دیکھنے
ا . بھارت میں کچھ دن گھوم پھر کر وہ کوریا واپس
لا گیا .

ان چار بھکشوؤں کے علاوہ اور بھی بہت سے بودھ بھکشو
یا سے بھارت آئے . کہا جاتا ہے' ساتویں صدی میں دو
دھ بھکشو کوریا سے سمندر کے راستے ہوکر بھارت آرہے
. پر بدقسمتی سے شری وجے (سماترا) پہونچتے ہی
کی موت ہوگئی . ایک بھکشو کوریا سے کسی طرح
مندر کے راستے بھارت پہونچا پر بھارت پہونچتے ہی
ل بسا .

2 — کوریا میں بھارت کے بھکشو

کوریا میں بودھ دھرم کا پرچار شروع ہونے سے پہلے چین
ں بودھ دھرم پہونچ چکا تھا . چین سے سیکڑوں بودھ

दूसरा यह कि बौद्ध धर्म के तीर्थों में जाकर उन्होंने अपनी श्रद्धा दिखाई.

तीसरा यह कि उन्होंने अनेक बौद्ध किताबों का अनुवाद किया और कुछ को नक़ल भी किया.

कोरिया से भारत आने वाले बौद्ध भिक्षुओं में नीचे लिखे चार नाम मशहूर हैं:—

(i) व्हाई-लुन (ii) आर्यवर्मा (iii) व्हाइ-निये (iv) व्हेनताई.

व्हाई-लुन

व्हाई-लुन का भारती नाम प्रज्ञवर्मन था. भारत के मशहूर बौद्ध स्थानों को देखने और नालन्द में बौद्ध फ़िलासफ़ी की शिक्षा लेने के लिये वह कोरिया से भारत आया.

रास्ते में वह उत्तर चीन की राजधानी लोयांग में ठहरा. लोयांग में चीन के सम्राट ने उससे प्रार्थना की कि वह भारत में मशहूर चीनी बौद्ध भिक्षु व्हेन-चिन की मदद करे. व्हेनचिन सन 639 ई० में चीन से भारत आया था. वह भारत में रहकर बौद्ध किताबों का चीनी भाशा में अनुवाद कर रहा था.

भारत आकर व्हाई-लुन बौद्ध धर्म के सब तीर्थों में गया. बीच भारत के अमरावत मठ में वह बहुत दिन रहा. वहां से वह "तू-हो-ला-से" यानी तुख़ार-मठ गया. इस मठ को एशिया के तुख़ारिस्तान देश के बौद्ध भिक्षुओं ने भारत में अपने रहने के लिये बनवाया था. इसी मठ में व्हाईलुन ने संस्कृत पढ़ी. यहां से वह नालन्द विश्वविद्यालय गया. वहां बौद्ध दरशन की तालीम हासिल कर वह कोरिया वापिस चला गया.

व्हाईलुन ने अपनी भारत यात्रा का बयान एक किताब में लिखा है. वह किताब इतनी मशहूर नहीं हो सकी जितनी फ़ाहियान या हेनसांग की. इस किताब में उसने एक ख़ास बात लिखी है.

वह लिखता है कि उसके भारत आने के क़रीब पांच सौ साल पहले यानी दूसरी सदी ईसवी में उत्तर भारत में श्रीगुप्त नाम के एक राजा राज करते थे. उनके राजकाल में बीस चीनी यात्री भारत आए थे. महाराजा ने उनके रहने और पढ़ने के लिये नालन्द के पास एक बड़ा मकान बनवा दिया जिसे 'चीन मन्दिर' कहते थे. उस मकान के और उन भिक्षुओं के ख़र्च के लिये एक गांव दे दिया गया.

व्हाईलुन लिखता है कि उस मन्दिर के खंडहरों को उसने अपनी आंखों से देखा था.

आर्यवर्मा

आर्यवर्मा कोरिया का बौद्ध भिक्षु था. उसका कोरियाई नाम क्या था यह पता नहीं लगता. वह भी नालन्द में बौद्ध धर्म की तालीम हासिल करने भारत आया था.

دوسرا یہ کہ بودھ دھرم کے تیرتھوں میں جاکر انہوں نے اپنی شردھا دکھائی .

تیسرا یہ کہ انہوں نے ایک بودھ کتابوں کا انوواد کیا اور کچھ کو نقل بھی کیا .

کوریا سے بھارت آنے والے بودھ بھکشوؤں میں نیچے لکھے چار نام مشہور ہیں :—

(i) وہائی لن (ii) آریہ ورما (iii) وہائی نئے (iv) وہین تائی .

وہائی لن

وہائی لن کا بھارتی نام پرگیہ ورمن تھا . بھارت کے مشہور بودھ استھانوں کو دیکھنے اور نالند میں بودھ فلاسفی کی شکشا لینے کے لئے وہ کوریا سے بھارت آیا .

راستے میں وہ اُتر چین کی راجدھانی لویانگ میں ٹھہرا . لویانگ میں چین کے سمراٹ نے اُس سے پرارتھنا کی کہ وہ بھارت میں مشہور چینی بودھ بھکشو وہین-چن کی مدد کرے . وہین چن سن 639 عیسوی میں چین سے بھارت آیا تھا . وہ بھارت میں رہ کر بودھ کتابوں کا چینی بھاشا میں انوواد کر رہا تھا .

بھارت آکر وہائی لن بودھ دھرم کے سب تیرتھوں میں گیا . بیچ بھارت کے امراوت مٹھ میں وہ بہت دن رہا . وہاں سے وہ "تو-ہو-لا-سے" یعنی تخار مٹھ گیا . اس مٹھ کو ایشیا کے تخارستان دیش کے بودھ بھکشوؤں نے بھارت میں اپنے رہنے کے لئے بنوایا تھا . اسی مٹھ میں وہائی لن نے سنسکرت پڑھی . یہاں سے وہ نالند وشوودیالے گیا . وہاں بودھ درشن کی تعلیم حاصل کر وہ کوریا واپس چلا گیا .

وہائی لن نے اپنی بھارت یاترا کا بیان ایک کتاب میں لکھا ہے . وہ کتاب اتنی مشہور نہیں ہوسکی جتنی فاہیان یا ہیون سانگ کی . اس کتاب میں اُس نے ایک خاص بات لکھی ہے .

وہ لکھتا ہے کہ اُس کے بھارت آنے کے قریب پانچسو سال پہلے یعنی دوسری صدی عیسوی میں اُتر بھارت میں شری گپت نام کے ایک راجہ راج کرتے تھے . اُن کے راج کال میں بیس چینی یاتری بھارت آئے تھے . مہاراجہ نے اُن کے رہنے اور پڑھنے کے لئے نالند کے پاس ایک بڑا مکان بنوا دیا جسے 'چین مندر' کہتے تھے . اُس مکان کے اور اُن بھکشوؤں کے خرچ کے لئے ایک گاؤں دے دیا گیا .

وہائی لن لکھتا ہے کہ اُس مندر کے کھنڈروں کو اُس نے اپنی آنکھوں سے دیکھا تھا .

آریہ ورما

آریہ ورما کوریا کا بودھ بھکشو تھا . اُسکا کوریائی نام کیا تھا یہ پتہ نہیں لگتا . وہ بھی نالند میں بودھ دھرم کی تعلیم حاصل کرنے بھارت آیا تھا .

भारत और कोरिया के सम्बन्ध के इस इतिहास को समझने के लिये नीचे लिखी पांच बातें जानना जरूरी हैं—

पहली यह कि, कोरिया और भारत, दोनो एशिया के मुल्क होते हुए भी एक दूसरे से काफ़ी दूर हैं. इन दोनों के बीच चीन का देस है. कोरिया चीन का पड़ोसी है और चीन भारत का. इसलिये पहले तीन सौ साल तक भारत और कोरिया का कलचरी लेन देन चीन की मारफ़त होता रहा. सातवीं सदी में कोरिया से बौद्ध भिक्षु सीधे भारत आने लगे.

दूसरी यह कि, कोरिया जब राजकाजी निगाह से चीन के आधीन नहीं था तब भी वह हमेशा से चीन के कलचरी असर में रहा. चीनी बोली, चीनी धर्म, चीनी राजकाजी और समाजी ढंग और चीनी कला—इन सब को कोरिया वालों ने पूरी तरह अपनाया. इसलिये चीन वालों ने भारत से वालों जो कुछ लिया उसे भी कोरिया वालों ने अपना लिया.

तीसरी यह कि भारत और कोरिया के बीच जो कुछ भी लेन देन हुआ उसका सम्बन्ध सीधे या नासीधे बौद्ध मज़हब से था.

चौथी यह कि भारत का कोरिया के साथ तिजारती सम्बन्ध भी था.

पांचवीं यह कि कोरिया से जितने बौद्ध भिक्षु भारत आए उनमें से कोई इतना मशहूर नहीं हुआ जितना चीनी यात्री फ़ाहियान और ह्वेनसांग. इसलिये इन कोरियाई यात्रियों के बारे में बहुत कम लिखा गया है.

इन बातों को ध्यान में रखते हुए, भारत और कोरिया के मेल के बारे में हमें नीचे लिखी बातों पर एक सरसरी नज़र डालनी होगी:—

(1) भारत में कोरिया के बौद्ध भिक्षु.
(2) कोरिया में भारत के बौद्ध भिक्षु.
(3) कोरिया में बौद्ध धर्म का उठाव और गिराव.
(4) कोरिया में बौद्ध धर्म के फ़िरक़े.
(5) कोरिया में बौद्ध साहित्य.
(6) कोरिया में भारत की कला.

1— भारत में कोरिया के बौद्धि भिक्षु

कोरिया में बौद्ध धर्म का प्रचार सन 372 ईसवी में शुरू हो गया था. सातवीं सदी में कोरिया से बौद्ध भिक्षुओं का भारत आना शुरू हुआ. कोरिया से सैकड़ों बौद्ध भिक्षु भारत आए. भारत में उन्होने ख़ास तौर से तीन काम किये—

पहला यह कि उन्होने नालन्द विश्वविद्यालय में बौद्ध मज़हब की तालीम हासिल की.

بھارت اور کوریا کے سمبندھ کے اس اتہاس کو سمجھنے کے لئے نیچے لکھی پانچ باتیں جاننا ضروری ہیں—

پہلی یہ کہ، کوریا اور بھارت، دونوں ایشیا کے ملک ہوتے ہوئے بھی ایک دوسرے سے کافی دور ہیں. ان دونوں کے بیچ چین کا دیس ہے. کوریا چین کا پڑوسی ہے اور چین بھارت کا. اس لئے پہلے تین سو سال تک بھارت اور کوریا کا کلچری لین دین چین کی معرفت ہوتا رہا. ساتویں صدی میں کوریا سے بودھ بھکشو سیدھے بھارت آنے لگے.

دوسری یہ کہ، کوریا جب راج کاجی نگاہ سے چین کے ادھین نہیں تھا تب بھی وہ ہمیشہ سے چین کے کلچری اثر میں رہا. چینی بولی، چینی دھرم، چینی راج کاجی اور سماجی ڈھنگ اور چینی کلا—ان سب کو کوریا والوں نے پوری طرح اپنایا. اس لئے چین والوں نے بھارت سے جو کچھ لیا اسے بھی کوریا والوں نے اپنا لیا.

تیسری یہ کہ بھارت اور کوریا کے بیچ جو کچھ بھی لین دین ہوا اسکا سمبندھ سیدھے یا ناسیدھے بودھ مذہب سے تھا.

چوتھی یہ کہ بھارت کا کوریا کے ساتھ تجارتی سمبندھ بھی تھا.

پانچویں یہ کہ کوریا سے جتنے بودھ بھکشو بھارت آئے ان میں سے کوئی اتنا مشہور نہیں ہوا جتنا چینی یاتری فاہیان اور ہوین سانگ. اس لئے ان کوریائی یاتریوں کے بارے میں بہت کم لکھا گیا ہے.

ان باتوں کو دھیان میں رکھتے ہوئے، بھارت اور کوریا کے میل کے بارے میں ہمیں نیچے لکھی باتوں پر ایک سرسری نظر ڈالنی ہوگی:—

(1) بھارت میں کوریا کے بودھ بھکشو.
(2) کوریا میں بھارت کے بودھ بھکشو.
(3) کوریا میں بودھ دھرم کا اٹھاؤ اور گراؤ.
(4) کوریا میں بودھ دھرم کے فرقے.
(5) کوریا میں بودھ ساہتیہ.
(6) کوریا میں بھارت کی کلا.

1— بھارت میں کوریا کے بودھ بھکشو—

کوریا میں بودھ دھرم کا پرچار سن 372 عیسوی میں شروع ہوگیا تھا. ساتویں صدی میں کوریا سے بودھ بھکشوؤں کا بھارت آنا شروع ہوا. کوریا سے سیکڑوں بودھ بھکشو بھارت آئے. بھارت میں انہوں نے خاص طور سے تین کام کئے—

پہلا یہ کہ انہوں نے نالندہ وشودیالے میں بودھ مذہب کی تعلیم حاصل کی.

नतीजा

रूस में औरत को हर तरीक़े से मर्द के बराबर कर दिया गया है. सिर्फ़ काग़ज़ पर ही नहीं बल्कि अमल में भी औरत को बराबर के अधिकार मिल गए हैं. शादी ब्याह और तलाक़ के क़ानूनों में पहले ढील दी गई और फिर कड़ाई की जाने लगी. फ़िल्म वग़ैरा के ज़रिये प्रोपेगेन्डा करके शादी की अहमियत और बारबार की शादी से नफ़रत लोगों के दिलों में जमाई गई. उन्हें एक नए जीवन का पैग़ाम सुनाया गया. लोगों की माली हालत सुधार कर शादी के लिये ज़मीन तैयार कर दी गई. जो लोग माली अड़चन की वजह से शादी न कर सकते थे वह बुरे तरीक़ों से वासना की प्यास बुझाते थे. रूस में अब यह बात नहीं रही. रूस में औरत अब मर्द पर माली बोझ नहीं रह गई.

क़ानूनों के ज़रिये कुछ बातें ऐसी की गईं जिनकी मिसाल किसी भी देश में नहीं मिलती. कुछ पूरबी रिपब्लिकों में पहले एक-बेवा को उसके मरे हुए पति के किसी रिश्तेदार से शादी करने पर मजबूर किया जाता था, औरतें भगाई जाती थीं और उनकी इच्छा के ख़िलाफ़ उनसे शादी की जाती थी. लड़कियों को न भगाए जाने, शादी ब्याह या जिन्सी मामलों में किसी तरह की ज़बरदस्ती न होने देने की पूरी ज़िम्मेदारी उस इलाक़े के अफ़सर की है. अगर वह अपने फ़र्ज़ में नाकामयाब होता है तो उस पर अदालत में मुक़दमा चलता है और सख़्त सज़ा दी जाती है.

किसी भी देश में मियां बीवी को साथ साथ रहने की वह आसानी नहीं है जो रूस में है. अगर मर्द का तबादला दूसरी जगह हो जाता है तो क़ानूनन औरत की भी तबदीली उसी जगह की हो जाती है.

रूस में तलाक़ के मुक़दमे कम होते जा रहे हैं. लोग छोड़ पकड़ की प्रवृति से नफ़रत करने लगे हैं और एक संगठित कुटुंबिक जीवन उनका आदर्श बन गया है.

نتیجہ

روس میں عورت کو ہر طریقے سے مرد کے برابر کر دیا گیا ہے۔ صرف کاغذ پر ہی نہیں بلکہ عمل میں بھی عورت کو برابر کے ادھیکار مل گئے۔ شادی بیاہ اور طلاق کے قانونوں میں پہلے ڈھیل دی گئی اور پھر کڑائی کی جانے لگی۔ فلم وغیرہ کے ذریعے پروپیگنڈہ کر کے شادی کی اہمیت اور بار بار کی شادی سے نفرت لوگوں کے دلوں میں جمائی گئی۔ انہیں ایک نئے جیون کا پیغام سنایا گیا۔ لوگوں کی مالی حالت سدھار کر شادی کے لئے زمین تیار کر دی گئی۔ جو لوگ مالی اڑچن کی وجہ سے شادی نہ کر سکتے تھے وہ برے طریقوں سے جو واسنا کی پیاس بجھاتے تھے۔ روس میں اب یہ بات نہیں رہی۔ روس میں عورت اب مرد پر مالی بوجھ نہیں رہ گئی۔

قانونوں کے ذریعے کچھ باتیں ایسی کی گئیں جن کی مثال کسی بھی دیش میں نہیں ملتی۔ کچھ پوربی ریپبلکوں میں پہلے ایک بیوہ کو اس کے مرے ہوئے پتی کے کسی رشتے دار سے شادی کرنے پر مجبور کیا جاتا تھا، عورتیں بھگائی جاتی تھیں اور ان کی اچھا کے خلاف ان سے شادی کی جاتی تھی۔ لڑکیوں کو نہ بھگائے جانے، شادی بیاہ یا جنسی معاملوں میں کسی طرح کی زبردستی نہ ہونے دینے کی پوری ذمہ داری اس علاقہ کے افسر کی ہے۔ اگر وہ اپنے فرض میں ناکامیاب ہوتا ہے تو اس پر عدالت میں مقدمہ چلتا ہے اور سخت سزا دی جاتی ہے۔

کسی بھی دیش میں میاں بیوی کو ساتھ ساتھ رہنے کی وہ آسانی نہیں ہے جو روس میں ہے۔ اگر مرد کا تبادلہ دوسری جگہ ہوجاتا ہے تو قانوناً عورت کی بھی تبدیلی اسی جگہ کی ہوجاتی ہے۔

روس میں طلاق کے مقدمے کم ہوتے جارہے ہیں، لوگ چھوڑ پکڑ کی پرورتی سے نفرت کرنے لگے ہیں اور ایک سنگٹھت کٹمبک جیون ان کا آدرش بن گیا ہے۔

भारत और कोरिया का सम्बन्ध

(भाई भानचन्द्र वर्मा)

आज से क़रीब सोलह सौ साल पहले, सन 372 ईसवी में, गौतम बुद्ध का संदेश कोरिया पहुँचा. कोरिया अपनी सादगी और सचाई के कारन उन दिनों 'संन्यासी देश' कहलाता था. उसी समय से भारत और कोरिया के बीच कल्चरी सम्बन्ध क़ायम हुआ. क़रीब एक हज़ार साल तक यह लेन देन जारी रहा.

بھارت اور کوریا کا سمبندھ

(بھائی بھان چندر ورما)

آج سے قریب سولہ سو سال پہلے سن 372 عیسوی میں، گوتم بدھ کا سندیش کوریا پہونچا۔ کوریا اپنی سادگی اور سچائی کے کارن ان دنوں 'سنیاسی دیش' کہلاتا تھا۔ اسی سمے سے بھارت اور کوریا کے بیچ کلچری سمبندھ قائم ہوا۔ قریب ایک ہزار سال تک یہ لین دین جاری رہا۔

सोवियत अधिकारियों के सामने हर वक़्त रूसी समाज को मज़बूत करने का ख़याल था और वह यह भी नहीं चाहते थे कि आपसी रज़ामन्दी के बजाय किसी दबाव के आधार पर किस को मियां बीबी की तरह रखा जाय. उन्होंने इसीलिये पहले ढील दी और फिर जैसे जैसे लोगों का नैतिक स्तर ऊंचा होता गया वह क़ानून को भी सख़्त करते गए. सन '44 में तीसरा क़ानून पास करके तलाक़ पर रूस में सख़्त रुकावट लगा दी गई.

नए क़ानूनों के अनुसार तलाक़ लेने वाले मर्द या औरत को एक जन अदालत के सामने दरख़ास्त देनी पड़ती है. इस दरख़ास्त को आम लोगों की जानकारी के लिये अख़बारों में छाप दिया जाता है. अगर दरख़ास्त देने वाले इच्छा ज़ाहिर करें तो मुक़दमे की सुनवाई बन्द कमरे में भी हो सकती है. जन अदालत दूसरी पारटी को बुलाने के लिये सम्मन जारी करती है. और दरख़ास्त में दिये कारनों की जाँच परताल करती है. जाँच परताल के बाद जन अदालत का फ़र्ज़ है कि वह हर मुमकिन तरह से दोनों मियां बीबी में मेल कराने की कोशिश करे. जब मेल से नाउम्मीदी हो जाती है तब मुक़दमा ज़ियादा अधिकार वाली एक दूसरी बड़ी अदालत के सामने पेश कर दिया जाता है. इस अदालत को हक़ है कि वह तलाक़ की इजाज़त दे या न दे. अगर तलाक़ की इजाज़त मिल जाती है तो अदालत ही तय करती है कि बच्चे किसके पास रहें और उनका ख़र्च कौन उठाए. साथ ही साथ मियां बीबी की जायदाद के बटवारे का फ़ैसला भी अदालत कर देती है.

अदालत के फ़ैसले के बाद रजिस्ट्रार तलाक़ का सरटिफ़िकेट देता है और दोनों के पासपोर्ट में भी इस अलगाव को दर्ज कर देता है.

तलाक़ के लिये दरख़ास्त देने की फ़ीस अब सौ रूबल है जो क़रीब क़रीब सौ रुपए के बराबर होता है और रजिस्ट्रार के यहाँ से सरटिफ़िकेट लेने की फ़ीस पाँच सौ से दो हज़ार रूबल तक है.

रूस के तलाक़ के क़ानून में अनोखी बात यह है कि क़ानून में तलाक़ देने के लिये कोई कारन नहीं बताए गए. योरप के दूसरे देशों में जो क़ानून इस सम्बन्ध के हैं उनसे ज़ियादातर बदचलनी पर ही तलाक़ मिल सकता है. हर एक मुक़दमे में एक ही कारन नहीं हो सकता. ऐसे भी अदालत के सामने गन्द उछालना और एक दूसरे को बद चलन साबित करने के लिये गवाही दिलवाना वग़ैरा बहुत बुरी बातें हैं.

नए क़ानून पास होने के बाद से रूस में तलाक़ के मुक़दमे 33 फ़ीसदी रह गए हैं. आज योरप और अमरीका में सबसे कम तलाक़ जिस देश में होते हैं वह रूस है.

سوویت ادھیکاریوں کے سامنے ہر وقت روسی سماج کو مضبوط کرنے کا خیال تھا اور وہ یہ بھی نہیں چاہتے تھے کہ آپسی رضامندی کے بجائے کسی دباؤ کے آدھار پر کسی کو میاں بیوی کی طرح رکھا جائے۔ انہوں نے اسی لئے پہلے ڈھیل دی اور پھر جیسے جیسے لوگوں کا نیتک استر اونچا ہوتا گیا وہ قانون کو بھی سخت کرتے گئے۔ سن '44 میں تیسرا قانون پاس کرکے طلاق پر روس میں سخت رکاوٹ لگا دی گئی۔

نئے قانون کے انوسار طلاق لینے والے مرد یا عورت کو ایک جن عدالت کے سامنے درخواست دینی پڑتی ہے۔ اِس درخواست کو عام لوگوں کی جانکاری کے لئے اخباروں میں چھاپ دیا جاتا ہے۔ اگر درخواست دینے والے اِچھا ظاہر کریں تو مقدمہ کی سنوائی بند کمرے میں بھی ہو سکتی ہے۔ جن عدالت دوسری پارٹی کو بلانے کے لئے سمن جاری کرتی ہے۔ اور درخواست میں دیئے کارنوں کی جانچ پڑتال کرتی ہے۔ جانچ پڑتال کے بعد جن عدالت کا فرض ہے کہ وہ ہر ممکن طرح سے دونوں میاں بیوی میں میل کرانے کی کوشش کرے۔ جب میل سے نا اُمیدی ہوجاتی ہے تب مقدمہ زیادہ ادھیکار والی ایک دوسری بڑی عدالت کے سامنے پیش کر دیا جاتا ہے۔ اِس عدالت کو حق ہے کہ وہ طلاق کی اجازت دے یا نہ دے۔ اگر طلاق کی اجازت مل جاتی ہے تو عدالت ہی طے کرتی ہے کہ بچے کس کے پاس رہیں اور اُن کا خرچ کون اُٹھائے۔ ساتھ ہی ساتھ میاں بیوی کی جائداد کے بٹوارے کا فیصلہ بھی عدالت کر دیتی ہے۔

عدالت کے فیصلہ کے بعد رجسٹرار طلاق کا سرٹیفکٹ دیتا ہے اور دونوں کے پاسپورٹ میں بھی اِس الگاؤ کو درج کر دیتا ہے۔

طلاق کے لئے درخواست دینے کی فیس اب سو روبل ہے جو قریب قریب سو روپیہ کے برابر ہوتا ہے اور رجسٹرار کے یہاں سے سرٹیفکٹ لینے کی فیس پانچ سو سے دو ہزار روبل تک ہے۔

روس کے طلاق کے قانون میں انوکھی بات یہ ہے کہ قانون میں طلاق دینے کے لئے کوئی کارن نہیں بتائے گئے۔ یورپ کے دوسرے دیشوں میں جو قانون اِس سمبندھ کے ہیں اُن سے زیادہ تر بدچلنی پر ہی طلاق مل سکتا ہے۔ ہر ایک مقدمے میں ایک ہی کارن نہیں ہو سکتا۔ ایسے بھی عدالت کے سامنے گندھ اُچھالنا اور ایک دوسرے کو بد چلن ثابت کرنے کے لئے گواہی دلوانا وغیرہ بہت بری باتیں ہیں۔

نئے قانون کے پاس ہونے کے بعد سے روس میں طلاق کے مقدمے 33 فیصدی رہ گئے ہیں۔ آج یورپ اور امریکہ میں سب سے کم طلاق جس دیش میں ہوتے ہیں وہ روس ہے۔

रोक लगा दी गई है. पहले यहां क़ायदा था कि मियां और बीवी के रिश्तेदारों में भी शादी नहीं हो सकती थी लेकिन सोवियत में यह क़ायदा अब नहीं माना जाता.

योरप में आम तरीक़े से शादी के बाद औरत मर्द का ख़ानदानी नाम अपना लेती है. रूस में औरत चाहे तो अपना पहले का ख़ानदानी नाम ही क़ायम रख सकती है. नाम बदलना दोनों की मरज़ी पर छोड़ दिया गया है. मर्द चाहे औरत का नाम अपना ले और औरत चाहे मर्द का. दोनों को इस विषय में रजिस्ट्रार के सामने एलान करना पड़ता है. रूस में जब मर्द के नाम को औरत अपना लेती है तो ग्रामर के अनुसार उसको ज़नाना शक्ल दे दी जाती है. जैसे मिस्टर अरज़ेन की बीवी को मिसेज़ अरज़ेना कहा जाता है.

किसी मर्द और औरत की शादी के लिये तीसरे आदमी की रज़ामन्दी की ज़रूरत नहीं होती. मर्द और औरत रजिस्ट्रार के यहाँ दरख़ास्त देते हैं और उसके साथ यह भी साफ़ साफ़ लिखते हैं कि उनकी शादी में कोई क़ानूनी बाधा नहीं है और दोनों एक दूसरे की तन्दुरुस्ती के बारे में पूरी पूरी जानकारी रखते हैं; यह उनकी पहली शादी है, दूसरी शादी है या तीसरी शादी है, और पहली शादी से उनके कोई बच्चा भी है या नहीं.

हर एक का फ़र्ज़ है कि अगर कोई बात शादी में एतराज़ के क़ाबिल है तो वह आकर अदालत को इत्तला दे. इस तरह की इत्तला मिलने पर उस वक़्त तक के लिये शादी मुल्तवी कर दी जाती है जब तक मामले की जाँच न कर ली जाये.

रजिस्ट्रार मर्द और औरत को शादी संबन्धी क़ानून पढ़कर सुनाता है. शादी के रजिस्टर पर तब दोनों दस्तख़त कर देते हैं और रजिस्ट्रार इस शादी का गवाह हो जाता है.

तलाक़

19 दिसम्बर 1917 में तलाक़ संबन्धी वह क़ानून पास किया गया जिसका ऊपर ज़िकर आ चुका है. इस क़ानून के अनुसार तलाक़ बच्चों का खेल हो गया था. तलाक़ हासिल करने की फ़ीस सिनेमा टिकट से भी कम थी. एक कारड लिख कर रजिस्ट्रार को सूचना दे देने से तलाक़ हो जाता था. तलाक़ की दरख़ास्त में तलाक़ लेने का कोई कारन दर्ज करना ज़रूरी नहीं था. सन '36 में इस संबन्ध में दूसरा क़ानून पास किया गया. यह तलाक़ के बारे में ज़रा सख़्त क़दम था. अब मियां बीवी दोनों को रजिस्ट्रार के सामने हाज़िर होना ज़रूरी क़रार दिया गया. उनके पास पोर्ट में भी तलाक़ दर्ज होने लगा और पहले से फ़ीस बढ़ा दी गई.

روک لگا دی گئی ہے ۔ پہلے یہاں قاعدہ تھا کہ میاں اور بیوی کے رشتے داروں میں بھی شادی نہیں ہوسکتی تھی لیکن سوویت میں یہ قاعدہ اب نہیں مانا جاتا ۔

یورپ میں عام طریقے سے شادی کے بعد عورت مرد کا خاندانی نام اپنا لیتی ہے ۔ روس میں عورت چاہے تو اپنا پہلے کا خاندانی نام ہی قائم رکھ سکتی ہے ۔ نام بدلنا دونوں کی مرضی پر چھوڑ دیا گیا ہے ۔ مرد چاہے عورت کا نام اپنا لے اور عورت چاہے مرد کا ۔ دونوں کو اس وشے میں رجسٹرار کے سامنے اعلان کرنا پڑتا ہے ۔ روس میں جب مرد کے نام کو عورت اپنا لیتی ہے تو گرامر کے انوسار اس کو زنانہ شکل دے دی جاتی ہے ۔ جیسے مسٹر ارزن کی بیوی کو مسز ارزینہ کہا جاتا ہے ۔

کسی مرد اور عورت کی شادی کے لئے تیسرے آدمی کی رضامندی کی ضرورت نہیں ہوتی ۔ مرد اور عورت رجسٹرار کے یہاں درخواست دیتے ہیں اور اس کے ساتھ یہ بھی صاف صاف لکھتے ہیں کہ ان کی شادی میں کوئی قانونی بادھا نہیں ہے اور دونوں ایک دوسرے کی تندرستی کے بارے میں پوری پوری جانکاری رکھتے ہیں؛ یہ ان کی پہلی شادی ہے، دوسری شادی ہے یا تیسری شادی ہے اور پہلی شادی سے ان کے کوئی بچہ بھی ہے یا نہیں ۔

ہر ایک کا فرض ہے کہ اگر کوئی بات شادی میں اعتراض کے قابل ہے تو وہ آکر عدالت کو اطلاع دے ۔ اس طرح کی اطلاع ملنے پر اس وقت تک کے لئے شادی ملتوی کر دی جاتی ہے جب تک معاملے کی جانچ نہ کرلی جائے ۔

رجسٹرار مرد اور عورت کو شادی سمبندھی قانون پڑھ کر سناتا ہے ۔ شادی کے رجسٹر پر تب دونوں دستخط کر دیتے ہیں اور رجسٹرار اس شادی کا گواہ ہو جاتا ہے ۔

طلاق

19 دسمبر 1917 میں طلاق سمبندھی وہ قانون پاس کیا گیا جس کا اوپر ذکر آچکا ہے ۔ اس قانون کے انوسار طلاق بچوں کا کھیل ہوگیا تھا ۔ طلاق حاصل کرنے کی فیس سنیما ٹکٹ سے بھی کم تھی ۔ ایک کارڈ لکھکر رجسٹرار کو سوچنا دے دینے سے طلاق ہوجاتا تھا طلاق کی درخواست میں طلاق لینے کا کوئی کارن درج کرنا ضروری نہیں تھا ۔ سن '36 میں اس سمبندھ میں دوسرا قانون پاس کیا گیا ۔ یہ طلاق کے بارے میں ذرا سخت قدم تھا ۔ اب میاں بیوی دونوں کو رجسٹرار کے سامنے حاضر ہونا ضروری قرار دیا گیا ۔ ان کے پاسپورٹ میں بھی طلاق درج ہونے لگا اور پہلے سے فیس بڑھا دی گئی ۔

रोक लग गई. जायदाद बँटाने और सहायता का ऐसा सवाल आ गया कि बहुत ही थोड़े लोग यह जंजाल पालने की हिम्मत करने लगे.

सन '44 में रूस में इस सम्बन्ध में एक और कानून पास हुआ. रूस अब खुशहाल हो चुका था, औरतें पूरी तरह अपने पैरों पर खड़ी हो चुकी थीं. यह वक़्त था जब क़ानूनी लगाम को मोड़ने की ज़रूरत थी. अब एक और नए क़ानून के ज़रिये ग़ैर क़ानूनी शादियों को क़ानूनी मानना बन्द कर दिया गया. केवल उन्हीं शादियों को अब क़ानूनी माना जाने लगा जो सरकारी दफ़्तर में बाक़ायदा रजिस्टर कराई गई हों.

रूस में शादी की प्रथा

आज इस देश में सिर्फ़ उन्हीं शादियों को क़ानूनी माना जाता है जो बाक़ायदा रजिस्ट्रार के दफ़्तर में रजिस्टर कराई गई हों. सोवियत नागरिकों को पूरी आज़ादी है कि वह जो धर्म चाहें मानें और अपने धर्म के मुताबिक़ शादी ब्याह भी करें लेकिन राज ऐसी शादियों को क़ानूनी नहीं मानता.

यहाँ हर नागरिकको पासपोर्ट मिलता है. जिन लोगों की शादी होती है उनके पासपोर्ट पर दर्ज कर दिया जाता है कि इनकी शादी हो चुकी है. इस तरह अपनी पहली शादियों को छुपाया नहीं जा सकता.

सोवियत नागरिक और बाहरी नागरिक के बीच की शादी और या विदेशियों की शादी भी जो रूस में हो मामूली तरीक़े से रजिस्टर की जाती है.

अगर रूसी मर्द या औरत किसी बाहरी औरत या मर्द से शादी कर ले तो उसका नागरी हक़ नहीं छिनता.

शादी के लिये एक ज़रूरी शर्त उमर है. सोवियत रूस बहुत सी आज़ाद रिपब्लिकों का मजमूआ है. ज़ियादातर रिपब्लिकों में औरत और मर्द दोनों की शादी के लिये कम से कम 18 साल उमर मुक़र्रर है. कहीं कहीं हवा पानी के फ़र्क़ को ध्यान में रखकर 16 साल में भी शादी की इजाज़त है.

सोवियत रूस में एक मर्द और एक औरत के सम्बन्ध को बहुत महत्व दिया जाता है और हर तरह से ख़याल रखा जाता है कि कहीं भी एक मर्द या एक औरत का सम्बन्ध ज़ियादा औरतों या ज़ियादा मर्दों से न होने पाए. इस तरह का सम्बन्ध रखने पर सख़्त सज़ा दी जाती है.

जिन लोगों का ख़ून मिलता हो या आधे भाई और आधे बहिन हों उनकी शादी सोवियत रूस में नहीं हो सकती. चचेरे, ममेरे या फुफेरे भाई बहिनों में शादी पर

روک لگ گئی ۔ جائداد بٹانے اور سہائتا کا ایسا سوال آگیا کہ بہت ہی تھوڑے لوگ یہ جنجال پالنے کی ہمت کرنے لگے ۔

سن 44' میں روس میں اِس سمبندھ میں ایک اور قانون پاس ہوا ۔ روس اب خوش حال ہو چکا تھا' عورتیں پوری طرح اپنے پیروں پر کھڑی ہو چکی تھیں ۔ یہ وقت تھا جب قانونی لگام کو موڑنے کی ضرورت تھی ۔ اب ایک اور نئے قانون کے ذریعے غیر قانونی شادیوں کو قانونی ماننا بند کر دیا گیا ۔ کیول اُنہیں شادیوں کو اب قانونی مانا جانے لگا جو سرکاری دفتر میں با قاعدہ رجسٹر کرائی گئی ہوں ۔

روس میں شادی کی پرتھا

آج اِس دیش میں صرف اُنہیں شادیوں کو قانونی مانا جاتا ہے جو با قاعدہ رجسٹرار کے دفتر میں رجسٹر کرائی گئی ہوں سوویت ناگرکوں کو پوری آزادی ہے کہ وہ جو دھرم چاہیں مانیں اور اپنے دھرم کے مطابق شادی بیاہ بھی کریں لیکن راج ایسی شادیوں کو قانونی نہیں مانتا ۔

یہاں ہر ناگرک کو پاسپورٹ ملتا ہے ۔ جن لوگوں کی شادی ہوتی ہے اُن کے پاسپورٹ پر درج کر دیا جاتا ہے کہ اِن کی شادی ہو چکی ہے ۔ اِس طرح اپنی پہلی شادیوں کو چھپایا نہیں جا سکتا ۔

سوویت ناگرک اور باہری ناگرک کے بیچ کی شادی اور یا ودیشیوں کی شادی بھی جو کہ روس میں ہو معمولی طریقے سے رجسٹر کی جاتی ہے ۔

اگر روسی مرد یا عورت کسی باہری عورت یا مرد سے شادی کرے تو اُس کا ناگری حق نہیں چھنتا ۔

شادی کے لئے ایک ضروری شرط عمر ہے ۔ سوویت روس بہت سی آزاد ریپبلکوں کا مجموعہ ہے ۔ زیادہ تر ریپبلکوں میں عورت اور مرد دونوں کی شادی کے لئے کم سے کم 18 سال عمر مقرر ہے ۔ کہیں کہیں ہوا پانی کے فرق کو دھیان میں رکھ کر 16 سال میں بھی شادی کی اجازت ہے ۔

سوویت روس میں ایک مرد اور ایک عورت کے سمبندھ کو بہت مہتو دیا جاتا ہے اور ہر طرح سے خیال رکھا جاتا ہے کہ کہیں بھی ایک مرد یا ایک عورت کا سمبندھ زیادہ عورتوں یا زیادہ مردوں سے نہ ہونے پائے ۔ اِس طرح کا سمبندھ رکھنے پر سخت سزا دی جاتی ہے ۔

جن لوگوں کا خون ملتا ہو یا آدھے بھائی اور آدھے بہن ہوں اُن کی شادی سوویت روس میں نہیں ہو سکتی ۔ چچیرے، ممیرے یا [illegible] بھائی بہنوں میں شادی پر

को सुधारने के बजाय एक नया रास्ता निकाल लिया. औरत की कमज़ोर माली हालत से फ़ायदा उठाया गया. ग़ैर क़ानूनी सम्बन्ध शुरू हो गए. न रहा कोई क़ानून और न तलाक़ की ज़रूरत. इनक़लाब का दौर अभी शुरू ही हुआ था. नया रूस भट्टी से निकल रहा था. औरत अभी पूरी तरह अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो सकी थी. औरत की रक्षा अधिकारियों के लिये संभव नहीं थी और समाज की हालत बदतर होती जा रही थी. आख़िर सन '27 में रूसी अधिकारियों ने फिर एक क़ानून पास किया और इस तरह के ग़ैर क़ानूनी सम्बन्ध को भी क़ानूनी शादी मान कर औरत को नीचे गिरने से रोकने की कोशिश की. नये क़ानून के अनुसार नीचे लिखे सम्बन्ध रखने वाले क़ानूनी मियां बीवी मान लिये गए—

1. वह मर्द और औरत जो साथ रहते हों.
2. जो आम तरीक़े से मियां बीवी समझे जाते हों.
3. जो साझे में घर गृहस्थी रखते हों.
4. जिन्होंने कभी भी एक दूसरे की देख रेख की हो और बच्चों का मिलकर पालन पोसन किया हो.

इसी क़ानून के ज़रिये अधिकारियों ने जायदाद और विरासत की समस्या का भी निपटारा कर दिया.

शादी से पहले की जायदाद के मालिक औरत और मर्द अलग अलग मान लिये गए. लेकिन शादी के बाद की जायदाद में मियां और बीवी का बराबर का अधिकार मान लिया गया. अलगाव हो जाने पर अदालत को उस जायदाद का-बटवारा करने का अधिकार दे दिया गया.

अगर दोनों में से कोई मर जाय तो औरत की जाय-…ाद का मर्द और मर्द की जायदाद की औरत वारिस क़रार …ी गई.

दोनों में से कोई किसी जिस्मानी वजह से काम करने …ह लायक़ न हो तो तलाक़ के बाद दूसरे का उसको …हायता देना फ़र्ज़ माना गया. क़ानून ने उसे हक़ दिया …ि वह यह सहायता अदालत के बल पर हासिल कर सके. …जिस्मानी कमज़ोरी चाहे शादी के पहले की हो और चाहे …लाक़ के बाद पैदा हो गई हो पर यह सहायता देना …ज़रूरी था.

इस क़ानून ने मर्द और औरत किसी को यह हक़ नहीं …िया कि वह किसी दूसरे की कमाई पर मौज करे और …ह काम न करे. अगर दोनों ख़ुद कमाने खाने के क़ाबिल …तो नान नुफ़्क़ा (खाना, कपड़ा वग़ैरा का ख़र्च) मिलने …ज़रूरत नहीं है.

इस क़ानून से [illegible] शादी रचाने वालों पर काफ़ी

کو سدھارنے کے بجائے ایک نیا راستہ نکال لیا. عورت کی کمزور مالی حالت سے فائدہ اٹھایا گیا. پھر قانونی سمبندھ شروع ہوگئے . نہ رہا کوئی قانون اور نہ طلاق کی ضرورت . انقلاب کا دور ابھی شروع ہی ہوا تھا' نیا روس بھٹی سے نکل رہا تھا . عورت ابھی پوری طرح اپنے پیروں پر کھڑی نہیں ہوسکی تھی . عورت کی رکھشا ادھیکاریوں کے لئے سمبھو نہیں تھی اور سماج کی حالت بدتر ہوتی جا رہی تھی. آخر سن '27 میں روسی ادھیکاریوں نے پھر ایک قانون پاس کیا اور اِس طرح کے پھر قانونی سمبندھ کو بھی قانونی شادی مان کر عورت کو نیچے گرنے سے روکنے کی کوشش کی : نئے قانون کے انوسار نیچے لکھے سمبندھ رکھنے والے قانونی میاں بیوی مان لئے گئے .

1. وہ مرد اور عورت جو ساتھ رہتے ہوں—
2. جو عام طریقے سے میاں بیوی سمجھے جاتے ہوں .
3. جو ساجھے میں گرہستی رکھتے ہوں .
4. جنہوں نے کبھی بھی ایک دوسرے کی دیکھ ریکھ کی ہو اور بچوں کا ملکر پالن پوسن کیا ہو .

اسی قانون کے ذریعے ادھیکاریوں نے جائداد اور وراثت کی سمسیا کا بھی نپٹارا کر دیا .

شادی سے پہلے کی جائداد کے مالک عورت اور مرد الگ الگ مان لئے گئے . لیکن شادی کے بعد کی جائداد میں میاں اور بیوی کا برابر کا ادھیکار مان لیا گیا . الگاؤ ہوجانے پر عدالت کو اُس جائداد کا بٹوارہ کرنے کا ادھیکار دے دیا گیا .

اگر دونوں میں سے کوئی مرجائے تو عورت کی جائداد کا مرد اور مرد کی جائداد کی عورت وارث قرار دی گئی .

دونوں میں سے کوئی کسی جسمانی وجہ سے کام کرنے کے لائق نہ ہو تو طلاق کے بعد دوسرے کا اس کو سہائتا دینا فرض مانا گیا . قانون نے اُسے حق دیا کہ وہ یہ سہائتا عدالت کے بل پر حاصل کرسکے . جسمانی کمزوری چاہے شادی کے پہلے کی ہو اور چاہے طلاق کے بعد پیدا ہوگئی ہو پر یہ سہائتا دینا ضروری تھا .

اس قانون نے مرد اور عورت کسی کو یہ حق نہیں دیا کہ وہ کسی دوسرے کی کمائی پر موج کرے اور خود کام نہ کرے . اگر دونوں خود کمانے کھانے کے قابل ہیں تو نان نفقہ (کھانا' کپڑا وغیرہ کا خرچ) ملنے کی ضرورت نہیں ہے .

اِس قانون سے نت نئی شادی رچانے والوں پر کافی

रूस में इन्क़लाब उस ज़माने में हुआ जब कि योरप में स्त्रियों को प्रेम करने और प्रेम के आधार पर शादी करने का अधिकार बहुत पहले से मिल चुका था. रूसी अधिकारियों ने ध्यान से इस विशय पर ग़ौर किया और इस नतीजे पर पहुंचे कि इन शादियों में असली प्रेम का अंश काफ़ी कम है. असर, ओहदा, धनदौलत शादी ब्याह के मामले में प्रभाव डालते हैं. इस ज़हरीली फ़िज़ा में प्रेम का अंकुर मुरझाया रहता है. इस अंकुर को हरा करने के लिये के लिये रूसी अधिकारियों ने सबसे पहले औरत को राजकाजी, माली और समाजी अधिकार दे दिये. मां बनने के बाद जो कठिनाइयां सहनी पड़ती थीं उनको दूर कर दिया. औरत को ख़ुद उसके पैरों पर खड़ा करदिया.

सोवियत विज्ञानियों ने इस बात को मानने से इनकार कर दिया कि इनसान पैदाइशी दुराचारी होता है और ख़ास कर जिन्स के मामले में नित नई औरत से संबन्ध रखने की प्रवृति मर्द में क़ुदरती है. उनका कहना है कि इन सारे दुराचारों की जड़ आदमी की प्रकृति में नहीं है बल्कि परिस्थितियों ने यह हालत उस पर लाद रखा है. दुनिया के इतिहास में पहली बार उन्होंने इनसान को साइन्सी योजनाओं के सहारे सदाचारी बनाने की कोशिश शुरू की.

रूस में जिस तरह उन्होंने माली ख़ुशहाली पैदा की और कुछ बुराइयों का ख़ात्मा किया उसका बयान हम पहले कर चुके हैं. समाज व्यक्तियों से बनता है और व्यक्ति एक मर्द और एक औरत के संबन्ध से पैदा होता है. इसलिये शादी ब्याह कोई व्यक्तिगत समस्या नहीं है. शादी ब्याह पर देश के भविश्य का महल खड़ा है. रूसी अधिकारियों ने समझ लिया था कि बिना इस महत्व से भरी समस्या का हल किये वह रूस में बढ़िया समाज पैदा नहीं कर सकते. आइये देखें शादी ब्याह को संगठित और प्रेम के आधार पर क़ायम करने के लिये उन्होंने क्या किया ?

सन '17 का इनक़लाब होते ही उसी साल दिसम्बर में शादी ब्याह और तलाक़ के बारे में ख़ास क़ानून पास किये गए. इन क़ानूनों में तलाक़ को ख़ूब ढील दे दी गई. मर्द या औरत जिसका मन चाहे रजिस्ट्रार को कार्ड लिखकर तलाक़ हासिल कर सकता था. कुछ लोगों ने इसका नाजायज़ फ़ायदा उठाना शुरू किया. नित न ए ब्याह रचाए जाने लगे. जिस तरह लोग कपड़े बदलते हैं उसी तरह बीवी और मियां बदलने लगे. रोज़ शादी और रोज़ तलाक़ से समझदार लोगों को नफ़रत हुई. ऐसे लोगों का फ़ैक्टरियों और दफ़्तरों में तिरस्कार होने लगा. ट्रेड यूनियन वालों ने इस प्रवृति के ख़िलाफ़ जिहाद शुरू कर दिया. लोगों को रोज़ रोज़ तलाक़ के लिये आने में शर्म आने लगी. उन्होंने अपने

روس میں انقلاب اُس زمانے میں ہوا جبکہ یورپ میں استریوں کو پریم کرنے اور پریم کے آدھار پر شادی کرنے کا ادھیکار بہت پہلے سے مل چکا تھا ۔ روسی ادھیکاریوں نے دھیان سے اس وشے پر غور کیا اور اس نتیجے پر پہونچے کہ اِن شادیوں میں اصلی پریم کا انش کافی کم ہے ۔ اثر، عہدہ، دھن دولت شادی بیاہ کے معاملے میں پربھاؤ ڈالتے ہیں ۔ اِس زہریلی فضا میں پریم کا انکر مرجھایا رہتا ہے ۔ اِس انکر کو ہرانے کے لئے روسی ادھیکاریوں نے سب سے پہلے عورت کو راج کاجی، مالی اور سماجی ادھیکار دے دیئے ۔ ماں بننے کے بعد جو کٹھنائیاں سہنی پڑتی تھیں اُن کو دور کر دیا ۔ عورت کو خود اُس کے پیروں پر کھڑا کر دیا ۔

سوویت وگیانیوں نے اس بات کو ماننے سے انکار کر دیا کہ انسان پیدائشی دراچاری ہوتا ہے اور خاص کر جنس کے معاملے میں نت نئی عورت سے سمبندھ رکھنے کی پرورتی مرد میں قدرتی ہے ۔ اُن کا کہنا ہے کہ اِن سارے دراچاروں کی جڑ آدمی کی پرکرتی میں نہیں ہے بلکہ پرستھیوں نے یہ حالت اُس پر لاد رکھا ہے ۔ دنیا کے اتہاس میں پہلی بار اُنہوں نے انسان کو سائنسی یوجناؤں کے سہارے سداچاری بنانے کی کوشش شروع کی ۔

روس میں جس طرح اُنہوں نے مالی خوش حالی پیدا کی اور کچھ برائیوں کا خاتمہ کیا اُس کا بیان ہم پہلے کر چکے ہیں۔ سماج ویکتیوں سے بنتا ہے اور ویکتی ایک مرد اور ایک عورت کے سمبندھ سے پیدا ہوتا ہے ۔ اِس لئے شادی بیاہ کوئی ویکتی گت سمسیا نہیں ہے ۔ شادی بیاہ پر دیش کے بھوشیہ کا محل کھڑا ہے روسی ادھیکاریوں نے سمجھ لیا تھا کہ بنا اس مہتو سے بھری سمسیا کا حل کئے وہ روس میں بڑھیا سماج پیدا ہی نہیں کر سکتے ۔ آئیے دیکھیں شادی بیاہ کو سنگٹھت اور پریم کے آدھار پر قائم کرنے کے لئے اُنہوں نے کیا کیا ؟

سن '17 کا انقلاب ہوتے ہی اُسی سال دسمبر میں شادی بیاہ اور طلاق کے بارے میں خاص قانون پاس کئے گئے ۔ اِن قانونوں میں طلاق کو خوب ڈھیل دے دی گئی ۔ مرد یا عورت جسکا من چاہے رجسٹرار کو کارڈ لکھ کر طلاق حاصل کر سکتا تھا ۔ کچھ لوگوں نے اِس کا ناجائز فائدہ اُٹھانا شروع کیا ۔ نت نئے بیاہ رچائے جانے لگے ۔ جسطرح لوگ کپڑے بدلتے ہیں اُسی طرح بیوی اور میاں بدلنے لگے ۔ روز شادی اور روز طلاق سے سمجھ دار لوگوں کو نفرت ہوئی ۔ ایسے لوگوں کا فیکٹریوں اور دفتروں میں ترسکار ہونے لگا ۔ ٹریڈ یونین والوں نے اس پرورتی کے خلاف جہاد شروع کر دیا ۔ لوگوں کو روز روز طلاق کے لئے جانے میں شرم آنے لگی ۔ اُنہوں نے اپنے

की इस तरह आहुति को हमारा समाज बड़ी ऊंची नज़र से देखता है. और ऐसी लड़की को 'शीलवती' समझता है. मां बाप का फ़ैसला ज़ियादा तर लोभ पर मुनहसिर होता है. लड़के वाले देखते हैं जहेज़ कहां ज़ियादा मिलेगा और लड़की वाले देखते हैं कम से कम में कौन फंस जायगा.

आइये अपने घरोंदे से बाहर निकलकर देखें प्रेम और शादी का क्या संबन्ध रहा है. शुरू ज़माने में स्त्री पुरुश संबन्ध का स्तर जानवरों से शायद ही कुछ ऊंचा रहा है. उस युग का आदमी इन सब भेदों को नहीं समझता था. धीरे धीरे इनसान को कुछ समझ आई और ग्रुप विवाह का रिवाज पैदा हुआ. एक ग्रुप की सारी औरतें उस ग्रुप के सारे मर्दों से संबन्ध रखती थीं. काम तृप्ति मर्द का हक़ था और औरतें केवल साधन थीं. बच्चा कैसे पैदा होता है इसकी जानकारी उनकी समझ से बाहर की चीज़ थी. आदमी की अक़्ल का और विकास हुआ और उसकी समझ में आया कि बच्चा क्यों कर पैदा होता है, पैदा हुआ नया इनसान ख़ाली औरत ही का बच्चा नहीं है बल्कि मर्द का भी उसके पैदा करने में हिस्सा है. इस समझ के साथ एक मर्द और एक औरत के संबन्ध का विचार पैदा हुआ. समाज के विचारों की इस तबदीली, में औरत की दशा और ख़राब हो गई. बहुतसों के बजाए अब वह एक की जायदाद बन गई. उसका दर्जा मर्द की दासी से ज़ियादा कुछ न था. किसी किसी जगह तो औरत को सारा काम भी ख़ुद ही करना पड़ता था. वक़्त का चक्कर चलता रहा और हर चक्कर के साथ इनसान का विचार भी बदलता गया. आजकल के शादी ब्याह के रीतरिवाज पैदा हुए. शादी ब्याह में दूध और ख़ून के भेद भाव बरते जाने लगे. इस युग के लोग जब जवान होते थे तो साथियों समेत घोड़े पर सवार होकर किसी कमज़ोर क़बीले पर हमला करके कोई लड़की उठा लाते थे और उसे अपनी पत्नी बना लेते थे. ऐसी ज़बरदस्ती की फ़िज़ा में सच्चे प्रेम का अंकुर कैसे पैदा हो सकता था.

धीरे धीरे आदमी को खाने पीने के इन्तज़ाम और रहने सहने की व्यवस्था से कुछ फ़ुरसत मिली. अपने अस्तित्व को कुछ सुरक्षित कर के उसने सोचना शुरू किया. उसने इस संबन्ध में तरह तरह के उसूल बना डाले.

एक मर्द और एक औरत का संबन्ध इनसान ने हज़ारों बरस के तजुरबे से सीखा था. इस रिवाज का मतलब यह नहीं था कि जो मर्द और औरत एक दूसरे को चाहते और पसन्द करते हैं वह आपस में शादी करलें. मर्द को पूरी आज़ादी थी और औरत तरह तरह के बन्धन में जकड़ी हुई थी.

کی اِسطرح آہوتی کو ہمارا سماج بڑی اونچی نظر سے دیکھتا ہے ، اور ایسی لڑکی کو 'شیل وتی' سمجھتا ہے . ماں باپ کا فیصلہ زیادہ تر لوبھ پر منحصر ہوتا ہے . لڑکے والے دیکھتے ہیں جہیز کہاں زیادہ ملے گا اور لڑکی والے دیکھتے ہیں کم سے کم میں کون پھنس جائے گا .

آئیے اپنے گھرونڈے سے باہر نکلکر دیکھیں پریم اور شادی کا کیا سمبندھ رہا ہے . شروع زمانے میں استری پرش سمبندھ کا استر جانوروں سے شاید ہی کچھ اونچا رہا ہے. اُس یگ کا آدمی اِن سب بھیدوں کو نہیں سمجھتا تھا . دھیرے دھیرے انسان کو کچھ سمجھ آئی اور گروپ وواہ کا رواج پیدا ہوا . ایک گروپ کی ساری عورتیں اُسی گروپ کے سارے مردوں سے سمبندھ رکھتی تھیں . کام ترپتی مرد کا حق تھا اور عورتیں کیول سادھن تھیں . بچہ کیسے پیدا ہوتا ہے اِس کی جانکاری اُن کی سمجھ سے باہر کی چیز تھی . آدمی کی عقل کا اور وکاس ہوا اور اُسکی سمجھ میں آیا کہ بچہ کیونکر پیدا ہوتا ہے' پیدا ہوا نیا انسان خالی عورت ہی کا بچہ نہیں ہے بلکہ مرد کا بھی اُس کے پیدا کرنے میں حصہ ہے . اِس سمجھ کے ساتھ ایک مرد اور ایک عورت کے سمبندھ کا وچار پیدا ہوا . سماج کے وچاروں کی اس تبدیلی میں عورت کی دشا اور خراب ہوگئی . بہت سوں کے بجائے اب وہ ایک کی جائداد بن گئی . اُس کا درجہ مرد کی داسی سے زیادہ کچھ نہ تھا . کسی کسی جگہ تو عورت کو سارا کام بھی خود ہی کرنا پڑتا تھا . وقت کا چکر چلتا رہا اور ہر چکر کے ساتھ انسان کا وچار بھی بدلتا گیا . آج کل کے شادی بیاہ کے ریت رواج پیدا ہوئے . شادی بیاہ میں دودھ اور خون کے بھید بھاؤ برتے جانے لگے . اِس یگ کے لوگ جب جوان ہوتے تھے تو ساتھیوں سمیت گھوڑے پر سوار ہوکر کسی کمزور قبیلے پر حملہ کرکے کوئی لڑکی اٹھا لاتے تھے اور اُسے اپنی پتنی بنا لیتے تھے . ایسی زبردستی کی فضا میں سچے پریم کا انکر کیسے پیدا ہوسکتا تھا .

دھیرے دھیرے آدمی کو کھانے پینے کے انتظام اور رہنے سہنے کی ویوستھا سے کچھ فرصت ملی . اپنے استتو کو کچھ سورکشت کر کے اُس نے سوچنا شروع کیا . اُس نے اس سمبندھ میں طرح طرح کے وصول بنا ڈالے .

ایک مرد اور ایک عورت کا سمبندھ انسان نے ہزاروں برس کے تجربے سے سیکھا تھا . اِس رواج کا مطلب یہ نہیں تھا کہ جو مرد اور عورت ایک دوسرے کو چاہتے اور پسند کرتے ہیں وہ آپس میں شادی کر لیں . مرد کو پوری آزادی تھی اور عورت طرح طرح کے بندھن میں جکڑی ہوئی تھی .

आज जब कि दुनिया में इतना बड़ा इनक़लाब बरपा है और आज़ादी की बहार मराको की ज़मीन पर भी मचलने के लिये बेचैन है, वहां के बाशिन्दों की उम्मीद भरी निगाहें इनसानी दुनिया की तरफ़ आम तौर पर और एशिया की आज़ाद क़ौमों की तरफ़ ख़ास तौर पर अपनी आज़ादी के सवाल के हल के लिये लगी हुई हैं.

रूस में सदाचार

शादी और तलाक़

(भाई मुजीब रिज़वी)

किसी ने कहा है शादी कर लेना आसान है पर उसके निबाह के लिये कलचर की ज़रूरत है. सहनशीलता कलचर की एक ही निशानी है. लेकिन इस धींगा मुश्ती के युग में सहनशीलता को कायरता समझा जाता है. सहनशीलता से जब यह दुराव हो तो शादी की गाड़ी कैसे चल सकती है. नतीजा यह है कि ज़ियादातर शादियां असफल हैं, हर घर में यह शिकायत सुनी जा सकती है.

बिना एक दूसरे को जाने समझे और पसन्द किये सच्ची सहनशीलता पैदा नहीं हो सकती और जब तक सहनशीलता का जन्म न हो शादियां भी सफल नहीं हो सकतीं. बिना शादियों को सफल बनाए दुराचार का निपटारा भी नहीं हो सकता. यह सफलता तभी मुमकिन है जब शादियां स्त्री पुरुष की आपसी जानकारी और चुनाव के आधार पर हों और दोनों में प्रेम क्षणिक होने के बजाए दिन बदिन बढ़ता रहे.

दुराचार को मिटाने की लड़ाई में रूसी अधिकारियों ने इस बात को सामने रखा और ऐसी परस्थिती लाने की कोशिश करते रहे जिसमें सच्ची जानकारी और प्रेम के आधार पर शादियां हो सकें.

सवाल होता है क्या अब तक एक दूसरे की जानकारी और प्रेम के आधार पर शादियां नहीं हुईं ? वास्तव में यह विचार बिल्कुल नया है. योरप में अब यह चीज़ पुरानी हो चुकी है लेकिन हमारे देश में अब भी यह एक इन्क़लाबी विचार माना जाता है. इक्का दुक्का बाग़ी कहीं कहीं सर उठाते हैं. समाज उनका तिरस्कार करता है और इस बग़ावत की सज़ा उन्हें कई तरीक़ों से भुगतनी पड़ती है. हमारी स्त्रियां बिल्कुल गऊ हैं. अगर मां बाप उनको क़साई के हाथ भी पकड़ा दें तो उन्हें उज़्र न होना चाहिये. औरत

آج جبکہ دنیا میں اتنا بڑا انقلاب برپا ہے اور آزادی کی بہار مراکو کی زمین پر بھی مچلنے کے لئے بے چین ہے وہاں کے باشندوں کی امید بھری نگاہیں انسانی دنیا کی طرف عام طور پر اور ایشیا کی آزاد قوموں کی طرف خاص طور پر اپنی آزادی کے سوال کے حل کے لئے لگی ہوئی ہیں۔

روس میں سداچار

شادی اور طلاق

(بھائی مجیب رضوی)

کسی نے کہا ہے شادی کر لینا آسان ہے پر اس کے نباہ کے لئے کلچر کی ضرورت ہے۔ سہن شیلتا کلچر کی ایک ہی نشانی ہے۔ لیکن اس دھینگا مشتی کے یگ میں سہن شیلتا کو کایرتا سمجھا جاتا ہے۔ سہن شیلتا سے جب یہ دراؤ ہو تو شادی کی گاڑی کیسے چل سکتی ہے۔ نتیجہ یہ ہے کہ زیادہ تر شادیاں اسپھل ہیں، ہر گھر میں یہ شکایت سنی جاسکتی ہے۔

بنا ایک دوسرے کو جانے سمجھے اور پسند کئے سچی سہن شیلتا پیدا نہیں ہوسکتی اور جب تک سہن شیلتا کا جنم نہ ہو شادیاں بھی سپھل نہیں ہوسکتیں۔ بنا شادیوں کو سپھل بنائے دراچار کا نپٹارا بھی نہیں ہوسکتا۔ یہ سپھلتا تبھی ممکن ہے جب شادیاں استری پرش کی آپسی جانکاری اور چناؤ کے آدھار پر ہوں اور دونوں میں پریم چھنک ہونے کے بجائے دن بدن بڑھتا رہے۔

دراچار کو مٹانے کی لڑائی میں روسی ادھیکاریوں نے اس بات کو سامنے رکھا اور ایسی پرستھتی لانے کی کوشش کرتے رہے جس میں سچی جانکاری اور پریم کے آدھار پر شادیاں ہوسکیں۔

سوال ہوتا ہے کیا اب تک ایک دوسرے کی جانکاری اور پریم کے آدھار پر شادیاں نہیں ہوئیں؟ واستو میں یہ وچار بالکل نیا ہے۔ یورپ میں اب یہ چیز پرانی ہو چکی ہے لیکن ہمارے دیش میں اب بھی یہ ایک انقلابی وچار مانا جاتا ہے۔ اکا دکا باغی کہیں کہیں سر اٹھاتے ہیں۔ سماج ان کا ترسکار کرتا ہے اور اس بغاوت کی سزا انہیں کئی طریقوں سے بھگتنی پڑتی ہے۔ ہماری استریاں بالکل گئو ہیں۔ اگر ماں باپ ان کو قصائی کے ہاتھ بھی پکڑا دیں تو انہیں عذر نہ ہونا چاہئے۔ عورت

यह पालीसी मुक़ामी बाशिन्दों से उनकी रोज़ी छीन कर इनको बिलकुल फ़ाक़ामस्त बना रही है. पूरे मुल्क में डाक्टरी सहायता पहुँचाने के लिये केवल दो सौ डाक्टर हैं लेकिन जनता को क़ाबू में रखने के लिये फ़ौज के अलावा चौदह हज़ार पुलिस रखी गई है. तालीमी बजट का 93 फ़ीसदी हिस्सा फ़्रांसीसी बच्चों की तालीम पर ख़र्च किया जाता है. फ़्रांसीसी कुल टैक्स का केवल 5 फ़ीसदी अदा करते हैं लेकिन मुल्क की आमदनी का 95 फ़ीसदी हिस्सा उनके आराम के लिये ख़र्च होता है. इस ज़ुल्म ने मुल्क को सख़्त माली बदतरी में फँसा दिया है. जनता ग़रीबी, जेहालत और रोग का शिकार हो रही है.

आज कल इस्तक़लाल पारटी वहां की आज़ादी की तहरीक की जान है. आम लोगों के अलावा उसमें उलमाए दीन, कलाकार और व्योपारी भी शामिल हैं. पारटी के पास काफ़ी पूँजी है और वह पूरे अफ़रीक़ा और पच्छिमी एशिया में बहुत असर रखती है. भारत व पाकिस्तान की आज़ादी के बाद से फिर वहां आज़ादी की तहरीक में जान पड़ गई है और वहां का हर रहने वाला आज अपने वतन को ग़ुलामी से छुटकारा दिलाने के लिये बेचैन है. एक तरफ़ इन्डोचीन में फ़्रांसीसी साम्राज की धज्जियां बिखर रही हैं और दूसरी तरफ़ मराको की जनता में आज़ादी की मांग की बाढ़ फ़्रांसीसी साम्राज को कूड़ा करकट की तरह बहा ले जाने के लिये उमंडने ही वाली है. लेकिन फ़्रांस अपनी ताक़त के ज़ोम में इस आने वाले ख़तरे को देख नहीं रहा है और वह जैसे भी हो मराको की ज़मीन पर अपने क़दम जमाए रखना चाहता है.

लोकशाही और आज़ादी का अलमबरदार अमरीका भी फ़्राँस की इस तानाशाही और साम्राजी पालीसी की सिर्फ़ मदद ही नहीं कर रहा है बलिक लोकशाही और आज़ादी ही के नाम पर तीसरी जंग लड़ने के लिये मराको में अपनी फ़ौजें उतार रहा है और हवाई अड्डे क़ायम कर रहा है. एक तरफ़ तो कोरिया को कम्युनिस्टों के हाथों से बचाने के लिये इनसानी ख़ून से होली खेली जा रही है और तीसरी बड़ी लड़ाई तक का ख़तरा मोल लिया जा रहा है और दूसरी तरफ़ न केवल एक क़ौम के ग़ुलामी के ज़माने को लम्बा किया जा रहा है बलिक उसकी ज़िन्दगी भी दूभर की जा रही है.

मराको के बाशिन्दों और उनके प्यारे वतन की आज़ादी के मसले का हल उस कोशिश पर निर्भर है जिसके लिये वहां के जांबाज़ देश भक्त शहादत का प्याला पीते चले आए हैं और उनके अरमानों से भरे दिल आज़ादी की बाट जोहते जोहते वतन की ख़ाक में मिलते रहे हैं. उन्होंने अपने जिगर के ख़ून से अपने पाक वतन को रंग दिया है.

یہ پالیسی مقامی باشندوں سے اُن کی روزی چھین کر اُن کو بالکل فاقہ مست بنا رہی ہے . پورے ملک میں ڈاکٹری سہائتا پہونچانے کے لئے کیول دو سو ڈاکٹر ہیں لیکن جنتا کو قابو میں رکھنے کے لئے فوج کے علاوہ چودہ ہزار پولیس رکھی گئی ہے . تعلیمی بجٹ کا 93 فی صدی حصہ فرانسیسی بچوں کی تعلیم پر خرچ کیا جاتا ہے . فرانسیسی کل ٹیکس کا کیول 5 فی صدی ادا کرتے ہیں لیکن ملک کی آمدنی کا 95 فی صدی حصہ اُن کے آرام کے لئے خرچ ہوتا ہے . اِس ظلم نے ملک کو سخت مالی بدتری میں پھنسا دیا ہے . جنتا غریبی' جہالت اور روگ کا شکار ہو رہی ہے .

آج کل استقلال پارٹی وہاں کی آزادی کی تحریک کی جان ہے . عام لوگوں کے علاوہ اس میں علمائےدین' کلا کار اور بیوپاری بھی شامل ہیں . پارٹی کے پاس کافی پونجی ہے اور وہ پورے افریقہ اور پچھمی ایشیا میں بہت اثر رکھتی ہے . بھارت و پاکستان کی آزادی کے بعد سے پھر وہاں آزادی کی تحریک میں جان پڑ گئی ہے اور وہاں کا ہر رہنے والا آج اپنے وطن کو غلامی سے چھٹکارا دلانے کے لئے بے چین ہے . ایک طرف انڈوچین میں فرانسیسی سامراج کی دھجیاں بکھر رہی ہیں اور دوسری طرف مراکو کی جنتا میں آزادی کی مانگ کی باڑھ فرانسیسی سامراج کو کوڑا کرکٹ کی طرح بہا لیجانے کے لئے امنڈنے ہی والی ہے . لیکن فرانس اپنی طاقت کے زعم میں اِس آنے والے خطرے کو دیکھ نہیں رہا ہے اور وہ جیسے بھی ہو مراکو کی زمین پر اپنے قدم جمائے رکھنا چاہتا ہے .

لوک شاہی اور آزادی کا علمبردار امریکہ بھی فرانس کی اِس تانا شاہی اور سامراجی پالیسی کی صرف مدد ہی نہیں کر رہا ہے بلکہ لوک شاہی اور آزادی ہی کے نام پر تیسری جنگ لڑنے کے لئے مراکو میں اپنی فوجیں اُتار رہا ہے اور ہوائی اڈے قائم کر رہا ہے . ایک طرف تو کوریا کو کمیونسٹوں کے ہاتھوں سے بچانے کے لئے انسانی خون سے ہولی کھیلی جا رہی ہے اور تیسری بڑی لڑائی تک کا خطرہ مول لیا جا رہا ہے اور دوسری طرف نہ کیول ایک قوم کے غلامی کے زمانے کو لمبا کیا جا رہا ہے بلکہ اُس کی زندگی بھی دوبھر کی جا رہی ہے .

مراکو کے باشندوں اور اُن کے پیارے وطن کی آزادی کے مسئلے کا حل اُس کوشش پر نربھر ہے جس کے لئے وہاں کے جانباز دیش بھگت شہادت کا پیالہ پیتے چلے آئے ہیں اور اُن کے ارمانوں سے بھرے دل آزادی کی باٹ جوہتے جوہتے وطن کی خاک میں ملتے رہے ہیں . اُنہوں نے اپنے جگر کے خون سے اپنے پاک وطن کو رنگ دیا ہے .

सन 1936 में स्पेन की घरेलू लड़ाई के मौक़े पर वहां के आज के शासक जनरल फ़रेन्को ने जो उस वक़्त स्पेनी मराको का गवरनर था, एलान किया कि अगर मराको की जनता इस जंग में उसका साथ देगी तो हुकूमत हाथ में आने पर वह उनको आज़ादी की दौलत से माला माल कर देगा. सीधी सादी जनता इस एलान के धोके में आगई. स्पेन की घरेलू लड़ाई के सिलसिले में तीस हज़ार से ज़ियादा मराक़शी सिपाही क़त्ल हुए और उन्हीं की लाशों के ढेर पर जरनल फ़्रान्कों ने एक नया साम्राज खड़ा किया. लेकिन मराको को बजाय आज़ादी मिलने के और ज़ियादा मुसीबतों से दो चार होना पड़ा और ग़ुलामी का शिकन्जा पहले से भी ज़ियादा सख़्त कर दिया गया.

पिछली बड़ी लड़ाई में जबकि फ़्रांस जरमनी के क़बज़े में जा चुका था, इत्तेहादियों की मदद से इसी ज़मीन पर जनरल डेगाले की लीडरी में आज़ाद फ़्रांस की तहरीक परवान चढ़ी. इत्तेहादियों और जनरल डेगाले के बड़े बड़े वादों के जाल में फँस कर हज़ारों मराक़शी नौजवानों ने जंग ख़त्म होने पर आज़ादी मिल जाने की उम्मीद में इस तहरीक की कामयाबी के लिये अपनी जान की बाज़ी लगाई. तारीख़ के पन्ने गवाह हैं कि नाज़ी हवाई जहाज़ों, टैंकों और तोपों का किस दिलेरी से मुक़ाबला करते हुए वह मराको के सपूत मौत से बग़लगीर हुए. इन देश भक्तों को यह कहां ख़बर थी कि मैदान जंग में उनके बहे ख़ून के गारे से फ़्रांसीसी साम्राज की गिरी हुई दीवारें नए सिरे से ऊँची की जायंगी और वही दीवारें उनके वतन को अंत काल तक ग़ुलाम बनाए रखेंगी. रूस जरमन समझौते के ख़िलाफ़ रूस पर हमला करते वक़्त हिटलर ने कहा था कि समझौते तोड़ने ही के लिये किये जाते हैं. चुनांचे फ़्रांस जो नाज़ियों के हाथों ग़ुलामी का मज़ा चख चुका था और उनके ज़ुलमों का शिकार हो चुका था, ख़ुद हिटलर के क़ौल पर अमल करते हुए जंग के अंत पर अपने वादे से फिर गया. यही नहीं मराको पर फ़्रांसीसी साम्राजी शिकन्जा और भी कस दिया गया.

इस वक़्त तक वहाँ चार लाख फ़्रांसीसी आबाद हो चुके हैं और उनका आना और बसना बराबर जारी है. योरप में आए दिन जंग के डर से फ़्रांसीसी पूंजीपति मराको में तरह तरह के कारबार में अपनी पूँजी लगा रहे हैं क्योंकि यह इलाक़ा ज़ियादा महफ़ूज़ है. एक तरफ़ मराको की तिजारत पर ग़ैर मुलकियों का पूरा क़ब्ज़ा होता जारहा है और दूसरी तरफ़ मुक़ामी किसानों को बेदख़ल करके उनकी ज़मीनें नए आए फ़्रांसीसियों को दी जारही हैं. मराको के रहने वाले अपने बाप दादा की दौलत और ज़मीन से महरूम किये जारहे हैं. ग़ैर मुल्की हुकूमत की

سن 1936 میں اسپین کی گھریلو لڑائی کے موقعے پر وہاں کے آج کے شاسک جنرل فرینکو نے جو اُس وقت اسپینی مراکو کا گورنر تھا، اعلان کیا کہ اگر مراکو کی جنتا اِس جنگ میں اُس کا ساتھ دے گی تو حکومت ہاتھ میں آنے پر وہ اِن کو آزادی کی دولت سے مالا مال کردے گا. سیدھی سادی جنتا اِس اعلان کے دھوکے میں آگئی. اسپین کی گھریلو لڑائی کے سلسلے میں تیس ہزار سے زیادہ مراقشی سپاہی قتل ہوئے اور اُنہیں کی لاشوں کے ڈھیر پر جنرل فرینکو نے ایک نیا سامراج کھڑا کیا. لیکن مراکو کو بجائے آزادی ملنے کے اور زیادہ مصیبتوں سے دو چار ہونا پڑا اور غلامی کا شکنجہ پہلے سے بھی زیادہ سخت کردیا گیا.

پچھلی بڑی لڑائی میں جبکہ فرانس جرمنی کے قبضے میں جا چکا تھا، اتحادیوں کی مدد سے اِسی زمین پر جنرل ڈیگالے کی لیڈری میں آزاد فرانس کی تحریک پروان چڑھی. اتحادیوں اور جنرل ڈیگالے کے بڑے بڑے وعدوں کے جال میں پھنس کر ہزاروں مراقشی نوجوانوں نے جنگ ختم ہونے پر آزادی مل جانے کی اُمید میں اِس تحریک کی کامیابی کے لئے اپنی جان کی بازی لگائی. تاریخ کے پنے گواہ ہیں کہ نازی ہوائی جہازوں، ٹینکوں اور توپوں کا کس دلیری سے مقابلہ کرتے ہوئے وہ مراکو کے سپوت موت سے بغلگیر ہوئے. اِن دیش بھکتوں کو یہ کہاں خبر تھی کہ میدان جنگ میں اُن کے بہے خون کے گارے سے فرانسیسی سامراج کی گری ہوئی دیواریں نئے سرے سے اونچی کی جائینگی اور وہی دیواریں اُن کے وطن کو انت کال تک غلام بنائے رکھیں گی. روس جرمن سمجھوتے کے خلاف روس پر حملہ کرتے وقت ہٹلر نے کہا تھا کہ سمجھوتے توڑنے ہی کے لئے کئے جاتے ہیں. چنانچہ فرانس جو نازیوں کے ہاتھوں غلامی کا مزا چکھ چکا تھا اور اُن کے ظلموں کا شکار ہو چکا تھا، خود ہٹلر کے قول پر عمل کرتے ہوئے جنگ کے انت پر اپنے وعدے سے پھر گیا. یہی نہیں مراکو پر فرانسیسی سامراجی شکنجہ اور بھی کس دیا گیا.

اِس وقت تک وہاں چار لاکھ فرانسیسی آباد ہوچکے ہیں اور اُن کا آنا اور بسنا برابر جاری ہے. یورپ میں آئے دن جنگ کے ڈر سے فرانسیسی پونجی پتی مراکو میں طرح طرح کے کاروبار میں اپنی پونجی لگارہے ہیں کیونکہ یہ علاقہ زیادہ محفوظ ہے. ایک طرف مراکو کی تجارت پر غیر ملکیوں کا پورا قبضہ ہوتا جا رہا ہے اور دوسری طرف مقامی کسانوں کو بے دخل کرکے ان کی زمینیں نئے آئے فرانسیسیوں کو دی جارہی ہیں. مراکو کے رہنے والے اپنے باپ دادا کی دولت اور زمین سے محروم کئے جا رہے ہیں. غیر ملکی حکومت کی

गद्दी से उतारने की भी धमकी दी गई थी और उनके सब कामों पर कड़ी पाबन्दी लगा दी गई थी. लेकिन सारे मुल्क में बग़ावत की आग भड़क जाने के डर से जनरल जोएन इन को अलग नहीं कर सका फिर भी वह अपने इस इरादे को अमल में लाने के लिये मौक़ा ढूंढ रहा है.

सातवीं और दसवीं सदी ईसवी के दरमियान मराको अरबों के क़ब्ज़े में आगया और जल्द ही अरब और वहां के असल बाशिन्दे बराबर आपस में घुल मिल गए. अरबों ने वहां लगभग एक हज़ार बरस तक शान और कामयाबी से हकूमत की. उनके ज़माने में मराको ने हर लिहाज़ से बहुत तरक़्क़ी की. लेकिन अट्ठारवीं सदी ईसवी के शुरू से मराको की क़िस्मत का सितारा चक्कर में आ गया. उस ज़माने के सुलतानों की आराम तलबी, क़बीलों के आपसी झगड़ों, जागीरदारों की आपस की लड़ाइयों और आए दिन की घरेलू जंगों ने मुल्क को तबाह व बरबाद और कमज़ोर कर दिया. नतीजा यह हुआ कि योरप के मुल्कों की ललचाई निगाहें उस पर पड़ने लगीं. सन 1912 में फ़्रांस ने उत्तरी इलाक़े की एक पेटी के अलावा जो कि स्पेन के क़ब्ज़े में है, बाक़ी पूरे मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया लेकिन दुनिया को धोका देने के लिये वहां के सुलतान को नाम के लिये बनाए रखा.

ग़ुलामी में जकड़ जाने पर वहां के बाशिन्दों की आंखें खुलीं और उन्होंने अपने घरेलू झगड़े बन्द कर के मिल कर इस नई आफ़त का मुक़ाबला करने के लिये कोशिश शुरू की. तब से बराबर मराको की जनता अपनी आज़ादी के लिये बहुत से क़ौमी नेताओं के मातहत जिन में अमीर अब्दुल करीम ख़ास हैं हर मुमकिन क़ुरबानी करती चली आई है. लेकिन बावजूद इन बेमिसाल क़ुरबानियों और बड़ी बड़ी लड़ाइयों के वह अब तक अपने प्यारे देश को फ़्रांसीसी और स्पेनी साम्राजियों की ग़ुलामी से आज़ाद कराने में कामयाब नहीं हो सकी. आज पूरे मराको में शायद ही ऐसा कोई घर हो जहां का कोई न कोई लाल ज़ालिम फ़्रांसीसियों और स्पेनियों के हाथों मिट्टी में मिलाया न जा चुका हो. मराको में फ़्रांसीसी व स्पेनी राज की तारीख़ के सफ़हे, वहां के बेगुनाह नौजवानों, बूढ़ों, बच्चों और औरतों तक के ख़ून में डूबे हुए हैं.

अमीर अब्दुल करीम ने एक ज़बरदस्त आज़ादी की तहरीक सन 1925 में एक साथ फ़्रांसीसी और स्पेनी साम्राजियों से तमाम मुल्क को पाक करने के लिये शुरू की थी. उस तहरीक की नाकामयाबी और अमीर अब्दुल करीम के देश निकाले के बाद इन ज़ालिम हकूमतों के हाथों हज़ारों बेगुनाह आम लोग बड़ी बेदर्दी से तलवार के घाट उतार दिये गए और तहरीक को इस हद तक कुचला गया कि लोग फिर सर उठाने की हिम्मत न कर सकें.

گدی سے اُتارنے کی بھی دھمکی دی گئی تھی اور اُن کے سب کاموں پر کڑی پابندی لگا دی گئی تھی۔ لیکن سارے ملک میں بغاوت کی آگ بھڑک جانے کے ڈر سے جنرل جوئین اِن کو الگ نہیں کر سکا پھر بھی وہ اپنے اِس ارادے کو عمل میں لانے کے لئے موقع ڈھونڈھ رہا ہے۔

ساتویں اور دسویں صدی عیسوی کے درمیان مراکو عربوں کے قبضے میں آگیا اور جلد ہی عرب اور وہاں کے اصل باشندے برابر آپس میں گھل مل گئے۔ عربوں نے وہاں لگ بھگ ایک ہزار برس تک شان اور کامیابی سے حکومت کی۔ اُن کے زمانے میں مراکو نے ہر لحاظ سے بہت ترقی کی۔ لیکن اٹھارویں صدی عیسوی کے شروع سے مراکو کی قسمت کا ستارا چکر میں آگیا۔ اُس زمانے کے سلطانوں کی آرام طلبی، قبیلوں کے آپسی جھگڑوں، جاگیرداروں کی آپس کی لڑائیوں اور آئے دن کی گھریلو جنگوں نے ملک کو تباہ و برباد اور کمزور کر دیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ یورپ کے ملکوں کی للچائی نگاہیں اُس پر پڑنے لگیں۔ 1912 عیسوی میں فرانس نے اُتری علاقے کی ایک پیٹی کے علاوہ جو کہ اسپین کے قبضہ میں ہے، باقی پورے ملک پر قبضہ کر لیا لیکن دنیا کو دھوکہ دینے کے لئے وہاں کے سلطان کو نام کے لئے بنائے رکھا۔

غلامی میں جکڑ جانے پر وہاں کے باشندوں کی آنکھیں کھلیں اور اُنھوں نے اپنے گھریلو جھگڑے بند کر کے ملکر اس نئی آفت کا مقابلہ کرنے کے لئے کوشش شروع کی۔ تب سے برابر مراکو کی جنتا اپنی آزادی کے لئے بہت سے قومی نیتاؤں کے ماتحت جن میں امیر عبدالکریم خاص ہیں ہر ممکن قربانی کرتی چلی آئی ہے۔ لیکن باوجود اِن بے مثال قربانیوں اور بڑی بڑی لڑائیوں کے وہ اب تک اپنے پیارے دیش کو فرانسیسی اور اسپینی سامراجیوں کی غلامی سے آزاد کرانے میں کامیاب نہیں ہوسکی۔ آج پورے مراکو میں شاید ہی ایسا کوئی گھر ہو جہاں کا کوئی نہ کوئی لال ظالم فرانسیسیوں اور اسپینیوں کے ہاتھوں مٹی میں ملایا نہ جا چکا ہو۔ مراکو میں فرانسیسی و اسپینی راج کی تاریخ کے صفحے، وہاں کے بے گناہ نوجوانوں، بوڑھوں، بچوں اور عورتوں تک کے خون میں ڈوبے ہوئے ہیں۔

امیر عبدالکریم نے ایک زبردست آزادی کی تحریک سن 1925 عیسوی میں ایک ساتھ فرانسیسی اور اسپینی سامراجیوں سے تمام ملک کو پاک کرنے کے لئے شروع کی تھی۔ اُس تحریک کی ناکامیابی اور امیر عبدالکریم کے دیش نکالے کے بعد اِن ظالم حکومتوں کے ہاتھوں ہزاروں بے گناہ عام لوگ بڑی بے دردی سے تلوار کے گھاٹ اُتار دیئے گئے اور تحریک کو اس حد تک کچلا گیا کہ لوگ پھر سر اُٹھانے کی ہمت نہ کرسکیں۔

और एक खूबसूरत व शानदार शहर है. फ़ेज़ इसलामी तालीम का मरकज़ (केन्द्र) है. यहाँ बीच के ज़माने से एक इसलामी यूनिवरसिटी क़ायम है. मराको नामी शहर जो फ़्रान्सीसियों के आने से पहले मुल्क की राजधानी था, एक बारौनक़ शहर है. एटलान्टिक महासागर पर केसाब्लांका यहाँ का एक बढ़ता हुआ बन्दरगाह है. तंजेर नामी शहर व बन्दरगाह अन्तरक़ौमी इन्तज़ाम में है. जबराल्टर के बिलकुल सामने शहर व बन्दरगाह सियोता स्पेनी मराको की राजधानी है. इन शहरों में अरब तामीर कला के अच्छे से अच्छे नमूने दिखाई देते हैं. यहाँ की इमारतें दुनिया की खूबसूरत से खूबसूरत और शानदार से शानदार इमारतों में गिनी जाती हैं.

मराको के रहने वाले मुसलमान हैं. बावजूद योरप के पास होने और फ़्रान्सीसी असर के वहाँ के बाशिन्दे अभी तक पच्छिमी तहज़ीब के असर से बड़ी हद तक बचे हुए हैं. इनकी आदतें, रहन सहन और खाने पीने के ढंग, लिबास, रीत रिवाज और क़ायदे क़ानून सब पर इसलामी और एशियाई तहज़ीब का असर है. वह अपने ऊँचे कैरेक्टर, ईमानदारी, खुदवारी और ग़ैर मामूली मेहमानदारी की बिना पर दुनिया की क़ौमों की तारीख़ में खास जगह रखते हैं. आज भी कोई मराकशी नौजवान अपने बुज़ुर्गों से आँख मिलाकर बात करने या उनके सामने तम्बाकू पीने की हिम्मत नहीं कर सकता.

रबात में मराको के आजकल के शासक सुलतान सैयद मोहम्मद ख़ामिस रहते हैं. लेकिन इन को मुल्क के अन्दर की या बाहर की पालीसी में दख़ल देने का कोई अख़्तियार नहीं है. वह केवल एक नाम के सुलतान हैं. असल में शासन के कुल अधिकार फ़्राँस की सरकार के मुक़र्रर किये हुए रेज़ीडेन्ट जनरल के हाथों में हैं. जिस की आँख के इशारे पर सुलतान का रहना या न रहना निर्भर है. बावजूद इतनी पाबन्दियों के आजकल के सुलतान को वहां की आज़ादी की तहरीक से गहरी दिलचस्पी है. वह एक तरक़्क़ी पसन्द और सच्चे इनसान हैं. और सादा ज़िन्दगी बसर करते हैं. अपने वतन को बाहरी असरों से पाक करके जनता की ज़िन्दगी का स्तर बढ़ाने के लिये उन का दिल बेचैन रहता है. इन्हीं गुनों की बदौलत वह अपनी क़ौम में सब को प्यारे हैं.

वहां की क़ौमी पारटी इस्तक़लाल पारटी के साथ सुलतान की बढ़ती हुई दिलचस्पी को देख कर फ़्राँस की सरकार को ज़बरदस्त ख़तरा महसूस होने लगा था. इसलिये आज कल के रेज़ीडेन्ट जनरल जोयन ने उन पर बेजा दबाव डाल कर उनसे इस्तक़लाल पारटी से अलाहदगी का एलान करा दिया. इस सिलसिले में उनको

اور ایک خوبصورت و شاندار شہر ہے ۔ فیز اسلامی تعلیم کا مرکز (کیندر) ہے ۔ یہاں بیچ کے زمانے سے ایک اسلامی یونیورسٹی قائم ہے ۔ مراکو نامی شہر جو فرانسیسیوں کے آنے سے پہلے ملک کی راجدھانی تھا ایک بارونق شہر ہے ۔ اٹلانٹک مہا ساگر پر کیسا بلانکا یہاں کا ایک بڑھتا ہوا بندرگاہ ہے ۔ تنجیر نامی شہر و بندرگاہ انتر قومی انتظام میں ہے ۔ جبرالٹر کے بالکل سامنے شہر و بندرگاہ سیوطہ اسپینی مراکو کی راجدھانی ہے ۔ اِن شہروں میں عرب تعمیر کلا کے اچھے سے اچھے نمونے دکھائی دیتے ہیں ۔ یہاں کی عمارتیں دنیا کی خوبصورت سے خوبصورت اور شاندار سے شاندار عمارتوں میں گنی جاتی ہیں ۔

مراکو کے رہنے والے مسلمان ہیں ۔ باوجود یورپ کے پاس ہونے اور فرانسیسی اثر کے وہاں کے باشندے ابھی تک پچھمی تہذیب کے اثر سے بڑی حد تک بچے ہوئے ہیں ۔ ان کی عادتیں، رہن سہن اور کھانے پینے کے ڈھنگ، لباس، ریت رواج اور قاعدے قانون سب پر اسلامی اور ایشیائی تہذیب کا اثر ہے ۔ وہ اپنے اونچے کیرکٹر، ایمانداری، خود داری اور غیر معمولی مہمانداری کی بنا پر دنیا کی قوموں کی تاریخ میں خاص جگہ رکھتے ہیں ۔ آج بھی کوئی مراکشی نوجوان اپنے بزرگوں سے آنکھ ملا کر بات کرنے یا اُن کے سامنے تمباکو پینے کی ہمت نہیں کرسکتا ۔

رباط میں مراکو کے آج کل کے شاسک سلطان سید محمد خامس رہتے ہیں لیکن اِن کو ملک کے اندر کی یا باہر کی پالیسی میں دخل دینے کا کوئی اختیار نہیں ہے ۔ وہ کیول ایک نام کے سلطان ہیں ۔ اصل میں شاسن کے کل ادھیکار فرانس کی سرکار کے مقرر کئے ہوئے ریزیڈنٹ جنرل کے ہاتھوں میں ہیں ۔ جس کی آنکھ کے اشارے پر سلطان کا رہنا یا نہ رہنا نربھر ہے ۔ باوجود اتنی پابندیوں کے آجکل کے سلطان کو وہاں کی آزادی کی تحریک سے گہری دلچسپی ہے ۔ وہ ایک ترقی پسند اور سچے انسان ہیں اور سادہ زندگی بسر کرتے ہیں ۔ اپنے وطن کو باہری اثروں سے پاک کرکے جنتا کی زندگی کا استر بڑھانے کے لئے اُن کا دل بے چین رہتا ہے ۔ اِنہیں گنوں کی بدولت وہ اپنی قوم میں سب کو پیارے ہیں ۔

وہاں کی قومی پارٹی استقلال پارٹی کے ساتھ سلطان کی بڑھتی ہوئی دلچسپی کو دیکھکر فرانس کی سرکار کو زبردست خطرہ محسوس ہونے لگا تھا ۔ اسلئے آجکل کے ریزیڈنٹ جنرل جوئین نے اُن پر بے جا دباؤ ڈالکر اُن سے استقلال پارٹی سے علیحدگی کا اعلان کرا دیا ۔ اِس سلسلے میں ان کو

बीच के ज़माने में मराको की तरक़्क़ी का सूरज कमाल पर था और दुनिया की सभ्य क़ौमों के दिलों में उसके बड़प्पन का सिक्का जमा हुआ था. उस ज़माने में यह देश विद्या और कला, तहज़ीब व कलचर का गहवारा समझा जाता था.

तारीख़ से पता चलता है कि पुराने ज़माने ही से यह सर ज़मीन अपने मौक़े और ज़रख़ेज़ी की बिना पर दुनिया की बहुत सी क़ौमों को अपनी तरफ़ खींचती रही है. जिस क़ौम के क़ब्ज़े में अफ़रीक़ा का यह हिस्सा रहा है, उसी का झंडा रोम सागर के अधिकतर मुल्कों पर लहराता रहा है.

मराको उत्तर पच्छिमी अफ़रीक़ा में है. इसके उत्तर में रोम सागर और पच्छिम में एटलान्टिक महा सागर लहरें मारते हैं. दक्खिन में सहारा का बड़ा रेगिस्तान और पूरब में अलजेरिया का इलाक़ा है. इसका फैलाव 2,19,000 मुरब्बा मील है. और आबादी लगभग एक करोड़ है. मुल्क में अरबी और बरबरी ज़बानें बोली जाती हैं. जुग़राफ़िया के ख़याल से मुल्क के तीन हिस्से हैं. उत्तर और पच्छिम के समुन्दरी किनारे के उपजाऊ मैदान, बीच के पहाड़ और पठारी इलाक़े जो अतलस पहाड़ के सिलसिले का एक हिस्सा है और दक्खिन का ऊसर बंजर इलाक़ा जिसमें कहीं कहीं नख़लिस्तान नज़र आते हैं और जो आगे चलकर सहारा रेगिस्तान से मिल जाता है. किनारे के इलाक़ों में आम तौर से न ज़ियादा सरदी होती है और न ज़ियादा गरमी. पहाड़ी और पठारी इलाक़े जाड़े में बहुत ठंडे रहते हैं और दक्खिनी इलाक़े में बरदाश्त के नाक़ाबिल गरमी पड़ती है. बारिश सिर्फ़ जाड़े में होते है. दक्खिनी इलाक़े को छोड़कर यहाँ की ज़मीन आम तौर से उपजाऊ है. गेहूँ, जौ, ज्वार, रुई, तम्बाकू, खजूर, ज़ैतून, सन्तरा, अंगूर और दूसरे मेवे यहाँ की ख़ास पैदावार हैं. यहाँ के घोड़े बहुत मज़बूत और मेहनती होते हैं. सवारी के अलावा वह खेती के काम में भी लाये जाते हैं. यहाँ की भेड़ें अपने अच्छे क़िस्म के ऊन के लिये मशहूर हैं.

खेती बाड़ी और बाग़बानी, क़ालीन व शाल की बुनाई, चाँदी, ताँबा व पीतल के बरतन और चमड़े का सामान, और भेड़ें चराना यहाँ के ख़ास धन्धे हैं. ग़ल्ला, चमड़ा व चमड़े का सामान, ऊन, क़ालीन, ज़ैतून का तेल, मेवा वग़ैरा बाहर जाते हैं और कपड़े, मशीनरी व ज़िन्दगी की दूसरी ज़रूरी चीज़ें बाहर से मँगाई जाती हैं. मराको खानों से भी माला माल है जिन में ताँबा, पीतल, सीसा, जस्ता, निकल, फ़ास्फ़ेट, अबरक़ और कोबाल्ट ख़ास हैं.

रबात, फ़ेज़, मराको, कैसाब्लांका, तंजेर और सियोता यहाँ के बड़े और मशहूर शहर हैं. रबात यहाँ की राजधानी

بیچ کے زمانے میں مراکو کی ترقی کا سورج کمال پر تھا اور دنیا کی سبھیہ قوموں کے دلوں میں اُسکے بڑپپن کا سکہ جما ہوا تھا ۔ اس زمانے میں یہ دیش ودیا اور کلا' تہذیب و کلچر کا گہوارہ سمجھا جاتا تھا ۔

تاریخ سے پتہ چلتا ہے کہ پرانے زمانے ہی سے یہ سر زمین اپنے موقع اور زرخیزی کی بنا پر دنیا کی بہت سی قوموں کو اپنی طرف کھینچتی رہی ہے۔ جس قوم کے قبضہ میں افریقہ کا یہ حصہ رہا ہے' اُسی کا جھنڈا روم ساگر کے ادھک تر ملکوں پر لہراتا رہا ہے ۔

مراکو اُتر پچھمی افریقہ میں ہے ۔ اس کے اُتر میں روم ساگر اور پچھم میں اٹلانٹک مہا ساگر لہریں مارتے ہیں ۔ دکھن میں صحارا کا بڑا ریگستان ہے اور پورب میں الجیریا کا علاقہ ہے۔ اس کا پھیلاؤ 2,19,000 مربع میل ہے اور آبادی لگ بھگ ایک کروڑ ہے ۔ ملک میں عربی اور بربری زبانیں بولی جاتی ہیں ۔ جغرافیہ کے خیال سے ملک کے تین حصے ہیں ۔ اتر اور پچھم کے سمندری کنارے کے اُپجاؤ میدان' بیچ کے پہاڑ اور پٹھاری علاقے جو اطلس پہاڑ کے سلسلے کا ایک حصہ ہے اور دکھن کا اوسر بنجر علاقہ جس میں کہیں کہیں نخلستان نظر آتے ہیں اور اور جو آگے چل کر صحارا ریگستان سے مل جاتا ہے ۔ کنارے کے علاقوں میں عام طور سے نہ زیادہ سردی ہوتی ہے اور نہ زیادہ گرمی ۔ پہاڑی اور پٹھاری علاقے جاڑے میں بہت ٹھنڈے رہتے ہیں اور دکھنی علاقے میں برداشت کے ناقابل گرمی پڑتی ہے ۔ بارش صرف جاڑے میں ہوتی ہے ۔ دکھنی علاقے کو چھوڑ کر یہاں کی زمین عام طور سے اُپجاؤ ہے ۔ گیہوں' جو' جوار' روئی' تمباکو' کھجور' زیتون' سنترہ' انگور اور دوسرے میوے یہاں کی خاص پیداوار ہیں ۔ یہاں کے گھوڑے بہت مضبوط اور محنتی ہوتے ہیں ۔ سواری کے علاوہ وہ کھیتی کے کام میں بھی لائے جاتے ہیں ۔ یہاں کی بھیڑیں اپنے اچھی قسم کے اون کے لئے مشہور ہیں ۔

کھیتی باڑی اور باغبانی' قالین و شال کی بنائی' چاندی' تانبہ و پیتل کے برتن اور چمڑے کا سامان اور بھیڑیں چرانا یہاں کے خاص دھندے ہیں۔ غلہ' چمڑہ و چمڑے کا سامان' اون' قالین' زیتون کا تیل' میوہ وغیرہ باہر جاتے ہیں اور کپڑے' مشینری و زندگی کی دوسری ضروری چیزیں باہر سے منگائی جاتی ہیں ۔ مراکو کھانوں سے بھی مالا مال ہے جن میں تانبا' پیتل' سیسہ' جستہ' نکل' فاسفیٹ' ابرق' اور کوبالٹ خاص ہیں ۔

رباط' فیز' مراکو' کیسا بلانکا' تنجیر اور سیوطہ یہاں کے بڑے اور مشہور شہر ہیں ۔ رباط یہاں کی راجدھانی

(26)

व मुजस्समा आज़ादी का देखते होंगे किस दिल से
हास्मारक देख के आँसू पीते होंगे किस दिल से
ी का दिन भूके नंगे मनाते होंगे किस दिल से
रते होंगे किस दिल से ये जीते होंगे किस दिल से
ालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(27)

की चंचल उंगलियों ने बिजली की रगों को छेड़ा है
ों में इस उड़ती हुई नागिन के फनों को छेड़ा है
अंधकार के सागर की बेकल लहरों को छेड़ा है
ूक के रखदें जल थल को ऐसी किरनों को छेड़ा है
ालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(28)

बिजली को बस में किया ख़ुद को बस में ला ही न सकी
ा को काम में लाई मगर इनसान के काम आ ही न सकी
को गरमाया लेकिन सीनों को गरमा ही न सकी
ाटन दबाने वाली सभ्यता दिल का बटन पा ही न सकी
डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(29)

ढालने वालों को मानवता के साँचे में ढलना आए
बेचैनों को विश्व शान्ति की गोदी में पलना आए
ती हुई इस तीसरी जंग की आग को टलना आए
काश ज़मीं पर इनसानों को सहज सहज चलना आए
ालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए.

मराको

(भाई सैयद ज़मीर हसन काज़िमी)

कुछ महीनों से मराको का नाम अख़बारों के सफ़ों पर ा रहा है लेकिन बावजूद इतनी सियासी, फ़ौजी माली अहमियत के मराको के बारे में लोगों की जान- बहुत कम है. जैसे जैसे तीसरी बड़ी जंग का ख़तरा आता है वैसे वैसे यह देश राजकाज से दिलचस्पी वालों का ध्यान अपनी तरफ़ खींचता जा रहा है.

(26) मुजस्समा = मूरत; महा स्मारक = बड़ी यादगार.
(27) चिर अंधकार = कभी न मिटने वाला अंधेरा.

(26)

یہ سب مجسمہ آزادی کا دیکھتے ہونگے کس دل سے
یہ مہا سمارک دیکھ کے آنسو پیتے ہونگے کس دل سے
آزادی کا دن بھوکے ننگے مناتے ہونگے کس دل سے
یہ مرتے ہونگے کس دل سے یہ جیتے ہونگے کس دل سے
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(27)

وگیان کی چنچل انگلیوں نے بجلی کی رگوں کو چھیڑا ہے
آکاشوں میں اس اڑتی ہوئی ناگن کے پھنوں کو چھیڑا ہے
چراندھکار کے ساگر کی بیکل لہروں کو چھیڑا ہے
جو پھونک کے رکھدیں جل تھل کو ایسی کرنوں کو چھیڑا ہے
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(28)

لوہے بجلی کو بس میں کیا خود کو بس میں لا ہی نہ سکی
انسان کو کام میں لائی مگر انسان کے کام آ ہی نہ سکی
ہاتھوں کو گرمایا لیکن سینوں کو گرما ہی نہ سکی
یہ بٹن دبانے والی سبھیتا دل کا بٹن پا ہی نہ سکی
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(29)

ہم ڈھالنے والوں کو مانوتا کے سانچے میں ڈھلنا آئے
ان بےچینوں کو وشو شانتی کی گودی میں پلنا آئے
سلگاتی ہوئی اس تیسری جنگ کی آگ کو ٹلنا آئے
اے کاش زمیں پر انسانوں کو سہج سہج چلنا آئے
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

مراکو

(بھائی سید ضمیر حسن کاظمی)

کچھ مہینوں سے مراکو کا نام اخباروں کے صفحوں پر نظر آرہا ہے لیکن باوجود اتنی سیاسی، فوجی اور مالی اہمیت کے مراکو کے بارے میں لوگوں کی جانکاری بہت کم ہے۔ جیسے جیسے تیسری بڑی جنگ کا خطرہ پاس آتا جاتا ہے ویسے ویسے یہ دیش راج کاج سے دلچسپی رکھنے والوں کا دھیان اپنی طرف کھینچتا جا رہا ہے۔

(6) مجسمہ = مورت؛ مہا سمارک = بڑی یادگار۔
(27) چراندھکار = کبھی نہ مٹنے والا اندھیرا۔

(21)

गर बातें इनकी बन जाएँ, गर घातें इनकी चल जाएँ
दुनिया को साफ़ निगल जाएँ, धरती पे हकूमत फ़रमाएँ
इस देस के करता धरता अपना काम जो पूरा कर पाएँ
दुनिया भर पर एक रोज़ सितारे और धारियाँ लहराएँ
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(22)

वह वालस्ट्रीट का सट्टा ख़ाना व्हाइट हाउस का साज़िश घर
वह दल्लाली के दाँव पेच वह डलुमेसी के छू मंतर
वह लूटालूट तिजारत में वह प्रजा तंत्र का अडम्बर
वह लेन देन की धूम धाम वह राजनीति की अगर मगर
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(23)

इस वाल स्ट्रीट में दुनिया का दीवाला बोला जाता है
जो लुटवादे, जो बिकवादे वह खाता खोला जाता है
इस व्हाइट हाउस में सब की दुखती रगों को टटोला जाता है
सरकारों, मुल्कों, क़ौमों को काँटों में तोला जाता है
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(24)

उस देस में सबसे बड़ा अपराध है चीन रूस से हमदर्दी
इस से भी बड़ा जुर्म है अम्ने आलम का होना हामी
और ऐटम बम के ख़िलाफ़ तो जिसने भूले से एक बात कही
उसने तो बैठे बिठाए मोल एक आफ़त अपने सर लेली
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(25)

सोलह करोड़ में एक करोड़ को मज़दूरी या काम नहीं
यानी कम से तीन करोड़ * को चैन नहीं आराम नहीं
यह आलम है तो कैसे कहिये जीना उन पे हराम नहीं
जीवन का सहारा टूट चला है सुबह नहीं या शाम नहीं
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(24) अम्ने आलम = विश्व शान्ति; हामी = समर्थक.

* एक करोड़ बेरोज़गारों के बाल बच्चे मिलकर कम से कम तीन करोड़ होंगे.

(21)

گر باتیں ان کی بن جائیں، گر گھاتیں ان کی چل جائیں
دنیا کو صاف نگل جائیں، دھرتی پہ حکومت فرمائیں
اِس دیس کے کرتا دھرتا اپنا کام جو پورا کر پائیں
دنیا بھر پر اک روز ستارے اور دھاریاں لہرائیں
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(22)

وہ وال اسٹریٹ کا سٹہ خانہ وھائٹ ہاؤس کا سازش گھر
وہ دلالی کے داؤں پیچ وہ ڈپلومیسی کے چھو منتر
وہ لوٹا لوٹ تجارت میں وہ پرجا تنتر کا آڈمبر
وہ لین دین کی دھوم دھام وہ راج نیت کی اگر مگر
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(23)

اِس وال اسٹریٹ میں دنیا کا دیوالہ بولا جاتا ہے
جو لٹوا دے، جو بکوادے وہ کھاتا کھولا جاتا ہے
اِس وھائٹ ہاؤس میں سب کی دکھتی رگوں کو ٹٹولا جاتا ہے
سرکاروں، ملکوں، قوموں کو کانٹوں میں تولا جاتا ہے
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(24)

اُس دیس میں سب سے بڑا اپرادھ ہے چین روس سے ہمدردی
اِس سے بھی بڑا جرم ہے امن عالم کا ہونا حامی
اور ایٹم بم کے خلاف تو جس نے بھولے سے اِک بات کہی
اُس نے تو بیٹھے بٹھائے مول اِک آفت اپنے سر لے لی
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(25)

سولہ کروڑ میں ایک کروڑ کو مزدوری یا کام نہیں
یعنی کم سے کم *تین کروڑ کو چین نہیں آرام نہیں
یہ عالم ہے تو کیسے کہئیے جینا اُن پہ حرام نہیں
جیون کا سہارا ٹوٹ چلا ہے صبح نہیں یا شام نہیں
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(24) امن عالم = وشو شانتی؛ حامی = سمرتھک ۔

* ایک کروڑ بیروزگاروں کے بال بچے ملکر کم سے کم تین کروڑ ہونگے ۔

(16)

आज़ादी, दया, धरम, इन्साफ़ की इस तकज़ीब को क्या कहिये
यू. एन. ओ. में "आज़ाद" गुलामों की तरतीब को क्या कहिये
इन्सानी कारबार में शैतानी तरकीब को क्या कहिये
जो डस ले रहती दुनिया को ऐसी तहज़ीब को क्या कहिये
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(17)

याँ लोग हैं अपने अपने लिये याँ कोई किसी का दर्द नहीं
यह बात कान में पड़ी नहीं यह ख़बर उन्होंने सुनी नहीं
तारीख़ उस मोड़ पे है कि जहाँ गुंजायश इसकी रही नहीं
जो काम करें वह भूकों मरें बेकारों की कोई कमी नहीं
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(18)

कुल इनसानों को चन्द इनसान मोल ले लें बेदाम दरम
इनसान इनसान का साथी है, इनसान इनसान का है हमदम
इसको यह बताते हैं धोका, यह कहते हैं इसको महा भरम
ख़ुदग़रज़ी इस तहज़ीब की जड़, बेदर्दी बुनियादे-महकम
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(19)

दुनिया भर का ब्योपार मिटाकर ख़ुद ब्योपारी बन बैठा
सच्ची झूटी मूरत गढ़कर दुनिया का पुजारी बन बैठा
इनसाँ को *सूअरों का चारा देकर भंडारी बन बैठा
बन्दर को मिली हलदी की गिरह फ़ौरन पंसारी बन बैठा
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(20)

सर से क़दम तक मोहलिक हरबे एक सिपाही सौ हथियार
यह दुनिया का पालनहार यह तहज़ीब का ठेकेदार
टैंक, तोप, बारूद बनाना उसका सबसे बड़ा ब्योपार
नक़दी लेकर मौत बेचना सबसे चोखा कारोबार
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

---

(16) तकज़ीब = झुटलाना.
(18) हमदम = साथी; बुनियादे महकम = मज़बूत नींव.
* माइलो एक बहुत घटिया अनाज जो अमरीका में सुअरों को खिलाया जाता है. हिन्दुस्तान में अनाज की कमी पूरी करने के लिये करोड़ों रुपए का माइलो अमरीका ने भेजा है.
(20) मोहलिक हरबे = घातक हथियार

(16)

آزادی، دیا، دھرم، انصاف کی اس تکذیب کو کیا کہئے
یو۔ این۔ او۔ میں "آزاد" غلاموں کی ترتیب کو کیا کہئے
انسانی کاروبار میں شیطانی ترکیب کو کیا کہئے
جو ڈس لے رہتی دنیا کو ایسی تہذیب کو کیا کہئے
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(17)

یاں لوگ ہیں اپنے اپنے لئے یاں کوئی کسی کا ہمدرد نہیں
یہ بات کان میں پڑی نہیں یہ خبر انہوں نے سنی نہیں
تاریخ اس موڑ پہ ہے کہ جہاں گنجائش اسکی رہی نہیں
جو کام کریں وہ بھوکوں مریں بیکاروں کی کوئی کمی نہیں
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(18)

کل انسانوں کو چند انسان مول لے لیں بے دام درم
انسان انسان کا ساتھی ہے، انسان انسان کا ہے ہمدم
اس کو یہ بتاتے ہیں دھوکا، یہ کہتے ہیں اس کو مہابھرم
خود غرضی اس تہذیب کی جڑ بے دردی بنیاد محکم
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(19)

دنیا بھر کا بیوپار مٹاکر خود بیوپاری بن بیٹھا
سچی جھوٹی مورت گڑھکر دنیا کا پجاری بن بیٹھا
انساں کو *سووروں کا چارہ دیکر بھنڈاری بن بیٹھا
بندر کو ملی ہلدی کی گرہ فوراً پنساری بن بیٹھا
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(20)

سر سے قدم تک مہلک حربے ایک سپاہی سو ہتھیار
یہ دنیا کا پالنہار یہ تہذیب کا ٹھیکیدار
ٹینک، توپ، بارود بنانا اسکا سب سے بڑا بیوپار
نقدی لے کر موت بیچنا سب سے چوکھا کاروبار
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

---

(16) تکذیب = جھٹلانا۔
(18) ہمدم = ساتھی؛ بنیاد محکم = مضبوط نیو۔
* مائلو ایک بہت گھٹیا اناج جو امریکہ میں سووروں کو کھلایا جاتا ہے۔ ہندستان میں اناج کی کمی پوری کرنے کے لئے کروڑوں روپے کا مائلو امریکہ نے بھیجا ہے۔
(20) مہلک حربے = گھاتک ہتھیار۔

(11)

दुनिया भर को बरबाद करे, दुनिया भर का निर्माता भी
दुनिया भर का विद्रोही भी, दुनिया भर का निज भ्राता भी
दुनिया भर को भूका मारे, दुनिया भर का अन्नदाता भी
दुनिया भर में ख़ैरात करे दुनिया भर पर ललचाता भी
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(12)

इस देस में डालर के सेठों के दिल की कली कब फूटती है
जब उनकी तिजारत दुनिया भर को एक भाव से लूटती है
रुपए में तीन अठन्नी भुनाने की आदत कब छूटती है
सोने पर सोना गिरता है, माया पर माया टूटती है
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(13)

रिशवत, धमकी और क़त्ल के भी यों अपना काम चलाते हैं
लिंचिंग क्या है गोरे मिलकर हबशियों को ज़िन्दा जलाते हैं
इन जुर्मों में यों बड़े बड़े सज्जनगन हाथ बटाते हैं
और इस कोढ़ी तहज़ीब पे ये इस दरजा नाज़ फ़रमाते हैं
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(14)

इस गैंग्स्टर तर्ज़े-ज़िन्दगी से अब दुनिया भर को ख़तरा है
इस गैंग्स्टर राज नीत से अब दुनिया में क़ियामत बरपा है
इस गैंग्स्टर चोल झपट्टे ने सारे संसार को लूटा है
इस गैंग्स्टर सट्टे बट्टे ने दुनिया को नरक बनाया है
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(15)

ए के मानी हैं ऐटम बम, एच का मतलब है हाइड्रोजन बम
बच्चों के ककहरों को देखो खुल जायगा सारा भेद भरम
स्कूलों, घरों, दफ़्तरों दफ़्तरों बाज़ारों में मचा है एक उधम
ले देके यहाँ वालों के लिये बस मारकाट है धरम करम
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

---

(11) निर्माता = काम बनाने वाला; विद्रोही = बाग़ी, दुश्मन; निज भ्राता = सगा भाई. (13) गैंग्स्टर = लुटेरों, डाकुओं के गरोह से सम्बंध रखने वाले. (15) ककहरों = अलिफ़ बे, क ख की किताबें.

(11)

دنیا بھر کو برباد کرے، دنیا بھر کا نرماتا بھی
دنیا بھر کا ودروہی بھی، دنیا بھر کا نج بھراتا بھی
دنیا بھر کو بھوکا مارے، دنیا بھر کا اَن داتا بھی
دنیا بھر میں خیرات کرے دنیا بھر پر للچاتا بھی
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(12)

اس دیس میں ڈالر کے سیٹھوں کے دل کی کلی کب پھوٹتی ہے
جب اُن کی تجارت دنیا بھر کو ایک بھاؤ سے لوٹتی ہے
روپے میں تین اٹھنی بھنانے کی عادت کب چھوٹتی ہے
سونے پر سونا گرتا ہے، مایا پر مایا ٹوٹتی ہے
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(13)

رشوت، دھمکی اور قتل سے بھی یاں اپنا کام چلاتے ہیں
لنچنگ کیا ہے گورے ملکر حبشیوں کو زندہ جلاتے ہیں
ان جرموں میں یاں بڑے بڑے سجن گن ہاتھ بٹاتے ہیں
اور اس کوڑھی تہذیب پہ یہ اس درجہ ناز فرماتے ہیں۔
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(14)

اس گینگسٹر طرز زندگی سے اب دنیا بھر کو خطرہ ہے
اس گینگسٹر راج نیتی سے اب دنیا میں قیامت برپا ہے
اس گینگسٹر چول جھپٹے نے سارے سنسار کو لوٹا ہے
اس گینگسٹر سٹے بٹے نے دنیا کو نرک بنایا ہے
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(15)

اے کے معنی ہیں ایٹم بم، ایچ کا مطلب ہے ہائڈروجن بم
بچوں کے ککہروں کو دیکھو کھل جائے گا سارا بھید بھرم
اسکولوں، گھروں، دفتروں بازاروں میں مچا ہے ایک اُدھم
لے دے کے یہاں والوں کے لئے بس مار کاٹ ہے دھرم کرم
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

---

(11) نرماتا = کام بنانے والا؛ ودروہی = باغی، دشمن؛ نج بھراتا = سگا بھائی۔ (13) گینگسٹر = لٹیروں، ڈاکوؤں کے گروہ سے سمبندھ رکھنے والے۔ (15) ککہروں = الف، ب، کا کھا کی کتابیں۔

(6)

दुनिया भरसे सट्टा बट्टा, दुनिया भरसे व्योपार भी है
दुनिया भर पर है दया भाव, दुनिया भर पर उपकार भी है
सब के हक़ का दल्लाल भी है, आज़ादी का ठीकेदार भी है
इस सेवा भाव के सदक़े में दुनिया का बंटा धार भी है
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(7)

स्कूलों, कालिजों, यूनिवर्सिटियों की न वहाँ क़िल्लत न कमी
वह तहरीरों की नोक झोंक, तक़रीरों की गरमा गरमी
वह लेक्चर हालों की भीड़ भाड़ वह पारटियों में धमा धमी
दुनिया भर की ऐसी तैसी वह राजनीत में हट धरमी
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(8)

वह हालीवुड का परिस्तान, वह फ़िल्मों की झलका झलकी
वह नर्म गुलाबी मुस्कराहटें आँखों में हलकी हलकी
वह नोक पलक वह हर मूरत जोबन रस से छलकी छलकी
वह ऐक्टरों की लपक झपक वह ऐक्ट्रेसें छलबल कलकी
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(9)

वह बहरी बेड़े जल थल जोत के रख देने के चक्कर में
वह वायुयान मंडलाते हुए आकाशों के भव सागर में
वह उड़न क़िले जो अंगारे बरसा जाएं दुनिया भर में
वह बम्बारों के दल बादल जो आग लगादें घर घर में
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(10)

वह भारी टैंक जो हफ़्तख़्वान तय कर डालें बेख़ौफ़-ओ-ख़तर
वह आर्टिलरी फ़ौलाद आग का बढ़ता हुआ गहन गिरिवर
वह तोपें जिनकी बाढ़ों से बन जाँय चटानों में सरोवर
वह दुनिया भरकी मौत का सामाँ, आफ़त, ग़ारत, फ़ितना-ओ-शर
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(7) क़िल्लत = कमी; (9) बहरी बेड़े = समुन्दरी बेड़े; वायुयान = हवाई जहाज़; बम्बार = बमबरसाने वाले. (10) हफ़्तख़्वान = रुस्तम को उसकी बहादुरी का इम्तहान लेने के लिये, सात महान काम सौंपे गए थे. सात कठिन से कठिन मंज़िलें या काम; आर्टिलरी = तोप.ख़ाना; गहन गिरिवर = बड़े भारी पहाड़; सरोवर = झील; फ़ितना-ओ-शर = ख़राबी, बरबादी.

(6)

دنیا بھر سے سٹا بٹا، دنیا بھر سے بیوپار بھی ہے
دنیا بھر پر ہے دیا بھاؤ دنیا بھر پر اپکار بھی ہے
سب کے حق کا دلال بھی ہے آزادی کا ٹھیکیدار بھی ہے
اس سیوا بھاؤ کے صدقے میں دنیا کا بنٹا دھار بھی ہے
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(7)

اسکولوں، کالجوں، یونیورسٹیوں کی نہ وہاں قلت نہ کمی
وہ تحریروں کی نوک جھونک تقریروں کی گرما گرمی
وہ لکچر ہالوں کی بھیڑ بھاڑ وہ پارٹیوں میں دھما دھمی
دنیا بھر کی ایسی تیسی وہ راج نیت میں ہٹ دھرمی
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(8)

وہ ہالی وڈ کا پرستان وہ فلموں کی جھلکا جھلکی
وہ نرم گلابی مسکراہٹیں آنکھوں میں ہلکی ہلکی
وہ نوک پلک وہ ہر مورت جوبن رس سے چھلکی چھلکی
وہ ایکٹروں کی لپک جھپک وہ ایکٹریسیں چھل بل کل کی
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(9)

وہ بحری بیڑے جل تھل جوت کے رکھ دینے کے چکر میں
وہ وایو یان منڈلاتے ہوئے آکاشوں کے بھو ساگر میں
وہ اڑن قلعے جو انگارے برسا جائیں دنیا بھر میں
وہ بمباروں کے دل بادل جو آگ لگا دیں گھر گھر میں
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(10)

وہ بھاری ٹینک جو ہفت خواں طے کر ڈالیں بے خوف و خطر
وہ آرٹلری فولاد آگ کا بڑھتا ہوا گہن گریور
وہ توپیں جنکی باڑھوں سے بن جائیں چٹانوں میں سروور
وہ دنیا بھر کی موت کے ساماں آفت، غارت، فتنہ و شر
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(7) قلت = کمی (9) بحری بیڑے = سمندری بیڑے؛ وایو یان = ہوائی جہاز؛ بمبار = بم برسانے والے۔ (10) ہفت خواں = رستم کو اسکی بہادری کا امتحان لینے کے لئے سات مہان کام سونپے گئے تھے۔ سات کٹھن سے کٹھن منزلیں یا کام؛ آرٹلری = توپ خانہ؛ گہن گریور = بڑے بھاری پہاڑ؛ سروور = جھیل؛ فتنہ و شر = خرابی، بربادی

हम डालर देस को देख आए

(भाई रघुपति सहाय 'फ़िराक़')

(1)

है रंग बिरंग वहाँ जीवन, हम डालर देस को देख आए
वह हरा भरा दौलत का चमन, हम डालर देस को देख आए
खाने के मज़े कपड़ों की फबन, हम डालर देस को देख आए
कोऊ काहूमें मगन, कोऊ काहूमें मगन, हम डालर देसको देख आए
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(2)

वह रातों को भी दिन का समाँ, वह दूकानें जगमग जगमग
वह रेल पेल मोटर कारों की, हर ड्राइवर हुशियार सजग
वह रुकती बढ़ती हुई ट्रैफ़िक, वह दब जाने का डर पग पग
बाज़ारों का हंगामा जुदा, घन्टों भोंपों का शोर अलग
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(3)

वह लक़ दक़ साठ मंज़िले बातें आसमान से करते हुए
हर मंज़िल एक दुनिया जिस पर सौ वहम-ओ-गुमान गुज़रते हुए
वह घनघनाहटें लिफ़्टों की रह रहकर चढ़ते उतरते हुए
अरबों खरबों के कारबार दिन रात बिगड़ते सँवरते हुए
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(4)

भक्तों को सुनाई दे जाती है गिरधर की मुरली की भनक
ज़िन्दानों में रह रहकर क़ैदी सुनते हैं ज़ंजीरों की झनक
कान आहट पर रखकर प्रेमी, सुन लेते हैं नूपुर की झनक
दिल की धड़कन से आती है हर कान में याँ डालर की खनक
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(5)

बाजे गाजे का राग भी है और बाल डान्स का रंग भी है
ईजादों की भरमार भी है, विज्ञान, कला, गुन ढंग भी है
कुछ दान पुन्न का स्वांग भी है, उपदेश पाठ सत्संग भी है
और इनके अलावा भी कुछ बातें हैं जिनसे दुनिया दंग भी है
हम डालर देस को देख आए, हम डालर देस को देख आए

(2) ट्रैफ़िक = सवारियाँ और सड़क की भीड़; (3) वहम-ओ-गुमान = ख़याल विचार; लिफ़्टों = बिजली से चढ़ने उतरने वाली मशीन; (4) ज़िन्दानों = जेलों; (5) बाल डांस = अंगरेज़ी नाच जिसमें औरत मर्द मिलकर नाचते हैं;

ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(بھائی رگھوپتی سہائے 'فراق')

(1)

ہے رنگ برنگ وہاں جیون، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے
وہ ہرا بھرا دولت کا چمن، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے
کھانے کے مزے کپڑوں کی پھبن، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے
کوؤ کاہو میں مگن، کوؤ کاہو میں مگن، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(2)

وہ راتوں کو بھی دن کا سماں، وہ دوکانیں جگمگ جگمگ
وہ ریل پیل موٹر کاروں کی، ہر ڈرائیور ہشیار سجگ
وہ رکتی بڑھتی ہوئی ٹریفک، وہ دب جانے کا ڈر پگ پگ
بازاروں کا ہنگامہ جدا، گھنٹوں بھونپوں کا شور الگ
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(3)

وہ لق دق ساٹھ منزلے باتیں آسمان سے کرتے ہوئے
ہر منزل اک دنیا جس پر سو وہم و گمان گذرتے ہوئے
وہ گھنگھناہٹیں لفٹوں کی رہ رہکر چڑھتے اترتے ہوئے
اربوں کھربوں کے کار بار دن رات بگڑتے سنورتے ہوئے
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(4)

بھکتوں کو سنائی دے جاتی ہے گردھر کی مرلی کی بھنک
زندانوں میں رہ رہ کر قیدی سنتے ہیں زنجیروں کی جھنک
کان آہٹ پر رکھکر پریمی سن لیتے ہیں نوپر کی جھنک
دل کی دھڑکن سے آتی ہے ہر کان میں یاں ڈالر کی کھنک
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(5)

باجے گاجے کا راگ بھی ہے اور بال ڈانس کا رنگ بھی ہے
ایجادوں کی بھرمار بھی ہے وگیان کلا گن ڈھنگ بھی ہے
کچھ دان پن کا سوانگ بھی ہے، اپدیش پاٹھ ستسنگ بھی ہے
اور ان کے علاوہ بھی کچھ باتیں ہیں جن سے دنیا دنگ بھی ہے
ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے، ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے

(2) ٹریفک = سواریاں اور سڑک کی بھیڑ؛ (3) وہم و گمان = خیال وچار؛ لفٹوں = بجلی سے چڑھنے اترنے والی مشین۔ (4) زندانوں = جیلوں؛ (5) بال ڈانس = انگریزی ناچ جس میں عورت مرد ملکر ناچتے ہیں۔

सरकारी दफ़्तरों में और क़ानूनी सभाओं और अदालतों में अंगरेज़ी की जगह बरती जायगी. यह जनता की भाशा नहीं, विद्वानों की जबान होगी. इसके माने यह हुए कि जैसे कभी संस्कृत की छुत पड़ी थी, जिस की जगह कभी फ़ारसी ने ली थी और अब अंगरेज़ी ले रही है, उसकी जगह यह नई भाशा की छुत पड़ेगी. ख़याल अच्छा है ! हम में जात पात का भेद तो बहुत पुराना है. मतों का भेद भी काफ़ी पुराना है. इन मतों में भाशा का भेद कुछ नया है जो दिनों दिन ज़ोर पकड़ रहा है. भाशा न्यारी न्यारी, लिपि अलग अलग. काँगरेस कहती है कि अब सूबों का भी बटवारा भाशा के अनुसार होगा. हर प्रान्त में ऊँची से ऊँची पढ़ाई उस प्रान्त की भाशा में दी जायगी, जिसका शायद यह फल हो कि हर एक प्रान्त में एक विद्वानों की प्रान्ती भाशा और दूसरी आम जनता की, और फिर विद्वान भी शायद दो प्रकार के होंगे, एक प्रान्ती भाशा के और एक राश्ट्री भाशा के. और बहुत मुमकिन है कि आजकल के संस्कृत विद्वानों की तरह अंगरेज़ीदाँ भी अपने को एक अलग क्लास समझें ! उनके अख़बार, किताबें, क्लबें ही नहीं बिरादरी भी अलग बन जाय. हर एक प्रान्त की महाजनी लिपि अलग और तो और हर एक मत की लिपि अलग. जाति सेवा भाव तो मुद्दत से सुनते आए थे अब प्रान्ती सेवा भाव की भनक भी कानों में पड़ने लगी है. हमारा इतिहास तो यही सिखाता है कि जहाँ राज बहुत फैला तो आपस की फूट ने उसे रहने न दिया. देखिये कल क्या होता है. यह साफ़ है कि एक नई ज़बान बना कर समाज में एक और छुत डालना, जिसकी सीढ़ी न हो, नादानी सी मालूम होती है. क्यों न दिल्ली या आसपास की बोली को ही दफ़तरी ज़बान बनाया जाय. मेरा मतलब केवल भाशा के ढाँचे और बुनावट से है, शब्द तो सब जगह से लिये जा सकते हैं. अगर कुछ साइन्सी टर्मों की कमी दिखाई दे तो नई टर्में बनाने की जगह क्यों न उन टर्मों से ही काम लें जो आज कल सरकारी दफ़्तरों में बरती जाती हैं. आख़िर अगर दिल्ली ही राजधानी रही तो यहाँ के आस पास की बोली ही राज की बोली बनेगी. फिर क्यों नहीं इस नेक काम में हमारी सरकार इस बोली का हाथ बटाती.

अन्त में पँडित पद्म सिंह शर्मा की तरह मैं भी अपनी किताब को, केवल पहला शब्द बदल कर अकबर के इस शेर से ख़तम करता हूँ :—

"बोली में जो सब शरीक होने के नहीं,
इस मुल्क के काम ठीक होने के नहीं.
मुमकिन नहीं शेख़ अमरुल क़ैस बनें,
पँडित जी बालमीक होने के नहीं."

سرکاری دفتروں میں اور قانونی سبھاؤں اور عدالتوں میں انگریزی کی جگہ برتی جائے گی. یہ جنتا کی بھاشا نہیں، ودوانوں کی زبان ہوگی. اِس کے معنے یہ ہوئے کہ جیسے کبھی سنسکرت کی چھوت پڑی تھی، جس کی جگہ کبھی فارسی نے لی تھی اور اب انگریزی لے رہی ہے، اُس کی جگہ یہ نئی بھاشا کی چھوت پڑے گی. خیال اچھا ہے! ہم میں جات پات کا بھید تو بہت پرانا ہے. متوں کا بھید بھی کافی پرانا ہے. اِن متوں میں بھاشا کا بھید کچھ نیا ہے جو دنوں دن زور پکڑ رہا ہے. بھاشا نیاری نیاری، لپی الگ الگ. کانگریس کہتی ہے کہ اب صوبوں کا بھی بٹوارا بھاشا کے انوسار ہوگا. ہر پرانت میں اونچی سے اونچی پڑھائی اُس پرانت کی بھاشا میں دی جائے گی، جس کا شاید یہ پھل ہو کہ ہر ایک پرانت میں ایک ودوانوں کی پرانتی بھاشا اور دوسری عام جنتا کی، اور پھر ودوان بھی شاید دو پرکار کے ہونگے، ایک پرانتی بھاشا کے اور ایک راشٹری بھاشا کے. اور بہت ممکن ہے کہ آجکل کے سنسکرت ودوانوں کی طرح انگریزی داں بھی اپنے کو ایک الگ کلاس سمجھیں! اُن کے اخبار، کتابیں، کلبیں ہی نہیں برادری بھی الگ بن جائے. ہر ایک پرانت کی مہاجنی لپی الگ اور تو اور ہر ایک مت کی لپی الگ. جاتی سیوا بھاؤ تو مدت سے سنتے آئے تھے، اب پرانتی سیوا بھاؤ کی بھنک بھی کانوں میں پڑنے لگی ہے. ہمارا اتہاس تو یہی سکھاتا ہے کہ جہاں راج بہت پھیلا تو آپس کی پھوٹ نے اُسے رہنے نہ دیا. دیکھئے کل کیا ہوتا ہے. یہ صاف ہے کہ ایک نئی زبان بنا کر سماج میں ایک اور چھوت ڈالنا، جس کی سیڑھی نہ ہو، نادانی سی معلوم ہوتی ہے. کیوں نہ دلی یا آس پاس کی بولی کو ہی دفتری زبان بنایا جائے. میرا مطلب کیول بھاشا کے ڈھانچے اور بناوٹ سے ہے، شبد تو سب جگہ سے لئے جا سکتے ہیں. اگر کچھ سائنسی ٹرموں کی کمی دکھائی دے تو نئی ٹرمیں بنانے کی جگہ کیوں نہ اُن ٹرموں سے ہی کام لیں جو آج کل سرکاری دفتروں میں برتی جاتی ہیں. آخر گر دلی ہی راجدھانی رہی تو یہاں کے آس پاس کی بولی ہی راج کی بولی بنے گی. پھر کیوں نہیں اِس نیک کام میں ہماری سرکار اِس بولی کا ہاتھ بٹاتی.

انت میں پنڈت پدم سنگھ شرما کی طرح میں بھی اپنی کتاب کو، کیول پہلا شبد بدل کر اکبر کے اِس شعر سے ختم کرتا ہوں:—

"بولی میں جو سب شریک ہونے کے نہیں،
اِس ملک کے کام ٹھیک ہونے کے نہیں.
ممکن نہیں شیخ امرالقیس بنیں،
پنڈت جی والمیک ہونے کے نہیں."

लिपी अपनी सूरत अख़्तियार की तो उस में बहुत से संस्कृत के शब्द कुछ तत्सम रूप में और कुछ तद्भव रूप में आ घुसे. अब हम चाहते हैं कि सारे हिन्दुस्तान की एक भाषा हो. इतने बड़े देस में एक भाषा बनने के लिये तो सैकड़ों बरस चाहियें लेकिन अब हम इतना तो कर सकते हैं कि हम अपनी राष्ट्र भाषा ऐसी बनाएं जो सब प्रान्तों में आसानी से समझी जा सके. इस का सहल तरीक़ा यह है कि जो जो शब्द हिन्द की हर एक बोली की डिक्शनरी में उसी रूप या वैसे ही रूप में पाए जाते हों उन्हें अपनी राष्ट्र भाषा में तत्सम रूप में ले आवें चाहे वह शब्द किसी भी प्रान्त की बोल चाल में उस तत्सम रूप में न पाया जाता हो. यह विचार देखने में तो सुन्दर ही नहीं सरल भी मालूम होता है. ख़राबी है तो केवल यह कि भाषा विद्या के सारे मोटे मोटे नियम जो मैंने पच्छिमी विद्वानों से लेकर इस किताब में लिखे हैं वह सब टूटते हैं:—(1) भाषा जो देस में फैलती है वह अकसर राजधानी की बोल चाल होती है या कभी कभी किसी कवि या धर्मी लीडर की. (2) कोई ताक़त जल्दी किसी भाषा के ताने बाने और उस की बुनावट को बदल नहीं सकती. इन तत्सम शब्दों से हमारी सब बोलियों का ताना लम्बा हो जाता है. (3) हमारी आज कल की इल्मी ज़बान अंगरेज़ी है, संस्कृत नहीं, इस वक़्त देस में अंगरेज़ी जानने वालों की गिनती संस्कृत के जानने वालों की गिनती से कई गुनी है, इसलिये यह नामुमकिन है कि हमारी बोलियों की उठती जवानी में उस का रंग न आए. (4) हमारे देस में हिन्दू ही नहीं रहते, और मतों के लोग भी रहते हैं, उनसे हमें मेल रखना पड़ेगा. (5) भाषा सदा सरलता की तरफ़ बहती है, मोटे नोकदार शब्द यानी जुड़े हुए व्यंजनों वाले शब्द लोगों के गले में चुभते हैं. (6) लिपि का भाषा से गहरा नाता होता है. हमारे विधान वाले चाहे कितना ही देवनागरी को चाहें हमारे देस की आर्थिक दशा को देवनागरी से बैर है. न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेंगी. आज कल ही नहीं पैसा सदा से महाबलवान है. (7) अपने देस का इतिहास मैं कुछ सुना चुका हूं. अगर देस का रुख़ बदलना है तो संस्कृत से बेजा लगाव छोड़ना ही होगा. (8) दुनिया अब इतनी छोटी हो गई है कि हम बिलकुल अलग नहीं रह सकते. हमारी भाषा पर और प्रान्तों की भाषा का ही नहीं और मुल्कों की ज़बान का भी असर पड़ेगा.

कहीं कहीं कोई कोई लेकिन दबी ज़बान से कुछ भाई मेरी बातों का यूं जवाब देते हैं कि यह सब कुछ ठीक है, लेकिन वह कोई भाषा यानी बोल-चाल नहीं बना रहे, वह केवल एक लिखी बोली, एक दफ़्तरी ज़बान बना रहे हैं जो

لپی اپنی صورت اختیار کی تو اُس میں بہت سے سنسکرت کے شبد کچھ تتسم روپ میں اور کچھ تدبھو روپ میں آگھسے. اب ہم چاہتے ہیں کہ سارے ہندستان کی ایک بھاشا ہو. اتنے بڑے دیس میں ایک بھاشا بننے کے لئے تو سیکڑوں برس چاہئیں لیکن اب ہم اتنا تو کرسکتے ہیں کہ ہم اپنی راشٹر بھاشا ایسی بنائیں جو سب پرانتوں میں آسانی سے سمجھی جاسکے. اِس کا سہل طریقہ یہ ہے کہ جو جو شبد ہند کی ہر ایک بولی کی ڈکشنری میں اُسی روپ یا ویسے ہی روپ میں پائے جاتے ہوں اُنھیں اپنی راشٹر بھاشا میں تتسم روپ میں لے آویں چاہے وہ شبد کسی بھی پرانت کی بول چال میں اُس تتسم روپ میں نہ پایا جاتا ہو. یہ وچار دیکھنے میں تو سندر ہی نہیں سرل بھی معلوم ہوتا ہے. خرابی ہے تو کیول یہ کہ بھاشا ودیا کے سارے موٹے موٹے نیم جو میں نے پچھمی ودوانوں سے لےکر اس کتاب میں لکھے ہیں وہ سب ٹوٹتے ہیں :— (1) بھاشا جو دیس میں پھیلتی ہے وہ اکثر راجدھانی کی بول چال ہوتی ہے یا کبھی کبھی کسی کوی یا دھرمی لیڈر کی. (2) کوئی طاقت جلدی کسی بھاشا کے تانے بانے اور اُس کی بناوٹ کو بدل نہیں سکتی. اِن تتسم شبدوں سے ہماری سب بولیوں کا تانا لمبا ہوجاتا ہے. (3) ہماری آج کل کی علمی زبان انگریزی ہے، سنسکرت نہیں، اِس وقت دیس میں انگریزی جاننے والوں کی گنتی سنسکرت کے جاننے والوں کی گنتی سے کئی گنی ہے، اس لئے یہ ناممکن ہے کہ ہماری بولیوں کی اُٹھتی جوانی میں اُس کا رنگ نہ آئے. (4) ہمارے دیس میں ہندو ہی نہیں رہتے، اور متوں کے لوگ بھی رہتے ہیں، اُن سے ہمیں میل رکھنا پڑے گا. (5) بھاشا سدا سرلتا کی طرف بہتی ہے، نوکدار موٹے شبد یعنی جڑے ہوئے ویَنجنوں والے شبد لوگوں کے گلے میں چبھتے ہیں. (6) لپی کا بھاشا سے گہرا ناتا ہوتا ہے. ہمارے ودھان والے چاہے کتنا ہی دیوناگری کو چاہیں ہمارے دیس کی آرتھک دشا کو دیوناگری سے بیر ہے. نہ نومن تیل ہوگا نہ رادھا ناچیں گی. آج کل ہی نہیں پیسہ سدا سے مہا بلوان ہے. (7) اپنے دیس کا اتہاس میں کچھ سناچکا ہوں. اگر دیس کا رخ بدلنا ہے تو سنسکرت سے بیجا لگاؤ چھوڑنا ہی ہوگا. (8) دنیا اب اتنی چھوٹی ہوگئی ہے کہ ہم بالکل الگ نہیں رہ سکتے. ہماری بھاشا پر اور پرانتوں کی بھاشا کا ہی نہیں اور ملکوں کی زبان کا بھی اثر پڑے گا.

کہیں کہیں کوئی کوئی لیکن دبی زبان سے کچھ بھائی میری باتوں کا یوں جواب دیتے ہیں کہ یہ سب کچھ ٹھیک ہے، لیکن وہ کوئی بھاشا یعنی بول چال نہیں بنارہے وہ کیول ایک لکھی بولی، ایک دفتری زبان بنارہے ہیں جو

में लातीनी सिखाने के लिये लिखी गई थी. यही हाल इस हिन्दी ग्रामर का था. नाम तो हिन्दी की, लिखी गई संस्कृत सिखाने के लिये. सुनता हूँ यह ग्रामर यू. पी. और दिल्ली में कोर्स में है. देख कर दिल ठंडा हो गया. ऐसा मालूम होता है कि हम भी वही ग़लती करने पर तुले हुए हैं जो अंगरेज़ अपने देस में उन्नीसवीं सदी तक करते आए हैं. विलियम वाड ने अपनी अंगरेज़ी ज़बान की ग्रामर (1767) में लातीनी टरमों के बरतने की वजह इस तरह बयान की है— "चूँकि किसी आदमी को पता नहीं कि उसे फिर कोई और ज़बान भी सीखनी पड़े तो उसे अंगरेज़ी भी क्यों न इस तरह सिखाई जाय जिस से उसे और ज़बान सीखने में आसानी हो." क्या ख़ूब ! अंगरेज़ी सीखना चाहे हर एक के लिये मुशकिल हो जाय ! कैसी अचरज की बात है कि अंगरेज़ी जानते हुए भी हमारे शिक्षा विभागी और यूनीवरसिटियाँ दूसरों की ग़लतियों से फ़ायदा नहीं उठा सकतीं. ईश्वर उन्हें चिरंजीव करे ताकि अपनी ग़लतियाँ वह आप देख सकें और हमारी संतान को इस मुसीबत से छुटकारा मिले.

चाँद बरदाई हमारी भाशा का सब से पहला कवि कहा जाता है. उस की कविता में भी बहुत से फ़ारसी के लफ़्ज़ पाए जाते हैं. यह लाहौर का रहने वाला पृथ्वीराज के दरबार का कवि था. हिन्दी का दूसरा दौर अकबर के ज़माने का है. उस में भी फ़ारसी लफ़्ज़ों से परहेज़ नहीं. अगर हिन्दी उरदू के विकास और झगड़े की बाबत ज़्यादा जानना हो तो पं० पद्म सिंह शर्मा की किताब "हिंदी उरदू और हिन्दुस्तानी" पढ़ लीजिये. एक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति की बाबत यह कहना कि वह फ़ारसी के पक्षपाती थे, ठीक नहीं मालूम होता. उन के विचार के अनुसार हिन्दी को विदेसी लफ़्ज़ों से साफ़ करने का ख़याल बहुत पुराना नहीं और बहुत कुछ चन्द कम समझ मुसलमानों की रीस का फल है. कुछ मुसलमान हिन्दी शब्दों से परहेज़ करते थे, उन को देखा देखी कुछ हिन्दू भी फ़ारसी लफ़्ज़ों को अछूत समझने लगे. इस परहेज़ की एक और वजह भी दी जाती है. उस पर ठंडे दिल से विचार करने की ज़रूरत है.

मैं पहले लिख आया हूँ कि बंजारों की मेहरबानी से दिल्ली की बोली दूर दूर के देसों में अगर बोली नहीं तो समझी जाने लगी. इस बोली में बहुत से लफ़्ज़ तो हिन्दी के थे, कुछ फ़ारसी के, पर संस्कृत का शायद कोई न था. इसी तरह रमते साधू संतों की मेहरबानी से कोई दस बीस संस्कृत के ऐसे शब्द जिन का वास्ता धर्म से था सारे हिन्दुस्तान में समझे और बोले जाने लगे. मैं यह भी लिख आया हूँ कि मुसलमानी राज से पहले संस्कृत सदियों तक हमारी इल्मी ज़बान रही है और इसलिये जब किसी प्राकृत ने उन

میں لاطینی سکھانے کے لئے لکھی گئی تھی ۔ یہی حال اِس ھندی گرامر کا تھا ۔ نام تو ھندی کی' لکھی گئی سنسکرت سکھانے کے لئے ۔ سنتا ھوں یہ گرامر یو۔ پی اور دلی میں کورس میں ھے ۔ دیکھکر دل ٹھنڈا ھوگیا ۔ ایسا معلوم ھوتا ھے کہ ھم بھی وھی غلطی کرنے پر تلے ھوئے ھیں جو انگریز اپنے دیس میں اُنیسویں صدی تک کرتے آئے ھیں ۔ ولیم واڈ نے اپنی انگریزی زبان کی گرامر (1767) میں لاطینی ٹرموں کے برتنے کی وجہ اِسطرح بیان کی ھے—" چونکہ کسی آدمی کو پتہ نہیں کہ اُسے پھر کوئی اور زبان بھی سیکھنی پڑے تو اُسے انگریزی بھی کیوں نہ اِسطرح سکھائی جائے جس سے اُسے اور زبان سیکھنے میں آسانی ھو ۔" کیا خوب ! انگریزی سیکھنا چاھے ھر ایک کے لئے مشکل ھوجائے ! کیسی اچرج کی بات ھے کہ انگریزی جانتے ھوئے بھی ھمارے شکشا وبھاگی اور یونیورسٹیاں دوسروں کی غلطیوں سے فائدہ نہیں اُٹھا سکتیں ۔ ایشور اُنہیں چرنجیو کرے تاکہ اپنی غلطیاں وہ آپ دیکھ سکیں اور ھماری سنتان کو اِس مصیبت سے چھٹکارا ملے ۔

چاند بردائی ھماری بھاشا کا سب سے پہلا کوی کہا جاتا ھے ۔ اُس کی کویتا میں بہت سے فارسی کے لفظ پائے جاتے ھیں ۔ یہ لاھور کا رھنے والا پرتھوی راج کے دربار کا کوی تھا ۔ ھندی کا دوسرا دور اکبر کے زمانے کا ھے ۔ اُس میں بھی فارسی لفظوں سے پرھیز نہیں ۔ اگر ھندی اُردو کے وکاس اور جھگڑے کی بابت زیادہ جاننا ھو تو پنڈت پدم سنگھ شرما کی کتاب "ھندی اُردو اور ھندستانی" پڑھ لیجئے ۔ ایک ھندی ساھتیہ سمیلن کے سبھاپتی کی بابت یہ کہنا کہ وہ فارسی کے پکش پاتی تھے' ٹھیک نہیں معلوم ھوتا ۔ اُن کے وچار کے انوسار ھندی کو بدیسی لفظوں سے صاف کرنے کا خیال بہت پرانا نہیں اور بہت کچھ چند کم سمجھ مسلمانوں کی ریس کا پھل ھے ۔ کچھ مسلمان ھندی شبدوں سے پرھیز کرتے تھے' اُن کی دیکھا دیکھی کچھ ھندو بھی فارسی لفظوں کو اچھوت سمجھنے لگے ۔ اِس پرھیز کی ایک اور وجہ بھی دی جاتی ھے ۔ اُس پر ٹھنڈے دل سے وچار کرنے کی ضرورت ھے ۔

میں پہلے لکھ آیا ھوں کہ بنجاروں کی مہربانی سے دلی کی بولی دور دور کے دیسوں میں اگر بولی نہیں تو سمجھی جانے لگی ۔ اِس بولی میں بہت سے لفظ تو ھندی کے تھے' کچھ فارسی کے مگر سنسکرت کا شاید کوئی نہ تھا ۔ اِسی طرح رمتے سادھو سنتوں کی مہربانی سے کوئی دس بیس سنسکرت کے ایسے شبد جن کا واسطہ دھرم سے تھا سارے ھندستان میں سمجھے اور بولے جانے لگے ۔ میں یہ بھی لکھ آیا ھوں کہ مسلمانی راج سے پہلے سنسکرت صدیوں تک ھماری علمی زبان رھی ھے اور اِس لئے جب کسی پراکرت نے اُن

और सब से ज़्यादा रोने की बात यह कि आज हमारे विद्वान इस सभ्यता पर प्रफुल्लित हो कर नाचते हैं. चौथी सदी बी. सी. में ईरानी आए, दूसरी सदी बी. सी. में यूनानी आए, पहली सदी बी. सी. में गूजर आए, फिर बहुतेरे आए राजपूत, मंगोलियन, हुन और बहुत सी क़ौमें— पच्छिम से भी, पूरब से भी और उत्तर से भी. दो चार हज़ार का लशकर जमा करना और पच्छिम से पूरब तक का धावा बोलना मुमकिन होगया. और तो और जो यहाँ आग लेने भी आया घर का मालिक बन बैठा. पुर्तगाली, डच, फ़्राँसीसी, अंगरेज़ ब्योपार के लिये आए थे, राजे बन बैठे. अजब तमाशा है, इतनी क़ौमें यहाँ आकर बसीं लेकिन हमारा ख़ून अभी तक शुद्ध आर्यों का ही रहा और इसलिये हमारा धर्म है कि हम अपनी शुद्ध आर्य भाशा वैदिक ही बोलें! और दूसरी अति-हासिक बात यह है कि इस अरसे में चाहे कितने ही राज यहाँ बने और लुटे, माहानी टैक्स जो हम पर दो तीन हज़ार बरस हुए लगाए गए थे वह हम अब तक बड़ी ख़ुशी से देते हैं कोई हिन्दू जन्म नहीं ले सकता, ब्याह नहीं सकता, मर नहीं सकता और तो और पुरखों को याद नहीं कर सकता जब तक अपनी आमदनी के अनुसार वह यह टैक्स अदा न करे. चाहे हम पैसे पैसे के लिये भूट बोलने, चोरी करने, रिश्वत देने में और सब देसों को मीलों पीछे छोड़ आए हों, हमारा यह ख़ुशी ख़ुशी टैक्स देना हिन्दू जाति को महा-धर्मी और महा-आत्मी बनाता है. इसलिये इस धर्म शक्ति को किसी तरह हानि पहुँचाने से ज़्यादा और कोई पाप बड़ा नहीं हो सकता! हमारी बोली का इतिहास इस बात का सबूत है कि जब कोई प्राकृत यानी बोल बोली, लिखी बोली का रूप धारन करती है तो उसका मुख्य प्रचार जात पात के विरुद्ध होता है और इस तरह इस टैक्स को हानि पहुँचाता है. बौद्ध और जैन मत ने यही प्रचार अपनी प्राकृतों में किया. सदियों बाद हिन्दुस्तानी पैदा हुई. उस में भी कबीर, नानक आदि ने यही राग अलापे. इसलिये ऐसी भाशा को जीते रहने देना महा पाप है! ऊपर से यह अंगरेज़ी का टपको जो बराबरी बराबरी ही चिल्लाती है. ऐसे कड़े वक़्तों में संस्कृत ही हमें फिर बचा सकती है! इसलिये उसे लाओ ज़रूर, संस्कृत के रूप में नहीं ला सकते तो हिन्दी की ही शकल सही!

मैंने बचपन में उरदू की और संस्कृत की ग्रामरें कुछ कुछ पढ़ी थीं. हिन्दी की ग्रामर देखने का इत्तफ़ाक़ नहीं हुआ था. इस किताब को देवनागरी में छपवाने के लिये मैंने अपनी एक नवासी से उस की हिन्दी ग्रामर ली. उसे देख कर मुझे मरे की अंगरेज़ी ग्रामर याद आगई जो उन्नीसवीं सदी के शुरू में इंगलैंड के बहुत से स्कूलों में पढ़ाई जाती थी जो नाम को तो अंगरेज़ी सिखाने के लिये लेकिन असल

اور سب سے زیادہ رونے کی بات یہ ہے کہ آج ہمارے ودوان اس سبھیتا پر پرپھلت ہوکر ناچتے ہیں. چوتھی صدی بی. سی. میں ایرانی آئے، دوسری صدی بی. سی. میں یونانی آئے، پہلی صدی بی. سی. میں گوجر آئے، پھر بہتیرے آئے راجپوت، منگولین، ہون اور بہت سی قومیں — پچھم سے بھی، پورب سے بھی اور اُتر سے بھی. دوچار ہزار کا لشکر جمع کرنا اور پچھم سے پورب تک کا دھاوا بولنا ممکن ہوگیا. اور تو اور جو یہاں آگ لینے بھی آیا گھر کا مالک بن بیٹھا. پرتگالی، ڈچ، فرانسیسی، انگریز بیوپار کے لئے آئے تھے، راجے بن بیٹھے. عجب تماشہ ہے، اتنی قومیں یہاں آکر بسیں لیکن ہمارا خون ابھی تک شدھ آریوں کا ہی رہا اور اس لئے ہمارا دھرم ہے کہ ہم اپنی شدھ آریہ بھاشا ویدک ہی بولیں! اور دوسری اتیہاسک بات یہ ہے کہ اس عرصے میں چاہے کتنے ہی راج یہاں بنے اور لٹے، براہمنی ٹیکس جو ہم پر دو تین ہزار برس ہوئے لگائے گئے تھے وہ ہم اب تک بڑی خوشی سے دیتے ہیں. کوئی ہندو جنم نہیں لے سکتا، بیاہ نہیں سکتا، مر نہیں سکتا اور تو اور پرکھوں کو یاد نہیں کر سکتا جب تک اپنی آمدنی کے انوسار وہ یہ ٹیکس ادا نہ کرے. چاہے ہم پیسے پیسے کے لئے جھوٹ بولنے، چوری کرنے، رشوت دینے میں اور سب دیسوں کو میلوں پیچھے چھوڑ آئے ہوں، ہمارا یہ خوشی خوشی ٹیکس دینا ہندو جاتی کو مہادھرمی اور مہا آتمی بناتا ہے. اسلئے اس دھرم شکتی کو کسی طرح ہانی پہنچانے سے زیادہ اور کوئی پاپ بڑا نہیں ہوسکتا! ہماری بولی کا اتہاس اس بات کا ثبوت ہے کہ جب کوئی پراکرت یعنی بول بولی، لکھی بولی کا روپ دھارن کرتی ہے تو اسکا مکھیہ پرچار جات پات کے ورُدھ ہوتا ہے اور اسطرح اس ٹیکس کو ہانی پہنچاتا ہے. بودھ اور جین مت نے یہی پرچار اپنی پراکرتوں میں کیا. صدیوں بعد ہندستانی پیدا ہوئی. اسمیں بھی کبیر، نانک آدی نے یہی راگ الاپے. اسلئے ایسی بھاشا کو جیتے رہنے دینا مہا پاپ ہے! اوپر سے یہ انگریزی آٹپکی جو برابری برابری ہی چلاتی ہے. ایسے کڑے وقتوں میں سنسکرت ہی ہمیں پھر بچا سکتی ہے! اسلئے اسے لاؤ ضرور، سنسکرت کے روپ میں نہیں لا سکتے تو ہندی کی ہی شکل میں سہی!

میں نے بچپن میں اُردو کی اور سنسکرت کی گرامریں کچھ کچھ پڑھی تھیں. ہندی کی گرامر دیکھنے کا اتفاق نہیں ہوا تھا. اس کتاب کو دیوناگری میں چھپوانے کے لئے میں نے اپنی ایک نواسی سے اسکی ہندی گرامر لی. اُسے دیکھکر لنڈلے مرے کی انگریزی گرامر یاد آگئی جو انیسویں صدی کے شروع میں انگلینڈ کے بہت سے اسکولوں میں پڑھائی جاتی تھی، جو نام کو تو انگریزی سکھانے کے لئے لیکن اصل

प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी	पंजाबी
मट्टिआ	मृत्तिका	मट्टी	मट्टी
कण्हो-कण्णो	कृष्ण	कान्ह-किशन	कान्ह-किशन
जइसो	यादृशा	जैसा	जेहा
सालो	श्याल	साला	साला
सामलो	श्यामल	साँवला	
माउसिउजा	मातृश्वसा	मौसी	मासी
पोत्थअं	पुस्तकं	पोथी	पोथा
रुक्ख	वृक्षः	रुख	रुख
मसाणं	श्मशानं	मसान	मसाण
संकलं	शृंखलं	सांकल	संकल
सच्च	सत्य	सच	सच्च
रत्ती	रात्री	रात	रात्तीं
अग्गी	अग्नि	आग	अग्ग

संस्कृत के बनाए जाने का कारन मैं संस्कृत के बाब में लिख आया हूँ. गो संस्कृत बनी थी चौथी सदी बी. सी. में, पहला पत्थर जिस पर संस्कृत खुदी हुई है वह 150 बी. सी. का है और इस के बाद के भी जितने पत्थर दो तीन सौ बरस तक के मिले हैं वह प्राकृत में हैं. संस्कृत पत्थर तो तीसरी सदी बी. सी. में खुदने शुरू होते हैं. माने यह कि संस्कृत को दरबारी जबान बनने में पाँच छै सौ बरस लगे थे. किसी नई भाषा को पंद्रह बरस में दफ़्तरी जबान बनाने का ख़याल अछूता है. लाख दिल को समझाओ, जो भाषा बनाई जा रही है नई भाषा ही नहीं एक बनावटी भाषा है. आजकल पुराने संस्कृत शब्द ही नहीं लाए जा रहे, बल्कि हमारी बोली के मामूली से मामूली लफ़्ज़ों को संस्कृत का जामा पहनाया जा रहा है. दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कहना शायद ग़लत न हो कि हमारी बोली को वैदिक से मिलाया जा रहा है और लफ़्ज़ों के लिहाज से हम तीन हजार बरस पहले जाना चाहते हैं.

आर्य यहाँ एक हल्ले में नहीं आए, एक दो सदी तक वे लहरों में आते रहे. जो लहर आई उसने अगली को और आगे ढकेला. यहाँ आकर उन्होंने खेती बाड़ी सीखी, इसलिये उनमें भी ब्राह्मन पैदा हो गए. एकता का भाव उनमें अभी पैदा हो नहीं सका था कि समाज अलग अलग जातियों (Communities) में ही नहीं अलग अलग जातों (Castes) में भी बंट गई. समाज के टुकड़े टुकड़े करने के लिये यह नसल और जात की दीवारें काफ़ी न थीं, संस्कृत बना कर एक भाषा की छत डाली गई. जो इसे जाने वह ऊपर की छत पर रहने वाला अपने आप को कुछ देवता सा समझने लगा. इस तोड़ फोड़ का फल है हमारा रोना-धोना जिसे विद्वान हमारा इतिहास कहते हैं. जिस का दिल चाहा हमारे देस में आ घुसा और आकर राज करने लगा.

پراکرت	سنسکرت	هندی	پنجابی
مٹٹیا	مرتکا	مٹٹی	مٹٹی
کنڑ هو کنڑو	کرشن	کانهه کشن	کانهه کشن
جئی سو	یادرشا	جیسا	جیہا
سالو	شیال	سالا	سالا
ساملو	شیامل	ساںولا	
ماؤسججا	ماتر شرسی	موسی	ماسی
پوتهم	پستکم	پوتهی	پوتهه
روکھ	ورکشه	روکھ	روکھ
مسانں	شمشانں	مسان	مسانڑ
سنکلں	شرنکهلں	سانکل	سنکل
سچچ	ستیه	سچ	سچچ
راتتی	راتری	رات	راتتیں
اگگی	اگنی	آگ	اگ

سنسکرت کے بنائے جانے کا کارن میں سنسکرت کے باب میں لکھ آیا هوں ۔ گو سنسکرت بنی تھی چوتھی صدی بی ۔ سی ۔ میں' پہلا پتھر جس پر سنسکرت کھدی هوئی هے وہ 150 بی ۔ سی ۔ کا هے اور اسکے بعد کے بھی جتنے پتھر دو تین سو برس تک کے ملے هیں وہ پراکرت میں هیں ۔ سنسکرت پتھر تو تیسری صدی بی ۔ سی ۔ میں کھدنے شروع هوتے هیں ۔ معنے یہ کہ سنسکرت کو درباری زبان بننے میں پانچ چھ سو برس لگے تھے ۔ کسی نئی بھاشا کو پندرہ برس میں دفتری زبان بنانے کا خیال اچھوتا هے ۔ لاکھ دل کو سمجھاؤ' جو بھاشا بنائی جا رهی هے نئی بھاشا هی نہیں ایک بناوٹی بھاشا هے ۔ آجکل پرانے سنسکرت شبد هی نہیں لائے جا رهے' بلکہ هماری بولی کے معمولی سے معمولی لفظوں کو سنسکرت کا جامہ پہنایا جا رہا هے ۔ دوسرے لفظوں میں یوں کہنا شاید غلط نہ هو کہ هماری بولی کو ویدک سے ملایا جا رہا هے اور لفظوں کے لحاظ سے هم تین هزار برس پہلے جانا چاهتے هیں ۔

آریہ یہاں ایک هلے میں نہیں آئے' ایک دو صدی تک وہ لہروں میں آتے رهے ۔ جو لہر آئی اس نے اگلی کو اور آگے ڈھکیلا ۔ یہاں آکر انہوں نے کھیتی باڑی سیکھی' اسلئے ان میں بھی براهمن پیدا هوگئے ۔ ایکتا کا بھاو ان میں ابھی پیدا هو نہیں سکا تھا کہ سماج الگ الگ جاتیوں (Communities) میں هی نہیں الگ الگ جاتوں (Castes) میں بھی بٹ گئی ۔ سماج کے ٹکڑے ٹکڑے کرنے کے لئے یہ نسل اور جات کی دیواریں کافی نہ تھیں' سنسکرت بناکر ایک بھاشا کی چھت ڈالی گئی ۔ جو اسے جانے وہ اوپر کی چھت پر رهنے والا اپنے آپ کو کچھ دیوتا سا سمجھنے لگا ۔ اس توڑ پھوڑ کا پھل هے همارا رونا دھونا جسے پنڈت همارا اتہاس کہتے هیں ۔ جس کا دل چاہا همارے دیس میں آگھسا اور آکر راج کرنے لگا ۔

आर्यों के आने से पहले सिन्ध पंजाब में तो जरूर और ख़याल किया जाता है कि राजपूताना और दक्खिन में भी सरस्वती, नर्वदा और ताप्ती की वादियों में सुमेरी सभ्यता फैली हुई थी. वह उस ज़माने के लिहाज़ से बड़ी ऊँची सभ्यता गिनी जाती है. हिन्द के दूसरे हिस्सों का हाल मालूम नहीं लेकिन ख़याल यही है कि वहाँ सभ्यता बहुत कम थी. उस ज़माने की बोलियों का हमें अभी तक कुछ पता नहीं, लेकिन आर्यों के आने के दो तीन सौ बरस बाद जो बोली यहाँ बोली जाती थी वह वैदिक थी जो आर्य भाषा और हिन्द भाषा के जोड़ से पैदा हुई थी. इसलिये उसे पुरानी संस्कृत कहना ठीक नहीं क्योंकि यह प्राकृत यानी क़ुदरती भाषा थी. इस वैदिक भाषा में बड़े अच्छे अच्छे कवि हुए हैं जिनकी कविता को वेद कहते हैं. आहिस्ते आहिस्ते, जैसे कि हमेशा होता है इस भाषा के लफ़्ज़ भी छोटे और स्वरों से लदने लगे और इसने देस देस में जाकर चार सौ बरस में कई रूप रंग बदले. इस अरसे में जात पात भी बन गई. सातवीं सदी बी. सी. में बौद्ध और जैन धर्मों ने जन्म लिया. इन धर्मों की दया से पांचवीं छटी सदी बी० सी० में जो प्राकृतें बोली जाती थीं उन में से कुछ का ज्ञान अभी तक हो सकता है, इन प्राकृतों से एक बात साफ़ है कि हमारी आजकल की बोलियां उन प्राकृतों से ज्यादा मिलती जुलती हैं और संस्कृत जो पीछे बनाई गई थी उस से कम मिलती हैं. इसके माने यह हुए कि जिन्हें पंडित तद्भव शब्द कहते हैं वह असल में तत्सम है और तत्सम तद्भव.

पाली की डिक्शनरी में ऐसे सैकड़ों लफ़्ज़ मिलते है. मैं नमूने के तौर पर थोड़े से लिखता हूँ :—

प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी	पंजाबी
छै	षष	छै	छी
सत्ता	सप्त	सात	सत
संझा	सन्ध्या	साँझ	संझा
सिप्पी	शुक्ति	सीपी	सिप्पी
सिप्पी	शिल्पन	सेपी	सेपी
दस-दह	दश	दस	दस-दह
बारह	द्वादश	बारह	बाराँ
तेरह	त्रयोदश	तेरह	तेराँ
घर	गृह	घर	घर
कहाँ	कुत्र	कहाँ	किथे
पुन्नो	पूर्णमाशी	पूनो	पुन्नो
रुखो	रुक्ष	रूखा	रुखौ
रोगी	रोगिन	रोगी	रोगी
सुई	सूची	सुई	सूँई

آریوں کے آنے سے پہلے سندھ پنجاب میں تو ضرور اور خیال کیا جاتا ہے کہ راجپوتانہ اور دکھن میں بھی سرسوتی، نربدا اور تاپتی کی وادیوں میں سومیری سبھیتا پھیلی ہوئی تھی. وہ اس زمانے کے لحاظ سے بڑی اونچی سبھیتا گنی جاتی ہے. ہند کے دوسرے حصوں کا حال معلوم نہیں لیکن خیال یہی ہے کہ وہاں سبھیتا بہت کم تھی. اس زمانے کی بولیوں کا ہمیں ابھی تک کچھ پتہ نہیں، لیکن آریوں کے آنے کے دو تین سو برس بعد جو بولی یہاں بولی جاتی تھی وہ ویدک تھی جو آریہ بھاشا اور ہند بھاشا کے جوڑ سے پیدا ہوئی تھی. اسلئے اسے پرانی سنسکرت کہنا ٹھیک نہیں کیونکہ یہ پراکرت یعنی قدرتی بھاشا تھی. اس ویدک بھاشا میں بڑے اچھے اچھے کوی ہوئے ہیں جنکی کویتا کو وید کہتے ہیں. آہستے آہستے، جیسے کہ ہمیشہ ہوتا ہے اس بھاشا کے لفظ بھی چھوٹے اور سوروں سے لدنے لگے اور اس نے دیس دیس میں جاکر چار سو برس میں کئی روپ رنگ بدلے. اس عرصے میں جات پات بھی بن گئی. ساتویں صدی بی. سی. میں بودھ اور جین دھرموں نے جنم لیا. ان دھرموں کی دیا سے پانچویں چھٹی صدی بی. سی. میں جو پراکرتیں بولی جاتی تھیں ان میں سے کچھ کا گیان ابھی تک ہوسکتا ہے، ان پراکرتوں سے ایک بات صاف ہے کہ ہماری آج کل کی بولیاں ان پراکرتوں سے زیادہ ملتی جلتی ہیں اور سنسکرت جو پیچھے بنائی گئی تھی اس سے کم ملتی ہیں. اسکے معنی یہ ہوئے کہ جنھیں پنڈت تدبھو شبد کہتے ہیں وہ اصل میں تتسم ہے اور تتسم تدبھو.

پالی کی ڈکشنری میں ایسے سیکڑوں لفظ ملتے ہیں. میں نمونے کے طور پر تھوڑے سے لکھتا ہوں :—

پراکرت	سنسکرت	هندی	پنجابی
چھے	شش	چھے	چھی
ستّا	سپت	سات	ست
سنجھا	سندھیا	سانجھ	سنجھا
سپّی	شوکتی	سیپی	سپّی
سپّی	شلپن	سے پی	سے پی
دس دہ	دش	دس	دس دہ
بارہ	دوا دش	بارہ	باراں
تیرہ	تریودش	تیرہ	تیراں
گھر	گرہ	گھر	گھر
کہاں	کوتر	کہاں	کتھے
پونّو	پورنماسی	پونو	پونّو
روکھو	روکش	روکھا	روکھو
روگی	روگن	روگی	روگی
سوئی	سوچی	سوئی	سوں ای

और सोसाइटियाँ बनीं जिन का आदर्श ही यह है कि ऐसी सलीस सुथरी भाशा में लिखो जो जनता आसानी से समझ सके.

हमारे यहाँ न एक मत, न एक लिपि, न एक भाशा, न कोई फ़ौजी डिक्टेटर जो भूत से भविश्य की तरफ़ हमारा रुख़ बदले. ताक़त वोट की है और वोट भी अनपढ़ों का जिनका गुज़ारा खेती पर है. यह एक मानी हुई बात है कि जिस देस में गुज़ारा बहुत कुछ खेती बाड़ी पर हो वहाँ ज़ोर ब्राह्मनों का होता है जो सदा भूत नचाते हैं. उन का बस चले तो और किसी को पढ़ने न दें. बीसवीं सदी में यह बात खुल्लम खुल्ला तो नहीं कही जा सकती पर भाशा को मुशकिल से मुशकिल बना कर वही मनोरथ सिद्ध हो सकता है. उरदू वालों ने उरदू मुअल्ला बनाई जो "जो समझे सो समझे जो न समझे अपनी जहालत के हवाले". हिन्दी वाले हिन्दी को संस्कृतमई बना रहे हैं जिस से एक ऐसी लोहे की दीवार खिंच जाय जो आसानी से टापी न जाए. दफ़तरी बोली के लिये वह लिपि चुनी गई जिसकी लिखाई छपाई दोनों मँहगी और मुशकिल हों. इन ब्राह्मनों के अनपढ़ चेलों का वोट लेने के लिये हर एक पार्टी भाशा को दिनों दिन मुशकिल बना रही है ताकि दलील से नहीं मोटे लफ़्ज़ों के जादू से वोट लिया जाए. हमें आज़ादी बहुत कुछ गांधी जी की मेहरबानी से मिली. अगर वह चाहते तो शायद डिक्टेटर हो सकते थे लेकिन वह अहिन्सा का देवता कहना भी मनवाता था तो रूठ कर. उस के नमिलवर्तन (असहयोग) के हथियार से भी ब्राह्मनी राज को डर था इस लिये एक अधिक बहके ब्राह्मन ने उसे मार डाला. कौन जाने कल क्या होगा. मुमकिन है कि यहां की हकूमत की बाग डोर किसी दिन किसी ऐसे फ़ौजी अफ़सर के हाथ आ जाय जो डिक्टेटर बन कर देस का रुख़ बदल दे. अगर ऐसा जल्द न हुआ तो किसी भी सुधार के लिये तब तक 25-30 बरस सब्र करना पड़ेगा जब तक नई पौद जवान नहीं होती. मुमकिन है कि इस अरसे में इस तरह के ब्राह्मन फिर किसी बिदेसी क़ौम को यहां बुला लें या ऐसी हालतें पैदा कर दें जिनसे ग़ैरों का फिर हिन्द में हकूमत करना मुमकिन हो जाय.

कल क्या होगा इस पर लिखना नादानी है. इतना ज़रूर कहा जा सकता है कि जब तक किसी देस के बदन में कोई कीड़ा लगा रहे वह देस पनप नहीं सकता. ज़बान का जादू, ज़बान की दीवार, मरे हुए बाबा की मोटी मोटी आखें यह तीनों बीमारियाँ जान लेवा न सही देस का लहू चूस लेती हैं. विद्वान कहते हैं कि इतिहास मुड़ मुड़ कर वही दृश्य दिखाता है; इसलिये अपने इतिहास पर कुछ नज़र डालनी मुनासिब है.

اور سوسائٹیاں بنیں جن کا آدرش ہی یہ ہے کہ ایسی سلیس ستھری بھاشا میں لکھو جو جنتا آسانی سے سمجھ سکے .

ہمارے یہاں نہ ایک مت، نہ ایک لپی، نہ ایک بھاشا، نہ کوئی فوجی ڈکٹیٹر جو بھوت سے بھوشیہ کی طرف ہمارا رخ بدلے . طاقت ووٹ کی ہے اور ووٹ بھی اَن‌پڑھوں کا جن کا گزارہ کھیتی پر ہے . یہ ایک مانی ہوئی بات ہے کہ جس دیس میں گزارہ بہت کچھ کھیتی باڑی پر ہو وہاں زور براہمنوں کا ہوتا ہے جو سدا بھوت نچاتے ہیں . اُن کا بس چلے تو اور کسی کو پڑھنے نہ دیں . بیسویں صدی میں یہ بات کھلم کھلا تو نہیں کہی جاسکتی پر بھاشا کو مشکل سے مشکل بناکر وہی منورتھ سدھ ہوسکتا ہے . اُردو والوں نے اُردو معلیٰ بنائی جو "جو سمجھے سو سمجھے جو نہ سمجھے اپنی جہالت کے حوالے". ہندی والے ہندی کو سنسکرت مئی بنارہے ہیں جس سے ایک ایسی ہے کی دیوار کھنچ جائے جو آسانی سے ٹاپی نہ جائے . دفتری بولی کے لئے وہ لپی چنی گئی جس کی لکھائی چھپائی دونوں مہنگی اور مشکل ہوں . اِن براہمنوں کے اَنپڑھ چیلوں کا ووٹ لینے کے لئے ہر ایک پارٹی بھاشا کو دنوں دن مشکل بنارہی ہے تاکہ دلیل سے نہیں موٹے لفظوں کے جادو سے ووٹ لیا جائے . ہمیں آزادی بہت کچھ گاندھی جی کی مہربانی سے ملی . اگر وہ چاہتے تو شاید ڈکٹیٹر ہوسکتے تھے لیکن وہ اہنسا کا دیوتا کہنا بھی منواتا تھا تو روٹھ کر . اُس کے نملورتن (اسہیوگ) کے ہتھیار سے بھی براہمنی راج کوڈر تھا اِس لئے ایک ادھک بہکے براہمن نے اُسے مارڈالا . کون جانے کل کیا ہوگا . ممکن ہے کہ یہاں کی حکومت کی باگ ڈور کسی دن کسی ایسے فوجی افسر کے ہاتھ آجائے جو ڈکٹیٹر بنکر دیس کا رخ بدل دے . اگر ایسا جلد نہ ہوا تو کسی بھی سدھار کے لئے تب تک 25-30 برس صبر کرنا پڑے گا جب تک نئی پود جوان نہیں ہوتی . ممکن ہے کہ اِس عرصے میں اِس طرح کے براہمن پھر کسی بدیسی قوم کو یہاں بلالیں یا ایسی حالتیں پیدا کردیں جن سے غیروں کا پھر ہند میں حکومت کرنا ممکن ہوجائے .

کل کیا ہوگا اِس پر لکھنا نادانی ہے . اتنا ضرور کہا جاسکتا ہے کہ جب تک کسی دیس کے بدن میں کوئی کیڑا لگا رہے وہ دیس پنپ نہیں سکتا . زبان کا جادو، زبان کی دیوار، مرے ہوئے بابا کی موٹی موٹی آنکھیں یہ تینوں بیماریاں جان لیوا نہ سہی دیس کا لہو چوس لیتی ہیں . ودوان کہتے ہیں کہ اِتہاس مڑ مڑ کر وہی درشیہ دکھاتا ہے؛ اسلئے اپنے اِتہاس پر کچھ نظر ڈالنی مناسب ہے .

और जिन की वही तामील करा सकता था. और देसों के मुसलमानों की तरह तुर्क भी शरीयत का दीवानी क़ानून मानते थे. उसकी जगह कमाल ने स्विटज़रलैंड का दीवानी क़ानून तुरकी में जारी कर दिया. परदा करना और कराना जुर्म बना दिये. इन दो सुधारों से औरत क़ानून में मर्द के बराबर हो गई. भारत में हिन्दू कोड (जो उसके सामने एक बहुत छोटा सुधार है) चार बरस से लटक रहा है. लटक लटक कर इतना दुबला हो गया है कि शायद सभा में और पतला पड़ कर क़ानूनी सभा की छलनी में से छन निकले. तुरकी में कमालपाशा ने जो सब से बड़ी और .खूबसूरत मसजिद थी उसे कुछ तबदील करके अजायब घर बना लिया और कई मसजिदों को दफ़तर या स्कूल बना लिया. हमारे देस में सड़क को भी सीधा करने के लिये हम किसी मंदिर या मसजिद का कोना नहीं हिला सकते. वहां धर्म का सारा जादू अरबी हरफ़ों में था. उसने अरबी हरफ़ों को देस निकाला दिया. पहली जनवरी 1926 के बाद वहां एक किताब भी अरबी हरफ़ों में नहीं छपी. हमारे यहां ब्राह्मनी लिपि को देस निकाला देने को जगह देवनागरी को सरकारी लिपि बनाने की तजवीज़ पास हो चुकी है. कमाल ने तुरकी में से वहां की ब्राह्मनी भाशा अरबी के सारे लफ़्ज़ निकलवा डाले. हमारी सरकार ब्राह्मनी भाशा संस्कृत को बुला रही है ताकि यहां की प्रजा सरकारी बोली को समझ न सके.

तुरकों के सिर का लिबास वह लाल तुरकी टोपी काले फुंदने वाली हुआ करती थी. कमाल ने उसका पहनना भी जुर्म क़रार दिया और तुरकों को फ़िरंगी टोपी पहनाई. तुरकी ब्राह्मनों का अपना ब्राह्मनी लिबास पहन कर घर से बाहर निकलना बन्द कर दिया. यह सब कुछ उसने अपने देस का रुख़ बदलने के लिये किया. इस के लिये उसे कुछ समाजी शाखें ही नहीं जड़ें भी काटनी पड़ीं. वह अपनी क़ौम को सदा यही ललकार कर कहता था "तुरको, बहादुरो, बढ़े चलो." 98 फ़ी सदी तुर्क मुसलमान हैं और 86 फ़ी सदी की मां बोली तुरकी है. योरपी ज़बानों में से फ़्रांसीसी का का सबसे ज़्यादा ज़ोर है. फिर जर्मन, फिर इतालियन. अंगरेज़ी की चौथी जगह है. साइन्सी टर्म फ़्रांसीसी से लिये गए और बहुत से योरपी लफ़्ज़ ज़बान में आम हो गए. इन सब सुधारों का बोली पर यह असर हुआ कि आजकल की तुरकी दसवीं सदी की तुरकी से बहुत कुछ मिलती जुलती है. गो तुरकी में स्वर कुल आठ हैं लफ़्ज़ स्वरों से इतने लदे हैं कि बोली में शक्कर घुल गई. इन सुधारों से पहले तुरकी में भी लिखने वाले चन्द पढ़े हुओं के लिये ऐसी भाशा और ऐसे विशयों पर लिखते थे जो सिर्फ़ पढ़े हुए समझ सकते थे. आम जनता का किसी को ध्यान न था इन सुधारों ने काया पलट दी. अब क़ौमी नारा "ख़ल्क़ू डोग्रू", (ख़ल्क़ = जनता, डोग्रू = में घुसो) है

اور جن کی وہی تعمیل کرا سکتا تھا۔ اور دیسوں کے مسلمانوں کی طرح ترک بھی شریعت کا دیوانی قانون مانتے تھے۔ اُس کی جگہ کمال نے سوئٹزرلینڈ کا دیوانی قانون ترکی میں جاری کردیا۔ پردہ کرنا اور کرانا جرم بنادئے۔ اِن دو سدھاروں سے عورت قانون میں مرد کے برابر ہوگئی۔ بھارت میں ہندو کوڈ (جو اُس کے سامنے ایک بہت چھوٹا سدھار ہے) چار برس سے لٹک رہا ہے۔ لٹک لٹک کر اتنا دبلا ہوگیا ہے کہ شاید سبھا میں اور پتلا پڑ کر قانونی سبھا کی چھلنی میں سے چھن نکلے۔ ترکی میں کمال پاشا نے جو سب سے بڑی اور خوبصورت مسجد تھی اُسے کچھ تبدیل کرکے عجائب گھر بنا لیا اور کئی مسجدوں کو دفتر یا اسکول بنا لیا۔ ہمارے دیس میں سڑک کو بھی سیدھا کرنے کے لئے ہم کسی مندر یا مسجد کا کونہ نہیں ہلا سکتے۔ وہاں دھرم کا سارا جادو عربی حرفوں میں تھا۔ اُس نے عربی حرفوں کو دیس نکالا دیا۔ پہلی جنوری 1926 کے بعد وہاں ایک کتاب بھی عربی حرفوں میں نہیں چھپی۔ ہمارے یہاں براہمنی لپی کو دیس نکالا دینے کی جگہ دیوناگری کو سرکاری لپی بنانے کی تجویز پاس ہوچکی ہے۔ کمال نے ترکی میں سے وہاں کی براہمنی بھاشا عربی کے سارے لفظ نکلوا ڈالے۔ ہماری سرکار براہمنی بھاشا سنسکرت کو بلا رہی ہے تاکہ یہاں کی پرجا سرکاری بولی کو سمجھ نہ سکے۔

ترکوں کے سر کا لباس وہ لال ترکی ٹوپی کالے پھندنے والی ہوا کرتی تھی۔ کمال نے اُس کا پہننا بھی جرم قرار دیا اور ترکوں کو فرنگی ٹوپی پہنائی۔ ترکی براہمنوں کا اپنا براہمنی لباس پہن کر گھر سے باہر نکلنا بند کردیا۔ یہ سب کچھ اُس نے اپنے دیس کا رخ بدلنے کے لئے کیا۔ اِس کے لئے اسے کچھ سماجی شاخیں ہی نہیں جڑیں بھی کاٹنی پڑیں۔ وہ اپنی قوم کو سدا یہی للکار کر کہتا تھا "ترکو، بہادرو، بڑھے چلو"۔ 98 فیصدی ترک مسلمان ہیں اور 86 فیصدی کی ماں بولی ترکی ہے۔ یورپی زبانوں میں سے فرانسیسی کا سب سے زیادہ زور ہے۔ پھر جرمن، پھر اِتالین۔ انگریزی کی چوتھی جگہ ہے۔ سائنسی ٹرم فرانسیسی سے لئے گئے اور بہت سے یورپی لفظ زبان میں عام ہوگئے۔ اِن سب سدھاروں کا بولی پر یہ اثر ہوا کہ آجکل کی ترکی دسویں صدی کی ترکی سے بہت کچھ ملتی جلتی ہے۔ گو ترکی میں سور کل آٹھ ہیں لفظ سوروں سے اتنے لدے ہیں کہ بولی میں شکر گھل گئی۔ اِن سدھاروں سے پہلے ترکی میں بھی لکھنے والے چند پڑھے ہوؤں کے لئے ایسی بھاشا اور ایسے وشیوں پر لکھتے تھے جو صرف پڑھے ہوئے سمجھ سکتے تھے۔ عام جنتا کا کسی کو دھیان نہ تھا۔ اِن سدھاروں نے کایا پلٹ دی۔ اب قومی نعرہ "خلقو ڈوگرو" (خلق = جنتا، ڈوگرو = میں گھسو) ہے

तुम अब खड़े हो और अपना सवाल पूछ रहे हो, नज़र करनी होगी. हाँ, अब कहो, क्या तुम्हें तुम्हारे आँसू कहाँ नज़र आते हैं ?

"नहीं, मुझे तो आँसू के बदले कुछ कमल के फूल नज़र आते हैं.

"तो बस अब तुम्हें तसल्ली हो गई कि तुम्हारे आँसू कहाँ गए और उनका क्या हुआ ?

"हाँ, प्रभु, अब मैं समझा. तुम कोई ऐसी कीमिया जानते हो जिससे निराशा को आशा में बदल देते हो."

तब उस प्रभु के प्यारे ने अपना गीत गाना और नाचना बन्द किया. तारों ने अपनी चौकीदारी पूरी की और अपने घरों को वापस चले गए. मैं भी अपनी झोपड़ी की तरफ़ हो लिया. अभी मैं रास्ते में ही था कि मुझे अंगरेज़ी की एक कहावत याद आई. और जब तक मैं अपनी झोपड़ी में न दाख़िल हुआ, तब तक वह कहावत मेरे कानो में गूँजती रही—

"मैन्स डिसएप्वाइन्टमेन्ट इज़ गाड्स एप्वाइन्टमेन्ट."
यानी—

जब कभी इनसान होता है निरास
तो समझ ले को प्रभु है उसके पास.

تم اب کھڑے ہو اور اپنا سوال پوچھ رہے ہو، نظر کرنی ہوگی. ہاں، اب کہو، کیا تمہیں تمہارے آنسو کہیں نظر آتے ہیں ؟

"نہیں، مجھے تو آنسو کے بدلے کچھ کمل کے پھول نظر آتے ہیں.

"تو بس اب تمہیں تسلی ہوگئی کہ تمہارے آنسو کہاں گئے اور انکا کیا ہوا ؟

"ہاں، پربھو، اب میں سمجھا . تم کوئی ایسی کیمیا جانتے ہو جس سے نراشا کو آشا میں بدل دیتے ہو."

تب اس پربھو کے پیارے نے اپنا گیت گانا اور ناچنا بند کیا. تاروں نے اپنی چوکیداری پوری کی اور اپنے گھروں کو واپس چلے گئے . میں بھی اپنی جھونپڑی کی طرف ہولیا . ابھی میں راستہ میں ہی تھا کہ مجھے انگریزی کی ایک کہاوت یاد آئی . اور جب تک میں اپنی جھونپڑی میں نہ داخل ہوا، تب تک وہ کہاوت میرے کانوں میں گونجتی رہی—

"مینس ڈس اپوائنٹمنٹ ازگاڈس اپوائنٹمنٹ."
یعنی—

جب کبھی انسان ہوتا ہے نراس
تو سمجھ لے وہ پربھو ہے اسکے پاس .

खालिस बोली—खिचड़ी बोली और बोली की दीवार*

(भाई मदन गोपाल)

1923 में तुरकी में प्रजाराज हुआ. कमालपाशा उसका पहला प्रेसीडेन्ट एक फ़ौजी अफ़सर था जिसने अपनी बहादुरी से तुरकी को पहली जंग में इस ख़ूबी से बचाया कि जवान तुरकों की आँखों का तारा बन गया. क़ौम और देस का सच्चा आशिक़ था इसलिये क़ौम भी उस पर जान देती थी. वह डिक्टेटर बन बैठा. स्याह करे, सुफ़ैद करे किसी की मजाल न थी जो उसके सामने चूं कर सके. वह जानता था कि जब तक वह तुरकों का रुख़ न बदले यानी जब तक वह ब्राह्मनों के जादू के मंदिर को न तोड़े और उसमें स्थापित किये हुए भूतकाल के देवता को देस से न निकाले देस उभर नहीं सकता. इस रुख़ को बदलने के लिये उसने पांच छै ऐसे नादिरशाही हुक्म दिये जो सिर्फ़ वह ही दे सकता था

* पिछले नम्बर से आगे .

خالص بولی—کھچڑی بولی اور بولی کی دیوار*

(بھائی مدن گوپال)

1923 میں ترکی میں پرجا راج ہوا . کمال پاشا اس کا پہلا پریسیڈینٹ ایک فوجی افسر تھا جس نے اپنی بہادری سے ترکی کو پہلی جنگ میں اس خوبی سے بچایا کہ جوان ترکوں کی آنکھوں کا تارا بن گیا . قوم اور دیس کا سچا عاشق تھا اس لئے قوم بھی اس پر جان دیتی تھی . وہ ڈکٹیٹر بن بیٹھا . سیاہ کرے، سفید کرے کسی کی مجال نہ تھی جو اس کے سامنے چوں کرسکے . وہ جانتا تھا کہ جب تک وہ ترکوں کا رخ نہ بدلے یعنی جب تک وہ براہمنوں کے جادو کے مندر کو نہ توڑے اور اس میں ستھاپت کئے ہوئے بھوت کال کے دیوتا کو دیس سے نہ نکالے دیس ابھر نہیں سکتا . اس رخ کو بدلنے کے لئے اس نے پانچ چھ ایسے نادر شاہی حکم دئے جو صرف وہ ہی دے سکتا تھا

* پچھلے نمبر سے آگے .

'क़ादिर' और 'भगवान' दोनों के ठीक एक ही मानी हैं. जो 'भगवानदास' का मतलब है ठीक वही 'अब्दुल क़ादिर' का है. पारसी नाम 'अहुरमज़्द' और संस्कृत 'असुरमेधा' दोनों का एक ही मतलब है.

दुनिया के धर्मों को क़ायम करने वाले अपने अपने देश और काल की ज़रूरत के मुताबिक़ उसी एक सनातन धर्म उसी दीनुलक़य्यमा के ख़ास ख़ास पहलुओं पर ज़ोर देते रहे हैं. असली धर्म विद्या या इरफ़ान, एक ही है. चीज़ वही रूप नए नए.

قادر' اور 'بھگوان' دونوں کے ٹھیک ایک ہی معنی ہیں. جو 'بھگوان داس' کا مطلب ہے ٹھیک وہی 'عبدالقادر' کا ہے. پارسی نام 'اہرمزد' اور سنسکرت 'اسرمیدھا' دونوں کا ایک ہی مطلب ہے.

دنیا کے دھرموں کو قائم کرنے والے اپنے اپنے دیش اور کال کی ضرورت کے مطابق اسی ایک سناتن دھرم اسی دین القیمہ کے خاص خاص پہلوؤں پر زور دیتے رہے ہیں. اصلی دھرم ودیا یا عرفان' ایک ہی ہے. چیز وہی روپ نئے نئے.

सूफ़ियों की सोहबत में

(3)

(गु. म.)

आधी रात का वक़्त था. सारी दुनिया सोई हुई थी. सिर्फ़ आसमान के तारे और प्रभु के प्यारे जाग रहे थे. एक ऐसा ही प्रभु का प्यारा एक दरख़्त के नीचे अपना मुँह अपने घुटनों के बीच दबाकर बैठा हुआ था. जब क़रीब क़रीब दो घंटे गुज़र चुके तो उसने अपना सिर ऊँचा किया और अपना इकतारा, जो उसके पास ही पड़ा हुआ था, उठाकर उसके साथ कुछ गाने लगा और नाचने भी लगा. उसके गाने में मिठास तो थी ही, पर एक चुम्बक जैसा असर भी था.

मैं कुछ देर तक उसका गीत सुनता रहा. आहिस्ता आहिस्ता उसका मतलब क्या है, मुझे मालूम पड़ा. उस गीत का मतलब कुछ इस तरह का था—

"प्रभु, आज मैं तुमसे एक सवाल पूछता हूँ. उसका जवाब तुम्हें देना ही होगा. और अगर उसका जवाब मुझे तुमने न दिया तो फिर तुम्हारी और मेरी दोस्ती में कुछ फ़रक़ आ जाने का डर है.

"मेरा सवाल यह है. मैंने अपनी ज़िन्दगी में निराश होकर सैकड़ों आँसू बहाए हैं. अब तुम मुझे बताओ कि मेरे वह आँसू कहाँ गए. क्या वह सिर्फ़ मिट्टी में ही मिल गए?

(प्रभु सवाल का जवाब देते हैं) "इससे पहिले कि मैं तुम्हें बताऊँ कि तुम्हारे वह आँसू कहाँ गए, तुम्हें मेरी तरफ़ आना होगा जहाँ मैं खड़ा हूँ. और उस तरफ़ जहाँ

صوفیوں کی صحبت میں

(3)

(گ. م.)

آدھی رات کا وقت تھا. ساری دنیا سوئی ہوئی تھی. صرف آسمان کے تارے اور پربھو کے پیارے جاگ رہے تھے. ایک ایسا ہی پربھو کا پیارا ایک درخت کے نیچے اپنا منہ اپنے گھٹنوں کے بیچ دبا کر بیٹھا ہوا تھا. جب قریب قریب دو گھنٹے گزر چکے تو اس نے اپنا سر اونچا کیا اور اپنا اکتارا' جو اس کے پاس ہی پڑا ہوا تھا' اٹھا کر اسکے ساتھ کچھ گانے لگا اور ناچنے بھی لگا. اسکے گانے میں مٹھاس تو تھی ہی' پر ایک چمبک جیسا اثر بھی تھا.

میں کچھ دیر تک اسکا گیت سنتا رہا. آہستہ آہستہ اسکا مطلب کیا ہے' مجھے معلوم پڑا. اس گیت کا مطلب کچھ اس طرح کا تھا—

"پربھو' آج میں تم سے ایک سوال پوچھتا ہوں. اسکا جواب تمہیں دینا ہی ہوگا. اور اگر اسکا جواب مجھے تم نے نہ دیا تو پھر تمہاری اور میری دوستی میں کچھ فرق آجانے کا ڈر ہے.

"میرا سوال یہ ہے. میں نے اپنی زندگی میں نراش ہوکر سیکڑوں آنسو بہائے ہیں. اب تم مجھے بتاؤ کہ میرے وہ آنسو کہاں گئے. کیا وہ صرف مٹی میں ہی مل گئے؟

(پربھو سوال کا جواب دیتے ہیں) "اس سے پہلے کہ میں تمہیں بتاؤں کہ تمہارے وہ آنسو کہاں گئے' تمہیں میری طرف آنا ہوگا جہاں میں کھڑا ہوں. اور اس طرف جہاں

रहे हैं और बदलते रहेंगे. अल्लाह ईश्वर अलग अलग किताबों, अलग अलग ज़बानों और अलग अलग रसूलों के ज़रिये एक ही हक़ीक़त दुनिया को सिखाता रहा है.

क़ुरान कहता है—"अल्लाह के प्रेम की मज़बूत रस्सी और एक दूसरे से प्रेम तुम सब को मिलाए रखे, कभी एक दूसरे से फटने की न सोचो."

वेद कहता है—"तुम सब के दिल, दिमाग़ और सब का भेद एक हो, ताकि तुम सब फूलो फलो. सब सुख से रहो, सब मिल कर खाओ, मिलकर पियो और मिलकर काम करो, साथ साथ चलो, एक आवाज़ से बोलो और सब एक ही सचाई को समझो."

चीनी ग्रन्थ शुकिंग में लिखा है—"अपने सब पड़ोसियों के साथ मेल मिलाप से रहना सीखो, तुम सब भाई हो, सब के साथ प्रेम से रहो."

यही बात और इसी तरह की बातें इनजील में जगह जगह पढ़ने को मिलती हैं.

मशहूर ईसाई शहीद जस्टिन ने कहा है—"जितनी अच्छी बातें कही गई हैं, दुनिया के किसी देश और किसी क़ौम में भी, वह सब हम ईसाइयों की मिलकियत है."

एक सूफ़ी कहता है—

"फ़क़त तफ़ावत है नाम ही का
दर अस्ल सब एक ही हैं, यारो !
जो आबे साफ़ी की मौज में है
उसी का जलवा हुबाब में है."

यानी केवल नामों ही का फ़रक़ है, ऐ यारो ! असल में सब एक हैं, जो साफ़ पानी लहर के अन्दर है उसी की चमक बुलबुले के अन्दर है.

सूफ़ी अत्तार ने कहा है—"रूह अक़्ल और इल्म से ज़िन्दगी को जानती है. रूह के लिये ताज़ी और तुरकी का कोई फ़रक़ नहीं है."

मौलाना रूम ने कहा है—"रूह की दोस्ती अक़्ल से और इल्म से है. रूह के अन्दर हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई तुरक का कोई फ़रक़ नहीं."

वेदों में बारबार कहा गया है कि आत्मा की कोई जात, सम्प्रदाय, रंग या बरन नहीं होता.

सचमुच फ़रक़ केवल नामों का ही है. बात एक ही है, जो अल्लाह है वही ईश्वर है. जो अकबर का मतलब है वही परम या महा का अर्थ है. 'अल्लाहो अकबर' के लफ़्ज़ी मानी हैं 'परमेश्वर' या 'महादेव'. जो मानी 'रहीम' के हैं वही 'शिव' के हैं. जो मानी 'रहमान' के हैं वही शंकर के हैं. 'दास' और 'अब्द' के एक ही अर्थ हैं.

رہے ہیں اور بدلتے رہینگے . اللہ ایشور الگ الگ کتابوں' الگ الگ زبانوں اور الگ الگ رسولوں کے ذریعے ایک ہی حقیقت دنیا کو سکھاتا رہا ہے .

قران کہتا ہے—"اللہ کے پریم کی مضبوط رسی اور ایک دوسرے سے پریم تم سب کو ملائے رکھے' کبھی ایک دوسرے سے پھٹنے کی نہ سوچو".

وید کہتا ہے—"تم سب کے دل' دماغ اور سب کا بھید ایک ہو' تاکہ تم سب پھولو پھلو . سب سکھ سے رہو' سب مل کر کھاؤ' مل کر پیو' مل کر کام کرو' ساتھ ساتھ چلو' ایک آواز سے بولو اور سب ایک ہی سچائی کو سمجھو."

چینی گرنتھ شوکنگ میں لکھا ہے—"اپنے سب پڑوسیوں کے ساتھ میل ملاپ سے رہنا سیکھو' تم سب بھائی ہو' سب کے ساتھ پریم سے رہو."

یہی بات اور اسی طرح کی باتیں انجیل میں جگہ جگہ پڑھنے کو ملتی ہیں .

مشہور عیسائی شہید جسٹن نے کہا ہے—"جتنی اچھی باتیں کہی گئی ہیں' دنیا کے کسی دیش اور کسی قوم میں بھی' وہ سب ہم عیسائیوں کی ملکیت ہیں."

ایک صوفی کہتا ہے—

"فقط تفاوت ہے نام ہی کا
دراصل سب ایک ہی ہیں' یارو !
جو آب صافی کی موج میں ہے
اسی کا جلوہ حباب میں ہے ."

یعنی کیول ناموں ہی کا فرق ہے' اے یارو ! اصل میں سب ایک ہیں' جو صاف پانی لہر کے اندر ہے اسی کی چمک بلبلے کے اندر ہے .

صوفی عطار نے کہا ہے—

"روح عقل اور علم سے زندگی کو جانتی ہے . روح کے لئے تازی اور ترکی کا کوئی فرق نہیں ہے ."

مولانا روم نے کہا ہے—"روح کی دوستی عقل سے ہے اور علم سے ہے . روح کے اندر ہندو' مسلم' عیسائی ترک کا کوئی فرق نہیں ."

ویدوں میں بار بار کہا گیا ہے کہ آتما کی کوئی جات' سمپردائے' رنگ یا ورن نہیں ہوتا .

سچ مچ فرق کیول ناموں کا ہی ہے . بات ایک ہی ہے . جو اللہ ہے وہی ایشور ہے . جو اکبر کا مطلب ہے وہی پرم یا مہا کا ارتھ ہے . 'اللہ اکبر' کے لفظی معنی ہیں 'پرمیشور' یا 'مہادیو'. جو معنی 'رحیم' کے ہیں وہی 'شیو' کے ہیں . جو معنی 'رحمان' کے ہیں وہی 'شنکر' کے ہیں . 'داس' اور 'عبد' کے ایک ہی ارتھ ہیں .

ने कहा है कि यह सब अगले पिछले 'बुद्ध' और अगले पिछले 'तीर्थंकर' बार बार उन्हीं एक बुनियादी सचाइयों का उपदेश देते रहे हैं, केवल जब यह सचाइयां लोगों के दिलों में फीकी या धुन्धली पड़जाती हैं तो यह महापुरुश अपनी ठीक ठीक जिन्दगी से उनमें नई जान डालते रहे हैं और डालते रहेंगे.

इनजील में लिखा है—"क्या कोई ऐसी बात है जिस की बाबत यह कहा जासके कि यह नई बात है ? हर बात पहले से चली आरही है, हर बात सनातन है, सूरज के नीचे कोई बात नई नहीं है. (एक्लेजियास्टिक्स)

हज़रत ईसा ने कहा है—"मैं पुराने धर्म और पहले के नबियों के काम को नश्ट करने के लिये नहीं आया बल्कि उसे पूरा करने के लिये आया हूँ." (इनजील)

कृश्न ने अर्जुन से कहा है—"जो बात मैं तुझे सिखा रहा हूँ वही विवस्वान ने मनुको, मनुने इक्ष्वाकु को, इक्ष्वाकु ने दूसरों को, इसी तरह युग युग में एक रिशी ने दूसरे को, एक आदमी ने दूसरे आदमी को सिखाई हैं, लोग उसे भूल गए हैं, पर सब जगह मौजूद, सब कुछ जानने वाले सर्वशक्तिमान परमात्मा के अन्दर वह सब ज्ञान मौजूद है."

क़ुरान में यह चीज़ बार बार और तरह तरह से कही गई है—

"जो बात इस क़ुरान में कही गई है वही सब पुरानी किताबों में कही गई है."

"कोई क़ौम नहीं कि जिसके अन्दर हादी यानी राह दिखाने वाले न भेजे गए हों."

"और अल्लाह ने जितने रसूल इससे पहले भेजे हैं सबने यही उपदेश दिया है कि सबका अल्लाह एक है और सब को केवल उसी की इबादत करनी चाहिये."

"और जितने रसूल भेजे गए हैं उन सब ने अपनी क़ौम की ज़बान में ही उपदेश दिया है ताकि लोगों के दिलों में किसी तरह का शक न रह जावे."

"क़ुरान अरबी में इसलिये उतरा है कि मक्का और आस पास के शहरों के लोग आसानी से समझ सकें."

"हम उन सब रसूलों में किसी तरह का फ़रक़ नहीं करते."

इन आयतों से और इसी तरह की और बहुत सी आयतों से साफ़ ज़ाहिर है कि सब धर्मों की बुनियादी सचाइयां एक हैं. सचाई एक ही सचाई है. उस पर किसी क़ौम, किसी धर्म या किसी रसूल का इजारा नहीं है. ऊपर के रीत रिवाज देश, काल और हालत के अनुसार बदलते

کہا ہے کہ یہ سب اگلے پچھلے 'بدھ' اور پچھلے 'تیرتھنکر' بار بار انہیں ایک بنیادی ائیوں کا اپدیش دیتے رہے ہیں کیول جب یہ ائیاں لوگوں کے دلوں میں پھیکی یا دھندلی پڑ ی ہیں تو یہ مہا پرش اپنی ٹھیک ٹھیک زندگی سے اُن ں نئی جان ڈالتے رہے ہیں اور ڈالتے رہینگے۔

انجیل میں لکھا ہے —" کیا کوئی ایسی بات ہے ں کی بابت یہ کہا جاسکے کہ یہ نئی بات ہے ؟ ہر پہلے سے چلی آرہی ہے، ہر بات سناتن ہے، سورج کے ے کوئی بات نئی نہیں ہے۔ (اکلے زیاسٹکس)

حضرت عیسیٰ نے کہا ہے —

" میں پرانے دھرم اور پہلے کے نبیوں کے کام کو نشٹ کے لئے نہیں آیا بلکہ اُسے پورا کرنے کے لئے آیا ۔" (انجیل)

کرشن نے ارجن سے کہا ہے —

" جو بات میں تجھے سکھا رہا ہوں وہی وِوسوان نے کو، منو نے اکشواکو کو، اکشواکو نے دوسروں کو، اسی طرح یگ میں ایک رشی نے دوسرے کو، ایک آدمی نے ے آدمی کو سکھائی ہیں، لوگ اُسے بھول گئے ہیں، ب جگہ موجود، سب کچھ جاننے والے سروشکتی مان تما کے اندر وہ سب گیان موجود ہے۔"

قرآن میں یہ چیز بار بار اور طرح طرح سے کہی گئی —

" جو بات اس قرآن میں کہی گئی ہے وہی سب ی کتابوں میں کہی گئی ہے۔"

" کوئی قوم نہیں کہ جسکے اندر ہادی یعنی راہ نے والے نہ بھیجے گئے ہوں۔"

" اور اللہ نے جتنے رسول اس سے پہلے بھیجے ہیں نے یہی اُپدیش دیا ہے کہ سب کا اللہ ایک ہے اور کو کیول اُسی کی عبادت کرنی چاہئیے۔"

" اور جتنے رسول بھیجے گئے ہیں اُن سب نے اپنی کی زبان میں ہی اُپدیش دیا ہے تاکہ لوگوں کے دلوں کسی طرح کا شک نہ رہ جاوے۔"

" قرآن عربی میں اس لئے اترا ہے کہ مکے اور آس کے شہروں کے لوگ آسانی سے سمجھ سکیں۔"

" ہم اُن سب رسولوں میں کسی طرح کا فرق نہیں ۔"

ن آیتوں سے اور اسی طرح کی اور بہت سی آیتوں ف ظاہر ہے کہ سب دھرموں کی بنیادی سچائیاں ہیں۔ سچائی ایک ہی سچائی ہے۔ اُس پر کسی کسی دھرم یا کسی رسول کا اجارہ نہیں ہے۔ اوپر یت رواج دیش، کال اور حالت کے انوسار بدلتے

मज़हबों के क़ायम करने वाले खुद इस बारे में क्या कहते हैं. इन सब मज़हबों के बानियों ने साफ़साफ़ यह कहा है कि हम सब एक ही बुनियादी सच्चाइयों का उपदेश देते आए हैं.

उपनिशद् में लिखा है—

गवाम् अनेक वर्णानाम्
क्षीरस्यास्ति एक वर्णता
क्षीरवत् पश्यते ज्ञानम्
लिंगिनास्तु गवाम् यथा.

यानी गाएं अलग अलग रंगों की होती हैं, पर दूध सब का एक रंग का यानी सफ़ेद होता है. ज्ञानी यानी आरिफ़ दूध को देखता है और ऊपर के रीत रिवाजों में फंसे हुए लोग गायों के रंग को देखते हैं. मौलाना रूम ने हज़रत ईसा के उपदेशों का ज़िक्र करते हुए कहा है—

जामये सद रंग जां खुम्मे सफ़ा
सादाओ यक रंग गश्ता चूं ज़िया

यानी सैकड़ों रंग के कपड़े उस साफ़ भट्टी में पड़ कर इस तरह सफ़ेद और यकरंग हो गए जिस तरह सातों रंग मिलकर सफ़ेद रोशनी बन जाते हैं.

श्री कृष्ण ने भगवत गीता में दो बार कहा है—

"ऐ अर्जुन ! लोग सब तरफ़ से चलकर अलग अलग रास्तों से भी मुझ तक ही पहुँचते हैं."

यही वह आखिरी मंज़िल है जिसकी तरफ़ सारी दुनिया बढ़ी चली जा रही है.

पारसी धर्म के बानी ज़रतुश्त ने लिखा है—

"और हम दुनिया के उन सब पहले के धर्मों को मानते और पूजते हैं जो नेकी सिखाते हैं."

गाथा में लिखा है कि—"असभ्य दस्यु क़ौमों में भी उन लोगों को सच्चा धर्म सिखाने के लिए पैग़म्बर होते रहे हैं."

जो ज़माना हिन्दुस्तान में बुद्ध और महावीर का था वही चीन में लाओत्से और कंगफ़ूत्से का था. चीन के लोग बुद्ध, लाओत्से और कंगफ़ूत्से तीनों को एक त्रिमूर्ति की तरह अपने बराबर के पैग़म्बर या अवतार मानते हैं. कंगफ़ूत्से ने कहा है—"जो दीन धर्म पहले से चला आ रहा है मैं केवल उसी को आगे चला रहा हूं, मैं कोई नई बात नहीं गढ़ सकता."

बुद्ध ने अपने से पहले के 'बुद्धों' का और अपने बाद के 'बुद्धों' का, और इसी तरह 'जिन' यानी महावीर ने अपने से पहले के और अपने बाद के 'तीर्थंकरों' (पुल या रास्ता बनाने वालों) का ज़िक्र किया है, और दोनों

مذہبوں کے قائم کرنے والے خود اس بارے میں کیا کہتے ہیں. ان سب مذہبوں کے بانیوں نے صاف صاف یہ کہا ہے کہ ہم سب ایک ہی بنیادی سچائیوں کا اُپدیش دیتے آئے ہیں.

اُپنشد میں لکھا ہے —

گوام انیک ورنا نام
چھیر سیاسی ایک ورنتا
چھیکوت پشیتے گیانم
لنگناستو گوام یتھا

یعنی گائیں الگ الگ رنگوں کی ہوتی ہیں، پر دودھ سب کا ایک رنگ کا یعنی سفید ہوتا ہے. گیانی یعنی عارف دودھ کو دیکھتا ہے اور اوپر کے ریت رواجوں میں پھنسے ہوئے لوگ گایوں کے رنگ کو دیکھتے ہیں. مولانا روم نے حضرت عیسیٰ کے اُپدیشوں کا ذکر کرتے ہوئے کہا ہے—

جامۂ صدرنگ زاں خم صفا
سادہ و یک رنگ گشتہ چوں ضیا

یعنی سیکڑوں رنگ کے کپڑے اُس صاف بھٹی میں پڑکر اسطرح سفید اور یک رنگ ہوگئے جس طرح ساتوں رنگ ملکر سفید روشنی بن جاتے ہیں.

شری کرشن نے بھگوت گیتا میں دو بار کہا ہے—

" اے ارجن ! لوگ سب طرف سے چل کر الگ الگ راستوں سے بھی مجھ تک ہی پہونچتے ہیں."

یہی وہ آخری منزل ہے جس کی طرف ساری دنیا بڑھی چلی جا رہی ہے.

پارسی دھرم کے بانی زرتشت نے لکھا ہے —

" اور ہم دنیا کے اُن سب پہلے کے دھرموں کو مانتے اور پوجتے ہیں جو نیکی سکھاتے ہیں."

گاتھا میں لکھا ہے کہ —"اسبھیہ دسیو قوموں میں بھی اُن لوگوں کو سچا دھرم سکھانے کے لئے پیغمبر ہوتے رہے ہیں."

جو زمانہ ہندستان میں بدھ اور مہاویر کا تھا وہی چین میں لاؤتزے اور کنگ فوتزے کا تھا. چین کے لوگ بدھ، لاؤتزے اور کنگ فوتزے تینوں کو ایک ترمورتی کی طرح برابر کے پیغمبر یا اوتار مانتے ہیں. کنگ فوتزے نے کہا ہے —" جو دین دھرم پہلے سے چلا آرہا ہے میں کیول اُسی کو آگے چلا رہا ہوں، میں کوئی نئی بات نہیں گڑھ سکتا."

بدھ نے اپنے سے پہلے کے 'بدھوں' کا اور اپنے بعد کے 'بدھوں' کا، اور اسی طرح 'جن' یعنی مہاویر نے اپنے سے پہلے کے اور اپنے بعد کے 'تیرتھنکروں' (پل یا راستہ بنانے والوں) کا ذکر کیا ہے، اور دونوں

चाहिये. हर बच्चा अपनी आज़ाद तबियत, अपनी पसन्द और अपने अन्दर के झुकाव के अनुसार जो चाहे पढ़े या न पढ़े और जिधर को चाहे जाय. लेकिन इस तरह के सब आदमी नौजवानों को कुछ न कुछ सिखाते ही हैं और वही चीज़ें सिखाते हैं जो वह खुद नौजवानों के लिये सब से अधिक फ़ायदे की समझते हैं. रूस के कम्युनिस्ट अपने नौजवानों को ज़ोरों के साथ कम्युनिज़्म सिखाते हैं, इटली के फ़ाशिस्ट उन्हें फ़ाशिज़्म सिखाते हैं. इंगलैंड और अमरीका वाले अपने नौजवानों को ज़बरदस्ती डेमोक्रेटिज़्म बल्कि इम्पीरियलिज़्म सिखाते हैं. बातें सब आज़ादी की करते हैं पर सब अपने अपने यहाँ के नौजवानों को पूरे ज़ोरों के साथ अपने अपने सांचे में ढालने की कोशिशों में लगे हुए हैं. आज़ादी की इस दलील में सच्चाई केवल इतनी है और वह बड़ी ज़रूरी चीज़ है कि बाक़ी ज़िन्दगी के लिये हर लड़के लड़की को उस काम, उस धन्दे या उस पेशे की तालीम देनी चाहिये जो उसकी तबियत, उसकी ताक़त और उस की पसन्द के अनुसार हो. बस, यह तो हुई हर बच्चे की ख़ास तालीम. इस के अलावा और इसके साथ साथ हर बच्चे को आम और ज़रूरी कलचरी तालीम भी चार चीज़ों में देनी चाहिये—पढ़ना, लिखना, हिसाब और मानव धर्म (मज़हबे इन्सानियत).

यह ठीक है कि बड़े होकर हर लड़के लड़की को अधिकार है कि वह जिस चीज़ को चाहे माने और जिसे चाहे न माने, जो चाहे अपनाए रहे और जो चाहे छोड़ दे. सैकड़ों आदमी, ख़ास कर पढ़े लिखे, रोज़ अपना मत, अपने विचार और अपनी पारटी बदलते रहते हैं. यह आए दिन का बदलाव हमारे समाज को बहुत नुक़सान पहुँचा रहा है. इसका इलाज भी यही है कि हम मज़हब के बुनियादी असूलों यानी सब मज़हबों के उन आम असूलों की, जो हर इनसान के लिये ज़रूरी रूहानी और इख़लाक़ी यानी आध्यात्मिक और नैतिक, ख़ुराक हैं, दुनिया के सब लड़कों और लड़कियों को छोटी उमर से ही पूरी पूरी तालीम दें. आगे चल कर हमारे बच्चे कोई भी पेशा क्यों न अपनावें मानव धर्म के यह आम असूल ही उन की हर तरह के ज़िन्दगी में बुनियाद का काम करेंगे और उन्हें गुमराही से और एक दूसरे की नफ़रत और दुश्मनी से बचावेंगे.

अब सवाल रह जाता है कि यह मानव धर्म यानी यह इनसानी मज़हब है क्या चीज़. इसी को हम विश्व धर्म या आलमगीर मज़हब भी कह सकते हैं. इस इनसानी मज़हब में वह सब सच्चाइयां और वह सब काम शामिल हैं जो अधिकतर नहीं बल्कि सब बड़े बड़े मज़हब ठीक मानते हैं. सबसे पहले हम यह देखें कि इन सब अलग अलग

چاہئے ، ہر بچہ اپنی آزاد طبیعت ، اپنی پسند اور اپنے اندر کے جھکاؤ کے انوسار جو چاہے پڑھے یا نہ پڑھے اور جدھر کو چاہے جائے. لیکن اس طرح کے سب آدمی نوجوانوں کو کچھ نہ کچھ سکھاتے ہی ہیں اور وہی چیزیں سکھاتے ہیں جو وہ خود نوجوانوں کے لئے سب سے ادھک فائدے کی سمجھتے ہیں. روس کے کمیونسٹ اپنے نوجوانوں کو زوروں کے ساتھ کمیونزم سکھاتے ہیں ، اٹلی کے فاشسٹ انہیں فاشسزم سکھاتے ہیں . انگلینڈ اور امریکہ والے اپنے نوجوانوں کو زبردستی ڈیموکریٹزم بلکہ امپیریلزم سکھاتے ہیں . باتیں سب آزادی کی کرتے ہیں پر سب اپنے اپنے یہاں کے نوجوانوں کو پورے زوروں کے ساتھ اپنے اپنے سانچے میں ڈھالنے کی کوششوں میں لگے ہوئے ہیں . آزادی کی اس دلیل میں سچائی کیول اتنی ہے اور وہ بڑی ضروری چیز ہے کہ باقی زندگی کے لئے ہر لڑکے لڑکی کو اس کام ، اس دھندے یا اس پیشے کی تعلیم دینی چاہئے جو اسکی طبیعت ، اس کی طاقت اور اسکی پسند کے انوسار ہو . بس ، یہ تو ہوئی ہر بچے کی خاص تعلیم . اسکے علاوہ اور اسکے ساتھ ساتھ ہر بچے کو عام اور ضروری کلچری تعلیم بھی چار چیزوں میں دینی چاہئے — پڑھنا ، لکھنا ، حساب اور مانو دھرم (مذہب انسانیت) .

یہ ٹھیک ہے کہ بڑے ہوکر ہر لڑکے لڑکی کو ادھیکار ہے کہ وہ جس چیز کو چاہے مانے اور جسے چاہے نہ مانے ، جو چاہے اپنائے رہے اور جو چاہے چھوڑ دے . سیکڑوں آدمی ، خاص کر پڑھے لکھے ، روز اپنا مت ، اپنے وچار اور اپنی پارٹی بدلتے رہتے ہیں . یہ آئے دن کا بدلاؤ ہمارے سماج کو بہت نقصان پہونچا رہا ہے . اِسکا علاج بھی یہی ہے کہ ہم مذہب کے بنیادی اصولوں یعنی سب مذہبوں کے اُن عام اصولوں کی ، جو ہر انسان کے لئے ضروری روحانی اور اخلاقی یعنی آدھیاتمک اور نیتک ، خوراک ہیں ، دنیا کے سب لڑکوں اور لڑکیوں کو چھوٹی عمر سے ہی پوری پوری تعلیم دیں . آگے چل کر ہمارے بچے کوئی بھی پیشہ کیوں نہ اپناویں مانو دھرم کے یہ عام اصول ہی اُنکی ہر طرح کی زندگی میں بنیاد کا کام کرینگے اور اُنہیں گمراہی سے اور ایک دوسرے کی نفرت اور دشمنی سے بچاوینگے .

اب سوال رہ جاتا ہے کہ یہ مانو دھرم یعنی یہ انسانی مذہب ہے کیا چیز . اِسی کو ہم وشو دھرم یا عالمگیر مذہب بھی کہہ سکتے ہیں . اس انسانی مذہب میں وہ سب سچائیاں اور وہ سب کام شامل ہیں جو ادھک تر نہیں بلکہ سب بڑے بڑے مذہب ٹھیک مانتے ہیں . سب سے پہلے ہم یہ دیکھیں کہ اِن سب الگ الگ

हटा कर दूसरे किसी भी मज़हब को मानने लगते हैं. पर दिलों की गहराई के अन्दर किसी न किसी मज़हब की प्यास सब के अन्दर बनी रहती है. इस से ज़ाहिर है कि आदमी के लिये ज़रूरी चीज़ 'मज़हब' है, यह मज़हब या वह मज़हब नहीं. अब हमारे लिये दो रास्ते रह जाते हैं. या तो सब मज़हबों से इनकार करदें या सब को मानने लगें. यह दोनों नामुमकिन हैं. इसलिये अमली चीज़ और सब से अच्छी और अक़्लमन्दी की चीज़ यही है कि जितने बड़े बड़े मज़हब दुनिया में हैं उन सब में से हम उन नाम रूपों और रीत रिवाजों को अलग कर के जो सब में अलग अलग हैं, और जो अपनी अपनी जगह और अपने अपने हालात में मुफ़ीद हो सकते हैं, उन सब चीज़ों को जमा कर लें जो सब में एक सी हैं और जिन्हें सब ज़रूरी मानते हैं. फिर हम अपने सब बच्चों को यही असली रूहानी नाज खिलाएं, उन्हें उन ही की तालीम दें, और उन्हें यह भी बताएं कि रीत रिवाज के छिलके सचाई के दानों को क़ायम रखने के लिये ज़रूरी हो सकते हैं, वह खाने और हज़म करने की चीज़ नहीं हैं.

कुछ लोगों का कहना है कि पुराने ज़माने में जो काम मज़हब से लिया जाता था वह अब कला, क़ानून, फ़लसफ़े और साइंस से मिलाकर लिया जाता है. इसलिये अब हमें किसी नए या पुराने मज़हब की ज़रूरत नहीं रही. इस का जवाब यह है कि आदमी कोई तीन या चार टुकड़ों में बंटी हुई चीज़ नहीं है, वह एक वजूद है, एक अस्तित्व है. फ़लसफ़े, साइंस, क़ानून और कला का मेल बैठाने वाली उसके अन्दर कोई एक चीज़ होनी चाहिये. अंगरेज़ी शब्द 'रिलीजन' का अर्थ 'बांधना' है. हिन्दी शब्द 'धर्म' का अर्थ सब को संभालना है. धर्म या मज़हब ही वह चीज़ है जो सब लोगों के दिलों को एक दूसरे के साथ और सब को ईश्वर के साथ एक डोर में बांधे रखती है. इसके ख़िलाफ़ दुनिया के लोभ लालच और दुनियावी ख़ाहिशें हमें एक दूसरे से फाड़ती हैं. वेदान्त या तसव्वुफ़ वह चीज़ है जिसमें फ़लसफ़ा, साइंस और कला, बल्कि कहना चाहिये मज़हब, साइंस और कला तीनों आकर मिल जाते हैं और जिस में सब मज़हबों का इत्र खिंच कर आ जाता है. हमें यह भी न भूलना चाहिये कि आजकल की साइंस के बड़े से बड़े पंडितों की खोज ने हमें यहाँ पहुँचा दिया है कि सारी माद्दी दुनिया यानी सारा जड़ जगत ऐटमों यानी परमाणुओं 'इलक्ट्रान', 'प्रोटोन', 'न्युट्रोन', 'न्यूट्रोन', 'पोज़ीट्रोन' वग़ैरा वग़ैरा, यहाँ तक कि बिजली की ताक़त और आख़ीर में केवल माइन्ड फ़ोर्स यानी चित्त शक्ति या ख़याल की ताक़त से बनी हुई है और उसी से क़ायम है.

कुछ लोग इस बात पर ज़ोर देते हैं कि तालीम में लड़कों और लड़कियों को ज़ियादा से ज़ियादा आज़ादी देनी

ہٹا کر دوسرے کسی بھی مذہب کو ماننے لگتے ہیں. پر دلوں کی گہرائی کے اندر کسی نہ کسی مذہب کی پیاس سب کے اندر بنی رہتی ہے. اس سے ظاہر ہے کہ آدمی کے لئے ضروری چیز 'مذہب' ہے، یہ مذہب یا وہ مذہب نہیں. اب ہمارے لئے دو راستے رہ جاتے ہیں. یا تو سب مذہبوں سے انکار کر دیں یا سب کو ماننے لگیں. یہ دونوں ناممکن ہیں. اسلئے عملی چیز اور سب سے اچھی اور عقلمندی کی چیز یہی ہے کہ جتنے بڑے بڑے مذہب دنیا میں ہیں ان سب میں سے ہم ان نام روپوں اور ریت رواجوں کو الگ کر کے جو سب میں الگ الگ ہیں، اور جو اپنی اپنی جگہ اور اپنے اپنے حالات میں مفید ہو سکتے ہیں، ان سب چیزوں کو جمع کر لیں جو سب میں ایک سی ہیں اور جنہیں سب ضروری مانتے ہیں. پھر ہم اپنے سب بچوں کو یہی اصلی روحانی ناج کھلائیں، انہیں ان ہی کی تعلیم دیں اور انہیں یہ بھی بتائیں کہ ریت رواج کے چھلکے سچائی کے دانوں کو قائم رکھنے کے لئے ضروری ہوسکتے ہیں، وہ کھانے اور ہضم کرنے کی چیز نہیں ہیں.

کچھ لوگوں کا کہنا ہے کہ پرانے زمانے میں جو کام مذہب سے لیا جاتا تھا وہ اب کلا، قانون، فلسفے اور سائنس سے ملاکر لیا جاتا ہے. اس لئے اب ہمیں کسی نئے یا پرانے مذہب کی ضرورت نہیں رہی. اس کا جواب یہ ہے کہ آدمی کوئی تین یا چار ٹکڑوں میں بٹی ہوئی چیز نہیں ہے، وہ ایک وجود ہے، ایک استتو ہے. فلسفے، سائنس، قانون اور کلا کا میل بیٹھانے والی اس کے اندر کوئی ایک چیز ہونی چاہئے. انگریزی شبد 'رلیجن' کا ارتھ 'باندھنا' ہے. ہندی شبد 'دھرم' کا ارتھ سب کو سنبھالنا ہے. دھرم یا مذہب ہی وہ چیز ہے جو سب لوگوں کے دلوں کو ایک دوسرے کے ساتھ اور سب کو ایشور کے ساتھ ایک ڈورے میں باندھے رکھتی ہے. اسکے خلاف دنیا کے لوبھ لالچ اور دنیاوی خواہشیں ہمیں ایک دوسرے سے پھاڑتی ہیں. ویدانت یا تصوف وہ چیز ہے جس میں فلسفہ، سائنس اور کلا، بلکہ کہنا چاہئے مذہب، سائنس اور کلا تینوں آکر مل جاتے ہیں اور جس میں سب مذہبوں کا عطر کھنچ کر آجاتا ہے. ہمیں یہ بھی نہ بھولنا چاہئے کہ آجکل کی سائنس کے بڑے سے بڑے پنڈتوں کی کھوج نے ہمیں یہاں پہونچا دیا ہے کہ ساری مادی دنیا یعنی سارا جڑ جگت ایٹموں یعنی پرمانوں 'الکٹرون'، 'پروٹون'، 'نیوٹرون'، 'نیوٹرون'، 'پوزیٹرون' وغیرہ وغیرہ یہاں تک کہ بجلی کی طاقت اور آخیر میں کیول مائنڈ فورس یعنی چت شکتی یا خیال کی طاقت سے بنی ہوئی ہے اور اسی سے قائم ہے.

کچھ لوگ اس بات پر زور دیتے ہیں کہ تعلیم میں لڑکوں اور لڑکیوں کو زیادہ سے زیادہ آزادی دینی

उनको अपने बच्चों को तालीम देने की क्या ज़रूरत. अगर मज़हब के बिना आदमी का काम चल सकता तो हम भी इन सवालों का यही जवाब देते कि हमें कोई हक़ नहीं, और न इस की कोई ज़रूरत है. पर सच यह है कि मज़हब के बिना काम चल नहीं सकता. इसलिये जवाब देना पड़ता है कि बच्चों को मज़हबी तालीम देने का हमें उतना ही हक़ है और यह हमारा उतना ही ज़बरदस्त फ़र्ज़ है जितना उन्हें लिखना, पढ़ना, हिसाब, भूगोल, इतिहास और साइंस सिखाना. इतना ही नहीं, यह सब चीज़ें आदमी को आत्मा के भले के लिये उतनी ज़रूरी नहीं हैं जितना मज़हब. हम यह सब चीज़ें अपने बच्चों को इसलिये पढ़ाते हैं क्योंकि हमने तजरबे से देख लिया है कि इन्हें जानने में ही उनका भला है. इसमें अगर हम ग़लतियां कर जाएं तो कर जाएं. ग़लतियां इनसानों से ही होती हैं. चूँकि खाना कभी कभी लोगों को बदहज़मी और नुक़सान कर देता है इसलिये लोगों का खाना हम हमेशा के लिये बन्द नहीं कर सकते. हमें चाहिये यह कि हम इस बात की भी कोशिश करें कि खाना अच्छा हो, जल्दी पचने वाला हो और जितना चाहिये उतना ही दिया जाय, जिससे तन्दुरुस्ती बने बिगड़े नहीं. इसी तरह मज़हब को अपने बच्चों को तालीम देते समय तीन बातों को जान लेने की पूरी कोशिश करनी चाहिये—एक यह कि मज़हब की कौन कौन सी बातें पक्की, मुहकम और अटल हैं, दूसरी यह कि वह बातें ऊँची से ऊँची साइंस की कसौटी पर सच्ची और खरी उतरती हैं या नहीं, और इससे से भी बढ़कर तीसरी बात हमें यह देखनी चाहिये कि कौन कौन सी बातें सब मज़हबों में एक सी हैं, जिन पर सब की राय मिलती है, जिन से सब में एक दूसरे से हमदरदी, मेल मिलाप और प्रेम बढ़ सके. कट्टर मज़हबी लोगों के अन्धेपन और उनकी आपसी नफ़रतों को कम करने का भी यही एक तरीक़ा है.

इसी सवाल पर अब हम दूसरी तरह से विचार करें. दुनिया के अधिकतर लोग अपने अपने धर्म में पैदा होते हैं और उसी को चिपटे रहते हैं, ठीक जिस तरह हर आदमी अपने बाप दादा की जायदाद को चिपटा रहता है. पर अगर दो बच्चे साथ साथ पैदा हों, एक किसी मुसलमान घर में और दूसरा किसी हिन्दू घर में, और हम उसी समय हिन्दू बच्चे को लेजाकर मुसलमान घर में और मुसलमान बच्चे को लेजाकर हिन्दू घर में रख दें और दोनों को वहीं पलने और बड़ा होने दें, तो हिन्दू घर में पैदा हुआ बच्चा बड़ा होकर मुसलमानों की सी सब बातें करने लगेगा और मुसलमान घर में पैदा हुआ बच्चा हिन्दुओं की तरह रहने सहने और सोचने लगेगा. इसी तरह अकसर लोग अपने जनम के मज़हब से विश्वास

اپنے بچوں کو تعلیم دینے کی کیا ضرورت. اگر مذہب کے بنا آدمی کا کام چل سکتا تو ہم بھی ان سوالوں کا یہی جواب دیتے کہ ہمیں کوئی حق نہیں' اور نہ اسکی کوئی ضرورت ہے. پر سچ یہ ہے کہ مذہب کے بنا کام چل نہیں سکتا. اس لئے جواب دینا پڑتا ہے کہ بچوں کو مذہبی تعلیم دینے کا ہمیں اتنا ہی حق ہے اور یہ ہمارا اتنا ہی زبردست فرض ہے جتنا انہیں لکھنا' پڑھنا' حساب' بھوگول' اتہاس اور سائنس سکھانا. اتنا ہی نہیں' یہ سب چیزیں آدمی کی آتما کے بھلے کے لئے اتنی ضروری نہیں ہیں جتنا مذہب. ہم یہ سب چیزیں اپنے بچوں کو اسلئے پڑھاتے ہیں کیونکہ ہم نے تجربے سے دیکھ لیا ہے کہ انہیں جاننے میں ہی ان کا بھلا ہے. اسمیں اگر ہم غلطیاں کر جائیں تو کر جائیں. غلطیاں انسانوں سے ہی ہوتی ہیں چونکہ کھانا کبھی کبھی لوگوں کو بدہضمی اور نقصان کر دیتا ہے اسلئے لوگوں کا کھانا ہم ہمیشہ کے لئے بند نہیں کر سکتے. ہمیں چاہئے یہ کہ ہم اس بات کی بھی کوشش کریں کہ کھانا اچھا ہو' جلدی پچنے والا ہو اور جتنا چاہئے اتنا ہی دیا جائے' جس سے تندرستی بنے بگڑے نہیں. اسی طرح مذہب کی اپنے بچوں کو تعلیم دیتے سمے تین باتوں کو جان لینے کی پوری کوشش کرنی چاہئے — ایک یہ کہ مذہب کی کون کون سی باتیں پکی' محکم اور اٹل ہیں' دوسری یہ کہ وہ باتیں اونچی سے اونچی سائنس کی کسوٹی پر سچی اور کھری اترتی ہیں یا نہیں' اور اس سے بھی بڑھکر تیسری بات ہمیں یہ دیکھنی چاہئے کہ کون کون سی باتیں سب مذہبوں میں ایک سی ہیں' جن پر سب کی رائے ملتی ہے' جن سے سب میں ایک دوسرے سے ہمدردی' میل ملاپ اور پریم بڑھ سکے. کٹر مذہبی لوگوں کے اندھے پن اور ان کی آپسی نفرتوں کو کم کرنے کا بھی یہی ایک طریقہ ہے.

اسی سوال پر اب ہم دوسری طرح سے وچار کریں. دنیا کے ادھک تر لوگ اپنے اپنے دھرم میں پیدا ہوتے ہیں اور اسی کو چپٹے رہتے ہیں' ٹھیک جس طرح ہر آدمی اپنے باپ دادا کی جائداد کو چپٹا رہتا ہے. پر اگر دو بچے ساتھ ساتھ پیدا ہوں' ایک کسی مسلمان گھر میں اور دوسرا کسی ہندو گھر میں' اور ہم اسی سمے ہندو بچے کو لے جا کر مسلمان گھر میں اور مسلمان بچے کو لے جا کر ہندو گھر میں رکھ دیں اور دونوں کو وہیں پلنے اور بڑا ہونے دیں' تو ہندو گھر میں پیدا ہوا بچہ بڑا ہوکر مسلمانوں کی سی سب باتیں کرنے لگیگا اور مسلمان گھر میں پیدا ہوا بچہ ہندوؤں کی طرح رہنے سہنے اور سوچنے لگے گا. اسی طرح اکثر لوگ اپنے جنم کے مذہب سے وشواس

अब धरती की कोख पे कोई ऐटम बम न गिराए
कहीं न कोई हीरो शीमा नागा साकी बनाए
ज़हरीली गैसों का बादल मौत न अब बरसाए
काल न कोई बोने पाए भूक न कोई उगाए

जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

यही लड़ाई जो फैलाए काल, बिपत, महँगाई
क्यों न बनें धनवान फिर इसके रसिया और सौदाई
लोहे के बदले में करादे जो सोने की कमाई
अब न फँसेंगे लाख कोई डालर का जाल बिछाए

जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

दोस्त हमारा अब तो वही है जंग का हो जो दुशमन
ऐटम की ताक़त से चलाए ट्रैक्टरों के इंजन
रेगिस्तानों को जो सींचे और बनादे गुलशन
खेती हँसिया काटे हथौड़ा कारीगरी फैलाए

जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

वेत नाम, मलाया, बरमा, अरब हो या अफ़रीक़ा
यूनान, इटली, जरमन, फ़्रान्स, इंगलैंड हो या अमरीका
दुनिया भर में जंग पसन्दों का है रंग अब फीका
भूके भारत वाले भी दानों से नहीं ललचाए

जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

भूकी जनता से घबराकर यह सरमाया दारी
आड़ में मज़हब की करवादेती है मारा मारी
ख़ुद तो छिप जाती है मरती है जनता बेचारी
आपस की यह जंग न बढ़कर और तबाही लाए

जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

اب دھرتی کی کوکھ پہ کوئی ایٹم بم نہ گرائے
کہیں نہ کوئی ھیرو شیما ناگا ساکی بنائے
زہریلی گیسوں کا بادل موت نہ اب برسائے
کال نہ کوئی بونے پائے بھوک نہ کوئی اگائے

جنگ نہونے پائے ساتھی، جنگ نہونے پائے !

یہی لڑائی جو پھیلائے کال، بپت، مہنگائی
کیوں نہ بنیں دھنوان پھر اسکے رسیا اور سودائی
لوہے کے بدلے میں کرا دے جو سونےکی کمائی
اب نہ پھنسینگے لاکھ کوئی ڈالر کا جال بچھائے

جنگ نہونے پائے ساتھی، جنگ نہونے پائے !

دوست ہمارا اب تو وہی ہے جنگ کا ہو جو دشمن
ایٹم کی طاقت سے چلائے ٹریکٹروں کے انجن
ریگستانوں کو جو سینچے اور بنا دے گلشن
کھیتی ھنسیا کاٹے ھتھوڑا کاریگری پھیلائے

جنگ نہونے پائے ساتھی، جنگ نہونے پائے !

ویت نام، ملایا، برما، عرب ہو یا افریقا
یونان، اٹلی، جرمن، فرانس، انگلینڈ ہو یا امریکہ
دنیا بھر میں جنگ پسندوں کا اب رنگ ہے پھیکا
بھوکے بھارت والے بھی دانوں سے نہیں للچائے

جنگ نہونے پائے ساتھی، جنگ نہونے پائے !

بھوکی جنتا سے گھبرا کر یہ سرمایہ داری
آڑ میں مذہب کی کروا دیتی ہے مارا ماری
خود تو چھپ جاتی ہے مرتی ہے جنتا بےچاری
آپس کی یہ جنگ نہ بڑھکر اور تباہی لائے

جنگ نہونے پائے ساتھی، جنگ نہونے پائے !

इनसान और मज़हब

(डाक्टर भगवान दास)

बहुत से लोग मज़हब के नाम पर कट्टर, अंधे और नासमझ लोगों के आपसी झगड़ों, हटधर्मियों, ज़ुल्मों और बुरे से बुरे पापों को देख कर यह कहने लगे हैं कि हमें अपने बच्चों को किसी तरह की भी मज़हबी तालीम नहीं देनी चाहिये. इतनी बुरी चीज़ अपने बच्चों के ऊपर लादने का हमें क्या हक़ है. जो मज़हब आदमी आदमी में दुशमनी पैदा करते हैं, उन्हें इतना अन्धा कर देते हैं,

انسان اور مذہب

(ڈاکٹر بھگوان داس)

بہت سے لوگ مذہب کے نام پر کٹر، اندھے اور ناسمجھ لوگوں کے آپسی جھگڑوں، ہٹ دھرمیوں، ظلموں اور برے سے برے پاپوں کو دیکھکر یہ کہنے لگے ہیں کہ ہمیں اپنے بچوں کو کسی طرح کی بھی مذہبی تعلیم نہیں دینی چاہئے. اتنی بری چیز اپنے بچوں کے اوپر لادنے کا ہمیں کیا حق ہے. جو مذہب آدمی آدمی میں دشمنی پیدا کرتے ہیں، [illegible] اتنا اندھا کر دیتے ہیں،

नया हिन्द

نیا ہند

जिल्द 11 सितम्बर, सन् '51 नम्बर 3

جلد 11 ستمبر، سن '51 نمبر 3

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

जंग न होने पाए

(भाई मुज़फ़्फ़र शाहजहाँपुरी)

जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

जंग के कारन बिक गईं कितनी मरियम और सीताएँ
खो बैठीं अपने नयनों के तारे कितनी माएँ
लाख बलाएँ लाईं एक दो हों तो उन्हें गिनाएँ
अब की जंग छिड़ी तो कम है जो न क़ियामत ढाए

जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

मांग का सेंदूर उजड़ा और कितनों की चूड़ी टूटी
कितनी बाँहों से जौशन उतरे माथों की बेंदी छूटी
जंग के ख़ूनी देव ने घर घर शान्ति सब की लूटी
हम पर, तुम पर, सब पर बीती कौन किसे समझाए

जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

अब न हों बेवा जवान सुहागिन अब न यतीमी बरसे
घूंघट में घुट घुट के न कोई पिया मिलन को तरसे
भरती होने पेट की ख़ातिर जाय न कोई घर से
जंग किसी साजन को अपनी सजनी से न छुड़ाए

जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

इल्म-ओ-अदब, आज़ादी और बच्चों के गालों की लाली
जंग ने फैला रक्खी है हर शोबे पर बदहाली
मुस्तक़बिल पर अब न बरसने देंगे हम पामाली
[illegible]

جنگ نہ ہونے پائے

(بھائی مظفر شاہجہانپوری)

جنگ نہونے پائے ساتھی، جنگ نہونے پائے !

جنگ کے کارن بک گئیں کتنی مریم اور سیتائیں
کھو بیٹھیں اپنے نینوں کے تارے کتنی مائیں
لاکھ بلائیں لائی اک دو ہوں تو انہیں گنائیں
اب کی جنگ چھڑی تو کم ہے جو نہ قیامت ڈھائے

جنگ نہونے پائے ساتھی، جنگ نہونے پائے !

مانگ کا سیندور اجڑا اور کتنوں کی چوڑی ٹوٹی
کتنی بانہوں سے جوشن اترے ماتھوں کی بیندی چھوٹی
جنگ کے خونی دیو نے گھر گھر شانتی سبکی لوٹی
ہم پر، تم پر، سب پر بیتی کون کسے سمجھائے

جنگ نہونے پائے ساتھی، جنگ نہونے پائے !

اب نہیں بیوہ جوان سہاگن اب نہ یتیمی برسے
گھونگھٹ میں گھٹ گھٹ کے نہ کوئی پیا ملن کو ترسے
بھرتی ہونے پیٹ کی خاطر جائے نہ کوئی گھر سے
جنگ کسی ساجن کو اپنی سجنی سے نہ چھڑائے

جنگ نہونے پائے ساتھی، جنگ نہونے پائے !

علم و ادب آزادی اور بچوں کے گالوں کی لالی
جنگ نے پھیلا رکھی ہے ہر شعبے پر بدحالی
مستقبل پر اب نہ برسنے دینگے ہم پامالی
[illegible]

[...]स्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

सितम्बर 1951

" نیا ھند "

ھندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماھواری پرچا

ستمبر 1951

[...] किससे — सफ़ा

کیا کس سے — صفحہ

[...]—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने .

मैनेजर 'नया हिन्द'

[...], इलाहाबाद .

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے .

مینیجر ' نیا ھند '

145 مٹھی گنج، الہ آباد .

नया हिन्द — نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر—تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, महमूद अहमद 'हुनर'

نائب ایڈیٹر—سریش رام بھائی، محمود احمد 'ہنر'

* * * * * *

इस नम्बर के ख़ास लेख

हमारी राय—

اِس نمبر کے خاص لیکھ

ہماری رائے—

* * * * * *

स्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — ن کلچر سوسائٹی، الٰہ آباد

सितम्बर 1951 ستمبر

क़ीमत दस आना — قیمت دس آنہ

Registered No. A—210.

हिन्दुस्तानी कलचर
पर
निबन्धों (मक़ालों) के लिये
इनाम

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने तय किया है कि हिन्दुस्तानी कलचर पर तीन सबसे अच्छे निबन्धों (मक़ालों) के लिये तीन इनाम दिये जाएं. पहला इनाम एक हज़ार रुपए, दूसरा इनाम पाँच सौ रुपए और तीसरा इनाम ढाई सौ रुपए.

निबन्धों में उस हिन्दुस्तानी कलचर के, जो पिछले सारे ज़माने में रूप लेती रही है, टिकाऊ पहलुओं को बयान करते हुए आगे के लिये एक हिन्दुस्तानी कलचर के रंग रूप को बताने की कोशिश होनी चाहिये. निबन्ध अंगरेज़ी में या हिन्दुस्तानी में होने चाहियें. पाँच हज़ार से कम या दस हज़ार से अधिक शब्द न हों. फ़ुलस्केप काग़ज़ पर, काग़ज़ के एक तरफ़, एक चौथाई हाशिया छोड़कर, टाइप करके हर निबन्ध की तीन कापियाँ 30 सितम्बर सन 1951 तक नीचे के पते पर आजानी चाहियें. हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी को हक़ होगा कि आए हुए निबन्धों में से जिसे चाहे छापा करे.

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

नोटः—यह निबन्ध पहले 30 जून तक मँगाए गए थे और इनाम की रक़में कुछ कम थीं. अब इस के लिये वक़्त और रक़म दोनों बढ़ा दिये गए हैं.

—सुन्दरलाल

ہندستانی کلچر
پر
نبندھوں (مقالوں) کے لئے
انعام

ہندستانی کلچر سوسائٹی نے طے کیا ہے کہ ہندستانی کلچر پر تین سب سے اچھے نبندھوں (مقالوں) کے لئے تین انعام دئے جائیں ۔ پہلا انعام ایک ہزار روپے' دوسرا انعام پانچ سو روپے اور تیسرا انعام ڈھائی سو روپے ۔

نبندھوں میں اُس ہندستانی کلچر کے' جو پچھلے سارے زمانے میں روپ لیتی رہی ہے' ٹکاؤ پہلوؤں کو بیان کرتے ہوئے آگے کے لئے ایک ہندستانی کلچر کے رنگ روپ کو بتانے کی کوشش ہونی چاہئے ۔ نبندھ انگریزی میں یا ہندستانی میں ہونے چاہئیں ۔ پانچ ہزار سے کم یا دس ہزار سے ادھک شبد نہ ہوں ۔ فلسکیپ کاغذ پر' کاغذ کے ایک طرف' ایک چوتھائی حاشیہ چھوڑ کر' ٹائپ کر کے ہر نبندھ کی تین کاپیاں 30 ستمبر سن 1951 تک نیچے کے پتے پر آجانی چاہئیں ۔ ہندستانی کلچر سوسائٹی کو حق ہوگا کہ آئے ہوئے نبندھوں میں سے جسے چاہے شائع کرے ۔

سندرلال

سکریٹری' ہندستانی کلچر سوسائٹی
145' مٹھی گنج' الہ آباد

نوٹ — یہ نبندھ پہلے 30 جون تک منگائے گئے تھے اور انعام کی رقمیں کچھ کم تھیں ۔ اب اِس کے لئے وقت اور رقم دونوں بڑھا دئے گئے ہیں ۔

—سندرلال

Printed and Published by Purushottam Prasad, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों .

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना .

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना .

—:o:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल .

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये –

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिदुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद .

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे .

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(3) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی. جی . کھیر' مسٹر ایس . کے . رودرا' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چندرانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندرلال

سکریٹری' ہندستانی کلچر سوسائٹی'

145' مٹھی گنج' الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے .

सोसाइटी की नई किताब

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृष्ण दास

देश पिता महात्मा गांधी ने राजकाज के मैदान में क़दम रखते ही फ़िरक़ाबन्दी के ज़हरीले नतीजों और भीशन नुक़सानों का अन्दाज़ा कर लिया था. यही कारन था कि उन्हों ने अपने जीवन की आख़िरी साँस तक फ़िरक़ाबन्दी के ख़िलाफ़ लड़ाई जारी रक्खी.

इस पुस्तक में सन 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिकता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब एक जगह जमा कर दिया गया है.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर से अपने दिल और दिमाग़ को साफ़ करे.

यह किताब हर हिन्दुस्तानी को ज़रूर पढ़नी चाहिये.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

छप रही है

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सच्चाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है. अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आप के दिल को जोश से भर देगी.

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. किताब 15 सितम्बर तक निकल जायगी. सुन्दर जिल्द. बढ़िया काग़ज़. उम्दा छपाई. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

سائٹی کی نئی کتاب

فرقہ‌بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

دیش پتا مہاتما گاندھی نے راج کاج کے میدان میں دم رکھتے ہی فرقہ‌بندی کے زہریلے نتیجوں اور بھیشن نقصانوں کا اندازہ کر لیا تھا ۔ یہی کارن تھا کہ انہوں نے اپنے جیون کی آخری سانس تک فرقہ‌بندی کے خلاف لڑائی جاری رکھی ۔

اِس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب ایک جگہ جمع کر دیا گیا ہے ۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصانوں کو سمجھے اور اس زہر سے اپنے دل اور دماغ کو صاف کرے ۔

یہ کتاب ہر ہندستانی کو ضرور پڑھنی چاہئے ۔

سندر جلد ۔ اچھا کاغذ ۔ دو سو صفحے ۔ قیمت دو روپیہ ۔

چھپ رہی ہے

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے ۔ آج کی اردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے ۔ اب آپ کو اردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی ۔ غلامی' انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کو جوش سے بھر دیگی ۔

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا ۔ کتاب 15 ستمبر تک نکل جائیگی ۔ سندر جلد ۔ بڑھیا کاغذ ۔ عمدہ چھپائی ۔ دام صرف ڈھائی روپیہ ۔

ملنے کا پتہ —
مینیجر 'نیا ہند' 145' مٹھی گنج' الہ‌آباد ۔

पंजाब हमें क्या सिखाता है

महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटीसी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करनेकी तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

30 जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर यह विधान दिया की वह उनकी तरफ़से उसे आल इंडिया कांगरेस कमेटी में पेश कर दें. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख़्ता नेकी है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपये.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल.

उन बहादुरों की कहानियाँ जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी.

हर एकता प्रेमी के पढ़ने की किताब. क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल .

उन मुसलमान देशभक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद .

پنجاب همیں کیا سکھاتا هے

مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ھیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق

اس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ‌وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کےلئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

30 جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کے جنرل سکریٹری کو بلا کر یہ ودھان دیا کہ وہ اُن کی طرف سے اسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں پیش کر دیں . یہ چھوٹا سا ودھان دیش کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے اور اِسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ھیں .

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے . 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے .

آج کے شہید

سمپادک— شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی .

ہر ایکتا پریمی کے پڑھنے کی کتاب . قیمت صرف ڈھائی روپیہ .

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل .

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی . کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے .
قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج' الہ‌آباد .

गीता और क़ुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे दे कर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़बत, आख़रत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस में वह चार लेक्चर जमा कर दिये गये हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

گیتا اور قرآن

لیکھک—پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے .

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے .

آخر میں قرآن سے پہلے کی عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے . اس میں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے . یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ .

ہندو مسلم ایکتا

اس میں وہ چار لیکچر جمع کر دئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک—پنڈت سندر لال

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج، الہ آباد .

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

नीचे लिखी सब किताबें नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती हैं. जो किताब एक ही लिखावट में छपी है उसका ज़िकर कर दिया गया है.

दस रुपए से ज़्यादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायगी.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन् 1950 से सारे भारत में लागू हुआ

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझ ले.

यदि आप आने वाले आम चुनाव में, जिस पर भारत का सारा भविश्य निर्भर है, समझ कर हिस्सा लेना चाहते हैं और आज़ाद भारत में अपने अधिकार समझना चाहते हैं तो ज़रूरी है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ लें.

आसानी के लिये किताब के आख़ीर में हिन्दी से अंगरेज़ी और अंगरेज़ी से हिन्दी साठ पन्ने की शब्दमाला दे दी गई है.

भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

هندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

نیچے لکھی سب کتابیں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہیں۔ جو کتاب ایک ہی لکھاوٹ میں چھپی ہے اُس کا ذکر کر دیا گیا ہے۔

دس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں اور بکسیلروں کو خاص رعایت دی جائیگی۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمہ ہوگا۔

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا.

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انووادت۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اِس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھ لے۔

یدی آپ آنے والے عام چناؤ میں، جس پر بھارت کا سارا بھوشیہ نربھر ہے، سمجھ کر حصہ لینا چاہتے ہیں اور آزاد بھارت میں اپنے ادھیکار سمجھنا چاہتے ہیں تو ضروری ہے کہ آپ اس پستک کو دھیان سے پڑھ لیں۔

آسانی کے لئے کتاب کے آخیر میں ہندی سے انگریزی اور انگریزی سے ہندی ساٹھ پنّے کی شبد مالا دے دی گئی ہے۔

بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے۔

آسان بامحاورہ بھاشا۔ رایل اٹھ پیجی بڑا سائز۔ لگ بھگ چار سو پنّے۔ کپڑے کی سندر جلد۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے۔

ملنے کا پتہ :—
مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد۔

समझते हैं. इस से यही पता चलता है कि हमारे विधान में अभी कितना लोच बाक़ी है. लेकिन प्रेस वालों को इस सुधार से घबराना नहीं चाहिये क्योंकि अगर वह असल में जी जान से अपने बुनियादी हक़ पर लड़ने को तैयार रहेंगे तो कोई उनका बाल भी बांका नहीं कर सकता.

लेकिन हमें असली दुख तीसरे पैरे की 'बी' दफ़ा को पढ़कर पहुँचा है. इस दफ़ा का वास्ता हमारे देश के माली मामलों और उद्योग धंदों से है. इसमें सरकार ने जो अख़तियार अपने हाथ में ले लिये हैं उनसे तो हमें डर है कि हमारे छोटे मोटे देहाती उद्योग धंदे जो इस वक़्त लबे-दम हालत में चल रहे हैं वह और भी चौपट हो जायंगे. आज जब हुकूमत डंके की चोट पर विदेशी और देशी पूँजी पतियों की पीठ सहला कर काम कर रही है तो हम यह मानने से इनकार करते हैं कि वह इस दफ़ा का इस्तेमाल उनके बजाय किसी दूसरे के हक़ में करेगी. यहां यह बताने की जरूरत नहीं कि किस तरह पिछले चार बरस में हमारी आज़ाद सरकार ने एक के बाद एक देहाती धन्धों को पैरों तले दबाया है. इस दफ़ा के बन जाने पर तो हुकूमत को अपनी इस रविश को कमाल तक पहुँचाने में कोई भी अड़चन बाक़ी नहीं रह जाती. अफ़सोस कि हमारी सरकार एक तरफ़से तो विधान में सुधार कर प्रजा का हित महफ़ूज़ रखने की डींग मारती है और दूसरी तरफ़से उसको तबाह और बेहाल कर देने के क़दम उठाने में कोई कसर बाक़ी नहीं रखती.

—सुरेश रामभाई

سمجھتے ھیں ۔ اِس سے یہی پتہ چلتا ھے کہ ھمارے ودھان میں ابھی کتنا لوچ باقی ھے ۔ لیکن پریس والوں کو اِس سدھار سے گھبرانا نہیں چاھئے کیونکہ اگر وہ اصل میں جی جان سے اپنے بنیادی حق پر لڑنے کو تیار رھینگے تو کوئی اُن کا بال بھی بانکا نہیں کر سکتا ۔

لیکن ھمیں اصلی دکھ تیسرے پیرے کی 'بی' دفعہ کو پڑھکر پہنچا ھے ۔ اِس دفعہ کا واسطہ ھمارے دیش کے مالی معاملوں اور اُدیوگ دھندوں سے ھے ۔ اِس میں سرکار نے جو اختیار اپنے ھاتھ میں لے لئے ھیں اُن سے تو ھمیں ڈر ھے کہ ھمارے چھوٹے موٹے دیہاتی اُدیوگ دھندے جو اِس وقت لب دم حالت میں چل رھے ھیں وہ اور بھی چوپٹ ھوجائینگے ۔ آج جب حکومت ڈنکے کی چوٹ پر ودیشی اور دیشی پونجی پتیوں کی پیٹھ سہلا کر کام کر رھی ھے تو ھم یہ ماننے سے اِنکار کرتے ھیں کہ وہ اِس دفعہ کا استعمال اُنکے بجائے کسی دوسرے کے حق میں کریگی ۔ یہاں یہ بتانے کی ضرورت نہیں کہ کس طرح پچھلے چار برس میں ھماری آزاد سرکار نے ایک کے بعد ایک دیہاتی دھندوں کو پیروں تلے دبایا ھے ۔ اِس دفعہ کے بن جانے پر تو حکومت کو اپنی اِس روش کو کمال تک پہنچانے میں کوئی بھی اڑچن باقی نہیں رہ جاتی ۔ افسوس کہ ھماری سرکار ایک طرف سے تو ودھان میں سدھار کر پرجا کا ھت محفوظ رکھنے کی ڈینگ مارتی ھے اور دوسری طرف سے اُسکو تباہ اور بے حال کر دینے کے قدم اُٹھانے میں کوئی کسر باقی نہیں رکھتی ۔

—سریش رام بھائی

गाहकों से—

हमारे गाहकों और दूसरे प्रेमियों ने देखा होगा कि जुलाई के महीने से 'नया हिन्द' नई शक्ल में निकलना शुरू हुआ है. जुलाई से हमारा नया साल भी शुरू होता है, और जियादातर गाहक इसी माह में बनते हैं. इसलिये हमने अपने गाहक रजिस्टर को फिर से तैयार कराया है और नए सिरे से गाहक नम्बर दिये हैं. सब भाई बहनों से अरज़ है कि अपना नया गाहक नम्बर नोट करलें और चिट्ठी पत्री के समय उसका हवाला दे दिया करें ताकि कारवाई जल्दी की जा सके.

—मैनेजर, 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گاھکوں سے—

ھمارے گاھکوں اور دوسرے پریمیوں نے دیکھا ھوگا کہ جولائی کے مہینے سے 'نیا ھند' نئی شکل میں نکلنا شروع ھوا ھے ۔ جولائی سے ھمارا نیا سال بھی شروع ھوتا ھے' اور زیادہ‌تر گاھک اِسی ماہ میں بنتے ھیں ۔ اِس لئے ھم نے اپنے گاھک رجسٹر کو پھر سے تیار کرایا ھے اور نئے سرے سے گاھک نمبر دئے ھیں ۔ سب بھائی بہنوں سے عرض ھے کہ اپنا نیا گاھک نمبر نوٹ کرلیں اور چٹھی پتری کے سمے اس کا حوالہ دے دیا کریں تاکہ کاروائی جلدی کی جاسکے ۔

—مینیجر' 'نیا ھند'
145' مٹھی گنج' الہ‌آباد

विधान में सुधार—

पिछले जून के महीने में नई दिल्ली में हमारी पार्लिमेंट ने इन्डिया यानी भारत के विधान में (जो 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ था) कुछ सुधार किये हैं और "विधान (पहला सुधार) ऐक्ट, 1951" के नाम से नया क़ानून पास किया है. यह पूरा ऐक्ट हम इस नम्बर में दे रहे हैं. इसको हम अलग से भी छपवा रहे हैं और जिन भाई बहनों के पास हमारी किताब 'भारत का विधान' हो वह एक कारड भेजकर "विधान (पहला सुधार) ऐक्ट, 1951" हम से मंगा सकते हैं.

सरकारी हलक़ों का कहना है कि डेढ़ बरस के अन्दर ही विधान में सुधार की ज़रूरत इस वजह से पड़ गई क्योंकि जनहित के जो बहुत से काम देश की या प्रदेशों की सरकारें करना चाहती थीं उनमें क़ानूनी तौर से रुकावटें पड़ीं, जैसे ज़मींदारी-ख़त्म-हो क़ानून बहुत सी जगह पास हो चुके थे मगर कई हाईकोर्टों ने विधान की रोशनी में उस क़ानून को बेजा ठहराया. इसी तरह से बोलने और विचार ज़ाहिर करने की आज़ादी के बहाने देश के ख़िलाफ़ ज़बानी और प्रेस में गन्दा प्रचार किया जाने लगा. इसी छोटी बड़ी ख़ामियों को दुरुस्त करने के लिये यह सुधार ऐक्ट बनाया गया.

इस सुधार ऐक्ट में 14 पैरे हैं, जिनमें 3, 4 और 5 ख़ास अहमियत रखते हैं. बाक़ी तो राजपंचायत, सदन की बैठकों को बुलाने, भंग करने के सिलसिले में राजपति, रियासत पति या राज प्रमुख के हक़, विदेशी जज के नियोजन, पिछड़ी हुई जमातों की बेहतरी वग़ैरा से ताल्लुक़ रखते हैं और जिन पर किसी को कोई एतराज़ नहीं होगा. चौथे और पांचवें का ताल्लुक़ ज़मींदारी-ख़त्म-हो क़ानून की दफ़ाओं से है जिन से जनहित को कोई नुक़सान नहीं होने वाला है और जिन का हम स्वागत करते हैं.

सबसे ज़्यादा बहस तलब तीसरा पैरा है जो विधान की दफ़ा 19 में सुधार है. इसके पहले हिस्से को हिन्दुस्तान के अख़बार वालों ने अपने बुनियादी अधिकार पर एक ज़बरदस्त चोट महसूस किया और सारे प्रेस में इसकी गूंज रही. हकूमत की तरफ़ से प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू और घर मंत्री श्री राजगोपालाचार्य ने इस सुधार को जायज़ और लाज़मी बताया. हमें हँसी इस बात पर आती है कि जो अख़बार वाले इस सुधार के ख़िलाफ़ ज़ियादा शोर मचाते हैं और प्रेस की आज़ादी के अलम बरदार बनते हैं वही अमली शक्ल में खुले तौर पर इसके सब से बड़े दुशमन हैं. इसका यह मतलब नहीं कि हम इस सुधार को मुनासिब और बेहतरी लाने वाला

ودھان میں سدھار —

پچھلے جون کے مہینے میں نئی دلی میں ہماری پارلیمنٹ نے انڈیا یعنی بھارت کے ودھان میں (جو 26 جنوری 1950 کو لاگو ہوا تھا) کچھ سدھار کئے ہیں اور " ودھان (پہلا سدھار) ایکٹ، 1951 " کے نام سے نیا قانون پاس کیا ہے . یہ پورا ایکٹ ہم اِس نمبر میں دے رہے ہیں . اسکو ہم الگ سے بھی چھپوا رہے ہیں اور جن بھائی بہنوں کے پاس ہماری کتاب ' بھارت کا ودھان ' ہو وہ ایک کارڈ بھیج کر " ودھان (پہلا سدھار) ایکٹ، 1951 " ہم سے منگا سکتے ہیں .

سرکاری حلقوں کا کہنا ہے کہ ڈیڑھ برس کے اندر ہی ودھان میں سدھار کی ضرورت اِس وجہ سے پڑگئی کیونکہ جن ہت کے جو بہت سے کام دیش کی یا پردیشوں کی سرکاریں کرنا چاہتی تھیں اُن میں قانونی طور سے رکاوٹیں پڑیں، جیسے زمینداری ختم ہو قانون بہت سی جگہ پاس ہو چکے تھے مگر کئی ہائی کورٹوں نے ودھان کی روشنی میں اُس قانون کو بیجا ٹھہرایا . اِسی طرح سے بولنے اور وچار ظاہر کرنے کی آزادی کے بہانے دیش کے خلاف زبانی اور پریس میں گندہ پرچار کیا جانے لگا . ایسی چھوٹی بڑی خامیوں کو درست کرنے کے لئے یہ سدھار ایکٹ بنایا گیا .

اِس سدھار ایکٹ میں 14 پیرے ہیں، جن میں 3، 4 اور 5 خاص اہمیت رکھتے ہیں . باقی تو راج پنچایت، سدن کی بیٹھکوں کو بلانے، بھنگ کرنے کے سلسلے میں راج پتی، ریاست پتی یا راج پرمکھ کے حق، ودیشی جج کے نیوجن، پچھڑی ہوئی جماعتوں کی بہتری وغیرہ سے تعلق رکھتے ہیں اور جن پر کسی کو کوئی اعتراض نہیں ہوگا . چوتھے اور پانچویں کا تعلق زمینداری ختم ہو قانون کی دفعوں سے ہے جن سے جن ہت کو کوئی نقصان نہیں ہونے والا ہے اور جن کا ہم سواگت کرتے ہیں .

سب سے زیادہ بحث طلب تیسرا پیرا ہے جو ودھان کی دفعہ 19 میں سدھار ہے . اِسکے پہلے حصے کو ہندستان کے اخبار والوں نے اپنے بنیادی ادھیکار پر ایک زبردست چوٹ محسوس کیا اور سارے پریس میں اِسکی گونج رہی . حکومت کی طرف سے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو اور گھر منتری شری راج گوپالا چاریہ نے اِس سدھار کو جائز اور لازمی بتایا . ہمیں ہنسی اس بات پر آتی ہے کہ جو اخبار والے اِس سدھار کے خلاف زیادہ شور مچاتے ہیں اور پریس کی آزادی کے علم بردار بنتے ہیں وہی عملی شکل میں کھلے طور پر اِسکے سب سے بڑے دشمن ہیں . اِس کا یہ مطلب نہیں کہ ہم اِس سدھار کو مناسب اور بہتری لانے والا

जुलाई के आखिरी हफ़्ते में दिल्ली में इस कमीशन के सलाहकार बोर्ड की बैठक हुई थी. उसमें नायब सद्र ने बड़ी एहतियात से समझाया कि यह प्लानिंग असल में कोई प्लानिंग ही नहीं है. और बताया कि इस रिपोर्ट में आज की मौजूदा हालत में कुछ अच्छे नतीजे निकालने के ख़याल से कौन से तौर तरीक़े इस्तेमाल किये जायँ इसकी सिर्फ़ झलक दी गई है. कमीशन ने समाज में क्रांति पैदा करने की डींग नहीं मारी है और न ऐसी कोई जीवन मान बदलने की कोशिश की है जिसके कारन आज के समाज के, कम से कम ऊँचे दरजे के लोगों को अपना आराम का जीवन छोड़ना पड़े.

इस रिपोर्ट पर सरसरी निगाह दौड़ाने से ही यह पता चल जायगा कि हमारा दावा सही है. यह सचमुच कोई प्लानिंग ही नहीं है. इस मोटी किताब में बहुत सी इक्की दुक्की आज़ाद योजनाएँ हैं. उनका एक दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं दिखाई देता. इनमें से कुछ में साम्राजवादी बू आती है, कुछ में समाजवाद की, कुछ में गांधीवादी होने का स्वांग है और कुछ तो क़रीब क़रीब समाजवादियों जैसी ही हैं. विचार और मक़सद का ताल मेल कहीं नज़र नहीं आता. ऐसा साफ़ दिखाई देता है कि हर एक योजना में ख़ास ख़ास हितों के दबाव में आकर उनके फ़ायदों को धक्का नहीं लगाया गया है. यह रिपोर्ट क्या बल्कि जुदा जुदा हितों के अपना उल्लू सीधा करने की की गई कोशिशों का हैरतनाक तमाशा है और कमीशन के मेम्बर अलग अलग मुक़ामों पर की गई इन कोशिशों के दबाव में आए हुए मालूम होते हैं.

राष्ट्र के सामने जो प्लानिंग रखा जाता है वह उसे एक मक़सद की तरफ़ ले जाने वाला होना चाहिये, फिर वह मक़सद चाहे माटीवादी हो, चाहे नैतिक, चाहे समाजी या रूहानी. ऐसा जब तक नहीं होता तब तक लोग उसको जोश से नहीं मंज़ूर कर सकते. और लोगों का उसका जोश से स्वागत किये बिना वह प्लानिंग अमल में भी नहीं आ सकता. इसलिये जीवन का मक़सद क्या हो इसका इस रिपोर्ट में कोई ज़िकर न होने की कमी को अगर जल्दी ही पूरा न किया गया तो इसके तैयार करने की सारी मेहनत बेकार जायगी.

हमें बताया गया है कि इस 'प्लानिंग' रिपोर्ट को पक्का करने के पहले पार्लिमेन्ट में ग़ौर करने के लिये पेश किया जायगा. हमें आशा है कि यह मक़सद की कमी वहाँ दूर कर दी जायगी और उसका स्वरूप ऐसा कर दिया जायगा कि वह एक मुनासिब और जोशीली या जानदार चीज़ बन जायगी. आज का उसका स्वरूप बेकार सा ही है.

('ग्राम उद्योग पत्रिका' से) —जे. सी कुमारप्पा

جولائی کے آخری ہفتے میں دلی میں اس کمیشن کے صلاح کار بورڈ کی بیٹھک ہوئی تھی. اس میں نائب صدر نے بڑی احتیاط سے سمجھایا کہ یہ پلاننگ اصل میں کوئی پلاننگ ہی نہیں ہے. اور بتایا کہ اس رپورٹ میں آج کی موجودہ حالت میں کچھ اچھے نتیجے نکلنے کے خیال سے کون سے طور طریقے استعمال کئے جائیں اسکی صرف جھلک دی گئی ہے. کمیشن نے سماج میں کرانتی پیدا کرنے کی ڈینگ نہیں ماری ہے اور نہ ایسی کوئی جیون مان بدلنے کی کوشش کی ہے جس کے کارن آج کے سماج کے، کم سے کم اونچے درجے کے لوگوں کو اپنا آرام کا جیون چھوڑنا پڑے.

اس رپورٹ پر سرسری نگاہ دوڑانے سے ہی یہ پتہ چل جائیگا کہ ہمارا دعویٰ صحیح ہے. یہ سچ مچ کوئی پلاننگ ہی نہیں ہے. اس موٹی کتاب میں بہت سی اِکی دکی آزاد یوجنائیں ہیں. اُن کا ایک دوسرے سے کوئی سمبندھ نہیں دکھائی دیتا. اِن میں سے کچھ میں سامراج وادی بو آتی ہے، کچھ میں سماج واد کی، کچھ میں گاندھی وادی ہونے کا سوانگ ہے اور کچھ تو قریب قریب سماج وادیوں جیسی ہی ہیں. وچار اور مقصد کا تال میل کہیں نظر نہیں آتا. ایسا صاف دکھائی دیتا ہے کہ ہر ایک یوجنا میں خاص خاص ہتوں کے دباو میں آکر اُنکے فائدوں کو دھکا نہیں لگایا گیا ہے. یہ رپورٹ کیا بلکہ جدا جدا ہتوں کے اپنا اُلو سیدھا کرنے کی کی گئی کوششوں کا حیرت ناک تماشہ ہے اور کمیشن کے ممبر الگ الگ مقاموں پر کی گئی ان کوششوں کے دباو میں آئے ہوئے معلوم ہوتے ہیں.

راشٹر کے سامنے جو پلاننگ رکھا جاتا ہے وہ اُسے ایک مقصد کی طرف لے جانے والا ہونا چاہئے، پھر وہ مقصد چاہے ماٹی وادی ہو، چاہے نیتک، چاہے سماجی یا روحانی. ایسا جب تک نہیں ہوتا تب تک لوگ اُسکو جوش سے نہیں منظور کر سکتے. اور لوگوں کا اُس کا جوش سے سواگت کئے بنا وہ پلاننگ عمل میں بھی نہیں آسکتا. اِسلئے جیون کا مقصد کیا ہو اِس کا اِس رپورٹ میں کوئی ذکر نہ ہونے کی کمی کو اگر جلدی ہی پورا نہ کیا گیا تو اسکے تیار کرنے کی ساری محنت بیکار جائے گی.

ہمیں بتایا گیا ہے کہ اس 'پلاننگ' رپورٹ کو پکا کرنے کے پہلے پارلیمنٹ میں غور کرنے کے لئے پیش کیا جائیگا. ہمیں آشا ہے کہ یہ مقصد کی کمی وہاں دور کر دی جائیگی اور اُسکا سروپ ایسا کر دیا جائیگا کہ وہ ایک مناسب اور جوشیلی یا جاندار چیز بن جائیگی. آج کا اُسکا سروپ بیکار سا ہی ہے.

('گرام ادیوگ پتریکا' سے) — جے. سی. کماریپا

राय मांगी. चूंकि उनमें से किसी ने कोई जवाब नहीं दिया, इसलिये मुझे यही मानना चाहिये कि इस बहन की शिकायत सही है.

प्रयाग महिला विद्यापीठ एक पुरानी संस्था है और मैं समझता हूँ कि इसके चलाने में उत्तर प्रदेश के कुछ खास नेताओं और साहित्य अदब वालों का भी हाथ है. उसकी आचार्या हिन्दी की मशहूर कवयित्री हैं. मैं आशा करता हूँ कि परीक्षा लेने वाले के बे इज़्ज़ती के अमल से बहन मुख़्तार बेगम सिद्दीक़ी के मन को जो धक्का लगा होगा, उसकी ठीक कल्पना वह करती होंगी.

यह बहन जिस विद्यालय से परीक्षा के लिये आई, उसके क़ायम करने वालों ने अपनी संस्था के नाम के साथ पूज्य कस्तूर बा का नाम जोड़ा है. मालूम नहीं, अपने एक विद्यार्थी के साथ किये गए इस बुरे तर्ज़े अमल पर उन्होंने क्या किया है. अगर वह इस बे इज़्ज़ती को चुपचाप सहते हैं, तो बेहतर होगा कि वह कस्तूरबा का नाम अपनी संस्था के नाम से हटा दें. जब तक उनके विद्यार्थी की इस बे इज़्ज़ती की सही भर पाई नहीं होती, और व्योहार की बराबरी और परीक्षा में इन्साफ़ किये जाने का इतमिनान नहीं मिलता, तब तक उन्हें अपने विद्यार्थियों को इस महिला विद्यापीठ की परीक्षाओं के लिये नहीं भेजना चाहिये.

घटना मामूली दिख सकती है. ऐसा महसूस हो सकता है कि एक लायक़ लेकिन कुछ पुराने ख़याल वाले इम्तहान लेने वाले से एक मामूली छोटी लड़की की कुछ बे इज़्ज़ती हुई है, इसमें उसकी इतनी ज्यादा चरचा करने की क्या ज़रूरत है? लेकिन इन घटनाओं को छोटा मानने के ख़याल में ही जोखम भरा है. यह मामूली सी दिखने वाली बदतमीज़ी एक ख़ौफ़नाक रोग की शुरुआत हो सकती है.

यह घटना उत्तर प्रदेश की राजधानी में हुई है. इससे उसे और भी ज्यादा बड़ाई मिल जाती है. इस से लोगों में चालू इस धारना को बल मिलता है कि उत्तर प्रदेश के नेता और वहां की हकूमत पिछ घसीटू फ़िरक़ा बन्दी की तरफ़ झुक रहे हैं. इन्हीं छोटी घटनाओं से बाद में धर्म की जगहों को ख़राब करने, उन पर ज़बरदस्ती अपना क़ब्ज़ा कर लेने और फ़िरक़ेवाराना दंगे वग़ैरा के रुजहानों की शुरुआत होती है.

—किशोरलाल मशरूवाला

والے مانگی. چونکہ اُن میں سے کسی نے کوئی جواب نہیں دیا' اس لئے مجھے یہی ماننا چاہئے کہ اس بہن کی شکایت صحیح ہے.

پریاگ مہیلا ودیا پیٹھ ایک پرانی سنستھا ہے اور میں سمجھتا ہوں کہ اِس کے چلانے میں اُتر پردیش کے کچھ خاص نیتاؤں اور ساہتیہ ادب والوں کا بھی ہاتھ ہے. اُسکی آچاریا ہندی کی مشہور کویتری ہیں. میں آشا کرتا ہوں کہ پریکشا لینے والے کے بے عزتی کے عمل سے بہن مختار بیگم صدیقی کے من کو جو دھکا لگا ہوگا' اس کی ٹھیک کلپنا وہ کرتی ہونگی.

یہ بہن جس ودیالے سے پریکشا کے لئے آئیں' اُسکے قائم کرنے والوں نے اپنی سنستھا کے نام کے ساتھ پوجیہ کستوربا کا نام جوڑا ہے. معلوم نہیں' اپنے ایک ودیارتھی کے ساتھ کئے گئے اس برے طرز عمل پر اُنہوں نے کیا کیا ہے. اگر وہ اس بے عزتی کو چپ چاپ سہتے ہیں' تو بہتر ہوگا' کہ وہ کستوربا کا نام اپنی سنستھا کے نام سے ہٹادیں. جب تک اُن کے ودیارتھی کی اس بے عزتی کی صحیح بھر پائی نہیں ہوتی' اور بیوہار کی برابری اور پریکشا میں انصاف کئے جانے کا اطمینان نہیں ملتا' تب تک انہیں اپنے ودیارتھیوں کو اس مہیلا ودیا پیٹھ کی پریکشاؤں کے لئے نہیں بھیجنا چاہئے.

گھٹنا معمولی دکھ سکتی ہے. ایسا محسوس ہوسکتا ہے کہ ایک لائق لیکن کچھ پرانے خیال والے امتحان لینے والے سے ایک معمولی چھوٹی لڑکی کی کچھ بے عزتی ہوئی ہے' اس میں اسکی اتنی زیادہ چرچا کرنے کی کیا ضرورت ہے؟ لیکن ان گھٹناؤں کو چھوٹا ماننے کے خیال میں ہی جوکھم بھرا ہے. یہ معمولی سی دکھنے والی بدتمیزی ایک خوفناک روگ کی شروعات ہوسکتی ہے.

یہ گھٹنا اُتر پردیش کی راج دھانی میں ہوئی ہے. اس سے اُسے اور بھی زیادہ بڑائی مل جاتی ہے. اس سے لوگوں میں چالو اِس دھارنا کو بل ملتا ہے کہ اُترپردیش کے نیتا اور وہاں کی حکومت پچھ گھسیٹو فرقہ بندی کی طرف جھک رہے ہیں. اِنہیں چھوٹی گھٹناؤں سے بعد میں دھرم کی جگہوں کو خراب کرنے' ان پر زبردستی اپنا قبضہ کر لینے اور فرقہ وارانہ دنگے وغیرہ کے رجحانوں کی شروعات ہوتی ہے.

— کشور لال مشروالا

योजना या खिलवाड़—

नई दिल्ली की सरकार की तरफ़ से बनाए गए प्लानिंग कमीशन ने एक पंच साला योजना का ढाँचा पेश किया है. उस पर लोकमत आज़माया जाकर पक्की रिपोर्ट तैयार की जायगी.

یوجنا یا کھلواڑ—

نئی دلی کی سرکار کی طرف سے بنائے گئے پلاننگ کمیشن نے ایک پنچ سالہ یوجنا کا ڈھانچہ پیش کیا ہے. اُس پر لوک مت آزمایا جاکر پکی رپورٹ تیار کی جائیگی.

'मेरा बनाया हुआ यह खाना सुन्दर बरतनों में परीक्षा
या था, लेकिन मुझे यह देखकर बड़ा दुख हुआ कि परीक्षा
ने वाले ने मेरी बनाई चीज़ों का स्वाद ही नहीं लिया,
न्हें टेबिल के नीचे अपने पाँव के पास रख दिया और
हतर को दे दिया. कारन यह था कि मैं मुसलमान हूँ.

'जब मैं दूसरी हिन्दू लड़कियों के साथ रसोई पका
ही थी, तब एक आदमी ने मेरा नाम पूछा, और उसके
द मुझे हिन्दू परीक्षा देने वालियों से दूर रसोई पकाने के
ये कहा. इस बेइज़्ज़ती के ब्योहार से मुझे बड़ा दुख
आ है.

—मुख्तार बेगम सिद्दीक़ी'

"ज़ाहिर है कि परीक्षा लेने वाले ने दूसरे और तीसरे
रे में जिनका ज़िक्र हुआ है, ऐसी दो ग़लतियां कीं. इस
र सवाल हो सकता है कि उसने इस परीक्षा देने वाली के
म की क़ाबलियत की जांच कैसे की ? इस मज़मून में
सकी क़ाबलियत का अन्दाज़ा किस आधार पर किया ?
रीक्षा देने वालियों के कुल नम्बरों पर और तमाम नतीजे
र परीक्षा लेने वाली की इस भूल का क्या नतीजा हुआ
ोगा, यह भी कौन कह सकता है ?

"सब से ज़्यादा चोट इम्तहान लेने वाली के मन के
स झुकाव का ख़याल करके लगती है, जिसकी वजह से
स निर्दोश परीक्षा देने वाली की ऐसी बेइज़्ज़ती हुई. यह
क नौजवान लड़की की ज़बरदस्त बेइज़्ज़ती थी. शायद
पने ढंग का यह क़िस्सा अकेला नहीं होगा. हिन्दुओं के
सी ब्योहार के कारन अलग अलग धर्म और जातियों
लिये अलग अलग संस्थाओं की मांग, बनावट और
ोती हुई है. आख़िर में इसका नतीजा यह होता है कि
नता के अलग अलग गिरोह हो जाते हैं, और फिर देश
टुकड़े होते हैं या राज के टुकड़े होकर छोटे छोटे राज
े होते हैं. कहने की ज़रूरत नहीं कि यही वह बीज था
ससने दो-क़ौम-वाद को जन्म दिया, और जिससे आख़िर
हिन्दुस्तान के टुकड़े हो गए. यह बीज कितना ही गहरा
ों न हो, अगर हमने उसे जड़ से नहीं उखाड़ दिया, तो
कुलर राज बनाने का हमारा ख़याल हवाई महल ही
ाबित होगा. अगर हिन्दुस्तान की जनता को एक होकर
क मज़बूत क़ौम बनना है, तो इस क़िस्म के फ़रक़ या
ात भेद को मिटा देना चाहिये."

श्री सुरेश रामभाई ने यह नोट मेरे पास कुछ हफ़्ते
ले भेजा था. उसे छापने से पहले मैंने इन शिकायतों
ी सच्चाई की खोज कर लेना ठीक समझा, और इस
ाम से प्रयाग महिला विद्यापीठ, इलाहाबाद और
स्तूरबा बालिका विद्यालय, लखनऊ के ख़ास अधिकारियों
ो ख़त लिख कर इस घटना पर उनकी जानकारी और

میرا بنایا ہوا یہ کھانا سندر برتنوں میں پریکشا کے لئے لایا
تھا، لیکن مجھے یہ دیکھکر بڑا دکھ ہوا کہ پریکشا لینے
والے نے میری بنائی چیزوں کا سواد ہی نہیں لیا؛ انہیں
ٹیبل کے نیچے اپنے پاؤں کے پاس رکھ دیا اور مہتر کو دے
دیا. کارن یہ تھا کہ میں مسلمان ہوں .

'جب میں دوسری ہندو لڑکیوں کے ساتھ رسوئی پکا
رہی تھی' تب ایک آدمی نے میرا نام پوچھا' اور اُسکے
بعد مجھے ہندو پریکشا دینے والیوں سے دور رسوئی پکانے
کے لئے کہا . اس بےعزتی کے بیوہار سے مجھے بڑا دکھ
ہوا ہے .

—مختار بیگم صدیقی'

"ظاہر ہے کہ پریکشا لینے والے نے دوسرے اور تیسرے
پیرے میں جن کا ذکر ہوا ہے' ایسی دو غلطیاں کیں .
اس پر سوال ہوسکتا ہے کہ اُس نے اس پریکشا دینے
والی کے کام کی قابلیت کی جانچ کیسے کی ؟ اِس مضمون
میں اُسکی قابلیت کا اندازہ کس آدھار پر کیا؟ پریکشا
دینے والیوں کے کل نمبروں پر اور تمام نتیجے پر پریکشا
لینے والی کی اس بھول کا کیا نتیجہ ہوا ہوگا یہ بھی
کون کہہ سکتا ہے ؟

"سب سے زیادہ چوٹ امتحان لینے والی کے من کے
اس جھکاؤ کا خیال کرکے لگتی ہے' جسکی وجہ سے اِس
نردوش پریکشا دینے والی کی بےعزتی ہوئی . یہ ایک
نوجوان لڑکی کی زبردست بےعزتی تھی . شاید اپنے ڈھنگ
کا یہ قصہ اکیلا نہیں ہوگا . ہندوؤں کے ایسی بیوہار کے
کارن الگ الگ دھرم اور جاتیوں کے لئے الگ الگ
سنستھاؤں کی مانگ' بناوٹ اور بڑھوتی ہوئی ہے . آخر
میں اسکا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ جنتا کے الگ الگ گروہ
ہو جاتے ہیں' اور پھر دیش کے ٹکڑے ہوتے ہیں یا راج کے
ٹکڑے ہوکر چھوٹے چھوٹے راج کھڑے ہوتے ہیں . کہنے کی
ضرورت نہیں کہ یہی وہ بیج تھا جس نے دو قوم واد
کو جنم دیا' اور جس سے آخر میں ہندستان کے ٹکڑے
ہوگئے . یہ بیج کتنا ہی گہرا کیوں نہ ہو' اگر ہم نے اُسے
جڑ سے نہیں اکھاڑ دیا' تو سیکولر راج بنانے کا ہمارا
خیال ہوائی محل ہی ثابت ہوگا . اگر ہندوستان کی
جنتا کو ایک ہوکر ایک مضبوط قوم بننا ہے' تو اس قسم
کے فرق یا جات بھید کو مٹا دینا چاہئے".

شری سریش رام بھائی نے یہ نوٹ میرے پاس کچھ
ہفتے پہلے بھیجا تھا . اُسے چھاپنے سے پہلے میں نے ان
شکایتوں کی سچائی کی کھوج کر لینا ٹھیک سمجھا'
اور اس خیال سے پریاگ مہلا ودیاپیٹھ' الہآباد اور
کستوربا بالکا ودیالیہ' لکھنؤ کے خاص ادھکاریوں
کو خط لکھکر اس گھٹنا پر اُن کی جانکاری اور

इस सम्मेलन में कई ठहराव पास हुए जिनमें दो की तरफ़ हम अपने पाठकों का ध्यान खींचना चाहते हैं. उनमें से एक में यह कहा गया है कि मन्दिर, मसजिद या दूसरी धार्मिक जगहों के बारे में हम कोई झगड़ा या छीना झपटी आपस में नहीं करें और 14 अगस्त 1947 को जो हालत थी वही बदस्तूर क़ायम रखी जाय. दूसरे ठहराव में एक क़ौमी एकता मंडल क़ायम करने की तजवीज़ की गई थी जो किसी राजकाजी दल या गिरोह में न हो कर आपसी मेल भाई चारे को बढ़ाने की कोशिश करेगा.

कहने की ज़रूरत नहीं कि दोनों ही ठहराव एक दम ज़रूरी और मुनासिब हैं. धार्मिक जगहों के मामले में तो सरकार को भी चाहिये कि 14 अगस्त 1947 वाली पोज़ीशन को बनाए रखे और उसमें कोई आँच न आने दे. इसी में हमारा सबका भला है.

क़ौमी एकता मंडल की कामयाबी बहुत कुछ उसके कारकुनों के काम पर मुनहसिर है. हमें यक़ीन है कि ब्रह्मचारी जी ऐसे साथियों के साथ काम करेंगे जिनके दामन साफ़ होंगे और जो अपने असर से लोगों का दिल हर लेंगे.

आख़िर में हम फिर यही कहेंगे कि क़ौमी एकता की ज़रूरत जितनी आज है उतनी कभी नहीं थी. अपने निजी जीवन में हम में से हर एक को इस एकता का अलमबरदार बन जाना है. इस वक़्त स्वामी रामतीर्थ का कहा एक शेर हमें याद आ रहा है—

चीस्त हिन्दू या मुसलमां
दो कूज़ा यक कूज़ागर,
गरचे कूज़ा दो शुमार आयद
व लेकिन गिल यकेस्त!

—सुरेश रामभाई

اس سمیلن میں کئی ٹھہراؤ پاس ہوئے جن میں دو کی طرف ہم اپنے پاٹھکوں کا دھیان کھینچنا چاہتے ہیں. ان میں سے ایک میں یہ کہا گیا ہے کہ مندر، مسجد یا دوسری دھارمک جگہوں کے بارے میں ہم کوئی جھگڑا یا چھینا جھپٹی آپس میں نہیں کریں اور 14 اگست 1947 کو جو حالت تھی وہی بدستور قائم رکھی جائے. دوسرے ٹھہراؤ میں ایک قومی ایکتا منڈل قائم کرنے کی تجویز کی گئی تھی جو کسی راج کاجی دل یا گروہ میں نہ ہوکر آپسی میل و بھائی چارے کو بڑھانے کی کوشش کریگا.

کہنے کی ضرورت نہیں کہ دونوں ہی ٹھہراؤ ایک دم ضروری اور مناسب ہیں. دھارمک جگہوں کے معاملے میں تو سرکار کو بھی چاہئے کہ 14 اگست 1947 والی پوزیشن کو بنائے رکھے اور اس میں کوئی آنچ نہ آنے دے. اسی میں ہمارا سب کا بھلا ہے.

قومی ایکتا منڈل کی کامیابی بہت کچھ اسکے کارکنوں کے کام پر منحصر ہے. ہمیں یقین ہے کہ برہمچاری جی ایسے ساتھیوں کے ساتھ کام کرینگے جنکے دامن صاف ہونگے اور جو اپنے اثر سے لوگوں کا دل ہرلینگے.

آخر میں ہم پھر یہی کہینگے کہ قومی ایکتا کی ضرورت جتنی آج ہے اُتنی کبھی نہیں تھی. اپنے نجی جیون میں ہم میں سے ہر ایک کو اس ایکتا کا علمبردار بن جانا ہے. اسوقت سوامی رام تیرتھ کا کہا ایک شعر ہمیں یاد آرہا ہے —

چیست ہندو یا مسلماں
دو کوزہ یک کوزہ گر
گرچہ کوزہ دوشمار آید
و لیکن گل یکیست

— سریش رام بھائی

यू. पी. सरकार के लिये—

"नीचे वाला ख़त लखनऊ के मशहूर रोज़ाना अख़बार 'नेशनल हेराल्ड' के 11 मई 1951 के नम्बर में छपा था :

'मैं कस्तूरबा बालिका विद्यालय लखनऊ से प्रयाग महिला विद्यापीठ, इलाहाबाद की प्रवेशिका परीक्षा में बैठी थी. परीक्षा केन्द्र महिला विद्यालय कालिज में रखा गया था.

'हमारी रसोई की परीक्षा 3 मई को हुई. उस दिन मैंने क़रीब दस रुपए ख़र्च करके सूचना के मुताबिक़ रसोई तैयार की. परीक्षा की राह देखती बैठी रही, क्योंकि मेरा नाम सातवाँ था. लेकिन परीक्षा लेने वाले ने मुझे 20-25 लड़कियों के बाद बुलाया.

یو. پی. سرکار کے لئے—

"نیچے والا خط لکھنؤ کے مشہور روزانہ اخبار 'نیشنل ہیرالڈ' کے 11 مئی 1951 کے نمبر میں چھپا تھا :

'میں کستوربا بالکا ودیالیہ لکھنؤ سے پریاگ مہلا ودیا پیٹھ' الہ باد کی پرویشکا پریکشا میں بیٹھی تھی. پریکشا کیندر مہلا ودیالیہ کالج میں رکھا گیا تھا.

'ہماری رسوئی کی پریکشا 3 مئی کو ہوئی. اس دن میں نے قریب 10 روپئے خرچ کرکے سوچنا کے مطابق رسوئی تیار کی. پریکشا کی راہ دیکھتی بیٹھی رہی' کیونکہ میرا نام ساتواں تھا. لیکن پریکشا لینے والے نے مجھے 20—25 لڑکیوں کے بعد بلایا.

है. देश के [illegible] बहुत [illegible] के हमें आगे के लिये दो ही रास्ते दिखाई देते हैं:—

एक महात्मा गांधी का बताया रास्ता और दूसरा रूस और लाल चीन का रास्ता. इन दोनों रास्तों में कुछ बुनयादी मेल की बातें भी हैं और कुछ बुनियादी फ़रक़ की भी. इस बारे में हम अपने विचार फिर किसी नम्बर में ज़ाहिर करेंगे. और कोई बीच का रास्ता हमें किसी काम की जगह नहीं पहुँचा सकता. इन दूसरे रास्तों में से किसी पर चल कर भी देश की मुसीबतें बढ़ सकती हैं घट नहीं सकतीं. मालूम होता है देश को अपना ठीक रास्ता देख सकने और उस पर चल सकने से पहले अभी कुछ और कड़ी आज़मायशों में से निकलना बाक़ी है.

25. 7. '51 —सुन्दरलाल

ہے. دیش کے [illegible] بہت [illegible] کے ہمیں آگے کے لئے دو ہی راستے دکھائی دیتے ہیں :—

ایک مہاتما گاندھی کا بتایا راستہ اور دوسرا روس اور لال چین کا راستہ . ان دونوں راستوں میں کچھ بنیادی میل کی باتیں بھی ہیں اور کچھ بنیادی فرق کی بھی . اس بارے میں ہم اپنے وچار پھر کسی نمبر میں ظاہر کرینگے . اور کوئی بیچ کا راستہ ہمیں کسی کام کی جگہ نہیں پہونچا سکتا . ان دوسرے راستوں میں سے کسی پر چل کر بھی دیش کی مصیبتیں بڑھ سکتی ہیں گھٹ نہیں سکتیں . معلوم ہوتا ہے دیش کو اپنا ٹھیک راستہ دیکھ سکنے اور اُس پر چل سکنے سے پہلے ابھی کچھ اور کڑی آزمائشوں میں سے نکلنا باقی ہے .

25 . 7 . '51 —سندر لال

क़ौमी एकता कान्फ़रेन्स और मंडल—

हिन्दुस्तान के आज़ाद हो जाने और उसके दो टुकड़ों में बँट जाने के बाद क़ौमी एकता या हिन्दू मुसलिम मेल की बात करना पुरानी लकीर के फ़क़ीर जैसे बनना मालूम होता है. अकसर भाई बहन यह समझते हैं कि हिन्दुस्तान हिन्दुओं का देश है जिसे वह अपने धर्म, कलचर और सभ्यता के मुताबिक़ बनाएँगे, और मुसलमान का घर तो पाकिस्तान में है. लेकिन ज़रा भी सोचने पर साफ़ हो जाता है कि यह ख़याल बहुत ही बेबुनियाद है और हम सबको चौपट कर देने वाला है. सच तो यह है कि हिन्दू मुसलिम मेल की, क़ौमी एकता की जितनी ज़रूरत आज है उतनी कभी नहीं थी. जितनी देर इस देश के कुल रहने वालों को—हिन्दू, मुसलमान, सिख, पारसी, ईसाई वग़ैरा—हाथ की उंगलियों की तरह एक होने में लगेगी उतनी ही देर उनको एक शानदार क़ौम बनकर अपना अमर संदेसा दुनिया तक पहुँचाने में लगेगी. ख़ुशी की बात है कि हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का इस चीज़ में पूरा यक़ीन है और इस तरफ़ क़दम बढ़ाने में ज़ाती तौर पर उन्होंने कोई कोशिश उठा भी नहीं रखी है. लेकिन इस चीज़ में हमें महज़ हकूमत के भरोसे नहीं रहना है. इसमें तो हर आदमी थोड़ा बहुत कुछ न कुछ कर के मुल्क के एक इकाई बनने में ज़बरदस्त मदद पहुँचा सकता है. इसलिये 24, 25 अप्रैल को लखनऊ में जो क़ौमी एकता कान्फ़रेन्स हुई उसका हम बहुत ख़ुशी से स्वागत करते हैं. इस कान्फ़रेन्स के सदर पंडित सुन्दर लाल जी थे और इसके कर्ता धर्ता श्री अक्षय ब्रह्मचारी थे जो अयोध्या की मसजिद के मामले से अपने चौड़े और दर्द भरे दिल के लिये मशहूर हैं.

قومی ایکتا کانفرنس اور منڈل

ہندستان کے آزاد ہو جانے اور اُسکے دو ٹکڑوں میں بٹ جانے کے بعد قومی ایکتا یا ہندو مسلم میل کی بات کرنا پرانی لکیر کے فقیر جیسے بننا معلوم ہوتا ہے . اکثر بھائی بہن یہ سمجھتے ہیں کہ ہندستان ہندؤوں کا دیش ہے جسے وہ اپنے دھرم' کلچر اور سبھیتا کے مطابق بنائینگے' اور مسلمان کا گھر تو پاکستان میں ہے . لیکن ذرا بھی سوچنے پر صاف ہو جاتا ہے کہ یہ خیال بہت ہی بے بنیاد ہے اور ہم سب کو چوپٹ کردینے والا ہے . سچ تو یہ ہے کہ ہندو مسلم میل کی' قومی ایکتا کی جتنی ضرورت آج ہے اُتنی کبھی نہیں تھی . جتنی دیر اس دیش کے کل رہنے والوں کو—ہندو' مسلمان' سکھ' پارسی' عیسائی وغیرہ—ہاتھ کی انگلیوں کی طرح ایک ہونے میں لگیگی اُتنی ہی دیر اُن کو ایک شاندار قوم بن کر اپنا امر سندیسہ دنیا تک پہونچانے میں لگیگی . خوشی کی بات ہے کہ ہمارے پردھان منتری پنڈت جواہرلال نہرو کا اس چیز میں پورا یقین ہے اور اس طرف قدم بڑھانے میں ذاتی طور پر اُنہوں نے کوئی کوشش اُٹھا بھی نہیں رکھی ہے . لیکن اس چیز میں ہمیں محض حکومت کے بھروسے نہیں رہنا ہے . اس میں تو ہر آدمی تھوڑا بہت کچھ نہ کچھ کرکے ملک کے ایک اکائی بننے میں زبردست مدد پہونچا سکتا ہے . اس لئے 24-25 اپریل کو لکھنؤ میں جو قومی ایکتا کانفرنس ہوئی اُسکا ہم بہت خوشی سے سواگت کرتے ہیں . اس کانفرنس کے صدر پنڈت سندرلال جی تھے اور اسکے کرتا دھرتا شری اکشے برہمچاری تھے جو ایودھیا کی مسجد کے معاملے سے اپنے چوڑے اور درد بھرے دل کے لئے مشہور ہیں .

चापान को अमरीका के पंजे से निकालने से भारत की सोशलिस्ट सरकार को कोई वास्ता न होगा. हमारे यहाँ की सोशलिस्ट पारटी इन्डोनेशिया से लेकर मिस्र तक के देशों से गठ बन्धन करना चाहती है. यह अच्छी बात है. पर उस के एलान से जाहिर है कि लाल चीन और लाल रूस से उसे खासी नफ़रत है. एलान में यह भी कहा गया है कि दुनिया की पिछड़ी हुई क़ौमों को ऊपर उठाने के लिये और दुनिया से भूक और लड़ाई मिटाने के लिये यू. एन. ओ. जो कोशिशें कर रही है उनके साथ पूरा पूरा सहयोग किया जायगा. ज़ाहिर है हमारे यहाँ की सोशलिस्ट पारटी को केवल कम्युनिस्टों से अलगाव ही नहीं उन्हें अमरीका से खास लगाव भी है.

सर्वोदय योजना

पिछले साल महात्मा गांधी के असूलों के मानने वाले कुछ भाइयों ने 'सर्वोदय योजना' नाम से एक योजना निकाली थी जिसमें देश के जीवन के सब पहलुओं को निगाह में रखते हुए देशवासियों को यह बताया गया था कि जनता के दुखों को दूर करने और देश को आगे बढ़ाने में हमें क्या क्या करना चाहिये. हमें अफ़सोस है कि उस योजना की तरफ़ देश के लोगों का ध्यान बहुत कम गया है. उस योजना के तैयार करने वाले चुनाव के लिये कोई पारटी बनाकर देश के सामने नहीं आ रहे हैं. इसलिये चुनाव की इस गरमा गरमी में उनकी आवाज़ नक़्क़ारखाने में तूती की आवाज़ ही हो सकती है. फिर भी हम 'नया हिन्द' के किसी अगले अंक उस योजना की कुछ मोटी मोटी बातें देने की कोशिश करेंगे. सोशलिस्ट पारटी के एलान में सर्वोदय योजना के बहुत से शब्द और फ़िक़रे शामिल कर लिये गए हैं. उससे यह असर पैदा हो सकता है कि सोशलिस्ट पारटी के विचार महात्मा गांधी के असूलों से मिलते जुलते हैं. पर ध्यान से पढ़ने पर भी हमें सोशलिस्ट एलान और महात्मा गांधी के विचारों में कोई खास बात मिलती जुलती दिखाई नहीं देती.

दो ही रास्ते हैं

चुनाव जीतने के लिये अभी तक जितने एलान निकाले गए हैं हमें इनमें से किसी के ज़रिये भी देश का कोई खास भला दिखाई नहीं देता. काँगरेस की फूट और उसके साथ उसका नाकारापन भी हमें बढ़ता ही दिखाई दे रहा है, घटता हुआ नहीं. बंगलौर के जलसे में दोनों दलों को फिर से मिलाने के लिये जो ठहराव पास किया गया है वह मिलाने की तरफ़ जाता हुआ दिखाई नहीं देता. उसका क़ुदरती नतीजा फूट का बढ़ना ही हो सकता था और हुआ

جاپان کو امریکہ کے پنجے سے نکالنے سے بھارت کی سوشلسٹ سرکار کو کوئی واسطہ نہ ہوگا. ہمارے یہاں کی سوشلسٹ پارٹی انڈونیشیا سے لیکر مصر تک کے دیشوں سے گٹھ بندھن کرنا چاہتی ہے. یہ اچھی بات ہے. پر اُس کے اعلان سے ظاہر ہے کہ لال چین اور لال روس سے اُسے خاصی نفرت ہے. اعلان میں یہ بھی کہا گیا ہے کہ دنیا کی پچھڑی ہوئی قوموں کو اوپر اُٹھانے کے لئے اور دنیا سے بھوک اور لڑائی مٹانے کے لئے یو. این. او. جو کوششیں کر رہی ہے اُن کے ساتھ پورا پورا سہیوگ کیا جائے گا. ظاہر ہے ہمارے یہاں کی سوشلسٹ پارٹی کو کیول کمیونسٹوں سے الگاؤ ہی نہیں اُنہیں امریکہ سے خاص لگاؤ بھی ہے.

سرووَدے یوجنا

پچھلے سال مہاتما گاندھی کے اصولوں کے ماننے والے کچھ بھائیوں نے 'سرووَدے یوجنا' نام سے ایک یوجنا نکالی تھی جس میں دیش کے جیون کے سب پہلوؤں کو نگاہ میں رکھتے ہوئے دیش واسیوں کو یہ بتایا گیا تھا کہ جنتا کے دکھوں کو دور کرنے اور دیش کو آگے بڑھانے میں ہمیں کیا کیا کرنا چاہئے. ہمیں افسوس ہے کہ اُس یوجنا کی طرف دیش کے لوگوں کا دھیان بہت کم گیا ہے. اس یوجنا کے تیار کرنے والے چناؤ کے لئے کوئی پارٹی بناکر دیش کے سامنے نہیں آرہے ہیں. اس لئے چناؤ کی اِس گرما گرمی میں اُن کی آواز نقار خانے میں طوطی کی آواز ہی ہوسکتی ہے. پھر بھی ہم 'نیا ہند' کے کسی اگلے انک میں اُس یوجنا کی کچھ موٹی موٹی باتیں دینے کی کوشش کرینگے. سوشلسٹ پارٹی کے اعلان میں سرووَدے یوجنا کے بہت سے شبد اور فقرے شامل کرلئے گئے ہیں. اس سے یہ اثر پیدا ہوسکتا ہے کہ سوشلسٹ پارٹی کے وچار مہاتما گاندھی کے اصولوں سے ملتے جلتے ہیں. پر دھیان سے پڑھنے پر بھی ہمیں سوشلسٹ اعلان اور مہاتما گاندھی کے وچاروں میں کوئی خاص بات ملتی جلتی دکھائی نہیں دیتی.

دو ہی راستے ہیں

چناؤ جیتنے کے لئے ابھی تک جتنے اعلان نکالے گئے ہیں ہمیں ان میں سے کسی کے ذریعے بھی دیش کا کوئی خاص بھلا دکھائی نہیں دیتا. کانگریس کی پھوٹ اور اُسکے ساتھ اُسکا ناکارہ پن بھی ہمیں بڑھتا ہی دکھائی دے رہا ہے، گھٹتا ہوا نہیں. بنگلور کے جلسے میں دونوں دلوں کو پھر سے ملانے کے لئے جو ٹھہراو پاس کیا گیا ہے وہ ملانے کی طرف جاتا ہوا دکھائی نہیں دیتا. اُسکا قدرتی نتیجہ پھوٹ کا بڑھنا ہی ہوسکتا تھا اور ہوا

के हाथों में आगई तो वह बैंकों, बीमा कम्पनियों,
हा फ़ौलाद, बिजली और रसायनी चीज़ों के कारख़ानों,
य और नील जैसे बड़े बड़े बग़ानों को ही नहीं, कपड़ा,
कर और सीमेंट के सब कारख़ानों को भी क़ौमिया देंगे
नी अपनी सरकार और सरकारी नौकरों के हाथों में
लेंगे.

सोशलिस्ट एलान में देश की समाजी, माली और
जकाजी ज़िन्दगी को नए सिरे से और बिलकुल नए ढंग
तामीर करने की बात कही गई है. बड़े बड़े पूंजीपतियों
मिटाने और देश के धन का जहाँ तक हो सके बराबर
बँटवारा करने का वादा किया गया है, कहा गया है
है ज़मीदारों की ज़मीन बिना मुआवज़ा दिये ज़ब्त करली
यगी, किसी एक आदमी के पास तीस एकड़ से ज़ियादा
मीन नहीं रहने दी जायगी, किसानों और मज़दूरों के भले
ख़ास ख़याल रखा जायगा, राजा लोगों के सालियाने
न्द कर दिये जायंगे, किसी देशवासी की माहवारी आम-
नी एक सौ रुपए से कम न होगी, न किसी को हज़ार
पए से अधिक दिया जायगा, जातपात की दीवारें तोड़ दी
ायंगी, पट्टी दर्ज जातों की तालीम पर दस साल के अन्दर
क अरब रुपया ख़र्च किया जायगा, सरकारी नौकरियों
पट्टी दर्ज जातियों के लिये कुछ ख़ास जगहें रक्खी जायंगी,
देश की कमगिनत जमातें अपने अपने मज़हब, अपनी अपनी
भाषा और अपनी अपनी लिपि को क़ायम रख सकेंगी
और अपने ख़ास स्कूलों में अपने बच्चों को इन सब चीज़ों
की तालीम दे सकेंगी, जो कारबार उद्योग धन्दे पूरी तरह
सरकार के हाथ और सरकार के कन्ट्रोल में होंगे उन से
सम्बन्ध रखने वाली तिजारत भी सरकार के हाथ में होगी,
आजकल के कच्चे और अधूरे कन्ट्रोल की जगह समझदारी
का और पक्का कन्ट्रोल नीचे से से ऊपर तक क़ायम
किया जायगा, नए सूबे भाषाओं के आधार पर क़ायम
किये जायंगे, वग़ैरा वग़ैरा.

हमने पूरे एलान का सार देने की कोशिश नहीं की.
केवल कुछ मोटी मोटी बातें नमूने के तौर पर बयान की हैं.
इन में ज़ाहिर है कुछ बातें अच्छी हैं, और कुछ ख़ास लोगों
या जमातों के वोट हासिल करने के लिये कही गई हैं.

इस एलान में दो बातें ख़ास चमकती हुई हैं. एक यह
कि अगर सोशलिस्टों के हाथों में हकूमत आगई तो उनकी
सरकार एंगलो-अमरीका और चीन-रूस इन दो दलों के
किसी झगड़े में कोई हिस्सा न लेगी. इसका मतलब केवल
युद्ध में तटस्थ रहना नहीं बल्कि यह भी हो सकता है कि
कोरिया के झगड़े से, या चीन के यू. एन. ओ. में लिये
जाने या न लिये जाने से, या फ़ारमूसा के फिर से चीनी
सरकार के हवाले किये जाने या न किये जाने से, या

لئے هاتھوں میں آگئی تو وہ بینکوں، بیمہ کمپنیوں،
لوہا فولاد، بجلی اور رسائنی چیزوں کے کارخانوں، چائے اور
نیل جیسے بڑے بڑے بگانوں کو ہی نہیں، کپڑا، شکر
اور سیمنٹ کے سب کارخانوں کو بھی قومیا دینگے
یعنی اپنی سرکار اور سرکاری نوکروں کے ہاتھوں میں لے
لینگے۔

سوشلسٹ اعلان میں دیش کی سماجی، مالی اور راج
کاجی زندگی کو نئے سرے سے اور بالکل نئے ڈھنگ سے تعمیر
کرنے کی بات کہی گئی ہے۔ بڑے بڑے پونجی پتیوں کو
مٹانے اور دیش کے دھن کا جہاں تک ہوسکے برابر کا بٹوارہ
کرنے کا وعدہ کیا گیا ہے، کہا گیا ہے بڑے زمینداروں کی
زمین بنا معاوضہ دیئے ضبط کر لی جائے گی، کسی ایک
آدمی کے پاس تیس ایکڑ سے زیادہ زمین نہیں رہنے دی
جائے گی، کسانوں اور مزدوروں کے بھلے کا خاص خیال رکھا
جائے گا، راجہ لوگوں کے سالیانے بند کر دیئے جائینگے، کسی
دیش واسی کی ماہ واری آمدنی ایک سو روپے سے کم نہ
ہوگی، نہ کسی کو ہزار روپے سے ادھک دیا جائے گا، جات پات
کی دیواریں توڑ دی جائینگی، پٹی درج جاتوں کی تعلیم
پر دس سال کے اندر ایک عرب روپیہ خرچ کیا جائے گا،
سرکاری نوکریوں میں پٹی درج جاتیوں کے لئے کچھ خاص
جگہیں رکھی جائینگی، دیش کی کم گنت جماعتیں اپنے
اپنے مذہب، اپنی اپنی بھاشا اور اپنی اپنی لپی کو قائم
رکھ سکینگی اور اپنے خاص اسکولوں میں اپنے بچوں کو ان
سب چیزوں کی تعلیم دے سکینگی، جو کاربار ادیوگ دھندے
پوری طرح سرکار کے ہاتھ اور سرکار کے کنٹرول میں ہونگے اُن سے
سمبندھ رکھنے والی تجارت بھی سرکار کے ہاتھ میں ہوگی، آج
کل کے کچے اور ادھورے کنٹرول کی جگہ سمجھداری کا اور
پکا کنٹرول نیچے سے اوپر تک قائم کیا جائے گا، نئے صوبے
بھاشاؤں کے آدھار پر قائم کئے جائینگے، وغیرہ وغیرہ۔

ہم نے پورے اعلان کا سار دینے کی کوشش نہیں کی۔
کیول کچھ موٹی موٹی باتیں نمونے کے طور پر بیان کی
ہیں۔ اِن میں ظاہر ہے کچھ باتیں اچھی ہیں، اور
کچھ خاص لوگوں کے یا جماعتوں کے ووٹ حاصل کرنے کے
لئے کہی گئی ہیں۔

اس اعلان میں دو باتیں خاص چمکتی ہوئی ہیں۔
ایک یہ کہ اگر سوشلسٹوں کے ہاتھوں میں حکومت آگئی
تو اُن کی سرکار اینگلو امریکہ اور چین روس اِن دو دلوں
کے کسی جھگڑے میں کوئی حصہ نہ لیگی۔ اس کا مطلب
کیول یدھ میں تٹستھ رہنا نہیں بلکہ یہ بھی ہوسکتا ہے
کہ کوریا کے جھگڑے سے، یا چین کے یو۔ این۔ او۔ میں لئے
جانے یا نہ لئے جانے سے، یا فارموسا کے پھر سے
چینی سرکار کے حوالے کئے جانے یا نہ کئے جانے سے، یا

को तरस मिटाने वाली बातें अधिक दिखाई देती हैं. इसमें कन्ट्रोल को धीरे धीरे हटाने की बात भी है और कन्ट्रोल को बढ़ाने की संभावना भी दिखाई गई है. पर यह साफ़ लिखा है कि देश की कम से कम आमदनियों को ऊपर ले आया जायगा और बड़ी से बड़ी आमदनियों को घटाया जायगा. अगर कम से कम मजदूरी पाने वाले को 50 रुपए मिलते हैं तो अधिक से अधिक तनख्वाह वाले हाकिम को हजार से अधिक न मिलेगा. देश की जरूरत की जितनी चीजें देश के अन्दर बन सकती हैं उनके विदेशों से मँगाए जाने पर रोक लगाई जवेगी, जो जो चीजें गाँव के अन्दर घरेलू उद्योग धन्दों से तैयार हो सकती हैं उन्हें बनाने की बड़े बड़े कल कारखानों को इजाजत नहीं दी जायगी, कपड़ा और खाने की चीजें गाँव के धन्दों से ही बनेंगी, बड़ी बड़ी मिलों से नहीं, गाँव के उद्योग धन्दों को हर तरह बढ़ाया जायगा, बड़े बड़े कल कारखाने केवल हथियार, बिजली, मशीनरी जैसी चीजों के तैयार करने और खनिज पैदावार बढ़ाने के लिये ही रहेंगे. उस एलान में यह भी कहा गया है कि बहुत जियादा बड़े बड़े कल कारखानों के खुलने से देश के ग़रीबों को फ़ायदा कम है नुक़सान अधिक. कहा गया है कि उद्योग धन्दों को क़ौमियाने से मजदूरों के साथ इनसाफ़ नहीं हो सकता, बजाय निजी पूँजीवाद के इससे एक और ज्यादा भयंकर सरकारी पूँजीवाद पैदा हो जाता है. तालीम की बाबत कहा गया है कि अंगरेज़ सरकार ने जो ज़हर हमारे बच्चों की तालीम में अपनी ग़रज़ के लिये घोल दिया था वह अभी तक मौजूद है, हमें उस ज़हर को देश की तालीम से निकालना है, बुनियादी तालीम को बढ़ाने का ज़िक्र है, और रूस की मिसाल देकर कहा गया है कि हमें अपने देश में एक भी आदमी अनपढ़ नहीं रहने देना. जमीन की बाबत कहा गया है कि जो बोए जोते वही उसका मालिक. जात पात को खतम किया जायगा, वग़ैरा वग़ैरा.

कोई भी पारटी अपने वादों को कहाँ तक पूरा कर सकेगी या न कर सकेगी यह एक अलग बात है. इसमें कोई शक नहीं कि आचार्य कृपलानी की प्रजा पारटी ने जो प्रोग्राम देश के सामने रक्खा है वह सरकारी काँगरेस के प्रोग्राम से महात्मा गांधी के असूलों के ज्यादा निकट और जनता को ज्यादा उम्मीद दिलाने वाला है.

सोशलिस्ट पारटी का एलान

अगला चुनाव जीतने के लिये तीसरा प्रोग्राम हमारे सामने इस देश की सोशलिस्ट पारटी का है. सोशलिस्ट पारटी के नेताओं को भी पूरा यक़ीन है कि देश के उद्योग धन्दों, दस्तकारियों और तिजारत को बेपढ़ी और ना समझ जनता के हाथों में छोड़ना देश के लिये हितकर नहीं है! उन्होंने भी अपने एलान में कहा है कि अगर हुकूमत

... چیزیں مٹانے والی باتیں ادھک دکھائی دیتی ہیں . اس میں کنٹرول کو دھیرے دھیرے ہٹانے کی بات بھی ہے اور کنٹرول کو بڑھانے کی سمبھاونا بھی دکھائی گئی ہے . پر یہ صاف لکھا ہے کہ دیش کی کم سے کم آمدنیوں کو اوپر لے آیا جائے گا اور بڑی سے بڑی آمدنیوں کو گھٹایا جائے گا . اگر کم سے کم مزدوری پانے والے کو 50 روپے ملتے ہیں تو ادھک سے ادھک تنخواہ والے حاکم کو ہزار سے ادھک نہ ملے گا . دیش کی ضرورت کی جتنی چیزیں دیش کے اندر بن سکتی ہیں اُن کے ودیشوں سے منگائے جانے پر روک لگائی جاوے گی' جو جو چیزیں گاؤں کے اندر گھریلو ادیوگ دھندوں سے تیار ہوسکتی ہیں انہیں بنانے کی بڑے بڑے کل کارخانوں کو اجازت نہیں دی جائے گی' کپڑا اور کھانے کی چیزیں گاؤں کے دھندوں سے ہی بنینگی' بڑی بڑی ملوں سے نہیں' گاؤں کے ادیوگ دھندوں کو ہر طرح بڑھایا جائے گا' بڑے بڑے کل کارخانے کیول ہتھیار' بجلی' مشینری جیسی چیزوں کے تیار کرنے اور کھنج پیداوار بڑھانے کے لئے ہی رہینگے . اُس اعلان میں یہ بھی کہا گیا ہے کہ بہت زیادہ بڑے بڑے کل کارخانوں کے کھلنے سے دیش کے غریبوں کو فائدہ کم ہے نقصان ادھک . کہا گیا ہے کہ ادیوگ دھندوں کو قومیانے سے مزدوروں کے ساتھ انصاف نہیں ہوسکتا' بجائے نجی پونجی واد کے اِس سے ایک اور زیادہ بھینکر سرکاری پونجی واد پیدا ہوجاتا ہے . تعلیم کی بابت کہا گیا ہے کہ انگریز سرکار نے جو زہر ہمارے بچوں کی تعلیم میں اپنی غرض کے لئے گھول دیا تھا وہ ابھی تک موجود ہے' ہمیں اُس زہر کو دیش کی تعلیم سے نکالنا ہے' بنیادی تعلیم کو بڑھانے کا ذکر ہے' اور روس کی مثال دے کر کہا گیا ہے کہ ہمیں اپنے دیش میں ایک بھی آدمی ان پڑھ نہیں رہنے دینا . زمین کی بابت کہا گیا ہے کہ جو بوئے جوتے وہی اُسکا مالک . جات پات کو ختم کیا جائے گا' وغیرہ وغیرہ .

کوئی بھی پارٹی اپنے وعدوں کو کہاں تک پورا کرسکے گی یا نہ کرسکیگی یہ ایک الگ بات ہے . اس میں کوئی شک نہیں کہ آچاریہ کرپلانی کی پرجا پارٹی نے جو پروگرام دیش کے سامنے رکھا ہے وہ سرکاری کانگریس کے پروگرام سے مہاتما گاندھی کے اصولوں کے زیادہ نکٹ اور جنتا کو زیادہ امید دلانے والا ہے .

سوشلسٹ پارٹی کا اعلان

اگلا چناؤ جیتنے کے لئے تیسرا پروگرام ہمارے سامنے اس دیش کی سوشلسٹ پارٹی کا ہے . سوشلسٹ پارٹی کے نیتاؤں کو بھی پورا یقین ہے کہ دیش کے ادیوگ دھندوں' دستکاریوں اور تجارت کو بے پڑھی اور ناسمجھ جنتا کے ہاتھوں میں چھوڑنا دیش کے لئے ہتکر نہیں ہے! انہوں نے بھی اپنے اعلان میں کہا ہے کہ اگر حکومت

कांगरेस और सरकार ने बहुत कुछ किया है. अब केवल उस काम को जारी रखने की जरूरत है. इतिहास के विद्यार्थियों को मालूम है कि यह पट्टी दर्ज जातियाँ उस समय की अंगरेज़ सरकार ने अपनी राजकाजी ज़रूरत के लिये गढ़ी थीं. देश के आज़ाद होने पर हमें कोई मियाद मुक़र्रर करनी चाहिये थी—पाँच बरस या अधिक से अधिक दस बरस—जिस मियाद के बाद देश भर में कोई 'पट्टी दर्ज जात' या 'पिछड़ी हुई जमात' न रह जाय. यह काम कोई नामुमकिन काम भी नहीं है. सन 1872 में जापान ने अपने यहाँ की अछूत जातियों, ईता और हेनिन के अलग वजूद को खतम करने के लिये जो कुछ किया था और जितनी कामयाबी के साथ किया था उसकी मिसाल हमारे सामने है. दूसरे ढंग भी हो सकते हैं. पर कुछ जातों और जमातों को पट्टी दर्ज जातें और पिछड़ी हुई जमातें बनाए रखने में शायद आज के कुछ राजकाजी नेताओं को भी उसी तरह का फ़ायदा दिखाई देता है जिस तरह का पहले के अंगरेज़ राजकाजियों को दिखाई देता था.

एलान पर आल इन्डिया कांगरेस कमेटी में जो बहस हुई उसमें किसी मेम्बर ने पूछा कि इस एलान में शराबबंदी का जिकर क्यों नहीं है. पंडित जवाहर लाल जी ने जवाब दिया कि शराब बन्दी से हमारी सारी आर्थिक व्यवस्था "बिलकुल उलट पुलट हो जायगी." यह भी कहा गया कि देश में बहुत से क़बीले ऐसे हैं जिनके रीत रिवाज बिना शराब के पूरे नहीं होते, शराब बंदी उनके साथ ज़ुल्म होगा और 'बग़ावत' तक का डर है. अगर यही समझ राजा राम मोहन राय और लार्ड विलियम बैन्टिंग को सती का रिवाज क़ानूनन बन्द करने के वक़्त आजाती तो मालूम नहीं हिन्दू स्त्रियों की दशा आज क्या होती ! इन विचारों और आदर्शों को रखते हुए कांगरेस और कांगरेसी सरकारों को महात्मा गांधी के नाम और उनके असूलों की दुहाई देने का कोई हक़ नहीं रह जाता. हमें दुख है कि हम कहाँ से कहाँ पहुंच गए.

एलान में कहीं जिकर नहीं किया गया कि सरकारी नौकरों या अफ़सरों की ज़ियादा से ज़ियादा तनख़ाह की क्या हद होनी चाहिये, न कहीं कम से कम तनख़ाह और ज़ियादा से ज़ियादा तनख़ाह का कोई औसत बताया गया है. कुछ लोगों ने चाहा था कि यह तय कर दिया जावे कि किसी परिवार के पास तीस एकड़ से ज़ियादा या जो भी आंकड़ा मुक़र्रर कर दिया जावे उससे ज़ियादा ज़मीन न हो. इस सुझाव का भी मज़ाक़ उड़ा दिया गया.

प्रजा पारटी का एलान

आचार्य कृपलानी की इसी प्रजा पारटी के मुक़ाबले के एलान में हमें गांधी जी के असूलों का पास और जनता

کانگریس اور سرکار نے بہت کچھ کیا ہے . اب کیول اس کام کو جاری رکھنے کی ضرورت ہے . اتہاس کے ودیارتھیوں کو معلوم ہے کہ یہ پٹی درج جاتیاں اس سمے کی انگریز سرکار نے اپنی راج کاجی ضرورت کے لئے گڑھی تھیں . دیش کے آزاد ہونے پر ہمیں کوئی میعاد مقرر کرنی چاہئے تھی—پانچ برس یا ادھک سے ادھک دس برس—جس میعاد کے بعد دیش بھر میں کوئی 'پٹی درج جات' یا 'پچھڑی ہوئی جماعت' نہ رہ جائے . یہ کام کوئی ناممکن کام بھی نہیں ہے . سن 1872 میں جاپان نے اپنے یہاں کی اچھوت جاتیوں' ایتا اور ہینن کے الگ وجود کو ختم کرنے کے لئے جو کچھ کیا تھا اور جتنی کامیابی کے ساتھ کیا تھا اسکی مثال ہمارے سامنے ہے . دوسرے ڈھنگ بھی ہوسکتے ہیں . پر کچھ جاتوں اور جماعتوں کو پٹی درج جاتیں اور پچھڑی ہوئی جماعتیں بنائے رکھنے میں شاید آج کے کچھ راج کاجی نیتاؤں کو بھی اسی طرح کا فائدہ دکھائی دیتا ہے جسطرح کا پہلے کے انگریز راج کاجیوں کو دکھائی دیتا تھا .

اعلان پر آل انڈیا کانگریس کمیٹی میں جو بحث ہوئی اس میں کسی ممبر نے پوچھا کہ اس اعلان میں شراب بندی کا ذکر کیوں نہیں ہے . پنڈت جواہرلال جی نے جواب دیا کہ شراب بندی سے ہماری ساری آرتھک ویوستھا "بالکل الٹ پلٹ ہوجائیگی". یہ بھی کہا گیا کہ دیش میں بہت سے قبیلے ایسے ہیں جنکے ریت رواج بنا شراب کے پورے نہیں ہوتے' شراب بندی ان کے ساتھ ظلم ہوگا اور 'بغاوت' تک کا ڈر ہے . اگر یہی سمجھ راجا رام موہن رائے اور لارڈ ولیم بینٹنگ کو ستی کا رواج قانوناً بند کرنے کے وقت آجاتی تو معلوم نہیں ہندو استریوں کی دشا آج کیا ہوتی ! ان وچاروں اور آدرشوں کو رکھتے ہوئے کانگریس اور کانگریسی سرکاروں کو مہاتما گاندھی کے نام اور ان کے اصولوں کی دہائی دینے کا کوئی حق نہیں رہ جاتا . ہمیں دکھ ہے کہ ہم کہاں سے کہاں پہونچ گئے .

اعلان میں کہیں ذکر نہیں کیا گیا کہ سرکاری نوکروں یا افسروں کی زیادہ سے زیادہ تنخواہ کی کیا حد ہونی چاہئے' نہ کہیں کم سے کم تنخواہ اور زیادہ سے زیادہ تنخواہ کا کوئی اوسط بتایا گیا ہے . کچھ لوگوں نے چاہا تھا کہ یہ طے کردیا جاوے کہ کسی پریوار کے پاس تیس ایکڑ سے زیادہ یا جو بھی آنکڑا مقرر کردیا جاوے اس سے زیادہ زمین نہ ہو . اس سجھاؤ کا بھی مذاق اڑا دیا گیا .

پرجا پارٹی کا اعلان

آچاریہ کرپلانی کی اسی پرجا پارٹی کے مقابلے کے اعلان میں ہمیں گاندھی جی کے اصولوں کا پاس اور جنتا

पलान में कहा गया है कि रेलों के प्रबन्ध में बहुत तरक्क़ी हुई है. काश! हमारे आजकल के बड़े बड़े हाकिम अपने मातहतों की काग़ज़ी रिपोर्टों पर राय क़ायम करने के बजाय पुराने बादशाहों की तरह कभी कभी भेस बदल कर जनता के अन्दर फिर सकते. वह ख़ुद अनपहचाने कभी तीसरे दरजे में सफ़र करते तो उन्हें इस बारे में जनता के दुखों का कुछ अन्दाज़ा होता.

पलान में बहुत सी बातें हैं जिनकी तफ़सील में जाना हम बेकार समझते हैं. गाँव के उद्योग धन्दों का ज़िकर ज़रूर है और, यह भी माना गया है कि देश भर में हाथ से कपड़ा बुनने वालों को सूत नहीं पहुंच रहा है, पर ज़ाहिर है कि जो सरकार कपड़े के बड़े बड़े कल कारख़ानों को अपने हाथ में लेगी उससे गाँव के धन्दों को अधिक मदद की उम्मीद नहीं की जा सकती.

कंट्रोल एक ज़रूरी चीज़ बताई गई है, यह भी कहा गया है कि कंट्रोल से जो रिश्वतख़ोरी पैदा हो गई है उसका इलाज भी कंट्रोल को और अधिक कड़ा करना ही है. कहा गया है कि खाने और कपड़े के कंट्रोल के ख़िलाफ़ किसी कांगरेसी को कानाफूसी भी नहीं करनी चाहिये!

एक जगह देश को यह भी बताया गया है कि आम लोगों के रहन सहन का स्तर इतना ऊँचा हो गया है कि बड़ी से बड़ी आमदनी और कम से कम आमदनी का फ़रक़ पहले से कम होगया है! मालूम होता है हमारे हाकिम किताबी फ़ारमूलों, तकनीकी शब्दों और अपने मातहतों की रिपोर्टों के गोरखधन्दों से बाहर निकल कर दुनिया को देखने के नाक़ाबिल हो गए हैं.

सरकारी नौकरियों की बाबत कहा गया है कि जिस "ऊँचे स्तर" तक सरकारी नौकर पहुँच गए हैं, उसे "क़ायम रखने" की ज़रूरत है!

कहा गया है कि जनता की तालीम और सेहत पर अधिक ध्यान देने के लिये हमारी सरकारों के पास पैसों की कमी है. पर "कला, साहित्य, संगीत, नाटक, गाना और नाचना" इन के प्रचार की ज़रूरत पर ख़ूब ज़ोर दिया गया है. कहा गया है कि इन चीज़ों का जनता में प्रचार न किया गया तो जनता अनकलचर्ड रह जायगी! हम ख़ुद कलचर के बड़े क़ायल हैं. हमें गाना, बजाना और नाचना भी अच्छा लगता है. पर हम इस पलान के तैयार करने वालों को कैसे समझायें कि भारत की जनता को इस समय इन चीज़ों की निस्बत ज़िन्दगी की कुछ और बुनियादी चीज़ों की कहीं ज़ियादा ज़रूरत है.

कहा गया है कि पट्टीदर्ज जातों (शेड्यूल्ड कास्ट्स) और पिछड़ी हुई जमातों (बैकवर्ड क्लासेज़) के लिये

املان میں کہا گیا ہے کہ ریلوں کے پربندھ میں بہت ترقی ہوئی ہے ۔ کاش ! ہمارے آج کل کے بڑے بڑے حاکم اپنے ماتحتوں کی کاغذی رپورٹوں پر رائے قائم کرنے کے بجائے پرانے بادشاہوں کی طرح کبھی کبھی بھیس بدل کر جنتا کے اندر پھر سکتے ۔ وہ خود ان پہچانے کبھی تیسرے درجے میں سفر کرتے تو انہیں اس بارے میں جنتا کے دکھوں کا کچھ اندازہ ہوتا ۔

املان میں بہت سی باتیں ہیں جن کی تفصیل میں جانا ہم بیکار سمجھتے ہیں۔ گاؤں کے اُدیوگ دھندوں کا ذکر ضرور ہے اور' یہ بھی مانا گیا ہے کہ دیش بھر میں ہاتھ سے کپڑا بننے والوں کو سوت نہیں پہونچ رہا ہے' پر ظاہر ہے کہ جو سرکار کپڑے کے بڑے بڑے کل کارخانوں کو اپنے ہاتھ میں لے گی اُس سے گاؤں کے دھندوں کو ادھک مدد کی اُمید نہیں کی جاسکتی ۔

کنٹرول ایک ضروری چیز بتائی گئی ہے' یہ بھی کہا گیا ہے کہ کنٹرول سے جو رشوت خوری پیدا ہوگئی ہے اُسکا علاج بھی کنٹرول کو اور ادھک کڑا کرنا ہی ہے ۔ کہا گیا ہے کہ کھانے اور کپڑے کے کنٹرول کے خلاف کسی کانگریسی کو کانا پھوسی بھی نہیں کرنی چاہئے !

ایک جگہ دیش کو یہ بھی بتایا گیا ہے کہ عام لوگوں کے رہن سہن کا استر اتنا اونچا ہوگیا ہے کہ بڑی سے بڑی آمدنی اور کم سے کم آمدنی کا فرق پہلے سے کم ہوگیا ہے ! معلوم ہوتا ہے ہمارے حاکم کتابی فارمولوں' تکنیکی شبدوں اور اپنے ماتحتوں کی رپورٹوں کے گورکھ دھندوں سے باہر نکل کر دنیا کو دیکھنے کے نا قابل ہوگئے ہیں ۔

سرکاری نوکریوں کی بابت کہا گیا ہے کہ جس "اونچے استر" تک سرکاری نوکر پہونچ گئے ہیں' اُسے "قائم رکھنے" کی ضرورت ہے !

کہا گیا ہے کہ جنتا کی تعلیم اور صحت پر ادھک دھیان دینے کے لئے ہماری سرکاروں کے پاس پیسوں کی کمی ہے ۔ پر "کلا' ساہتیہ' سنگیت' ناٹک' گانا اور ناچنا" اِن کے پرچار کی ضرورت پر خوب زور دیا گیا ہے ۔ کہا گیا ہے کہ اِن چیزوں کا جنتا میں پرچار نہ کیا گیا تو جنتا اَن کلچرڈ رہ جائیگی ! ہم خود کلچر کے بڑے قائل ہیں ۔ ہمیں گانا' بجانا اور ناچنا بھی اچھا لگتا ہے ۔ پر ہم اس املان کے تیار کرنے والوں کو کیسے سمجھائیں کہ بھارت کی جنتا کو اِس سمے اِن چیزوں کی نسبت زندگی کی کچھ اور بنیادی چیزوں کی کہیں زیادہ ضرورت ہے ۔

کہا گیا ہے کہ پٹی درج جاتوں (شیڈیولڈ کاسٹس) اور پچھڑی ہوئی جماعتوں (بیک ورڈ کلاسز) کے لئے

ुलर राज के हामी अधिकतर ग़ैर आलिबदार या रूस
र चीन से ज़ियादा हमदर्दी रखने वाले.

कांगरेस पारटी का एलान.

इसी जुलाई महीने में बंगलोर आल इन्डिया कांगरेस
मेटी के मौक़े पर देश के बहुत से लोगों को आशा थी कि
गरेस की यह दलबन्दी मिटकर फिर दोनों दल एक हो
ायंगे. पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इसके लिये काफ़ी कोशिश
। की. लेकिन मालूम होता है सरकारी कांगरेस के अन्दर
सरे विचारों और आदर्शों का ज़ोर है. पंडित जवाहर
ाल नेहरू को सफलता न मिल सकी. इसी अवसर पर
ांगरेस ने अगला चुनाव जीतने के लिये अपना प्रोग्राम
ा के सामने रक्खा. प्रोग्राम को हमने ध्यान से कई बार
ढ़ा. उसमें बहुत सी अच्छी अच्छी बातें हैं, जैसी ऐसे
ौक़े के इस तरह के प्रोग्रामों में आम तौर पर होती हैं.
लान में महात्मा गांधी और उनके असूलों की भी काफ़ी
हाई दी गई है. पर हमें इस सारे प्रोग्राम में न कहीं गांधी
ी के विचारों और असूलों का पास दिखाई देता है और
हमारी राय में इससे देश की दुखी जनता को किसी
रह का ढारस बंध सकता है.

एलान में जगह जगह कांगरेसी सरकारों के अब तक
ं कारनामों की तारीफ़ें की गई हैं, देश को आज़ादी दिलाने
ं लिये देश पर कांगरेस के एहसान को दोहराया गया है,
रकार की कठिनाइयों को बयान किया गया है, यह माना
ाया है कि देश में लाखों आदमी बिना खाने, कपड़े और
ाकान के किसी तरह अपने दिन गुज़ार रहे हैं, इसका
ास इलाज बताया गया है.

प्लानिंग कमीशन यानी देश की उन्नति की योजना तैयार
रने वाला कमीशन, योजनाओं की और हर काम योजना
ना कर करने की देश को तालीम दी गई है. सबसे बड़ी
ोजना सारे एलान में यह चमकती है कि देश के क़रीब
रीब सब उद्योग धन्दे और उनसे सम्बन्ध रखने वाली
ारी तिजारत धीरे धीरे सरकार और उसके नौकरों के
ाथों में आजावे.

आज कल की राजकाजी भाषा में बहुत से शब्द हमें
काफ़ी धोके में डाल देते हैं. जिसे उद्योग धंदों का नेशन-
लाइज़ेशन, राष्ट्रीकरन या 'क़ौमियाना' कहा जाता है वह
आज कल की हालत में केवल 'सरकारियाना' है. एलान में
इस तरह के सरकारियाने के अच्छे नतीजों का बयान किया
गया है. पर अधिकतर देश वासियों का अब तक का तजरबा
यही है कि जो धन्दे जनता के हाथों से छिन कर सरकार
और सरकारी आदमियों के हाथों में आगए उनमें जनता
की दिक़्क़तें बढ़ी हैं घटी नहीं.

سیکولر راج کے حامی ادھک تر غیر جانب دار یا روس
اور چین سے زیادہ ہمدردی رکھنے والے ۔

کانگریس پارٹی کا اعلان

اِسی جولائی مہینے میں بنگلور آل انڈیا کانگریس
کمیٹی کے موقع پر دیش کے بہت سے لوگوں کو آشا تھی کہ
کانگریس کی یہ دل بندی مٹ کر پھر دونوں دل ایک
ہوجائینگے ۔ پنڈت جواہر لال نہرو نے اِسکے لئے کافی کوشش
بھی کی ۔ لیکن معلوم ہوتا ہے سرکاری کانگریس کے اندر
دوسرے وچاروں اور آدرشوں کا زور ہے ۔ پنڈت جواہر لال نہرو کو
سپھلتا نہ مل سکی ۔ اسی اوسر پر کانگریس نے اگلا چناو
جیتنے کے لئے اپنا پروگرام دیش کے سامنے رکھا ۔ پروگرام
کو ہم نے دھیان سے کئی بار پڑھا ۔ اس میں بہت سی
اچھی اچھی باتیں ہیں، جیسی ایسے موقعے کے اس طرح
کے پروگراموں میں عام طور پر ہوتی ہیں ۔ اعلان میں
مہاتما گاندھی اور اُن کے اصولوں کی بھی کافی دہائی دی
گئی ہے ۔ پر ہمیں اس سارے پروگرام میں نہ کہیں گاندھی
جی کے وچاروں اور اصولوں کا پاس دکھائی دیتا ہے اور نہ
ہماری رائے میں اس سے دیش کی دکھی جنتا کو کسی
طرح کا ڈھارس بندھ سکتا ہے ۔

اعلان میں جگہ جگہ کانگریسی سرکاروں کے اب تک کے
کارناموں کی تعریفیں کی گئی ہیں، دیش کو آزادی دلانے
کے لئے دیش پر کانگریس کے احسان کو دہرایا گیا ہے، سرکار
کی کٹھنائیوں کو بیان کیا گیا ہے، یہ مانا گیا ہے کہ دیش
میں لاکھوں آدمی بنا کھانے، کپڑے اور مکان کے کسی طرح
اپنے دن گزار رہے ہیں، اسکا خاص علاج بتایا گیا ہے ۔

پلاننگ کمیشن یعنی دیش کی اُنتی کی یوجنا تیار
کرنے والا کمیشن، یوجناؤں کی اور ہر کام یوجنا بنا کر کرنے
کی دیش کو تعلیم دی گئی ہے ۔ سب سے بڑی یوجنا سارے
اعلان میں یہ چمکتی ہے کہ دیش کے قریب قریب سب
اُدیوگ دھندے اور اُن سے سمبندھ رکھنے والی ساری
تجارت دھیرے دھیرے سرکار اور اس کے نوکروں کے ہاتھوں
میں آجاوے ۔

آجکل کی راج کاجی بھاشا میں بہت سے شبد ہمیں
کافی دھوکے میں ڈالدیتے ہیں ۔ جیسے اُدیوگ دھندوں کا
نیشنلائزیشن، راشٹریکرن یا 'قومیانا' کہا جاتا ہے وہ آج
کل کی حالت میں کیول 'سرکاریانا' ہے ۔ اعلان میں
اس طرح کے سرکاریانے کے اچھے نتیجوں کو بیان کیا گیا
ہے ۔ پر ادھک تر دیش واسیوں کا اب تک کا تجربہ یہی
ہے کہ جو دھندے جنتا کے ہاتھوں سے چھن کر سرکار اور
سرکاری آدمیوں کے ہاتھوں میں آگئے اُن میں جنتا کی
دقتیں بڑھی ہیں گھٹی نہیں ۔

हमारी राय — ہماری رائے

देश और राजकाजी पारटियां—

'नया हिन्द' के पिछले नम्बर में हम कांगरेस और उस की दलबन्दी के बारे में अपने कुछ विचार प्रकट कर चुके हैं. सारे देश में एक दूसरे के खिलाफ़ विचार, असूल और आदर्श टकरा रहे हैं. राजसत्ता हाथ में लेने की इच्छा, लोगों के निजी झगड़े और दिलों के अन्दर एक दूसरे से लगाव या अलगाव बीच में आकर इस हालत को और अधिक पेचीदा बना देते हैं. नतीजा है देश में तरह तरह की राजकाजी पारटियों का खड़ा होना और इन पारटियों के अन्दर एक दरजे तक सिद्धान्तों का फ़रक़ होते हुए भी लगभग हर पारटी में कम या ज़्यादा हर विचार के लोगों का पाया जाना. यही हालत इस समय कांगरेस की है.

फिर भी मोटे तौर पर कांगरेस में दो तरह के विचार एक दूसरे से टक्कर ले रहे हैं. एक तरफ़ वह लोग हैं जो देश में सेकुलर यानी व्योहारी राज फलता फूलता देखना चाहते हैं, दूसरी तरफ़ वह हैं जो कड़वे राजकाजी तजरबों से घबरा कर या अपने अन्दर की तंग नज़री के कारन सीधे या नासीधे देश को सेकुलर आदर्श से हटा कर एक ख़ास तरह की साम्प्रादायिकता या फ़िरक़ा परस्ती की तरफ़ ले जाना चाहते हैं.

हम यह नहीं कहते कि कांगरेस वालों के जो दो बड़े दल हाल में बन गए हैं, यानी एक सरकारी कांगरेस और दूसरे प्रजा पारटी, वह केवल इसी असूल के ऊपर एक दूसरे से अलग हुए हैं. यह भी ज़ाहिर है कि साम्प्रदायिकता की निगाह से उदार से उदार विचारों के लोग और तंग से तंग फ़िरक़ा परस्त दोनों दलों में मौजूद हैं. पच्छिम की राजकाजी पारटी बाज़ी का, जिसकी हम इस देश में अंधी नक़ल कर रहे हैं, यह एक ख़ास गुन है कि उसमें असूलों से भी अधिक शख़्सियतों की चलती है. फिर भी इसमें शक नहीं कि कॉंगरेस के इन दोनों दलों में मोटा फ़रक़ वही है जो हमने ऊपर बयान किया है. एक बात यह भी ध्यान देने की है कि साम्प्रदायिक विचारों के लोग अधिकतर कम्युनिज़्म के दुश्मन और अमरीका के तरफ़दार हैं, और

دیش اور راج کاجی پارٹیاں—

'نیا ھند' کے پچھلے نمبر میں ہم کانگریس اور اسکی دل بندی کے بارے میں اپنے کچھ وچار پرکٹ کر چکے ھیں. سارے دیش میں ایک دوسرے کے خلاف وچار، اصول اور آدرش ٹکرا رہے ھیں. راج ستا ھاتھ میں لینے کی اچھا، لوگوں کے نجی جھگڑے اور دلوں کے اندر ایک دوسرے سے لگاؤ یا الگاؤ بیچ میں آکر اس حالت کو اور ادھک پیچیدہ بنا دیتے ھیں. نتیجہ ہے دیش میں طرح طرح کی راج کاجی پارٹیوں کا کھڑا ھونا اور ان پارٹیوں کے اندر ایک درجے تک سدھانتوں کا فرق ھوتے ھوئے بھی لگ بھگ ھر پارٹی میں کم یا زیادہ ھر وچار کے لوگوں کا پایا جانا. یہی حالت اِس سمے کانگریس کی ہے.

پھر بھی موٹے طور پر کانگریس میں دو طرح کے وچار ایک دوسرے سے ٹکر لے رہے ھیں. ایک طرف وہ لوگ ھیں جو دیش میں سیکولر یعنی بیوھاری راج پھلتا پھولتا دیکھنا چاھتے ھیں، دوسری طرف وہ ھیں جو کڑوے راج کاجی تجربوں سے گھبرا کر یا اپنے اندر کی تنگ نظری کے کارن سیدھے یا نا سیدھے دیش کو سیکولر آدرش سے ھٹا کر ایک خاص طرح کی سامپردایکتا یا فرقہ پرستی کی طرف لے جانا چاھتے ھیں.

ہم یہ نہیں کہتے کہ کانگریس والوں کے جو دو بڑے دل حال میں بن گئے ھیں، یعنی ایک سرکاری کانگریس اور دوسرے پرجا پارٹی، وہ کیول اسی اصول کے اوپر ایک دوسرے سے الگ ھوئے ھیں یہ بھی ظاہر ہے کہ سامپردایکتا کی نگاہ سے ادار سے ادار وچاروں کے لوگ اور تنگ سے تنگ فرقہ پرست دونوں دلوں میں موجود ھیں. پچھم کی راج کاجی پارٹی بازی کا، جسکی ہم اس دیش میں اندھی نقل کر رہے ھیں، یہ ایک خاص گن ہے کہ اس میں اصولوں سے بھی ادھک شخصیتوں کی چلتی ہے. پھر بھی اس میں شک نہیں کہ کانگریس کے ان دونوں دلوں میں موٹا فرق وھی ہے جو ہم نے اوپر بیان کیا ہے. ایک بات یہ بھی دھیان دینے کی ہے کہ سامپردایک وچاروں کے لوگ ادھک‌تر کمیونزم کے دشمن اور امریکہ کے طرفدار ھیں، اور

18. उत्तर एटलान्टिक सुलह में टुरकी व यूनान भी
|क होंगे. श्री रफ़ी अहमद क़िदवाईका कांग्रेससे स्तीफ़ा.

19. केसांग की बात चीत में अड़चन. मौलाना
ज़ाद दिल्ली वापिस. कटक में छात्रों पर लाठी चार्ज.

20. जोर्डन शाहके अबदुल्लाह गोली से मार दिये
मिल जुल कर काम करने के लिये पंडित नेहरू की
ांग्रेस वालों से अपील.

21. राजपति ट्रूमैन के नुमायन्दे के तेल मसला
करने के लिये कुछ सुझाव. अरब लीग के सेक्रेटरी
ज़म पाशा को इतमिनान कि हिन्दुस्तान परदेस पर
ई नहीं करेगा.

22. स्पेन में अड्डा बनाने पर अंगरेज़ी अख़बारों की
रीका को चेतावनी. पच्छिमी फ़ौजी ताक़तों का साथ
के लिये मिस्र की शर्तें. आचार्य कृपलानी का गुजरात में
. दक्खिनी आसाम में बहुत बड़ी बाढ़.

23. ईरान के मामले में उम्मीद की नई किरन. फ़्रांस
मार्शल पैंता का देहान्त. दुनिया की शान्ति के लिये
यत हकूमत सब से बड़ा ख़तरा है—राजपति ट्रूमैन.

24. नेहरू जी का पाकिस्तान के बड़े वज़ीर को ख़त.
: प्रदेश में एक मिनिस्टर का स्तीफ़ा.

25. कोरिया की बात चीत आगे बढ़ने के लिये लाल
का नया सुझाव. नई पंच साला योजना की कामयाबी के
बिदेसी पूँजीकी ज़रूरत—फ़ाईनैन्स मिनिस्टरका एलान.

26. कोरिया लड़ाई रोको बात चीत के लिये एजेन्डे
दोनों फ़रीक़ राज़ी. पाकिस्तानी बड़े वज़ीर की सुलह
ाँच शर्तों के साथ पंडित नेहरू को दावत.

27. करांची में 'डिफ़ेन्स डे' के मौक़े पर बड़े वज़ीर
रफ़ से 'मुक्का' को क़ौमी निशान बनाने का एलान.

28. केसांग की बात चीत में "थोड़ी तरक़्क़ी." ब्रिटेन
थियार बन्दी की तीन साला योजना. हकूमत की
नरी को सुधारने के लिये गोरवाला कमीशन की रिपोर्ट.
र में बाढ़.

29. नई दिल्लीमें नेहरू जी का एलान कि हिन्दुस्तान
भी चुनौती का सामना करने को पूरी तरह तैयार.

30. कोरिया में लड़ाई बन्द करने की बात चीत में
पारटी अपनी जगह अटल. पंडित जवाहर लाल की
किसी शर्त के पाकिस्तान के बड़े वज़ीर को दिल्ली आने
ावत.

31. अबादान में तेल साफ़ करने वाले दुनिया के
से बड़े कारख़ाने में काम बन्द. दक्खिन वियत नाम के
नर मार डाले गए. श्री रफ़ी अहमद क़िदवाई ने नई
ी की कैबिनेट से स्तीफ़ा दिया.

---

18. اتر اٹلانٹک صلح میں ترکی و یونان بھی شریک ہونگے . شری رفیع احمد قدوائی کا کانگریس سے استعفیٰ .

19. کیسانگ بات چیت میں اڑچن . مولانا آزاد دلی واپس . کٹک میں چھاتروں پر لاٹھی چارج .

20. جورڈن کے شاہ عبداللہ گولی سے مار دئے گئے . مل جل کر کام کرنے کے لئے پنڈت نہرو کی کانگریس والوں سے اپیل .

21. راج پتی ٹرومین کے نمائندے نے تیل مسئلہ حل کرنے کے لئے کچھ سمجھاؤ . عرب لیگ کے سکریٹری اعظم پاشا کو اطمینان کہ ہندستان پردیس پر چڑھائی نہیں کرے گا .

22. اسپین میں اڈے بنانے پر انگریزی اخباروں کی چیتاونی . پچھمی فوجی طاقتوں کا ساتھ دینے کے لئے مصر کی شرطیں . آچاریہ کرپلانی کا گجرات میں دورہ . دکھنی آسام میں بہت بڑی باڑھ .

23. ایران کے معاملے میں امید کی نئی کرن . فرانس کے مارشل پیتاں گذر گئے . دنیا کی شانتی کے لئے سوویت حکومت سب سے بڑا خطرہ ہے--راج پتی ٹرومین .

24. نہرو جی کا پاکستان کے بڑے وزیر کو خط . اتر پردیش میں ایک منسٹر نے استعفیٰ دیا .

25. کوریا کی بات چیت آگے بڑھانے کے لئے لال دل کا نیا سجھاؤ . پنچ سالا یوجنا کی کامیابی کے لئے بدیسی پونجی کی ضرورت—فائی نینس منسٹر کا اعلان .

26. کوریا لڑائی روکو بات چیت کے لئے ایجنڈے پر دونوں فریق راضی . پاکستانی بڑے وزیر کی صلح کی پانچ شرطوں کے ساتھ پنڈت نہرو کو دعوت .

27. کراچی میں 'ڈیفنس ڈے' کے موقع پر بڑے وزیر کی طرف سے 'مکا' قومی نشان بنانے کا اعلان .

28. کیسانگ کی بات چیت میں "تھوڑی ترقی". ہتھیار بندی کی تین سالا یوجنا . حکومت کی مشینری برتین کی کو سدھارنے کے لئے گور والا کمیشن کی رپورٹ . بہار میں باڑھ .

29. نئی دلی میں نہرو جی کا اعلان کہ ہندستان کسی بھی چنوتی کا سامنا کرنے کو پوری طرح تیار ہے .

30. کوریا میں لڑائی بند کرنے کی بات چیت میں دونوں پارٹی اپنی جگہ اٹل . پنڈت جواہر لال کی بلا کسی شرط پاکستان کے بڑے وزیر کو دلی آنے کی دعوت .

31. ابادان میں تیل صاف کرنے والے دنیا کے سب سے بڑے کارخانے میں کام بند . دکھن ویت نام کے گورنر مار ڈالے گئے . شری رفیع احمد قدوائی نے نئی دلی کی کیبنٹ سے استعفیٰ دیا .

देस बिदेस की जुलाई महीने की डायरी

1. कोरिया की लड़ाई रोकने के सिलसिले में बात चीत केसांग में होगी. स्याम के प्रधान मंत्री को बागियों ने रिहा कर दिया.

2. मौलाना आज़ाद इस्तम्बुल पहुँचे. अमरीकी राजदूत श्री ग्रेडी ईरान के बड़े वज़ीर मुसादिक़ से मिले.

3. जापान के मंत्री मंडल ने स्तीफ़ा दिया. गुजरात के खेदूतसंघ का कांगरेस से अलग होकर प्रजा पारटी का साथ देने का फ़ैसला.

4. सोशलिस्ट पारटी का चुनाव घोशना पत्र प्रकाशित.

5. हेग अदालत ने ईरान के मामले में फ़ैसला अंगरेज़ों के हक़ में दिया. पंडित नेहरू ने रेलवे वालों से हड़ताल न करने की अपील की. मिस्र ने ब्रटेन को चेतावनी दी कि हमारे यहां आप हवाई अड्डे नहीं बना सकते.

6. हेग का फ़ैसला ईरान को नामंज़ूर. रेलवे कर्मचारियों ने 27 अगस्त से हड़ताल करने का फ़ैसला किया.

7. हिन्द सरकार के पिछले चार साल के कारनामों की रिपोर्ट पंडित नेहरू ने मुल्क के सामने पेश की. मौलाना आज़ाद तेहरान पहुँचे.

8. कोरिया लड़ाई रोको बात चीत की शुरुआत. यू.पी. की जन कांगरेस का प्रजा पारटी में मिल जाने का फ़ैसला.

9. अमरीकी राजपति ट्रूमैन का डाक्टर मुसादिक़ को ख़त. प्लानिंग कमीशन का पंच साला प्लान छपा.

10. केसांग में "बहुत इत्मिनान" के साथ बात चीत. हिन्द सरकार ने गेहूँ और चावल का दाम बढ़ा दिया.

11. राजपति ट्रूमैन के नुमाइन्दे हैरी मैन का बीच में पड़ना ईरान को मंज़ूर. रेलवे हड़ताल रोकने के लिये नया आर्डिनेन्स. बंगलौर में कांगरेस वरकिंग कमेटी की बैठक शुरू.

12. केसांग की बात चीत में अटकाव. जापान के बारे में ब्रिटेन और अमरीका का बनाया नया सुलाह मसौविदा पेश. वरकिंग कमेटी ने कांगरेस चुनाव मनिफ़स्टो पास किया.

13. तेहरान में अमरीकी राजदूत का स्तीफ़ा. कुल हिन्द कांगरेस कमेटी में पंडित नेहरू की रिपोर्ट मंज़ूर.

14. केसांग की बात चीत फिर से शुरू होगी.

15. कांगरेस से हट जाने वालों को फिर से आने की दावत देते हुए बंगलौर में ठहराव पास हुआ.

16. तेहरान में मारशल ला का एलान. बेलजियम में बादशाह ल्योपोल्ड की जगह गद्दी पर उनका लड़का शहज़ादा बेडोइन बैठा.

17. केसांग की बातचीत राज़ी ख़ुशी से चल रही है. कटक में विद्यार्थियों का सत्याग्रह.

س بدیس کی جولائی مہینے کی ڈائری

1. کوریا کی لڑائی روکنے کے سلسلے میں بات چیت
ہانگ میں ہوگی۔ سیام کے پردھان منتری کو باغیوں
رہا کردیا ۔

2. مولانا آزاد استنبول پہونچے ۔ امریکی راج دوت
ی گریڈی ایران کے بڑے وزیر ڈاکٹر مصادق سے ملے ۔

3. جاپان کے منتری منڈل نے استعفیٰ دیا ۔
رات کے کھیدوت سنگھ کا کانگریس سے الگ ہوکر پرجا
ی کا ساتھ دینے کا فیصلہ ۔

4. سوشلسٹ پارٹی کا چناؤ گھوشنا پتر پرکاشت ۔

5. ہیگ کی عدالت نے ایران کے معاملے میں
ریزوں کے حق میں فیصلہ دیا ۔ پنڈت نہرو نے ریلوے
وں سے ہڑتال نہ کرنے کی اپیل کی ۔ مصر نے برٹین کو
تاونی دی کہ یہاں آپ ہوائی اڈے نہیں بناسکتے ۔

6. ہیگ کا فیصلہ ایران کو نامنظور ۔ ریلوے
چاریوں نے 27 اگست سے ہڑتال کرنے کا فیصلہ کیا ۔

7. ہند سرکار کے پچھلے چار سال کے کارناموں کی
رٹ پنڈت نہرو نے ملک کے سامنے پیش کی ۔ مولانا
د طہران پہونچے ۔

8. کوریا لڑائی روکو بات چیت کی شروعات ۔ یو ۔ پی ۔
، جن کانگریس کا پرجا پارٹی میں مل جانے کا فیصلہ ۔

9. امریکی راج پتی ٹرومین کا ڈاکٹر مصادق کو خط ۔
ننگ کمیشن کا پنچ سالا پلان چھپا ۔

10. کیسانگ میں "بہت اطمینان" کے ساتھ بات
چیت ۔ ہند سرکار نے گیہوں اور چاول کا دام بڑھا دیا ۔

11. راج پتی ٹرومین کے نمائندے ہیری مین کا
ﭺ میں پڑنا ایران کو منظور ۔ ریلوے ہڑتال روکنے کے
ے نیا آرڈیننس ۔ بنگلور میں کانگریس ورکنگ کمیٹی
ی بیٹھک شروع ۔

12. کیسانگ کی بات چیت میں اٹکاؤ ۔ جاپان
، بارے میں برٹین اور امریکہ کا بنایا نیا صلح مسودہ پیش ۔
کنگ کمیٹی نے کانگریس چناؤ مینیفسٹو پاس کیا ۔

13. طہران میں امریکی راج دوت کا استعفیٰ ۔ کل
ند کانگریس کمیٹی میں پنڈت نہرو کی رپورٹ منظور ۔

14. کیسانگ کی بات چیت پھر سے شروع ہوگی ۔

15. کانگریس سے ہٹ جانے والوں کو پھر سے آنے
، دعوت دیتے ہوئے بنگلور میں ایک ٹھہراؤ پاس ہوا ۔

16. طہران میں مارشل لا کا اعلان ۔ بلجیم میں
شاہ لیوپولڈ کی جگہ گدی پر اُنکا لڑکا شہزادہ بیڈوان بیٹھا ۔

17. کیسانگ کی بات چیت راضی خوشی سے چل
ی ہے ۔ کٹک میں ودیارتھیوں کا ستیاگرہ ۔

बन गया. कालिज के दिनों में जयदयाल जी ने ही पृथ्वी-राज को स्टेज पर उतारा और उसमें छिपी क़ाबलियत की सराहना की. पृथ्वी राज आज हिन्दुस्तानी फ़िलमी दुनिया का सबसे ऊँचा कलाकार है और नए ड्रामा जगत का उसे निर्माता कहना भी उचित है. पृथ्वी ने प्रोफ़ेसर साहब को दावत दे रखी थी कि वह आकर अपने पुराने शागिर्द की कामियाबियों की सराहना करें और नाकामियों को बताएं. हैदराबाद में जब पृथ्वी थेटर्स अपना प्रदर्शन कर रहा था तब प्रोफ़ेसर साहब वहाँ पहुंच गए. फिर साथ ही साथ इन लोगों ने हैदराबाद, मैसूर, कोल्हा पुर और बम्बई वग़ैरा का दौरा किया. प्रोफ़ेसर जयदयाल ने इस दौरे के सारे प्रोग्राम को डायरी की सूरत में लिख डाला. इस डायरी में उन जगहों का अच्छा परिचय मिलता है जहाँ जहाँ इस थेटर ने दौरा किया था. पृथ्वी राज के ड्रामों—ग़द्दार, दीवार, आहुति और शकुन्तला—के बारे में भी इस किताब से जानकारी मिलती है. पृथ्वीराज और उसकी कला पर इन पन्नों में काफ़ी अच्छी रोशनी डाली गई है. पृथ्वी थेटर्स के कला-कारों में सज्जन, राजकपूर, ज़ुहरा, सीतादेवी वग़ैरा के बारे में भी इस किताब से जानकारी मिलती है. किताब के आख़ीर में पृथ्वी राज, उसके कुटुम्ब और पृथ्वी थेटर्स के लोगोंकी तसवीरें दी हुई हैं.

यह किताब उस आदमी ने लिखी है जो न केवल नाटक कला का जानकार है बलिक पृथ्वीराज को भी ख़ूब जानता है. इस लिये पृथ्वी राज और उसकी कला की सुन्दरता और मनशा को समझने के लिये यह किताब अच्छा साधन है.

—मुजीब रिज़वी

रचनात्मक कार्यक्रम

लेखक—महात्मा गांधी. अनुवादक—काशीनाथ त्रिवेदी.
निकालने वाले—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद.
सफ़े—पचास. दाम छै आने.

यह पचास सफ़े की किताब गांधी जी ने सन '45 में लिखी थी. नवजीवन प्रेस ने अब इसको तीसरी बार छापा है और छै आने दाम रखे हैं. यह किताब आज उतनी ही नई है जितनी सन '45 में थी. किताब के अंत में 27 जनवरी सन '48 के 'हरिजन' से 'कांगरेस का स्थान और काम' लेख लेकर दे देने से यह किताब और भी काम की बन गई है. उससे यह पता चलता है कि गांधी जी कांगरेस से क्या चाहते थे ? यह सब के काम की किताब है और उन्हें तो इसे बहुत ध्यान से पढ़ना चाहिये जिनके हाथ में कांगरेस की बाग डोर है.

—म.

بن گیا. کالج کے دنوں میں جے دیال جی نے ہی پرتھوی راج کو اسٹیج پر اتارا اور اس میں چھپی قابلیت کی سراھنا کی. پرتھوی راج آج ھندستانی فلمی دنیا کا سب سے اونچا کلا کار ہے اور نئے ڈراما جگت کا اسے نرماتا کہنا بھی اُچت ہے. پرتھوی نے پروفیسر صاحب کو دعوت دے رکھی تھی کہ وہ آکر اپنے پرانے شاگرد کی کامیابیوں کی سراھنا کریں اور ناکامیوں کو بتائیں. حیدرآباد میں جب پرتھوی تھیٹرس اپنا پردرشن کر رہا تھا تب پروفیسر صاحب وہاں پہنچ گئے. پھر ساتھ ھی ساتھ ان لوگوں نے حیدرآباد، میسور، کولہا پور اور بمبئی وغیرہ کا دورہ کیا. پروفیسر جے دیال نے اِس دورے کے سارے پروگرام کو ڈائری کی صورت میں لکھ ڈالا. اِس ڈائری میں اُن جگہوں کا اچھا پریچے ملتا ہے جہاں جہاں اِس تھیٹر نے دورہ کیا تھا. پرتھوی راج کے ڈراموں — غدار، دیوار، آھوتی اور شکنتلا — کے بارے میں بھی اِس کتاب سے جانکاری ملتی ہے. پرتھوی راج اور اُسکی کلا پر اِن پنوں میں کافی اچھی روشنی ڈالی گئی ہے. پرتھوی تھیٹرس کے کلا کاروں میں سجن، راجکپور، زھرہ، سیتادیوی وغیرہ کے بارے میں بھی اس کتاب میں جانکاری ملتی ہے. کتاب کے آخیر میں پرتھوی راج، اُسکے کٹمب اور پرتھوی تھیٹرس کے لوگوں کی تصویریں دی ہوئی ہیں.

یہ کتاب اُس آدمی نے لکھی ہے جو نہ کیول ناٹک کلا کا جانکار ہے بلکہ پرتھوی راج کو بھی خوب جانتا ہے. اِس لئے پرتھوی راج اور اُسکی کلا کی سندرتا اور منشا کو سمجھنے کے لئے یہ کتاب اچھا سادھن ہے.

—مجیب رضوی

رچناتمک کاریہ کرم

لیکھک—مہاتما گاندھی. انوواد‌ک—کاشی ناتھ ترویدی.
نکالنے والے—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد.
صفحے—پچاس. دام چھ آنے.

یہ پچاس صفحے کی کتاب گاندھی جی نے سن '45 میں لکھی تھی. نوجیون پریس نے اب اِس کو تیسری بار چھاپا ہے اور چھ آنے دام رکھے ھیں. یہ کتاب آج اُتنی ھی نئی ہے جتنی سن '45 میں تھی. کتاب کے انت میں 27 جنوری سن '48 کے 'ھریجن' سے 'کانگریس کا استھان اور کام' لیکھ لے کر دے دینے سے یہ کتاب اور بھی کام کی بن گئی ہے. اُس سے یہ پتہ چلتا ہے کہ گاندھی جی کانگریس سے کیا چاھتے تھے ؟ یہ سب کے کام کی کتاب ہے اور اُنھیں تو اسے بہت دھیان سے پڑھنا چاھئیے جن کے ھاتھ میں کانگریس کی باگ ڈور ہے.

—م.

आजकल के ज़माने में जब विदेशी माल और मिलों का दौर दौरा है और सारे अख़बार इसी का राग अलापते हैं, 'चरखे के आदर्श' को लेकर चलने वाला अंगरेज़ी ज़बान में एक नया अख़बार निकालना हिम्मत और तारीफ़ का काम है. हम भी यह अच्छी तरह जानते हैं कि आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों चरखे का ज़माना फिर से आने वाला है और हिन्दुस्तान ही नहीं सारा आलम इस पर बलिहारी होगा.

अख़बार के कवर पर ही महात्मा जी की लिखावट में 1944 का लिखा उनका एक अमर संदेसा है—"सच्चे बनो, नेक बनो और निडर बनो"—जो हम सभी लोगों और अख़बार वालों के समझने बूझने और अपनाने की चीज़ है, ख़ास तौर से इस कसौटी के मौक़े पर.

यह अख़बार इसी जुलाई से निकलना शुरू हुआ है. हमारे सामने पहला ही नम्बर है जिसमें आचार्य विनोबा भावे, श्री किशोर लाल भाई, कुमारप्पा जी और जाजू जी वग़ैरा के सार भरे और बेहतरीन लेख हैं. जगह जगह महात्मा जी की बानी पिरो दी गई है जिससे चीज़ की रौनक़ बढ़ जाती है. हमें उम्मीद है कि अपने अच्छे लेखों और सुलझे हुए विचारों से 'खादी वर्ल्ड' खादी और ग्राम योग यानी गाँवों के यानी हिन्दुस्तान के सच्चे स्वरूप को पेश करके सब की असली सेवा करेगा.

इस मंहगाई के ज़माने में भी इसका सालाना चन्दा तीन रुपए जैसी छोटी रक़म है. हमारी सिफ़ारिश है कि अंगरेज़ी समझने वाले सभी लोग जिन्हें उद्योग धन्दों या अर्थ शास्त्र से दिलचस्पी है या रचनात्मक काम पसंद है इसे अपनाएं और चाहे वह भले मिल व कारख़ाने के तरफ़दार हों फिर भी तसवीर के दूसरे रुख़ पर निगाह डालें. हिन्दुस्तान के हर स्कूल और कालिज लायब्रेरी में इसका पहुंचना लाज़मी तौर पर फ़ायदा पहुंचाएगा.

—सुरेश रामभाई

آجکل کے زمانے میں جب ودیشی مال اور ملوں کا دور دورہ ہے اور سارے اخبار اسی کا راگ الاپتے ہیں' چرخے کے آدرش' کو لیکر چلنے والا انگریزی زبان میں ایک نیا اخبار نکالنا ہمت اور تعریف کا کام ہے. ہم بھی یہ اچھی طرح جانتے ہیں کہ آج نہیں تو کل' کل نہیں تو پرسوں چرخے کا زمانہ پھر سے آنے والا ہے اور ہندستان ہی نہیں سارا عالم اس پر بلیہاری ہوگا.

اخبار کے کور پر ہی مہاتما جی کی لکھاوٹ میں 1944 کا لکھا انکا ایک امر سندیسہ ہے—"سچے بنو' نیک بنو اور نڈر بنو"—جو ہم سبھی لوگوں اور اخبار والوں کے سمجھنے بوجھنے اور اپنانے کی چیز ہے' خاص طور سے اس کسوٹی کے موقع پر.

یہ اخبار اسی جولائی سے نکلنا شروع ہوا ہے. ہمارے سامنے پہلا ہی نمبر ہے جسمیں آچاریہ ونوبا بھاوے' شری کشورلال بھائی' کمارپا جی اور جاجو جی وغیرہ کے سار بھرے اور بہترین لیکھ ہیں. جگہ جگہ مہاتما جی کی بانی پروئی گئی ہے جس سے چیز کی رونق بڑھ جاتی ہے. ہمیں امید ہے کہ اپنے اچھے لیکھوں اور سلجھے ہوئے وچاروں سے 'کھادی ورلڈ' کھادی اور گرام ادیوگ یعنی گاؤں کے یعنی ہندستان کے سچے سروپ کو پیش کرکے سب کی اصلی سیوا کریگا.

اس مہنگائی کے زمانے میں بھی اسکا سالانہ چندہ تین روپے جیسی چھوٹی رقم ہے. ہماری سفارش ہے کہ انگریزی سمجھنے والے سبھی لوگ جنہیں ادیوگ دھندوں یا ارتھ شاستر سے دلچسپی ہے یا رچناتمک کام پسند ہے اسے اپنائیں اور چاہے وہ بھلے مل و کارخانے کے طرفدار ہوں پھر بھی تصویر کے دوسرے رخ پر نگاہ ڈالیں. ہندستان کے ہر اسکول اور کالج لائبریری میں اسکا پہونچنا لازمی طور پر فائدہ پہونچائیگا.

—سریش رام بھائی

आई गो साउथ विद पृथ्वी राज ऐंड हिज़ पृथ्वी थेटर्स.

लिखने वाले—प्रोफ़ेसर जयदयाल.

निकालने वाले—पृथ्वी थेटर्स पब्लीकेशन्स, बम्बई 4.

भाशा अंगरेज़ी, साइज़ डिमाई आठ पेजी, सफ़ा 80, क़ीमत पांच रुपए आठ आने.

यह किताब प्रोफ़ेसर जयदयाल की डायरी है. प्रोफ़ेसर साहब पृथ्वी राज के गुरु भी हैं और दोस्त भी. इन्हीं की सलाह से पृथ्वी ने अभिनयकला को पढ़ा और बड़ा कलाकार

آئی گو ساؤتھ ود پرتھوی راج اینڈ هز پرتھوی تھیٹرس

لکھنے والے — پروفیسر جے دیال. نکالنے والے—پرتھوی تھیٹرس پبلیکیشنس' بمبئی 4.

بھاشا انگریزی' سائز ڈیمائی اٹھ پیجی' صفحہ 80' قیمت پانچ روپے آٹھ آنے.

یہ کتاب پروفیسر جے دیال کی ڈائری ہے. پروفیسر صاحب پرتھوی راج کے گرو بھی ہیں اور دوست بھی. انہیں کی صلاح سے پرتھوی نے ابھینے کلا کو پڑھا اور بڑا کلا کار

2. कुछ लेख ऐसे हैं जो महात्मा जी के लिखे नहीं हैं, बल्कि, जैसे लेख नम्बर 146, 169 स्वर्गीय महादेव भाई या प्यारे लाल जी या किसी और के कलम से हैं. यह बात जाहिर हो जानी चाहिये थी.

तीसरी चीज एक सुझाव के तौर पर यह कहना चाहते हैं कि लेखों पर उन अखबारों की तारीखें दी हुई हैं जिनमें वह छपे, न कि वह जिन तारीखों पर महात्मा जी ने उन्हें अपने कलम से लिखा या स्पीच में कहा. अगर अगले एडिशन में ऐसा हो सके तो और भी अच्छा होगा.

—सुरेश रामभाई

बेसिक एजुकेशन

लेखक—महात्मा गांधी.

लिखावट—अंगरेजी.

सफा—113. दाम—डेढ़ रुपया.

निकालने वाले — नवजीवन पबलिशिंग हाउस, अहमदाबाद.

'सत्याग्रह' वाली किताब की तरह इसमें महात्मा जी के नई तालीम सम्बन्धी लेख भाई भारतन कुमारप्पा ने जमा किये हैं. जो शिकायतें हमें उस किताब के बारे में रहीं वही इसके बारे में भी हैं. जनवरी सन् 1945 में होने वाली नई तालीम कान्फरेन्स में महात्मा जी की दी हुई मार्के की स्पीच का इसमें कहीं ज़िकर ही नहीं है, जिसमें उन्होंने कहा था कि नई तालीम वालों की हालत उन लोगों की सी है जिनकी नाव अथाह और असीम समुन्द्र पर बह रही है जिसे सिवाय भगवान रूपी ध्रुव तारे के कोई दूसरा सहारा नहीं है.

किताब के एक एक सफे से पता चलता है कि देश की तालीम के सवाल के बारे में कितनी जबरदस्त आग महात्मा जी के सीने में धधकती रहती थी और वह नई तालीम को कितना जरूरी समझते थे. सचमुच उन्होंने अपने कुल तामीरी काम को राष्ट्र की नई तालीम बताया है.

तालीम में और महात्मा गांधी के विचारों में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई बहन के पास यह किताब रहनी चाहिये.

—सुरेश रामभाई

खादी वर्ल्ड

सम्पादक—भाई एन. रामस्वामी.

लिखावट—अंगरेजी.

सालाना चन्दा—तीन रुपए.

निकालने वाले—चर्खा संघ की तामिलनाद शाखा, खद्दर मलार और सर्वोदय प्रचारालायम तीरुपुर (साउथ इन्डिया रेलवे).

2. کچھ لیکھ ایسے ہیں جو مہاتما جی کے لکھے نہیں ہیں، بلکہ، جیسے لیکھ نمبر 146، 169 سورگیہ مہادیو بھائی یا پیارے لال جی یا کسی اور کے قلم سے ہیں. یہ بات ظاہر ہو جانی چاہئے تھی.

تیسری چیز ایک سجھاؤ کے طور پر یہ کہنا چاہتے ہیں کہ لیکھوں پر اُن اخباروں کی تاریخیں دی ہوئی ہیں جن میں وہ چھپے، نہ کہ وہ جن تاریخوں پر مہاتما جی نے اُنہیں اپنے قلم سے لکھا یا اسپیچ میں کہا. اگر اگلے ایڈیشن میں ایسا ہو سکے تو اور بھی اچھا ہوگا.

— سریش رام بھائی

بیسک ایجوکیشن

لیکھک—مہاتما گاندھی.

لکھاوٹ—انگریزی.

صفحے—113. دام—ڈیڑھ روپیہ.

نکالنے والے—نوجیون پبلشنگ ہاؤس، احمدآباد.

'ستیا گرہ' والی کتاب کی طرح اس میں مہاتما جی کے نئی تعلیم سمبندھی لیکھ بھائی بھارتن کماریپا نے جمع کئے ہیں. جو شکائتیں ہمیں اُس کتاب کے بارے میں رہیں وہی اسکے بارے میں بھی ہیں. جنوری سن 1945 میں ہونے والی نئی تعلیم کانفرنس میں مہاتما جی کی دی ہوئی معرکے کی اسپیچ کا اس میں کہیں ذکر ہی نہیں ہے، جسمیں اُنہوں نے کہا تھا نئی تعلیم والوں کی حالت اُن لوگوں کی سی ہے جنکی ناؤ اتھاہ اور اسیم سمندر پر بہہ رہی ہے جسے سوائے بھگوان روپی دھرو تارے کے کوئی دوسرا سہارا نہیں ہے.

کتاب کے ایک ایک صفحے سے پتہ چلتا ہے کہ دیش کی تعلیم کے سوال کے بارے میں کتنی زبردست آگ مہاتما جی کے سینے میں دھدھکتی رہتی تھی اور وہ نئی تعلیم کو کتنا ضروری سمجھتے تھے. سچ مچ اُنہوں نے اپنے کل تعمیری کام کو راشٹر کی نئی تعلیم بتایا ہے.

تعلیم میں اور مہاتما گاندھی کے وچاروں میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کے پاس یہ کتاب رہنی چاہئے.

—سریش رام بھائی

کھادی ورلڈ

سمپادک—بھائی این. رام سوامی.

لکھاوٹ—انگریزی.

سالانہ چندہ—تین روپے.

نکالنے والے—چرخہ سنگھ کی تامل ناد شاکھا، کھدر ملار اور سروودیہ پر چارالائم تھیروپور (ساؤتھ انڈیا ریلوے).

किताब बिकेगी तो खूब और अचरज नहीं इसी साल में इस का दूसरा एडीशन छापना पड़े, पर यह किसी के मन पर गहरा असर छोड़ जायगी, इसमें हमें शक है. हो सकता है, कोई चलते चलते रेल में किसी से यह किताब मांग कर पढ़ ले और तीसरे हिस्से की एक दो घटनाएँ पढ़ने के बाद वह किताब उससे वापस ले ली जाय तो कोई गहरा असर उसके मन पर रह जाय और किताब की ग़रज़ पूरी कर दे.

—भ.

सत्याग्रह

लेखक—महात्मा गांधी, लिखावट—अंगरेजी.

सफ़े—406, दाम—साढ़े चार रुपए.

निकालने वाले—नवजीवन पबलिशिंग हाउस, अहमदाबाद.

अहमदाबाद का नवजीवन प्रकाशन मन्दिर जुदा जुदा मज़मूनों पर महात्मा गांधी के लेखों का संग्रह सस्ते दामों में छाप कर दुनिया की और दुनिया के साहित्य की अच्छी सेवा कर रहा है. 'सत्याग्रह' नाम की किताब में महात्मा जी के सत्याग्रह से ताल्लुक़ रखने वाले 183 लेख, जो उन्होंने दक्खिन अफ़्रीका के अपने अख़बार 'इन्डियन ओपीनियन' और फिर हिन्दुस्तान में 'यंग इन्डिया', 'हरिजन' वग़ैरा में 1904 से लेकर 1946 तक लिखे थे, दिये गए हैं. जमा करने की मेहनत का काम भाई भारतन कुमारप्पा ने किया है जिन्होंने नवजीवन की ख़ातिर इस तरह की और चीज़ें भी तैयार की हैं.

किताब को ग्यारह हिस्सों में बांटा गया है जिनसे सत्याग्रह के सभी पहलुओं पर अच्छी रोशनी पड़ती है.

'सत्याग्रह' और 'सर्वोदय'—यह दो लफ़्ज़ महात्मा जी की ईजाद हैं. सर्वोदय उनकी जिन्दगी का मक़सद था और सत्याग्रह उसको पाने का साधन. लेकिन मक़सद मक़सद है, दूर की चीज़ है, साधन अपनी चीज़ है, अपने करने की और काफ़ी हद तक अपने बस की चीज़ है. इसलिये उस पर महात्मा जी जैसे सत्याग्रही के विचार पढ़ने लायक़ ही नहीं, सोचने और फिर समझ बूझकर अमल करने लायक़ हैं. यह किताब रतनों का खान है जिसमें जो जितना गहरा उतरेगा उतना ही ज़्यादा पाएगा.

लेख जमा करने के बारे में दो बातें हम कहना चाहते हैं—

1. इस सिलसिले के कुछ लेख ज़रूर इसमें देने से रह गए हैं. हमें ख़ास तौर से महात्मा जी के उस लेख की याद आ रही है जो उन्होंने 'दि ग्रेट सैन्टीनल' नाम से गुरुदेव रवीन्द्र नाथ के एक लेख के जवाब लिखा था.

تاب بکے گی تو خوب اور عجب نہیں اسی سال
ہیں اسکا دوسرا اڈیشن چھاپنا پڑے' پر یہ کسی
، من پر گہرا اثر چھوڑ جائیگی' اِس میں ہمیں
شک ہے . ہو سکتا ہے' کوئی چلتے چلتے ریل میں
سی سے یہ کتاب مانگ کر پڑھ لے اور تیسرے حصے کی
و گھٹنائیں پڑھنے کے بعد وہ کتاب اُس سے واپس لے لی
جائے تو کوئی گہرا اثر اُسکے من پر رہ جائے اور کتاب کی
رض پوری کردے .

بھ—

ستیا گرہ

لیکھک—مہاتما گاندھی' لکھاوٹ—انگریزی .

صفحے—406' دام—ساڑھے چار روپے .

نکالنے والے—نوجیون پبلشنگ' ہاؤس' احمدآباد .

احمدآباد کا نوجیون پرکاشن مندر جدا جدا مضمونوں
مہاتما گاندھی کے لیکھوں کا سنگرہ سستے داموں میں
اپ کر دنیا کی اور دنیا کے ساہتیہ کی اچھی سیوا
رہا ہے . 'ستیا گرہ' نام کی کتاب میں مہاتما جی کے
یاگرہ سے تعلق رکھنے والے 183 لیکھ' جو اُنہوں نے دکھن
یقہ کے اپنے اخبار 'انڈین اوپی نین' اور پھر ہندستان
ں 'ینگ انڈیا' 'ہریجن' وغیرہ میں 1904 سے لیکر
19 تک لکھے تھے' دئے گئے ہیں . جمع کرنے کی
حنت کا کام بھائی بھارتن کمارپا نے کیا ہے جنھوں
نوجیون کی خاطر اس طرح کی اور چیزیں بھی تیار
ہیں .

کتاب کو گیارہ حصوں میں بانٹا گیا ہے جن سے
یا گرہ کے سبھی پہلوؤں پر اچھی روشنی پڑتی ہے .

'ستیا گرہ' اور 'سروودے'— یہ دو لفظ مہاتما جی کی
اد ہیں . سروودے اُن کی زندگی کا مقصد تھا اور
یا گرہ اُسکو پانے کا سادھن . لیکن مقصد مقصد ہے'
کی چیز ہے' سادھن اپنی چیز ہے' اپنے کرنے کی اور
حد تک اپنے بس کی چیز ہے . اس لئے اُسپر
ما جی جیسے ستیا گرہی کے وچار پڑھنے لائق ہی
' سوچنے اور پھر سمجھ بوجھ کر عمل کرنے لائق ہیں .
کتاب رتنوں کا کی کھان ہے جسمیں جو جتنا گہرا
اُتنا ہی زیادہ پائیگا .

یکھ جمع کرنے کے بارے میں دو باتیں ہم کہنا
ے ہیں —

. اس سلسلے کے کچھ لیکھ ضرور اس میں دینے
گئے ہیں . ہمیں خاص طور سے مہاتما جی کے اس
ی یاد آرہی ہے جو اُنہوں نے 'دی گریٹ سینٹینل' نام
دیو رویندرناتھ کے ایک لیکھ کے جواب میں لکھا تھا .

यह किताब हर हिन्दी जानने वाले के घर में रहनी चाहिये. क्योंकि इस में साहित्य के उस खजाने का पता दिया गया है जो हिन्दी का अपना है और जिसे हिन्दी वाले भूले हुए थे. हर हिन्दी जानने वाले को इस किताब के पढ़ने के बाद हिन्दी पर और ज्यादा अभिमान करने की हिम्मत हो सकेगी और उसे यह मालूम हो जायगा कि उस के पास हिन्दी साहित्य की ऐसी चीज़ है जो विदेशियों को सौग़ात के तौर पर भेंट की जा सकती है और अगर हम भूलते नहीं हैं तो इस खजाने का कोई न कोई हिस्सा जरूर अब तक अन्तर क़ौमी रूप ले चुका है.

सन '48 में इस का पहला एडीशन छपा पर हमारे सामने यह सन '50 का दूसरा एडीशन है. इस से पता चलता है कि किताब की क़द्र हुई है, पर काफ़ी नहीं. क्या ही अच्छा हो अगर यह किताब जियादा तादाद में छाप कर आठ रुपए की जगह चार रुपए की कर दी जाय.

—म.

یہ کتاب ہر ہندی جاننے والے کے گھر میں رہنی چاہئیے . کیونکہ اِس میں ساہتیہ کے اُس خزانے کا پتہ دیا گیا ہے جو ہندی کا اپنا ہے اور جسے ہندی والے بھولے ہوئے تھے . ہر ہندی جاننے والے کو اِس کتاب کے پڑھنے کے بعد ہندی پر اور زیادہ ابھیمان کرنے کی ہمت ہوسکے گی اور اُسے یہ معلوم ہو جائے گا کہ اُس کے پاس ہندی ساہتیہ کی ایسی چیز ہے جو ودیشیوں کو سوغات کے طور پر بھینٹ کی جاسکتی ہے اور اگر ہم بھولتے نہیں ہیں تو اِس خزانے کا کوئی نہ کوئی حصہ ضرور اب تک انتر قومی روپ لے چکا ہے .

سن '48 میں اس کا پہلا اڈیشن چھپا پر ہمارے سامنے یہ سن '50 کا دوسرا ایڈیشن ہے . اس سے پتہ چلتا ہے کہ کتاب کی قدر ہوئی ہے' پر کافی نہیں . کیا ہی اچھا ہو اگر یہ کتاب زیادہ تعداد میں چھاپ کر آٹھ روپے کی جگہ چار روپے کی کردی جائے .

—م .

गहरे पानी पैठ

लेखक—भाई अयोध्या प्रसाद गोयलीय.

सफ़े—224. दाम ढाई रुपया.

मिलने का पता—भारतीय ज्ञान पीठ, काशी.

यह किताब नावेल नहीं है फिर भी हाथ में लेकर छोड़ने को जी नहीं चाहता. यह किताब काव्य नहीं है फिर भी इसमें सब रस मौजूद हैं. यह कहानियों की किताब भी नहीं है पर हर बात इस ढंग से कही गई है कि वह अपने आप में कहानी बन गई है और कहानी का रस देती है. गोयलीय जी का क़लम रसीला रसिया बन गया है. उसके लिखे जो भी पढ़ता है रसीला बन जाता है. यह सब तो है पर यह किताब जिस ग़रज़ से लिखी गई है उस ग़रज़ को पूरा कर पायगी इस में हमें शक है. यह तीन हिस्सों में बटी है. एक गुरुजनों के चरनों में बैठ कर जो सुना, दो इतिहास और धर्म ग्रन्थों में जो पढ़ा, तीन हिये की आँखों से जो देखा. पहले दो भागों का जियादा हिस्सा ऐसा है जो मन को मोह लेता है, खुश करता है पर चित पर कोई गहरा असर नहीं छोड़ जाता. 'गपोड़ शंख' कहानी दर्ज करने में लेखक ने क्या सोचा पता नहीं. इसी तरह से 'रंगा सियार' उन घटनाओं से कोई मेल नहीं खाता जो 'हिये की आँखों से देखा' हिस्से में दर्ज हैं. धर्म कथाओं में भी कई कथाएं अपना अच्छा असर नहीं छोड़ सकतीं, पाठकों को दुविधा में डाल सकती हैं. अच्छा होता अगर इस का तीसरा यानी 'हिये की आँखों से देखा' भाग अलग किताब की शक्ल में छपता. तीनों भाग साथ छपने से यह

گہرے پانی پیٹھ

لیکھک—بھائی ایودھیا پرساد گوئلیہ .

صفحے—224 . دام ڈھائی روپیہ .

ملنے کا پتہ—بھارتیہ گیان پیٹھ' کاشی .

یہ کتاب ناول نہیں ہے پھر بھی ہاتھ میں لے کر چھوڑنے کو جی نہیں چاہتا . یہ کتاب کاویہ نہیں ہے پھر بھی اِس میں سب رس موجود ہیں . یہ کہانیوں کی کتاب بھی نہیں ہے پر ہر بات اِس ڈھنگ سے کہی گئی ہے کہ وہ اپنے آپ میں کہانی بن گئی ہے اور کہانی کا رس دیتی ہے . گوئلیہ جی کا قلم رسیلا رسیا بن گیا ہے . اُسکے ہاتھ جو بھی چڑھتا ہے رسیلا بن جاتا ہے . یہ سب تو ہے پر یہ کتاب جس غرض سے لکھی گئی ہے اُس غرض کو پورا کر پائیگی اِس میں ہمیں شک ہے . یہ تین حصوں میں بٹی ہے . ایک گروجنوں کے چرنوں میں بیٹھکر جو سنا' دو اِتہاس اور دھرم گرنتھوں میں جو پڑھا' تین ہیے کی آنکھوں سے جو دیکھا . پہلے دو بھاگوں کا زیادہ حصہ ایسا ہے جو من کو موہ لیتا ہے' خوش کرتا ہے پرچت پر کوئی گہرا اثر نہیں چھوڑ جاتا . 'گپوڑ شنکھ' کہانی درج کرنے میں لیکھک نے کیا سوچا پتہ نہیں' اِسی طرح سے 'رنگا سیار' اُن گھٹناؤں سے کوئی میل نہیں کھاتا جو 'ہیے کی آنکھوں سے دیکھا' حصے میں درج ہیں . دھرم کتھاؤں میں بھی کئی کتھائیں اپنا اچھا اثر نہیں چھوڑ سکتیں' پاٹھکوں کو دویدھا میں ڈال سکتی ہیں . اچھا ہوتا اگر اِسکا تیسرا یعنی 'ہیے کی آنکھوں سے دیکھا' بھاگ الگ کتاب کی شکل میں چھپتا . تینوں بھاگ ساتھ چھپنے سے یہ

कुछ किताबें

کچھ کتابیں

आधुनिक हिन्दी कविता

एडीटर—नानु भाई बारोट, गिरिराज किशोर.

सफ़े—84. दाम एक रुपया.

मिलने का पता—गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद.

इस किताब को सच्चे मानों में क़ौमी गीत पोथी कहा जा सकता है. इस में पैंतीस आसान कविताओं को एक जगह इकट्ठा किया गया है. किताब के पीछे मुशकिल शब्दों की टीपनी देकर उसे और भी जियादा काम का बना दिया गया है. यह पहली किताब है जिसमें नज़ीर अकबराबादी, मैथिली शरन गुप्त, मौलाना अलताफ़ हुसेन हाली, अयोध्या सिंह हरिऔध, माखन लाल चतुर्वेदी, सैयद अकबर हुसेन अकबर, सुमित्रानन्दन पंत, ब्रज नारायन चकबस्त, महादेवी वर्मा, सियाराम शरन गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, शब्बीर हसन खां जोश जैसे पैंतीस कवि एक जगह बैठे हैं और बच्चों से बूढ़ी बातें कर रहे हैं.

यह किताब हर स्कूल लायब्रेरी में होना जरूरी है.

इस तरह की 'क़ौमी गीत प्राइमर' के लिये गुजरात विद्यापीठ को बधाई.

—भ.

آدھونک ھندی کویتا

ایڈیٹر—نانو بھائی باروٹ' گری راج کشور

صفحے—84 . دام ایک روپیہ .

ملنے کا پتہ—گجرات ودیا پیتھ' احمدآباد

اِس کتاب کو سچے معنوں میں قومی گیت پوتھی کہا جاسکتا ھے . اِس میں پینتیس آسان کویتاؤں کو ایک جگہ اکٹھا کیا گیا ھے . کتاب کے پیچھے مشکل شبدوں کی ٹیپنی دے کر اُسے اور بھی زیادہ کام کا بنا دیا گیا ھے . یہ پہلی کتاب ھے جس میں نظیر اکبرآبادی' میتھلی شرن گپت' مولانا الطاف حسین حالی' ایودھیا سنگھ ھری اودھ' ماکھن لال چترویدی' سید اکبر حسین اکبر' سمترا نندن پنت' برج نارائن چکبست' مہادیوی ورما' سیارام شرن گپت' سبھدراکماری چوھان' شبیر حسن خاں جوش جیسے پینتیس کوی ایک جگہ بیٹھے ھیں اور بچوں سے بوڑھی باتیں کررھے ھیں .

یہ کتاب ھر اسکول لائبریری میں ھونا ضروری ھے .

اِس طرح کی 'قومی گیت پرائمر' کے لئے گجرات ودیا پیتھ کو بدھائی .

—بھ .

शेर-ओ-शायरी

एडीटर—अयोध्या प्रसाद गोयलीय.

सफ़े—640, दाम आठ रुपया.

मिलने का पता—भारतीय ज्ञानपीठ, काशी.

महा पंडित श्री राहुल सांकृत्यायन की प्रस्तावना ने यह बता दिया है कि यह किताब कितने मौक़े की है और कितने काम की है और यह भी उन हीं का कहना है कि यह किताब कितने गहरे अध्ययन के बाद लिखी गई है.

चोटी का कोई उर्दू शायर नहीं छूट पाया, सभी का नमूना इस किताब में मौजूद है. उन शायरों की जीवनी देकर पाठकों के दिल में यह ख़्वाहिश पैदा करने की कोशिश की गई है कि वह उन की और रचनाओं को मंगाएं और पढ़ें.

شعر و شاعری

ایڈیٹر—ایودھیا پرساد گوئلیہ

صفحے—640 . دام آٹھ روپیہ

ملنے کا پتہ—بھارتیہ گیان پیتھ' کاشی

مہا پنڈت شری راھل سانکرتیائن کی پرستاونا نے یہ بتا دیا ھے کہ یہ کتاب کتنے موقعے کی ھے اور کتنے کام کی ھے اور یہ بھی اُنھی کا کہنا ھے کہ یہ کتاب کتنے گہرے ادھیین کے بعد لکھی گئی ھے .

چوٹی کا کوئی اُردو شاعر نہیں چھوٹ پایا' سبھی کا نمونہ اِس کتاب میں موجود ھے . اُن شاعروں کی جیونی دے کر پاٹھکوں کے دل میں یہ خواھش پیدا کرنے کی کوشش کی گئی ھے کہ وہ اُن کی اور رچناؤں کو منگائیں اور پڑھیں .

बेलेवहान
9-6-'06

ाधे,

ाल की चिट्ठी में सुशीला और कुशीला का हाल लिखा
ौर इस में भी उन्हीं का हाल लिखा जायगा. और
ी चिट्ठियों में भी इसी तरह. कुशीला उस रोज़ सुशीला
शाम तक ठहरी और सुशीला ने उसे पढ़ने लिखने
ुर काम ठीक ठीक वक़्त पर अक़्ल के मुताबिक़
के बड़े फ़ायदे बताए और दिखलाया कि सुशीला ने
कैसी नई नई बातें इसी तरीक़े पर चलने से सीख
उसने कुशीला को वर्ज़िशें भी कई तरह की कर कर
ाखलाई. कुशीला ने पूछा कि अरी तूने यह सब बातें
ा सीख लीं. सुशीला ने कहा कि यह सब बातें किताबों
ने से मालूम हो सकती हैं. आज कल के ज़माने में
ारह की किताबें हर एक क़िस्म की छपी हुई बिकती
कोई आदमी इन को पढ़ना सीख ले फिर वह जिस
बात या चीज़ का हाल चाहे ख़ुद पढ़ कर मालूम कर
है. कुशीला ने कहा कि मैं भी चाहती हूँ कि पढ़ना
ा अच्छी तरह आ जाय. मगर मेरा मन ही नहीं
जब मैं पढ़ने लिखने को बैठती हूँ तो ज़रा मन नहीं
और यही दिल चाहता है कि झट पट सब कुछ
हो जाय तो जाकर खेलूँ. सुशीला ने कहा कि पढ़ना
एक खेल ही है और बड़े तमाशे का खेल है कि जो
ाहो उसी की बाबत पढ़ सको. अगर तुम मालूम
चाहती हो कि पीतल क्या चीज़ है, कहां से आता
इसके बरतन क्योंकर बनते हैं, तो किताबों के पढ़ने
ूम हो सकता है. अगर तुम जानना चाहो कि पहाड़
बनते हैं, दरख़्त क्यों कर उगते हैं, चांद में धब्बे
ा क्यों दिखाई देते हैं, मेंह क्यों बरसता है, आंधी
लती है, आदमी क्या है, जानवर क्योंकर बने,
क्यों चमकती है और चिराग़ क्योंकर जलता है
सब और हज़ारों क़िस्म की और बातें किताबों के
ा मालूम हो सकती हैं.

चुटकला

प—तूने मेरा क़लम क्यों तोड़ा ?
ा—इसलिये कि आप मुझे सज़ा दें.
प—क्या तुझे सज़ा अच्छी मालूम होती है ?
ा—सज़ा तो अच्छी मालूम नहीं होती लेकिन
े बाद अम्मां मुझे खाने को मिठाई देती हैं !

بیلے وہاں
9-5-'06

رادھے'

کل کی چٹھی میں سوشیلا اور کوشیلا کا حال لکھا تھا' اور اس میں بھی اُنھیں کا حال لکھا جائے گا . اور اگلی چٹھیوں میں بھی اسی طرح . کوشیلا اُس روز سوشیلا کے گھر شام تک ٹھہری اور سوشیلا نے اُسے پڑھنے لکھنے اور ہر کام ٹھیک ٹھیک وقت پر عقل کے مطابق کرنے کے بڑے فائدے بتائے اور دکھلایا کہ سوشیلا نے کیسی کیسی نئی نئی باتیں اسی طریقے پر چلنے سے سیکھ لیں . اُس نے کوشیلا کو ورزشیں بھی کئی طرح کی کرکر کے دکھلائیں . کوشیلا نے پوچھا کہ اری تونے یہ سب باتیں کہاں سے سیکھ لیں . سوشیلا نے کہا کہ یہ سب باتیں کتابوں کے پڑھنے سے معلوم ہوسکتی ہیں . آج کل کے زمانے میں طرح طرح کی کتابیں ہر ایک قسم کی چھپی ہوئی بکتی ہیں . جو کوئی آدمی اِن کو پڑھنا سیکھ لے پھر وہ جس کسی بات یا چیز کا حال چاہے خود پڑھکر معلوم کر سکتا ہے . کوشیلا نے کہا کہ میں بھی چاہتی ہوں کہ پڑھنا لکھنا اچھی طرح آجائے . مگر میرا من ہی نہیں لگتا . جب میں پڑھنے لکھنے کو بیٹھتی ہوں تو ذرا من نہیں لگتا اور یہی دل چاہتا ہے کہ جھٹ پٹ سب کچھ ختم ہوجائے تو جاکر کھیلوں . سوشیلا نے کہا کہ پڑھنا بھی تو ایک کھیل ہی ہے اور بڑے تماشے کا کھیل ہے کہ جو کچھ چاہو اُسی کی بابت پڑھ سکو . اگر تم معلوم کرنا چاہتی ہو کہ پیتل کیا چیز ہے' کہاں سے آتا ہے اور اِسکے برتن کیوں کر بنتے ہیں' تو کتابوں کے پڑھنے سے معلوم ہوسکتا ہے . اگر تم جاننا چاہو کہ پہاڑ کیونکر بنتے ہیں' درخت کیوں کر اُگتے ہیں' چاند میں دھبے دھبے سے کیوں دکھائی دیتے ہیں' مینھہ کیوں برستا ہے' آندھی کیوں چلتی ہے' آدمی کیا ہے' جانور کیونکر بنے' بجلی کیوں چمکتی ہے اور چراغ کیوں کر جلتا ہے تو یہ سب اور ہزاروں قسم کی اور باتیں کتابوں کے پڑھنے سے معلوم ہو سکتی ہیں .

چٹکلا

باپ — تونے میرا قلم کیوں توڑا ؟
بچہ — اس لئے کہ آپ مجھے سزا دیں .
باپ — کیا تجھے سزا اچھی معلوم ہوتی ہے ؟
بچہ — سزا تو اچھی معلوم نہیں ہوتی لیکن سزا کے بعد اماں مجھے کھانے کو مٹھائی دیتی ہیں !

राधे,

कल की चिट्ठी में सुशीला और कुशीला का थोड़ा सा हाल लिखा था. आज भी उन्हीं का और थोड़ा सा हाल लिखा जाता है. एक दिन कुशीला सुशीला के घर गई. कोई नौ दस बजे का वक़्त होगा. सुशीला बैठी हुई अपना हिसाब लिख रही थी. कुशीला ने जा कर कहा कि अरी क्या कर रही है? उठो चलो ऊपर चल कर खेलें. सुशीला ने कहा कि मैं पहले अपना हिसाब ख़तम कर लूं फिर कुछ और काम करूंगी. तुम भी देखो, तुम ने अपना कल का हिसाब लिख लिया? कुशीला ने कहा मुझे तो हिसाब विसाब लिखना आता नहीं और न मेरा ऐसे कामों में मन लगता है. सुशीला ने कहा कि वाह हिसाब लिखना तो बड़ा अच्छा मन लगाने वाला काम है. देखो मैं तो तीन बरस से बराबर अपना हिसाब लिखती हूँ. मुझे दस रुपए महीना मिलता है, उसी में अपना सब करती हूँ. और मेरे पास सब हिसाब एक एक पैसे का मौजूद है. आज तीसरे साल का आख़री दिन है इस लिये मैंने सब हिसाब जोड़ कर जमा किया है. मुझे इन बरसों में कुल 360 रुपए मिले. उन में से मैं ने कुल मिला कर 110 रुपए ख़र्च किये हैं और बाक़ी 250 रुपए बैंक में जमा कराए हैं. यह देखो मेरी बैंक की किताब. इस में 250 रुपए तो असल के और 15 रुपए सूद के, कुल 265 रुपए लिखे हुए हैं. कुशीला ने कहा कि तूने रुपया बैंक में क्यों जमा करवाया? कुछ के गहने क्यों नहीं बनवाए? मेरा तो गहने पहनने को बड़ा मन करता है. सुशीला ने कहा कि गहना बनवाने से क्या फ़ायदा? मुफ़्त में रुपया ज़ाया करना है. मैंने तो पिछले तीन बरस में 10 किताबें अंगरेज़ी की और 25 किताबें हिन्दी और उरदू की पढ़ी हैं. कहीं भी गहने बनवाने का कुछ फ़ायदा नहीं पढ़ा. हां, नुक़सान बहुत से पढ़े हैं. न मेरा ऐसी फ़ज़ूल बातों के करने के वास्ते मन चाहता है जिन में नुक़सान ही नुक़सान हो, फ़ायदा कुछ भी न हो. कुशीला ने कहा कि जब सब औरतें जो बुरा बुरा कहने लगतीं हैं कि अरे यह लौंडिया तो निरी मांस का लोंदा है. यह गहने क्यों नहीं पहनती. कैसी बुरी नंगी नंगी मालूम होती है. इस पर सुशीला ने कहा कि पहले तो मुझे भी औरतों की ऐसी बातों से बुरा मालूम होता था. मगर जब से मैंने किताबों में पढ़ा है कि जब कभी कोई आदमी कोई नया काम करता है, तो चाहे जितना अच्छा काम क्यों न हो, जो आदमी लकीर के फ़क़ीर होते हैं वह उसे ज़रूर बुरा कहते हैं, तब से मैंने अपने मन को समझा लिया कि औरों के बुरा भला कहने पर कभी न जाना चाहिये, बलकि जो बात अक़ल के मुताबिक़ हो वह करनी चाहिये.

رادھے'

کل کی چٹھی میں سوشیلا اور کوشیلا کا تھوڑا سا حال لکھا تھا۔ آج بھی انہیں کا اور تھوڑا سا حال لکھا جاتا ہے، ایک دن کوشیلا سوشیلا کے گھر گئی۔ کوئی نو دس بجے کا وقت ہوگا۔ سوشیلا بیٹھی ہوئی اپنا حساب لکھ رہی تھی۔ کوشیلا نے جا کر کہا کہ اری کیا کر رہی ہے؟ اٹھو چلو اوپر چلکر کھیلیں۔ سوشیلا نے کہا کہ میں پہلے اپنا حساب ختم کرلوں پھر کچھ اور کام کروں گی۔ تم بھی دیکھو' تم نے اپنا کل کا حساب لکھ لیا؟ کوشیلا نے کہا مجھے تو حساب وساب لکھنا آتا نہیں اور نہ میرا ایسے کاموں میں من لگتا ہے۔ سوشیلا نے کہا کہ واہ حساب لکھنا تو بڑا اچھا من لگانے والا کام ہے۔ دیکھو میں تو تین برس سے برابر اپنا حساب لکھتی ہوں۔ مجھے دس روپے مہینہ ملتا ہے' اسی میں اپنا سب کرتی ہوں۔ اور میرے پاس سب حساب ایک ایک پیسے کا موجود ہے۔ آج تیسرے سال کا آخری دن ہے اس لئے میں نے سب حساب جوڑ کر جمع کیا ہے۔ مجھے ان برسوں میں کل 360 روپے ملے۔ ان میں سے میں نے کل ملا کر 110 روپے خرچ کئے ہیں اور باقی 250 روپے بینک میں جمع کرائے ہیں۔ یہ دیکھو میری بینک کی کتاب۔ اس میں 250 روپے تو اصل کے اور 15 روپے سود کے' کل 265 روپے لکھے ہوئے ہیں۔ کوشیلا نے کہا کہ تونے روپیہ بینک میں کیوں جمع کروایا؟ کچھ کے گہنے کیوں نہیں؟ بنوائے میرا تو گہنے پہننے کو بڑا من کرتا ہے۔ سوشیلا نے کہا کہ گہنا بنوانے سے کیا فائدہ؟ مفت میں روپیہ ضائع کرنا ہے۔ میں نے تو پچھلے تین برس میں 10 کتابیں انگریزی کی اور 25 کتابیں ہندی اور اردو کی پڑھی ہیں۔ کہیں بھی گہنے بنوانے کا کچھ فائدہ نہیں پڑھا۔ ہاں' نقصان بہت سے پڑھے ہیں۔ نہ میرا ایسی فضول باتوں کے کرنے کے واسطے من چاہتا ہے جن میں نقصان ہی نقصان ہو' فائدہ کچھ بھی نہ ہو۔ کوشیلا نے کہا کہ جب سب عورتیں جو برا برا کہنے لگتی ہیں کہ ارے یہ لونڈیا تو نری مانس کا لوندا ہے۔ یہ گہنے کیوں نہیں پہنتی۔ کیسی بری ننگی ننگی معلوم ہوتی ہے۔ اس پر سوشیلا نے کہا کہ پہلے تو مجھے بھی عورتوں کی ایسی باتوں سے برا معلوم ہوتا تھا۔ مگر جب سے میں نے کتابوں میں پڑھا ہے کہ جب کبھی کوئی آدمی کوئی نیا کام کرتا ہے' تو چاہے جتنا اچھا کام کیوں نہ ہو' جو آدمی لکیر کے فقیر ہوتے ہیں وہ اسے ضرور برا کہتے ہیں' تب سے میں نے اپنے من کو سمجھا لیا کہ لوگوں کے برا بھلا کہنے پر کبھی نہ جانا چاہئے' بلکہ جو بات عقل کے مطابق ہو وہ کرنی چاہئے۔

ोया करती थी, और सोते वक़्त पूरा इरादा कर लेती थी
के सुबह जरूर चाहे कुछ ही हो ठीक पांच बजे उठूँगी.
स वास्ते जहाँ पांच बजे वहाँ फ़ौरन उस की आंख खुल
ाती थी और वह फ़ौरन उठ अपना बिस्तरा तह कर बिस्तरे
खने की जो जगह मुक़र्रर कर रखी थी वहाँ रख फ़ौरन
हा धोकर कपड़े पहन, चोटी गुंधवा कर, वर्ज़िश कर
ढ़ने को बैठ जाती थी. छै बजे से नौ बजे तक बराबर
ढ़ती थी, फिर खाना खाकर जो जो चिट्ठियाँ किसी के
ास से आती थीं सब का रोज़ जवाब दे देती थी. फिर
ारह बजे तक खेलती थी और फिर रोटी खा कर सीने
िने वग़ैरा का काम तीन बजे तक करती थी. इसके शाम
क का वक़्त अच्छे अच्छे खेलों में जिन से अक़्ल आए,
वाख़ोरी में, अच्छी अच्छी कहानियाँ पढ़ने में और
अक़्लमन्दी की और बातें करने में गुज़ारती थी. और इसी
क़्त में खाना बनाना भी रोज़ सीखा करती थी. और इस
रह रोज़ बरोज़ ज़्यादा अक़्लमन्द होती जाती थी. बहुत
ी किताबें पढ़ ली थीं और हमेशा ख़ुश रहती थी.

मगर उसकी भनेली कुशीला को उस की माँ ने कुछ
ी न सिखाया था. इस वास्ते जब सवेरा होता तो उस
ा मन बिस्तरे पर से उठने को ही नहीं करता था. इस
ास्ते जाग पड़ने के बाद भी बहुत देर तक ऐंडा करती थी.
ड़ी मुशकिल से जब सब उठ कर अपने अपने काम में
ग जाते थे तब उठती थी. उठने के बाद बजाय इस के
के झट पट नहा धो कर काम से लगे, इधर से उधर और
धर से इधर फिरती फिरे थी. कभी कहारी के पास जा
र उस के मसाला पीसने का तमाशा देखने लगती. कभी
ोई बच्चा रोता हुआ तो उस को उठा लिया. कभी किसी
े यों ही वाही तबाही बातों में लग गई. न नहाने धोने
ा वक़्त मुक़र्रर न चोटी गुंधवाने का. और वर्ज़िश करने
ा तो ज़िक्र ही क्या. ग़रज़ इस तरह कभी आठ बजे नहाती
ी कभी नौ बजे, और कभी नहाती ही नहीं थी. कभी
किसी ने बहुत कहा तो कुछ पढ़ लिया, वरना उसी तरह
ुस्त बैठे रहने या उलटी सीधी बातें करने या किसी बालक
े खेलने में वक़्त ज़ाया करती थी. न पढ़ना लिखना अच्छी
रह सीखा था, न सीना पिरोना न खाना बनाना. एक
िन जो तरकारी बनाने बैठी तो दुगना नमक डाल दिया
और तरकारी बिलकुल कच्ची रह गई, सब फिंक गई. चिट्ठी
अगर उस के पास कोई भेजता था तो कभी उस का
जवाब नहीं देती थी, चाहे कोई कितना ही लिखे कि ज़रूर
जवाब देना. क्योंकि जब कोई चिट्ठी आती थी तो जल्दी
से पढ़ कर जहाँ पढ़ा वहीं छोड़ खेल में या किसी और
बात में लग जाती थी. और चिट्ठी इधर उधर हो जाती
थी, फिर जवाब क्यों कर देती.

سویا کرتی تھی، اور سوتے وقت پورا ارادہ کر لیتی تھی
کہ صبح ضرور چاہے کچھ ہی ہو ٹھیک پانچ بجے اٹھوں گی۔
اِس واسطے جہاں پانچ بجے وہاں فوراً اُسکی آنکھ
کھل جاتی تھی اور وہ فوراً اٹھ اپنا بستر تہہ کر بستر ے
رکھنے کی جو جگہ مقرر کر رکھی تھی وہاں رکھ فوراً نہا دھو
کر کپڑے پہن، چوٹی گندھوا کر، ورزش کر پڑھنے کو بیٹھ
جاتی تھی۔ چھ بجے سے نو بجے تک برابر پڑھتی تھی،
پھر کھانا کھاکر جو جو چٹھیاں کسی کے پاس سے آتی تھیں
سب کا روز جواب دے دیتی تھی۔ پھر بارہ بجے تک کھیلتی
تھی اور پھر روٹی کھا کر سینے پرونے وغیرہ کا کام تین بجے
تک کرتی تھی۔ اِسکے شام تک کا وقت اچھے اچھے کھیلوں
میں جن سے عقل آئے، ہوا خوری میں اچھی اچھی
کہانیاں پڑھنے میں اور عقل مندی کی اور باتیں کرنے
میں گذارتی تھی۔ اور اسی وقت میں کھانا بنانا بھی
روز سیکھا کرتی تھی۔ اور اس طرح روز بروز زیادہ عقل مند
ہوتی جاتی تھی۔ بہت سی کتابیں پڑھ لی تھیں اور
ہمیشہ خوش رہتی تھی۔

مگر اُسکی سہیلی کشیلا کو اُسکی ماں نے کچھ بھی
نہ سکھایا تھا۔ اِس واسطے جب سویرا ہوتا تو اسکا من
بستر ے پر سے اُٹھنے کو ہی نہیں کرتا تھا۔ اِس واسطے
جاگ پڑنے کے بعد بھی بہت دیر تک اینڈا کرتی تھی۔
بڑی مشکل سے جب سب اٹھ کر اپنے اپنے کام میں لگ
جاتے تھے تب اُٹھتی تھی۔ اُٹھنے کے بعد بجائے اِس کے
کہ جھٹ پٹ نہا دھوکر کام سے لگے، ادھر سے اُدھر اور اُدھر
سے اِدھر پھرتی پھرے تھی۔ کبھی کہاری کے پاس جاکر
اُسکے مسالہ پیسنے کا تماشہ دیکھنے لگتی۔ کبھی کوئی بچہ
روتا ہوا تو اُسکو اُٹھا لیا۔ کبھی کسی سے یوں ہی واہی
تباہی باتوں میں لگ گئی۔ نہ نہانے دھونے کا وقت مقرر
نہ چوٹی گندھوانے کا۔ اور ورزش کرنے کا تو ذکر ہی کیا۔
غرض اِس طرح کبھی آٹھ بجے نہاتی تھی کبھی نو بجے،
اور کبھی نہاتی ہی نہیں تھی۔ کبھی کسی نے بہت کہا
تو کچھ پڑھ لیا، ورنہ اُسی طرح سست بیٹھے رہنے یا اُلٹی
سیدھی باتیں کرنے یا کسی بالک سے کھیلنے میں وقت
ضائع کرتی تھی۔ نہ پڑھنا لکھنا اچھی طرح سیکھا تھا
نہ سینا پرونا نہ کھانا بنانا۔ ایک دن جو ترکاری بنانے
بیٹھی تو دگنا نمک ڈال دیا اور ترکاری بالکل کچی رہ
گئی، سب پھک گئی۔ چٹھی اگر اُس کے پاس کوئی
بھیجتا تھا تو کبھی اُسکا جواب نہیں دیتی تھی چاہے
کوئی کتنا ہی لکھے کہ ضرور جواب دینا۔ کیونکہ جب
کوئی چٹھی آتی تھی تو جلدی سے پڑھکر جہاں پڑھا
وہیں چھوڑ کھیل میں یا کسی اور بات میں لگ جاتی
تھی۔ اور چٹھی اِدھر اُدھر ہوجاتی تھی، پھر جواب کیوں
کر دیتی۔

बच्चों की दुनिया

بچوں کی دنیا

भाइयो, बहनो,

मैंने जुलाई नम्बर में आप से वायदा किया था कि आप को यह बता दिया जायगा कि नीचे दिये पत्र किस पिता ने किस बेटी को लिखे थे. तो सुनिये, वह भाग्यवान लड़की श्रीमती राधा रानी थीं और उनके वह पिता दिल्ली के बाइज़्ज़त और बहुतों के जाने पहचाने नागर स्वर्गीय श्री राधिका नारायन थे.

हमें अफ़सोस है कि बहुत तलाश करने पर भी इस सिलसिले की सब से पहली चिट्ठियां हमें नहीं मिल सकीं. अब यह सिलसिला 7जून 1906 से शुरू होता है. नीचे कुछ चिट्ठियां दी जाती हैं जिन में एक कहानी कह कर बच्चों की अच्छी और बुरी तालीम में फ़र्क़ बताया गया है.

आपकी दीदी

योग माया

بھائیو' بہنو'

میں نے جولائی نمبر میں آپ سے وعدہ کیا تھا کہ آپ کو یہ بتا دیا جائے گا کہ نیچے دیئے پتر کس پتا نے کس بیٹی کو لکھے تھے. تو سنئے' وہ بھاگوان لڑکی شریمتی رادھا رانی تھیں اور اُن کے وہ پتا دلی کے با عزت اور بہتوں کے جانے پہچانے ناگر سورگیہ شری رادھیکا نارائن تھے.

ہمیں افسوس ہے کہ بہت تلاش کرنے پر بھی اس سلسلے کی سب سے پہلی چٹھیاں ہمیں نہیں مل سکیں. اب یہ سلسلہ 7 جون 1906 سے شروع ہوتا ہے. نیچے کچھ چٹھیاں دی جاتی ہیں جن میں ایک کہانی کہکر بچوں کی اچھی اور بری تعلیم میں فرق بتایا گیا ہے.

آپ کی دیدی

یوگ مایا

सुशीला और कुशीला

कहोड़

7-6-'06

राधे,

कल की चिट्ठी में एक बुरी मां और उसके बच्चे का हाल लिखा गया था. आज दो लड़कियों का हाल सुनो जिन में से एक की मां तो बहुत बेपरवाह और सुस्त थी और दूसरी की मां बड़ी हुशियार और अक़्लमन्द थी. एक लड़की का नाम कुशीला था और दूसरी का सुशीला. दोनों एक ही गली में रहती थीं और एक दूसरे की सहेली थीं. सुशीला को तो उस की मां ने छुटपन ही से बड़ी अच्छी अच्छी आदतें डाली थीं. इस वास्ते वह हर रोज़ गरमियों में पांच बजे और जाड़ों में छै बजे उठा करती थी. एक घड़ी उस के पास थी, वह अपने सिरहाने रखकर

سوشیلا اور کوشیلا

کہلور

7-6-'06

رادھے'

کل کی چٹھی میں ایک بری ماں اور اُسکے بچے کا حال لکھا گیا تھا. آج دو لڑکیوں کا حال سنو جن میں سے ایک کی ماں تو بہت بے پرواہ اور سست تھی اور دوسری کی ماں بڑی ہوشیار اور عقل مند تھی. ایک لڑکی کا نام کوشیلا تھا اور دوسری کا سوشیلا. دونوں ایک ہی گلی میں رہتی تھیں. اور ایک دوسرے کی سہیلی تھیں. سوشیلا کو تو اُسکی ماں نے چھٹپن ہی سے بڑی اچھی اچھی عادتیں ڈالی تھیں. اس واسطے وہ ہر روز گرمیوں میں پانچ بجے اور جاڑوں میں چھ بجے اُٹھا کرتی تھی. ایک گھڑی اُسکے پاس تھی' وہ اپنے سرہانے رکھکر

श्रीमान समझेंगे और कम्युनिस्ट समझेंगे तो सारा गाँव सुखी होगा. यह तो मैं कम्युनिस्टों का ही काम कर रहा हूँ. यह एक फच्चर है, उस फच्चर को डालता हूँ. और फिर उस पर क़ानून का हथौड़ा पड़ेगा. हमारा काम सिर्फ़ क़ानून से नहीं होगा, अगर यह फच्चर काम नहीं देगी. इसकी शुरुआत होती है दान से और ख़ात्मा होता है क़ानून से. और कम्युनिस्ट शुरुआत करेंगे लाठी से और ख़ात्मा करेंगे क़ानून से. आख़िर में क़ानून से ख़ात्मा वह भी करेंगे, मैं भी करूँगा, लेकिन शुरुआत में मैं प्रेम और दान चाहता हूँ, और वह लाठी और लूट चाहते हैं.

—विनोबा

राजपति की राय

(हिन्दुस्तानी प्रचार सभा बम्बई के काम के बारे में)

गवर्नमेंट हाउस, बम्बई.
26. 5. '51

मुझे यह सुनकर बहुत ख़ुशी हुई है कि हिन्दुस्तानी प्रचार सभा अपना नेक काम स्कूलों में पढ़ने वालों और बालिग़ों के लिये, अपने प्रचारकों के ज़रिये क्लासें खोल-खोलकर, बराबर कर रही है. हिन्दुस्तानी का रास्ता बापू के दिल को बहुत प्यारा था. और उनकी बड़ी आरज़ू थी कि हममें से हर एक, हिन्दुस्तानी दोनों लिखावटों में सीख ले. इस लिये यह बापू के तामीरी कामों का ज़रूरी और निहायत अहम हिस्सा है, और उन सब को जो इस मैदान में काम कर रहे हैं, मुबारकबाद देना चाहिये.

हिन्दी को हिन्द यूनियन की सरकारी ज़बान मान लेने का यह मतलब नहीं है कि बालिग़ों को और स्कूलों में, निजी तौर पर दोनों लिखावटों में हिन्दुस्तानी सिखाने के काम को किसी तरह भी रोका जाय.

सच तो यह है कि हिन्द यूनियन के आइन (संविधान) में जिस हिन्दी का ज़िकर किया गया है, वह दरअस्ल वही ज़बान है जिसे महात्मा गांधी हिन्दुस्तानी कहते थे. जिन्हें दोनों चीज़ें सीखने का मौक़ा मिल सके, वह बेशक, प्रभावशाली तरीक़े से राष्ट्रभाषा को अच्छी तरह पुरज़ोर और लचकदार बातचीत का ज़रिया बनाने में मदद दे सकेंगे.

मैं ऐसे काम करने वालों की कोशिशों की पूरी कामयाबी चाहता हूँ.

—राजेन्द्र प्रसाद

('मंगल प्रभात' से)

شریمان سمجھیں گے اور کمیونسٹ سمجھیں گے تو سارا گاؤں سکھی ہوگا. یہ تو میں کمیونسٹوں کا ہی کام کر رہا ہوں. یہ ایک پھچر ہے، اُس پھچر کو ڈالتا ہوں. اور پھر اُس پر قانون کا ہتھوڑا پڑے گا. ہمارا کام صرف قانون سے نہیں ہوگا، اگر یہ پھچر کام نہیں دیگی. اِس کی شروعات ہوتی ہے دان سے اور خاتمہ ہوتا ہے قانون سے. اور کمیونسٹ شروعات کریں گے لاٹھی سے اور خاتمہ کریں گے قانون سے. آخر میں قانون سے خاتمہ وہ بھی کریں گے، میں بھی کرونگا، لیکن شروعات میں میں پریم اور دان چاہتا ہوں، اور وہ لاٹھی اور لوٹ چاہتے ہیں.

— ونوبا

راج پتی کی رائے

(ہندستانی پرچار سبھا بمبئی کے کام کے بارے میں)

گورنمنٹ ہاؤس، بمبئی.
26-5-'51

مجھے یہ سن کر بہت خوشی ہوئی ہے کہ ہندستانی پرچار سبھا اپنا نیک کام اسکولوں میں پڑھنے والوں اور بالغوں کے لئے، اپنے پرچارکوں کے ذریعے کلاسیں کھول کھول کر، برابر کر رہی ہے. ہندستانی کا راستہ باپو کے دل کو بہت پیارا تھا. اور اُن کی بڑی آرزو تھی کہ ہم میں سے ہر ایک، ہندستانی دونوں لکھاوٹوں میں سیکھ لے. اس لئے یہ باپو کے تعمیری کاموں کا ضروری اور نہایت اہم حصہ ہے، اور اُن سب کو جو اس میدان میں کام کر رہے ہیں، مبارک باد دینا چاہئے.

ہندی کو ہند یونین کی سرکاری زبان مان لینے کا یہ مطلب نہیں ہے کہ بالغوں کو اور اسکولوں میں، نجی طور پر دونوں لکھاوٹوں میں ہندستانی سکھانے کے کام کو کسی طرح بھی روکا جائے.

سچ تو یہ ہے کہ ہند یونین کے آئین (سنودھان) میں جس ہندی کا ذکر کیا گیا ہے، وہ دراصل وہی زبان ہے جسے مہاتما گاندھی ہندستانی کہتے تھے. جنہیں دونوں چیزیں سیکھنے کا موقعہ مل سکے، وہ بے شک، پربھاوشالی طریقے سے راشٹر بھاشا کو اچھی طرح پر زور اور لچکدار بات چیت کا ذریعہ بنانے میں مدد دے سکینگے.

میں ایسے کام کرنے والوں کی کوششوں کی پوری کامیابی چاہتا ہوں.

—راجیندر پرساد

('منگل پربھات' سے)

लोग कहेंगे कि जिसके पास पाँच पाँच हजार एकड़ ज़मीन होती है, वह सौ एकड़ ज़मीन देता है तो उससे क्या होगा ? तो मैं कहता हूँ कि ज़रा सबर रखो, अभी 5 हजार में से जो सौ देता है, वह प्रेम से देता है तो मैं लूँगा और बाक़ी के चार हज़ार नौ सौ एकड़ भी मेरे ही हैं. जब यह लोग देखेंगे कि हम ज़मीन देते जाते हैं ग़रीबों को, उससे ग़रीबों का प्रेम ही हम को मिलता है, तो फिर वे ख़ुद कहेंगे कि और भी ले लो.

लेकिन तीसरे क़दम में सब ले लेने वाला हूँ

तो फिर कम्युनिस्ट हम को कहेंगे, कैसा भोला आदमी है ! लेकिन उनको मैं कहूँगा कि भोला मैं नहीं हूँ, मेरा धंदा मैं जानता हूँ. एक दफ़ा थोड़ी भावना, थोड़ा वातावरन होने दो कि ज़मीन ग़रीबों को देने में फ़ायदा है ; फिर एक दफ़ा वातावरन तैयार हो जायगा तो क़ानून में करा लूँगा. फिर राह नहीं देखने वाला कि आज सौ एकड़ हैं, पाँच साल के बाद और 100 एकड़ मिलेगी, और फिर पाँच साल के बाद बाक़ी 100 एकड़ मिलेगी. ऐसे चार हजार मिलने में तो सौ बरस चले जाएँगे. बात ऐसी है कि हवा बदल जानी चाहिये और हवा बदल जाती है तो क़ानून उसके साथ आता ही है. लेकिन मैं वातावरन तैयार करूँ तो क़ानून को लोग पसंद करेंगे. बाप ऐसा ही तो करता है. बच्चे को मिठाई खिलाता है, लेकिन मिठाई देता है तो वह प्रेम से देता है और तमाचा लगाता है तो प्रेम से लगाता है. और जो कोई लूटने के लिये आते हैं, वह बच्चे को मिठाई खिलाते तो हैं, पर वह प्रेम की मिठाई नहीं होती. लेकिन माता जो तमाचा लगाती है, वह प्रेम का होता है. मैं तो ज़मीन लेता हूँ, वह प्रेम से लेता हूँ. मुझे तो ताज्जुब लगता है कि जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ लोग ज़मीन देने के लिये क्यों तैयार होते हैं. मैं समझता हूँ कि क्या यह गांधी जी की करामात है ? लोग जानते हैं कि यह गांधी का आदमी है तो प्रेम से देने को तैयार होते हैं. लेकिन इतनी ही बात नहीं है, और भी बात है. गांधी जी की करामात है, लेकिन परमेश्वर की भी करामात है. परमेश्वर की महिमा है कि इतनी सारी ज़मीन अपने हाथ में रख कर कोई ले जाने वाला नहीं है, ऐसा लोग जानते हैं. आख़िर इतनी ज़मीन को वह ख़ुद भी तो नहीं कर सकते हैं. इसी लिये इतनी ज़मीन अपने हाथ में रखने से कोई फ़ायदा नहीं है, यह बात उनके ध्यान में आ गई. इसलिये आज मैं वामनावतार हो गया और कहता हूँ कि ज़मीन दे दो. तीन क़दम दोगे तो भी बस है. लेकिन मुझे जो सौ एकड़ मिले हैं, उतने ही मेरे नहीं हैं. वह जो चार हजार एकड़ बचे हैं, वह सारे के सारे मेरे ही हैं. जैसे वामन के तीन क़दमों में सारा त्रिभुवन आ गया, वैसा यह मामला है. तो यह सारी ख़ूबी अगर ग़रीब लोग समझेंगे,

لوگ کہیں گے کہ جس کے پاس پانچ پانچ ہزار ایکڑ زمین ہوتی ہے' وہ سو ایکڑ زمین دیتا ہے تو اُس سے کیا ہوگا ؟ تو میں کہتا ہوں کہ ذرا صبر رکھو' ابھی 5 ہزار میں سے جو سو دیتا ہے' وہ پریم سے دیتا ہے تو میں لوں گا اور باقی کے چار ہزار نو سو ایکڑ بھی میرے ہی ہیں. جب یہ لوگ دیکھیں گے کہ ہم زمین دیتے جاتے ہیں غریبوں کو' اُس سے غریبوں کا پریم ہی ہم کو ملتا ہے' تو پھر وہ خود کہیں گے کہ اور بھی لے لو.

لیکن تیسرے قدم میں سب لے لینے والا ہوں

تو پھر کمیونسٹ ہم کو کہیں گے' کیسا بھولا آدمی ہے ! لیکن اُن کو میں کہونگا کہ بھولا میں نہیں ہوں' میرا دھندا میں جانتا ہوں. ایک دفعہ تھوڑی بھاونا' تھوڑا واتاورن ہونے دو کہ زمین غریبوں کو دینے میں فائدہ ہے؛ پھر ایک دفعہ واتاورن تیار ہو جائیگا تو قانون میں کرالوں گا. پھر راہ نہیں دیکھنے والا کہ آج سو ایکڑ ہیں' پانچ سال کے بعد اور 100 ایکڑ ملے گی' اور پھر پانچ سال کے بعد باقی 100 ایکڑ ملے گی. ایسے چار ہزار ملنے میں تو سو برس چلے جائیں گے. بات ایسی ہے کہ ہوا بدل جانی چاہئے اور ہوا بدل جاتی ہے تو قانون اُس کے ساتھ آتا ہی ہے. لیکن میں واتاورن تیار کروں تو قانون کو لوگ پسند کریں گے. باپ ایسا ہی تو کرتا ہے. بچے کو مٹھائی کھلاتا ہے' لیکن مٹھائی دیتا ہے تو وہ پریم سے دیتا ہے اور طمانچہ لگاتا ہے تو پریم سے لگاتا ہے. اور جو کوئی لوٹنے کے لئے آتے ہیں' وہ بچے کو مٹھائی کھلاتے تو ہیں' پر وہ پریم کی مٹھائی نہیں ہوتی. لیکن ماتا جو طمانچہ لگاتی ہے' وہ پریم کا ہوتا ہے. میں تو زمین لیتا ہوں' وہ پریم سے لیتا ہوں. مجھے تو تعجب لگتا ہے کہ جہاں میں جاتا ہوں' وہاں لوگ زمین دینے کے لئے کیوں تیار ہوتے ہیں. میں سمجھتا ہوں کہ کیا یہ گاندھی جی کی کرامات ہے؟ لوگ جانتے ہیں کہ یہ گاندھی کا آدمی ہے تو پریم سے دینے کو تیار ہوتے ہیں. لیکن اتنی ہی بات نہیں ہے' اور بھی بات ہے. گاندھی جی کی کرامات ہے' لیکن پرمیشور کی بھی کرامات ہے. پرمیشور کی مہما ہے کہ اتنی ساری زمین اپنے ہاتھ میں رکھ کر کوئی لے جانے والا نہیں ہے' ایسا لوگ جانتے ہیں. آخر اتنی زمین کو وہ خود بھی تو نہیں کر سکتے ہیں. اسی لئے اتنی زمین اپنے ہاتھ میں رکھنے سے کوئی فائدہ نہیں ہے' یہ بات اُن کے دھیان میں آگئی. اس لئے آج میں وامن اوتار ہو گیا اور کہتا ہوں کہ زمین دے دو. تین قدم دوگے تو بھی بس ہے. لیکن مجھے جو سو ایکڑ ملے ہیں' اُتنے ہی میرے نہیں ہیں. وہ جو چار ہزار ایکڑ بچے ہیں' وہ سارے کے سارے میرے ہی ہیں. جیسے وامن کے تین قدموں میں سارا تربھون آگیا' ویسا یہ معاملہ ہے. تو یہ ساری خوبی اگر غریب لوگ سمجھیں گے'

जो जिस्म है, वह मेरा रूप नहीं है, मैं तो भगवान की चमक हूँ और यह एक चोला पहना है, तो वह भी निडर हो सकता है. अगर वह यह समझे कि हम तो भगवान की चमक हैं और यह शरीर ऊपर ऊपर का हमारा एक कपड़ा है, हम भगवान के प्रकाश भर ही हैं, तो हिम्मत आ जायगी. लोग मानते हैं कि हाथ में बंदूक आएगी तो हिम्मत आती है, लेकिन यह बिलकुल ग़लत ख़याल है.

मेरा और उनका तरीक़ा

यही देखो न कि कम्युनिस्टों ने विचार किया कि ग़रीब लोगों की सेवा करें. उनका विचार तो अच्छा है, लेकिन उन्होंने जो तरीक़ा अख़्तियार किया है, उससे किसानों का कोई लाभ नहीं हो रहा है, बल्कि किसान डर गए हैं. गांधी जी हम लोगों में आए और उन्होंने हम को हिम्मत दी. वह आप लोगों ने देखा. अंगरेज़ों ने हमारे हाथ से हथियार छीन लिये थे तो गांधी जी ने कहा कि हमें हथियार की कोई दरकार नहीं. और सत्याग्रह की लड़ाई में जहाँ तक लोगों ने देखा, औरतें जो कभी घर से बाहर नहीं निकली थीं, उन्होंने भी अपनी जान ख़तरे में डाली और हिन्दुस्तान ने ऐसा कमाल देखा कि हज़ारों स्त्रियाँ बाहर आ गईं. मतलब उसका यह हुआ कि औज़ारों की ताक़त कोई ताक़त नहीं है, आत्मा की ताक़त ही सच्ची ताक़त है. लेकिन कम्युनिस्टों का अभी तक आत्मा की ताक़त पर विश्वास नहीं बैठा, वह औज़ारों पर ही भरोसा रखे हुए हैं. अगर वह औज़ारों पर भरोसा रखते हैं तो वे देखेंगे कि हिन्दुस्तान के लोग उनके बारे में कोई हमदर्दी नहीं रखते. लेकिन अगर वे हथियारों का विश्वास छोड़ दें और आत्म-शक्ति पर विश्वास रखें तो वे देखेंगे कि मैं भी उनके साथ में दाख़िल होता हूँ. फिर मैं कहूँगा कि मैं भी एक कम्युनिस्ट हूँ और तुम भी कम्युनिस्ट हो तो दोनों मिल कर हिन्दुस्तान की सेवा करेंगे. लेकिन उन लोगों का तरीक़ा अभी तक यह रहा कि वे एक-एक गाँव में फूट डालते हैं और मेरा तरीक़ा यह होगा कि सारे गाँव को मैं एक बनाऊँगा. वह एक ही गाँव में एक घर वाले को दूसरे घर वाले के साथ लड़ाएँगे, मैं सब गाँव वालों को एक करूँगा.

वामनावतार का पहला क़दम

अभी देखिये न कि मैं एक छोटे गाँव से हो आया, उस गाँव को लूट कर आया हूँ. उस गाँव में 50 एकड़ ज़मीन एक मालदार भाई से ग़रीबों को दिलवाई. उसके पहले भी 8 गाँवों में इसी तरह 100 एकड़, 75 एकड़ ज़मीन लोगों से ली और ग़रीबों को दिलवाई. आज आपके गाँव को भी कुछ लूटने वाला हूँ. लेकिन यह कम्युनिस्ट

جو جسم ہے' وہ میرا روپ نہیں ہے' میں تو بھگوان کی چمک ہوں اور یہ ایک چولا پہنا ہے' تو وہ بھی نڈر ہوسکتا ہے . اگر وہ یہ سمجھے کہ ہم تو بھگوان کی چمک ہیں اور یہ شریر اوپر اوپر کا ہمارا ایک کپڑا ہے' ہم بھگوان کے پرکاش بھر ہی ہیں' تو ہمت آجائے گی . لوگ مانتے ہیں کہ ہاتھ میں بندوق آئے گی تو ہمت آتی ہے' لیکن یہ بالکل غلط خیال ہے .

میرا اور اُن کا طریقہ

یہی دیکھو نہ کہ کمیونسٹوں نے وچار کیا کہ غریب لوگوں کی سیوا کریں . اُن کا وچار تو اچھا ہے' لیکن اُنہوں نے جو طریقہ اختیار کیا ہے' اُس سے کسانوں کا کوئی لابھ نہیں ہو رہا ہے' بلکہ کسان ڈر گئے ہیں . گاندھی جی ہم لوگوں میں آئے اور اُنہوں نے ہمکو ہمت دی. وہ آپ لوگوں نے دیکھا . انگریزوں نے ہمارے ہاتھ سے ہتھیار چھین لئے تھے تو گاندھی جی نے کہا کہ ہمیں ہتھیار کی کوئی درکار نہیں . اور ستیا گرہ کی لڑائی میں جہاں تک لوگوں نے دیکھا' عورتیں جو کبھی گھر سے باہر نہیں نکلی تھیں' اُنہوں نے بھی اپنی جان خطرے میں ڈالی او ہندستان نےایسا کمال دیکھا کہ ہزاروں استریاں باہر آگئیں. مطلب اُس کا یہ ہوا کہ اوزاروں کی طاقت کوئی طاقت نہیں ہے' آتما کی طاقت ہی سچی طاقت ہے لیکن کمیونسٹوں کا ابھی تک آتما کی طاقت پر وشواس نہیں بیٹھا' وہ اوزاروں پر ہی بھروسہ رکھے ہوئے ہیں . اگر وہ اوزاروں پر بھروسہ رکھتے ہیں تو وہ دیکھیں گے کہ ہندستان کے لوگ اُن کے بارے میں کوئی ہمدردی نہیں رکھتے . لیکن اگر وہ ہتھیاروں کا وشواس چھوڑ دیں اور آتم شکتی پر وشواس رکھیں تو وہ دیکھینگے کہ میں بھی اُن کے ساتھ میں داخل ہوتا ہوں . پھر میں کہونگا کہ میں بھی ایک کمیونسٹ ہوں اور تم بھی کمیونسٹ ہو تو دونوں ملکر ہندستان کی سیوا کرینگے . لیکن اُن لوگوں کا طریقہ ابھی تک یہ رہا کہ وہ ایک ایک گاؤں میں پھوٹ ڈالتے ہیں اور میرا طریقہ یہ ہوگا کہ سارے گاؤں کو میں ایک بناؤں گا . وہ ایک ہی گاؤں میں ایک گھر والے کو دوسرے گھر والے کے ساتھ لڑائینگے' میں سب گاؤں والوں کو ایک کرونگا .

وامن اوتار کا پہلا قدم

ابھی دیکھئے نہ کہ میں ایک چھوٹے گاؤں سے ہو آیا' اُس گاؤں کو لوٹ کر آیا ہوں . اُس گاؤں میں 50 ایکڑ زمین ایک مالدار بھائی سے غریبوں کو دلوائی . اُسکے پہلے بھی 8 گاؤں میں اسی طرح 100 ایکڑ' 75 ایکڑ زمین لوگوں سے لی اور غریبوں کو دلوائی . آج آپ کے گاؤں کو بھی کچھ لوٹنے والا ہوں . لیکن یہ کمیونسٹ

उन्हें खाना खिलाते हैं तो पुलिस हमें डराती है. अगर हम कम्युनिस्टों को खाना नहीं खिलाते हैं तो वह मार डालने का डर बताते हैं. इस तरह रात में कम्युनिस्टों से तकलीफ़ होती है, दिन में पुलिस वालों से. ऐसी सूरत में हमें क्या करना चाहिये ?

निडरता की ताक़त पैदा कीजिये

हमने कहा कि आप लोगों को निडर बनाने के लिये ही मैं आया हूँ. अगर कोई जबरदस्ती से आपके घर में घुस कर खाना मांगता है तो उसको खिलाने की जिम्मेवारी आप पर नहीं है. उन्होंने कहा कि जिम्मेवारी तो हम पर नहीं है, लेकिन वह हम को मार डालेंगे तो हम क्या करेंगे ? मैंने उनको समझाया कि परमेश्वर ने जिसका मरना आज लिख रखा है, उसका मरना कभी टलने वाला नहीं है. और अगर उसने हमारा मरना आज नहीं लिखा है तो कोई कम्युनिस्ट हम को मार सकने वाले नहीं. तो आप लोगों को मरने का डर छोड़ना चाहिये. जो लोग मरने से डरते हैं, वह जिन्दा नहीं हैं, लेकिन मर चुके हैं. आप समझते हैं कि हम में से कोई यहाँ रहने वाला नहीं है, सारे के सारे जाने वाले हैं. जब परमेश्वर का बुलावा आता है तो हरेक को जाना ही पड़ता है. इसलिये कोई बंदूक़ ले के हमारे सामने आएगा तो उसके सामने छाती खुली करने की हिम्मत हम में होनी चाहिये. वह अगर मारने के लिये आएगा और अगर वह भी हमारा भाई होगा तो उस पर मन में दया होनी चाहिये और उसके सामने शांति से खड़े हो जाना चाहिये और कहना चाहिये कि भाई, जबरदस्ती से कोई चीज़ मांगते हो तो हम देने वाले नहीं हैं, हम को क़त्ल करके जो लेना है, वह ले जाओ. जब हम लोग इस दुनिया को छोड़ कर जाते हैं तो यहाँ का सारा सरंजाम साथ ले कर नहीं जाते हैं. यह जो निडरता की ताक़त है, खूनी लोगों का सामना करने की ताक़त है, वह ताक़त हम लोगों में होनी चाहिये.

हिम्मत बंदूक़ में नहीं होती !

आज एक भाई ने कहा कि 'आँध्र में काकतीय हकूमत थी उसके बाद 700, 800 साल हुए, इस जमीन में कोई बहादुर इनसान ही पैदा नहीं हुआ.' लेकिन किसानों में से कितने ही ऐसे पैदा हुए होंगे, जिन्होंने मुसीबतों का सामना किया होगा. उनका इतिहास लिखने वाला थोड़े ही कोई मिला है ? इससे हम को नाउम्मीद नहीं होना चाहिये, बल्कि किसान को अपनी ताक़त क्या है, उसका अन्दाज़ होना चाहिये. आपने प्रह्लाद का चरित्र सुना है. वह छोटा-सा बच्चा था, लेकिन उसने हिरन्यकश्यप का सामना किया. इतना एक छोटा-सा बच्चा भी अगर यह समझे कि वह

انہیں کھانا کھلاتے ہیں تو پولیس ہمیں ڈراتی ہے۔ اگر ہم کمیونسٹوں کو کھانا نہیں کھلاتے ہیں تو وہ مار ڈالنے کا ڈر بتاتے ہیں۔ اِس طرح رات میں کمیونسٹوں سے تکلیف ہوتی ہے، دن میں پولیس والوں سے۔ ایسی صورت میں ہمیں کیا کرنا چاہئیے ؟

نڈرتا کی طاقت پیدا کیجئے

ہم نے کہا کہ آپ لوگوں کو نڈر بنانے کے لئے ہی میں آیا ہوں۔ اگر کوئی زبردستی سے آپ کے گھر میں گھس کر کھانا مانگتا ہے تو اُس کو کھلانے کی ذمہ واری آپ پر نہیں ہے۔ اُنہوں نے کہا کہ ذمہ واری تو ہم پر نہیں ہے، لیکن وہ ہم کو مار ڈالیں گے تو ہم کیا کریںگے ؟ میں نے اُن کو سمجھایا کہ پرمیشور نے جس کا مرنا آج لکھ رکھا ہے، اُس کا مرنا کبھی ٹلنے والا نہیں ہے۔ اور اگر اُس نے ہمارا مرنا آج نہیں لکھا ہے تو کوئی کمیونسٹ ہم کو مار سکنے والے نہیں۔ تو آپ لوگوں کو مرنے کا ڈر چھوڑنا چاہئیے۔ جو لوگ مرنے سے ڈرتے ہیں، وہ زندہ نہیں ہیں، لیکن مر چکے ہیں۔ آپ سمجھتے ہیں کہ ہم میں سے کوئی یہاں رہنے والا نہیں ہے، سارے کے سارے جانے والے ہیں۔ جب پرمیشور کا بلاوا آتا ہے تو ہر ایک کو جانا ہی پڑتا ہے۔ اِس لئے کوئی بندوق لے کے ہمارے سامنے آئیگا تو اُسکے سامنے چھاتی کھلی کرنے کی ہمت ہم میں ہونی چاہئیے۔ وہ اگر مارنے کے لئے آئیگا اور اگر وہ بھی ہمارا بھائی ہوگا تو اُس پر من میں دیا ہونی چاہئیے اور اُسکے سامنے شانتی سے کھڑے ہوجانا چاہئیے اور کہنا چاہئیے کہ بھائی، زبردستی سے کوئی چیز مانگتے ہو تو ہم دینے والے نہیں ہیں، ہم کو قتل کرکے جو لینا ہے، وہ لے جاؤ۔ جب ہم لوگ اِس دنیا کو چھوڑ کر جاتے ہیں تو یہاں کا سارا سر انجام ساتھ لے کر نہیں جاتے ہیں۔ یہ جو نڈرتا کی طاقت ہے، خونی لوگوں کا سامنا کرنے کی طاقت ہے، وہ طاقت ہم لوگوں میں ہونی چاہئیے۔

ہمت بندوق میں نہیں ہوتی !

آج ایک بھائی نے کہا کہ 'آندھر میں کاکتیہ حکومت تھی اُسکے بعد 700'800 سال ہوئے، اِس زمین میں کوئی بہادر انسان ہی پیدا نہیں ہوا۔' لیکن کسانوں میں سے کتنے ہی ایسے پیدا ہوئے ہونگے، جنہوں نے مصیبتوں کا سامنا کیا ہوگا۔ اُن کا اتہاس لکھنے والا تھوڑے ہی کوئی ملا ہے؟ اس سے ہم کو نا اُمید نہیں ہونا چاہئیے، بلکہ کسان کو اپنی طاقت کیا ہے، اس کا اندازہ ہونا چاہئیے۔ آپ نے پرہلاد کا چرتر سنا ہے۔ وہ چھوٹا سا بچہ تھا، لیکن اُس نے ہرنیہ کشیپ کا سامنا کیا۔ اتنا ایک چھوٹا سا بچہ بھی اگر یہ سمجھے کہ یہ

माने हुए नेता और सारे राष्ट्र के प्यारे तो हैं ही. हुकूमत करने वाली पारटी और साथ ही उसकी विरोधी पारटी दोनों का नेता होने की अनोखी इज्जत उन्हें हासिल है, या हालत को दूसरी निगाह से देखते हुए इसे उनकी बड़ी कमनसीबी भी कहा जा सकता है. केवल तमाशबीन को यह हालत कितनी ही मजेदार क्यों न मालूम हो, लेकिन हम लोगों के लिये तो—जिनकी तक़दीर इन नेताओं के साथ जुड़ी हुई है—यह उतनी ही बड़ी दर्दनाक और तकलीफ़ देह है, जितनी कि अयोध्या की जनता के लिये दशरथ के दरबार में चलनेवाली कैकई की साजिशें थीं.

क्या इस दर्दनाक चीज से बचा नहीं जा सकता? खुदी को मिटाने और सीधी तरह सोचने से बिगड़ी हुई हालत को सुधारा जा सकता है. भगवान हम में से हर एक को यह ताक़त दे.

—कि० घ० मशरूवाला

مانے ہوئے نیتا اور سارے راشٹر کے پیارے تو ہیں ہی. حکومت کرنے والی پارٹی اور ساتھ ہی اُسکی وِرودھی پارٹی دونوں کا نیتا ہونے کی انوکھی عزت اُنہیں حاصل ہے' یا حالت کو دوسری نگاہ سے دیکھتے ہوئے اِسے اُن کی بڑی کم نصیبی بھی کہا جاسکتا ہے. کیول تماشبین کو یہ حالت کتنی ہی مزےدار کیوں نہ معلوم ہو' لیکن ہم لوگوں کے لئے تو— جن کی تقدیر ان نیتاؤں کے ساتھ جڑی ہوئی ہے— یہ اتنی ہی بڑی دردناک اور تکلیف دہ ہے' جتنی کہ ایودھیا کی جنتا کے لئے دشرتھ کے دربار میں چلنے والی کیکئی کی سازشیں تھیں.

کیا اِس دردناک چیز سے بچا نہیں جاسکتا؟ خودی کو مٹانے اور سیدھی طرح سوچنے سے بگڑی ہوئی حالت کو سدھارا جاسکتا ہے. بھگوان ہم میں سے ہر ایک کو یہ طاقت دے.

—ک. گھ. مشروواﻻ

'सर्वोदय' से

कम्युनिस्ट जो काम चाहते हैं, वही मैं कर रहा हूँ !

भाइयो और बहनो,

आज मैं आपके गाँव में आया और मैंने सुना कि कल पुलिस आपके यहाँ से चार लोगों को गिरफ़्तार करके ले गई है. मैं सुनता हूँ कि जिन लोगों को पकड़ा है, उनके बारे में यह शंका है कि उन लोगों ने कम्युनिस्टों को कुछ मदद पहुँचाई. पुलिस को इस तरह शंका आई और इन लोगों को वह ले गए, इससे हमको डरना नहीं चाहिये. पुलिस वाले अपना काम करते हैं. आप लोगों को यह ध्यान में रखना चाहिये कि पुलिस आपकी मदद के लिये है, आपको तकलीफ़ देने के लिये नहीं. जो लोग गिरफ़्तार हुए हैं, उन लोगों ने कम्युनिस्टों को मदद दी होगी तो कम्युनिस्टों के डर से दी होगी या उनके साथ हमदर्दी रखने के कारन दी होगी. यह कोई न समझे कि यह लोग जो पकड़े गए हैं, सारे के सारे गुनहगार होंगे. वह अगर बिना डर के जो कुछ हुआ है, पुलिस वालों को सुनाएँगे तो मैं उम्मीद करता हूँ कि उन्हें भी कोई तकलीफ़ नहीं होगी.

दोनों तरफ़ डर

आज एक नौजवान हम से मिलने आए थे. उन्होंने एक सवाल पूछा कि कम्युनिस्ट आते हैं, हमको धमकाते हैं. हम

'سروودے' سے

کمیونسٹ جو کام چاہتے ہیں' وہی میں کر رہا ہوں !

بھائیو اور بہنو'

آج میں آپ کے گاؤں میں آیا اور میں نے سنا کہ کل پولیس آپ کے یہاں سے چار لوگوں کو گرفتار کر کے لے گئی ہے. میں سنتا ہوں کہ جن لوگوں کو پکڑا ہے' اُن کے بارے میں یہ شنکا ہے کہ اُن لوگوں نے کمیونسٹوں کو کچھ مدد پہونچائی. پولیس کو اس طرح شنکا آئی اور اِن لوگوں کو وہ لے گئے' اِس سے ہم کو ڈرنا نہیں چاہئے. پولیس والے اپنا کام کرتے ہیں. آپ لوگوں کو یہ دھیان میں رکھنا چاہئے کہ پولیس آپ کی مدد کے لئے ہے' آپ کو تکلیف دینے کے لئے نہیں. جو لوگ گرفتار ہوئے ہیں' اُن لوگوں نے کمیونسٹوں کو مدد دی ہوگی تو کمیونسٹوں کے ڈر سے دی ہوگی یا اُن کے ساتھ ہمدردی رکھنے کے کارن دی ہوگی. یہ کوئی نہ سمجھیں کہ یہ لوگ جو پکڑے گئے ہیں' سارے کے سارے گنہگار ہونگے. وہ اگر بنا ڈر کے جو کچھ ہوا ہے' پولیس والوں کو سنائیں گے تو میں اُمید کرتا ہوں کہ اُنہیں بھی کوئی تکلیف نہیں ہوگی.

دونوں طرف ڈر

آج ایک نوجوان ہم سے ملنے آئے تھے. اُنہوں نے ایک سوال پوچھا کہ کمیونسٹ آتے ہیں' ہم کو دھمکاتے ہیں. ہم

एक दर्दनाक चीज

हमारे नेताओं और अखबारों ने यह जाहिर किया है कि कुल हिन्द कांगरेस कमेटी की बंगलोर बैठक को कांगरेस के भीतर एकता पैदा करने में बहुत बड़ी सफलता मिली है. लेकिन बैठक मुशकिल से पूरी हो पाई थी कि श्री क़िद्‌वाई और श्री जैन के बयानों और स्तीफ़ों ने यह साफ़ बता दिया कि हालत पहले ही जैसी बिगड़ी हुई है— उसमें रत्ती भर सुधार नहीं हुआ है. हर एक कांगरेसी अख़बार ने श्री क़िद्‌वाई के स्तीफ़े को राहत देने वाली मुक्ति मानकर उसका खुला स्वागत किया है. लेकिन अब कांगरेस को उस पेचीदगी का सामना करना पड़ रहा है, जिस के लिये श्री नेहरू ज़िम्मेदार हैं. और वह यह कि उन्होंने श्री क़िद्‌वाई और श्री जैन को अपने केन्द्री मंत्रिमंडल में बनाए रखा है बावजूद इस बात के कि वह दोनों प्रजा पारटी के नेता हैं और उस कांगरेस के कट्टर विरोधी हैं जिस के सदर श्री टंडन जी हैं.

हम जनता के लोगों के लिये, जिन्हें कांगरेस के भीतरी मतभेदों और फूट का बहुत कम ज्ञान है, सच्चे गुन-दोशों के आधार पर इन सारे कामों की क़ीमत आंकना मुश्किल है. जनता तो अख़बारों में जो कुछ छपता है, उसी से फ़ैसला कर सकती है. और जो घटनायें घट रही हैं, उन्हें वह कांगरेस के भीतर पैठी हुई सड़ांध के बदसे बदतर होने की निशानी ही मान सकती है. जनता इस नतीजे पर आए बिना भी नहीं रह सकती कि यह सड़ांध ऊपर से नीचे तक सारे संगठन में फैली हुई है. नई दिल्ली और सूबों की सरकारों में बहुत ही महत्व वाले महकमों की ज़िम्मेदारी संभालने वाले अनेकों मिनिस्टर अपने समय, अक़्ल और ताक़त का काफ़ी बड़ा हिस्सा मिनिस्टरों के नाते अपना फ़र्ज़ पूरा करने में नहीं, बल्कि इन गन्दे दाँव पेंचों और चाल-बाज़ियों में ही ख़र्च करते होंगे. क्या जनता यह समझे कि जनहित राज या वैलफ़ेयर स्टेट इन साज़िशों और शड्यंत्रों की कटीली घनी झाड़ियों के जंगल में से पैदा होगी ?

श्री जवाहर लाल नेहरू दो रानी वाले उस नामी राजा की तरह मालूम होते हैं— जिसकी बड़ी रानी पटरानी होने पर भी राजा की कृपापात्र नहीं है और छोटी कोई ख़ास हक़ न रखते हुए भी राजा की कृपापात्र है. प्रजा पारटी के नेता श्री क़िद्‌वाई भी यह ज़ाहिर करते हैं कि नेहरू जी मेरे नेता और प्यारे दोस्त हैं. और, बेशक नेहरू जी कांगरेस के

ایک دردناک چیز

ہمارے نیتاؤں اور اخباروں نے یہ ظاہر کیا ہے کہ کل ہند کانگریس کمیٹی کی بنگلور بیٹھک کو کانگریس کے بھیتر ایکتا پیدا کرنے میں بہت بڑی سپھلتا ملی ہے. لیکن بیٹھک مشکل سے پوری ہو پائی تھی کہ شری قدوائی اور شری جین کے بیانوں اور استعفوں نے یہ صاف بتادیا کہ حالت پہلے ہی جیسی بگڑی ہوئی ہے— اس میں رتی بھر سدھار نہیں ہوا ہے. ہر ایک کانگریسی اخبار نے شری قدوائی کے استعفے کو راحت دینے والی مکتی مان کر اسکا کھلا سواگت کیا ہے. لیکن اب کانگریس کو اس پیچیدگی کا سامنا کرنا پڑرہا ہے' جس کے لئے شری نہرو ذمہ دار ہیں. اور وہ یہ کہ انہوں نے شری قدوائی اور شری جین کو اپنے کیندری منتری منڈل میں بنائے رکھا ہے باوجود اس بات کے کہ وہ دونوں پرجا پارٹی کے نیتا ہیں اور اس کانگریس کے کٹر ورودھی ہیں جسکے صدر شری ٹنڈن جی ہیں.

ہم جنتا کے لوگوں کے لئے جنہیں کانگریس کے بھیتری مت بھیدوں اور پھوٹ کا بہت کم گیان ہے' سچے گن دوشوں کے آدھار پر ان سارے کاموں کی قیمت آنکنا مشکل ہے. جنتا تو اخباروں میں جو کچھ چھپتا ہے' اسی سے فیصلہ کرسکتی ہے. اور جو گھٹنائیں گھٹ رہی ہیں' انہیں وہ کانگریس کے بھیتر پیٹھی ہوئی سڑاندھ کے بد سے بدتر ہونے کی نشانی ہی مان سکتی ہے. جنتا اس نتیجے پر آئے بنا بھی نہیں رہ سکتی کہ یہ سڑاندھ اوپر سے نیچے تک سارے سنگٹھن میں پھیلی ہوئی ہے. نئی دلی اور صوبوں کی سرکاروں میں بہت ہی مہتو والے محکموں کی ذمہ داری سنبھالنے والے انیکوں منسٹر اپنے سمے' عقل اور طاقت کا کافی بڑا حصہ منسٹروں کے ناتے اپنا فرض پورا کرنے میں نہیں' بلکہ ان گندے داؤں پیچوں اور چالبازیوں میں ہی خرچ کرتے ہونگے. کیا جنتا یہ سمجھے کہ جن ہت راج یا ویلفیر اسٹیٹ ان سازشوں اور شڈینتروں کی کٹیلی گھنی جھاڑیوں کے جنگل میں سے پیدا ہوگی ؟

شری جواہرلال نہرو دو رانی والے اس نامی راجہ کی طرح معلوم ہوتے ہیں— جسکی بڑی رانی پٹ رانی ہونے پر بھی راجہ کی کرپا پاتر نہیں ہے اور چھوٹی کوئی خاص حق نہ رکھتے ہوئے بھی راجہ کی کرپا پاتر ہے. پرجا پارٹی کے نیتا شری قدوائی بھی یہ ظاہر کرتے ہیں کہ نہرو جی میرے نیتا اور پیارے دوست ہیں. اور' بے شک نہرو جی کانگریس کے

दी जाय जिस से तरी भी मिलती रहे. साथ ही साथ यह भी मानी हुई बात है कि कोका-कोला के फैलने से हमारे देश का काफ़ी पैसा बाहर चला जायगा जो इसके अन्दर पड़ने वाले जुदा जुदा रसों और चीज़ों के लिये चाहिये. इसकी बनावट की सब से ख़ास चीज़ें तो विदेश से ही आती हैं क्योंकि पेटेन्ट का अधिकार उन्हीं को मिला हुआ है". (मैसूर 9 अप्रैल, 1951).

ज़ाहिर है कि बाहर की पेटेन्ट शुदा चीज़ों से ठंडाइयां और शरबत अब सरकार हमें पिलाएगी और पैसा बाहर भिजवाएगी. यह सरकार की आम पालिसी है.

अब आगे हम क्या कहें ? हम बिके जा रहे हैं अपने पूंजीपतियों के हाथों में, और हम सब मिलकर बिके जारहे हैं अमरीका व ब्रिटेन के पूँजीपतियों के हाथों में ! इसी का नाम तरक़्क़ी है, इसी का नाम वह बुनयादी चीज़ है जिस पर पंडित जवाहर लाल नेहरू हम से बलिहारी हो जाने को कहते हैं. हम फिर अर्ज़ करेंगे कि साइन्स की इन तदबीरों की हमारे देश में इस वक़्त इस तरह के इस्तेमाल की बात हमारी समझ में नहीं आती. कई बार सारी रिपोर्ट हमने इधर से उधर तक ग़ौर के साथ देखली, हर दफ़ा पंडित जवाहर लाल नेहरू का सिर्फ़ एक जुमला हमारे दिमाग़ में उतर आता है—"जनता की तरफ़ से बेरुख़ी दर असल बढ़ी है," ख़ूब बढ़ी है, बढ़ रही है.

यह बेरुख़ी ही एक सच्चाई है. यही पंडित जवाहर लाल की रिपोर्ट का निचोड़ है. यही आज़ाद हिन्दुस्तान की ख़ुद-मुख़्तार सरकार के कारनामों का एक सर्टीफ़िकेट है, यही देश की सब से बड़ी घटना है, सबसे दर्द भरी घटना है, सबसे ख़तरनाक घटना है.

—सुरेश रामभाई

دی جائے جن سے تری بھی ملتی رہے . ساتھ ہی ساتھ یہ بھی مانی ہوئی بات ہے کہ کوکا کولا کے پھیلنے سے ہمارے دیش کا کافی پیسہ باہر چلا جائے گا جو اسکے اندر پڑنے والے جدا جدا رسوں اور چیزوں کے لئے چاہئے . اسکی بناوٹ کی سب سے خاص چیزیں تو ودیش سے ہی آتی ہیں کیونکہ پیٹنٹ کا ادھیکار اُنہیں کو ملا ہوا ہے .' (میسور 9 اپریل' 1951)

ظاہر ہے کہ باہر کی پیٹنٹ شدہ چیزوں سے ٹھنڈائیاں اور شربت اب سرکار ہمیں پلائے گی اور پیسہ باہر بھجوائے گی. یہ سرکار کی عام پالیسی ہے .

اب آگے ہم کیا کہیں؟ ہم بکے جا رہے ہیں اپنے پونجی پتیوں کے ہاتھوں میں' اور ہم سب ملکر بکے جا رہے ہیں امریکہ و برٹین کے پونجی پتیوں کے ہاتھوں میں! اسی کا نام ترقی ہے' اسی کا نام وہ بنیادی چیز ہے جس پر پنڈت جواہر لال نہرو ہم سے بلیہاری ہوجانے کو کہتے ہیں . ہم پھر عرض کریں گے کہ سائنس کی ان تدبیروں کی ہمارے دیش میں اس وقت اِس طرح کے استعمال کی بات ہماری سمجھ میں نہیں آتی . کئی بار ساری رپورٹ ہم نے اِدھر سے اُدھر تک غور کے ساتھ دیکھ لی' ہر دفعہ پنڈت جواہر لال نہرو کا صرف ایک جملہ ہمارے دماغ میں اُتر آتا ہے — "جنتا کی طرف سے بے رخی دراصل بڑھی ہے' " خوب بڑھی ہے' بڑھ رہی ہے .

یہ بے رخی ہی ایک سچائی ہے . یہی پنڈت جواہر لال کی رپورٹ کا نچوڑ ہے . یہی آزاد ہندستان کی خود مختار سرکار کے کارناموں کا ایک سرٹیفیکٹ ہے . یہی دیش کی سب سے بڑی گھٹنا ہے' سب سے درد بھری گھٹنا ہے' سب سے خطرناک گھٹنا ہے .

— سریش رام بھائی

अमन या जंग ?

"अगर दुनिया की जनता अमन क़ायम रखने और आख़ीर तक अमन की रक्षा करने का काम ख़ुद अपने हाथ में ले ले तो अमन क़ायम रहेगा और मज़बूती पकड़ेगा. लेकिन अगर जंग की बातें फैलाने वाले दुनिया की आम जनता को झूटी बातों के जाल में फंसाने, उन्हें धोका देने और एक नई बड़ी जंग में घसीट लाने में कामियाब हो गए तो मुमकिन है जंग न टल सके."

—स्टालिन

امن یا جنگ

"اگر دنیا کی جنتا امن قائم رکھنے اور آخیر تک امن کی رکشا کرنے کا کام خود اپنے ہاتھ میں لے لے تو امن قائم رہے گا اور مضبوطی پکڑے گا . لیکن اگر جنگ کی باتیں پھیلانے والے دنیا کی عام جنتا کو جھوٹی باتوں کے جال میں پھنسانے' اُنہیں دھوکا دینے اور ایک نئی بڑی جنگ میں گھسیٹ لانے میں کامیاب ہو گئے تو ممکن ہے جنگ نہ ٹل سکے ."

— اِستالن

इस वक़्त नहीं या हम उनके लायक़ नहीं. यह तो तभी होगा देंगे जब इसमें काम सीखने और सिखाने वालों के दिमाग़ के पुराने जाले साफ़ हो जायंगे. तालीम के मौजूदा ढंग से वह जाले बढ़ते हैं और इन खोज घरों से हिन्दुस्तानियों को फ़ायदा नहीं पहुँचने देते.

मिसाल के तौर पर हम रुड़की के बिल्डिंग रिसर्च इन्स्टीटयूट को लें जो रुड़की इन्जीनियरिंग यूनिवरसिटी से दस क़दम के फ़ासले पर है. यह रुड़की यूनिवरसिटी भी अभी हाल में बनी है जिसमें 180 लड़के पढ़ते हैं जिनकी ख़िदमत में 90 तो निजी नौकर हैं, चौकीदार, चपरासी, लेकचरर, प्रोफ़ेसर अलग, जिनके मां बाप उन पर दो सौ-ढाई सौ रुपया महीना ख़र्च करते हैं और जो डिग्री लेने के बाद ठेकेदारों की ख़ुशामद करते हैं कि उन्हें नौकर रख लें. मगर इस शैतानी और हैरतनाक चीज़ में आगे नहीं जाकर हम नए खुले हुए बिल्डिंग रिसर्च इन्स्टीयूट की बात करें जो हिन्दुस्तान के ग्यारह खोज घरों में से एक रतन है. वहां जाकर आप देखें तो पता चलेगा कि यह खोज की जा रही है कि देहाती आदमी सस्ते घर, मज़बूत घर कैसे बनाये—छत पर कन्क्रीट हो, ऐसबसटस हो या और कोई शेख़-चिल्ली का मसाला !

इसी तरह दक्खिन में मैसूर में फ़ूड रिसर्च इन्स्टीटयूट है. वहां यह खोज हो रही है कि हमें अच्छी और सस्ती ख़ुराक कैसे मिले. कौन नहीं जानता कि बनस्पति के मुक़ाबले घी या तेल बेहतर है, चीनी के मुक़ाबले गुड़ या शक्कर बेहतर है, डिब्बा बंद जेलियों और मुरब्बों के मुक़ाबले ताज़ी, हरी या उबली चीज़ बेहतर है—तो जहां ज़रूरत यह है कि बनस्पति, चीनी और टानिकों को तैयार करने के कारख़ाने बन्द किये जायं वहाँ इन्स्टीटयूट वाले इस बात पर मग़ज़-पच्ची करते हैं कि किस तरह ऐसी चीज़ बनाली जाय कि अनाज न मिलने पर पेट भर जाय ! काश एक रिसर्च इन्स्टीटयूट इस बात के लिये खुलता कि रूई या ऊन और कपड़ा न मिलने पर किसी कीमियागिरी से तन कैसे ढक लिया जाय. हमने कोका-कोला के बारे में इस फ़ूड घर के डायरक्टर को लिखकर पूछा कि इसमें क्या ख़ूबियाँ हैं जो सरकार इतने जोश से इसके कारख़ाने खुलने दे रही है, तो उन्होंने जवाब दिया :—

"एक साइन्सदां की हैसियत से, मुझे तो इस बात पर पूरा यक़ीन नहीं होता कि क़ुदरत में होने वाले फलों, सबज़ियों और पौधे के रसों को सड़ा कर जो हलकी नशीली चीज़ें तैयार की जाती हैं उन तक के इस्तेमाल को बन्द कर देना एक सच्ची बरकत है. लेकिन ख़ैर, अब जब यह हमारी क़ौमी पालिसी का एक हिस्सा हो गया है तब, एक तरह से, यह मुनासिब होगा कि दूसरी मामूली भड़काने वाली चीज़ों के इस्तेमाल को तरक़्क़ी

اِس وقت نہیں یا ہم اُن کے لائق نہیں. یہ تو تبھی ہوگا جب ہم میں کام سیکھنے اور سکھانے والوں کے دماغ کے پرانے جالے صاف ہوجائینگے. تعلیم کے موجودہ ڈھنگ سے وہ جالے بڑھتے ہیں اور اِن کھوج گھروں سے ہندستانیوں کو فائدہ نہیں پہونچنے دیتے.

مثال کے طور پر ہم رڑکی کے بلڈنگ ریسرچ انسٹی ٹیوٹ کو لیں جو رڑکی انجینیرنگ یونیورسٹی سے دس قدم کے فاصلے پر ہے. یہ رڑکی یونیورسٹی بھی ابھی حال میں بنی ہے جس میں 180 لڑکے پڑھتے ہیں جن کی خدمت میں 90 تو نجی نوکر ہیں، چوکیدار، چپراسی، لیکچرر، پروفیسر الگ، جن کے ماں باپ اُن پر دو سو ڈھائی سو روپیہ مہینہ خرچ کرتے ہیں اور جو ڈگری لینے کے بعد ٹھیکہ داروں کی خوشامد کرتے ہیں کہ انہیں نوکر رکھ لیں. مگر اِس شیطانی اور حیرت ناک چیز میں آگے نہیں جاکر ہم نئے کھلے ہوئے بلڈنگ ریسرچ انسٹی ٹیوٹ کی بات کریں جو ہندستان کے گیارہ کھوج گھروں میں سے ایک رتن ہے. وہاں جاکر آپ دیکھیں تو پتہ چلے گا کہ یہ کھوج کی جا رہی ہے کہ دیہاتی آدمی سستے گھر، مضبوط گھر کیسے بنائے— چھت پر کنکریٹ ہو، ایسبسٹس ہو یا اور کوئی شیخ چلی کا مسالہ!

اِسی طرح دکھن میں میسور میں فوڈ ریسرچ انسٹی-ٹیوٹ ہے. وہاں یہ کھوج ہو رہی ہے کہ ہمیں اچھی اور سستی خوراک کیسے ملے. کون نہیں جانتا کہ بنسپتی کے مقابلے گھی یا تیل بہتر ہے، چینی کے مقابلے گڑ یا شکر بہتر ہے، ڈبہ بند جیلیوں اور مربوں کے مقابلے تازی، ہری یا اُبلی چیز بہتر ہے — تو جہاں ضرورت یہ ہے کہ بنسپتی، چینی اور ٹانکوں کو تیار کرنے کے کارخانے بند کئے جائیں وہاں انسٹی ٹیوٹ والے اِس بات پر مغز پچی کرتے ہیں کہ کس طرح ایسی چیز بنالی جائے کہ اناج نہ ملنے پر پیٹ بھر جائے! کاش ایک ریسرچ انسٹی ٹیوٹ اس بات کے لئے کھلتا کہ روئی یا اون اور کپڑا نہ ملنے پر کسی کیمیاگری سے تن کیسے ڈھک لیا جائے. ہم نے کوکاکولا کے بارے میں اس فوڈ گھر کے ڈائرکٹر کو لکھکر پوچھا کہ اِس میں کیا خوبیاں ہیں جو سرکار اتنے جوش سے اسکے کارخانے کھلنے دے رہی ہے، تو اُنہوں نے جواب دیا: —

" ایک سائنسداں کی حیثیت سے، مجھے تو اس بات پر پورا یقین نہیں ہوتا کہ قدرت میں ہونے والے پھلوں، سبزیوں اور پودھے کے رسوں کو سڑا کر جو ہلکی نشیلی چیزیں تیار کی جاتی ہیں اُن تک کے استعمال کو بند کر دینا ایک سچی برکت ہے. لیکن خیر، اب جب یہ ہماری قومی پالیسی کا ایک حصہ ہوگیا ہے تب، ایک طرح سے یہ مناسب ہو گا کہ دوسری معمولی بھڑکانے والی چیزوں کے استعمال کو ترقی

अगर यूँ ही खर्चे के तखमीने बढ़ते गए तो कहँ जाकर चीज़ अटकेगी, कौन जाने !

महानदी पर जो हीरा कुन्ड डाम बनाया जा रहा है उसके सिलसिले में बम्बई के नामी हफ्तेवार "भारतज्योति" में भाई कुमार भूशन राय का एक समझदारी भरा और दिलचस्प लेख छपा है. उन्होंने बताया है कि हमारी सरकार यह चाहती है कि अमरीकी सरकार ने जिस तरह अपनी कोलोरेडो और टेनेसी नदियों को बस में कर लिया उसी तरह हम भी करलें. सरकार की स्कीम थी कि महानदी में तीन जगह पर—हीरा कुन्ड, तिरु पुर और बारज डाम बाँधकर पानी के हौज़ तैयार किये जायं. लेकिन बाद में तीन की जगह सिर्फ हीरा कुन्ड में यह कारवाई करना तय पाया और 1945 में खर्चे का तखमीना 48 करोड़ के क़रीब था जो अब और बढ़ गया है. लेकिन, जानकार लेखक का कहना है, जब कोलोरेडो जैसी छोटी नदी को क़ाबू में लाने के लिये अमरीका वालों ने 134 हौज़ बनाए तो महानदी जैसी महानदी के लिये तीन हौज़ों से क्या होने वाला है और अब तो तीन की जगह एक ही बन रहा है. यही नहीं, कोलोरेडो नदी में हौज़ों की उमर जहाँ एक हज़ार से दो हज़ार साल तक की है, महानदी वालों के लिये सरकारी अन्दाज़ा सिर्फ छ: सौ साल का है और भाई कुमार भूशन राय ने हिसाब लगा कर दिखलाया है कि यह ठीक से एक सौ साल भी नहीं होगा! फिर, जब कोलोरेडो स्कीम पर कुल खर्च तीन अरब छयालीस करोड़ चार लाख सत्तानवे हज़ार दो सौ डालर (या दस-बारह अरब रुपए यानी हज़ार-बारह सौ करोड़ रुपए के क़रीब) पड़ा तो महानदी पर कुल खर्च कितना बैठेगा और वह रुपया कहाँ से आएगा? उनका कहना है—'हमारी नदी स्कीमों पर फिर से सोचने और उनकी क़ीमत आँकने का वक़्त आ गया है. अलग अलग आदमी एक ही चीज़ को अलग अलग रोशनी में देखते हैं. इसलिये मैं उम्मीद करता हूँ कि अगर मैं साफ़ साफ़ और खुल कर अपनी राय को पेश कर दूं जो सरकारी स्कीम बनाने वालों की राय से बहुत जुदा है तो इसे उनकी शान के खिलाफ़ नहीं समझा जायगा.''

यह राय है पढ़े लिखे इन्जीनियर लोगों की ! तब फर मामूली किसान तो यही कहेगा—"बाबा, बख्शो ! हम कुआँ खोद लेंगे और जो पड़ेगी भुगत लेंगे.'' कहने की ज़रूरत नहीं कि इन योजनाओं का कितना पैसा काम में न आकर गलत तरह से ज़ाया हो जाता है और हिसाब किताब के मामले में जो बेतरतीबी रही है उसीक चर्चा तो पार्लिमेन्ट में भी आ चुकी है.

विज्ञान के खोज घरों के बारे में हमारी वही हालत है जो दूध के जले की होती है. माना कि यह अच्छी चीज़ है, सभ्यता के घर हैं—लेकिन हमारे लायक नहीं, कम से कम

اگر یوں ہی خرچ کے تخمینے بڑھتے گئے تو کہاں جاکر چیز اٹکیگی کون جانے !

مہاندی پر جو ہیرا کنڈ ڈام بنایا جا رہا ہے اسکے سلسلے میں بمبئی کے نامی ہفتے وار "بھارت جیوتی" میں بھائی کمار بھوشن رائے کا ایک سمجھداری بھرا اور دلچسپ لیکھ چھپا ہے. انہوں نے بتایا ہے کہ ہماری سرکار یہ چاہتی ہے کہ امریکی سرکار نے جس طرح اپنی کولوریڈو اور ٹینیسی ندیوں کو بس میں کر لیا اسی طرح ہم بھی کر لیں. سرکار کی اسکیم تھی کہ مہاندی میں تین جگہ پر — ہیرا کنڈ، تیرو پور اور بارج ڈام باندھ کر پانی کے حوض تیار کئے جائیں. لیکن بعد میں تین کی جگہ صرف ہیرا کنڈ میں یہ کاروائی کرنا طے پایا اور 1945 میں خرچے کا تخمینہ 48 کروڑ کے قریب تھا جو اب اور بڑھ گیا ہے. لیکن، جانکار لیکھک کا کہنا ہے، جب کولوریڈو جیسی چھوٹی ندی کو قابو میں لانے کے لئے امریکہ والوں نے 134 حوض بنائے تو مہاندی جیسی مہاندی کے لئے تین حوضوں سے کیا ہونے والا ہے اور اب تو تین کی جگہ ایک ہی بن رہا ہے. یہی نہیں، کولوریڈو ندی میں حوضوں کی عمر جہاں ایک ہزار سے دو ہزار سال تک کی ہے، مہاندی والوں کے لئے سرکاری اندازہ صرف چھ سو سال کا ہے اور بھائی کمار بھوشن رائے نے حساب لگا کر دکھلایا ہے کہ یہ ٹھیک سے ایک سو سال بھی نہیں ہوگا! پھر، جب کولوریڈو اسکیم پر کل خرچ تین ارب چھیالیس کروڑ چار لاکھ ستانوے ہزار دو سو ڈالر (یا دس بارہ ارب روپے یعنی ہزار بارہ سو کروڑ روپے کے قریب) پڑا تو مہاندی پر کل خرچ کتنا بیٹھیگا اور وہ روپیہ کہاں سے آئیگا؟ اُن کا کہنا ہے — "ہماری ندی اسکیموں پر پھر سے سوچنے اور اُن کی قیمت آنکنے کا وقت آگیا ہے. الگ الگ آدمی ایک ہی چیز کو الگ الگ روشنی میں دیکھتے ہیں. اسلئے میں اُمید کرتا ہوں کہ اگر میں صاف صاف اور کھل کر اپنی رائے کو پیش کر دوں جو سرکاری اسکیم بنانے والوں کی رائے سے بہت جدا ہے تو اسے اُن کی شان کے خلاف نہیں سمجھا جائے گا."

یہ رائے ہے پڑھے لکھے انجینیر لوگوں کی ! تب پھر معمولی کسان تو یہی کہیگا — "بابا، بخشو ! ہم کنواں کھود لینگے اور جو پڑیگی بھگت لینگے." کہنے کی ضرورت نہیں کہ ان یوجناؤں کا کتنا پیسہ کام میں نہ آکر غلط طرح سے ضائع ہوجاتا ہے اور حساب کتاب کے معاملے میں جو بے ترتیبی رہی ہے اُس کی چرچا تو پارلیمنٹ میں بھی آچکی ہے.

وگیان کے کھوج گھروں کے بارے میں ہماری وہی حالت ہے جو دودھ کے جلے کی ہوتی ہے. مانا کہ یہ اچھی چیز ہے، سبھیتا کے گھر ہیں — لیکن ہمارے لائق نہیں، کم سے کم

हमारी बातें ग़लत साबित हों. लेकिन पूत के पच्छन पालने में जैसे दीखते हैं उससे ही हम उसके आगे का अन्दाज़ा लगा सकते हैं.

प्लानिंग कमीशन ने हाल में ही एक पंच-साला स्कीम मुल्क के आगे रखी है और बताया है कि किस काम में कितना रुपया ख़र्च करें तो पांच साल में हम अपने देश को क्या बना लेंगे. प्लानिंग कमीशन की रिपोर्ट को हम अच्छी तरह समझ रहे हैं और उम्मीद है कि अगले नम्बर में पूरे ब्योरे के साथ उस पर अपनी राय ज़ाहिर कर सकेंगे. मगर यहाँ हम एक बात कहे बिना नहीं रह सकते जो इस प्लानिंग कमीशन की रिपोर्ट को सरसरी तौर पर देखने से हमें चुभती हुई मालूम हुई. वह यह कि "न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेंगी." अगर कमीशन उन्हें नचाले गया तो राधा परदेसियों के हाथों बिकी ज़रूर रखी है.

नदी-स्कीमों को भी हम शुबहे की आँखों से देखते हैं. पहले तो हमारा दिल इस बात की गवाही नहीं देता कि इस तरह दामोदर, महानदी वग़ैरा पर डाम बांध बांध कर हम कोई ख़ास क़ाबू उनके बहाव पर पालेंगे और अपने सूखे खेतों को हरा कर लेंगे. हमें मालूम है कि पंजाब में जगह जगह जहां बड़े ज़ोरों से नहरें खोदी गई थीं या डाम बांधे गए थे वहां शुरू के बरसों में तो ख़ूब अच्छी पौध उगी लेकिन फिर बाद में कहीं कहीं ज़मीन पर उपजाऊ मिट्टी की जगह नमकीनी मिट्टी—सज्जी जैसी—की तह जम गई और वह इलाक़े एक दम निकम्मे से बन गए. यही हाल इन स्कीमों से भी ईश्वर न करे हो जाय !

अब तक जो इन डामों का तजुरबा है वह भी दर्द भरा ही रहा. तीन डामों को तो हम जानते हैं जिन के लिये ज़ोरों से तैयारी हुई, लाखों रुपए ख़र्च किये गए मगर बाद में उन्हें बीच में ही छोड़ दिया गया—उत्तर प्रदेश में नन्द डाम, मदरास में रामपद सागर डाम और आसाम में ब्रह्मपुत्रा डाम. अभी 24 जुलाई को बंगाल के गवरनर ने कहा—"हम पच्छिमी बंगाल वालों को जब यह मालूम हुआ कि दामोदार-बाढ़-रोक-डाम स्कीम पर सरकार अब कोई ध्यान नहीं दे रही है तो हम पस्त हिम्मत हो गए." यानी दामोदर घाटी स्कीम के मुकम्मल हो जाने पर भी दामोदर की बाढ़ें पच्छिमी बंगाल के दुखियों को सताती रहेंगी.

भकरा-नंगल डाम पर साल दर साल ख़र्च का जो तख़मीना है, वह देखने की चीज़ है—

सन्	करोड़ रुपये
1947	42
1948	70
1949	110
1950	133

ہماری باتیں غلط ثابت ہوں ۔ لیکن پوت کے لچھن پالنے میں جیسے دیکھتے ہیں اُس سے ہی ہم اُس کے آگے کا اندازہ لگا سکتے ہیں ۔

پلاننگ کمیشن نے حال میں ہی ایک پنچ سالہ اسکیم ملک کے آگے رکھی ہے اور بتایا ہے کہ کس کام میں کتنا روپیہ خرچ کریں تو پانچ سال میں ہم اپنے دیش کو کیا بنا لینگے ۔ پلاننگ کمیشن کی رپورٹ کو ہم اچھی طرح سمجھ رہے ہیں اور اُمید ہے کہ اگلے نمبر میں پورے بیورے کے ساتھ اُس پر اپنی رائے ظاہر کر سکینگے ۔ مگر یہاں ہم ایک بات کہے بنا نہیں رہ سکتے جو اس پلاننگ کمیشن کی رپورٹ کو سرسری طور پر دیکھنے سے ہمیں چبھتی ہوئی معلوم ہوئی ۔ وہ یہ کہ " نہ نو من تیل ہوگا نہ رادھا ناچینگی ۔" اگر کمیشن اُنہیں نچالے گیا تو رادھا پردیسیوں کے ہاتھوں بکی ضرور رکھی ہے ۔

ندی اسکیموں کو بھی ہم شبہ کی آنکھوں سے دیکھتے ہیں ۔ پہلے تو ہمارا دل اس بات کی گواہی نہیں دیتا کہ اس طرح دامودر، مہاندی وغیرہ پر ڈام باندھ باندھ کر ہم کوئی خاص قابو اُن کے بہاؤ پر پالینگے اور اپنے سوکھے کھیتوں کو ہرا کر لینگے ۔ ہمیں معلوم ہے کہ پنجاب میں جگہ جگہ جہاں بڑے زوروں سے نہریں کھودی گئی تھیں یا ڈام باندھے گئے تھے وہاں شروع کے برسوں میں تو خوب اچھی پودھ اُگی لیکن پھر بعد میں کہیں کہیں زمین پر اپجاؤ مٹی کی جگہ نمکینی مٹی — سجی جیسی — کی تہہ جم گئی اور وہ علاقے ایکدم نکمے سے بن گئے ۔ یہی حال ان اسکیموں سے بھی ایشور نہ کرے ہوجائے !

اب تک جو اِن ڈاموں کا تجربہ ہے وہ بھی درد بھرا ہی رہا ۔ تین ڈاموں کو تو ہم جانتے ہیں جن کے لئے زوروں سے تیاری ہوئی، لاکھوں روپئے خرچ کئے گئے مگر بعد میں اُنہیں بیچ میں ہی چھوڑ دیا گیا — اترپردیش میں نند ڈام، مدراس میں رام پد ساگر ڈام اور آسام میں برہم پترا ڈام ۔ ابھی 24 جولائی کو بنگال کے گورنر نے کہا — "ہم پچھمی بنگال والوں کو جب یہ معلوم ہوا کہ دامودر باڑھ روک ڈام اسکیم پر سرکار اب کوئی دھیان نہیں دے رہی ہے تو ہم پست ہمت ہوگئے ۔" یعنی دامودر گھاٹی اسکیم کے مکمل ہوجانے پر بھی دامودر کی باڑھیں پچھمی بنگال کے دکھیوں کو ستاتی رہینگی ۔

بھکرا ننگل ڈام پر سال در سال خرچ کا جو تخمینہ ہے، وہ دیکھنے کی چیز ہے —

سن	کروڑ روپے
1947	42
1948	70
1949	110
1950	133

तरीक़ा अमल में लाएँ उसकी कामयाबी इसी में है कि वह हमें हमारी मनशा के अनुसार नतीजे देता है या नहीं. असल चीज़ तरीक़ा नहीं बल्कि मक़सद है."

इस निगाह से देखते हुए वह फिर नयी स्कीमों पर पहुँच गए और उसके बाद खेती पर. बढ़ती हुई आबादी से घबरा कर उन्होंने "कुनबा प्लानिंग" की सलाह दी है. इसी का नाम है बर्थ-कन्ट्रोल. और क्योंकि अब तक यह कन्ट्रोल नहीं हुआ इसलिये उनके ख़याल से अनाज का मसला दिन पर दिन टेढ़ा हो गया और देश के कुछ हिस्सों में क़हत जैसी हालत पैदा हो गई. सरकार ने 'और ग़ल्ला उपजाओ' आन्दोलन चलाया जो कामयाब तो रहा "मगर नतीजे इतने साफ़ साफ़ नहीं दिखलाई पड़े." इसी सिलसिले में उन्होंने अनाज वग़ैरा के मौजूदा कन्ट्रोल को भी ज़रूरी बताया है.

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अपनी रिपोर्ट में इस बात की ख़ुशी ज़ाहिर की है कि इस चार साल के अरसे में हमने नया विधान बना डाला, ज़मींदारी प्रथा को ख़त्म करने की तजवीज़ें रच डालीं, हिन्दू-कोड बिल जैसे इनक़लाबी क़दम के लिये क़ानून गढ़ डाला. मगर हवा में कोई फ़रक़ तो नहीं दीख रहा है. हम भी ख़ुश हो लेते हैं कि चलो अच्छा हुआ यह हो गया, लेकिन यह सब काले अक्षर हैं जिनसे फ़ायदा तो कोई दूसरे ही उठा ले जाते हैं.

अपनी रिपोर्ट के बाद वाले हिस्से में पंडित जी ने अपनी विदेशी पालिसी, कश्मीर का सवाल, दोनों बंगालों में तना तनी, प्रजा और सोशलिस्ट पार्टियों और आने वाले चुनाव में कांग्रेस के फ़र्ज़ पर रोशनी डाली है. और यह सलाहें दी हैं कि क्या करना चाहिये. इसी दौरान में उन्होंने सरकारी मुलाज़िमों के काम की तारीफ़ करते हुए कहा है—"मेरा ख़याल है कि जो सख़्त आलोचना उनकी की जाती है वह बहुत हद तक सही नहीं है.........मुझे यक़ीन है कि उन्होंने कभी भी इतनी मेहनत से काम नहीं किया जितना इन चन्द बरस में." इसके अलावा यह भी बताया है कि चीज़ें कैसे चलाना चाहियें.

बड़े आदर मगर दुख के साथ हमें कहना पड़ता है कि इस रिपोर्ट में पंडित जी की सिर्फ़ एक बात के अलावा कोई दूसरी चीज़ हमारे गले नहीं उतरती. वह है उनका यह मानना कि सरकार और जनता में बदमज़गी बढ़ी है. हम समझते हैं कि इन चार बरस में सिवाय इस बदमज़गी के किसी दूसरी चीज़ की पैदावार नहीं बढ़ी. इससे कहीं ज़्यादा दुख हमें इस बात का है कि जिन तीन चीज़ों पर पंडित जी सब से ज़्यादा ज़ोर देते हैं—विज्ञान खोज घर, नयी स्कीमें और प्लानिंग कमीशन—वह मुल्क में तरी लाने के बजाय तबाही लाने वाली हैं. हम महसूस करते हैं कि हम कितनी संगीन बात कह रहे हैं और हमारी दिली तमन्ना है कि

طریقہ عمل میں لائیں اُسکی کامیابی اسی میں ہے کہ وہ ہمیں ہماری منشا کے انوسار نتیجے دیتا ہے یا نہیں۔ اصل چیز طریقہ نہیں بلکہ مقصد ہے۔"

اِس نگاہ سے دیکھتے ہوئے وہ پھر نئی اسکیموں پر پہونچ گئے اور اُسکے بعد کھیتی پر۔ بڑھتی ہوئی آبادی سے گھبرا کر اُنہوں نے "کنبہ پلاننگ" کی صلاح دی ہے۔ اسی کا نام ہے برتھ کنٹرول۔ اور کیونکہ اب تک یہ کنٹرول نہیں ہوا اِسلئے اُن کے خیال سے اناج کا مسئلہ دن پر دن ٹیڑھا ہوگیا اور دیش کے کچھ حصوں میں قحط جیسی حالت پیدا ہوگئی۔ سرکار نے 'اور غلہ اُپجاؤ' اندولن چلایا جو کامیاب تو رہا "مگر نتیجے اتنے صاف صاف نہیں دکھائی پڑے۔" اِسی سلسلے میں اُنہوں نے اناج وغیرہ کے موجودہ کنٹرول کو بھی ضروری بتایا ہے۔

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنی رپورٹ میں اِس بات کی خوشی ظاہر کی ہے کہ اِس چار سال کے عرصے میں ہم نے نیا ودھان بنا ڈالا زمینداری پرتھا کو ختم کرنے کی تجویزیں رچ ڈالیں' ہندو کوڈ بل جیسے انقلابی قدم کے لئے قانون گڑھ ڈالا۔ مگر ہوا میں کوئی فرق تو نہیں دیکھ رہا ہے۔ ہم بھی خوش ہو لیتے ہیں کہ چلو اچھا ہوا یہ ہوگیا' لیکن یہ سب کالے اکشر ہیں جن سے فائدہ تو کوئی دوسرے ہی اُٹھا لے جاتے ہیں۔

اپنی رپورٹ کے بعد والے حصے میں پنڈت جی نے اپنی ودیشی پالیسی' کشمیر کا سوال' دونوں بنگالوں میں تنا تنی' پرجا اور سوشلسٹ پارٹیوں اور آنے والے چناؤ میں کانگریس کے فرض پر روشنی ڈالی ہے اور یہ صلاحیں دی ہیں کہ کیا کرنا چاہئے۔ اِسی دوران میں اُنہوں نے سرکاری ملازموں کے کام کی تعریف کرتے ہوئے کہا ہے — "میرا خیال ہے کہ جو سخت آلوچنا اُن کی کی جاتی ہے وہ بہت حد تک صحیح نہیں ہے...... مجھے یقین ہے کہ اُنہوں نے کبھی بھی اتنی محنت سے کام نہیں کیا جتنا اِن چند برس میں۔" اِسکے علاوہ یہ بھی بتایا ہے کہ چیزیں کیسے چلانا چاہئیں۔

بڑے آدر مگر دکھ کے ساتھ ہمیں کہنا پڑتا ہے کہ اِس رپورٹ میں پنڈت جی کی صرف ایک بات کے علاوہ کوئی دوسری چیز ہمارے گلے نہیں اُترتی۔ وہ ہے اُن کا یہ ماننا کہ سرکار اور جنتا میں بدمزگی بڑھی ہے۔ ہم سمجھتے ہیں کہ اِن چار برس میں سوائے اِس بدمزگی کے کسی دوسری چیز کی پیداوار نہیں بڑھی۔ اس سے کہیں زیادہ دکھ ہمیں اِس بات کا ہے کہ جن تین چیزوں پر پنڈت جی سب سے زیادہ زور دیتے ہیں — وگیان کھوج گھر' نئی اسکیمیں اور پلاننگ کمیشن — وہ ملک میں تری لانے کے بجائے تباہی لانے والی ہیں۔ ہم محسوس کرتے ہیں کہ ہم کتنی سنگین بات کہہ رہے ہیں اور ہماری دلی تمنا ہے کہ

ज़ाहिर है कि यह रिपोर्ट पिछले चार साल का कोई इतिहास नहीं हो सकती. यह तो महज़ कुछ घटनाओं और इधर-उधर की बातों से भरी एक छोटी सी गठरी हो सकती है जिससे दूसरों को मोटा अन्दाज़ा हो जाय और आगे के लिये रास्ता निकालने में मदद मिले. लेकिन हमारी मुसीबत यह और भी है कि एक छोटे से लेख में उस गठरी, की चाहे वह छोटी ही क्यों न हो, सभी चीज़ों को निकाल निकाल कर जाँच कर उनकी क़ीमत परखना नामुमकिन नहीं तो मुशकिल ज़रूर है. इसलिये हम सिर्फ़ ख़ास ख़ास नमूनों को लेकर संतोश करेंगे.

पंडित जवाहर लाल ने शुरू में ही कहा है कि आज़ादी के साथ साथ हकूमत पर मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़े—बटवारा और लाखों की तादाद में बे घरवालों का आना, कश्मीर पर पाकिस्तान का हमला, बापू की हत्या, चीज़ों के दाम चढ़ जाना और आरथिक बन्दोबस्त डांवाडोल हो जाना. इन सभी को दुरुस्त करने के फेर में सरकार बड़े बड़े चक्करों में फंसती चली गई और काम संभलते हुए भी नहीं संभल रहा था. नतीजा हुआ जनता और सरकार के बीच सहयोग की कमी. यह कमी बढ़ती ही गई और इन चार साल—में ज़बरदस्त कोशिशों के होते हुए भी—जनता की सरकार के कामों के साथ बेरुख़ी हद को पहुंच गई.

इतना कहने के बाद जवाहर लाल जी ने अपनी सरकार के कारनामे गिनाये हैं. हम उन्हें चुन कर नीचे देते हैं—

1. रियासतों का मिलाया जाना जिसके लिये हम सब स्वार्गीय सरदार पटेल के एहसान मन्द हैं.

2. हमारे देश में पिछले चन्द बरस में विज्ञानी खोज में मार्के की तरक़्क़ी, जिसे आम तौरसे नज़र अन्दाज़ कर दिया जाता है. विज्ञान और उसके कारनामों की दुनिया में यह आगे की उन्नति के लिये एक बुनयादी चीज़ है.

3. नदियों वाली स्कीमें, जैसे दामोदर घाटी, भकरा नंगल और हीराकुन्ड.

4. शरनार्थियों का बसाना.

5. प्लानिंग कमोशन का क़ायम होना.

इसके बाद पंडित जी यह क़बूल करते हैं कि देश की जो बुनयादी आरथिक पेचीदगी थी उसे कामयाबी के साथ हल नहीं किया जा सका है. वह इस कमी को बहुत गहराई के साथ महसूस करते हैं और सारी जिम्मेदारी अपने मत्थे लेते हैं.

आगे चलकर पंडित जी उसूली बड़े सवालों पर आ जाते हैं कि हमें अपनी राजकाजी, माली और समाजी बढ़ोतरी के लिये आगे क्या निशान रखना चाहिये और कौनसा रास्ता अपनाना है. उनका कहना है—"हम जो भी

ظاہر ہے کہ یہ رپورٹ پچھلے چار سال کا کوئی اتہاس نہیں ہوسکتی. یہ تو محض کچھ گھٹناؤں اور ادھر ادھر کی باتوں سے بھری ایک چھوٹی سی گٹھری ہوسکتی ہے جس سے دوسروں کو موٹا اندازہ ہوجائے اور آگے کے لئے راستہ نکالنے میں مدد ملے ۔ لیکن ہماری مصیبت یہ اور بھی ہے کہ ایک چھوٹے سے لیکھ میں اُس گٹھری کی، چاہے وہ چھوٹی ہی کیوں نہ ہو، سبھی چیزوں کو نکال نکال کر جانچ کر اُن کی قیمت پرکھنا نامُمکن نہیں تو مشکل ضرور ہے ۔ اس لئے ہم صرف خاص خاص نمونوں کو لے کر سنتوش کریں گے ۔

پنڈت جواہر لال نے شروع میں ہی کہا ہے کہ آزادی کے ساتھ ساتھ حکومت پر مصیبتوں کے پہاڑ ٹوٹ پڑے — بٹوارہ اور لاکھوں کی تعداد میں بے گھر والوں کا آنا، کشمیر پر پاکستان کا حملہ، باپو کی ہتیا، چیزوں کے دام چڑھ جانا اور آرتھک بندوبست ڈانوا ڈول ہوجانا ۔ ان سبھی کو درست کرنے کے پھیر میں سرکار بڑے بڑے چکروں میں پھنستی چلی گئی اور کام سنبھلتے ہوئے بھی نہیں سنبھل رہا تھا ۔ نتیجہ ہوا جنتا اور سرکار کے بیچ سہیوگ کی کمی ۔ یہ کمی بڑھتی ہی گئی اور اِن چار سال میں — زبردست کوششوں کے ہوتے ہوئے بھی -- جنتا کی سرکار کے کاموں کے ساتھ بے رخی حد کو پہونچ گئی ۔

اِتنا کہنے کے بعد جواہر لال جی نے اپنی سرکار کے کارنامے گنائے ہیں ۔ ہم اُنہیں چن کر نیچے دیتے ہیں --

1. ریاستوں کا ملایا جانا جس کے لئے ہم سب سورگیہ سردار پٹیل کے احسان مند ہیں ۔

2. ہمارے دیش میں پچھلے چند برس میں وگیانی کھوج میں معرکے کی ترقی، جسے عام طور سے نظر انداز کر دیا جاتا ہے ۔ وگیان اور اُسکے کارناموں کی دنیا میں یہ آگے کی اُنتی کے لئے ایک بنیادی چیز ہے ۔

3. ندیوں والی اسکیمیں، جیسے دامودر گھاٹی، بھکرا ننگل اور ہیرا کنڈ ۔

4. شرنارتھیوں کا بسانا ۔

5. پلاننگ کمیشن کا قائم ہونا ۔

اسکے بعد پنڈت جی یہ قبول کرتے ہیں کہ دیش کی جو بنیادی آرتھک پیچیدگی تھی اُسے کامیابی کے ساتھ حل نہیں کیا جا سکا ہے ۔ وہ اس کمی کو بہت گہرائی کے ساتھ محسوس کرتے ہیں اور ساری ذمے داری اپنے متھے لیتے ہیں ۔

آگے چلکر پنڈت جی اصولی بڑے سوالوں پر آجاتے ہیں کہ ہمیں اپنی راج کاجی، مالی اور سماجی بڑھوتری کے لئے آگے کیا نشان رکھنا چاہئے اور کون سا راستہ اپنانا ہے ۔ اُن کا کہنا ہے — "ہم جو بھی

बीच में खड़ी की गई. शहर की बोली तो आधी अरबी हो गई, लेकिन देहात की बोली बहुत कुछ तुरकी ही रही और इसलिये तुरकों के वास्ते तुरकी ज़बान को फिर ज़िन्दा करना मुमकिन हो गया. उन्नीसवीं सदी में तुरकों के दिलों में भी आज़ादी की तरंग उठी और साथ ही यह ख़याल भी आ गया कि आज़ादी हासिल करने के लिये यह दीवार भी गिरानी पड़ेगी. चुनांचे उन्नीसवीं सदी के आख़िर में कुछ ऐसे नौजवान पैदा हो गए जिन्होंने भाशा को सुधारने की कोशिश की लेकिन ख़िलाफ़त के ब्राह्मनों के सामने उनकी कुछ चली नहीं.

[भाई मदन गोपाल जी की किताब 'भाशा' के आख़िरी अध्याय का अधूरा हिस्सा. बाक़ी अगले परचे में]

بیچ میں کھڑی کی گئی ۔ شہر کی بولی تو آدھی عربی ہوگئی لیکن دیہات کی بولی بہت کچھ ترکی ہی رہی اور اِس لئے ترکوں کے واسطے ترکی زبان کو پھر زندہ کرنا ممکن ہوگیا ۔ اُنیسویں صدی میں ترکوں کے دلوں میں بھی آزادی کی ترنگ اُٹھی اور ساتھ ہی یہ خیال بھی آگیا کہ آزادی حاصل کرنے کے لئے یہ دیوار بھی گرانی پڑے گی ۔ چنانچہ اُنیسویں صدی کے آخر میں کچھ ایسے نوجوان پیدا ہوگئے جنہوں نے بھاشا کو سدھارنے کی کوشش کی لیکن خلافت کے براہمنوں کے سامنے اُن کی کچھ چلی نہیں ۔

[بھائی مدن گوپال جی کی کتاب 'بھاشا' کے آخری ادھیائے کا ادھورا حصہ ۔ باقی اگلے پرچے میں ۔]

स्वराज के चार साल

हर कारज के करने में यह दस्तूर बरता जाता है कि साल के तमाम होने पर या बीच में जब कभी सहूलियत हो अपने सारे काम का लेखा ड्योढ़ा ठीक करके उसका पूरा चिट्ठा कारकुन लोग अपने मालिक के आगे पेश करदें या अपने साथी साझीदारों को समझा दें और तब लोग गये साल के तजरबे के आधार पर आपस में सलाह मशविरा कर के आगे के लिये अपना प्रोग्राम बनायें. हुकूमत या सरकार का काम भी एक कारज बन गया है और लोकशाही के बढ़ते हुए प्रचार से उसकी बागडोर संभालने वालों की यह ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि जिन्होंने उन को कुरसी पर बिठाया है उनको अपने काम की जवाबदही दें. चार साल हो रहे हैं जब हमारा देश आज़ाद हुआ था और उसके इंतज़ाम का सारा बोझ पंडित जवाहर लाल नेहरू के कंधों पर रखा गया था. वैसे तो आज़ादी के क़रीब एक बरस पहले से ही यह बोझ उनके ऊपर आचुका था. लेकिन इन चार पांच बरस में एक बार भी सरकारी काम का 'हिसाब' जनता या कांगरेस (जिस ने आज़ादी जीती थी) या शायद कांगरेस पार्लीमेन्ट्री पारटी के आगे भी नहीं आया और काम चलता रहा. चोटी पर पंडित जवाहर लाल थे इसलिये कोई इतनी हिम्मत भी कैसे करता कि उनसे हिसाब तलब करे. ख़ुशी की बात है कि जवाहर लाल जी ने ख़ुद ही यह रिपोर्ट कुल हिन्द कांगरेस कमेटी की ख़ातिर उसकी हाल में बंगलौर में हुई बैठक के पहले मुल्क के सामने पेश करदी. उनकी इस दरिया दिली और नम्रता पर उनके आगे सिर और भी झुक जाता है.

سوراج کے چار سال

ہر کارج کے کرنے میں یہ دستور برتا جاتا ہے کہ سال کے تمام ہونے پر یا بیچ میں جب کبھی سہولیت ہو اپنے سارے کام کا لیکھا ڈیوڑھا ٹھیک کرکے اُس کا پورا چٹھا کارکن لوگ اپنے مالک کے آگے پیش کردیں یا اپنے ساتھی ساجھی داروں کو سمجھادیں اور تب لوگ گئے سال کے تجربے کے آدھار پر آپس میں صلاح مشورہ کرکے آگے کے لئے اپنا پروگرام بنائیں ۔ حکومت یا سرکار کا کام بھی ایک کارج بن گیا ہے اور لوک شاہی کے بڑھتے ہوئے پرچار سے اس کی باگ ڈور سنبھالنے والوں کی یہ ذمہ داری اور بھی بڑھ جاتی ہے کہ جنہوں نے اُن کو کرسی پر بٹھایا ہے اُن کو اپنے کام کی جواب دہی دیں ۔ چار سال ہورہے ہیں جب ہمارا دیش آزاد ہوا تھا اور اُس کے انتظام کا سارا بوجھ پنڈت جواہرلال نہرو کے کندھوں پر رکھا گیا تھا ۔ ویسے تو آزادی کے قریب ایک برس پہلے سے ہی یہ بوجھ اُن کے اوپر آچکا تھا ۔ لیکن اِن چار پانچ برس میں ایک بار بھی سرکاری کام کا 'حساب' جنتا یا کانگریس (جس نے آزادی جیتی تھی) یا شاید کانگریس پارلیمنٹری پارٹی کے آگے بھی نہیں آیا اور کام چلتا رہا ۔ چوٹی پر پنڈت جواہرلال تھے اِس لئے اِتنی کوئی ہمت بھی کیسے کرتا کہ اُن سے حساب طلب کرے ۔ خوشی کی بات ہے کہ جواہرلال جی نے خود ہی یہ رپورٹ کل ہند کانگریس کمیٹی کی خاطر اُس کی حال میں بنگلور میں ہوئی بیٹھک کے پہلے ملک کے سامنے پیش کردی ۔ اُن کی اِس دریا دلی اور نمرتا پر اُن کے آگے سر اور بھی جھک جاتا ہے ۔

कविता को समझ नहीं सकता. ईरानी दो हिस्सों में बट गए. 90 फ़ी सदी से ज़्यादा अनपढ़ और पाँच ही फ़ी सदी पढ़े हुए. इन दो हिस्सों को जुदा करने के लिये ज़बान की दीवार चुनी गई. इस दीवार को खड़ी करने वाले थे ईरान के ब्राह्मन जिन्हें शायद वह मौलाना कहते हैं. इन ब्राह्मनों का चाहे वह किसी देस या ज़माने के हों सबसे बड़ा हथकंडा है जादू टोने का और ख़ास कर भाशा का जादू. बोलेंगे ऐसी बोली जो दूसरा अच्छी तरह से समझ न सके. जो पाठ कराएंगे तो ऐसी बोली में जो समझ से बाहर हो. तावीज़ गुरमंत्र सब का यही ढंग. दूसरा जादू जो वह सदा चलाते हैं वह है बड़े बाप के बेटे का ताकि जजमान आगे की न सोचें पीछे को ही ताकते रहें.

उन्नीसवीं सदी में ईरानियों को भी लोकराज की सूझी. क़ानूनी मजलिसें बनीं भी, टूटीं भी. बादशाह अच्छे भी हुए बुरे भी. सन् 1921 में रज़ाख़ाँ एक फ़ौजी अफ़सर ने हुकूमत की बाग ज़बरदस्ती अपने हाथ में ले ली और 1925 में शाह ही नहीं मुल्क का अकेला डिक्टेटर बन बैठा. वह देस प्रेमी था इसलिये देस को भी उस से प्रेम हो गया. वह देस का रुख़ बदलना चाहता था. आगे देखो, पीछे देखना छोड़ दो. किसी गिरे हुए देस को सुधारने का यही गुरमंत्र हो सकता है. परदा उड़ा कर और शादी तलाक़ के क़ानून में सुधार कर के औरतों को आज़ाद किया. और बोली को अरबी से छुड़ाकर प्रजा को वहां के ब्राह्मनों की क़ैद में से निकाला और वह फ़सील गिरा कर जो ईरानी को ईरानी से जुदा करती थी देस में एकता पैदा की और तालीम आसान कर दी. यह तो सब जानते हैं कि ईरान में मुसलमान ही रहते हैं, उनकी लिपि एक है और बोली भी बहुत कुछ एक.

तुर्कों के पुराने इतिहास में जाने की ज़रूरत नहीं. इतना कहना काफ़ी है कि मुसलमानों के आने से पहले भी तुर्की एक बहुत बड़ा राज था. ज़बान बहुत सादा सुलझी हुई. ग्रामर सादा और ग्रामरी जिन्स से पाक. कुल आठ स्वर और लफ़्ज़ स्वरों से लदे हुए. गो अरबों की हुकूमत तुर्कों पर बहुत दिन न रह सकी. अरबी अपने इल्मी ख़ज़ाने की वजह से उन्नीसवीं सदी तक तुर्की ज़बान की गरदन पर सवार रही और उस में जुड़े हुए व्यंजनों की बीमारी पैदा कर दी. तुर्की सुलतानों की हुकूमत दूर दूर के मुल्कों तक फैली यहाँ तक कि अरब भी इनके राज में आ गया. तुर्क सुलतान ही न हुए इसलाम के ख़लीफ़ा भी बन बैठे. इस का नतीजा यह हुआ कि तुर्की ब्राह्मनों की पांचों उंगलियां घी में. वही ब्राह्मनों के हथकंडे ज़बान के जादू तुर्की में भी खेले जाने लगे. ज़बान की दीवार यहाँ भी खड़ी की गई. शुकर इतना है कि यह दीवार शहर और देहात के

کویتا کو سمجھ نہیں سکتا ۔ ایرانی دو حصوں میں بٹ گئے ۔ 90 فیصدی سے زیادہ ان پڑھ اور پانچ ہی فیصدی پڑھے ہوئے ۔ ان دو حصوں کو جدا کرنے کے لئے زبان کی دیوار چنی گئی ۔ اس دیوار کو کھڑی کرنے والے تھے ایران کے براہمن جنہیں شاید وہ مولانا کہتے ہیں ۔ ان براہمنوں کا چاہے وہ کسی دیس یا زمانے کے ہوں سب سے بڑا ہتھکنڈا ہے جادو ٹونے کا اور خاصکر بھاشا کا جادو ۔ بولینگے ایسی بولی جو دوسرا اچھی طرح سے سمجھ نہ سکے ۔ جو پاٹھ کرائینگے تو ایسی بولی میں جو سمجھ سے باہر ہو ۔ تعویز گرومنتر سب کا یہی ڈھنگ ۔ دوسرا جادو جو وہ سدا چلاتے ہیں وہ ہے بڑے باپ کے بیٹے کا تاکہ ججمان آگے کی نہ سوچیں، پیچھے کو ہی تاکتے رہیں ۔

انیسویں صدی میں ایرانیوں کو بھی لوک راج کی سوجھی ۔ قانونی مجلسیں بنیں بھی، ٹوٹیں بھی ۔ بادشاہ اچھے بھی ہوئے برے بھی ۔ سن 1921 میں رضا خاں ایک فوجی افسر نے حکومت کی باگ زبردستی اپنے ہاتھ میں لے لی اور 1925 میں شاہ ہی نہیں ملک کا اکیلا ڈکٹیٹر بن بیٹھا ۔ وہ دیس پریمی تھا اس لئے دیس کو بھی اس سے پریم ہو گیا ۔ وہ دیس کا رخ بدلنا چاہتا تھا ۔ آگے دیکھو، پیچھے دیکھنا چھوڑ دو ۔ کسی گرے ہوئے دیس کو سدھارنے کا یہی گرومنتر ہوسکتا ہے ۔ پردہ اڑا کر اور شادی طلاق کے قانون میں سدھار کرکے عورتوں کو آزاد کیا ۔ اور بولی کو عربی سے چھڑا کر پرجا کو وہاں کے براہمنوں کی قید میں سے نکالا اور وہ فصیل گرا کر جو ایرانی کو ایرانی سے جدا کرتی تھی دیس میں ایکتا پیدا کی اور تعلیم آسان کر دی ۔ یہ تو سب جانتے ہیں کہ ایران میں مسلمان ہی رہتے ہیں، ان کی لپی ایک ہے اور بولی بھی بہت کچھ ایک ۔

ترکوں کے پرانے اتہاس میں جانے کی ضرورت نہیں ۔ اتنا کہنا کافی ہے کہ مسلمانوں کے آنے سے پہلے بھی ترکی ایک بہت بڑا راج تھا ۔ زبان بہت سادہ سلجھی ہوئی ۔ گرامر سادہ اور گرامری جنس سے پاک ۔ کل آٹھ سور اور لفظ سوروں سے لدے ہوئے ۔ گو عربوں کی حکومت ترکوں پر بہت دن نہ رہ سکی ۔ عربی اپنے علمی خزانے کی وجہ سے انیسویں صدی تک ترکی زبان کی گردن پر سوار رہی اور اس میں جڑے ہوئے ویینجنوں کی بیماری پیدا کر دی ۔ ترکی سلطانوں کی حکومت دور دور کے ملکوں تک پھیلی یہاں تک کہ عرب بھی ان کے راج میں آگیا ۔ ترک سلطان ہی نہ ہوئے اسلام کے خلیفہ بھی بن بیٹھے ۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ ترکی براہمنوں کی پانچوں انگلیاں گھی میں ۔ وہی براہمنوں کے ہتھکنڈے زبان کے جادو ترکی میں بھی کھیلے جانے لگے ۔ زبان کی دیوار یہاں بھی کھڑی کی گئی ۔ شکر اتنا ہے کہ یہ دیوار شہر اور دیہات کے

ज़रूरत ही नहीं पड़ी. इसलिये मुनासिब है कि हम कुछ थोड़ी सी सरसरी निगाह तुरकों और ईरानियों के इतिहास और जुग़राफ़िये पर डालें और फिर अपने इतिहास और जुग़राफ़िये से उन्हें मिलाएं.

ईरान के शुरू की तवारीख़ की बाबत लिखने की यहाँ ज़रूरत नहीं. शायद हिन्दुस्तान से पहले आर्य ईरान में जाकर बसे. ईरान और आर्य दोनों एक ही धातु से हैं. जो पहली फ़ारसी है वह वैदिक से बहुत कुछ मिलती जुलती है. लेकिन आहिस्ता आहिस्ता उस क़ानून के मुताबिक़ जो हर बोली पर लागू है उस के बन्द ऐसे खुले कि स्वरों से लद गई. लफ़्ज़ घिस घिस कर छोटे होते गए. छटी सदी बी० सी० में ईरानी राज को वह चाँद लगे कि रूम सागर से लेकर हिन्दुस्तान में कशमीर की घाटियों और सिन्ध की वादियों तक फैल गया. गो चौथी सदी बी० सी० में सिकन्दर ने उस मुल्क को फ़तह कर लिया पर राज ईरान में ईरानियों का ही रहा. यह ठीक कि वह दो सदियों तक यूनान को ख़िराज देते रहे. तब से सातवीं सदी ईसवी तक यानी कोई दो हज़ार बरस तक ईरान में राज बहुत कुछ ईरानी आर्यों का ही रहा. नतीजा यह कि ईरानी भाषा सुधरती रही. सातवीं सदी में मुसलमान अरबों ने ईरान को जीता. ईरानियों ने इसलाम ज़रूर क़बूल किया लेकिन इसलाम की परहेज़गारी उन्हें अपने में समो न सकी. वही खिलाने पिलाने का प्रेम, राग और चित्रकला का अनुराग, शेर व सुख़न का शौक़ और प्रकृति की पूजा उनमें जारी रही. यह हैं चार ख़ास गुन आर्यों के. हमें भी दावा है आर्य होने का लेकिन उन के गुनों में से एक भी अब हमारे में नहीं पाया जाता. जो थोड़ा बहुत ग़लती से कहीं दिखाई दे जाता है तो वह समझ लो इन ईरानियों, यूनानियों और पच्छिमी क़ौमों की मेहरबानियों का नतीजा है. गो इस मनचली क़ौम पर अरब कुछ ज़्यादा मुद्दत तक हकूमत न कर सके, अरबी ने अपना सिक्का ईरानी पर जमा लिया. इसमें कुछ तो हकूमत का हाथ था लेकिन बहुत सा हाथ उस इल्मी ज़ख़ीरे का था जो अरबों के इल्मी शौक़ ने सारी दुनिया के इल्मों से अरबी में जमा कर लिया था. अरबी सदियों तक पच्छिमी एशिया की ही नहीं बहुत से योरपी देसों की इल्मी ज़बान रही है. दसवीं सदी में जब हकूमत की बाग ईरानियों के हाथ में फिर आ गई तो ईरानी ने भी फिर पर निकाले, फ़िरदौसी ने उस सदी के आख़िर में शाहनामा लिखा जिस की ज़बान शुद्ध ईरानी है. फिर भाषा विद्या के इस नियम के अनुसार जिस को मैं बहुत दफ़ा लिख चुका हूँ अरबी जो इल्मी ज़बान थी उस ने ईरानी को दबा लिया. हाफ़िज़ जो चौदहवीं सदी में पैदा हुआ था उस की शायरी अरबी लफ़्ज़ों से लदी हुई है. नतीजा यह कि कोई ईरानी कुछ अरबी जाने बिना अपनी बोली की

رت ھی نہیں پڑی ۔ اس لئے مناسب ہے کہ ہم کچھ
ی سی سرسری نگاہ ترکوں اور ایرانیوں کے اتہاس
جغرافیہ پر ڈالیں اور پھر اپنے اتہاس اور جغرافیہ سے
یں ملائیں ۔

ایران کے شروع کی تواریخ کی بابت لکھنے کی یہاں
رت نہیں. شاید ھندستان سے پہلے آریہ ایران میں جاکر
۔ ایران اور آریہ دونوں ایک ھی دھات سے ھیں ۔ جو
ی فارسی ھے وہ ویدک سے بہت کچھ ملتی جلتی ھے ۔
ن آھستہ آھستہ اس قانون کے مطابق جو ھر بولی پر
ھے اسکے بند ایسے کھلے کہ سوروں سے لد گئی ۔ لفظ
ں گھس کر چھوٹے ھوتے گئے ۔ چھٹی صدی بی ۔ سی ۔
ں ایرانی راج کو وہ چاند لگے کہ روم ساگر سے لے کر
دستان میں کشمیر کی گھاٹیوں اور سندھ کی وادیوں
پھیل گیا ۔ گو چوتھی صدی بی ۔ سی ۔ میں سکندر
اس ملک کو فتح کر لیا پر راج ایران میں ایرانیوں کا
رھا ۔ یہ ٹھیک کہ وہ دو صدیوں تک یونان کو خراج
ے رھے ۔ تب سے ساتویں صدی عیسوی تک یعنی کوئی
زار برس تک ایران میں راج بہت کچھ ایرانی آریوں
ی رھا ۔ نتیجہ یہ کہ ایرانی بھاشا سدھرتی رھی ۔
یں صدی میں مسلمان عربوں نے ایران کو جیتا ۔
یوں نے اسلام ضرور قبول کیا لیکن اسلام کی پرھیزگاری
ں اپنے میں سمو نہ سکی ۔ وھی کھلانے پلانے کا پریم،
، اور چتر کلا کا انوراگ، شعرو سخن کا شوق اور پرکرتی
پوجا ان میں جاری رھی ۔ یہ ھیں چار خاص گن
ں کے ۔ ھمیں بھی دعویٰ ھے آریہ ھونے کا لیکن ان کے
ں میں سے ایک بھی اب ھمارے میں نہیں پایا جاتا ۔
تھوڑا بہت غلطی سے کہیں دکھائی دے جاتاھے تو وہ سمجھ
ن ایرانیوں، یونانیوں اور پچھمی قوموں کی مہربانیوں
نتیجہ ھے ۔ گو اس منچلی قوم پر عرب کچھ زیادہ مدت
حکومت نہ کر سکے، عربی نے اپنا سکہ ایرانی پر جما
۔ اسمیں کچھ تو حکومت کا ھاتھ تھا لیکن بہت سا
، اس علمی ذخیرے کا تھا جو عربوں کے علمی شوق نے ساری
ا کے علموں سے عربی میں جمع کر لیا تھا ۔ عربی صدیوں
پچھمی ایشیا کی ھی نہیں بہت سے یورپی دیسوں کی
ی زبان رھی ھے ۔ دسویں صدی میں جب حکومت کی
ب ایرانیوں کے ھاتھ میں پھر آگئی تو ایرانی نے بھی پھر پر
، فردوسی نے اس صدی کے آخر میں شاھنامہ لکھا
ں کی زبان شدھ ایرانی ھے ۔ پھر بھاشا ودیا کے اس نیم
نوسار جسکو میں بہت دفعہ لکھ چکا ھوں عربی
علمی زبان تھی اس نے ایرانی کو دبا لیا ۔
ظ جو چودھویں صدی میں پیدا ھوا تھا اسکی
ری عربی لفظوں سے لدی ھوئی ھے ۔ نتیجہ یہ
کوئی ایرانی کچھ عربی جانے بنا اپنی بولی کی

ड़ा भारी हुआ कभी किसी का. आखिर मिल जुल कर
बसेरा करना पड़ा. दूसरी बात यह कि लातीनी और
रमैनिक दोनों आर्य भाशा की बेटी हैं. केवल जुग़ाफ़िया
नों का जुदा. एक उत्तर में जा कर बसी, दूसरी दक्खिन
जिनसे इन के रंग रूप में ही नहीं बनावट में भी फ़रक़
गया.

हमारी बोली खिचड़ी नहीं सत नजी है. गो मुझे अब
द नहीं कि बचपन में इसे सीखने के लिये मुझे कोई खास
शकिल हुई थी. इतनी समझ अब ज़रूर है कि एक हिन्दु-
नी बच्चे के लिये यह खड़ी बोली हिन्दुस्तानी सीखना
ना आसान नहीं जितना शायद एक ब्रजबासी के लिये
भाशा या एक मद्रासी के लिये अपनी मां बोली
खना. इसलिये अगर मेरे बच्चों के बच्चों और उन के बच्चों
लिये यह आसान बनाई जा सके और हम न बनावें तो
अपनी सन्तान के दुशमन हैं. आजकल कुछ भाई इस
सतनजापन निकालने की धुन में हैं और अगरचे वह
सान के माने नहीं समझते केवल शुद्धी को समझते हैं
का हाथ बटाना हमारा धर्म है ! क्योंकि मुशकिल लफ़्ज़
घिस कर आप ही आसान हो जाएंगे (ज़बान की इस
को कोई नहीं रोक सकता) भाशा बिना बीने इकनजी
हो सकती. लेकिन बीनने से पहले यह सोचना ज़रूरी
के क्या हम बीनने में सफल हो सकते हैं ? अगर नहीं
कोशिश फ़ज़ूल ही नहीं नुक़सान भी पहुँचाती है.

यह तो सब जानते हैं कि इस सदी के शुरू में दो
याई क़ौमें आज़ादी हासिल करते ही यह काम कर सकीं.
ा कि मैं हरफ़ों के बाब में लिख आया हूँ. तुर्क अपनी
न में से सारे अरबी और फ़ारसी लफ़्ज़ निकालने में
याब हो गए. ईरानियों ने सारे अरबी लफ़्ज़ों को देश
ाला देना ठीक नहीं समझा लेकिन उनकी ईरानी में
ने फ़ज़ूल अनगिनत भरती के लफ़्ज़ घुस गए थे उन
को उन्होंने मार भगाया. हमारे भाई भी इन तुर्कों
ईरानियों की तरह उन अरबी और फ़ारसी लफ़्ज़ों को
हमारी हिन्दुस्तानी में आ घुसे हैं निकालना चाहते हैं
बड़े ज़ोरों से कहते हैं कि जो तुर्क और ईरानी कर
वह हम तो बहुत आसानी से कर सकते हैं क्योंकि
रे पास संस्कृत का भंडार मौजूद है. ज़ाहिरा तो उनकी
सोलह आने पक्की मालूम होती है. फ़ारसी में एक
वत है—आधे हकीम से जान का डर आधे मुल्ला से
न का डर—इसी तरह आधे पंडित से देस का डर. हमारे
त आधे पंडित हैं. अपना इतिहास जो सच पूछो इति-
नहीं इति-रोना है. उसे तो वह जान ही नहीं सकते
के हमारे कुछ बड़ों ने उस पर खूब मोटा गाढ़ा पोचा
रक्खा है और दूसरों का इतिहास जानने की उन्हें कभी

پڑا بھاری ہوا کبھی کسی کا ۔ آخر مل جل کر ہی بسیرا
کرنا پڑا ۔ دوسری بات یہ کہ لاطینی اور جرمینک دونوں
آریہ بھاشا کی بیٹی ہیں ۔ کیول جغرافیہ دونوں کا جدا ۔
ایک اتر میں جاکر بسی' دوسری دکھن میں جن سے ان کے
رنگ روپ میں ہی نہیں بناوٹ میں بھی فرق ہوگیا ۔

ہماری بولی کھچڑی نہیں ست نجی ہے ۔ گو مجھے
اب یاد نہیں کہ بچپن میں اسے سیکھنے کے لئے مجھے
خاص مشکل ہوئی تھی ۔ اتنی سمجھ اب ضرور ہے کہ
ایک ہندستانی بچے کے لئے یہ کھڑی بولی ہندستانی
سیکھنا اتنا آسان نہیں جتنا شاید ایک برج باسی کے
لئے برج بھاشا یا ایک مدراسی کے لئے اپنی ماں بولی
سیکھنا ۔ اس لئے اگر میرے بچوں کے بچوں اور اُن کے
بچوں کے لئے یہ آسان بنائی جاسکے اور ہم نہ بناویں
تو ہم اپنی سنتان کے دشمن ہیں ۔ آج کل کچھ بھائی
اس کا ست نجاپن نکالنے کی دھن میں ہیں اور اگرچہ
وہ آسان کے معنی نہیں سمجھتے کیول شدھی کو
سمجھتے ہیں اُنکا ہاتھ بٹانا ہمارا دھرم ہے ! کیونکہ
مشکل لفظ تو گھس کر آپ ہی آسان ہوجائینگے
(زبان کی اس باڑھ کو کوئی نہیں روک سکتا) بھاشا
بنا بینے اِک نجی نہیں ہو سکتی ۔ لیکن بیننے سے
پہلے یہ سوچنا ضروری ہے کہ کیا ہم بیننے میں سپھل
ہو سکتے ہیں ؟ اگر نہیں تو کوشش فضول ہی نہیں
نقصان بھی پہونچاتی ہے ۔

یہ تو سب جانتے ہیں کہ اس صدی کے شروع میں
دو ایشیائی قومیں آزادی حاصل کرتے ہی یہ کام کرسکیں۔
جیسا کہ میں حرفوں کے باب میں لکھ آیا ہوں ۔ ترک
اپنی زبان میں سے سارے عربی اور فارسی لفظ نکالنے
میں کامیاب ہوگئے ۔ ایرانیوں نے سارے عربی لفظوں کو
دیس نکالا دینا ٹھیک نہیں سمجھا لیکن اُن کی ایرانی
میں جتنے فضول انگنت بھرتی کے لفظ گھس گئے تھے
اُن سب کو اُنہوں نے مار بھگایا ۔ ہمارے بھائی بھی
ان ترکوں اور ایرانیوں کی طرح اُن عربی اور فارسی
لفظوں کو جو ہماری ہندستانی میں آگھسے ہیں نکالنا
چاہتے ہیں اور بڑے زوروں سے کہتے ہیں کہ جو ترک اور
ایرانی کرسکے وہ ہم تو بہت آسانی سے کرسکتے ہیں
کیونکہ ہمارے پاس سلمسکرت کا بھنڈار موجود ہے ۔
ظاہرا تو اُن کی بات سولہ آنے پکی معلوم ہوتی ہے ۔
فارسی میں ایک کہاوت ہے—آدھے حکیم سے جان کا ڈر
اور آدھے ملا سے ایمان کا ڈر—اسی طرح آدھے پنڈت سے
دیس کا ڈر ۔ ہمارے پنڈت آدھے پنڈت ہیں ۔ اپنا
اتہاس تو سچ پوچھو اتہاس نہیں اِتی‌رونا ہے ۔
اُسے تو وہ جان ہی نہیں سکتے کیونکہ ہمارے کچھ
بڑوں نے اُس پر خوب موٹا گاڑھا پوچا پھیر رکھا ہے
اور دوسروں کا اتہاس جاننے کی اُنہیں کبھی

और बेलाग सिपाही थे, जो नतीजों की परवाह न करते हुए देश और धर्म की खिदमत करते करते हमेशा के लिये आराम की नींद सो गए. हम सब अल्लाह से आए हैं और अल्लाह ही की तरफ़ हम सब को जाना है.

("अहरार" देहली के आधार पर)

ख़ालिस बोली—खिचड़ी बोली और बोली की दीवार

(भाई मदन गोपाल)

कुछ अंगरेज़ी विद्वानों का यह ख़याल दुरुस्त मालूम होता है कि एक अंगरेज़ के लिये अंगरेज़ी सीखना ज़्यादा मुशकिल है बनिस्बत एक जरमन या फ़्राँसीसी के लिये जरमन या फ़्राँसीसी सीखना. वजह यह बताई जाती है कि फ़्रांसीसी, स्पैनिश और इटालियन रोमानी ज़बानें हैं जिनकी जड़ें अकसर लातीनी से निकली हैं इसलिये इन ज़बानों के बहुत से लफ़्ज़ ऐसे हैं जिन की जड़ वही होने के कारन उन सब लफ़्ज़ों का जो उस जड़ से निकले हैं समझना और याद करना बहुत ज़्यादा आसान है. यही हाल स्वीडिश, डैनिश और जरमन का है क्योंकि उन के अकसर लफ़्ज़ जरमैनिक जड़ों से निकले हुए हैं इसलिये जब एक जड़ सीख ली तो, उस जड़ में से जितने लफ़्ज़ अपनी बोली में आ गए हैं उनकी शकल चूँकि आपस में मिलती जुलती है और वह एक ही घराने के मालूम होते हैं, उन्हें समझना और याद रखना मुशकिल नहीं होता. अंगरेज़ी चूँकि एक खिचड़ी बोली है जिस में अकसर लातीनी जड़ों के लफ़्ज़ और जरमैनिक जड़ों के लफ़्ज़ ही नहीं, काफ़ी यूनानी लफ़्ज़ भी आ मिले हैं, इसलिये उन्हें जानने के लिये याददाश्त पर ज़्यादा ज़ोर डालना पड़ता है. बिलकुल ख़ालिस बोली तो दुनिया में न कोई हुई और न कोई है. थोड़े बिदेसी लफ़्ज़ तो हर ज़बान में आ ही जाते हैं. उन से ज़बान की बनावट में फ़रक़ नहीं आता, वह तो दाल में नमक मसाले का ही काम देते हैं.

अंगरेज़ी में यह दो भाँतिपन क्यों और कैसे आया? इस का जवाब इंगलैन्ड की हिस्ट्री देती है जिस में पड़ने का यहाँ कोई ज़रूरत नहीं. यह बताना ज़रूरी मालूम होता है कि चौदहवीं सदी से लेकर उन्नीसवीं सदी तक यानी पाँच सौ बरस इन दोनों में एक दूसरे को निकालने के लिये ख़ूब जंग रही लेकिन चली किसी की नहीं. कभी किसी का

اور بے لاگ سپاہی تھے جو نتیجوں کی پرواہ نہ کرتے ہوئے دیش اور دھرم کی خدمت کرتے کرتے ہمیشہ کے لئے آرام کی نیند سو گئے . ہم سب اللہ سے آئے ہیں اور اللہ ہی کی طرف ہم سب کو جانا ہے .

(" احرار " دہلی کے آدھار پر)

خالص بولی-کھچڑی بولی اور بولی کی دیوار

(بھائی مدن گوپال)

کچھ انگریزی ودوانوں کا یہ خیال درست معلوم ہوتا ہے کہ ایک انگریز کے لئے انگریزی سیکھنا زیادہ مشکل ہے بہ نسبت ایک جرمن یا فرانسیسی کے لئے جرمن یا فرانسیسی سیکھنا . وجہ یہ بتائی جاتی ہے کہ فرانسیسی' اسپینش اور اٹالین رومانی زبانیں ہیں جن کی جڑیں اکثر لاطینی سے نکلی ہیں اس لئے ان زبانوں کے بہت سے لفظ ایسے ہیں جن کی جڑ وہی ہونے کے کارن اُن سب لفظوں کا جو اُس جڑ سے نکلے ہیں سمجھنا اور یاد کرنا بہت زیادہ آسان ہے . یہی حال سوئیڈش' ڈینش اور جرمن کا ہے کیونکہ اُن کے اکثر لفظ جرمینک جڑوں سے نکلے ہوئے ہیں اس لئے جب ایک جڑ سیکھ لی تو' اُس جڑ میں سے جتنے لفظ اپنی بولی میں آگئے ہیں اُن کی شکل چونکہ آپس میں ملتی جلتی ہے اور وہ ایک ہی گھرانے کے معلوم ہوتے ہیں' اُنہیں سمجھنا اور یاد رکھنا مشکل نہیں ہوتا . انگریزی چونکہ ایک کھچڑی بولی ہے جس میں اکثر لاطینی جڑوں کے لفظ اور جرمینک جڑوں کے لفظ ہی نہیں' کافی یونانی لفظ بھی آملے ہیں' اس لئے اُنہیں جاننے کے لئے یاد داشت پر زیادہ زور ڈالنا پڑتا ہے . بالکل خالص بولی تو دنیا میں نہ کوئی ہوئی اور نہ کوئی ہے . تھوڑے بدیسی لفظ تو ہر زبان میں آہی جاتے ہیں . اُن سے زبان کی بناوٹ میں فرق نہیں آتا' وہ تو دال میں نمک مسالے کا ہی کام دیتے ہیں .

انگریزی میں یہ دو بھانتی پن کیوں اور کیسے آیا ؟ اس کا جواب انگلینڈ کی ہسٹری دیتی ہے جس میں پڑنے کی یہاں کوئی ضرورت نہیں . یہ بتانا ضروری معلوم ہوتا ہے کہ چودھویں صدی سے لیکر اُنیسویں صدی تک یعنی پانچ سو برس ان دونوں میں ایک دوسرے کو نکالنے کے لئے خوب جنگ رہی لیکن چلی کسی کی نہیں . کبھی کسی کا

सन 1921 में मेरी राजकाजी ज़िन्दगी शुरू हुई. कई र मौलाना से बहुत कुछ मत भेद हुआ. लेकिन मौलाना भी मिलते उसी पहले की सी मुहब्बत और उतने ही पने पन से मिलते. मेरे दिल में भी मौलाना का अदब र मान बढ़ता चला गया.

सन 1947 में पूरबी पंजाब के उजड़ने के साथ लुधि-ना भी उजड़ा. मैं भी बेवतन होकर दिल्ली आगया. ल्ली में मौलाना हसरत से मिला. हमारी मुसीबतों हाल सुनकर बहुत हमदर्दी ज़ाहिर की. वालिद साहब देहान्त की ख़बर सुन कर बहुत दुखी हुए. इस के द मौलाना जब जब दिल्ली आते मेरे मकान पर ज़रूर ते और हमेशा मुझसे और बच्चों से मुहब्बत की बातें ते.

24 अप्रैल सन '51 को मैं किसी काम से लखनऊ चा. मौलाना हसरत लखनऊ ठहरे हुए थे. क़रीब दो ीने से बीमार थे. इलाज हो रहा था. 25 अप्रैल की सुबह मौलाना हसरत से मिलने गया. मैंने देखते ही समझ या कि अब सच्चे घर की तरफ़ जाने की तैयारियाँ हैं. ाम कर के बराबर की चारपाई पर बैठ गया. मौलाना आहिस्ता आहिस्ता अपना हाथ बढ़ाया. उनका हाथ ने दोनों हाथों में लेकर कुछ रुक कर मैंने कहा—"आप याद होगा पहली मरतबा आप सन 1912 में लुधि-ना आए थे. मेरे एक सवाल के जवाब में आप ने फ़र-या था कि मैं इतना तन्दुरुस्त इस लिये हूँ कि मेरे दिल किसी कोने में मौत का डर बाक़ी नहीं रहा."

मौलाना ने जवाब दिया—"मुझे याद है."

मैंने फिर कहना शुरू किया—"एक इनसान इनसानी म के लिये और एक मुसलमान इसलाम के लिये अपनी न्दगी में जो अच्छी से अच्छी ख़िदमत कर सकता है पने उस में कोई कसर उठा न रक्खी. अल्लाह के यहाँ सी का कोई अमल फ़ज़ूल नहीं जाता. आपको भी इस नेक फल ज़रूर मिलेगा."

मौलाना ने कमज़ोर आवाज़ में जवाब दिया—"इस शुबह है."

इस फ़िक़रे के साथ साथ मौलाना की आँखों से आंसू ी हो गए. मौलाना का यह जवाब ख़ुदा के ख़ौफ़ में डूबा ा था. ऐसा जवाब एक रूहानी परहेज़गार आदमी ही सकता है.

मौलाना हसरत आजकल की ज़बान में सच्चे मुसल-। और सच्चे कम्युनिस्ट थे. इसी लिये वह किसी ामत में खप न सके. वह हिन्दुस्तान की राजकाजी न्दगी का एक ख़ास बाब (अध्याय) थे. वह एक बहादुर

سن 1921 میں میری راج کاجی زندگی شروع ہوئی۔ کئی بار مولانا سے بہت کچھ مت بھید ہوا۔ لیکن مولانا جب بھی ملتے اُسی پہلے کی سی محبت اور اتنے ہی اپنے پن سے ملتے۔ میرے دل میں بھی مولانا کا ادب اور مان بڑھتا چلا گیا۔

سن 1947 میں پوربی پنجاب کے اُجڑنے کے ساتھ لدھیانہ بھی اجڑا۔ میں بھی بے وطن ہو کر دلی آگیا۔ دلی میں مولانا حسرت سے ملا۔ ہماری مصیبتوں کا حال سن کر بہت ہمدردی ظاہر کی۔ والد صاحب کے دیہانت کی خبر سنکر بہت دکھی ہوئے۔ اِسکے بعد مولانا جب جب دلی آتے میرے مکان پر ضرور آتے اور ہمیشہ مجھ سے اور بچوں سے محبت کی باتیں کرتے۔

24 اپریل سن '51 کو میں کسی کام سے لکھنؤ پہونچا۔ مولانا حسرت لکھنؤ ٹھہرے ہوئے تھے۔ قریب دو مہینے سے بیمار تھے۔ علاج ہو رہا تھا۔ 25 اپریل کی صبح میں مولانا حسرت سے ملنے گیا۔ میں نے دیکھتے ہی سمجھ لیا کہ اب سچے گھر کی طرف جانے کی تیاریاں ہیں۔ سلام کرکے برابر کی چار پائی پر بیٹھ گیا۔ مولانا نے آہستہ آہستہ اپنا ہاتھ بڑھایا۔ اُن کا ہاتھ اپنے دونوں ہاتھوں میں لے کر کچھ رک کر میں نے کہا —" آپ کو یاد ہوگا پہلی مرتبہ آپ سن 1912 میں لدھیانہ آئے تھے۔ میرے ایک سوال کے جواب میں آپنے فرمایا تھا کہ میں اتنا تندرست اس لئے ہوں کہ میرے دل کے کسی کونے میں موت کا ڈر باقی نہیں رہا۔"

مولانا نے جواب دیا —" مجھے یاد ہے۔"

میں نے پھر کہنا شروع کیا —' ایک انسان انسانی قوم کے لئے اور ایک مسلمان اسلام کے لئے اپنی زندگی میں جو اچھی سے اچھی خدمت کر سکتا ہے آپ نے اُسمیں کوئی کسر اُٹھا نہ رکھی۔ اللہ کے یہاں کسی کا کوئی عمل فضول نہیں جاتا۔ آپ کو بھی اِس کا نیک پھل ضرور ملے گا۔"

مولانا نے کمزور آواز میں جواب دیا —" [illegible] میں شبہ ہے۔"

اس فقرے کے ساتھ ساتھ مولانا کی آنکھوں سے آنسو جاری ہوگئے۔ مولانا کا یہ جواب خدا کے خوف میں ڈوبا ہوا تھا۔ ایسا جواب ایک روحانی پرہیزگار آدمی ہی دے سکتا ہے۔

مولانا حسرت آجکل کی زبان میں سچے مسلمان اور سچے کمیونسٹ تھے۔ اسی لئے وہ کسی جماعت میں کھپ نہ سکے۔ وہ ہندستان کی راج کاجی زندگی کا ایک خاص باب (ادھیائے) تھے۔ وہ ایک بہادر

जवाब मिला—"मेरे दिल के किसी कोने में मौत का डर नहीं रहा. शहीद होने का शौक़ बढ़ता जा रहा है. सब मुशकिलों से गुजर चुका हूँ. अब एक फाँसी रह गई है. इस के लिये अपने को हर वक़्त तैयार पाता हूँ."

यह जुमले मौलाना की जबान से बहुत ही क़ुदरती और सीधे सादे ढंग से निकले. मेरे लिये इन जुमलों में बहुत कुछ था. इन से मेरे दिल व दिमाग़ पर जो असर होना चाहिये था वही हुआ.

"इस वक़्त आप का माहाना खर्च क्या है ?"

"सिर्फ़ पाँच रुपए माहवार में मैं अपनी जिन्दगी अच्छी तरह गुजार लेता हूँ. जिन्दगी की जरूरतों को कम से कम कर दिया है."

मेरे वालिद साहब कानपुर में तालीम के लिये ठहरे हुए थे. उसी जमाने में मौलाना हसरत से उन का गहरा मेल जोल होगया. वालिद साहब से मौलाना हसरत की जिन्दगी के हालात सुनने का अकसर मौक़ा मिला.

एक दिन वालिद साहब कहने लगे कि हसरत की तरह जिन्दगी गुज़ारने वाले आदमी बहुत ही कम होंगे. एक सफ़र में मेरा उन का साथ हुआ. मेरे साथ घर का बना खाना था जो तीन चार आदमियों के लिये काफ़ी था. दोपहर के वक़्त मैंने खाना निकाला और मौलाना हसरत से खाना खाने के लिये कहा. उन्होंने इनकार कर दिया. जब मैंने बहुत जिद की तो कहने लगे—"भाई ! मैं कई बरस से लगातार रोजे रखता हूँ. मैं जिस रास्ते पर चल रहा हूँ उसकी हर तकलीफ़ बरदाश्त करने के लिये जिस्म को आदी बनाना है."

वालिद साहब ने बताया कि मौलाना हसरत का यह अमल क़रीब बीस बरस जारी रहा और जहाँ तक हो सकता था कोई न कोई बहाना लेकर उसे साथियों और दोस्तों से छिपाते थे.

मौलाना हसरत अलीगढ़ से एक रिसाला 'उरदू-ए-मुअल्ला' निकालते थे. उन दिनों मौलाना के पास इतना रुपया न था कि नौकर रख कर काम कराते, इसलिये मौलाना खुद और उनकी बेगम साहिबा और उन का एक लायक़ शागिर्द तीनों मिल कर प्रेस की हैंड मशीन चलाते थे, खुद ही पत्थर जमाते थे और पैक करके डाक खाने पहुंचाने तक के सब काम खुद ही करते थे. इसी परचे से आप की रोजी थी.

मौलाना हसरत का वालिद साहब से जो सम्बन्ध था उसकी बिना पर मैं अकसर मौलाना से मिलता रहा. हर बार मुलाक़ात के बाद जब लौटा तो बहुत कुछ ले कर लौटा.

جواب ملا—" میرے دل کے کسی کونے میں موت کا ڈر نہیں رہا ۔ شہید ہونے کا شوق بڑھتا جا رہا ہے ۔ سب مشکلوں سے گذر چکا ہوں۔ اب ایک پھانسی رہ گئی ہے۔ اسکے لئے اپنے کو ہر وقت تیار پاتا ہوں ۔"

یہ جملے مولانا کی زبان سے بہت ہی قدرتی اور سیدھے سادے ڈھنگ سے نکلے ۔ میرے لئے اُن جملوں میں بہت کچھ تھا ۔ ان سے میرے دل اور دماغ پر جو اثر ہونا چاہئے تھا وہی ہوا ۔

" اس وقت آپ کا ماہانہ خرچ کیا ہے ؟"

" صرف پانچ روپے ماہوار میں میں اپنی زندگی اچھی طرح گذار لیتا ہوں ۔ زندگی کی ضرورتوں کو کم سے کم کر دیا ہے ۔"

میرے والد صاحب کانپور میں تعلیم کے لئے ٹھہرے ہوئے تھے ۔ اُسی زمانے میں مولانا حسرت سے اُن کا گہرا میل جول ہوگیا ۔ والد صاحب سے مولانا حسرت کی زندگی کے حالات سننے کا اکثر موقع ملا ۔

ایک دن والد صاحب کہنے لگے کہ حسرت کی طرح زندگی گذارنے والے آدمی بہت ہی کم ہونگے ۔ ایک سفر میں میرا اُن کا ساتھ ہوا ۔ میرے ساتھ گھر کا بنا کھانا تھا جو تین چار آدمیوں کے لئے کافی تھا دوپہر کے وقت میں نے کھانا نکالا اور مولانا حسرت سے کھانا کھانے کے لئے کہا ۔ انہوں نے انکار کر دیا ۔ جب میں نے بہت ضد کی تو کہنے لگے —" بھائی ! میں کئی برس سے لگاتار روزے رکھتا ہوں ۔ میں جس راستے پر چل رہا ہوں اُسکی ہر تکلیف برداشت کرنے کے لئے جسم کو عادی بنانا ہے ۔"

والد صاحب نے بتایا کہ مولانا حسرت کا یہ عمل قریب بیس برس جاری رہا اور جہاں تک ہوسکتا تھا کوئی نہ کوئی بہانہ لیکر اسے ساتھیوں اور دوستوں سے چھپاتے تھے ۔

مولانا حسرت علی گڈھ سے ایک رسالہ ' اُردوئے معلیٰ ' نکالتے تھے ۔ اُن دنوں مولانا کے پاس اتنا روپیہ نہ تھا کہ نوکر رکھکر کام کراتے' اس لئے مولانا خود اور اُن کی بیگم صاحبہ اور اُن کا ایک لائق شاگرد تینوں ملکر پریس کی ہینڈ مشین چلاتے تھے خود ہی پتھر جماتے تھے اور پیک کرکے ڈاکخانے پہونچانے تک کے سب کام خود ہی کرتے تھے ۔ اسی پرچے سے آپ کی روزی تھی ۔

مولانا حسرت کا والد صاحب سے جو سمبندھ تھا اُسکی بنا پر میں اکثر مولانا سے ملتا رہا ۔ ہر بار ملاقات کے بعد جب لوٹا تو بہت کچھ لے کر لوٹا ۔

मौलाना हसरत मोहानी से मुलाक़ात

(भाई मौलाना हबीबुर्रहमान लुधियानवी)

महीना तो याद नहीं. सन 1912 की एक सुबह को किसीने दरवाज़ा खटखटाया. मैंने फ़ौरन दरवाज़ा खोला. मेरे सामने एक बाइज़्ज़त इनसान जिसके चेहरे पर मतानत, संजीदगी और परहेज़गारी के आसार दिखाई देते थे बहुत ही सादा मगर साफ़ सुथरे लिबास में खड़ा था.

"आप का इस्म शरीफ़ (शुभ नाम) ?"

"फ़ज़लुल हसन."

"सैयद फ़ज़लुल हसन हसरत ?"

"जी हाँ."

मौलाना हसरत से मेरी यह पहली मुलाक़ात थी.

मैंने फ़ौरन दो मनज़िली मसजिद का वह कमरा जिस में मेरे वालिद साहब रहते थे खोल दिया और मौलाना हसरत को उसी कमरे में ठहराया.

उस ज़माने में मौलाना हसरत बहुत ही ख़तरनाक आदमी समझे जाते थे, इस लिये अंगरेज़ सरकार की तरफ़ से सी. आई. डी. के दो आदमी हर वक़्त मौलाना की निगरानी और देख भाल के लिये रहते थे.

मौलाना को अपने मकान पर देख कर मुझे कितनी ख़ुशी हुई इसका क्या कोई अन्दाज़ा कर सकता है ! रसमी बात चीत के बाद मैंने पूछा—"क्या आप के लुधियाना तशरीफ़ लाने का मक़सद सिर्फ़ क़िबला वालिद साहब से मुलाक़ात करना है या कुछ और भी ?"

उन्होंने जवाब दिया—"अंगरेज़ी माल के हिन्दुस्तान में बाइकाट की तहरीक चलाना चाहता हूँ. इस सिलसिले में हिन्दुस्तान के उलमा से फ़तवा लेने के लिये एक मसौदा तैयार किया है. इस वक़्त देवबन्द से आ रहा हूँ. इस फ़तवे पर देवबन्द में सिर्फ़ शैख़ुल हिन्द मौलाना महमूदुल हसन ने दस्तख़त किये हैं. आप के वालिद साहब से दस्तख़त लेने के लिये लुधियाने आया हूँ."

उन दिनों वालिद साहब लुधियाना न थे इसलिये फ़तवा पर उनके दस्तख़त न मिल सके.

मौलाना डेढ़ दिन लुधियाना ठहरे. उनके इस क़याम का मेरी तबीयत पर बहुत असर पड़ा और इस थोड़े से अरसे में मुल्की और मज़हबी हालात पर उन्होंने मुझे बहुत कुछ बताया.

मौलाना के रवाना होने से थोड़ी देर पहले हिम्मत कर के मैंने पूछा—"आप की तन्दुरुस्ती इस क़दर अच्छी कैसे है ?"

مولانا حسرت موهانی سے ملاقات

(بهائی مولانا حبیب الرحمان لدهیانوی)

مهینه تو یاد نهیں. سن 1912 کی ایک صبح کو کسی نے دروازہ کهٹکهٹایا. میں نے فوراً دروازہ کهولا. میرے سامنے ایک باعزت انسان جسکے چهرے پر متانت' سنجیدگی اور پرهیزگاری کے آثار دکهائی دیتے تهے بہت هی سادہ مگر صاف ستهرے لباس میں کهڑا تها.

" آپکا اِسم شریف (شبھ نام) ؟"

" فضل الحسن ."

" سید فضل الحسن حسرت ؟"

" جی هاں ."

مولانا حسرت سے میری یہ پہلی ملاقات تهی .

میں نے فوراً دومنزلی مسجد کا وہ کمرہ جس میں میرے والد صاحب رهتے تهے کهول دیا اور مولانا حسرت کو اُسی کمرے میں ٹهہرایا .

اُس زمانے میں مولانا حسرت بہت هی خطرناک آدمی سمجهے جاتے تهے' اس لئے انگریز سرکار کی طرف سے سی. آئی. ڈی. کے دو آدمی هر وقت مولانا کی نگرانی اور دیکھ بهال کے لئے رهتے تهے .

مولانا کو اپنے مکان پر دیکهکر مجهے کتنی خوشی هوئی اس کا کیا کوئی اندازہ کر سکتا هے ! رسمی بات چیت کے بعد میں نے پوچها — " کیا آپ کے لدهیانہ تشریف لانے کا مقصد صرف قبلہ والد صاحب سے ملاقات کرنا هے یا کچھ اور بهی ؟"

اُنهوں نے جواب دیا — " انگریزی مال کے هندستان میں بائیکاٹ کی تحریک چلانا چاهتا هوں . اس سلسلے میں هندستان کے علما کے فتوی لینے کے لئے ایک مسودہ تیار کیا هے . اس وقت دیو بند سے آرها هوں . اِس فتوی پر دیو بند میں صرف شیخ الهند مولانا محمودالحسن نے دستخط کئے هیں . آپ کے والد صاحب سے دستخط لینے کے لئے لدهیانے آیا هوں ."

اُن دنوں والد صاحب لدهیانہ نہ تهے اسلئے فتوی پر اُن کے دستخط نہ مل سکے .

مولانا ڈیڑھ دن لدهیانہ ٹهہرے . اُن کے اِس قیام کا میری طبیعت پر بہت اثر پڑا اور اس تهوڑے سے عرصے میں ملکی اور مذهبی حالات پر اُنهوں نے مجهے بہت کچھ بتایا .

مولانا کے روانہ هونے سے تهوڑی دیر پہلے همت کرکے میں نے پوچها — " آپ کی تندرستی اس قدر اچهی کیسے هے ؟"

वर्दी पहने टालेस्को में घूम रहे थे. वह नई नई चीज़ें देख रहे थे. दूसरे दिन उनके एक दल ने "अपने" लेखक के दर्शन करने का निश्चय किया. उन लोगों ने अपने आने की खबर गोर्की को पहले से नहीं दी थी . रूसी भाई चारे के मुताबिक़ यह बात एकदम साफ़ थी कि उनका लेखक उनका स्वागत करेगा ही. उन्होंने ठीक ही सोचा था. जब वह लोग आए तो गोर्की ने उनका स्वागत किया और अन्दर ले गए. दूसरे दिन गोर्की ने मुझे हँसते हुए सुनाया कि इन लोगों ने (जिनकी सेवा गोर्की के लिये सब से बड़ी चीज़ थी) उन्हें हैरान कर डाला. घर में घुसते घुसते उन्होंने पूछना शुरू किया—"आप यहां कैसे रहते हैं ?" "आपके रहने का ढंग एक दम बुर्जुआ है—और फिर आप रूस क्यों नहीं चलते ?'' गोर्की को इस सब की जवाबदही करनी पड़ी. असल में यह सीधे सादे भोले भाले लोग उतने कठोर नहीं थे जितना कि वह दिखा रहे थे. उन लोगों ने आराम से चाय पी, बात चीत की और चलते वक़्त एक एक करके गोर्की के गले लगे. यह घटना अचरज भरी चीज़ थी. गोर्की इस नई पीढ़ी के भोले पन से मुग्ध हो गए थे. इन लोगों की बेतकल्लुफ़ी से उन्हें ज़रा भी परेशानी नहीं हुई. वह बार बार कह रहे थे—"हम लोगों की दुनिया में कितना फ़रक़ था ! या तो हम लोग डरपोक होते थे या बेरहम. लेकिन आत्मविश्वास तो नाम को भी नहीं था.'' और जब मैंने कहा—"मेरे ख़याल में आपकी सबसे बड़ी इच्छा उनके साथ ही चले जाने की थी.'' तो उन्होंने मेरी ओर देखा और कहा—"आप ने कैसे जान लिया ? सचमुच आख़ीर तक मैं सोच रहा था कि मैं किताबें, काग़ज़ वग़ैरा सब कुछ छोड़ छाड़ कर इन जवानों के साथ पंद्रह दिन के लिये चला जाऊं. इससे मुझे मालूम हो जाता कि रूस अब क्या है. दूर रहने से आदमी अपनी सबसे अच्छी चीज़ को भूल जाता है और हममें से किसी ने निर्वासन (जलावतनी) में कोई भी काम की चीज़ नहीं लिखी.''

अनुवादक—प्रकाश चन्द्र चतुर्वेदी

तमाम सोना

(भाई नज्म आफ़न्दी)

माया माटी है और सोना है तू,
संसार की हाट में खिलौना है तू.
समझा ही नहीं आपको मूरख लोभी,
बाहर भीतर तमाम सोना है तू.

وردی پہنے ٹالیسکو میں گھوم رہے تھے. وہ نئی نئی چیزیں دیکھ رہے تھے. دوسرے دن اُن کے ایک دل نے "اپنے" لیکھک کے درشن کرنے کا نشچے کیا. اُن لوگوں نے اپنے آنے کی خبر گورکی کو پہلے سے نہیں دی تھی. روسی بھائی چارے کے مطابق یہ بات ایک دم صاف تھی کہ اُن کا لیکھک اُن کا سواگت کرے گا ہی. اُنہوں نے ٹھیک ہی سوچا تھا. جب وہ لوگ آئے تو گورکی نے اُن کا سواگت کیا اور اندر لے گئے. دوسرے دن گورکی نے مجھے ہنستے ہوئے سنایا کہ اِن لوگوں نے (جنکی سیوا گورکی کے لئے سب سے بڑی چیز تھی) اُنہیں حیران کر ڈالا. گھر میں گھستے گھستے اُنہوں نے پوچھنا شروع کیا—" آپ یہاں کیسے رہتے ہیں ؟" " آپ کے رہنے کا ڈھنگ ایک دم برژوا ہے — اور پھر آپ روس کیوں نہیں چلتے ؟" گورکی کو اِس سب کی جوابدہی کرنی پڑی. اصل میں یہ سیدھے سادے بھولے بھالے لوگ اُتنے کٹھور نہیں تھے جتنا کہ وہ دکھا رہے تھے. اُن لوگوں نے آرام سے چائے پی، بات چیت کی اور چلتے وقت ایک ایک کرکے گورکی کے گلے لگے. یہ گھٹنا اچرج بھری چیز تھی. گورکی اِس نئی پیڑھی کے بھولے پن سے مگدھ ہوگئے تھے. اِن لوگوں کی بے تکلفی سے اُنہیں ذرا بھی پریشانی نہیں ہوئی. وہ بار بار کہہ رہے تھے—" ہم لوگوں کی دنیا میں کتنا فرق تھا ! یا تو ہم لوگ ڈرپوک ہوتے تھے یا بے رحم. لیکن آتم وشواس تو نام کو بھی نہیں تھا." اور جب میں نے کہا —" میرے خیال میں آپ کی سب سے بڑی اِچھا اُن کے ساتھ ہی چلے جانے کی تھی" تو اُنہوں نے میری اور دیکھا اور کہا —" آپ نے کیسے جان لیا ؟ سچ مچ آخیر تک میں سوچ رہا تھا کہ میں کتابیں، کاغذ وغیرہ سب کچھ چھوڑ چھاڑ کر اِن جوانوں کے ساتھ پندرہ دن کے لئے چلا جاؤں. اِس سے مجھے معلوم ہوجاتا کہ روس اب کیا ہے. دور رہنے سے آدمی اپنی سب سے اچھی چیز کو بھول جاتا ہے اور ہم میں سے کسی نے نرواسن (جلا وطنی) میں کوئی کام کی چیز نہیں لکھی".

اِنوادک — پرکاش چندر چترویدی

تمام سونا

(بھائی نجم آفندی)

مایا ماٹی ہے اور سونا ہے تو،
سنسار کی ہاٹ میں کھلونا ہے تو.
سمجھا ہی نہیں آپ کو مورکھ لوبھی،
باہر بھیتر تمام سونا ہے تو.

गाड़ी हाँकने वाला, मोची या आवारा समझ सकता था. वह पूरी तरह रूसी 'मामूली आदमी' थे. रास्ते में कोई भी उनकी तरफ़ बिना ध्यान दिये और बिना कोई ख़ास बात देखे निकल जा सकता था लेकिन आमने-सामने बैठ कर बात चीत करने पर मालूम हो जाता था कि वह कौन हैं. अन जाने में ही वह अपनी कहानियों के पात्र (किरदार) के साथ सहज ही घुल-मिल जाते थे. एकबार उन्होंने एक बूढ़े आदमी का हाल सुनाया और उनकी बात का तरजुमा होने के पहले ही उस बूढ़े की पूरी शकल मेरे सामने आ गई. यह कुबड़ा, थका हुआ बूढ़ा उन्हें यात्रा के समय मिला था. आप ही आप गोर्की का सिर आगे को झुक गया, कंधे भी जैसे बोझ से झुक गए और वह आँखें, जो अभी तक चमक रही थीं, उनमें थकान आगई. आवाज़ भी लड़खड़ाने लगी. अनजाने में ही गोर्की वह बूढ़ा बन गए. फ़ौरन ही कोई हँसी की बात आई तो गोर्की ठट्ठा मार कर हँसने लगे. उन का चेहरा फिर से चमकने लगा. जब वह गांव और जनता के बारे में बात चीत करते तो उन्हें बड़ा आनन्द आता था. उनकी हर एक बात, हरेक चीज़ सरल और स्वाभाविक थी. उनकी चालढाल, बैठने का ढंग, हँसी वग़ैरा सब कुछ ! एक दिन शाम को उन्होंने पुराने रूसी सिपाही का भेस बनाया, कमर में एक तलवार लटका ली और उनकी आँखें कोई ख़ास चीज़ देखने लगीं; भवें तन गईं; चाल में तेज़ी आगई. लेकिन एक छन बाद यह भेस हटाते ही बच्चों की तरह मधुर खिलखिलाहट उनके चेहरे पर खेलने लगी. उनके अन्दर अचरज भरी शक्ति थी. शरीर विज्ञान के सारे बंधन तोड़ कर वह केवल एक फेफड़े के सहारे ज़िन्दा रहते थे. उन में बे पनाह इच्छा शक्ति थी और अपना फ़र्ज़ पूरा करने की अभिलाषा ही उन्हें ज़िन्दा रखती थी. रोज़ सुबह वह अपने सुन्दर अक्षरों में अपने नावेल का हिस्सा लिखते थे और सैकड़ों सवालों के जवाब देते थे जो उन के देश के नए लेखक और कारकर्ता ख़तों के ज़रिये पूछते थे. उनके साथ रह कर मुझे रूस का तरजबा हुआ, बोलशेविक रूस का नहीं, पुराने रूस का भी नहीं, बल्कि रूस की महान ताक़तवर जनता का. उन दिनों वह पूरी तरह से किसी फ़ैसले पर नहीं पहुँच पाए थे. पुराने क्रांतिकारी होने के नाते उन्हें क्रांति की आकांक्षा थी; वह लेनिन के मित्र थे, फिर भी पूरी तरह से पार्टी में शामिल होने से झिझक रहे थे. लेकिन उन्हें सदा गाँव की चिन्ता लगी रहती थी.

संजोग से मुझे एक ऐसा सीन दिखाई दिया जो रूस की झाँकी था. इससे उनके मन की खींचातानी की तस्वीर मेरे सामने आगई. उन दिनों पहला रूसी जहाज़ नेपल्स के बन्दरगाह पर लगा था. जवान जहाज़ी जिन्होंने पश्चिम की दुनिया कभी नहीं देखी थी अपनी

گاڑی هانکنے والا' موچی یا آوارہ سمجھ سکتا تھا . وہ پوری طرح روسی 'معمولی آدمی' تھے . راستے میں کوئی بھی اُنکی طرف بنا دھیان دیئے اور بنا کوئی خاص بات دیکھے نکل جاسکتا تھا . لیکن آمنے سامنے بیٹھکر بات چیت کرنے پر معلوم ہو جاتا تھا کہ وہ کون ہیں . ان جانے میں ہی وہ اپنی کہانیوں کے پاتر (کردار) کے ساتھ سہج ہی گھل مل جاتے تھے . ایک بار اُنھوں نے ایک بوڑھے آدمی کا حال سنایا اور اُنکی بات کا ترجمہ ہونے کے پہلے ہی اُس بوڑھے کی پوری شکل میرے سامنے آگئی . یہ کبڑا' تھکا ہوا بوڑھا اُنھیں یاترا کے سمے ملا تھا . آپ ہی آپ گورکی کا سر آگے کو جھک گیا . کندھے بھی جیسے بوجھ سے جھک گئے اور وہ آنکھیں' جو ابھی تک چمک رہی تھیں' اُن میں تھکان آگئی . آواز بھی لڑکھڑانے لگی . ان جانے میں ہی گورکی وہ بوڑھا بن گئے . فوراً ہی کوئی هنسی کی بات آئی تو گورکی ٹھٹھا مارکر هنسنے لگے اُن کا چہرہ پھر سے چمکنے لگا . جب وہ گاؤں اور جنتا کے بارے میں بات چیت کرتے تو اُنھیں بڑا آنند آتا تھا . اُنکی هر ایک بات' هر ایک چیز سرل اور سوابھاوک تھی . اُنکی چال ڈھال' بیٹھنے کا ڈھنگ' هنسی وغیرہ سب کچھ ! ایک دن شام کو اُنھوں نے پرانے روسی سپاهی کا بھیس بنایا' کمر میں ایک تلوار لٹکالی اور اُنکی آنکھیں کوئی خاص چیز دیکھنے لگیں؛ بھویں تن گئیں؛ چال میں تیزی آگئی . لیکن ایک چھن بعد یہ بھیس ہٹاتے ہی بچوں کی طرح مدھر کھلکھلاهٹ اُنکے چہرے پر کھیلنے لگی . اُنکے اندر اچرج بھری شکتی تھی . شریر وگیان کے سارے بندھن توڑکر وہ کیول ایک پھیپھڑے کے سہارے زندہ رهتے تھے اُن میں بے پناہ اِچھا شکتی تھی اور اپنا فرض پورا کرنے کی ابھیلاشا هی انھیں زندہ رکھتی تھی . روز صبح وہ اپنے سندر اکشروں میں اپنے ناول کا حصہ لکھتے تھے اور سیکڑوں سوالوں کے جواب دیتے تھے جو اُن کے دیش کے نئے لیکھک اور کارکرتا خطوں کے ذریعے پوچھتے تھے . اُنکے ساتھ رهکر مجھے روس کا تجربہ ہوا' بولشیوک روس کا نہیں' پرانے روس کا بھی نہیں' بلکہ روس کی مہان طاقتور جنتا کا . اُن دنوں وہ پوری طرح سے کسی فیصلے پر نہیں پہنچ پائے تھے . پرانے کرانتکاری ہونے کے ناتے انھیں کرانتی کی آکانشا تھی؛ وہ لینن کے متر تھے' پھر بھی پوری طرح سے پارٹی میں شامل ہونے سے جھجھک رہے تھے . لیکن انھیں سدا گاؤں کی چنتا لگی رهتی تھی .

سنجوگ سے مجھے ایک ایسا سین دکھائی دیا جو کہ روس کی جھانکی تھا . اِس سے اُن کے من کی کھینچا تانی کی پوری تصویر میرے سامنے آگئی . اُن دنوں پہلا روسی جہاز نیپلز کے بندرگاہ پر لگا تھا . جوان جہازی جنھوں نے پچھم کی دنیا کبھی نہیں دیکھی تھی اپنی

12. हैदराबाद (जागीरों का अन्त) क़ायदा, 1358 फ़सली (1358 फ़सली का नम्बर उनहत्तर)

13. हैदराबाद जागीर (मुआवज़ा) क़ायदा, 1359 फ़सली (1359 फ़सली का नम्बर पच्चीस)."

Proprietor:—मालिक

Sub-proprietor:—उप-मालिक

Under-proprietor:—नायब-मालिक

Intermediary:—बिचौलिया

Tenure:—पट्टा

Conversion:—बदलाव

Alienation of land:—ज़मीन दूसरे के नाम कर देना.

Commutation:—मुआवज़ा

गोर्की की एक झलक

(लेखक स्टीफ़न ज़्विग)

रूस से वापस आते वक़्त जो सबसे क़ीमती चीज़ मैं अपने साथ लाया वह थी गोर्की के साथ दोस्ती, जिनसे पहली बार मास्को में ही मुलाक़ात हुई थी. एक दो साल बाद मैं उनसे सौरेन्टो में मिला जहां वह अपनी तन्दुरुस्ती सुधारने के लिये गए हुए थे. इस बार उनका मेहमान होकर तीन कभी न भूलने वाले दिन बिताने का सौभाग्य मुझे मिला.

इस मुलाक़ात का भी एक दिलचस्प पहलू था. गोर्की कोई विदेशी भाषा नहीं जानते थे और मैं रूसी भाषा नहीं जानता था. इसकी वजह से होना तो यह चाहिये था कि या तो हम दोनों एक दूसरे के सामने मूर्ति की तरह चुप चाप बैठे रहें या बात चीत करें तो अपनी मित्र मैरी बुडबर्ग की मारफ़त जो दुभाशिए या तरजुमान का काम करती थीं. गोर्की दुनिया के साहित्य के सबसे महान कहानी कार थे. कहानी उनके लिये केवल कला ही नहीं थी बल्कि वह उनके समूचे जीवन की आईना भी थी. वह जिन्दगी से भरे पुरे थे और अपनी रचनाओं के साथ एक रूप हो जाते थे इसलिये उनकी भाषा जाने बिना ही उनकी बात उनके चेहरे से समझ में आ जाती थी. वह पूरी तरह से 'रूसी' थे. इस भाव को दूसरे शब्दों में नहीं कहा जा सकता. उनकी शक्ल में कोई भी चीज ऐसी नहीं थी जो दूसरों को अपनी तरफ़ खींचे. कोई भी इस लम्बे आदमी को मजदूर, किसान,

1. حیدرآباد (جاگیروں کا انت) قاعدہ، 1358 (1358 فصلی کا نمبر اُنہتر).

1. حیدرآباد جاگیر (معاوضہ) قاعدہ، 1359 (1359 فصلی کا نمبر پچیس)"

Proprietor:-- مالک

Sub-proprietor: — اُپ مالک

Under proprietor: — نائب مالک

Intermediary: — بچولیا

Tenure: — پٹہ

Conversion: — بدلاؤ

Alienation of land: — دوسرے کے نام کر دینا

Commutation: -- معاوضہ

گورکی کی ایک جھلک

(لیکھک اسٹیفن زویگ)

ں سے واپس آتے وقت جو سب سے قیمتی چیز
ھ ساتھ لایا وہ تھی گورکی کے ساتھ دوستی' جن سے
بار ماسکو میں ہی ملاقات ہوئی تھی۔ ایک دو
عد میں اُن سے سوریلنٹو میں ملا جہاں وہ اپنی
ی سدھارنے کے لئے گئے ہوئے تھے۔ اِس بار اُن کا
ہوکر تین کبھی نہ بھولنے والے دن بتانے کا
ہ مجھے ملا۔

ں ملاقات کا بھی ایک دلچسپ پہلو تھا۔ گورکی
دیشی بھاشا نہیں جانتے تھے اور میں روسی بھاشا
جانتا تھا۔ اسکی وجہ سے ہونا تو یہ چاہئے تھا
و ہم دونوں ایک دوسرے کے سامنے مورتی کی طرح
چاپ بیٹھے رہیں یا بات چیت کریں تو اپنی
ری بڈبرگ کی معرفت جو دو بھاشئے یا ترجمان
ی تھیں۔ گورکی دنیا کے ساہتیہ کے سب سے
کہانی کار تھے۔ کہانی اُنکے لئے کیول کلا ہی
ہی بلکہ وہ اُنکے سموچے جیون کی آئینہ بھی تھی۔
ی سے بھرے پورے تھے اور اپنی رچناؤں کے ساتھ
وپ ہو جاتے تھے۔ اسلئے اُنکی بھاشا جانے بناہی
بات اُنکے چہرے سے سمجھ میں آجاتی تھی۔
ی طرح سے 'روسی' تھے۔ اِس بھاو کو دوسرے شبدوں
میں نہیں کہا جاسکتا۔ اُنکی شکل میں کوئی بھی
سی نہیں تھی جو دوسروں کو اپنی طرف
۔ کوئی بھی اس لمبے آدمی کو مزدور' کسان'

12. **दफ़ा 372 में सुधार**—विधान की दफ़ा 372 की धारा (3) की उप-धारा (ए) में, "दो बरस" शब्दों की जगह "तीन बरस" शब्द रख दिये जायंगे.

13. **दफ़ा 376 में सुधार**—विधान की दफ़ा 376 की धारा (1) के अन्त में, नीचे लिखे शब्द जोड़े जायंगे, यानीः—

"कोई ऐसा जज, इस बात के रहते भी कि वह भारत का नागर नहीं है, उस हाई कोर्ट का सरजज या किसी दूसरे हाई कोर्ट का सरजज या कोई दूसरा जज नियोजे जाने का का पात्र होगा."

14. **नवीं पट्टी का जोड़ा जाना**—विधान की आठवीं पट्टी के बाद, नीचे लिखी पट्टी जोड़ दी जायगी यानीः—

"नवीं पट्टी

[दफ़ा 31 बी]

1. बिहार जमीन सुधार ऐक्ट, 1950 (1950 का बेहार ऐक्ट नम्बर तीस).

2. बम्बई पट्टादारी और काश्तकारी जमीन ऐक्ट, 948 (1948 का बम्बई ऐक्ट नम्बर सरसठ).

3. बम्बई मालकी पट्टा अन्त ऐक्ट, 1949 (1949 ा बम्बई ऐक्ट नम्बर इकसठ).

4. बम्बई तालुक़दारी पट्टा अन्त ऐक्ट, 1949 (1949 ा बम्बई ऐक्ट नम्बर बासठ).

5. पंचमहाल मेहवासी पट्टा अन्त ऐक्ट, 1949 1949 का बम्बई ऐक्ट नम्बर तिरसठ).

6. बम्बई खोटी अन्त ऐक्ट, 1950 (1950 का बई ऐक्ट, नम्बर छै).

7. बम्बई परगना और कुलकरनी वतन अन्त ऐक्ट, 50 (1950 का बम्बई ऐक्ट नम्बर साठ).

8. मध्य प्रदेश मालिकाना अधिकारों का (मिलकियतें, ाल, दूसरे के नाम की गई जमीन) अन्त ऐक्ट, 1950 .951 का मध्य प्रदेश ऐक्ट नम्बर एक).

9. मद्रास मिलकियत (अन्त और रैयतवाड़ी में ाव) ऐक्ट, 1948 (1948 का मद्रास ऐक्ट र छब्बीस).

10. मद्रास मिलकियत (अन्त और रैयतवाड़ी में ाव) सुधार ऐक्ट, 1950 (1950 का मद्रास ऐक्ट र एक).

11. उत्तर प्रदेश ज़मींदारी अन्त और जमीन सुधार , 1950 (1951 का उत्तर प्रदेश ऐक्ट नम्बर एक).

12. دفعہ 372 میں سدھار — ودھان کی دفعہ 372 کی دھارا (3) کی اُپ دھارا (اے) میں " دو برس " شبدوں کی جگہ " تین برس " شبد رکھ دئے جائیں گے۔

13. دفعہ 376 میں سدھار — ودھان کی دفعہ 376 کی دھارا (1) کے انت میں، نیچے لکھے شبد جوڑے جائیں گے، یعنی :—

" کوئی ایسا جج، اس بات کے رہتے بھی کہ وہ بھارت کا ناگر نہیں ہے، اُس ہائی کورٹ کا سر جج یا کسی دوسرے ہائی کورٹ کا سر جج یا کوئی دوسرا جج نیوجے جانے کا پاتر ہوگا۔"

14. نویں پٹی کا جوڑا جانا — ودھان کی آٹھویں پٹی کے بعد، نیچے لکھی پٹی جوڑ دی جائے گی یعنی:—

" نویں پٹی

[دفعہ 31 بی]

1. بہار زمین سدھار ایکٹ، 1950 (1950 کا بہار ایکٹ نمبر تیس) ۔

2. بمبئی پٹہ داری اور کاشتکاری زمین ایکٹ، 1948 (1948 کا بمبئی ایکٹ نمبر سرسٹھ)۔

3. بمبئی مالکی پٹہ انت ایکٹ، 1949 (1949 کا بمبئی ایکٹ نمبر اکسٹھ)۔

4. بمبئی تعلقداری پٹہ انت ایکٹ، 1949 (1949 کا بمبئی ایکٹ نمبر باسٹھ)۔

5. پنچ محال مہواسی پٹہ انت ایکٹ، 1949 (1949 کا بمبئی ایکٹ نمبر ترسٹھ)۔

6. بمبئی کھوٹی انت ایکٹ، 1950 (1950 کا بمبئی ایکٹ نمبر چھ)۔

7. بمبئی پرگنہ اور کلکرنی وطن انت ایکٹ، 1950 (1950 کا بمبئی ایکٹ نمبر ساٹھ)۔

8. مدھیہ پردیش مالکانہ ادھیکاروں کا (ملکیتیں، محال، دوسرے کے نام کی گئی زمین) انت ایکٹ، 1950 (1951 کا مدھیہ پردیش ایکٹ نمبر ایک)۔

9. مدراس ملکیت (انت اور رعیت واڑی میں بدلاؤ) ایکٹ، 1948 (1948 کا مدراس ایکٹ نمبر چھبیس)۔

10. مدراس ملکیت (انت اور رعیت واڑی میں بدلاؤ) سدھار ایکٹ، 1950 (1950 کا مدراس ایکٹ نمبر ایک)۔

11. اُتر پردیش زمینداری انت اور زمین سدھار ایکٹ، 1950 (1951 کا اُتر پردیش ایکٹ نمبر ایک)

: आरम्भ में और हर साल के पहले इजलास'' शब्द रख दिये जायंगे.

(2) धारा (2) में, "और यह बहस सदन के और कामों से पहले हो" शब्द निकाल दिये जायंगे.

8. दफ़ा 174 में सुधार— विधान की दफ़ा 174 की जगह, नीचे लिखी दफ़ा रख दी जायगी, यानी:—

"174. रियासत की क़ानून सभा के इजलास, उनका बरख़ास्त होना और उनका भंग होना— (1) रियासत पति समय समय पर रियासत की क़ानून सभा के सदन को या हर सदन को मिलने के लिये जिस समय और जिस जगह ठीक समझेगा बुलाएगा, लेकिन एक इजलास में उसकी आख़िरी बैठक और अगले इजलास में उसकी पहली बैठक की जो तारीख़ ठहराई गई हो उनके बीच छै महीने नहीं बीतने पायंगे.

(2) रियासत पति समय समय पर—

(ए) सदन को या किसी सदन को बरख़ास्त कर सकता है.

(बी) आम सदन को भंग कर सकता है."

9. दफ़ा 176 में सुधार— विधान की दफ़ा 176 में,—

(1) धारा (1) में, "हर इजलास" शब्दों की जगह "आम सदन के हर आम चुनाव के बाद पहले इजलास के आरम्भ में और हर साल के पहले इजलास" शब्द रख दिये जायंगे;

(2) धारा (2) में, "और यह बहस सदन के और कामों से पहले हो" शब्द निकाल दिये जायंगे.

10. दफ़ा 341 में सुधार— विधान की दफ़ा 341 की धारा (1) में, "किसी रियासत के रियासत पति या राज प्रमुख से सलाह करके" शब्दों की जगह "किसी रियासत के बारे में, और जहाँ वह कोई ऐसी रियासत है जो पहली पट्टी के भाग (ए) या भाग (बी) में दर्ज है, वहाँ उस रियासत के रियासत पति या राज प्रमुख से सलाह करके" शब्द रख दिये जायंगे.

11. दफ़ा 342 में सुधार— विधान की दफ़ा 342 की धारा (1) में, "किसी रियासत के रियासत पति या राज प्रमुख से सलाह करके" शब्दों की जगह "किसी रियासत के बारे में, और जहाँ वह कोई ऐसी रियासत है जो पहली पट्टी के भाग (ए) या भाग (बी) में दर्ज है, वहाँ उस रियासत के रियासत पति या राज प्रमुख से सलाह करके" शब्द रख दिये जायंगे.

کے آرمبھ میں اور ہر سال کے پہلے اجلاس " شبد رکھ دئے جائیں گے .

(2) دھارا (2) میں' '' اور یہ بحث سدن کے اور کاموں سے پہلے ہو'' شبد نکال دئے جائیں گے .

.8 دفعہ 174 میں سدھار — ودھان کی دفعہ 174 کی جگہ' نیچے لکھی دفعہ رکھ دی جائے گی' یعنی :—

" 174 . ریاست کی قانون سبھا کے اجلاس' اُن کا برخاست ہونا اور اُن بھنگ ہونا — (1) ریاست پتی سمے سمے پر ریاست کی قانون سبھا کے سدن کو یا ہر سدن کو ملنے کے لئے جس سمے اور جس جگہ ٹھیک سمجھے گا بلائے گا' لیکن ایک اجلاس میں اُسکی آخری بیٹھک اور اگلے اجلاس میں اُسکی پہلی بیٹھک کی جو تاریخ ٹھہرائی گئی ہو اُن کے بیچ چھ مہینے نہیں بیتنے پائیں گے .

(2) ریاست پتی سمے سمے پر —

(اے) سدن کو یا کسی سدن کو برخاست کر سکتا ہے .

(بی) عام سدن کو بھنگ کر سکتا ہے ."

.9 دفعہ 176 میں سدھار — ودھان کی دفعہ 176 میں'—

(1) دھارا (1) میں' '' ہر اجلاس '' شبدوں کی جگہ '' عام سدن کے ہر عام چناؤ کے بعد پہلے اجلاس کے آرمبھ میں اور ہر سال کے پہلے اجلاس '' شبد رکھ دئے جائیں گے ؛

(2) دھارا (2) میں' '' اور یہ بحث سدن کے اور کاموں سے پہلے ہو '' شبد نکال دئے جائیں گے .

.10 دفعہ 341 میں سدھار — ودھان کی دفعہ 341 کی دھارا (1) میں' '' کسی ریاست کے ریاست پتی یا راج پرمکھ سے صلاح کرکے '' شبدوں کی جگہ '' کسی ریاست کے بارے میں' اور جہاں وہ کوئی ایسی ریاست ہے جو پہلی پٹی کے بھاگ (اے) یا بھاگ (بی) میں درج ہے' وہاں اُس ریاست کے ریاست پتی یا راج پرمکھ سے صلاح کرکے '' شبد رکھ دئے جائیں گے .

.11 دفعہ 342 میں سدھار — ودھان کی دفعہ 341 کی دھارا (1) میں' '' کسی ریاست کے ریاست پتی یا راج پرمکھ سے صلاح کرکے '' شبدوں کی جگہ '' کسی ریاست کے بارے میں' اور جہاں وہ کوئی ایسی ریاست ہے جو پہلی پٹی کے بھاگ (اے) یا بھاگ (بی) میں درج ہے' وہاں اُس ریاست کے ریاست پتی یا راج پرمکھ سے صلاح کرکے '' شبد رکھ دئے جائیں گے .

(बी) "अधिकारों" शब्द में, किसी मिलकियत के सम्बन्ध में, वह सब अधिकार शामिल होंगे जो किसी मालिक, उप-मालिक, नायब-मालिक, पट्टेदार या दूसरे बिचौलिया को हासिल हैं, और उसमें ज़मीन की माल गुज़ारी के बारे में सब अधिकार या निज नियम शामिल होंगे."

5. **नई दफ़ा 31बी का जोड़ा जाना**—विधान की दफ़ा 31 ए के बाद, जिसे धारा 4 से जोड़ा गया है, नीचे लिखी दफ़ा जोड़ी जायगी, यानी :—

"31 बी. **कुछ ऐक्टों और क़ायदों का सरदुरुस्त ठहराया जाना.**—दफ़ा 31 ए के बन्धानों की आमियत में कमी किये बिना, नवीं पट्टी में दर्ज ऐक्टों या क़ायदों में से किसी को भी या उनके किसी बन्धानों को, इस बिना पर कि वह ऐक्ट, क़ायदा या बन्धान इस भाग के किन्हीं बन्धानों से बे मेल है या वह उन अधिकारों में से किसी को छीन लेता है या कम कर देता है जो इस भाग के किन्हीं बन्धानों में दिये गए हैं, न रद्द समझा जायगा और न कभी रद्द हुआ समझा जायगा और इसके ख़िलाफ़ किसी अदालत या पंच अदालत का फ़ैसला, डिग्री या हुक्म होते हुए भी, उन ऐक्टों, और क़ायदों में से हर एक, किसी अधिकारी क़ानून सभा के इस शक्ति के अधीन कि वह उसे सुधार सकती है या रद्द कर सकती है, अमल में रहेगा."

6. **दफ़ा 85 में सुधार**—विधान की दफ़ा 85 की जगह नीचे लिखी दफ़ा रख दी जायगी, यानी:—

"85. **राज पंचायत के इजलास, उनका बरख़ास्त होना और भंग होना**—(1) राजपति समय समय पर राज पंचायत के हर सदन को जिस समय और जिस जगह ठीक समझेगा मिलने के लिये बुलायगा, लेकिन एक इजलास में उस सदन की आख़िरी बैठक और अगले इजलास में उसकी पहली बैठक की जो तारीख़ ठहराई गई हो, उनके बीच छै महीने नहीं बीतने पायंगे.

(2) राजपति समय समय पर—

(ए) सदनों को या किसी एक सदन को बरख़ास्त कर सकता है;

(बी) लोक सदन को भंग कर सकता है."

7. **दफ़ा 87 में सुधार.**—विधान की दफ़ा 87 में,—

(1) धारा (1) में "हर इजलास" शब्दों की जगह "लोकसदन के हर आम चुनाव के बाद पहले इजलास

(بی) '' ادھیکاروں " شبد میں' کسی ملکیت کے سمبندھ میں' وہ سب ادھیکار شامل ہونگے جو کسی مالک' اُپ مالک' نائب مالک' پٹے دار یا دوسرے بچولیا کو حاصل ھیں' اور اُس میں زمین کی مالگذاری کے بارے میں سب ادھیکار یا نِج نیم شامل ہونگے ."

5. نئی دفعہ 31 بی کا جوڑا جانا — ودھان کی دفعہ 31 اے کے بعد' جسے دھارا 4 سے جوڑا گیا ھے' نیچے لکھی دفعہ جوڑی جائے گی' یعنی :—

''31 بی. کچھ ایکٹوں اور قاعدوں کا سردرست ٹھہرایا جانا. — دفعہ 31 اے کے بندھانوں کی عامیت میں کمی کئے بنا' نویں پٹی میں درج ایکٹوں یا قاعدوں میں سے کسی کو بھی یا اُن کے کسی بندھانوں کو' اِس بنا پر کہ وہ ایکٹ' قاعدہ یا بندھان اِس بھاگ کے کنھیں بندھنوں سے بے میل ھے یا وہ اُن ادھیکاروں میں سے کسی کو چھین لیتا ھے یا کم کر دیتا ھے جو اِس بھاگ کے کنھیں بندھانوں میں دئے گئے ھیں' نہ رد سمجھا جائے گا اور نہ کبھی رد ہوا سمجھا جائے گا' اور اِسکے خلاف کسی عدالت یا پنچ عدالت کا فیصلہ' ڈگری یا حکم ھوتے ھوئے بھی' اُن ایکٹوں' اور قاعدوں میں سے ھر ایک' کسی ادھیکاری قانون سبھا کے اِس شکتی کے ادھین کہ وہ اُسے سدھار سکتی ھے یا رد کر سکتی ھے' عمل میں رہے گا."

6. دفعہ 85 میں سدھار — ودھان کی دفعہ 85 کی جگہ نیچے لکھی دفعہ رکھ دی جائے گی' یعنی :—

'' 85 . راج پنچایت کے اجلاس' اُن کا برخاست ھونا اور بھنگ ھونا —(1) راج پتی سمے سمے پر راج پنچایت کے ھر سدن کو جس سمے اور جس جگہ ٹھیک سمجھے گا ملنے کے لئے بلائے گا لیکن ایک اجلاس میں اس سدن کی آخری بیٹھک اور اگلے اجلاس میں اُسکی پہلی بیٹھک کی جو تاریخ ٹھہرائی گئی ھو' اُن کے بیچ چھ مہینے نہیں بیتنے پائیں گے .

(2) راج پتی سمے سمے پر—

(اے) سدنوں کو یا کسی ایک سدن کو برخاست کر سکتا ھے؛

(بی) لوک سدن کو بھنگ کر سکتا ھے."

7. دفعہ 87 میں سدھار .— ودھان کی دفعہ 87 میں' —

(1) دھارا (1) میں " ھر اجلاس " شبدوں کی جگہ '' لوک سدن کے ھر عام چناؤ کے بعد پہلے اجلاس

(2) कोई क़ानून जो विधान के आरम्भ से ठीक पहले भारत के भूभाग में अमल में था, और जो इस धारा की उपधारा (1) से सुधारी हुई विधान की दफ़ा 19 के बन्धानों से मेल खाता है, सिर्फ़ इसी बिना पर न रद्द समझा जायगा, न कभी भी रद्द हुआ समझा जायगा, कि वह एक ऐसा क़ानून है जो उस अधिकार को छीन लेता है या कम कर देता है जो अधिकार उस दफ़ा की धारा (1) की उपधारा (ए) में दिया गया है और जिस के अमल को उस दफ़ा की धारा (2) से, जैसी वह शुरू में क़ानून बनी थी, नहीं बचाया गया था.

समझाव— इस उपधारा में "क़ानून अमल में" शब्दों के वही मानी हैं जो विधान की दफ़ा 13 की धारा (1) में हैं.

4. नई दफ़ा 31 ए का जोड़ा जाना—विधान की दफ़ा 31 के बाद नीचे लिखी दफ़ा जोड़ी जायगी, और वह हमेशा से जोड़ी हुई समझी जायगी, यानी:—

31 ए. उन क़ानूनों का बचाव जो मिलकियतों वग़ैरा को हासिल करने का बन्धान करते हैं— (1) इस भाग के, ऊपर लिखे बन्धानों में, किसी बात के रहते भी, किसी भी क़ानून को जो इस बात का बन्धान करता है कि राज किसी मिलकियत को या उसके बारे में किन्हीं अधिकारों को हासिल कर ले या जो ऐसे किन्हीं अधिकारों को ख़त्म कर देने या उनमें अदल बदल कर देने का बन्धान करता है, इस बिना पर रद्द नहीं समझा जायगा कि वह क़ानून इस भाग के किन्हीं बन्धानों से बेमेल है या वह उन अधिकारों में से किसी को छीन लेता है या कम कर देता है जो इस भाग के किन्हीं बन्धानों में दिये गए हैं:

शर्तेकि जहां वह क़ानून कोई ऐसा क़ानून है जिसे किसी रियासत की क़ानून सभा ने बनाया है, वहाँ उस क़ानून पर इस दफ़ा के बन्धान तब तक नहीं लागू होंगे जब तक कि वह क़ानून राजपति के विचार के लिये रखा न गया हो और उस पर राजपति की मंज़ूरी न मिल गई हो.

(2) इस दफ़ा में,—

(ए) "मिलकियत" शब्द के, किसी मुक़ामी क्षेत्र के सम्बन्ध में, वही मानी होंगे जो उस क्षेत्र में अमल में ज़मीन के पट्टों के सम्बन्ध के मौजूदा क़ानून में उस शब्द के या उसकी बराबरी के मुक़ामी शब्द के मानी होते हैं, और उसमें हर जागीर, इनाम, या माफ़ी या इसी तरह की दूसरी देनगी भी शामिल होगी.

(2) کوئی قانون جو ودھان کے آرمبھ سے ٹھیک پہلے بھارت کے بھوبھاگ میں عمل میں تھا' اور جو اِس دھارا کی اُپدھارا (1) سے سدھاری ہوئی ودھان کی دفعہ 19 کے بندھانوں سے میل کھاتا ہے' صرف اِسی بناپر نہ رد سمجھا جائے گا' نہ کبھی بھی رد ہوا سمجھا جائے گا' کہ وہ ایک ایسا قانون ہے جو اُس ادھیکار کو چھین لیتا ہے یا کم کردیتا ہے جو ادھیکار اُس دفعہ کی دھارا (1) کی اُپدھارا (اے) میں دیا گیا ہے اور جس کے عمل کو اُس دفعہ کی دھارا (2) سے' جیسی وہ شروع میں قانون بنی تھی' نہیں بچایا گیا تھا.

سمجھاؤ— اِس اُپدھارا میں "قانون عمل میں" شبدوں کے وہی معنی ہیں جو ودھان کی دفعہ 13 کی دھارا (1) میں ہیں.

4. نئی دفعہ 31 اے کا جوڑا جانا— ودھان کی دفعہ 31 کے بعد نیچے لکھی دفعہ جوڑی جائے گی' اور وہ ہمیشہ سے جوڑی ہوئی سمجھی جائے گی' یعنی:—

"31 اے. اُن قانونوں کا بچاؤ جو ملکیتوں وغیرہ کو حاصل کرنے کا بندھان کرتے ہیں— (1) اِس بھاگ کے اُوپر لکھے بندھانوں میں' کسی بات کے رہتے بھی' کسی بھی قانون کو جو اِس بات کا بندھان کرتا ہے کہ راج کسی ملکیت کو یا اُسکے بارے میں کنھیں ادھیکاروں کو حاصل کرلے یا جو ایسے کنھیں ادھیکاروں کو ختم کردینے یا اُن میں ادل بدل کر دینے کا بندھان کرتا ہے' اِس بنا پر رد نہیں سمجھا جائے گا کہ وہ قانون اِس بھاگ کے کنھیں بندھانوں سے بے میل ہے یا وہ اُن ادھیکاروں میں سے کسی کو چھین لیتا ہے یا کم کر دیتا ہے جو اِس بھاگ کے کنھیں بندھانوں میں دیئے گئے ہیں:

شرطیکہ جہاں وہ قانون کوئی ایسا قانون ہے جسے کسی ریاست کی قانون سبھا نے بنایا ہے' وہاں اُس قانون پر اِس دفعہ کے بندھان تب تک نہیں لاگو ہونگے جب تک کہ وہ قانون راج پتی کے وچار کے لئے رکھا نہ گیا ہو اور اُس پر راج پتی کی منظوری نہ مل گئی ہو.

(2) اِس دفعہ میں'—

(اے) "ملکیت" شبد کے' کسی مقامی چھیتر کے سمبندھ میں' وہی معنی ہونگے جو اُس چھیتر میں عمل میں زمین کے پٹوں کے سمبندھ کے موجودہ قانون میں اُس شبد کے یا اُسکی برابری کے مقامی شبد کے معنی ہوتے ہیں' اور اُسمیں ہر جاگیر' انعام' یا معافی یا اِسی طرح کی دوسری دینگی بھی شامل ہوں گی.

हुई नागरों की किन्हीं जमातों की तरक़्क़ी के लिये, या पट्टी दर्ज जातों और पट्टी दर्ज क़बीलों के लिये, कोई ख़ास बन्धान करने से राज को नहीं रोकेगी."

3. दफ़ा 19 में सुधार और कुछ क़ानूनों का सरदुरूस्त ठहराया जाना—

(1) विधान की दफ़ा 19 में,—

(ए) धारा (2) की जगह नीचे लिखी धारा रख दी जायगी, और यह समझा जायगा कि उस धारा को हमेशा से नीचे लिखे रूप में क़ानून बनाया गया, यानीः—

"(2) धारा (1) की उपधारा (ए) की किसी बात का किसी मौजूदा क़ानून के अमल पर वहाँ तक कोई असर नहीं होगा जहाँ तक वह क़ानून राज की सुरक्षा के, बिदेसी राजों के साथ दोस्ताना रिश्तों के, जन-व्यवस्था के, भलमंसी या सदाचार के, हितों में, या अदालत की तौहीन के, मानहानि के, या किसी जुर्म के लिये उकसाने के, सम्बन्ध में, उस अधिकार से काम लेने पर उचित रुकावटें लगाता है जो उस उपधारा में दिया गया है, और न उस उपधारा की किसी बात से राज को कोई ऐसा क़ानून बनाने से रोका जा सकेगा."

(बी) धारा (6) में, उन शब्दों की जगह जो "उस उपधारा की किसी बात का" शब्दों के साथ शुरू होते हैं और "कोई ऐसा क़ानून बनाने से रोका जा सकेगा" शब्दों के साथ खतम होते हैं, नीचे लिखे शब्द रख दिये जायंगे, यानीः—

"उस उपधारा की किसी बात का किसी मौजूदा क़ानून के अमल पर वहां तक कोई असर नहीं होगा जहां तक उस क़ानून का सम्बन्ध,—

(एक) ऐसी पेशे सम्बन्धी या तकनीकी जोगताओं से है जो किसी पेशे को अपनाने, या कोई धन्दा, ब्योपार या कारबार करने के लिये जरूरी हो, या

(दो) राज के, या किसी ऐसी एकतनी के जो राज की मिलकियत है या उसके दबान में है, किसी ब्योपार, कारबार, उद्योग या सेवा करने से है, चाहे वह ब्योपार, कारबार, उद्योग या सेवा नागरों को उस से पूरे तौर पर या कुछ हद तक अलग रख कर की जाती हो या नहीं,

और न उस उपधारा की किसी बात से राज को कोई ऐसा क़ानून बनाने से रोका जा सकेगा जिसका सम्बन्ध इन में से किसी से हो."

ھوئی ناگروں کی کنھیں جماعتوں کی ترقی کے لئے' یا پٹی درج جاتوں اور پٹی درج قبیلوں کے لئے' کوئی خاص بندھان کرنے سے راج کو نہیں روکے گی."

3. دفعہ 19 میں سدھار اور کچھ قانونوں کا سر درست ٹھہرایا جانا—

(1) ودھان کی دفعہ 19 میں'—

(اے) دھارا (2) کی جگہ نیچے لکھی دھارا رکھ دی جائے گی' اور یہ سمجھا جائے گا کہ اُس دھارا کو ھمیشہ سے نیچے لکھے روپ میں قانون بنایا گیا' یعنی:—

"(2) دھارا (1) کی اُپ دھارا (اے) کی کسی بات کا کسی موجودہ قانون کے عمل پر وھاں تک کوئی اثر نہیں ھوگا جہاں تک' وہ قانون راج کی سورکشا کے' بدیسی راجوں کے ساتھ دوستانہ رشتوں کے' جن ویوستھا کے' بھلمنسی یا سداچار کے' ھتوں میں' یا عدالت کی توھین کے' مان ھانی کے' یا کسی جرم کے لئے اکسانے کے' سمبندھ میں' اُس ادھیکار سے کام لینے پر اُچت رکاوٹیں لگاتا ھے جو اُس اُپدھارا میں دیا گیا ھے' اور نہ اُس اُپدھارا کی کسی بات سے راج کو کوئی ایسا قانون بنانے سے روکا جاسکے گا."

(بی) دھارا (6) میں' اُن شبدوں کی جگہ جو "اُس اُپدھارا کی کسی بات کا" شبدوں کے ساتھ شروع ھوتے ھیں اور "کوئی ایسا قانون بنانے سے روکا جاسکے گا" شبدوں کے ساتھ ختم ھوتے ھیں' نیچے لکھے شبد رکھ دیئے جائیں گے' یعنی:—

"اُس اُپدھارا کی کسی بات کا کسی موجودہ قانون کے عمل پر وھاں تک کوئی اثر نہیں ھوگا جہاں تک اُس قانون کا سمبندھ'—

(ایک) ایسی پیشے سمبندھی یا تکنیکی جوگتاؤں سے ھے جو کسی پیشے کو اپنانے' یا کوئی دھندا' بیوپار یا کاربار کرنے کے لئے ضروری ھو' یا

(دو) راج کے' یا کسی ایسی ایک تنی کے جو راج کی ملکیت ھے یا اُس کے دبان میں ھے' کسی بیوپار' کاربار' اُدیوگ یا سیوا کرنے سے ھے' چاھے وہ بیوپار' کاربار' اُدیوگ یا سیوا ناگروں کو اُس سے پورے طور پر یا کچھ حد تک الگ رکھ کر کی جاتی ھو یا نہیں'

اور نہ اُس اُپدھارا کی کسی بات سے راج کو کوئی ایسا قانون بنانے سے روکا جاسکے گا جس کا سمبندھ اِن میں سے کسی سے ھو."

आ सकती थीं. काम की जगहों पर दो महीने से लेकर पाँच बरस के बच्चों के लिये देख भाल संस्थाएँ मुफ़्त बना दी गईं. दिन में कई घन्टों की छुट्टी मां को दे दी जाती थी ताकि वह जा कर बच्चे को दूध पिला सके. ऐसे सब बच्चों को नक़दी और कपड़े वग़ैरा की सहायता सरकार से मिलने लगी.

औरतों को मां बनने के बाद जो कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती थीं वह ख़तम कर दी गईं और उसी के साथ साथ प्रचार के सारे साधनों के ज़रिये जनता को शिक्षा भी दी गई. यह चौथा क़दम था. मां बनने के ख़िलाफ़ जो ग़लत धारनाएं बन गई थीं उनका जोरदार ढंग से खंडन किया गया. मां बनना एक मान बताया गया और आदर्श और पवित्र जीवन बिताने के लिये लोगों को उभारा गया.

रूस की औरतें अब सदाचार के आदर्श को पूरा कर सकती थीं, मां बनने का आनन्द ले सकती थीं, घर गृहस्थी ठीक रख सकती थीं, बच्चों को प्रेम दे सकती थीं और साथ ही साथ किसी तरह की माली चिन्ता से भी दूर थीं—उनकी कोमल भावनाएं उभर आई थीं, सारे पोचे धुल गए थे. आख़िरी क़दम वहाँ की सरकार ने यह उठाया कि सन् '44 में पेट गिराने के सम्बन्ध के क़ानूनों को बदल दिया और पहले जो चीज क़ानूनी जायज ठहरा दी गई थी अब ग़ैर क़ानूनी ठहरा दी गई. रूस में अब पेट गिराना ग़ैर क़ानूनी है. जिस तरह और जिन असूलों को सामने रख कर क़दम उठाए गए उनका नतीजा यह है कि सारी रूसी क़ौम इस काम को बुरा समझने लगी है और पेट गिराना रूस में अब क़रीब क़रीब ना पैद है.

آسکتی تھیں ۔ کام کی جگہوں پر دو مہینے سے لے کر پانچ برس کے بچوں کے لئے دیکھ بھال سنستھائیں مفت بنا دی گئیں ۔ دن میں کئی گھنٹوں کی چھٹی ماں کو دے دی جاتی تھی تاکہ وہ جاکر بچے کو دودھ پلا سکے ۔ ایسے سب بچوں کو نقدی اور کپڑے وغیرہ کی سہائتا سرکار سے ملنے لگی ۔

عورتوں کو ماں بننے کے بعد جو کٹھنائیاں جھیلنی پڑتی تھیں وہ ختم کر دی گئیں اور اُسی کے ساتھ ساتھ پرچار کے سارے سادھنوں کے ذریعے جنتا کو شکشا بھی دی گئی ۔ یہ چوتھا قدم تھا ۔ ماں بننے کے خلاف جو غلط دھارنائیں بن گئی تھیں اُن کا زور دار ڈھنگ سے کھنڈن کیا گیا ۔ ماں بننا ایک مان بتایا گیا اور آدرش اور پوتر جیون بتانے کے لئے لوگوں کو اُبھارا گیا ۔

روس کی عورتیں اب سداچار کے آدرش کو پورا کرسکتی تھیں' ماں بننے کا آنند لے سکتی تھیں' گھر گرہستی ٹھیک رکھ سکتی تھیں' بچوں کو پریم دے سکتی تھیں اور ساتھ ہی ساتھ کسی طرح کی مالی چنتا سے بھی دور تھیں — اُن کی کومل بھاؤنائیں اُبھر آئی تھیں' سارے پوچے دھل گئے تھے ۔ آخری قدم وہاں کی سرکار نے یہ اُٹھایا کہ سن 44' میں پیٹ گرانے کے سمبندھ کے قانونوں کو بدل دیا اور پہلے جو چیز قانونی جائز ٹھہرا دی گئی تھی اب غیر قانونی ٹھہرا دی گئی ۔ روس میں اب پیٹ گرانا غیر قانونی ہے ۔ جسطرح اور جن اُصولوں کو سامنے رکھکر قدم اُٹھائے گئے اُن کا نتیجہ یہ ہے کہ ساری روسی قوم اِس کام کو برا سمجھنے لگی ہے اور پیٹ گرانا روس میں اب قریب قریب ناپید ہے ۔

विधान (पहला सुधार) ऐक्ट, 1951

भारत के विधान में सुधार करने के लिये एक ऐक्ट.

[18 जून, 1951]

राज पंचायत नीचे लिखा ऐक्ट बनाती है:—

1. छोटा सरनामा— इस ऐक्ट को विधान (पहला सुधार) ऐक्ट, 1951 कहा जाय.

2. दफ़ा 15 में सुधार— विधान की दफ़ा 15 में नीचे लिखी धारा जोड़ दी जायगी:—

"(4) इस दफ़ा की, या दफ़ा 29 की धारा (2) की कोई बात, समाजी और तालीमी निगाह से पिछड़ी

ودھان (پہلا سدھار) ایکٹ' 1951

بھارت کے ودھان میں سدھار کرنے کے لئے ایک ایکٹ ۔

[18 جون' 1951]

راج پنچایت نیچے لکھا ایکٹ بناتی ہے :—

1. چھوٹا سرنامہ—اِس ایکٹ کو ودھان (پہلا سدھار) ایکٹ' 1951 کہا جائے ۔

2. دفعہ 15 میں سدھار—ودھان کی دفعہ 15 میں نیچے لکھی دھارا جوڑ دی جائے گی :—

"(4) اِس دفعہ کی' یا دفعہ 29 کی دھارا (2) کی کوئی بات' سماجی اور تعلیمی نگاہ سے پچھڑی

का पीछा करने की कोई ज़रूरत नहीं पड़ी. जब दवा सस्ती, अच्छी और जानकार हाथों से मिलती हो तो महँगे, नातजरबेकार मुजरिमों के पास कोई क्यों जाने लगा!

दूसरा बड़ा क़दम रूस ने यह उठाया कि इस काम के लिये अस्पताल खोले गए. यहाँ ख़ाली दवा नहीं दी जाती थी बल्कि सलाह मशविरे के लिये एक बोर्ड भी क़ायम था. इस अस्पताल में ऐसी औरतें बुलाई जाती थीं और उन्हें गुप्त मदद देने का वायदा किया जाता था. इन अस्पतालों और केन्द्रों का काम "गुप्त क़त्ल करना" नहीं था बल्कि पेट गिरवाने वाली औरतों को समझा बुझा कर ऐसा काम करने से रोकना था. इस काम में यह अस्पताल बहुत कामयाब रहे. ऐसी औरतें परेशानी की हालत में रहती हैं. वह चाहती हैं कि किसी न किसी सूरत मामला ज़ाहिर हो जाने से पहले उसका निपटारा करलें. बेचारियों को पेट गिराने के बारे में कुछ ज्ञान नहीं होता. उड़ी उड़ाई बातें उनके कानों में पड़ी रहती हैं. ऐसे वक़्त में उन्हें एक सच्चे दोस्त, एक सच्चे हमदर्द की जरूरत होती है जो उन्हें सलाह दे सके और उनके दिल में बैठे हुए डर को कम कर सके. अस्पतालों में सलाहकार बोर्डों ने बहुत सफलता हासिल की. जो लड़की या औरत पेट गिराने के लिये आती थी वह इस सलाहकार बोर्ड के सामने लाई जाती थी. बोर्ड के मेम्बर बड़ी हमदर्दी से उसे सब चीज़ें बताते थे. सब ऊँच नीच समझाकर उससे इरादा बदलने की अपील करते थे. इन लोगों की हमदर्दी ने जबरदस्त असर किया. चन्द साल के अन्दर 51 फ़ीसदी ऐसी औरतों ने पेट गिराने से तौबा कर ली. इन्हीं अस्पतालों में उन के बच्चे पैदा हुए और जिये. बाक़ी 49 फ़ीसदी औरतें किसी सूरत से मां बनने के लिये राज़ी न की जा सकीं. उनका आपरेशन कर दिया गया. दूसरा चारा भी न था. इन अस्पतालों से निराश होकर यह औरतें फिर मुजरिमों के फन्दे में फंस जातीं.

पेट गिराना क़ानूनी बना देने से बारह साल में रूस के अन्दर क़रीब तीन लाख औरतों की जान बचाली गई. लेकिन रूस के अधिकारियों का असली मक़सद कुछ और था. आन्दोलन का रुख़ अब दूसरी तरफ़ पलटा गया. पेट गिराने वाली औरतें आम तौर से ख़राब नहीं होतीं. पेट गिराने के कारनों को मालूम करने की कोशिश की गई और उन कारनों को दूर करने के लिये क़ानून बनाए गए. यह इस रास्ते का तीसरा क़दम था.

हर औरत को गर्भ के ज़माने में मुफ़्त दवा और डाक्टरी मदद दी जाने लगी. सोहर से पहले पाँच हफ़्ते की छुट्टी और सोहर के बाद छै हफ़्ते की छुट्टी औरतों को मिलने लगी. सोहर का ज़माना ख़तम करने के बाद माएँ अपने काम या नौकरी पर बिना किसी रुकावट के फिर

کا پیچھا کرنے کی کوئی ضرورت نہیں پڑی۔ جب دوا سستی، اچھی اور جانکار ہاتھوں سے ملتی ہو تو مہنگے، ناتجربہ کار مجرموں کے پاس کوئی کیوں جانے لگا!

دوسرا بڑا قدم روس نے یہ اُٹھایا کہ اِس کام کے لئے اسپتال کھولے گئے۔ یہاں خالی دوا نہیں دی جاتی تھی بلکہ صلاح مشورہ کے لئے ایک بورڈ بھی قائم تھا۔ اِس اسپتال میں ایسی عورتیں بلائی جاتی تھیں اور اُنہیں گپت مدد دینے کا وعدہ کیا جاتا تھا۔ اِن اسپتالوں اور کیندروں کا کام "گپت قتل کرنا" نہیں تھا بلکہ پیٹ گروانے والی عورتوں کو سمجھا بجھا کر ایسا کام کرنے سے روکنا تھا۔ اِس کام میں یہ اسپتال بہت کامیاب رہے۔ ایسی عورتیں پریشانی کی حالت میں رہتی ہیں۔ وہ چاہتی ہیں کہ کسی نہ کسی صورت معاملہ ظاہر ہو جانے سے پہلے اُس کا نپٹارا کرلیں۔ بیچاریوں کو پیٹ گرانے کے بارے میں کچھ گیان نہیں ہوتا۔ اُڑی اُڑائی باتیں اُن کے کانوں میں پڑی رہتی ہیں۔ ایسے وقت میں اُنہیں ایک سچے دوست، ایک سچے ہمدرد کی ضرورت ہوتی ہے جو انہیں صلاح دے سکے اور ان کے دل میں بیٹھے ہوئے ڈر کو کم کر سکے۔ اسپتالوں میں صلاح کاربورڈوں نے بہت سپھلتا حاصل کی۔ جو لڑکی یا عورت پیٹ گرانے کے لئے آتی تھی وہ اِس صلاح کاربورڈ کے سامنے لائی جاتی تھی۔ بورڈ کے ممبر بڑی ہمدردی سے اُسے سب چیزیں بتاتے تھے۔ سب اونچ نیچ سمجھاکر اُس سے ارادہ بدلنے کی اپیل کرتے تھے۔ اِن لوگوں کی ہمدردی نے زبردست اثر کیا۔ چند سال کے اندر 51 فی صدی ایسی عورتوں نے پیٹ گرانے سے توبہ کرلی۔ انہیں اسپتالوں میں اُن کے بچے پیدا ہوئے اور جئے۔ باقی 49 فی صدی عورتیں کسی صورت سے ماں بننے کے لئے راضی نہ کی جاسکیں۔ اُن کا آپریشن کردیا گیا۔ دوسرا چارہ بھی نہ تھا۔ اِن اسپتالوں سے نراش ہوکر یہ عورتیں پھر مجرموں کے پھندے میں پھنس جاتیں۔

پیٹ گرانا قانونی بنا دینے سے بارہ سال میں روس کے اندر قریب تین لاکھ عورتوں کی جان بچا لی گئی۔ لیکن روس کے ادھیکاریوں کا اصلی مقصد کچھ اور تھا۔ آندولن کا رخ اب دوسری طرف پلٹا گیا۔ پیٹ گرانے والی عورتیں عام طور سے خراب نہیں ہوتیں۔ پیٹ گرانے کے کارنوں کو معلوم کرنے کی کوشش کی گئی اور اُن کارنوں کو دور کرنے کے لئے قانون بنائے گئے۔ یہ اِس راستے کا تیسرا قدم تھا۔

ہر عورت کو گربھ کے زمانے میں مفت دوا اور ڈاکٹری مدد دی جانے لگی۔ سوہر سے پہلے پانچ ہفتے کی چھٹی اور سوہر کے بعد چھ ہفتے کی چھٹی عورتوں کو ملنے لگی۔ سوہر کا زمانہ ختم کرنے کے بعد مائیں اپنے کام یا نوکری پر بنا کسی رکاوٹ کے پھر

यूरोप में यह ख़ब्त भी चल पड़ा है कि माँ बनने से ख़ूबसूरती ख़तम हो जाती है. इस लिये भी पेट गिराने को और अधिक बढ़ावा मिला. हिन्दुस्तान में भी आजकल यह रोग ज़ोर पकड़ रहा है. बच्चा पैदा करने में औरतों को जिसमानी तकलीफ़ बरदाश्त करनी पड़ती है. पेट गिराने में भी शायद तकलीफ़ उठानी पड़ती है. लेकिन यह तकलीफ़ एक बार होकर ख़तम हो जाती है और बच्चा पैदा करने पर तकलीफ़ और चिन्ता बराबर बनी रहती है. लगातार तकलीफ़ से एक बार तकलीफ़ उठा लेना ज़्यादा अच्छा है.

रूसी विज्ञानियों ने इस बात की जाँच पड़ताल की और इस नतीजे पर पहुँचे कि पेट गिराने की जड़ ग़रीबी और दुराचार में है. अगर औरतों को माली चिन्ता से छुट्टी देदी जाय और उनका सदाचार ऊँचा कर दिया जाय तो पेट गिराने का मसला ख़ुदबख़ुद ख़तम हो जायगा. ज़ार के ज़माने में पेट गिराने की वजह से 25 हज़ार औरतें हर साल मर जाती थीं. क़ानून बहुत सख़्त था. कोई डाक्टर पेट नहीं गिरा सकता था. ऐसा करने पर क़त्ल के जुर्म में सज़ा दी जाती थी. इसी तरह का क़ानून क़रीब क़रीब दूसरे मुल्कों में भी जारी है.

रूस में पहली मरतबा पेट गिराने के ख़िलाफ़ ज़बरदस्त अमली तजवीज़ की गई. उनका पहला क़दम यह था कि पेट गिराने को क़ानून बनाकर जायज़ ठहरा दिया गया. हर डाक्टर को पेट गिराने की इजाज़त देदी गई. यह बात अजीब लगती है. मालूम होता है कि पेट गिराना आसान हो गया तो और भी अधिक लोग पेट गिराएंगे. पर नतीजा उलटा हुआ. पहले आइये देख लें उन देशों में पेट गिराने की क्या हालत रही जहाँ अब भी सख़्त क़ानून लागू हैं और पेट गिराने वाले को सख़्त सज़ा दी जाती है. अमरीका को ही ले लीजिये. छै लाख अस्सी हज़ार बच्चे उस देश में हर साल पैदा होने से पहले मार दिये जाते हैं. मौजूदा ज़माने की तमाम ईजादों के होते हुए भी आठ हज़ार औरतें वहाँ हर साल पेट गिराने की वजह से मर जाती हैं. लेकिन रूस में, जहाँ शुरू में पेट गिराना जायज़ ठहराया गया था, आज पेट गिराना क़रीब क़रीब नापैद है. इससे पहले जानकार डाक्टर पेट गिरायें तो सज़ा पाते थे लेकिन अधडाक्टर, नर्स और दूसरे ऐसे ही लोग ख़तरनाक तरीक़ों से पेट गिराते थे और पकड़ में न आते थे. नतीजा यह था कि ख़तरनाक दवाओं के इस्तेमाल से ऐसी औरतों की तन्दुरुस्ती पर ज़बरदस्त असर पड़ता था और मौत भी हो जाती थी. सोवियट रूस में एक तरफ़ यह क़ानून पास किया गया कि हर डाक्टर पेट गिरा सकता है और दूसरी तरफ़ यह भी क़ानून बना दिया गया कि ग़ैर डाक्टरों को पेट गिराने के जुर्म में सख़्त सज़ा दी जायगी. मुजरिमों

ورپ میں یہ خبط بھی چل پڑا ہے کہ ماں بننے سے خوبصورتی
ختم ہو جاتی ہے. اس لئے بھی پیٹ گرانے کو اور ادھک بڑھاوا
لا. ہندستان میں بھی آج کل یہ روگ زور پکڑ رہا ہے .
چہ پیدا کرنے میں عورتوں کو جسمانی تکلیف برداشت
رنی پڑتی ہے . پیٹ گرانے میں بھی شاید تکلیف
ٹھانی پڑتی ہے . لیکن یہ تکلیف ایک بار ہو کر ختم
ہو جاتی ہے اور بچہ پیدا کرنے پر تکلیف اور چنتا
رابر بنی رہتی ہے . لگاتار تکلیف سے ایک بار تکلیف
ٹھالینا زیادہ اچھا ہے .

روسی وگیانیوں نے اِس بات کی جانچ پڑتال کی
ور اِس نتیجے پر پہونچے کہ پیٹ گرانے کی جڑ غریبی
ور دراچار میں ہے . اگر عورتوں کو مالی چنتا سے چھٹی
ے دی جائے اور اُن کا سداچار اونچا کردیا جائے تو
یٹ گرانے کا مسئلہ خود بخود ختم ہو جائے گا . زار کے
مانے میں پیٹ گرانے کی وجہ سے 25 ہزار عورتیں ہر
سال مرجاتی تھیں . قانون بہت سخت تھا . کوئی
اکٹر پیٹ نہیں گرا سکتا تھا . ایسا کرنے پر قتل کے
جرم میں سزادی جاتی . اسی طرح کا قانون قریب قریب
وسرے ملکوں میں بھی جاری ہے .

روس میں پہلی مرتبہ پیٹ گرانے کے خلاف زبردست
ملی تجویز کی گئی . اُن کا پہلا قدم یہ تھا کہ پیٹ
رانے کو قانون بناکر جائز ٹھہرا دیا گیا . ہر ڈاکٹر کو
یٹ گرانے کی اجازت دے دی گئی . یہ بات عجیب
لگتی ہے . معلوم ہوتا ہے کہ پیٹ گرانا آسان ہوگیا تو
ور بھی ادھک لوگ پیٹ گرائیں گے . پر نتیجہ اُلٹا
ہوا . پہلے آئیے دیکھ لیں اُن دیشوں میں پیٹ گرانے کی
کیا حالت رہی جہاں اب بھی سخت قانون لاگو ہیں
ور پیٹ گرانے والے کو سخت سزا دی جاتی ہے . امریکہ
و ہی لے لیجئے . چھ لاکھ اسی ہزار بچے اُس دیش
میں ہر سال پیدا ہونے سے پہلے ماردیئے جاتے ہیں .
موجودہ زمانے کی تمام ایجادوں کے ہوتے ہوئے بھی آٹھ
ہزار عورتیں وہاں ہر سال پیٹ گرانے کی وجہ سے مرجاتی
ہیں . لیکن روس میں، جہاں شروع میں پیٹ گرانا
جائز ٹھہرایا گیا تھا، آج پیٹ گرانا قریب قریب ناپید
ہے . اِس سے پہلے جانکار ڈاکٹر پیٹ گرائیں تو سزا پاتے
تھے لیکن ادھ ڈاکٹر، نرس اور دوسرے ایسے ہی لوگ
خطرناک طریقوں سے پیٹ گراتے تھے اور پکڑ میں نہ آتے
تھے . نتیجہ یہ تھا کہ خطرناک دواؤں کے استعمال سے
ایسی عورتوں کی تندرستی پر زبردست اثر پڑتا تھا اور
موت بھی ہو جاتی تھی . سوویت روس میں ایک طرف
یہ قانون پاس کیا گیا کہ ہر ڈاکٹر پیٹ گرا سکتا ہے اور
دوسری طرف یہ بھی قانون بنا دیا گیا کہ غیر ڈاکٹروں کو
پیٹ گرانے کے جرم میں سخت سزادی جائے گی. مجرموں

स्थान मुक़र्र होते हैं, जहां काम करने वाली औरतें अपने बच्चों को छोड़ सकती हैं.

पेट गिराने की समस्या को जिन तरीक़ों से रूस में हल किया गया है उन पर रोशनी डालने से पहले यह जान लेना ज़रूरी है कि यह समस्या क्या और क्यों है. कुछ माएँ ऐसी होती हैं जो मां बनना नहीं चाहतीं और किसी न किसी ढंग से पैदा होने वाली ज़िन्दगी को मौत की गोद में पटक देती हैं. कहते हैं औरतों की भावनाएं मर्द से अधिक कोमल होती हैं. किसी कोमल भावना वाले के लिये क्या यह मुमकिन है ? लेकिन जब कोमल भावनाओं पर डर, झूट, धोके के मोटे मोटे पोचे फिरे हों तो क्या किया जाय. कोई औरत भी शायद पेट गिराना नहीं चाहती लेकिन मजबूरी को क्या किया जाय. वह सब कुछ करना पड़ता है जिसे करने को मन नहीं चाहता. सदाचार को ऊपर उठाने के लिये ज़रूरी है कि इन पोचों को धो दिया जाय और आदमी की कोमल भावनाओं को उजागर किया जाय. आइये देखें वह कौन सी हालतें हैं जो एक मां को पैदा होने से पहले बच्चे को मारने पर मजबूर कर देती हैं. रूस और योरपी देशों की समस्या हमारे देश से कुछ अलग है. हमारे यहां कुछ साल पहले तो सिर्फ़ लोक लाज के कारन पेट गिराया जाता था. किसी कमज़ोरी में पड़ कर या किसी तरह धोका खाकर कुँवारी या विधवा औरतें पेट से हो जाती थीं और अपने को समाज में बे इज़्ज़त होने से बचाने के लिये उन्हें इस तरह के ख़ून अपनी गरदन पर लेने पड़ते थे. लेकिन अब बड़े बड़े घरों में जीवन स्तर ऊँचा रखने के लिये बर्थ कन्ट्रोल पर अमल किया जाता है और जब वह असफल रहता है तो पेट गिराने की नौबत आती है ! पर दूसरे देशों में और दूसरे कारन भी हैं जो मजबूर करते हैं कि पेट गिरवा दिया जाय. रोज़ी रोज़गार पेट गिराने के मसले पर बहुत असर रखते हैं. योरप में बहुत सी औरतों को अपनी रोज़ी ख़ुद कमानी पड़ती है. पहली लड़ाई के बाद मर्दों की कमी हो गई थी. उस वक़्त से औरतों में नौकरी का सिलसिला और ज़ोरों से चल पड़ा है. उसी वक़्त से पेट गिराने की समस्या भी बहुत भयानक हो गई है. मां बनने में इन बेचारी औरतों को नौकरी से हाथ धोना पड़ता है. जब नौकरी ही न रहे तो ख़ुद क्या खाएं और बच्चे को क्या खिलाएं. इस झंझट से फ़ुरसत पाने के लिये यही अच्छा समझा जाता है कि पैदा होने से पहले ही इस जंजाल से छुट्टी पा ली जाय. जीवन स्तर बढ़ाने का भी सवाल योरप के लोगों के सामने है. रहने सहने के ढंग में बढ़ोती और आसायश बड़े बड़े ख़ानदान वालों के लिये नामुमकिन है. इस लिये कोशिश की जाती है कि कम से कम बच्चे पैदा हों ताकि पालन पोसन की ज़िम्मेदारी से छुटकारा मिल सके और जीवन मौज में बिताया जा सके.

استھان مقرر ہوتے ھیں، جہاں کام کرنے والی عورتیں اپنے بچوں کو چھوڑ سکتی ھیں .

پیٹ گرانے کی سمسیا کو جن طریقوں سے روس میں حل کیا گیا ھے اُن پر روشنی ڈالنے سے پہلے یہ جان لینا ضروری ھے کہ یہ سمسیا کیا اور کیوں ھے . کچھ مائیں ایسی ہوتی ھیں جو ماں بننا نہیں چاھتیں اور کسی نہ کسی ڈھنگ سے پیدا ہونے والی زندگی کو موت کی گود میں پٹک دیتی ھیں . کہتے ھیں عورتوں کی بھاؤنائیں مرد سے ادھک کومل ہوتی ھیں . کسی کومل بھاؤنا والے کے لئے کیا یہ ممکن ھے ؟ لیکن جب کومل بھاؤناؤں پر ڈر، جھوٹ، دھوکے کے موٹے موٹے پوچے پھرے ھوں تو کیا کیا جائے . کوئی عورت بھی شاید پیٹ گرانا نہیں چاھتی . لیکن مجبوری کو کیا کیا جائے . وہ سب کچھ کرنا پڑتا ھے جسے کرنے کو من نہیں چاھتا . سداچار کو اوپر اُٹھانے کے لئے ضروری ھے کہ اِن پوچوں کو دھو دیا جائے اور آدمی کی کومل بھاؤناؤں کو اُجاگر کیا جائے . آئیے دیکھیں وہ کونسی حالتیں ھیں جو ایک ماں کو پیدا ہونے سے پہلے بچے کو مارنے پر مجبور کردیتی ھیں . روس اور یورپی دیشوں کی سمسیا ھمارے دیش سے کچھ الگ ھے . ھمارے یہاں کچھ سال پہلے تو صرف لوک لاج کے کارن پیٹ گرایا جاتا تھا . کسی کمزوری میں پڑ کر یا کسی طرح دھوکا کھاکر کنواری یا بدھوا عورتیں پیٹ سے ھو جاتی تھیں اور اپنے کو سماج میں بے عزت ہونے سے بچانے کے لئے اُنہیں اِس طرح کے خون اپنی گردن پر لینے پڑتے تھے . لیکن اب بڑے بڑے گھروں میں جیون استر اونچا رکھنے کے لئے برتھ کنٹرول پر عمل کیا جاتا ھے اور جب وہ اسپھل رھتا ھے تو پیٹ گرانے کی نوبت آتی ھے ! پر دوسرے دیشوں میں اور دوسرے کارن بھی ھیں جو مجبور کرتے ھیں کہ پیٹ گروا دیا جائے . روزی روزگار پیٹ گرانے کے مسئلے پر بہت اثر رکھتے ھیں . یورپ میں بہت سی عورتوں کو اپنی روزی خود کمانی پڑتی ھے . پہلی لڑائی کے بعد مردوں کی کمی ھوگئی تھی . اُس وقت سے عورتوں میں نوکری کا سلسلہ اور زوروں سے چل پڑا ھے . اُسی وقت سے پیٹ گرانے کی سمسیا بھی بہت بھیانک ھوگئی ھے . ماں بننے میں اِن بیچاری عورتوں کو نوکری سے ھاتھ دھونا پڑتا ھے . جب نوکری ھی نہ رھے تو خود کیا کھائیں اور بچے کو کیا کھلائیں . اِس جھنجھٹ سے فرصت پانے کے لئے یہی اچھا سمجھا جاتا ھے کہ پیدا ہونے سے پہلے ھی اِس جنجال سے چھٹی پالی جائے . جیون استر بڑھانے کا بھی سوال یورپ کے لوگوں کے سامنے ھے. رھنے سہنے کے ڈھنگ میں بڑھوتی اور آسائش بڑے بڑے خاندان والوں کے لئے ناممکن ھے. اِس لئے کوشش کی جاتی ھے کہ کم سے کم بچے پیدا ھوں تاکہ پالن پوسن کی ذمہ داری سے چھٹکارا مل سکے اور جیون موج میں بتایا جاسکے.

जगह फैला हुआ है. धक्का लग जाने, कोई जिसमानी गड़बड़ी हो जाने से भी पेट गिर जाता है. हमें रोग के इस पहलू से यहाँ मतलब नहीं है. यह हादसे पहतियात से रोके जा सकते हैं. हम "पेट गिराने" के उस पहलू पर रोशनी डालना चाहते हैं जिसे क़त्ल कहा जाता है. इस हरकत को सभी क़त्ल मानते हैं. चाहे मज़हब के मानने वाले हों और चाहे साइन्स के प्रेमी किसी की भी इस बारे में दूसरी राय नहीं है. पेट गिराने का मतलब है किसी नये इनसान को पैदा होने से पहले मार डालना. एक नई ज़िन्दगी को पैदा न होने देने के सवाल पर सोचते सोचते एक और सवाल खड़ा हो जाता है. आखिर बर्थ कन्ट्रोल को क्या कहा जायगा ? क्या बर्थ कन्ट्रोल (दवाओं और डाक्टरी के ज़रिये बच्चों की पैदाइश को रोकना) क़त्ल करने का बढ़िया ढंग नहीं है ? और क्या इस के इस्तेमाल का प्रचार करने वालों को क़त्ल के उभारने के इलज़ाम में सज़ा दी जा सकती है ? जवाब यह दिया जाता है, नहीं, बर्थ कन्ट्रोल पर क़ानून हाथ नहीं उठा सकता. संस्थाएँ खुली हुई हैं. वह बर्थ कन्ट्रोल का प्रचार करती रहती हैं. दुनिया में इस चीज़ का प्रचार बहुत संगठित ढंग से किया जा रहा है. दूसरे देशों की सरकारें आबादी के बढ़ने से घबरा रही हैं. वह हर तरह का सहयोग बर्थ कन्ट्रोल आन्दोलन को देती हैं. पर रूस में मामला बिलकुल उलटा है. बर्थ (जन्म) को कन्ट्रोल करने की कौन कहे वहां बर्थ बढ़ाने के लिये इनाम दिये जाते हैं. 15 करोड़ डालर हर साल माताओं की सेवा में खर्च किया जाता है. ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाली माताओं को मान दिया जाता है. इस तरह के मान को ज़ाहिर करने के लिये वहाँ तीन तमग़े होते हैं: (1) मेटरनिटी मदर, (2) आर्डर आफ़ मदर्स गिलोरी और (3) हीरोइन मदर. जो मां जितने ज़्यादा बच्चे पालती या पैदा करती है उतना ही बड़ा तमग़ा उसे दिया जाता है.

माताओं को नक़दी सहायता भी दी जाती है. हर गर्भवती स्त्री को डाक्टरी मदद, ज़रूरी छुट्टी और रिआयतें तो दी ही जाती हैं. हर स्त्री को तीसरा बच्चा पैदा होने पर 80 डालर इनाम दिया जाता है. चौथे बच्चे की पैदाइश पर 250 डालर इकट्ठा और 16 डालर हर महीने मां को दिये जाते हैं. पांचवें बच्चे के पैदा होने पर 34 डालर इकट्ठा और 24 डालर हर महीने मां को आमदनी होती है. इस तरह दस बच्चों तक मामला चलता रहता है. ग्यारहवें बच्चे की पैदाइश पर इकट्ठा 1000 डालर और 60 डालर हर महीने मां को दिये जाते हैं. विधवा माओं को 20 डालर से 40 डालर तक हर बच्चे के लिये बारह बरस तक मिलता है. छोटे बच्चों की देख भाल के लिये

جگہ پھیلا ہوا ہے۔ دھکا لگ جانے، کوئی جسمانی گڑبڑی ہو جانے سے بھی پیٹ گرجاتا ہے۔ ہمیں روگ کے اِس پہلو سے یہاں مطلب نہیں ہے۔ یہ حادثے احتیاط سے روکے جاسکتے ہیں۔ ہم "پیٹ گرانے" کے اُس پہلو پر روشنی ڈالنا چاہتے ہیں جسے قتل کہا جاتا ہے۔ اِس حرکت کو سبھی قتل مانتے ہیں۔ چاہے مذہب کے ماننے والے ہوں اور چاہے سائنس کے پریمی کسی کی بھی اِس بارے میں دوسری رائے نہیں ہے۔ پیٹ گرانے کا مطلب ہے کسی نئے انسان کو پیدا ہونے سے پہلے مار ڈالنا۔ ایک نئی زندگی کو پیدا نہ ہونے دینے کے سوال پر سوچتے سوچتے ایک اور سوال کھڑا ہوجاتا ہے۔ آخر برتھ کنٹرول کو کیا کہا جائے گا؟ کیا برتھ کنٹرول (دواؤں اور ڈاکٹری کے ذریعے بچوں کی پیدائش کو روکنا) قتل کرنے کا بڑھیا ڈھنگ نہیں ہے؟ اور کیا اِس کے استعمال کا پرچار کرنے والوں کو قتل کے ابھارنے کے الزام میں سزا دی جاسکتی ہے؟ جواب یہ دیا جاتا ہے: نہیں، برتھ کنٹرول پر قانون ہاتھ نہیں اُٹھا سکتا۔ سنستھائیں کھلی ہوئی ہیں۔ وہ برتھ کنٹرول کا پرچار کرتی رہتی ہیں۔ دنیا میں اِس چیز کا پرچار بہت سنگٹھت ڈھنگ سے کیا جا رہا ہے۔ دوسرے دیشوں کی سرکاریں آبادی کے بڑھنے سے گھبرا رہی ہیں۔ وہ ہر طرح کا سہیوگ برتھ کنٹرول آندولن کو دیتی ہیں۔ پر روس میں معاملہ بالکل اُلٹا ہے۔ برتھ (جنم) کو کنٹرول کرنے کی کون کہے وہاں برتھ بڑھانے کے لئے انعام دیئے جاتے ہیں۔ پندرہ کروڑ ڈالر ہر سال ماتاؤں کی سیوا میں خرچ کیا جاتا ہے۔ زیادہ بچے پیدا کرنے والی ماتاؤں کو مان دیا جاتا ہے۔ اِس طرح کے مان کو ظاہر کرنے کے لئے وہاں تین تمغے ہوتے ہیں: (1) میٹرنٹی مدر، (2) آرڈر آف مدرس گلوری اور (3) ہیروئن مدر۔ جو ماں جتنے زیادہ بچے پالتی یا پیدا کرتی ہے اتنا ہی بڑا تمغہ اُسے دیا جاتا ہے۔

ماتاؤں کو نقدی سہائتا بھی دی جاتی ہے۔ ہر گربھوتی استری کو ڈاکٹری مدد، ضروری چھٹی اور رعائتیں تو دی ہی جاتی ہیں۔ ہر استری کو تیسرا بچہ پیدا ہونے پر 80 ڈالر انعام دیا جاتا ہے۔ چوتھے بچے کی پیدائش پر 250 ڈالر اکٹھا اور 16 ڈالر ہر مہینے ماں کو دیئے جاتے ہیں۔ پانچویں بچے کے پیدا ہونے پر 34 ڈالر اکٹھا اور 24 ڈالر ہر مہینے ماں کو آمدنی ہوتی ہے۔ اِس طرح دس بچوں تک معاملہ چلتا رہتا ہے۔ گیارھویں بچے کی پیدائش پر اکٹھا 1000 ڈالر اور 60 ڈالر ہر مہینے ماں کو دیئے جاتے ہیں۔ ودھوا ماؤں کو 20 ڈالر سے 40 ڈالر تک ہر بچے کے لئے بارہ برس تک ملتا ہے۔ چھوٹے بچوں کی دیکھ بھال کے لئے

रूस में सदाचार—गर्भ हत्या

(भाई मुजीब रिज़वी)

गुप्त रोगों और वेश्या पन से फ़ुरसत पाकर रूसी अधिकारियों ने दुराचार के खिलाफ़ लड़ाई बन्द नहीं की. उन्हें उन सारी हालतों को बदलना था जो आदमी को सदाचार से गिराती हैं. वेश्यापन को खतम करने का ज़रूरी मतलब दुराचार या बदचलनी को खतम करना नहीं होता. दूसरे कुछ देशों में भी क़ानून बना दिया गया है कि कोई औरत वेश्या नहीं बन सकती और न अपना बदन बेचने के लिये किसी जगह दुकान लगा सकती है. फिर भी दुराचार वहां खूब फल फूल रहा है. अन्तर इतना हुआ है कि दुराचार के स्थानों का नाम नाइट क्लब, बालरूम, होटल वग़ैरा रख दिया गया है. कोठे न सही बिजली के पोल के नीचे ही दुकान लगा ली जाती है. पुलिस वाले क़ानून का डंडा नचाते रह जाते हैं लेकिन इस तरह के अपराधी हाथ नहीं आते. जो क़ानून को धोका देना चाहे उसके लिये अनगिनत मौक़े क़ानून ही पैदा कर देते हैं. इन देशों के लोग क़ानून और सज़ा के बल पर रोके जाते हैं इसलिये यह क़ानून को धोका दे सकते हैं. रूस में साइन्सी असूल पर और एक खास ढंग से वेश्यापन को खतम किया गया है. वहां पहले लोगों का सदाचार ऊँचा किया गया. लोग खुद जब किसी चीज़ के खिलाफ़ खड़े हो जायं तो उन्हें क़ानून की ज़रूरत नहीं होती. लोगों के दिल और दिमाग़ को अपील की जाय तो क़ानून को धोका देने की ज़रूरत भी नहीं रहती. रूस में अगर क़ानून बने तो तब बने जब उनको तोड़ने की किसी में इच्छा बाक़ी न रह गई थी. रूसी क़ानून केवल इसलिये हैं कि किसी मानसिक कमज़ोरी से गिरते इनसान पर ज़रा रोक रखी जा सके. अभी वहां ऐसे क़ानूनों की ज़रूरत भी है. बुराई का असर जल्दी होता है. जब चारों तरफ़ लू चल रही हो तो ठन्डे कमरे से बिना एहतियात किये निकलना खतरनाक साबित होता है. कहने का मतलब यह है कि उन दूसरे देशों की तरह रूस में वेश्याओं और वेश्यापन के स्थानों को कोई दूसरा लुभावना नाम नहीं दिया गया बल्कि इस काम के खिलाफ़ खुद जनता की भावना इतनी उभार दी गई है और उसको इसके नुक़सान इस तरह बता दिये गए कि अब बिना किसी क़ानून और सज़ा के ही वहां के लोग इन बुराइयों से दूर भागते हैं. सब से बड़ी बात यह है कि वहां वह हालात ही अब नहीं हैं जो किसी भले आदमी को मजबूर करके इन गढ़ों में ढकेल देते हैं.

दुराचार के एक पहलू को खतम करके अधिकारियों ने दूसरे पहलू पर नज़र डाली. "पेट गिराने" का रोग जगह-

روس میں سداچار—گربھ ھتیا

(بھائی مجیب رضوی)

گپت روگوں اور ویشیا پن سے فرصت پاکر روسی ادھیکاریوں نے دراچار کے خلاف لڑائی بند نہیں کی. انہیں ان ساری حالتوں کو بدلنا تھا جو آدمی کو سداچار سے گراتی ھیں. ویشیا پن کو ختم کرنے کا ضروری مطلب دراچار یا بد چلنی کو ختم کرنا نہیں ہوتا. دوسرے کچھ دیشوں میں بھی قانون بنا دیا گیا ہے کہ کوئی عورت ویشیا نہیں بن سکتی اور نہ اپنا بدن بیچنے کے لئے کسی جگہ دوکان لگا سکتی ہے. پھر بھی دراچار وہاں خوب پھول پھل رہا ہے. انتر اتنا ہوا ہے کہ دراچار کے استھانوں کا نام نائٹ کلب، بال روم، ہوٹل وغیرہ رکھ دیا گیا ہے. کوٹھے نہ سہی بجلی کے پول کے نیچے ہی دوکان لگالی جاتی ہے. پولس والے قانون کا ڈنڈا نچاتے رہ جاتے ہیں لیکن اسطرح کے اپرادھی ہاتھ نہیں آتے. جو قانون کو دھوکا دینا چاہے اس کے لئے ان گنت موقعے قانون ہی پیدا کر دیتے ہیں. ان دیشوں کے لوگ قانون اور سزا کے بل پر روکے جاتے ہیں اس لئے یہ قانون کو دھوکا دے سکتے ہیں. روس میں سائنسی اصول پر اور ایک خاص ڈھنگ سے ویشیا پن کو ختم کیا گیا ہے. وہاں پہلے لوگوں کا سداچار اونچا کیا گیا. لوگ خود جب کسی چیز کے خلاف کھڑے ہوجائیں تو انہیں قانون کی ضرورت نہیں ہوتی. لوگوں کے دل اور دماغ کو اپیل کی جائے تو قانون کو دھوکا دینے کی ضرورت بھی نہیں رہتی. روس میں اگر قانون بنے تو تب بنے جب ان کو توڑنے کی کسی میں اچھا باقی نہ رہ گئی تھی. روسی قانون کیول اس لئے ہیں کہ کسی مانسک کمزوری سے گرتے انسان پر ذرا روک رکھی جاسکے. ابھی وہاں ایسے قانونوں کی ضرورت بھی ہے. برائی کا اثر جلدی ہوتا ہے. جب چاروں طرف لو چل رہی ہو تو ٹھنڈے کمرے سے بنا احتیاط کئے نکلنا خطرناک ثابت ہوتا ہے. کہنے کا مطلب یہ ہے کہ ان دوسرے دیشوں کی طرح روس میں ویشیاؤں اور ویشیا پن کے استھانوں کو کوئی دوسرا لبھاونا نام نہیں دیا گیا بلکہ اس کام کے خلاف خود جنتا کی بھاونا اتنی ابھار دی گئی ہے اور اس کو اس کے نقصان اس طرح بتا دیئے گئے کہ اب بنا کسی قانون اور سزا کے ہی وہاں کے لوگ ان برائیوں سے دور بھاگتے ہیں. سب سے بڑی بات یہ ہے کہ وہاں وہ حالات ہی اب نہیں ہیں جو کسی بھلے آدمی کو مجبور کرکے ان گڑھوں میں ڈھکیل دیتے ہیں.

دراچار کے ایک پہلو کو ختم کرکے ادھیکاریوں نے دوسرے پہلو پر نظر ڈالی. "پیٹ گرانے" کا روگ جگہ

इस तरह जब धारा सभा से बाहर के लोग वज़ीर बनाए जायंगे तो इससे नीचे लिखे फ़ायदे होंगे:—

1. योग्य जानकारों को ढूँढकर वज़ीर बनाया जा सकेगा.

2. धारा सभा उन पर अंकुश रख सकेगी. सारी धारा सभा यह काम करने के लिये आज़ाद रहेगी.

3. आलोचकों को वज़ीर बनाकर उनका मुँह बन्द करने की चाल न चली जा सकेगी.

4. हर चालाक आदमी को ख़ुश करने का सवाल न होगा, इसलिये थोड़े से वज़ीरों से काम चलाया जा सकेगा. इससे ख़र्च में बचत होगी.

5. वज़ीर बाहर के आदमी होंगे इसलिये चुनाव वाले लोग वज़ीरों को परेशान न कर सकेंगे.

6. चुनाव की चख़-चख़ से बचे रहने के कारन वज़ीर लोग आफ़िस का काम अच्छी तरह कर सकेंगे.

7. हुकूमत का और आफ़िस का काम करने के लिये ही उन्हें रखा गया है, इसलिये उन्हें इस काम में ख़ास ध्यान देना होगा. दलबन्दियों के झगड़ों से वह लगभग बचे रहेंगे.

8. प्रान्त के बाहर के भी वज़ीर होने से सरकारों में प्रान्तीयता का भाव न पनप पाएगा और भारत के एक जान होने में इससे मदद मिलेगी.

9. धारा सभा का हर मेम्बर वज़ीर बनने के लिये जो तिकड़म भिड़ाता रहता है वह बन्द हो जायगी.

इस देश की हालत के मुताबिक़ यही तरीक़ा ठीक है. हमारे आज के विधान में इस तरह का सुधार होना ज़रूरी है.

اس طرح دھارا سبھا سے باھر کے لوگ وزیر بنائے جائینگے تو اس سے نیچے لکھے فائدے ھونگے:—

1. یوگیہ جان‌کاروں کو ڈھونڈھ کر وزیر بنایا جاسکے گا .

2. دھارا سبھا ان پر انکش رکھ سکیگی. ساری دھارا سبھا یہ کام کرنے کے لئے آزاد رھیگی .

3. آلوچکوں کو وزیر بناکر اُن کا منہ بند کرنے کی چال نہ چلی جاسکے گی .

4. ھر چالاک آدمی کو خوش کرنے کا سوال نہ ھوگا' اس لئے تھوڑے سے وزیروں سے کام چلایا جاسکے گا . اس سے خرچ میں بچت ھوگی .

5. وزیر باھر کے آدمی ھونگے اس لئے چناو والے لوگ وزیروں کو پریشان نہ کرسکینگے .

6. چناو کی چخ چخ سے بچے رھنے کے کارن وزیر لوگ آفس کا کام اچھی طرح کرسکینگے .

7. حکومت کا اور آفس کا کام کرنے کے لئے ھی اُنھیں رکھا گیا ھے' اس لئے اُنھیں اس کام میں خاص دھیان دینا ھوگا . دل بندیوں کے جھگڑوں سے وہ لگ بھگ بچے رھیں گے .

8. پرانت کے باھر کے بھی وزیر ھونے سے سرکاروں میں پرانتیتا کا بھاو نہ پنپ پائیگا اور بھارت کے ایک جان ھونے میں اس سے مدد ملے گی .

9. دھارا سبھا کا ھر ممبر وزیر بننے کے لئے جو تکڑم بھڑاتا رھتا ھے وہ بند ھوجائے گی .

اس دیش کی حالت کے مطابق یہی طریقہ ٹھیک ھے . ھمارے آج کے ودھان میں اِس طرح کا سدھار ھونا ضروری ھے .

प्रेम-डगर

(भाई 'नज्म' आफ़न्दी)

सुध बुध का धनी पीत नगर क्या जाने,
यह तुझमें है सूझ बूझ अगर, क्या जाने.
आँखें खोले हुए चला जाता है,
मूरख तू प्रेम की डगर क्या जाने.

پریم ڈگر

(بھائی نجم آفندی)

سدھ بدھ کا دھنی پیت نگر کیا جانے'
یہ تجھ میں ھے سوجھ بوجھ اگر' کیا جانے .
آنکھیں کھولے ھوئے چلا جاتا ھے'
مورکھ تو پریم کی ڈگر کیا جانے .

---

5. धारा सभा के मेम्बर जब वज़ीर या सेक्रेटरी बन जाते हैं तब जिस हलक़े से उन का चुनाव हुआ था, जिन लोगों ने उन्हें चुनाव में मदद की थी वह लोग अपना अपना काम कराने के लिये दबाव डालने लगते हैं. अगर उनका काम न किया जाए तो अगला चुनाव लड़ने में वह साथ न देंगे या विरोध करेंगे, इसलिये उनके बेजा काम भी करने पड़ते हैं.

6. चुनाव हलक़े के लोगों से मिलने जुलने में इतना समय निकल जाता है कि वज़ीर और नायब वज़ीर लोग अपने आफ़िस का काम नहीं के बराबर कर पाते हैं.

7. धारा सभा के मेम्बर होने के कारन वज़ीर वग़ैरा लोग अपने को नौकर की तरह ज़िम्मेवार नहीं समझते हैं. एक तरह से मालिकों में ही अपनी गिनती करते हैं. इसलिये कहीं कहीं ऐसा होता है कि दफ़्तर ख़ाली पड़ा रहता है. सब वज़ीर वग़ैरा अपने अपने बंगलों पर आफ़िस बना लिया करते हैं और जनता को अपने काम के लिये बंगलों बंगलों भटकना पड़ता है. इस तरह साहब को आफ़िस के नौकर घर के नौकर के रूप में मिल जाते हैं. आफ़िस के नाम पर बंगलों को महल बनाने में और मदद मिल जाती है. साहब बहादुर घर में सो रहे हों तब भी वह आफ़िस की हाज़री समझी जाती है.

8. धारा सभा के मेम्बरों पर चुनाव का भूत सदा सवार रहता है इसलिये वह सरकारी काम के बहाने अपने प्रचार में लग जाते हैं. वज़ीर बन जाने पर तो यह काम और भी बढ़ जाते हैं, इसलिये शासन के काम में वह कम से कम समय दे पाते हैं. दौरा भत्ता, पारटी मीटिंग या इसी निगाह से मिलना जुलना उनके ख़ास प्रोग्राम बन जाते हैं.

यह ऐसी बुराइयाँ हैं जिनसे लोकशाही सरकार सचमुच लोकशाही नहीं बन पाती और उसके सभी लाभ नष्ट हो जाते हैं. इसके लिये कुछ सुधार करने की ज़रूरत है. एक सुधार की तरफ़ ख़ास तौर पर ध्यान खींचा जाता है—

सरकार बनाने का काम धारा सभा या पार्लिमेन्ट तो करे पर वज़ीर धारा सभा या पार्लिमेन्ट के बाहर के आदमी ही बनाए जायँ, बल्कि इसमें प्रान्त से बाहर के आदमी भी लिये जायँ. हाँ, यह ठीक है कि धारा सभा में जिस दल का बहुमत होगा उस दल की पालिसी को स्वीकार करने वाले या उसी पालिसी को मानने वाले लोग ही वज़ीर बनाए जायंगे और धारा सभा उन्हें अलग कर सकेगी. उन्हें धारा सभा की राय के अनुसार काम करना होगा, पर वह धारा सभा के किसी फ़ैसले में वोट न दे सकेंगे. हाँ, कोई बात भी सरकार की तरफ़ से पेश कर सकेंगे.

5. دھارا سبھا کے ممبر جب وزیر یا سکریٹری بن جاتے ھیں تب جس حلقے سے اُن کا چناو ھوا تھا، جن لوگوں نے اُنھیں چناو میں مدد کی تھی وہ لوگ اپنا اپنا کام کرانے کے لئے دباؤ ڈالنے لگتے ھیں. اگر اُن کا کام نہ کیا جائے تو اگلا چناو لڑنے میں وہ ساتھ نہ دینگے یا ورودھ کرینگے، اِسلئے اُن کے بیجا کام بھی کرنے پڑتے ھیں.

6. چناو حلقے کے لوگوں سے ملنے جلنے میں اتنا سمے نکل جاتا ھے کہ وزیر اور نائب وزیر لوگ اپنے آفس کا کام نہیں کے برابر کر پاتے ھیں.

7. دھارا سبھا کے ممبر ھونے کے کارن وزیر وغیرہ لوگ اپنے کو نوکر کی طرح ذمہ دار نہیں سمجھتے ھیں. ایک طرح سے مالکوں میں ھی اپنی گنتی کرتے ھیں. اسلئے کہیں کہیں ایسا ھوتا ھے کہ دفتر خالی پڑا رھتا ھے. سب وزیر وغیرہ اپنے اپنے بنگلوں پر آفس بنا لیا کرتے ھیں اور جنتا کو اپنے کام کے لئے بنگلوں بنگلوں بھٹکنا پڑتا ھے. اِسطرح صاحب کو آفس کے نوکر گھر کے نوکر کے روپ میں مل جاتے ھیں. آفس کے نام پر بنگلوں کو محل بنانے میں اور مدد مل جاتی ھے. صاحب بہادر گھر میں سو رھے ھوں تب بھی وہ آفس کی حاضری سمجھی جاتی ھے.

8 دھارا سبھا کے ممبروں پر چناو کا بھوت سدا سوار رھتا ھے اِسلئے وہ سرکاری کام کے بہانے اپنے پرچار میں لگ جاتے ھیں. وزیر بن جانے پر تو یہ کام اور بھی بڑھ جاتے ھیں، اِس لئے شاسن کے کام میں وہ کم سے کم سمے دے پاتے ھیں. دورہ بھتہ، پارٹی میٹنگ یا اِسی نگاہ سے ملنا جلنا اُن کے خاص پروگرام بن جاتے ھیں.

یہ ایسی برائیاں ھیں جن سے لوک شاھی سرکار سچ مچ لوک شاھی نہیں بن پاتی اور اسکے سبھی لابھ نشٹ ھوجاتے ھیں. اِسکے لئے کچھ سدھار کرنے کی ضرورت ھے. ایک سدھار کی طرف خاص طور پر دھیان کھینچا جاتا ھے —

سرکار بنانے کا کام دھارا سبھا یا پارلیمنٹ تو کرے پر وزیر دھارا سبھا یا پارلیمنٹ کے باھر کے آدمی ھی بنائے جائیں، بلکہ اِس میں پرانت سے باھر کے آدمی بھی لئے جائیں. ھاں، یہ ٹھیک ھے کہ دھارا سبھا میں جس دل کا بہومت ھوگا اُس دل کی پالیسی کو سویکار کرنے والے یا اُسی پالیسی کو ماننے والے لوگ ھی وزیر بنائے جائیں گے اور دھارا سبھا اُنھیں الگ کر سکے گی. اُنھیں دھارا سبھا کی رائے کے انوسار کام کرنا ھوگا، پر وہ دھارا سبھا کے کسی فیصلے میں ووٹ نہ دے سکیں گے. ھاں، کوئی بات بھی سرکار کی طرف سے پیش کر سکیں گے.

(नफ़सियात) की नज़र से विचार किया. इस लिये यह तरीक़ा लोकशाही सरकार बनाने में सफल नहीं हुआ और न इस से सरकार बनने के लिये अच्छे आदमी मिल सके. आज की हालत में इस मामले में हमारे सामने यह दिक़्क़तें आरही हैं:—

1. हर तरह के अच्छे अच्छे जानकार चुनाव लड़कर धारा सभा में नहीं पहुँचते. जियादातर जानकारों में अच्छी तरह काम करने की लियाक़त भले ही हो पर चुनाव लड़ने की लियाक़त नहीं होती या तबियत नहीं होती. जब धारा सभा के मेम्बरों में से ही वज़ीर बनने के लिये आदमी लेने का रिवाज है तब ऊँचे दरजे के जानकारों की कमी खटकती है. सेहत मंत्री के लिये हमें तन्दुरुस्ती का अच्छा जानकार नहीं मिलता, शिक्षा मंत्री के लिये ऊँचे दरजे का तालीम शास्त्री नहीं मिलता, खेती मंत्री के लिये खेती विद्या का अच्छा जानकार नहीं मिलता, इसलिये वज़ीर मंडल में घटिया आदमी भर लेना पड़ते हैं.

2. धारा सभा सरकार के ऊपर अंकुश (कन्ट्रोल) रखने के लिये है. पर धारा सभा के सभी मेम्बर इतनी लियाक़त नहीं रखते कि सरकार पर अंकुश रख सकें. सैकड़ा पीछे शायद पन्द्रह बीस आदमी ही इतनी लियाक़त के हों. पर लगभग वही सब के सब या तो मंत्री बना लिये जाते हैं या उप मंत्री, सेक्रेटरी वग़ैरा. तब उनपर अंकुश रखने के लिये कोई नहीं रह जाता. जो रह जाते हैं वह लगभग या तो उनके मददगार होते हैं या हाँ में हाँ मिलाने वाले. ऐसी हालत में धारा सभा और सरकार क़रीब क़रीब एक हो जाती है, तब धारा सभा का सरकार पर अंकुश कैसे रह सकता है ? कुछ बचे खुचे लोग टीका भले ही करलें पर नए चुनाव तक सरकार को बदल नहीं सकते. धारा सभा सरकार पर अंकुश तभी रख सकती है जब सरकार धारा सभा से अलग हो, धारा सभा का हिस्सा नहीं.

3. आज के तरीक़े में सरकार बनाने वाले लोग अपनी बुराई से बचने के लिये बुराई बताने वाले मेम्बरों को सरकार में शामिल कर लेते हैं. देखा कि कोई मेम्बर पोल पट्टी खोलने में जियादा होशयार है तो उसे भी मंत्री बनाकर साझेदार बना लिया. इससे ख़र्च बढ़ जाता है और सरकार की बेलगामी ज्यों की त्यों बनी रहती है. इस चाल से लोक शाही फ़ेल हो जाती है.

4. ब्रिटिश सरकार के समय में जहाँ तीन वज़ीर काम करते थे और काम अच्छी तरह होता था वहाँ दस दस वज़ीर और दस दस सेक्रेटरी रख लिये जाते हैं. इस तरह आज सरकार कहलाने वालों का जनता पर बोझ चौगुना दस गुना बढ़ा हुआ है.

(نفسیات) کی نظر سے وچار کیا . اِس لئے یہ طریقہ لوک شاہی سرکار بنانے میں سپھل نہیں ہوا اور نہ اِس سے سرکار بننے کے لئے اچھے آدمی مل سکے . آج کی حالت میں اِس معاملے میں ہمارے سامنے یہ دقتیں آرہی ہیں :—

1. ہر طرح کے اچھے اچھے جانکار چناو لڑکر دھارا سبھا میں نہیں پہنچتے . زیادہ تر جانکاروں میں اچھی طرح کام کرنے کی لیاقت بھلے ہی ہو پر چناو لڑنے کی لیاقت نہیں ہوتی یا طبیعت نہیں ہوتی . جب دھارا سبھا کے ممبروں میں سے ہی وزیر بننے کے لئے آدمی لینے کا رواج ہے تب اونچے درجے کے جانکاروں کی کمی کھٹکتی ہے . صحت منتری کے لئے ہمیں تندرستی کا اچھا جانکار نہیں ملتا' شکشا منتری کے لئے اونچے درجے کا تعلیم شاستری نہیں ملتا' کھیتی منتری کے لئے کھیتی ودیا کا اچھا جانکار نہیں ملتا' اِسلئے وزیر منڈل میں گھٹیا آدمی بھر لینا پڑتے ہیں .

2. دھارا سبھا سرکار کے اوپر انکش (کنٹرول) رکھنے کے لئے ہے . پر دھارا سبھا کے سبھی ممبر اِتنی لیاقت نہیں رکھتے کہ سرکار پر انکش رکھ سکیں . سیکڑہ پیچھے شاید پندرہ بیس آدمی ہی اِتنی لیاقت کے ہوں . پر لگ بھگ وہی سبکے سب یا تو منتری بنا لئے جاتے ہیں یا اُپ منتری' سکریٹری وغیرہ . تب اُنپر انکش رکھنے کے لئے کوئی نہیں رہ جاتا . جو رہ جاتے ہیں وہ لگ بھگ یا تو اُن کے مددگار ہوتے ہیں یا ہاں میں ہاں ملانے والے . ایسی حالت میں دھارا سبھا اور سرکار قریب قریب ایک ہوجاتی ہے' تب دھارا سبھا کا سرکار پر انکش کیسے رہ سکتا ہے ؟ کچھ بچے کھچے لوگ ٹیکا بھلے ہی کرلیں پر نئے چناو تک سرکار کو بدل نہیں سکتے . دھارا سبھا سرکار پر انکش تبھی رکھ سکتی ہے جب سرکار دھارا سبھا سے الگ ہو' دھارا سبھا کا حصہ نہیں .

3. آج کے طریقے میں سرکار بنانے والے لوگ اپنی برائی سے بچنے کے لئے برائی بتانے والے ممبروں کو سرکار میں شامل کرلیتے ہیں . دیکھا کہ کوئی ممبر پول پٹی کھولنے میں زیادہ ہوشیار ہے تو اُسے بھی منتری بناکر ساجھے دار بنالیا . اِس سے خرچ بڑھ جاتا ہے اور سرکار کی بے لگامی جیوں کی تیوں بنی رہتی ہے . اِس چال سے لوک شاہی فیل ہو جاتی ہے .

4. برٹش سرکار کے سمے میں جہاں تین وزیر کام کرتے تھے اور کام اچھی طرح ہوتا تھا وہاں دس دس وزیر اور دس دس سکریٹری رکھ لئے جاتے ہیں . اِس طرح آج سرکار کہلانے والوں کا جنتا پر بوجھ چوگنا دس گنا بڑھا ہوا ہے .

उस हुक्म पालने में लगे कि मौत का डर भागा और जब यह गंदा डर गया कि सत्य सोचने, बोलने और कर डालने का बल आया. यह बल आया और अंदर बैठी सारी ताक़तों का एका हुआ और एका हुआ कि आत्मा चमकी और विजय देवी के दर्शन हुए.

अब चिन्ता कैसे ? नतीजे से अब क्या मतलब ? कैसी जीत ; किसकी हार ? सब मन, वचन, कर्म अपने राम को समर्पन—

अब मँझी आत्मा के सामने हैं :—

सबमें राम और राम में सब

यानी

मैं सबमें और सब मुझमें.

—भगवानदीन

اُس حکم پالنے میں لگے کہ موت کا ڈر بھاگا اور جب یہ گندہ ڈر گیا کہ ستیہ سوچنے، بولنے اور کر ڈالنے کا بل آیا. یہ بل آیا اور اندر بیٹھی ساری طاقتوں کا ایکا ہوا اور ایکا ہوا کہ آتما چمکی اور وجے دیوی کے درشن ہوئے.

اب چنتا کیسے ؟ نتیجے سے اب کیا مطلب ؟ کیسی جیت ؛ کس کی ہار ؟ سب من، وچن، کرم اپنے رام کو سمرپن.

اب منجھی آتما کے سامنے ہیں :—

سب میں رام اور رام میں سب

یعنی

میں سب میں اور سب مجھ میں.

—بھگوان دین

लोकशाही सरकार—एक सुझाव

(स्वामी सत्यभक्त)

राजा या तानाशाह (डिक्टेटर) की सरकार आपको पसन्द हो या न हो, आप उसे आसानी से बदल नहीं सकते, उसे बदलने का अधिकार आपके हाथ में नहीं होता. वह अच्छा राज करे तो उसकी मेहरबानी, न करे तो आप की क़िस्मत. पर आज का ज़माना ऐसी पराधीनता को सह नहीं सकता, इस लिये संसार में लगभग सभी जगह लोकशाही (जमहूरी) सरकारें हो गई हैं. जनता इन्हें चुनकर बनाती है और आशा की जाती है कि जनता की इच्छा के अनुसार यह काम करेंगी. अगर जनता की इच्छा के अनुसार यह काम न करें तो पार्लिमेंट या धारा-सभा को अधिकार है कि इन सरकारों को अलग करदे. भारत के विधान में इसी तरह की सरकारें बनाने की योजना रक्खी गई है. इस योजना के अनुसार धारा सभा में जिस पारटी का बहुमत होता है उस पारटी के मेम्बरों में से कुछ मेम्बर सरकार या वज़ीर मंडल बना दिये जाते हैं जो कि धारा सभा के अधीन रहकर काम करते हैं. इस तरह की सरकार लोकशाही या जनतंत्री सरकार कहलाती है. इंगलैन्ड के विधान से हमने यह नक़ल की है.

लेकिन इस तरीक़े को काम में लाते समय हमने भारत की हालत पर ध्यान नहीं दिया और न मनोविज्ञान

لوک شاہی سرکار—ایک سجھاو

(سوامی ستیہ بھگت)

راجہ یا تاناشاہ (ڈکٹیٹر) کی سرکار آپ کو پسند ہو یا نہ ہو، آپ اُسے آسانی سے بدل نہیں سکتے، اُسے بدلنے کا ادھیکار آپ کے ہاتھ میں نہیں ہوتا. وہ اچھا راج کرے تو اُسکی مہربانی، نہ کرے تو آپ کی قسمت. پر آج کا زمانہ ایسی پرادھینتا کو سہہ نہیں سکتا، اسلئے سنسار میں لگ بھگ سبھی جگہ لوک شاہی (جمہوری) سرکاریں ہوگئی ہیں. جنتا اِنہیں چنکر بناتی ہے اور آشا کی جاتی ہے کہ جنتا کی اِچھا کے انوسار یہ کام کرینگی. اگر جنتا کی اِچھا کے انوسار یہ کام نہ کریں تو پارلیمنٹ یا دھارا سبھا کو ادھیکار ہے کہ اِن سرکاروں کو الگ کردے. بھارت کے ودھان میں اِسی طرح کی سرکاریں بنانے کی یوجنا رکھی گئی ہے. اِس یوجنا کے انوسار دھارا سبھا میں جس پارٹی کا بہومت ہوتا ہے اُس پارٹی کے ممبروں میں سے کچھ ممبر سرکار یا وزیر منڈل بنادیئے جاتے ہیں جو کہ دھارا سبھا کے ادھین رہکر کام کرتے ہیں. اِس طرح کی سرکار لوک شاہی یا جن تنتری سرکار کہلاتی ہے. انگلینڈ کے ودھان سے ہم نے یہ نقل کی ہے.

لیکن اِس طریقے کو کام میں لاتے سمے ہم نے بھارت کی حالت پر دھیان نہیں دیا اور نہ منووگیان

दर्शन के महल खड़े करना जो रंग ला सकता है वह मानव समाज के रुख़ से रहने के क़ाबिल नहीं हो सकता. मार्क्सने माटीवादी साधनों को इतना महत्त्व दिया कि नैतिक सिद्धान्त और चाल-चलन की सफ़ाई एकदम पीछे जा पड़ी—दया, उदारता, हमदर्दी उसकी नज़र में पैसे की शाखें बनकर रह गईं. यह किसी हद तक ठीक है कि माटीवादी चक्र नैतिक विचारों पर अपना असर डालता है पर हमेशा और हर हालत में नहीं; अगर हर तरह से पैसे की बुनियाद पर नैतिक महल खड़ा होता तो ग़रीबी में वह महल गिर पड़ना चाहिये था पर वैसा न कभी हुआ न होता सुना. अकाल के मौक़े पर मां को अपने बच्चे बेचने की बात सुनी है और वह ठीक भी है पर कहीं हज़ारों में एक. अपवाद तो उलटा यह साबित करता है कि नैतिक बल पैसे से कहीं ज़्यादा बलवान होता है; कुछ भी हो मार्क्स का फ़लसफ़ा कच्चे नैतिक सिद्धान्तों पर टिका हुआ है.

जो आदमी अपने वक़्त की समाजी और आर्थिक हालत में क्रांति पैदा कर दे और लोगों के दिल में उथल पुथल मचा दे और उनको उन ग़ुलामियों से निकाल दे वही इतिहास बनाता है और वही इतिहास को उलट पुलट डालता है. बुद्ध, महावीर, ईसा से लेकर गांधी तक का इतिहास गवाह है कि यह लोग अपने वक़्त की समाजी और आर्थिक अवस्था में पैदा नहीं उसके ख़िलाफ़ खड़े हुए और अर्थ को नीचा दिखाकर इख़लाक़ और ऊँचे चाल-चलन को राज गद्दी दिलवाई. समाज-सेवा की भावना और मानव सेवा की भावना जगाकर वह यह जादू कर पाये. मानवता या मानव प्रेम अपने आप में धोके की चीज़ है अगर उसकी तह में आत्मबल न हो और आत्मबल की पहचान है कर्म, क्योंकि कर्म आत्मबल का फल है और वह कर्म ऐसा होना चाहिये जो आदमी में सच्ची और निर्मल भावना पैदा करे और ऐसी कोई भी इच्छा पैदा करे कि वह कर्त्तव्य को समझने लगे और उसको पूरा करने में जुट जाये. बस अब आत्मा की मँझाई यही है कि हम समाज को ऐसी तालीम दें कि उनमें जब भावना की तरंगें उठें तो वह सच्ची और मानवोचित हों. हवा, पानी, रोशनी की तरह नेकी, ईमानदारी, अहिन्सा, सच्चाई के दाम बुद्धि नहीं आँक सकती, उसे तो मन ही आँकेगा. वह तो भावना की तराज़ू में ही तुल सकती है.

अब सुनिये, आत्मा किस तरह मँझेगी:—

है हिम्मत तो अपने अन्दर समा जाओ और अपने सत्य यानी राम को खोज लो.

मन, वचन, कर्म से अपने कर्म के हुक्म पालने में लग जाओ.

ھوشن کے محل کھڑے کرنا جو رنگ لاسکتا ھے وہ مانو سماج کے رخ سے رھنے کے قابل نہیں ھوسکتا . مارکس نے ماٹی وادی سادھنوں کو اِتنا مہتو دیا کہ نیتک سدھانت اور چال چلن کی صفائی ایک دم پیچھے جاپڑی — دیا' اُدارتا' ھمدردی اُسکی نظر میں پیسے کی شاخیں بن کر رہ گئیں . یہ کسی حدتک ٹھیک ھے کہ ماٹی وادی چکر نیتک وچاروں پر اپنا اثر ڈالتا ھے پر ھمیشہ اور ھر حالت میں نہیں؛ اگر ھر طرح سے پیسے کی بنیاد پر نیتک محل کھڑا ھوتا تو غریبی میں وہ محل گر پڑنا چاھئے تھا پر ویسا نہ کبھی ھوا نہ ھوتا سنا . اکال کے موقع پر ماں کو اپنے بچے بیچنے کی بات سنی ھے اور وہ ٹھیک بھی ھے پر کہیں ھزاروں میں ایک . اپواد تو اُلٹا یہ ثابت کرتا ھے کہ نیتک بل پیسے سے کہیں زیادہ بلوان ھوتا ھے؛ کچھ بھی ھو مارکس کا فلسفہ کچے نیتک سدھانتوں پر ٹکا ھوا ھے .

جو آدمی اپنے وقت کی سماجی اور آرتھک حالت میں کرانتی پیدا کردے اور لوگوں کے دل میں اُتھل پتھل مچادے اور اُنکو اُن غلامیوں سے نکال دے وھی اِتہاس بناتا ھے اور وھی اِتہاس کو اُلٹ پلٹ ڈالتا ھے . بدھ' مہابیر' عیسیٰ سے لیکر گاندھی تک کا اِتہاس گواہ ھے کہ یہ لوگ اپنے وقت کی سماجی اور آرتھک اوستھا میں پیدا نہیں اُسکے خلاف کھڑے ھوئے اور ارتھ کو نیچا دکھاکر اخلاق اور اونچے چال چلن کو راج گدی دلوائی . سماج سیوا کی بھاونا اور مانو سیوا کی بھاونا جگا کر وہ یہ جادو کر پائے . مانوتا یا مانو پریم اپنے آپ میں دھوکے کی چیز ھے اگر اُسکی تہ میں آتم بل نہ ھو اور آتم بل کی پہچان ھے کرم' کیونکہ کرم آتم بل کا پھل ھے اور وہ کرم ایسا ھونا چاھئے جو آدمی میں سچی اور نرمل بھاونا پیدا کرے اور ایسی کوئی بھی اِچھا پیدا کرے کہ وہ کرتویہ کو سمجھنے لگے اور اُسکو پورا کرنے میں جٹ جائے . بس اب آتما کی منجھائی یہی ھے کہ ھم سماج کو ایسی تعلیم دیں کہ اُن میں جب بھاونا کی ترنگیں اُٹھیں تو وہ سچی اور مانوچت ھوں . ھوا' پانی' روشنی کی طرح نیکی' ایمانداری' اھنسا' سچائی کے دام بدھی نہیں آنک سکتی' اُسے تو من ھی آنکے گا . وہ تو بھاونا کی ترازو میں ھی تل سکتی ھے .

اب سنئے' آتما کس طرح منجھے گی :—

ھے ھمت تو اپنے اندر سماجاؤ اور اپنے ستیہ یعنی رام کو کھوج لو .

من' وچن' کرم سے اپنے کرم کے حکم پالنے میں لگ جاؤ .

आजादी इसको मानते हैं कि समाज से अलग अलग रहने को वह आजाद हों और यही तो घमंड नगर जानेवाली सड़क है जहाँ आजादी गुलामी का रूप ले लेती है. जो एक (अलगिया) यह समझता है कि समाज के साथ उसका आजादी का रिश्ता है, वही एक, (अलगिया) सच्चे माने में आजाद है. आपसी व्योहार में छोटे बड़े ओहदों के नाते दूसरे से एक का रत्तीभर डर भी मन भर आजादी को खा सकता है.

ख़ासवाद नाम से पच्छिम में एक नया दर्शन खड़ा हो गया है. पच्छिम के लोग मन-माटी के दुतवाद से ऊब गये हैं क्योंकि अब तक वहाँ या तो यह माना जाता था कि आदमी बस मन (माइन्ड) है, या यह माना जाता था कि आदमी बस माटी (मैटर) है, या यह माना जाता था कि आदमी बस मन-माटी (माइन्ड-मैटर) का पुतला है. ख़ासवादी कहते हैं आदमी न मन है, न माटी है और न मन-माटी. वह है पुरुश (Person). बस इस विचार-धारा का नाम है ख़ासवाद या पुरुशवाद. इस विचार धारा ने आदर्शवाद और माटी वाद को बहुत पीछे छोड़ दिया और यह विचार धारा हिन्दू दर्शन धारा से काटी हुई एक नहर ही सी लगती है. यहाँ जरा विचार और कर्म का रिश्ता समझ लिया जाय. हम पहले विचारते हैं या पहले कर्म करते हैं ? इसका जवाब बहुत मुश्किल और बहुत आसान है. मुश्किल यों कि कोई कर्म ऐसा नहीं जिसके पीछे विचार न हो. और कोई विचार ऐसा नहीं जिसके पीछे कर्म न हो. आसान यों कि कर्म सामने है विचार आँख के परे, इसलिये कर्म जरूरी और पहले. कर्म को बड़ा समझना ही पड़ेगा क्योंकि कर्म में विचार शामिल है. विचार तो अकेला और निकम्मा है. उसे बड़ा समझने से क्या फ़ायदा. आदर्शवाद में यह बड़ा ऐब है कि बस सोचे जाओ सोचे जाओ और इसलिये वह हमको माटीवाद की खाई में जा पटखता है. यहाँ कोई यह सवाल खड़ा कर सकता है कि कर्म तो सर से पैर तक माटीवाद है. अब ? बस इसी के लिये आया ख़ासवाद. वह कहता है न आदर्शवाद की बर्फ़ीली चोटियाँ नापते फिरो, न मार्क्स रिशि के माटीवाद के समुंदर में ग़ोते खाते फिरो. इसमें शक नहीं कि मार्क्स रिशि ने मानव समाज पर बड़ा एहसान किया है. उन्होंने आदमी के जीवन को इस तरह खोलकर समझा दिया है जिस तरह जर्राह आदमी की लाश को चीर कर रग रग का ज्ञान करा देता है, इतना ही क्यों ? उन्होंने तो यह सिखा दिया कि जीवन का बदल डालना आदमी के हाथ की बात है और यह कि वह कैसे बदला जा सकता है ?

लेकिन, वह इस धुन में जा घुसे इतिहास में. वहाँ क्या था ? माटीवाद का नंगा नाच ! इतिहास की क्रान्तियों पर

آزادی اِسکو مانتے ھیں کہ سماج سے الگ تھلگ رھنے کو وہ آزاد ھوں اور یہی تو گھمنڈ نگر جانے والی سڑک ھے جہاں آزادی غلامی کا روپ لے لیتی ھے . جو ایک (الگیا) یہ سمجھتا ھے کہ سماج کے ساتھ اُسکا آزادی کا رشتہ ھے، وھی ایک، (الگیا) سچے معنے میں آزاد ھے . آپسی بیوھار میں چھوٹے بڑے عہدوں کے ناتے دوسرے سے ایک کا رتی بھر ڈر بھی من بھر آزادی کو کھا سکتا ھے .

خاص واد نام سے پچھم میں ایک نیا درشن کھڑا ھوگیا ھے . پچھم کے لوگ من ماٹی کے دوت واد سے اوب گئے ھیں کیونکہ اب تک وھاں یا تو یہ مانا جاتا تھا کہ آدمی بس من (مائنڈ) ھے، یا یہ مانا جاتا تھا کہ آدمی بس ماٹی (میٹر) ھے، یا یہ مانا جاتا تھا کہ آدمی بس من ماٹی (مائنڈ میٹر) کا پتلا ھے . خاص وادی کہتے ھیں آدمی نہ من ھے، نہ ماٹی ھے اور نہ من ماٹی . وہ ھے پرش (Person) . بس اِس وچار دھارا کا نام ھے خاص واد یا پرش واد . اِس وچار دھارا نے آدرش واد اور ماٹی واد کو بہت پیچھے چھوڑ دیا اور یہ وچار دھارا ھندو درشن دھارا سے کاٹی ھوئی ایک نہر ھی سی لگتی ھے . یہاں ذرا وچار اور کرم کا رشتہ سمجھ لیا جائے . ھم پہلے وچارتے ھیں یا پہلے کرم کرتے ھیں ؟ اِسکا جواب بہت مشکل اور بہت آسان ھے . مشکل یوں کہ کوئی کرم ایسا نہیں جسکے پیچھے وچار نہ ھو . آسان یوں کہ کرم سامنے ھے وچار آنکھ کے پرے، اسلئے کرم ضروری اور پہلے . کرم کو بڑا سمجھنا ھی پڑے گا کیونکہ کرم میں وچار شامل ھے . وچار تو اکیلا اور نکما ھے . اُسے بڑا سمجھنے سے کیا فائدہ . آدرش واد میں یہ بڑا عیب ھے کہ بس سوچے جاؤ سوچے جاؤ اور اِسلئے وہ ھمکو ماٹی واد کی کھائی میں جا پٹختا ھے . یہاں کوئی یہ سوال کھڑا کر سکتا ھے کہ کرم تو سر سے پیر تک ماٹی واد ھے . اب ؟ بس اِسی کے لئے آیا خاص واد . وہ کہتا ھے نہ آدرش واد کی برفیلی چوٹیاں ناپتے پھرو، نہ مارکس رشی کے ماٹی واد کے سمندر میں غوطے کھاتے پھرو . اِس میں شک نہیں کہ مارکس رشی نے مانو سماج پر بڑا احسان کیا ھے . اُنھوں نے آدمی کے جیون کو اِس طرح کھول کر سمجھا دیا ھے جس طرح جراح آدمی کی لاش کو چیر کر رگ رگ کا گیان کرا دیتا ھے، اِتنا ھی کیوں ؟ اُنھوں نے تو یہ سکھادیا کہ جیون کا بدل ڈالنا آدمی کے ھاتھ کی بات ھے اور یہ کہ وہ کیسے بدلا جاسکتا ھے ؟

لیکن، وہ اِس دھن میں جا گھسے اِتہاس میں . وھاں کیا تھا ؟ ماٹی واد کا ننگا ناچ ! اِتہاس کی کرانتیوں پر

इसी तरह की मन, वचन, कर्म की तल्लीनता का नाम है 'ईश्वरार्पन'.

रहे क्रोध, मान, माया लोभ यह तो ऊपर की रीति से किये अभ्यास के बाद बेदम हो जाते हैं और इस वक़्त आदमी में काम करने की ताक़त बे हिसाब बढ़ जाती है.

उसे अपने पन का ध्यान नहीं रहता और इसी को कुछ लोग कहते हैं कि वह तो ईश्वर के हाथ का औज़ार भर रह गया है.

बस इसी अवस्था का नाम है :—

"मैं सब में और सब मुझ में"

भगवद्गीता का यही सन्देश और यही निचोड़ है. आत्म-मँझाई की कला पर इससे बढ़ कर और क्या कहा जा सकता है. गीता जो उपनिशदों का निचोड़ है, वह ग़ुस्से को ठंडा करती है, मानको ढाती है, मोह का नाश करती है, लालच की जड़ काटती है. उस गीता से न जाने कैसे कोई यह मतलब निकाल बैठता है कि उस में भगवान ने अर्जुन को लड़ाई का उपदेश दिया. गीता को निरकाम कर्म करने का ग्रन्थ बताना और फिर अर्जुन के उस जयद्रथवध कर्म को उस गीता की कसौटी पर ठीक उतारना जिसको अर्जुन ने अभिमन्यु का बदला लेने के लिये किया था, कहाँ तक ठीक हो सकता है उसे हरेक आसानी से समझ सकता है.

यह ठीक है कि आत्म-मँझाई में आजकल का समाज आड़े आता है पर आज का समाज तो निरा स्वार्थी बना हुआ है और बहुत जल्दी ही या तो उसको सुधरना होगा या किसी में मिल जाना होगा. सुधार इसके सिवाय क्या हो सकता है कि अब एक (अलगिया, व्यश्टि, इनडिविजुअल) सब के लिये रहना सीखे और सब (समश्टि) एक की रक्षा के लिये तैयार रहें.

समाज के लिये न जीकर जो अपने लिये जीता है वही पूजा, पैसा-प्रतिश्ठा का भूका होता है और अपने किसी मतलब को पूरा करने के लिये वह सारे स्वांग रचता है, तरह तरह के रूप धरता है. आज इसी वजह से सिपाही सिपाही है, आदमी नहीं; पुजारी पुजारी है, बनिया बनिया है और कारीगर करीगर है, आदमी कोई भी नहीं. यह क्या बात है कि जो कल दारोग़ा था आज दारोग़ा न रहने से दो कौड़ी का भी आदमी नहीं रहता ? असल में वह जब दारोग़ा था तब आदमी नहीं था, अपने दारोग़ापन से पूजा, प्रतिश्ठा, पैसा कमाने में लगा था, फिर वह दो कौड़ी का रह ही जायगा. यही हाल आज वज़ीरों तक का है, और अगर दारोग़ा या वज़ीर ने निरकाम कर्म किया होता तो जीते जी उनकी इज़्ज़त समाज में बनी रहती. दारोग़ा और वज़ीर अपने ओहदे पर रह कर आज़ादी का अर्थ भूल जाते हैं. वह

اِسی طرح کی من' وچن' کرم کی تللینتا کا نام ہے ' ایشور ارپن '.

رہے کرودھ' مان' مایا لوبھ یہ تو اوپر کی ریت سے کئے ابھیاس کے بعد بیدم ہوجاتے ہیں اور اِس وقت آدمی میں کام کرنے کی طاقت بے حساب بڑھ جاتی ہے .
اُسے اپنے پن کا دھیان نہیں رہتا اور اِسی کو کچھ لوگ کہتے ہیں کہ وہ تو ایشور کے ھاتھ کا اوزار بھر رہ گیا ہے .

بس اِسی اوستھا کا نام ہے :—

" میں سب میں اور سب مجھ میں "

بھگودگیتا کا یہی سندیش اور یہی نچوڑ ہے . آتم سلجھائی کی کلا پر اِس سے بڑھکر اور کیا کہا جاسکتا ہے . گیتا جو اُپنشدوں کا نچوڑ ہے' وہ غصے کو ٹھنڈا کرتی ہے' مان کو ڈھاتی ہے' موہ کا ناش کرتی ہے' لالچ کی جڑ کاٹتی ہے . اُس گیتا سے نہ جانے کیسے کوئی یہ مطلب نکال بیٹھتا ہے کہ اُس میں بھگوان نے ارجن کو لڑائی کا اُپدیش دیا . گیتا کو نشکام کرم کرنے کا گرنتھ بتانا اور پھر ارجن کے اُس جیدرتھ ودھ کرم کو اُس گیتا کی کسوٹی پر ٹھیک اُتارنا جس کو ارجن نے ابھیمنیو کا بدلہ لینے کے لئے کیا تھا' کہاں تک ٹھیک ہوسکتا ہے اُسے ہر ایک آسانی سے سمجھ سکتا ہے .

یہ ٹھیک ہے کہ آتم سلجھائی میں آج کل کا سماج آڑے آتا ہے پر آج کا سماج تو نرا سوارتھی بنا ہوا ہے اور بہت جلدی ہی یا تو اُسکو سدھرنا ہوگا یا کسی میں مل جانا ہوگا . سدھار اِسکے سوا کیا ہوسکتا ہے کہ اب ایک (الگیا' ویشٹی' انڈیویجول) سب کے لئے رہنا سیکھے اور سب (سمشٹی) ایک کی رکشا کے لئے تیار رہیں .

سماج کے لئے نہ جی کو جو اپنے لئے جیتا ہے وہی پوجا' پیسہ پرتشٹھا کا بھوکا ہوتا ہے اور اپنے کسی مطلب کو پورا کرنے کے لئے وہ سارے سوانگ رچتا ہے' طرح طرح کے روپ دھرتا ہے . آج اِسی وجہ سے سپاہی سپاہی ہے' آدمی نہیں; پجاری پجاری ہے' بنیا بنیا ہے اور کاریگر کاریگر ہے' آدمی کوئی بھی نہیں . یہ کیا بات ہے کہ جو کل داروغہ تھا آج داروغہ نہ رہنے سے دوکوڑی کا بھی آدمی نہیں رہتا ؟ اصل میں وہ جب داروغہ تھا تب آدمی نہیں تھا' اپنے داروغہ پن سے پوجا' پرتشٹھا' پیسہ کمانے میں لگا تھا' پھر وہ دو کوڑی کا رہ ہی جائیگا. یہی حال آج وزیروں تک کا ہے' اگر داروغہ یا وزیر نے نشکام کرم کیا ہوتا تو جیتے جی اُنکی عزت سماج میں بنی رہتی . داروغہ اور وزیر اپنے عہدے پر رہکر آزادی کا ارتھ بھول جاتے ہیں . وہ

नाम है निश्चय और व्योहार. अकेला निश्चय यानी ज्ञान यानी ज्ञानधारा समाज को निगाह में रखते हुए बड़ी ख़तरनाक है, अकेला व्योहार यानी अनुभव यानी अमन-विचार समाज में उथल पुथल तो मचा सकता है, बहुत काम भी कर सकता है पर वह टिकाऊ नहीं हो सकता. अनुभव के लिये समाज और समाज के आदमियों की जितनी ज़रूरत होती है उतनी ज्ञान के लिये नहीं. लोक संग्रह के लिये अनुभव बेहद ज़रूरी है. समाज की रक्षा के लिये अनुभव ही काम करता है.

ख़ासपन की पूरनता के लिये यानी आत्म-मँफाई के लिये घर छोड़कर जंगल में रहना तो पड़ता है पर वह हरेक के लिये ज़रूरी नहीं और हमेशा के लिये तो हरगिज़ ज़रूरी नहीं, और किसी के लिये ज़रूरी नहीं. असल में घर छोड़ने का इतना ही महत्त्व है जितना साँसें बाहर छोड़ने का. साँस बाहर छोड़ना तो ज़रूरी है पर साँस छोड़े रखना ज़रूरी नहीं, उसको फिर अंदर भी लेना पड़ता है. ठीक इसी तरह अनुभव के लिये यानी आत्म-मँफाई के लिये समाज से अलग रहना जितना ज़रूरी है उतना ही समाज से घुलमिल कर रहना भी ज़रूरी है. समाज से अलग रहकर आत्म-विश्वास बढ़ाया जाता है—सोचा समझा जाता है पर इतना भर तो अनुभव के लिये काफ़ी नहीं. उस सोचे समझे पर अमल करने से तो आत्म-मँफाई पूरी होगी और उस पर अमल करने के लिये तो समाज की ज़रूरत है, समाज के साथ रहने की ज़रूरत है. समाज में रह कर अपने सोचे समझे पर अमल करके ज्ञान को बल मिलता है, निश्चय का रूप सामने आ जाता है. बस उसी तरह साँस अन्दर खींचने और बाहर निकालने की तरह अनुभव या आत्म-मँफाई के लिये कभी समाज से अलग रहना पड़ता है और कभी उसमें घुल मिल कर.

समाज से अलग होकर अलग पन जागता है और ख़ासपन विचार में लग जाता है.

अब ख़ासपन अपने भीतर की सारी शक्तियों को बुलावा देता है और उनके आने पर उनकी मदद से अपने भीतर बैठे सत्य को जानने की कोशिश करता है. उनको जान कर अपने मन, वचन, कर्म में उसको घुला कर उनको समाज के काम के रूप में ज़ाहिर करता है. उसके विचार वचन और कर्म सत्य के कवच में घुलकर उसको निडर बना देते हैं. अब मौत से उसको कोई डर नहीं रह जाता. शक्ति बेहद बढ़ जाती है. मानो किसी मीटर में बिजली का तार जोड़ दिया गया हो.

मन, वचन, कर्म की समता से उसका हरेक काम इतना पक्का हो जाता है कि उसको अब इस बात का ध्यान ही नहीं रह जाता कि उसके कामों का नतीजा क्या होगा. नतीजे की जिसे परवाह नहीं उसके लिये हार जीत कैसी ?

نام ھیں نشچے اور بیوھار . اکیلا نشچے یعنی گیان یعنی گیان دھارا سماج کو نگاہ میں رکھتے ہوئے بڑی خطرناک ھے' اکیلا بیوھار یعنی انوبھو یعنی شرمن وچار سماج میں اتھل پتھل تو مچا سکتا ھے' بہت کام بھی کر سکتا ھے پر وہ ٹکاؤ نہیں ھوسکتا . انوبھو کے لئے سماج اور سماج کے آدمیوں کی جتنی ضرورت ھوتی ھے اُتنی گیان کے لئے نہیں . لوک سنگرہ کے لئے انوبھو بیحد ضروری ھے . سماج کی رکشا کے لئے انوبھو ھی کام کرتا ھے .

خاص پن کی پورنتا کے لئے یعنی آتم منجھائی کے لئے گھر چھوڑ کر جنگل میں رھنا تو پڑتا ھے پر وہ ھر ایک کے لئے ضروری نہیں اور ھمیشہ کے لئے تو ھرگز ضروری نہیں' اور کسی کے لئے ضروری نہیں . اصل میں گھر چھوڑنے کا اِتنا ھی مہتو ھے جتنا سانسیں باھر چھوڑنے کا . سانس باھر چھوڑنا تو ضروری ھے پر سانس چھوڑے رکھنا ضروری نہیں' اِسکو پھر اندر بھی لینا پڑتا ھے . ٹھیک اِسی طرح انوبھو کے لئے یعنی آتم منجھائی کے لئے سماج سے الگ رھنا جتنا ضروری ھے اُتنا ھی سماج سے گھل ملکر رھنا بھی ضروری ھے . سماج سے الگ رھکر آتم وشواس بڑھایا جاتا ھے — سوچا سمجھا جاتا ھے پر اتنا بھر تو انوبھو کے لئے کافی نہیں . اُس سوچے سمجھے پر عمل کرنے سے تو آتم منجھائی پوری ھوگی اور اُس پر عمل کرنے کے لئے تو سماج کی ضرورت ھے' سماج کے ساتھ رھنے کی ضرورت ھے . سماج میں رھکر اپنے سوچے سمجھے پر عمل کرکے گیان کو بل ملتا ھے' نشچے کا روپ سامنے آجاتا ھے . بس اُسی طرح سانس اندر کھینچنے اور باھر نکالنے کی طرح انوبھو یا آتم منجھائی کے لئے کبھی سماج سے الگ رھنا پڑتا ھے اور کبھی اُس میں گھل ملکر .

سماج سے الگ ھوکر الگ پن جاگتا ھے اور خاص پن وچار میں لگ جاتا ھے .

اب خاص پن اپنے بھیتر کی ساری شکتیوں کو بلاوا دیتا ھے اور اُن کے آنے پر اُن کی مدد سے اپنے بھیتر بیٹھے ستیہ کو جاننے کی کوشش کرتا ھے . اُن کو جان کر اپنے من' وچن' کرم میں اسکو گھلا کر اُن کو سماج کے کام کے روپ میں ظاھر کرتا ھے . اُس کے وچار وچن اور کرم ستیہ کے کوچ میں گھل کر اُسکو نڈر بنا دیتے ھیں . اب موت سے اُس کو کوئی ڈر نہیں رہ جاتا . شکتی بے حد بڑھ جاتی ھے . مانو کسی میٹر میں بجلی کا تار جوڑ دیا گیا ھو .

من' وچن' کرم کی سمتا سے اُس کا ھر ایک کام اِتنا پکا ھوجاتا ھے کہ اُسکو اب اِس بات کا دھیان ھی نہیں رہ جاتا کہ اُس کے کاموں کا نتیجہ کیا ھوگا . نتیجے کی جسے پرواہ نہیں اُس کے لئے ھار جیت کیسی ؟

कि यह शक होने लगता है कि कहने वाला खुद भी ठीक ठीक समझ रहा है या नहीं; ख़ैर, इस बात को छोड़िये, हमारे काम की बात तो इतनी ही है कि एक ख़ासपन हम सब में है.

अलगपन और ख़ासपन को समझे बिना आत्म-मँझाई में लगना ख़तरे की चीज़ है.

इन दो पन में से ख़ासपन ही हमारे काम का है. यही आत्मा के ज़्यादा निकट है, इसी को समझ लेना चाहिये, यह ख़ासपन असल में आतमा ही है पर मैला बहुत है और मैली आतमा को अगर कोई अहंकार कह बैठे या ख़मीर कह बैठे तो बुरा ही क्या करता है ? आज ख़ासपन ने जो रूप ले रखा है वह परमात्मा के निकट वाला नहीं हो सकता, वह तो देह के निकट वाला ही हो सकता है और मैली आत्मा माटीवादियों, जड़वादियों का दिया 'ख़मीर' नाम ही पा सकती है. जर्मन डाक्टर निटशे ने इस को आदमी के भीतर का 'अहंकार भरा अलगपन' (ईगो इस्टिक इनडिविजुएलिटी) कहा तो ठीक ही कहा. जो मारधाड़ में आत्म पूरनता माने, जो दुनिया पर छा जाने की फ़िकर में मस्त होकर जी चाहे कर डालने में आत्म पूरनता माने, वह अहंकार भरा अलगपन नाम नहीं पाएगा तो और क्या !

हिन्दू दर्शन ने इस अलगपन और ख़ासपन को अपने ढंग से अलग समझा है, और ऐसा समझा है कि अगर उस पर अमल किया जाय तो दुनिया में चारों ओर अमन चैन अमन चैन ही दिखाई पड़े. उस दर्शन को दलीलों से झूटा साबित करना तो अमन चैन को लतियाना है या उसको दलीलों से यह साबित करना कि नहीं वह दर्शन हम को अहंकार का पाठ देता है, दर्शन के साथ अन्याय करना है. हिन्दू दर्शन का निचोड़ है—'एक अनेक में समाया है और अनेक एक में यानी सत्य सब में और सब सत्य में.'

ख़ासपन एक आदमी के अनोखेपन का सबूत नहीं है वह तो सारे आदमियों के अनोखेपन का सबूत है, उस ख़ासपन से तो हम आदमी और जानवर को अलग अलग कर पाते हैं.

हिन्दुस्तान का इतिहास बताता है कि मुद्दत से इस देश में दो तरह की विचार धाराएँ बहती आई हैं—एक <u>ज्ञान धारा</u> और दूसरी <u>अनुभव धारा</u>. इन्हीं का दूसरा नाम ब्राह्मन संस्कृति और श्रमन संस्कृति है. ज्ञान धारा अलगपन पर ज़ोर देती है और ख़ासपन को बहुत कम छूती है. अनुभव धारा ख़ासपन पर ज़ोर देती है और अलगपन में समाई रहती है. ज्ञान धारा और अनुभव धारा के दूसरे

کہ یہ شک ہونے لگتا ہے کہ کہنے والا خود بھی ٹھیک ٹھیک سمجھ رہا ہے یا نہیں؛ خیر' اِس بات کو چھوڑیئے' ہمارے کام کی بات تو اِتنی ہی ہے کہ ایک خاص پن ہم سب میں ہے .

الگ پن اور خاص پن کو سمجھے بنا آتم منجھائی میں لگنا خطرے کی چیز ہے .

اِن دو پن میں سے خاص پن ہی ہمارے کام کا ہے . یہ آتما کے زیادہ نکٹ ہے' اِسی کو سمجھ لینا چاہئے' یہ خاص پن اصل میں آتما ہی ہے پر میلا بہت ہے اور میلی آتما کو اگر کوئی اہنکار کہہ بیٹھے یا خمیر کہہ بیٹھے تو برا ہی کیا کرتا ہے ؟ آج خاص پن نے جو روپ لے رکھا ہے وہ پرماتما کے نکٹ والا نہیں ہو سکتا' وہ تو دیہہ کے نکٹ والا ہی ہوسکتا ہے اور میلی آتما ماٹی وادیوں (جڑ وادیوں) کا دیا ' خمیر ' نام ہی پاسکتی ہے . جرمن ڈاکٹر نٹشے نے اِسکو آدمی کے بھیتر کا "اہنکار بھرا الگ پن' (ایگو اِسٹک انڈیویجوئلیٹی ' کہا تو ٹھیک ہی کہا . جو مار دھاڑ میں آتم پورنتا مانے' جو دنیا پر چھا جانے کی فکر میں مست ہوکر جی چاہے کر ڈالنے میں آتم پورنتا مانے' وہ اہنکار بھرا الگ پن نام نہیں پائے گا تو اور کیا !

ہندو درشن نے اِس الگ پن اور خاص پن کو اپنے ڈھنگ سے الگ سمجھا ہے' اور ایسا سمجھا ہے کہ اگر اُس پر عمل کیا جائے تو دنیا میں چاروں اور امن چین امن چین ہی دکھائی پڑے . اُس درشن کو دلیلوں سے جھوٹا ثابت کرنا تو امن چین کو لتیانا ہے یا اُسکو دلیلوں سے یہ ثابت کرنا کہ نہیں وہ درشن ہم کو اہنکار کا پاٹھ دیتا ہے' درشن کے ساتھ انیائے کرنا ہے . ہندو درشن کا نچوڑ ہے—' ایک انیک میں سمایا ہے اور انیک ایک میں یعنی ستیہ سب میں اور سب ستیہ میں' .

خاص پن ایک آدمی کے انوکھے پن کا ثبوت نہیں ہے وہ تو سارے آدمیوں کے انوکھے پن کا ثبوت ہے' اُس خاص پن سے تو ہم آدمی اور جانور کو الگ الگ کر پاتے ہیں .

ہندستان کا اِتہاس بتاتا ہے کہ مدت سے اِس دیش میں دو طرح کی وچار دھارائیں بہتی آئی ہیں—ایک <u>گیان دھارا</u> اور دوسری <u>انوبھو دھارا</u>. اِنہیں کا دوسرا نام براہمن سنسکرتی اور شرمن سنسکرتی ہے. گیان دھارا الگ پن پر زور دیتی ہے اور خاص پن کو بہت کم چھوتی ہے . انوبھو دھارا خاص پن پر زور دیتی ہے اور الگ پن میں سمائی رہتی ہے . گیان دھارا اور انوبھو دھارا کے دوسرے

आत्म-मँझाई

हमारी आत्मा साफ़ नहीं है, इतना ही नहीं, वह इतनी मैली है कि उसको माँझने की ज़रूरत है.

आप मुझसे अलग, मैं आप से अलग, यों हम सब अलग अलग हैं. इस का नाम है अलगपन. अलगपन को कुछ लोग व्यक्तित्व, इनफ़रादियत या इनडिविजुएलिटी भी कहते हैं. यह अलगपन सब में मौजूद है.

अलगपन के बारे में कुछ का यह कहना है कि यह अलगपन ऐसा है, जैसे बूँद का अलगपन, जो पानी में मिलकर पानी में ही घुल मिल जाता है और फिर बूँद जैसी कोई चीज़ ही नहीं रह जाती. कुछ का यह कहना है कि नहीं, यह अलगपन सदा क़ायम रहता है.

इस अलगपन की बात हमने यों कही कि आत्म-मँझाई में लगनेवाले अलग अलग लोगों ने ऐसी दो अलग अलग बातें हमारे सामने रखी हैं.

इस जानकारी से आत्म-मँझाई में कोई रुकावट नहीं होती और न होनी चाहिये.

आप किसी तरह सोचते हैं, मैं किसी तरह सोचता हूँ. आपकी बात सब सुन लेते हैं, मेरी बात कोई नहीं सुनता. आप से कुछ लोग डरते हैं, मुझे कुछ लोग डराते हैं. यों आप और मैं अलग अलग हैं. इस तरह का अलगपन भी सब में मिलता है. यह ख़ास तरह का अलगपन 'ख़ासपन' कहलाता है, जिसे 'विशेषत्व' 'पुरुषत्व' शख़्सियत या परसनालिटी भी कहते हैं.

इस ख़ासपन के बारे में कोई कुछ कहता है, कोई कुछ. एक का कहना है—यही पुरुष या परमात्मा है; दूसरे का कहना है—यही आत्मा है; तीसरे का कहना है—यही अहंकार है; चौथे का कहना है—यही अलगपन की पूरनता का रूप है, यानी यही पूरनता है; पाँचवें का कहना है—यह अलग कोई चीज़ नहीं है. पाँच भूत मिल कर जो पुतला बना उसी का यह नतीजा है. यह पाँचवाँ अपनी बात को दूसरों के मन में बिठाने के लिये यह दलील देता है कि प्रकृति यानी क़ुदरत में ऐसा आये दिन होता रहता है, कोई भी दो चीज़ मिलकर एक तीसरी चीज़ बन जाती है, और आज के ऐटम वादियों ने तो नये नये तत्व बनाने भी शुरू कर दिये हैं, जैसे प्लूटोनियम, क्यूरियम,—अमेरिकेनियम. यह पाँचवाँ इस दलील के ज़ोर पर इस ख़ासपन को बहुत मामूली, ज़मीर जैसी चीज़ तो समझता है, पर उसको आदमी तक पहुँचाने में इतना पेचीदा बना दिया है

آتم منجھائی

ہماری آتما صاف نہیں ہے؛ اِتنا ہی نہیں، وہ اِتنی میلی ہے کہ اُسکو مانجھنے کی ضرورت ہے۔

آپ مجھ سے الگ، میں آپ سے الگ، یوں ہم سب الگ الگ ہیں۔ اس کا نام ہے الگ پن۔ الگ پن کو کچھ لوگ ویکتتو، انفرادیت یا اِنڈیویجوئلٹی بھی کہتے ہیں۔ یہ الگ پن سب میں موجود ہے۔

الگ پن کے بارے میں کچھ کا یہ کہنا ہے کہ یہ الگ پن ایسا ہے، جیسے بوند کا الگ پن، جو پانی میں ملکر پانی میں ہی گھل مل جاتی ہے اور پھر بوند جیسی کوئی چیز ہی نہیں رہ جاتی۔ کچھ کا یہ کہنا ہے کہ نہیں، یہ الگ پن سدا قائم رہتا ہے۔

اِس الگ پن کی بات ہم نے یوں کہی کہ آتم منجھائی میں لگنے والے الگ الگ لوگوں نے ایسی دو الگ الگ باتیں ہمارے سامنے رکھی ہیں۔

اِس جانکاری سے آتم منجھائی میں کوئی رکاوٹ نہیں ہوتی اور نہ ہونی چاہئے۔

آپ کسی طرح سوچتے ہیں، میں کسی طرح سوچتا ہوں۔ آپ کی بات سب سن لیتے ہیں، میری بات کوئی نہیں سنتا۔ آپ سے کچھ لوگ ڈرتے ہیں، مجھے کچھ لوگ ڈراتے ہیں۔ یوں آپ اور میں الگ الگ ہیں۔ اِس طرح کا الگ پن بھی سب میں ملتا ہے۔ یہ خاص طرح کا الگ پن 'خاص پن' کہلاتا ہے، جسے 'وشیشتو' 'پرشتو' شخصیت یا پرسنالٹی بھی کہتے ہیں۔

اِس خاص پن کے بارے میں کوئی کچھ کہتا ہے، کوئی کچھ۔ ایک کا کہنا ہے -- یہی پرش یا پرماتما ہے؛ دوسرے کا کہنا ہے -- یہی آتما ہے؛ تیسرے کا کہنا ہے -- یہی اہنکار ہے؛ چوتھے کا کہنا ہے — یہی الگ پن کی پورنتا کا روپ ہے، یعنی یہی پورنتا ہے؛ پانچویں کا کہنا ہے — یہ الگ کوئی چیز نہیں ہے۔ پانچ بھوت ملکر جو پتلا بنا اُسی کا یہ نتیجہ ہے۔ یہ پانچواں اپنی بات کو دوسروں کے من میں بٹھانے کے لئے یہ دلیل دیتا ہے کہ پرکرتی یعنی قدرت میں ایسا آئے دن ہوتا رہتا ہے۔ کوئی بھی دو چیز ملکر ایک تیسری چیز بن جاتی ہے، اور آج کے ایٹم وادیوں نے تو نئے نئے تتو بنانے بھی شروع کردیئے ہیں، جیسے پلوٹونیم، کیوریم — امیریکینیم۔ یہ پانچواں اِس دلیل کے زور پر اِس خاص پن کو بہت معمولی، ضمیر جیسی چیز تو سمجھتا ہے، پر اُسکو آدمی تک پہنچانے میں اتنا پیچیدہ بنا دیا ہے

हुए ही थे कि मैंने अपने बाहर के दरवाज़े पर जो शब्द लिखे हुए थे उन्हें जिस तरह मेरे बेटे ने पढ़ा था, सुधार दिया. और फिर घर से बाहर निकल पड़ा. बरसों तक एकान्त में दुनिया से दूर रहा और जब दिल ने पूरी पूरी गवाही दी कि ईश्वर है और हर जगह है तब मैं एकान्त से बाहर निकल कर फिर दुनिया में वापस आया और आजकल जब कभी भी कोई मौक़ा मिलता है तो दुनिया के लोगों को 'प्रभु हैं' ऐसी बातें करता हूं, और हमेशा प्रभु के प्रेम का गीत गाता रहता हूं."

तब जिस स्टेशन पर उन्हें उतरना था, वहाँ गाड़ी आ पहुंची, और वह अपनी जगह से उठकर गाड़ी के बाहर निकले. मैंने उन्हें प्रनाम किया. उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और कहा—"बेटा, तुम्हें भी प्रभु को पहचानने की बेसबरी और बेचैनी का बुख़ार जल्दी ही और ज़ोर से चढ़े."

वह उनका आशीर्वाद कब फलेगा, यह तो मैं नहीं कह सकता, हाँ, इतना ज़रूर कहूँगा कि उनका यह आशीर्वाद मैं अपने जीवन की एक बहुत बड़ी और क़ीमती बख़्शिश समझता हूँ.

ہوئے ہی تھے کہ میں نے اپنے باہر کے دروازے پر جو شبد لکھے ہوئے تھے انہیں جس طرح میرے بیٹے نے پڑھا تھا' سدھار دیا اور پھر گھر سے باہر نکل پڑا. برسوں تک ایکانت میں دنیا سے دور رہا اور جب دل نے پوری پوری گواہی دی کہ ایشور ہے اور ہر جگہ ہے تب میں ایکانت سے باہر نکلکر پھر دنیا میں واپس آیا اور آج کل جب کبھی بھی کوئی موقع ملتا ہے تو دنیا کے لوگوں کو 'پربھو ہیں' ایسی باتیں کرتا ہوں' اور ہمیشہ پربھو کے پریم کا گیت گاتا رہتا ہوں."

تب جس اسٹیشن پر انہیں اترنا تھا' وہاں گاڑی آپہونچی' اور وہ اپنی جگہ سے اٹھکر گاڑی کے باہر نکلے. میں نے انہیں پرنام کیا. انہوں نے مجھے آشیرواد دیا اور کہا—"بیٹا' تمہیں بھی پربھو کو پہچاننے کی بےصبری اور بےچینی کا بخار جلدی ہی اور زور سے چڑھے."

یہ اُن کا آشیرواد کب پھلیگا' یہ تو میں نہیں کہہ سکتا' ہاں' اتنا ضرور کہونگا کہ اُن کا یہ آشیرواد میں اپنے جیون کی ایک بہت بڑی اور قیمتی بخشش سمجھتا ہوں.

साजन रूप पुजारी निकले

(भाई 'बिसमिल' शेख़ूपुरी)

औरों ने भी कहा था ऐसा
पी को जान न अपने जैसा
लोग जिन्हें कहते थे योगी
अकसर वह संसारी निकले
साजन रूप पुजारी निकले.

मैंने समझा प्यार करेंगे
औरों का ना ध्यान धरेंगे
जितने नयन थे भोले भाले
उतने अत्याचारी निकले
साजन रूप पुजारी निकले.

प्रेम पुजारी कहने वाले
प्रेम नगर में रहने वाले
दो दिन इस दुनिया में आकर
जोबन के ब्योपारी निकले
साजन रूप पुजारी निकले.

ساجن روپ پجاری نکلے

(بھائی 'بسمل' شیخوپوری)

اوروں نے بھی کہا تھا ایسا
پی کو جان نہ اپنے جیسا
لوگ جنہیں کہتے تھے یوگی
اکثر وہ سنساری نکلے
ساجن روپ پجاری نکلے.

میں نے سمجھا پیار کریں گے
اوروں کا نا دھیان دھریں گے
جتنے نین تھے بھولے بھالے
اتنے اتیاچاری نکلے
ساجن روپ پجاری نکلے.

پریم پجاری کہنے والے
پریم نگر میں رہنے والے
دو دن اس دنیا میں آکر
جوبن کے بیوپاری نکلے
ساجن روپ پجاری نکلے.

जवाब मिला—"मेरा सात बरस का लड़का."

"वह कैसे, भाई साहब ?"

"तो सुन लो मेरी प्रभु से 'प्रेम सगाई' की कहानी :

"आज से चालीस बरस पहिले मैं एक प्रोफ़ेसर था. मुझे अपने इल्म पर बड़ा ही घमंड था और शास्त्रार्थ का तो मुझे एक खास शौक़ था. औरों को दलील बाज़ी में किस तरह से हरा दूं इसी फ़िक्र में मैं दिन रात रहता था. एक दफ़ा हमारे शहर में एक बड़े विद्वान आए. उनसे आम लोगों के सामने मैंने "ईश्वर है या नहीं" इस मज़मून पर दलील छेड़ी. आख़िर मैं बहस में उनसे जीत गया. लोगों में मेरी वाह वाह होने लगी और मेरे ग़रूर की तो कोई हद ही न रही, यहाँ तक कि मैंने अपने घर के बाहर के दरवाज़े पर बड़े अक्षरों में यह शब्द लिखवा दिये—

GOD IS NO WHERE

यानी ईश्वर कहीं भी नहीं है.

"इसके बाद मैं अपनी नास्तिकता के नशे में रात दिन चूर रहने लगा.

"इतने में मेरे घर में एक लड़का पैदा हुआ. मगर उसके पैदा होने से भी मेरे दिल में प्रभु का या उसकी कृपा का रत्ती भर भी ख़याल न आया. वह जब साढ़े पाँच बरस का हुआ तो मैंने उसे एक अंगरेज़ी स्कूल में पढ़ने के लिये भेजा. आहिस्ता आहिस्ता वह अंगरेज़ी के कुछ छोटे छोटे फ़िक़रे पढ़ने लगा.

"एक दिन जब वह और मैं शाम को सैर करके घर वापस आए तो वह घर में दाख़िल होने की जगह अचानक दरवाज़े के बाहर खड़ा हो गया और जो शब्द उस पर अंगरेज़ी में लिखे हुए थे उन्हें चुपचाप पढ़ने लगा. फिर मेरी तरफ़ देखकर कहने लगा—

" 'पिताजी, मैं बताऊँ दरवाज़े पर क्या लिखा हुआ है ?'

" 'अगर बता सकते हो तो बताओ, बेटा !' मैंने जवाब दिया.

"फिर वह शब्दों को एक एक करके पढ़ने लगा. उसने उन्हें इस तरह पढ़ा—

'GOD IS NOW HERE'

यानी ईश्वर अब यहीं ही है.

"मालूम नहीं क्यों, अपने बेटे को इन शब्दों को इस तरह पढ़ते देखकर मेरे सारे जिस्म में एक क़िस्म की बिजली दौड़ उठी और मेरे मुँह से अपने आप यह शब्द निकल पड़े—'बात तो बिल्कुल सही है !' उस वक़्त से मुझे एक क़िस्म की बेचैनी का बुख़ार चढ़ गया और सारी रात उस बुख़ार में मैं पड़ा रहा. सुबह हुई, अभी घर के लोग सोए

جواب ملا — " میرا سات برس کا لڑکا."

" وہ کیسے ' بھائی صاحب ؟"

" تو سن لو میری پربھو سے 'پریم سگائی' کی کہانی :

" آج سے چالیس برس پہلے میں ایک پروفیسر تھا . مجھے اپنے علم پر بڑا ہی گھمنڈ تھا اور شاسترارتھ کا تو مجھے ایک خاص شوق تھا . اوروں کو دلیل بازی میں کس طرح سے ہرا دوں اسی فکر میں میں دن رات رہتا تھا . ایک دفعہ ہمارے شہر میں ایک بڑے ودوان آئے . اُن سے عام لوگوں کے سامنے میں نے "ایشور ہے یا نہیں" اس مضمون پر دلیل چھیڑی . آخر میں بحث میں اُن سے جیت گیا . لوگوں میں میری واہ واہ ہونے لگی اور میرے غرور کی تو کوئی حد ہی نہ رہی' یہاں تک کہ میں نے اپنے گھر کے باہر کے دروازے پر بڑے اکشروں میں یہ شبد لکھوا دیئے—

GOD IS NO WHERE

یعنی ایشور کہیں بھی نہیں ہے .

" اس کے بعد میں اپنی ناستکتا کے نشے میں رات دن چور رہنے لگا .

" اتنے میں میرے گھر میں ایک لڑکا پیدا ہوا . مگر اُس کے پیدا ہونے سے بھی میرے دل میں پربھو کا یا اس کی کرپا کا رتی بھر بھی خیال نہ آیا . وہ جب ساڑھے پانچ برس کا ہوا تو میں نے اُسے ایک انگریزی اسکول میں پڑھنے کے لئے بھیجا . آہستہ آہستہ وہ انگریزی کے کچھ چھوٹے چھوٹے فقرے پڑھنے لگا .

" ایک دن جب وہ اور میں شام کو سیر کرکے گھر واپس آئے تو وہ گھر میں داخل ہونے کی جگہ اچانک دروازے کے باہر کھڑا ہوگیا اور جو شبد اس پر انگریزی میں لکھے ہوئے تھے اُنہیں چپ چاپ پڑھنے لگا . پھر میری طرف دیکھ کر کہنے لگا —

" 'پتا جی' میں بتاؤں دروازہ پر کیا لکھا ہوا ہے ؟'

" 'اگر بتا سکتے ہو تو بتاؤ' بیٹا !' میں نے جواب دیا .

" پھر وہ شبدوں کو ایک ایک کرکے پڑھنے لگا . اُس نے اُنہیں اسطرح پڑھا —

'GOD IS NOW HERE'

یعنی ایشور اب یہیں ہی ہے .

" معلوم نہیں کیوں' اپنے بیٹے کو ان شبدوں کو اسطرح پڑھتے دیکھکر میرے سارے جسم میں ایک قسم کی بجلی دوڑ اُٹھی اور میرے منہ سے اپنے آپ یہ شبد نکل پڑے—' بات تو بالکل صحیح ہے !' اُس وقت سے مجھے ایک قسم کی بے چینی کا بخار چڑھ گیا اور ساری رات اس بخار میں میں پڑا رہا . صبح ہوئی' ابھی گھر کے لوگ سوئے

ईश्वर की कुदरत के क़ानूनों को मानना है. यही वह क़ानून है जो सब क़ौमों, सब मुलकों और सब मजहबों के ज्ञानी, महात्मा और साइंसदां बताते आए हैं. इन क़ानूनों को मानने और उन पर अमल करने से ही इस दुनिया और दूसरी दुनिया में आदमी को सुख मिल सकता है.

यह वह क़ायदे क़ानून हैं जिन पर सब अलग अलग धर्म एक राय हैं.

हम आज तक सुनते आए हैं कि हर बच्चे को तीन आर यानी पढ़ना, लिखना और हिसाब सिखाना जरूरी है. इन तीन में एक चौथा आर 'यूनीवरसल रिलिजन' यानी व्यापक आलमगीर मजहबे इनसानियत, मानव धर्म का भी हमें जोड़ लेना चाहिये. पर पहले इस मानव धर्म को खोज निकालना और समझना होगा. यह मानव धर्म वह असूल हैं जो सब धर्म मजहबों के अन्दर एक बराबर पाए जाते हैं. दुनिया के तालीम देने वालों और साइन्स दानों का फ़र्ज़ है कि वह इस काम में मदद दें. अलग अलग मतों और तफ़रक़ों के अन्दर से एकता के जवाहर बीन निकालें, इसके लिये दुनिया के सब बड़े बड़े मजहबों की खोज जरूरी है. फिर इन एकता के क़ीमती जवाहरात को जमा कर के किताबों और पाठों की सूरत में दुनिया के सब लड़कों और लड़कियों को सिखावें. दुनिया को एक करने के जितने तरीके बताए जा रहे हैं उन में सबसे मुफ़ीद, सबसे जरूरी और सबसे टिकाऊ तरीक़ा यही है.*

ایشور کی قدرت کے قانونوں کو ماننا ہے . یہی وہ قانون ہے جو سب قوموں' سب ملکوں اور سب مذہبوں کے گیانی' مہاتما اور سائنس‌داں بتاتے آئے ہیں . ان قانونوں کو ماننے اور انپر عمل کرنے سے ہی اِس دنیا اور دوسری دنیا میں آدمی کو سکھ مل سکتا ہے .

یہ وہ قاعدے قانون ہیں جن پر سب الگ الگ دھرم ایک رائے ہیں .

ہم آج تک سنتے آئے ہیں کہ ہر بچے کو تین آر یعنی پڑھنا لکھنا اور حساب سکھانا ضروری ہے . ان تین میں ایک چوتھا آر 'یونیورسل ریلیجن' یعنی ویاپک عالمگیر مذہب انسانیت' مانو دھرم کا بھی ہمیں جوڑ لینا چاہئے . پر پہلے اِس مانو دھرم کو کھوج نکالنا اور سمجھنا ہوگا . یہ مانو دھرم وہ اصول ہیں جو سب دھرم مذہبوں کے اندر ایک برابر پائے جاتے ہیں . دنیا کے تعلیم دینے والوں اور سائنس دانوں کا فرض ہے کہ وہ اِس کام میں مدد دیں . الگ الگ متوں اور تفرقوں کے اندر سے ایکتا کے جواہر بین نکالیں' اِسکے لئے دنیا کے سب بڑے بڑے مذہبوں کی کھوج ضروری ہے پھر اِن ایکتا کے قیمتی جواہرات کو جمع کرکے کتابوں اور پاٹھوں کی صورت میں دنیا کے سب لڑکوں اور لڑکیوں کو سکھاویں . دنیا کو ایک کرنے کے جتنے طریقے بتائے جارہے ہیں اُن میں سب سے مفید' سب سے ضروری اور سب سے ٹکاؤ طریقہ یہی ہے .*

सूफ़ियों की सोहबत में

(2).

(भाई गु० म०)

"यह लगन आपकी प्रभु से कब की लगी हुई है, भाई साहब ?" मैंने अपने साथी से, जो मेरे साथ रेल में सफ़र कर रहे थे, पूछा.

"तक़रीबन तीस बरस से." उन्होंने जवाब दिया.

"और इस रास्ते पर पहले आपको कौन लाया ?" मैंने फिर उनसे पूछा.

صوفیوں کی صحبت میں

(2)

(بھائی گ . م .)

" یہ لگن آپکی پربھو سے کب کی لگی ہوئی ہے' بھائی صاحب ؟" میں نے اپنے ساتھی سے' جو میرے ساتھ ریل میں سفر کر رہے تھے' پوچھا .

" تقریباً تیس برس سے ." انہوں نے جواب دیا .

" اور اس راستے پر پہلے آپکو کون لایا ؟ " میں نے پھر اُن سے پوچھا .

---

* अधिक जानकारी के लिये लेखक की अंगरेजी किताब—The Essential Unity of All Religions पढ़िये

* ادھک جانکاری کے لئے لیکھک کی انگریزی کتاب— The Essential Unity of All Religions پڑھئے .

को मजहब की जरूरत रहेगी, जब तक मजहब में उसे वह शान्ति और सकून मिलेगा जो उससे छीनना नामुमकिन भी है और जुल्म भी. आदमी के दिल से यह बात नहीं मिट सकती कि अगर उसे सारी दुनिया भी मिल जावे पर उसकी आत्मा या रूह उससे खो जावे तो उसे कोई फ़ायदा नहीं. अगर समझदार आदमी लोगों को सच्चा और साइन्सी मजहब न देंगे तो लोग मजबूर होकर झूठे वहमों और अन्धविश्वासों के उन मजहबों में फंसते रहेंगे जो दुनिया भर के पंडे पुजारी, पादरी और कठ मुल्ला उन्हें देते रहते हैं. धर्म मजहब की पियास केवल उन लोगों में नहीं होती जो जानवरों की तरह आगे पीछे नहीं देख सकते, या उन लोगों में भी नहीं होती जो सब देख भाल कर अपनी अनन्त आत्मा के अन्दर सारी दुनिया का रहस्य यानी राज़ देख चुके हैं. यह दूसरे लोग धर्म मजहब से ऊपर उठ चुके. आज की दुनिया में इस तरह के आदमी बिरले ही हैं. अधिकतर लोगों के लिये धर्म की ज़रूरत है इसीलिये धर्म ज़िन्दा है. उसका एक रूप ख़तम हो जाता है तो वह दूसरा रूप धारन कर लेता है.

स्वामी शंकराचार्य ने लिखा है—"जो आदमी इच्छा, ज्ञान और कर्म तीनों गुनों से ऊपर उठ जाता है उसके लिये फिर न कोई विधि या हुकुम है और न किसी चीज़ का निशेध या मनाही."

इसी बात को सूफ़ी दूसरे शब्दों में कहता है—"जो रब को पहुंच गया वह रब हो गया, जिस के लिये सब रब ही रब है उसके लिये फिर अलग रब कहां, जहां सूरज ही सूरज है वहां रात कहां, सूफ़ी अपने को मिटा चुका; जिसने अपने को मिटा दिया उसके लिये कोई मज़हब नहीं, जो यार तक पहुंच गया उसे दूसरा कोई मतलब नहीं."

अगर यह बात सच है, और यह सच है कि इनसान के दिल के अन्दर यह बात जमी हुई है कि इस ज़िन्दगी के बाद भी कोई ज़िन्दगी है, और आदमी उस ज़िन्दगी को और इस ज़िन्दगी के साथ उसके सम्बन्ध को जानना और समझना चाहता है, अगर यह बात है, और यह सच है कि साइन्स जीवन के लिये है, जीवन साइंस के लिये नहीं, तो समझदार आदमी कभी इस बात को आख़िरी नहीं मान सकता कि साइंस और मजहब दोनों में मेल नामुमकिन है. हक़ीक़त, साइंस, वेद, मारफ़त और ज्ञान पांचों के एक ही मानी हैं. हमें इन पांचों को एक दूसरे की रोशनी में देख कर इन की एकता को समझना है.

वैशेशिक सूत्र में लिखा है—"यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः सधर्मः." यानी जिस बात से इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में दोनों में आदमी को सुख मिले वही धर्म है. ईश्वर अल्लाह की आज्ञाओं को मानने का मतलब ही

کو مذھب کی ضرورت رھے گی، تب تک مذھب میں اُسے وہ شانتی اور سکون ملے گا جو اُس سے چھیننا نا ممکن بھی ھے اور ظلم بھی. آدمی کے دل سے یہ بات نہیں مٹ سکتی کہ اگر اُسے ساری دنیا بھی مل جاوے پر اُسکی آتما یا روح اُس سے کھو جاوے تو اُسے کوئی فائدہ نہیں. اگر سمجھدار آدمی لوگوں کو سچا اور سائنسی مذھب نہ دینگے تو لوگ مجبور ھوکر جھوٹے وھموں اور اندھ وشواسوں کے اُن مذھبوں میں پھنستے رھیں گے جو دنیا بھر کے پنڈے پجاری، پادری اور کٹھ ملا اُنھیں دیتے رھتے ھیں. دھرم مذھب کی پیاس کیول اُن لوگوں میں نہیں ھوتی جو جانوروں کی طرح آگے پیچھے نہیں دیکھ سکتے، یا ان لوگوں میں بھی نہیں ھوتی جو سب دیکھ بھال کر اپنی اننت آتما کے اندر ساری دنیا کا رھسیہ یعنی راز دیکھ چکے ھیں. یہ دوسرے لوگ دھرم مذھب سے اوپر اُٹھ چکے. آج کی دنیا میں اِس طرح کے آدمی برلے ھی ھیں. ادھک تر لوگوں کے لئے دھرم کی ضرورت ھے اِسی لئے دھرم زندہ ھے. اُسکا ایک روپ ختم ھو جاتا ھے تو وہ دوسرا روپ دھارن کرلیتا ھے.

سوامی شنکر اچاریہ نے لکھا ھے—"جو آدمی اِچھا، گیان اور کرم تینوں گنوں سے اوپر اُٹھ جاتا ھے اُسکے لئے پھر نہ کوئی ودھی یا حکم ھے اور نہ کسی چیز کا نشیدھ یا مناھی".

اِسی بات کو صوفی دوسرے شبدوں میں کہتا ھے—"جو رب کو پہنچ گیا وہ رب ھوگیا، جسکےلئے سب رب ھی رب ھے اُسکے لئے پھر الگ رب کہاں، جہاں سورج ھی سورج ھے وھاں رات کہاں، صوفی اپنے کو مٹا چکا؛ جس نے اپنے کو مٹا دیا اُسکے لئے کوئی مذھب نہیں، جو یار تک پہنچ گیا اُسے دوسرا کوئی مطلب نہیں".

اگر یہ بات سچ ھے، اور یہ سچ ھے کہ انسان کے دل کے اندر یہ بات جمی ھوئی ھے کہ اِس زندگی کے بعد بھی کوئی زندگی ھے، اور آدمی اُس زندگی کو اور اِس زندگی کے ساتھ اُسکے سمبندھ کو جاننا اور سمجھنا چاھتا ھے، اگر یہ بات ھے، اور یہ سچ ھے کہ سائنس جیون کے لئے ھے، جیون سائنس کے لئے نہیں، تو سمجھدار آدمی کبھی اِس بات کو آخری نہیں مان سکتا کہ سائنس اور مذھب دونوں میں میل ناممکن ھے. حقیقت، سائنس، وید، معرفت اور گیان پانچوں کے ایک ھی معنی ھیں. ھمیں اِن پانچوں کو ایک دوسرے کی روشنی میں دیکھکر اِن کی ایکتا کو سمجھنا ھے.

ویشیشک سوتر میں لکھا ھے—"یتو ابھیودے نیہ شرے یس سدھی سدھرمہ". یعنی جس بات سے اِس دنیا میں اور دوسری دنیا میں دونوں میں آدمی کو سکھ ملے وھی دھرم ھے. ایشور اللہ کی آگیاؤں کو ماننے کا مطلب ھی

मतलब है जो हिन्दू पुस्तकों में 'यम' और 'क्षमावान' का. 'अल-जब्बार' और 'अल-करीम' का वही अर्थ है जो 'घोर' और 'दयालु' का. 'अल-जलील' और 'अल-जमील' के वही मानी हैं जो 'ईश्वर' और 'मधुर' के, वग़ैरा. इसी तरह के जोड़े जोड़े के नाम ईश्वर के दुनिया की सब धर्म पुस्तकों में मिलते हैं.

इसलाम की किताबों में जिन्हें 'सिफ़ात' कहा गया है हिन्दू किताबों में उन्हीं को 'विभूतियाँ' कहा गया है. 'सिफ़ात' दो तरह की हैं. 'जलाली' और 'जमाली'. विभूतियाँ भी दो तरह की हैं. 'ऐश्वर्य वाली' और 'माधुर्य वाली'. दोनों का एक ही मतलब है.

यहूदियों के धर्म ग्रन्थों में भी जिन्हें 'क़ब्बालह' कहा जाता है ठीक इसी तरह के नाम मिलते हैं. 'क़ब्बालह' के बहुत से नाम अरबी और संस्कृत नामों से बिलकुल मिलते हुए हैं.

क़ुरान में अल्लाह के निन्नानवे नाम मशहूर हैं. पारसी किताबों में 'अहुरमज़्द' के एक सौ एक नाम हैं. यह एक सौ एक नाम वेदों के संस्कृत नामों से बेहद मिलते हुए हैं जैसे पारसी 'अहुरमज़्द' संस्कृत 'असुर-मेधा' पारसी 'अवितन्य' वैदिक 'अभितन्य'. पारसी 'ख़तु' वैदिक 'क्रतु', फ़ारसी 'ख़िरद'. पारसी 'चिश्ति' वैदिक 'चित'. पारसी 'दाता' संस्कृत 'धाता'. पारसी 'थ्राता' संस्कृत 'त्राता'. पारसी 'दूरेदर्शता' संस्कृत 'दूरदृष्टा'. पारसी 'ज़नाता' संस्कृत 'ज्ञाता' वग़ैरा वग़ैरा. ईश्वर के इन पारसी नामों का एक एक का ठीक वही मतलब है जो संस्कृत नामों का. पुरानी पारसी भाषा और संस्कृत दोनों का निकास एक जगह से है.

यही दुई का ख़याल और यही जोड़े जोड़े के नाम हमें चीनी महात्मा कंगफ़ूत्ज़े की किताबों में मिलते हैं.

ठीक यही चीज़ें चीनी महात्मा लाओत्ज़े की किताबों में भी मिलती हैं. लाओत्ज़े जिसे 'सनत्साइ' कहता है उसी को हिन्दू किताबें 'सन्सार' कहती हैं.

यूनानी धर्म की किताबों से भी इसी तरह की बातें नक़ल की जा सकती हैं.

आदमी की ज़िन्दगी इस दुई के साथ एक लगातार संग्राम है. इसी दुई में से हमें अपना रास्ता बनाना है, ठीक चुनना है, दुई को पार करना है.

यही सब धर्मों का उपदेश है, यही सब विद्याओं का और यही ऊँची से ऊँची साइंस का. सच यह है कि हमें एक साइन्सी मज़हब की ज़रूरत है. मज़हब दुनिया के लिये उतना ही ज़रूरी है जितना साइंस. आदमी जब तक दुई और मौत की बाबत सोचता रहेगा, जब तक वह अपने आगे और पीछे दोनों तरफ़ निगाह डालेगा, तब तक इनसान

مطلب ہے جو ہندو پستکوں میں 'یم' اور 'چھماوان' کا. 'الجبار' اور 'الکریم' کا وہی ارتھ ہے جو 'گھور' اور 'دیالو' کا. 'الجلیل' اور 'الجمیل' کے وہی معنی ہیں جو 'ایشور' اور 'مدھر' کے، وغیرہ. اِسی طرح کے جوڑے جوڑے کے نام ایشور کے دنیا کی سب دھرم پستکوں میں ملتے ہیں.

اِسلام کی کتابوں میں جنہیں 'صفات' کہا گیا ہے ہندو کتابوں میں اُنہیں کو 'وبھوتیاں' کہا گیا ہے. 'صفات' دو طرح کی ہیں. 'جلالی' اور 'جمالی'. وبھوتیاں بھی دو طرح کی ہیں. 'ایشوریہ والی' اور 'مادھریہ والی.' دونوں کا ایک ہی مطلب ہے.

یہودیوں کے دھرم گرنتھوں میں بھی جنہیں 'قبالہ' کہا جاتا ہے ٹھیک اِسی طرح کے نام ملتے ہیں. 'قبالہ' کے بہت سے نام عربی اور سنسکرت ناموں سے بلکل ملتے ہوئے ہیں.

قرآن میں اللہ کے ننانوے نام مشہور ہیں. پارسی کتابوں میں 'اہرمزد' کے ایک سو ایک نام ہیں. یہ ایک سو ایک نام ویدوں کے سنسکرت ناموں سے بیحد ملتے ہوئے ہیں. جیسے پارسی 'اہرمزد' سنسکرت 'آسرمیدھا' پارسی 'اویتنیہ' ویدیک 'ابھیتنیہ' پارسی 'کھرتو' ویدک 'کرتو' فارسی 'خرد'. پارسی 'چشتی' ویدک 'چت'. پارسی 'داتا' سنسکرت 'دھاتا'. پارسی 'تھراتا' سنسکرت 'تراتا'. پارسی 'دوردرشتا' سنسکرت 'دور درشٹا'. پارسی 'زناتا' سنسکرت 'گیاتا' وغیرہ وغیرہ. ایشور کے اِن پارسی ناموں کا ایک ایک کا ٹھیک وہی مطلب ہے جو سنسکرت ناموں کا. پرانی پارسی بھاشا اور سنسکرت دونوں کا نکاس ایک جگہ سے ہے.

یہی 'دوئی' کا خیال اور یہی جوڑے جوڑے کے نام ہمیں چینی مہاتما کنگ فوتزے کی کتابوں میں ملتے ہیں.

ٹھیک یہی چیزیں چینی مہاتما لاؤتزے کی کتابوں میں بھی ملتی ہیں. لاوتزے جسے 'سنتسائی' کہتا ہے اُسی کو ہندو کتابیں 'سنسار' کہتی ہیں.

یونانی دھرم کی کتابوں سے بھی اسی طرح کی باتیں نقل کی جاسکتی ہیں.

آدمی کی زندگی اس دوئی کے ساتھ ایک لگاتار سنگرام ہے. اِسی دوئی میں سے ہمیں اپنا راستہ بنانا ہے، ٹھیک چننا ہے، دوئی کو پار کرنا ہے.

یہی سب دھرموں کا اُپدیش ہے، یہی سب ودیاؤں کا اور یہی اونچی سے اونچی سائنس کا. سچ یہ ہے کہ ہمیں ایک سائنسی مذہب کی ضرورت ہے. مذہب دنیا کے لئے اُتنا ہی ضروری ہے جتنا سائنس. آدمی جب تک دوئی اور موت کی بابت سوچتا رہے گا، جب تک وہ اپنے آگے اور پیچھے دونوں طرف نگاہ ڈالے گا تب تک انسان

से और एक रस होकर सामना करते हुए अपनी तरफ़ और दूसरी तरफ़ अपने फ़र्ज़ों को पूरा करते रहना और इससे अपने ख़ुद के लिये कोई बदला न चाहना ही द्वन्द यानी दुई से ऊपर उठना है.

यूनान के एक मशहूर मन्दिर, डेलफ़िक टेम्पिल पर यह दो वाक्य खुदे हुए थे. एक—'कोई चीज़ हद से जियादा नहीं.' और दो—'अपने को जानो.' यह दोनों बातें एक दूसरे को पूरा करती हैं. जो किसी बात में भी हद से बढ़ता है वह अपने को नहीं जान सकता. यह सन्तोल यानी सकून हासिल कर लेना ही सच्चा ज्ञान हासिल कर लेना और अपने को पहचानना है.

पारसी धर्म के बानी ज़रतुश्त ने लिखा है—"उजाला और अंधेरा, अच्छाई और बुराई जो एक दूसरे के साथ बंधी हुई हैं हमेशा से चली आरही हैं. फिर भी वह एक दूसरे से अलग हैं. हमारे सोच फ़िकर में, हमारी बातों में और हमारे कामों में सब जगह यह साथ साथ और अलग अलग दिखाई देती हैं. समझदार आदमी रोशनी की तरफ़ चलते हैं और नासमझ तब तक अंधेरे की तरफ़ को चलते रहते हैं, जब तक वह समझदार न हो जाएं. इन्हीं पुराने रास्तों पर चल कर अच्छी और बुरी इच्छाएं आदमी में पैदा होती हैं. इन्हीं से एक नफ़रत की तरफ़ जाते हैं और दूसरे मुहब्बत की तरफ़. ऐ अहुरमज़्द (ईश्वर)! मुझे अपने मन पर क़ाबू हासिल करके इस दुई से ऊपर उठते हुए सीधे रास्ते पर चलने की ताक़त दे."

सब धर्म पुस्तकों में ईश्वर अल्लाह के नामों के बारे में भी यह दुई मौजूद है और सब धर्म वालों ने ईश्वर को दो दो नामों से पुकारा है.

क़ुरान उसे 'अल-अव्वल' और 'अल-आख़िर' कह कर पुकारता है. वेदों में उसे 'आदि' और 'अन्त' कहा गया है. दोनों के एक ही मानी हैं. क़ुरान उसे 'अल-बातिन' और 'अल-ज़ाहिर' कह कर पुकारता है. वेद उसी को 'अव्यक्त' और 'व्यक्त' कहता है. दोनों का एक ही मतलब है. क़ुरान में उसे 'अल-बादी' और 'अल-जामी' कहा गया है. वेदों में उसी को 'सृष्टा' और 'संहार्ता' कहा गया है. दोनों का ठीक वही मनशा है. क़ुरान में 'अल-मुही' और 'अल-मुमीत' नाम आते हैं. वेदों में उसी को 'भव' और 'हर' कहा गया है, यानी जान डालने वाला और मारने वाला. क़ुरान में जो 'अल-मुज़िल' और 'अल-हादी' से मतलब है वही वेदों में 'मायी' और 'तारक' से है, यानी लुभाने वाला या आज़माने वाला और ठीक रास्ता बताने वाला. क़ुरान में 'अल-क़ह्हार' और 'अलरज़्ज़ाक़' नाम आते हैं. वेदों में उन्हीं के मुक़ाबले के 'रुद्र' और 'शिव' हैं. क़ुरान में '[illegible]' और 'ग़फ़्फ़ार' का वही

سے اور ایک رس ھوکر سامنا کرتے ھوئے اپنی طرف اور دوسری طرف اپنے فرضوں کو پورا کرتے رھنا اور اِس سے اپنے خود کے لئے کوئی بدلہ نہ چاھنا ھی دوند یعنی دوئی سے اوپر اُٹھنا ھے .

یونان کے ایک مشہور مندر، ڈیلفک ٹمپل پر یہ دو واکیہ کھدے ھوئے تھے . ایک — "کوئی چیز حد سے زیادہ نہیں". اور دو—"اپنے کو جانو" . یہ دونوں باتیں ایک دوسرے کو پورا کرتی ھیں . جو کسی بات میں بھی حد سے بڑھتا ھے وہ اپنے کو نہیں جان سکتا . یہ سمتول یعنی سکون حاصل کر لینا ھی سچا گیان حاصل کر لینا اور اپنے کو پہچاننا ھے .

پارسی دھرم کے بانی زرتشت نے لکھا ھے —" اُجالا اور اندھیرا، اچھائی اور برائی جو ایک دوسرے کے ساتھ بندھی ھوئی ھیں ھمیشہ سے چلی آرھی ھیں . پھر بھی وہ ایک دوسرے سے الگ ھیں . ھمارے سوچ فکر میں، ھماری باتوں میں اور ھمارے کاموں میں سب جگہ یہ ساتھ ساتھ اور الگ الگ دکھائی دیتی ھیں . سمجھدار آدمی روشنی کی طرف چلتے ھیں اور نا سمجھ تب تک اندھیرے کی طرف کو چلتے رھتے ھیں، جبتک وہ سمجھدار نہ ھوجائیں . اِنھیں پرانے راستوں پر چلکر اچھی اور بری اِچھائیں آدمی میں پیدا ھوتی ھیں . اِنھیں سے ایک نفرت کی طرف جاتے ھیں اور دوسرے محبت کی طرف . اے اھرمزد (ایشور) ! مجھے اپنے من پر قابو حاصل کرکے اِس دوئی سے اوپر اُٹھتے ھوئے سیدھے راستے پر چلنے کی طاقت دے ."

سب دھرم پستکوں میں ایشور اللہ کے ناموں کے بارے میں بھی یہ دوئی موجود ھے اور سب دھرم والوں نے ایشور کو دو دو ناموں سے پکارا ھے .

قرآن اُسے ' الاول ' اور ' الاخر ' کہکر پکارتا ھے . ویدوں میں اُسے ' آدی ' اور ' انت ' کہا گیا ھے . دونوں کے ایک ھی معنی ھیں . قرآن اُسے ' الباطن ' اور ' الظاھر ' کہکر پکارتا ھے . وید اُسی کو ' اویکت ' اور ' ویکت ' کہتا ھے . دونوں کا ایک ھی مطلب ھے . قرآن میں اُسے ' البادی ' اور ' الجامی ' کہا گیا ھے . ویدوں میں اُسی کو ' سرشٹا ' اور ' سنھارتا ' کہا گیا ھے . دونوں کا ٹھیک وھی منشا ھے . قرآن میں ' المحی ' اور ' الممیت ' نام آتے ھیں . ویدوں میں اُسی کو ' بھو ' اور ' ھر ' کہا گیا ھے، یعنی جان ڈالنے والا اور مارنے والا . قرآن میں جو ' المضل ' اور ' الھادی ' سے مطلب ھے وھی ویدوں میں ' مائی ' اور ' تارک ' سے ھے، یعنی لبھانے والا یا آزمانے والا اور ٹھیک راستہ بتانے والا . قرآن میں ' القہار ' اور ' الرزاق ' نام آتے ھیں . ویدوں میں اُنھیں کے مقابلے کے ' رودر ' اور ' شیو ' ھیں . قرآن میں ' غضبان ' اور ' غفار ' کا وھی

धर्म मज़हब की ज़रूरत

(डाक्टर भगवान दास)

दुनिया के सब बड़े बड़े मज़हबों की धर्म पुस्तकों को ला कर पढ़ने से उन में तरह तरह की समानता देखने ो मिलती है. मिसाल के तौर पर यह ख़याल सब धर्म स्तकों में पाया जाता है कि लगभग हर चीज़ के दो हलू होते हैं और समझदारी इसी बात में है कि हम दोनों हलुओं को मिला कर देखें और जहाँ तक हो सके बीच के स्ते से चलने की कोशिश करें. उपनिशद में लिखा है— यह सारा जगत द्वन्द्वमय (दुई से भरा) है. यहाँ की ब चीज़ें दो दो के जोड़ों में रहती हैं."

क़ुरान में अल्लाह कहता है—"हमने सब चीज़ें दो दो जोड़ों में बनाई हैं."

ठीक यही बात इनजील में कही गई है.

कभी कभी इन दो में से देख भाल कर एक को चुनना ड़ जाता है. योगभाश्य में लिखा है—"आदमी के चित ानी मन की नदी एक दूसरे के ख़िलाफ़ दो तरफ़ को बहती हती है, कभी भलाई और नेकी की तरफ़ और कभी पाप ौर बरबादी की तरफ़. एक सूफ़ी ने कहा है—"एक कड़वे ानी की नदी और दूसरी मीठे पानी की नदी दोनों साथ ाथ बहती रहती हैं, और इन दोनों के बीच से तलवार ी धार की तरह बारीक असली सकून और सलामती का ास्ता है."

महाभारत में लिखा है—"जिस तरह सरदी और रमी के बीच एक जगह है जहाँ न सरदी है और न गरमी, सी तरह सुख और दुख के बीच में शान्ति का वह मुक़ाम जहाँ न सुख है और न दुख." यही ख़याल सब मज़हबी ताबों में मिलता है. गीता में बार बार यह विचार आया —"ऐ अर्जुन ! जो आदमी द्वन्द्व (दुई या दोरियत) से ऊपर ठ जाता है वह आसानी के साथ सब बन्धनों से छूट ाता है. जो कामयाबी और नाकामयाबी में एक रस हता है, जो अपने पराए का फ़रक़ नहीं करता, जिसे किसी बैर नहीं, जो अपने लिये जो कुछ भी मिल जाय उसी सन्तोश मान लेता है, वह दुनिया में अपना फ़र्ज़ पूरा रते हुए भी अपने कामों से बन्धन में नहीं पड़ता."

सब धर्म पुस्तकें हमें यह समझाती हैं कि इस दुनिया लाभ और हानि, नफ़ा और नुक़सान, सुख और दुख ाथ साथ चलते हैं. जब तक हमारे अलग अलग जिस्म हैं ब तक यह सब रहेंगे. इसलिये इन सब का शान्त चित्त

دھرم مذھب کي ضرورت

(ڈاکٹر بھگوان داس)

دنیا کے سب بڑے بڑے مذھبوں کی دھرم پستکوں کو ملا کر پڑھنے سے اُن میں طرح طرح کی سمانتا دیکھنے کو ملتی ھے . مثال کے طور پر یہ خیال سب دھرم پستکوں میں پایا جاتا ھے کہ لگ بھگ ھر چیز کے دو پہلو ھوتے ھیں اور سمجھداری اِسی بات میں ھے کہ ھم دونوں پہلوؤں کو ملا کر دیکھیں اور جہاں تک ھوسکے بیچ کے راستے سے چلنے کی کوشش کریں . اُپنشد میں لکھا ھے -" یہ سارا جگت دوند ہے (دوئی سے بھرا) ھے . یہاں کی سب چیزیں دو دو کے جوڑوں میں رھتي ھیں ."

قرآن میں اللہ کہتا ھے —" ھم نے سب چیزیں دو دو کے جوڑوں میں بنائي ھیں ."

ٹھیک یہی بات انجیل میں کہی گئی ھے .

کبھی کبھي اِن دو میں سے دیکھ بھال کر ایک کو چننا پڑ جاتا ھے . یوگ بھاشیہ میں لکھا ھے —" آدمی کے چت یعنی من کی ندي ایک دوسرے کے خلاف دو طرف کو بہتی رھتی ھے کبھی بھلائي اور نیکی کی طرف اور کبھی پاپ اور بربادی کی طرف . ایک صوفی نے کہا ھے —"ایک کڑوے پانی کی ندی اور دوسری میٹھے پانی کی ندی دونوں ساتھ ساتھ بہتی رھتی ھیں' اور اِن دونوں کے بیچ سے تلوار کی دھار کی طرح باریک اصلی سکون اور سلامتی کا راستہ ھے ."

مہا بھارت میں لکھا ھے —" جسطرح سردی اور گرمی کے بیچ ایک جگہ ھے جہاں نہ سردی ھے اور نہ گرمی' اِسی طرح سکھ اور دکھ کے بیچ میں شانتی کا وہ مقام ھے جہاں نہ سکھ ھے اور نہ دکھ ." یہی خیال سب مذھبی کتابوں میں ملتا ھے . گیتا میں بار بار یہ وچار آیا ھے — " اے ارجن ! جو آدمی دوند (دوئی یا غیریت) سے اوپر اُٹھ جاتا ھے وہ آسانی کے ساتھ سب بندھنوں سے چھوٹ جاتا ھے . جو کامیابی اور ناکامیابی میں ایک رس رھتا ھے' جو اپنے پرائے کا فرق نہیں کرتا' جسے کسی سے بیر نہیں' جو اپنے لئے جو کچھ بھی مل جائے اسی میں سنتوش مان لیتا ھے' وہ دنیا میں اپنا فرض پورا کرتے ھوئے بھی اپنے کاموں سے بندھن میں نہیں پڑتا ."

سب دھرم پستکیں ھمیں یہ سمجھاتی ھیں کہ اِس دنیا میں لابھ اور ھانی' نفع اور نقصان' سکھ اور دکھ ساتھ ساتھ چلتے ھیں . جب تک ھمارے الگ الگ جسم ھیں تب تک یہ سب رھینگے . اِس لئے اِن سب کا شانت چت

(27)

चिंगारियाँ उड़ती हैं तेरी शरारत पर जनता की आँखों से
बारूद की बू आती है बराबर अब जनता की साँसों से
हुशियार ! टपकता है अब और ही कुछ जनता की बातों से
ख़ुद मौत की आँख झपक जाती है अब जनता की निगाहों से
वह छलका सब्र का पैमाना, तारीख़ ने भी छापा मारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(28)

वह देख कि अब दुनिया भर में मज़लूमों के दल सजते हैं
वह सुन कि सताए हुए तेरे शेरों की तरह गरजते हैं
ग़ुस्से से वह चेहरे दमकते हैं शोलों से वह सीने मँजते हैं
वह बाग़ियों के लश्कर में कहीं अब कूच के डंके बजते हैं
वह उड़े शरर वह इनक़लाब के काले नाग ने फुनकारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(29)

मैं वाल स्ट्रीट के सट्टे बाज़ों का असली रूप दिखाता हूँ
इस हुक्मरान तबक़े के रुख़ से आज नक़ाब उठाता हूँ
दुनिया भर में इस फैले हुए ख़तरे से तुम्हें चौंकाता हूँ
अमरीकी बंजारानामा गा गा के 'फ़िराक़' सुनाता हूँ
सब मिल के लगाओ देश देश में जनता की जय का नारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

['फ़िराक़' साहब की इस कविता में जहाँ अमरीकी ज़िन्दगी का ख़ासा चित्र है वहाँ इसमें हिन्दुस्तानी बोल चाल के कुछ चुने हुए मुहावरे भी भरे हुए हैं जैसे बे भाव की पड़ना. वारा न्यारा. दुकान बढ़ाना. पल्ले पड़ना. पारा चढ़ना. सर मारना. दवाल फ़सल. शैतान की आँत. बातों में आना. दो दिन की चाँदनी फिर अन्धेरा पाख. वग़ैरा वग़ैरा. यह हिन्दी सीखने वालों के लिये बड़े काम के हैं.

इसी तरह की 'फ़िराक़' साहब की एक दूसरी कविता "हम डालर देस को देख आए" सितम्बर के 'नया हिन्द' में हम छाप रहे हैं.

—एडीटर]

(28) शरर = चिनगारियाँ (29) नक़ाब = पर्दा.

(27)

چنگاریاں اڑتی ہیں تیری شرارت پر جنتا کی آنکھوں سے
بارود کی بو آتی ہے برابر اب جنتا کی سانسوں سے
ہشیار ! ٹپکتا ہے اب اور ہی کچھ جنتا کی باتوں سے
خود موت کی آنکھ جھپک جاتی ہے اب جنتا کی نگاہوں سے
وہ چھلکا صبر کا پیمانہ' تاریخ نے وہ چھاپا مارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا. جب لاد چلے گا بنجارا.

(28)

وہ دیکھ کہ اب دنیا بھر میں مظلوموں کے دل سجتے ہیں
وہ سن کہ ستائے ہوئے تیرے شیروں کی طرح گرجتے ہیں
غصے سے وہ چہرے دمکتے ہیں شعلوں سے وہ سینے ملجتے ہیں
وہ باغیوں کے لشکر میں کہیں اب کوچ کے ڈنکے بجتے ہیں
وہ اڑے شرر وہ انقلاب کے کالے ناگ نے پھنکارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لاد چلے گا بنجارا.

(29)

میں وال اسٹریٹ کے سٹے بازوں کا اصلی روپ دکھاتا ہوں
اس حکمراں طبقے کے رخ سے آج نقاب اٹھاتا ہوں
دنیا بھر میں اس پھیلے ہوئے خطرے سے تمہیں چونکاتا ہوں
امریکی بنجارہ نامہ گا گا کے ' فراق ' سناتا ہوں
سب مل کے لگاؤ دیس دیس میں جنتا کی جے کا نعرہ
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لاد چلے گا بنجارا.

['فراق' صاحب کی اس کویتا میں جہاں امریکی زندگی کا خاصا چتر ہے وہاں اس میں ہندستانی بول چال کے کچھ چنے ہوئے محاورے بھی بھرے ہوئے ہیں. جیسے بے بھاؤ کی پڑنا. وارا نیارا. دوکان بڑھانا. پلے پڑنا. پارہ چڑھنا. سر مارنا. دھل فسل. شیطان کی آنت. باتوں میں آنا. دو دن کی چاندنی پھر اندھیرا پاکھ. وغیرہ وغیرہ. یہ ہندی سیکھنے والوں کے لئے بڑے کام کے ہیں.

اسی طرح کی ' فراق ' صاحب کی ایک دوسری کویتا " ہم ڈالر دیس کو دیکھ آئے " ستمبر کے ' نیا ہند ' میں ہم چھاپ رہے ہیں.

—ایڈیٹر]

(28) شرر = چنگاریاں (29) نقاب = پردہ.

(22)

दी तरह बहुत दुनिया भर के मज़दूरों और किसानों ने
की तेरी बिदअतों पर हैरत दीवानों ने फ़रज़ानों ने
घायल सीनों में ज़ोर भरा फिर ख़ून हुए अरमानों ने
ओ पैंतरेबाज़ अब देखेगा कि सताए हुए इनसानों ने
दुनिया के अखाड़े में तुमको एक रोज़ उठा के दे मारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(23)

जो बात बनाई थी तूने वह बात बिगड़ने वाली है
जो बज़्म जमाई थी तूने वह बज़्म उखड़ने वाली है
अब लुटे हुए हाथों की बग़ावत ज़ोर पकड़ने वाली है
बंजारे सर की ख़ैर मना बे भाव की पड़ने वाली है
तारे नज़र आएंगे दिन को जब सर पे बजेगा नक़्क़ारा
सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(24)

दुनिया को बनामे आज़ादी तूने दिये गच्चे पर गच्चे
दुनिया भर से आज़ादी के वादे हैं तेरे झूटे सच्चे
जो आजाएं भर्रों में तेरे अब लोग नहीं ऐसे कच्चे
क्या मर्गे-कोरिया आज़ादी है ओ आज़ादी के बच्चे
अब क़ैदे ज़िन्दगी से तुमको यह दुनिया देगी छुटकारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(25)

एटम बम चीन पे फेंकोगे ? बढ़ बढ़ के बोलना क्यों बाबा
इस विश्व शान्ति के सागर में यूँ ज़हर घोलना क्यों बाबा
जीवन बाज़ार में मौत की यह दूकान खोलना क्यों बाबा
तहज़ीब की फूल सी क़द्रों को काँटों में तोलना क्यों बाबा
डालर की मकर चाँदनी दो दिन फिर अँधियारा पखवारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा

(26)

बाज़ारे जहाँ में देखें कब तक मची रहे यह लेन देन
दुनिया के गले का फंदा कब तक तेरे क़र्ज़ों की जनेव
दुनिया को मिटाने की धमकी, यह क्या भाव यह महासेव
तेरा ही एटम बम करदे सर पर तेरे बम महादेव
वह दिन लद गए कि फिरे ऐंठता, कोई ज़ालिम हत्यारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(22) तरह देना = मौक़ा देना; बिदअतों = नई नाजायज़ बातों; फ़रज़ानों = अक़्लमंदों (23) बज़्म = महफ़िल (24) भर्रों = बहकाने में; मर्गे कोरिया = कोरिया की मौत (26) क़र्ज़ों का जनेव = हिन्दुओं के जनेऊ में तीन धागे तीन क़र्ज़ों की अलामत होते हैं— माता पिता का क़र्ज़, गुरु का क़र्ज़ और ईश्वर का क़र्ज़; सेव = सेवा.

(22)

دی طرح بہت دنیا بھر کے مزدوروں اور کسانوں نے
کی تیری بدعتوں پر حیرت دیوانوں نے فرزانوں نے
گھائل سینوں میں زور بھرا پھر خون ہوئے ارمانوں نے
او پینترے باز اب دیکھے گا کہ ستائے ہوئے انسانوں نے
دنیا کے اکھاڑے میں تجھ کو ایک روز اٹھاکے دے مارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لد چلے گا بنجارا۔

(23)

جو بات بنائی تھی تونے وہ بات بگڑنے والی ہے
جو بزم جمائی تھی تونے وہ بزم اکھڑنے والی ہے
اب لٹے ہوئے ہاتھوں کی بغاوت زور پکڑنے والی ہے
بنجارے سر کی خیر منا بے بھاؤ کی پڑنے والی ہے
تارے نظر آئیں گے دن کو جب سر پہ بجے گا نقارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لاد چلے گا بنجارا۔

(24)

دنیا کو بنام آزادی تونے دیئے غچے پر غچے
دنیا بھر سے آزادی کے وعدے ہیں تیرے جھوٹے سچے
جو آجائیں بھروں میں تیرے اب لوگ نہیں ایسے کچے
کیا مرگ کوریا آزادی ہے او آزادی کے بچے
اب قید زندگی سے تجھ کو یہ دنیا دے گی چھٹکارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لد چلے گا بنجارا۔

(25)

ایٹم بم چین پہ پھینکو گے، بڑھ بڑھ کے بولنا کیوں بابا
اِس وشو شانتی کے ساگر میں یوں زہر گھولنا کیوں بابا
جیون بازار میں موت کی یہ دوکان کھولنا کیوں بابا
تہذیب کی پھول سی قدروں کو کانٹوں میں تولنا کیوں بابا
ڈالر کی مکر چاندنی دو دن پھر اندھیارا پکھوارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لد چلے گا بنجارا۔

(26)

بازار جہاں میں دیکھیں کب تک مچی رہے یہ لین دین
دنیا کے گلے کا پھندا کب تک تیرے قرضوں کی جنیو
دنیا کو مٹانے کی دھمکی، یہ دیا بھاؤ یہ مہاسیو
تیرا ہی ایٹم بم کر دے سر پر تیرے بم مہادیو
وہ دن لد گئے کہ پھرے اینٹھتا، کوئی ظالم ہتھیارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لد چلے گا بنجارا۔

(22) طرح دینا = موقع دینا؛ بدعتوں = نئی ناجائز باتوں؛ فرزانوں = عقل مندوں (23) بزم = محفل (24) بھروں = بہکانے میں؛ مرگ کوریا = کوریا کی موت. (26) قرضوں کا جنیو = ہندوؤں کے جنیو میں تین دھاگے تین قرضوں کی علامت ہوتے ہیں— ماتا پتا کا قرض، گرو کا قرض اور ایشور کا قرض؛ سیو = سیوا

(17)

दिन रात यही डालर डालर कब तक इस धुन में मरो बाबा
कब तक इस ग़म में घुलो बाबा कब तक यह ध्यान धरो बाबा
कुछ सोचो समझो ग़ौर करो कुछ अपने जी में डरो बाबा
"अब मौत नक़्क़ारा बाज चुका चलने की फ़िक्र करो बाबा"
उठ जाना है तुमको दुनिया से डालर का फेंक के पुश्तारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(18)

बंजारे ! मशरिक़ मग़रिब को अपना ही दुख क्या थोड़ा है
रिजवे, डल्लेस, आइज़न हावर बटमारों को किस पर छोड़ा है
क्या दुनिया भर को लूट के अब भी कारबार का तोड़ा है
कुछ रोज़ उसे कर ज़हरमार दुनिया का लहू जो निचोड़ा है
जमहूरे जहाँ इन तेरे पिट्ठुओं को कर देंगे नाकारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(19)

ये यू. एन. ओ. में ऐय्यारी यह फोग फाँस यह दग़ल फ़सल
ये हिफ़्ज़े अमन के पाकीज़ा राज़ीनामे में रद्दोबदल
यह बैनुलअक़वामी साज़िश यह तानाशाही छल बल कल
यह आग धुआँ यह चिनगारी यह तीसरी जंग के दल बादल
पैग़ामे अजल है तेरे लिये बजता हुआ अम्न का नक़्क़ारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(20)

यह मारशल एड, यह पैसफ़िक एड, यह लेन देन रिश्ता नाता
और बैनुलक़ौमी बैंक का वो शैतान की आँत बही खाता
यह डालर साम्राज का एहसाँ अब तो उठाया नहीं जाता
दुनिया को उसके हाल पे छोड़, अब ओ दुनिया के अन्नदाता
तुझको भी एक दिन ले डूबेगी क़र्ज़ की यह बढ़ती धारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(21)

उलटेंगी तेरी सब तदबीरें पलटेंगी जहाँ की तक़दीरें
क्या थाम सकेंगी ताज़ीरें क्या रोक सकेंगी ज़ंजीरें
टूटेगा ये मौत का सन्नाटा जब बोल उठेंगी तसवीरें
एक दिन छिन जाएंगी तुझसे तेरी संगीनें शमशीरें
भूकी और नंगी जनता को वह देख अजल ने ललकारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा

---

(17) पुश्तारा = पीठ का बोझ (18) बटमार = रास्ते का डाकू; ज़हरमार = हज़म करना; जमहूरे जहाँ = दुनिया की जनता; नाकारा = निकम्मा (19) दग़ल फ़सल = किसी को लड़ा देना, किसी को फंसा देना; हिफ़्ज़े अमन = शान्ति रक्षा; बैनुल अक़्वामी = अंतर राष्ट्री (21) ताज़ीरें = सज़ाएँ.

(17)

دن رات وہی ڈالر ڈالر کب تک اِس دھن میں مرو بابا
کب تک اِس غم میں گھلو بابا کب تک یہ دھیان دھرو بابا
کچھ سوچو سمجھو غور کرو کچھ اپنے جی میں ڈرو بابا
"اب موت نقارہ باج چکا چلنے کی فکر کرو بابا"
اُٹھ جانا ہے تم کو دنیا سے ڈالر کا پھینک کے پشتارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائیگا جب لاد چلے گا بنجارا۔

(18)

بنجارے ! مشرق مغرب کواپنا ہی دکھ کیا تھوڑا ہے
رجوے، ڈلیس، آئزن ہاور بٹ ماروں کو کس پر چھوڑا ہے
کیا دنیا بھر کو لوٹ کے اب بھی کاربار کا توڑا ہے
کچھ روز اُسے کر زہرمار دنیا کا لہو جو نچوڑا ہے
جمہور جہاں اِن تیرے پٹھوؤں کو کردیں گے ناکارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائیگا جب لاد چلے گا بنجارا۔

(19)

یہ یو . اِن . او . میں عیاری یہ پھوز پھانس یہ دغل فصل
یہ حفظ امن کے پاکیزہ راضی نامے میں رد و بدل
یہ بین الاقوامی سازش یہ تانا شاہی چھل بل کل
یہ آگ دھواں یہ چنگاری یہ تیسری جنگ کے دل بادل
پیغام اجل ہے تیرے لئے بجتا ہوا امن کا نقارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائیگا جب لاد چلے گا بنجارا۔

(20)

یہ مارشل ایڈ، یہ پیسفک ایڈ، یہ لین دین رشتہ ناتا
اور بین القومی بینک کا وہ شیطان کی آنت بہی کھاتا
یہ ڈالر سامراج کا احساں اب تو اُٹھایا نہیں جاتا
دنیا کو اُس کے حال پہ چھوڑ اب او دنیا کے ان داتا
تجھکو بھی ایک دن لے ڈوبے گی قرض کی یہ بڑھتی دھارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائیگا جب لاد چلے گا بنجارا۔

(21)

اُلٹیں گی تیری سب تدبیریں پلٹیں گی جہاں کی تقدیریں
کیا تھام سکیں گی تعزیریں کیا روک سکیں گی زنجیریں
ٹوٹے گا یہ موت کا سناٹا جب بول اُٹھیں گی تصویریں
ایک دن چھن جائیں گی تجھ سے تیری سنگینیں شمشیریں
بھوکی اور ننگی جنتا کو وہ دیکھ اجل نے للکارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائیگا جب لاد چلے بنجارا۔

---

(17) پشتارا = پیٹھ کا بوجھ (18) بٹ مار = راستے کا ڈاکو؛ زہر مار = ہضم کرنا؛ جمہور جہاں = دنیا کی جنتا؛ ناکارا = نکما (19) دغل فصل = کسی کو لڑا دینا' کسی کو پھنسا دینا؛ حفظ امن = شانتی رکشا؛ بین الاقوامی = انتر راشٹری (21) تعزیریں = سزائیں۔

(12)

सुन ओ अमरीकी बंजारे ! संसार तेरी दूकान नहीं
कुछ चीनी भी ताजिर हैं, इनसान हैं वो शैतान नहीं
है जिनसे उनका कारबार जानें उनको हलकान नहीं
यह तेरी समझ में आजाए क्या इसका कोई इमकान नहीं ?
डाके से कोई दुनिया में फला ? चोरी से किसी को हुआ वारा ?
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(13)

तू हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को नरक बना कर छोड़ेगा
चल जायं अगर तेरी चालें दोनों को मिटाकर छोड़ेगा
दोनों को उजाड़ के छोड़ेगा वीरान बना कर छोड़ेगा
दोनों को चबा कर छोड़ेगा दोनों को खाकर छोड़ेगा
लेकिन ये निवाले बन जाएँगे तेरे लिये संगे ख़ारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा

(14)

जिन क़ौमों का तू मददगार बनता है क्या तू उनके यहाँ
भारी भारी फ़ैक्टरियों के बनने का दिल से है ख़्वाहाँ
जिन मुल्कों का तू ठेकेदार बनता है ऐ दल्लाले जहाँ !
उन में भी दौलत बरस पड़े इस बात की तुझको फ़िक्र कहाँ
ऐ अपने दोस्तों के दुशमन ले मौत ने वह फन्दा मारा
सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(15)

क़त्ताले कोरिया याद रहे जब फ़ैसले का वक़्त आएगा
तारीख़ का सबसे बड़ा मुजरिम इनसाफ़ तुझे ठहराएगा
इनसान बयक आवाज़ तेरा हर ज़ुल्मो सितम गिनवाएगा
अपने करतूत याद करके तू पीट के सर पछताएगा
जो मौत के मुंह पर चढ़ जाए इसका भी किसी में है यारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(16)

जापान, कोरिया, चीन, मलाया, इन्डोनीशिया और बरमा
यूनान, मिस्र, कशमीर और तिब्बत, यूगोस्लेविया, आस्ट्रेलिया
फ़िलस्तीन, ईरान, सीरिया, योरप, एशिया, अफ़रीका
किस किस पर आँखें हैं तेरी कुछ लालच की हद है बाबा
दो गज़ ही कफ़न हाथ आएगा गो दुनिया दुनिया सर मारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

---

(12) ताजिर व्योपारी; हलकान = परेशान; वारा = फ़ायदा (13) निवाले = कौर; संगे ख़ारा = सख़्त पत्थर (14) ख़्वाहाँ = इच्छुक (15) क़त्ताले कोरिया = कोरिया का हत्यारा; बयक आवाज़ = एक आवाज़ से.

(12)

سن او امریکی بنجارے ! سنسار تیری دوکان نہیں
کچھ چینی بھی تاجر ہیں، انسان ہیں وہ شیطان نہیں
ہے جن سے اُن کا کاروبار جانیں اُن کو ہلکان نہیں
یہ تیری سمجھ میں آجائے کیا اِس کا کوئی امکان نہیں؟
ڈاکے سے کوئی دنیا میں پھلا؟ چوری سے کسی کو ہوا وارا؟
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائیگا جب لاد چلے گا بنجارا.

(13)

تو ہندستان اور پاکستان کو نرک بناکر چھوڑے گا
چل جائیں اگر تیری چالیں دونوں کو مٹاکر چھوڑے گا
دونوں کو اجاڑ کے چھوڑے گا ویران بناکر چھوڑے گا
دونوں کو چباکر چھوڑے گا دونوں کو کھاکر چھوڑے گا
لیکن یہ نوالے بن جائیں گے تیرے لئے سنگ خارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائیگا جب لاد چلے گا بنجارا.

(14)

جن قوموں کا تو مددگار بنتا ہے کیا تو اُن کے یہاں
بھاری بھاری فیکٹریوں کے بننے کا دل سے ہے خواہاں
جن ملکوں کا تو ٹھیکیدار بنتا ہے اے دلال جہاں!
اُن میں بھی دولت برس پڑے اِس بات کی تجھ کو فکر کہاں
اے اپنے دوستوں کے دشمن لے موت نے وہ پھندا مارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائیگا جب لاد چلے گا بنجارا.

(15)

قتال کوریا یاد رہے جب فیصلے کا وقت آئے گا
تاریخ کا سب سے بڑا مجرم انصاف تجھے ٹھہرائے گا
انسان بہ یک آواز تیرا ہر ظلم و ستم گنوائے گا
اپنے کرتوت یاد کرکے تو پیٹ کے سر پچھتائے گا
جو موت کے منہ پر چڑھ جائے اِس کا بھی کسی میں ہے یارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائیگا جب لاد چلے گا بنجارا.

(16)

جاپان، کوریا، چین، ملایا، انڈونیشیا اور برما
یونان، مصر، کشمیر اور تبت، یوگوسلاویا، آسٹریلیا
فلسطین، ایران، سیریا، یورپ، ایشیا، افریقا
کس کس پر آنکھیں ہیں تیری کچھ لالچ کی حد ہے بابا
دو گز ہی کفن ہاتھ آئے گا گو دنیا دنیا سر مارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائیگا جب لاد چلے گا بنجارا.

---

(12) تاجر = بیوپاری؛ ہلکان = پریشان؛ وارا = فائدہ (13) نوالے = کور؛ سنگ خارا = سخت پتھر (14) خواہاں = اچھک (15) قتال کوریا = کوریا کا ہتیارا؛ بہ یک آواز = ایک آواز سے.

(8)

सोज़ाक आतशक चेचक हैज़ा प्लेग महामारी
कोढ़ कंठमाला सरतान जलंधर दिक़ सूखाहारी
हर क़ौम तेरी इन सौग़ातों से है अब जीने से आरी
ले तेरे भी दिन आ पहुंचे हुशियार ! ओ मौत के ब्योपारी
अब बिफरी हुई दुनिया का बराबर चढ़ता जाता है पारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(9)

दुनिया में हश्र उठा रक्खा है ज़ालिम तेरी सियासत ने
दुनिया को सिरे से लूट रखा है ज़ालिम तेरी तिजारत ने
दुनिया को भूका मार रखा है ज़ालिम तेरी कफ़ालत ने
दुनिया को ज़लील बना रक्खा है ज़ालिम तेरी ज़लालत ने
एक दिन दुनिया को लूटने का मिट जायगा तेरा ब्योपारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(10)

यह नीग्रो बेटिंग और लिन्चिंग तेरे किरदार में शामिल हैं
माओं बहनों बच्चों के लहू इस कारोबार में शामिल हैं
यह क़त्ल व ग़ारत डाकाज़नी तेरे ब्योहार में शामिल हैं
शैतान भी जिन पापों से डरे तेरे अतवार में शामिल हैं
अब मौत की देवी लेने वाली है तेरे लहू का चटख़ारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(11)

क्या रूस है ऐसा बंजारा ? सामान तो उसके पास भी है
क्या चीन है ऐसा बंजारा ? उससे दुनिया को आस भी है
सनअत, हिरफ़त, दौलत, इज़्ज़त नवजनतंत्रों को रास भी है
कसबल इन सब में है लेकिन क्या इनसे किसी को हास भी है
एक रोज़ अजल के हाथों कहीं खुल जाय न भेद भरम सारा
सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

---

(8) सौग़ात = तोहफ़ा; आरी = बेज़ार; बिफरी = नाराज़ और बेचैन (9) हश्र = क़यामत ; कफ़ालत = मदद (मार्शल एड) (10) नीग्रो बेटिंग और लिन्चिंग = किसी काले नीग्रो को किसी भी झूटे सच्चे इल्ज़ाम पर पकड़ कर मार डालने या जला देने का रिवाज; किरदार = चरित्र; अतवार = ढंग (11) सनअत हिरफ़त = उद्योग धंधे; नवजनतंत्र = योरप की नई लोकशाहियाँ; रास = मुवाफ़िक़; कसबल = ताक़त; हास = डर.

(8)

سوزاک آتشک چیچک ہیضہ پلیگ مہاماری
کوڑھ کنٹھ مالا سرطان جلندھر دق سوکھاماری
ہرقوم تیری اِن سوغاتوں سے ہے اب جینے سے عاری
لے تیرے بھی دن آپہونچے ہوشیار ! او موت کے بیوپاری
اب بپھری ہوئی دنیا کا برابر چڑھتا جاتا ہے پارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لاد چلے گا بنجارا .

(9)

دنیا میں حشر اُٹھا رکھا ہے ظالم تیری سیاست نے
دنیا کو سرے سے لوٹ رکھا ہے ظالم تیری تجارت نے
دنیا کو بھوکا مار رکھا ہے ظالم تیری کفالت نے
دنیا کو ذلیل بنا رکھا ہے ظالم تیری ذلالت نے
ایک دن دنیا کو لوٹنے کا مٹ جائے گا تیرا بیوپارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لاد چلے گا بنجارا .

(10)

یہ نیگرو بیٹنگ اورلنچنگ تیرے کردار میں شامل ہیں
ماؤں بہنوں بچوں کے لہو اِس کاروبار میں شامل ہیں
یہ قتل وغارت ڈاکہ زنی تیرے بیوہار میں شامل ہیں
شیطان بھی جن پاپوں سے ڈرے تیرے اطوار میں شامل ہیں
اب موت کی دیوی لینے والی ہے تیرے لہو کا چٹخارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لاد چلے گا بنجارا .

(11)

کیا روس ہے ایسا بنجارہ؟ سامان تو اُس کے بھی پاس ہے
کیا چین ہے ایسا بنجارہ؟ اُس سے دنیا کو آس بھی ہے
صنعت، حرفت، دولت، عزت نوجن تنتروں کوراس بھی ہے
کس بل اِن سب میں ہے لیکن کیا اِن سے کسی کو ہراس بھی ہے
یک روز اجل کے ہاتھوں کہیں کھل جائے نہ بھید بھرم سارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لاد چلے گا بنجارا .

---

(8) سوغات = تحفہ؛ عاری = بے زار؛ بپھری = ناراض اور بے چین (9) حشر = قیامت؛ کفالت = مدد (مارشل ایڈ) (10) نیگرو بیٹنگ اور لنچنگ = کسی کالے نیگرو کو کسی بھی جھوٹے سچے الزام پر پکڑ کر مار ڈالنے یا جلا دینے کا رواج؛ کردار = چرتر؛ اطوار = ڈھنگ (11) صنعت حرفت = اُدیوگ دھندے؛ نوجن تنتر = یورپ کی نئی لوک شاہیاں؛ راس = موافق؛ کس بل = طاقت؛ ہراس = ڈر

(4)

हिटलर मुसोलिनी टोजो का जो हश्र हुआ वो देख लिया
इंगलैन्ड में हो या फ्रान्स में हो मग़रिब हो कि मशरिक़ का ख़ित्ता
अब ऊँचे सुरों में सरमाए का राग सुनाई नहीं देता
इस साज़ पर ऐसी चोट पड़ी जैसे फट जाए हर परदा
पूँजी का पैमानो टूट चुका अब हाथ में ले ले इकतारा
सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा,

(5)

यह मोटर, जीप, रेमिंगटन, पारकर, ब्लेड, जहाज़ो सरो सामाँ
यह लोहा लंगर टीन रबर पेट्रोल केरोसिन गैस धुआँ
बिजली के खिलौने लट्टू बाजे गेंद ताश गुड्डे गुड़ियाँ
जब मौत बढ़ायगी तेरी दुकाँ कुछ भी पल्ले न पड़ेगा मियाँ
सब माल धरा रह जाएगा जब पैके अजल ने ललकारा
सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा,

(6)

यह लिप्सटिक, पाउडर, सास, पिकिल यह पशमीने यह क़ीमती फ़र
नंगी तस्वीरों के एलबम, ज़हरीला जिन्सी लिटरेचर
और हालीवुड की फ़िल्मों का वह गंदा सड़ा गला कलचर
अमरीकी तर्ज़ ज़िन्दगी का यह टीम टाम यह कर्रोफ़र
हर गुनहगार का मौत के हाथों हो जाता है निस्तारा
सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा,

(7)

क्या कोका कोला, मारगेरीन, क्या एग पाउडर क्या चाट चसक
क्या नाइट कलब, क्या नारकेटिक, अफ़यूँ का धुआँ, कोकीन मदक
क्या टर्टिल सूप और क्या सासेज क्या बेकन पोर्क, शराब गज़क
क्या तहज़ीब ऐसी चटोरी भी क्या तबक भबक क्या चटक मटक
इस अगड़म बगड़म खाने पीने ने बे मौत तुझे मारा
सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा,

(4) हश्र = नतीजा ; मग़रिब = पच्छिम ; मशरिक़ = पूरब ; ख़ित्ता = इलाक़ा (5) सरो सामाँ = सामान; पैके अजल = मौत का फ़रिश्ता (6) सास = एक तरह की चटनी ; पिकिल = विलायती अचार ; जिन्सी लिटरेचर = काम वासना-साहित्य ; कर्रोफ़र = शान-शौकत (7) नारकेटिक = एक नशा ; टर्टिल सूप = कछुवे का शोरबा; सासेज = एक विलायती खाना; बेकन पोर्क = सुअर का गोश्त; गज़क = शराब के साथ का खाना,

(4)

ہٹلر مسولینی توجو کا جو حشر ہوا وہ دیکھ لیا
انگلینڈ میں ہو یا فرانس میں ہو مغرب ہو کہ مشرق کا خطا
اب اونچے سروں میں سرمائے کا راگ سنائی نہیں دیتا
اِس ساز پر ایسی چوٹ پڑی جیسے پھٹ جائے ہر پردا
پونجی کا پیمانو ٹوٹ چکا اب ہاتھ میں لے لے اکتارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لاد چلے گا بنجارا۔

(5)

یہ موٹر، جیپ، ریمنگٹن، پارکر، بلیڈ، جہاز و سرو سامان
یہ لوہا لنگر ٹین ربر پٹرول کیروسن گیس دھواں
بجلی کے کھلونے لٹو باجے گیند تاش گڈے گڑیاں
جب موت بڑھائے گی تیری دوکاں کچھ بھی پلے نہ پڑے گا میاں
سب مال دھرا رہ جائے گا جب پیک اجل نے للکارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لاد چلے گا بنجارا۔

(6)

یہ لپسٹک، پاوڈر، ساس، پکل یہ پشمینے یہ قیمتی فر
ننگی تصویروں کے البم، زہریلا جنسی لٹریچر
اور ہالی وڈ کی فلموں کا وہ گندہ سڑا گلا کلچر
امریکی طرز زندگی کا یہ ٹیم ٹام یہ کروفر
ہر گنہگار کا موت کے ہاتھوں ہو جاتا ہے نستارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لاد چلے گا بنجارا

(7)

کیا کوکا کولا، مارگرین، کیا اِگ پاؤڈر کیا چاٹ چسک
کیا نائٹ کلب، کیا نارکٹک، افیون کا دھواں، کوکین مدک
کیا ٹرٹل سوپ اور کیا ساسیج کیا بیکن پورک، شراب گزک
کیا تہذیب ایسی چٹوری بھی کیا توک بھوک کیا چٹک مٹک
اِس اگڑم بگڑم کھانے پینے نے بے موت تجھے مارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لاد چلے گا بنجارا۔

(4) حشر = نتیجہ؛ مغرب = پچھم؛ مشرق = پورب؛ خطا = علاقہ (5) سروساماں = سامان؛ پیک اجل = موت کا فرشتہ (6) ساس = ایک طرح کی چٹنی؛ پکل = ولایتی اچار؛ جنسی لٹریچر = کام واسنا ساہتیہ؛ کروفر = شان شوکت (7) نارکٹک = ایک نشہ؛ ٹرٹل سوپ = کچھوے کا شوربا؛ ساسیج = ایک ولایتی کھانا؛ بیکن پورک = سور کا گوشت؛ گزک = شراب کے ساتھ کا کھانا۔

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 11 अगस्त, सन् '51 नम्बर 2

جلد 11 اگست، سن '51 نمبر 2

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند ' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی .

अमरीकी बंजारानामा

(भाई रघुपति सहाय 'फ़िराक़' गोरखपुरी)

(1)

ओ अमरीका के बंजारे ! क्यों देस बिदेस फिरे मारा
क़ज़्ज़ाक़ अजल का लूटे है दिन रात बजा कर नक़्क़ारा
क्या लशकर बेड़े सबमेरीन क्या तय्यारा क्या गुब्बारा
क्या तोप टैंक ज़हरीले गैस ग्रेनेड धुआँ और अंगारा
बजता है मौत का नक़्क़ारा होता है तेरा वारा न्यारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(2)

क्यों ख़ून से सारे आलम के तू अपना दिया जलाता है
क्यों मौत के इन हथियारों को अपना ब्योपार बनाता है
यह मंडी मंडी दूकाँ दूकाँ क्यों तू आग बिछाता है
ख़ुद घर के चिराग़ से बंजारे, सुनते हैं कि घर फुंक जाता है
यह एटम बम हाइड्रोजन बम कर देंगे तेरा निबटारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(3)

यह दुनिया भर में कैसा ताना बाना फैला रक्खा है
किस नाते दुनिया भर में अपना हिस्सा बखरा रक्खा है
क्यों देश देश के कारबार में अपना साझा रक्खा है
इन चालों से क्या मिल जाएगा इन बातों में क्या रक्खा है
बस दो दिन का ये लेन देन यह लेखा जोखा है सारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा.

(1) क़ज़्ज़ाक़ = डाकू; अजल = मौत; तय्यारा = हवाई जहाज़; ग्रेनेड = छोटा बम; नक़्क़ारा = नगाड़ा (2) आलम = दुनिया (3) बखरा = हिस्सा.

امریکی بنجارہ نامہ

(بھائی رگھوپتی سہائے 'فراق' گورکھپوری)

(1)

او امریکہ کے بنجارے ! کیوں دیس بدیس پھرے مارا
قزاق اجل کا لوٹے ہے دن رات بجاکر نقارا
کیا لشکر بیڑے سبمرین کیا طیارا کیا غبارا
کیا توپ ٹینک زہریلے گیس گرینیڈ دھواں اور انگارا
بجتا ہے موت کا نقارا ہوتا ہے تیرا وارا نیارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لاد چلے گا بنجارا .

(2)

کیوں خون سے سارے عالم کے تو اپنا دیا جلاتا ہے
کیوں موت کے اِن ہتھیاروں کو اپنا بیوپار بناتا ہے
یہ منڈی منڈی دوکاں دوکاں کیوں تو آگ بچھاتا ہے
خود گھر کے چراغ سے بنجارے' سنتے ہیں کہ گھر پھنک جاتا ہے
یہ ایٹم بم ہائڈروجن بم کردینگے تیرا نبٹارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لاد چلے گا بنجارا .

(3)

یہ دنیا بھر میں کیسا تانا بانا پھیلا رکھا ہے
کس ناتے دنیا بھر میں اپنا حصہ بخرا رکھا ہے
کیوں دیش دیش کے کاربار میں اپنا ساجھا رکھا ہے
اِن چالوں سے کیا مل جائے گا اِن باتوں میں کیا رکھا ہے
بس دو دن کا یہ لین دین یہ لیکھا جوکھا ہے سارا
سب ٹھاٹ پڑا رہ جائے گا جب لاد چلے گا بنجارا .

(1) قزاق = ڈاکو؛ اجل = موت؛ طیارہ = ہوائی جہاز؛ گرینیڈ = چھوٹا بم؛ نقارا = نگاڑا (2) عالم = دنیا (3) بخرا = حصہ .

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

अगस्त 1951

सफ़ा

[...] साल में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया [...], एक परचा दस आने.

मैनेजर

[...] इलाहाबाद. 'नया हिन्द'

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

اگست 1951

کیا کس سے

صفحہ

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال' باہر دس روپیہ سال' ایک پرچہ دس آنے .

مینیجر

'نیا ہند' [...] الہ آباد

नया हिन्द

نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تارا چند، بھگوان دین، مظفرحسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, महमूद अहमद 'हुनर'

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی، محمود احمد 'ہنر'

* * *

इस नम्बर के ख़ास लेख

* * *

اِس نمبر کے خاص لیکھ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

अगस्त 1951 اگست

क़ीमत दस आना

قیمت دس آنہ

हिन्दुस्तानी कलचर

पर

निबन्धों (मक़ालों) के लिये

इनाम

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने तय किया है कि हिन्दुस्तानी कलचर पर तीन सबसे अच्छे निबन्धों (मक़ालों) के लिये तीन इनाम दिये जाएं. पहला इनाम एक हज़ार रुपए, दूसरा इनाम पाँच सौ रुपए और तीसरा इनाम ढाई सौ रुपए.

निबन्धों में उस हिन्दुस्तानी कलचर के, जो पिछले सारे ज़माने में रूप लेती रही है, टिकाऊ पहलुओं को बयान करते हुए आगे के लिये एक हिन्दुस्तानी कलचर के रंग रूप को बताने की कोशिश होनी चाहिये. निबन्ध अंगरेज़ी में या हिन्दुस्तानी में होने चाहियें. पाँच हज़ार से कम या दस हज़ार से अधिक शब्द न हों. फ़ुलस्केप काग़ज़ पर, काग़ज़ के एक तरफ़, एक चौथाई हाशिया छोड़कर, टाइप करके हर निबन्ध की तीन कापियाँ 30 सितम्बर सन 1951 तक नीचे के पते पर आजानी चाहियें. हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी को हक़ होगा कि आए हुए निबन्धों में से जिसे चाहे छापा करे.

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

नोट:—यह निबन्ध पहले 30 जून तक मँगाए गए थे और इनाम की रक़में कुछ कम थीं. अब इस के लिये वक़्त और रक़म दोनों बढ़ा दिये गए हैं.

—सुन्दरलाल

هندستانی کلچر

پر

نبندھوں (مقالوں) کے لئے

انعام

هندستانی کلچر سوسائٹی نے طے کیا ھے کہ هندستانی کلچر پر تین سب سے اچھے نبندھوں (مقالوں) کے لئے تین انعام دئے جائیں ۔ پہلا انعام ایک ہزار روپے' دوسرا انعام پانچ سو روپے اور تیسرا انعام ڈھائی سو روپے ۔

نبندھوں میں اُس هندستانی کلچر کے' جو پچھلے سارے زمانے میں روپ لیتی رھی ھے' ٹکاؤ پہلوؤں کو بیان کرتے ہوئے آگے کے لئے ایک هندستانی کلچر کے رنگ روپ کو بتانے کی کوشش ھونی چاھئے ۔ نبندھ انگریزی میں یا هندستانی میں ھونے چاھئیں ۔ پانچ ہزار سے کم یا دس ہزار سے ادھک شبد نہ ھوں ۔ فلسکیپ کاغذ پر' کاغذ کے ایک طرف' ایک چوتھائی حاشیہ چھوڑ کر' ٹائپ کر کے ہر نبندھ کی تین کاپیاں 30 ستمبر سن 1951 تک نیچے کے پتے پر آجانی چاھئیں ۔ هندستانی کلچر سوسائٹی کو حق ہوگا کہ آئے ہوئے نبندھوں میں سے جسے چاھے شائع کرے ۔

سندرلال

سکریٹری' هندستانی کلچر سوسائٹی
145' مٹھی گنج' الہ آباد

نوٹ — یہ نبندھ پہلے 30 جون تک منگائے گئے تھے اور انعام کی رقمیں کچھ کم تھیں ۔ اب اِس کے لئے وقت اور رقم دونوں بڑھا دئے گئے ھیں ۔

—سندرلال

Printed and Published by [illegible] at the Naya Hindi Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद्

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों .

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना .

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना .

—:o:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़ ; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास ; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल .

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये –

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिंदुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद .

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ھندستانی کلچر سوسائٹی

[illegible] ایسی ھندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا [illegible] جس میں سب ھندستانی شامل ھوں .

[illegible] پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں [illegible] .

[illegible] گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، [illegible] سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں [illegible] بڑھانا .

—:o:—

[illegible] کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ [illegible] —ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . [illegible] کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ [illegible] پنڈت سندرلال .

[illegible] باڈی کے اور ممبر —

[illegible] سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید [illegible]، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی. جی. [illegible] ایس. کے. رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما [illegible]، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار [illegible] پرکاش پالیوال .

[illegible] کے قاعدوں کے لئے لکھئے –

سندرلال

سکریٹری، ھندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد .

[illegible] سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی [illegible] ایک روپیہ کردی گئی ھے . "نیا ھند" کے [illegible] بننا چاھیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ [illegible] ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی [illegible] والے سوسائٹی کی نکلی ھوئی کوئی کتاب جو [illegible] دام کی ھوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام [illegible] پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے .

रहन-सहन, राग [illegible] के बरताव, सार्वजनिक जीवन और राजकाजी मामलों में रत्ती भर भी भेदभाव नहीं करते, जिनके दिल और दिमाग़ हर तरह की तंगनज़री से ऊपर उठ चुके हैं. देश की ख़ुशक़िस्मती से हर मज़हब के भारतवासियों में इस तरह के काफ़ी आदमी मौजूद हैं. प्रोफ़ेसर सुधीर कुमार रुद्र इसी तरह के एक आदर्श भारत वासी थे. इसी तरह के लोग हमारे राष्ट्रीय महल के सच्चे निर्माता कहला सकते हैं. इस निगाह से प्रोफ़ेसर सुधीर कुमार रुद्र का जीवन अपने स्वर्गीय पिता प्रिंसपल सुशील कुमार रुद्र के जीवन की तरह उन हज़ारों भारतवासियों के लिये जो भारत राष्ट्रीयता को खुले और छिपे किसी एक धर्म के साथ जोड़ते रहते हैं, सच्ची राष्ट्रीयता के एक बहुत बड़े सबक़ का काम दे सकता है.

हमें भाई सुधीर कुमार रुद्र के चले जाने का बड़ा दुख है. हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी के अन्दर वह एक बहुत बड़ी कमी पैदा कर गए हैं. भगवान उनकी आत्मा को शान्ति और उनके सम्बन्धियों और मित्रों को सन्तोश दें.

29. 6. '51. —सुन्दरलाल

[illegible] میں رہن سہن کے برتاؤ، سارو جنک جیون اور راج کاجی معاملوں میں رتی بھر بھی بھید بھاؤ نہیں کرتے، جن کے دل اور دماغ ہر طرح کی تنگ نظری سے اوپر اٹھ چکے ہیں. دیش کی خوش قسمتی سے ہر مذہب کے بھارت باسیوں میں اِسطرح کے کافی آدمی موجود ہیں. پروفیسر سدھیر کمار رودر اِسی طرح کے ایک آدرش بھارت باسی تھے. اِسی طرح کے لوگ ہمارے راشٹری محل کے سچے نرماتا کہلا سکتے ہیں. اس نگاہ سے پروفیسر سدھیر کمار رودر کا جیون اپنے سورگیہ پتا پرنسپل سوشیل کمار رودر کے جیون کی طرح اُن ہزاروں بھارت باسیوں کے لئے جو بھارت راشٹریتا کو کھلے اور چھپے کسی ایک دھرم کے ساتھ جوڑتے رہتے ہیں، سچی راشٹریتا کے ایک بہت بڑے سبق کا کام دے سکتا ہے.

ہمیں بھائی سدھیر کمار رودر کے چلے جانے کا بڑا دکھ ہے. ہندستانی کلچر سوسائٹی کے اندر وہ ایک بہت بڑی کمی پیدا کر گئے ہیں. بھگوان اُن کی آتما کو شانتی اور اُن کے سمبندھیوں اور مترون کو سنتوش دیں.

— سندر لال 29-6-'51

'नया हिन्द' के पाठकों से

'नया हिन्द' के प्रेमी देखेंगे कि इस नम्बर से 'नया हिन्द' नई शकल में निकल रहा है. इस बन्दोबस्त की वजह से जुलाई नम्बर के छपने में इतनी देर हो गई जिसके लिये हम माफ़ी के तलबगार हैं. हम पूरी कोशिश करेंगे कि 'नया हिन्द' का अगला नम्बर अगस्त महीने के पहले हफ़्ते में पाठकों के पास पहुँच जाय और आगे से बराबर ठीक वक़्त पर मिलता रहे.

दफ़्तर से कई बार एक एक पते की जाँच करने के बाद 'नया हिन्द' डाकख़ाने भेजा जाता है फिर भी हमारे पास अकसर 'नया हिन्द' के न पहुँचने की शिकायतें आती रहती हैं. अपने प्रेमियों से हम अपील करेंगे कि इस बारे मे वह अपने डाकख़ाने से पूछताछ करने के बाद हमें इत्तला दिया करें. हम दूसरा परचा भेज दिया करेंगे.

नया नम्बर आपके हाथ में है. उम्मीद है कि इस सिलसिले में आप अपने सुझाव भेज कर हमें इस बात का मौक़ा देंगे की हम आपकी ज़्यादा से ज़्यादा सेवा कर सकें.

—एडीटर

'نیا ہند' کے پاٹھکوں سے

'نیا ہند' کے پریمی دیکھینگے کہ اس نمبر سے 'نیا ہند' نئی شکل میں نکل رہا ہے. اس بندوبست کی وجہ سے جولائی نمبر کے چھپنے میں اتنی دیر ہوگئی جس کے لئے ہم معافی کے طلبگار ہیں. ہم پوری کوشش کرینگے کہ 'نیا ہند' کا اگلا نمبر اگست مہینے کے پہلے ہفتے میں پاٹھکوں کے پاس پہونچ جائے اور آگے سے برابر ٹھیک وقت پر ملتا رہے.

دفتر سے کئی بار ایک ایک پتے کی جانچ کرنے کے بعد 'نیا ہند' ڈاکخانے بھیجا جاتا ہے پھر بھی ہمارے پاس اکثر 'نیا ہند' کے نہ پہونچنے کی شکائتیں آتی رہتی ہیں. اپنے پریمیوں سے ہم اپیل کرینگے کہ اس بارے میں وہ اپنے ڈاکخانے سے پوچھ تاچھ کرنے کے بعد ہمیں اطلاع دیا کریں، ہم دوسرا پرچہ بھیج دیا کریں گے.

نیا نمبر آپ کے ہاتھ میں ہے. اُمید ہے کہ اس سلسلے میں آپ اپنے سجھاؤ بھیج کر ہمیں اس بات کا موقع دینگے کہ ہم آپ کی زیادہ سے زیادہ سیوا کر سکیں.

— ایڈیٹر

[illegible] के प्रिंसिपल रहे. प्रिंसिपल रुद्र के बारे में भी यहाँ कुछ कहना ज़रूरी मालूम होता है. प्रिंसिपल रुद्र बहुत ही उदार विचारों के आदमी थे. उनका दिल मानव प्रेम से भरा हुआ था. किसी तरह की मज़हबी तंग नज़री उन्हें छू भी नहीं गई थी. वह सच्चे हिन्दुस्तानी और सच्चे इनसान थे. दिल्ली में उस ज़माने में हिन्दू, मुसलमान और ईसाई सब उन्हें प्यार करते थे और सब बड़ी इज़्ज़त की निगाह से देखते थे. दीन बन्धु सी. एफ़. एन्डरूज़ उनके साथियों में से थे. लाला हर दयाल उनके शागिर्दों में थे. महात्मा गांधी से उन्हें बड़ा गहरा प्रेम था. दोनों में गाढ़ी मित्रता थी. दक्खिन अफ़रीक़ा से आने के बाद शुरू के दिनों में महात्मा गांधी दिल्ली में उन्हीं के यहाँ ठहरा करते थे. हमें भी गांधी जी से दिल्ली में प्रिंसपल रुद्र के मकान पर मिलने और बातें करने का सौभाग्य मिला है. उन दिनों गांधी जी नीची गुजराती धोती, कुरता और अंगरखा पहनते थे और काठियावाड़ी पगड़ी बांधते थे.

प्रिंसपल सुशील कुमार रुद्र सच्चे देश भक्त थे. इस देश में अहिंसा का युग आने से पहले उनके न जाने कितने विद्यार्थी जेलों में सड़े और सूलियों पर लटक गए. इस देश के बहुत से देश भक्तों और राष्ट्र सेवकों के लिये प्रिंसपल सुशील कुमार रुद्र एक आदर्श देश भक्त और आदर्श राष्ट्र सेवक थे.

प्रोफ़ेसर सुधीर कुमार रुद्र एक योग्य और नेक पिता के योग्य और नेक पुत्र थे. ईसाई धर्म जिन जिन गुनों पर ज़ोर देता है वह सब उनके अन्दर मौजूद थे. पर किसी तरह की अनुदारता, संकीर्नता या तंग नज़री अपने बाप की तरह उन्हें भी छू न गई थी. प्रोफ़ेसर सुधीर कुमार रुद्र हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी के क़ायम करने वालों और शुरू से अपनी मृत्यु के समय तक उसकी इन्तज़ामिया कमेटी के मेम्बरों में से एक थे. गांधी जी उन्हें हमेशा वातसल्य (पिदराना) प्रेम की निगाह से देखते थे.

हमारा देश अनेक धर्मों का गहवारा है. दुनिया के सब धर्मों को इसमें आदर और प्रेम के साथ जगह मिली है. हिन्दू, मुसलमान, सिख, पारसी, यहूदी, ईसाई, बौद्ध और जैन सब इसके अन्दर बसे हुए हैं. भारत माता सबकी एक बराबर माता है. इस संगम के कारन ही यह देश धर्म की निगाह से दुनिया के लिये एक आदर्श देश है. हमारा राष्ट्र एक मिला जुला राष्ट्र है. हमारे इस आदर्श राष्ट्र में सबसे मुबारक वह हिन्दू, वह मुसलमान, वह सिख, वह पारसी, वह यहूदी, वह ईसाई, वह बौद्ध और वह जैन हैं जो अपने अपने अलग अलग धर्मों को मानते हुए भी, अपने धर्मों के ऊँचे से ऊँचे गुनों को धारन करते हुए भी सच्चे भारती हैं, सब धर्म वालों को एक निगाह से देखते हैं और अपने

[illegible] کے پرنسپل رہے ۔ پرنسپل رودر کے بارے میں بھی یہاں کچھ کہنا ضروری معلوم ہوتا ہے۔ پرنسپل رودر بہت ہی اودار وچاروں کے آدمی تھے ۔ اُن کا دل مانو پریم سے بھرا ہوا تھا ۔ کسی طرح کی مذہبی تنگ نظری اُنھیں چھو بھی نہیں گئی تھی ۔ وہ سچے ہندستانی اور سچے انسان تھے ۔ دلی میں اُس زمانے میں ہندو، مسلمان اور عیسائی سب اُنھیں پیار کرتے تھے اور سب بڑی عزت کی نگاہ سے دیکھتے تھے ۔ دین بندھو سی. ایف. اینڈریوز اُن کے ساتھیوں میں سے تھے ۔ لالہ ہر دیال اُن کے شاگردوں میں تھے ۔ مہاتما گاندھی سے اُنھیں بڑا گہرا پریم تھا ۔ دونوں میں گاڑھی متّرتا تھی ۔ دکھن افریقہ سے آنے کے بعد شروع کے دنوں میں مہاتما گاندھی دلی میں اُنھیں کے یہاں ٹھہرا کرتے تھے ۔ ہمیں بھی گاندھی جی سے دلی میں پرنسپل رودر کے مکان پر ملنے اور باتیں کرنے کا سوبھاگیہ ملا ہے ۔ اُن دنوں گاندھی جی نیچی گجراتی دھوتی، کرتہ اور انگرکھا پہنتے تھے اور کاٹھیاواڑی پگڑی باندھتے تھے ۔

پرنسپل سوشیل کمار رودر سچے دیش بھگت تھے ۔ اس دیش میں اہنسا کا یگ آنے سے پہلے اُن کے نہ جانے کتنے ودیارتھی جیلوں میں سڑے اور سولیوں پر لٹک گئے ۔ اس دیش کے بہت سے دیش بھگتوں اور راشٹر سیوکوں کے لئے پرنسپل سوشیل کمار رودر ایک آدرش دیش بھگت اور آدرش راشٹر سیوک تھے ۔

پروفیسر سدھیر کمار رودر ایک یوگیہ اور نیک پتا کے یوگیہ اور نیک پتر تھے ۔ عیسائی دھرم جن جن گنوں پر زور دیتا ہے وہ سب اُن کے اندر موجود تھے ۔ پر کسی طرح کی انوداراتا، سنکیرنتا یا تنگ نظری اپنے باپ کی طرح اُنھیں بھی چھو نہ گئی تھی ۔ پروفیسر سدھیر کمار رودر ہندستانی کلچر سوسائٹی کے قائم کرنے والوں اور شروع سے اپنی مرتیو کے سمے تک اُسکی انتظامیہ کمیٹی کے ممبروں میں سے ایک تھے ۔ گاندھی جی اُنھیں ہمیشہ واتسلیہ (پدرانہ) پریم کی نگاہ سے دیکھتے تھے ۔

ہمارا دیش انیک دھرموں کا گہوارہ ہے ۔ دنیا کے سب دھرموں کو اس میں آدر اور پریم کے ساتھ جگہ ملی ہے ۔ ہندو، مسلمان، سکھ، پارسی، یہودی، عیسائی، بودھ اور جین سب اِسکے اندر بسے ہوئے ہیں ۔ بھارت ماتا سب کی ایک برابر ماتا ہے ۔ اس سنگم کے کارن ہی یہ دیش دھرم کی نگاہ سے دنیا کے لئے ایک آدرش دیش ہے ۔ ہمارا راشٹر ایک ملا جلا راشٹر ہے ۔ ہمارے اِس آدرش راشٹر میں سب سے مبارک وہ ہندو، وہ مسلمان، وہ سکھ، وہ پارسی، وہ یہودی، وہ عیسائی، وہ بودھ اور وہ جین ہیں جو اپنے اپنے الگ الگ دھرموں کو مانتے ہوئے بھی اپنے دھرموں کے اُونچے سے اُونچے گنوں کو دھارن کرتے ہوئے بھی سچے بھارتی ہیں، سب دھرم والوں کو ایک نگاہ سے دیکھتے ہیں اور اپنے

ज़रा सा भी फ़रक़ होगा और न दोनों तरफ़ के सौदागरों और यात्रियों के कारबार या आने जाने में कोई फ़रक़ पड़ने पाएगा. जो देश भी किसी दूसरे को चूसना या उससे बेजा फ़ायदा उठाना नहीं चाहते और सब के साथ मेल मिलाप और अमन से रहना चाहते हैं उनके सारे आपसी मामले आसानी से शान्ति के साथ तय हो सकते हैं. भारत अपनी शक्ति भर इस रास्ते पर चलता रहा है, चलता रहेगा और दूसरों को इस पर चलने की सलाह और मदद देता रहेगा.

28. 6. '51. —सुन्दरलाल

विनोबा जी तेलंगाना में—

इस नम्बर में दूसरी जगह हम विनोबा जी की तेलंगाना यात्रा पर श्री सुरेश रामभाई का लेख दे रहे हैं. विनोबा जी की इस सच्ची और प्रेम भरी कोशिश ने देश के बहुत से लोगों का ध्यान उनकी तरफ़ खींचा है. इस अनोखी कोशिश में जितनी भी सफलता उन्हें मिली वह बड़ी ख़ुशी की चीज़ और आगे के लिये उम्मीद दिलाने वाली और रास्ता दिखाने वाली है. जैसा विनोबा जी ने कई जगह कहा है हमें इसमें ज़रा भी शक नहीं कि अहिन्सा और कम्यूनिज़्म का मेल ही इस देश के और दुनिया के अधिकतर दुखों का इलाज है, भले ही इसमें अब तक के कम्यूनिज़्म का रंग रूप बहुत कुछ बदल जावे और भले ही इस समय के अहिंसा भक्तों की कुछ जमी हुई मानताएँ भी हिल जाएँ. दुनिया में कोई समझदार आदमी यह नहीं कह सकता कि उसे आइन्दा कोई नई चीज़ नहीं सीखनी. मानव उन्नति की नदी बराबर बहती ही रहती है. हम विनोबा जी के इस दौरे के लिये उन्हें और देश को दोनों को बधाई देते हैं और चाहते हैं कि इसी तरह के अहिंसा के तरीक़े इसी काम के लिये देश के कुछ ऐसे इलाक़ों में भी आज़माए जावें जो अभी तक कम्यूनिस्टों के हिंसा के तरीक़ों से बचे हुए हैं.

29. 6. '51. —सुन्दरलाल

प्रोफ़ेसर सुधीर कुमार रुद्र—

21 जून सन '51 को इलाहाबाद यूनिवरसिटी के प्रोफ़ेसर सुधीर कुमार रुद्र की नैनीताल में अचानक मृत्यु हो गई. प्रोफ़ेसर रुद्र का यह 60वां साल था. उनतीस साल वह इलाहाबाद यूनिवरसिटी की सेवा कर चुके थे. मृत्यु बिलकुल अचानक हुई. नैनीताल की सात ताल झील में नहाने गए हुए थे. तैरते तैरते पानी की झाड़ियों में फंस गए और वहीं जीवन लीला समाप्त हो गई.

प्रोफ़ेसर सुधीर कुमार रुद्र ईसाई थे. उनके पिता [illegible] सुशील कुमार रुद्र बरसों सेंट स्टीफ़न्सन कालिज.

ذرا سا بھی فرق ہوگا اور نہ دونوں طرف کے سوداگروں اور یاتریوں کے کاروبار یا آنے جانے میں کوئی فرق پڑنے پائیگا . جو دیش بھی کسی دوسرے کو چوسنا یا اس سے بیجا فائدہ اٹھانا نہیں چاہتے اور سب کے ساتھ میل ملاپ اور امن سے رہنا چاہتے ہیں ان کے سارے آپسی معاملے آسانی سے شانتی کے ساتھ طے ہوسکتے ہیں . بھارت اپنی شکتی بھر اس راستے پر چلتا رہا ہے' چلتا رہے گا اور دوسروں کو اس پر چلنے کی صلاح اور مدد دیتا رہے گا .

28-6-51 —سندر لال

ونوبا جی تیلنگانہ میں—

اس نمبر میں دوسری جگہ ہم ونوبا جی کی تیلنگانہ یاترا پر سری سریش رام بھائی کا لیکھ دے رہے ہیں . ونوبا جی کی اس سچی اور پریم بھری کوشش نے دیش کے بہت سے لوگوں کا دھیان ان کی طرف کھینچا ہے . اس انوکھی کوشش میں جتنی بھی سپھلتا انہیں ملی وہ بڑی خوشی کی چیز اور آگے کے لئے امید دلانے والی اور راستہ دکھانے والی ہے . جیسا ونوبا جی نے کئی جگہ کہا ہے ہمیں اس میں ذرا بھی شک نہیں کہ اہنسا اور کمیونزم کا میل ہی اس دیش کے اور دنیا کے ادھک تر دکھوں کا علاج ہے' بھلے ہی اسمیں اب تک کے کمیونزم کا رنگ روپ بہت کچھ بدل جاوے اور بھلے ہی اس سمے کے اہنسا بھکتوں کی کچھ جمی ہوئی مانتائیں بھی ہل جائیں . دنیا میں کوئی سمجھدار آدمی یہ نہیں کہہ سکتا کہ اسے آئندہ کوئی نئی چیز نہیں سیکھنی . مانو انتی کی ندی برابر بہتی ہی رہتی ہے . ہم ونوبا جی کے اس دورے کے لئے انہیں اور دیش کو دونوں کو بدھائی دیتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ اسی طرح کے اہنسا کے طریقے اسی کام کے لئے دیش کے کچھ ایسے علاقوں میں بھی آزمائے جائیں جو ابھی تک کمیونسٹوں کے ہنسا کے طریقوں سے بچے ہوئے ہیں .

29-6-51 —سندر لال

پروفیسر سدھیر کمار رودر—

21 جون سن '51 کو الہ آباد یونیورسٹی کے پروفیسر سدھیر کمار رودر کی نینی تال میں اچانک مرتیو ہوگئی . پروفیسر رودر کا یہ 60 واں سال تھا . انتیس سال وہ الہ آباد یونیورسٹی کی سیوا کر چکے تھے . مرتیو بالکل اچانک ہوئی . نینی تال کی سات تال جھیل میں نہانے گئے ہوئے تھے . تیرتے تیرتے پانی کی جھاڑیوں میں پھنس گئے اور وہیں جیون لیلا سماپت ہوگئی .

پروفیسر سدھیر کمار رودر عیسائی تھے . ان کے پتا پرنسپل سشیل کمار رودر برسوں سینٹ اسٹیفنس کالج

फ़ौज चीनी फ़ौज का एक अंग समझी जायगी. तिब्बत की सरहद को दूसरे देशों की दखलअन्दाजी से बचाना चीनी सरकार का फ़र्ज़ होगा और उसे इसके प्रबन्ध करने का हक़ होगा. अंतरक़ौमी मामलों में तिब्बत चीन के साथ रहेगा.

ज़ाहिर है तिब्बत में न इतनी शक्ति है और न क्षमता कि वह आजकल की नाजुक अंतरक़ौमी हालत में दूसरे देशों से अपना बचाव कर सके. दुनिया के दोनों बड़े बड़े दल सब छोटे और कमज़ोर देशों की भलाई चाहने और हिफ़ाज़त करने का दम भरते हैं. सवाल सिर्फ़ इतना है कि इस तरह का कोई भी छोटा देश इन दोनों में से किस पर ज़्यादा एतबार करे. हमें इसके कहने में ज़रा भी संकोच नहीं कि तिब्बत का भला चीन के साथ रहने में है और चीन की सलामती एक दरजे तक तिब्बत की सलामती पर निर्भर है. इसलिये चीन और तिब्बत के इस समझौते पर हम दिल से दोनों देशों को बधाई देते हैं.

यह समझौता इस फैली हुई और खतरनाक ग़लतफ़हमी को भी दूर करता है कि लाल चीन या किसी भी लाल देश का असर जहाँ कहीं बढ़ता है लोगों के धार्मिक विश्वासों और उनके रीत रिवाजों पर जबरदस्ती हमला करता है. हम तो चाहते हैं कि तिब्बत अपने पुराने गए बीते, दक़ियानूसी धार्मिक जंजालों से भी बाहर निकल सके और अपने रीत रिवाजों को अक़ल, साइन्स और मानव प्रेम की रोशनी में सुधार सके. पर यह काम चीनियों का नहीं. यह तिब्बती नेताओं और वहाँ की जनता को ख़ुद ही करना होगा. कोई भी विदेशी सरकार, अगर उसमें ज़रा सी भी समझ है, दूसरे लोगों पर अपना असर क़ायम रखने के लिये उनके धार्मिक अंध विश्वासों और उनके सड़े गले रीत रिवाजों को बदलती या सुधारती नहीं, उन्हें और बढ़ाती और उनसे फ़ायदा उठाती है.

एक छोटी सी बात और है. चीन और भारत के बीच तिजारत हमेशा से बड़ी अच्छी तरह होती रही है. इस तिजारत के रास्ते पर दो जगह एक ग्यानत्से और दूसरा यातुंग पर भारत सरकार की ट्रेड एजेन्सियाँ रहती हैं. ग्यानत्से में सौदागरों और यात्रियों की हिफ़ाज़त के लिये थोड़ी सी हिन्दुस्तानी फ़ौज भी रहती है. इस तिजारत के रास्ते पर भारत के कुछ डाक घर और तार घर भी हैं. तिब्बत की राजधानी लासा में भारत सरकार का एक एजेन्ट भी रहता है. यह सब चीज़ें केवल दोनों के भले के लिये थीं और हैं. हमें इसमें ज़रा भी शक नहीं कि इस इन्तज़ाम में कोई छोटी या बड़ी तबदीली भले ही हो, न उससे भारत सरकार और चीनी सरकार की मित्रता में

فوج کا ایک انگ سمجھی جائے گی. تبت کی سرحد کو دوسرے دیشوں کی دخل اندازی سے بچانا چینی سرکار کا فرض ہوگا اور اسے اس کے پربندھ کرنے کا حق ہوگا. انتر قومی معاملوں میں تبت چین کے ساتھ رہے گا.

ظاہر ہے تبت میں نہ اتنی شکتی ہے اور نہ یوگتا کہ وہ آج کل کی نازک انتر قومی حالت میں دوسرے دیشوں سے اپنا بچاؤ کر سکے. دنیا کے دونوں بڑے بڑے دل سب چھوٹے اور کمزور دیشوں کی بھلائی چاہنے اور حفاظت کرنے کا دم بھرتے ہیں. سوال صرف اتنا ہے کہ اس طرح کوئی بھی چھوٹا دیش ان دونوں میں سے کس پر زیادہ اعتبار کرے. ہمیں اس کے کہنے میں ذرا بھی سنکوچ نہیں کہ تبت کا بھلا چین کے ساتھ رہنے میں ہے اور چین کی سلامتی ایک درجے تک تبت کی سلامتی پر نربھر ہے. اس لئے چین اور تبت کے اس سمجھوتے پر ہم دل سے دونوں دیشوں کو بدھائی دیتے ہیں.

یہ سمجھوتہ اس پھیلی ہوئی اور خطرناک غلط فہمی کو بھی دور کرتا ہے کہ لال چین یا کسی بھی لال دیش کا اثر جہاں کہیں بڑھتا ہے لوگوں کے دھارمک وشواسوں اور ان کے ریت رواجوں پر زبردستی حملہ کرتا ہے. ہم تو چاہتے ہیں کہ تبت اپنے پرانے گئے بیتے، دقیانوسی دھارمک جنجالوں سے بھی باہر نکل سکے اور اپنے ریت رواجوں کو عقل، سائنس اور مانو پریم کی روشنی میں سدھار سکے. پر یہ کام چینیوں کا نہیں. یہ تبتی نیتاؤں اور وہاں کی جنتا کو خود ہی کرنا ہوگا. کوئی بھی ودیشی سرکار، اگر اس میں ذرا سی بھی سمجھ ہے، دوسرے لوگوں پر اپنا اثر قائم رکھنے کے لئے ان کے دھارمک اندھ وشواسوں اور ان کے سڑے گلے ریت رواجوں کو بدلتی یا سدھارتی نہیں، انہیں اور بڑھاتی اور ان سے فائدہ اٹھاتی ہے.

ایک چھوٹی سی بات اور ہے. چین اور بھارت کے بیچ تجارت ہمیشہ سے بڑی اچھی طرح ہوتی رہی ہے. اس تجارت کے راستے پر دو جگہ ایک گیانتسے اور دوسرا یاتنگ پر بھارت سرکار کی ٹریڈ ایجنسیاں رہتی ہیں. گیانتسے میں سوداگروں اور یاتریوں کی حفاظت کے لئے تھوڑی سی ہندوستانی فوج بھی رہتی ہے. اس تجارت کے راستے پر بھارت کے کچھ ڈاک گھر اور تار گھر بھی ہیں. تبت کی راجدھانی لاسا میں بھارت سرکار کا ایک ایجنٹ بھی رہتا ہے. یہ سب چیزیں کیول دونوں کے بھلے کے لئے تھیں اور ہیں. ہمیں اس میں ذرا بھی شک نہیں کہ اس انتظام میں کوئی چھوٹی یا بڑی تبدیلی بھلے ہی ہو، نہ اس سے بھارت سرکار اور چینی سرکار کی مترتا میں

सदियों से तिब्बत को अपने शरीर का एक अंग मानता रहा है. भारत ने कभी भी चीन के इस दावे से इनकार नहीं किया. अक्तूबर सन '50 में चीनी सेना के तिब्बत में घुसने पर भी भारत सरकार ने तिब्बत पर चीन के इस दावे को ठीक मान लिया.

जब से एक तरफ़ रूस और चीन और दूसरी तरफ़ इंगलैन्ड और अमरीका में खेंचातानी शुरू हुई तिब्बत पर भी दोनों तरफ़ से डोरे डाले जाने लगे. तिब्बत में सदियों से एक तरह की दोहरी हकूमत चलती थी. दालाई लामा वहाँ का राजकाजी हाकिम था और पंचेन लामा वहाँ का मजहबी या आध्यात्मिक शासक. हाल में एक अजीब बात यह हुई कि, कहा जाता है, दालाई लामा कुछ अंगरेज़ों और अमरीका वालों के असर में आने लगा था और पंचेन लामा चीन और कम्यूनिज़्म की तरफ़ झुकता था. तिब्बत की सरहद भारत, लद्दाख और कशमीर से मिली हुई है. रूस और कशमीर में बहुत थोड़ा फ़ासला है. अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान की सरहदें भी पास पास ही हैं. ऐसी सूरत में, जाहिर है, रूसो-चीना और ऐंग्लो-अमरीका दोनों में से कोई भी तिब्बत की तरफ़ से बेपरवाह नहीं हो सकता. चीन के लिये तिब्बत का सवाल और भी गहरा सवाल था. तिब्बत के ऊपर चीन की अपनी सलामती का दार मदार था.

ऐंग्लो. अमरीका के तिब्बत पर बढ़ते हुए असर और रेशेदवानियों को देखकर चीन ने इस बिना के ऊपर कि तिब्बत बड़े चीन का एक अंग है, अक्तूबर सन '50 में अपनी फ़ौजें तिब्बत भेजीं. भारत ने एक सच्चे मित्रराष्ट्र की हैसियत से चीन के दावे से तो इनकार नहीं किया लेकिन चीनी सरकार को दोस्ताना सलाह दी कि फ़ौज को आगे बढ़ने से रोका जाय और शान्ति के साथ बातचीत करके चीन और तिब्बत के बीच का मामला तय कर लिया जाय. थोड़ी सी लिखा पढ़ी हुई. चीनी सरकार ने अपनी फ़ौज को आगे बढ़ने से रोक दिया. चीन की राजधानी पेकिंग में चीनी सरकार और तिब्बत के नुमाइन्दों के बीच बातचीत शुरू हुई. मई सन '51 के आख़ीर में चीन और तिब्बत के बीच शान्ति से समझौता होगया. समझौते की सत्रह शर्तें हैं. हमारे देश की अन्तर क़ौमी राजनीत की यह एक छोटी सी लेकिन ख़ासी अच्छी जीत है.

समझौते की ख़ास ख़ास बातें यह हैं—दालाई लामा तिब्बत के राजकाजी शासक बने रहेंगे. पंचेन लामा वहाँ के आध्यात्मिक गुरू रहेंगे. अपने मज़हबी मामलों और रीत रिवाज के पालने में सबको पूरी आज़ादी होगी. तिब्बत के अन्दर के शासन में तिब्बत सरकार पूरी तरह आज़ाद

ںیوں سے تبت کو اپنے شریر کا ایک انگ مانتا رہا ہے.
ارت نے کبھی بھی چین کے اِس دعوے سے انکار نہیں
ا. اکتوبر سن '50 میں چینی سینا کے تبت میں
سنے پر بھی بھارت سرکار نے تبت پر چین کے اِس دعوے
ٹھیک مان لیا.

جب سے ایک طرف روس اور چین اور دوسری طرف
لینڈ اور امریکہ میں کھینچا تانی شروع ہوئی تبت
بھی دونوں طرف سے ڈورے ڈالے جانے لگے. تبت
ں صدیوں سے ایک طرح کی دوہری حکومت چلتی
. دالائی لاما وہاں کا راج کاجی حاکم تھا اور پنچن لاما
ں کا مذہبی یا آدھیاتمک شاسک. حال میں ایک
یب بات یہ ہوئی کہ، کہا جاتا ہے، دالائی لاما کچھ
یزوں اور امریکہ والوں کے اثر میں آنے لگا تھا اور
چن لاما چین اور کمیونزم کی طرف جھکتا تھا.
ت کی سرحد بھارت، لداخ اور کشمیر سے ملی ہوئی ہے.
ں اور کشمیر میں بہت تھوڑا فاصلہ ہے. افغانستان
پاکستان کی سرحدیں بھی پاس پاس ہی ہیں.
ی صورت میں، ظاہر ہے، روسو چینا اور اینگلو.
یکہ دونوں میں سے کوئی بھی تبت کی طرف سے
پرواہ نہیں ہوسکتا. چین کے لئے تبت کا سوال اور
ں گہرا سوال تھا. تبت کے اوپر چین کی اپنی سلامتی
ارومدار تھا.

اینگلو امریکہ کے تبت پر بڑھتے ہوئے اثر اور ریشہ
نیوں کو دیکھکر چین نے اس بنا کے اوپر کہ تبت بڑے
ن کا ایک انگ ہے اکتوبر سن '50 میں اپنی فوجیں
ت بھیجیں. بھارت نے ایک سچے مِتر راشٹر کی
ثیت سے چین کے دعوے سے تو انکار نہیں کیا لیکن
نی سرکار کو دوستانہ صلاح دی کہ فوج کو آگے بڑھنے سے
جائے اور شانتی کے ساتھ بات چیت کرکے چین اور
ت کے بیچ کا معاملہ طے کرلیا جائے. تھوڑی سی
ا پڑھی ہوئی. چینی سرکار نے اپنی فوج کو آگے
نے سے روک دیا. چین کی راجدھانی پیکنگ میں
نی سرکار اور تبت کے نمائندوں کے بیچ بات چیت
ع ہوئی. مئی سن '51 کے آخیر میں چین اور تبت
بیچ شانتی سے سمجھوتا ہوگیا. سمجھوتے کی سترہ
طیں ہیں. ہمارے دیش کی انتر قومی راجنیت
یہ ایک چھوٹی سی لیکن خاصی اچھی جیت ہے.

سمجھوتے کی خاص خاص باتیں یہ ہیں—دالائی لاما
ت کے راج کاجی شاسک بنے رہیں گے. پنچن لاما وہاں کے
یاتمک گرو رہینگے. اپنے مذہبی معاملوں اور ریت
ج کے پالنے میں سب کو پوری آزادی ہوگی. تبت
اندر کے شاسن میں تبت سرکار پوری طرح آزاد

अपने किसी भी प्यारे चेले से—और इसमें शक नहीं कृपलानी जी उनके प्यारे चेलों में से थे—वह काम नहीं लेना चाहते थे जो कृपलानी जी ने नई पारटी के नेता की हैसियत से इस समय हाथ में लिया है. देश के दुखों का यह इलाज भी हो सकता है और इसे आज़माया जा सकता है और आज़माया जायगा, पर गांधी जी का सोचा और बताया इलाज यह नहीं था. गांधी जी का बताया इलाज वह है जो किसी भी ऊँचे कांँगरेस वाले के मन को नहीं भाया, यानी कांँगरेस वालों का हकूमत की कुरसियों और ओहदों के मोह को बिलकुल छोड़कर लोक सेवक संघ के रूप में गाँव गाँव में जाना और जनता से सीधा नाता जोड़ना. यू. पी. सरकार की मदद से जो लोक सेवक संघ इस सूबे में बनाया गया है उसमें और गांधी जी के लोक सेवक संघ में आकाश पाताल का अन्तर है. गांधी जी के बताए रास्ते को न सरकारी कांँगरेस वालों ने माना और न आचार्य कृपलानी और उनकी पारटी ने. फिर भी हमें इसमें शक नहीं कि जहाँ तक नेक इरादों का सम्बन्ध है नई पारटी पुरानी सरकारी पारटी से कुछ न कुछ इंच आध इंच ऊँचे पर ही है, नीचे नहीं. जनता के सच्चे लाभ की इन चुनावों से आशा हो या न हो एक बार देश को इन चुनावों के भयंकर जंजालों से निकलना ही है. हमें विश्वास है कि इन पेचदार रास्तों से चल कर और तजरबा हासिल करके ही देश और जनता अपनी भलाई के सच्चे रास्ते को पा सकेगी.

26. 6. '51 —सुन्दरलाल

तिब्बत, चीन और भारत

ऊँचे पहाड़ों और बरफ़ की दीवारों से घिरा हुआ छोटा सा देश तिब्बत हमेशा से अपने दोनों बड़े पड़ोसियों चीन और हिन्दुस्तान के साथ प्रेम से रहता आया है. अफ़ग़ानिस्तान कई बार भारत का एक सूबा रह चुका है. किसी समय जब विन्ध्याचल से नीचे का देश भारत में नहीं गिना जाता था तब भी अफ़ग़ानिस्तान भारत का एक टुकड़ा था. औरंगज़ेब ने भी अफ़ग़ानिस्तान को जीत कर उसे अपने साम्राज्य का एक सूबा बनाया और राजा जसवन्तसिंह को वहाँ का गवरनर मुक़र्रर किया. लेकिन तिब्बत को हिन्दुस्तानी सल्तनत में शामिल करने का ख़याल कभी किसी भी हिन्दू या मुसलमान सम्राट को नहीं हुआ. सौदागरों, यात्रियों और धर्म प्रचारकों का आना जाना दोनों देशों में बराबर जारी रहा और अब तक है. तिब्बत की आबादी क़रीब बीस लाख है जिसमें अधिकतर लोग बौद्ध मत और शैव मत के मानने वाले हैं.

अपने अन्दर के शासन में तिब्बत क़रीब क़रीब हमेशा आज़ाद रहा है. लेकिन अंतरक़ौमी सम्बन्ध के लिये चीन

ان سے کسی بھی پیارے چیلے سے—اور اس میں شک نہیں [illegible] ان کے پیار کے چیلوں میں سے تھے—وہ کام نہیں [illegible] تھے جو کرپلانی نے نئی پارٹی کے نیتا کی حیثیت سے اس سمے ہاتھ میں لیا ہے. دیش کے دکھوں کا یہ علاج بھی ہوسکتا ہے اور اسے آزمایا جا سکتا ہے اور آزمایا جائے گا. پر گاندھی جی کا سوچا اور بتایا علاج یہ نہیں تھا. گاندھی جی کا بتایا علاج وہ ہے جو کسی بھی اونچے کانگریس والے کے من کو نہیں بھایا' یعنی کانگریس والوں کا حکومت کی کرسیوں اور عہدوں کے موہ کو بالکل چھوڑ کر لوک سیوک سنگھ کے روپ میں گاؤں گاؤں میں جانا اور جنتا سے سیدھا ناتا جوڑنا. یو. پی. سرکار کی مدد سے جو لوک سیوک سنگھ اس صوبے میں بنایا گیا ہے اس میں اور گاندھی جی کے لوک سیوک سنگھ میں آکاش پاتال کا انتر ہے. گاندھی جی کے بتائے راستے کو نہ سرکاری کانگریس والوں نے مانا اور نہ آچاریہ کرپلانی اور ان کی پارٹی نے. پھر بھی ہمیں اس میں شک نہیں کہ جہاں تک نیک ارادوں کا سمبندھ ہے نئی پارٹی پرانی سرکاری پارٹی سے کچھ نہ کچھ انچ آدھ انچ اونچے پر ہی ہے' نیچے نہیں. جنتا کے سچے لابھ کی ان چناووں سے آشا ہو یا نہ ہو ایک بار دیش کو ان چناووں کے بھینکر جنجالوں سے نکلنا ہی ہے. ہمیں وشواس ہے کہ ان پیچ دار راستوں سے چلکر اور تجربہ حاصل کر کے ہی دیش اور جنتا اپنی بھلائی کے سچے راستے کو پاسکے گی.

26-6-'51 — سندر لال

تبت' چین اور بھارت—

اونچے پہاڑوں اور برف کی دیواروں سے گھرا ہوا چھوٹا سا دیش تبت ہمیشہ سے اپنے دونوں بڑے پڑوسیوں چین اور ہندستان کے ساتھ پریم سے رہتا آیا ہے. افغانستان کئی بار بھارت کا ایک صوبہ رہ چکا ہے. کسی سمے جب بندھیاچل سے نیچے کا دیش بھارت میں نہیں گنا جاتا تھا تب بھی افغانستان بھارت کا ایک ٹکڑا تھا. اورنگ زیب نے بھی افغانستان کو جیت کر اسے اپنے سامراج کا ایک صوبہ بنایا اور راجہ جسونت سنگھ کو وہاں کا گورنر مقرر کیا. لیکن تبت کو ہندستانی سلطنت میں شامل کرنے کا خیال کبھی کسی بھی ہندو یا مسلمان سمراٹ کو نہیں ہوا. سوداگروں' یاتریوں اور دھرم پرچارکوں کا آنا جانا دونوں دیشوں میں برابر جاری رہا اور اب تک ہے. تبت کی آبادی قریب بیس لاکھ ہے جس میں ادھک تر لوگ بودھ مت اور شیو مت کے ماننے والے ہیں.

اپنے اندر کے شاسن میں تبت قریب قریب ہمیشہ آزاد رہا ہے. لیکن انتر قومی سمبندھ کے لئے چین

गया है. उससे न केवल यही मुमकिन है कि किसी भी चीज़ पर से कन्ट्रोल कम न किया जावे, बल्कि यह भी साफ़ कह दिया गया है कि मुमकिन है और ज़ियादा चीज़ों पर और इससे बढ़ कर कन्ट्रोल की ज़रूरत पड़े.

हम आचार्य कृपलानी की कठिनाइयों को समझ सकते हैं. उनके दल में इस समय हर तरह के और हर विचार के लोग भरे हुए हैं. उन सब को किसी तरह साथ लेकर चलना है. कुल मिलाकर हमें इसके कहने में ज़रा भी संकोच नहीं कि नई पारटी का यह ऐलान ख़ासा अच्छा और उम्मीद दिलाने वाला ऐलान है. गांधी जी के सच्चे अनुयाई श्री जे. सी. कुमरप्पा पटना में मौजूद थे और उनके विचारों की छाप इस ऐलान में कई जगह दिखाई देती है. हम दिल से चाहते हैं कि आचार्य कृपलानी और उनकी पारटी सरकारी काँगरेस से किसी भी समय मिल जुल कर या अपने वजूद को अलग रख कर जिस तरह भी हो सके इस प्रोग्राम को बढ़ाने और इन वादों को पूरा करने में सफल हो.

पर चुनाव से पहले जनता को तरह तरह के वादे दिलासे देना एक पुरानी चीज़ है. 15 अगस्त सन '47 से पहले समय समय पर काँगरेस ने अपने प्रोग्राम और अपनी पालिसी के जो ऐलान निकाले थे वह सब देश के सामने मौजूद हैं. काँगरेस के सेवकों के ज़रिये 'कृषाणः पृथ्वीपतिः' यानी 'जो जोते बोए वही ज़मीन का मालिक' की आवाज़ बारबार सारे देश में गूँज चुकी है फिर भी हमें किसी आदमी या दल पर पहले से उसके ख़िलाफ़ राय नहीं क़ायम कर लेनी चाहिये. हम इस नई पारटी के खड़े होने को एक क़ुदरती चीज़ मानते हैं और बाक़ी देशवासियों के साथ इस बात के देखने का इन्तज़ार करेंगे कि यह नई पारटी अपने वादों को कहां तक पूरा करती है.

केवल एक बात और कह कर हम इस नोट को ख़तम करेंगे. हमने आचार्य कृपलानी की पटना की तक़रीरों को ध्यानसे पढ़ा है. उन्होंने कम से कम दो बार सुनने वालों को यह याद दिलाया कि आचार्य कृपलानी के काँगरेस की सदारत से इस्तीफ़ा देने के बाद जब वरकिंग कमेटी की मेम्बरी की बात आई तो गांधी जी ने श्रीमती सुचिता कृपलानी से यह कहा कि—"मुझे कृपलानी की एक और काम के लिये ज़रूरत है." इस बात का हवाला देते हुए आचार्य कृपलानी ने यह साफ़ ज़ाहिर किया कि गांधी जी उन से यही काम कराना चाहते थे. इस पर उन्हें ख़ूब तालियाँ भी मिलीं.

चुनाव नीति के लिहाज़ से यह सब बातें जायज़ हो सकती हैं. पर हम बड़ी नम्रता के साथ कहना चाहते हैं कि गांधी जी काँगरेस गवरमेन्टों के शुरू के तजरबे के बाद

کیا ہے اُس سے نہ کیول یہی ممکن ہے کہ کسی بھی چیز پر سے کنٹرول کم نہ کیا جاوے' بلکہ یہ بھی صاف کہہ دیا گیا ہے کہ ممکن ہے اور زیادہ چیزوں پر اور اِس سے بڑھکر کنٹرول کی ضرورت پڑے۔

ہم آچاریہ کرپلانی کی کٹھنائیوں کو سمجھ سکتے ہیں۔ اُن کے دل میں اِس سمے ہر طرح کے اور ہر وچار کے لوگ بھرے ہوئے ہیں۔ اُن سب کو کسی طرح ساتھ لے کر چلنا ہے۔ کل ملا کر ہمیں اس کے کہنے میں ذرا بھی سنکوچ نہیں کہ نئی پارٹی کا یہ اعلان خاصا اچھا اور اُمید دلانے والا اعلان ہے۔ گاندھی جی کے سچے انویائی شری جے۔ سی۔ کماریپا پٹنہ میں موجود تھے اور اُن کے وچاروں کی چھاپ اس اعلان میں کئی جگہ دکھائی دیتی ہے۔ ہم دل سے چاہتے ہیں کہ آچاریہ کرپلانی اور اُنکی پارٹی سرکاری کانگریس سے کسی بھی سمے مل جل کر یا اپنے وجود کو الگ رکھکر جسطرح بھی ہو سکے اِس پروگرام کو بڑھانے اور ان وعدوں کو پورا کرنے میں سپھل ہو۔

پر چناو سے پہلے جنتا کو طرح طرح کے وعدے دلاسے دینا ایک پرانی چیز ہے۔ 15 اگست سن '47 سے پہلے سمے سمے پر کانگریس نے اپنے پروگرام اور اپنی پالیسی کے جو اعلان نکالے تھے وہ سب دیش کے سامنے موجود ہیں۔ کانگریس کے سیوکوں کے ذریعے 'کرشانہ پرتھوی پتی' یعنی 'جو جوتے بوئے وہی زمین کا مالک' کی آواز بار بار سارے دیش میں گونج چکی ہے پھر بھی ہمیں کسی آدمی یا دل پر پہلے سے اُس کے خلاف رائے نہیں قائم کر لینی چاہئے۔ ہم اِس نئی پارٹی کے کھڑے ہونے کو ایک قدرتی چیز مانتے ہیں اور باقی دیش واسیوں کے ساتھ اِس بات کے دیکھنے کا انتظار کرینگے کہ یہ نئی پارٹی اپنے وعدوں کو کہاں تک پورا کرتی ہے۔

کیول ایک بات اور کہکر ہم اِس نوٹ کو ختم کرینگے۔ ہم نے آچاریہ کرپلانی کی پٹنہ کی تقریروں کو دھیان سے پڑھا ہے۔ انہوں نے کم سے کم دو بار سننے والوں کو یہ یاد دلایا کہ آچاریہ کرپلانی کے کانگریس کی صدارت سے استعفا دینے کے بعد جب ورکنگ کمیٹی کی ممبری کی بات آئی تو گاندھی جی نے شریمتی سچیتا کرپلانی سے یہ کہا کہ — "مجھے کرپلانی کی ایک اور کام کے لئے ضرورت ہے۔" اس بات کا حوالہ دیتے ہوئے آچاریہ کرپلانی نے یہ صاف ظاہر کیا کہ گاندھی جی اُن سے یہی کام کرانا چاہتے تھے۔ اِس پر اُنہیں خوب تالیاں بھی ملیں۔

چناو نیتی کے لحاظ سے یہ سب باتیں جائز ہوسکتی ہیں۔ پر ہم بڑی نمرتا کے ساتھ کہنا چاہتے ہیں کہ گاندھی جی کانگریس گورمنٹوں کے شروع کے تجربے کے بعد

जनता से करता है. कृपलानी पारटी की तरफ़ से जो ऐलान पटना में किया गया है उसमें कई बहुत अच्छी अच्छी बातें हैं—

सरकारी नौकरों को सुधारा जायगा और हकूमत को बिलकुल नए ढंग पर ढाला जायगा, चोर बाजारी बन्द की जायगी, जमीन को जो बोए जोतेगा वही जमीन का मालिक होगा, गांव के उद्योग धन्दों को बढ़ावा दिया जायगा, ख़ासकर पहनने के कपड़ों और खाने की चीजों को बड़े बड़े कल कारख़ानों की जगह घरेलू धन्दों के जरिये ही पैदा कराया जायगा. देश में छोटी से छोटी मजदूरी और बड़ी से बड़ी आमदनी का औसत एक और बीस से जियादा न होगा यानी अगर कम से कम मजदूरी पाने वाले मजदूर को पचास रुपए मिलते हैं तो अधिक से अधिक तनख़ाह वाले हाकिम को हजार से जियादा न मिलेंगे, एक ऐसी समाज क़ायम की जायगी जिसमें कोई जात पात न हो और कोई मालिक मजदूर या अमीर ग़रीब न हो और कोई किसी से बेजा फ़ायदा न उठावे, इस बात पर ग़ौर किया जायगा कि सरकारी 'कन्ट्रोल' का दायरा कहाँ तक कम किया जा सकता है और जनता के कारबार ब्योपार धन्दों में सरकारी दख़ल कहाँ तक कम हो सकता है, हरिजनों और दबे हुओं को उभारा जायगा, पैदावार बढ़ाई जायगी, स्वदेशी को फिर से जगाया जायगा, विदेशों से ऐसे माल की आमद, जो देश में पैदा हो सकते हैं, कम की जायगी, खेती में नए और जियादा अच्छे तरीक़े काम में लाए जायेंगे. गांवों में फिर से जान डाली जायगी, हर किसान को कम से कम इतनी जमीन दी जायगी जिससे उसका और उसके बच्चों का अच्छी तरह गुजारा हो सके, कोआपरेटिव फ़ारमिंग यानी सरकारी या सझिया खेती को बढ़ावा दिया जायगा, बंजर जमीनों को काम में लाया जायगा, तालीम में सुधार किये जायँगे, जो शरनार्थी भाई पाकिस्तान वापस जाना चाहेंगे, पाकिस्तान सरकार से बात चीत करके और पाकिस्तान में उनके कारबार और सुख शान्ति का प्रबन्ध करके उन्हें वापस भेजा जायगा, अन्तर क़ौमी राजनीति में देश को बिलकुल तटस्थ यानी ग़ैर जानिबदार रक्खा जायगा, वग़ैरा वग़ैरा.

हमने यह सब चीजें नई पारटी के पटने के ऐलान से ली हैं. केवल उन्हें अपने शब्दों में और थोड़े से में कहने की कोशिश की है. कहीं कहीं ऐलान को समझने में हमारे जैसे पढ़ने वालों को कठिनाई हो सकती है. कहीं कहीं एक दूसरे के ख़िलाफ़ बातें भी दिखाई देती हैं. जियादा बहस में न जाकर हम केवल एक बात की तरफ़ ध्यान दिलाते हैं. इस समय जनता की सब से बड़ी मुसीबत 'कन्ट्रोल' के कारन है. जिन शब्दों में कन्ट्रोल का ऐलान में जिकर किया

جنتا سے کرتا ھے . کرپلانی پارٹی کی طرف سے جو اعلان
پٹنہ میں کیا گیا ھے اس میں کئی بہت اچھی اچھی
باتیں ھیں—

سرکاری نوکروں کو سدھارا جائیگا اور حکومت کو بالکل
نئے ڈھنگ پر ڈھالا جائیگا' چور بازاری بند کی جائیگی'
زمین کو جو بوئے جوتے گا وھی زمین کا مالک ھوگا' گاؤں
کے ادیوگ دھندوں کو بڑھاوا دیا جائیگا' خاص کر پہننے
کے کپڑوں اور کھانے کی چیزوں کو بڑے بڑے کل کارخانوں
کی جگہ گھریلو دھندوں کے ذریعے ھی پیدا کرایا جائیگا .
دیش میں چھوٹی سے چھوٹی مزدوری اور بڑی سے بڑی
آمدنی کا اوسط ایک اور بیس سے زیادہ نہ ھوگا یعنی اگر
کم سے کم مزدوری پانے والے مزدور کو پچاس روپے ملتے
ھیں تو ادھک سے ادھک تنخواہ والے حاکم کو ھزار سے
زیادہ نہ ملیں گے' ایک ایسی سماج قائم کی جائیگی
جس میں کوئی جات پات نہ ھو اور کوئی مالک مزدور
یا امیر غریب نہ ھو اور کوئی کسی سے بیجا فائدہ نہ
اٹھاوے' اس بات پر غور کیا جائیگا کہ سرکاری 'کنٹرول'
کا دائرہ کہاں تک کم کیا جاسکتا ھے اور جنتا کے کاربار
بیوپار دھندوں میں سرکاری دخل کہاں تک کم ھوسکتا
ھے' ھریجنوں اور دبے ھوؤں کو ابھارا جائیگا' پیداوار
بڑھائی جائیگی' سودیشی کو پھر سے جگایا جائیگا' ودیشوں
سے ایسے مال کی آمد' جو دیش میں پیدا ھو سکتے
ھیں' کم کی جائیگی' کھیتی میں نئے اور زیادہ اچھے
طریقے کام میں لائے جائینگے . گاؤں میں پھر سے جان
ڈالی جائیگی' ھر کسان کو کم سے کم اتنی زمین دی
جائیگی جس سے اسکا اور اسکے بچوں کا اچھی طرح
گزارہ ھوسکے' کوآپریٹو فارمنگ یعنی سہکاری یا سجھیا
کھیتی کو بڑھاوا دیا جائیگا 'بنجر زمینوں کو کام میں
لایا جائیگا' تعلیم میں سدھار کئے جائیں گے' جو شرنارتھی
بھائی پاکستان واپس جانا چاھیں گے' پاکستان سرکار
سے بات چیت کرکے اور پاکستان میں انکے کاربار اور
سکھ شانتی کا پربندھ کرکے انھیں واپس بھیجا جائیگا'
انتر قومی راج نیتی میں دیش کو بالکل تٹستھ یعنی
غیر جانب دار رکھا جائیگا' وغیرہ وغیرہ .

ھم نے یہ سب چیزیں نئی پارٹی کے پٹنے کے اعلان سے
لی ھیں . کیول انھیں اپنے شبدوں میں اور تھوڑے سے میں
کہنے کی کوشش کی ھے . کہیں کہیں اعلان کو سمجھنے میں
ھمارے جیسے پڑھنے والوں کو کٹھنائی ھو سکتی ھے . کہیں
کہیں ایک دوسرے کے خلاف باتیں بھی دکھائی دیتی ھیں .
زیادہ بحث میں نہ جاکر ھم کیول ایک بات کی طرف دھیان
دلاتے ھیں . اس سمے جنتا کی سب سے بڑی مصیبت 'کنٹرول'
کے کارن ھے . جن شبدوں میں کنٹرول کا اعلان میں ذکر کیا

[ज]ाने के बाद से इस विशाल भवन की दुनियादें एक दम [न]ीचे से खिसकने लगीं. नतीजा यह हुआ कि इस बार जो [द]रार पड़ी उसने सारे भवन ही को बीच से टुकड़े करके [ख]ंडहर के रूप में दुनिया के सामने रख दिया.

कांग्रेस सभापति का आखिरी चुनाव शायद अपने [ढ]ंग का पहला चुनाव है जिसमें खुद ग़रज़ पूंजी पतियों [क]े हवाई जहाज़ों से वोट लेने में मदद ली गई और पूरे [प]ूरे सूबों के वोट वहां की आपसी दल बन्दियों से जिस [त]रह भी हो फ़ायदा उठा कर और एक एक को बारी बारी [द]म दिलासा देकर हासिल किये गए. कांग्रेस की गिरावट [क]ी शायद यह सब से दर्दनाक मिसाल है.

कांग्रेस और हकूमत के गठबन्धन ने और भी ज़ह-[र]ीले नतीजे पैदा किये. धन और सत्ता के लोभ ने तो [स]ैकड़ों को गिराया ही. डिसिप्लिन यानी शिस्त के नाम [प]र फ़रमान जारी होने लगे कि कोई कांग्रेस वाला भारत [स]रकार या किसी सूबाई सरकार के किसी काम के ख़ि-[ल]ाफ़ किसी तरह की नुक्ताचीनी न करे. यहाँ तक कि [अ]गर ऐसे किसी इलाक़े के लोग जहाँ अभी तक शराब [क]ी दुकानें खुली हुई हैं शराब बन्दी का आन्दोलन शुरू करें तो किसी कांग्रेस वाले के उस आन्दोलन में हिस्सा [ल]ेने पर उसके ख़िलाफ़ शिस्ती कारवाई की धमकियां दी गईं. इन हालात में आचार्य कृपलानी और उनके साथियों का खुले कांग्रेस से अलग होकर किसान मज़दूर प्रजा पारटी खड़ा करना एक क़ुदरती और होनहार बात थी. मालूम होता है इस पारटी के बनते ही शिस्ती कारवाई की धमकी एक दम हवा हो गई. सरकारी कांग्रेस के अधि-कारियों को दिखाई दे गया कि अब अगर किसी की तरफ़ इस तरह की कारवाई का इशारा भी किया गया तो वह झट कूद कर दूसरी पारटी में पहुँच जायगा.

इन दोनों पारटियों का आगे चल कर क्या हशर होगा, बंगलौर में या उसके बाद इनके फिर से मेल की कोशिशें कामयाब होंगी या नहीं, और अगर न हुईं तो बड़े चुनाव में इनकी लागडाट के क्या नतीजे होंगे इन सवालों में इस समय पड़ना बेकार है. ज़ाहिर है, जो लोग कांग्रेस को ज़िन्दा रखने के अभी तक सपने देख रहे हैं और थोड़ी बहुत समझ रखते हैं वह इसकी पूरी कोशिश करेंगे कि जिस तरह भी हो यह दरार फिर से भर जाय. पर अभी इस समय आचार्य कृपलानी की पारटी कुछ ज़ोर पकड़ती दिखाई दे रही है. उसकी है भी उठती हुई उमर. सरकारी कांग्रेस का हर तरह ढलती का पहरा है.

राजकाज में जो भी नया दल सामने आता है वह अपने उसूलों के साथ खपते हुए—अगर कोई उसके ख़ास [उसूल] हों तो—ऊँचे से ऊँचे और अच्छे से अच्छे वादे

جانے کے بعد سے اِس وشال بھون کی بنیادیں ایک دم نیچے سے کھسکنے لگیں۔ نتیجہ یہ ہوا کہ اِس بار جو دراڑ پڑی اُسنے سارے بھون ہی کو بیچ سے ٹکڑے کرکے کھنڈہر کے روپ میں دنیا کے سامنے رکھدیا۔

کانگریس سبھاپتی کا آخری چناؤ شاید اپنے ڈھنگ کا پہلا چناؤ ہے جس میں خود غرض پونجی پتیوں کے ہوائی جہازوں سے ووٹ لینے میں مدد لی گئی اور پورے پورے صوبوں کے ووٹ وہاں کی آپسی دل بندیوں سے جس طرح بھی ہو فائدہ اُٹھاکر اور ایک ایک کو باری باری دم دلاسا دے کر حاصل کئے گئے۔ کانگریس کی گراوٹ کی شاید یہ سب سے دردناک مثال ہے۔

کانگریس اور حکومت کے گٹھ بندھن نے اور بھی زہریلے نتیجے پیدا کئے۔ دھن اور ستّا کے لوبھ نے تو سیکڑوں کو گرایا ہی۔ ڈسپلن یعنی شست کے نام پر فرمان جاری ہونے لگے کہ کوئی کانگریس والا بھارت سرکار یا کسی صوبائی سرکار کے کسی کام کے خلاف کسی طرح کی نکتہ چینی نہ کرے۔ یہاں تک کہ اگر ایسے کسی علاقے کے لوگ جہاں ابھی تک شراب کی دوکانیں کھلی ہوئی ہیں شراب بندی کا آندولن شروع کریں تو کسی کانگریس والے کے اُس آندولن میں حصہ لینے پر اُسکے خلاف شستی کاروائی کی دھمکیاں دی گئیں۔ اِن حالات میں آچاریہ کرپلانی اور اُنکے ساتھیوں کا کھلے کانگریس سے الگ ہوکر کسان مزدور پرجا پارٹی کھڑا کرنا ایک قدرتی اور ہونہار بات تھی۔ معلوم ہوتا ہے اِس پارٹی کے بنتے ہی شستی کاروائی کی دھمکی ایک دم ہوا ہو گئی۔ سرکاری کانگریس کے اَدھیکاریوں کو دکھائی دے گیا کہ اب اگر کسی کی طرف اِس طرح کی کاروائی کا اِشارہ بھی کیا گیا تو وہ جھٹ کود کر دوسری پارٹی میں پہنچ جائیگا۔

اِن دونوں پارٹیوں کا آگے چلکر کیا حشر ہوگا، بنگلور میں یا اُسکے بعد اِن کے پھر سے میل کی کوششیں کامیاب ہونگی یا نہیں، اور اگر نہ ہوئیں تو بڑے چناؤ میں اِنکی لاگ ڈانٹ کے کیا نتیجے ہونگے اِن سوالوں میں اِس سمے پڑنا بیکار ہے۔ ظاہر ہے، جو لوگ کانگریس کو زندہ رکھنے کے ابھی تک سپنے دیکھ رہے ہیں اور تھوڑی بہت سمجھ رکھتے ہیں وہ اِسکی پوری کوشش کرینگے کہ جس طرح بھی ہو یہ دراڑ پھر سے بھر جائے۔ پر ابھی اِس سمے آچاریہ کرپلانی کی پارٹی کچھ زور پکڑتی دکھائی دے رہی ہے۔ اُسکی ہے بھی اُٹھتی ہوئی عمر۔ سرکاری [کانگریس کا ہر طرح ڈھلتی] کا پہرا ہے۔

راج کاج میں جو بھی نیا دل سامنے آتا ہے وہ اپنے اصولوں کے ساتھ کھپتے ہوئے—اگر کوئی اُسکے خاص اصول ہوں تو—اونچے سے اونچے اور اچھے سے اچھے وعدے

अमरीका की सरकार ने ढाई करोड़ डालर बतौर क़र्ज़ के भी ईरान को देने कहा है. पर ईरान की सरकार तब तक इस बात पर भी सोचने के लिये तैयार नहीं जब तक अंगरेज़ कम्पनी से झगड़ा तय न हो जाय और ईरानी तेल का सारा कारबार ईरानियों के हाथों में न आ जाय.

एक बड़ी बात यह है कि अंगरेज़ कम्पनी और उसके आदमियों के तरह तरह की शरारतें करने पर भी और सारी ईरानी क़ौम के दिलों में अंगरेज़ों के ख़िलाफ़ ग़ुस्सा भरा होने पर भी मोहम्मद मुस्सादिक़ का इन्तज़ाम इतना सुन्दर और उनका असर इतना ज़बरदस्त है कि अब तक ईरान भर में अंगरेज़ों के जान माल को किसी तरह का नुक़सान नहीं पहुँचा.

एशिया की बेदारी

कोरिया हो या चीन, तिब्बत हो या इन्डो चीन, ईरान हो या मिस्र, एक क़ौम के दूसरी क़ौम की कमज़ोरी से फ़ायदा उठाने के दिन अब हमेशा के लिये लद चुके. अच्छा हो अगर इंगलैन्ड और अमरीका जैसे देशों की सरकारें दुनिया की बदली हुई हालत से सबक़ सीख कर अपने रास्ते को दुरुस्त कर लें और एशियाई क़ौमों को इन मुसीबतों और क़ुरबानियों से बचने का मौक़ा दें जिनसे किसी ग़ैर को फ़ायदा नहीं पहुँच सकता. ज़माने का बहाव रोका नहीं जा सकता. हम मोहम्मद मुस्सादिक़ और उनके देश को इस कठिन परिस्थिति का सच्चाई, ईमानदारी, इनसाफ़ और हिम्मत के साथ मुक़ाबला करने के लिये दिल से बधाई देते हैं.

30. 6. 51. —सुन्दरलाल

कांगरेस और दलबन्दी—

कांगरेस की मिसाल एक विशाल भवन से दी जा सकती है जिसने पिछले 65 बरस में लाखों खोजी आत्माओं को अपनी दीवारों के अन्दर पनाह दी और उन्हें धर्म का सच्चा रास्ता दिखाया. इस देश के लोगों पर कांगरेस का एहसान इतिहास के पन्नों से किसी के मिटाये नहीं मिटाया जा सकता.

इस सुन्दर भवन के अन्दर कई बार दरारें पड़ चुकी हैं. सन 1906 में नरम दल और गरम दल की दरार और सन '23 में कौंसिल पारटी और नो चेंज पारटी की दरार इसकी सबसे बड़ी मिसालें हैं. हर बार दरार पड़ने के बाद उसकी मरम्मत की कोशिश हुई और वह कोशिश काफ़ी कामयाब भी रही.

पर 15 अगस्त सन '47 के बाद से, यानी कांगरेस का असली मक़सद देश की राजकाजी आज़ादी, पूरा हो

امریکہ کی سرکار نے ڈھائی کروڑ ڈالر بطور قرض کے بھی ایران کو دینے کہا ہے . پر ایران کی سرکار تبتک اِس بات پر بھی سوچنے کے لئے تیار نہیں جبتک انگریز کمپنی سے جھگڑا طے نہ ہو جائے اور ایرانی تیل کا سارا کاربار ایرانیوں کے ہاتھوں میں نہ آجائے .

ایک بڑی بات یہ ہے کہ انگریز کمپنی اور اُسکے آدمیوں کے طرح طرح کی شرارتیں کرنے پر بھی اور ساری ایرانی قوم کے دلوں میں انگریزوں کے خلاف غصہ بھرا ہونے پر بھی محمد مصادق کا انتظام اِتنا سندر اور اُن کا اثر اتنا زبردست ہے کہ اب تک ایران بھر میں انگریزوں کے جان مال کو کسی طرح کا نقصان نہیں پہنچا .

ایشیا کی بیداری

کوریا ہو یا چین، تبت ہو یا انڈو چین، ایران ہو یا مصر، ایک قوم کے دوسری قوم کی کمزوری سے فائدہ اُٹھانے کے دن اب ہمیشہ کے لئے لد چکے . اچھا ہو اگر انگلینڈ اور امریکہ جیسے دیشوں کی سرکاریں دنیا کی بدلی ہوئی حالت سے سبق سیکھ کر اپنے راستے کو درست کرلیں اور ایشیائی قوموں کو اُن مصیبتوں اور قربانیوں سے بچنے کا موقعہ دیں جن سے کسی غیر کو فائدہ نہیں پہنچ سکتا . زمانے کا بہاو روکا نہیں جاسکتا . ہم محمد مصادق اور اُنکے دیش کو اِس کٹھن پرستھتی کا سچائی، ایمانداری، انصاف اور ہمت کے ساتھ مقابلہ کرنے کے لئے دل سے بدھائی دیتے ہیں .

30 . 6 . '51 —سندر لال

کانگریس اور دل بندی—

کانگریس کی مثال ایک وشال بھون سے دی جاسکتی ہے، جس نے پچھلے 65 برس میں لاکھوں کھوجی آتماؤں کو اپنی دیواروں کے اندر پناہ دی اور اُنہیں دھرم کا سچا راستہ دکھایا . اِس دیش کے لوگوں پر کانگریس کا احسان اِتہاس کے پنوں سے کسی کے مٹائے نہیں مٹایا جا سکتا .

اِس سندر بھون کے اندر کئی بار دراریں پڑ چکی ہیں . سن 1906 میں نرم اور گرم دل کی درار اور سن '23 میں کونسل پارٹی اور نو چینج پارٹی کی درار اِس کی سب سے بڑی مثالیں ہیں . ہر بار درار پڑنے کے بعد اُسکی مرمت کی کوشش ہوئی اور وہ کوشش کافی کامیاب بھی رہی .

پر 15 اگست سن '47 کے بعد سے، یعنی کانگریس کا اصلی مقصد، دیش کی راج کاجی آزادی، پورا ہو

ईरान और मुस्सादिक़ को नाकाम करने की जो कोशिशें हो रही हैं उनकी तफ़सील में जाना फ़जूल है. मुस्सादिक़ और उसका देश इस मामले में चट्टान की तरह अटल हैं. मुस्सादिक़ कह चुके हैं कि उन्हें अपने सारे तेल के कारबार को बन्द कर देना मंजूर है—वह उसे आग लगा देने के लिये भी तैयार हैं—लेकिन अंगरेज़ कम्पनी के पैर अब फिर से अपने देश में जमने न देंगे.

ईरानी सरकारी को अब तक अपने हिस्से के डेढ़ करोड़ पौंड सालाना अंगरेज़ कम्पनी से मिलते थे. अब अगर यह सारा धंधा ईरान सरकार के हाथों में आ गया तो इस काम से ईरान की आमदनी बारह करोड़ पौंड यानी क़रीब दो अरब रुपए सालाना होगी.

दिल्ली में किसी ने भारत के बड़े वज़ीर जवाहरलाल जी से सन 1933 के ईरान के समझौते और आजकल के इस सवाल पर राय पूछी. जवाहरलाल जी ने ईरानी सरकार के साथ हमदरदी ज़ाहिर करते हुए कहा कि सन '33 का समझौता इस तरह के बहुत से समझौतों की तरह एक ताक़तवर और एक कमज़ोर आदमी के बीच का ज़बरदस्ती का समझौता था जो दो करोड़ ईरानियों के हित के ख़िलाफ़ नहीं चल सकता. इसे सुनकर मोहम्मद मुस्सादिक़ ने भारत सरकार का शुक्रिया अदा किया. इस मामले में जवाहरलाल जी की आवाज़ सारे भारत की बल्कि सारे एशिया की आवाज़ है.

अंगरेज़ कम्पनी को सबसे बड़ा एतराज़ यही हो सकता था कि उसका ईरान के तेल में धन लगा हुआ है. लेकिन कम्पनी का कुल धन जो इस काम में अब तक लगा है, दो करोड़ पौंड यानी क़रीब 30 करोड़ रुपए के है. और पिछले सात बरस के अन्दर ही कम्पनी इससे कम से कम दुगना मुनाफ़े के तौर पर कमा चुकी है. इस पर भी मोहम्मद मुस्सादिक़ ने यह वादा किया है कि तेल के धंधे से जो कुछ आमदनी ईरान को होगी उसका पच्चीस फ़ी सदी हर साल इस बात के लिये अलग रक्खा जायगा कि उससे अंगरेज़ कम्पनी का जो भी हरजाना या नुक़सान इस सारे मामले में हुआ हो उसे पूरा कर दिया जाय.

इंगलैन्ड और अमरीका में लागडाट

इस मामले में एक बात और चमक उठी है. वह यह कि इंगलैन्ड और अमरीका भी ईरान के मामले में एक दिल नहीं हैं. दोनों में कुछ लाग-डांट है. अमरीका की कुछ कम्पनियों ने ईरानी सरकार से यह भी कहा है कि अगर अंगरेज़ कम्पनी की जगह उन्हें ठेका दे दिया जाय तो वह अंगरेज़ कम्पनी के 16 फ़ीसदी के बजाय 72 फ़ी सदी मुनाफ़ा ईरानी सरकार को देने को तैयार हैं. मोहम्मद मुस्सादिक़ को अब कोई इस तरह की चीज़ मंजूर नहीं.

ایران اور مصادق کو ناکام کرنے کی جو کوششیں ہو رہی ہیں اُن کی تفصیل میں جانا فضول ہے ۔ مصادق اور اسکا دیش اِس معاملے میں چٹان کی طرح اٹل ہیں ۔ مصادق کہہ چکے ہیں کہ انہیں اپنے سارے تیل کے کاروبار کو بند کردینا منظور ہے—وہ اُسے آگ لگا دینے کے لئے بھی تیار ہیں—لیکن انگریز کمپنی کے پیر اب پھر سے اپنے دیش میں جمنے نہ دینگے ۔

ایرانی سرکار کو ابتک اپنے حصے کے ڈیڑھ کروڑ پونڈ سالانہ انگریز کمپنی سے ملتے تھے ۔ اب اگر یہ سارا دھندا ایران سرکار کے ہاتھوں میں آگیا تو اِس کام سے ایران کی آمدنی بارہ کروڑ پونڈ یعنی قریب دو ارب روپے سالانہ ہوگی ۔

دلی میں کسی نے بھارت کے بڑے وزیر جواہر لال جی سے سن 1933 کے ایران کے سمجھوتے اور آج کل کے اِس سوال پر رائے پوچھی ۔ جواہر لال جی نے ایرانی سرکار کے ساتھ ہمدردی ظاہر کرتے ہوئے کہا کہ سن '33 کا سمجھوتہ اِس طرح کے بہت سے سمجھوتوں کی طرح ایک طاقتور اور ایک کمزور آدمی کے بیچ کا زبردستی کا سمجھوتہ تھا جو دو کروڑ ایرانیوں کے ہت کے خلاف نہیں چل سکتا ۔ اِسے سن کر محمد مصادق نے بھارت سرکار کا شکریہ ادا کیا ۔ اِس معاملے میں جواہر لال جی کی آواز سارے بھارت کی بلکہ سارے ایشیا کی آواز ہے ۔

انگریز کمپنی کو سب سے بڑا اعتراض یہی ہوسکتا تھا کہ اُس کا ایران کے تیل میں دھن لگا ہوا ہے ۔ لیکن کمپنی کا کل دھن جو اِس کام میں ابتک لگا ہے، دو کروڑ پونڈ یعنی قریب تیس کروڑ روپے کے ہے اور پچھلے سات برس کے اندر ہی کمپنی اِس سے کم سے کم دوگنا منافع کے طور پر کما چکی ہے ۔ اِس پر بھی محمد مصادق نے یہ وعدہ کیا ہے کہ تیل کے دھندے سے جو کچھ آمدنی ایران کو ہوگی اُسکا پچیس فیصدی ہر سال اِس بات کے لئے الگ رکھا جائیگا کہ اُس سے انگریز کمپنی کا جو بھی ہرجانہ یا نقصان اِس سارے معاملے میں ہوا ہو اُسے پورا کردیا جائے ۔

انگلینڈ اور امریکہ میں لاگ ڈانٹ

اِس معاملے میں ایک بات اور چمک اُٹھی ہے ۔ وہ یہ کہ انگلینڈ اور امریکہ بھی ایران کے معاملے میں ایک دل نہیں ہیں ۔ دونوں میں کچھ لاگ ڈانٹ ہے ۔ امریکہ کی کچھ کمپنیوں نے ایرانی سرکار سے یہ بھی کہا ہے کہ اگر انگریز کمپنی کی جگہ انہیں ٹھیکہ دے دیا جائے تو وہ انگریز کمپنی کے 16 فیصدی کے بجائے 72 فیصدی منافع ایرانی سرکار کو دینے کو تیار ہیں ۔ محمد مصادق کو اب کوئی اِس طرح کی چیز منظور نہیں ۔

पश्चिम एशिया के देशों में इंगलैण्ड और अमरीका की एक बहुत बड़ी पकड़ इन देशों के तेल के कुएँ हैं. यह कुएँ ईरान, इराक़, शाम (सीरिया), अरब और मिस्र में इधर से उधर तक फैले हुए हैं. सब जगह कम या ज्यादा इसी तरह के ठेके अंगरेज़ों या अमरीका वालों को मिले हुए हैं. इसलिये ईरान का तेल का सवाल केवल ईरान का सवाल नहीं बल्कि सारी पच्छिम एशिया की आज़ादी या बरबादी का सवाल है.

ईरान का अपने तेल पर क़ब्ज़ा

ईरान की मजलिस ने 20 मार्च सन '51 को एक राय होकर पास कर दिया कि ईरान की ज़मीन से तेल निकालने, उसे साफ़ करने और दुनिया में बेचने का काम ईरानी सरकार अपने हाथ में ले ले और इसे जहाँ तक हो सके ईरानियों के हाथों ही कराया जाय. अंगरेज़ कम्पनी को नोटिस दे दिया गया कि सन '33 का ठेका रद्द समझा जाय. अंगरेज़ कम्पनी ने यू. एन. ओ. की अदालत से अपील करना चाहा. अपील दायर भी हो गया. मोहम्मद मुस्सादिक़ ने ईरानी सरकार और एक ब्योपारी कम्पनी के मामले में यू. एन. ओ. की अदालत के अधिकार को मानने से इनकार कर दिया. फिर एक बार हमेशा की तरह साज़िशों और धमकियों का दौर शुरू हुआ. अंगरेज़ी जंगी जहाज़ ईरान की खाड़ी में दिखाई देने लगे. लेकिन सन '21 का रूस और ईरान का समझौता मौजूद है, जिससे अंगरेज़ सरकार की बढ़ने की हिम्मत न हो सकी. मोहम्मद मुस्सादिक़ को गिराने की कोशिशें की गईं. पानी की तरह रुपया ख़र्च करके मजलिस के मेम्बरों, ईरान के वज़ीरों और सरकारी नौकरों को तोड़ने फोड़ने की कोशिशें हुईं. पेशीन-गोई की गई कि मोहम्मद मुस्सादिक़ को मजलिस में बहुमत नहीं मिल सकता और उसकी सरकार ख़तम होने वाली है. मजलिस के सामने मोहम्मद मुस्सादिक़ पर विश्वास की तजवीज़ आई और एक राय से पास हो गई. यह भी पेशीन गोई की गई कि तेल की आमदनी रुक जाने से ईरान की सरकार का दिवाला निकल जायगा. लेकिन ईरान की सारी जनता, अमीर और ग़रीब ने अपनी ज़िन्दगी भर की कमाई, नक़दी और ज़ेवर मुस्सादिक़ के हवाले कर दिये, यहाँ तक कि मुस्सादिक़ को करोड़ों की रक़में लौटानी पड़ गईं, और ऐलान करना पड़ा कि अब कोई रुपया वग़ैरा न भेजे, सरकार को कोई ज़रूरत नहीं है. इस बीच रूस ने भी 308 मन सोना, जो उसे पिछली जंग के एक समझौते के अनुसार ईरान को देना था, ईरान भेज दिया है. मुस्सादिक़ आज सारी ईरानी क़ौम का देवता बना हुआ है और मालूम होता है कि देश के साथ दग़ा के बीज अब इस हवा में ईरान के अन्दर पनपने नहीं पा रहे हैं.

پچھم ایشیا کے دیشوں میں انگلینڈ اور امریکہ کی
بہت بڑی پکڑ ان دیشوں کے تیل کے کنوئیں ہیں۔
کنوئیں ایران، عراق، شام (سیریا)، عرب اور مصر میں
ادھر سے ادھر تک پھیلے ہوئے ہیں۔ سب جگہ کم یا زیادہ
اسی طرح کے ٹھیکے انگریزوں یا امریکہ والوں کو ملے ہوئے
ہیں۔ اس لئے ایران کا تیل کا سوال کیول ایران کا سوال
نہیں بلکہ سارے پچھم ایشیا کی آزادی یا بربادی کا
سوال ہے۔

ایران کا اپنے تیل پر قبضہ

ایران کی مجلس نے 20 مارچ سن '51 کو ایک رائے
ہوکر پاس کردیا کہ ایران کی زمین سے تیل نکالنے، اسے
صاف کرنے اور دنیا میں بیچنے کا کام ایرانی سرکار اپنے
ہاتھ میں لے لے اور اسے جہاں تک ہو سکے ایرانیوں کے
ہاتھوں ہی کرایا جائے۔ انگریز کمپنی کو نوٹس دے دیا
گیا کہ سن '33 کا ٹھیکہ رد سمجھا جائے۔ انگریز کمپنی
نے یو۔ این۔ او۔ کی عدالت سے اپیل کرنا چاہا۔ اپیل
دائر بھی ہو گیا۔ محمد مصادق نے ایرانی سرکار اور
ایک بیوپاری کمپنی کے معاملے میں یو۔ این۔ او۔ کی
عدالت کے ادھیکار کو ماننے سے انکار کردیا۔ پھر ایک
بار ہمیشہ کی طرح سازشوں اور دھمکیوں کا دور شروع
ہوا۔ انگریزی جنگی جہاز ایران کی کھاڑی میں دکھائی
دینے لگے۔ لیکن سن '21 کا روس اور ایران کا
سمجھوتہ موجود ہے، جس سے انگریز سرکار کی بڑھنے کی
ہمت نہ ہو سکی۔ محمد مصادق کو گرانے کی کوششیں
کی گئیں۔ پانی کی طرح روپیہ خرچ کرکے مجلس کے
ممبروں، ایران کے وزیروں اور سرکاری نوکروں کو توڑنے
پھوڑنے کی کوششیں ہوئیں۔ پیشینگوئی کی گئی کہ
محمد مصادق کو مجلس میں بہومت نہیں مل سکتا
اور اسکی سرکار ختم ہونے والی ہے۔ مجلس کے سامنے
محمد مصادق پر وشواس کی تجویز آئی اور ایک رائے
سے پاس ہوگئی۔ یہ بھی پیشین گوئی کی گئی کہ تیل
کی آمدنی رک جانے سے ایران کی سرکار کا دیوالہ نکل
جائیگا۔ لیکن ایران کی ساری جنتا، امیر اور غریب نے
اپنی زندگی بھر کی کمائی، نقدی اور زیور مصادق کے
حوالے کردیئے، یہاں تک کہ مصادق کو کروڑوں کی رقمیں
لوٹانی پڑگئیں اور اعلان کرنا پڑا کہ کوئی روپیہ وغیرہ نہ
بھیجے، سرکار کو کوئی ضرورت نہیں ہے۔ اس بیچ
روس نے بھی 308 من سونا، جو اسے پچھلی جنگ کے
ایک سمجھوتے کے انوسار ایران کو دینا تھا، ایران بھیج
دیا ہے۔ مصادق آج ساری ایرانی قوم کا دیوتا بنا ہوا ہے اور
معلوم ہوتا ہے کہ دیش کے ساتھ دغا کے بیج اب اس
ہوا میں ایران کے اندر پنپنے نہیں پا رہے ہیں۔

कम्पनी अपने मुनाफ़े का 16 फ़ी सदी ईरानी सरकार को देती थी जब कि रूसी कम्पनी अपने मुनाफ़े का 49 फ़ी सदी ईरानी सरकार को देने को तैयार हो गई. उस समय भी ईरान के बड़े वज़ीर ने उसे मंज़ूर कर लिया लेकिन बग़ैर मजलिस के पास किये ठेका मंज़ूर न समझा जा सकता था. ईरान में उस समय तक यह ख़याल बहुत ज़ोर पकड़ चुका था कि ईरान का तेल ईरान की मिलकियत है. ईरान उसे ख़ुद निकाल कर और साफ़ करके पूरा फ़ायदा क्यों न उठाए. विदेशी माहिर ज़रूरत के मुताबिक़ नौकर रक्खे जा सकते हैं—जिस देश से भी आसानी से मिल सकें. यह एक ध्यान देने की बात है कि यही मोहम्मद मुस्ताफ़िक़ जो इस समय अंगरेज़ कम्पनी के ठेके के ख़िलाफ़ डटा हुआ है, उस समय रूसी कम्पनी को ठेका देने के भी ज़ोरों से ख़िलाफ़ था. मजलिस ने रूसी कम्पनी की दरख़ास्त नामंज़ूर करदी. उसी समय से यह बात पक्की होगई कि ईरान जितनी जल्दी हो सकेगा अंगरेज़ कम्पनी के ठेके को भी ख़तम करने की कोशिश करेगा.

ऐंग्लो अमरीकी साज़िशें

सन 1946 के बाद से दुनिया और ख़ासकर एशियाई मुल्कों की राजकाजी और माली हालत कहीं ज़्यादा पेचीदा होती जा रही है. सन '50 और '51 के ईरान के हालात पाठकों के सामने ताज़ा हैं. जहाँ से और जिधर से भी हो सके इंगलैन्ड और अमरीका रूस के ख़िलाफ़ आख़िरी जंग लड़ने की तैयारी कर रहे हैं. हाल में अमरीका की सरकार ने आधी दुनिया के ऊपर और सोवियत रूस के चारों तरफ़ अपने फ़ौजी, समन्दरी और हवाई अड्डे बनाने के लिये अपनी काँग्रेस से 656 करोड़ डालर यानी क़रीब बीस अरब रुपए की माँग की है. अड्डों का यह सिलसिला दुनिया के 48 ख़ास ख़ास देशों में से 44 देशों में फैला हुआ होगा जिनमें जापान, फ़िलिपाइन्स वग़ैरा सब शामिल हैं. बहुत से देशों के नाम अभी गुप्त रक्खे गए हैं. यह सिलसिला दो साल में बनकर तैयार होगा. 35 लाख आदमियों की इसमें ज़रूरत होगी. अमरीकी सरकार ने साफ़ कहा है कि यह अड्डे ऐसे मुक़ामों पर होंगे जहाँ से ज़रूरत पड़ने पर रूस पर आसानी से बम बरसाए जा सकें. ज़ाहिर है बीच एशिया और पच्छिम एशिया के सब मुल्क इस जाल का शिकार हैं.

सन '50 में इंगलैन्ड और अमरीका ने मिलकर ईरानी सरकार से दरख़ास्त की कि इन दोनों देशों को ईरान में जुग़राफ़ियाई सर्वे (ज्योग्राफ़िकल एन्ड टोपोग्राफ़िकल सर्वे) करने की इजाज़त दी जाय. रूस ने ईरान को इस तजवीज़ के ख़िलाफ़ आगाह किया. ईरान ने इजाज़त देने से इनकार कर दिया.

کمپنی اپنے منافع کا 16 فی صدی ایرانی سرکار کو دیتی تھی جبکہ روسی کمپنی اپنے منافع کا 49 فی صدی ایرانی سرکار کو دینے کو تیار ہوگئی. اس سمے بھی ایران کے بڑے وزیر نے اسے منظور کر لیا لیکن بغیر مجلس کے پاس کئے ٹھیکہ منظور نہ سمجھا جا سکتا تھا . ایران میں اس سمے تک یہ خیال بہت زور پکڑ چکا تھا کہ ایران کا تیل ایران کی ملکیت ہے . ایران اسے خود نکال کر اور صاف کرکے پورا فائدہ کیوں نہ اٹھائے . ودیشی ماہر ضرورت کے مطابق نوکر رکھے جا سکتے ہیں — جس دیش سے بھی آسانی سے مل سکیں . یہ ایک دھیان دینے کی بات ہے کہ یہی محمد مصادق جو اس سمے انگریز کمپنی کے ٹھیکہ کے خلاف ڈٹا ہوا ہے، اس سمے روسی کمپنی کو ٹھیکہ دینے کے بھی زوروں سے خلاف تھا . مجلس نے روسی کمپنی کی درخواست نا منظور کر دی . اسی سمے سے یہ بات پکی ہوگئی کہ ایران جتنی جلدی ہوسکیگا انگریز کمپنی کے ٹھیکے کو بھی ختم کرنے کی کوشش کریگا .

اینگلو امریکی سازشیں

سن '46 کے بعد سے دنیا اور خاص کر ایشیائی ملکوں کی راج کاجی اور مالی حالت کہیں زیادہ پیچیدہ ہوتی جا رہی ہے . سن '50 اور '51 کے ایران کے حالات پاٹھکوں کے سامنے تازہ ہیں . جہاں سے اور جدھر سے بھی ہوسکے انگلینڈ اور امریکہ روس کے خلاف آخری جنگ لڑنے کی تیاری کر رہے ہیں . حال میں امریکہ کی سرکار نے آدھی دنیا کے اوپر اور سوویت روس کے چاروں طرف اپنے فوجی، سمندری اور ہوائی اڈے بنانے کے لئے اپنی کانگریس سے 656 کروڑ ڈالر یعنی قریب بیس ارب روپے کی مانگ کی ہے . اڈوں کا یہ سلسلہ دنیا کے 48 خاص خاص دیشوں میں سے 44 دیشوں میں پھیلا ہوا ہوگا جن میں جاپان، فلپائنس وغیرہ سب شامل ہیں . بہت سے دیشوں کے نام ابھی گپت رکھے گئے ہیں . یہ سلسلہ دو سال میں بنکر تیار ہوگا . 35 لاکھ آدمیوں کی اس میں ضرورت ہوگی . امریکی سرکار نے صاف کہا ہے کہ یہ اڈے ایسے مقاموں پر ہونگے جہاں سے ضرورت پڑنے پر روس پر آسانی سے بم برسائے جاسکیں . ظاہر ہے بیچ ایشیا اور پچھم ایشیا کے سب ملک اس جال کا شکار ہیں .

سن '50 میں انگلینڈ اور امریکہ نے ملکر ایرانی سرکار سے درخواست کی کہ ان دونوں دیشوں کو ایران میں جغرافیائی سروے (جیوگرافیکل اینڈ ٹوپو گرافیکل سروے) کرنے کی اجازت دی جائے . روس نے ایران کو اس تجویز کے خلاف آگاہ کیا . ایران نے اجازت دینے سے انکار کر دیا .

लिये रज़ा शाह पर हद दरजे का दबाव डाला गया. उस समय भी इंगलैन्ड के जंगी जहाज़ ईरान की खाड़ी में पहुँच गए थे. हालत नाज़ुक हो चली थी. आखिर रज़ा शाह ने अपनी मरज़ी के खिलाफ़ इस शर्त को मान लिया.

मई सन '33 में ईरान की सरकार और ऐंगलो ईरानियन आइल कम्पनी के बीच एक नया समझौता होगया जिसमें ईरान के दक्खिन पच्छिमी किनारे की एक लाख वर्ग मील ज़मीन में, जो कुल ईरान का 62 वां हिस्सा है, अंगरेज़ कम्पनी को साठ बरस के लिये तेल निकालने, उसे साफ़ करने और बेचने का ठेका मिल गया.

रज़ा शाह के साथ अंगरेज़ों के झगड़े और दोनों में अनबन बढ़ती चली गई.

दूसरी बड़ी जंग

सन '39 में दूसरी बड़ी जंग शुरू होगई. कुछ दिनों बाद जरमनी ने रूस पर हमला कर दिया. रूस और इंगलैन्ड दोनों के लिये अब जरमनी को बढ़ने से रोकने की कोशिश करना ज़रूरी होगया. इसके अलावा रूसी फ़ौज को रसद और सामान पहुँचाने का रास्ता भी ईरान से होकर ही था. फिर वही सन '14 वाली हालत पैदा होगई. अगस्त सन '41 में रूसी फ़ौज ने उत्तर ईरान पर और अंगरेज़ी फ़ौज ने दक्खिन ईरान पर एक ही दिन क़ब्ज़ा कर लिया. रज़ा शाह ख़ासकर अंगरेज़ों के इस क़ब्ज़े के ख़िलाफ़ था. वह ईरान की तरफ़ से जरमनी के ख़िलाफ़ जंग का ऐलान करना भी नहीं चाहता था. अंगरेज़ों की साज़िशें ईरान में रज़ा शाह के ख़िलाफ़ पहले ही से चल रही थीं. रज़ा शाह के समाज सुधारों से मौक़ा पाकर अंगरेज़ों ने कट्टर मौलवियों और ईरान के कुछ बड़े बड़े ज़मींदारों को रज़ा शाह के ख़िलाफ़ तैयार किया. सन '41 ही में रज़ा शाह गद्दी से उतार दिया गया और उसका बाईस साल का लड़का ईरान के तख़्त पर बैठा दिया गया. ईरान ने जरमनी के ख़िलाफ़ जंग का ऐलान कर दिया. कहा जाता है कि रज़ा शाह के ख़िलाफ़ इस साज़िश में रूस का कोई हाथ न था. लेकिन अमरीका का पूरा पूरा हिस्सा था.

दिसम्बर सन '43 में अंगरेज़, रूस और अमरीका तीनों ने एलान कर दिया कि जंग ख़तम होने के छै महीने के अन्दर सब विदेशी फ़ौजें ईरान से हटा ली जायंगी. दो सितम्बर सन '45 को जंग ख़तम हुई. सन '46 में अंगरेज़ी, अमरीकी और रूसी फ़ौजें ईरान से हटा ली गईं.

उसी साल उत्तर ईरान से तेल निकालने के लिये रूस ने अपनी एक कम्पनी बनाई और ईरानी सरकार से उसी तरह तेल निकालने का ठेका लेना चाहा जिस तरह अंगरेज़ कम्पनी को मिला हुआ था. फ़रक़ केवल यह था कि अंगरेज़

لئے رضا شاہ پر حد درجے کا دباؤ ڈالا گیا ۔ اس سمے بھی انگلینڈ کے جنگی جہاز ایران کی کھاڑی میں پہنچ گئے تھے ۔ حالت نازک ہو چلی تھی ۔ آخر رضا شاہ نے اپنی مرضی کے خلاف اس شرط کو مان لیا ۔

مئی سن '33 میں ایران کی سرکار اور اینگلو ایرانین آئل کمپنی کے بیچ ایک نیا سمجھوتہ ہوگیا جس میں ایران کے دکھن پچھمی کنارے کی ایک لاکھ ورگ میل زمین میں' جو کل ایران کا 62 واں حصہ ہے' انگریز کمپنی کو ساٹھ برس کے لئے تیل نکالنے' اسے صاف کرنے اور بیچنے کا ٹھیکہ مل گیا ۔

رضا شاہ کے ساتھ انگریزوں کے جھگڑے اور دونوں میں آن بن بڑھتی چلی گئی ۔

دوسری بڑی جنگ

سن '39 میں دوسری بڑی جنگ شروع ہوگئی ۔ کچھ دنوں بعد جرمنی نے روس پر حملہ کر دیا ۔ روس اور انگلینڈ دونوں کے لئے اب جرمنی کو بڑھنے سے روکنے کی کوشش کرنا ضروری ہوگیا ۔ اس کے علاوہ روسی فوج کو رسد اور سامان پہونچانے کا راستہ بھی ایران سے ہوکر ہی تھا ۔ پھر وہی سن '14 والی حالت پیدا ہوگئی ۔ اگست سن '41 میں روسی فوج نے اتر ایران پر اور انگریزی فوج نے دکھن ایران پر ایک ہی دن قبضہ کر لیا ۔ رضا شاہ خاصکر انگریزوں کے اس قبضے کے خلاف تھا ۔ وہ ایران کی طرف سے جرمنی کے خلاف جنگ کا اعلان کرنا بھی نہیں چاہتا تھا ۔ انگریزوں کی سازشیں ایران میں رضا شاہ کے خلاف پہلے ہی سے چل رہی تھیں ۔ رضا شاہ کے سماج سدھاروں سے موقع پاکر انگریزوں نے کٹر مولویوں اور ایران کے کچھ بڑے بڑے زمینداروں کو رضا شاہ کے خلاف تیار کیا ۔ سن '41 ہی میں رضا شاہ گدی سے اتار دیا گیا اور اس کا بائیس سال کا لڑکا ایران کے تخت پر بیٹھا دیا گیا ۔ ایران نے جرمنی کے خلاف جنگ کا اعلان کر دیا ۔ کہا جاتا ہے کہ رضا شاہ کے خلاف اس سازش میں روس کا کوئی ہاتھ نہ تھا ۔ لیکن امریکہ کا پورا پورا حصہ تھا ۔

دسمبر سن '43 میں انگریز' روس اور امریکہ تینوں نے اعلان کر دیا کہ جنگ ختم ہونے کے چھ مہینے کے اندر سب ودیشی فوجیں ایران سے ہٹا لی جائینگی ۔ دو ستمبر سن '45 کو جنگ ختم ہوئی ۔ سن '46 میں انگریزی' امریکی اور روسی فوجیں ایران سے ہٹا لی گئیں ۔

اسی سال اتر ایران سے تیل نکالنے کے لئے روس نے اپنی ایک کمپنی بنائی اور ایرانی سرکار سے اسی طرح تیل نکالنے کا ٹھیکہ لینا چاہا جس طرح انگریز کمپنی کو ملا ہوا تھا ۔ فرق کیول یہ تھا کہ انگریز

हो गया था, एक एक कर वह सब रिआयतें अंगरेज़ों से वापस ले लीं जो ईरान की कमज़ोरी के ज़माने में उन्हें मिल चुकी थीं. इम्पीरियल बैंक आफ परशिया तोड़ डाला गया. ईरान की खाड़ी में सब अंगरेज़ी रोशनी घरों पर ईरानी सरकार का क़ब्ज़ा होगया. इन्डो योरोपियन टेलीग्राफ कम्पनी का सारा कारबार ईरानी सरकार ने अपने हाथों में ले लिया. इंगलैन्ड को अपने कोयला भरने के स्टेशन हटाने पड़े वग़ैरा.

ईरान और अंगरेज़ों का सम्बन्ध अब सिर्फ़ एक चीज़ के बारे में रह गया और वह था तेल निकालने का ठेका. यह ठेका ईरानी सरकार की तरफ़ से एक अंगरेज़ी ब्योपारी कम्पनी 'एंग्लो ईरानियन आइल कम्पनी' को मिला हुआ था और तय यह था कि अंगरेज़ कम्पनी तेल के इस ब्योपार से जो कुछ मुनाफ़ा कमाएगी उसका सोलह फ़ी सदी ईरानी सरकार को देगी.

*जिस तरह इस वक़्त 'यू. एन. ओ.' है उसी तरह उस वक़्त 'लीग आफ़ नेशन्स' बनी हुई थी. यू. एन. ओ. कहने को सब क़ौमों की पंचायत है पर असल में दो तीन सलतनत के प्यासे मुल्कों के हाथ की कठपुतली है, ठीक यही हालत उस वक़्त लीग आफ़ नेशन्स की थी. जिस तरह अब सन 1951 में एंग्लो ईरानियन आइल कम्पनी ने मोहम्मद मुस्सादिक़ के हुकुम के ख़िलाफ़ यू. एन. ओ. की क़ायम की हुई हेग की अन्तरक़ौमी अदालत से अपील की है, उसी तरह उस वक़्त इसी कम्पनी ने रज़ा शाह के हुकुम के ख़िलाफ़ लीग आफ़ नेशन्स से अपील करना चाहा था. ठीक जिस तरह मोहम्मद मुस्सादिक़ ने इस समय ईरानी सरकार और एक ब्योपारी कम्पनी के बीच के झगड़े में अंतरक़ौमी अदालत के अधिकार को मानने से इनकार कर दिया उसी तरह उस समय रज़ा शाह ने लीग आफ़ नेशन्स के अधिकार को मानने से इनकार कर दिया.

सन 1933 का समझौता

बातचीत हुई. कम्पनी ने बहुत सी नई शर्तें रज़ा शाह की मान लीं. सिर्फ़ एक बात पर मामला कुछ अटका. नई शर्तों के बदले में कम्पनी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि कम्पनी का ठेका नए सिरे से साठ बरस के लिये कर दिया जाय. यानी जो ठेका सन 1962 में ख़तम होने वाला था वह सन 1993 में ख़तम हो. इस शर्त को मंज़ूर कराने के

*नवम्बर सन 1932 में रज़ा शाह ने यह देख कर कि अंगरेज़ कम्पनी ईरानी सरकार को उसके हिस्से की मुनासिब रक़म अदा नहीं कर रही है कम्पनी पर कुछ नई शर्तें लगाना चाहा और हुकुम दिया कि अगर नई शर्तें न मानी गईं तो कम्पनी का ठेका रद्द समझा जायगा.

ہوگیا تھا، ایک ایک کر وہ سب رعائتیں انگریزوں سے واپس لے لیں جو ایران کی کمزوری کے زمانے میں انہیں مل چکی تھیں ۔ امپیریل بینک آف پرشیا توڑ ڈالا گیا ۔ ایران کی کھاڑی میں سب انگریزی روشنی گھروں پر ایرانی سرکار کا قبضہ ہوگیا ۔ انڈو یورپین ٹیلیگراف کمپنی کا سارا کاربار ایرانی سرکار نے اپنے ہاتھوں میں لے لیا ۔ انگلینڈ کو اپنے کوئلہ بھرنے کے اسٹیشن ہٹانے پڑے وغیرہ ۔

ایران اور انگریزوں کا سمبندھ اب صرف ایک چیز کے بارے میں رہ گیا اور وہ تھا تیل نکالنے کا ٹھیکہ ۔ یہ ٹھیکہ ایرانی سرکار کی طرف سے ایک انگریزی بیوپاری کمپنی 'اینگلو ایرانین آئل کمپنی' کو ملا ہوا تھا اور طے یہ تھا کہ انگریز کمپنی تیل کے اس بیوپار سے جو کچھ منافع کمائیگی اسکا سولہ فیصدی ایرانی سرکار کو دیگی ۔

* جس طرح اس وقت 'یو ۔ این ۔ او' ہے اسی طرح اسوقت 'لیگ آف نیشنس' بنی ہوئی تھی ۔ یو ۔ این ۔ او کہنے کو سب قوموں کی پنچائت ہے پر اصل میں دو تین سلطنت کے پیاسے ملکوں کے ہاتھ کی کٹھ پتلی ہے' ٹھیک یہی حالت اس وقت لیگ آف نیشنس کی تھی ۔ جس طرح اب سن 1951 میں اینگلو ایرانین آئل کمپنی نے محمد مصادق کے حکم کے خلاف یو ۔ این ۔ او ۔ کی قائم کی ہوئی ہیگ کی انتر قومی عدالت سے اپیل کی ہے' اسی طرح اس وقت اسی کمپنی نے رضا شاہ کے حکم کے خلاف لیگ آف نیشنس سے اپیل کرنا چاہا تھا ۔ ٹھیک جس طرح محمد مصادق نے اس سمے ایرانی سرکار اور ایک بیوپاری کمپنی کے بیچ کے جھگڑے میں انتر قومی عدالت کے ادھیکار کو ماننے سے انکار کردیا اسیطرح اس سمے رضا شاہ نے لیگ آف نیشنس کے ادھیکار کو ماننے سے انکار کردیا ۔

سن 1933 کا سمجھوتہ

بات چیت ہوئی ۔ کمپنی نے بہت سی نئی شرطیں رضا شاہ کی مان لیں ۔ صرف ایک بات پر معاملہ کچھ اٹکا ۔ نئی شرطوں کے بدلے میں کمپنی نے اس بات پر زور دیا کہ کمپنی کا ٹھیکہ نئے سرے سے ساٹھ برس کے لئے کر دیا جائے ۔ یعنی جو ٹھیکہ سن 1962 میں ختم ہونے والا تھا وہ سن 1993 میں ختم ہو ۔ اس شرط کو منظور کرانے کے

* نومبر سن 1932 میں رضا شاہ نے یہ دیکھکر کہ انگریز کمپنی ایرانی سرکار کو اسکے حصے کی مناسب رقم ادا نہیں کررہی ہے کمپنی پر کچھ نئی شرطیں لگانا چاہا اور حکم دیا کہ اگر نئی شرطیں نہ مانی گئیں تو کمپنی کا ٹھیکہ رد سمجھا جائیگا ۔

ईरान के बड़े वज़ीर ने लार्ड कर्ज़न की नई तजवीज़ मान लिया. पर इस बीच ईरान में मजलिस यानी वहाँ पार्लिमेन्ट क़ायम हो चुकी थी. जब तक मजलिस नई तजवीज़ को मंज़ूर न कर ले तब तक उसे मंज़ूर नहीं समझा जा सकता था.

यह नई तजवीज़ ठीक उसी तरह की थी जो अंगरेज़ उन्नीसवीं सदी में मिस्र के ऊपर लाद चुके थे. अगर मजलिस इस समझौते को मान लेती तो इसका मतलब एक अरसे के लिये ईरान की आज़ादी का ख़ातमा था.

ईरान और बोलशेविक रूस

बोलशेविक रूस ने एक और क़दम बढ़ाया. फ़रवरी सन 1921 में नई रूसी सरकार ने अपनी तरफ़ से ईरान के अन्दर वह सब रिआयतें और ख़ास अधिकार छोड़ देने का ऐलान कर दिया जो ज़ार की सरकार ने ईरान में ले रक्खे थे. इसी समय रूस और ईरान में यह सुलह-नामा होगया कि अगर अंगरेज़ अपनी जंग के वक़्त की लाई हुई फ़ौज को ईरान की ज़मीन से हटाने में देर करेंगे, या आइन्दा किसी समय कोई विदेशी ताक़त अपनी फ़ौज ईरान के किसी हिस्से में उतारेगी तो रूस फ़ौरन अपनी फ़ौज ईरान में भेज कर उस दूसरी ताक़त की फ़ौज को बाहर निकालने में ईरानी सरकार को मदद देगा.

ईरान और रूस के बीच तिजारत और दोस्ती बढ़ती चली गई. एक बड़े दरजे तक रूस की उस समय की कार्रवाइयों ने ही ईरानियों को हिम्मत दिलाई और उनके देश को इंगलैन्ड के जाल में फँसने से बचाया.

ایران کے بڑے وزیر نے لارڈکرزن کی نئی تجویز کو مان لیا ۔ پر اِس بیچ ایران میں مجلس یعنی وہاں کی پارلیمنٹ قائم ہوچکی تھی ۔ جبتک مجلس نئی تجویز کو منظور نہ کرلے تب تک اُسے منظور نہیں سمجھا جاسکتا تھا ۔

یہ نئی تجویز ٹھیک اُسی طرح کی تھی جو انگریز انیسویں صدی میں مصر کے اوپر لاد چکے تھے ۔ اگر مجلس اِس سمجھوتے کو مان لیتی تو اِس کا مطلب ایک عرصے کے لئے ایران کی آزادی کا خاتمہ تھا ۔

ایران اور بولشیوک روس

بولشیوک روس نے ایک اور قدم بڑھایا ۔ فروری سن 1921 میں نئی روسی سرکار نے اپنی طرف سے ایران کے اندر وہ سب رعائتیں اور خاص ادھیکار چھوڑ دینے کا اعلان کردیا جو زار کی سرکار نے ایران میں لے رکھے تھے ۔ اِسی سمے روس اور ایران میں یہ صلحنامہ ہوگیا کہ اگر انگریز اپنی جنگ کے وقت کی آئی ہوئی فوج کو ایران کی زمین سے ہٹانے میں دیر کریں گے' یا آئندہ کسی سمے کوئی ودیشی طاقت اپنی فوج ایران کے کسی حصے میں اُتارے گی تو روس فوراً اپنی فوج ایران میں بھیج کر اُس دوسری طاقت کی فوج کو باہر نکالنے میں ایرانی سرکار کو مدد دے گا ۔

ایران اور روس کے بیچ تجارت اور دوستی بڑھتی چلی گئی ۔ ایک بڑے درجے تک روس کی اُس سمے کی کاروائیوں نے ہی ایرانیوں کو ہمت دلائی اور اُن کے دیش کو انگلینڈ کے جال میں پھنسنے سے بچایا ۔

रज़ा ख़ाँ

उसी संकट के समय ईरानी देशभक्त, नेता और उद्धारक रज़ा ख़ाँ ने ईरान के शासन की बाग अपने हाथों में ली. रज़ा ख़ाँ ईरान का फ़ौजी डिक्टेटर बना. सारी ईरानी फ़ौज और ईरानी जनता में एक नई जान आगई. सन 1921 में रज़ा ख़ाँ ने अंगरेज़ों की सन 1919 वाली तजवीज़ को नामंज़ूर कर दिया. मजलिस ने उसे पास करने से इनकार कर दिया.

अंगरेज़ों ने देख लिया कि अगर जनता और फ़ौज दोनों की मरज़ी के ख़िलाफ़ और अधिक ज़बरदस्ती की कोशिश की गई तो सारा ईरान बोलशेविक रूस की गोद में जा बैठेगा.

रज़ा ख़ाँ की ताक़त बढ़ती गई. स्मिथ साहब को ईरान छोड़ कर भागना पड़ा. लार्ड कर्ज़न अपना सा मुँह लेकर इंगलैन्ड वापस आ गए. इसके बाद सन 1922 से लेकर दस बरस के अन्दर रज़ा ख़ाँ ने, जो बाद में रज़ा शाह

رضا خاں

اُسی سنکٹ کے سمے ایرانی دیش بھگت' نیتا اور ادھارک رضا خاں نے ایران کے شاسن کی باگ اپنے ہاتھوں میں لی ۔ رضا خاں ایران کا فوجی ڈکٹیٹر بنا ۔ ساری ایرانی فوج اور ایرانی جنتا میں ایک نئی جان آگئی ۔ سن 1921 میں رضا خاں نے انگریزوں کی سن 1919 والی تجویز کو نامنظور کردیا ۔ مجلس نے اُسے پاس کرنے سے انکار کردیا ۔

انگریزوں نے دیکھ لیا کہ اگر جنتا اور فوج دونوں کی مرضی کے خلاف اور ادھک زبردستی کی کوشش کی گئی تو سارا ایران بولشیوک روس کی گود میں جا بیٹھیگا ۔

رضا خاں کی طاقت بڑھتی گئی ۔ اسمتھ صاحب کو ایران چھوڑکر بھاگنا پڑا ۔ لارڈکرزن اپنا سا منھ لیکر انگلینڈ واپس آگئے ۔ اسکے بعد سن 1922 سے لیکر دس برس کے اندر رضا خاں نے' جو بعد میں رضا شاہ

अन्दर उस ज़माने के रूसियों और अंगरेज़ों की साज़िशों को बड़ी अच्छी तरह और बड़े दर्द के साथ दिखलाया है. रूस और इंगलैन्ड ही के असर से शस्तर को ईरान से निकाल दिया गया. रूस और इंगलैन्ड की साज़िशें और बढ़ती चली गईं. ईरान की हालत बद से बदतर होती गई.

पहली बड़ी जंग

सन 1914 में पहली बड़ी जंग शुरू हुई. तुर्की और जरमनी एक तरफ़ थे और इंगलैन्ड और रूस दूसरी तरफ़. तुर्की की सरहद ईरान के उत्तर पच्छिमी सरहद से मिली हुई है. तुर्की या जरमनी के हमले से अपने बचाव का बहाना लेकर अब रूसी फ़ौज ने बाज़ाब्ता उत्तरी ईरान पर क़ब्ज़ा कर लिया और अंगरेज़ी फ़ौज ने दक्खिनी ईरान में डेरे डाल दिये.

सन 1917 में रूस में इनक़लाब हुआ. ज़ार की सलतनत हमेशा के लिये ख़तम होगई. रूस में बोलशेविक हकूमत क़ायम हो गई. रूस की सारी राजनीत बदल गई. इस इनक़लाब के बाद ही रूस ने अपनी सारी फ़ौज ईरान से हटा ली.

इंगलैन्ड के लिये अब मैदान और साफ़ होगया. सन 1918 में जंग ख़तम होगई. फिर भी अंगरेज़ी फ़ौज ईरान को ख़ाली करने की जगह अब उत्तर की तरफ़ फैल गई. ईरान का रूस से ख़तरा अब मिट चुका था. पर उत्तर से दक्खिन तक सारे ईरान में अब जगह जगह अंगरेज़ी फ़ौज की छावनियाँ पड़ी हुई थीं.

लार्ड कर्ज़न की साज़िश

सन 1919 में वही लार्ड कर्ज़न, जिन्होंने 14 बरस पहले हिन्दुस्तान के गवरनर जनरल की हैसियत से बंगाल के दो टुकड़े करके इस देश में खलबली मचा दी थी, ईरान पहुँचे. ईरानी सरकार के साथ उन्होंने अब एक नया समझौता करना चाहा. इस समझौते की पहली दफ़ा यह थी कि इंगलैन्ड की सरकार ईरान को पूरी तरह आज़ाद मुल्क मानती है और बाक़ी सब दफ़ों में इस बात का प्रबन्ध किया गया था कि ईरान की सारी फ़ौज और वहाँ के सारे सरकारी मुलाज़िम अंगरेज़ों के पूरी तरह मातहत हो जावें.

स्मिथ नाम के एक अंगरेज़ को एक बहुत बड़े अमले के साथ ईरानी सरकार का माली सलाहकार (फ़ाइनेनशियल एडवाइज़र) बना कर भेजा गया. इम्पीरियल बैंक आफ़ परशिया नाम से एक नया बैंक अंगरेज़ों की पूंजी से और पूरी तरह अंगरेज़ों के अधिकार में तेहरान में खोल दिया गया जिस से ईरान के आर्थिक जीवन को हर तरह अपने क़ब्ज़े में रक्खा जा सके. ईरान की राजधानी तेहरान में साज़िशों का एक नया जाल बिछा दिया गया.

اندر اُس زمانے کے روسیوں اور انگریزوں کی سازشوں کو بڑی اچھی طرح اور بڑے درد کے ساتھ دکھلایا ہے۔ روس اور انگلینڈ ہی کے اثر سے شستر کو ایران سے نکال دیا گیا۔ روس اور انگلینڈ کی سازشیں اور بڑھتی چلی گئیں۔ ایران کی حالت بد سے بدتر ہوتی گئی۔

پہلی بڑی جنگ

سن 1914 میں پہلی بڑی جنگ شروع ہوئی۔ ترکی اور جرمنی ایک طرف تھے اور انگلینڈ اور روس دوسری طرف۔ ترکی کی سرحد ایران کے اُتر پچھمی سرحد سے ملی ہوئی ہے۔ ترکی یا جرمنی کے حملے سے اپنے بچاؤ کا بہانہ لے کر اب روسی فوج نے باضابطہ اُتری ایران پر قبضہ کر لیا اور انگریزی فوج نے دکھنی ایران میں ڈیرے ڈال دئیے۔

سن 1917 میں روس میں انقلاب ہوا۔ زار کی سلطنت ہمیشہ کے لئے ختم ہوگئی۔ روس میں بولشویک حکومت قائم ہوگئی۔ روس کی ساری راج نیت بدل گئی۔ اس انقلاب کے بعد ہی روس نے اپنی ساری فوج ایران سے ہٹالی۔

انگلینڈ کے لئے اب میدان اور صاف ہوگیا۔ سن 1918 میں جنگ ختم ہوگئی۔ پھر بھی انگریزی فوج ایران کو خالی کرنے کی جگہ اب اُتر کی طرف پھیل گئی۔ ایران کا روس سے خطرہ اب مٹ چکا تھا۔ پر اُتر سے دکھن تک سارے ایران میں اب جگہ جگہ انگریزی فوج کی چھاؤنیاں پڑی ہوئی تھیں۔

لارڈ کرزن کی سازش

سن 1919 میں وہی لارڈ کرزن، جنہوں نے 14 برس پہلے ہندستان کے گورنر جنرل کی حیثیت سے بنگال کے دو ٹکڑے کرکے اِس دیش میں کھلبلی مچادی تھی، ایران پہنچے۔ ایرانی سرکار کے ساتھ اُنہوں نے اب ایک نیا سمجھوتہ کرنا چاہا۔ اِس سمجھوتے کی پہلی دفعہ یہ تھی کہ انگلینڈ کی سرکار ایران کو پوری طرح آزاد ملک مانتی ہے اور باقی سب دفعوں میں اِس بات کا پربندھ کیا گیا تھا کہ ایران کی ساری فوج اور وہاں کے سارے سرکاری ملازم انگریزوں کے پوری طرح ماتحت ہو جاویں۔

اسمتھ نام کے ایک انگریز کو ایک بہت بڑے عملے کے ساتھ ایرانی سرکار کا مالی صلاح کار (فائنانشیل ایڈوائزر) بناکر بھیجا گیا۔ امپیریل بینک آف پرشیا نام سے ایک نیا بینک انگریزوں کی پونجی سے اور پوری طرح انگریزوں کے ادھیکار میں طہران میں کھول دیا گیا جس سے ایران کے آرتھک جیون کو ہر طرح اپنے قبضے میں رکھا جاسکے۔ ایران کی راجدھانی طہران میں سازشوں کا ایک نیا جال بچھا دیا گیا۔

जहाज़ों को जहाज़ी चोरी रोकने का बहाना लेकर लूटना शुरू कर दिया. ईरान के साथ हथियारों की सारी तिजारत अपने हाथ में ले ली, अपने जहाज़ों के लिये कोयला भरने के लिये स्टेशन बना लिये. यहाँ तक कि ईरान की खाड़ी का वह सारा हिस्सा जो किनारे से मिला हुआ है, अंगरेज़ों की फ़ौजी जहाज़ी चौकियों से भर गया.

सन 1901 में अंगरेज़ों ने दक्खिन पच्छिमी ईरान में मिट्टी के तेल के कुओं का पता लगाने और तेल निकालने का ठेका साठ बरस के लिये उस समय की कमज़ोर और नासमझ ईरानी सरकार से हासिल कर लिया.

रूस भी चुप न रह सकता था. उत्तर ईरान में जहाँ रूस और ईरान की सरहद मिली हुई है रूस ने रेलें बनाने, बैंक खोलने और तिजारती माल पर चुँगी वसूल करने के ठेके उसी समय के आसपास ईरानी सरकार से हासिल कर लिये.

ईरान की लूट में रूस और इंगलैन्ड की लाग-डाट बढ़ती गई.

जरमनी भी ईरान की खाड़ी की तरफ़ बढ़ा और एक दो जगह उसने भी अपने फ़ौजी जहाज़ी अड्डे बना डाले.

सन 1904 में जरमनी के ख़िलाफ़ इंगलैन्ड और फ़्रान्स में दोस्ती होगई.

सन 1905 में रूस जापान युद्ध में रूस ने बुरी तरह हार खाई.

रूस की हिम्मतें अब कुछ दिनों के लिये टूट चुकी थीं.

सन 1907 में इंगलैन्ड ने मौक़ा देखकर जरमनी के ख़िलाफ़ रूस के साथ समझौता कर लिया. इंगलैन्ड और रूस ने आपस में तय कर लिया कि ईरान के तीन टुकड़े कर दिये जायं. उत्तर का हिस्सा रूस के असर में रहे, दक्खिन का इंगलैन्ड के और बीच का थोड़ा सा टुकड़ा 'आज़ाद' छोड़ दिया जावे.

मई सन 1908 में अंगरेज़ों को दक्खिन पच्छिमी ईरान में कुछ तेल के कुएं मिले. इंगलैन्ड का नाता ईरान के साथ बढ़ता चला गया.

रूस और इंगलैन्ड दोनों की तरफ़ से अब ईरान में साज़िशों के जाल बिछाए जाने लगे और ईरानी सरकार को अपनी कठपुतली बना कर रखने की कोशिशें होने लगीं.

अमरीकियों के दिल में उस समय तक अपना साम्राज बढ़ाने की लालसा नहीं जागी थी. एक अमरीकी विद्वान मारगन शस्टर को ईरानी सरकार ने अपने ख़ज़ाने का सबसे बड़ा अफ़सर मुक़र्रर किया. शस्टर एक बड़ा ईमानदार आदमी था. ईरानियों से उसे और उससे ईरानियों को सच्चा प्रेम था. उसने अपनी मशहूर किताब 'स्ट्रैंगलिंग आफ़ परशिया' (ईरान का गला घोंटा जाना) में ईरान के

جہازوں کو جہازی چوری روکنے کا بہانہ لے کر لوٹنا شروع کر دیا ۔ ایران کے ساتھ ہتھیاروں کی ساری تجارت اپنے ہاتھ میں لے لی' اپنے جہازوں کے لئے کوئلہ بھرنے کے لئے اسٹیشن بنالئے ۔ یہاں تک کہ ایران کی کھاڑی کا وہ سارا حصہ جو کنارے سے ملا ہوا ہے' انگریزوں کی فوجی جہازی چوکیوں سے بھر گیا ۔

سن 1901 میں انگریزوں نے دکھن پچھمی ایران میں مٹی کے تیل کے کنووں کا پتہ لگانے اور تیل نکالنے کا ٹھیکہ ساٹھ برس کے لئے اُس سمے کی کمزور اور ناسمجھ ایرانی سرکار سے حاصل کر لیا ۔

روس بھی چپ نہ رہ سکتا تھا ۔ اُتر ایران میں جہاں روس اور ایران کی سرحد ملی ہوئی ہے' روس نے ریلیں بنانے' بینک کھولنے اور تجارتی مال پر چنگی وصول کرنے کے ٹھیکے اُسی سمے کے آس پاس ایرانی سرکار سے حاصل کرلئے ۔

ایران کی لوٹ میں روس اور انگلینڈ کی لاگ ڈانٹ بڑھتی گئی ۔

جرمنی بھی ایران کی کھاڑی کی طرف بڑھا اور ایک دو جگہ اُس نے بھی اپنے فوجی جہازی اڈے بنا ڈالے ۔

سن 1904 میں جرمنی کے خلاف انگلینڈ اور فرانس میں دوستی ہوگئی ۔

سن 1905 میں روس جاپان یدھ میں روس نے بری طرح ہار کھائی ۔

روس کی ہمتیں اب کچھ دنوں کے لئے ٹوٹ چکی تھیں ۔

سن 1907 میں انگلینڈ نے موقع دیکھکر جرمنی کے خلاف روس کے ساتھ سمجھوتہ کر لیا ۔ انگلینڈ اور روس نے آپس میں طے کر لیا کہ ایران کے تین ٹکڑے کر دئے جائیں ۔ اُتر کا حصہ روس کے اثر میں رہے' دکھن کا انگلینڈ کے اور بیچ کا تھوڑا سا ٹکڑا ' آزاد ' چھوڑ دیا جاوے ۔

مئی سن 1908 میں انگریزوں کو دکھن پچھمی ایران میں کچھ تیل کے کوئیں ملے ۔ انگلینڈ کا ناتہ ایران کے ساتھ بڑھتا چلا گیا ۔

روس اور انگلینڈ دونوں کی طرف سے اب ایران میں سازشوں کے جال بچھائے جانے لگے اور ایرانی سرکار کو اپنی کٹھ پتلی بنا کر رکھنے کی کوششیں ہونے لگیں ۔

امریکیوں کے دل میں اُس سمے تک اپنا سامراج بڑھانے کی لالسا نہیں جاگی تھی ۔ ایک امریکی ودوان مارگن شسٹر کو ایرانی سرکار نے اپنے خزانے کا سب سے بڑا افسر مقرر کیا ۔ شسٹر ایک بڑا ایماندار آدمی تھا ۔ ایرانیوں سے اُسے اور اُس سے ایرانیوں کو سچا پریم تھا ۔ اُس نے اپنی مشہور کتاب ' سٹرینگلنگ آف پرشیا ' (ایران کا گلا گھونٹا جانا) میں ایران کے

का बदन इतना हलका फुलका है कि मालूम होता है हवा के एक झोंके में उड़ जायगा, पर उस दुबले पतले जिस्म के अन्दर ऐसी जबरदस्त क़ूवते इरादी (संकल्प शक्ति) है जो ईरान के अलबुर्ज पहाड़ की चट्टान से भी ज्यादा अटल और जो अबादान के सारे तेल से ज्यादा भड़क उठने वाली है."

मुस्सादिक़ के रहन सहन से लोग उन्हें 'दरवेश' कहते हैं. कहते हैं उनका बिना फ़रश का कमरा सामान से उतना ही खाली होता है जितना किसी साधू की कुटिया. वह ईरान के "सन्त देशभक्त'' कहलाते हैं. लोग महात्मा गांधी से उनकी तुलना करते हैं.

मालूम होता है मुस्सादिक़ तेल के मामले में अंगरेजों के या दुनिया की किसी भी ताक़त के सामने बाल बराबर भी झुकने को तैयार नहीं. पर मोहम्मद मुस्सादिक़ कट्टर या अंधविश्वासी नहीं हैं. उन्होंने फ्रांस में राजनीत और अर्थशास्त्र की तालीम पाई है, स्वेटजरलैन्ड में क़ानून के डाक्टर की डिगरी ली है. मुस्सादिक़ उनका शुरू का नाम नहीं है. जब उनकी उमर केवल 25 बरस की थी तो उनकी ग़ैर मामूली ईमानदारी और सच्चाई को देख कर उस समय के ईरान के शाह ने उन्हें 'मुस्सादिक़' का ख़िताब दिया था जिसके मानी होते हैं सच्चा और ईमानदार. दुनिया के बहुत से लोगों को यक़ीन है कि मुस्सादिक़ न केवल ईरानियों को ग़रीबी और जहालत से ही छुटकारा दिलाने के लिये आए हैं बल्कि बीच एशिया और पच्छिम एशिया के देशों की बहुत सी उलझनों के उनके ज़रिये सुलझने की आशा की जाती है.

महात्मा गांधी और मोहम्मद मुस्सादिक़ में बहुत सी बातें मिलती जुलती हैं और इसमें कोई शक नहीं मोहम्मद मुस्सादिक़ इस समय की दुनिया के ऊँचे से ऊँचे और नेक से नेक आदमियों में से हैं.

ईरान, इंगलैन्ड और रूस

इंगलैन्ड ने पिछली सदी में ईरान और आसपास के समन्दर में उसी तरह बढ़ना शुरू किया जिस तरह कई सदी पहले ईस्ट इंडिया कम्पनी ने हिन्दुस्तान में किया था. सन 1870 में एक इन्डो योरोपियन टेलीग्राफ़ कम्पनी बनाई गई जिसने हिन्दुस्तान और योरप में सम्बन्ध के लिये ईरान के अन्दर तार के खम्बे बिछाने शुरू किये. इसके बाद अंगरेज ईरान की खाड़ी की तरफ़ बढ़े. धीरे धीरे ईरान के किनारे के समन्दर में इधर से उधर तक अंगरेजों ने अपने रोशनी घर (लाइट हाउस) बना डाले, समन्दर से तार ख़बर भेजने के लिये 'केबल्स' डाल दिये, ठीक जिस तरह वह हिन्दुस्तान में कर चुके थे उसी तरह पास से जाने वाले

کا بدن اِتنا ھلکا پھلکا ھے کہ معلوم ھوتا ھے ھوا کے ایک جھونکے میں اُڑ جائیگا' پر اُس دبلے پتلے جسم کے اندر ایسی زبردست قوت ارادی (سنکلپ شکتی) ھے جو ایران کے البرز پہاڑ کی چٹان سے بھی زیادہ اٹل اور جو ابادان کے سارے تیل سے زیادہ بھڑک اُٹھنے والی ھے"۔

مصادق کے رھن سہن سے لوگ اُنھیں 'درویش' کہتے ھیں . کہتے ھیں اُن کا بنا فرش کا کمرہ سامان سے اُتنا ھی خالی ھوتا ھے جتنا کسی سادھو کی کٹیا . وہ ایران کے "سنت دیش بھکت" کہلاتے ھیں لوگ مہاتما گاندھی سے اُن کی تلنا کرتے ھیں .

معلوم ھوتا ھے مصادق تیل کے معاملے میں انگریزوں کے یا دنیا کی کسی بھی طاقت کے سامنے بال برابر بھی جھکنے کو تیار نہیں . پر محمد مصادق کٹر یا اندھ وشواسی نہیں ھیں . اُنھوں نے فرانس میں راج نیت اور ارتھ شاستر کی تعلیم پائی ھے' سوئٹزرلینڈ میں قانون کے ڈاکٹر کی ڈگری لی ھے . مصادق ان کا شروع کا نام نہیں ھے . جب اُنکی عمر کیول 25 برس کی تھی تو اُنکی غیر معمولی ایمانداری اور سچائی کو دیکھکر اُس سمے کے ایران کے شاہ نے اُنھیں 'مصادق' کا خطاب دیا تھا جس کے معنی ھوتے ھیں سچا اور ایماندار . دنیا کے بہت سے لوگوں کو یقین ھے کہ مصادق نہ کیول ایرانیوں کو غریبی اور جہالت سے ھی چھٹکارا دلانے کے لئے آئے ھیں بلکہ بیچ ایشیا اور پچھم ایشیا کے دیشوں کی بہت سی اُلجھنوں کے اُن کے ذریعے سلجھنے کی آشا کی جاتی ھے .

مہاتما گاندھی اور محمد مصادق میں بہت سی باتیں ملتی جلتی ھیں اور اس میں کوئی شک نہیں' محمد مصادق اس سمے کی دنیا کے اونچے سے اونچے اور نیک سے نیک آدمیوں میں سے ھیں .

ایران' انگلینڈ اور روس

انگلینڈ نے پچھلی صدی میں ایران اور آس پاس کے سمندر میں اُسی طرح بڑھنا شروع کیا جس طرح کئی صدی پہلے ایسٹ انڈیا کمپنی نے ھندستان میں کیا تھا . سن 1870 میں ایک انڈو یوروپین ٹیلیگراف کمپنی بنائی گئی جس نے ھندستان اور یورپ میں سمبندھ کے لئے ایران کے اندر تار کے کھمبے بچھانے شروع کئے . اس کے بعد انگریز ایران کی کھاڑی کی طرف بڑھے . دھیرے دھیرے ایران کے کنارے کے سمندر میں اِدھر سے اُدھر تک انگریزوں نے اپنے روشنی گھر (لائٹ ھاؤس) بنا ڈالے' سمندر سے تار خبر بھیجنے کے لئے 'کیبلس' ڈال دیئے' ٹھیک جس طرح وہ ھندستان میں کر چکے تھے اُسی طرح پاس سے جانے والے

हमारी राय

ईरान का तेल संकट–

ईरान की आजकल की मुसीबतों की शुरूआत उन्नीसवीं सदी ईसवी में उस समय से होती है जब अंगरेज़ी राज भारत में पूरी तरह जम चुका था, रूस के ज़ार का जी इंगलैन्ड के इस नए साम्राज को देख देख कर ललचा रहा था और हिन्दुस्तान पर रूस के हमले की खबरें आए दिन उड़ती रहती थीं. रूस के बढ़ने का रास्ता ईरान हो कर ही दिखाई देता था और ईरान में ही अंगरेज़ सबसे ज़्यादा कामयाबी के साथ बढ़ती हुई रूसी फ़ौज को रोक सकते थे. पर उस पुराने इतिहास में जाने से पहले हमें एक निगाह उस आदमी पर डाल लेनी चाहिये जिस के हाथों में इस समय ईरानी क़ौम की राजकाजी बाग नज़र आती है.

डाक्टर मोहम्मद मुस्सादिक़

ईरान के आजकल के बड़े वज़ीर डाक्टर मोहम्मद मुस्सादिक़ की उमर इस वक़्त लगभग सत्तर साल की है. कुछ महीने पहले तक दुनिया में बहुत कम लोग उन्हें जानते थे. आज दुनिया का शायद ही कोई अख़बार हो जिसमें मुस्सादिक़ का नाम बार बार न आ चुका हो. योरप के पत्रकार और राजकाजी लोग आमतौर पर मोहम्मद मुस्सादिक़ की हद दरजे की सादगी, सच्चाई, ईमानदारी और देशभक्ति की तारीफ़ करते हैं. हाल में एक चालाक अंगरेज़ राज नेता इसी तेल के मामले में मुस्सादिक़ से मिलने गए थे. लौट कर अपनी नाकामी की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि "हम एक ऐसे बदमाश से काम चला सकते थे जिस पर भरोसा हो सकता, पर एक ईमानदार कट्टर मज़हबी आदमी से कैसे काम निकल सकता है." मोहम्मद मुस्सादिक़ बहुत भावुक हैं. ईरान की मजलिस में ईरान की मुसीबतों का ज़िकर करते हुए वह बार बार रो पड़ते हैं. उनके बेलाग और निस्वार्थ होने को सब मानते हैं. 21 मई को ईरान की सेनेट में रोते हुए उन्होंने कहा—"मैं यह तेल का मामला ख़तम कर लूं और तुरन्त तुम मेरी जगह दूसरा आदमी मुक़र्रर कर लेना." दूसरी तरफ़ एक अमरीकी लिखता है—"मुस्सादिक़

ہماری رائے

ایران کا تیل سنکٹ —

ایران کی آج کل کی مصیبتوں کی شروعات انیسویں صدی عیسوی میں اُس سمے سے ہوتی ہے جب انگریزی راج بھارت میں پوری طرح جم چکا تھا، روس کے زار کا جی انگلینڈ کے اِس نئے سامراج کو دیکھکر للچا رہا تھا اور ہندستان پر روس کے حملے کی خبریں آئے دن اُڑتی رہتی تھیں۔ روس کے بڑھنے کا راستہ ایران ہوکر ہی دکھائی دیتا تھا اور ایران میں ہی انگریز سب سے زیادہ کامیابی کے ساتھ بڑھتی ہوئی روسی فوج کو روک سکتے تھے۔ پر اُس پرانے اِتہاس میں جانے سے پہلے ہمیں ایک نگاہ اُس آدمی پر ڈال لینی چاہئے جس کے ہاتھوں میں اِس سمے ایرانی قوم کی راج کاجی باگ نظر آتی ہے۔

ڈاکٹر محمد مصادق

ایران کے آج کل کے بڑے وزیر ڈاکٹر محمد مصادق کی عمر اِس وقت لگ بھگ ستر سال کی ہے۔ کچھ مہینے پہلے تک دنیا میں بہت کم لوگ اُنہیں جانتے تھے۔ آج دنیا کا شاید ہی کوئی اخبار ہو جس میں مصادق کا نام بار بار نہ آچکا ہو۔ یورپ کے پترکار اور راج کاجی لوگ عام طور پر محمد مصادق کی حد درجے کی سادگی، سچائی، ایمانداری اور دیش بھکتی کی تعریف کرتے ہیں۔ حال میں ایک چالاک انگریز راج نیتا اِسی تیل کے معاملے میں مصادق سے ملنے گئے تھے۔ لوٹ کر اپنی ناکامی کی چرچا کرتے ہوئے اُنہوں نے کہا کہ "ہم ایک ایسے بدمعاش سے کام چلا سکتے تھے جس پر بھروسہ ہوسکتا، پر ایک ایماندار کٹر مذہبی آدمی سے کیسے کام نکل سکتا ہے۔" محمد مصادق بہت بھاوک ہیں۔ ایران کی مجلس میں ایران کی مصیبتوں کا ذکر کرتے ہوئے وہ بار بار رو پڑتے ہیں۔ اُن کے بے لاگ اور نسوارتھ ہونے کو بھی سب مانتے ہیں۔ 21 مئی کو ایران کی سینیٹ میں روتے ہوئے اُنہوں نے کہا —" میں یہ تیل کا معاملہ ختم کرلوں اور ترنت تم میری جگہ دوسرا آدمی مقرر کر لینا۔" دوسری طرف ایک امریکی لکھتا ہے — " مصادق

है कि हिन्दुस्तान की हर बोलीमें इसका अनुवाद निकल वाने की कोशिश करें ताकि सभी आदमी इससे फायदा उठा सकें. आखिर में हम अपने भाई गोरा को इस नन्ही सी मगर बेश क़ीमती चीज़ तैयार करने पर दिल से बधाई देते हैं.

—सुरेश रामभाई

स्त्री पुरुश मर्यादा

लेखक—किशोरलाल मशरूवाला, लिखावट—नागरी.

सफ़े—एक सौ अठासी. दाम—पौने दो रुपया.

मिलने का पता—नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद.

यह किताब गुजराती में लिखे हुए लेखों के संग्रह का हिन्दुस्तानी में तरजुमा है.

इसका हर लेख पढ़ने, और ध्यान से पढ़ने लायक है. हर लेख में नयापन तो मिलेगा ही, और साथ में दो चीज़ें और मिलेंगी. एक यह कि पढ़ने वाले के मन में पड़े बरसों के शक आसानी से दूर होते चले जायंगे. दूसरी बात यह कि पढ़ने वाले में एक जान सी पड़ती मालूम पड़ेगी, जिसके बल पर उसे समाज में इनक़लाब करने की बात सूझ सकती है.

किताब के लिखने वाले श्री किशोर लाल मशरूवाला ऐसे आदमी हैं जिनकी लेखनी से यह सब शोभा देता है.

हम ज्यादा न कहकर नीचे कुछ लेख गिनाये देते हैं, जिनपर बड़ी साफ़ राय ज़ाहिर की गई है जिसकी आजकल बड़ी ज़रूरत थी.

1. पुरुषों के दोश
2. नवजवान और शादी
3. स्त्रियों पर अत्याचार
4. स्त्री-पुरुश का सम्बन्ध
5. सह शिक्षा
6. संतति नियमन का सवाल
7. बुढ़ापे में विवाह
8. ब्रह्मचर्य का साधन

कहीं कहीं भाशा कठिन हो गई है. संस्कृत के ऐसे शब्दों की भरमार है कि कालिज के विद्यार्थी भी टीपनी यानी ग्लासरी की मदद के बिना किताब से पूरा फायदा नहीं उठा सकते. इतनी काम की किताब के साथ टीपनी होना ज़रूरी थी.

—भ.

ک ھندستان کی ہر بولی میں اس کا انواد نکلوانے کی
شش کریں تاکہ سبھی آدمی اس سے فائدہ اٹھا سکیں. آخر
ں ہم اپنے بھائی گورا کو اس ننھی سی مگر بیش قیمتی
یز تیار کرنے پر دل سے بدھائی دیتے ہیں.

—سریش رام بھائی

ستری پرش مریادا

لیکھک — کشور لال مشرو والا لکھاوٹ—ناگری.

صفحے — ایک سو اٹھاسی. دام پونے دو روپے.

ملنے کا پتہ — نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد.

یہ کتاب گجراتی میں لکھے ہوئے لیکھوں کے سنگرہ کا
دستانی میں ترجمہ ہے.

اس کا ہر لیکھ پڑھنے، اور دھیان سے پڑھنے لائق ہے.
لیکھ میں نیا پن تو ملےگا ہی، اور ساتھ میں دو چیزیں
ملیں گی. ایک یہ کہ پڑھنے والے کے من میں پڑے
سوں کے شک آسانی سے دور ہوتے چلے جائیں گے. دوسری
ت یہ کہ پڑھنے والے میں ایک جان سی پڑتی معلوم
ے گی، جسکے بل پر اسے سماج میں انقلاب کرنے کی بات
جھ سکتی ہے.

کتاب کے لکھنے والے شری کشور لال مشرو والا ایسے
ی ہیں جنکی لیکھنی سے یہ سب شوبھا دیتا ہے.

ہم زیادہ نہ کہکر نیچے کچھ لیکھ گنائے دیتے ہیں،
ں پر بڑی صاف رائے ظاہر کی گئی ہے جسکی آج کل
ی ضرورت تھی.

1. پرشوں کے دوش
2. نوجوان اور شادی
3. استریوں پر اتیاچار
4. استری پرش کا سمبندھ
5. سہہ شکشا
6. سنتتی نیمن کا سوال
7. بڑھاپے میں وواہ
8. برہمچریہ کا سادھن

کہیں کہیں بھاشا کٹھن ہوگئی ہے. سنسکرت کے
ے شبدوں کی بھرمار ہے کہ کالج کے ودیارتھی بھی ٹیپنی
لی گلاسری کی مدد کے بنا کتاب سے پورا فائدہ نہیں اٹھا
تے. اتنی کام کی کتاب کے ساتھ ٹیپنی ہونا ضروری تھی.

— بھ.

री महा नास्तिक (सुपर थईस्ट) हूँ." यह शादी मार्च 1948 में सेवा ग्राम आश्रम में ठक्कर बापा और पंडित सुन्दरलाल वग़ैरा की मौजूदगी में हुई.

कुल किताब में 54 सफ़े हैं जिन में से 23 सफ़े की श्री किशोरलाल भाई की भूमिका है. किताब क्या है एक बहुत ही दिलचस्प और आंखें खोल देने वाली कहानी है.

श्री किशोरलाल भाई की भूमिका उनके गहरे इल्म और पहुँचे हुए तजरबे का एक आला नमूना है. अपनी भूमिका के आख़ीर में उन्हों ने कहा है कि "ज़्यादा सोच विचार और तजरबे के बाद गोरा के विचार बदल सकते हैं या और भी पक्के हो जा सकते हैं यह कई बातों पर मुनहसिर है. लेकिन जब तक उनके दिल में मुहब्बत है और जब तक क्या निजी क्या समाजी जीवन में उनका अख़लाक़ी चाल चलन और हिम्मत बुलन्द बने रहते हैं और जब तक वह सेवा और त्याग का जीवन बिताते हैं तब तक उनका नाम ईश्वर के अपने बन्दों में रहेगा. उनकी ख़ातिर, देव भी अदेव नाम अपना लेगा."

श्री किशोरलाल भाई की इस सच्ची बात पर हमें रोमा रोलां की एक किताब—राम कृष्ण परमहंस की जीवनी—याद आ रही है जिस में पच्छिम के उस महान विचारक और कलाकार ने कहा है—

"..........बहुत से आदमी ऐसे हैं जो सभी तरह के मज़हबी विश्वास से बरी हैं या उनका ख़याल है कि वह बरी हैं, लेकिन दरअसल वह एक अति बौद्धिक चेतना की हालत में डूबे रहते हैं, जिसे वह समाजवाद, कम्यू-निज़्म, जीव-दयावाद, राष्ट्रीयता या बुद्धिवाद भी कहते हैं. विचार की चीज़ से नहीं लेकिन विचार की बुलन्दी या ख़ूबी से उसका पैदा होना निश्चित होता है. और हम यह तय कर सकते हैं कि वह मज़हब से पैदा होता है या नहीं. अगर वह विचार हर तरह की मुसीबत सहकर, एक लगन और हर तरह के बलिदान की तैयारी के साथ, सचाई की खोज की तरफ़ निडरता से जाता है तो मैं उसे मज़हब ही कहूंगा. क्योंकि मज़हब के अन्दर यह विश्वास शामिल ही है कि इन्सानी कोशिश का मक़सद समाज के जीवन से ऊँचा और सारे मानव समाज के जीवन से भी ऊँचा है. नास्तिकता भी, जब वह सौ फ़ीसदी सच्ची ताक़तवर प्रकृतियों से निकलती है, और जब वह कमज़ोरी की नहीं बल्कि ताक़त की एक शकल होती है, तो वह भी धार्मिक आत्मा की महान् सेना के मार्च में शामिल हो जाती है."

जैसा हम ऊपर कह चुके हैं किताब पढ़ने लायक़ है. हर अंगरेज़ी जानने वाले से हम कहेंगे कि इस को ग़ौर से देखें और नवजीवन प्रकाशन मन्दिर से हमारी प्रार्थना

مہا ناستک (سوپر ایتھیسٹ) ہوں." یہ شادی مارچ 1948 میں سیوا گرام آشرم میں ٹھکر بابا اور پنڈت سندر لال وغیرہ کی موجودگی میں ہوئی.

کل کتاب میں 54 صفحے ہیں جن میں سے 23 صفحے کی شری کشور لال بھائی کی بھومیکا ہے. کتاب کیا ہے' ایک بہت ہی دلچسپ اور آنکھیں کھول دینے والی کہانی ہے.

شری کشور لال بھائی کی بھومیکا اُن کے گہرے علم اور پہنچے ہوئے تجربے کا ایک اعلا نمونہ ہے. اپنی بھومیکا کے آخیر میں اُنہوں نے کہا ہے کہ "زیادہ سوچ وچار اور تجربے کے بعد گورا کے وچار بدل سکتے ہیں یا اور بھی پکے ہو جا سکتے ہیں یہ کئی باتوں پر منحصر ہے. لیکن جب تک ان کے دل میں محبت ہے اور جب تک کیا نجی کیا سماجی جیون میں اُن کا اخلاقی چال چلن اور ہمت بلند بنے رہتے ہیں اور جب تک وہ سیوا اور تیاگ کا جیون بتاتے ہیں تب تک انکا نام ایشور کے اپنے بندوں میں رہے گا. اُن کی خاطر' دیو بھی ادیو نام اپنا لے گا."

شری کشور لال بھائی کی اِس سچی بات پر ہمیں روما رولاں کی ایک کتاب — رام کرشن پرم ہنس کی جیونی — یاد آرہی ہے جس میں پچھم کے اُس مہان وچارک اور کلا کار نے کہا ہے —

"........ بہت سے آدمی ایسے ہیں جو سبھی طرح کے مذہبی وشواس سے بری ہیں یا اُن کا خیال ہے کہ وہ بری ہیں' لیکن دراصل وہ ایک اتی بودھک چیتنا کی حالت میں ڈوبے رہتے ہیں' جسے وہ سماج واد' کمیونزم' جیودیا واد' راشٹریتا یا بدھی واد بھی کہتے ہیں. وچار کی چیز سے نہیں لیکن وچار کی بلندی یا خوبی سے اُس کا پیدا ہونا نشچت ہوتا ہے. اور ہم یہ طے کرسکتے ہیں کہ وہ مذہب سے پیدا ہوتا ہے یا نہیں. اگر وہ وچار ہر طرح کی مصیبت سہ کر ایک لگن اور ہر طرح کے بلیدان کی تیاری کے ساتھ' سچائی کی کھوج کی طرف نڈرتا سے جاتا ہے تو میں اُسے مذہب ہی کہوں گا. کیونکہ مذہب کے اندر یہ وشواس شامل ہی ہے کہ انسانی کوشش کا مقصد سماج کے جیون سے اونچا اور سارے مانو سماج کے جیون سے بھی اونچا ہے. ناستکتا بھی' جب وہ سو فیصدی سچی طاقتور پرکرتیوں سے نکلتی ہے' اور جب وہ کمزوری کی نہیں بلکہ طاقت کی ایک شکل ہوتی ہے' تو وہ بھی دھارمک آتما کی مہان سینا کے مارچ میں شامل ہوجاتی ہے."

جیسا ہم اوپر کہہ چکے ہیں کتاب پڑھنے لائق ہے. ہر انگریزی جاننے والے سے ہم کہیں گے کہ اِس کو غور سے دیکھیں اور نوجیون پرکاشن مندر سے ہماری پراتھنا

एन एथीस्ट विद गांधी

लेखक—भाई गोरा (जी. राम चन्द्र राव)

भूमिका लेखक—भाई किशोर लाल मशरूवाला.

लिखावट—अंगरेजी, दाम—एक रुपया.

निकालने वाले—नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद.

गांधी जी की शहादत के बाद उनके ऊपर उनके जीवन की झांकियों और दूसरी चीजों को लेकर बहुत बड़ी तादाद में किताबें निकली हैं. लेकिन वह सब एक तरफ़ और भाई गोरा की यह किताब एक तरफ़. इसमें हमें बापू के जीवन का एक बड़े कमाल का पहलू मिलता है. पहले तो बापू ने गोरा से मिलने से इनकार किया मगर बाद में जब गोरा के नास्तिक केन्द्र पटामाटा (बेजवाड़ा-आन्ध्र) के एक कारकुन ने वहाँ के काम की तस्वीर बापू के आगे रखी तो उन्होंने केन्द्र के मुखिया, गोरा को अपने आश्रम में आने की दावत दी. यही नहीं, बापू ने उनके केन्द्र के साथियों और उनके बीवी बच्चों को भी बुलाया और उनसे बातें कीं.

गोरा का कहना है कि बीसियों लोगों ने नास्तिक केन्द्र और नास्तिकता के बारे में उनसे चरचा की थी लेकिन एक सवाल जो बापू ने उनसे किया वह और किसी ने कभी नहीं किया—यह कि "आप नास्तिकता क्यों चाहते हैं?" यह ऐसा दर्द भरा सवाल था जिससे गोरा का रोम रोम हिल उठा और उन्होंने ने सारी दास्तान सुना कर बापू को आख़िर में बतलाया कि मैं नास्तिकता इस वजह से चाहता हूँ ताकि इनसान में ख़ुद के अन्दर भरोसा पैदा हो और अहिंसात्मक तरीक़े से समाजी और माली बराबरी क़ायम की जा सके. इस पर बापू ने कहा कि "न मैं यह कह सकता हूँ कि आपकी नास्तिकता ग़लत है न यह कि मेरी आस्तिकता ही सही है. हम दोनों सच की तलाश में हैं... मैं आपकी मदद करूँगा, हालाँकि आपका रास्ता मेरे रास्ते के ख़िलाफ़ है." इतनी गहरी हमदरदी का वादा पाकर गोरा का कलेजा फूल उठा,

लेकिन घटनाओं का चक्कर कुछ इस तरह चला कि बापू फिर गोरा को अपने सामने सेवाग्राम न बुला सके. गोरा जन्म के ब्राह्मन हैं. उन्होंने अपनी बेटी की शादी एक हरिजन लड़के से करना तय की थी. यह शादी बापू कराने वाले थे और मद्रास में गोरा से मुलाक़ात होने पर बापू ने उनसे कहा था कि क्योंकि लड़का लड़की दोनों ही नास्तिक हैं इसलिये शादी की रस्म में 'ईश्वर के नाम पर' लफ़्ज़ न आकर 'सत्य के नाम पर' लफ़्ज़ आयेंगे, और आगे उन्होंने

...ن ایتھیسٹ ود گاندھی

لیکھک — بھائی گورا (جی. رام چندر راو)

بھومیکا لیکھک — بھائی کشور لال مشرو والا.

لکھاوٹ — انگریزی، دام — ایک روپیہ.

نکالنے والے — نوجیون پبلشنگ ھاؤس، احمدآباد.

گاندھی جی کی شہادت کے بعد اُن کے اوپر اُن کے ... کی جھانکیوں اور دوسری چیزوں کو لیکر بہت ... تعداد میں کتابیں نکلی ھیں. لیکن وہ سب ایک ... اور بھائی گورا کی یہ کتاب ایک طرف. اِس میں ... باپو کے جیون کا ایک بڑے کمال کا پہلو ملتا ھے. ... تو باپو نے گورا سے ملنے سے انکار کیا مگر بعد میں جب ... کے ناستک کیندر پٹا ماٹا (بیجواڑہ آندھر) کے ... کارکن نے وہاں کے کام کی تصویر باپو کے آگے رکھی تو ... نے کیندر کے مکھیا، گورا کو اپنے آشرم میں آنے کی ... دی. یہی نہیں، باپو نے اُن کے کیندر کے ساتھیوں ... کے بیوی بچوں کو بھی بلایا اور اُن سے باتیں کیں.

گورا کا کہنا ھے کہ بیسیوں لوگوں نے ناستک کیندر اور ...کتا کے بارے میں اُن سے چرچا کی تھی لیکن ایک ... جو باپو نے اُن سے کیا وہ اور کسی نے کبھی نہیں ... — یہ کہ "آپ ناستکتا کیوں چاھتے ھیں؟" یہ ایسا ...ھرا سوال تھا جس سے گورا کا روم روم ھل اٹھا اور انہوں ...اری داستان سنا کر باپو کو آخر میں بتلایا کہ میں ...کتا اِس وجہ سے چاھتا ھوں تاکہ انسان میں خود کے بھروسہ پیدا ھو اور اھنسانک طریقے سے سماجی اور برابری قائم کی جاسکے. اس پر باپو نے کہا کہ "نہ ... یہ کہہ سکتا ھوں کہ آپ کی ناستکتا غلط ھے نہ یہ ...ری آستکتا ھی صحیح ھے. ھم دونوں سچ کی تلاش ...ھیں... ...میں آپ کی مدد کرونگا، حالانکہ آپ ...تہ میرے راستے کے خلاف ھے." اتنی گہری ھمدردی ... پاکر گورا کا کلیجہ پھول اُٹھا.

...یکن گھٹناؤں کا چکر کچھ اس طرح چلا کہ باپو پھر ...و اپنے سامنے سیوا گرام نہ بلا سکے. گورا جنم کے براھمن ... انہوں نے اپنی بیٹی کی شادی ایک ھریجن لڑکے ...نا طے کی تھی. یہ شادی باپو کرانے والے تھے اور ...س میں گورا سے ملاقات ھونے پر باپو نے اُن سے کہا تھا کہ ... لڑکا لڑکی دونوں ھی ناستک ھیں اس لئے شادی کی ... میں 'ایشور کے نام پر' لفظ نہ آکر 'ستیہ کے نام ... لفظ آئینگے' اور آگے انہوں نے کہا — 'کیا آپ

यह अखबार हाल ही में निकलना शुरू हुआ है. इसके पहले साल की चार कापियाँ, नम्बर 5, 6, 7, और 10 अपनी राय जाहिर करने के लिये हमें मिली हैं. अंगरेजी में 'इकोनामिक रिव्यू' नाम का परचा कांगरेस के सदर दफ्तर से काफी अरसे से निकल रहा है. 'आर्थिक समीक्षा' उसका हिन्दी नमूना मालूम पड़ता है.

हमारे देश में लेन देन, रुपए पैसे के मामले पर अखबारों की आम तौर से कमी है, फिर अच्छे और समझदार अखबारों की तो और भी ज्यादा कमी है. इसलिये कांगरेस दफ्तर जैसी जिम्मेदार जगह से इन सवालों पर निकलने वाले इस पंद्रह रोज़ा अखबार का हम दिल से स्वागत करते हैं.

इस अखबार में दो बातें निराली हैं. एक तो इसमें सम्पादक की तरफ से अपनी राय जैसी कोई चीज नहीं रहती. दूसरे यह कि इसमें जो लेख छपते हैं वह किसी दूसरे अखबार या सरकारी रिपोर्ट से लिये गये होते हैं. इसलिये किसी हौसलामन्द को यह तकलीफ करने की जरूरत नहीं है कि 'आर्थिक समीक्षा' में छपने के लिये कोई अपनी नई चीज भेजे.

तो हम 'आर्थिक समीक्षा' को कांगरेस के नजरिये से चुने हुए आर्थिक मामलों से ताल्लुक रखने वाले लेखों का एक मजमुआ मानते हैं. लेकिन जो लेख इसमें रहते हैं वह सचमुच काम के हैं जिनसे काफी जानकारी मिल सकती है. पाँचवां नम्बर बजट नम्बर है जिसमें नई दिल्ली की सरकार के अलावा पंजाब, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, बिहार, पच्छिमी बंगाल, आसाम, बम्बई, मध्य प्रदेश और मद्रास सरकारों के इस साल के बजट दिये गये हैं.

लेखों के बारे में हम इतना ज़रूर कहेंगे कि उनसे यह एक खास झलक निकलती है कि वह हुकूमत और कांगरेस के पहलू से ही सब चीजों को देखते हैं. हाँ, कुछ लेख ऐसे भी हैं—जैसे छटे नम्बर में श्री किशोर लाल घनश्याम लाल मशरूवाला का लेख या दसवें नम्बर में श्री कुमारप्पा का लेख—जो इस असर के नहीं कहे जा सकते. फिर भी आम जनता का एक हित होता है. और कौन नहीं जानता कि आज हिन्दुस्तान के लोग जितने दुखी आर्थिक रूप से हैं उतने शायद ही कभी रहे हों! हम चाहते थे कि 'आर्थिक समीक्षा' हुकूमत और कांगरेस की मजबूरियों और मुसीबतों के ही वहम में न पड़कर लोगों के दुखड़ों का भी ख्याल रखे और नीचे से उठने वाली उनकी दर्द भरी आह को ऊपर तक पहुँचाये.

—सुरेश रामभाई

یہ اخبار حال ہی میں نکلنا شروع ہوا ہے . اسکے پہلے سال کی چار کاپیاں، نمبر 5، 6، 7 اور 10 اپنی رائے ظاہر کرنے کے لئے ہمیں ملی ہیں . انگریزی میں 'اکونامک ریویو' نام کا پرچہ کانگریس کے صدر دفتر سے کافی عرصے سے نکل رہا ہے . 'آرتھک سمیکشا' اسکا ہندی نمونہ معلوم پڑتا ہے .

ہمارے دیش میں لین دین، روپے پیسے کے معاملے پر اخباروں کی عام طور سے کمی ہے، پھر اچھے اور سمجھدار اخباروں کی تو اور بھی زیادہ کمی ہے . اس لئے کانگریس دفتر جیسی ذمےدار جگہ سے ان سوالوں پر نکلنے والے اس پندرہ روزہ اخبار کا ہم دل سے سواگت کرتے ہیں .

اس اخبار میں دو باتیں نرالی ہیں . ایک تو اس میں سمپادک کی طرف سے اپنی رائے جیسی کوئی چیز نہیں رہتی . دوسرے یہ کہ اس میں جو لیکھ چھپتے ہیں وہ کسی دوسرے اخبار یا سرکاری رپورٹ سے لئے گئے ہوتے ہیں . اس لئے کسی حوصلہ مند کو یہ تکلیف کرنے کی ضرورت نہیں ہے کہ 'آرتھک سمیکشا' میں چھپنے کے لئے کوئی اپنی نئی چیز بھیجے .

تو ہم 'آرتھک سمیکشا' کو کانگریس کے نظریے سے چنے ہوئے آرتھک معاملوں سے تعلق رکھنے والے لیکھوں کا ایک مجموعہ مانتے ہیں . لیکن جو لیکھ اس میں رہتے ہیں وہ سچ مچ کام کے ہیں جن سے کافی جانکاری مل سکتی ہے . پانچواں نمبر بجٹ نمبر ہے جس میں نئی دلی کی سرکار کے علاوہ پنجاب، اترپردیش، اڑیسہ، بہار، پچھمی بنگال، آسام، بمبئی، مدھیہ پردیش اور مدراس سرکاروں کے اس سال کے بجٹ دیئے گئے ہیں .

لیکھوں کے بارے میں ہم اتنا ضرور کہینگے کہ ان سے یہ ایک خاص جھلک نکلتی ہے کہ وہ حکومت اور کانگریس کے پہلو سے سب چیزوں کو دیکھتے ہیں . ہاں، کچھ لیکھ ایسے بھی ہیں—جیسے چھٹے نمبر میں شری کشورلال گھنشیام لال مشروالا کا لیکھ یا دسویں نمبر میں شری کماریپا کا لیکھ—جو اس اثر کے نہیں کہے جاسکتے . پھر بھی عام جنتا کا ایک ہت ہوتا ہے . اور کون نہیں جانتا کہ آج ہندستان کے لوگ جتنے دکھی آرتھک روپ سے ہیں اتنے شاید ہی کبھی رہے ہوں! ہم چاہتے تھے کہ 'آرتھک سمیکشا' حکومت اور کانگریس کی مجبوریوں اور مصیبتوں کے ہی وہم میں نہ پڑکر لوگوں کے دکھڑوں کا بھی دھیان رکھے اور نیچے سے اٹھنے والی ان کی درد بھری آہ کو اوپر تک پہونچائے .

سریش رام بھائی

हमारा राज

लेखक—मदन मोहन गुप्त. लिखावट—उरदू.

दाम—दस आने. सफ़े—चौंसठ.

मिलने का पता—मक्तबा जामिया लिमिटेड, जामिया नगर, देहली.

यह किताब भारत के विधान का खुलासा है. बच्चों को समझाने के लिये लिखा गया है इसलिये भाशा काफ़ी आसान लिखी गई है. मोटी मोटी बातें सभी समझा दी गई हैं. तस्वीर और नक़्शे देकर और भी आसान कर दी गई हैं. कहीं कहीं इस तरह लिख दिया गया है जिससे बच्चों के दिल पर ठीक असर नहीं बैठ सकता, जैसे सफ़ा सात पर बराबरी के हक़ बताते हुए इस तरह लिखा गया है—

"ऊपर लिखे हुए उसूलों को अमल में लाने के लिये दस्तूर में जनता को कुछ हक़ दिये गए हैं..............."

इस इबारत से बच्चे के दिल पर यह असर रह सकता है कि हक़ सरकार ने जनता को दिये हैं जब कि बात ऐसी नहीं है. असल में दस्तूर यानी विधान जनता ने अपनी तरफ़ से भेजे हुए आदमियों की मारफ़त तैयार करा कर उस सरकार के हाथ में सौंपा है जिसे जनता ने खुद बनाया है और जिसमें उन बच्चों के मां बाप का भी हाथ है जिन बच्चों के हाथ में यह किताब पहुँचेगी. इसलिये ऊपर की इबारत को इस तरह लिखना ठीक रहता—

'ऊपर लिखे हुए उसूलों को अमल में लाने के लिये दस्तूर में जनता ने अपने हक़ गिना दिये हैं, जो उसके पैदाइशी और बुनियादी हक़ हैं.'

इसी तरह की भूलें किताब में दो एक जगह और हैं. हम कहना तो यह चाहते थे कि यह किताब इस तरह दुरुस्त करके ही बच्चों के हाथ में दी जानी चाहिये थी पर अब इतना ही कहना काफ़ी है कि दूसरी छपाई में इसे ठीक कर दिया जाय.

—भ.

ھمارا راج

لیکھک—مدن موھن گپت' لکھاوٹ—اُردو .

دام— دس آنے . صفحے—چونسٹھ .

ملنے کا پتہ—مکتبہ جامعہ لمیٹڈ' جامعہ نگر' دھلی .

یہ کتاب بھارت کے ودھان کا خلاصہ ھے . بچوں کو سمجھانے کے لئے لکھا گیا ھے اِسلئے بھاشا کافی آسان لکھی گئی ھے . موٹی موٹی باتیں سبھی سمجھادی گئی ھیں . تصویر اور نقشے دیکر اور بھی آسان کردی گئی ھیں . کہیں کہیں اِس طرح لکھ دیا گیا ھے جس سے بچوں کے دل پر ٹھیک اثر نہیں بیٹھ سکتا' جیسے صفحہ سات پر برابری کے حق بتاتے ھوئے اِس طرح لکھا گیا ھے—

"اُوپر لکھے ھوئے اصولوں کو عمل میں لانے کے لئے دستور میں جنتا کو کچھ حق دیئے گئے ھیں........"

اِس عبارت سے بچے کے دل پر یہ اثر رہ سکتا ھے کہ حق سرکار نے جنتا کو دیئے ھیں جب کہ بات ایسی نہیں ھے . اصل میں دستور یعنی ودھان جنتا نے اپنی طرف سے بھیجے ھوئے آدمیوں کی معرفت تیار کرا کر اُس سرکار کے ھاتھ میں سونپا ھے جسے جنتا نے خود بنایا ھے اور جس میں اُن بچوں کے ماں باپ کا بھی ھاتھ ھے جن بچوں کے ھاتھ میں یہ کتاب پہنچے گی . اسلئے اوپر کی عبارت کو اِسطرح لکھنا ٹھیک رھتا—

'اوپر لکھے ھوئے اصولوں کو عمل میں لانے کے لئے دستور میں جنتا نے اپنے حق گنا دئے ھیں' جو اُس کے پیدائشی اور بنیادی حق ھیں .

اسی طرح کی بھولیں کتاب میں دو ایک جگہ اور ھیں . ھم کہنا تو یہ چاھتے تھے کہ یہ کتاب اِس طرح درست کرکے ھی بچوں کے ھاتھ میں دی جانی چاھئے تھی پر اب اتنا ھی کہنا کافی ھے کہ دوسری چھپائی میں اسے ٹھیک کردیا جائے .

आर्थिक-समीक्षा

(कुल हिन्द काँगरेस कमेटी के माली, राजकाजी खोज महकमे का पंद्रह रोज़ा अख़बार)

सम्पादक—भाई हर्शदेव मालवीय; निकालने वाले, दफ़्तर कुल हिन्द कांगरेस कमेटी, नई दिल्ली. सालाना चन्दा चार रुपए.

آرتھک سمیکشا

(کل ھند کانگریس کمیٹی کے مالی' راج کاجی کھوج محکمہ کا پندرہ روزہ اخبار)

سمپادک—بھائی ھرش دیو مالوی؛ نکالنے والے' دفتر کل ھند کانگریس کمیٹی' نئی دلی . سالانہ چندہ چار روپے .

इस किताब में गांधी जी के फ़्रान्टियर के दौरे का आँखों देखा हाल है साथ ही साथ फ़्रान्टियर का भूगोल, काम लायक़ इतिहास भी दे दिया गया है. यह किताब हर भारती को ज़रूर पढ़ लेनी चाहिये. इस किताब को पढ़ने से यह काम की बातें मालूम होंगी—

1—ख़ुदाई ख़िदमतगारों की तहरीक क्या थी.

2—अंगरेज़ों ने सता सता कर पठान क़ौम को लूटमार की आदत डाल दी थी. इस आदत को छुड़ाने के लिये इन ख़ुदाई ख़िदमतगारों ने क्या किया.

3—ख़ुदाई ख़िदमतगार राजकाजी मैदान में कब और कैसे आए.

4—कॉंगरेस के साथ मिलकर ख़ुदाई ख़िदमतगारों ने हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये क्या क्या तकलीफ़ें सहीं.

5—किस तरह तलवार के भक्त यह ख़ुदाई ख़िदमतगार अहिन्सा के भक्त बन गए और लूट मार छोड़कर लोक सेवा के काम में लग गए.

6—इस किताब को पढ़कर पठानों का स्वभाव समझ में आ जायगा और यह पता लग जायगा कि पठान दोस्त बनकर किस तरह दोस्त की ख़ातिर जान पर खेल जाता है.

7—पठान नाम धर्म के ख़याल से नहीं पड़ा, बोली के ख़याल से पड़ा है. जो पश्तो बोलते हैं वह सब पठान कहे जाते हैं, फिर चाहे वह हिन्दू हों, मुसलमान हों या किसी भी धर्म को मानते हों.

किताब के अन्दर बहुत सी तस्वीरें भी हैं और दाम के लिहाज़ से यह किताब बहुत सस्ती है.

—अ.

اِس کتاب میں گاندھی جی کے فرانٹیر کے دورے کا
ہوں دیکھا حال ہے ۔ ساتھ ہی ساتھ فرانٹیر کا بھوگول،
لائق اِتہاس بھی دے دیا گیا ہے ۔ یہ کتاب ہر بھارتی
ضرور پڑھ لینی چاہئے ۔ اِس کتاب کو پڑھنے سے یہ کام
باتیں معلوم ہونگی —

1—خدائی خدمت گاروں کی تحریک کیا تھی ۔

2—انگریزوں نے ستا ستا کر پٹھان قوم کی لوٹ مار
عادت ڈال دی تھی ۔ اُس عادت کو چھڑانے کے لئے
خدائی خدمتگاروں نے کیا کیا ۔

3—خدائی خدمتگار راج کاجی میدان میں کب
کیسے آئے ۔

4—کانگریس کے ساتھ ملکر خدائی خدمت گاروں
ہندستان کی آزادی کے لئے کیا کیا تکلیفیں سہیں ۔

5—کس طرح تلوار کے بھگت یہ خدائی خدمتگار
اہنسا کے بھگت بن گئے اور لوٹ مار چھوڑ کر لوک سیوا
کام میں لگ گئے ۔

6—اِس کتاب کو پڑھکر پٹھانوں کا سوبھاؤ سمجھ
میں آجائیگا اور یہ پتہ لگ جائیگا کہ پٹھان دوست
بنکر کس طرح دوست کی خاطر جان پر کھیل جاتا ہے ۔

7—پٹھان نام دھرم کے خیال سے نہیں پڑا، بولی کے
خیال سے پڑا ہے ۔ جو پشتو بولتے ہیں وہ سب پٹھان
کہے جاتے ہیں، پھر چاہے وہ ہندو ہوں، مسلمان ہوں یا
کسی بھی دھرم کو مانتے ہوں ۔

کتاب کے اندر بہت سی تصویریں بھی ہیں اور دام کے
لحاظ سے کتاب بہت سستی ہے ۔

—ا.

आपका बच्चा, उसकी सेहत और परवरिश

लेखक—डाक्टर पी. राज. मूँगा. लिखावट—उरदू.

दाम—तीन रुपए-सफ़े—दो सौ पैंसठ.

मिलने का पता—मक्तबा जामिया लिमिटेड, जामिया नगर, देहली.

यह किताब पढ़ी लिखी औरतों के लिये लिखी गई है. जो अच्छी उरदू नहीं जानतीं वह इससे पूरा फ़ायदा नहीं उठा सकतीं. कुछ तस्वीरें और नक़्शे भी दिये गए हैं, इससे किताब के समझने में आसानी होती है. इसमें ज़्यादातर वह तरीक़े बतलाए गए हैं जो अस्पतालों में काम आते हैं या अमीर घरों में जिनसे काम लिया जाता है. दवाएँ सब अंगरेज़ी हैं, यह उन्हीं के काम की है जो शहरों में नीम अंगरेज़ी ढंग से रहते हैं.

—अ.

آپ کا بچہ، اُس کی صحت اور پرورش

لیکھک—ڈاکٹر پی ۔ راج ۔ مونگا ۔ لکھاوٹ—اُردو ۔

دام تین روپئے—صفحے—دو سو پینسٹھ ۔

ملنے کا پتہ—مکتبہ جامعہ لمیٹڈ، جامعہ نگر
دہلی ۔

یہ کتاب پڑھی لکھی عورتوں کے لئے لکھی گئی ہے
جو اچھی اُردو نہیں جانتیں وہ اِس سے پورا فائدہ نہیں
اٹھا سکتیں ۔ کچھ تصویریں اور نقشے بھی دئے گئے
ہیں، اُس سے کتاب کے سمجھنے میں آسانی ہوتی ہے ۔
اِس میں زیادہ تر وہ طریقے بتلائے گئے ہیں جو ہسپتالوں
میں کام آتے ہیں، یا امیر گھروں میں جن سے کام لیا
جاتا ہے ۔ دوائیں سب انگریزی ہیں، یہ اُنہیں کے کام کی
ہے جو شہروں میں نیم انگریزی ڈھنگ سے رہتے ہیں ۔

—ا.

मेरे दर्द की तकलीफ़, उस दुखिया से पूछो जो सह सके, न बेहोश हो !

यह खूब कहा !

"दुख सहके सुख दुगना हो जाता है !"

तो, क्या जान के, आज के सुख के कारन दुख दिया था ?

दिल के टुकड़े तो गिनो !

मुझे अधूरा ही सुख बहुत होता !

जो मुझपे गुज़री तुमने सही होती,

तो पूछती 'शिकवा कब खतम होता है ?'

तुमसे क्या पूछूँ कि तुमपे क्या गुज़री,

तुम्हारे दिल को लगती तो यों तड़पता छोड़ते !

अब कहिये इसकी क्या समालोचना की जाय ?

—म.

میرے درد کی تکلیف' اُس دکھیا سے پوچھو

جو سہہ سکے' نہ بےہوش ہو !

یہ خوب کہا !

" دکھ سہ کے سکھ دگنا ہوجاتا ہے !"

تو' کیا جان کے' آج کے سکھ کے کارن دکھ دیا تھا ؟

دل کے ٹکڑے تو گنو !

مجھے ادھورا ہی سکھ بہت ہوتا !

جو مجھپہ گزری تم نے سہی ہوتی'

تو پوچھتی ' شکوہ کب ختم ہوتا ہے ؟'

تم سے کیا پوچھوں کہ تم پہ کیا گزری'

تمہارے دل کو لگتی تو یوں تڑپتا چھوڑتے

اب کہئے اس کی کیا سمالوچنا کی جائے ؟

م—

राज-भाषा बोधनी

लेखक—श्री देवव्रत विद्यार्थी, लिखावट—हिन्दी.

दाम—दो रुपये. सफ़े—दो सौ सत्तावन.

मिलने का पता—अखिल भारतीय हिन्दी परिशद. 9, फ़ीरोज़शाह रोड, नई दिल्ली.

राज-भाषा बोधनी के नाम से तो यह पहिली बार ही निकली है पर जैसा इस किताब के अंगरेज़ी में लिखे परिचय से पता चलता है यह पहिले "हिन्दी सेल्फ़ टाट फ़ार नान हिन्दी एम्प्लीज़" के नाम से निकल चुकी है. किताब खासी लिखी गई है और उन लोगों के बड़े काम की है जो हिन्दी सीखना चाहते हैं. पर यह है उन्हीं लोगों के लिये, जो अंगरेज़ी जानते हों और हिन्दी सीखना चाहते हों. यह किताब आम आदमियों के इतने काम की नहीं है, जितनी उन आदमियों के काम की है, जो पार्लियामेन्ट के मेम्बर हैं, क्योंकि उन्हीं को निगाह में रखकर लिखी गई है. छापे की भूलें कम ही हैं, और जो हैं उनकी एक सूची दे दी गई है. दो रुपए में सस्ती ही है.

—म.

راج بھاشا بودھنی

لیکھک — شری دیوورت ودیارتھی' لکھاوٹ — ہندی.

دام — دو روپئے . صفحے — دوسو ستاون .

ملنے کا پتہ — اکھل بھارتیہ ہندی پریشد .

9' فیروز شاہ روڈ' نئی دلی .

راج بھاشا بودھنی کے نام سے تو یہ پہلی بار ہی نکلی ہے پر جیسا اِس کتاب کے انگریزی میں لکھے پریچے سے پتہ چلتا ہے یہ پہلے " ہندی سیلف ٹاٹ فارنان ہندی امپلیز" کے نام سے نکل چکی ہے . کتاب خاصی لکھی گئی ہے اور اُن لوگوں کے بڑے کام کی ہے جو ہندی سیکھنا چاہتے ہیں . پر یہ ہے اُنہیں لوگوں کے لئے' جو انگریزی جانتے ہوں اور ہندی سیکھنا چاہتے ہوں . یہ کتاب عام آدمیوں کے اتنے کام کی نہیں ہے' جتنی اُن آدمیوں کے کام کی ہے' جو پارلیمنٹ کے ممبر ہیں' کیونکہ اُنہیں کو نگاہ میں رکھکر لکھی گئی ہے . چھاپے کی بھولیں کم ہی ہیں' اور جو ہیں اُن کی ایک سوچی دے دی گئی ہے. دو روپئے میں سستی ہی ہے .

م—

गांधी जी बादशाह खां के देश में

लेखक—श्री प्यारे लाल. लिखावट—उर्दू.

सफ़े—352, दाम—तीन रुपए.

मिलने का पता—मक्तबा जामिया लिमिटेड, जामियानगर, देहली.

گاندھی جی بادشاہ خاں کے دیش میں

لیکھک — شری پیارے لال' لکھاوٹ — اُردو .

صفحے 352' دام — تین روپے .

ملنے کا پتہ — مکتبہ جامعہ لمیٹڈ' جامعہ نگر' دہلی.

कुछ किताबें

परछाईं

लेखक—आसिफ़ अली साहब, गवरनर, आसाम.

लिखावट—उरदू.

दाम—चार रुपया. सफ़े—इक्यानवे.

मिलने का पता—अंजुमन तरक़्क़ी उरदू, अलीगढ़.

कहीं कहीं इक्का दुक्का शब्दों को छोड़कर किताब की इबारत ख़ासी आसान है. अगर यह ज्यों की त्यों नागरी लिखावट में छाप दी जाय तो वह लोग भी ख़ूब रस ले सकते हैं जो उरदू लिखावट नहीं जानते. बोल चाल की भाशा में इतनी गहरी किताब लिखी जा सकती है यह इस बात का सबूत है. आदमी के पास जब कुछ कहने को होता है और वह इतना ज्यादा होता है कि वह ख़ुद फूट निकलता है तो ज्यादातर भाशा वही रहती है जो उसने मां की गोद में सीखी होती है और अपने हमजोलियों के साथ बोली होती है.

उरदू अदब में यह अपने ढंग की निराली चीज है.

'परछाईं' इसका नाम है और परछाईं को लेकर ही जीवन के एक पहलू को दिल पकड़ भाशा में दर्शाया गया है. इसे पढ़ते पढ़ते हम अपने आप को भूल गये, यह हमें याद ही न रहा कि हमें इसकी रिव्यू करना है. इस किताब की समालोचना नहीं हो सकती. इसलिये हम कहीं से इस किताब को खोलते हैं और वहीं से कुछ लिखे देते हैं. हमारे पढ़ने वाले समझ लें कि सब की सब किताब ऐसी ही है—

(सफ़ा पचास— 4.)

तुम्हारे पत्थर दिल को क्या ख़बर ?

जो मुझपे बीती, मेरे दिल से पूछो !

या सुनने गुनने वाल से !

मेरी बेचैनी,

समुन्दर की मौजों में देखो !

मेरी तड़प का हाल,

उस कबूतर से पूछो जो बाज के पंजों में हो !

کچھ کتابیں

پرچھائیں

لیکھک—آصف علی صاحب، گورنر، آسام .

لکھاوٹ — اُردو .

دام — چار روپیہ . صفحے—اِکیانوے .

ملنے کا پتہ — انجمن ترقی اُردو، علیگڈھ .

کہیں کہیں اِکا دکا شبدوں کو چھوڑ کر کتاب کی عبارت خاصی آسان ہے . اگر یہ جیوں کی تیوں ناگری لکھاوٹ میں چھاپ دی جائے تو وہ لوگ بھی خوب رس لے سکتے ہیں جو اُردو لکھاوٹ نہیں جانتے . بول چال کی بھاشا میں اتنی گہری کتاب لکھی جاسکتی ہے یہ اس بات کا ثبوت ہے . آدمی کے پاس جب کچھ کہنے کو ہوتا ہے اور وہ اِتنا زیادہ ہوتا ہے کہ وہ خود پھوٹ نکلتا ہے تو زیادہ تر بھاشا وہی رہتی ہے جو اُس نے ماں کی گود میں سیکھی ہوتی ہے اور اپنے ہمجولیوں کے ساتھ بولی ہوتی ہے .

اُردو ادب میں یہ اپنے ڈھنگ کی نرالی چیز ہے . 'پرچھائیں' اِس کا نام ہے اور پرچھائیں کو لیکر ہی جیون کے ایک پہلو کو دل پکڑ بھاشا میں درشایا گیا ہے . اِسے پڑھتے پڑھتے ہم اپنے آپ کو بھول گئے' یہ ہمیں یاد ہی نہ رہا کہ ہمیں اِسکی ریویو کرنا ہے . اِس کتاب کی سمالوچنا نہیں ہوسکتی اس لئے ہم کہیں سے اس کتاب کو کھولتے ہیں اور وہیں سے کچھ لکھ دیتے ہیں . ہمارے پڑھنے والے سمجھ لیں کہ سب کی سب کتاب ایسی ہی ہے —

(صفحہ پچاس -- 4 .)

تمہارے پتھر دل کو کیا خبر ؟

جو مجھپہ بیتی' میرے دل سے پوچھو !

یا سننے گننے والوں سے !

میری بے چینی'

سمندر کی موجوں میں دیکھو !

میری تڑپ کا حال'

اُس کبوتر سے پوچھو جو باز کے پنجوں میں ہو !

मां वहाँ आ पहुँचीं और बोलीं—"क्यों नाहक झगड़ते हो. तुम तीनों के हाथ सुन्दर हैं."

पर इससे फ़ैसला न हुआ. इतने में एक भिकारी आ पहुंचा. उसने गिड़गिड़ाकर भीक माँगी. रामू श्यामू दोनों ने उसे डाँटकर कहा—"पहले यह बताओ कि हम तीनों में किसके हाथ सबसे अधिक सुन्दर हैं ? फिर तुम्हें खाने को देंगे."

भिकारी की आँखें भर आईं. उसने रोते हुए जवाब दिया—"बेटा, मैं क्या जानूं किसके हाथ सुन्दर हैं. मुझे भूक लगी है. एक रोटी दे दो."

सरला को भिकारी पर दया आई. वह दौड़ी हुई घर में गई और अपने खाने की रोटियाँ लाकर भिकारी के हाथों पर रख दीं. भिकारी जब रोटी लेकर चला गया तब रामू और श्यामू से उनकी मां ने कहा—"तुम दोनों के हाथ सुन्दर नहीं हैं. हाथ तो सुन्दर इस छोटी लड़की के हैं, जिसने भूके प्यासे की सुध ली."

मां की यह बात सुनकर रामू और श्यामू बहुत लज्जित हुए. सच है, ग़रीबों की मदद करने वाले ही संसार में अच्छे कहे जाते हैं.

ماں وہاں آپہنچیں اور بولیں—"کیوں ناحق جھگڑتے ہو. تم تینوں کے ہاتھ سندر ہیں".

پر اس سے فیصلہ نہ ہوا. اتنے میں ایک بھکاری آپہنچا. اُس نے گڑگڑا کر بھیک مانگی. رامو شیامو دونوں نے اسے ڈانٹ کر کہا—"پہلے یہ بتاؤ کہ ہم تینوں میں کس کے ہاتھ سب سے ادھک سندر ہیں ؟ پھر تمہیں کھانے کو دینگے".

بھکاری کی آنکھیں بھر آئیں. اسنے روتے ہوئے جواب دیا—"بیٹا' میں کیا جانوں کس کے ہاتھ سندر ہیں. مجھے بھوک لگی ہے. ایک روٹی دیدو".

سرلا کو بھکاری پر دیا آئی. وہ دوڑی ہوئی گھر میں گئی اور اپنے کھانے کی روٹیاں لاکر بھکاری کے ہاتھوں پر رکھدیں. بھکاری جب روٹی لے کر چلا گیا تب رامو اور شیامو سے اُنکی ماں نے کہا—"تم دونوں کے ہاتھ سندر نہیں ہیں. ہاتھ تو سندر اِس چھوٹی لڑکی کے ہیں' جس نے بھوکے پیاسے کی سدھ لی".

ماں کی یہ بات سن کر رامو اور شیامو بہت لجت ہوئے. سچ ہے' غریبوں کی مدد کرنے والے ہی سنسار میں اچھے کہے جاتے ہیں.

झिल मिल तारे

(भाई अशोक)

झिल मिल तारे, झिल मिल तारे !
लगते हो क्यों इतने प्यारे ?
रोज़ सबेरे क्यों छिप जाते ?
और रात को क्यों उग आते ?

छोटे बड़े अनोखे तारे !
रहते हो क्यों हम से न्यारे ?
दूर कहाँ है वास तुम्हारा ?
तुम से है कुछ काम हमारा.

जग को तुम प्रकाश हो देते,
बदले में न कभी कुछ लेते.
तुम कितने हो परोपकारी,
धन्य तुम्हारी महिमा न्यारी.

कहो, चाँद से क्या डरते हो ?
झिल मिल झिल मिल जो करते हो.
यदि डरते हो तो बतलाओ,
मुझ से अब तुम मत शरमाओ.

जियो सदा ऐ झिल मिल तारे,
बने रहो तुम सब के प्यारे.
नित्य रात को रहो चमकते,
रहो चाँद के साथ दमकते.

جھل مل تارے

(بھائی اشوک)

جھل مل تارے' جھل مل تارے !
لگتے ہو کیوں اتنے پیارے ؟
روز سویرے کیوں چھپ جاتے ؟
اور رات کو کیوں اُگ آتے ؟

چھوٹے بڑے انوکھے تارے !
رہتے ہو کیوں ہم سے نیارے ؟
دور کہاں ہے واس تمہارا ؟
تم سے ہے کچھ کام ہمارا.

جگ کو تم پرکاش ہو دیتے'
بدلے میں نہ کبھی کچھ لیتے.
تم کتنے ہو پروپکاری'
دھنیہ تمہاری مہما نیاری.

کہو' چاند سے کیا ڈرتے ہو ؟
جھل مل جھل مل جو کرتے ہو.
یدی ڈرتے ہو تو بتلاؤ'
مجھسے اب تم مت شرماؤ.

جیو سدا اے جھل مل تارے'
بنے رہو تم سب کے نیارے.
نتیہ رات کو رہو چمکتے'
رہو چاند کے ساتھ دمکتے.

शायद घर पर यह भी पढ़ाने आती थी, मगर केवल शुरुआती शिक्षा के लिये. लड़की की असली शिक्षा तो इन चिट्ठियों से ही पूरी हुई. और वह शिक्षा भी कैसी ! ज्ञान की शायद ही कोई ऐसी शाखा बची हो, जिसकी बाबत ज़रूरत भर इन चिट्ठियों में न बताया गया हो. आज पचास बरस बाद भी जो विषय आम तौर से लड़कियों की पढ़ाई में शामिल नहीं किये जाते, उन सब की तालीम इन चिट्ठियों में दी गई है. अर्थ विद्या, गृहस्थ विद्या, प्रानी विद्या, बनस्पति विद्या, इतिहास, जुग़राफ़िया, ज्योतिश, हिसाब, दर्शन और नीति सभी तो आ गए, और इसके अलावा खाने पीने, रहने सहने, सेहत वग़ैरह के सम्बन्ध में साधारन ज्ञान की बातें हर चिट्ठी में भरी पड़ी हैं. मैं अपने को एक पढ़ी लिखी लड़की मानती हूँ और मैंने कालिज की शिक्षा भी पाई है, मगर इन चिट्ठियों को पढ़ कर मेरी तो जैसे नए सिरे से फिर तालीम हो गई. इतनी नई बातें मुझ को मालूम हुई हैं, जिनको स्कूल और कालिज में जानने का कभी कोई मौक़ा ही न मिला क्योंकि वह हमारी पढ़ाई का कोई हिस्सा थीं ही नहीं.

मेरी यह ख़ुश क़िस्मती है कि मुझको यह चिट्ठियां पढ़ने को मिलीं, और इनको पढ़कर मैं विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि यही सच्चे मानों में शिक्षा है, जिससे ज्ञान, केवल इम्तहान पास करने के लिये बुद्धि का बोझ न बन कर, हमारे शरीर, दिमाग़ और आत्मा का बल बढ़ा सकता है, हमारा चरित्र बना सकता है और हमें अपने देश का एक उपयोगी नागर बनने के लायक़ कर सकता है. 'नया हिन्द' के ज़रिये यह चिट्ठियाँ हर महीने आपको पढ़ने के लिये मिलती रहेंगी.

अगस्त के नम्बर में जब पहली चिट्ठी छपेगी तब आपको यह ज़रूर मालूम हो जायगा कि किस बाप ने अपनी किस बेटी को यह चिट्ठियाँ लिखी थीं.

आपकी दीदी
योगमाया

सुन्दर हाथ

(भाई सी० वी० रामकृश्नन, देहली)

दोपहर का समय था. रामू श्यामू दोनों आँगन में चौकी पर बैठे बातें कर रहे थे. पास ही उनकी छोटी बहन सरला भी बैठी हुई थी. बात ही बात में दोनों भाई आपस में कहने लगे "बताओ हम तीनों में किसका हाथ सबसे अधिक सुन्दर है ?"

दोनों भाई बड़े नटखट थे. झट दौड़ कर अन्दर गए, साबुन से हाथ धोए और आकर बैठ गए. पर सरला अपनी जगह से न हटी. दोनों को झगड़ते हुए देख कर उनकी

شاید گھر پر یہی پڑھانے آتی تھی' مگر کیول شروعاتی شکشا کے لئے. لڑکی کی اصلی شکشا تو اِن چٹھیوں سے ہی پوری ہوئی. اور یہ شکشا بھی کیسی ! گیان کی شاید ہی کوئی ایسی شاکھا بچی ہو' جسکی بابت ضرورت بھر اِن چٹھیوں میں نہ بتایا گیا ہو. آج پچاس برس بعد بھی جو وشے عام طور سے لڑکیوں کی پڑھائی میں شامل نہیں کئے جاتے اُن سب کی تعلیم اِن چٹھیوں میں دی گئی ہے. ارتھ ودیا' گرہستھ ودیا' پرانی ودیا' بنسپتی ودیا' اِتہاس' جغرافیہ' جیوتش' حساب' درشن اور نیتی سبھی تو آگئے' اور اِسکے علاوہ کھانے پینے' رہنے سہنے' صحت وغیرہ کے سمبندھ میں سادھارن گیان کی باتیں ہر چٹھی میں بھری پڑی ہیں. میں اپنے کو ایک پڑھی لکھی لڑکی مانتی ہوں اور میں نے کالج کی شکشا بھی پائی ہے' مگر اِن چٹھیوں کو پڑھکر میری تو جیسے نئے سرے سے پھر تعلیم ہوگئی. اِتنی نئی باتیں مجھکو معلوم ہوئی ہیں' جنکو اسکول اور کالج میں جاننے کا کبھی کوئی موقعہ ہی نہ ملا کیونکہ وہ ہماری پڑھائی کا کوئی حصہ تھیں ہی نہیں.

میری یہ خوش قسمتی ہے کہ مجھکو یہ چٹھیاں پڑھنے کو ملیں' اور اِن کو پڑھکر میں وشواس کے ساتھ کہہ سکتی ہوں کہ یہی سچے معنوں میں شکشا ہے' جس سے گیان' کیول امتحان پاس کرنے کے لئے بدھی کا بوجھ نہ بن کر' ہمارے شریر' دماغ اور آتما کا بل بڑھاسکتا ہے' ہمارا چرتر بناسکتا ہے اور ہمیں اپنے دیش کا ایک اُپیوگی ناگر بننے کے لائق کرسکتا ہے. 'نیا ہند' کے ذریعے یہ چٹھیاں ہر مہینے آپ کو پڑھنے کے لئے ملتی رہیں گی.

اگست کے نمبر میں جب پہلی چٹھی چھپیگی تب آپ کو یہ ضرور معلوم ہوجائیگا کہ کس باپ نے اپنی کس بیٹی کو یہ چٹھیاں لکھی تھیں.

آپ کی دیدی
یوگ مایا

سندر ہاتھ

(بھائی سی. وی. رام کرشنن' دہلی)

دوپہر کا سمے تھا. رامو شیامو دونوں آنگن میں چوکی پر بیٹھے باتیں کررہے تھے' پاس ہی اُنکی چھوٹی بہن سرلا بھی بیٹھی ہوئی تھی. بات ہی بات میں دونوں بھائی آپس میں کہنے لگے—"بتاؤ ہم تینوں میں کس کا ہاتھ سب سے ادھک سندر ہے ؟"

دونوں بھائی بڑے نٹ کھٹ تھے. جھٹ دوڑ کر اندر گئے' صابن سے ہاتھ دھوئے اور آکر بیٹھ گئے. پر سرلا اپنی جگہ سے نہ ہٹی. دونوں کو جھگڑتے ہوئے دیکھکر اُن کی

हाथ लग गया वरना वह भी नहीं. हमारी माओं ने नहीं तो हमारी दादी नानी ने तो यह ज़माना ज़रूर देखा था.

मगर इसी काले समय में हिन्दुस्तान का भाग्य करवट ले रहा था. जिन हिन्दुस्तानियों ने सोते ही सोते अपने देश को दूसरों के हाथ सौंप दिया था, उन्हीं की सन्तान ने देश को इस गढ़े में से निकालने की पहली कोशिश की. 1857 के बाद देश भर मानो जाग सा उठा. हमारे पतन के कारन ढूंढे जाने लगे, और उन्होंने देखा कि राजकाजी ग़फ़लत के साथ साथ हमारे समाज, हमारे कुटुम्ब और हमारे निजी आचरन में ऐसी बुराइयां आ गई थीं जिनको दूर किये बिना देश का उद्धार नहीं हो सकता था. हिन्दुस्तानी समाज में औरतों की गिरी हुई दशा की ओर उनका ध्यान ख़ास तौर से गया, औरतों की पढ़ाई लिखाई के लिये आन्दोलन चला. सभाएँ हुईं, प्रचार हुआ. मगर इस मैदान में मंच पर से बोलने वालों और अख़बारों में लेख लिखने वालों से बढ़ कर काम उन लोगों ने किया, जिन्होंने नारी शिक्षा के इस ऊँचे असूल को अमली रूप दिया और समाज के कड़े विरोध का सामना करके, और अपने कुन्बे के बड़े बूढ़ों के सख़्त बुरा भला कहने पर भी, अपनी लड़कियों को पढ़ाया. हमारे देश के कोने कोने में आज लड़कियों के लिये जो स्कूल और कालिज खुले हुए हैं, और लड़कों से ज़्यादा लड़कियों की पढ़ाई पर जो ज़ोर दिया जाता है, वह इन्हीं महापुरुषों की अनथक कोशिशों का फल है.

इस लेख के शुरू में जो चिट्ठी की तसवीर छापी गई है वह उन चिट्ठियों में से एक चिट्ठी का टुकड़ा है जो सन 1907 में एक बाप ने अपनी बेटी को लिखी थीं. बाप एक जवान इंजीनियर था जो जेठ बैसाख की लू लपटों की परवाह न करके घोड़े पर चढ़ कर सैकड़ों मील का सफ़र करके पच्छिमी पंजाब में नहरें खुदवा कर रेगिस्तान को गुलज़ार बना रहा था. बेटी दिल्ली के बिचले दरजे के कुल की ग्यारह बारह बरस की लड़की थी, जिसकी लगभग सब सहेलियों और और हमउम्र लड़कियों की शादियां हुए भी कई बरस हो गए थे. इस लड़की के बाप ने उसकी इतनी जल्दी शादी करने से साफ़ इनकार कर दिया था और इसी कारन अपने कुन्बे, अपनी बिरादरी और अपने समाज में काफ़ी बुराई भी उठाई थी. दिल्ली में उस समय लड़कियों के लिये शायद कोई स्कूल वग़ैरा था ही नहीं, और अगर एक आध था भी तो एक भले घराने की लड़की को बाहर कौन निकाले. बाप अगर शहर में होता तो शायद इसका कुछ प्रबन्ध कर ही देता, मगर उसे तो बारह महीने बाहर ही रहना पड़ता था. पर लड़की को पढ़ाना भी ज़रूरी था, इसलिये सैकड़ों मील की दूरी से चिट्ठियोंके ज़रिये, उसने अपनी बेटी की तालीम शुरू की. एक आध उस्तानी

ہاتھ لگ گیا ورنہ وہ بھی نہیں. ہماری ماؤں نے نہیں تو ہماری دادی نانی نے تو یہ زمانہ ضرور دیکھا تھا.

مگر اسی کالے سمے میں ہندستان کا بھاگ کروٹ لے رہا تھا. جن ہندستانیوں نے سوتے ہی سوتے اپنے دیش کو دوسروں کے ہاتھ سونپ دیا تھا، انہیں کی سنتان نے دیش کو اس گڈھے میں سے نکالنے کی پہلی کوشش کی. 1857 کے بعد دیش بھر مانو جاگ سا اٹھا. ہمارے پتن کے کارن ڈھونڈے جانے لگے، اور انہوں نے دیکھا کہ راجکاجی غفلت کے ساتھ ساتھ ہمارے سماج، ہمارے کٹمب اور ہمارے نجی آچرن میں ایسی برائیاں آگئی تھیں جن کو دور کئے بنا دیش کا ادھار نہیں ہو سکتا تھا. ہندستانی سماج میں عورتوں کی گری ہوئی دشا کی اور انکا دھیان خاص طور سے گیا، عورتوں کی پڑھائی لکھائی کے لئے آندولن چلا. سبھائیں ہوئیں، پرچار ہوا. مگر اس میدان میں منچ پر سے بولنے والوں اور اخباروں میں لیکھ لکھنے والوں سے بڑھکر کام ان لوگوں نے کیا، جنہوں نے ناری شکشا کے اس اونچے اصول کو عملی روپ دیا اور سماج کے کڑے ورودھ کا سامنا کرکے، اور اپنے کنبے کے بڑے بوڑھوں کے سخت برا بھلا کہنے پر بھی، اپنی لڑکیوں کو پڑھایا. ہمارے دیش کے کونے کونے میں آج لڑکیوں کے لئے جو اسکول اور کالج کھلے ہوئے ہیں، اور لڑکوں سے زیادہ لڑکیوں کی پڑھائی پر جو زور دیا جاتا ہے، وہ انہیں مہاپرشوں کی انتھک کوششوں کا پھل ہے.

اس لیکھ کے شروع میں جو چٹھی کی تصویر چھاپی گئی ہے وہ ان چٹھیوں میں سے ایک چٹھی کا ٹکڑا ہے جو سن 1907 میں ایک باپ نے اپنی بیٹی کو لکھی تھیں. باپ ایک جوان انجینیر تھا جو جیٹھ بیساکھ کی لو لپٹوں کی پرواہ نہ کر کے گھوڑے پر چڑھکر سیکڑوں میل کا سفر کر کے پچھمی پنجاب میں نہریں کھدواکر ریگستان کو گلزار بنا رہا تھا. بیٹی دلی کے بچلے درجے کے کل کی گیارہ بارہ برس کی لڑکی تھی، جسکی لگ بھگ سب سہیلیوں اور ہمعمر لڑکیوں کی شادیاں ہوئے بھی کئی برس ہوگئے تھے. اس لڑکی کے باپ نے اس کی اتنی جلدی شادی کرنے سے صاف انکار کردیا تھا اور اسی کارن اپنے کنبے، اپنی برادری اور اپنے سماج میں کافی برائی بھی اٹھائی تھی. دلی میں اس سمے لڑکیوں کے لئے شاید کوئی اسکول وغیرہ تھا ہی نہیں، اور اگر ایک آدھ تھا بھی تو ایک بھلے گھرانے کی لڑکی کو باہر کون نکالے. باپ اگر شہر میں ہوتا تو شاید اسکا کچھ پربندھ کرہی دیتا، مگر اسے تو بارہ مہینے باہر ہی رہنا پڑتا تھا. پر لڑکی کو پڑھانا بھی ضروری تھا، اسلئے سیکڑوں میل کی دوری سے چٹھیوں کے ذریعے اسنے اپنی بیٹی کی [illegible] شروع کی. ایک آدھ استانی

बच्चों की दुनिया

بچوں کی دنیا

भाई बहनो,

बहुत दिन नहीं हुए हिन्दुस्तान में, खासकर उत्तरी हिन्दुस्तान में, स्कूल कालिजों की तो कौन कहे, लड़कियों की घर में भी पढ़ाई लिखाई की बात नहीं उठती थी. परदा ऐसा था कि एक ही घर में मर्द अलग और औरतें अलग रहती थीं. लड़कियों को पराया धन समझ जल्दी से जल्दी मां बाप उनका बोझा अपने सर से उतारने की कोशिश करते थे, और आठ आठ नौ नौ बरस की नन्ही बच्चियाँ दुलहिन बनती थीं, घर बसाती थीं और कभी कभी बिना अपने पतियों के दर्शन किये ही विधवा हो जाती थीं. जो भले मां बाप थे वह अपनी लड़कियों को सजाते बनाते थे और जेवरों से लाद देते थे, जो इतने भले नहीं थे वह प्यार से अधिक मार पीट से काम लेते थे, मगर किसी को भी इस बात का ध्यान नहीं आता था कि लड़कियों के लिये खाने पीने, कपड़े गहनों के अलावा कुछ दिमाग़ी ख़ूराक की भी जरूरत है. उनकी दुनी कठपुतलियों या सुन्दर गुड़ियों से बढ़ कर कुछ और नहीं थी. अगर किस्मत अच्छी हुई तो बारह बरस और कुछ जमा बाक़ी

بھائی بہنو !

بہت دن نہیں ہوئے ہندستان میں، خاص کر اُتری ہندستان میں، اسکول کالجوں کی تو کون کہے، لڑکیوں کی گھر میں بھی پڑھائی لکھائی کی بات نہیں اُٹھتی تھی. پردہ ایسا تھا کہ ایک ہی گھر میں مرد الگ اور عورتیں الگ رہتی تھیں. لڑکیوں کو پرایا دھن سمجھ جلدی سے جلدی ماں باپ اُنکا بوجھا اپنے سر سے اُتار نے کی کوشش کرتے تھے، اور آٹھ آٹھ نو نو برس کی ننھی بچیاں دلہن بنتی تھیں، گھر بساتی تھیں اور کبھی کبھی بنا اپنے پتیوں کے درشن کئے ہی ودھوا ہو جاتی تھیں. جو بھلے ماں باپ تھے وہ اپنی لڑکیوں کو سجاتے بناتے تھے اور زیوروں سے لاد دیتے تھے، جو اتنے بھلے نہیں تھے وہ پیار سے ادھک مارپیٹ سے کام لیتے تھے، مگر کسی کو بھی اس بات کا دھیان نہیں آتا تھا کہ لڑکیوں کے لئے کھانے پینے، کپڑے گہنوں کے علاوہ کچھ دماغی خوراک کی بھی ضرورت ہے. اُنکی دنیا کٹھ پتلیوں یا سندر گڑیوں سے بڑھکر کچھ اور نہیں تھی، اگر قسمت اچھی ہوئی تو بارہ برس اور کچھ جمع باقی

किसान की मुसीबत नहीं दूर होने वाली है. अगर गाँव में मिलने वाले कच्चे माल को लेकर उसका तैयार माल किसान लोग बनाने लग जायँ तभी वह अपनी हालत को संभाल सकते हैं."

पढ़ाई या तालीम के सिलसिले में उन्होंने कहा—"धनवानों को चाहिये अपने गांव में ही पाठशालाएँ खोलें. इससे तालीम का ऐसा बन्दोबस्त होगा जिससे कि सभी जात के बालकों को एकसा लाभ पहुँचेगा. इन पाठशालाओं में महात्मा गांधी की बताई हुई नई तालीम के ढंग पर पढ़ाई होनी चाहिये. इसके मुताबिक़ अमीर ग़रीब, हर छोटी बड़ी जात के बच्चों को बढ़ई का काम, हल चलाने वग़ैरा की व्योहारी तालीम दी जायगी. इस तालीम की बदौलत समाज में बैठी हुई ऊँच नीच जड़ से ख़तम हो जायगी."

विनोबाजी की यह यात्रा गोदावरी नदी के किनारे मंचेरियल गांव पहुँचने पर 6 जून 1951 को पूरी हुई. 51 दिन के सफ़र में उन्होंने 51 गांव में क़याम किया और क़रीब दो सौ गांवों से होकर गुज़रे. अपनी इस यात्रा में क़रीब नौ हज़ार एकड़ ज़मीन उन्हें दान में मिली जिसकी तक़सीम के लिये तीन जनों की एक कमेटी उन्होंने बना दी है.

मंचेरियल गाँव से पैदल चलकर 27 जून को विनोबाजी अपने परमधाम आश्रम वापस पहुंच गए. सर्वोदय सम्मेलन, शिवरामपल्ली (हैदराबाद), में शिरकत करने के लिये विनोबाजी 8 मार्च को सवेरे अपने आश्रम से निकले थे. साढ़े तीन महीने की इस अनोखी यात्रा से देश भर का ध्यान विनोबाजी की तरफ़ गया है. बापू के जाने के बाद यह पहला मौक़ा है जब लोगों के कानों में प्यार और मुहब्बत की सुरीली तान सुनाई पड़ी है. तेलंगाना जैसे तूफ़ानी इलाक़े में उसका असर साफ़ साफ़ मालूम हो रहा है. •

—सुरेश रामभाई

• इस लेख में विनोबाजी की स्पीचों की रिपोर्टें हमने उन अंगरेज़ी बुलेटिनों से तरजुमा करके दी हैं जो हमें हैदराबाद रियासत के डायरेक्टर आफ़ इनफ़ारमेशन से लगातार मिलते रहे हैं. इसके लिये हम उनके एहसान मन्द हैं —लेखक.

کسان کی مصیبت نہیں دور ہونے والی ہے ۔ اگر گاؤں میں ملنے والے کچے مال کو لیکر اُس کا تیار مال کسان لوگ بنانے لگ جائیں تبھی وہ اپنی حالت کو سنبھال سکتے ہیں ۔"

پڑھائی یا تعلیم کے سلسلے میں اُنھوں نے کہا —" دھنوانوں کو چاہئیے اپنے گاؤں میں ہی پاٹھ شالائیں کھولیں ۔ اِس سے تعلیم کا ایسا بندوبست ہوگا جس سے کہ سبھی جات کے بالکوں کو ایک سا لابھ پہنچے گا ۔ اِن پاٹھ شالاؤں میں مہاتما گاندھی کی بتائی ہوئی نئی تعلیم کے ڈھنگ پر پڑھائی ہونی چاہئیے ۔ اِسکے مطابق امیر غریب' ہر چھوٹی بڑی جات کے بچوں کو بڑھئی کا کام' ہل چلانے وغیرہ کی بیوہاری تعلیم دی جائیگی ۔ اِس تعلیم کی بدولت سماج میں بیٹھی ہوئی اونچ نیچ جڑ سے ختم ہوجائیگی ۔"

ونوبا جی کی یہ یاترا گوداوری ندی کے کنارے منچیریل گاؤں پہنچنے پر 6 جون 1951 کو پوری ہوئی ۔ 51 دن کے سفر میں اُنھوں نے 51 گاؤں میں قیام کیا اور قریب دوسو گاؤں سے ہو کر گزرے ۔ اپنی اِس یاترا میں قریب نو ہزار ایکڑ زمین اُنھیں دان میں ملی جسکی تقسیم کے لئے تین جنوں کی ایک کمیٹی اُنھوں نے بنا دی ہے ۔

منچیریل گاؤں سے پیدل چلکر 27 جون کو ونوبا جی اپنے پرم دھام آشرم واپس پہنچ گئے ۔ سروودے سمیلن' شیو رام پلی (حیدرآباد)' میں شرکت کرنے کے لئے ونوبا جی 8 مارچ کو سویرے اپنے آشرم سے نکلے تھے ۔ ساڑھے تین مہینے کی اِس انوکھی یاترا سے دیش بھر کا دھیان ونوبا جی کی طرف گیا ہے ۔ باپو کے جانے کے بعد یہ پہلا موقع ہے جب لوگوں کے کانوں میں پیار اور محبت کی سریلی تان سنائی پڑی ہے ۔ تیلنگانہ جیسے طوفانی علاقے میں اُس کا اثر صاف صاف معلوم ہو رہا ہے ۔ •

—سریش رام بھائی

• اس لیکھ میں ونوبا جی کی اسپیچوں کی رپورٹیں ہم نے اُن انگریزی بلیٹنوں سے ترجمہ کر کے دی ہیں جو ہمیں حیدرآباد ریاست کے ڈائرکٹر آف انفارمیشن سے لگاتار ملتے رہے ہیں ۔ اِسکے لئے ہم اِن کے احسان مند ہیں —لیکھک ۔

कम्यूनिस्ट अपना काम कर रहे हैं और सरकार भी अपने तरीक़े से अपना काम कर रही है. मैं भी यहाँ पर कुछ काम अपने तरीक़े से कर रहा हूँ जिसका आधार प्रेम है, मुहब्बत है." यह प्रेम का रास्ता वही रास्ता है जो हाल ही में हमारे बापू दुनिया को बता कर गए हैं, यह वह सनातन रास्ता है जिसे संतों, पैग़म्बरों और अवतारों ने बारबार दोहराया है. तेलंगाना में दिन में सरकार का ज़ोर, रात में कम्यूनिस्टों का ज़ोर—इससे न कम्यूनिस्टों का भला होगा न सरकार का. जैसा विनोबा जी ने कहा—"पुलिस की होशियारी और कम्यूनिस्ट कारकरताओं में फूट की वजह से तेलंगाना के अन्दर के कम्यूनिस्ट हंगामे का ज़ोर-शोर कुछ अरसे के लिये भले ही मंदा पड़ जाय लेकिन जब तक हम शराब बन्दी करके और ज़मीन का दोबारा बँटवारा करके वहाँ की ग़रीबी का सवाल हल नहीं कर लेते तब तक कम्यूनिज़्म एक सवाल की शकल में बना ही रहने वाला है."

एक बार जब वरंगल जेल में कम्यूनिस्ट क़ैदियों से विनोबा जी मिले तो उन्होंने पूछा क्या इस तरह अमीरों को फिर से अपने घरों में बसा कर आप सवाल हल कर सकेंगे ? विनोबा जी ने जवाब दिया—"मुझे यक़ीन है कि दिल बदलते हैं. ज़मीन दान देने से आदमी के अन्दर रहने वाली भलाई और बुराई में भिड़ंत हो जायगी और फिर उनका नज़रिया संभल जायगा. पच्छिमी साइन्स और हिन्दुस्तानी फ़लसफ़े के मेल का नतीजा लाज़िमी तौर पर अच्छा और मीठा होगा. अहिंसा ही सब बुराइयों का इलाज है."

लेकिन यह प्रेम का रास्ता कोई हँसी खेल नहीं है. तलवार की धार पर चलना आसान है मगर प्रेम की धार इससे भी ज़्यादा पैनी और पतली है. विनोबा जी ने गावीचरला गाँव में कहा—"काँगरेस वाले तो जनता की सेवा कर नहीं सकते क्योंकि सेवा का उसूल काँगरेस के लिये एक मज़ाक़ हो गया है. समाजवादी किसी क़दर अच्छे हैं मगर वह भी सत्ता के पीछे पागल हो रहे हैं. ऐसी हालत में सर्वोदय समाज ही सौदा पटा सकता है."

हम ऊपर कह चुके हैं कि विनोबा जी ने गाँव वालों को कुएँ खोदने के लिये सलाह दी है. इस चीज़ पर उन्होंने बारबार इसरार किया है. एक गाँव में उन्होंने कहा—"हमें नहरें भी खोदनी चाहियें. नए कुएँ और नई नहरें खोदने से एक नया ज़माना आ जायगा जिसमें कोई आदमी भी बीस एकड़ सिंचाई की ज़मीन पाकर सन्तोश से रहेगा. हालाँकि अब सौ एकड़ से भी काम नहीं चलता है."[3] इसके अलावा वह चाहते हैं कि देहाती उद्योग-धन्धे बढ़ें—"बिना देहाती दस्तकारियों के केवल ज़मीनें रखकर,

کمیونسٹ اپنا کام کر رہے ہیں اور سرکار بھی اپنے طریقے سے اپنا کام کر رہی ہے . میں بھی یہاں پر کچھ کام اپنے طریقے سے کر رہا ہوں جس کا آدھار پریم ہے' محبت ہے ." یہ پریم کا راستہ وہی راستہ ہے جو حال ہی میں ہمارے باپو دنیا کو بتا کر گئے ہیں' یہ وہ سناتن راستہ ہے جسے سنتوں' پیغمبروں اور اوتاروں نے بار بار دوہرایا ہے . تیلنگانہ میں دن میں سرکار کا زور' رات میں کمیونسٹوں کا زور — اِس سے نہ کمیونسٹوں کا بھلا ہوگا نہ سرکار کا جیسا ونوبا جی نے کہا — "پولیس کی ہوشیاری اور کمیونسٹ کارکرتاؤں میں پھوٹ کی وجہ سے تیلنگانہ کے اندر کے کمیونسٹ ہنگامے کا زور شور کچھ عرصے کے لئے بھلے ہی مندا پڑ جائے لیکن جب تک ہم شراب بندی کرکے اور زمین کا دوبارہ بٹوارہ کرکے وہاں کی غریبی کا سوال حل نہیں کر لیتے تب تک کمیونزم ایک سوال کی شکل میں بنا ہی رہنے والا ہے ."

ایک بار جب ورنگل جیل میں کمیونسٹ قیدیوں سے ونوبا جی ملے تو انہوں نے پوچھا کیا اسطرح امیروں کو پھر سے اپنے گھروں میں بسا کر آپ سوال حل کر سکیں گے ؟ ونوبا جی نے جواب دیا "مجھے یقین ہے کہ دل بدلتے ہیں . زمین دان دینے سے آدمی کے اندر رہنے والی بھلائی اور برائی میں بھڑنت ہوجائیگی اور پھر اُن کا نظریہ سنبھل جائیگا . پچھمی سائنس اور ہندستانی فلسفے کے میل کا نتیجہ لازمی طور پر اچھا اور میٹھا ہوگا . اہنسا ہی سب برائیوں کا علاج ہے ."

لیکن یہ پریم کا راستہ کوئی ہنسی کھیل نہیں ہے . تلوار کی دھار پر چلنا آسان ہے مگر پریم کی دھار اِس سے بھی زیادہ پینی اور پتلی ہے . ونوبا جی نے گاوی چرلا گاؤں میں کہا — " کانگریس والے تو جنتا کی سیوا کر نہیں سکتے کیونکہ سیوا کا اصول کانگریس کے لئے ایک مذاق ہوگیا ہے . سماج وادی کسی قدر اچھے ہیں مگر وہ بھی ستتا کے پیچھے پاگل ہو رہے ہیں . ایسی حالت میں سرووَدے سماج ہی سودا پٹا سکتا ہے ."

ہم اوپر کہ چکے ہیں کہ ونوبا جی نے گاؤں والوں کو کنوئیں کھودنے کے لئے صلاح دی ہے . اس چیز پر اُنہوں نے بار بار اِصرار کیا ہے . ایک گاؤں میں اُنہوں نے کہا — "ہمیں نہریں بھی کھودنی چاہئیں . نئے کنوئیں اور نئی نہریں کھودنے سے ایک نیا زمانہ آجائیگا جس میں کوئی آدمی بھی بیس ایکڑ سینچائی کی زمین پاکر سنتوش سے رہے گا . حالانکہ اب سو ایکڑ سے بھی کام نہیں چلتا ہے ." اِسکے علاوہ وہ چاہتے ہیں کہ دیہاتی اُدیوگ دھندے بڑھیں — "بنا دیہاتی دستکاریوں کے کیول زمینیں رکھکر'

हम ऊपर कह चुके हैं कि तेलंगाना में कम्यूनिस्टों के हावी हो जाने की वजह विनोबाजी ने क्या बताई है. कम्यूनिस्टों की ज़ात से उन्हें कोई शिकायत नहीं है. वह उनसे मुहब्बत करते हैं और उनके दिल में कम्यूनिस्टों के लिये जगह है. एक गांव में प्रार्थना के बाद बोलते हुए विनोबाजी ने कहा—"मुझे मालूम हुआ कि इस गांव में कुछ आफ़त है क्योंकि कम्यूनिस्टों ने यहां कुछ काम किया है. मैं कम्यूनिस्टों को अपना भाई मानता हूँ. उनमें मेरे कई एक दोस्त हैं. कम्यूनिस्ट होना कोई गुनाह नहीं है. कम्यूनिस्ट होने के माने हैं ग़रीबों की सेवा करना." लेकिन विनोबाजी की यह पक्की राय है कि कम्यूनिस्टों का रास्ता मुल्क के लिये ठीक नहीं है. उसी स्पीच में उन्होंने कहा—"लेकिन कम्यूनिस्ट लोग हिंसा और ख़ून ख़राबी के कामों में लगे रहते हैं. यह बहुत ग़लत चीज़ है. इसी वजह से उनकी सारी की-कराई मेहनत मिट्टी में मिल जाती है···मेरी यह दिली इच्छा है कि मैं लोगों को यह समझा सकूँ कि जनता की असली सेवा करने का तरीक़ा अहिंसा का तरीक़ा ही है." एक दूसरी जगह पर उन्होंने कहा—"मैं कम्यूनिस्ट भाइयों को यह साफ़ तौर पर बता देना चाहता हूँ कि उनके लिये अब इसकी कोई ज़रूरत नहीं कि वह अमीरों को क़त्ल करें, क्योंकि अब तो लोकराज का ज़माना आ गया है. यह अमीर तो बिना पिस्तौल के ही मारे जा सकते हैं, क्योंकि हर बालिग़ आदमी को अब वोट देने का अख़तियार मिल चुका है. आगे आने वाला राज आम जनता का राज होगा. मैं कम्यूनिस्ट भाइयों से बिनती करता हूँ कि वह खुले में आयें और काम करें. अगर वह ऐसा करेंगे तो मैं उनका पूरा साथ दूंगा. अगर कम्यूनिस्ट हिंसा का रास्ता छोड़ दें तो सब अच्छे और नेक लोग उनकी मदद करेंगे. महात्मा गांधी कहा करते थे—'मैं कम्यूनिस्ट हूँ लेकिन मैं ख़ुदकुशी वाला हिंसा का रास्ता नहीं अपनाऊँगा.'"

यही नहीं, विनोबाजी और आगे जाते हैं. उन्होंने कहा—"मेरी उनसे आरज़ू है कि हिंसा करना बन्द करें और अगर वह ऐसा करलें तो मैं उनके साथ रहकर हिन्दुस्तान के कोने कोने में जाकर कम्यूनिज़्म का परचार करूँगा."

विनोबा जी का तरीक़ा प्रेम का तरीक़ा है. यही प्रेम का पाठ वह जगह जगह पढ़ाते हैं. एक गाँव में उन्होंने कहा—"आपको जो सारी हवा में फ़र्क़ दिखाई दे रहा है यह भगवान की बरकत है. अगर हर कोई भगवान पर भरोसा रखे तो भगवान ज़रूर रास्ता दिखलाता है. भगवान हर एक दिल में मौजूद है. हम उससे दुआ करें तो बहुत सा काम हो सकता है. मैं यहाँ कोई बंदूक़ लेकर या हकूमत की उभरती हुई कोई दूसरी ताक़त लेकर नहीं आया हूँ.

ہم اوپر کہ چکے ہیں کہ تیلنگانہ میں کمیونسٹوں کے
وی ہوجانے کی وجہ ونوبا جی نے کیا بتائی ہے.
یونسٹوں کی ذات سے انہیں کوئی شکایت نہیں ہے. وہ
سے محبت کرتے ہیں اور اُن کے دل میں کمیونسٹوں
لئے جگہ ہے. ایک گاؤں میں پرارتھنا کے بعد بولتے ہوئے
با جی نے کہا—" مجھے معلوم ہوا کہ اِس گاؤں میں
ہ جالارتی ہے کیونکہ کمیونسٹوں نے یہاں کچھ کام کیا
. میں کمیونسٹوں کو اپنا بھائی مانتا ہوں. اُن میں
رے کئی ایک دوست ہیں. کمیونسٹ ہونا کوئی گناہ
ں ہے. کمیونسٹ ہونے کے معنے ہیں غریبوں کی سیوا
ا." لیکن ونوبا جی کی یہ پکی رائے ہے کہ کمیونسٹوں
راستہ ملک کے لئے ٹھیک نہیں ہے. اسی اسپیچ میں
وں نے کہا—" لیکن کمیونسٹ لوگ ہنسا اور خون
رابی کے کاموں میں لگے رہتے ہیں. یہ بہت غلط چیز
. اِسی وجہ سے اُنکی ساری کی کرائی محنت مٹی میں
جاتی ہے..... میری یہ دلی اِچھا ہے کہ میں
وں کو یہ سمجھا سکوں کہ جنتا کی اصلی سیوا کرنے کا
یقہ اہنسا کا طریقہ ہی ہے." ایک دوسری جگہ پر
وں نے کہا—" میں کمیونسٹ بھائیوں کو یہ صاف
ر پر بتلا دینا چاہتا ہوں کہ اُن کے لئے اب اِسکی کوئی
ورت نہیں کہ وہ امیروں کو قتل کریں، کیونکہ اب تو
راج کا زمانہ آگیا ہے. یہ امیر تو بنا پستول کے ہی
رے جا سکتے ہیں، کیونکہ ہر بالغ آدمی کو اب ووٹ
نے کا اختیار مل چکا ہے. آگے آنے والا راج عام جنتا کا
ج ہوگا. میں کمیونسٹ بھائیوں سے ونتی کرتا ہوں کہ
کھلے میں آئیں اور کام کریں. اگر وہ ایسا کرینگے تو میں
کا پورا ساتھ دوں گا. اگر کمیونسٹ ہنسا کا راستہ چھوڑ
ں تو سب اچھے اور نیک لوگ اُنکی مدد کرینگے. مہاتما
دھی کہا کرتے تھے—' میں کمیونسٹ ہوں لیکن میں
ود کشی والا ہنسا کا راستہ نہیں اپناؤں گا'."

یہی نہیں، ونوبا جی اور آگے جاتے ہیں. اُنہوں نے
ا—" میری اُن سے آرزو ہے کہ ہنسا کرنا بند کریں اور
وہ ایسا کر لیں تو میں اُن کے ساتھ رہکر ہندستان کے
نے کونے میں جاکر کمیونزم کا پرچار کروں گا."

ونوبا جی کا طریقہ پریم کا طریقہ ہے. یہی پریم کا پاٹھ
جگہ جگہ پڑھاتے ہیں. ایک گاؤں میں اُنہوں نے کہا
—" آپ کو جو ساری ہوا میں فرق دکھائی دے رہا ہے
بھگوان کی برکت ہے. اگر ہر کوئی بھگوان پر بھروسہ
تو بھگوان ضرور راستہ دکھلاتا ہے. بھگوان ہر ایک دل
ں موجود ہے. ہم اُس سے دعا کریں تو بہت سا کام ہو
کتا ہے. میں یہاں کوئی بندوق لیکر یا حکومت کی
ھرتی ہوئی کوئی دوسری طاقت لیکر نہیں آیا ہوں.

लोगों की बेचैनी जाती रहेगी और अमन शान्ति क़ायम होगी. जो लोग दान वाली ज़मीनें पायें उनको सरकार की तरफ़ से तक़ावी वग़ैरा की दूसरी सहूलियतें मिलनी चाहियें. इसके अलावा सरकार को चाहिये कि वह एक क़ानून बनादे जिसमें यह साफ़ कर दिया जाये कि एक आदमी हद से हद कितनी ज़मीन अपने पास रख सकता है और इसी क़ानून में यह भी ज़ाहिर कर देना चाहिये कि बाक़ी ज़मीन ग़रीबों को दान दे दी जाय. अगर यह चीज़ें अमल में आने लगें तो कम्यूनिस्टों का नाम नहीं रहेगा."

इस के बाद बचते हैं बाक़ी तेलंगाना के बाशिन्दे. उनसे विनोबा जी ने कहा—"बालिग़ उमर वाले भाइयों को मैं एक सबक़ देना चाहता हूँ. वह यह कि शादी के समय वर को दक्षिना या दहेज के बजाय कुआं खुदवावें. इस तरह देश भर में कुएँ बन जायँगे जिनसे अपने देश की तरक़्क़ी होगी. नई तालीम और शादी के समय कुएँ खुदवाना इन दो तरीक़ों से सारा गांव गोकुल बन जायगा. गोकुल के माने हैं कि सभी के पास जो दौलत है उसका इस्तेमाल सभी कर सकें." हम यहाँ यह बतादें कि अपने परमधाम आश्रम में (जो वर्धा शहर से पांच मील की दूरी पर है) विनोबाजी ने आश्रम के भाई बहनों की मदद से एक कुआं खुद ही पार साल खोदा है जहाँ बिजली या बैल की जगह आश्रमवासी ही रहट खींचते हैं.

यह ख़याल पैदा होगा कि विनोबाजी ज़मीन का दान क्यों मांगते हैं? क्या पैसा लेकर और फिर उसे ग़रीबों में बांट कर सवाल का हल नहीं हो सकता? नहीं, हरगिज़ नहीं. इस बारे में विनोबाजी बहुत सख़्त हैं. उन्होंने एक जगह कहा—"मैं दान में रुपया नहीं लेता. असल बात यह है कि रुपए ने हिन्दुस्तान को तबाह कर दिया है. चीज़ों की जो क़ीमत है वह नहीं घटती-बढ़ती, रुपए की क़ीमत घटती-बढ़ती है. अनाज की क़ीमत मुस्तक़िल है. मैं तो लोगों को रुपए के चंगुल से छुड़ाना चाहता हूँ. रुपया तो महज़ एक ज़रिया है और यह दान देनेवाले के अन्दर घमंड पैदा कराता है. लेकिन ज़मीन-दान में तो ग़रीब का जन्मजात हक़ है. इसलिये मैं ज़मीन-दान लेता हूं······अगर हर कोई मुहब्बत के साथ ग़रीबों को अपनायेगा तो कम्यूनिस्टों का रंग आप से आप जाता रहेगा." विनोबाजी तो पिछले डेढ़ बरस से ज़्यादा हुआ इस चीज़ पर ख़ुद अमल कर रहे हैं. उन्होंने जीवन भर के लिये सिर्फ़ श्रम-दान (जिस्म की मेहनत की शक्ल में दान) लेना क़बूल किया है. इसी आधार पर उनका आश्रम चल रहा है जिसमें उनको ज़बरदस्त कामयाबी हुई है. उसकी तफ़सील में इस वक़्त हम नहीं जायँगे.

لوگوں کی بےچینی جاتی رہے گی اور امن شانتی قائم ہوگی. جو لوگ دان والی زمینیں پائیں انکو سرکار کی طرف سے تقاوی وغیرہ کی دوسری سہولتیں ملنی چاہئیں. اسکے علاوہ سرکار کو چاہئے کہ وہ ایک قانون بنادے جس میں یہ صاف کردیا جائے کہ ایک آدمی حد سے حد کتنی زمین اپنے پاس رکھ سکتا ہے اور اسی قانون میں یہ بھی ظاہر کردینا چاہئے کہ باقی زمین غریبوں کو دان دے دی جائے. اگر یہ چیزیں عمل میں آنے لگیں تو کمیونسٹوں کا نام نہیں رہے گا".

اسکے بعد بچتے ہیں باقی تیلنگانہ کے باشندے. اُن سے ونوبا جی نے کہا—"بالغ عمر والے بھائیوں کو میں ایک سبق دینا چاہتا ہوں. وہ یہ کہ شادی کے سمے بر کو دکشنا یا دہیز کے بجائے کنواں کھدوا دیں. اس طرح دیش بھر میں کنوئیں بن جائیں گے جن سے اپنے دیش کی ترقی ہوگی. نئی تعلیم اور شادی کے سمے کنوئیں کھدوانا اِن دو طریقوں سے سارا گاؤں گوکل بن جائیگا. گوکل کے معنے ہیں کہ سبھی کے پاس جو دولت ہے اُسکا استعمال سبھی کر سکیں". ہم یہاں یہ بتادیں کہ اپنے پرمدھام آشرم میں (جو وردھا شہر سے پانچ میل کی دوری پر ہے) ونوبا جی نے آشرم کے بھائی بہنوں کی مدد سے ایک کنواں خود ہی پارسال کھودا ہے جہاں بجلی یا بیل کی جگہ آشرم واسی ہی رہٹ کھینچتے ہیں.

یہ خیال پیدا ہوگا کہ ونوبا جی زمین کا دان کیوں مانگتے ہیں؟ کیا پیسہ لیکر اور پھر اسے غریبوں میں بانٹ کر سوال کا حل نہیں ہوسکتا؟ نہیں، ہرگز نہیں. اس بارے میں ونوبا جی بہت سخت ہیں. اُنہوں نے ایک جگہ کہا—" میں دان میں روپیہ نہیں لیتا. اصل بات یہ ہے کہ روپے نے ہندستان کو تباہ کر دیا ہے. چیزوں کی جو قیمت ہے وہ نہیں گھٹتی بڑھتی. روپے کی قیمت گھٹتی بڑھتی ہے. اناج کی قیمت مستقل ہے. میں تو لوگوں کو روپے کے چنگل سے چھڑانا چاہتا ہوں. روپیہ تو محض ایک ذریعہ ہے اور یہ دان دینے والے کے اندر گھمنڈ پیدا کراتا ہے. لیکن زمین دان میں تو غریب کا جنم جات حق ہے. اسلئے میں زمین دان لیتا ہوں.... اگر ہر کوئی محبت کے ساتھ غریبوں کو اپنائیگا تو کمیونسٹوں کا رنگ آپ سے آپ جاتا رہے گا". ونوبا جی تو پچھلے ڈیڑھ برس سے زیادہ ہوا اِس چیز پر خود عمل کر رہے ہیں. اُنہوں نے جیون بھر کے لئے صرف شرم دان (جسم کی محنت کی شکل میں دان) لینا قبول کیا ہے. اِسی آدھار پر اُن کا آشرم چل رہا ہے جس میں ان کو زبردست کامیابی ہوئی ہے. اسکی تفصیل میں اس وقت ہم نہیں جائیں گے.

लोग कुछ न कुछ चढ़ाते हैं इसी तरह इस यज्ञ में हमें ज़मीन दान देना चाहिये. लोग शक करते थे कि भला कलजुग में भी कोई ऐसा दान दे सकेगा लेकिन जब मांगने वाला पैदा हो जाता है तो देने वाले भी मिल जाते हैं और अब तक (30 मई) मुझे साढ़े-तीन हज़ार एकड़ ज़मीन मिल चुकी है." इस भूमि दान को ही विनोबा जी ने 'सही रास्ता' बताया है. अपनी उसी स्पीच में आगे चलकर उन्होंने कहा—"गर्मी के मौसम में आपको घास दिखाई नहीं देती. लेकिन पानी पड़ते ही घास उग आती है क्योंकि उसके बीज तो ज़मीन में रहते ही हैं. इसी तरह पुलिस कुछ वक़्त के लिये कम्यूनिस्ट असर भले कम कर दे लेकिन इसे जड़ से नहीं ख़तम कर सकती. इसको जड़ से ख़तम करने के लिये हमें सही रास्ता अपनाना होगा. कुछ काँगरेस वालों ने मुझसे कहा कि यह रास्ता हमारी समझ में नहीं आता. अगर वह इस यज्ञ का मतलब नहीं समझते और लोगों के दिलों में पैदा होने वाली तब्दीली नहीं देख सकते तो मैं समझता हूँ कि उन्होंने आँखें बन्द करली हैं. अगर उन्हें अहिंसा के अन्दर यक़ीन नहीं है तो बेहतर यह है कि वह कम्यूनिस्ट पार्टी में शरीक हो जायँ. मैं तो उनसे कहना चाहता हूँ कि अगर वह इस यज्ञ में हिस्सा लेंगे तो काँगरेस की इज़्ज़त और उसका लिहाज़ बढ़ेगा. उनके हिस्सा लेने से उनके जीवन में फ़र्क़ पड़ेगा, समाज में क्रान्ति होगी और हर एक का दिल बदल जायेगा जिसका नतीजा यह होगा कि देश की काया पलट जायेगी और देश ख़ूब फले फूलेगा."

विनोबा जी ने यह भी साफ़ कर दिया कि दान देने वाले जो दान दें सो अपना फ़र्ज़ समझ कर, न कि यह कि वह कोई एहसान कर रहे हैं. एक जगह उन्होंने कहा—"यह जो दान दिये जा रहे हैं कोई एहसान नहीं है. शास्त्रों में बताया गया है कि दान देना माने जो अपने पास है उसको दूसरे के साथ मिल कर भोगना. इससे साफ़ ज़ाहिर है कि दान देने से कोई भी किसी दूसरे पर एहसान नहीं करता है."

लेकिन अब हुकूमत का क्या फ़र्ज़ है ? उसे अपनी हिंसा भरी कारवाई तो बन्द कर ही देनी चाहिये. इसके अलावा उसे चाहिये कि ऐसे क़ानून पास करे जिनके मातहत कोई आदमी ज़रूरत से ज़्यादा ज़मीन अपने हाथ में रख ही न सके. विनोबा जी के लफ़्ज़ों में—"जो काम मैंने शुरू किया है उसे जारी रहना चाहिये. नलगुन्डा ज़िला कांगरेस कमेटी के सदर, भाई केशवराव जी इसे चलायेंगे. मेरे तख़मीने के मुताबिक़ नलगुन्डा ज़िले की चौदह पंद्रह लाख के क़रीब आबादी है. और अगर चौदह पंद्रह हज़ार एकड़ ज़मीन दान में मिल जाये तो चौदह पंद्रह हज़ार लोगों की रोज़ी उससे चल जायेगी. ज़मीन बँटने के इस काम से

لوگ کچھ نہ کچھ چڑھاتے ہیں اسی طرح اِس یگیہ میں ہمیں زمین دان دینا چاہئے ۔ لوگ شک کرتے تھے کہ بھلا کلجگ میں بھی کوئی ایسا دان دے سکے گا ۔ لیکن جب مانگنے والا پیدا ہو جاتا ہے تو دینے والے بھی مل جاتے ہیں اور اب تک (30 مئی) مجھے ساڑھے تین ہزار ایکڑ زمین مل چکی ہے"۔ اس بھومی دان کو ہی ونوبا جی نے 'صحیح راستہ' بتایا ہے ۔ اپنی اُسی اسپیچ میں آگے چل کر اُنہوں نے کہا—"گرمی کے موسم میں آپ کو گھاس دکھائی نہیں دیتی ۔ لیکن پانی پڑتے ہی گھاس اُگ آتی ہے کیونکہ اُسکے بیج تو زمین میں رہتے ہی ہیں ۔ اِسی طرح پولیس کچھ وقت کے لئے کمیونسٹ اثر بھلے کم کردے لیکن اِسے جڑ سے نہیں ختم کرسکتی ۔ اسکو جڑ سے ختم کرنے کے لئے ہمیں صحیح راستہ اپنانا ہوگا ۔ کچھ کانگریس والوں نے مجھسے کہا کہ یہ راستہ ہماری سمجھ میں نہیں آتا ۔ اگر وہ اِس یگیہ کا مطلب نہیں سمجھتے اور لوگوں کے دلوں میں پیدا ہونے والی تبدیلی نہیں دیکھ سکتے تو میں سمجھتا ہوں کہ اُنہوں نے آنکھیں بند کرلی ہیں ۔ اگر اُنہیں اہنسا کے اندر یقین نہیں ہے تو بہتر یہ ہے کہ وہ کمیونسٹ پارٹی میں شریک ہوجائیں ۔ میں تو اُن سے کہنا چاہتا ہوں کہ اگر وہ اِس یگیہ میں حصہ لینگے تو کانگریس کی عزت اور اُسکا لحاظ بڑھے گا ۔ اُنکے حصہ لینے سے انکے جیون میں فرق پڑیگا' سماج میں کرانتی ہوگی اور ہر ایک کا دل بدل جائیگا جس کا نتیجہ یہ ہوگا کہ دیش کی کایا پلٹ جائیگی اور دیش خوب پھلے پھولے گا"۔

ونوبا جی نے یہ بھی صاف کردیا کہ دان دینے والے جو دان دیں سو اپنا فرض سمجھکر' نہ کہ یہ کہ وہ کوئی احسان کررہے ہیں ۔ ایک جگہ اُنہوں نے کہا—"یہ جو دان دئیے جارہے ہیں' کوئی احسان نہیں ہے ۔ شاستروں میں بتایا گیا ہے کہ دان دینا معنے جو اپنے پاس ہے اُسکو دوسرے کے ساتھ ملکر بھوگنا ۔ اِس سے صاف ظاہر ہے کہ دان دینے سے کوئی بھی کسی دوسرے پر احسان نہیں کرتا ہے"۔

لیکن اب حکومت کا کیا فرض ہے ؟ اُسے اپنی ہنسا بھری کارروائی تو بند کرہی دینی چاہئے ۔ اِسکے علاوہ اُسے چاہئے کہ ایسے قانون پاس کرے جنکے ماتحت کوئی آدمی ضرورت سے زیادہ زمین اپنے ہاتھ میں رکھ ہی نہ سکے۔ ونوبا جی کے لفظوں میں—"جو کام میں نے شروع کیا ہے اُسے جاری رہنا چاہئے ۔ نلگنڈہ ضلع کانگریس کمیٹی کے صدر بھائی کیشوراو جی اِسے چلائینگے ۔ میرے تخمینے کے مطابق نلگنڈہ ضلع کی چودہ پندرہ لاکھ کے قریب آبادی ہے ۔ اور اگر چودہ پندرہ ہزار ایکڑ زمین دان میں مل جائے تو چودہ پندرہ ہزار لوگوں کی روزی اس سے چل جائیگی ۔ زمین بٹنے کے اِس کام سے

जा सकता है जो उन्होंने [illegible] गांव में 31 मई को दी थी—"इस गांव की आबादी 3000 है और यहाँ जमीन भी 3000 एकड़ है. लेकिन 10 खानदान ही सारी जमीन के मालिक हैं जब कि 600 खानदान बे जमीन वाले हैं. किसी देहाती सनअत या दस्तकारी का भी इन्तज़ाम नहीं है. बुनकरों को सूत सिर्फ़ इतना मिलता है कि महीने में आठ दिन काम चल जाय. जमीन के बराबर के बटवारे के साथ साथ देहाती धंदों की भी तरक़्क़ी होनी चाहिये. गांव वाले पैसा कमाने की फ़सलें न पैदा करें. उन्हें चाहिये कि अनाज पैदा करें और इतनी कपास उगालें कि अपने कपड़े का सवाल खुद हल कर सकें. तेलंगाना में मुसीबत यही है कि पैसे कमाने वाली फ़सलें जैसे मूँगफली और तम्बाकू बे इन्तहा पैदा की जाती हैं." हम यहाँ यह बतादें कि पैसे कमाने वाली फ़सलों की—जैसे ईख, पटसन, मूँगफली, तम्बाकू वग़ैरा—खेती के लिये जनता को मजबूर करके हिन्द सरकार ने अनाज के सवाल को और ख़तरनाक बना दिया है. विनोबा जी इन सब चीज़ों से कितने परेशान हैं यह उनकी एक दूसरी स्पीच से, जो 28 मई को दी गई थी, पता चलता है—"चालीस साल पहले जब मैं पढ़ता था तो अपने देश की हालत की बाबत पढ़कर और सोच विचार करने पर मुझे उस पर दुख होता था. आज चालीस साल बाद भी उन हालतों में कोई फ़रक़ नहीं है। इसके ख़िलाफ़, वह और ज़्यादा बिगड़ गई हैं." तेलंगाना में जो कम्यूनिस्टों के आन्दोलन ने ज़ोर पकड़ लिया है उसकी वजह बताते हुए विनोबा जी ने कहा है—"अमीर और रईस लोग ही कम्यूनिस्टों के पैदा हो जाने के जिम्मेदार हैं. असल बात यह है कि कम्यूनिस्ट रईस लोगों की ही औलाद हैं."

तेलंगाना की बीमारी को समझ लेने के बाद दूसरा सवाल जो सामने आता है वह है इसका इलाज. कम्यूनिस्टों ने यह समझा कि ज़मीनें ज़बरदस्ती छीनकर ग़रीबों में बांट देना इसका इलाज है. हकूमत असली मरज़ की दवा करने के बजाय कम्यूनिस्टों को नेस्तनाबूद करने में फँस गई. विनोबा जी को महसूस हुआ—'कम्यूनिस्टों के असर को ख़तम करने में पुलिस बहुत कामयाब न हो सकेगी. इसको ख़त्म करने का तो एक ही रास्ता है. वह यह कि ज़मीन का जो नाबराबर बँटवारा है उसे शान्ति के साथ बदल दिया जाय." या जैसा एक दूसरी स्पीच में उन्होंने कहा—"पुराने ज़माने में जब भी कोई संकट देश में आता था तो हमारे पुरखा लोग यज्ञ किया करते थे. मैं भी इसीलिये एक यज्ञ करना चाहता हूँ और मैंने यह भूमि दान यज्ञ शुरू कर दिया है. मैं लोगों से कहता हूँ कि अपनी ज़मीनें दान में दीजिये. हर एक को चाहिये कि इस यज्ञ में शरीक हो क्योंकि यह सबकी बेहतरी के लिये है. हवन या यज्ञ में

جا سکتا ھے جو انھوں نے بالا پلی گاؤں میں 31 مئی کو دی تھی —"اِس گاؤں کی آبادی 3000 ھے اور یہاں زمین بھی 3000 ایکڑ ھے. لیکن 10 خاندان ھی ساری زمین کے مالک ھیں جب کہ 600 خاندان بے زمین والے ھیں. کسی دیہاتی صنعت یا دستکاری کا بھی انتظام نہیں ھے. بنکروں کو سوت صرف اتنا ملتا ھے کہ مہینے میں آٹھ دن کام چل جائے. زمین کے برابر کے بٹوارے کے ساتھ ساتھ دیہاتی دھندوں کی بھی ترقی ھونی چاھئے. گاؤں والے پیسہ کمانے کی فصلیں نہ پیدا کریں. انھیں چاھئے کہ اناج پیدا کریں اور اتنی کپاس اگالیں کہ اپنے کپڑے کا سوال خود حل کر سکیں. تیلنگانہ میں مصیبت یہی ھے کہ پیسے کمانے والی فصلیں جیسے مونگ پھلی اور تمباکو بے انتہا پیدا کی جاتی ھیں." ھم یہاں یہ بتا دیں کہ پیسے کمانے والی فصلوں کی — جیسے ایکھ، پٹ سن، مونگ پھلی، تمباکو وغیرہ — کھیتی کے لئے جنتا کو مجبور کرکے ھند سرکار نے اناج کے سوال کو اور خطرناک بنا دیا ھے. ونوبا جی ان سب چیزوں سے کتنے پریشان ھیں یہ اُن کی ایک دوسری اسپیچ سے، جو 28 مئی کو دی گئی تھی، پتہ چلتا ھے —"چالیس سال پہلے جب میں پڑھتا تھا تو اپنے دیش کی حالت کی بابت پڑھکر اور سوچ وچار کرنے پر مجھے اس پر دکھ ھوتا تھا. آج چالیس سال بعد بھی اُن حالتوں میں کوئی فرق نہیں ھے. اِسکے خلاف، وہ اور زیادہ بگڑ گئی ھیں." تیلنگانہ میں جو کمیونسٹوں کے آندولن نے زور پکڑ لیا ھے اُسکی وجہ بتاتے ھوئے ونوبا جی نے کہا — "امیر اور رئیس لوگ ھی کمیونسٹوں کے پیدا ھوجانے کے ذمہ دار ھیں. اصل بات یہ ھے کہ کمیونسٹ رئیس لوگوں کی ھی اولاد ھیں."

تیلنگانہ کی بیماری کو سمجھ لینے کے بعد دوسرا سوال جو سامنے آتا ھے وہ ھے اِسکا علاج. کمیونسٹوں نے یہ سمجھا کہ زمینیں زبردستی چھین کر غریبوں میں بانٹ دینا اسکا علاج ھے. حکومت اصلی مرض کی دوا کرنے کے بجائے کمیونسٹوں کو نیست نابود کرنے میں پھنس گئی. ونوبا جی کو محسوس ھوا- "کمیونسٹوں کے اثر کو ختم کرنے میں پولیس بہت کامیاب نہ ھوسکے گی. اسکو ختم کرنے کا تو ایک ھی راستہ ھے. وہ یہ کہ زمین کا جو نا برابر بٹوارہ ھے اُسے شانتی کے ساتھ بدل دیا جائے." یا جیسا ایک دوسری اسپیچ میں اُنھوں نے کہا —"پرانے زمانے میں جب بھی کوئی سنکٹ دیش میں آتا تھا تو ھمارے پرکھا لوگ یگیہ کیا کرتے تھے. میں بھی اسلئے ایک یگیہ کرنا چاھتا ھوں اور میں نے یہ بھومی دان یگیہ شروع کردیا ھے. میں لوگوں سے کہتا ھوں کہ اپنی زمینیں دان میں دیجئے. ھر ایک کو چاھئے کہ اِس یگیہ میں شریک ھو کیونکہ یہ سب کی بہتری کے لئے ھے. ھون یا یگیہ میں

है कि वहाँ कम्यूनिस्टों का ज़ोर है और हकूमत की दाल नहीं गलती. यह भी मशहूर है कि कम्यूनिस्टों ने वहाँ पर ज़बरदस्त आतंक जमा रखा है जिससे' जनता बुरी तरह परेशान है. इस इलाक़े के कुछ आदमियों को, जो पैसे वाले और दौलतमन्द थे, अपना घर बार छोड़ कर हैदराबाद के शहर में ठिकाना ढूँढना पड़ा. ऐसी हालत में हकूमत ने अपना फ़र्ज़ समझा कि लोगों की जान माल की हिफ़ाज़त करे और नुक़सान पहुँचाने वालों को सज़ा दे. कहते हैं हैदराबाद की हकूमत और नई दिल्ली की सरकार दोनों मिलकर तेलंगाना पर टूट पड़ीं और सिर के जुओं की तरह कम्यूनिस्टों को बीन बीन कर फेंकदेने का तूफ़ान मचा दिया. लेकिन मरज़ बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की. तेलंगाना के दुखियों की आवाज़ तेज़ होती गई. उसे सुनकर एक इनसान का दिल तड़प उठा. बिना कोई हथियार लिये वह उनके दिल का हाल जानने की ग़रज़ से पैदल निकल पड़ा. यह गांधी जी के नामी सत्याग्रही बिनोबा जी हैं जिन्हों ने रामनवमी के दिन, 15 अप्रैल 1951 को, हैदराबाद के शहर से तेलंगाना के लिये कूच किया. जैसा उन्होंने एक जगह आगे चल कर कहा—"शान्ति का संदेश फैलाने की ख़ातिर शान्ति सेना का एक सिपाही होने के नाते मैं तेलंगाना में घूमना चाहता था. बहुत अर्से से, मैं कई वजहों से अपनी इस इच्छा को पूरा नहीं कर सका. लेकिन, भगवान राम का आशीर्वाद लेकर मैंने अब यह दौरा शरू कर दिया है."

तेलंगाना में असली सवाल क्या है ? विनोबा जी के लफ़्ज़ों में—"यहाँ पर कुछ लोगों के पास तो हज़ारों एकड़ ज़मीन है और कुछ के पास एक इंच भी नहीं." ज़ाहिर है कि मुट्ठी भर आदमियों की तादाद तेलंगाना के लाखों बाशिन्दों की मेहनत व पैसे को चूस कर जी रही है, जिसकी वजह से ग़रीब और अमीर के बीच ज़मीन आसमान का भेद खड़ा हो गया है. इसी चीज़ से दहलकर और अपने राजकाजी ख़यालों से असर लेकर क़रीब पंद्रह बरस से कुछ कम्यूनिस्ट नौजवान तेलंगाना के इलाक़े में अपने तरीक़े से जनता की ख़िदमत करने की कोशिश कर रहे हैं. लेकिन बदक़िस्मती यह है कि इन बहादुरों ने अपने मक़सद को पाने की ख़ातिर किसी एक निश्चित रास्ते को नहीं अपनाया. वह हर तदबीर अमल में लाए और अपने रास्ते की हर रुकावट को उन्होंने बेरहमी के साथ उखाड़ फेंका. यहाँ तक कि अमीरों के मकान जला डाले, कुछ को मौत के घाट भी उतार दिया और उनकी ज़मीन को बे ज़मीन वालों में बांट दिया. लाज़मी तौर पर ज़मींदार लोग अपनी जान लेकर भाग निकले और हकूमत हैदराबाद का दरवाज़ा खटखटाने लगे.

तेलंगाना में आम रअय्यत की हालत कितनी संगीन है इसका अन्दाज़ विनोबा जी की एक दूसरी स्पीच से लगाया

ے وہاں کمیونسٹوں کا زور ہے اور حکومت کی دال
ں گلتی. یہ بھی مشہور ہے کہ کمیونسٹوں نے
ں پر زبردست آتنک - جما رکھا ہے جس سے
تا بری طرح پریشان ہے. اس علاقے کے کچھ
یوں کو' جو پیسے والے اور دولت مند تھے' اپنا گھر بار
ڑ کر حیدرآباد کے شہر میں ٹھکانہ ڈھونڈھنا پڑا. ایسی
ت میں حکومت نے اپنا فرض سمجھا کہ لوگوں کی
ن مال کی حفاظت کرے اور نقصان پہنچانے والوں کو
دے . کہتے ہیں حیدرآباد کی حکومت اور نئی دلی
سرکار دونوں ملکر تیلنگانہ پر ٹوٹ پڑیں اور سر کے
ں کی طرح کمیونسٹوں کو بین بین کر پھینکدینے کا
ان مچا دیا . لیکن مرض بڑھتا گیا جوں جوں دوا
. تیلنگانہ کے دکھیوں کی آواز تیز ہوتی گئی . اسے سنکر
، انسان کا دل تڑپ اٹھا . بنا کوئی ہتھیار لئے وہ ان
دل کا حال جاننے کی غرض سے پیدل نکل پڑا . یہ
ھی جی کے نامی ستیہ گرہی ونوبا جی ہیں جنہوں
ام نومی کے دن' 15 اپریل 1951 کو' حیدرآباد کے شہر
یلنگانہ کے لئے کوچ کیا . جیسا انہوں نے ایک جگہ
چلکر کہا —" شانتی کا سندیش پھیلانے کی خاطر
تی سینا کا ایک سپاہی ہونے کے ناتے میں تیلنگانہ
ں گھومنا چاہتا تھا . بہت عرصے سے' میں کئی وجہوں
اپنی اس اچھا کو پورا نہیں کر سکا . لیکن بھگوان رام
شیرواد لے کر میں نے اب یہ دورہ شروع کر دیا ہے ."

تیلنگانہ میں اصلی سوال کیا ہے ؟ ونوبا جی کے لفظوں
ں —" یہاں پر کچھ لوگوں کے پاس تو ہزاروں ایکڑ
ن ہے اور کچھ کے پاس ایک انچ بھی نہیں ." ظاہر
ہ مٹھی بھر آدمیوں کی تعداد تیلنگانہ کے لاکھوں
ندوں کی محنت و پیسے کو چوس کر جی رہی ہے'
کی وجہ سے غریب اور امیر کے بیچ زمین آسمان کا
د کھڑا ہوگیا ہے . اسی چیز سے دہل کر اور اپنے راج کاجی
الوں سے اثر لیکر قریب پندرہ برس سے کچھ کمیونسٹ
وان تیلنگانہ کے علاقے میں اپنے طریقے سے جنتا کی
مت کرنے کی کوشش کر رہے ہیں . لیکن بدقسمتی یہ
کہ ان بہادروں نے اپنے مقصد کو پانے کی خاطر کسی
، نشچت راستے کو نہیں اپنایا . وہ ہر تدبیر عمل
، لائے اور اپنے راستے کی ہر رکاوٹ کو انہوں نے بے رحمی
ساتھ اکھاڑ پھینکا . یہاں تک کہ امیروں کے مکان جلا
' کچھ کو موت کے گھاٹ بھی اتار دیا اور ان کی زمین
، زمین والوں میں بانٹ دیا . لازمی طور پر زمیندار
ب اپنی جان لیکر بھاگ نکلے اور حکومت حیدرآباد
روازہ کھٹکھٹانے لگے .

تیلنگانہ میں عام رعیت کی حالت کتنی سنگین ہے
، کا انداز ونوبا جی کی ایک دوسری اسپیچ سے لگایا

विनोबा जी की तेलंगाना यात्रा

"मैं आपके सुन्दर देश में पैदल घूम रहा हूँ और आप लोगों के बीच घूमने फिरने से हम सबको बड़ी खुशी हासिल हो रही है. इस इलाक़े में लोग ईश्वर की प्रार्थना में गाने गाते हैं और हमारा स्वागत करते हैं. वह एक एक मील तक भजन गाते हुए चले आते हैं. वह तेलुगु और हिन्दी में भजन गाते हैं. सच यह है कि यही हमारी क़ौम की ताक़त है. बहुत से राजाओं ने राज किया और ख़तम हो गए और हमने उन्हें भुला भी दिया. हम सिर्फ़ एक राजा को जानते हैं और वह भगवान राजा राम हैं. ईश्वर का नाम गंगा की तरह मुसलसल जारी है. गंगा हर जगह मौजूद नहीं है लेकिन भगवान राम का नाम मौजूद है. तेलंगाना में मैं चार या पांच ज़िलों में घूम चुका हूँ. जब मैं नलगुन्डा ज़िले में दाख़िल हुआ तो लोगों ने मुझसे कहा कि आप कम्यूनिस्टों के इलाक़े में दाख़िल हुए हैं. लेकिन राम नाम का जो भजन मैंने आदिलाबाद ज़िले में सुना था वह इस नलगुन्डा ज़िले में भी सुना. कम्यूनिस्ट आयेंगे और जायेंगे लेकिन राम नाम को नहीं मिटा सकेंगे. राम नाम हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी ताक़त है. पर हमने राम नाम का पूरा पूरा मतलब नहीं समझा है. जो कोई भी राम नाम पुकारता है वह भगत होने का दावा करता है. लेकिन आख़िर भगत है क्या चीज़? और भगवान कहाँ रहते हैं? सच्ची बात यह है कि वह किसी एक कोने में नहीं रहते हैं और न वह बैकुन्ठ या कैलाश में रहते हैं. वह हर आदमी के दिल में रहते हैं. इसलिये हम हर एक की सेवा करने और हर एक के साथ मुहब्बत करने का प्रन लेते हैं. इस तरह भगवान जो हर इनसान के दिल में रहते हैं हम उनके सेवक बन जाते हैं. भजन गाना और हर इनसान के साथ मुहब्बत रखना दोनों एक बात हैं. यही सबक़ हमें गीता सिखलाती है." यह शब्द नलगुन्डा ज़िले के नागवाद गांव में एक भरी सभा में शाम की प्रार्थना के बाद आचार्य विनोबा भावे ने 28 अप्रैल को कहे.

तेलंगाना हैदराबाद रियासत के पूरबी इलाक़े का नाम है. जहाँ के लोगों की बोली तेलुगू है और जिनमें अतराफ़ बलदा नलगुन्डा, वरंगल, करीमनगर, महबूबनगर और निज़ामाबाद के ज़िले शामिल हैं. सारे हिन्दुस्तान में आज तेलंगाना का नाम फैला हुआ है और यह बात मशहूर

ونوبا جی کی تیلنگانہ یاترا

"میں آپ کے سندر دیش میں پیدل گھوم رہا ہوں اور آپ لوگوں کے بیچ گھومنے پھرنے سے ہم سب کو بڑی خوشی حاصل ہورہی ہے۔ اس علاقے میں لوگ ایشور کی پرارتھنا میں گانے گاتے ہیں اور ہمارا سواگت کرتے ہیں۔ وہ ایک ایک میل تک بھجن گاتے ہوئے چلے آتے ہیں۔ وہ تیلگو اور ہندی میں بھجن گاتے ہیں۔ سچ یہ ہے کہ یہی ہماری قوم کی طاقت ہے۔ بہت سے راجاؤں نے راج کیا اور ختم ہوگئے اور ہم نے انہیں بھلا بھی دیا۔ ہم صرف ایک راجہ کو جانتے ہیں اور وہ بھگوان راجہ رام ہیں۔ ایشور کا نام گنگا کی طرح مسلسل جاری ہے۔ گنگا ہر جگہ موجود نہیں ہے لیکن بھگوان رام کا نام موجود ہے۔ تیلنگانہ میں میں چار یا پانچ ضلعوں میں گھوم چکا ہوں۔ جب میں نلگنڈہ ضلع میں داخل ہوا تو لوگوں نے مجھ سے کہا کہ آپ کمیونسٹوں کے علاقے میں داخل ہوئے ہیں۔ لیکن رام نام کا جو بھجن میں نے عادل آباد ضلع میں سنا تھا وہ اس نلگنڈہ ضلع میں بھی سنا۔ کمیونسٹ آئینگے اور جائینگے لیکن رام نام کو نہیں مٹا سکیں گے۔ رام نام ہندستان کی سب سے بڑی طاقت ہے۔ پر ہم نے رام نام کا پورا پورا مطلب نہیں سمجھا ہے۔ جو کوئی بھی رام نام پکارتا ہے وہ بھگت ہونے کا دعوا کرتا ہے۔ لیکن آخر بھگت ہے کیا چیز؟ اور بھگوان کہاں رہتے ہیں؟ سچی بات یہ ہے کہ وہ کسی ایک کونے میں نہیں رہتے ہیں اور نہ وہ بیکنٹھ یا کیلاش میں رہتے ہیں۔ وہ ہر آدمی کے دل میں رہتے ہیں۔ اسلئے ہم ہر ایک کی سیوا کرنے اور ہر ایک کے ساتھ محبت کرنے کا پرن لیتے ہیں۔ اس طرح بھگوان جو ہر انسان کے دل میں رہتے ہیں ہم ان کے سیوک بن جاتے ہیں۔ بھجن گانا اور ہر انسان کے ساتھ محبت رکھنا دونوں ایک بات ہیں۔ یہی سبق ہمیں گیتا سکھلاتی ہے۔" یہ شبد نلگنڈہ ضلع کے ناگواد گاؤں میں ایک بھری سبھا میں شام کی پرارتھنا کے بعد آچاریہ ونوبا بھاوے نے 28 اپریل کو کہے۔

تیلنگانہ حیدرآباد ریاست کے پوربی علاقے کا نام ہے جہاں کے لوگوں کی بولی تیلگو ہے اور جن میں اطراف بلدہ نلگنڈہ، ورنگل، کریم نگر، محبوب نگر اور نظام آباد کے ضلع شامل ہیں۔ سارے ہندستان میں آج تیلنگانہ کا نام پھیلا ہوا ہے اور یہ بات مشہور

मिल सकेगा." अमरीका से कहीं बढ़कर अपने देस में हमारी सारी मुसीबतों की जड़ में किसानों की बुरी हालत ही है. इसलिये उसे सुधारना हमारा पहला फ़र्ज़ है.

कुछ इधर और कुछ उधर फुटकर कोशिशें करने से काम नहीं चल सकता. हम खादी और दूसरे गाँव के धंदों को संगठित कर सकते हैं, देहातों की सफ़ाई और तन्दुरुस्ती सुधारने की कोशिश कर सकते हैं या स्कूल और रात स्कूल भी चला सकते हैं. ये सब कोशिशें अच्छी हैं, पर वे किसी पुख़्ता बुनियाद पर खड़ी हैं यह तब तक नहीं कहा जा सकता जब तक इन कोशिशों के ज़रिये गाँव की माली हालत नहीं सुधरती. गाँव की माली हालत तभी सुधरी कही जा सकती है जब वे खाने और कपड़े के मामले में अपने पैरों पर खड़े हों, किसी दूसरे का आसरा न देखें. करोड़ों टन नाज बाहर से लाने से हालत सुधर नहीं सकती. यह तो सिर्फ़ ऊपरी मरहम पट्टी करना होगा. इसलिये कम से कम अब यह ज़रूरी होगया है कि हमारे नेता हुकूमत से अपना दिल हटाकर उसे रचनात्मक काम में लगावें.

पंडित नेहरू की सरकार बाहरी तड़क भड़क और आडम्बर के बावजूद दूरंदेश साबित नहीं हुई. हमारे देहातों की हालत सुधारने की उसने कोई नई तरकीबें नहीं सोच निकालीं. जहाँ कहीं हालत सुधारने की कोशिशें की गईं वहाँ की हालत और भी बद से बदतर होगई, क्योंकि हुकूमत को गाँव की असली हालत से वाक़फ़ियत नहीं थी और दूर बैठे बैठे केवल हुकुम जारी करके काम किया गया. हमें तो ऐसी सरकार चाहिये जो गाँव की ज़िन्दगी के बिलकुल पास और उससे मिली रहे और गाँव वालों की ज़रूरतों को जाने.

क्या हम आशा करें कि पटना में हमारे जो नेता लोग इकट्ठा हो रहे हैं वे हिम्मत के साथ और एक दिल होकर इस सवाल को गांधी जी के बताए हुए रास्ते से सुलझाने की कोशिश करके देस को आनेवाली बरबादी से बचाएंगे ? *

('ग्राम-उद्योग-पत्रिका' से)

ل سکے گا." امریکہ سے کہیں بڑھکر اپنے دیس میں ماری ساری مصیبتوں کی جڑ میں کسانوں کی بری حالت ہی ہے. اسلئے اُسے سدھارنا ہمارا پہلا فرض ہے.

کچھ اِدھر اور کچھ اُدھر پھٹکر کوششیں کرنے سے کام نہیں چل سکتا. ہم کھادی اور دوسرے گاؤں کے دھندوں کو سنگٹھت کر سکتے ہیں' دیہاتوں کی صفائی اور تندرستی سدھارنے کی کوشش کرسکتے ہیں یا اسکول اور رات اسکول بھی چلا سکتے ہیں. یہ سب کوششیں اچھی ہیں' پر وہ کسی پختہ بنیاد پر کھڑی ہیں یہ تب تک نہیں کہا جا سکتا جب تک اِن کوششوں کے ذریعے گاؤں کی مالی حالت نہیں سدھرتی. گاؤں کی مالی حالت تبھی سدھری کہی جا سکتی ہے جب وہ کھانے اور کپڑے کے معاملے میں اپنے پیروں پر کھڑے ہوں' کسی دوسرے کا آسرا نہ دیکھیں. کروڑوں ٹن ناج باہر سے لانے سے حالت سدھر نہیں سکتی. یہ تو صرف اوپری مرہم پٹی کرنا ہوگا. اس لئے کم سے کم اب یہ ضروری ہوگیا ہے کہ ہمارے نیتا حکومت سے اپنا دل ہٹا کر اُسے رچناتمک کام میں لگاویں.

پنڈت نہرو کی سرکار باہری تڑک بھڑک اور آڈمبر کے باوجود دوراندیش ثابت نہیں ہوئی. ہمارے دیہاتوں کی حالت سدھارنے کی اُس نے کوئی نئی ترکیبیں نہیں سوچ نکالیں. جہاں کہیں حالت سدھارنے کی کوششیں کی گئیں وہاں کی حالت اور بھی بد سے بدتر ہوگئی' کیونکہ حکومت کو گاؤں کی اصلی حالت سے واقف نہیں تھی اور دور بیٹھے بیٹھے کیول حکم جاری کرکے کام کیا گیا. ہمیں تو ایسی سرکار چاہئے جو گاؤں کی زندگی کے بالکل پاس اور اُس سے ملی رہے اور گاؤں والوں کی ضرورتوں کو جانے.

کیا ہم آشا کریں کہ پٹنہ میں ہمارے جو نیتا لوگ اکٹھا ہو رہے ہیں وہ ہمت کے ساتھ اور ایک دل ہوکر اس سوال کو گاندھی جی کے بتائے ہوئے راستے سے سلجھانے کی کوشش کرکے دیس کو آنے والی بربادی سے بچائینگے ? *

('گرام اُدیوگ پتریکا سے')

अगला क़दम

(भाई जे. सी. कुमारप्पा)

'काँगरेस अब अपना काम कर चुकी है, और उसे अब अपना रूप बदल देना चाहिये' यह बात गांधी जी ने कही थी. इसके बाद तीन बहुत घातक साल गुज़र चुके. हममें से कुछ लोग काँगरेस के मुर्दे को बरफ़ में रख कर उसके इर्द गिर्द नाचने में बहुत ख़ुश नज़र आते थे. पर कुछ अरसे के बाद मुर्दे से सड़न की बदबू आने ही लगी. श्री टी. प्रकाशम, डाक्टर प्रफुल्लचंद्र घोश और आचार्य कृपलानी सरीखे लोगों के पीछे कुछ काँगरेसी इस मुर्दे को छोड़कर राष्ट्र में नई जान फूँकने के लिये आगे बढ़े. नई जान फूँकने के लिये कौन सा रास्ता अख़तियार किया जायगा यही आज सब लोगों के मन में बड़ी सोचने की बात है. राष्ट्र की भलाई चाहने वालों की एक सभा जून में पटना में इस बात पर विचार करने के लिये बुलाई गई है.

गांधी जी ने सुझाया था कि काँगरेस को हकूमत चाहने वाली राजनीत छोड़कर नई क़ौम तैयार करने के लिये एक रचनात्मक काम करने वाली संस्था बन जाना चाहिये जिससे इस देस के सात लाख गावों को, न कि शहरों और क़स्बों को, समाजी, सदाचारी और माली आज़ादी हासिल हो सके. क्या अभी भी हमें गांधी जी के रास्ते पर चलने की बात सूझेगी, या हम अपने अज्ञान से हँसते हँसते बरबादी की तरफ़ बढ़ते रहेंगे ?

अंगरेज़ी राज के ज़माने में रचनात्मक कामों में भी कुछ कुछ राजनैतिक बू रहती थी. उस समय चरखे की बुनियाद में मैनचेस्टर की जड़ उखाड़ना ख़ास मक़सद था. अब यह सब बदलना होगा. अब हमें सारा ध्यान खेती को धुरी मानकर गाँवों की फिर से तामीर करने पर देना चाहिये. अब गाँव की समाजी और माली ज़िन्दगी इस तरह गढ़नी चाहिये कि वह सच्चे जनराज की बुनियाद बन सके. गाँव में ही सबको ऐसी ट्रेनिंग मिलनी चाहिये कि कोई भी गाँव वाला आगे चल कर राजनीत में पड़कर भी देस की सेवा ही करता रहे. हमारी राजनीत हमारी माली ज़िन्दगी की दासी होनी चाहिये, मालिक नहीं. अमरीका जैसे देस में भी, जहाँ के सब धंधे बड़े बड़े कारख़ानों में समाए हुए हैं, वहाँ के खेती विभाग के सेक्रेट्री श्री ब्रनन, अपनी रिपोर्ट में कहते हैं, "दुनिया भर के देहातियों का रहन सहन सुधारने से और ज़मीन का लगान इस तरह तय करने से जिससे सब के साथ इनसाफ़ हो और सब आदमियों का मान बढ़े, केवल अपने देस को ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया को राजकाजी और माली टिकाव

اگلا قدم

(بھائی جے . سی . کمار پپا)

'کانگریس اب اپنا کام کرچکی ھے' اور اُسے اب اپنا روپ بدل دینا چاھئے' یہ بات گاندھی جی نے کہی تھی . اِسکے بعد تین بہت گھاتک سال گذر چکے . ہم میں سے کچھ لوگ کانگریس کے مردے کو برف میں رکھکر اُسکے اِرد گرد ناچنے میں بہت خوش نظر آتے تھے . پر کچھ عرصے بعد مردے سے سڑن کی بدبو آنے ھی لگی . شری ٹی . پرکاشم' ڈاکٹر پرپھل چندر گھوش اور آچاریہ کرپلانی سریکھے لوگوں کے پیچھے کچھ کانگریسی اِس مردے کو چھوڑکر راشٹر میں نئی جان پھونکنے کے لئے آگے بڑھے . نئی جان پھونکنے کے لئے کون سا راستہ اختیار کیا جائیگا یہی آج سب لوگوں کے من میں بڑی سوچنے کی بات ھے . راشٹر کی بھلائی چاھنے والوں کی ایک سبھا جون میں پٹنہ میں اِس بات پر وچار کرنے کےلئے بلائی گئی ھے .

گاندھی جی نے سمجھایا تھا کہ کانگریس کو حکومت چاھنے والی راج نیت چھوڑ کر نئی قوم تیار کرنے کے لئے ایک رچناتمک کام کرنے والی سنستھا بن جانا چاھئے جس سے اِس دیس کے سات لاکھ گاؤں کو' نہ کہ شہروں اور قصبوں کو' سماجی' سداچاری اور مالی آزادی حاصل ہوسکے . کیا ابھی بھی ھمیں گاندھی جی کے راستے پر چلنے کی بات سوجھے گی' یا ہم اپنے اگیان سے ھنستے ھنستے بربادی کی طرف بڑھتے رہیں گے ؟

انگریزی راج کے زمانے میں رچناتمک کاموں میں بھی کچھ کچھ راج نیتک بو رھتی تھی. اُس سمے چرخے کی بنیاد میں مینچسٹر کی جڑ اُکھاڑنا خاص مقصد تھا . اب یہ سب بدلنا ھوگا . اب ھمیں سارا دھیان کھیتی کو دھری مانکر گاؤں کی پھر سے تعمیر کرنے پر دینا چاھئے. اب گاؤں کی سماجی اور مالی زندگی اِس طرح گڑھنی چاھئے کہ وہ سچے جن راج کی بنیاد بن سکے . گاؤں میں ھی سب کو ایسی ٹریننگ ملنی چاھئے کہ کوئی بھی گاؤں والا آگے چل کر راج نیت میں پڑکر بھی دیس کی سیوا ھی کرتا رہے . ھماری راج نیت ھماری مالی زندگی کی داسی ہونی چاھئے' مالک نہیں . امریکہ جیسے دیس میں بھی' جہاں کے سب دھندے بڑے بڑے کارخانوں میں سمائے ہوئے ھیں' وہاں کے کھیتی وبھاگ کے سکریٹری شری برنن' اپنی رپورٹ میں کہتے ھیں' "دنیا بھر کے دیہاتیوں کا رھن سہن سدھارنے سے اور زمین کا لگان اِس طرح طے کرنے سے جس سے سب کے ساتھ انصاف ہو اور سب آدمیوں کا مان بڑھے' کیول اپنے دیس کو ھی نہیں' بلکہ ساری دنیا کو راج کاجی اور مالی ٹکاو

अपना फ़ैसला करें. मैं मानता हूँ कि इस के सिवा कोई जरिया निकलने वाला नहीं है. मैंने सोशलिस्टों से भी बात की है, जब कभी वे मुझको मिले, दूसरे जवानों से भी बात की और पूछ लिया कि ज़मीन की तक़सीम, जो कि ज़रूर करनी चाहिये, कर लो. तिस पर भी क्या आप समझते हैं कि इन किसानों की हालत उतने से सुधर जायगी और उतने से उनको साल भर का काम मिल जायगा? और उसमें से उनकी जीवन की ज़रूरतें पूरी हो सकेंगी? क्या आप यह समझते हैं कि खद्दर वग़ैरा के बग़ैर कोई मशीनी स्कीम दस पाँच साल में ऐसी हो सकेगी जिससे लाखों करोड़ों को काम दिया जा सकेगा? तो इसका जवाब उनको 'नहीं' में देना पड़ता है. उनको मानना पड़ता है कि और कोई रास्ता हम नहीं देखते हैं. लेकिन वे कहते हैं कि इसका मतलब यह होता है कि सरकार हम अपने हाथ में ले लें और अपना समाजवाद का और दूसरा प्रोग्राम चलावें. तो हिन्दुस्तान की अभी की हालत को देखते हुए जो सीधा सा काम हम कर सकते हैं वह करने से इनकार करें और दस पंद्रह साल के बाद कुछ बात होगी उसकी आशा में अपना जीवन बेकार बनाएं, ऐसी बात हो जाती है.

गांधी जी का मन्त्र

इसलिये आप सब लोगों से मेरी प्रार्थना है कि गांधी जी ने जो खद्दर मंत्र हमें दिया है वह अभी की हालत में कमज़ोर नहीं हुआ है बल्कि ताक़तवर हुआ है. यह जब कि मिलें 17 गज़ कपड़ा पैदा करती थीं, वह आज 12 गज़ पैदा करेंगी और ज़ाहिर कर रही हैं कि इस साल आधा गज़ और पैदावार कम होगी क्योंकि काफ़ी हड़तालें हो चुकी हैं, तो मिलों पर आधार रखने के लिये कोई सबब नहीं है. और गांधी जी के जाने के बाद कोई ऐसी दूसरी हालत पैदा नहीं हुई है जिससे खादी को अलग करके भी हम अपने सवाल हल कर सकते हैं. अगर किसी के मन में कोई स्कीम आई है और बिना खद्दर के हमारा काम निभ जायगा, ऐसा किसी को लगा है, तो उससे चरचा करना चाहूँगा और कोई दलीलें उसके पास हैं, कोई सबूत हैं तो मैं जानना चाहूँगा. लेकिन अगर ऐसा सबूत मिलता नहीं है तो हम सब लोग खादी के काम में अपनी श्रद्धा ताज़ा करें, पक्की करें और खादी का शास्त्र (इल्म) जितना भरपूर बना सकते हैं, उतना बनाने में अपना सहयोग दें. इतना कह के मैं ज़ाहिर करता हूँ कि यह प्रदर्शन अब खुल गया है.

فیصلہ کریں ۔ میں مانتا ہوں کہ اسکے سوا ں نوجہ سلنے والا نہیں ہے ۔ میں نے شلسٹوں سے بھی بات کی ہے' جب کبھی وہ مجھکو ے' دوسرے جوانوں سے بھی بات کی اور پوچھ لیا کہ ین کی تقسیم' جو کہ ضرور کرنی چاہئے' کرلو ۔ پر بھی کیا آپ سمجھتے ہیں کہ ان کسانوں کی الت اُتنے سے سدھر جائیگی اور اُتنے سے اُنکو سال بھر کام مل جائیگا ؟ اور اُس میں سے اُنکی جیون کی ورتیں پوری ہوسکیں گی ؟ کیا آپ یہ سمجھتے ہیں کھدر وغیرہ کے بغیر کوئی مشینی اسکیم دس پانچ ل میں ایسی ہو سکے گی جس سے لاکھوں کروڑوں کو دیا جاسکیگا ؟ اسکا جواب اُن کو 'نہیں' میں دینا تا ہے ۔ اُن کو ماننا پڑتا ہے کہ اور کوئی راستہ ہم نہیں یکھتے ہیں ۔ لیکن وہ کہتے ہیں کہ اسکا مطلب یہ وتا ہے کہ سرکار ہم اپنے ہاتھ میں لے لیں اور اپنا سماج ا کا اور دوسرا پروگرام چلاویں ۔ تو ہندستان کی ابھی کی الت کو دیکھتے ہوئے جو سیدھا سا کام ہم کر سکتے ہیں کرنے سے انکار کریں اور دس پندرہ سال کے بعد کچھ ت ہوگی اُسکی آشا میں اپنا جیون بیکار بنائیں' سی بات ہوجاتی ہے ۔

گاندھی جی کا منتر

اسلئے آپ سب لوگوں سے میری پرارتھنا ہے کہ گاندھی ی نے جو کھدر منتر ہمیں دیا ہے وہ ابھی کی حالت یں کمزور نہیں ہوا ہے بلکہ طاقتور ہوا ہے ۔ یہ جب ملیں 17 گز کپڑا پیدا کرتی تھیں' وہ آج 12 گز پیدا یں گی اور ظاہر کررہی ہیں کہ اس سال آدھا گز اور یداوار کم ہوگی کیونکہ کافی ہڑتالیں ہو چکی ہیں ۔ ملوں پر آدھار رکھنے کے لئے کوئی سبب نہیں ہے ۔ ر گاندھی جی کے جانے کے بعد کوئی ایسی دوسری حالت پیدا نہیں ہوئی ہے جس سے کھادی کو الگ رکے بھی ہم اپنے سوال حل کرسکتے ہیں ۔ اگر کسی کے ن میں کوئی اسکیم آئی ہے اور بنا کھدر کے ہمارا کام بھ جائیگا' ایسا کسی کو لگتا ہے' تو اُس سے چرچا کرنا چاہوں گا اور کوئی دلیلیں اُسکے پاس ہیں' کوئی ثبوت یں تو میں جاننا چاہوں گا ۔ لیکن اگر ایسا ثبوت ملتا ہیں ہے تو ہم سب لوگ کھادی کے کام میں اپنی شردھا ازہ کریں' پکی کریں اور کھادی کا شاستر (علم) جتنا ھرپور بنا سکتے ہیں' اُتنا بنانے میں اپنا سہیوگ دیں ۔ تنا کہ کے میں ظاہر کرتا ہوں کہ یہ پردرشنی اب کھل یا ہے ۔

और कह रहे हैं कि भाइयो, स्वराज मिल गया है. जिनके नाम से और जिनके काम के लिये आपने स्वराज हासिल किया उनकी सेवा के लिये फ़ुरसत पाइये और आइये, ऐसी पुकार हो रही है.

खादी की अहमियत

ख़ास करके इस हैदराबाद स्टेट में जो देखा, उसने खादी के लिये मेरी श्रद्धा और भी पक्की कर दी. और बहुत लोगों का, यह जो ख़याल होता था कि हालाँकि खादी की ज़रूरत आज भी कम तो नहीं है, फिर भी कुछ दूसरे पहलुओं पर ज़ोर देना आज शायद ज़्यादा ज़रूरी होगया है और खादी का काम, मुमकिन है आगे न भी चले, यह ख़याल मैंने ग़लत पाया. वहाँ लोगों से पूछा, जो साथ आए थे उनसे भी पूछा कि क्या इन देहातों को सिवा खद्दर के कोई ऐसा ज़रिया है जिससे उनको कोई राहत पहुंचा सकते हैं ? इमदाद दे सकते हैं ? ढारस पैदा कर सकते हैं ? तो मैंने तो कोई ज़रिया नहीं पाया. ज़ाहिर बात है कि जो चीज़ हर आदमी इस्तेमाल करता है, और चाहे फ़ाक़ा भी करले, लेकिन बिना कपड़े के नहीं चल सकता. क्योंकि वह सभ्यता की निशानी समझी गई है. ऐसी जो चीज़ और जिसका कच्चा माल गाँवों में पड़ा है वह धंदा गाँव का रिज़र्व धंदा होना चाहिये. वह वहाँ से छीना गया है और दूसरे भी कई धंदे जिनके लिये कच्चा माल गाँवों में पड़ा है, उनके हाथ से छीन लिये गए हैं और छीने जा रहे हैं. ऐसी हालत में सिवा गाँव के उद्योग धंदों के और उसमें भी सिवा खादी के और कौन सा धंदा हम उनको दे सकते हैं ? कौन सा ऐसा ज़रिया है जिससे उनको राहत पहुँचा सकते हैं ? इस पर बहुत सोचा. लेकिन गाँवों की मदद करने का इससे बेहतर साधन नहीं देखा. हाँ, सफ़ाई का काम है. आदमी का मैला बेकार जा रहा है. उसका इस्तेमाल करने की स्कीम बना सकते हैं. और भी कुछ काम कर सकते हैं, लेकिन उन सब कामों को करते हुए भी उनको खादी के काम से जितनी राहत हम पहुंचा सकते हैं, उतनी और किसी काम से नहीं पहुँचा सकते. यह बात ख़ुद ब ख़ुद साबित सी मुझे लगी और मैं मानता हूँ कि हममें से जो भी गाँव में पहुँचेगा, उसको वैसी ही लगेगी.

अकेला सहारा

लेकिन सिर्फ़ इस फ़लसफ़े से काम होने वाला नहीं है. अपने मन में यह संकल्प (अहद) कर लीजिये की यह जो खादी का मंत्र है, वह हम हिन्दुस्तान के हर एक किसान के पास पहुँचाएँगे और इस बारे में हार नहीं खाएँगे. ऐसा शक नहीं करेंगे कि दूसरे बहुत सारे काम पड़े हैं तो इस पर ही इतना ज़ोर क्यों ? अगर ऐसा शक पैदा होता है तो इन गाँवों का दर्शन करें और दुबारा सोचकर

آور کہ رہے ہیں کہ بھائیو' سوراج مل گیا ہے . جنکے نام سے آور جنکے کام کے لئے آپ نے سوراج حاصل کیا اُن کی سیوا کے لئے فرصت پائیے آور آئیے' ایسی پکار ہو رہی ہے .

کھادی کی اہمیت

خاصکر کے اِس حیدرآباد اسٹیٹ میں جو دیکھا' اُسنے کھادی کے لئے میری شردھا آور بھی پکی کر دی . آور بہت لوگوں کا' یہ جو خیال ہوتا تھا کہ حالانکہ کھادی کی ضرورت آج بھی کم تو نہیں ہے' پھر بھی کچھ دوسرے پہلوؤں پر زور دینا آج شاید زیادہ ضروری ہوگیا ہے آور کھادی کا کام' ممکن ہے آگے نہ بھی چلے' یہ خیال میں نے غلط پایا . وہاں لوگوں سے پوچھا' جو ساتھ آئے تھے اُن سے بھی پوچھا کہ کیا اِن دیہاتوں کو سوا کھدر کے کوئی ایسا ذریعہ ہے جس سے اُن کو کوئی راحت پہنچا سکتے ہیں؟ امداد دے سکتے ہیں ؟ ڈھارس پیدا کر سکتے ہیں ؟ تو میں نے تو کوئی ذریعہ نہیں پایا . ظاہر بات ہے کہ جو چیز ہر آدمی استعمال کرتا ہے' آور چاہے فاقہ بھی کرلیں' لیکن بنا کپڑے کے نہیں چل سکتا . کیونکہ وہ سبھیتا کی نشانی سمجھی گئی ہے . ایسی جو چیز آور جس کا کچا مال گاؤں میں پڑا ہے وہ دھندا گاؤں کا ریزرو دھندا ہونا چاہئیے . وہ وہاں سے چھینا گیا ہے آور دوسرے بھی کئی دھندے جن کے لئے کچا مال گاؤں میں پڑا ہے' اُن کے ہاتھ سے چھین لئے گئے ہیں اور چھینے جا رہے ہیں . ایسی حالت میں سوا گاؤں کے اُدیوگ دھندوں کے اور اُس میں بھی سوا کھادی کے اور کون سا دھندا ہم اُن کو دے سکتے ہیں ؟ کون سا ایسا ذریعہ ہے جس سے اُن کو راحت پہنچا سکتے ہیں ؟ اِس پر بہت سوچا . لیکن گاؤں کی مدد کرنے کا اِس سے بہتر سادھن نہیں دیکھا . ہاں' صفائی کا کام ہے . آدمی کا میلا بیکار جا رہا ہے . اُس کا استعمال کرنے کی اسکیم بنا سکتے ہیں آور بھی کچھ کام کر سکتے ہیں . لیکن اُن سب کاموں کو کرتے ہوئے بھی اُن کو کھادی کے کام سے جتنی راحت ہم پہنچا سکتے ہیں' اُتنی اور کسی کام سے نہیں پہنچا سکتے . یہ بات خود بخود ثابت سی مجھے لگی آور میں مانتا ہوں کہ ہم میں سے جو بھی گاؤں میں پہنچے گا اُسکو ویسی ہی لگے گی .

اکیلا سہارا

لیکن' صرف اِس فلسفے سے کام ہونے والا نہیں ہے . اپنے من میں یہ سنکلپ (عہد) کرلیجئے کہ یہ جو کھادی کا منتر ہے' وہ ہم ہندستان کے ہر ایک کسان کے پاس پہنچائیں گے آور اِس بارے میں ہار نہیں کھائیں گے . ایسا شک نہیں کرینگے کہ دوسرے بہت سارے کام پڑے ہیں تو اِسپر ہی اتنا زور کیوں ؟ اگر ایسا شک پیدا ہوتا ہے تو اِن گاؤں کا درشن کریں آور دوبارہ سوچ کر

भाव गाँवों में जोरों से आयगा. आज भी काफ़ी तादाद में आता है, और यह जो थोड़ा सा बचा हुआ काम है वह भी बरबाद हो सकता है, यह सब कुछ हमने देखा.

गाँव की पुकार

कई देहात ऐसे मिले कि अगर हमें यहाँ, शिवरामपल्ली में, आने की जरूरत न होती तो वहीं चंद रोज रह जाने की इच्छा होती. क्योंकि एक जगह देखना, वहाँ की कमियाँ महसूस करना, उनको हम हल कर सकते हैं ऐसा विश्वास करना और फिर भी उस जगह को छोड़कर आगे बढ़ना, यह अच्छा नहीं लगता था. फिर भी वह करना पड़ा. जहाँ जहाँ हो सके वहाँ लोगों में मुक़ामी ही काम करने वाले निकलें, ऐसी कोशिश भी की. अनुभव का सार यही है कि हम जो अक्सर शहरों में काम करते हैं और शहरों से सम्बन्ध रखते हैं वे अपना शहर का सम्बन्ध क़ायम रख कर भी अगर अपनी रहने की जगह देहात ही में रक्खें और हममें से हर एक के नाम पर अगर एक देहात रहे तो बहुत भारी काम होगा.

बहुत दफ़ा सोचता हूँ तो लगता है कि यह क्यों नहीं हो सकता कि जो भी काम हम करते हैं, चाहे कोई काँगरेस कमेटी का आफ़िस भी चलाता हो, तो वह किसी देहात में क्यों न खोले ? जहाँ पोस्ट आफ़िस वग़ैरा का कुछ सुभीता हो, ऐसे देहात में वह बैठ सकता है. और अगर हम में से कोई शहर के नजदीक ही रहना चाहते हैं तो वे शहर के नजदीक का गाँव लेकर बैठ सकते हैं. वहाँ रहने से ही कुछ न कुछ गाँव का सम्बन्ध आयगा. और 'देहात में जाना चाहिये' यह जो पुकार बापू ने उठाई थी, उसको कुछ हद तक हम पूरा कर सकते हैं. देहात के लोग बहुत आशा रखते हैं कि गांधी जी के बाद उनके सेवक कुछ न कुछ काम करेंगे. उनकी सेवा में लग जायँगे. दूसरे बहुत सारे लोग कुछ सेवा करते भी हैं. फिर भी वह सिर्फ़ नाम को होती है, जोश दिलाने वाली नहीं होती है और बेलाग तो होती ही नहीं है. इस वक़्त जरूरत है बेलाग सेवा की. यानी ऐसी सेवा की कि जिसके पीछे कोई दूसरा मक़सद न हो, सिवा इसके कि जिनकी हम सेवा करते हैं उनकी सेवा करके उनको हिम्मत देना और मदद पहुँचाना. आज कल जो सेवा की जाती है वह अपने निजी स्वार्थ के ख़याल से की जाती है और वह भी बहुत कम. देहात के पीछे देहात देखे गए जहाँ बहुत लोग पहुंचे भी नहीं हैं. वहाँ अगर कोई सभा हुई तो एलेक्शन की हुई, और कोई सभा नहीं हुई. जहाँ इल्म ज्ञान का प्रचार नाम को भी नहीं है, जहाँ किसी तरह की रोशनी नहीं पहुंची है, जहाँ स्कूल भी नहीं है, जहाँ बच्चों के विकास का कोई ख़याल नहीं है, ऐसे कई गाँव देखे. हमको वे सारे गाँव के लोग बुला रहे हैं

، گاؤں میں زوروں سے آئیگا. آج بھی کافی تعداد میں آیا
اور یہ جو تھوڑا سا بچا ہوا کام ہے وہ بھی برباد ہوسکتا
یہ سب کچھ ہم نے دیکھا .

گاؤں کی پکار

کئی دیہات ایسے ملے کہ اگر ہمیں یہاں' شیو رام پلی
،' آنے کی ضرورت نہ ہوتی تو وہیں چند روز رہ جانے
اچھا ہوتی . کیونکہ ایک جگہ دیکھنا' وہاں کی کمیاں
سوس کرنا' اُن کو ہم حل کر سکتے ہیں ایسا وشواس
اور پھر بھی اُس جگہ کو چھوڑ کر آگے بڑھنا' یہ اچھا
ں لگتا تھا . پھر بھی وہ کرنا پڑا . جہاں جہاں ہوسکے
، لوگوں میں مقامی ہی کام کرنے والے نکلیں' ایسی
ش بھی کی . انوبھو کا سار یہی ہے کہ ہم جو اکثر
وں میں کام کرتے ہیں اور شہروں سے سمبندھ رکھتے
، وہ اپنا شہر کا سمبندھ قائم رکھکر بھی اگر اپنی رہنے
جگہ دیہات ہی میں رکھیں اور ہم میں سے ہر ایک
ام پر اگر ایک دیہات رہے تو بہت بھاری کام ہوگا .

بہت دفعہ سوچتا ہوں تو لگتا ہے کہ یہ کیوں نہیں
سکتا کہ جو بھی کام ہم کرتے ہیں' چاہے کوئی کانگریس
ی کا آفس بھی چلاتا ہو' تو وہ کسی دیہات میں کیوں
ولے ؟ جہاں پوسٹ آفس وغیرہ کا کچھ سبھیتا ہو
دیہات میں وہ بیٹھ سکتا ہے . اور اگر ہم میں سے
، شہر کے نزدیک ہی رہنا چاہتے ہیں تو وہ شہر کے
ک کا گاؤں لیکر بیٹھ سکتے ہیں . وہاں رہنے سے ہی
نہ کچھ گاؤں کا سنبندھ آئیگا . اور 'دیہات میں جانا
ئے' یہ جو پکار باپو نے اُٹھائی تھی' اس کو کچھ حد
ہم پورا کر سکتے ہیں . دیہات کے لوگ بہت آشا
، ہیں کہ گاندھی جی کے بعد اُن کے سیوک کچھ نہ
کام کرینگے . اُن کی سیوا میں لگ جائیں گے . دوسرے
، سارے لوگ کچھ سیوا کرتے بھی ہیں . پھر بھی وہ
، نام کو ہوتی ہے' جوش دلانے والی نہیں ہوتی ہے
ہ لاگ تو ہوتی ہی نہیں ہے . اِس وقت ضرورت ہے
لاگ سیوا کی . یعنی ایسی سیوا کی جسکے پیچھے
، دوسرا مقصد نہ ہو' سوا اِسکے کہ جنکی ہم سیوا
ہیں اُن کی سیوا کرکے اُن کو ہمت دینا اور مدد
چانا . آج کل جو سیوا کی جاتی ہے وہ اپنے نجی سوارتھ
خیال سے کی جاتی ہے اور وہ بھی بہت کم .
ت کے پیچھے دیہات دیکھے گئے جہاں بہت لوگ
چے بھی نہیں ہیں . وہاں اگر کوئی سبھا ہوئی تو
شن کی ہوئی' اور کوئی سبھا نہیں ہوئی . جہاں
گیان کا پرچار نام کو بھی نہیں ہے' جہاں کسی طرح
روشنی نہیں پہنچی ہے' جہاں اسکول بھی نہیں
جہاں بچوں کے وکاس کا کوئی خیال نہیں ہے' ایسے
، گاؤں دیکھے . ہمکو وہ سارے گاؤں کے لوگ بلا رہے ہیں

देहात की जीवन बूटी *

मेरे अत्यंत प्यारे भाइयो और बहनो !

पैदल यात्रा का यह मेरा आखिरी दिन है. हैदराबाद से यहाँ तक का छोटा सा पाँच मील का सफ़र आज हुआ. रास्ते में परमेश्वर की कृपा से सब तरह से अच्छा रहा और बहुत ही दिलचस्प तजरबे हुए. देहात के लोगों में जोश देखा. शहरों में भी जोश कम नहीं था. लेकिन देहात में एक खास भावना देखी जिससे यह साफ़ जाहिर होगया कि हमारा वहाँ पहुँचना कितना जरूरी था और है. रोज हम वैसे ज्यादा नहीं चलते थे, लेकिन कोशिश यह होती थी कि छोटे छोटे गाँव में मुक़ाम करें. कई छोटे छोटे गाँव देखने में आए. जहाँ बन सका वहाँ गाँव के घरों में भी घूम आया. हालाँ कि मैं तेलगू जानता हूँ, पर तेलगू में बात नहीं कर सकता. फिर भी जितना कुछ ज्ञान था उसका बहुत इस्तेमाल हुआ—प्रेमभाव बढ़ाने में. जब मैंने इन भाशाओं का अभ्यास शुरू किया था प्रेमभाव के विकास की नजर से, तो प्रार्थना में मैं स्थित प्रज्ञ के लक्षण तेलगू भाशा में बोलता था. मैंने देखा कि वे लक्षण उनके दिल तक सीधे पहुंच जाते थे और उनको महसूस होता था कि अपना ही एक भाई बोल रहा है. बहुत प्रेम से लोगों ने हमारा स्वागत किया.

गाँव की गिरावट

गाँवों की जो हालत हमने देखी वह जैसा हम सोचते थे वैसी ही थी. इतना ही नहीं, बलिक बदतर थी. इतनी कल्पना हम घर बैठे नहीं कर सकते थे. सिवाय खेती के, जो एक ही धंदा उनके हाथ में रहा है, और कोई धंदा कई देहातों में नहीं देखा. कुछ देहात ऐसे जरूर थे कि जहाँ दूसरे दो चार धंदे चलते थे. लेकिन कुछ ऐसे भी देहात देखे जहाँ वे भी छोटे छोटे धंदे मौजूद नहीं हैं. कुछ औरतें कातती थीं. कुछ आदमी भी कातने वाले देखे. और अपने सूत का कपड़ा पहनने वाले भी कुछ देखे. इस पर से यह जाहिर है कि यह एक धंदा ऐसा था और है कि जो हर हालत में देहात में चल सकता है. लेकिन अभी इस मुल्क में आमद-रफ्त के साधन बहुत नहीं हुए हैं और सड़कें बन रही हैं. लेकिन जैसे जैसे ये साधन बढ़ेंगे, बाहर का

* सर्वोदय सम्मेलन, शिवरामपल्ली, हैदराबाद में ७ अप्रैल '51 को श्री विनोबा जी का भाषण जो उन्होंने अधिवेशन खोलते वक्त दिया. भाषा कहीं कहीं आसान कर दी गई है.

دیہات کی جیون بوٹی *

میرے اتیئنت پیارے بھائیو اور بہنو !

پیدل یاترا کا یہ میرا آخری دن ہے ۔ حیدرآباد سے یہاں تک کا چھوٹا سا پانچ میل کا سفر آج ہوا ۔ راستے میں پرمیشور کی کرپا سے سب طرح سے اچھا رہا اور بہت ہی دلچسپ تجربے ہوئے ۔ دیہات کے لوگوں میں جوش دیکھا ۔ شہروں میں بھی جوش کم نہیں تھا ۔ لیکن دیہات میں ایک خاص بھاونا دیکھی جس سے یہ صاف ظاہر ہوگیا کہ ہمارا وہاں پہنچنا کتنا ضروری تھا اور ہے ۔ روز ہم ویسے زیادہ نہیں چلتے تھے' لیکن کوشش یہ ہوتی تھی کہ چھوٹے چھوٹے گاؤں میں مقام کریں ۔ کئی چھوٹے چھوٹے گاؤں دیکھنے میں آئے ۔ جہاں بن سکا وہاں گاؤں کے گھروں میں بھی گھوم آیا ۔ حالانکہ میں تیلگو جانتا ہوں' پر تیلگو میں بات نہیں کر سکتا ۔ پھر بھی جتنا کچھ گیان تھا اسکا بہت استعمال ہوا -- پریم بھاؤ بڑھانے میں ۔ جب میں نے اِن بھاشاؤں کا ابھیاس شروع کیا تھا پریم بھاؤ کے وکاس کی نظر سے' تو پرارتھنا میں میں ستھت پرگیہ کے لکشن تیلگو بھاشا میں بولتا تھا ۔ میں نے دیکھا کہ وہ لکشن اُن کے دل تک سیدھے پہنچ جاتے تھے اور اُن کو محسوس ہوتا تھا کہ اپنا ہی ایک بھائی بول رہا ہے ۔ بہت پریم سے لوگوں نے ہمارا سواگت کیا ۔

گاؤں کی گراوٹ

گاؤں کی جو حالت ہم نے دیکھی وہ جیسا ہم سوچتے تھے ویسی ہی تھی ۔ اِتنا ہی نہیں' بلکہ بدتر تھی ۔ اتنی کلپنا ہم گھر بیٹھے نہیں کر سکتے تھے ۔ سوائے کھیتی کے' جو ایک ہی دھندا اُن کے ہاتھ میں رہا ہے' اور کوئی دھندا کئی دیہاتوں میں نہیں دیکھا ۔ کچھ دیہات ایسے ضرور تھے کہ جہاں دوسرے دو چار دھندے چلتے تھے ۔ لیکن کچھ ایسے بھی دیہات دیکھے جہاں وہ بھی چھوٹے چھوٹے دھندے موجود نہیں ہیں ۔ کچھ عورتیں کاتتی تھیں ۔ کچھ آدمی بھی کاتنے والے دیکھے ۔ اور اپنے سوت کا کپڑا پہننے والے بھی کچھ دیکھے ۔ اِس پر سے یہ ظاہر ہے کہ یہ ایک دھندا ایسا تھا اور ہے کہ جو ہر حالت میں دیہات میں چل سکتا ہے ۔ لیکن ابھی اِس ملک میں آمدورفت کے سادھن بہت نہیں ہوئے ہیں اور سڑکیں بن رہی ہیں ۔ لیکن جیسے جیسے یہ سادھن بڑھینگے' باہر کا

* سروودے سمیلن' شیورام پلی' حیدرآباد میں 7 اپریل '51 کو شری ونوبا جی کا بھاشن جو اُنہوں نے سمیلن کھولتے وقت دیا ۔ بھاشا کہیں کہیں آسان کر دی گئی ہے ۔

बनवाये जाये. जनता का पैसा जनता की सरकार ने खर्च किया और जनता के ही काम के लिये, फिर बेकार का शोर क्यों !

पत्रकार शोर मचा सकते हैं कि अगर राय ली जायेगी तो हमारी बात को कुछ भी राय न मिलेगी. इस से क्या होता है. सोमनाथ में आखिर यूँ भी तो वह चीज़ आयगी जिसे भारत की 100 फ़ी सदी जनता अपनाये हुए है, कोई हमें रोक कर ठीक करने लगेगा, नहीं नहीं 'पचास फ़ी सदी'. तब हम कहेंगे कि जाइये और सोमनाथ के दर्शन कीजिये और हमारी सच्चाई की जाँच कर लीजिये !

बापू ! आप मुसकराते क्यों हैं ? हम तो सच ही कह रहे हैं !

—भगवानदीन

नाच

नाच रहे मन नाचे जाओ
लोग हँसें हँसनें दो उनको, अपने राम रिझाओ

ठुनक ठुनक घुँघरू बजने दो
सुख रस साज सजा सजने दो
यह ही रंग मुझे छजने दो
नेक न सोचो इधर उधर की, गाओ तान उड़ाओ.

थिरक थिरक कर लो फिरकैयाँ
खड़े सामने राम गुसैयाँ
अब न छोड़ना इनकी छैयाँ
हिलने दो अब ठुड्डी गरदन, हाँ नैना मटकाओ

कंधा अपनी बारी डूले
छाती सुख साँसों से फूले
बाँह उठे आ नीचे झूले
दो नितम्ब बेखटक मटकने, कमर झुका लचकाओ

सिर का घड़ा न रत्ती ढलके
हाथ कटोरा नेक न छलके
ऐसे नाचो हलके हलके
पाँव तले का एक बताशा, जो तुम तोड़ न पाओ

लग जाओ अब बाँह उठाने
और कलाई को लचकाने
उंगली पोर पोर लहराने
अपने तन में औरों के भी, सुख बिजली लहराओ

—भगवानदीन

جنتا کے کھاتے . جنتا کا پیسہ جنتا کی سرکار نے خرچ کیا اور جنتا کے ہی کام کے لئے' پھر بیکار کا شور کیوں !

پترکار شور مچا سکتے ہیں کہ اگر رائے لی جاویگی تو ہماری بات کو کچھ بھی رائے نہ ملے گی . اِس سے کیا ہوتا ہے . سومناتھ میں آخریں یوں بھی تو وہ چیز آئیگی جسے بھارت کی سوفیصدی جنتا اپنائے ہوئے ہے' کوئی ہمیں روک کر ٹھیک کرنے لگے گا' ' نہیں نہیں ' پچاس فیصدی' . تب ہم کہیں گے کہ جائیے اور سومناتھ کے درشن کیجئے اور ہماری سچائی کی جانچ کر لیجئے !

باپو ! آپ مسکراتے کیوں ہیں ؟ ہم تو سچ ہی کہہ رہے ہیں !

—بھگوان دین

ناچ

ناچ رہے من ناچے جاؤ
لوگ ہنسیں ہنسنے دو انکو' اپنے رام رجھاؤ

ٹھنک ٹھنک گھنگھرو بجنے دو
سکھ رس ساج سجا سجنے دو
یہ ہی رنگ مجھے چھجنے دو
نیک نہ سوچو اِدھر اُدھر کی' گاؤ تان اُڑاؤ

تھرک تھرک کرلو پھرکیاں
کھڑے سامنے رام گسیاں
اب نہ چھوڑنا اِن کی چھیاں
ہلنے دو اب ٹھڈی گردن' ہاں نینا مٹکاؤ

کندھا اپنی باری اُولے
چھاتی سکھ سانسوں سے پھولے
بانہہ اُٹھے آ نیچے جھولے
دو نتمب بے کھٹک مٹکنے' کمر جھکا لچکاؤ

سر کا گھڑا نہ رتی ڈھلکے
ہاتھ کٹورا نیک نہ چھلکے
ایسے ناچو ہلکے ہلکے
پاؤں تلے کا ایک بتاشہ' جو تم توڑ نہ پاؤ

لگ جاؤ اب بانہہ اُٹھانے
اور کلائی کو لچکانے
اُنگلی پور پور لہرانے
اپنے تن میں اَوروں کے بھی' سکھ بجلی لہراؤ

—بھگوان دین

में विवाह धार्मिक रस्म है. विवाह की सब रस्में भी धार्मिक होती हैं, वह गालियाँ भी धर्म समझ कर गाई जाती हैं और बूढ़े बड़ों से हमने यह सुना है कि वह सीता और रुक्मनी के विवाह के अवसर पर भी गाई गई थीं. और रास लीला में तो अब भी हम उसका रिवाज देखते हैं. इसलिये आज हमें बड़ा दुख हो रहा है कि 'भद्र संस्कृति' की ऐसी एक रस्म को तोड़कर हमने वही काम किया जो उसने किया, जिसने सती प्रथा तोड़ी या जिसने सोमनाथ का मन्दिर तोड़ा. अब हम चाहते हैं कि गाली की इस रस्म को फिर से जारी करने की रस्म के लिये राष्ट्रपति को बुलवायें और भीक माँगकर उसके लिये खर्चा जुटायें, क्योंकि मजदूरी करके तो हम आज के हिन्दुस्तान में, तीन जनम में भी इतना पैसा नहीं जुटा सकते !

बापू ! जब अंगरेज यहाँ राज करते थे तो हुकूमत करने के नाते कुछ ऐसे काम कर बैठते थे जो लोगों की नजर में जुल्म माने जाते थे—जैसे जलियान वाला बाग़, मोपला ट्रेन ट्रेजडी, चिमूर आष्टी दुर्घटना .

लोग तो, नासमझी से, माँ बाप अगर बच्चे को दो चपत जमा दें तो उसको भी ग़लत समझ बैठते हैं. असल में इस तरह के कामों को समझने के लिये मामूल से ज्यादा बुद्धि चाहिये ! अंगरेजी राज में यह काम ईसाई धर्म के जानकार पादरी किया करते थे, और वही ठीक ठीक बता सकते थे. सरकारी काम कोई मामूली काम तो होते नहीं जिन्हें हर कोई समझ ले: उसको समझने के लिये सन्तों की या सन्त जैसों की जरूरत होती है ! सन्त-जैसों के बग़ैर तो वह समझ में आ ही नहीं सकते. बापू ! आज काँगरेसी सरकार के बहुत से काम इतने पेचीदा और बहुत से देखने में इतने बेतुके मालूम होते हैं जिन्हें हर कोई नहीं समझ सकता. इसलिये इन कामों को समझने के लिये सन्तों या सन्त जैसों की जरूरत है ! और यह काम वर्धा के 'हरिजन' और 'सर्वोदय' पत्रोंने ले रखा है. हमारे देस के भलेमानस पत्रकारों को इतना भी नहीं सूझता कि अपने पत्रों में सरकारी कामों पर राय देने से पहिले 'हरिजन' और 'सर्वोदय' पढ़ लिया करें !

सोमनाथ को लेकर ही जून सन इक्यावन के 'सर्वोदय' में राष्ट्रपति के प्रभास पाटन जाने के बारे में साफ़ राय दी गई है, और वह यह कि वहाँ जो कुछ हुआ, वह वही हुआ जिसको हिन्दुस्तान की जनता चाहती थी ! और जनता की सरकार वह न करे, <u>जो जनता चाहती है,</u> तो और क्या करे ?

जनता का भारत, जनता के पहाड़, जनता के पत्थर. उसी पत्थर से तैयार हुए जनता के सोमनाथ, जनता के लड्डू,

میں وواہ دھارمک رسم ہے۔ وواہ کی سب رسمیں بھی دھارمک ہوتی ہیں' وہ گالیاں بھی دھرم سمجھکر گائی جاتی ہیں اور بوڑھے بڑوں سے ہم نے یہ سنا ہے کہ وہ سیتا اور رکمنی کے وواہ کے اوسر پر بھی گائی گئی تھیں۔ اور راس لیلا میں تو اب بھی ہم اُس کا رواج دیکھتے ہیں۔ اِسلئے آج ہمیں بڑا دُکھ ہو رہا ہے کہ ' بھدر سنسکرتی ' کی ایسی ایک رسم کو توڑ کر ہم نے وہی کام کیا جو اُس نے کیا' جسنے ستی پرتھا توڑی یا جسنے سومناتھ کا مندر توڑا۔ اب ہم چاہتے ہیں کہ گالی کی اِس رسم کو پھر سے جاری کرنیکی رسم کے لئے راشٹر پتی کو بلوائیں اور بھیک مانگ کر اُسکے لئے خرچہ جٹائیں' کیونکہ مزدوری کرکے تو ہم آجکے ہندستان میں' تین جنم میں بھی اِتنا پیسہ نہیں جٹا سکتے !

باپو ! جب انگریز یہاں راج کرتے تھے تو حکومت کرنے کے ناتے کچھ ایسے کام کر بیٹھتے تھے جو لوگوں کی نظر میں ظلم مانے جاتے تھے — جیسے جلیان والا باغ' موپلا ٹرین ٹریجڈی' چمور آشٹی درگھٹنا۔

لوگ تو' ناسمجھی سے' ماں باپ اگر بچےکو دو چپت جمادیں تو اُسکو بھی غلط سمجھ بیٹھتے ہیں۔ اصل میں اِسطرح کے کاموں کو سمجھنے کے لئے معمول سے زیادہ بدھی چاہئے ! انگریزی راج میں یہ کام عیسائی دھرم کے جانکار پادری کیا کرتے تھے' اور وہی ٹھیک ٹھیک بتا سکتے تھے۔ سرکاری کام کوئی معمولی کام تو ہوتے نہیں جنہیں ہر کوئی سمجھ لے۔ اسکو سمجھنے کے لئے سنتوں کی یا سنت جیسوں کی ضرورت ہوتی ہے ! سنت جیسوں کے بغیر تو وہ سمجھ میں آہی نہیں سکتے۔ باپو ! آج کانگریسی سرکار کے بہت سے کام اِتنے پیچیدہ اور بہت سے دیکھنے میں اِتنے بے تکے معلوم ہوتے ہیں جنہیں ہر کوئی نہیں سمجھ سکتا۔ اِسلئے ان کاموں کو سمجھنے کے لئے سنتوں یا سنت جیسوں کی ضرورت ہے ! اور یہ کام وردھا کے ' ہریجن ' اور ' سروودے ' پتروں نے لے رکھا ہے۔ ہمارے دیس کے بھلے مانس پترکاروں کو اِتنا بھی نہیں سوجھتا کہ اپنے پتروں میں سرکاری کاموں پر رائے دینے سے پہلے ' ہریجن ' اور ' سروودے ' پڑھ لیا کریں !

سومناتھ کو لیکر ہی جون سن '51 کے ' سروودے ' میں راشٹر پتی کے پربھاس پاٹن جانے کے بارے میں صاف رائے دی گئی ہے اور وہ یہ کہ وہاں جو کچھ ہوا' وہ وہی ہوا جسکو ہندستان کی جنتا چاہتی تھی ! اور جنتا کی سرکار وہ نہ کرے' <u>جو جنتا چاہتی ہے</u>' تو اور کیا کرے ؟

جنتا کا بھارت جنتا کے پہاڑ' جنتا کے پتھر۔ اُسی پتھر سے تیار ہوئے جنتا کے سومناتھ' جنتا کے لڈو'

इस मामले में राष्ट्रपति से मिलें और उन्हें इस बात के लिये राज़ी करलें कि वो उनके मन्दिर के पास एक शराब की दूकान खोलने की रस्म अदा कर दें. और जब हमारे राष्ट्रपति यह रस्म अदा करने जायँगे, तब भी सब नहीं तो ऐसे पत्रकार, जिनके धर्म में शराब मना है, कुछ न कुछ ज़रूर लिख मारेंगे ! बापू ! अब आप ही बताइये कि अगर हमारे राष्ट्रपति इन पत्रकारों की राय पर अमल करने लगें तो एक दिन भी हुकूमत चल सके ? इन शोर मचाने वालों को हुकूमत की चाल से क्या सरोकार !

बापू ! जब धर्म के नाते हमारे राष्ट्रपति भैरवी चक्र में शामिल होने जायंगे, तब तो यह पत्रकार बौखला उठेंगे, पर इनकी बौखलाहट की दो कौड़ी भी उठेगी ? इनको यह तक नहीं मालूम कि जिसे यह 'कुसंग सभा' कहते हैं, असल में वो 'भद्र सभा' है, और अगर इन्हें हमारी बात पर एतबार न हो, तो हम सबूत में जून सन इक्यावन के 'सर्वोदय' को पेश करते हैं जिसमें श्री किशोर लाल मशरूवाला ने भी स्वामी सहजानन्द की बताई 'कुसंग सभा' को बड़े संकोच के साथ 'भद्र सभा' का नाम दिया है. बापू ! यह पत्रकार नासमझ हैं, यह बात बुरी नहीं, पर समझ देने वाले जो दो चार पत्र और जो दो चार आदमी रह गये हैं, उनसे यह लोग समझ भी तो नहीं लेते !

बापू ! अगर हम भूलते नहीं हैं तो आपने एक बार स्वामी दयानन्द जी के लिखे सत्यार्थ प्रकाश के बारे में दो चार कड़े शब्द कहे थे, पर आज तो हम 'सर्वोदय' से सीख लेकर सत्यार्थ प्रकाश पर नहीं, स्वामी जी पर यह टीका करते हैं कि उन्होंने मूर्ति की पूजा जैसी 'भद्र संस्कृति' के खिलाफ़ लेखनी उठाकर उस 'सन्त संस्कृति' को धक्का पहुँचाया जो 'भद्र संस्कृति' को साथ लेकर चली थी ! बापू ! स्वामी जी गुजराती थे, इसलिये हम आपसे पूछते हैं कि हम ठीक टीका कर रहे हैं न ?

बापू ! अब आपसे क्या छुपायें. 'भद्र संस्कृति' के खिलाफ़ बाईस बरस की उमर में हमारे हाथ से भी एक गुनाह हो गया है. हम चाहते हैं एक दिन राष्ट्रपति को बुलाकर उस पाप का प्रायश्चित्त कर डालें.

वह पाप यह है—

विवाह के मौके पर आई हुई बरात को घरात की औरतें गालियाँ गाती हैं, और वह गालियाँ इतनी गंदी होती हैं—हाय ! हाय ! हम धर्म की 'भद्र संस्कृति' के लिये गन्दा शब्द निकाल बैठे—माफ़ करना बापू ! वह गालियाँ सचमुच ऐसी होती हैं कि भले आदमियों को भली नहीं लगतीं, हमें भी अच्छी नहीं लगीं. हिन्दुओं

س معاملے میں راشٹرپتی سے ملیں اور انہیں اس بات کے لئے راضی کرلیں کہ وہ اُنکے مندر کے پاس ایک شراب کی دوکان کھولنے کی رسم ادا کردیں. اور جب ہمارے راشٹرپتی یہ رسم ادا کرنے جائینگے تب بھی سب نہیں تو ایسے پترکار' جنکے دھرم میں شراب منع ہے' کچھ نہ کچھ ضرور لکھ مارینگے ! باپو ! اب آپ ہی بتائیے کہ اگر ہمارے راشٹرپتی اِن پترکاروں کی رائے پر عمل کرنے لگیں تو ایک دن بھی حکومت چل سکے ؟ اِن شور مچانے والوں کو حکومت کی چال سے کیا سروکار !

باپو ! جب دھرم کے ناتے ہمارے راشٹرپتی بھیروی چکر میں شامل ہونے جائینگے تب تو یہ پترکار بوکھلا اٹھیں گے' پر اِن کی بوکھلاہٹ کی دو کوڑی بھی اٹھیگی ؟ اِن کو یہ تک نہیں معلوم کہ جسے یہ 'کوسنگ سبھا' کہتے ہیں' اصل میں وہ 'بھدر سبھا' ہے' اور اگر اِنہیں ہماری بات پر اعتبار نہ ہو' تو ہم ثبوت میں جون سن اکیاون کے 'سروودے' کو پیش کرتے ہیں جس میں شری کشورلال مشروالا نے شری سوامی سہجانند کی بتائی 'کوسنگ سبھا' کو بڑے سنکوچ کے ساتھ 'بھدر سبھا' کا نام دیا ہے. باپو ! یہ پترکار نا سمجھ ہیں' یہ بات بری نہیں' پر سمجھ دینے والے جو دو چار پتر اور جو دو چار آدمی رہگئے ہیں' اُن سے یہ لوگ سمجھ بھی تو نہیں لیتے !

باپو ! اگر ہم بھولتے نہیں ہیں تو آپ نے ایک بار سوامی دیا نند جی کے لکھے ستیارتھ پرکاش کے بارے میں دو چار کڑے شبد کہے تھے' پر آج تو ہم 'سروودے' سے سیکھ لیکر ستیارتھ پرکاش پر نہیں' سوامی جی پر یہ ٹیکا کرتے ہیں کہ اُنہوں نے مورتی کی پوجا جیسی 'بھدر سنسکرتی' کے خلاف لیکھنی اُٹھا کر اُس 'سنت سنسکرتی' کو دھکا پہنچایا جو 'بھدر سنسکرتی' کو ساتھ لیکر چلی تھی! باپو ! سوامی جی گجراتی تھے اِس لئے ہم آپ سے پوچھتے ہیں کہ ہم ٹھیک ٹیکا کر رہے ہیں نہ ؟

باپو ! اب آپ سے کیا چھپائیں. 'بھدر سنسکرتی' کے خلاف بائیس برس کی عمر میں ہمارے ہاتھ سے بھی ایک گناہ ہوگیا ہے. ہم چاہتے ہیں ایک دن راشٹرپتی کو بلا کر اُس پاپ کا پرایشچت کر ڈالیں.

وہ پاپ یہ ہے —

وواہ کے موقعہ پر آئی ہوئی برات کو گھرات کی عورتیں گالیاں گاتی ہیں اور وہ گالیاں اتنی گندی ہوتی ہیں— ہائے ! ہائے ! ہم دھرم کی 'بھدر سنسکرتی' کے لئے گندا شبد نکال بیٹھے—معاف کرنا باپو ! وہ گالیاں سچ مچ ایسی ہوتی ہیں کہ بھلے آدمیوں کو بھلی نہیں لگتیں. ہمیں بھی اچھی نہیں لگیں. ہندوؤں

और यह समझकर कि यह अपना खून आप ही पी रहे हैं, जब भी उनसे हड्डी छीनने की कोशिश की तब तब वह हमसे नाराज हुये और उन्होंने दुख ही माना. फिर धर्म की खातिर यह ग़रीब आदमी भूके रह कर पंडों को लड्डू खिलाने से रोके जायंगे तो कितने नाराज होंगे और कितना दुख मानेंगे, इसका अन्दाजा यह मूरख पत्रकार जरा भी नहीं लगा पाते और साधु पुरुश, मुँशी कन्हैया लाल, पर फबती कस बैठते हैं और रिशी तुल्य राश्ट्रपति महापंडित राजेन्द्र प्रसाद पर, जो जी में आया, लिख मारते हैं। बापू ! कोई इनसे यह पूछे कि यह कितनी सरकारें अब तक चला चुके हैं ? कहाँ राजनेता और कहाँ यह टुट-पुँजिये पत्रकार !

सेकुलर सरकार के नाते या अपनी निजी हैसियत से कल अगर जगन्नाथ पुरी के मन्दिर के मालिक, राश्ट्रपति को उन मूर्तियों का पर्दा हटाने को बुलायें, जिन पर धर्म के ठीक ठीक न समझने वालों ने पर्दा डलवा रखा है, और उनका बुलावा मंजूर करके हमारे राश्ट्रपति पर्दा हटाने के लिये जायँ, तब न जाने इन नासमझ पत्रकारों का क्या हाल होगा ! "राजनीत जगत के ये बच्चे पत्रकार, टक्कर लेने बैठे हैं, राजनीत में घुटे बड़े बूढ़े—महारथियों से ! सरकार की हैसियत से, सेकुलर सरकार अभी क्या क्या नहीं करेगी, इसका उनको क्या अन्दाजा !

सती धर्म नश्ट हो चुका है और वो भी सोमनाथ के मन्दिर की तरह पापी विलियम बैंटिंग धराशाई कर गया है ! अभी उसका उद्धार बाक़ी है ! और हिन्दू धरम के नाते श्री करपात्री जी और श्रीमती प्रभावती राजे, किसी देवी को सती होने को तैयार करके, सती प्रथा के उद्धार की खातिर राश्ट्रपति को निमंत्रन दें और सेकुलर सरकार के राश्ट्रपति होने के नाते जब उन्हें वहाँ जाना ही पड़े तब तो यह पत्रकार शायद आग बगूला हो जायगें ! बापू ! यह पत्रकार, न तो राजनीति के पेचों को समझते हैं, न नेता गिरी के दाँव पेचों से वाक़िफ़ हैं. रही चुनाव की कला, उसकी इन्हें अभी अलिफ़ बे भी नहीं आती. पंखे के नीचे कुर्सी मेज के सहारे क़लम घसीट कर यह पत्रकार न जाने अपने को क्या समझते हैं.

बापू ! आप शराब बन्द करने की बात तो कह गये. पर उस वक़्त शायद आपकी नजर या तो इसलाम धर्म पर रही, या उन ग़रीब मज़दूरों पर रही जो शराब पीकर अपनी औरत बच्चों को भूकों मारते थे. अगर कहीं आपकी नजर शाक धर्मियों या वाम मार्गियों पर गई होती, या कम से कम उनका कोई डेपूटेशन आपके पास आया होता तो आप चाहे दुनिया की शराब बन्द करा देते, पर उनका तो धर्म के नाते कुछ ख्याल करते ही ! अचरज नहीं जल्दी ही शाक लोग और वाम मार्गी

یہ سمجھکر کہ یہ اپنا خون آپ ہی پی رہے ہیں، جب بھی اُن سے ہڈی چھیننے کی کوشش کی تب تب وہ ہم سے ناراض ہوئے اور دُکھ ہی مانا۔ پھر دھرم کی خاطر یہ غریب آدمی بھوکے رہکر پنڈوں کو لڈو کھلانے سے روکے جائینگے تو کتنے ناراض ہونگے اور کتنا دُکھ مانینگے، اسکا اندازہ یہ مورکھ پترکار ذرا بھی نہیں لگاپاتے اور سادھو پرش، منشی کنھیالال، پر پھبتی کس بیٹھتے ہیں اور رشی تلیہ راشٹرپتی مہاپنڈت راجندر پرساد پر، جو جی میں آیا، لکھ مارتے ہیں ! باپو ! کوئی اِن سے یہ پوچھے کہ یہ کتنی سرکاریں اب تک چلا چکے ہیں ؟ کہاں راج نیتا اور کہاں یہ ٹٹ پونجئے پترکار !

سیکولر سرکار کے ناتے یا اپنی نجی حیثیت سے کل اگر جگناتھ پوری کے مندر کے مالک، راشٹرپتی کو اُن مورتیوں کا پردہ ہٹانے کو بلائیں، جن پر دھرم کے ٹھیک ٹھیک نہ سمجھنے والوں نے پردہ ڈلوا رکھا ہے، اور اُن کا بلاوا منظور کرکے ہمارے راشٹرپتی پردہ ہٹانے کے لئے جائیں، تب نہ جانے اِن ناسمجھ پترکاروں کا کیا حال ہوگا ! راج نیت جگت کے یہ بچے پترکار، ٹکر لینے بیٹھے ہیں، راج نیت میں گھٹے بڑے بوڑھے مہارتھیوں سے ! سرکار کی حیثیت سے، سیکولر سرکار ابھی کیا کیا نہیں کریگی، اسکا اُنکو کیا اندازہ !

ستی دھرم نشٹ ہو چکا ہے اور وہ بھی سومناتھ کے مندر کی طرح پاپی ولیم بینٹنگ دھراشائی کر گیا ہے ! ابھی اسکا اُدھار باقی ہے ! اور ہندو دھرم کے ناتے شری کرپاتری جی اور شریمتی پربھاوتی راجے، کسی دیوی کو ستی ہونے کو تیار کرکے، ستی پرتھا کے اُدھار کی خاطر راشٹرپتی کو نمنترن دیں اور سیکولر سرکار کے راشٹرپتی ہونے کے ناتے جب اُنہیں وہاں جانا ہی پڑے تب تو یہ پترکار شاید آگ بگولا ہوجائینگے ! باپو ! یہ پترکار، نہ تو راج نیتی کے پیچوں کو سمجھتے ہیں، نہ نیتاگیری کے داؤں پیچوں سے واقف ہیں۔ رہی چناؤ کی کلا، اسکی انہیں ابھی الف بے بھی نہیں آتی۔ پنکھے کے نیچے کرسی میز کے سہارے قلم گھسیٹ کر یہ پترکار نہ جانے اپنے کو کیا سمجھتے ہیں۔

باپو ! آپ شراب بند کرنے کی بات تو کہہ گئے۔ پر اس وقت شاید آپ کی نظر یا تو اسلام دھرم پر رہی، یا اُن غریب مزدوروں پر رہی جو شراب پی کر اپنی عورت بچوں کو بھوکوں مارتے تھے۔ اگر کہیں آپ کی نظر شاکت دھرمیوں یا بام مارگیوں پر گئی ہوتی، یا کم سے کم اُن کا کوئی ڈیپوٹیشن آپ کے پاس آیا ہوتا تو آپ چاہے دنیا کی شراب بند کرا دیتے، پر اُن کا تو دھرم کے ناتے کچھ خیال کرتے ہی ! تعجب نہیں جلدی ہی شاکت لوگ اور بام مارگی

बापू से !

बापू !

सोमनाथ के मन्दिर के खुलने का काम हुए हफ़्तों बीत गये, पर अखबार हैं कि अभी तक न आवाजे कसने से बाज़ आते हैं और न छींटे फेंकने से. यह अपनी धुन में इतने मस्त हो जाते हैं कि इन्हें यह तक याद नहीं रहता कि, बापू ! आप खुद एक बार एक गुरुद्वारे में एक अधन्ना चढ़ा चुके हैं. यह ठीक है कि उन दिनों हिन्दुस्तान में अंगरेजों का राज था. पर इससे क्या ! आप सिख धर्मी तो नहीं थे. आप तो सर्व धर्म समभावी थे, और 'सेकुलर' शब्द का 'सर्व धर्म समभाव' से अच्छा और क्या अर्थ हो सकता है ? बस, आजकल की हमारी सेकुलर सरकार सर्व धर्म समभावी है, और इस नाते हमारी सरकार, सरकारी हैसियत से, किसी को भी सोमनाथ का मन्दिर खोलने के लिये भेज सकती थी और एक अधन्ना नहीं आधा करोड़ या आधा अरब, अगर उसमें समाई हो, तो सोमनाथ के मन्दिर को दान दे सकती थी या उसमें चढ़ा सकती थी. पर ऐसा कुछ तो सरकार ने किया नहीं. हमारे राष्ट्रपति तो निजी हैसियत से वहाँ पहुँचे थे और उसी सिलसिले में सरकार ने थोड़ा बहुत खर्च कर दिया था. पर उस बात को भी कुछ नासमझ पत्रकार ले उड़े और सुई का फावड़ा बनाकर जनता के सामने रख दिया. प्रभास पाटन में किस चीज़ की स्थापना हो रही थी, इससे सेकुलर सरकार के राष्ट्रपति को क्या मतलब. उनका तो सिर्फ़ इतना काम है कि वह यह जान लें कि वहाँ धर्म के रिवाज के माफ़िक़ नया काम शुरू किया जा रहा है या किसी पुराने रिवाज या पुराने मन्दिर में फिर से जान डाली जा रही है, और सोमनाथ में इसके सिवा और हुआ ही क्या ? भले ही हिन्दुस्तान के करोड़ों आदमी और दुनिया के अरबों आदमी इस तरह की लिंग स्थापना को, आज के ज़माने में गिरा हुआ काम समझते हों, पर लाखों आदमी ऐसे भी तो हैं जो लिंग पूजा करते हैं और अपनी माँ-बहनों, बेटियों से उसकी पूजा कराते हैं. तो क्या सेकुलर सरकार ऐसी लाखों की तादाद वाली प्रजा का दिल तोड़ दे ? इससे क्या हुआ, अगर इस काम में शामिल होने से लाख दो लाख खर्च हो गये और इससे भी क्या हुआ अगर दस पाँच हज़ार ग़रीब आदमी भूके रह जायं. वह जो भूके रहे, खुशी से रहे, अगर उन्हें भूके रहने से कोई रोकता तो वह उससे दुखी होते. बापू ! हम सच कहते हैं कि हमने सौ फ़ीसदी कुत्तों को सूखी हड्डी चचोरते देखकर

باپو سے

باپو !

سومناتھ کے مندر کے کھلنے کا کام ہوئے ہفتوں بیت گئے، پر اخبار ہیں کہ ابھی تک نہ آوازے کسنے سے باز آتے ہیں اور نہ چھینٹے پھینکنے سے۔ یہ اپنی دھن میں اتنے مست ہوجاتے ہیں کہ انہیں یہ تک یاد نہیں رہتا کہ، باپو ! آپ خود ایک بار ایک گوردوارے میں ایک ادھنا چڑھا چکے ہیں۔ یہ ٹھیک ہے کہ اُن دنوں ہندستان میں انگریزوں کا راج تھا۔ پر اِس سے کیا ! آپ سکھ دھرمی تو نہیں تھے۔ آپ تو سرو دھرم سمبھاوی تھے، اور 'سیکولر' شبد کا 'سرو دھرم سمبھاو' سے اچھا اور کیا ارتھ ہوسکتا ہے ؟ بس آج کل کی ہماری سیکولر سرکار سرو دھرم سمبھاوی ہے، اور اِس ناتے ہماری سرکار، سرکاری حیثیت سے، کسی کو بھی سومناتھ کا مندر کھولنے کے لئے بھیج سکتی تھی اور ایک ادھنا نہیں آدھا کروڑ یا آدھا ارب، اگر اُس میں سمائی ہو، تو سومناتھ کے مندر کو دان دے سکتی تھی یا اُس میں چڑھا سکتی تھی۔ پر ایسا کچھ تو سرکار نے کیا نہیں۔ ہمارے راشٹرپتی تو نجی حیثیت سے وہاں پہنچے تھے اور اُسی سلسلے میں سرکار نے تھوڑا بہت خرچ کردیا تھا۔ پر اُس بات کو بھی کچھ نا سمجھ پترکار لے اُڑے اور سوئی کا پھاوڑا بناکر جنتا کے سامنے رکھدیا۔ پربھاس پاٹن میں کس چیز کی ستھاپنا ہو رہی تھی، اس سے سیکولر سرکار کے راشٹرپتی کو کیا مطلب۔ اُن کا تو صرف اِتنا کام ہے کہ وہ یہ جان لیں کہ وہاں دھرم کے رواج کے موافق نیا کام شروع کیا جارہا ہے یا کسی پرانے رواج یا پرانے مندر میں پھر سے جان ڈالی جارہی ہے، اور سومناتھ میں اسکے سوا اور ہوا ہی کیا ؟ بھلے ہی ہندستان کے کروڑوں آدمی اور دنیا کے اربوں آدمی اِس طرح کی لنگ ستھاپنا کو، آج کے زمانے میں گرا ہوا کام سمجھتے ہوں، پر لاکھوں آدمی ایسے بھی تو ہیں جو لنگ پوجا کرتے ہیں اور اپنی ماں بہنوں، بیٹیوں سے اُسکی پوجا کرتے ہیں۔ تو کیا سیکولر سرکار ایسی لاکھوں کی تعداد والی پرجا کا دل توڑدے ؟ اِس سے کیا ہوا، اگر اِس کام میں شامل ہونے سے لاکھ دو لاکھ خرچ ہوگئے اور اِس سے بھی کیا ہوا اگر دس پانچ ہزار غریب آدمی بھوکے رہ جائیں۔ وہ جو بھوکے رہے، خوشی سے رہے، اگر انہیں بھوکے رہنے سے کوئی روکتا تو وہ اُس سے دکھی ہوتے۔ باپو ! ہم سچ کہتے ہیں کہ ہم نے سو فیصدی کتوں کو سوکھی ہڈی چچوڑتے دیکھکر

सोमनाथ का सफ़र

(नमक पारा)

कुछ मत पूछो क्या क्या देखा !

हश्रे अक़ीदत* बरपा देखा, दीन धरम का चरचा देखा
क़ौम का ऊँचा झंडा देखा, आह ! तिरंगा नीचा देखा

और बताएँ क्या क्या देखा ?

जूनागढ़ का मेला देखा, नर नारी का रेला देखा
सत्य गुरू का चेला देखा, आग चिलम और गांजा देखा

और बताएँ क्या क्या देखा ?

हलवा पूरी छनते देखा, आटा मैदा सनते देखा
लड्डू पेड़ा बनते देखा, पेट भरों का चलना देखा

और बताएँ क्या क्या देखा ?

राजेन्दर परशाद को देखा, सेक्यूलर बुनियाद को देखा
टंडन जी उस्ताद को देखा, वैदिक काल का सपना देखा

और बताएं क्या क्या देखा ?

रिन्दों तक एक जाम न आया, रोटी का पैग़ाम न आया
गांधी जी का नाम न आया, दूर वहां से चरखा देखा

और बताएं क्या क्या देखा ?

पंडित और जटा धारी भी, ऊँचे ऊँचे ब्योपारी भी
देखे अफ़सर सरकारी भी, हर माथे पर टीका देखा

और बताएं क्या क्या देखा ?

आग लगी थी रोम में जिस दम, नीरो‡ को सूझी थी छम छम
कहीं पे देखा पेट का मातम, कहीं पे लड्डू बटता देखा

और बताएं क्या क्या देखा ?

दौलत के दल्लाल को देखा, भारत के कंगाल को देखा
और कन्हैया लाल§ को देखा, उलटा देखा सीधा देखा

और बताएं क्या क्या देखा ?

रजवाड़ों का जोबन देखा, धन वालों का दर्शन देखा
लाचारों का सुमरन देखा, हमने भारत भूका देखा

कुछ मत पूछो क्या क्या देखा.

('उजाला' से)

---

* श्रद्धा की क़यामत.

‡ रोम में जब आग लगी थी उस समय वहाँ का सम्राट नीरो एक ऊँची जगह बैठ कर बाजा बजा रहा था.

§ श्री कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी.

سومناتھ کا سفر

(نمک پاش)

کچھ مت پوچھو کیا کیا دیکھا !

حشر عقیدت* برپا دیکھا، دین دھرم کا چرچا دیکھا
قوم کا اونچا جھنڈا دیکھا، آہ ! ترنگا نیچا دیکھا

اور بتائیں کیا کیا دیکھا ؟

جونا گڈھ کا میلہ دیکھا، نر ناری کا ریلہ دیکھا
ست گرو کا چیلہ دیکھا، آگ چلم اور گانجا دیکھا

اور بتائیں کیا کیا دیکھا ؟

حلوہ پوری چھنتے دیکھا، آٹا میدہ سنتے دیکھا
لڈو پیڑا بنتے دیکھا، پیٹ بھروں کا چلنا دیکھا

اور بتائیں کیا کیا دیکھا ؟

راجندر پرشاد کو دیکھا، سیکیولر بنیاد کو دیکھا
ٹنڈن جی استاد کو دیکھا، ویدک کال کا سپنا دیکھا

اور بتائیں کیا کیا دیکھا ؟

رندوں تک اک جام نہ آیا، روٹی کا پیغام نہ آیا
گاندھی جی کا نام نہ آیا، دور وہاں سے چرخہ دیکھا

اور بتائیں کیا کیا دیکھا ؟

پنڈت اور جٹادھاری بھی، اونچے اونچے بیوپاری بھی
دیکھے افسر سرکاری بھی، ہر ماتھے پر ٹیکا دیکھا

اور بتائیں کیا کیا دیکھا ؟

آگ لگی تھی روم میں جس دم، نیرو‡ کو سوجھی تھی چھم چھم
کہیں پہ دیکھا پیٹ کا ماتم، کہیں پہ لڈو بٹتا دیکھا

اور بتائیں کیا کیا دیکھا ؟

دولت کے دلال کو دیکھا، بھارت کے کنگال کو دیکھا
اور کنہیالال† کو دیکھا، الٹا دیکھا سیدھا دیکھا

اور بتائیں کیا کیا دیکھا ؟

رجواڑوں کا جوبن دیکھا، دھن والوں کا درشن دیکھا
لاچاروں کا سمرن دیکھا، ہم نے بھارت بھوکا دیکھا

کچھ مت پوچھو کیا کیا دیکھا

("اجالا" سے)

---

* شردھا کی قیامت

‡ روم میں جب آگ لگی تھی اس سمے وہاں کا سمراٹ نیرو ایک اونچی جگہ بیٹھکر باجہ بجا رہا تھا.

† شری کنہیا لال مانک لال منشی

नफ़रत (गुस्से में आकर)—बस ! बस !! अपने
पदेश ज़ालिमों और शोषकों को सुनाओ. वही तुम्हारी
तारीफ़ के गीत गायेंगे. सदियों के ज़ुल्मों से लदी ग़रीब
जनता अब ज़्यादा बरदाश्त नहीं कर सकती. अत्याचारी
के ख़िलाफ़ जिहाद बोलना ही पड़ेगा. मैं, अत्याचारियों
का कफ़न बन कर उनके साथ दफ़न होना पसन्द करूँगी
पर तुम्हारी तरह ग़रीब के आँसुओं और अमीर की शराब
दोनों में यकसाँ प्यार रूपी केवड़े की बूँदें मिलाने की हिमाक़त
नहीं करूँगी. तुम तो 'सब का भला करे राम' कह कर
अमर होना चाहती हो और मैं 'अत्याचारियों का नाश
हो' कह कर मिट जाना चाहती हूँ.

कुछ देर दोनों ख़ामोश रहीं. फिर मुहब्बत ने कहा—
'सब का भला करे राम' कह कर मैं अमर होना नहीं
चाहती, अमरता फैला देना चाहती हूँ. तुम 'अत्या-
चारियों का नाश हो' कह कर मिटती नहीं हो, और
भड़कती हो. मैं अत्याचार ही को हड़प करके मानव को
अमर करती हूँ, अत्याचारी को भी अत्याचार से छुटाकर
सच्चा मानव बना देती हूँ. तुम अत्याचारियों को हड़प
करने के चक्कर में और भी अत्याचार फैलाती हो और बची
खुची मानवता को भी झुलसा देती हो. हाँ, अत्याचार रूपी
ज़हर पी लेने पर भी मेरी हार नहीं, मेरी जीत ही होती है.
और तुम.........

नफ़रत ने जवाब दिया—और मेरी जीत में भी मेरी
हार होती है !

मानवता ख़ामोश खड़ी सुन रही थी. अब सामने
आई और बोली—तुम दोनों एक तसवीर के दो पहलू
हो. धूप छाँव का सा तुम्हारा साथ है. नफ़रत से ही
मुहब्बत की क़द्र है. धूप न हो तो छाँव लोग किसे कहेंगे.
नफ़रत से मुहब्बत और मुहब्बत से नफ़रत का फ़र्क़
समझ में आता है. मुहब्बत का आदर्श है बुरे आदमी
बुराई छोड़कर भले बन जायं यानी लोग बुराई से नफ़रत
करें. मैं जिस दर्द से कराह रही हूँ वह कैसे दूर हो. आदमी
से आदमी का शोषण एक बीमारी है. शोषक और शोषित
भी एक बीमारी के दो फोड़े हैं. नफ़रत ज़बरदस्ती का
आपरेशन करने वाली डाक्टर बनकर सामने आती है और
मुहब्बत कहती है—खान पान और हवा को शुद्ध करके
अपने ख़ून को साफ़ करो. मुझे रास्ता निकालना है !

نفرت (غصے میں آکر) — بس ! بس !! اپنا اپدیش
ظالموں اور شوشکوں کو سناؤ . وہی تمہاری تعریف کے
گیت گائیں گے . صدیوں کے ظلموں سے لدی غریب جنتا اب
زیادہ برداشت نہیں کر سکتی . اتیا چاری کے خلاف جہاد
بولنا ہی پڑے گا . میں ، اتیا چاریوں کا کفن بنکر اُن کے
ساتھ دفن ہونا پسند کروں گی پر تمہاری طرح غریب کے
آنسوؤں اور امیر کی شراب دونوں میں یکساں پیار روپی کیوڑے
کی بوندیں ملانے کی حماقت نہیں کروں گی . تم تو 'سب
کا بھلا کرے رام' کہکر امر ہونا چاہتی ہو اور میں
'اتیا چاریوں کا ناش ہو' کہکر مٹ جانا چاہتی ہوں .

کچھ دیر دونوں خاموش رہیں . پھر محبت نے کہا—
'سب کا بھلا کرے رام' کہکر میں امر ہونا نہیں
چاہتی' امرتا پھیلا دینا چاہتی ہوں . تم 'اتیاچاریوں
کا ناش ہو' کہکر مٹتی نہیں ہو اور بھڑکتی
ہو . میں اتیاچار ہی کو ہڑپ کرکے مانو کو امر
کرتی ہوں' اتیاچاری کو بھی اتیاچار سے چھٹا کر
سچا مانو بنا دیتی ہوں . تم اتیاچاریوں کو ہڑپ
کرنے کے چکر میں اور بھی اتیاچار پھیلاتی ہو اور
بچی کھچی مانوتا کو بھی جھلسا دیتی ہو .
ہاں' اتیاچار روپی زہر پی لینے پر بھی میری ہار
نہیں' میری جیت ہی ہوتی ہے . اور تم.........

نفرت نے جواب دیا — اور میری جیت میں بھی
میری ہار ہوتی ہے .

مانوتا خاموش کھڑی سن رہی تھی . اب سامنے آئی
اور بولی — تم دونوں ایک تصویر کے دو پہلو ہو . دھوپ
چھاؤں کا سا تمہارا ساتھ ہے . نفرت سے ہی محبت کی
قدر ہے . دھوپ نہ ہو تو چھاؤں لوگ کسے کہیں گے .
نفرت سے محبت اور محبت سے نفرت کا فرق سمجھ میں
آتا ہے . محبت کا آدرش ہے برے آدمی برائی چھوڑ کر
بھلے بن جائیں یعنی لوگ برائی سے نفرت کریں . میں
جس درد سے کراہ رہی ہوں وہ کیسے دور ہو . آدمی سے
آدمی کا شوشن ایک بیماری ہے . شوشک اور شوشت بھی
ایک بیماری کے دو پھوڑے ہیں . نفرت زبردستی کا آپریشن
کرنے والی ڈاکٹر بن کر سامنے آتی ہے اور محبت کہتی
ہے — کھان' پان اور ہوا کو شدھ کرکے اپنے خون کو صاف کرو .
مجھے راستہ نکالنا ہے !

के रास्ते अकेले रहे हैं ? या वह यह समझते हैं कि नमकीन और लड्डुओं का ढेर देखकर भूखी नंगी जनता धर्म का असली मतलब समझ जायगी ? क्या टंडनजी, राजेन्द्र बाबू, मुंशी, गाडगिल और स्वर के साथ वेद मंत्र गाने वाले 150 पन्डितों ने धर्म का असली मतलब समझ लिया है ? धर्म का वह अन्धापन जो सदियों पहले दफ़न हो चुका है, पिछ घसीट और हारों की बदबूदार सड़ी गली लाश को निकाल कर चाँदी सोने के वरक़ चिपका कर फिर उसमें जान डालने की (?) शोब्देबाजी करना टंडन जी, राजेन्द्रबाबू, मुंशी और गाडगिल ही नहीं, इस युगके बड़े से बड़े जादूगर के लिये भी नामुमकिन है !

کے راستے ڈھکیل رہے ھیں ؟ یا وہ یہ سمجھتے ھیں کہ نمکین اور لڈوؤں کا ڈھیر دیکھکر بھوکی ننگی جنتا دھرم کا اصلی مطلب سمجھ جائیگی ؟ کیا ٹنڈن جی، راجندر بابو، منشی، گاڈگل اور سور کے ساتھ وید منتر گانے والے 150 پانڈتوں نے دھرم کا اصلی مطلب سمجھ لیا ھے ؟ دھرم کا وہ اندھاپن جو صدیوں پہلے دفن ھوچکا ھے، پچھ گھسیٹ اور ھاروں کی بدبو دار سڑی گلی لاش کو نکال کر چاندی سونے کے ورق چپکا کر پھر اُس میں جان ڈالنے کی (؟) شعبدے بازی کرنا ٹنڈن جی، راجندر بابو، منشی اور گاڈگل ھی نہیں، اِس یگ کے بڑے سے بڑے جادوگر کے لئے بھی ناممکن ھے !

नफ़रत और मुहब्बत

(भाई ओम प्रकाश पालीवाल)

बीसवीं सदी है. नफ़रत और मुहब्बत में बहस हो रही है. मुहब्बत मुसकरा रही थी और नफ़रत नाराज़ थी. दोनों की आँखों से ओझल मानवता सुन रही थी.

नफ़रत ने कहा—मुझे तुम पर क्रोध आता है.

मुहब्बत ने जवाब दिया—और मुझे तुम पर रहम !

नफ़रत—क्यों ?

मुहब्बत—क्योंकि तुम अग्नि कुँड की तरह हर समय सुलगने के लिये छटपटाती रहती हो.

नफ़रत—और तुम घर बार छोड़े हुए साधू की तरह ज़ालिम और मज़लूम दोनों में प्यार कराना चाहती हो. शेर और बकरी को एक घाट पानी पिलाना चाहती हो. मुझे तुम्हारी इस हिमाक़त पर क्रोध आता है.

मुहब्बत (बड़े प्यार से)—ज़ालिम और मज़लूम, शोशक और शोशित का भेद करना तुम्हारी भूल है, बहिन ! मानवता के इस तरह टुकड़े करने से काम नहीं चलेगा. अगर तुम्हें कहीं ज़ुल्म दिखाई दे तो प्यार से ही ज़ालिम को रास्ते पर लाना इनसानियत है. दूसरा रास्ता हैवानियत का है. 'अत्याचारियों का नाश हो' न कह कर 'अत्याचार का नाश हो' कहना ज़्यादा मुनासिब है. कहीं बदले की भावना फिर बदले की भावना को जन्म न दे दे और इस शैतानी चक्कर का कभी अंत ही न हो.

نفرت اور محبت

(بھائی اوم پرکاش پالیوال)

بیسویں صدی ھے . نفرت اور محبت میں بحث ھو رھی ھے . محبت مسکرا رھی تھی اور نفرت ناراض تھی . دونوں کی آنکھوں سے اوجھل مانوتا سن رھی تھی .

نفرت نے کہا — مجھے تم پر کرودھ آتا ھے .

محبت نے جواب دیا — اور مجھے تم پر رحم !

نفرت — کیوں ؟

محبت — کیونکہ تم اگنی کنڈ کی طرح ھر سمے سلگنے کے لئے چھٹپٹاتی رھتی ھو .

نفرت — اور تم گھر بار چھوڑے ھوئے سادھو کی طرح ظالم اور مظلوم دونوں میں پیار کرانا چاھتی ھو . شیر اور بکری کو ایک گھاٹ پانی پلانا چاھتی ھو . مجھے تمہاری اس حماقت پر کرودھ آتا ھے .

محبت (بڑے پیار سے) — ظالم اور مظلوم، شوشک اور شوشت کا بھید کرنا تمہاری بھول ھے، بہن ! مانوتا کے اِسطرح ٹکڑے کرنے سے کام نہیں چلے گا . اگر تمہیں کہیں ظلم دکھائی دے تو پیار سے ھی ظالم کو راستے پر لانا اِنسانیت ھے . دوسرا راستہ حیوانیت کا ھے . 'اتیاچاریوں کا ناش ھو' نہ کہکر 'اتیاچار کا ناش ھو' کہنا زیادہ مناسب ھے . کہیں بدلے کی بھاونا پھر بدلے کی بھاونا کو جنم نہ دے دے اور اِس شیطانی چکر کا کبھی انت ھی نہ ھو .

फिर से प्रतिश्ठा पिछले के बार तो हर्गिज नहीं हुई होगी ! इतना ही नहीं, यह प्रतिश्ठा 101 तोपों की गड़गड़ाहट, 74 जगहों की पाक मिट्टी, 39 स्थानों के पवित्र जल, 35 स्थानों की पाक जड़ी बूटियाँ और 150 पंडितों के स्वर के साथ वेद मंत्रों के गाने के साथ हुई. साथ ही 1800 मन लड्डुओं और 4000 मन नमकीन का ढेर भी लगाया गया था. इस बार सोमनाथ बाबा को हरिजनों को भी दर्शन देने होंगे, क्योंकि वह एक 'ग़ैर साम्प्रदायिक' राज में प्रतिश्ठित हुए हैं !

यह सारी बातें अक़्ल के दिवालियेपन के साथ ही एक बहुत बड़ा सवाल हमारे सामने रखती हैं. क्या यह 'ग़ैर साम्प्रदायिक' (सैकूलर) राज है ? और जनता की दशा सुधारने का यही तरीक़ा है ? जिस देश में लेखक और पत्रकार, पंडित और विद्वान भूकों मरते हों, जहाँ हज़ारों लाखों रोगी बिना दवा के मर जाते हों, जहाँ आम जनता की तालीम, तन्दुरुस्ती और रहन सहन के साधनों की कमी हो, स्कूलों, पुस्तकालयों, पढ़ाई घरों, अस्पतालों, मनोरंजन की जगहों वग़ैरा की बेहद कमी हो, वहाँ लाखों रुपया एक मन्दिर में लगा देना—और उस हालत में जब कि मन्दिरों की देश में कमी न हो और सैकड़ों मन्दिरों की पैसे की कमी के कारन मरम्मत तक न हो पाती हो—कहाँ तक ठीक है ? और रुपयों से भी बढ़ कर अज्ञान और अन्धविश्वास को सरकारी तौर पर इस तरह बढ़ावा देना क्या मुनासिब है ? सब से ज़्यादा दुख की बात है उन राश्ट्रपति के हाथ से इस मन्दिर की प्रतिश्ठा कट्टर सनातन हिन्दू-अन्धेपन के तरीक़े से करवाना जो आज हिन्दू-मुसलमान, पारसी, सिख, ईसाई, ऐंग्लो-इंडियन वग़ैरा नागरिकों के इस देश के सब से बड़े अधिकारी हैं. अगर वह शैव मत के होते, तबभी कोई बात थी. इसी तरह सोमनाथ के दूसरे प्रतिश्ठा करवाने वाले सरदार पटेल, जाम साहब, मुंशी और गाडगिल भी शैव नहीं हैं. तब फिर इन लोगों का इस धर्म यज्ञ में अगुआ बनना क्या मानी रखता है ? जवाब साफ़ है—इन सब के लिये यह एक राजकाजी खेल ही है, जिसका मक़सद है बिना पैसे सोमनाथ का सरकस दिखा कर भोले भाले, अनपढ़ और अज्ञानी, गिरानी और बेचैनी में डूबे हुए लोगों को इनक़लाब के बजाय 'जय सोमनाथ' के रास्ते पर जाने की प्रेरना और भुलावा देना. पिछली 11 मई को शाम के वक़्त प्रभासपाटन में बोलते हुए टंडन जी ने यह साफ़ साफ़ क़बूल किया कि 'पिछले ज़माने में धर्म के असली मानी की निस्बत उस की बाहरी निशानियों को ज़ियादा महत्व देने के कारन जनता को कश्ट उठाना पड़ा'. फिर भी टंडन जी और उनकी कांग्रेस सरकार के बड़े बड़े अधिकारी पता नहीं क्या सोचकर जनता को फिर उसी तरह

پھر سے پرتشٹھا پچھلے چوہ بار تو ہرگز نہیں ہوئی ہوگی ! اتنا ہی نہیں' یہ پرتشٹھا 101 توپوں کی گڑگڑاہٹ' 74 جگہوں کی پاک مٹی' 39 استھانوں کے پوتر جل' 35 استھانوں کی پاک جڑی بوٹیاں اور 150 پنڈتوں کے سور کے ساتھ وید منتروں کے گانے کے ساتھ ہوئی۔ ساتھ ہی 1800 من لڈوؤں اور 4000 من نمکین کا ڈھیر بھی لگایا گیا تھا ۔ اس بار سومناتھ بابا کو ہریجنوں کو بھی درشن دینے ہونگے' کیونکہ وہ ایک 'غیر سامپردایک ' راج میں پرتشٹھت ہوئے ہیں !

یہ ساری باتیں عقل کے دیوالیئے پن کے ساتھ ہی ایک بہت بڑا سوال ہمارے سامنے رکھتی ہیں ۔ کیا یہ 'غیر سامپردایک' (سیکولر) راج ہے ؟ اور جنتا کی دشا سدھارنے کا یہی طریقہ ہے ؟ جس دیش میں لیکھک اور پترکار' پنڈت اور ودوان بھوکوں مرتے ہوں' جہاں ہزاروں لاکھوں روگی بنا دوا کے مرجاتے ہوں' جہاں عام جنتا کی تعلیم' تندرستی اور رہن سہن کے سادھنوں کی کمی ہو' اسکولوں' پستکالیوں' پڑھائی گھروں' اسپتالوں' منورنجن کی جگہوں وغیرہ کی بے حد کمی ہو' وہاں لاکھوں روپیہ ایک مندر میں لگا دینا — اور اس حالت میں جب کہ مندروں کی دیش میں کمی نہ ہو اور سیکڑوں مندروں کی پیسے کی کمی کے کارن مرمت تک نہ ہوپاتی ہو — کہاں تک ٹھیک ہے ؟ اور روپیوں سے بھی بڑھکر اگیان اور اندھ وشواس کو سرکاری طور پر اس طرح بڑھاوا دینا کیا مناسب ہے ؟ سب سے زیادہ دکھ کی بات ہے ان راشٹرپتی کے ہاتھ سے اس مندر کی پرتشٹھا کٹر سناتن ہندو اندھے پن کے طریقے سے کروانا' جو آج ہندو' مسلمان' پارسی' سکھ' عیسائی' اینگلو انڈین وغیرہ ناگرکوں کے اس دیش کے سب سے بڑے ادھیکاری ہیں ۔ اگر وہ شیومت کے ہوتے' تب بھی کوئی بات تھی ۔ اسی طرح سومناتھ کے دوسرے پرتشٹھا کروانے والے سردار پٹیل' جام صاحب' منشی اور گاڈگل بھی شیو نہیں ہیں ۔ تب پھر ان لوگوں کا اس دھرم یگیہ میں اگوا بننا کیا معنی رکھتا ہے ؟ جواب صاف ہے — ان سب کے لئے یہ ایک راج کاجی کھیل ہی ہے' جس کا مقصد ہے بنا پیسے سومناتھ کا سرکس دکھا کر بھولے بھالے' ان پڑھ اور اگیانی' گرانی اور بے چینی میں ڈوبے ہوئے لوگوں کو انقلاب کے بجائے 'جے سومناتھ ' کے راستے پر جانے کی پریرنا اور بھلاوا دینا ۔ پچھلی 11 مئی کو شام کے وقت پربھاس پاٹن میں بولتے ہوئے ٹنڈن جی نے یہ صاف صاف قبول کیا کہ ' پچھلے زمانے میں دھرم کے اصلی معنی کی نسبت اسکی باہری نشانیوں کو زیادہ مہتو دینے کے کارن جنتا کو کشٹ اٹھانا پڑا ۔' پھر بھی ٹنڈن جی اور ان کی کانگریس سرکار کے بڑے بڑے ادھیکاری پتہ نہیں کیا سوچ کر جنتا کو پھر اسی طرح

इन खास अंगों के पूजने को धर्म के नाम पर चलाया. वैष्णवों ने तो राधा कृष्ण के बनावटी प्रेम और शृंगार के रूप में खुले आम व्यभिचार का प्रचार किया और दूसरी तरफ औरत मर्द के आपसी कुदरती सम्बन्धों को ज़्यादा से ज़्यादा बन्धनों और रूढ़ियों के जाल में कस दिया. इसका असर उल्टा हुआ, जिसका नतीजा हुआ जिस्मानी, दिमाग़ी, समाजी और तरह तरह से समाज की गिरावट, कमज़ोरी और खोखलापन. हम तो इस बात को सोच भी नहीं सकते कि कोई भी देश, कोई भी समाज इतना बेशरम और ना समझ कैसे हो सकता है कि खुले आम धर्म के नामपर अपने लड़के लड़कियों और बहू-बेटियों के सामने औरत मर्द के गुप्त अंगों की पूजा करे ! और ऐसे पूजकों का आज जो हाल है, उसका देश भर में फैली वेश्याओं, देव-दासियों, साधु संन्यासियों और बदचलनी के अड्डे बने मठ-मन्दिरों और सड़ी गली मौजूदा नस्लसे कुछ अन्दाज़ा किया जा सकता है.

सोमनाथ के सम्बन्ध में फैली हुई झूटी सच्ची बहुत सी अफ़वाहों को यहाँ बयान करना बेमौक़ा होगा. पर पिछली 11 मई को 'ग़ैर साम्प्रदायिक' भारत के राष्ट्रपति ने पीताम्बर पहन कर प्रभासपाटन में सोमनाथ की जो फिर से प्रतिश्टा की है, वह कई निगाह से ग़ौर करने की चीज़ है. बहुत से भारती अख़बारों में न सिर्फ़ फिर से 'जय सोमनाथ' का नारा ही गुँजाया गया, बल्कि इसका इतना धुँआधार प्रचार प्रोपेगेंडा हुआ कि कुछ छन के लिये शायद बिहार, आन्ध्र और राजस्थान के भूके पेटों को धर्म रूपी अफ़ीम की पीनक का नशा भी मालूम हुआ हो तो अचरज नहीं. भूकी नंगी जनता को लड्डुओं के ढेर के साथ साढ़े सात फुट ऊँचे कसौटी के पत्थर के शिव लिंग के दर्शन कराना कितना बड़ा धोका और ग़द्दारी है, इसे शायद यह ना समझ और बे ज़बान आधे पशु न समझ सकें. यह लगभग वैसा ही है, जैसे कोई भूक से तड़पते हुए बच्चे को झुनझुना बजाकर या गुड़िया दिखा कर फुसलाना चाहे. मन्दिर के निर्माण में 9-10 बरस और 60 65 लाख रुपए लगेंगे, यह अन्दाज़ा है. इसमें 30 लाख के लगभग जमा हो भी चुका है. मन्दिर के किनारे 3000 एकड़ ज़मीन लीगई है, जहाँ जवाहरात जड़े 56 खंभों पर 13 मंज़िल का मन्दिर खड़ा किया जायगा. मन्दिर के तीन हिस्से होंगे—गर्भ गृह (सब से अन्दर का हिस्सा जहाँ केवल पुजारी ही जा सकता है), गूढ़ मंडप (बीच का हिस्सा) और नृत्य गृह (नाच घर जो सबसे बाहर का हिस्सा है). संगमूसा के ज्योतिर्लिंग के पीछे पार्वती की मूर्ति होगी. मन्दिर के सिर की तरह 14 सोने के कलश-वाले मीनार होंगे और कई बड़े सोने की ज़ंजीर से बजने-वाले सोने के घड़ियाल लगेंगे. इससे बढ़कर सोमनाथ की

ان خاص انگوں کے پوجنے کو دھرم کے نام [illegible] ۔ وشنووں نے تو رادھا کرشن کے بناوٹی پریم اور شرنگار کے روپ میں کھلے عام ویبھچار کا پرچار کیا اور دوسری طرف عورت مرد کے آپسی قدرتی سمبندھوں کو زیادہ سے زیادہ بندھنوں اور روڑھیوں کے جال میں کس دیا ۔ اس کا اثر الٹا ہوا، جس کا نتیجہ ہوا جسمانی، دماغی، سماجی اور طرح طرح سے سماج کی گراوٹ، کمزوری اور کھوکھلا پن ۔ ہم تو اس بات کو سوچ بھی نہیں سکتے کہ کوئی بھی دیش، کوئی بھی سماج اتنا بے شرم اور ناسمجھ کیسے ہو سکتا ہے کہ کھلے عام دھرم کے نام پر اپنے لڑکے لڑکیوں اور بہو بیٹیوں کے سامنے عورت مرد کے گپت انگوں کی پوجا کرے ! اور ایسے پوجکوں کا آج جو حال ہے، اس کا دیش بھر میں پھیلی ویشیاؤں، دیوداسیوں، سادھو سنیاسیوں اور بدچلنی کے اڈے بنے مٹھ مندروں اور سڑی گلی موجودہ نسل سے کچھ اندازہ کیا جا سکتا ہے ۔

سومناتھ کے سمبندھ میں پھیلی ہوئی جھوٹی سچی بہت سی افواہوں کو یہاں بیان کرنا بے موقع ہوگا پر پچھلی 11 مئی کو 'غیر سامپردایک' بھارت کے راشٹرپتی نے پیتامبر پہنکر پربھاس پٹن میں سومناتھ کی جو پھر سے پرتشٹھا کی ہے، وہ کئی نگاہ سے غور کرنے کی چیز ہے ۔ بہت سے بھارتی اخباروں میں نہ صرف پھر سے 'جے سومناتھ' کا نعرہ ہی گنجایا گیا بلکہ اس کا اتنا دھواں دھار پرچار و پروپیگنڈا ہوا کہ کچھ چھن کے لئے شاید بہار، آندھر اور راجستھان کے بھوکے پیٹوں کو دھرم روپی افیم کی پینک کا نشہ بھی معلوم ہوا ہو تو اچرج نہیں ۔ بھوکی ننگی جنتا کو لڈوؤں کے ڈھیر کے ساتھ ساڑھے سات فٹ اونچے کسوٹی کے پتھر کے شیولنگ کے درشن کرانا کتنا بڑا دھوکا اور غداری ہے، اسے شاید یہ ناسمجھ اور بے زبان آدھے پشو نہ سمجھ سکیں ۔ یہ لگ بھگ ویسا ہی ہے جیسے کوئی بھوک سے تڑپتے ہوئے بچے کو جھنجھنا بجا کر یا گڑیا دکھا کر پھسلانا چاہے ۔ مندر کے نرمان میں 9-10 برس اور 60-65 لاکھ روپے لگینگے، یہ اندازہ ہے ۔ اس میں سے 30 لاکھ کے لگ بھگ جمع ہو بھی چکا ہے مندر کے کنارے 3000 ایکڑ زمین لی گئی ہے، جہاں جواہرات جڑے 56 کھمبوں پر 13 منزل کا مندر کھڑا کیا جائیگا ۔ مندر کے تین حصے ہونگے -- گربھ گرہ (سب سے اندر کا حصہ جہاں کیول پجاری ہی جا سکتا ہے)، گوڑھ منڈپ (بیچ کا حصہ) اور نرتیہ گرہ (ناچ گھر جو سب سے باہر کا حصہ ہے) ۔ سنگ موسیٰ کے جیوتر لنگ کے پیچھے پاروتی کی مورتی ہوگی ۔ مندر کے سر کی طرح 14 سونے کے کلش والے مینار ہونگے اور کئی بڑے سونے کی زنجیروں سے بجنے والے سونے کے گھڑیال لگینگے ۔ اس سے بڑھکر سومناتھ کی

सी सचाई हो तो—कुछ भी सबक लिया होता, एक बार अपने गिरेबान में मुँह डाल कर देखा होता तो शायद नफरत की जगह हम महमूद का एहसान ही मानते और आज हमारी हालत इतनी बुरी और गिरी हुई न होती, जितनी कि है. हिन्दू लोग संसार की दूसरी जातियों से धर्म के मामले में कहीं अधिक अन्धे और लकीर के फकीर हैं; क्योंकि अध्यात्म (रूहानियत) और दर्शन (फ़लसफ़ा) उनके जीवन पर काफ़ी पहले से छाया रहा है. वह आसानी से मुसलमानों को मूर्ति-भंजक (बुतशिकन) कहकर अपने मन में बड़े घमंड और बड़प्पन का-सा अनुभव करते रहे हैं. पर सच तो यह है कि निर्गुन निराकार ईश्वर के उपासक होने का दावा करके भी इन्होंने अपनी पूजा का आधार पत्थर के जिन टुकड़ों को बनाया है, उनकी कृपा से न सिर्फ़ इनकी पूजा–उपासना का ही दिवाला निकल गया है, बल्कि यह ख़ुद भी जड़ पत्थर बन गए हैं. इसी दुर्घटना से अपने पीछे चलने वालों को बचाने के लिये मार्टिन ल्यूथर ने योरप में कैथालिकों के पोंगापंथीपन के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई थी और इसी के ख़िलाफ़ हज़रत मुहम्मद ने क़ुरान शरीफ़ में मूर्ति-पूजा को घोर अधार्मिक (लामज़हबी) बताया. बुतपरस्ती के ख़िलाफ़ गहरी अश्रद्धा भरकर उन्होंने मुसलमानों को धर्म के नाम पर चलनेवाले अधर्म और अज्ञान से कितना बचाया, इसका पता बुतपरस्तों से बहुत सी बातों में मुसलमानों का मुक़ाबला करने पर साफ़ साफ़ लगेगा. वैसे तो 'धर्म' शब्द ही आज अज्ञान और नासमझी का पर्याय (हम मानी) बन गया है; पर इसके साथ मूर्ति-पूजा जैसे जो बाहरी पाखन्ड धर्म में जुड़ गए हैं, उन्होंने समाज को और भी कमज़ोर कर दिया है. इसी लिये स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पत्थर पूजा के ख़िलाफ़ ज़बरदस्त आवाज़ उठाई (और उन्हें अज्ञानी और ना समझ समाज ने वही इनाम दिया जो ईसा व गांधी को मिला !)

पर अन्ध विश्वास को मिटाने से भी बढ़कर महमूद के शिव-लिंग तोड़ने के पीछे शायद यह ख़याल भी रहा हो कि आदमी के इस ख़ास अंग की पूजा किसी भी सभ्य और संस्कृत (शरीफ़) समाज के लिये मुनासिब नहीं. यह हमारा अपना अन्दाज़ा ही है. पुराण में शिव-लिंग की जो कथा है, उसका ख़ुलासा भी हमें पाठकों के सामने रखने का साहस नहीं हो रहा. पेट और लिंग की तरफ़ अधिक ध्यान आदमी में जानवरों की तरह क़ुदरती है. इस पर उसकी चतुराई ने एक ऐसा परदा डाल दिया है, जिससे उसकी बदशकली ढक-सी गई है. पुराणों के ज़माने के समाज में और आज के समाज में काफ़ी फ़रक़ है. उस समय जो भी कारन और वातावरन रहा हो, पर आज उस तरह की पूजा को जारी रखना एक शरमनाक पिछड़पसीट है. एक तरफ़ तो समाज ने औरत मर्द के

سچائی بھی ہو تو—کچھ بھی سبق لیا ہوتا، ایک بار اپنے گریبان میں منہ ڈالکر دیکھا ہوتا، تو شاید نفرت کی جگہ ہم محمود کا احسان ہی مانتے اور آج ہماری حالت اتنی بری اور گری ہوئی نہ ہوتی، جتنی کہ ہے. ہندو لوگ سنسار کی دوسری جاتیوں سے دھرم کے معاملے میں کہیں ادھک اندھے اور لکیر کے فقیر ہیں؛ کیونکہ ادھیاتم (روحانیت) اور درشن (فلسفہ) اُن کے جیون پر کافی پہلے سے چھایا رہا ہے. وہ آسانی سے مسلمانوں کو مورتی بھنجک (بت شکن) کہکر اپنے من میں بڑے گھمنڈ اور بڑپن کا سا انوبھو کرتے رہے ہیں. پر سچ تو یہ ہے کہ نرگن نراکار ایشور کے اُپاسک ہونے کا دعویٰ کرکے بھی انہوں نے اپنی پوجا کا آدھار پتھر کے جن ٹکڑوں کو بنایا ہے، اُن کی کرپا سے نہ صرف ان کی پوجا اُپاسنا کا ہی دوالہ نکل گیا ہے، بلکہ یہ خود بھی جڑ پتھر بن گئے ہیں. اسی درگھٹنا سے اپنے پیچھے چلنے والوں کو بچانے کے لئے مارٹن لیوتھر نے یورپ میں کیتھالکوں کے پونگا پنتھی پن کے خلاف آواز اٹھائی تھی اور اسی کے خلاف حضرت محمد نے قرآن شریف میں مورتی پوجا کو گھور ادھارمک (لامذہبی) بتایا. بت پرستی کے خلاف گہری اشردھا بھر کر انہوں نے مسلمانوں کو دھرم کے نام پر چلنے والے ادھرم اور اگیان سے کتنا بچایا، اس کا پتہ بت پرستوں سے بہت سی باتوں میں مسلمانوں کا مقابلہ کرنے پر صاف صاف لگے گا. ویسے تو 'دھرم' شبد ہی آج اگیان اور ناسمجھی کا پریائے (ہم معنی) بن گیا ہے؛ پر اسکے ساتھ مورتی پوجا جیسے جو باہری پاکھنڈ دھرم میں جڑ گئے ہیں، انہوں نے سماج کو اور بھی کمزور کر دیا ہے. اسی لئے سوامی دیانند سرسوتی نے پتھر پوجا کے خلاف زبردست آواز اٹھائی (اور انہیں اگیانی اور نا سمجھ سماج نے وہی انعام دیا، جو عیسیٰ و گاندھی کو ملا !)

پر اندھ وشواس کو مٹانے سے بھی بڑھکر محمود کے شولنگ توڑنے کے پیچھے شاید یہ خیال بھی رہا ہو کہ آدمی کے اس خاص انگ کی پوجا کسی بھی سبھیہ اور سنسکرت (شریف) سماج کے لئے مناسب نہیں. یہ ہمارا اپنا اندازہ ہی ہے. پران میں شولنگ کی جو کتھا ہے، اُسکا خلاصہ بھی ہمیں پاٹھکوں کے سامنے رکھنے کا ساہس نہیں ہو رہا. پیٹ اور لنگ کی طرف ادھک دھیان آدمی میں جانوروں کی طرح قدرتی ہے. اس پر اسکی چترائی نے ایک ایسا پردا ڈال دیا ہے، جس سے اس کی بدشکلی ڈھک سی گئی ہے. پرانوں کے زمانے کے سماج میں اور آجکے سماج میں کافی فرق ہے. اس سمے جو بھی کارن اور واتاورن رہا ہو، پر آج اس طرح کی پوجا کو جاری رکھنا ایک شرمناک پچھڑپسیٹ ہے. ایک طرف تو سماج نے عورت مرد کے

हारना यह साबित करता है कि हम उस समय भी टुकड़े टुकड़े और धर्म के मामलों में अन्धे थे. अन्दाज़ा यह होता है कि सोमनाथ के हमले का मुक़ाबला शायद अकेले उसी इलाक़े के राजा की फ़ौज (वहाँ की जनता नहीं) ने किया होगा और दूसरे राजे महाराजे उसकी हार में अपनी जीत की आशा की रुपहली रेखा देखते होंगे. हमारी इस हार का ख़ास कारन था देश का बहुत से अलग अलग मतों, फ़िर्क़ों और जातियों में बँटा होना और राजे महाराजों की आपसी लाग डाँट. बदक़िस्मती से यह ज़हरीली आदतें और बुराइयाँ इतनी हारों के बाद भी हम में से गई नहीं. सच्चे मानी में तो एक राष्ट्रीयता हम में आज तक भी नहीं आ सकी है, जिसका खुला नतीजा और सबूत है देश का बटवारा और ज़ात परस्ती, फ़िरक़ा परस्ती और सूबा परस्ती का ज़ोर !

अब सोमनाथ के इतिहासी पहलू पर भी ज़रा प्रकाश डालें. पुराणो और महाभारत में जिसे 'आनर्त' तथा श्रीमद् भागवत में जिसे 'आनर्तपुरी' कहा गया है, उसी को पाणिनी ने 'सुराष्ट्र' और बाद के संस्कृत-साहित्य में 'सौराष्ट्र' नाम से पुकारा गया है. ऋग्वेद (7-95-2) में जिस सरस्वती का ज़िकर है, वह उसी इलाक़े में बहती थी और उसी के किनारे प्रभास नगर (पुराणो के अनुसार 'प्रभास खंड') था. यहीं द्वारिका से आकर श्रीकृश्न के शरीर छोड़ने का ज़िकर भी स्कन्दपुरान में है. यहाँ ख़ास मन्दिर शिव का ही था. पर गनेश, विश्नु, सूरज वग़ैरा के मन्दिर भी थे, जिसके कारन यह हिन्दुओं का एक बहुत बड़ा तीर्थ हो गया था. सोमनाथ का मन्दिर आर्यों का पहला मन्दिर समझा जाता है, जो बारह ज्योतिर्लिङ्गों में से पहले सोमनाथ (चाँद) के नाम पर बनाया गया था. कहते हैं पहले सोम (चाँद देवता) ने यह सोने का मन्दिर बनवाया. बाद में रावन ने उसी जगह चाँदी का और फिर श्री कृश्न ने लकड़ी का. उनके बाद वल्लभी राजाओं ने 500-700 ई० और फिर सोलंकी राजाओं ने उसका रूप बदल दिया. 1024 ई० में सोमनाथ पर महमूद ग़ज़नवी के हमले के सम्बन्ध में काठियावाड़-गज़ेटियर में एक बड़ा मार्के का बयान है. वह यह कि महमूद ने आकर जब शिव-लिंग की पूजा का 'महात्म' सुना, तो क्रोध के मारे उसने उसे तुड़वा दिया. मन्दिर तो बाद में उसके सिपहसालार मीठा ख़ां ने तुड़वाया बताते हैं.

जिन लोगों ने इतिहास को अपनी कमज़ोरी छिपाने के लिये और सांप्रदायिक चश्मे से देखा है, उन्हें भले ही इस घटना में एक मुसलमान या ग़ैर-हिन्दू की अपने धर्म के [illegible]नी दिखाई दे, पर हमें तो ऐसा लगता है कि अगर हमने महमूद की इस घटना से—अगर इसमें कोई

ہارنا یہ ثابت کرتا ہے کہ ہم اُس سمے بھی ٹکڑے ٹکڑے اور دھرم کے معاملوں میں اندھے تھے. اندازہ یہ ہوتا ہے کہ سومناتھ کے حملے کا مقابلہ شاید اکیلے اُسی علاقے کے راجہ کی فوج (وہاں کی جنتا نہیں) نے کیا ہوگا اور دوسرے راجے مہاراجے اس کی ہار میں اپنی جیت کی آشا کی روپہلی ریکھا دیکھتے ہونگے. ہماری اس ہار کا خاص کارن تھا دیش کا بہت سے الگ الگ متوں، فرقوں اور جاتیوں میں بٹا ہونا اور راجے مہاراجوں کی آپسی لاگ ڈانٹ. بدقسمتی سے یہ زہریلی عادتیں اور برائیاں اِتنی ہاروں کے بعد بھی ہم میں سے گئیں نہیں. سچے معنی میں تو ایک راشٹریتا تو ہم میں آج تک بھی نہیں آسکی ہے، جسکا کھلا نتیجہ اور ثبوت ہے دیش کا بٹوارا اور جات پرستی، فرقہ پرستی اور صوبہ پرستی کا زور!

اب سومناتھ کے اِتہاسی پہلو پر بھی ذرا پرکاش ڈالیں. پرانوں اور مہابھارت میں جسے 'آنرت' تتھا شری مد بھاگوت میں جسے 'آنرت پری' کہا گیا ہے، اُسی کو پانِنی نے 'سراشٹر' اور بعد کے سنسکرت ساہتیہ میں 'سوراشٹر' نام سے پکارا گیا ہے. رگ وید (7-95-2) میں جس سرسوتی کا ذکر ہے، وہ اُسی علاقے میں بہتی تھی اور اُسی کے کنارے پربھاس نگر (پرانوں کے انوسار 'پربھاس کھنڈ') تھا. یہیں دوارکا سے آکر شری کرشن کے شریر چھوڑنے کا ذکر بھی اِسکند پران میں ہے. یہاں خاص مندر شیو کا ہی تھا. پر گنیش، وشنو، سورج وغیرہ کے مندر بھی تھے، جسکے کارن یہ ہندوؤں کا ایک بہت بڑا تیرتھ ہوگیا تھا. سومناتھ کا مندر آریوں کا پہلا مندر سمجھا جاتا ہے، جو بارہ جیوترلنگوں میں سے پہلے سومناتھ (چاند) کے نام پر بنایا گیا تھا. کہتے ہیں پہلے سوم (چاند دیوتا) نے یہ سونے کا مندر بنوایا. بعد میں راون نے اُسی جگہ چاندی کا اور پھر شری کرشن نے لکڑی کا. اُن کے بعد وللبھی راجاؤں نے 500-700 عیسوی اور پھر سولنکی راجاؤں نے اُسکا روپ بدل دیا. 1024 عیسوی میں سومناتھ پر محمود غزنوی کے حملے کے سمبندھ میں کاٹھیاواڑ گزیٹیر میں ایک بڑا معرکے کا بیان ہے. وہ یہ کہ محمود نے آکر جب شیولنگ کی پوجا کا 'مہاتم' سنا' تو کرودھ کے مارے اُس نے اُسے تڑوادیا. مندر تو بعد میں اُسکے سپہ سالار میٹھا خاں نے تڑوایا بتاتے ہیں.

جن لوگوں نے اِتہاس کو اپنی کمزوری چھپانے کے لئے اور سامپرداِیک چشمے سے دیکھا ہے، اُنہیں بھلے ہی اس گھٹنا میں ایک مسلمان یا غیر ہندو کی اپنے دھرم سے [illegible] دکھائی دے، پر ہمیں تو ایسا لگتا ہے کہ اگر ہم نے محمود کی اِس گھٹنا سے— اگر اس میں کوئی

दुश्मन साबित करने की कोशिश की है, वह इस बात को भूल जाते हैं कि जिस तरह हिन्दू राजा जनता को धर्म रूपी अफ़ीम का डोज़ देने और अपने प्रताप और शान-शौकत के दिखावे के लिये शानदार मन्दिर खड़े करते थे, ठीक इसी तरह औरंगज़ेब वग़ैरा अपनी जीत की निशानी के रूप में मन्दिर तोड़कर वहाँ मस्जिद बनवाते थे. यह धर्म का नहीं, सरदारों सरदारों की टक्कर का एक ज़रूरी अंग था. फिर यह भी सब जानते हैं कि हिन्दुओं के मन्दिरों और मूर्तियों में इतना सोना और क़ीमती ज़ेवर कपड़े वग़ैरा रहते थे कि कोई भी लुटेरा उन्हें देखकर उन्हें लूटने का लोभ रोक नहीं सकता था. कहते हैं कि सोमनाथ के मन्दिर में किवाड़ों से लेकर भीतर के आंगन तक मनों सोना लकड़ी-पत्थर पर लगा था. वहाँ के शिव-लिंग को तोड़ने पर वह भीतर से खोखला निकला और उसमें काफ़ी सोना और जवाहरात वग़ैरा निकले बतलाए जाते हैं.

अगर एक पल के लिये हम यह मान भी लें कि ऊपर लिखी बातों में सचाई का हिस्सा कम है और विदेशियों के हमले लूट से अधिक हमारे धर्म पर ही हमले थे, तो एक बात समझ में नहीं आती कि आखिर ग़ज़नी की सेना भारत के शिवभक्तों से अधिक तो रही नहीं होगी. फिर क्या कारन है कि सोमदेव की रक्षा नहीं हो सकी ? कुछ लोगों ने लिखा है कि सोमनाथ की रक्षा के लिये लाशों पर लाशें जम गईं, खून की नदियां बह गईं और इस तरह काम आए वीरों के यज्ञोपवीत (जनेऊ) के ढेर लग गए ! अगर हमले के भारीपन को बढ़ाने के लिये भी यह सब कहा गया है, तो भी बहुत बड़ी विडम्बना मुबालग़ा और धोका जान पड़ता है. अगर इतना तगड़ा विरोध हुआ होता, तो शत्रु कभी न जीतता. इस सम्बन्ध में एक बात यह भी मशहूर है कि जब ग़ज़नवी (या शायद औरंगज़ेब) के लोग चढ़े आ रहे थे, तो अनेक क्षत्री वीरों ने अपने अपने म्यानसे तलवार निकाल कर भगवान सोमनाथ से प्रार्थना की कि अगर वह आज्ञा दें तो शत्रु का काम तमाम कर दिया जाय. पर काले पत्थर के उस शिव-लिंग में आज्ञा देने की ताक़त होती, तभी तो वह आज्ञा देता. चुनांचे सोमनाथ के यह वीर पूजक तो आज्ञा की उम्मीद में तलवारें निकाले ही रहे और शत्रु की तरफ़ के लोगों ने आकर उन्हीं तलवारों से गाजर मूली की तरह इन्हें काट डाला. जो पंडे-पुजारी मन्दिर में माल उड़ाते थे, वह अपने सोमनाथ भगवान को छोड़ कर कब भाग गए, किसी को पता भी न चला !

ऊपर की इतिहासी अफ़वाहों में कितनी सचाई है, यह कहना तो कठिन है; पर इतना तो साफ़ ही है कि सोमनाथ की हार ने इस देश को गुलाम बना दिया.

دشمن ثابت کرنے کی کوشش کی ہے' وہ اس بات کو بھول جاتے ہیں کہ جس طرح ہندو راجہ جنتا کو دھرم روپی افیم کا ڈوز دینے اور اپنے پرتاپ اور شان شوکت کے دکھاوے کے لئے شاندار مندر کھڑے کرتے تھے' ٹھیک اسی طرح اورنگ زیب وغیرہ اپنی جیت کی نشانی کے روپ میں مندر توڑکر وہاں مسجد بنواتے تھے . یہ دھرم کا نہیں' سرداروں سرداروں کی ٹکر کا ایک ضروری انگ تھا . پھر یہ بھی سب جانتے ہیں کہ ہندؤوں کے مندروں اور مورتیوں میں اتنا سونا اور قیمتی زیور کپڑے وغیرہ رہتے تھے کہ کوئی بھی لٹیرا انہیں دیکھ کر انہیں لوٹنے کا لوبھ روک نہیں سکتا تھا . کہتے ہیں کہ سومناتھ کے مندر میں کواڑوں سے لیکر بھیتر کے آنگن تک منوں سونا لکڑی پتھر پر لگا تھا . وہاں کے شیولنگ کو توڑنے پر وہ بھیتر سے کھوکھلا نکلا اور اس میں کافی سونا اور جواہرات وغیرہ نکلے بتلائے جاتے ہیں .

اگر ایک پل کے لئے ہم یہ مان بھی لیں کہ اوپر لکھی باتوں میں سچائی کا حصہ کم ہے اور ودیشیوں کے حملے لوٹ سے ادھک ہمارے دھرم پر ہی حملے تھے' تو ایک بات سمجھ میں نہیں آتی کہ آخر غزنی کی سینا بھارت کے شیوبھکتوں سے ادھک تو رہی نہیں ہوگی . پھر کیا کارن ہے کہ سوم دیو کی رکشا نہیں ہوسکی ؟ کچھ لوگوں نے لکھا ہے کہ سومناتھ کی رکشا کے لئے لاشوں پر لاشیں جم گئیں' خون کی ندیاں بہ گئیں اور اس طرح کام آئے ویروں کے یگیوپویت (جنیو) کے ڈھیر لگ گئے ! اگر حملے کے بھاری پن کو بڑھانے کے لئے بھی یہ سب کہا گیا ہے تو بھی بہت بڑی وڈمبنا' مبالغہ اور دھوکا جان پڑتا ہے . اگر اتنا تگڑا ورودھ ہوا ہوتا' تو شترو کبھی نہ جیتتا . اس سمبندھ میں ایک بات یہ بھی مشہور ہے کہ جب غزنوی (یا شاید اورنگ زیب) کے لوگ چڑھے آ رہے تھے' تو انیک چھتری ویروں نے اپنے اپنے میان سے تلوار نکال کر بھگوان سومناتھ سے پرارتھنا کی کہ اگر وہ آگیا دیں' تو شترو کا کام تمام کردیا جائے . پر کالے پتھر کے اس شیولنگ میں آگیا دینے کی طاقت ہوتی' تبھی تو وہ آگیا دیتا . چنانچہ سومناتھ کے یہ ویر پوجک تو آگیا کی امید میں تلواریں نکالے ہی رہے اور شترو کی طرف کے لوگوں نے آکر انہیں تلواروں سے گاجر مولی کی طرح انہیں کاٹ ڈالا . جو پنڈے پجاری مندر میں مال اڑاتے تھے' وہ اپنے سومناتھ بھگوان کو چھوڑکر کب بھاگ گئے' کسی کو پتہ بھی نہ چلا !

اوپر کی اتہاسی افواہوں میں کتنی سچائی ہے' یہ کہنا تو کٹھن ہے؛ پر اتنا تو صاف ہی ہے کہ سومناتھ کی ہار نے اس دیش کو غلام بنادیا .

(जय ?) सोमनाथ

(भाई मोहनसिंह सेंगर)

[यह लेख हिन्दी माहवारी रिसाले 'तरुण' (कलकत्ता) से लिया गया है. केवल कुछ शब्दों की जगह ज़रा आसान शब्द रख दिये गए हैं—एडीटर]

किसी ने हिन्दुस्तान का मुक़ाबला एक ऐसी भोली, बेबस और सीधी सादी औरत से किया है जिस पर कई लोगों ने हमले किये, बलात्कार किये, उसे लूटा, मारा; और वह फिर से जैसे अपने कपड़े झाड़कर गुज़ारा करने की चिन्ता से चूल्हे के पास जा बैठी—मानो जो कुछ हुआ, वही उसकी क़िस्मत में था ! और किसी समय यह बात चाहे लागू न भी हो, पर सोमनाथ पर बार बार के हमले—जैसा कि इतिहास से पता चलता है—इस बात को ठीक साबित कर रहे हैं. पिछली 11 मई को सौराष्ट्र के अन्दर प्रभास-पाटन में जिस सोमनाथ की स्थापना हुई है, कहते हैं वहाँ के मन्दिर, लिंग-मूर्ति या बस्ती पर ई० 1024, 1227, 1318, 1395, 1511 और 1520 में हमले हुए. आख़िरी हमला या बरबादी औरंगज़ेब के समय की बतलाई जाती है, जिसने सोमनाथ के मन्दिर की जगह एक मस्जिद बनवा दी. भारत का ग्यारहवीं से सोलहवीं सदी तक का इतिहास बतलाता है कि बैर, बदला, हत्या या धर्म बदलवाने की निस्बत उस ज़माने के हमलों का ख़ास मक़सद सिर्फ़ लूट था. इसलिये सोमनाथ पर इन हमलों का सम्बन्ध धर्म या मज़हब से जोड़ना इतिहास और सचाई के साथ ज़्यादती करना है. सही बात यही लगती है कि दूसरे देशों से अधिक उपजाऊ होने के कारन हमारा देश उन दिनों ख़ुशहाल था. इसलिये जहाँ कहीं गुज़र बसर की इतनी सुविधा नहीं थी, वहाँ के लोगों का हमारे ख़ुशहाल देश की तरफ़ खिंचना स्वाभाविक था. पर आज हम जो गला फाड़-फाड़ कर यह कह रहे हैं कि सोमनाथ पर 6 या 7 बार हमले हुए सो वह कोई घमंड करने की नहीं, लज्जा की बात है. समझ में नहीं आता कि इतनी बड़ी हार और पतन की बात कहते भी हम लजाते नहीं. पर चतुर आदमी कभी भी सीधी हार स्वीकार नहीं करता. सो हमने भी अपने बल-बूते की इतनी बड़ी कमी को कभी अपनी कमी, कमज़ोरी या हीनता कहकर स्वीकार नहीं किया—बल्कि उलटे दुनिया की हमदर्दी हासिल करने और दुशमन के लिये नफ़रत फैलाने की ग़रज़ से अधिक प्रचार इसी बात का किया कि हमारे मन्दिर और मूर्तियाँ नश्ट कर दी गईं, हमारे धर्म पर हमला हुआ, वग़ैरा. जिन्होंने सोमनाथ के मन्दिर-मूर्ति तोड़ने वाले महमूद ग़ज़नवी से लेकर वहाँ मस्जिद बनानेवाले औरंगज़ेब तक सब को अपने धर्म का

(جے ؟) سومناتھ

(بھائی موھن سنگھ سینگر)

[یہ لیکھ ھندی ماھواری رسالے 'ترون' (کلکتہ) سے لیا گیا ھے . کیول کچھ شبدوں کی جگہ ذرا آسان شبد رکھ دیئے گئے ھیں--ایڈیٹر]

کسی نے ھندستان کا مقابلہ ایک ایسی بھولی' بے بس اور سیدھی سادی عورت سے کیا ھے جس پر کئی لوگوں نے حملے کئے' بلاتکار کئے' اُسے لوٹا' مارا؛ اور وہ پھر سے جیسے اپنے کپڑے جھاڑکر گذارا کرنے کی چنتا سے چولھے کے پاس جا بیٹھی—مانو جو کچھ ہوا' وھی اُسکی قسمت میں تھا ! اور کسی سمے یہ بات چاھے لاگو نہ بھی ھو' پر سومناتھ پر بار بار کے حملے—جیسا کہ اِتہاس سے پتہ چلتا ھے—اس بات کو ٹھیک ثابت کررھے ھیں . پچھلی 11 مئی کو سوراشٹر کے اندر پربھاس پاٹن میں جس سومناتھ کی ستھاپنا ھوئی ھے' کہتے ھیں وھاں کے مندر' لنگ مورتی یا بستی پر عیسوی 1024' 1227' 1318' 1395' 1511 اور 1520 میں حملے ھوئے . آخری حملہ یا بربادی اورنگ زیب کے سمے کی بتلائی جاتی ھے ' جس نے سومناتھ کے مندر کی جگہ ایک مسجد بنوادی . بھارت کا گیارھویں سے سولھویں صدی تک کا اِتہاس بتلاتا ھے کہ بیر' بدلہ' ھتیا یا دھرم بدلوانے کی نسبت اُس زمانے کے حملوں کا خاص مقصد صرف لوٹ تھا . اِس لئے سومناتھ پر اِن حملوں کا سمبندھ دھرم یا مذہب سے جوڑنا اِتہاس اور سچائی کے ساتھ زیادتی کرنا ھے . صحیح بات یہی لگتی ھے کہ دوسرے دیشوں سے ادھک اُپجاؤ ھونے کے کارن ھمارا دیش اُن دنوں خوش حال تھا . اس لئے جہاں کہیں گذربسر کی اِتنی سودھا نہیں تھی' وھاں کے لوگوں کا ھمارے خوش حال دیش کی طرف کھنچنا سوابھاوک تھا . پر آج ھم جو گلا پھاڑ پھاڑ کر یہ کہہ رھے ھیں کہ سومناتھ پر 6 یا 7 بار حملے ھوئے سو وہ کوئی گھمنڈ کرنے کی نہیں' لجا کی بات ھے . سمجھ میں نہیں آتا کہ اتنی بڑی ھار اور پتن کی بات کہتے بھی ھم لجاتے نہیں . پر چتر آدمی کبھی بھی سیدھی ھار سویکار نہیں کرتا . سو ھم نے بھی اپنے بل بوتے کی اتنی بڑی کمی' کو کبھی اپنی کمی' کمزوری' یا ھینتا کہہ کر سویکار نہیں کیا—بلکہ الٹے دنیا کی ھمدردی حاصل کرنے اور دشمن کے لئے نفرت پھیلانے کی غرض سے ادھک پرچار اِسی بات کا کیا کہ ھمارے مندر اور مورتیاں نشٹ کردی گئیں' ھمارے دھرم پر حملہ ھوا' وغیرہ . جنھوں نے سومناتھ کے مندر مورتی توڑنے والے محمود غزنوی سے لیکر وھاں مسجد بنانے والے اورنگ زیب تک سب کو اپنے دھرم کا

करते थे. धर्म नाम का एक बौद्ध भिक्षु सूत्रों का अर्थ करता था, दूसरा चन्द्रा शब्दों का अनुवाद करता था, तीसरा पांडुलिपि लिखता था और चौथा अनुवाद की भाषा ठीक करता था. इस तरह बोधिरुचि की मदद करने के लिये अनुवादकों का एक पूरा मंडल था.

बोधिरुचि ने चीन में बौद्ध धर्म की कुल 53 किताबों का अनुवाद किया. इस में सब से मशहूर किताब "रत्न-कूट" समझी जाती है. ह्वेनसांग यह किताब भारत से चीन लेआया था. सन 706 ईसवी में बोधिरुचि ने इस किताब का अनुवाद शुरू किया और सन 713 ईसवी में इसे पूरा किया. कहा जाता है जिस समय यह अनुवाद पूरा होने वाला था, चीन का सम्राट अपने दरबार के सभी ओहदेदारों और महल की रानियों के साथ वहाँ मौजूद था और सम्राट ने अपने हाथ से इस अनुवाद के आख़िरी पन्नों को लिखा.

"रत्नकूट" का अनुवाद पूरा कर लेने के बाद बोधिरुचि ने अनुवाद का काम बन्द कर दिया और अपनी बाक़ी ज़िन्दगी ध्यान और योग में गुज़ारी.

कहा जाता है बोधिरुचि एक सौ छप्पन साल की उमर में मरा. जब उसके मरने का दिन नज़दीक आया तो एक दिन उसने अपने चेलों को बुला कर कहा—

"मेरा शरीर दिन ब दिन उसी तरह कमज़ोर होता जा रहा है जिस तरह पानी की बूंदें धीरे धीरे भाप बनकर उड़ती जाती हैं. मैं बहुत दिन ज़िन्दा रह चुका हूँ और अब मुझे अपना अन्त नज़दीक दिखाई पड़ रहा है. इतने दिनों तक मैं खाना खाकर अपनी कमज़ोरी दूर कर रहा था. अब जबकि मेरे जाने का दिन क़रीब आ गया है तो फिर अब उसे आगे ठेलने की क्या ज़रूरत ?"

इसके बाद वह 55 दिन तक उपवास करता रहा और अन्त में शरीर त्याग दिया.

कश्यप मतंगा, कुमार जीव, बुद्धयश, गुण वर्मन, बोधिधर्म प्रभाकर मित्र, और बोधिरुचि के अलावा और भी बहुत से हिन्दुस्तानी बौद्ध प्रचारकों की चर्चा चीनी साहित्य और चीनी सरकारी काग़ज़ों में मिलती है. उनकी ज़िन्दगी, उनकी क़ुरबानी, उनके त्याग, उनकी हिम्मत, उनके लगन का ही यह नतीजा है कि भारत और चीन के बीच गहरा और टिकाऊ कलचरी सम्बन्ध क़ायम हुआ और सारे चीन ने बौद्ध धर्म को अपना लिया. चीन और भारत के इस मेल मिलाप का गहरा असर आज तक दोनों देसों के धर्म, समाज, रहन सहन, कला, साहित्य, विचारों और आदर्शों पर साफ़ चमक रहा है.

رتے تھے . برھمہ نام کا ایک بودھ بھکشو سوتروں کا ارتھ بتا تھا، دوسرا چندا شبدوں کا انوواد کرتا تھا، تیسرا پانڈو پی لکھتا تھا اور چوتھا انوواد کی بھاشا ٹھیک کرتا تھا. س طرح بودھی رچی کی مدد کرنے کے لئے انوواد کوں کا یک پورا منڈل تھا .

بودھی رچی نے چین میں بودھ دھرم کی کل 53 تابوں کا انوواد کیا . اِس میں سب سے مشہور کتاب " رتن کوٹ " سمجھی جاتی ہے . ھیون سانگ یہ کتاب ھارت سے چین لے آیا تھا . سن 706 عیسوی میں بودھی چی نے اِس کتاب کا انوواد شروع کیا اور سن 713 عیسوی یں اِسے پورا کیا . کہا جاتا ہے جس سمے یہ انوواد پورا ونے والا تھا، چین کا سمراٹ اپنے دربار کے سبھی عہدے اروں اور محل کی رانیوں کے ساتھ وہاں موجود تھا اور مراٹ نے اپنے ھاتھ سے اس انوواد کے آخری پنوں کو لکھا .

" رتن کوٹ " کا انوواد پورا کر لینے کے بعد بودھی چی نے انوواد کا کام بند کر دیا اور اپنی باقی زندگی دھیان ر یوگ میں گذاری .

کہا جاتا ہے بودھی رچی ایک سو چھپن سال کی مر میں مرا . جب اُسکے مرنے کا دن نزدیک آیا تو ایک ن اُس نے اپنے چیلوں کو بلا کر کہا —

" میرا شریر دن بدن اُسی طرح کمزور ھوتا جا رہا ، جس طرح پانی کی بوندیں دھیرے دھیرے بھاپ بنکر ڑتی جاتی ھیں . میں بہت دن زندہ رہ چکا ھوں اور اب جھے اپنا انت نزدیک دکھائی پڑ رہا ہے . اتنے دنوں تک یں کھانا کھا کر اپنی کمزوری دور کر رہا تھا . اب جب ، میرے جانے کا دن قریب آگیا ہے تو پھر اب اُسے آگے ھیلنے کی کیا ضرورت ؟" -

اِس کے بعد وہ 55 دن تک اُپواس کرتا رہا اور انت یں شریر تیاگ دیا .

کشیپ متنگا، کمار جیو، بدھیش، گن ورمن، بودھی ھرم، پربھاکر متر اور بودھی رچی کے علاوہ اور بھی بہت ، ھندستانی بودھ پرچارکوں کی چرچا چینی ساھتیہ ر چینی سرکاری کاغذوں میں ملتی ہے . اُن کی زندگی، ، کی قربانی، اُن کے تیاگ، اُن کی ھمت، اُن کی لگن ھی یہ نتیجہ ہے کہ بھارت اور چین کے بیچ گہرا اور ؤ کلچری سمبندھ قائم ھوا اور سارے چین نے بودھ ھرم کو اپنا لیا . چین اور بھارت کے اس میل ملاپ کا را اثر آج تک دونوں دیسوں کے دھرم، سماج، رھن سہن، ، ساھتیہ، وچاروں اور آدرشوں پر صاف چمک رہا ہے .

कुछ दिन तक वह नालन्द विश्वविद्यालय में वहाँ के मशहूर विद्वान शील भद्र से बौद्ध दरशान पढ़ता रहा. वहीं बाद में उसे बौद्ध दरशान का प्रोफ़ेसर बना दिया गया. पर वह नालन्द में ज्यादा दिन न रह सका. बाहर के मुल्कों में बौद्ध धर्म का प्रचार करने की उसे बड़ी इच्छा थी इसलिये वह चीन के लिये रवाना हो गया.

चीन जाते समय रास्ते में वह तुर्किस्तान में ठहरा. तुर्किस्तान के बादशाह ने उसका बड़ा स्वागत किया और बौद्ध धर्म में बड़ी दिलचस्पी ली. सन 626 ईसवी में तुर्किस्तानी दरबार के चीनी राजदूत ने प्रभाकर को चीन आने की दावत दी. प्रभाकर चीन जाना चाहता था पर तुर्किस्तान के बादशाह ने उस समय उसे रोक लिया. इस पर चीन के सम्राट ने खुद तुर्किस्तान के बादशाह को लिखा और चीनी सम्राट की निजी दावत पर प्रभाकर मित्र को सन 627 ईसवी में चीन की राजधानी पहुंचा दिया गया.

चीन के सम्राट ने प्रभाकर का बड़ा स्वागत किया. सम्राट के कहने से प्रभाकर ने बहुत सी बौद्ध पुस्तकों का अनुवाद चीनी भाषा में किया. प्रभाकर की विद्वता से चीनी सम्राट बड़ा खुश हुआ. सम्राट ने उसकी बड़ी इज्ज़त और तारीफ़ की.

प्रभाकर मित्र की इतनी इज्ज़त होते देख चीन के कंगफूत्से धर्म के मानने वाले उसके खिलाफ़ आवाज़ उठाने लगे. इसका चीनी सम्राट पर बुरा असर पड़ा सम्राट ने प्रभाकर के काम में दिलचस्पी लेना कम कर दिया.

कहा जाता है कि सम्राटके इस व्योहार से प्रभाकर के दिल को बड़ा सदमा हुआ. सन 633 ईसवी में वह चीन ही में इस दुनिया से चल बसा.

बोधिरुचि

बोधिरुचि दक्खिन भारत का रहने वाला था. बारह साल की उमर में उसने घर छोड़ दिया और एक विद्वान ब्राम्हन से वेद, सांख्य शास्त्र वग़ैरा की तालीम ली.

कहा जाता है, एक बार वह एक आम धार्मिक सभा में हिस्सा लेने गया. वहाँ उसकी एक बौद्ध भिक्षु यशघोश से बहस हुई. बहस में उसने हार मानली और वह तुरन्त बौद्ध धर्म अपनाकर बौद्ध भिक्षु हो गया.

सन 692 ईसवी में चालुक्य दरबार के चीनी राजदूत ने बोधिरुचि को चीन के लिये दावत दी. उसने इस दावत को मंज़ूर कर लिया और सन 693 ईसवी में समुन्दर के रास्ते चीन पहुँचा.

चीन पहुंचकर उसने बौद्ध किताबों के अनुवाद का काम शुरू किया. इस काम में कई बौद्ध भिक्षु उसकी मदद

کچھ دنوں تک وہ نالند وشوودیالے میں وہاں کے مشہور ودوان شیل بھدر سے بودھ درشن پڑھتا رہا . وہیں بعد میں اُسے بودھ درشن کا پروفیسر بنا دیا گیا . پر وہ نالند میں زیادہ دن نہ رہ سکا . باہر کے ملکوں میں بودھ دھرم کا پرچار کرنے کی اُسے بڑی اچھا تھی اس لئے وہ چین کے لئے روانہ ہوگیا .

چین جاتے سمے راستے میں وہ ترکستان میں ٹھہرا . ترکستان کے بادشاہ نے اُسکا بڑا سواگت کیا اور بودھ دھرم میں بڑی دلچسپی لی . سن 626 عیسوی میں ترکستانی دربار کے چینی راج دوت نے پربھاکر کو چین آنے کی دعوت دی . پربھاکر چین جانا چاہتا تھا پر ترکستان کے بادشاہ نے اُس سمے اُسے روک لیا . اِس پر چین کے سمراٹ نے خود ترکستان کے بادشاہ کو لکھا اور چینی سمراٹ کی نجی دعوت پر پربھاکر مِتر کو سن 627 عیسوی میں چین کی راجدھانی پہونچا دیا گیا .

چین کے سمراٹ نے پربھاکر کا بڑا سواگت کیا . سمراٹ کے کہنے سے پربھاکر نے بہت سی بودھ پستکوں کا انوواد چینی بھاشا میں کیا . پربھاکر کی ودوتا سے چینی سمراٹ بڑا خوش ہوا . سمراٹ نے اُسکی بڑی عزت اور تعریف کی .

پربھاکر مِتر کی اتنی عزت ہوتے دیکھ چین کے کنگ فوتزے دھرم کے ماننے والے اُسکے خلاف آواز اُٹھانے لگے . اِس کا چینی سمراٹ پر برا اثر پڑا اور سمراٹ نے پربھاکر کے کام میں دلچسپی لینا کم کر دیا .

کہا جاتا ہے کہ سمراٹ کے اس بیوہار سے پربھاکر کے دل کو بڑا صدمہ ہوا . سن 633 عیسوی میں وہ چین ہی میں اس دنیا سے چل بسا .

بودھی رچی

بودھی رچی دکھن بھارت کا رہنے والا تھا . بارہ سال کی عمر میں اُس نے گھر چھوڑ دیا اور ایک ودوان براہمن سے وید ، سانکھیہ شاستر وغیرہ کی تعلیم لی .

کہا جاتا ہے ، ایک بار وہ ایک عام دھارمک سبھا میں حصہ لینے گیا . وہاں اُس کی ایک بودھ بھکشو یش گھوش سے بحث ہوئی . بحث میں اُس نے ہار مان لی اور وہ ترنت بودھ دھرم اپنا کر بودھ بھکشو ہوگیا .

سن 692 عیسوی میں چالوکیہ دربار کے چینی راج دوت نے بودھی رچی کو چین جانے کے لئے دعوت دی . اُس نے اس دعوت کو منظور کر لیا اور سن 693 عیسوی میں سمندر کے راستے چین پہونچا .

چین پہونچکر اُس نے بودھ کتابوں کے انوواد کا کام شروع کیا . اس کام میں کئی بودھ بھکشو اُسکی مدد

बहुत जल्द फैल गया. चीन के कलाकारों की नक्काशी और बुतसाज़ी पर भी इसका बहुत बड़ा असर पड़ा. यह पंथ आज भी क़ायम है लेकिन इसके मानने वाले जापान में ज़्यादा पाए जाते हैं.

इसमें कोई शक नहीं कि चीन की धार्मिक ज़िन्दगी और वहाँ की कला पर जितना गहरा असर बोधिधर्म का पड़ा उतना किसी और हिन्दुस्तानी का नहीं पड़ा. उसके इस असर के निशान आज तक चीन की ज़िन्दगी में क़ायम हैं.

धर्मगुप्त—

धर्मगुप्त काठियावाड़ में पैदा हुआ. तेईस साल की उमर में वह कन्नौज गया जहाँ उसने कौमुदीसंघर्म (?) नाम के एक मठ में बौद्ध धर्म की दीक्षा ली. पचीस साल की उमर में वह बौद्ध भिक्षु हो गया. बौद्ध भिक्षु हो जाने बाद वह तक्का देस (उत्तर पंजाब) चला गया. वहाँ उसे मालूम हुआ कि चीन में बौद्ध धर्म फैल रहा है. यहीं से वह चीन के लिये रवाना होगया.

तक्का से वह काशगर गया और काशगर से कूची. कूची में उसे वहाँ के राजा ने रोकना चाहा पर वह न रुका. एक दिन बिना राजा की इजाज़त के वह कूची से चल पड़ा और फिर अग्निदेस, तुरफ़ान, और हामी होते हुए सन 590 ईसवी में चीन की राजधानी चाँग-गान पहुंचा.

चाँग-गान में कुछ साल रहने के बाद वह चीन के सम्राट के साथ लोयांग (उत्तर चीन) चला गया. वहाँ उसने बौद्ध धर्म की दस किताबों का चीनी में अनुवाद किया. वहीं रहकर उसने उन सब एशियाई देसों का हाल एक किताब में लिखा जिनसे होकर वह चीन आया था. वह किताब अब नहीं मिलती. कहा जाता है इन देसों के बारे में धर्मगुप्त ने इस किताब में जितनी बातें लिखी थीं उतनी ह्वेनसाँग भी अपने सफ़रनामें में नहीं लिख सका. इस किताब के दस भाग थे—(1) पैदावार (2) जलवायु (3) मकान और रहन सहन के तरीक़े (4) सरकार (5) रीत रिवाज (6) खान पान (7) पोशाक (8) तालीम (9) धन और तिजारती सामान (10) पहाड़, नदियाँ, राज, शहर और मशहूर शहरी.

सन 619 ईसवी में धर्मगुप्त ने चाँग-गान में ही शरीर त्याग दिया.

प्रभाकर मित्र—

प्रभाकर मित्र मध्य भारत के एक राजघराने में पैदा हुआ था. दस साल की उमर में उसने घर छोड़ दिया और बौद्ध धर्म की किताबें पढ़नी शुरू कर दीं. कुछ ही साल में वह इतनी तरक़्क़ी कर गया कि एक लाख श्लोक वह ज़बानी सुना सकता था. फिर वह बौद्ध भिक्षु बना लिया गया.

بہت جلد پھیل گیا . چین کے کلا کاروں کی نقاشی اور بت سازی پر بھی اُس کا بہت بڑا اثر پڑا . یہ پنتھ آج بھی قائم ھے لیکن اِسکے ماننے والے جاپان میں زیادہ پائے جاتے ھیں .

اِس میں کوئی شک نہیں کہ چین کی دھارمک زندگی اور وھاں کی کلا پر جتنا گہرا اثر بودھی دھرم کا پڑا اُتنا کسی اور ھندستانی کا نہیں پڑا . اُس کے اِس اثر کے نشان آج تک چین کی زندگی میں قائم ھیں .

دھرم گپت—

دھرم گپت کاٹھیاواڑ میں پیدا ھوا . تیئیس سال کی عمر میں وہ قنوج گیا جہاں اُسنے کومدی سنگھرم (؟) نام کے ایک مٹھ میں بودھ دھرم کی دیکشا لی . پچیس سال کی عمر میں وہ بودھ بھکشو ھوگیا . بودھ بھکشو ھوجانے کے بعد وہ تکا دیس (اُتر پنجاب) چلا گیا . یہاں اُسے معلوم ھوا کہ چین میں بودھ دھرم پھیل رھا ھے . یہیں سے وہ چین کے لئے روانہ ھوگیا .

تکا سے وہ کاشغر گیا اور کاشغر سے کوچی . کوچی میں اُسے وھاں کے راجہ نے روکنا چاھا پر وہ نہ رکا . ایک دن بنا راجہ کی اجازت کے وہ کوچی سے چل پڑا اور پھر اگنی دیس، طرفان اور ھامی ھوتے ھوئے سن 590 عیسوی میں چین کی راجدھانی چانگ گان پہونچا .

چانگ گان میں کچھ سال رھنے کے بعد وہ چین کے سمراٹ کے ساتھ لویانگ (اُتر چین) چلا گیا . وھاں اُس نے بودھ دھرم کی دس کتابوں کا چینی میں انوواد کیا . وھیں رھکر اُس نے اُن سب ایشیائی دیسوں کا حال ایک کتاب میں لکھا جن سے ھوکر وہ چین آیا تھا . وہ کتاب اب نہیں ملتی . کہا جاتا ھے اُن دیسوں کے بارے میں دھرم گپت نے اس کتاب میں جتنی باتیں لکھی تھیں اُتنی ھوین سانگ بھی اپنے سفر نامے میں نہیں لکھ سکا . اس کتاب کے دس بھاگ تھے (1) پیداوار (2) جل وایو (3) مکان اور رھن سہن کے طریقے (4) سرکار (5) ریت رواج (6) کھان پان (7) پوشاک (8) تعلیم (9) دھن اور تجارتی سامان (10) پہاڑ، ندیاں، راج، شہر اور مشہور شہری .

سن 619 عیسوی میں دھرم گپت نے چانگ گان میں ھی شریر تیاگ دیا .

پربھا کر متر—

پربھا کر متر مدھیہ بھارت کے ایک راج گھرانے میں پیدا ھوا تھا . دس سال کی عمر میں اُس نے گھر چھوڑ دیا اور بودھ دھرم کی کتابیں پڑھنی شروع کر دیں . کچھ ھی سال میں وہ اِتنی ترقی کر گیا کہ ایک لاکھ شلوک وہ زبانی سنا سکتا تھا . پھر وہ بودھ بھکشو بنا لیا گیا .

सम्राट ने बोधिधर्म से पूछा—"जब से मैंने राज की बागडोर सम्हाली, मैंने बहुत से मन्दिर बनवाए, बहुत सी धर्म की किताबों का अनुवाद कराया और लोगों को बौद्ध भिक्षु बनने के लिये बढ़ावा देता रहा. क्या मैं अपने इन कामों की वजह से निजात हासिल करने जोग हो गया हूँ ?"

बोधिधर्म ने जवाब दिया—"यह सारी दुनिया माया है, असत्य है, और शून्य है. आप जो भी रीत रिवाज के काम कर रहे हैं, वह आपको निर्वाण की तरफ़ नहीं ले जा रहे हैं, पीछे घसीट रहे हैं."

सम्राट ने पूछा—"तो फिर सही रास्ता कौनसा है ?"

बोधिधर्म ने जवाब दिया—"ध्यान(मराक़बे) के ज़रिये ही आप निर्वाण प्राप्त कर सकते हैं, इन दुनियावी रीत रिवाजों के ज़रिये नहीं. इन दुनियावी चीज़ों की तरफ़ से जब आप मन को हटाएँगे तभी सच्चाई दिखाई पड़ेगी."

सम्राट ने पूछा—"बौद्ध धर्म की किताबों में सबसे पवित्र कौन सी किताब है ?"

बोधिधर्म ने जवाब दिया—"जब यह सारी दुनिया शून्य है और असत्य है तो फिर कौन सी किताब पवित्र है और कौनसी नहीं यह सवाल ही ग़लत है."

सम्राट ने पूछा—"यह कौन है जो मुझे इस तरह जवाब दे रहा है ?"

बोधिधर्म ने जवाब दिया—"मैं नहीं जानता."

सम्राट वूत्ती बोधिधर्म की इन बातों से बहुत नाराज़ हुआ. वह यह उम्मीद करता था कि बोधिधर्म सम्राट के ऊपरी कर्मकांड की ख़ूब तारीफ़ करेगा लेकिन सम्राट को निराश होना पड़ा. सम्राट ने बोधिधर्म को किसी तरह की मदद न दी. इसके बाद बोधिधर्म उत्तर चीन चला गया जहाँ वाई वंश का राज था.

कहा जाता है उत्तर चीन जाते समय बोधिधर्म ने यॉंग त्सी (Yang-tse) नदी बाँस की एक छड़ी पर खड़े होकर पार की थी. इस कथा को लेकर बहुत से चीनी कलाकारों ने तसवीरें बनाई हैं.

यह भी कहा जाता है कि उत्तर चीन में लोयांग के एक मन्दिर में बोधिधर्म नौ साल तक लगातार एक चट्टान पर आँख गड़ाए बैठा रहा जिसकी वजह से उसके पैर उसके शरीर से अलग हो गए. उसके पैर की चप्पल अभी तक चीन के एक मन्दिर में रखी हुई है. जापान में अब भी बोधिधर्म के नाम से बच्चों के लिये एक खिलौना बनता है जिसके पैर नहीं होते. इस खिलौने को "दरूमा" कहते हैं.

चीन में बोधिधर्म ने अपने मत का प्रचार किया और बौद्ध धर्म का एक नया पंथ "चान पंथ" के नाम से क़ायम किया. "चान" का मतलब 'ध्यान' है. चीन में यह पंथ

سمراٹ نے بودھی دھرم سے پوچھا — " جب سے میں نے راج کی باگ ڈور سنبھالی میں نے بہت سے مندر بنوائے بہت سی دھرم کی کتابوں کا انوواد کرایا اور لوگوں کو بودھ بھکشو بننے کے لئے بڑھاوا دیتا رہا ۔ کیا میں اپنے ان کاموں کی وجہ سے نجات حاصل کرنے جوگ ہوگیا ہوں ؟"

بودھی دھرم نے جواب دیا — " یہ ساری دنیا مایا ہے' استیہ ہے اور شونیہ ہے ۔ آپ جو بھی ریت رواج کے کام کر رہے ہیں وہ آپ کو نروان کی طرف نہیں لے جا رہے ہیں' پیچھے گھسیٹ رہے ہیں ۔"

سمراٹ نے پوچھا — " تو پھر صحیح راستہ کون سا ہے ؟"

بودھی دھرم نے جواب دیا — " دھیان (مراقبہ) کے ذریعے ہی آپ نروان پراپت کر سکتے ہیں' ان دنیاوی ریت رواجوں کے ذریعے نہیں ۔ ان دنیاوی چیزوں کی طرف سے جب آپ من کو ہٹائیں گے تبھی سچائی دکھائی پڑیگی ۔"

سمراٹ نے پوچھا — " بودھ دھرم کی کتابوں میں سب سے پوتر کون سی کتاب ہے ؟"

بودھی دھرم نے جواب دیا — " جب یہ ساری دنیا شونیہ ہے اور استیہ ہے تو پھر کون سی کتاب پوتر ہے اور کون سی نہیں یہ سوال ہی غلط ہے ۔"

سمراٹ نے پوچھا — " یہ کون ہے جو مجھے اس طرح جواب دے رہا ہے ؟"

بودھی دھرم نے جواب دیا — " میں نہیں جانتا ۔"

سمراٹ ووتی بودھی دھرم کی ان باتوں سے بہت ناراض ہوا ۔ وہ یہ امید کرتا تھا کہ بودھی دھرم سمراٹ کے اوپری کرم کانڈ کی خوب تعریف کریگا لیکن سمراٹ کو نراش ہونا پڑا ۔ سمراٹ نے بودھی دھرم کو کسی طرح کی مدد نہ دی ۔ اسکے بعد بودھی دھرم اتر چین چلا گیا جہاں وائی ونش کا راج تھا ۔

کہا جاتا ہے اتر چین جاتے سمے بودھی دھرم نے یانگتسی (yang-tse) ندی بانس کی ایک چھڑی پر کھڑے ہوکر پار کی تھی ۔ اس کتھا کو لیکر بہت سے چینی کلاکاروں نے تصویریں بنائی ہیں ۔

یہ بھی کہا جاتا ہے کہ اتر چین میں لویانگ کے ایک مندر میں بودھی دھرم نو سال تک لگاتار ایک چٹان پر آنکھ گڑائے بیٹھا رہا جسکی وجہ سے اس کے پیر اس کے شریر سے الگ ہوگئے ۔ اس کے پیر کی چپل ابھی تک چین کے ایک مندر میں رکھی ہوئی ہے ۔ جاپان میں اب بھی بودھی دھرم کے نام سے بچوں کے لئے ایک کھلونہ بنتا ہے جسکے پیر نہیں ہوتے ۔ اس کھلونے کو "دروما" کہتے ہیں ۔

چین میں بودھی دھرم نے اپنے مت کا پرچار کیا اور بودھ دھرم کا ایک نیا پنتھ "چان پنتھ" کے نام سے قائم کیا ۔ "چان" کا مطلب 'دھیان' ہے ۔ چین میں یہ پنتھ

काश्मीर का राजा ऐलान कर दिया जाय. गुणवर्मन ने साफ इनकार कर दिया.

कुछ समय बाद वह काश्मीर से सिंहल द्वीप (लंका) चला गया. लंका के बौद्ध भिक्षुओं ने उसका बड़ा शानदार स्वागत किया जहाँ उसने बौद्ध धर्म के प्रचार में वहाँ के भिक्षुओं को खूब मदद दी.

सिंहल द्वीप से वह यव द्वीप (जावा) गया. जावा में बौद्ध धर्म फैल चुका था. वहां के राजा ने उसका बड़ा स्वागत किया. गुणवर्मन ने यहाँ भी बौद्ध धर्म के प्रचार करने में मुकामी भिक्षुओं की मदद की और राजा समेत समूचे राजघराने को बौद्ध धर्म का मानने वाला बना लिया.

गुणवर्मन अपनी विद्वता के लिये चीन में भी मशहूर हो चुका था. चीन के नानकिंग शहर के भिक्षुओं ने चीन सम्राट को अरजी दी कि गुणवर्मन को चीन आने की दावत दी जाय. सम्राट ने मंजूर कर लिया और कुछ बौद्ध भिक्षुओं को दूत बनाकर गुणवर्मन को चीन ले आने के लिये जावा भेजा. गुणवर्मन इन भिक्षुओं के साथ सन 431 ईसवी में नानकिंग आया. जिस समय वह नानकिंग पहुँचा चीन के सम्राट ने अपने महल के बाहर निकल कर उसका स्वागत किया था. चीन में उन दिनों यह एक बहुत ही अनोखी बात थी.

गुणवर्मन को जेतवन मठ में ठहराया गया. वहाँ रह कर करीब एक साल तक वह बड़ी मेहनत के साथ बौद्ध किताबों का चीनी में अनुवाद करता रहा. एक साल बाद उसकी मौत हो गई. इसी एक साल के अरसे में उसने ग्यारह बौद्ध पुस्तकों का अनुवाद चीनी भाषा में किया.

बोधिधर्म—

बोधिधर्म दक्खिन भारत में काँजी (काँजीवरम) का राजकुमार था.

काँजी से वह जावा और सुमात्रा गया. वहाँ उसने बौद्ध धर्म के एक नये पहलू पर जोर दिया. अभी तक बौद्ध धर्म में निर्वाण (निजात) हासिल करने के लिये दो रास्तों पर जोर दिया जाता था—एक कर्म मार्ग यानी अमल का रास्ता और दूसरा ज्ञान मार्ग यानी मारफत का रास्ता. बोधिधर्म ने एक तीसरे रास्ते यानी ध्यान मार्ग पर जोर दिया. उसने बताया कि ध्यान यानी मराक़बे के जरिये हम सच्चाई तक पहुँच सकते हैं, निर्वाण (निजात) हासिल कर सकते हैं.

बोधिधर्म अपने इस नए मार्ग का प्रचार करने चीन पहुँचा. सन 520 ईसवी में वह समुन्दर के रास्ते से केन्टन आया और दक्खिन चीन के सम्राट वूती से मिला. सम्राट और बोधिधर्म में जो बातचीत हुई उसका बयान चीन के सरकारी कागज़ों में मिलता है. बातचीत इस तरह हुई—

کاشمیر کا راجہ اعلان کر دیا جائے . گن ورمن نے صاف انکار کر دیا .

کچھ سمے بعد وہ کاشمیر سے سنگھل دیپ (لنکا) چلا گیا . لنکا کے بودھ بھکشوؤں نے اس کا بڑا شاندار سواگت کیا جہاں اس نے بودھ دھرم کے پرچار میں وہاں کے بھکشوؤں کو خوب مدد دی .

سنگھل دیپ سے وہ یاودیپ (جاوا) گیا . جاوا میں بودھ دھرم پھیل چکا تھا . وہاں کے راجہ نے اس کا بڑا سواگت کیا . گن ورمن نے یہاں بھی بودھ دھرم کے پرچار کرنے میں مقامی بھکشوؤں کی مدد کی اور راجہ سمیت سمچے راج گھرانے کو بودھ دھرم کا ماننے والا بنا لیا .

گن ورمن اپنی ودوتا کے لئے چین میں بھی مشہور ہو چکا تھا . چین کے نانکنگ شہر کے بھکشوؤں نے چین سمراٹ کو عرضی دی کہ گن ورمن کو چین آنے کی دعوت دی جائے . سمراٹ نے منظور کر لیا اور کچھ بودھ بھکشوؤں کو دوت بنا کر گن ورمن کو چین لے آنے کے لئے جاوا بھیجا . گن ورمن ان بھکشوؤں کے ساتھ سن 431 عیسوی میں نانکنگ آیا . جس سمے وہ نانکنگ پہونچا چین کے سمراٹ نے اپنے محل کے باہر نکلکر اس کا سواگت کیا تھا . چین میں ان دنوں یہ ایک بہت ہی انوکھی بات تھی .

گن ورمن کو جیتون متھ میں ٹھہرایا گیا . وہاں رہکر قریب ایک سال تک وہ بڑی محنت کے ساتھ بودھ کتابوں کا چینی میں انوواد کرتا رہا . ایک سال بعد اسکی موت ہوگئی . اسی ایک سال کے عرصے میں اس نے گیارہ بودھ پستکوں کا انوواد چینی بھاشا میں کیا .

بودھی دھرم

بودھی دھرم دکھن بھارت میں کانجی (کانجی ورم) کا راجکمار تھا .

کانجی سے وہ جاوا اور سماترا گیا . وہاں اس نے بودھ دھرم کے ایک نئے پہلو پر زور دیا . ابھی تک بودھ دھرم میں نروان (نجات) حاصل کرنے کے لئے دو راستوں پر زور دیا جاتا تھا—ایک کرم مارگ یعنی عمل کا راستہ اور دوسرا گیان مارگ یعنی معرفت کا راستہ . بودھی دھرم نے ایک تیسرے راستے یعنی دھیان مارگ پر زور دیا . اس نے بتایا کہ دھیان یعنی مراقبے کے ذریعے ہم سچائی تک پہونچ سکتے ہیں ، نروان (نجات) حاصل کر سکتے ہیں .

بودھی دھرم اپنے اس نئے مارگ کا پرچار کرنے چین پہونچا . سن 520 عیسوی میں وہ سمندر کے راستے سے کینٹن آیا . اور دکھنی چین کے سمراٹ ووتی سے ملا . سمراٹ اور بودھی دھرم میں جو بات چیت ہوئی اس کا بیان چین کے سرکاری کاغذوں میں ملتا ہے . بات چیت اس طرح ہوئی—

बुद्धयश 27 साल की उमर में बौद्ध भिक्षु हो गया और उन्हीं के साथ दूर दूर देशों में बौद्ध मत का प्रचार करने निकल पड़ा. बुद्धयश पहले काशगर गया. जब वह काशगर पहुँचा उसी समय वहाँ के राजा ने तीन हजार बौद्ध भिक्षुओं को एक धार्मिक जलसे में शरीक होने के लिये बुलाया था. बुद्धयश भी उस जलसे में शरीक हुआ. काशगर का राजा बुद्धयश की विद्वता और उसके व्योहार से इतना खुश हुआ कि उसने बुद्धयश को अपने महल में बुला लिया. उन्हीं दिनों कुमार जीव भी काशगर आया था. कुछ दिनों तक कुमार जीव और बुद्धयश दोनों मिलकर बौद्ध दरशन पढ़ते और उस पर चरचा करते रहे. इसके बाद कुमार जीव कूची वापस चला गया.

दस साल काशगर रहने के बाद बुद्धयश भी कूची आया. कुमार जीव उस समय कूची में न था. यह वह समय था जब कुमार जीव को क़ैद करके चीन पहुँचा दिया गया था. बुद्धयश ने कुमार जीव को खत लिखा कि मैं भी चीन आना चाहता हूँ. कुमार जीव ने चीन के सम्राट से कह कर बुद्धयश को चीन बुलवा लिया.

बुद्धयश सन 410 से 413 ईसवी तक चीन में रहा. इस अरसे में प्रचार के काम में वह कुमार जीव की हर तरह मदद करता रहा. बुद्धयश ने खुद कुछ बौद्ध पुस्तकों का अनुवाद किया जिनमें दीर्घागम और धर्मगुप्तविनय बहुत मशहूर हैं.

बुद्धयश बहुत ऊँचे चरित्र का आदमी था. चीन के सम्राट ने कई बार उसे कुछ भेंट देने की कोशिश की. उसने लेने से बारबार यह कह कर इनकार कर दिया कि किसी भी बौद्ध भिक्षु को यह हक़ नहीं कि वह इस तरह की भेंट किसी से ले.

गुणवर्मन—

गुणवर्मन काश्मीर का एक राजकुमार था. उसके दादा हरिभद्र बड़े ज़ालिम राजा थे इसलिये उन्हें अपना देस छोड़कर भागना पड़ा था. गुणवर्मन के पिता संघानन्द को भी अपनी ज़िन्दगी पहाड़ियों और जंगलों में लुकछिप कर काटनी पड़ी थी.

गुणवर्मन बीस साल की उमर में घर छोड़ कर बौद्ध भिक्षु हो गया. उसने बहुत जल्द ही बौद्ध दरसन की अच्छी जानकारी हासिल करली और एक हज़ार श्लोक ज़बानी याद कर लिये. कुछ साल तक लगातार पढ़ते रहने के बाद वह बौद्ध दरशन का विद्वान हो गया.

जब वह तीस साल का था तो काश्मीर का राजा मर गया. [illegible] कोई औलाद न थी. इसलिये काश्मीर दरबार के [illegible] ने यह तय किया कि गुणवर्मन को

کی تعلیم پاکر 27 سال کی عمر میں [illegible] ہوگیا اور انہیں کے ساتھ دور دور دیسوں میں بودھ مت کا پرچار کرنے نکل پڑا ۔ بدھ یش پہلے کاشغر گیا ۔ جب وہ کاشغر پہونچا اُسی سمے وہاں کے راجہ نے تین ہزار بودھ بھکشوؤں کو ایک دھارمک جلسے میں شریک ہونے کے لئے بلایا تھا ۔ بدھ یش بھی اُس جلسے میں شریک ہوا ۔ کاشغر کا راجہ بدھ یش کی ودوتا اور اُس کے بیوہار سے اتنا خوش ہوا کہ اُس نے بدھ یش کو اپنے محل میں بلا لیا ۔ اُنہیں دنوں کمار جیو بھی کاشغر آیا تھا ۔ کچھ دنوں تک کمار جیو اور بدھیش دونوں ملکر بودھ درشن پڑھتے اور اُس پر چرچا کرتے رہے ۔ اُس کے بعد کمار جیو کوچی واپس چلا گیا ۔

دس سال کاشغر رہنے کے بعد بدھ یش بھی کوچی گیا ۔ کمار جیو اُس سمے کوچی میں نہ تھا ۔ یہ وہ سمے تھا جب کمار جیو کو قید کرکے چین پہونچا دیا گیا تھا ۔ بدھ یش نے کمار جیو کو خط لکھا کہ میں بھی چین آنا چاہتا ہوں ۔ کمار جیو نے چین کے سمراٹ سے کہکر بدھیش کو چین بلوا لیا ۔

بدھ یش سن 410 سے 413 عیسوی تک چین میں رہا ۔ اس عرصے میں پرچار کے کام میں وہ کمار جیو کی ہر طرح مدد کرتا رہا ۔ بدھ یش نے خود کچھ بودھ پستکوں کا انوواد کیا جن میں دیر گھاگم اور دھرم گپتک ونے بہت مشہور ہیں ۔

بدھ یش بہت اُنچے چرتر کا آدمی تھا ۔ چین کے سمراٹ نے کئی بار اُسے کچھ بھینٹ دینے کی کوشش کی ۔ اُس نے لینے سے بار بار یہ کہکر انکار کر دیا کہ کسی بھی بودھ بھکشو کو یہ حق نہیں کہ وہ اس طرح کی بھینٹ کسی سے لے ۔

گن ورمن—

گن ورمن کاشمیر کا ایک راج کمار تھا ۔ اُسکے دادا ہری بھدر بڑے ظالم راجہ تھے اس لئے اُنہیں اپنا دیس چھوڑ کر بھاگنا پڑا تھا ۔ گن ورمن کے پتا سنگھا نند کو بھی اپنی زندگی پہاڑیوں اور جنگلوں میں لک چھپ کر کاٹنی پڑی تھی ۔

گن ورمن بیس سال کی عمر میں گھر چھوڑ کر بودھ بھکشو ہوگیا ۔ اُس نے بہت جلد ہی بودھ درشن کی اچھی جان کاری حاصل کر لی اور ایک ہزار شلوک زبانی یاد کر لئے ۔ کچھ سال تک لگاتار پڑھتے رہنے کے بعد وہ بودھ درشن کا ودوان ہوگیا ۔

جب وہ تیس سال کا تھا تو کاشمیر کا راجہ مر گیا ۔ راجہ کی کوئی اولاد نہ تھی ۔ اس لئے کاشمیر دربار کے منتریوں نے یہ طے کیا کہ گن ورمن کو

में फैल चुका था. चीन में भी कुमारजीव अपनी विद्या के लिये मशहूर हो चुका था.

सन 383 ईसवी में चीनी फ़ौज ने कूची पर हमला किया. लौटते समय चीनी सेनापति कुमारजीव को क़ैद कर के चीन ले गया. जब चीन के सम्राट को पता लगा कि कुमारजीव क़ैद करके चीन लाया गया है तो सम्राट ने बड़े आदर के साथ उसको राजधानी में बुलाया. सन 401 ईसवी में कुमारजीव चीन की राजधानी पहुँचा और तब से बारह साल तक वह वहीं रहा.

कुमार जीव के चीन पहुँचने पर चीन के बौद्ध धर्म के इतिहास में एक नया युग शुरू हुआ. कुमार जीव से पहले जितने बौद्ध प्रचारक चीन आए थे वह चीनी जनता को बौद्ध दरशन इतनी अच्छी तरह न समझा पाते थे. उसने बौद्ध किताबों के चीनी अनुवादों को भी दुरुस्त किया और ख़ुद बहुत सी नई बौद्ध किताबों का अनुवाद किया. उसकी पचास चीनी किताबें अब भी मिलती हैं. वह संस्कृत और चीनी भाषा दोनों का पूरा पंडित था.

चीन के दूर दूर के हिस्सों से चीनी और भारती प्रचारक उसके पास तालीम लेने आते थे. चीन के सम्राट ने राजधानी में उसके लिये एक लेक्चर भवन बनवा दिया जिसमें वह आम जनता के सामने बौद्ध दरशन पर प्रवचन किया करता था. चीनी जनता पर उसकी विद्वता का इतना गहरा असर पड़ा कि लाखों चीनियों के बौद्ध धर्म अपना लेने के अलावा क़रीब 3000 चीनी उसके कहने से बौद्ध भिक्षु हो गए.

सन 413 ईसवी में कुमार जीव का शरीर छूटा. मरते वक़्त अपने चेलों को बुलाकर उसने कहा—"मेरी ज़िन्दगी को तुम अपना आदर्श न बनाओ. मेरे काम को अपनाओ और उसे पूरा करो. कीचड़ से कमल खिलता है इसलिये कीचड़ से प्रेम न करो, कमल से प्रेम करो."

जिस आदर और प्रेम के साथ भारत के रहने वाले आज भी चीनी यात्री फ़ाहियान और ह्वेन सांग को याद करते हैं उतने ही आदर और प्रेम के साथ चीन के रहने वाले आज कुमार जीव को याद करते हैं. सन 1924 ईसवी में जब श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर चीन गए तो "जीवित (ज़िन्दा) कुमार जीव" कह कर उनका स्वागत किया गया था.

बुद्धयश—

बुद्धयश काश्मीर के एक ब्राह्मन घराने में पैदा हुआ था. उसके पिता बौद्ध धर्म के कट्टर दुश्मन थे. कहा जाता है एक बार उन्होंने एक बौद्ध भिक्षु को पीट दिया था. नतीजा यह हुआ कि उनके हाथ को लक़वा मार गया. उस पाप को धोने के लिये पिता ने अपने लड़के बुद्धयश को उसी बौद्ध भिक्षु के हवाले कर दिया. बुद्धयश उस समय केवल 13 साल का था. वह अपने नए गुरू से बौद्ध धर्म

میں پھیل چکا تھا۔ چین میں بھی کمار جیو اپنی ودیا کے لئے مشہور ہو چکا تھا۔

سن 383 عیسوی میں چینی فوج نے کوچی پر حملہ کیا۔ لوٹتے سمے چینی سیناپتی کمار جیو کو قید کرکے چین لے گیا۔ جب چین کے سمراٹ کو پتہ لگا کہ کمار جیو قید کرکے چین لایا گیا ہے تو سمراٹ نے بڑے آدر کے ساتھ اسکو راج دھانی میں بلایا۔ سن 401 عیسوی میں کمار جیو چین کی راجدھانی پہونچا اور تب سے بارہ سال تک وہ وہیں رہا۔

کمار جیو کے چین پہونچنے پر چین کے بودھ دھرم کے اتہاس میں ایک نیا یگ شروع ہوا۔ کمار جیو سے پہلے جتنے بودھ پرچارک چین آئے تھے وہ چینی جنتا کو بودھ درشن اتنی اچھی طرح نہ سمجھا پاتے تھے۔ اس نے بودھ کتابوں کے چینی انوادوں کو بھی درست کیا اور خود بہت سی نئی بودھ کتابوں کا انواد کیا۔ اسکی پچاس چینی کتابیں اب بھی ملتی ہیں۔ وہ سنسکرت اور چینی بھاشا دونوں کا پورا پنڈت تھا۔

چین کے دور دور کے حصوں سے چینی اور بھارتی پرچارک اسکے پاس تعلیم لینے آتے تھے۔ چین کے سمراٹ نے راجدھانی میں اسکے لئے ایک لیکچر بھون بنوادیا جس میں وہ عام جنتا کے سامنے بودھ درشن پر پروچن کیا کرتا تھا۔ چینی جنتا پر اسکی ودوتا کا اتنا گہرا اثر پڑا کہ لاکھوں چینیوں کے بودھ دھرم اپنا لینے کے علاوہ قریب تین ہزار چینی اسکے کہنے سے بودھ بھکشو ہو گئے۔

سن 413 عیسوی میں کمار جیو کا شریر چھوٹا۔ مرتے وقت اپنے چیلوں کو بلاکر اس نے کہا—"میری زندگی کو تم اپنا آدرش نہ بناؤ۔ میرے کام کو اپناؤ اور اسے پورا کرو۔ کیچڑ سے کمل کھلتا ہے اس لئے کیچڑ سے پریم نہ کرو، کمل سے پریم کرو۔"

جس آدر اور پریم کے ساتھ بھارت کے رہنے والے آج بھی چینی یاتری فاہیان اور ہیون سانگ کو یاد کرتے ہیں اتنے ہی آدر اور پریم کے ساتھ چین کے رہنے والے آج کمار جیو کو یاد کرتے ہیں۔ سن 1924 عیسوی میں جب شری رویندرناتھ ٹھاکر چین گئے تو "جیوت (زندہ) کمار جیو" کہہ کر انکا سواگت کیا گیا تھا۔

بدھ یش

بدھ یش کاشمیر کے ایک براہمن گھرانے میں پیدا ہوا تھا۔ اس کے پتا بودھ دھرم کے کٹر دشمن تھے۔ کہا جاتا ہے ایک بار انہوں نے ایک بودھ بھکشو کو پیٹ دیا تھا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ان کے ہاتھ کو لقوہ مار گیا۔ اس پاپ کو دھونے کے لئے پتا نے اپنے لڑکے بدھ یش کو اسی بودھ بھکشو کے حوالے کر دیا۔ بدھ یش اس سمے کیول 13 سال کا تھا۔ وہ اپنے نئے گرو سے بودھ دھرم

उसके साथ एक सफ़ेद घोड़े पर सैकड़ों बौद्ध किताबों और मूर्तियों को लाद कर चीन लेता गया. चीन में कश्यप का शाहाना स्वागत हुआ. सम्राट ने उसके लिये चीन की राजधानी लो-यांग में एक मठ बनवा दिया. इस मठ का नाम "पो-मा-से" यानी "सफ़ेद घोड़े वाला मठ" रखा गया क्योंकि कश्यप अपने सफ़ेद घोड़े पर बैठ कर बौद्ध धर्म का प्रचार करने निकलता था. आज भी चीन में यह मठ क़ायम है. यही चीन का सबसे पहला बौद्ध मठ कहा जाता है.

कश्यप चीन जाकर वहीं बस गया और फिर हिन्दुस्तान लौट कर नहीं आया. चीन में उसने बौद्ध मत का प्रचार किया और बहुत सी बौद्ध किताबों का अनुवाद किया. उसकी एक किताब "बयालीस धाराओं वाला सूत्र" चीन में बौद्ध धर्म की सबसे पहली किताब मानी जाती है. आज भी चीनी बौद्ध प्रचारक इस किताब को बौद्ध धर्म की बुनियादी किताब मानते हैं. इस किताब में बौद्ध धर्म के बुनियादी असूलों को बड़ी सफ़ाई के साथ समझाया गया है. हाल में इस किताब का अंगरेज़ी अनुवाद भी हुआ है.

चीन के राज दरबार पर कश्यप मतंगा के प्रचार का गहरा असर पड़ा. बहुत से बड़े बड़े ओहदेदार और सरदार बौद्ध धर्म के प्रचार में मदद करने लगे. जनता में प्रचार शुरू होगया. कश्यप मतंगा के चीन पहुंचने के तीन सौ साल बाद बौद्ध धर्म सारे चीन का धर्म बन गया.

कुमारजीव—

कुमारजीव बीच एशिया के कूची देस का एक बौद्ध भिक्षु था. उसके पिता कुमारायन हिन्दुस्तान के एक राजा वज़ीर थे. कुछ कारनों से उन्होंने वज़ारत छोड़ दी और पामिर पहाड़ से होते हुए बीच एशिया के कूची देस में जाकर बस गए.

कूची के राजा ने कुमारायन का बड़ा स्वागत किया और उन्हें अपना राजगुरू बनाया. कुछ दिनों बाद राजा ने अपनी लड़की जीव की शादी कुमारायन से करदी.

कुमारजीव इसी राजकुमारी से पैदा हुआ. उसके पैदा होने के थोड़े ही दिन बाद जीव बौद्ध भिक्षुनी हो गई और बौद्ध धर्म का प्रचार करने लगी. जब कुमारजीव नौ साल का हुआ तब उसकी मां उसे लेकर काश्मीर चली आई. काश्मीर में बन्धुदत्त नाम के गुरू ने कुमारजीव को बौद्ध दर्शन और बौद्ध साहित्य की तालीम दी. काश्मीर में तालीम हासिल करने के बाद कुमारजीव बीच एशिया के बहुत से देसों की यात्रा करता हुआ कूची वापस पहुँचा. अब वह तमाम एशिया में बौद्ध धर्म का ज़बरदस्त विद्वान मशहूर हो गया. उससे कूची में तालीम हासिल करने खोतान, काशगर और यारकंद से बौद्ध प्रचारक आते थे [illegible]

ھ ساتھ ایک سفید گھوڑے پر سیکڑوں بودھ کتابوں
ور مورتیوں کو لادکر چین لیتا گیا۔ چین میں
شیپ کا شاہانہ سواگت ہوا۔ سمراٹ نے اُسکے لئے چین
ی راج دھانی لو یانگ میں ایک مٹھ بنوادیا۔
س مٹھ کا نام "پو۔ ما۔ سے" یعنی "سفید گھوڑے
الا مٹھ" رکھا گیا کیونکہ کشیپ اپنے سفید گھوڑے پر
یٹھ کر بودھ دھرم کا پرچار کرنے نکلتا تھا۔ آج بھی
چین میں یہ مٹھ قائم ہے۔ یہی چین کا سب سے پہلا
ودھ مٹھ کہا جاتا ہے۔ کشیپ چین جاکر وہیں بس
یا اور پھر ہندستان لوٹ کر نہیں آیا۔ چین میں
سنے بودھ مت کا پرچار کیا اور بہت سی بودھ کتابوں
انوواد کیا۔ اُسکی ایک کتاب "بیالیس دھاراؤں
الا سوتر" چین میں بودھ دھرم کی سب سے پہلی
تاب مانی جاتی ہے۔ آج بھی چینی بودھ پرچارک
س کتاب کو بودھ دھرم کی بنیادی کتاب مانتے ہیں۔
س کتاب میں بودھ دھرم کے بنیادی اصولوں کو بڑی
فائی کے ساتھ سمجھایا گیا ہے۔ حال میں اس کتاب
انگریزی انوواد بھی ہوا ہے۔

چین کے راج دربار پر کشیپ متنگا کے پرچار کا
ہرا اثر پڑا۔ بہت سے بڑے بڑے عہدےدار اور سردار
ودھ دھرم کے پرچار میں مدد کرنے لگے۔ جنتا میں
رچار شروع ہوگیا۔ کشیپ متنگا کے چین پہونچنے کے
ین سو سال بعد بودھ دھرم سارے چین کا دھرم بن گیا۔

مار جیو—

کمار جیو بیچ ایشیا کے کوچی دیس کا ایک بودھ
ھکشو تھا۔ اُسکے پتا کمارائن ہندستان کے ایک راجہ
ے وزیر تھے۔ کچھ کارنوں سے اُنہوں نے وزارت چھوڑدی
ور پامر پہاڑ سے ہوتے ہوئے بیچ ایشیا کے کوچی دیس
یں جاکر بس گئے۔

کوچی کے راجہ نے کمارائن کا بڑا سواگت کیا اور
نہیں اپنا راج گرو بنایا۔ کچھ دنوں بعد راجہ نے اپنی
ڑکی جیو کی شادی کمارائن سے کردی۔ کمار جیو اِسی
اج کماری سے پیدا ہوا۔ اُسکے پیدا ہونے کے تھوڑے ہی
ن بعد جیو بودھ بھکشونی ہوگئی اور بودھ دھرم کا
رچار کرنے لگی۔ جب کمار جیو نو سال کا ہوا تب
سکی ماں اُسے لیکر کاشمیر چلی آئی۔ کاشمیر میں
ندھو دت نام کے گرو نے کمار جیو کو بودھ درشن اور
ودھ ساہتیہ کی تعلیم دی۔ کاشمیر میں تعلیم
اصل کرنے کے بعد کمار جیو بیچ ایشیا کے بہت سے
یسوں کی یاترا کرتا ہوا کوچی واپس پہنچا۔ اب وہ
مام ایشیا میں بودھ دھرم کا زبردست ودوان مشہور
وگیا۔ اُس سے کوچی میں تعلیم حاصل کرنے کھوتان،
اشغر اور یارقند سے بودھ پرچارک آتے تھے۔ ایسی
[illegible]

पिछले नम्बर से आगे

भारत और चीन का कलचरी मेल

(भाई भान चन्द्र)

(2)

सन 65 ईसवी में बीच एशिया से होकर भारत से चीन पहुंचने का रास्ता खुला. इस रास्ते बौद्ध भिक्षुओं और प्रचारकों का आना जाना बढ़ता गया. बौद्ध साधुओं को भिक्षु कहते हैं. उस समय से लेकर ग्यारह सौ बरस तक बौद्ध धर्म के सैकड़ों भारती भिक्षु और प्रचारक चीन पहुंचे. इन लोगों ने रास्ते की दिक्कतों और मुसीबतों का बड़ी बहादुरी के साथ मुक़ाबला किया. ख़तरनाक पहाड़ों और सुनसान रेगिस्तानों को पार करते हुए उन्होंने गौतम बुद्ध का संदेश चीन पहुंचाया. चीन में इन्होंने चार ख़ास काम किये.

(1) चीनी जनता और चीनी राज दरबार में बौद्ध धर्म का प्रचार किया.

(2) बौद्ध धर्म की सैकड़ों पुस्तकों का संस्कृत से चीनी में अनुवाद किया और बहुत सी नई किताबें ख़ुद चीनी में लिखीं.

(3) चीन में जगह जगह बौद्ध मठ क़ायम किये जिनमें चीनी भिक्षुओं और प्रचारकों को बौद्ध धर्म की तालीम दी.

(4) भारत से अनेक अच्छी अच्छी बौद्ध मूर्तियाँ और तसवीरें ले जाकर चीन में बौद्ध कला को रिवाज दिया.

इस तरह के बहुत से भारती प्रचारकों का चीनी साहित्य और चीन के सरकारी काग़ज़ों में बयान मिलता है. इनमें से कुछ मशहूर प्रचारकों का हाल हम नीचे देते हैं.

कश्यप मतंगा—

कश्यप मतंगा एक बौद्ध भिक्षु था जिस के चीन जाने के बारे में एक दिलचस्प कहानी मशहूर है. कहा जाता है सन 65 ईसवी में चीन के सम्राट मिंग-ती ने एक दिन सपने में देखा कि एक सोने का आदमी उड़ता हुआ आया और उसके महल में घुस गया. सम्राट घबरा कर उठ बैठे और अपने दरबारियों को बुला कर सपने का मतलब पूछा. दरबारियों ने बताया कि वह सोने का आदमी हिन्दुस्तान का देवता गौतम बुद्ध है. यह सुनते ही सम्राट ने अपना एक दूत, बौद्ध प्रचारक और बौद्ध किताबें लाने के लिये भारत भेजा.

मिंग-ती का दूत हिन्दुस्तान से कश्यप मतंगा नाम के एक बौद्ध भिक्षु को अपने साथ चीन ले गया. कश्यप मतंगा

پچھلے نمبر سے آگے

بھارت اور چین کا کلچری میل

(بھائی بھان چندر)

(2)

سن 65 عیسوی میں بیچ ایشیا سے ہوکر بھارت سے چین پہنچنے کا راستہ کھلا. اِس راستے بدھ بھکشوؤں اور پرچارکوں کا آنا جانا بڑھتا گیا. بودھ سادھوؤں کو بھکشو کہتے ہیں. اُس سمے سے لے کر گیارہ سو برس تک بودھ دھرم کے سیکڑوں بھارتی بھکشو اور پرچارک چین پہنچے. اِن لوگوں نے راستے کی دقتوں اور مصیبتوں کا بڑی بہادری کے ساتھ مقابلہ کیا. خطرناک پہاڑوں اور سنسان ریگستانوں کو پار کرتے ہوئے اِنھوں نے گوتم بدھ کا سندیش چین پہنچایا. چین میں اِنھوں نے چار خاص کام کئے.

(1) چینی جنتا اور چینی راج دربار میں بودھ دھرم کا پرچار کیا.

(2) بودھ دھرم کی سیکڑوں پستکوں کا سنسکرت سے چینی میں انواد کیا اور بہت سی نئی کتابیں خود چینی میں لکھیں.

(3) چین میں جگہ جگہ بودھ مٹھ قائم کئے جنمیں چینی بھکشوؤں اور پرچارکوں کو بودھ دھرم کی تعلیم دی.

(4) بھارت سے انیک اچھی اچھی بودھ مورتیاں اور تصویریں لے جاکر چین میں بودھ کلاکو رواج دیا.

اس طرح کے بہت سے بھارتی پرچارکوں کا چینی ساہتیہ اور چین کے سرکاری کاغذوں میں بیان ملتا ہے. اِن میں سے کچھ مشہور پرچارکوں کا حال ہم نیچے دیتے ہیں.

کشیپ متنگا—

کشیپ متنگا ایک بودھ بھکشو تھا جسکے چین جانے کے بارے میں ایک دلچسپ کہانی مشہور ہے. کہا جاتا ہے سن 65 عیسوی میں چین کے سمراٹ منگ تی نے ایک دن سپنے میں دیکھا کہ ایک سونے کا آدمی اُڑتا ہوا آیا اور اُسکے محل میں گھس گیا. سمراٹ گھبرا کر اُٹھ بیٹھا اور اپنے درباریوں کو بلاکر سپنے کا مطلب پوچھا. درباریوں نے بتایا کہ وہ سونے کا آدمی ہندستان کا دیوتا گوتم بدھ ہے. یہ سنتے ہی سمراٹ نے اپنا ایک دوت، بودھ پرچارک اور بودھ کتابیں لانے کے لئے بھارت بھیجا.

منگ تی کا دوت ہندستان سے کشیپ متنگا نام کے ایک بودھ بھکشو کو اپنے ساتھ چین لے گیا. کشیپ متنگا

सलामती के किसी बड़े और आलीशान अजायब घर में एक पुराने ज़माने की यादगार के तौर पर उसी तरह जमा कर दिये जायें जिस तरह इस बार सोमनाथ के इससे पहले के बहुत से पत्थर वग़ैरा नए उद्धार करने वालों ने किसी अजायबघर में रख दिये हैं और हम सब एक निराकार ईश्वर के मानने वाले, जिसे हम ईश्वर, अल्लाह और गाड सब नामों से पुकार सकें, "वसुधैव कुटुम्बकम्" यानी इनसानी भाईचारे के सच्चे विश्वासी बन सकें. यही सलामती की शाहराह है. बाक़ी गलियाँ बरबादी की तंग गलियाँ हैं. हमें इस समय फिर गांधी जी याद आ रहे हैं. उनकी इस लाइन के साथ हम इस लेख को बन्द करते हैं—

सब को सम्मति दे भगवान !

12. 6. '51. —सुन्दरलाल

माया

माया तू दीखे क्यों गोरी ?
भीतर से तू काजर कारी, मोह पिता की छोरी.

है तो दुश्मन, दोस्त बताएँ
हैं तो भूके, कहें अघाए
क्रोध भरा तो भी मुस्काए
ये सब हैं तेरी करतूतें, बनती सीधी भोरी.

हाय सरलता का मैं सेवी
कैसे समझा तुमको देवी
समझा जीवन नैया खेवी
जादू किया ग़ज़ब का तूने, ओ छोरी बरजोरी.

माये ! तेरी कैसी माया
बहक, पकड़ने दौड़ा छाया
पछताना भर हाथों आया
तब भी तो मैं तोड़ न पाया, पैरों बाँधी डोरी.

था तो मैं नाटक का राना
सफल हुआ तेरा बहकाना
मैं बन बैठा सच्चा राना
भेद खुला परदा गिरने पर, नक़ल रह गई कोरी.

ग़ज़ब ! छिपे ईश्वर को धोके
नाम लिये ले ले सौ झोंके
सुने साधु तो माथा ठोंके
सीख न माये तुमको आई, है निर्लज्जे कोरी
माया तू दीखे क्यों गोरी ?

—भगवानदीन

سلامتی کے کسی بڑے اور عالیشان عجائب گھر میں ایک پرانے زمانے کی یادگار کے طور پر اسی طرح جمع کر دیئے جائیں جسطرح اس بار سومناتھ کے اس سے پہلے کے بہت سے پتھر وغیرہ نئے اُدھار کرنے والوں نے کسی عجائب گھر میں رکھ دیئے ہیں اور ہم سب ایک نراکار ایشور کے ماننے والے جسے ہم ایشور، اللہ اور گاڈ سب ناموں سے پکار سکیں، "وسودھیو کٹمب کم" یعنی انسانی بھائی چارے کے سچے وشواسی بن سکیں۔ یہی سلامتی کی شاہراہ ہے۔ باقی گلیاں بربادی کی تنگ گلیاں ہیں۔ ہمیں اس سمے پھر گاندھی جی یاد آرہے ہیں۔ ان کی اس لائن کے ساتھ ہم اس لیکھ کو بند کرتے ہیں —

سب کو سمّتی دے بھگوان!

12-6-'51 — سندرلال

مایا

مایا تو دیکھے کیوں گوری ؟
بھیتر سے تو کاجرکاری، موہ پتا کی چھوری۔

ہے تو دشمن، دوست بتائے
ہیں تو بھوکے کہیں اگھائے
کرودھ بھرا تو بھی مسکائے
یہ سب ہیں تیری کرتوتیں، بنتی سیدھی بھوری۔

ہائے سرلتا کا میں سیوی
کیسے سمجھا تجھکو دیوی
سمجھا جیون نیا کھیوی
جادو کیا غضب کا تو نے، او چھوری برجوری۔

مائے! تیری کیسی مایا
بہک، پکڑنے دوڑا چھایا
پچھتانا بھر ہاتھوں آیا
تب بھی تو میں توڑ نہ پایا، پیروں باندھی ڈوری۔

تھا تو میں ناٹک کا رانا
سپھل ہوا تیرا بہکانا
میں بن بیٹھا سچا رانا
بھید کھلا پردا گرنے پر، نقل رہ گئی کوری۔

غضب! چھپے ایشور کو دھوکے
نام لئے لے لے سو جھوکے
سنے سادھو تو ماتھا ٹھوکے
سیکھ نہ مائے تجھکو آئی، ہے نرلجے کوری۔
مایا تو دیکھے کیوں گوری ؟

—بھگوان دین

जाने में मूर्तों की जरूरत समझने से, और इस सब के लिए फिर अपने देश में शिवलिंग की पूजा को फिर से जोरों के साथ चमकाने से अमरीका, इंगलैन्ड या किसी दूसरे देश के राजकाजी लोग हमें शाबाशी भले ही दे दें और हमारी इन चीजों से फ़ायदा भी भले ही उठालें, पर इस सबसे हमारी और हमारे देश की इज्जत उनके दिलों में नहीं बढ़ सकती.

असली इलाज

हम किसी मूर्ति पूजक या शिव पूजक के दिल को दुखाना नहीं चाहते. अपने मंदिर बनाने, और उनमें अपने ढंग से अपने इष्ट देव की पूजा बन्दगी करने की उनकी आजादी को भी हम हरगिज छीनना या कम करना नहीं चाहते. पर इस नई घटना ने हमें और हमारे जैसे बहुत सों को अपने देश की संकट भरी हालत पर जरा गहराई से सोचने पर मजबूर कर दिया. हमें सोचना पड़ता है कि हमारा प्यारा देश किधर जा रहा है. पन्द्रहवीं सदी से लेकर आज तक हमारे देश के कबीर साहब, गुरु नानक, गुरु गोविन्द सिंह, स्वामी दयानन्द, राजा राममोहन राय जैसे अनेक सन्त, महात्मा और सुधारक हमें मूर्ति पूजा छोड़ने का उपदेश देते रहे हैं. कबीर साहब और गुरु नानक की इस तरह की बानियां घर घर फैली हुई हैं. गुरु गोविन्द सिंह ने औरंगजेब के नाम अपने मशहूर खत "ज़फ़र नामा" में पंजाब के पहाड़ी हिन्दू राजाओं से अपना मुक़ाबला करते हुए लिखा है—

"व आं बुतपरस्तां व मन बुतशिकन"

यानी वह बुत परस्त हैं और मैं बुतशिकन. गुरु नानक से लेकर गुरु गोविन्द सिंह तक दसों सिख गुरुओं की बानी इतने जोरों के साथ एक ही सच्चाई की गूँज है कि हम अनेक बार कह चुके हैं कि अगर पंजाब ने बल्कि सारे भारतवर्ष ने केवल सिख गुरुओं के उपदेशों पर ही अमल किया होता तो आज यह देश रूहानी और दुनियावी दौलतों से मालामाल दिखाई देता. स्वामी दयानन्द ने मूर्ति पूजा को पाप बताया है और लिंग पूजा को जिन शब्दों में बयान किया है उन्हें यहाँ दोहराने की जरूरत नहीं. यही उपदेश हमें राजा राम मोहन राय ने दिया. देश की इस समय की हालत को देखते हुए हम और हमारे जैसे विचार के लोग भगवान से प्रार्थना किये बिना नहीं रह सकते कि भगवान हम सबके दिलों को नफ़रत, गुस्से और बदले की नापाक और बांझ भावनाओं से पाक करें. हमारी राजनीति ऊँची हो, पक्की हो, बड़े दिल वालों की राजनीति हो, मानव प्रेम से भरी हुई हो और दूर तक देखने वाली हो ! हमारे दिल और दिमाग़ पुराने, ग़लत और हानिकर विचारों से ऊपर उठ सकें और हमारे पवित्र मन्दिरों के सम्मान उनकी

کے یہیں پھولوں کی مالا ڈالنے سے اور اِس سب کے لئے پھر اپنے دیش میں شیولنگ کی پوجا کو پھر سے زوروں کے ساتھ چمکانے سے امریکہ، انگلینڈ یا کسی دوسرے دیش کے راج کاجی لوگ ہمیں شاباشی بھلے ہی دے لیں اور ہماری اِن چیزوں سے فائدہ بھی بھلے ہی اٹھا لیں، پر اِس سب سے ہماری اور ہمارے دیش کی عزت اُنکے دلوں میں نہیں بڑھ سکتی۔

اصلی علاج

ہم کسی مورتی پوجک یا شیو پوجک کے دل کو دکھانا نہیں چاہتے۔ اپنے مندر بنانے اور اُن میں اپنے ڈھنگ سے اپنے ایشٹ دیو کی پوجا بندگی کرنے کی اُنکی آزادی کو بھی ہم ہرگز چھیننا یا کم کرنا نہیں چاہتے۔ پر اِس نئی گھٹنا نے ہمیں اور ہمارے جیسے بہت سوں کو اپنے دیش کی سنکٹ بھری حالت پر ذرا گہرائی سے سوچنے پر مجبور کر دیا۔ ہمیں سوچنا پڑتا ہے کہ ہمارا پیارا دیش کدھر جا رہا ہے۔ پندرھویں صدی سے لیکر آج تک ہمارے دیش کے کبیر صاحب، گرونانک، گروگوبند سنگھ، سوامی دیانند، راجہ رام موہن رائے جیسے انیک سنت، مہاتما اور سدھارک ہمیں مورتی پوجا چھوڑنے کا اُپدیش دیتے رہے ہیں۔ کبیر صاحب اور گرونانک کی اِس طرح کی بانیاں گھر گھر پھیلی ہوئی ہیں۔ گروگوبند سنگھ نے اورنگزیب کے نام اپنے مشہور خط "ظفر نامہ" میں پنجاب کے پہاڑی ہندو راجاؤں سے اپنا مقابلہ کرتے ہوئے لکھا ہے —

"و آں بت پرستاں و من بت شکن۔"

یعنی وہ بت پرست ہیں اور میں بت شکن۔ گرونانک سے لیکر گروگوبند سنگھ تک دسوں سکھ گروؤں کی بانی اتنے زوروں کے ساتھ ایک ہی سچائی کی گونج ہے کہ ہم انیک بار کہہ چکے ہیں کہ اگر پنجاب نے بلکہ سارے بھارت ورش نے کیول سکھ گروؤں کے اُپدیشوں پر ہی عمل کیا ہوتا تو آج یہ دیش روحانی اور دنیاوی دولتوں سے مالا مال دکھائی دیتا۔ سوامی دیانند نے مورتی پوجا کو پاپ بتایا ہے اور لنگ پوجا کو جن شبدوں میں بیان کیا ہے اُنہیں یہاں دوہرانے کی ضرورت نہیں۔ یہی اُپدیش ہمیں راجہ رام موہن رائے نے دیا۔ دیش کی اِس سمے کی حالت کو دیکھتے ہوئے ہم اور ہمارے جیسے وچار کے لوگ بھگوان سے پرارتھنا کئے بنا نہیں رہ سکتے کہ بھگوان ہم سب کے دلوں کو نفرت، غصے اور بدلے کی ناپاک اور بانجھ بھاؤناؤں سے پاک کریں۔ ہماری راج نیتی اونچی ہو، پکی ہو، بڑے دل والوں کی راج نیتی ہو، مانو پریم سے بھری ہوئی ہو اور دور تک دیکھنے والی ہو! ہمارے دل اور دماغ پرانے [illegible] ہانی کر وچاروں سے اوپر اٹھ سکیں اور ہمارے پوتر مندروں کے سامان سب کی

मुसलमान और दूसरे [illegible] की मूर्ति पूजा था. जिस पूजा को ग़लत मानते हैं, अपने को चुनाव से अलग रखते तो वह बिलकुल हक़ पर होते.

इतिहासी पहलू

इस अंक में किसी दूसरी जगह हम भाई मोहन सिंह सेंगर का एक लेख दूसरे हिन्दी अखबार से लेकर छाप रहे हैं. भाई मोहन सिंह ने एक छोटा सा सवाल सोमनाथ पर महमूद के हमले की इतिहासी सच्चाई का भी उठाया है. यह सवाल ज़रा पेचीदा है. हम यहाँ केवल इतना कह देना चाहते हैं कि महमूद कभी सोमनाथ पहुँचा भी या नहीं इस बात पर भी इतिहास के खोजियों में काफ़ी मत-भेद है. मशहूर महाराष्ट्र इतिहासकार श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य ने अपनी किताब "हिस्ट्री आफ़ हिन्दू मिडीवल इन्डिया" में इस सवाल के दोनों पहलुओं पर काफ़ी बहस की है. हम मान लेते हैं कि दोनों तरफ़ कुछ न कुछ कहा जा सकता है. पर इसमें ज़रा भी शक नहीं कि महमूद के सोमनाथ पर हमले के सम्बन्ध में जितनी बातें उड़ी हुई हैं या इतिहास की मामूली किताबों में या दूसरी किताबों में पाई जाती हैं उनमें से कम से कम नब्बे फ़ी सदी बिलकुल बे बुनियाद हैं. सोमनाथ के मेले से जो निजी ख़त हमारे पास आए हैं उनसे मालूम होता है कि इस तरह की अनगिनत गप्पें वहाँ पर उड़ी हुई थीं और वहाँ से चारों तरफ़ देश में फैली होंगी. इन गप्पों ने कितनों के दिलों में ज़हर भरा और पुराने ज़ख़्मों को ताज़ा किया हम नहीं कह सकते. हमारे दिमाग़ों की यह हालत हो गई है कि हम नावेल और हिस्ट्री में भी फ़रक़ नहीं कर पाते. श्री कन्हैया लाल मुंशी का नावेल "जय सोमनाथ !" नावेल ही है और नावेल ही बताया जाता है. पर न जाने कितनी अजीब अजीब गप्पें उसी नावेल के आधार पर मेले में इतिहास बन कर फैलीं और फैलाई गईं.

गंदी राजनीति

सौराष्ट्र के राज प्रमुख जाम साहब के मुँहसे एक बड़ी सच्ची बात निकल गई. उन्होंने कहा कि सोमनाथ का फिर से उद्धार करने वालों में से कुछ के लिये सवाल न धर्म का था न इतिहास का, उनके लिये सवाल था राज-नीति का. हम बड़ी नम्रता लेकिन पूरे ज़ोर के साथ कह देना चाहते हैं कि इस तरह की राजनीति गन्दी, बाँझ और ख़ुद अपने को मिटा देने वाली राजनीति है. कहा जाता है श्री कन्हैया लाल मुंशी इस सारे मामले के प्रान थे. पर जहाँ तक अन्तरक़ौमी राजनीति का सम्बन्ध है हम उन्हें यह बता देना चाहते हैं कि भारतीय जनराज के प्रेसीडेन्ट के नंगे सिर, नंगे पाँव केवल पीताम्बर पहन कर सोमनाथ के मंदिर में जाने और शिवजी के बैल नन्दी के

مسلمان اور دوسرے وہ سمبر جو مورتی پوجا یا [illegible] پوجا کو غلط مانتے ہیں' اپنے کو چناؤ سے الگ رکھتے تو وہ بالکل حق پر ہوتے .

اِتہاسی پہلو

اس انک میں کسی دوسری جگہ ہم بھائی موہن سنگھ سینگر کا ایک لیکھ دوسرے ہندی اخبار سے لیکر چھاپ رہے ہیں . بھائی موہن سنگھ نے ایک چھوٹا سا سوال سومناتھ پر محمود کے حملے کی اِتہاسی سچائی کا بھی اُٹھایا ہے . یہ سوال ذرا پیچیدہ ہے . ہم یہاں کیول اِتنا کہہ دینا چاہتے ہیں کہ محمود کبھی سومناتھ پہنچا بھی یا نہیں اِس بات پر بھی اِتہاس کے کھوجیوں میں کافی مت بھید ہے . مشہور مہاراشٹر اِتہاس کار شری چنتامنی ونایک ویدیہ نے اپنی کتاب " ہسٹری آف ہندو مڈیول انڈیا " میں اِس سوال کے دونوں پہلوؤں پر کافی بحث کی ہے . ہم مان لیتے ہیں کہ دونوں طرف کچھ نہ کچھ کہا جا سکتا ہے . پر اِس میں ذرا بھی شک نہیں کہ محمود کے سومناتھ پر حملے کے سمبندھ میں جتنی باتیں اُڑی ہوئی ہیں یا اِتہاس کی معمولی کتابوں میں یا دوسری کتابوں میں پائی جاتی ہیں اُن میں سے کم سے کم نوّے فیصدی بالکل بے بنیاد ہیں . سومناتھ کے میلے سے جو نجی خط ہمارے پاس آئے ہیں اُن سے معلوم ہوتا ہے کہ اِس طرح کی اَن گنت گپیں وہاں پر اُڑی ہوئی تھیں اور وہاں سے چاروں طرف دیش میں پھیلی ہوں گی . اِن گپوں نے کتنوں کے دلوں میں زہر بھرا اور پرانے زخموں کو تازہ کیا ہم نہیں کہہ سکتے . ہمارے دماغوں کی یہ حالت ہو گئی ہے کہ ہم ناول اور ہسٹری میں بھی فرق نہیں کر پاتے . شری کنہیالال منشی کا ناول " جے سومناتھ ! " ناول ہی ہے اور ناول ہی بتایا جاتا ہے . پر نہ جانے کتنی عجیب عجیب گپیں اُسی ناول کے آدھار پر میلے میں اِتہاس بنکر پھیلیں اور پھیلائی گئیں .

گندی راجنیتی

سوراشٹر کے راج پرمکھ جام صاحب کے منہ سے ایک بڑی سچی بات نکل گئی . اُنہوں نے کہا کہ سومناتھ کا پھر سے اُدھار کرنے والوں میں سے کچھ کے لئے سوال نہ دھرم کا تھا نہ اِتہاس کا' اُن کے لئے سوال تھا راج نیتی کا . ہم بڑی نمرتا لیکن پورے زور کے ساتھ کہہ دینا چاہتے ہیں کہ اِس طرح کی راج نیتی گندی' بانجھ اور خود اپنے کو مٹا دینے والی راج نیتی ہے . کہا جاتا ہے شری کنہیا لال منشی اِس سارے معاملے کے پران تھے . پر جہاں تک انتر قومی راج نیتی کا سمبندھ ہے ہم اُنہیں یہ بتا دینا چاہتے ہیں کہ بھارتی جن راج کے پریسیڈنٹ کے ننگے سر' ننگے پاؤں کیول پیتامبر پہن کر سومناتھ کے مندر میں جانے اور شو جی کے بیل نندی کے

है और न दूरंदेशी. हम नहीं मानते कि राजेन्द्र बाबू का इशारा भारत के मुसलमानों की तरफ़ था. तो फिर क्या यह ललकार समय को थी, ज़माने की गरदिश को थी ? फ़िक़रे से कुछ ऐसी ही झलक मिलती है. लेकिन अगर ऐसा है तो हम राजेन्द्र बाबू और उनके विचार के लोगों को बड़े आदर और नम्रता के साथ बता देना चाहते हैं कि यह ललकार निकम्मी और थोथी है. समय आगे को बढ़ रहा है. चार दिन के लिये हम अपनी पिछड़घसीटी हरकतों से ख़ुश भले ही हो जाएं, समय की गति नहीं बदल सकती. मन्दिरों और मसजिदों के ज़माने लद गये. ज़माना इन्हें पीछे छोड़ चुका. ख़ासकर अगर मानव समाज को माद्दी या रूहानी तरक़्क़ी के मैदानों में आगे चौकड़ियां भरनी हैं तो उसे मूर्ति पूजा और लिंग पूजा से ऊपर उठना होगा. भारत को भी आगे बढ़ना है. फिर से महान बल्कि पहले से कहीं अधिक महान होना है, और इस आगे बढ़ने में किसी प्राचीनतम ज़माने की इन रूढ़ियों को एक पुराने ग़लत ख़्वाब की तरह पीछे छोड़ जाना है. हम राजेन्द्र बाबू को इस फ़िक़रे के लिये बधाई नहीं दे सकते. इस फ़िक़रे को पढ़ने के बाद अगर कोई यह सोचने लगे कि राजेन्द्र बाबू की पुराने ज़ख़्मों को हरा न करने की बात उलटा ज़ख़्मों पर नमक छिड़कना थी तो हमें उसे इस ग़लतफ़हमी के लिये माफ़ ही कर देना पड़ेगा.

ग़ैर मूर्ति पूजकों के साथ ज़ियादती

अगर भारत के कुछ सच्चे शिव भक्त सोमनाथ के मन्दिर को या किसी भी ऐसे मन्दिर को फिर से बनवाते और अपना आदर प्रकट करने के लिये राजेन्द्र बाबू को या किसी भी ज़िम्मेदार सरकारी अफ़सर को वहाँ बुलाते और वह वहाँ चला जाता, आदर से बैठाया जाता, तो हमें कोई एतराज़ न होता. पर सोमनाथ में जो कुछ किया गया वह कुछ और ही था. जिन सूबों और यूनिवरसिटियों से उनके चुने हुए नुमाइन्दे बुलाए गए वह क्या केवल उनका आदर दरशाने के लिये या सब सूबा सरकारों और यूनिवरसिटियों को इस "राष्ट्रीय" (?) काम में पट्टीदार साबित करने के लिये ? जो लोग मूर्ति पूजा को ठीक मानते हैं उन्हें निजी हैसियत से पूरा हक़ है कि ऐसे काम में सहयोग दें पर जो ठीक नहीं मानते—और हम ख़ुद मूर्तिपूजा को ठीक नहीं मानते, आर्य समाजी, मुसलमान, प्रोटेस्टेन्ट ईसाई और ब्रह्म समाजी कोई ठीक नहीं मानते—उन्हें अपना नुमाइन्दा इस काम के लिये चुनने को क्यों कहा गया ? अगर यह हुकुम सरकारी हुकुम था तो हम किसी तरह भी नहीं समझ सकते कि कोई सेकुलर सरकार इस तरह का हुकुम कैसे दे सकती है ? हमें इस बात के कहने में ज़रा भी संकोच नहीं कि जिस समय यूनिवरसिटियों के नुमाइन्दे चुने जा रहे थे उस वक़्त अगर यूनिवरसिटी के आर्य समाजी,

ہے اور نہ دوراندیشی. ہم نہیں مانتے کہ راجندر بابو کا اشارہ بھارت کے مسلمانوں کی طرف تھا. تو پھر کیا یہ للکار سمے کو تھی، زمانے کی گردش کو تھی ؟ فقرے سے کچھ ایسی ہی جھلک ملتی ہے. لیکن اگر ایسا ہے تو ہم راجندر بابو اور اُنکے وچار کے لوگوں کو بڑے آدر اور نمرتا کے ساتھ بتا دینا چاہتے ہیں کہ یہ للکار نکمی اور تھوتھی ہے. سمے آگے کو بڑھ رہا ہے. چار دن کے لئے ہم اپنی پچھ گھسیٹی حرکتوں سے خوش بھلے ہی ہوجائیں، سمے کی گتی نہیں بدل سکتی. مندروں اور مسجدوں کے زمانے لد گئے. زمانہ اِنہیں پیچھے چھوڑ چکا. خاص کر اگر مانو سماج کو مادی یا روحانی ترقی کے میدانوں میں آگے چوکڑیاں بھرنی ہیں تو اُسے مورتی پوجا اور لنگ پوجا سے اوپر اُٹھنا ہوگا. بھارت کو بھی آگے بڑھنا ہے. پھر سے مہان بلکہ پہلے سے کہیں ادھک مہان ہونا ہے، اور اِس آگے بڑھنے میں کسی پراچین تم زمانے کی اِن روڑھیوں کو ایک پرانے غلط خواب کی طرح پیچھے چھوڑ جانا ہے. ہم راجندر بابو کو اِس فقرے کے لئے بدھائی نہیں دے سکتے. اِس فقرے کو پڑھنے کے بعد اگر کوئی یہ سوچنے لگے کہ راجندر بابو کی پرانے زخموں کو ہرا نہ کرنے کی بات اُلٹا زخموں پر نمک چھڑکنا تھی تو ہمیں اُسے اِس غلط فہمی کے لئے معاف ہی کر دینا پڑے گا.

غیر مورتی پوجکوں کے ساتھ زیادتی

اگر بھارت کے کچھ سچے شِو بھکت سومناتھ کے مندر کو یا کسی بھی ایسے مندر کو پھر سے بنواتے اور اپنا آدر پرکٹ کرنے کے لئے راجندر بابو کو یا کسی بھی ذمہ دار سرکاری افسر کو وہاں بلاتے اور وہ وہاں چلا جاتا، آدر سے بیٹھایا جاتا، تو ہمیں کوئی اعتراض نہ ہوتا. پر سومناتھ میں جو کچھ کیا گیا وہ کچھ اور ہی تھا. جن صوبوں اور یونیورسٹیوں سے اُن کے چنے ہوئے نمائندے بلائے گئے وہ کیا کیول اُن کا آدر درشانے کے لئے یا سب صوبہ سرکاروں اور یونیورسٹیوں کو اِس "راشٹری" (؟) کام میں پٹی دار ثابت کرنے کے لئے ؟ جو لوگ مورتی پوجا کو ٹھیک مانتے ہیں انہیں نجی حیثیت سے پورا حق ہے کہ ایسے کام میں سہیوگ دیں. پر جو ٹھیک نہیں مانتے — اور ہم خود مورتی پوجا کو ٹھیک نہیں مانتے، آریہ سماجی، مسلمان، پروٹسٹنٹ عیسائی اور برہم سماجی کوئی ٹھیک نہیں مانتے — اُنہیں اپنا نمائندہ اِس کام کے لئے چننے کو کیوں کہا گیا ہے ؟ اگر یہ حکم سرکاری حکم تھا تو ہم کسی طرح بھی نہیں سمجھ سکتے کہ کوئی سیکولر سرکار اِس طرح کا حکم کیسے دے سکتی ہے؟ ہمیں اِس بات کے کہنے میں ذرا بھی سنکوچ نہیں کہ جس سمے یونیورسٹیوں کے نمائندے چنے جا رہے تھے اُس وقت اگر یونیورسٹی کے آریہ سماجی،

हमें इस मौक़े पर इलाहाबाद के ही एक मन्दिर का क़िस्सा याद आ रहा है. तीस बरस पहले की बात है. कुछ जोशीले लोग कट्टर सनातनियों के एक मन्दिर में कुछ हरिजनों को ज़बरदस्ती जलूस बना कर ले गए. पुरोहित ने देख लिया कि हठ करने से काम नहीं चलेगा. उसने दरवाज़ा खोल दिया. हरिजनों ने दर्शन किये. जीत की ख़ुशी में सब लौट आए. उसके बाद पुरोहित जी ने गंगा जल के कलसे मँगा कर सारे मन्दिर को फिर से उसी तरह धो डाला जिस तरह अगर कोई जानवर वहाँ मैला कर जाता तो करना पड़ता.

राजेन्द्र बाबू की ललकार

राजेन्द्र बाबू की तक़रीर का एक फ़िक़रा उत्तर भारत के हिन्दी उरदू अख़बारों ने बड़े बड़े मोटे हरफ़ों में छापा है . वह यह है—"आज अपनी राख में से दोबारा खड़ा हो कर सोमनाथ का यह मन्दिर मानो दुनिया से ललकार कर कह रहा है कि इस दुनिया का कोई आदमी और कोई ताक़त उस चीज़ को मिटा नहीं सकती जिसके लिये लोगों के दिलों में बेअंत श्रद्धा और प्रेम है."

बड़े दुख के साथ हम यह कहने पर मजबूर हैं कि इस फ़िक़रे के भाव हमें ऊँचे दिखाई नहीं देते. राजेन्द्र बाबू यह कह कर आख़िर किसे ललकार रहे हैं ? उन्हें और सारी दुनिया को अब यह मालूम है कि सोमनाथ का मन्दिर महमूद से पहले भी और उसके बाद भी कम से कम आठ बार गिराया गया और आठ बार फिर से बनाया गया. फ़ारसी की एक कहावत है—"जो आया उसने अपनी नई इमारत खड़ी की." यह कहावत अगर किसी जगह के बारे में ठीक उतरती है तो सोमनाथ के बारे में. पर ज़ाहिर है इस ललकार के समय सोमनाथ के दूसरे विध्वन्सक राजेन्द्र बाबू की निगाह के सामने न थे. तो फिर क्या उन के सामने महमूद गज़नवी था ? हमारा दिल नहीं मानता. हम रूहानी तकलीफ़ के साथ कह रहे हैं मुरदों को ललकारना किसी इनसान को शोभा नहीं देता. हम मान लेते हैं कि उनकी निगाह के सामने महमूद नहीं था. तो फिर क्या महमूद के सह धर्मी थे ? अगर ऐसा है तो हमें मालूम होना चाहिये कि हिन्दुस्तान से बाहर के जागे हुए मुसलमानों को अब कहीं भी पहुँच कर मन्दिर या गिरजा तोड़ने और मसजिद बनाने की न इच्छा है, न तबियत और न फ़ुरसत. किसी बाहर के देश के लोगों पर—और उन सबसे हमारी राजकाजी मित्रता है—इस तरह का इशारा हरगिज़ राजेन्द्र बाबू जैसे ज़िम्मेदार आदमी के मुंह से नहीं निकल सकता. तो फिर क्या यह ललकार हिन्दुस्तान के ग़रीब मुसलमानों के लिये थी ? हमारा दिल भर आ रहा है. किसी आदमी की करतूत के लिये उसके उस समय के या सैकड़ों बरस बाद के सह धर्मियों को ललकारना न इनसाफ़

ہمیں اس موقع پر الہ آباد کے ہی ایک مندر کا قصہ یاد آ رہا ہے . تیس برس پہلے کی بات ہے . کچھ جوشیلے لوگ کٹر سناتنیوں کے ایک مندر میں کچھ ہریجنوں کو زبردستی جلوس بنا کر لے گئے . پروہت نے دیکھ لیا کہ ہٹھ کرنے سے کام نہیں چلے گا . اس نے دروازہ کھول دیا . ہریجنوں نے درشن کئے . جیت کی خوشی میں سب لوٹ آئے . اس کے بعد پروہت جی نے گنگا جل کے کلسے منگا کر سارے مندر کو پھر سے اسی طرح دھو ڈالا جس طرح اگر کوئی جانور وہاں میلا کر جاتا تو کرنا پڑتا .

راجندر بابو کی للکار

راجندر بابو کی تقریر کا ایک فقرہ اُتر بھارت کے ہندی اردو اخباروں نے بڑے بڑے موٹے حرفوں میں چھاپا ہے . وہ یہ ہے — " آج اپنی راکھ میں سے دوبارہ کھڑا ہوکر سومناتھ کا یہ مندر مانو دنیا سے للکار کر کہہ رہا ہے کہ اِس دنیا کا کوئی آدمی اور کوئی طاقت اُس چیز کو مٹا نہیں سکتی جسکے لئے لوگوں کے دلوں میں بے انت شردھا اور پریم ہے ."

بڑے دکھ کے ساتھ ہم یہ کہنے پر مجبور ہیں کہ اِس فقرے کے بھاو ہمیں اونچے دکھائی نہیں دیتے . راجندر بابو یہ کہکر آخر کسے للکار رہے ہیں ؟ انہیں اور ساری دنیا کو اب یہ معلوم ہے کہ سومناتھ کا مندر محمود سے پہلے بھی اور اُس کے بعد بھی کم سے کم آٹھ بار گرایا گیا اور آٹھ بار پھر سے بنایا گیا . فارسی کی ایک کہاوت ہے — " جو آیا اُس نے اپنی نئی عمارت کھڑی کی ." یہ کہاوت اگر کسی جگہ کے بارے میں ٹھیک اُترتی ہے تو سومناتھ کے بارے میں . پر ظاہر ہے اِس للکار کے سمے سومناتھ کے دوسرے وِدھونسک راجندر بابو کی نگاہ کے سامنے نہ تھے . تو پھر کیا اُن کے سامنے محمود غزنوی تھا ؟ ہمارا دل نہیں مانتا . ہم روحانی تکلیف کے ساتھ کہہ رہے ہیں مردوں کو للکارنا کسی انسان کو شوبھا نہیں دیتا . ہم مان لیتے ہیں کہ اُنکی نگاہ کے سامنے محمود نہیں تھا . تو پھر کیا محمود کے سہدھرمی تھے ؟ اگر ایسا ہے تو ہمیں معلوم ہونا چاہئے کہ ہندستان سے باہر کے جاگے ہوئے مسلمانوں کو اب کہیں بھی پہنچکر مندر یا گرجا توڑنے اور مسجد بنانے کی نہ اِچھا ہے ، نہ طبیعت اور نہ فرصت . کسی باہر کے دیش کے لوگوں پر — اور اُن سب سے ہماری راج کاجی مِترتا ہے — اِس طرح کا اشارہ ہرگز راجندر بابو جیسے ذمہ دار آدمی کے منہ سے نہیں نکل سکتا . تو پھر کیا یہ للکار ہندستان کے غریب مسلمانوں کے لئے تھی ؟ ہمارا دل بھر آ رہا ہے . کسی آدمی کی کرتوت کے لئے اُس کے اُس سمے کے یا سیکڑوں برس بعد کے سہدھرمیوں کو للکارنا نہ انصاف

उनका इरादा बदल गया." गांधी जी की इस बारे में राय हमें अच्छी तरह मालूम है. उनसे हमारी काफ़ी बात चीत हुई. औरों से भी हमारी मौजूदगी में हुई. गांधी जी की आज्ञा से ही हमने सोमनाथ पर वह लेख लिखे जो 'हरिजन' में छपे हुए हैं.

इस मज़मून पर और अधिक लिखने का हमें समय न मिल सका. गांधी जी की राय यह नहीं थी कि सोमनाथ का मन्दिर लोगों के चन्दों से बनाया जाय और सरकार उसमें इस तरह से सहयोग दे जिस तरह दिया गया है. हम पूरी ज़िम्मेवारी के साथ कह सकते हैं कि सोमनाथ में जो कुछ हुआ वह गांधी जी की राय के मुताबिक़ नहीं हुआ और परलोक में उसे सुनकर गांधी जी की आत्मा सन्तुश्ट नहीं हो सकती.

एक बार बहुत पहले गांधी जी से हमारी इस बारे में भी बात चीत हुई थी कि देश में मन्दिरों और मसजिदों की तादाद ज़रूरत से ज़्यादा है. गांधी जी की साफ़ राय थी कि हर धर्म वालों को इस बात की आज़ादी होना चाहिये कि वह जब भी अपना कोई नया मन्दिर, मसजिद या गिरजा बनाना चाहें तो बना सकें या पुराने की मरम्मत करना चाहें तो कर सकें. पर उनकी अपनी इच्छा यही थी कि इन अलग अलग पूजा बन्दगी के स्थानों की तादाद कम ही हो और कम ही रहे तो अच्छा है.

सुधार का धोका

दुनिया को बड़ी बहादुरी के साथ यह भी बताया गया है कि कट्टर सनातनियों को नाराज़ करके सोमनाथ के इस मामले में बड़े बड़े सुधार किये गए हैं. मन्दिर हरिजनों के लिये खुला रहेगा, ग़ैर हिन्दू भी मन्दिर में जा सकेंगे वग़ैरा. पर ग़ैर हिन्दुओं और हरिजनों के मन्दिर में जा सकने और सोमनाथ बाबा के दर्शन कर सकने का रिवाज तो बहुत पुराना रिवाज है. उस मन्दिर के तीन हिस्सों में से बाहर का हिस्सा हमेशा सब के लिये खुला रहा है. हमें यह भी याद रखना चाहिये कि राजेन्द्र बाबू ने जिस मूर्ति के ऊपर से सोने की पिन हटाई वह 11 मई को सनातन रिवाज के मुताबिक़ अभी बेजान पत्थर थी, देवता नहीं. अभी वह राज मज़दूरों के हाथों में थी, देवता का बासा अभी उस में नहीं हुआ था. अभी उसकी प्रान प्रतिश्ठा होनी बाक़ी थी. प्रान प्रतिश्ठा के बाद मूर्ति देवता बनती है. प्रान प्रतिश्ठा केवल ब्राह्मन पुरोहित ही करेगा. उसमें कोई ग़ैर ब्राह्मन चाहे वह भारत का प्रेसीडेन्ट हो और चाहे कांग्रेस का सदर हाथ न लगा सकेगा. इसलिये यह जो सनातन रिवाज में सुधार की बातें दुनिया से कही जा रही हैं इसमें असलियत नहीं के बराबर है.

اُن کا اِرادہ بدل گیا." گاندھی جی کی اِس بارے میں رائے ہمیں اچھی طرح معلوم ہے . اُن سے ہماری کافی بات چیت ہوئی . اوروں سے بھی ہماری موجودگی میں ہوئی . گاندھی جی کی آگیا سے ہی ہم نے سومناتھ پر وہ لیکھ لکھے جو 'ہریجن' میں چھپے ہوئے ہیں .

اِس مضمون پر اور ادھک لکھنے کا ہمیں سمے نہ مل سکا . گاندھی جی کی رائے یہ نہیں تھی کہ سومناتھ کا مندر لوگوں کے چندوں سے بنایا جائے اور سرکار اُس میں اِس طرح سے سہیوگ دے جس طرح دیا گیا ہے . ہم پوری ذمہ واری کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ سومناتھ میں جو کچھ ہوا وہ گاندھی جی کی رائے کے مطابق نہیں ہوا اور پرلوک میں اُسے سن کر گاندھی جی کی آتما سنتشٹ نہیں ہو سکتی .

ایک بار بہت پہلے گاندھی جی سے ہماری اِس بارے میں بھی بات چیت ہوئی تھی کہ دیش میں مندروں اور مسجدوں کی تعداد ضرورت سے زیادہ ہے . گاندھی جی کی صاف رائے تھی کہ ہر دھرم والوں کو اِس بات کی آزادی ہونی چاہئیے کہ وہ جب بھی اپنا کوئی نیا مندر، مسجد یا گرجا بنانا چاہیں تو بنا سکیں یا پرانے کی مرمت کرنا چاہیں تو کرسکیں . پر اُن کی اپنی اِچھا یہی تھی کہ اِن الگ الگ پوجا بندگی کے ستھانوں کی تعداد کم ہی ہو اور کم ہی رہے تو اچھا ہے .

سدھار کا دھوکا

دنیا کو بڑی بہادری کے ساتھ یہ بھی بتایا گیا ہے کہ کٹر سناتنیوں کو ناراض کرکے سومناتھ کے اِس معاملے میں بڑے بڑے سدھار کئے گئے ہیں . مندر ہریجنوں کے لئے کھلا رہے گا، غیر ہندو بھی مندر میں جا سکیں گے وغیرہ . پر غیر ہندوؤں اور ہریجنوں کے مندر میں جاسکنے اور سومناتھ بابا کے درشن کر سکنے کا رواج تو بہت پرانا رواج ہے . اُس مندر کے تین حصوں میں سے باہر کا حصہ ہمیشہ سب کے لئے کھلا رہا ہے . ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئیے کہ راجندر بابو نے جس مورتی کے اوپر سے سونے کی پن ہٹائی وہ 11 مئی کو سناتن رواج کے مطابق ابھی بےجان پتھر تھی، دیوتا نہیں . ابھی وہ راج مزدوروں کے ہاتھوں میں تھی، دیوتا کا باسا ابھی اُس میں نہیں ہوا تھا . ابھی اُس کی پران پرتشٹھا ہونی باقی تھی . پران پرتشٹھا کے بعد مورتی دیوتا بنتی ہے . پران پرتشٹھا کیول براہمن پروہت ہی کرے گا . اُس میں کوئی غیر براہمن چاہے وہ بھارت کا پریسیڈنٹ ہو اور چاہے کانگریس کا صدر ہاتھ نہ لگاسکے گا . اِس لئے یہ جو سناتن رواج میں سدھار کی باتیں دنیا سے کہی جا رہی ہیں اُن میں اصلیت نہیں کے برابر ہے .

कर चुकी है. इस पर भी कहा जा सकता है कि एक ग़ैर जानिबदार सरकार भी किसी भी धर्म के मंदिरों, मसजिदों, गिरजों या गुरुद्वारों को इस तरह जमीनें दे सकती है. हम यह पूछना नहीं चाहते कि सौराष्ट्र सरकार ने अपने राज के ईसाइयों, मुसलमानों, पारसियों या दूसरे धर्म वालों के पाक स्थानों को अब तक कितनी जमीनें दीं. पर हम जरा और आगे बढ़ें. क्या हम सचमुच ठंडे दिल से यह कह सकते हैं कि सौराष्ट्र सरकार या भारत सरकार का इस सोमनाथ के मामले से कोई सम्बन्ध नहीं ? राजेन्द्र बाबू वहाँ भारत के प्रेसीडेन्ट की हैसियत से गए थे या एक बहुत बड़े शैव की हैसियत से ? कांगरेस प्रेसीडेन्ट वहाँ क्या केवल अपनी निजी हैसियत से ही मौजूद थे ? सौराष्ट्र के राज प्रमुख और बड़े वज़ीर यानी वहाँ की सरकार के दोनों बड़े अफ़सर क्या उस सूबे के सब से बड़े शिव भक्त भी हैं और क्या वह केवल इसी हैसियत से आगे आगे हिस्सा ले रहे थे ? और फिर भारत के तमाम सूबों से सब सरकारों और युनिवरसिटियों के प्रतिनिधि वहाँ किस हैसियत से और किसके हुकुम से बुलाए गए थे ? और आगे बढ़िये. दुनिया भर के चौहत्तर देशों से जो जगह जगह की मिट्टी और बनस्पति मंगाई गई वह किसके हुकुम से ? जापान जैसे देश के भारती राजदूत या उसके अमले वालों ने जो वहाँ से फ़ूजी पहाड़ की मिट्टी और बनस्पति लेकर भेजी वह किसके हुकुम से और क्यों ? यह एक जानने की चीज है कि भारत सरकार, सूबों की सरकारों और विदेशों में हमारे राजदूतों ने इस सारे मामले में क्या ख़र्च किया और किसके हुकुम से किया. आख़िर सोमनाथ के मन्दिर का हमारे विदेशी विभाग के साथ क्या सम्बन्ध है ? एक सौ एक तोपें क्या किसी और धर्म के मसजिद, गिरजा या गुरुद्वारे के पुनरुद्धार में भी छोड़ी गई या छोड़े जाने की तजवीज है ? हम नहीं कह सकते कि भारत सरकार का मंत्रिमंडल इस काम के लिये कहाँ तक जिम्मेवार है. हमें यह भी नहीं मालूम कि ऐसे मामलों में प्रेसीडेन्ट के लिये मन्त्रिमंडल से या प्रधान मंत्री से सलाह कर लेना कहाँ तक जरूरी है या नहीं है. लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग देश के बहुगिनत लोगों के धर्म को खेंच तानकर किसी न किसी रूप में भारत का राष्ट्री धर्म बनाने के चक्कर में हैं उन्हें हमारी सरकारों को इस काम के अन्दर घसीट लेने में एक बार पूरी कामयाबी मिली है.

गांधी जी और सोमनाथ

श्री० मुंशी ने ठीक कहा है कि "सरदार वल्लभ भाई पटेल सोमनाथ के मंदिर को सरकारी ख़र्च पर फिर से बनवाना चाहते थे पर गांधी जी के विरोध करने पर

چکی ہے ۔ اِس پر بھی کہا جاسکتا ہے کہ ایک غیرجانبدار
ار بھی کسی بھی دھرم کے مندروں، مسجدوں، گرجوں
گرودواروں کو اِس طرح زمینیں دے سکتی ہے ۔
یہ پوچھنا نہیں چاہتے کہ سوراشٹر سرکار نے اپنے راج
عیسائیوں، مسلمانوں، پارسیوں یا دوسرے دھرم والوں
پاک ستھانوں کو ابتک کتنی زمینیں دیں ۔ پر
ذرا اور آگے بڑھیں کیا ہم سچ مچ ٹھنڈے دل سے
کہ سکتے ہیں کہ سوراشٹر سرکار یا بھارت سرکار کا
سومناتھ کے معاملے سے کوئی سمبندھ نہیں ؟
ندر بابو وہاں بھارت کے پریسیڈنٹ کی حیثیت
گئے تھے یا ایک بہت بڑے شیو کی حیثیت سے ؟
ریس پریسیڈنٹ وہاں کیا کیول اپنی نجی حیثیت
ہی موجود تھے ؟ سوراشٹر کے راج پرمکھ اور بڑے
یعنی وہاں کی سرکار کے دونوں بڑے افسر کیا
صوبے کے سب سے بڑے شوبھکت بھی ہیں اور
وہ کیول اِسی حیثیت سے آگے آگے حصہ لے رہے تھے ؟
پھر بھارت کے تمام صوبوں سے سب سرکاروں اور
ورسٹیوں کے پرتیندھی وہاں کس حیثیت سے اور
کے حکم سے بلائے گئے تھے ؟ اور آگے بڑھئے ۔ دنیا
کے چوہتر دیشوں سے جو جگہ جگہ کی مٹی اور
پتی منگائی گئی وہ کس کے حکم سے ؟ جاپان
سے دیش کے بھارتی راج دوت یا اُسکے عملے والوں
جو وہاں سے فوجی پہاڑ کی مٹی اور بنسپتی لے کر
بجی وہ کس کے حکم سے اور کیوں ؟ یہ ایک جاننے
چیز ہے کہ بھارت سرکار، صوبوں کی سرکاروں اور
شوں میں ہمارے راج دوتوں نے اِس سارے معاملے
کیا خرچ کیا اور کس کے حکم سے کیا ۔ آخر سومناتھ
مندر کا ہمارے ودیشی وبھاگ کے ساتھ کیا سمبندھ
؟ ایک سو ایک توپیں کیا کسی اور دھرم کے مسجد،
یا گرودوارے کے پنردّھار میں بھی چھوڑی
ں یا چھوڑے جانے کی تجویز ہے ؟ ہم نہیں کہ
ے کہ بھارت سرکار کا منتری منڈل اِس کام کے لئے
ں تک ذمہ وار ہے ۔ ہمیں یہ بھی نہیں معلوم کہ
ے معاملوں میں پریسیڈنٹ کے لئے منتری منڈل سے
پردھان منتری سے صلاح کرلینا کہاں تک ضروری ہے
نہیں ہے ۔ لیکن اِس میں کوئی شک نہیں کہ جو
دیش کے بہوگنت لوگوں کے دھرم کو کھینچ تان کر
ی نہ کسی روپ میں بھارت کا راشٹری دھرم بنانے
چکر میں ہیں اُنہیں ہماری سرکاروں کو اِس کام کے
گھسیٹ لینے میں ایک بار پوری کامیابی ملی ہے ۔

دھی جی اور سومناتھ

شری منشی نے ٹھیک کہا ہے کہ "سردار ولبھ بھائی
یل سومناتھ کے مندر کو سرکاری خرچ پر پھر سے
انا چاہتے تھے پر گاندھی جی کے وِرودھ کرنے پر

विश्वास और उन क़ीमतों पर क़ायम हैं जिन पर हम अनन्त युगों से क़ायम चले आ रहे हैं......यह मशहूर इतिहासी मन्दिर हमारे सनातन विश्वास की एक निशानी है जिसे फिर से पूरे जोश के साथ क़ायम करने का काम हम अपने ऊपर ले रहे हैं."

ज़ाहिर है राजेन्द्र बाबू और उनके साथी किसी बीते समय की 'राजकाजी और समाजी हालतों' को फिर से लाना चाह रहे हों या न चाह रहे हों कम से कम उस बीते ज़माने की धार्मिक हालतों, ख़ास कर शिवलिंग की स्थापना और उसकी पूजा को वह पूरे जोश के साथ क़ायम करना चाह रहे हैं.

पुराने ज़ख़्मों को हरा करना

दूसरी मारके की बात राजेन्द्र बाबू ने ऊपर के फ़िक़रे में यह कही है कि वह पुराने ज़ख़्मों को हरा करना नहीं चाहते. हम उनकी बात मान लेते हैं. फिर भी इस फ़िक़रे को पढ़ कर हमें हैरानी और दुख हुआ. हमारे दिल में राजेन्द्र बाबू की इज़्ज़त है, हमें उनसे प्रेम है, हम उन्हें अपना भाई मानते हैं. हम उन्हीं से अपील करना चाहते हैं कि वह भारत के किसी हिस्से में दौरा करके और आम जनता में मिल कर देखें या मई महीने के देसी भाषाओं के अख़बारों की फ़ाइलों को उलट पुलट कर देखें और फिर ठंडे दिल से बतावें कि सोमनाथ के इस नए उद्धार से कोई पुराना ज़ख़्म हरा हुआ या नहीं और हुआ तो किस दरजे तक. हम यह समझ ही नहीं सकते कि इस सारी घटना से कोई किसी दूसरे नतीजे की आशा कैसे कर सकता था.

सरकार की ज़िम्मेवारी

श्री के. एम. मुँशी ने किशोरलाल भाई के नाम अपने ख़त में यह भी लिखा है कि "यह काम सरकार की तरफ़ से नहीं हो रहा है बल्कि मन्दिर को बनाने और सोमनाथ की मूर्ती को फिर से क़ायम करने का सारा ख़र्च एक ट्रस्ट से किया जा रहा है जो आम चन्दों से क़ायम हुआ है." हो सकता है सौराष्ट्र सरकार ने असली धार्मिक रसम के लिये कुछ ख़र्च न किया हो. लेकिन श्री मुंशी ही के अनुसार सरकार ने चारों तरफ़ से सड़कों की मरम्मत करवाने में, उन पर रोशनी और जगह जगह पानी का इन्तज़ाम करने में और यात्रियों को सब तरह की सुविधाएँ देने में तो रुपया ख़र्च किया. इस पर कहा जाता है कि सरकार इस तरह का इन्तज़ाम सब मेलों ठेलों पर करती ही है. पर जाम साहब ने जो सौराष्ट्र के राज प्रमुख हैं यह भी ऐलान किया कि सरकार इमारतों वग़ैरा के अलावा एक सौ दस एकड़ फलों की ज़मीन और दो सौ इक्यासी एकड़ खेती के क़ाबिल ज़मीन नए मन्दिर को देने का फ़ैसला

وشواس اور اُن قیمتوں پر قائم ھیں جن پر ھم انلت یگوں سے قائم چلے آرھے ھیں ...... یہ مشہور اِتہاسی مندر ھمارے سناتن وشواس کی ایک نشانی ھے جسے پھر سے پورے جوش کے ساتھ قائم کرنے کا کام ھم اپنے اوپر لے رھے ھیں."

ظاھر ھے راجندر بابو اور اُنکے ساتھی کسی بیتے سمے کی 'راج کاجی اور سماجی حالتوں' کو پھر سے لانا چاہ رھے ھوں یا نہ چاہ رھے ھوں کم سے کم اُس بیتے زمانے کی دھارمک حالتوں' خاص کر شیولنگ کی ستھاپنا اور اُسکی پوجا کو وہ پورے جوش کے ساتھ قائم کرنا چاہ رھے ھیں .

پرانے زخموں کو ھرا کرنا

دوسری معرکے کی بات راجندر بابو نے اوپر کے فقرے میں یہ کہی ھے کہ وہ پرانے زخموں کو ھرا کرنا نہیں چاھتے . ھم اُن کی بات مان لیتے ھیں . پھر بھی اِس فقرے کو پڑھکر ھمیں حیرانی اور دکھ ھوا . ھمارے دل میں راجندر بابو کی عزت ھے' ھمیں اُن سے پریم ھے' ھم اُنھیں اپنا بھائی مانتے ھیں . ھم اُنھیں سے اپیل کرنا چاھتے ھیں کہ وہ بھارت کے کسی حصے میں دورہ کرکے اور عام جنتا میں ملکر دیکھیں یا مئی مہینے کے دیسی بھاشاؤں کے اخباروں کی فائلوں کو اُلٹ پلٹ کر دیکھیں اور پھر ٹھنڈے دل سے بتاویں کہ سومناتھ کے اِس نئے اُدّھار سے کوئی پرانا زخم ھرا ھوا یا نہیں اور ھوا تو کس درجے تک . ھم یہ سمجھ ھی نہیں سکتے کہ اِس ساری گھٹنا سے کوئی کسی دوسرے نتیجے کی آشا کیسے کر سکتا تھا .

سرکار کی ذمہ واری

شری کے . ایم . منشی نے کشورلال بھائی کے نام اپنے خط میں یہ بھی لکھا ھے کہ "یہ کام سرکار کی طرف سے نہیں ھورھا ھے بلکہ مندر کو بنانے اور سومناتھ کی مورتی کو پھر سے قائم کرنے کا سارا خرچ ایک ٹرسٹ سے کیا جارھا ھے جو عام چندوں سے قائم ھوا ھے." ھو سکتا ھے سوراشٹر سرکار نے اصلی دھارمک رسم کے لئے کچھ خرچ نہ کیا ھو . لیکن شری منشی ھی کے انوسار سرکار نے چاروں طرف سے سڑکوں کی مرمت کروانے میں' اُن پر روشنی اور جگہ جگہ پانی کا انتظام کرنے میں اور یاتریوں کو سب طرح کی سودھائیں دینے میں تو روپیہ خرچ کیا . اِس پر کہا جاتا ھے کہ سرکار اِس طرح کا انتظام سب میلوں ٹھیلوں پر کرتی ھی ھے . پر جام صاحب نے جو سوراشٹر کے راج پر مکھ ھیں یہ بھی اعلان کیا کہ سرکار عمارتوں وغیرہ کے علاوہ ایک سو دس ایکڑ پھلوں کی زمین اور دو سو اکیاسی ایکڑ کھیتی کے قابل زمین نئے مندر کو دینے کا فیصلہ

इस देश को धर्म के सम्बन्ध में पूरी तरह गैर जानिबदार यानी सेकुलर रखना चाहते हैं और अपने अमल से भी इस गैर जानिबदारी के असूल को निबाहना चाहते हैं.

कुछ दिन हुए हमने अंगरेजी के अखबार 'आरगेनाइज़र', में, जो आर० एस० एस० का अखबार समझा जाता है, एक लेख पढ़ा था जिसमें यह बताया गया था कि "राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ केवल हिन्दुओं का राज नहीं चाहता, वह किसी एक धर्म वालों का राज नहीं चाहता, वह यह भी नहीं चाहता कि हमारे राज में किसी के साथ धर्म की बिना पर किसी तरह की कोई रू रिआयत की जावे या किसी धर्म वालों के साथ किसी मामले में भी किसी तरह का भेद भाव बरता जावे, वह चाहता है कि देश की सरकार इस मामले में बिलकुल गैर जानिबदार हो और सब धर्म वालों के साथ सब बातों में एक बराबर बरताव हो, सब को एक से मौक़े दिये जावें और सब के बराबर के हक़ हों, वगैरा." यह हमने उस लेख के एक हिस्से का निचोड़ अपने शब्दों में याददाश्त से देने की कोशिश की है. हमें 'आरगेनाइज़र' के इस लेखक की नियत में शक नहीं. वह जो जी से चाहता था वही उसने लिखा.

केवल नेक इरादे काफ़ी नहीं

पर इस दुनिया में, जो इनसानों और क़ौमों दोनों के लिये एक कठिन आज़माइश की जगह है, केवल नेक इरादों से काम नहीं चल सकता. अंगरेज़ी की एक मशहूर कहावत है—"नरक का रास्ता नेक इरादों से पटा पड़ा है" हम में से हर एक को अपने हर काम और उसके अच्छे बुरे नतीजों पर हर पहलू से ग़ौर करना होगा, और अपने कामों के क़ुदरती नतीजों की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेनी होगी.

राजेन्द्र बाबू ने उसी तक़रीर में एक जगह कहा है कि "मैं इस बात को साफ़ कर देना चाहता हूँ कि इन जलसों का न यह मतलब है न हो सकता है कि हम अपने देश में किसी पुराने ज़माने की राजकाजी और समाजी हालतों को फिर से क़ायम करना चाह रहे हैं, न इसका यह मतलब है कि हम उस दिमाग़ी या जिसमानी ज़ख़्म को फिर से हरा करना चाह रहे हैं जिसे समय ने अपने आप भर दिया था."

पुराने ज़माने को फिर से लाना

जहाँ तक राजकाजी और समाजी हालतों का सम्बन्ध है, सचमुच के कोशिश करने पर भी किसी बीते ज़माने की सब राजकाजी और समाजी हालतें फिर से नहीं आ सकतीं. समय की गति किसी के रोके नहीं रुक सकती. पर राजेन्द्र बाबू ही ने आगे चल कर कहा है—"यहाँ हमारा मक़सद सिर्फ़ नए सिरे से यह ऐलान करना है कि हम उस

اِس دیش کو دھرم کے سمبندھ میں پوری طرح [illegible]
یعنی سیکولر رکھنا چاہتے ھیں اور اپنے عمل سے بھی اس غیرجانبداری کے اصول کو نباھنا چاھتے ھیں.

کچھ دن ھوئے ھم نے انگریزی کے اخبار 'آرگنائزر' میں' جو آر. ایس. ایس. کا اخبار سمجھا جاتا ہے' ایک لیکھ پڑھا تھا جس میں یہ بتایا گیا تھا کہ "راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کیول ھندؤں کا راج نہیں چاھتا' وہ کسی ایک دھرم والوں کا راج نہیں چاھتا' وہ یہ بھی نہیں چاھتا کہ ھمارے راج میں کسی کے ساتھ دھرم کی بنا پر کسی طرح کی کوئی رو رعائت کی جاوے یا کسی دھرم والوں کے ساتھ کسی معاملے میں بھی کسی طرح کا بھیدبھاو برتا جاوے' وہ چاھتا ہے کہ دیش کی سرکار اِس معاملے میں بالکل غیرجانبدار ھو اور سب دھرم والوں کے ساتھ سب باتوں میں ایک برابر برتاو ھو' سب کو ایک سے موقع دیئے جاویں اور سب کے برابر کے حق ھوں' وغیرہ." یہ ھم نے اُس لیکھ کے ایک حصے کا نچوڑ اپنے شبدوں میں یادداشت سے دینے کی کوشش کی ھے. ھمیں 'آرگنائزر' کے اُس لیکھک کی نیت میں شک نہیں. وہ جو جی سے چاھتا تھا وھی اُسنے لکھا.

کیول نیک اِرادے کافی نہیں

پر اس دنیا میں' جو انسانوں اور قوموں دونوں کے لئے ایک کٹھن آزمائش کی جگہ ھے' کیول نیک ارادوں سے کام نہیں چل سکتا. انگریزی کی ایک مشہور کہاوت ھے—"نرک کا راستہ نیک اِرادوں سے پٹا پڑا ھے" ھم میں سے ھر ایک کو اپنے ھر کام اور اُسکے اچھے برے نتیجوں پر ھر پہلو سے غور کرنا ھوگا اور اپنے کاموں کے قدرتی نتیجوں کی ذمہداری اپنے اوپر لینی ھوگی.

راجندر بابو نے اُسی تقریر میں ایک جگہ کہا ھے کہ "میں اِس بات کو صاف کردینا چاھتا ھوں کہ اِن جلسوں کا نہ یہ مطلب ھے نہ ھوسکتا ھے کہ ھم اپنے دیش میں کسی پرانے زمانے کی راج کاجی اور سماجی حالتوں کو پھر سے قائم کرنا چاہ رھے ھیں' نہ اِس کا یہ مطلب ھے کہ ھم اُس دماغی یا جسمانی زخم کو پھر سے ھرا کرنا چاہ رھے ھیں جسے سمے نے اپنے آپ بھر دیا تھا."

پرانے زمانے کو پھر سے لانا

جہاں تک راج کاجی اور سماجی حالتوں کا سمبندھ ھے' سچ مچ کوشش کرنے پر بھی کسی بیتے زمانے کی سب راج کاجی اور سماجی حالتیں پھر سے نہیں آسکتیں. سمے کی گتی کسی کے روکے نہیں رک سکتی. پر راجندر بابو ھی نے آگے چلکر کہا ھے—"یہاں ھمارا مقصد صرف نئے سرے سے یہ اعلان کرنا ھے کہ ھم اُس

सोमनाथ फिर

11 मई '51 को सोमनाथ के फिर से उद्धार का मेला हो गया. मई के 'नया हिन्द' में हम इस बारे में अपनी राय दे चुके हैं. उसके बाद हमने राजेन्द्र बाबू की सोमनाथ की तक़रीर को और भाई किशोरलाल मशरुवाला के नाम श्री के० एम० मुंशी के उस ख़त को, जो 5 मई के 'हरिजन' में छपा है और जिसमें उन्होंने कुछ एतराज़ों पर अपनी सफ़ाई देने की कोशिश की है, ध्यान से पढ़ा.

नेक इरादे

26 मई के 'हरिजन' में राजेन्द्र बाबू की तक़रीर का नीचे लिखा हिस्सा 'नागपुर टाइम्स' से लेकर छापा गया है:—

"हमारे देश में इसकी बहुत बड़ी ज़रूरत है कि हम में से हर एक इस बात को अच्छी तरह समझ ले कि हर जमाअत और हर मज़हब के लिये आदर और बराबरी का भाव रखते हुए बरतना ही हमारे लिये सबसे अच्छा रास्ता है. हमारी सारी क़ौम और देश का और हममें से हर एक का भला इसी में है. इसी श्रद्धा और विश्वास के कारन हमारे संघ (यूनियन) ने धर्म के मामले में ग़ैर जानिबदारी (सैकुलरिज़्म) की नीति अपनाई है और सब को यह भरोसा दिया है कि इस देश के किसी सम्प्रदाय या यहाँ के किसी आदमी के ख़िलाफ़ धर्म की बिना पर किसी तरह का भेद भाव नहीं बरता जायगा. और हर एक को वह सब मौक़े और सुविधाएँ दी जायँगी जो दूसरों को मिली हुई हों. इसी आदर्श के अनुसार मैं सब धर्मों के लिये आदर और प्रेम रखता हूँ.

"मैं ख़ुद अपनी श्रद्धा और अपने रोज़ के अमल में सनातनी हिन्दू हूँ और आम तौर पर सनातन धर्म के रिवाजों के मुताबिक़ अपने ईश्वर की पूजा प्रार्थना करता हूँ, फिर भी मुझे विश्वास है कि धर्म को मानने वाला हर आदमी अपने ही धर्म के नियमों के अनुसार भगवान की पूजा करते हुए उस तक पहुँच सकता है. इस तरह मेरे दिल में न सिर्फ़ सब धर्मों के लिये और उनके पूजा के स्थानों के लिये आदर है बल्कि जब कभी मुझे मौक़ा मिलता है, मैं अपना आदर दरशाने के लिये उनमें जाता भी हूँ. जब कभी मौक़ा मिलता है मैं दरगाह और मस्जिद में, गिरजा और गुरुद्वारे में उसी आदर भाव से जाता हूँ जिस आदर भाव से मैं अपने धर्म के मन्दिरों में जाता हूँ."

राजेन्द्र बाबू के इन साफ़ साफ़ फ़िक़रों के बाद सोमनाथ के मामले में उन की नियत पर किसी तरह के शक की गुंजायश नहीं रह जाती. ज़ाहिर है कि वह इस राज और

سومناتھ پھر

11 مئی '51 کو سومناتھ کے پھر سے اُدھار کا میلہ ہوگیا. مئی کے 'نیا ہند' میں ہم اِس بارے میں اپنی رائے دے چکے ہیں. اُسکے بعد ہم نے راجندر بابو کی سومناتھ کی تقریر کو اور بھائی کشورلال مشروالا کے نام شری کے. ایم. منشی کے اُس خط کو، جو 5 مئی کے 'ہریجن' میں چھپا ہے اور جس میں اُنہوں نے کچھ اعتراضوں پر اپنی صفائی دینے کی کوشش کی ہے، دھیان سے پڑھا.

نیک اِرادے

26 مئی کے 'ہریجن' میں راجندر بابو کی تقریر کا نیچے لکھا حصہ 'ناگپور ٹائمس' سے لے کر چھاپا گیا ہے:—

"ہمارے دیش میں اِسکی بہت بڑی ضرورت ہے کہ ہم میں سے ہر ایک اِس بات کو اچھی طرح سمجھ لے کہ ہر جماعت اور ہر مذہب کے لئے آدر اور برابری کا بھاؤ رکھتے ہوئے برتنا ہی ہمارے لئے سب سے اچھا راستہ ہے. ہماری ساری قوم اور دیش کا اور ہم میں سے ہر ایک کا بھلا اِسی میں ہے. اِسی شردھا اور وشواس کے کارن ہمارے سنگھ (یونین) نے دھرم کے معاملے میں غیرجانبداری (سیکولرزم) کی نیتی اپنائی ہے اور سبکو یہ بھروسہ دیا ہے کہ اِس دیش کے کسی سمپردائے یا یہاں کے کسی آدمی کے خلاف دھرم کی بناپر کسی طرح کا بھید بھاؤ نہیں برتا جائیگا. اور ہر ایک کو وہ سب موقعے اور سودھائیں دی جائینگی جو دوسروں کو ملی ہوئی ہوں. اِسی آدرش کے انوسار میں سب دھرموں کے لئے آدر اور پریم رکھتا ہوں.

"میں خود اپنی شردھا اور اپنے روز کے عمل میں سناتنی ہندو ہوں اور عام طور پر سناتن دھرم کے رواجوں کے مطابق اپنے ایشور کی پوجا پرارتھنا کرتا ہوں، پھر بھی مجھے وشواس ہے کہ دھرم کو ماننے والا ہر آدمی اپنے ہی دھرم کے نیموں کے انوسار بھگوان کی پوجا کرتے ہوئے اُس تک پہنچ سکتا ہے. اِس طرح میرے دل میں نہ صرف سب دھرموں کے لئے اور اُنکے پوجا کے ستھانوں کے لئے آدر ہے بلکہ جب کبھی مجھے موقع ملتا ہے، میں اپنا آدر درشانے کے لئے اُن میں جاتا بھی ہوں. جب کبھی موقع ملتا ہے میں درگاہ اور مسجد میں، گرجا اور گوردوارے میں اُسی آدربھاؤ سے جاتا ہوں جس آدربھاؤ سے میں اپنے دھرم کے مندروں میں جاتا ہوں."

راجندر بابو کے اِن صاف صاف فقروں کے بعد سومناتھ کے معاملے میں اُن کی نیت پر کسی طرح کے شک کی گنجائش نہیں رہ جاتی. ظاہر ہے کہ وہ اِس راج اور

था. वह नई ज़िन्दगी में अपने को लाख जतन करने पर भी खपा न सकीं और आहिस्ता आहिस्ता ख़तम होगईं.

वेश्यापन और गुप्त रोग दोनों रूस में अब सपना हैं. सन् 39 में डाक्टरी के विद्यार्थियों को दिखाने के लिये गुप्त रोगों के रोगी तक न मिल सकते थे. यूक्रेन में जरमन क़ब्ज़े के दिनों में कुछ स्त्रियाँ ज़बरदस्ती फिर वेश्याएँ बनाई गई थीं. लेकिन हिटलरी फ़ौजों के हटते ही ख़ुद ही यह वेश्याएँ अपना मान पहचान गईं और फिर वह पेशा छोड़ कर देस की उन्नति में अच्छे नागरिकों की तरह भाग लेने लगीं.

इस तरह कम्युनिस्ट रूस ने पन्द्रह बरस के अन्दर वह पाप लगभग जड़ से ख़तम कर दिया जिसको मिटाने की असफल कोशिशें धर्म सुधारक, सदाचार के पंडित और राजकाजी धुरंधर सभी हमेशा से करते चले आ रहे थे.

(बाक़ी फिर)

تھا . وہ نئی زندگی میں اپنے کو لاکھ جتن کرنے پر بھی کھپا نہ سکیں اور آہستہ آہستہ ختم ہوگئیں .

ویشیا پن اور گپت روگ دونوں روس میں اب سپنا ہیں سن 39' میں ڈاکٹری کے 'ودیارتھیوں کو دکھانے کے لئے گپت روگوں کے روگی تک نہ مل سکتے تھے . یوکرین میں جرمن قبضے کے دنوں میں کچھ ستریاں زبردستی پھر ویشیائیں بنائی گئی تھیں . لیکن ہٹلری فوجوں کے ہٹتے ہی خود ہی یہ ویشیائیں اپنا مان پہچان گئیں اور پھر وہ پیشہ چھوڑ کر دیس کی اُنتی میں اچھے ناگرکوں کی طرح بھاگ لینے لگیں .

اس طرح کمیونسٹ روس نے پندرہ برس کے اندر وہ پاپ لگ بھگ جڑ سے ختم کر دیا جس کو مٹانے کی اسپھل کوششیں دھرم سدھارک' سداچار کے پنڈت اور راج کاجی دھرندھر سبھی ہمیشہ سے کرتے چلے آرہے تھے .

(باقی پھر)

चिता

चिता ! तू जीत न मुझको पाए
जल जल मुझे जलाती क्या है, तू ख़ुद ही जल जाए !

चित कर दिया सही, हाँ तूने
घेर लिया तेरी धू धू ने
लिपटा लिया लपट की लू ने
समझ, समझ ले जी में, मुझसे पहले तू मर जाए !

घुमड़ रही है तू घबराई
फफक रही है तू पजराई
चिते ! कहाँ पर शान्ति हिराई
खोकर शान्ति उसे जीतेगी, नेक न जो घबराए ?

ले मैं तुझ पर लेट चुका हूँ
चुप चुप चित्त लपेट चुका हूँ
मैं मालिक से भेंट चुका हूँ
जल कर, जल भर ले जा सकती, राख न तू ले पाए !

हवा हवा में शामिल करदे
पानी को पानी में भर दे
मिट्टी को धरती में धरदे
एक आग ले, तू अच्छी है, तू तो क़रज़ चुकाए !
चिता ! तू जीत न मुझको पाए.

—भगवानदीन

چتا

چتا ! تو جیت نہ مجھکو پائے.
جل جل مجھے جلاتی کیا ہے' تو خود ہی جل جائے!

چت کر دیا سہی' ہاں تونے
گھیر لیا تیری دھو دھو نے
لپٹا لیا لپٹ کی لونے
سمجھ' سمجھ لے جی میں' مجھسے پہلے تو مر جائے !

گھمڑ رہی ہے تو گھبرائی
پھپھک رہی ہے تو پجرائی
چتے ! کہاں پر شانتی ہرائی ؟
کھو کر شانتی اسے جیتے گی' نیک نہ جو گھبرائے ؟

لے میں تجھپر لیٹ چکا ہوں
چپ چپ چت لپیٹ چکا ہوں
میں مالک سے بھینٹ چکا ہوں
جل کر' جل بھر لے جاسکتی' راکھ نہ تو لے پائے !

ہوا ہوا میں شامل کر دے
پانی کو پانی میں بھر دے
مٹی کو دھرتی میں دھر دے
ایک آگ لے' تو اچھی ہے' تو تو قرض چکائے !
چتا تو جیت نہ مجھکو پائے .

— بھگوان دین

बाद में कर निकल गया. इन केन्द्रों में इलाज के साथ साथ ऐसे काम भी सिखाए गए जिनसे यह औरतें इज्ज़त के साथ रोज़ी कमा सकें. ख़ाली रोग दूर कर देने से काम नहीं बनता था. ऐसी हालत भी पैदा करनी थी जिसमें यह रोग फिर सर न उठा सके. इन केन्द्रों में औरतों को बढ़िया ट्रेनिंग दी गई. राष्ट्र निर्माण में उनका महत्व बताकर उनके स्वाभिमान को जगाया गया. इन बातों का उनके दिलों और दिमाग़ों पर ज़बरदस्त असर पड़ा.

अलग अलग दरजे के रोगी इन केन्द्रों में थे. कोई जल्दी अच्छा हुआ और कोई देर में. सब तरफ़ से छुट्टी पाकर सोवियत अधिकारियों ने वेश्यापन पर आख़िर हमला किया. केन्द्रों से निकली स्त्रियों को बसाने की योजना तैयार की गई—

(1) कोई औरत उस समय तक इन केन्द्रों से न निकाली गई जब तक उसके इज्ज़तदार समाजी ज़िन्दगी बिताने के लिये पूरा इन्तज़ाम न हो गया. उसकी पिछली ज़िन्दगी बिलकुल गुप्त रक्खी गई. समाजी कार्यकर्ताओं ने उस स्त्री की रुचि के अनुसार काम ढूँढ रक्खा था. यह भी इन्तज़ाम किया गया था कि वह औरत ऐसे लोगों के साथ रहे जो सदाचार के स्तर से गिरे नहीं थे.

(2) कुछ चुने लोगों ने ऐसी औरतों की देख भाल और मदद का बीड़ा उठा लिया. कम से कम कोई एक ऐसा सहायक हर औरत के साथ साथ काम भी करता था.

(3) हर ज़िले में देख रेख करने वाले दलों को इकट्ठा करके एक सहायता कौंसिल बना दी गई. इसकी बैठक महीने में तीन मरतबा होती थी और यह लोग डाक्टरों, मनोविज्ञानियों और फ़ैक्ट्रियों के मैनेजरों से सलाह मशविरा करते थे. इस तरह जब किसी को कोई कठिनाई पड़ती थी तो फ़ौरन तजरबेकार लोगों की हमदर्दी और असली सहायता मिल जाती थी. बाद में कौंसिल के काम को इन्हीं रोगियों ने ख़ूब बढ़ाया और अपने दूसरे साथियों की ख़ूब मदद की.

(4) इस कौंसिल ने एक क़ानून समिति बनायी जो शादी, नौकरी, मज़दूरी, किराया वग़ैरा के किसी भी झगड़े में औरतों को मदद दे सके.

(5) पहले के रोगियों से प्रार्थना की गई कि वह ट्रेनिंग केन्द्रों के अन्दर भरती लोगों से ख़त किताबत करें और उनकी हिम्मत बढ़ाएँ.

इन केन्द्रों से निकली हुई अस्सी फ़ी सदी औरतों ने फ़ैक्ट्री, फ़ार्म वग़ैरा में अच्छे अच्छे काम किये और सम्मान हासिल किया. इनमें से बहुत बड़ी तादाद ने शादी की और माएँ बन गईं. 19 फ़ीसदी से कुछ कम औरतें ऐसी थीं जिन्हें दोबारा केन्द्रों में आना पड़ा. बाक़ी बची एक फ़ीसदी पर पिछली ज़िन्दगी का ज़बरदस्त ख़राब असर

بعد میں کر نکل گیا۔ ان کیندروں میں علاج کے ساتھ ساتھ ایسے کام بھی سکھائے گئے جن سے یہ عورتیں عزت کے ساتھ روزی کما سکیں۔ خالی روگ دور کر دینے سے کام نہیں بنتا تھا۔ ایسی حالت بھی پیدا کرنی تھی جس میں یہ روگ پھر سر نہ اٹھا سکے۔ ان کیندروں میں عورتوں کو بڑھیا ٹریننگ دی گئی۔ راشٹر نرمان میں ان کا مہتو بتاکر ان کے ابھیمان کو جگایا گیا۔ ان باتوں کا ان کے دلوں اور دماغوں پر زبردست اثر پڑا۔

الگ الگ درجے کے روگی ان کیندروں میں تھے۔ کوئی جلدی اچھا ہوا اور کوئی دیر میں۔ سب طرف سے چھٹی پاکر سوویت ادھیکاریوں نے ویشیا پن پر آخری حملہ کیا۔ کیندروں سے نکلی استریوں کو بسانے کی یوجنا تیار کی گئی —

(1) کوئی عورت اس سمے تک ان کیندروں سے نہ نکالی گئی جب تک اس کے عزت دار سماجی زندگی بتانے کے لئے پورا انتظام نہ ہوگیا۔ اس کی پچھلی زندگی بالکل گپت رکھی گئی۔ سماجی کارکرتاؤں نے اس استری کی رچی کے انوسار کام ڈھونڈھ رکھا تھا۔ یہ بھی انتظام کیا گیا تھا کہ وہ عورت ایسے لوگوں کے ساتھ رہے جو سداچار کے استر سے گرے نہیں تھے۔

(2) کچھ چنے لوگوں نے ایسی عورتوں کی دیکھ بھال اور مدد کا بیڑا اٹھا لیا۔ کم سے کم کوئی ایک ایسا سہایک ہر عورت کے ساتھ ساتھ کام بھی کرتا تھا۔

(3) ہر ضلع میں دیکھ ریکھ کرنے والے دلوں کو اکٹھا کرکے ایک سہایتا کونسل بنادی گئی۔ اس کی بیٹھک مہینے میں تین مرتبہ ہوتی تھی اور یہ لوگ ڈاکٹروں، منووگیانیوں اور فیکٹریوں کے منیجروں سے صلاح مشورہ کرتے تھے۔

اس طرح جب کسی کو کوئی کٹھنائی پڑتی تھی تو فوراً تجربہ کار لوگوں کی ہمدردی اور عملی سہایتا مل جاتی تھی۔ بعد میں کونسل کے کام کو انہیں روگیوں نے خوب بڑھایا اور اپنے دوسرے ساتھیوں کی خوب مدد کی۔

(4) اس کونسل نے ایک قانون سمیتی بنا دی جو شادی، نوکری، مزدوری، کرایہ وغیرہ کے کسی بھی جھگڑے میں عورتوں کو مدد دے سکے۔

(5) پہلے کے روگیوں سے پرارتھنا کی گئی کہ وہ ٹریننگ کیندروں کے اندر بھرتی لوگوں سے خط کتابت کریں اور ان کی ہمت بڑھائیں۔

ان کیندروں سے نکلی ہوئی اسی فیصدی عورتوں نے فیکٹری، فارم وغیرہ میں اچھے اچھے کام کئے اور سمان حاصل کیا۔ ان میں سے بہت بڑی تعداد نے شادی کی اور مائیں بن گئیں۔ 19 فیصدی سے کچھ کم عورتیں ایسی تھیں جنہیں دوبارہ کیندروں میں آنا پڑا۔ باقی بچی ایک فیصدی پر پچھلی زندگی کا زبردست خراب اثر

कि उन मनोरंजन के स्थानों पर वह खास ध्यान रक्खें. पेशा करने वालियों को नहीं छेड़ा जाता था. उनके स्थान बंद नहीं किये जाते थे. लेकिन यह आदेश दिया गया कि मकान के मालिकों का पता लगाया जाय और जब तक मालिकों का पता न चले और उनको सज़ा न मिल जाय तब तक वह घर बन्द कर दिये जायें. मिलेशिया को और जनता को चेतावनी दी गई कि वह वेश्याओं को परेशान करने की कोई बात न करें. वेश्याओं को गिरफ़्तार नहीं किया जा सकता था. सिर्फ़ दलाल या मालिक मकान मुजरिमों के ख़िलाफ़ गवाही देने के लिये वह अदालत में बुलाई जा सकती थीं.

इस आन्दोलन में भाग लेने वाले सब लोगों को हिदायत थी कि वह ऐसी औरतों को बिलकुल अपने बराबर समझें, उनको मज़लूम और बेसहारा जानकर हमदर्दी का बरताव करें और मन में नफ़रत बिलकुल न आने दें. वेश्याएँ चाहे कुछ भी कहें, कैसा भी रुख लें लेकिन मिलेशिया का कोई आदमी कच्ची ज़बान न निकाले और न उनका अपमान करे. अफ़सरों पर रोक थी कि वह नाम और पता भी ऐसी औरतों का नोट न करें.

सरकारी हुक्म का यह हिस्सा अजीब था. गांधी जी तो अपने सत्याग्रहियों को यह सबक़ दे सकते थे लेकिन किसी सरकार से यह आशा नहीं की जा सकती थी कि वह ऐसा करेगी. रूसी सरकार के मानव प्रेम ने सरकार से यह भी करवा दिखाया.

एक क़ानून के अनुसार वेश्याओं के स्थानों में पाए गए मर्दों को गिरफ़्तार करने की मनाही करदी गई. लेकिन ऐसे लोगों का नाम, पता और पेशा नोट कर लिया जाता था. पब्लिक स्थानों और फ़ैक्ट्रीयों के नोटिस बोर्ड पर उनके नाम पते और पेशे मोटे मोटे अक्षरों में लिखकर नीचे लिख दिया जाता था "स्त्रियों का जिस्म ख़रीदने वाले." इस लोक लाज का ज़बरदस्त असर पड़ा.

पहले आर्थिक कठिनाइयों को दूर किया गया फिर जुर्म करने वालों को ख़तम किया गया. इसके बाद प्रचार आन्दोलन चलाया गया. लोग जाग्रत भी हो गए थे. लेक्चर, ड्रामे, सिनेमा, अख़बार सभी प्लेटफ़ार्म इन पापों के ख़िलाफ़ जुट गए.

हालत बदलने के बाद अब असल रोग की तरफ़ ध्यान दिया गया. दवा देने वाले अस्पतालों के बजाय ट्रेनिंग केन्द्र खोले गए. ख़राब कही जाने वाली स्त्रियाँ पहले एक जन-अदालत के सामने लाई जाती थीं, फिर जाँच पड़ताल के बाद उनको इन केन्द्रों में दाख़िल किया जाता था. ज़बरदस्ती किसी के साथ नहीं थी. न पुलिस का पहरा होता था और न किसी तरह की ताला बन्दी होती थी. पहले तो स्त्रियाँ ऐसे केन्द्रों में दाख़िल होने से घबराती थीं लेकिन

ن منورنجن کے ستھانوں پر وہ خاص دھیان
. پیشہ کرنے والیوں کو نہیں چھیڑا جاتا
ان کے ستھان بند نہیں کئے جاتے تھے۔
یہ آدیش دیا گیا کہ مکان کے مالکوں کا پتہ
جائے اور جب تک مالکوں کا پتہ نہ چلے اور
وا نہ مل جائے تب تک وہ گھر بند کر دیئے جائیں۔
ا کو اور جنتا کو چیتاونی دی گئی کہ وہ ویشیاؤں
ان کرنے کی کوئی بات نہ کریں. ویشیاؤں کو گرفتار نہیں
سکتا تھا، صرف دلال یا مالک مکان مجرموں کے
گواہی دینے کے لئے وہ عدالت میں بلائی جاسکتی تھیں۔

اس آندولن میں بھاگ لینے والے سب لوگوں کو
تھی کہ وہ ایسی عورتوں کو بالکل اپنے برابر سمجھیں'
مظلوم اور بے سہارا جان کر ہمدردی کا برتاؤ کریں'
میں نفرت بالکل نہ آنے دیں۔ ویشیائیں چاہے کچھ
یں' کیسا بھی رخ لیں لیکن ملیشیا کا کوئی آدمی
زبان نہ نکالے اور نہ اُن کا اپمان کرے۔ افسروں پر
تھی کہ وہ نام اور پتہ بھی ایسی عورتوں کا نوٹ
یں۔

سرکاری حکم کا یہ حصہ عجیب تھا — گاندھی جی
ستیاگرہیوں کو یہ سبق دے سکتے تھے لیکن کسی
سے یہ آشا نہیں کی جا سکتی تھی کہ وہ ایسا کرے
روسی سرکار کے مانو پریم نے سرکار سے یہ بھی کروا
یا۔

ایک قانون کے انوسار ویشیاؤں کے استھانوں میں پائے
مردوں کو گرفتار کرنے کی مناہی کر دی گئی۔ لیکن
لوگوں کا نام پتہ اور پیشہ نوٹ کر لیا جاتا تھا۔
استھانوں اور فیکٹریوں کے نوٹس بورڈ پر اِن کے نام
اور پیشے موٹے موٹے اکشروں میں لکھ کر نیچے لکھ
جاتا تھا " استریوں کا جسم خریدنے والے " . اس لوک
زبردست اثر پڑا۔

پہلے آرتھک کٹھنائیوں کو دور کیا گیا پھر جرم کرنے
کو ختم کیا گیا۔ اِس کے بعد پرچار آندولن چلایا
لوگ جاگرت بھی ہوگئے تھے۔ لکچر' ڈرامے' سنیمے'
سبھی پلیٹ فارم اِن پاپوں کے خلاف جٹ گئے۔

حالت بدلنے کے بعد اب اصل روگ کی طرف دھیان
گیا۔ دوا دینے والے اسپتالوں کے بجائے ٹریننگ کیندر
گئے۔ خراب کہی جانے والی استریاں پہلے ایک جن
کے سامنے لائی جاتی تھیں' پھر جانچ پڑتال کے
ان کو اِن کیندروں میں داخل کیا جاتا تھا۔ زبردستی
کے ساتھ نہیں تھی۔ نہ پولیس کا پہرہ ہوتا تھا اور
کسی طرح کی تالا بندی ہوتی تھی۔ پہلے تو استریاں
کیندروں میں داخل ہونے سے گھبراتی تھیں، لیکن

(2) मुल्क में फैली हुई बेरोज़गारी का एक हल ... क़ामी सरकारों को यह बताया गया कि कोआपरेटिव ...क्ट्री और फ़ार्म खोले जायें जिससे बेसहारा स्त्रियों को ...ाम मिल सके.

(3) तमाम औरतों को हौसला दिलाया गया कि वह ...कूलों और ट्रेनिंग केन्द्रों में दाख़िल हों. किसी पेशे और ...नअती कामों में हिस्सा लेने वाली औरतों के ख़िलाफ़ ...ोगों की जो बुरी धारना है, उसके ख़िलाफ़ यूनियन लड़े.

(4) अधिकारियों ने रहने सहने के लिये कोआपरेटिव ...थान बना दिये और बेघर बार औरतों और देहात से ...हर में आने वाली औरतों को घर मुहैया किये. यही ...औरतें ज़्यादातर वेश्या का पेशा अपना लेती थीं.

(5) बेघर बार बच्चों और बच्चियों की रक्षा के ...िये फ़ौरन क़ानून लागू किये गए.

(6) लोगों में जागृति लाने के लिये एक प्रचार ...ान्दोलन चलाया गया. विचार था कि सारा राष्ट्र वेश्या...न और गुप्त रोगों के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हो और सबके ...हयोग से इन बुराइयों का ख़ातमा किया जा सके.

इन क़ानूनों से भी ज़्यादा लाभ नहीं हुआ. राज के ...धिकारियों ने सोच विचार कर देखा कि जब तक ऐसे ...ोग मौजूद हैं जो इस पाप से रोज़ी कमाते हैं उस वक़्त ...क वेश्याओं का ख़ातमा नहीं हो सकता. क्योंकि औरतों ...ी थोड़ी सी भी कमज़ोरी से फ़ायदा उठाकर यह लोग ...न्हें इस पेशे में फँसा देते हैं. केन्द्री सरकार ने एक दूसरा ...ानून पास किया जिसके ज़रिये इस पाप के दलालों पर ...ीधा हमला किया जाना मुमकिन हो सका—

(1) ज़ार के ज़माने में पुलिसवाले वेश्याओं को तरह ...रह से तंग किया करते थे. अब क़ानून के ज़रिये पुलिस ...े कामों और क़ानून दोनों से वह साधन ख़तम कर दिये ...ए जिनसे वेश्याओं का तंग किया जाना मुमकिन था.

(2) एक ज़बरदस्त लड़ाई उन लोगों के ख़िलाफ़ ...ड़ी गई जो वेश्या काम से सीधे या नासीधे रुपया कमाते ...े. इस सम्बन्ध में मुक़ामी सरकारों को कड़ा रुख़ अख़्ति-...यार करने का हुक्म दिया गया.

(3) तमाम डाक्टरों और दवाओं की आसानियाँ सब ...ोगों का जो भी गुप्त रोगों से दुखी थे मुफ़्त मिलने लगीं.

मिलेशिया वाले नए क़ानूनों की स्पिरिट न समझ सके. ...न्धों के गोरखधन्धे में फँस कर रह गए. आख़िर सोवियत ...र्माताओं को इस काम के ख़ास क़ायदे बनाने पड़े. मिले-...शिया का काम सारे ऐसे स्थानों का पता लगाना ठहराया ...या जहाँ ऐसे काम कराए जाते थे. इस काम से किसी ...रह का भी सम्बन्ध रखने वालों को कड़ी सज़ा देना तय ...या. ऐसे घरों के मालिकों को आदमी का व्योपार करने ...ा दोषी ठहराया गया. मिलेशिया को हिदायत की गई

(2) ملک میں پھیلی ہوئی بیروزگاری کا ایک حل مقامی سرکاروں کو یہ بتایا گیا کہ کوآپریٹو فیکٹری اور فارم کھولے جائیں جس سے بے سہارا استریوں کو کام مل سکے۔

(3) تمام عورتوں کو حوصلہ دلایا گیا کہ وہ اسکولوں اور ٹریننگ کیندروں میں داخل ہوں۔ کسی پیشے اور صنعتی کاموں میں حصہ لینے والی عورتوں کے خلاف لوگوں کی جو بری دھارنا ہے اس کے خلاف یونین لڑے۔

(4) ادھیکاریوں نے رہنے سہنے کے لئے کوآپریٹو استھان بنا دیئے اور بے گھر بار عورتوں اور دیہات سے شہر میں آنے والی عورتوں کو گھر مہیا کئے۔ یہی عورتیں زیادہ تر ویشیا کا پیشہ اپنا لیتی تھیں۔

(5) بے گھر بار بچوں اور بچیوں کی رکشا کے لئے فوراً قانون لاگو کئے گئے۔

(6) لوگوں میں جاگرتی لانے کے لئے ایک پرچار آندولن چلایا گیا۔ وچار تھا کہ سارا راشٹر ویشیا پن اور گپت روگوں کے خلاف اٹھ کھڑا ہو اور سب کے سہیوگ سے ان برائیوں کا خاتمہ کیا جا سکے۔

ان قانونوں سے بھی زیادہ لابھ نہیں ہوا۔ راج کے ادھیکاریوں نے سوچ بچار کر دیکھا کہ جب تک ایسے لوگ موجود ہیں جو اس پاپ سے روزی کماتے ہیں اس وقت تک ویشیاؤں کا خاتمہ نہیں ہوسکتا۔ کیونکہ عورتوں کی تھوڑی سی بھی کمزوری سے فائدہ اٹھا کر یہ لوگ انہیں اس پیشے میں پھنسا دیتے ہیں۔ کیندری سرکار نے ایک دوسرا قانون پاس کیا جسکے ذریعے اس پاپ کے دلالوں پر سیدھا حملہ کیا جانا ممکن ہوسکا —

(1) زار کے زمانے میں پولیس والے ویشیاؤں کو طرح طرح سے تنگ کیا کرتے تھے۔ اب قانون کے ذریعے پولیس کے کاموں اور قانون دونوں سے وہ سادھن ختم کر دیئے گئے جن سے ویشیاؤں کا تنگ کیا جانا ممکن تھا۔

(2) ایک زبردست لڑائی ان لوگوں کے خلاف چھیڑی گئی جو ویشیا کام سے سیدھے یا نا سیدھے روپیہ کماتے تھے۔ اس سمبندھ میں مقامی سرکاروں کو کڑا رخ اختیار کرنے کا حکم دیا گیا۔

(3) تمام ڈاکٹروں اور دواؤں کی آسانیاں سب لوگوں کو جو بھی گپت روگوں سے دکھی تھے مفت ملنے لگیں۔

ملیشیا والے نئے قانونوں کی اسپرٹ نہ سمجھ سکے۔ ھندوں کے گورکھ دھندے میں پھنس کر رہ گئے۔ آخر سوویت نرماتاؤں کو اس کام کے خاص قاعدے بنانے پڑے۔ ملیشیا کا کام سارے ایسے استھانوں کا پتہ لگانا ٹھہرایا گیا جہاں ایسے کام کرائے جاتے تھے۔ اس کام سے کسی طرح کا بھی سمبندھ رکھنے والوں کو کڑی سزا دینا طے ہوا۔ ایسے گھروں کے مالکوں کو آدمی کا بیوپار کرنے کا دوشی ٹھہرایا گیا۔ ملیشیا کو ہدایت کی گئی

नहीं बल्कि सवाल यह है कि ऐसी हालत पैदा की जाय जिससे मर्दों को भी पाप करने की आज़ादी में रुकावट पैदा हो. रूसी विज्ञानियों ने इस मसले को ख़ूब समझ लिया था. स्त्रियों को उन्होंने सताया हुआ क़रार दिया और हालात बदलने में लग गये जिस से औरतें समाज के अत्याचार और ज़ुल्म से ख़ुद छुटकारा पाकर अपना सदाचार ऊँचा ले जा सकें.

ज़ार युग में दो तरह के कार्ड तमाम रिआया में तक़सीम किये जाते थे. एक सफ़ेद कार्ड दूसरे पीले कार्ड. सिर्फ़ सफ़ेद कार्ड वाले नागरिक माने जाते थे पीले कार्ड वाले नहीं. वेश्याओं को पीले कार्ड दिये जाते थे. एक मरतबा जिसे पीला कार्ड मिल जाता था फिर उसको सफ़ेद कार्ड कभी नहीं मिलता था. एक दफ़ा भटक जाने पर सारी ज़िन्दगी के लिये तौबा प्रायश्चित्त के दरवाज़े बन्द होजाते थे.

नए रूस में पीले कार्ड की प्रथा को मिटा दिया गया. सब औरतों को, चाहे वह कोई भी काम करती रही हों, रूस का नागरिक मान लिया गया. क़ानून पास किये गये जिसके ज़रिये स्त्रियों को माली, समाजी और राजकाजी आज़ादी दी गई. पर इससे वेश्यापन के मिटाने में कोई ख़ास कामयाबी नहीं हुई.

सन '21 तक जिन्सी गड़बड़ी और बढ़ गई. कम्युनिस्ट नेता चुप नहीं बैठे. सन' 23 में सवालों का एक चिट्ठा तैयार किया गया जो हर दरजे, हर वर्ग की औरतों के पास भेजा गया और यह यक़ीन दिला दिया गया कि उनके जवाब गुप्त रक्खे जायँगे. जवाबों के देखने से पता चला कि पेशे वाली और ग़ैर पेशे वाली औरतों में कोई ज़्यादा फ़रक़ नहीं है. एक सवाल के जवाब में बहुत सी औरतों ने, जिस में ब्याही और कुँआरी दोनों शामिल थीं, यह उत्तर भेजा कि ज़्यादातर सूरतों में उन्हों ने प्रेम के बजाय दूसरे कारनों से जिन्सी सम्बन्ध में भाग लिया है. ज़्यादातर औरतों ने बिना पूछे भी यह लिखा कि अगर उन्हें रोटी रोज़गार की गारन्टी हो जाय तो वह इस गन्दे पेशे में हरगिज़ न रहेंगी.

सन् '25 में सोवियत सरकार ने एक क़ानून पास किया जिसके अनुसार नीचे लिखे काम किये गए—

(1) मिलीशिया यानी वालंटियर, ट्रेड यूनियन की सहायता से हर तरह इस बात की रोक थाम करेगी कि कोई मज़दूरी या नौकरी करने वाली औरत अपने काम से न हटाई जाय यानी किसी भी परिस्थिति में अपने पैरों पर खड़ी कुंआरी लड़कियों को, गर्भ (हमल) वाली औरतों को, उन औरतों को जिन के छोटे बच्चे हों और नौजवान लड़कियों को जो अपने कुटुम्ब के साथ न रहती हों, काम से हरगिज़ अलग न किया जाय.

نہیں بلکہ سوال یہ ہے کہ ایسی حالت پیدا کی جائے جس سے مردوں کی بھی پاپ کرنے کی آزادی میں رکاوٹ پیدا ہو. روسی وگیانیوں نے اس مسئلے کو خوب سمجھ لیا تھا. استریوں کو انہوں نے ستایا ہوا قرار دیا اور حالات بدلنے میں لگ گئے جس سے عورتیں سماج کے اتیاچار اور ظلم سے خود چھٹکارا پاکر اپنا سداچار اونچا لے جاسکیں.

زار یگ میں دو طرح کے کارڈ تمام رعایا میں تقسیم کئے جاتے تھے. ایک سفید کارڈ دوسرے پیلے کارڈ. صرف سفید کارڈ والے ناگرک مانے جاتے تھے پیلے کارڈ والے نہیں. ویشیاؤں کو پیلے کارڈ دیئے جاتے تھے. ایک مرتبہ جسے پیلا کارڈ مل جاتا تھا پھر اس کو سفید کارڈ کبھی نہیں ملتا تھا. ایک دفعہ بھٹک جانے پر ساری زندگی کے لئے توبہ پرایشچت کے دروازے بند ہوجاتے تھے.

نئے روس میں پیلے کارڈ کی پرتھا کو مٹا دیا گیا. سب عورتوں کو، چاہے وہ کوئی بھی کام کرتی رہی ہوں، روس کا ناگرک مان لیا گیا. قانون پاس کئے گئے جسکے ذریعہ استریوں کو مالی، سماجی اور راج کاجی آزادی دی گئی. پر اس سے ویشیا پن کے مٹانے میں کوئی خاص کامیابی نہیں ہوئی.

سن 21 تک جنسی گڑبڑی اور بڑھ گئی. کمیونسٹ نیتا چپ نہیں بیٹھے. سن 23 میں سوالوں کا ایک چٹھا تیار کیا گیا، جو ہر درجے ہر ورگ کی عورتوں کے پاس بھیجا گیا اور یہ یقین دلایا گیا کہ ان کے جواب گپت رکھے جائیں گے. جوابوں کے دیکھنے سے پتہ چلا کہ پیشے والی اور غیر پیشے والی عورتوں میں کوئی زیادہ فرق نہیں ہے. ایک سوال کے جواب میں بہت سی عورتوں نے، جس میں بیاہی اور کنواری دونوں شامل تھیں، یہ اتر بھیجا کہ زیادہ تر صورتوں میں انہوں نے پریم کے بجائے دوسرے کارنوں سے جنسی سمبندھ میں بھاگ لیا ہے. زیادہ تر عورتوں نے بنا پوچھے بھی یہ لکھا کہ اگر انہیں روٹی روزگار کی گارنٹی ہوجائے تو وہ اس گندے پیشے میں ہرگز نہ رہیں گی.

سن 25 میں سوویت سرکار نے ایک قانون پاس کیا جسکے انوسار نیچے لکھے کام کئے گئے—

(1) ملیشیا یعنی والنٹیر، ٹریڈ یونین کی سہایتا سے ہر طرح اس بات کی روک تھام کرے گی کہ کوئی مزدوری یا نوکری کرنے والی عورت اپنے کام سے نہ ہٹائی جائے یعنی کسی بھی پرستھتی میں اپنے پیروں پر کھڑی کنواری لڑکیوں کو، گربھ (حمل) والی عورتوں کو، ان عورتوں کو جنکے چھوٹے بچے ہوں اور نوجوان لڑکیوں کو جو اپنے کٹمب کے ساتھ نہ رہتی ہوں، کام سے ہرگز الگ نہ کیا جائے.

असूलों के आधार पर इनसानी नस्ल को ढालना था. दूसरे मैदानों में उनके कारनामों से इस समय हमें मतलब नहीं है. आइये देखें जिन्सी गड़बड़ी, वेश्यापन, पेट गिराना, शराब पीना वग़ैरा मैदानों में रूस वालों ने क्या किया. 'क्या किया' से ज़्यादा हमारे लिये 'कैसे किया' महत्व की चीज़ है. यह बुराइयाँ हर देस में हैं, हमारे देस में भी हैं. जब तक इनसे छुटकारा न मिलेगा, मानव समाज में सदाचार का स्तर नहीं ऊँचा हो सकता !

सोवियत विज्ञानियों ने तारीख़ के पन्ने उलट डाले. एलोपैथी की तरह उन्होंने झट रोग का इलाज करना नहीं शुरू किया बल्कि यूनानी और वैद्यक की तरह पहले रोग की जड़ मालूम करने में लग गए. उन्होंने देखा कि असली समस्या माली और समाजी है और यह फ़ारमूला निकाला कि "पति पत्नी को एक दूसरे के सम्बन्ध में जानकारी और उनके प्रेम में लगातार बढ़ौती ही वह नींव है जिस पर असली सदाचारी समाज खड़ा किया जा सकता है." यह मक़सद उन्होंने अपने सामने रक्खा. रास्ते नए नए अख़्तियार किये लेकिन मंज़िल से कभी नज़र नहीं हटाई.

जब पाकर वह लोग इलाज पर डट गए उनका इलाज ज़ाहिरी रोग अच्छा करने के लिये नहीं था बल्कि उस सिस्टम को अच्छा करने के लिये था जिसने यह रोग पैदा कर दिया था. दूसरे मुल्कों में सिस्टम का इलाज करने के बजाय रोग का इलाज किया जाता है. कभी रोग अच्छा तो हो जाता है लेकिन जब पलटा लेता है तो और भयानक रोग अपने साथ लाता है.

कम्युनेस्ट राज के निर्माता इसी नतीजे पर पहुंचे कि जब तक औरतों को पूरी माली, समाजी और राजकाजी आज़ादी न हो, स्त्री पुरुश सम्बन्ध केवल प्रेम के आधार पर होगा ही नहीं और जब तक यह बात नहीं होगी तब तक जिन्सी सदाचार भी ऊपर नहीं उठ सकता. दूसरे मुल्कों में ऐसे क़ानून तो ज़रूर हैं जिन के अनुसार किसी स्त्री की इच्छा के ख़िलाफ़ उसकी शादी करने वाले को सज़ा मिल सकती है लेकिन ऐसा कोई क़ानून नहीं है जो परिस्थितियों को इस तरह बदल सके कि वह स्त्रियाँ ख़ुद ही अपनी इच्छा के ख़िलाफ़ किसी दूसरे मोह में पड़कर शादी करने पर मजबूर न हों. क़ानून की किताबों में तो औरतों को माली, समाजी आज़ादी है लेकिन अमल में मामला उलटा है. बेचारी मजबूर हैं कि अपनी अन्तरात्मा को धोका दें. स्त्रियों की आज़ादी का मतलब बहुत से देसों में यही समझा गया कि स्त्रियों को भी पाप करने की आज़ादी मर्दों के बराबर मिल जाय. इसी नक़ल में शराब पीना, सिगरेट पीना वग़ैरा बुरे काम औरतों ने शुरू कर दिये सवाल यह नहीं है कि औरतों को भी पाप करने की आज़ादी अधिक देवी

ولوں کے آدھار پر انسانی نسل کو ڈھالنا تھا .
سرے میدانوں میں انکے کارناموں سے اِس سمے ہمیں
طلب نہیں ہے . آئیے دیکھیں جنسی گڑبڑی' ویشیاپن'
ٹ گرانا' شراب پینا وغیرہ میدانوں میں روس والوں نے
کیا . 'کیا کیا' سے زیادہ ہمارے لئے 'کیسے کیا' مہتو
چیز ہے . یہ برائیاں ہر دیس میں ہیں' ہمارے دیس
ں بھی ہیں . جبتک اِن سے چھٹکارا نہ ملے گا مانو
اج میں سداچار کا اسطر نہیں اونچا ہوسکتا !

سوویت وگیانیوں نے تاریخ کے پنے الٹ ڈالے . ایلو
تھی کی طرح اُنھوں نے جھٹ روگ کا علاج کرنا نہیں
وع کیا بلکہ یونانی اور ویدک کی طرح پہلے روگ کی
معلوم کرنے میں لگ گئے . اُنھوں نے دیکھا کہ اصلی
سیا مالی اور سماجی ہے اور یہ فارمولا نکالا کہ " پتی
ی کو ایک دوسرے کے سمبندھ میں جانکاری اور اُنکے
م میں لگاتار بڑھوتی ہی وہ نیو ہے جس پر اصلی
اچاری سماج کھڑا کیا جاسکتا ہے ." یہ مقصد اُنھوں نے
سامنے رکھا . راستے نئے نئے اختیار کئے لیکن منزل
کبھی نظر نہیں ہٹائی .

جو پاکر وہ لوگ علاج پر ڈٹ گئے . اُن کا علاج ظاہری
ب اچھا کرنے کے لئے نہیں تھا بلکہ اُس سسٹم کو اچھا
کیلئے تھا جس نے یہ روگ پیدا کردیا تھا . دوسرے
وں میں سسٹم کا علاج کرنے کے بجائے روگ کا علاج کیا
ا ہے . کبھی روگ اچھا تو ہوجاتا ہے لیکن جب پلٹا
ا ہے تو اور بھیانک روگ اپنے ساتھ لاتا ہے .

کمیونسٹ راج کے نرماتا اِسی نتیجے پر پہنچے کہ
تک عورتوں کو پوری مالی' سماجی اور راج کاجی
ی نہ ہو' استری پرش سمبندھ کیول پریم کے آدھار
ہوگا ہی نہیں اور جبتک یہ بات نہیں ہوگی تبتک
سی سداچار بھی اوپر نہیں اُٹھ سکتا . دوسرے
وں میں ایسے قانون تو ضرور ہیں . جنکے انوسار
ی استری کی اِچھا کے خلاف اُس کی شادی
والے کو سزا مل سکتی ہے لیکن ایسا کوئی
ن نہیں ہے جو پرستھتیوں کو اس طرح بدل سکے کہ
ستریاں خود ہی اپنی اِچھا کے خلاف کسی دوسرے
میں پڑکر شادی کرنے پر مجبور نہ ہوں . قانون کی
بوں میں تو عورتوں کو مالی' سماجی آزادی ہے لیکن عمل
معاملہ اُلٹا ہے . بیچاری مجبور ہیں وہ اپنی
آتما کو دھوکا دیں . استریوں کی آزادی کا مطلب
ت سے دیسوں میں یہی سمجھا گیا کہ استریوں
ھی پاپ کرنے کی آزادی مردوں کے برابر مل جائے .
نقل میں شراب پینا' سگریٹ پینا وغیرہ برے
رتوں نے شروع کر دیئے . سوال یہ نہیں ہے کہ
ں کو بھی پاپ کرنے کی آزادی ادھک دے دی

ते. किसी ने कहा रूस में सदाचार को ख़तम किया जा ा है, कोई बोला रूस में स्त्रियाँ राष्ट्र की मिलकियत बना जायँगी, किसी ने बाँग दी कि रूसी ब्याह की प्रथा उठा ो और सरकारी संस्थाओं के ज़रिये बच्चे पैदा करायँगे. र बच्चों के माँ बाप का पता निशान भी न मालूम होगा. ख की बात यह है कि यह ग़लत धारना कम्युनिज़्म के र अब भी मँढ़ी जाती है और ख़ास कर उन देशों ज़रिये जो ख़ुद गंदगी में फँसे हुए हैं. लेनिन का चे लिखा बयान इन ग़लत धारनाओं का ज़बरदस्त वाब है—

“ बेशक प्यास बुझानी चाहिये. लेकिन एक तन्दुरुस्त ादमी अच्छी हालतों में क्या परनाले में लेट जायगा और न्दा पानी पियेगा ? और क्या कोई आदमी उस गिलास पानी पियेगा जिसको बहुत से लोगों ने झूटा कर दिया ? समाजी पहलू इन सब बातों से भी अधिक महत्व का पानी पाना एक निजी मामला है लेकिन वासना को ाने में दो ज़िन्दगियों का सम्बन्ध हो जाता है और एक सरी नई ज़िन्दगी पैदा होती है. यही ज़िन्दगी वासना एक समाजी रूप देता है और समाज की तरफ़ अपने ज़ के पालन का आदेश देती है. कम्युनिस्ट होने के नाते रो बराबर भी मेरी हमदर्दी “ पानी का गिलास ” वाली रना से नहीं है हालाँकि लोग इसे “ प्रेम तृप्ति ” का भावना नाम देते हैं ! मेरे लिये वासना की आज़ादी न ई चीज़ है और न कम्युनिस्ट है. शायद आप लोगों को द हो, पिछली सदी के बीच में “ दिल की आज़ादी ” म से इस चीज़ का प्रचार रोमांचक साहित्य में किया या था. उस समय आज के मुक़ाबले में प्रचार ज़्यादा मझ बूझ से किया जाता था, अमल के बारे में मैं कोई सला नहीं दे सकता.”

लेनिन से पूछा गया कि जिन्सी (सेक्सुअल) आज़ादी विरोध कहाँ तक किया जायगा ? उसने जवाब दिया, मैं अपने विरोध से हमेशगी के कुँआर पन का प्रचार हीं करना चाहता. बिलकुल नहीं. कम्युनिज़्म रूखे पन के जाय जीवन का आनन्द, ज़िन्दगी की तड़प लायगा और जिन्सी मानों में तृप्त या आसूदा जीवन इन चीज़ों को ाने में सहायक होगा. मेरे विचार में जिन्सी आज़ादी पर ो ज़ोर आज कल दिया जा रहा है वह न तो आनन्द ाता है और न ज़िन्दगी में तड़प पैदा करता है बल्कि जीवन ानन्द और तड़प छीन लेता है. इस इनक़लाब के युग में ह बेहद बुरी बात है.’’

लोग कुछ भी कहें, पर कम्युनिस्ट राज क़ायम करने ालों के सामने यह ग़लत धारनाएँ नहीं थीं. उन्हें रूस वालों सदाचार उभारना था. उन्हें न सिर्फ़ आर्थिक आधार र एक नया मानव समाज तैयार करना था बल्कि साइन्सी

لگے ۔ کسی نے کہا روس میں سداچار کو ختم کیا جا رہا ہے' کوئی بولا روس میں استریاں راشٹر کی ملکیت بنا دی جائیں گی' کسی نے بانگ دی کہ روسی بیاہ کی پرتھا اٹھا دیں گے اور سرکاری سنستھاؤں کے ذریعے بچے پیدا کرائیں گے ۔ ان بچوں کے ماں باپ کا پتہ نشان بھی نہ معلوم ہوگا ۔ دکھ کی بات یہ ہے کہ یہ غلط دھارنا کمیونزم کے سر' اب بھی منڈھی جاتی ہے اور خاص کر اُن دیسوں کے ذریعے جو خود گندگی میں پھنسے ہوئے ہیں ۔ لینن کا نیچے لکھا بیان اِن غلط دھارناؤں کا زبردست جواب ہے ۔

'' بے شک پیاس بجھانی چاہئے. لیکن ایک تندرست آدمی اچھی حالتوں میں کیا پرنالے میں لوٹ جائے گا اور گندا پانی پئے گا؟ اور کیا کوئی آدمی اُس گلاس سے پانی پئے گا جسکو بہت سے لوگوں نے جھوٹا کر دیا ہے؟ سماجی پہلو ان سب باتوں سے بھی ادھک مہتو کا ہے ۔ پانی پینا ایک نجی معاملہ ہے لیکن واسنا کو بجھانے میں دو زندگیوں کا سمبندھ ہوجاتا ہے اور ایک تیسری نئی زندگی پیدا ہوتی ہے ۔ یہی زندگی واسنا کو ایک سماجی روپ دیتی ہے اور سماج کی طرف اپنے فرض کے پالن کا آدیش دیتی ہے ۔ کمیونسٹ ہونے کے ناتے ذرہ برابر بھی میری ہمدردی '' پانی کا گلاس '' والی دھارنا سے نہیں ہے حالانکہ لوگ اسے '' پریم ترپتی '' کا بھاونا نام دیتے ہیں ! میرے لئے واسنا کی یہ آزادی نہ نئی چیز ہے اور نہ کمیونسٹ ہے ۔ شاید آپ لوگوں کو یاد ہو' پچھلی صدی کے بیچ میں '' دل کی آزادی '' نام سے اِس چیز کا پرچار رومانٹک ساہتیہ میں کیا گیا تھا ۔ اُس سمے آجکے مقابلے میں پرچار زیادہ سمجھ بوجھ سے کیا جاتا تھا' عمل کے بارے میں میں کوئی فیصلہ نہیں دے سکتا ۔''

لینن سے پوچھا گیا کہ جنسی (سکسول) آزادی کا وِرودھ کہاں تک کیا جائے گا؟ اُس نے جواب دیا— '' میں اپنے وِرودھ سے ہمیشگی کے کنوار پن کا پرچار نہیں کرنا چاہتا ۔ بالکل نہیں ۔ کمیونزم روکھے پن کے بجائے جیون کا آنند' زندگی کی تڑپ لائے گا اور جنسی معنوں میں ترپت یا آسودہ جیون اِن چیزوں کو لانے میں سہایک ہوگا ۔ میرے وچار میں جنسی آزادی پر جو زور آج کل دیا جا رہا ہے وہ نہ تو آنند لاتا ہے اور نہ زندگی میں تڑپ پیدا کرتا ہے بلکہ جیون سے آنند اور تڑپ چھین لیتا ہے ۔ اِس انقلاب کے یگ میں یہ بے حد بری بات ہے ۔''

لوگ کچھ بھی کہیں' پر کمیونسٹ راج قائم کرنے والوں کے سامنے یہ غلط دھارنائیں نہیں تھیں ۔ انہیں روس والوں کے کا سداچار اُبھارنا تھا ۔ انہیں نہ صرف آرتھک آدھار پر ایک نیا مانو سماج تیار کرنا تھا بلکہ سائنسی

روس میں سدا چار

(بھائی مجیب رضوی)

(1)

سدا چار یعنی اخلاق پر ہزاروں من سیاہی اور لاکھوں
کاغذ خرچ کئے گئے ہیں . طرح طرح کے وچار پرکٹ کئے
ہیں . سداچار سادھن ہے یا سادھیہ' راستہ ہے یا منزل
پر بھی بات کے بتنگڑے ہوئے ہیں . ہمیں اُن بحثوں
طلب نہیں ہے . دیکھنا یہ ہے کہ آخر جنتا سداچار
کن ارتھوں میں استعمال کرتی ہے . جنتا کے سامنے
شبد کے ارتھ ہیں—چوری' بدمعاشی' بےایمانی نہ کرنا
استری پرش سمبندھ میں سماج کے اچھے بندھنوں کا
کرنا . اسی ارتھ میں ہم اِس شبد پر روشنی
ہیں اور دیکھتے ہیں کہ کہاں تک سوویت روس نے
یہاں کے لوگوں کے سداچار کو اوپر اُٹھایا ہے ؟

سن 17 کے روسی انقلاب کے بعد عجیب ہوا چل پڑی .
ن اُن چیزوں کی قیمت کیسے سمجھ سکتا ہے جن پر
کو سوچنے کا موقع ہی نہیں ملتا . اتیاچاروں میں
اور روزی کیلئے دھینگا مشتی کرتے ہوئے آدمی کو اصل
سوچنے کا کوئی موقع ہی نہیں ملتا . جب ایسا
ن اُبھرتا ہے تو ہر چیز کو اپنے اوپر ظلم کا سادھن
سمجھ کر توڑنے کی کوشش کرتا ہے . روسی انقلاب کے شروع
یہ ہونا قدرتی بات تھی . کچھ نوجوانوں اور بدھی
جیوں نے سداچار کو امیروں کا چونچلہ کہنا شروع کیا .
مارکس کے نعرے " تمہارے پاس ہے ہی کیا کھونے
کے سوائے اپنی زنجیروں کے " کا ارتھ اِن سجنوں نے یہ
"تم کچھ نہیں کھوؤ گے سوائے اپنے اوپر سماجی بندھنوں
" جس طرح یہ لوگ سمجھتے تھے کہ قلم کی ایک
حرکت سے لینن سوشلسٹ راج قائم کر دے گا جس میں
بھی چیز پاجانا مشکل نہ ہوگا' اسی طرح اِن لوگوں نے
طرح کی اور بھی غلط دھارنائیں پھیلا دیں . لوگوں
بتایا کہ استری پرش سمبندھ بہت سیدھا سادا ہے .
بھوک لگتی ہے کھانا کھالینا چاہئے' پیاس لگے پانی پینا
چاہئے اور واسنا زور کرے تو اُسے بھی پوری کر لینا چاہئے .
اِن باتوں کا کارل مارکس یا کمیونزم کے اصولوں کے ساتھ
کوئی سمبندھ نہیں تھا .

اِن لوگوں کی غلطیوں کا نتیجہ یہ ہوا کہ روس میں
کسبیا پن بڑھ گیا . بھلی عورتوں میں بھی ایک درجے بدچلنی
پھیل گئی . روس ورودھی حلقوں کو چلی پکار کا موقع
مل گیا . قاضی جی شہر کے اندیشے سے دبلے ہوئے

रूस में सदाचार

(भाई मुजीब रिज़वी)

(1)

सदाचार यानी इख़लाक़ पर हज़ारों मन सियाही और लाखों मन काग़ज़ ख़र्च किये गये हैं. तरह तरह के विचार प्रकट किये गए हैं. सदाचार साधन है या साध्य, रास्ता है या मंज़िल इस पर भी बात के बतंगड़े हुए हैं. हमें उन बहसों से मतलब नहीं है. देखना यह है कि आख़िर जनता सदाचार शब्द किन अर्थों में इस्तेमाल करती है. जनता के सामने इस शब्द के अर्थ हैं—चोरी, बदमाशी, बेईमानी न करना और स्त्री पुरुश सम्बन्ध में समाज के अच्छे बंधनों का पालन करना. इसी अर्थ में हम इस शब्द पर रोशनी डालते हैं और देखते हैं कि कहाँ तक सोवियत रूस ने अपने यहाँ के लोगों के सदाचार को ऊपर उठाया है ?

सन् 17 के रूसी इनक़लाब के बाद अजीब हवा चल पड़ी. इनसान उन चीज़ों की क़ीमत कैसे समझ सकता है जिन पर उसको सोचने का मौक़ा ही नहीं मिलता. अत्याचारों में पिसे और रोज़ी के लिये धींगा-मुशती करते हुए आदमी को असल में सोचने का कोई मौक़ा ही नहीं मिलता. जब ऐसा इनसान उभरता है तो हर चीज़ को अपने ऊपर ज़ुल्म का साधन समझ कर तोड़ने की कोशिश करता है. रूसी इनक़लाब के शुरू में यह होना क़ुदरती बात थी. कुछ नौजवानों और बुद्धिजीवियों ने सदाचार को अमीरों का चोंचला कहना शुरू किया. कार्ल मार्क्स के नारे "तुम्हारे पास है ही क्या खोने के लिये सिवाय अपनी ज़ंजीरों के" का अर्थ इन सज्जनों ने यह लगाया "तुम कुछ नहीं खोओगे सिवाय अपने ऊपर समाजी बंधनों के" जिस तरह यह लोग समझते थे कि क़लम की एक हरकत से लेनिन सोशलिस्ट राज क़ायम कर देगा जिस में कोई भी चीज़ पाजाना मुशकिल न होगा, उसी तरह इन लोगों ने तरह तरह की और भी ग़लत धारनाएँ फैलादीं. लोगों को बताया कि स्त्रीपुरुश सम्बन्ध बहुत सीधा साधा है. भूक लगती है खाना खा लेना चाहिये, प्यास लगे पानी पीना चाहिये और वासना ज़ोर करे तो उसे भी पूरी कर लेना चाहिये. पर इन बातों का कार्ल मार्क्स या कम्युनिज़्म के असूलों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था.

इन लोगों की ग़लतियों का नतीजा यह हुआ कि रूस में वेश्यापन बढ़ गया. भली औरतों में भी एक दरजे बदचलनी फैल गई. रूस विरोधी हलक़ों को चिल्ली पुकार का मौक़ा मिल गया. क़ाज़ी जी शहर के अन्देशे से दुबले होने

सूफ़ियों की संगत में

(भाई गु॰ म॰)

मेरे एक दोस्त के यहाँ एक दफ़ा एक सूफ़ी मेहमान ठहरे हुए थे. उन के बारे में मैंने ऐसा सुना था कि चालीस बरस तक उन्होंने एक जंगल में एक दरख़्त के नीचे रह कर ख़ामोशी की साधना की थी. एक दिन उन पर प्रभू की कृपा हुई और उनकी अन्दर की आंखें और उनकी दिल की गांठें सब खुल गईं. इस लिये जब कभी उन से कोई पूछता—" साहबे मन ! आप अपनी साधना का मन्तर तो बताइये." तो आप जवाब में फ़रमाते—" अन्दर और बाहर से चुप रहने की कोशिश करो जब तुम चुप रहना सीख जाओगे तो वह जो हर जगह मौजूद है, बाहर और भीतर भी, बोलना शुरू करेगा. अब तो तुम उसे बोलने का एक मौक़ा तक नहीं देते.''

एक शाम मैं उन ही सूफ़ी साहब से मिलने गया आप हुक्का पी रहे थे. आप के इर्द गिर्द फ़रश पर एक हिन्दू, एक मुसलमान, एक पारसी और एक ईसाई साहबान बैठे हुए थे. सूफ़ी साहब की आंखें बन्द थीं. मगर उन से जो मिलने आए थे उनकी आंखें खुली थीं और सूफ़ी साहब के चमकते चेहरे पर जमी हुई थीं.

यकायक बरसात होने लगी. मगर कुछ देर के बाद बरसात रुक गई. तब सूफ़ी साहब ने अपनी आंखें खोलीं और सब पर अपनी करम कृपा की किरन डाल कर बोलने लगे—' अभी ही बरसात पड़ी थी. वह तो मालिक की दया की बरसात थी. किसी समन्दर के किनारे पर बरसों से जो एक सीप बरसात के एक क़तरे के इन्तज़ार में था आज उसके दिल की मुराद पूरी हुई होगी. बरसात का एक क़तरा उसके मुँह में पड़ा होगा और वह अब एक मोती बन गया होगा. लेकिन हम सब पर मालिक की दया की बरसात कब पड़ेगी ? मगर पड़े भी कैसे क्योंकि हम सारा दिन ऐसी दौड़ धूप में लगे रहते हैं कि हमें चुपचाप बैठ कर इन्तज़ार करना आता ही नहीं और न ऐसा करने की कभी ख़्वाहिश ही होती है. ख़ुदावन्द ताला से दुआ करना यानी ख़ुदावन्द ताला का इन्तज़ार करना है. मगर दुआ भी तो लोग करना नहीं चाहते. वह तो काम के क़ैदख़ाने में या तो बन्द रहते हैं और नहीं तो दाम के दाम में फँसे रहते हैं."

इतना कहकर सूफ़ी साहब की आँखें फिर बन्द होगईं. बंद होगईं ? नहीं नहीं, अपने दिलबर के दीदार के लिये वह खुल गईं क्योंकि दिलबर को तो सिर्फ़ बन्द आँखों से ही देखा जाता है न. ऐसा है रूहानी ज़िन्दगी का करिश्मा !

صوفیوں کی سنگت میں

(بھائی گ . م .)

میرے ایک دوست کے یہاں ایک دفعہ ایک صوفی مہمان ٹھہرے ہوئے تھے . اُنکے بارے میں میں نے ایسا سنا تھا کہ چالیس برس تک اُنھوں نے ایک جنگل میں ایک درخت کے نیچے رہ کر خاموشی کی سادھنا کی تھی . ایک دن اُن پر پربھو کی کرپا ہوئی اور اُن کی اندر کی آنکھیں اور اُنکی دل کی گانٹھیں سب کھل گئیں . اس لئے جب کبھی اُن سے کوئی پوچھتا—" صاحب من ! آپ اپنی سادھنا کا منتر تو بتایئے ." تو آپ جواب میں فرماتے—" اندر اور باہر سے چپ رہنے کی کوشش کرو . جب تم چپ رہنا سیکھ جاؤگے تو وہ جو ہر جگہ موجود ہے ' باہر اور بھیتر "بھی" بولنا شروع کرے گا . اب تو تم اسے بولنے کا ایک موقع تک نہیں دیتے ."

ایک شام میں اِن ہی صوفی صاحب سے ملنے گیا . آپ حقہ پی رہے تھے . آپکے اردگرد فرش پر ایک ہندو' ایک مسلمان' ایک پارسی اور ایک عیسائی صاحبان بیٹھے ہوئے تھے . صوفی صاحب کی آنکھیں بند تھیں . مگر اُن سے جو ملنے آئے تھے اُنکی آنکھیں کھلی تھیں اور صوفی صاحب کے چمکتے چہرے پر جمی ہوئی تھیں .

یکایک برسات ہونے لگی . مگر کچھ دیر کے بعد برسات رک گئی . تب صوفی صاحب نے اپنی آنکھیں کھولیں اور سب پر اپنی کرم کرپا کی کرن ڈالکر بولنے لگے—' ابھی ہی برسات پڑی تھی . وہ تو مالک کی دیا کی برسات تھی کسی سمندر کے کنارے پر برسوں سے جو ایک سیپ برسات کے ایک قطرے کے انتظار میں تھا آج اُس کے دل کی مراد پوری ہوئی ہوگی . برسات کا ایک قطرا اُس کے منہ میں پڑا ہوگا اور وہ اب ایک موتی بن گیا ہوگا . لیکن ہم سب پر مالک کی دیا کی برسات کب پڑے گی ؟ مگر پڑے بھی کیسے کیونکہ ہم سارا دن ایسی دوڑ دھوپ میں لگے رہتے ہیں کہ ہمیں چپ چاپ بیٹھکر انتظار کرنا آتا ہی نہیں اور نہ ایسا کرنے کی کبھی خواہش ہی ہوتی ہے . خداوند تعالیٰ سے دعا کرنا یعنی خداوند تعالیٰ کا انتظار کرنا ہے . مگر دعا بھی تو لوگ کرنا نہیں چاہتے . وہ تو کام کے قید خانے میں یا تو بند رہتے ہیں اور نہیں تو دام کے دام میں پھنسے رہتے ہیں ."

اتنا کہکر صوفی صاحب کی آنکھیں پھر بند ہوگئیں . بند ہوگئیں ؟ نہیں نہیں ' اپنے دلبر کے دیدار کیلئے وہ کھل گئیں . کیونکہ دلبر کو تو صرف بند آنکھوں سے ہی دیکھا جاتا ہے نہ . ایسا ہے روحانی زندگی کا کرشمہ !

उस मज़हबे इनसानियत, उस मानव धर्म को क़ायम करना है जो सब अलग अलग दीन धर्मों की जड़ है, जो सब की तह में है, जो सब में बराबर मौजूद है और जो इन सब अलग अलग दीन धर्मों को एक दूसरे से मिलाता और उनका नाता जोड़ता है. दुनिया की वही कलचर सब से ऊँची और अच्छी होगी, जिसे सब दीन धर्मों की बुनियादी एकता में और सब इनसानों के एक कुटुम्ब कुनबा होने में सच्चा विश्वास हो.

हमने ऊपर हिन्दू और मुसलमानों की ख़ास तौर पर बात कही है. लेकिन, हमें यह समझ लेना चाहिये कि और भी जितने दीन धर्म हिन्दुस्तान में हैं, उन सबके मानने वालों की मदद की हमें ज़रूरत है. और उन सब में हम वैसा ही मेल मिलाप और प्रेम चाहते हैं, जैसा कि हिन्दू मुसलमानों में. हिन्दुस्तानी कलचर का यही आदर्श यही मयार हमारे सामने रहना चाहिये. ज़ाहिर है कि उस तक पहुँचने के लिये हमें बहुत लम्बा रास्ता तय करना पड़ेगा. लेकिन हम अभी से उस रास्ते पर चलना शुरू कर सकते हैं. अगर हम एक एक क़दम आगे बढ़ते रहें तो एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव पर हम अपनी मंज़िल के ज़्यादा से ज़्यादा नज़दीक पहुँचते जायँगे. ज़रूरत सिर्फ़ इस बात की है कि हमारा आदर्श, हमारा मयार हमारी आंखों से किसी वक़्त भी ओझल न होने पाए.

مذھب انسانیت' اُس مانو دھرم کو قائم کرنا ھے جو سب
الگ الگ دین دھرموں کی جڑ ھے' جو سبکی تہہ میں ھے'
سب میں برابر موجود ھے اور جو ان سب الگ الگ
دھرموں کو ایک دوسرے سے ملاتا اور اُن کا ناتا جوڑتا ھے .
کی وھی کلچر سب سے اُونچی اور اچھی ھوگی' جسے
دین دھرموں کی بنیادی ایکتا میں اور
انسانوں کے ایک کٹمب کنبہ ھونے میں سچا
واس ھو .

ھم نے اوپر ھندو اور مسلمانوں کی خاص طور پر بات
ھے . لیکن' ھمیں یہ سمجھ لینا چاھئیے کہ اور بھی
نے دین دھرم ھندستان میں ھیں' ان سبکے ماننے
ں کی مدد کی ھمیں ضرورت ھے . اور ان سب میں ھم
سا ھی میل ملاپ اور پریم چاھتے ھیں' جیسا کہ ھندو
سلمانوں میں . ھندستانی کلچر کا یہی آدرش یہی معیار
ارے سامنے رھنا چاھئیے . ظاھر ھے کہ اُس تک پہنچنے
لئے ھمیں بہت لمبا راستہ طے کرنا پڑے گا . لیکن ھم
ی سے اُس راستے پر چلنا شروع کرسکتے ھیں . اگر ھم
ک ایک قدم آگے بڑھتے رھیں تو ایک پڑاؤ سے دوسرے
ؤ پر ھم اپنی منزل کے زیادہ سے زیادہ نزدیک پہنچتے
ائیں گے . ضرورت صرف اس بات کی ھے کہ ھمارا آدرش'
مارا معیار ھماری آنکھوں سے کسی وقت بھی اوجھل نہ
نے پائے .

की चीज़ों, जातियों, नसलों, दीन धरमों, तौर तरीक़ों, आचार विचारों और अलग अलग तबीयतों को मिलाकर उनमें एकता, मेल मिलाप और एक समन्वय पैदा करें और हर एक को अपनी अपनी जगह, अपने अपने वक़्त पर और अपनी अपनी तरह से काम करने, फलने फूलने और दूसरों के लिये उपयोगी मुफ़ीद साबित होने का मौक़ा दें.

अब मैं सारी बात को थोड़े से शब्दों में दोहराता हूँ. हर सभ्यता, हर कलचर में तीन बातें होती हैं— (अ) हर एक में ज्ञान का, साइन्स का, विद्या का, भाषा का एक भंडार होता है जिस में कुछ उसकी ख़ास चीज़ें होती हैं और कुछ चीज़ें सब में एक सी होती हैं. हर कलचर के इस तरह के भंडार में जड़ और चेतन, माद्दा और रूह के बेशुमार ज़हूरों और रंग रूपों में से कुछ एक दिखाई दे जाते हैं, (ब) हर कलचर को अपने अलग अलग काम पूरे करने होते हैं, हरेक के अलग अलग आदर्श मयार, अलग अलग उत्साह उमंगें, अलग अलग जोश, अलग अलग हुनर और धंदे, अलग अलग आर्ट और कला, खेल तमाशे, इमारतें, शहर, पूजा के तरीक़े और दीन धर्म होते हैं (स) हर कलचर के रहन सहन के अपने तरीक़े होते हैं. राज काज के अपने ढंग, चाल चलन, ब्योपार तिजारत, दूसरे देसों में जा कर बसना, दूसरे देसों को जीतना और अपने अपने कारोबारी ढंग होते हैं. जिस कलचर में यह तीनों बातें जितनी अच्छी और ऊँची होंगी उतनी ही वह कलचर ऊँची और महान होगी. किसी भी कलचर में ज्ञान का ख़ज़ाना जितना ज़्यादा होगा, उसमें जितनी तरह तरह की चीज़ें होंगी वह सब चीज़ें जितनी सोच समझ कर होशियारी और समझ के साथ जमा की गई होंगी, और लोगों के आदर्श मयार, उनके शौक़, उनकी उमंगें, उनके जज़बात जितने ऊँचे, जितने सुन्दर, जितने पाक होंगे और सबकी भलाई के ख़याल से भरे हुए होंगे, और लोगों के रहन सहन के तरीक़े जितने सुथरे होंगे, उनके के कारबार और ब्योपार जितने फैले हुए और दुनिया भर के सब आदमियों की भलाई करने वाले होंगे, उतनी ही वह कलचर, वह सभ्यता बड़ी, महान, ऊँची, सुन्दर और देर तक टिकने वाली होगी. सब से ऊँची, सब से सुन्दर और सब से अच्छी तहज़ीब वह होगी जिसने इस बातको समझ लिया हो, और इस पर अमल करना शुरू कर दिया हो, कि दुनिया के सब आर्थिक यानी माली और राजकाजी यानी सियासी झगड़ों का सिर्फ़ एक ही इलाज है और वह यह है कि सारे इनसानी समाज को, दुनिया के सब आदमियों को एक साइनटिफ़िक निज़ाम, एक वैज्ञानिक संगठन में लाया जाय. सब साम्प्रदायिक फ़िरक़ेवाराना झगड़ों का भी आख़ीर में बस एक ही इलाज है, और वह

چیزوں، جاتیوں، نسلوں، دین دھرموں، طور طریقوں،
ر بچاروں اور الگ الگ طبیعتوں کو ملا کر اُن میں
تا، میل ملاپ اور ایک سمنویہ پیدا کریں اور ہر ایک
اپنی اپنی جگہ، اپنے اپنے وقت پر اور اپنی اپنی طرح سے کام
ے، پھلنے پھولنے اور دوسروں کیلئے اُپ یوگی مفید ثابت
نے کا موقع دیں.

اب میں ساری بات کو تھوڑے سے شبدوں میں دہراتا
ں. ہر سبھیتا ہر کلچر میں تین باتیں ہوتی ہیں —
ف) ہر ایک میں گیان کا، سائنس کا، ودیا کا، بھاشا کا
ے بھنڈار ہوتا ہے جسمیں کچھ اُس کی خاص چیزیں
تی ہیں اور کچھ چیزیں سب میں ایک سی ہوتی ہیں.
کلچر کے اِس طرح کے بھنڈار میں جڑ اور چیتن، مادہ
روح کے بے شمار ظہوروں اور رنگ روپوں میں سے کچھ
ے دکھائی دے جاتے ہیں، (ب) ہر کلچر کو اپنے الگ
ے کام پورے کرنے ہوتے ہیں، ہر ایک کے الگ الگ
رش معیار، الگ الگ اُتساہ اُمنگیں، الگ الگ جوش،
ے الگ ہنر اور دھندے، الگ الگ آرٹ اور کلا، کھیل
اشے، عمارتیں، شہر، پوجا کے طریقے اور دین دھرم ہوتے
ں. (ج) ہر کلچر کے رہن سہن کے اپنے طریقے ہوتے
ں. راج کاج کے اپنے ڈھنگ، چال چلن، بیوپار تجارت،
سرے دیسوں میں جاکر بسنا، دوسرے دیسوں کو جیتنا
ر اپنے اپنے کاروباری ڈھنگ ہوتے ہیں. جس کلچر میں
تینوں باتیں جتنی اچھی اور اونچی ہوں گی اُتنی ہی
کلچر اُونچی اور مہان ہوگی. کسی بھی کلچر میں
ان کا خزانہ جتنا زیادہ ہوگا، اُس میں جتنی طرح
رح کی چیزیں ہونگی وہ سب چیزیں جتنی سوچ سمجھکر
شیاری اور سمجھ کے ساتھ جمع کی گئی ہونگی، اور لوگوں
آدرش معیار، اُنکے شوق، اُنکی اُمنگیں، اُنکے جذبات
تنے اونچے، جتنے سندر، جتنے پاک ہونگے اور سبکی
لائی کے خیال سے بھرے ہوئے ہونگے، اور لوگوں کے رہن
ہن کے طریقے جتنے ستھرے ہونگے، اُنکے کاربار اور بیوپار
تنے پھیلے ہوئے اور دنیا بھر کے سب آدمیوں کی بھلائی
نے والے ہونگے، اُتنی ہی وہ کلچر، وہ سبھیتا بڑی، مہان،
نچی، سندر اور دیر تک ٹکنے والی ہوگی. سب سے
نچی، سب سے سندر اور سب سے اچھی تہذیب وہ ہوگی
س نے اس بات کو سمجھ لیا ہو اور اس پر عمل کرنا
روع کر دیا ہو کہ دنیا کے سب آرتھک یعنی مالی اور
ج کاجی یعنی سیاسی جھگڑوں کا صرف ایک ہی علاج
، اور وہ یہ ہے کہ سارے اِنسانی سماج کو، دنیا کے سب
میوں کو ایک سائنٹفک نظام، ایک ویگیانک سنگٹھن
یں لیا جائے. سب سامپردائک فرقہ وارانہ جھگڑوں کا
ی آخیر میں بس ایک ہی علاج ہے، اور وہ

इख़लाक़ सदाचार, और तरीके, आर्ट कला, घरेलू जिन्दगी और समाजी जीवन, रोज़े व्रत, दावतें ज्योनार, मेले तमाशे, त्योहार और छुट्टियाँ, सोग के दिन और खुशी के दिन इन सब के बारे में लोगों के अन्दर एक सी उमंगें और एक से आदर्श मयार पैदा किए जावें. इन उमंगों के बढ़ाने और मज़बूत करने के लिये और लोगों को इन मेल मिलाप की चीज़ों का शौक़ दिलाने के लिये उनमें इन चीज़ों की ठीक ठीक जानकारी पैदा करनी और फैलानी होगी. हिन्दुओं और मुसलमानों के ऐसे गिरोह, जिनमें एक दूसरे से पूरी हमदर्दी पैदा होगई है, जो एक दूसरे के पक्के दोस्त हैं और जो एक दूसरे को समझते हैं ऐसे मेलों, तमाशों और त्योहारों के मौक़ों पर जलसे करके, जलूस निकाल कर और तरह तरह से जनता के सामने मिसाल क़ायम करें. जितने आन्दोलन, जितनी तहरीकें, सत्य, अहिंसा, इन्साफ़, परहेज़गारी, पाकी, नेकी, समझदारी, हिम्मत, धीरज, सब्र और इसी तरह की उन अच्छी अच्छी चीज़ों को फैलाने के लिये चलाई जाती हैं जिन्हें सब धर्म मज़हबों के लोग और सब तौर तरीक़ों के मानने वाले मानते और पसन्द करते हैं, ऐसे ही पाक चीज़ें खाना, पाक चीज़ें पीना, नशे की सब चीज़ों से परहेज करना, इस तरह की सब कोशिशें हमारे इस काम में बहुत मदद देंगी.

3—हमारे काम दो हिस्से ऊपर बयान किए जा चुके हैं. हिन्दुस्तानी कलचर का तीसरा और आखिरी हिस्सा यह है कि इस तरह के धन्दों, दस्तकारियों, ब्योपारों और तिजारतों को जारी किया जावे और बढ़ाया जावे जिनमें हिन्दू और मुसलमान दोनों हिस्सा लें और दोनों मिलकर काम करें. रचनात्मक या तामीरी काम की जितनी कोशिशें हो रही हैं, जैसे माँ और बच्चे के बचाव और भलाई के तरीके, गाँव की हालत को सुधारना, घरेलू धन्दे, खेती के काम को तरक़्क़ी देना और उसकी पैदावार को बढ़ाना, जंगलों की हिफ़ाज़त, गाँव और शहरों की सफ़ाई, बीमारों के इलाज के लिये जो तरह तरह के तरीके चल पड़े हैं उन सब को मिलाकर उनसे फ़ायदा उठाने की कोशिश, जानवरों की नसल को सुधारना और बढ़ाना, यह सब चीज़ें हमारी हिन्दुस्तानी कलचर को हर तरह से मदद ही देंगी और उस कलचर के इस दूसरे हिस्से को पूरा करेंगी. लेकिन शर्त इतनी ही है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों मिल कर इनमें हिस्सा लें और हर काम में दोनों का मेल बढ़ता चला जावे. हमारी सोसाइटी को अपनी पूरी ताक़त से इस मेल जोल के बढ़ाने में हर तरह की मदद करनी चाहिये.

थोड़े से में नई हिन्दुस्तानी कलचर का बुनियादी काम यह होना चाहिये कि वह सब तरह के लोगों, सब तरह

اخلاق سداچار، طور طریقے، آرٹ کلا، گھریلو زندگی اور سماجی جیون، روزے برت، دعوتیں جیونار، میلے تماشے، تیوہار اور چھٹیاں، سوگ کے دن اور خوشی کے دن ان سب کے بارے میں لوگوں کے اندر ایک سی اُمنگیں اور ایک سے آدرش معیار پیدا کئے جائیں. ان اُمنگوں کے بڑھانے اور مضبوط کرنے کے لئے اور لوگوں کو ان میل ملاپ کی چیزوں کا شوق دلانے کیلئے، اُن میں ان چیزوں کی ٹھیک ٹھیک جانکاری پیدا کرنی اور پھیلانی ہوگی. ہندوؤں اور مسلمانوں کے ایسے گروہ، جن میں ایک دوسرے سے پوری ہمدردی پیدا ہوگئی ہے، جو ایک دوسرے کے پکے دوست ہیں اور جو ایک دوسرے کو سمجھتے ہیں، ایسے میلوں، تماشوں اور تیوہاروں کے موقعوں پر جلسے کرکے، جلوس نکال کر اور طرح طرح سے جنتا کے سامنے مثال قائم کریں. جتنے آندولن، جتنی تحریکیں، ستیہ، اہنسا، انصاف، پرہیزگاری، پاکی، نیکی، سمجھداری، ہمت، دھیرج، صبر اور اسی طرح اُن کی اچھی اچھی چیزوں کو پھیلانے کیلئے چلائی جاتی ہیں جنہیں سب دھرم مذہبوں کے لوگ اور سب طور طریقوں کے ماننے والے مانتے اور پسند کرتے ہیں، ایسے ہی پاک چیزیں کھانا، پاک چیزیں پینا، نشے کی سب چیزوں سے پرہیز کرنا، اس طرح کی سب کوششیں ہمارے اس کام میں بہت مدد دینگی.

3 — ہمارے کام کے دو حصے اوپر بیان کئے جا چکے ہیں. ہندستانی کلچر کا تیسرا اور آخری حصہ یہ ہے کہ اس طرح کے دھندوں، دستکاریوں، بیوپاروں اور تجارتوں کو جاری کیا جاوے اور بڑھایا جاوے جن میں ہندو اور مسلمان دونوں حصہ لیں اور دونوں ملکر کام کریں. رچناتمک یا تعمیری کام کی جتنی کوششیں ہو رہی ہیں جیسے ماں اور بچے کے بچاؤ اور بھلائی کے طریقے، گاؤں کی حالت کو سدھارنا، گھریلو دھندے، کھیتی کے کام کو ترقی دینا اور اُس کی پیداوار کو بڑھانا، جنگلوں کی حفاظت، گاؤں اور شہروں کی صفائی، بیماروں کے علاج کے لئے جو طرح طرح کے طریقے چل پڑے ہیں اُن سب کو ملا کر اُن سے فائدہ اُٹھانے کی کوشش، جانوروں کی نسل کو سدھارنا اور بڑھانا، یہ سب چیزیں ہماری ہندستانی کلچر کو ہر طرح سے مدد ہی دیں گی اور اُس کلچر کے اِس دوسرے حصے کو پورا کریں گی. لیکن شرط اتنی ہی ہے کہ ہندو اور مسلمان دونوں ملکر اس میں حصہ لیں اور ہر کام میں دونوں کا میل بڑھتا چلا جاوے. ہماری سوسائٹی کو اپنی پوری طاقت سے اس میل جول کے بڑھانے میں ہر طرح کی مدد کرنی چاہئے.

تھوڑے سے میں نئی ہندستانی کلچر کا بنیادی کام یہ ہونا چاہئے کہ وہ سب طرح کے لوگوں، سب طرح

मुल्क का दौरा करें, एक ही बोलचाल से और एक ही जलसे में सब जगह साथ साथ लेक्चर दें.

(ब) हिन्दी और उरदू के लिखने वालों को इस बात के लिये राजी करना चाहिये कि उनमें से हर एक संस्कृत और फ़ारसी शब्दों के क़रीब क़रीब पाँच सौ जोड़े जैसे राजनीति सियासत, सभ्यता तहज़ीब, इखलाकी नैतिक अच्छी तरह याद करले और अपने लेखों और मज़मूनों में हर जोड़े के दोनों शब्दों को साथ साथ काम में लावे. इस तरह उनके पढ़ने वाले भी बहुत जल्दी इन सब जोड़ों को जान जावेंगे. यह भी कोशिश करनी चाहिये कि उरदू के लिखने वाले इज़ाफ़त का और हिन्दी के लिखने वाले समासों का बहुत ही कम इस्तेमाल करें.

(स) देस भर में अख़बारों के जो एडीटर इस नेक काम से हमदर्दी रखते हों उनसे मदद ली जावे और हिन्दी और उरदू के रोज़ाना, हफ़्तेवार और माहवारी रिसालों पत्रिकाओं में इस तरह के अच्छे अच्छे लेख छपवाए जावें जो लोगों को अच्छे भी लगें और जिनसे उन्हें इन चीज़ों की जानकारी भी हो.

(द) इस तरह की चुनी हुई छोटी छोटी किताबें निकाली जावें जिनमें हर किताब के अन्दर उरदू लिखावट और नागरी लिखावट दोनों में ठीक वही ज़बान और वही शब्द हों. नागरी और उरदू दोनों एक दूसरे के आमने सामने के पन्नों पर हों. अंगरेज़ी और दूसरी योरप की ज़बानों में बहुत सी इस तरह की किताबें निकल चुकी हैं जिन्हें लोग आम तौर पर पसन्द करते हैं. उनमें से अच्छी से अच्छी किताबों के ढंग पर हमारी किताबें भी निकल सकती हैं. इन किताबों में जितनी तरह की जानकारी दी जा सके देनी चाहिये. ख़ास तौर पर हिन्दुओं और मुसलमानों का इतिहास देना चाहिये और थोड़ा सा इनसानी क़ौम मानव जाति का इतिहास भी देना चाहिये. इन किताबों में हिन्दुओं और मुसलमानों के दोनों तरह के धार्मिक रीति रिवाज और एतक़ाद विश्वास भी हों. एक वह जो ज़रूरी समझे जाते हैं और दूसरे वह जो इतने ज़रूरी नहीं समझे जाते. इन किताबों में ऐसी किताबें भी होनी चाहियें जिनमें मोटे तौर पर लोगों को यह बताया जावे कि रोज़ी कमाने के ख़ास ख़ास तरीक़े कौन से हैं और हर आदमी अपने लिये जीविका रोज़गार का ठीक फ़ैसला कैसे करे जिसमें उसे कामयाबी हो.

इस तरह हम अपने देस के लोगों में अच्छे और मज़बूत दिमाग़ तैयार कर सकेंगे जिनमें अच्छे और उपयोगी कारामद ज्ञान का भंडार भरा हो. यह हमारी हिन्दुस्तानी कलचर के काम का एक तिहाई हिस्सा हुआ.

2—हमारे काम का दूसरा हिस्सा यह है—दीन धर्म,

ملک کا دورہ کریں، ایک ہی بول چال سے اور ایک ہی جلسے میں سب جگہ ساتھ ساتھ لکچر دیں۔

(ب) ہندی اور اُردو کے لکھنے والوں کو اِس بات کیلئے راضی کرنا چاہئے کہ اُن میں سے ہر ایک سنسکرت اور فارسی شبدوں کے قریب قریب پانچ سو جوڑے جیسے راج نیت سیاست، سبھیتا تہذیب، اخلاقی نیتک اچھی طرح یاد کر لے اور اپنے لیکھوں اور مضمونوں میں ہر جوڑے کے دونوں شبدوں کو ساتھ ساتھ کام میں لاوے۔ اس طرح اُنکے پڑھنے والے بھی بہت جلدی ان سب جوڑوں کو جان جاویں گے۔ یہ بھی کوشش کرنی چاہئے کہ اُردو کے لکھنے والے اضافت کا اور ہندی کے لکھنے والے سماسوں کا بہت ہی کم استعمال کریں۔

(ج) دیس بھر میں اخباروں کے جو اڈیٹر اس نیک کام سے ہمدردی رکھتے ہوں اُن سے مدد لی جاوے اور ہندی اور اُردو کے روزآنہ، ہفتہ وار اور ماہواری رسالوں پترکاؤں میں اس طرح کے اچھے اچھے لیکھ چھپوائے جائیں، جو لوگوں کو اچھے بھی لگیں اور جن سے اُنھیں ان چیزوں کی جانکاری بھی ہو۔

(د) اِس طرح کی چُنی ہوئی چھوٹی چھوٹی کتابیں نکالی جاویں، جن میں ہر کتاب کے اندر اُردو لکھاوٹ اور ناگری لکھاوٹ دونوں میں ٹھیک وہی زبان اور وہی شبد ہوں۔ ناگری اور اُردو دونوں ایک دوسرے کے آمنے سامنے کے پنّوں پر ہوں۔ انگریزی اور دوسری یورپ کی زبانوں میں بہت سی اس طرح کی کتابیں نکل چکی ہیں جنھیں لوگ عام طور پر پسند کرتے ہیں۔ ان میں سے اچھی سے اچھی کتابوں کے ڈھنگ پر ہماری کتابیں بھی نکل سکتی ہیں۔ ان کتابوں میں جتنی طرح کی جانکاری دی جا سکے دینی چاہئے۔ خاص طور پر ہندوؤں اور مسلمانوں کا اِتہاس دینا چاہئے اور تھوڑا سا انسانی قوم مانو جاتی کا اتہاس بھی دینا چاہئے۔ ان کتابوں میں ہندوؤں اور مسلمانوں کے دونوں طرح کے دھارمک ریت رواج اور اعتقاد وشواس بھی ہوں، ایک وہ جو ضروری سمجھے جاتے ہیں اور دوسرے وہ جو اتنے ضروری نہیں سمجھے جاتے۔ ان کتابوں میں ایسی کتابیں بھی ہونی چاہئیں جن میں موٹے طور پر لوگوں کو یہ بتایا جاوے کہ روزی کمانے کے خاص خاص طریقے کون سے ہیں اور ہر آدمی اپنے لئے جیوکا روزگار کا ٹھیک فیصلہ کیسے کرے جس میں اسے کامیابی ہو۔

اس طرح ہم اپنے دیس کے لوگوں میں اچھے اور مضبوط دماغ تیار کرسکیں گے، جن میں اچھے اور اُپ یوگی کارآمد گیان کا بھنڈار بھرا ہو۔ یہ ہماری ہندستانی کلچر کے کام کا ایک تہائی حصہ ہوا۔

2 — ہمارے کام کا دوسرا حصہ یہ ہے — دین دھرم،

बढ़ बढ़ कर दूसरे मुल्कों में अपनी बस्तियाँ बसाना, जंग करना, एक राजा का राज, अमीरों का राज, आम लोगों का राज वग़ैरा.

अब कलचर और सिविलिज़ेशन यानी संस्कृति और सभ्यता दो चीज़ें हुईं और हर एक के तीन तीन पहलू. जितने सवाल जवाब हमने ऊपर लिखे हैं और जितने सवाल जवाब इस तरह के और लिखे जा सकते हैं वह सब इन्हीं दो में या इन्हीं छै में आ जाते हैं. इनसे हमें पता चल जाता है कि असली कलचर या असली सभ्यता क्या चीज़ है. असली कलचर आदमी के अन्दर की नेकी और बड़ाई है और असली सिविलिज़ेशन या सभ्यता अन्दर की नेकी का बाहरी फैलाव है.

जितनी बढ़िया कोई कलचर होगी उतने ही अच्छे ज्ञान, अच्छी ख़्वाहिशों और अच्छे कामों से भरी हुई वह सभ्यता होगी जो उस कलचर का जिस्म और उसका रंग रूप है. इसी तरह बाहर की सभ्यता का असर अन्दर की कलचर पर पड़ता रहेगा और दोनों का मिलकर एक अच्छा सुन्दर, दायरा या चक्र बन जायगा, जो आदमी को नेकी की तरफ़ ले जायगा.

मुझे डर है कि मेरी इन बातों में शब्दों का आडम्बर दिखाई देगा, लेकिन अगर इनमें कुछ भी सचाई है तो मुझे मालूम होता है कि हमारी छोटी सी सोसाइटी एक बहुत बड़ा लेकिन बहुत ही क़ीमती काम हाथ में ले रही है. यह सोसाइटी एक हिन्दुस्तानी कलचर और हिन्दुस्तानी सिविलिज़ेशन का बीज बो रही है, उसकी नन्ही सी पौध को रोप रही है. हमारी यह हिन्दुस्तानी कलचर और हिन्दुस्तानी सभ्यता सबसे पहले हिन्दुस्तान की पुरानी कलचर और अरब ईरान की कलचर, या दूसरे शब्दों में हिन्दू कलचर और मुसलिम कलचर, इन दोनों के अच्छे से अच्छे और ज़रूरी पहलुओं को मिलाने की कोशिश करेगी.

इस बीज में अंकुर फूटें और यह पौध फूले फले इसके लिये हमें अपने काम के तीन हिस्से करने होंगे.

1—सब से पहले आम लोगों को एकसा ज्ञान का भंडार देने के लिये—

(अ) कुछ नौजवानों को इस तरह तैयार करना चाहिये कि वह एक हिन्दू और एक मुसलमान, दो दो मिल मिलकर साथ साथ काम करें. दोनों में से हर एक संस्कृत भी जानता हो और फ़ारसी भी, और अगर हो सके तो थोड़ी सी अरबी भी. इन लोगों को ख़ास तौर पर वेदान्त और तसव्वुफ़ की अच्छी से अच्छी किताबें पढ़ लेनी चाहियें, और दोनों धर्मों की किताबों के ख़ास ख़ास और काम के हिस्से जान लेने चाहियें. यह साथ साथ

بڑھ بڑھ کر دوسرے ملکوں میں اپنی بستیاں بسانا؛ جنگ کرنا؛ ایک راجہ کا راج؛ امیروں کا راج؛ عام لوگوں کا راج وغیرہ.

اب کلچر اور سویلیزیشن یعنی سنسکرتی اور سبھیتا دو چیزیں ہوئیں اور ہر ایک کے تین تین پہلو. جتنے سوال جواب ہم نے اوپر لکھے ہیں اور جتنے سوال جواب اس طرح کے اور لکھے جا سکتے ہیں وہ سب ان ہی دو میں یا ان ہی چھ میں آجاتے ہیں. ان سے ہمیں پتہ چل جاتا ہے کہ اصلی کلچر یا اصلی سبھیتا کیا چیز ہے. اصلی کلچر آدمی کے اندر کی نیکی اور بڑائی ہے اور اصلی سویلیزیشن یا سبھیتا اندر کی نیکی کا باہری پھیلاؤ ہے.

جتنی بڑھیا کوئی کلچر ہوگی اتنے ہی اچھے گیان، اچھی خواہشوں اور اچھے کاموں سے بھری ہوئی وہ سبھیتا ہوگی جو اس کلچر کا جسم اور اس کا رنگ روپ ہے. اسی طرح باہر کی سبھیتا کا اثر اندر کی کلچر پر پڑتا رہے گا اور دونوں کا مل کر ایک اچھا سندر دائرہ یا چکر بن جائے گا جو آدمی کو نیکی کی طرف لے جائے گا.

مجھے ڈر ہے کہ میری ان باتوں میں شبدوں کا آڈمبر دکھائی دے گا، لیکن اگر ان میں کچھ بھی سچائی ہے تو مجھے معلوم ہوتا ہے کہ ہماری چھوٹی سی سوسائٹی ایک بہت بڑا لیکن بہت ہی قیمتی کام ہاتھ میں لے رہی ہے. یہ سوسائٹی ایک ہندستانی کلچر اور ہندستانی سویلیزیشن کا بیج بو رہی ہے، اس کی ننھی سی پود کو روپ رہی ہے. ہماری یہ ہندستانی کلچر اور ہندستانی سبھیتا سب سے پہلے ہندستان کی پرانی کلچر اور عرب ایران کی کلچر، یا دوسرے شبدوں میں ہندو کلچر اور مسلم کلچر، ان دونوں کے اچھے سے اچھے اور ضروری پہلوؤں کو ملانے کی کوشش کرے گی. اس بیج میں انکر پھوٹیں اور یہ پود پھولے پھلے اس کے لئے ہمیں اپنے کام کے تین حصے کرنے ہوں گے.

1— سب سے پہلے عام لوگوں کو ایک سا گیان کا بھنڈار دینے کے لئے—

(الف) کچھ نوجوانوں کو اس طرح تیار کرنا چاہئے کہ وہ ایک ہندو اور ایک مسلمان، دو دو مل ملکر ساتھ ساتھ کام کریں. دونوں میں سے ہر ایک سنسکرت بھی جانتا ہو اور فارسی بھی، اور اگر ہو سکے تو تھوڑی سی عربی بھی. ان لوگوں کو خاص طور پر ویدانت اور تصوف کی اچھی سے اچھی کتابیں پڑھ لینی چاہئیں. اور دونوں دھرموں کی کتابوں کے خاص خاص اور کام کے حصے جان لینے چاہئیں. یہ ساتھ ساتھ

क्या फ़ैल से. आदमी का दिमाग़ अच्छा और मज़बूत हो, रेक्टर अच्छा और मज़बूत हो और जिस्म अच्छा ौर मज़बूत हो तो इन्हीं तीनों से अच्छी और मज़बूत लचर बने. दिमाग़ के अच्छेपन का मतलब यह है कि ादमी को बहुत सी और काम की चीज़ें मालूम हों ानी उसके पास ज्ञान का अच्छा भंडार हो, और वह राई और भलाई में, नफ़े और नुक़सान में फ़रक़ कर सके ौर पहचान सके कि किस चीज़ में उसका सच्चा नफ़ा है ौर किसमें नुक़सान. दिमाग़ के मज़बूत होने का मतलब ह है कि आदमी सब तरह की चीज़ों को जल्दी से समझ के, उसकी याददाश्त अच्छी और पक्की हो और वह ीज़ों का ठीक ठीक फ़ैसला कर सके. कैरेक्टर या चरित्र ी मज़बूती का मतलब यह है कि आदमी में इतनी हिम्मत ो कि वह जिन चीज़ों को करना चाहे उन्हें करे और नसे बचना चाहे उनसे बच सके. कैरेक्टर के अच्छेपन ा मतलब यह है कि आदमी अपनी तबियत को और पने हाथ पैरों को नेक कामों की तरफ़ लगावे. इसका तलब यह है कि ख़ुदी यानी अपने निजी सुख की इच्छा ी रहे और सब के भले की इच्छा काम करे. जिस्म के च्छे होने का मतलब यह है कि हाथ पैर और सब अंग डौल हों और सूरत शकल प्यारी लगे. जिस्म की मज़बूती ा मतलब यह है कि बदन में जान हो, बल बूता हो, ख़्ती हो, कड़ाई हो, बर्दाश्त की ताक़त हो, रग पट्ठे ज़बूत हों, मन में धीरज हो और आदमी सब काम तेज़ी और बिना लड़खड़ाए कर सके. जिस आदमी का िस्म, जिसका कैरेक्टर और जिसका दिमाग़ तीनों इस रह के हों, वही पूरी तरह और ठीक ठीक 'कलचर्ड' मझा जा सकता है. इसी तरह इतिहास में जितनी बड़ी ी सभ्यताएं, तहज़ीबें हुई हैं—जैसे बीती हुई सभ्यताओं मिस्री, असुरी (असीरियन), बाबुली, यूनानी, रोमन, ेक्सिकन और पेरुवियन, और ज़िन्दा सभ्यताओं में चीनी, न्दुस्तानी, यहूदी, ईरानी, अरब और आज कल की ोपियन—इन सब सभ्यताओं के तीन ख़ास पहलू हैं— 1) उनका तालीम का एक ख़ास ढंग और ज्ञान, साइन्स ौर फ़लसफ़े का अपना भंडार; (2) हरेक का एक ास दीन धर्म, सदाचार इख़लाक़ और रहन सहन का क ख़ास तरीक़ा, घरेलू ज़िन्दगी और समाजी ज़िन्दगी ा एक ख़ास ढंग और इनके साथ ही साथ इनसे मिली ती चीज़ें—आर्ट, कला, चित्रकारी, संगतराशी, गाना ाना, शायरी, कविता, ख़ास तरह की मज़हबी और ारी इमारतें बनाना, खेल तमाशे, छुट्टियाँ, त्योहार, लसे, रीति रिवाज, मज़हबी किताबें, मन्दिर, मसजिद, र्थ; (3) ब्योपारी, तिजारती और राजकाजी कामों के छ ख़ास तरीक़े, खेती, उद्योग धन्दे, ब्योपार, सट्टा,

کریا فعل ہے . آدمی کا دماغ اچھا اور مضبوط ہو' کیرکٹر اچھا اور مضبوط ہو اور جسم اچھا اور مضبوط ہو تو ان ہی تینوں سے اچھی اور مضبوط کلچر بنے . دماغ کے اچھے پن کا مطلب یہ ہے کہ آدمی کو بہت سی اور کام کی چیزیں معلوم ہوں' یعنی اس کے پاس گیان کا اچھا بھنڈار ہو' اور وہ برائی اور بھلائی میں' نفع اور نقصان میں فرق کر سکے اور پہچان سکے کہ کس چیز میں اس کا سچا نفع ہے اور کسمیں نقصان . دماغ کے مضبوط ہونے کا مطلب یہ ہے کہ آدمی سب طرح کی چیزوں کو جلدی سے سمجھ سکے' اس کی یادداشت اچھی اور پکی ہو اور وہ چیزوں کا ٹھیک ٹھیک فیصلہ کر سکے . کیرکٹر یا چرتر کی مضبوطی کا مطلب یہ ہے کہ آدمی میں اتنی ہمت ہو کہ وہ جن چیزوں کو کرنا چاہے انہیں کرے اور جن سے بچنا چاہے ان سے بچ سکے . کیرکٹر کے اچھے پن کا مطلب یہ ہے کہ آدمی اپنی طبیعت کو اور اپنے ہاتھ پیروں کو نیک کاموں کی طرف لگائے . اس کا مطلب یہ ہے کہ خودی یعنی اپنے نجی سکھ کی اچھا دبی رہے اور سب کے بھلے کی اچھا کام کرے . جسم کے اچھے ہونے کا مطلب یہ ہے کہ ہاتھ پیر اور سب انگ سڈول ہوں اور صورت شکل پیاری لگے . جسم کی مضبوطی کا مطلب یہ ہے کہ بدن میں جان ہو' بل بوتا ہو' سختی ہو' کڑائی ہو' برداشت کی طاقت ہو' رگ پٹھے مضبوط ہوں' من میں دھیرج ہو اور آدمی سب کام تیزی سے اور بنا لڑکھڑائے کر سکے . جس آدمی کا جسم' جس کا کیرکٹر اور جس کا دماغ تینوں اس طرح کے ہوں' وہی پوری طرح اور ٹھیک ٹھیک ' کلچرڈ ' سمجھا جاسکتا ہے . اسی طرح اتہاس میں جتنی بڑی بڑی سبھیتائیں' تہذیبیں ہوئی ہیں — جیسے بیتی ہوئی سبھیتاؤں میں مصری' آشوری (اسیرین)' بابلی' یونانی' رومن' میکسکن اور پیرووین اور زندہ سبھیتاؤں میں چینی' ہندستانی' یہودی' ایرانی' عرب اور آجکل کی یوروپین — ان سب سبھیتاؤں کے تین خاص پہلو ہیں —(1) ان کا تعلیم کا ایک خاص ڈھنگ اور گیان' سائنس اور فلسفے کا اپنا بھنڈار؛ (2) ہر ایک کا ایک خاص دین دھرم' سداچار اخلاق اور رہن سہن کا ایک خاص طریقہ' گھریلو زندگی اور سماجی زندگی کا ایک خاص ڈھنگ اور انکے ساتھ ہی ساتھ ان سے ملی جلی چیزیں—آرٹ' کلا' چترکاری' سنگ تراشی' گانا بجانا' شاعری' کویتا' خاص طرح کی مذہبی اور دوسری عمارتیں بنانا' کھیل تماشے' چھٹیاں' تہوار' جلسے' ریت رواج' مذہبی کتابیں' مندر' مسجد' تیرتھ' (3) بیوپاری' تجارتی اور راج کاجی کاموں کے کچھ خاص طریقے' کھیتی' ادیوگ دھندے' بیوپار' سٹہ'

एक ही माने में इस्तेमाल करते हैं. हिन्दुस्तानी में कलचर को कहेंगे—'शिश्टता', 'संस्कृति', 'तहज़ीब', 'तादीब' या 'शाइस्तगी'. और सिविलीजेशन को कहा जाता है—'सभ्यता', 'समुदाचार', 'तहज़ीब' या 'तौर तरीक़'. इससे ज्यादा आसान शब्द जिन्हें सब समझते हैं—चाल, ढंग, चलन—हैं, लेकिन इनसे पूरा मतलब नहीं निकल सकता. हम एक बात यह भी ध्यान में रखें कि शायद सिविलीज़ेशन और सभ्यता दोनों का निकास एक ही सा है, यानी 'सभा', 'सिविस', 'जमात', 'शहर' 'सिविलाइज्ड' और 'सभ्य' दोनों के माने हैं—वह आदमी जो 'शहरी' कहलाने के या सभा सोसाइटी में बैठने के क़ाबिल हो. दूसरी तरफ़ 'कलचर' लैटिन शब्द 'कल्टस' (cultus) से निकला है. कल्टस के माने हैं— 'हल'. ज़मीन पर खेती करना और आदमी के दिल और दिमाग़ को कलचर करना दोनों एक ही से काम हैं. दोनों में हल चलाना पड़ता है, जोतना पड़ता है, ज़मीन तैयार करनी होती है, मिट्टी को बारीक करना होता है और फिर अच्छे क़ीमती और काम के बीज उसमें बोने होते हैं. यह बीज माद्दी भौतिक, इख़लाक़ी नैतिक और दिमाग़ी मानसिक तीनों तरह के हो सकते हैं. बीज ऐसे होने चाहियें जिनसे जिस्म और रूह दोनों को तन्दुरुस्ती देने वाली जिस्मानी और रूहानी ख़ूराक तैयार हो सके. संस्कृति, मांजना, इसका भी यही मतलब है. यही शाइस्तगी और तहज़ीब का मतलब है. इन सब शब्दों में संस्कार करना, सुधारना, फिर से साफ़ करना, ज़्यादा अच्छा बनाना, चमका कर सुन्दर रंग रूप देना, यह सब बातें शामिल हैं. अंगरेज़ी की डिक्शनरी में कलचर और सिविलीजेशन दोनों के मानों में 'रिफ़ाइनमेंट' शब्द आता है जिसका मतलब है, फिर फिर साफ़ करना. इसलिये 'कलचर' का असली निचोड़ इसी बात में होना चाहिये कि आदमी को उसके जीवन के सब पहलुओं में माँजा और फिर फिर साफ़ किया जावे. 'सिविलीज़ेशन' का मतलब वह सब ऊपर की चीज़ें हैं जो इस तरह के मँजे हुए लोगों की कोई नेशन, कोई क़ौम या उनका कोई गिरोह अपने मिले जुले जीवन के सब पहलुओं में करता और दिखाता है. आदमी के अन्दर जो चीज़ दबी छिपी रहती है, उसके बाहर के रूप फैलाव का ही नाम ही 'सिविलिज़ेशन' है.

अब हमें यह देखना है कि आदमी के स्वभाव के यह ख़ास ख़ास पहलू कौन से हैं और उनमें से किस किस का मिली हुई क़ौमी जिन्दगी के किस किस पहलू के साथ ख़ास सम्बन्ध है ? हमारे जीवन के तीन ख़ास पहलू यह हैं—दिमाग़ यानी मस्तिष्क, कैरेक्टर या चरित्र, और जिस्म शरीर. दिमाग़ का सम्बन्ध ज्ञान इल्म से है, कैरेक्टर या चरित्र का इच्छा ख़्वाहिश से और जिस्म का

ک ہی معنے میں استعمال کرتے ہیں. ہندستانی میں کلچر کو کہینگے — 'ششٹتا' 'سنسکرتی' تہذیب' 'تادیب' یا 'شائستگی'. اور سویلیزیشن کو کہا جاتا ہے—'سبھیتا' 'سموداچار' 'تہذیب' یا 'طور طریق'. اس سے زیادہ آسان شبد جنہیں سب سمجھتے ہیں — چال' ڈھنگ' چلن ہیں' لیکن ان سے پورا مطلب نہیں نکل سکتا. ہم ایک بات یہ بھی دھیان میں رکھیں کہ شاید سویلیزیشن اور سبھیتا دونوں کا نکاس ایک ہی سا ہے' یعنی 'سبھا' 'سوس' جماعت' 'شہر' 'سویلائزڈ' اور سبھیے دونوں کے معنے ہیں— وہ آدمی جو 'شہری' کہلانے کے یا سبھا سوسائٹی میں بیٹھنے کے قابل ہو. دوسری طرف ''کلچر'' لیٹن شبد کلٹس (Cultus) سے نکلا ہے. کلٹس کے معنی ہیں — 'ہل'. زمین پر کھیتی کرنا اور آدمی کے دل اور دماغ کو کلچر کرنا دونوں ایک ہی سے کام ہیں. دونوں میں ہل چلانا پڑتا ہے' جوتنا پڑتا ہے' زمین تیار کرنی ہوتی ہے' مٹی کو باریک کرنا ہوتا ہے اور پھر اچھے قیمتی اور کام کے بیج اس میں بونے ہوتے ہیں. یہ بیج مادی بھوتک' اخلاقی نیتک اور دماغی مانسک تینوں طرح کے ہو سکتے ہیں. بیج ایسے ہونے چاہئیں جن سے جسم و روح دونوں کو تندرستی دینے والی جسمانی اور روحانی خوراک تیار ہو سکے. سنسکرتی' مانجنا' اس کا بھی یہی مطلب ہے. یہی شائستگی اور تہذیب کا مطلب ہے. ان سب شبدوں میں سنسکار کرنا' سدھارنا' پھر سے صاف کرنا' زیادہ اچھا بنانا' چمکا کر سندر رنگ روپ دینا' یہ سب باتیں شامل ہیں. انگریزی کی ڈکشنری میں کلچر اور سویلیزیشن دونوں کے معنوں میں 'رفائن‌منٹ' شبد آتا ہے' جس کا مطلب ہے' پھر پھر صاف کرنا. اس لئے 'کلچر' کا اصلی نچوڑ اسی بات میں ہونا چاہئے کہ آدمی کو اس کے جیون کے سب پہلوؤں میں مانجا اور پھر پھر صاف کیا جائے. 'سویلزیشن' کا مطلب وہ سب اوپر کی چیزیں ہیں جو اس طرح کے منجھے ہوئے لوگوں کی کوئی نیشن' کوئی قوم یا ان کا کوئی گروہ اپنے ملے جلے جیون کے سب پہلوؤں میں کرتا اور دکھاتا ہے. آدمی کے اندر جو چیز دبی چھپی رہتی ہے' اس کے باہر کے روپ پھیلاؤ کا نام ہی 'سویلیزیشن' ہے.

اب ہمیں یہ دیکھنا ہے کہ آدمی کے سبھاؤ کے یہ خاص خاص پہلو کون سے ہیں اور ان میں سے کس کس کا ملی ہوئی قومی زندگی کے کس کس پہلو کے ساتھ خاص سمبندھ ہے؟ ہمارے جیون کے تین خاص پہلو یہ ہیں— دماغ یعنی مستشک' کیریکٹر یا چرتر' اور جسم شریر. دماغ کا سمبندھ گیان علم سے ہے. کیریکٹر یا چرتر کا اچھا خواہش سے اور جسم کا

माने नहीं समझ रहे हैं. कलचर किस बात में है, या कलचर में क्या क्या चीजें शामिल हैं, इस पर हम सब की एक ही राय नहीं है. एक खास तरह के कपड़े पहनना? शायद! खास तरह से बोलना? एक दरजे तक. एक दूसरे को खास तरह से सलाम करना? हाँ! यह भी. तालीम का एक खास ढंग? बेशक, कुछ तो. लेकिन किस चीज़ की तालीम और किस तरह की? इसमें भी अपने अपने ढंग हो सकते हैं. ज्ञान का भंडार? कुछ तो! लेकिन फिर किस तरह का ज्ञान? तरह तरह का. लेन देन और आपसी व्योहार में एक खास तरह का ढंग? हाँ! यह भी. और घरेलू जीवन में घर वालों में आपसी बर्ताव? हाँ ठीक! घर में खास खास मौक़ों जैसे बच्चा पैदा होना, ब्याह शादी वग़ैरा मनाने का ढंग? हाँ, बेशक. एक खास तरह का मज़हबी जज़्बा या धार्मिक भावना? हाँ, शायद. आर्ट, कला, शायरी कविता, गाना बजाना, चित्रकारी जैसे हुनर में से किसी एक या ज़्यादा की तरफ़ खास झुकाव? हाँ, यह भी. मेले, तमाशे, जलसे, मौसम के त्योहार, दूसरे त्योहार और अपने इतिहास के खास खास दिन मनाना? हाँ! खान पान, दावतों और ज्योनारों के खास खास तरीक़े? हाँ! कुछ तो यह भी. मकान बनाने का कोई खास ढंग? हो सकता है या शायद है, इसमें भी बहुत से अलग अलग ढंग रहेंगे. अपना एक खास साहित्य यानी अदब और अपनी साइन्स यानी विज्ञान? ज़रूर, थोड़ा बहुत. एक ऐसी बोली जिसे सब बोल और समझ सकें? बिला शक! एक दूसरे को समझने और एक दूसरे से बात चीत करने के लिये ज़रूरी है.

ऊपर के सवालों में शायद कोई खास सिलसिला मालूम नहीं होता. उनके जवाब भी जो जैसे मुझे सूझे, कुछ झिझकते हुए मैंने लिख दिये. यह सब जवाब नामुकम्मिल और अधूरे हैं और जैसा चाहिये साफ़ नहीं हैं. फिर भी हर जवाब में कुछ न कुछ सचाई ज़रूर है. कलचर की ऐसी क्या परिभाषा या तारीफ़ की जाय जो अधूरी न हो, जो मुकम्मिल हो, जिससे कलचर एक अलग साफ़ चीज़ दिखाई दे और जिसे अक़्ल भी मानले. अब हम पहले यह देखना चाहते हैं कि हिन्दुस्तानी ज़बान में 'कलचर' के लिये ठीक शब्द क्या होना चाहिये? अंगरेज़ी में 'सिविलीज़ेशन, और 'कलचर' इन दोनों शब्दों का बिलकुल एक ही मतलब तो नहीं है, लेकिन फिर भी यह दोनों शब्द बहुत मिलते जुलते हैं. मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि कलचर से आदमी की अन्दर की हालत का पता चलता है और 'सिविलाइज़ेशन' उस अन्दर की हालत की बाहरी [illegible] रेखा को कहते हैं. 'कलचर' और 'सिविलाइज़ेशन' इन दोनों शब्दों को आम तौर पर

معنی نہیں سمجھ رہے ہیں ۔ کلچر کس بات میں ہے، یا کلچر میں کیا کیا چیزیں شامل ہیں، اس پر ہم سب کی ایک ہی رائے نہیں ہے ۔ ایک خاص طرح کے کپڑے پہننا ؟ شاید ! خاص طرح سے بولنا ؟ ایک درجے تک ۔ ایک دوسرے کو خاص طرح سے سلام کرنا ؟ ہاں ! یہ بھی ۔ تعلیم کا ایک خاص ڈھنگ ؟ بے شک، کچھ تو ۔ لیکن کس چیز کی تعلیم اور کسطرح کی؟ اس میں بھی اپنے اپنے ڈھنگ ہو سکتے ہیں ۔ گیان کا بھنڈار ؟ کچھ تو ! لیکن پھر کسطرح کا گیان ؟ طرح طرح کا ۔ لین دین اور آپسی بیوہار میں ایک خاص طرح کا ڈھنگ ؟ ہاں ! یہ بھی ۔ اور گھریلو جیون میں گھر والوں میں آپسی برتاؤ ؟ ہاں ٹھیک ! گھر میں خاص خاص موقعوں جیسے بچہ پیدا ہونا، بیاہ شادی وغیرہ منانے کا ڈھنگ؟ ہاں، بے شک ۔ ایک خاص طرح کا مذہبی جذبہ یا دھارمک بھاونا ؟ ہاں، شاید ۔ آرٹ، کلا، شاعری کویتا، گانا بجانا، چترکاری جیسے ہنر میں سے کسی ایک یا زیادہ کی طرف خاص جھکاؤ ؟ ہاں، یہ بھی ۔ میلے تماشے، جلسے، موسم کے تیوہار، دوسرے تیوہار اور اپنے اتہاس کے خاص خاص دن منانا ؟ ہاں ! کھان پان، دعوتوں اور جیوناروں کے خاص خاص طریقے ؟ ہاں ! کچھ تو یہ بھی ۔ مکان بنانے کا کوئی خاص ڈھنگ ؟ ہو سکتا ہے یا شاید ہے، اس میں بھی بہت سے الگ الگ ڈھنگ رہیں گے ۔ اپنا ایک خاص ساہتیہ یعنی ادب اور اپنی سائنس یعنی وگیان ؟ ضرور، تھوڑا بہت ۔ ایک ایسی بولی جسے سب بول اور سمجھ سکیں ؟ بلاشک ! ایک دوسرے کو سمجھنے اور ایک دوسرے سے بات چیت کرنے کے لئے ضروری ہے ۔

اوپر کے سوالوں میں شاید کوئی خاص سلسلہ معلوم نہیں ہوتا ۔ انکے جواب بھی جو جیسے مجھے سوجھے، کچھ جھجھکتے ہوئے میں نے لکھ دئے ۔ یہ سب جواب نامکمل اور ادھورے ہیں اور جیسا چاہئے صاف نہیں ہیں ۔ پھر بھی ہر جواب میں کچھ نہ کچھ سچائی ضرور ہے ۔ کلچر کی ایسی کیا پری بھاشا یا تعریف کی جائے جو ادھوری نہ ہو، جو مکمل ہو، جس سے کلچر ایک الگ صاف چیز دکھائی دے اور جسے عقل بھی مان لے ۔ اب ہم پہلے یہ دیکھنا چاہتے ہیں کہ ہندستانی زبان میں کلچر کے لئے ٹھیک شبد کیا ہونا چاہئے ؟ انگریزی میں 'سولیزیشن' اور 'کلچر' ان دونوں شبدوں کا بالکل ایک ہی مطلب تو نہیں ہے، لیکن پھر بھی یہ دونوں شبد بہت ملتے جلتے ہیں ۔ موٹے طور پر کہا جا سکتا ہے کہ کلچر سے آدمی کی اندر کی حالت کا پتہ چلتا ہے اور 'سولیزیشن' اس اندر کی حالت کی باہری روپ ریکھا کو کہتے ہیں ۔ 'کلچر' اور 'سولائزیشن' ان دونوں شبدوں کو لوگ عام طور پر

हिन्दुस्तानी कलचर

(डा. भगवानदास जी का भाशन जो उन्होंने हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की पहली बैठक में दिया)

प्यारे दोस्तो और साथियो !

मेरा जी तो बहुत चाहता था कि आप से मिलकर एक ऐसे मसले पर कि जिसका हमारे देस की आगे की भलाई के साथ गहरा लगाव है, बातें करता और खुश होता ! ार बदक़िस्मती से मेरा जिस्म मेरे दिल का साथ नहीं दे रहा है. इसलिये मैं अपने कुछ खयाल लिखकर आपके सामने रख रहा हूँ और इसी से अपनी तसल्ली कर लेता हूँ. मैंने आपसे बहुतेरा कहा फिर भी आपने अपनी ावर्निंग बाडी की सदारत का भार मुझ पर रखना ही ठीक समझा. मैं इस भार के उठाने के क़ाबिल नहीं हूँ, क्योंकि मैं स्वभाव से ही चीज़ों के अमली पहलू को शायद कम समझता हूँ और अपनी राय और अपने उसूलों में कुछ कट्टर भी हूँ. इसलिये जो कुछ कहने वाला हूँ, उसमें ापको बहुत सी कमियां दिखाई देंगी. मेरी प्रार्थना है कि ाप धीरज के साथ उन्हें सुन लेंगे. मुझे बरसों से यह क आदत सी पड़ गई है कि जिन खास खास शब्दों को म अपने पबलिक कामों या निजी कामों में भी बरतते हैं उन शब्दों के अर्थ और उनके माने मैं बिलकुल साफ़ साफ़ समझ लेने की कोशिश करता हूँ. हमारी सोसाइटी का नाम 'हिन्दुस्तानी कलचर सोसइटी' है. किसी भी सभा-सोसाइटी का नाम खास चीज़ होता है. नाम ही से लोगों को पता चलता है, या कम से कम चलना चाहिये, कि वह सभा सोसाइटी क्या चाहती है. उसका असली मक़सद या उद्देश्य क्या है, वह क्यों बनाई गई, उसके बनाने की क्या ग़रज़ है और वह क्या करना चाहती है ? हमारी सोसाइटी के नाम में 'हिन्दुस्तानी' शब्द के बारे में तो कोई शक न होना चाहिये. 'हिन्दुस्तानी' के साफ़ माने हैं—'हिन्दुस्तान की चीज़' या 'हिन्दुस्तान में पैदा हुआ और पला हुआ आदमी, इस भारत मां का बच्चा' और 'इस तरह के आदमी की सब चीज़ें या उसके सब मामले.' सोसाइटी शब्द के माने भी काफ़ी साफ़ हैं. 'सोसाइटी' के माने हैं—कुछ ऐसे लोगों की एक जमात जो मिलकर कोई काम करना चाहते हों और जिनका एक दूसरे से वैसा ही नाता हो जैसा किसी भी ज़िन्दा जिस्म के अन्दर रग पट्ठों और हाथ पैरों का एक दूसरे से.

लेकिन 'कलचर' शब्द इतना आसान नहीं है. मुझे नहीं मालूम कि हम सब 'कलचर' के एक ही माने समझ रहे हैं या अलग अलग. मुझे शक है कि हम सब एक

ھندستانی کلچر

(ڈاکٹر بھگوان داس جی کا بھاشن جو اُنہوں نے ھندستانی کلچر سوسائٹی کی پہلی بیٹھک میں دیا)

پیارے دوستو اور ساتھیو!

میرا جی تو بہت چاہتا تھا کہ آپ سے مل کر ایک ایسے مسئلے پر کہ جس کا ھمارے دیس کی آگے کی بھلائی کے ساتھ گہرا لگاؤ ہے، باتیں کرتا اور خوش ہوتا! پر بدقسمتی سے میرا جسم میرے دل کا ساتھ نہیں دے رہا ہے. اِس لئے میں اپنے کچھ خیال لکھ کر آپ کے سامنے رکھ رہا ہوں اور اِسی سے اپنی تسلی کر لیتا ہوں. میں نے آپ سے بہتیرا کہا پھر بھی آپ نے اپنی گورننگ باڈی کی صدارت کا بھار مجھ پر رکھنا ہی ٹھیک سمجھا. میں اِس بھار کے اُٹھانے کے قابل نہیں ہوں، کیونکہ میں سوبھاؤ سے ہی چیزوں کے عملی پہلو کو شاید کم سمجھتا ہوں اور اپنی رائے اور اپنے اُصولوں میں کچھ کٹر بھی ہوں. اس لئے جو کچھ کہنے والا ہوں اُس میں آپ کو بہت سی کمیاں دکھائی دیں گی. میری پرارتھنا ہے کہ آپ دھیرج کے ساتھ اُنہیں سن لیں گے. مجھے برسوں سے یہ ایک عادت سی پڑ گئی ہے کہ جن خاص خاص شبدوں کو ہم اپنے پبلک کاموں یا نجی کاموں میں بھی برتتے ہیں اُن شبدوں کے ارتھ اور اُن کے معنے میں بالکل صاف صاف سمجھ لینے کی کوشش کرتا ہوں. ھماری سوسائٹی کا نام ھندستانی کلچر سوسائٹی ہے. کسی بھی سبھا سوسائٹی کا نام خاص چیز ہوتا ہے. نام ہی سے لوگوں کو پتہ چلتا ہے، یا کم سے کم چلنا چاہئے کہ وہ سبھا سوسائٹی کیا چاہتی ہے. اُس کا اصلی مقصد یا اُددیش کیا ہے، وہ کیوں بنائی گئی، اُس کے بنانے کی کیا غرض ہے اور وہ کیا کرنا چاہتی ہے؟ ھماری سوسائٹی کے نام میں 'ھندستانی' شبد کے بارے میں تو کوئی شک نہ ہونا چاہئے. ھندستانی کے صاف معنے ہیں—'ھندستان کی چیز' یا 'ھندستان میں پیدا ہوا اور پلا ہوا آدمی' اِس بھارت ماں کا بچہ' اور 'اس طرح کے آدمی کی سب چیزیں یا اُس کے سب معاملے.' سوسائٹی شبد کے معنی بھی کافی صاف ہیں. 'سوسائٹی' کے معنی ہیں—کچھ ایسے لوگوں کی ایک جماعت جو مل کر کوئی کام کرنا چاہتے ہوں اور جن کا ایک دوسرے سے ویسا ہی ناتا ہو جیسا کسی بھی زندہ جسم کے اندر رگ پٹھوں اور ہاتھ پیروں کا ایک دوسرے سے.

لیکن 'کلچر' شبد اتنا آسان نہیں ہے. مجھے نہیں معلوم کہ ہم سب کلچر کے ایک ہی معنی سمجھ رہے ہیں یا الگ الگ. مجھے شک ہے کہ ہم سب ایک

बैठकों की कारवाई का रजिस्टर रखेगा, सोसाइटी का दफ़्तर उसकी देख रेख में रहेगा, और वह इन्तज़ामी कमेटी के फ़ैसलों पर अमल करायगा.

अगर सेक्रेटरी कुछ दिनों के लिये ग़ैरहाज़िर होगा तो इन्तज़ामी कमेटी के सद्र को इस बात का अख्तियार होगा कि इन्तज़ामी कमेटी के किसी मेम्बर को सेक्रेटरी का काम करने के लिये मुक़र्रर कर दे.

इन्तज़ामी कमेटी के सद्र की रज़ामन्दी से सेक्रेटरी को अख्तियार होगा कि अपना कोई काम इन्तज़ामी कमेटी के किसी मेम्बर के सुपुर्द कर दे.

इन क़ायदों मे अदल बदल

इन्तज़ामी कमेटी को इस बात का अख्तियार होगा कि अगर ज़रूरी समझे तो अपने मेम्बरों की कम से कम दो तिहाई की कसरत राय से इन क़ायदों में कोई तब्दीली करे या इन में कोई नया क़ायदा बढ़ावे, बशर्ते कि इन्तज़ामी कमेटी को यह भी हक़ होगा कि अपनी किसी बैठक में हाज़िर मेम्बरों की कसरत राय से इस तरह के क़ायदे या उसूल बनावे जो इन क़ायदों के ख़िलाफ़ न जाते हों.

मेम्बरी का एलान

मैंने हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी के छपे हुए मक़सद और सोसाइटी बनाने की ज़रूरत (मेमोरेण्डम आफ़ एसोसियेशन) पढ़े हैं. मैं सोसाइटी के मक़सदों को और उन मक़सदों को पूरा करने के लिये सोसाइटी जो जो काम करना चाहती है उन्हें पसन्द करता हूं. मैं सब बड़े बड़े धर्म मज़हबों और कलचरों की बुनियादी एकता को मानता हूं. मैं मानता हूं कि पिछले ज़माने में हिन्दुस्तान के रहने वालों के अन्दर एक मिली जुली कलचर और एक मिली जुली समाजी ज़िन्दगी पैदा हो रही थी, और आज भी हमारा भला इसी में है कि हिन्दुस्तानी कलचर की एकता को बढ़ावें. मैं वादा करता हूं कि मैं सोसाइटी के मक़सदों को पूरा करने के लिये और सब धर्मों, जातों और बिरादरियों के लोगों में एक दूसरे की इज़्ज़त, प्रेम और मेलजोल बढ़ाने के लिये जो कुछ कर सकूँगा करूँगा.

दस्तख़त ....

بیٹھکوں کی کارروائی کا رجسٹر رکھےگا سوسائٹی کا دفتر
ن کی دیکھ ریکھ میں رہے گا اور وہ انتظامی کمیٹی
فیصلوں پر عمل کرائے گا .

اگر سکریٹری کچھ دنوں کیلئے غیر حاضر ہوگا تو
نظامی کمیٹی کے صدر کو اس بات کا اختیار ہوگا کہ
نظامی کمیٹی کے کسی ممبر کو سکریٹری کا کام کرنے
لئے مقرر کر دے .

انتظامی کمیٹی کے صدر کی رضامندی سے سکریٹری
اختیار ہوگا کہ وہ اپنا کوئی کام انتظامی کمیٹی کے
سی ممبر کے سپرد کر دے .

قاعدوں میں ادل بدل

انتظامی کمیٹی کو اس بات کا اختیار ہوگا کہ اگر
روری سمجھے تو اپنے ممبروں کی کم سے کم دو تہائی
کثرت رائے سے ان قاعدوں میں کوئی تبدیلی کرے
ان میں کوئی نیا قاعدہ بڑھاوے' بشرطیکہ انتظامی
مٹی کو یہ بھی حق ہوگا کہ اپنی کسی بیٹھک میں
ضر ممبروں کی کثرت رائے سے اس طرح کے قاعدے
اصول بناوے جو ان قاعدوں کے خلاف نہ جاتے
ں .

مبری کا اعلان

میں نے ہندستانی کلچر سوسائٹی کے چھپے ہوئے
صد اور سوسائٹی بنانے کی ضرورت (میمورنڈم آف
سوسی ایشن) پڑھے ہیں . میں سوسائٹی کے مقصدوں
اور ان مقصدوں کو پورا کرنے کے لئے سوسائٹی جو
کام کرنا چاہتی ہے انہیں پسند کرتا ہوں . میں
ب بڑے بڑے دھرم مذہبوں اور کلچروں کی بنیادی ایکتا
مانتا ہوں . میں مانتا ہوں کہ پچھلے زمانے میں
ندستان کے رہنے والوں کے اندر ایک ملی جلی کلچر
ایک ملی جلی سماجی زندگی پیدا ہو رہی تھی' اور
بھی ہمارا بھلا اسی میں ہے کہ ہندستانی کلچر کی
کتا کو بڑھاویں . میں وعدہ کرتا ہوں کہ میں سوسائٹی
مقصدوں کو پورا کرنے کیلئے اور سب دھرموں' جاتوں
برادریوں کے لوگوں میں ایک دوسرے کی عزت پریم اور
ل جول بڑھانے کیلئے جو کچھ کر سکوں گا کروں گا .

دستخط ....

इन्तज़ामी कमेटी की बैठक

इन्तज़ामी कमेटी आम तौर पर हर तीन महीने में एक बार मिलेगी. इन्तज़ामी कमेटी की बैठक में तीन का कोरम होगा.

शामिल करने का अख़्तियार

इन्तज़ामी कमेटी को अख़्तियार होगा कि जब कभी ज़रूरी समझे सोसाइटी के मेम्बरों में से एक या ज़्यादा मेम्बर अपनी कमेटी में शामिल कर ले.

ख़ाली जगह

सोसाइटी के ओहदेदारों में से और इन्तज़ामी कमेटी के ओहदेदारों या मेम्बरों में से अगर किसी की जगह ख़ाली होगी तो इन्तज़ामी कमेटी अपनी कसरत राय से उस जगह को भर देगी.

सोसाइटी का सदर

सोसाइटी की आम बैठक में सोसाइटी का सदर सदर होगा. वही उसकी आम पालिसी चलायेगा. सोसाइटी की बैठक में सदर की ग़ैरहाज़िरी में कोई एक नायब सदर सदर होगा.

अगर सदर और नायब सदर दोनों ग़ैरहाज़िर होंगे तो बैठक को अख़्तियार होगा कि वह उस जलसे का काम चलाने के लिये किसी को सदर चुन ले.

इन्तज़ामी कमेटी का सदर

इन्तज़ामी कमेटी के जलसों में इन्तज़ामी कमेटी का सदर सदर होगा.

ख़ज़ान्ची

सोसाइटी के रुपये पैसे के लेन देन का काम ख़ज़ान्ची करेगा. वह आमदनी और ख़र्च का हिसाब रक्खेगा, सोसाइटी का सालाना चिट्ठा (बैलेन्स शीट) तैयार करायेगा और उसे बाज़ाब्ता आडिट कराकर इन्तज़ामी कमेटी की बैठक के सामने रक्खेगा. आडिटर को इन्तज़ामी कमेटी अपनी कसरत राय से मुक़र्रर करेगी. इन्तज़ामी कमेटी अपनी सालाना रिपोर्ट में जो सोसाइटी की आम बैठक के सामने रक्खी जावेगी चिट्ठा (बैलेन्स शीट) को शामिल कर लेगी.

अगर किसी वजह से ख़ज़ान्ची कुछ दिनों के लिये ग़ैरहाज़िर होगा तो इन्तज़ामी कमेटी के सदर को अख़्तियार होगा कि वह इन्तज़ामी कमेटी के किसी मेम्बर को ख़ज़ान्ची का काम करने के लिये मुक़र्रर कर दे.

सेक्रेटरी

सेक्रेटरी सोसाइटी की और इन्तज़ामी कमेटी की

انتظامی کمیٹی کی بیٹھک

انتظامی کمیٹی عام طور پر ہر تین مہینے میں ایک بار ملے گی۔ انتظامی کمیٹی کی بیٹھک تین کا کورم ہوگا۔

شامل کرنے کا اختیار

انتظامی کمیٹی کو اختیار ہوگا کہ جب کبھی ضروری سمجھے سوسائٹی کے ممبروں میں سے ایک یا زیادہ ممبر اپنی کمیٹی میں شامل کرلے۔

خالی جگہ

سوسائٹی کے عہدہ‌داروں میں سے اور انتظامی کمیٹی کے عہدہ‌داروں یا ممبروں میں سے اگر کسی کی جگہ خالی ہوگی تو انتظامی کمیٹی اپنی کثرت رائے سے اُس جگہ کو بھر دے گی۔

سوسائٹی کا صدر

سوسائٹی کی عام بیٹھک میں سوسائٹی کا صدر صدر ہوگا۔ وہی اُس کی عام پالیسی چلائے گا۔ سوسائٹی کی بیٹھک میں صدر کی غیر حاضری میں کوئی ایک نائب صدر صدر ہوگا۔

اگر صدر اور نائب صدر دونوں غیر حاضر ہوں گے تو بیٹھک کو اختیار ہوگا کہ وہ اس جلسے کا کام چلانے کیلئے کسی کو صدر چن لے۔

انتظامی کمیٹی کا صدر

انتظامی کمیٹی کے جلسوں میں انتظامی کمیٹی کا صدر صدر ہوگا۔

خزانچی

سوسائٹی کے روپیہ پیسے کے لین دین کا کام خزانچی کرے گا۔ وہ آمدنی اور خرچ کا حساب رکھے گا، سوسائٹی کا سالانہ چٹھا (بیلنس شیٹ) تیار کرائے گا اور اُسے باضابطہ آڈٹ کراکر انتظامی کمیٹی کی بیٹھک کے سامنے رکھے گا۔ آڈیٹر کو انتظامی کمیٹی اپنی کثرت رائے سے مقرر کرے گی۔ انتظامی کمیٹی اپنی سالانہ رپورٹ میں جو سوسائٹی کی عام بیٹھک کے سامنے رکھی جاوے گی چٹھے (بیلنس شیٹ کو شامل کرلیگی۔

اگر کسی وجہ سے خزانچی کچھ دنوں کے لئے غیر حاضر ہوگا تو انتظامی کمیٹی کے صدر کو اختیار ہوگا کہ وہ انتظامی کمیٹی کے کسی ممبر کو خزانچی کا کام کرنے کیلئے مقرر کر دے۔

سکریٹری

سکریٹری سوسائٹی کی اور انتظامی کمیٹی کی

हर मेम्बर सोसाइटी को एक रुपया सालाना चन्दा देगा. हर ऐसा मेम्बर जो एक बार में सौ रुपये या ज़्यादा देगा ज़िन्दगी भर सोसाइटी का मेम्बर (लाइफ़ मेम्बर) रहेगा.

सरपरस्त (पेट्रन)

जो लोग ५०० रु० या उससे ज़्यादा चन्दा देंगे उनके नाम सोसाइटी के सरपरस्तों (पेट्रन) में लिखे जायेंगे.

सोसाइटी के ओहदेदार

सोसाइटी के सदर

श्री अब्दुल मजीद ख़्वाजा, एम. एल. ए, बैरिस्टर, समी मंज़िल, अलीगढ़.

सोसाइटी के नायब सदर वाइस प्रेसीडेण्ट)

(1) डा० भगवानदास, एम० ए०, डी० लिट०, लेखक, रईस और ज़मींदार, बनारस.

(2) डा० अब्दुलहक़, डी० लिट्, सेक्रेटरी अंजुमन तरक़्क़ी उरदू, कराची (पाकिस्तान)

इन्तज़ामी कमेटी के सेक्रेटरी और ख़ज़ान्ची सोसाइटी के भी सेक्रेटरी और ख़ज़ान्ची होंगे.

आम बैठक

साल में कम से कम एक मर्तबा सोसाइटी के मेम्बरों की एक आम बैठक होगी.

सालाना आम बैठक की कार्रवाई

सोसाइटी की सालाना आम बैठक में इन्तज़ामी कमेटी के उस साल के काम की रिपोर्ट और उसके साथ सालाना चिट्ठा (बैलेन्स शीट) बैठक के सामने ग़ौर करने के लिये रक्खा जावेगा.

नोटिस

सोसाइटी की आम बैठक का नोटिस सब मेम्बरों को बैठक की तारीख़ से कम से कम एक महीना पहले भेजा जायगा.

कोरम

सोसाइटी की आम बैठक का कोरम ग्यारह होगा.

इन्तज़ामी कमेटी

सोसाइटी के सब काम इन्तज़ामी कमेटी (गवरनिंग बाडी) के अख़्तियार में होंगे, वही उनका इन्तज़ाम करेगी और सोसाइटी के मक़सदों को पूरा करने के लिये सब ज़रूरी क़दम उठायेगी और देख भाल करेगी.

ہر ممبر سوسائٹی کو ایک روپیہ سالانہ چندہ دے گا ۔

ہر ایسا ممبر جو ایک بار میں سو روپیہ یا زیادہ دے گا زندگی بھر سوسائٹی کا ممبر (لائف ممبر) رہے گا ۔

سرپرست (پیٹرن)

جو لوگ پانچ سو روپیہ یا اُس سے زیادہ چندہ دینگے ان کے نام سوسائٹی کے سرپرستوں (پیٹرن) میں لکھے جائینگے ۔

سوسائٹی کے عہدہ‌دار

سوسائٹی کے صدر

شری عبدالمجید خواجہ، ایم ایل . اے، بیرسٹر، سمیع منزل، علیگڑھ ۔

سوسائٹی کے نائب صدر (وائس پریسیڈنٹ)

۱- ڈاکٹر بھگوان داس ایم . اے . ڈی.لٹ، لیکھک، رئیس اور زمیندار، بنارس ۔

۲- ڈاکٹر عبدالحق ڈی.لٹ، سکریٹری انجمن ترقی اردو، کراچی (پاکستان) ۔

انتظامی کمیٹی کے سکریٹری اور خزانچی سوسائٹی کے بھی سکریٹری اور خزانچی ہوں گے ۔

عام بیٹھک

سال میں کم سے کم ایک مرتبہ سوسائٹی کے ممبروں کی ایک عام بیٹھک ہوگی ۔

سالانہ عام بیٹھک کی کارروائی

سوسائٹی کی سالانہ عام بیٹھک میں انتظامی کمیٹی کے اُس سال کے کام کی رپورٹ اور اُس کے ساتھ سالانہ چٹھا (بیلنس شیٹ) بیٹھک کے سامنے غور کرنے کے لئے رکھا جائیگا ۔

نوٹس

سوسائٹی کی عام بیٹھک کا نوٹس سب ممبروں کو بیٹھک کی تاریخ سے کم سے کم ایک مہینے پہلے بھیجا جائیگا ۔

کورم

سوسائٹی کی عام بیٹھک کا کورم گیارہ ہوگا ۔

انتظامی کمیٹی

سوسائٹی کے سب کام انتظامی کمیٹی (گورننگ باڈی) کے اختیار میں ہوں گے، وہی اُن کا انتظام کریگی اور سوسائٹی کے مقصدوں کو پورا کرنے کے لئے سب ضروری قدم اٹھائیگی اور دیکھ بھال کریگی ۔

मेम्बर

(1) श्री अब्दुल मजीद ख़्वाजा एम. एल. ए., बैरिस्टर, समी मंज़िल, अलीगढ़ (सोसाइटी के सदर).

(2) डा. अब्दुल हक़ डी. लिट, सेक्रेटरी अंजुमन तरक़्क़ी उर्दू, कराची, (पाकिस्तान)

(3 डा. सय्यद महमूद पी. एच. डी., डेवलपमेन्ट मिनिस्टर, पटना.

(4 मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, लेखक, दारुल-मुसन्निफ़ीन आज़मगढ़.

(5) श्री मंज़र अली सोख़्ता, सेवा कुंज आश्रम, गंगा घाट, उन्नाव.

(6) श्री बी. जी. खेर, प्रीमियर, बम्बई प्रान्त, बम्बई.

(7) श्री एस. के. रुद्रा एम. ए. (केन्टब), प्रोफ़ेसर इलाहाबाद यूनीवरसिटी, इलाहाबाद.

(8) महात्मा भगवानदीन, एडीटर 'नया हिन्द' 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

(9) सेठ पूनमचन्द राँका, राँका कालोनी, नागपुर.

(10) क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार, सेक्रेटरी अंजुमन तरक़्क़ी उर्दू, अलीगढ़.

(11) श्री ओम प्रकाश पालीवाल, पत्रकार, फ़िरोज़ाबाद, आगरा.

(12) पं. विश्वम्भर नाथ पांडे, एडीटर 'विश्ववाणी' 142, साउथ मलाका, इलाहाबाद.

ख़ज़ान्ची

डा० ताराचन्द एम० ए०, डी० फ़िल०, सेक्रेटरी एजुकेशन मिनिस्ट्री, 22 औरंगज़ेब रोड, नई दिल्ली.

सेक्रेटरी

पं० सुन्दरलाल, एडीटर 'नया हिन्द', 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

सोसाइटी के क़ायदे

मेम्बरी

हर औरत या मर्द जिसकी उमर 21 साल से ऊपर हो, चाहे किसी भी धर्म, जात या पोलिटिकल पार्टी का हो, सोसाइटी का मेम्बर हो सकेगा, बशर्ते कि वह ऊपर लिखे सोसाइटी के मक़सदों से इत्तफ़ाक़ करता हो, साथ में दिये हुये मेम्बरी के फ़ार्म पर दस्तख़त कर दे और इन्तज़ामी कमेटी के मेम्बरों की कसरत राय उसके नाम को मंज़ूर करे.

(1) شری عبدالمجید خواجہ ایم . ایل . اے، بیرسٹر، سمیع منزل، علی گڑھ (سوسائٹی کے صدر)

(2) ڈاکٹر عبدالحق ڈی.لٹ، سکریٹری انجمن ترقی اردو، کراچی، (پاکستان) .

(3) ڈاکٹر سید محمود پی . ایچ . ڈی .، ڈیولپمنٹ منسٹر، پٹنہ .

(4) مولوی سید سلیمان ندوی، لیکھک، دارالمصنفین اعظم گڈھ .

(5) شری منظر علی سوختہ، سیوا کنج آشرم، گنگا گھاٹ، اناؤ .

(6) شری بی . جی . کھیر، پریمیر، بمبئی پرانت، بمبئی .

(7) شری ایس . کے . رُدرا ایم . اے، (کینٹب)، پروفیسر الہ آباد یونیورسٹی، الہ آباد .

(8) مہاتما بھگوان دین، ایڈیٹر 'نیا ہند' '145 مٹھی گنج، الہ آباد .

(9) سیٹھ پونم چند رانکا، رانکا کالونی، ناگپور .

(10) قاضی محمد عبدالغفار، سکریٹری، انجمن ترقی اردو، علی گڑھ .

(11) شری اوم پرکاش پالیوال، پترکار، فیروزآباد، آگرہ .

(12) پنڈت بشمبھر ناتھ پانڈے، ایڈیٹر 'وشوانی' 142 ساؤتھ ملاکا، الہ آباد .

...نچی

ڈاکٹر تارا چند ایم . اے، ڈی . فل، سکریٹری ایجوکیشن منسٹری، 22 اورنگزیب روڈ، نئی دہلی .

...یٹری

پنڈت سندرلال، ایڈیٹر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد .

سوسائٹی کے قاعدے

...ری

ہر عورت یا مرد جسکی عمر 21 سال سے اوپر ہو چاہے ی بھی دھرم، جات یا پولیٹکل پارٹی کا ہو سوسائٹی ممبر ہوسکیگا بشرطیکہ وہ اوپر لکھے سوسائٹی کے مقصدوں سے اتفاق کرتا ہو، ساتھ میں دئے ہوئے ممبری کے فارم پر دستخط کر دے اور انتظامی کمیٹی کے ممبروں کی کثرت رائے اسکے نام کو منظور کرے .

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

मेमोरण्डम आफ़ एसोसियेशन

नाम

इस सोसाइटी का नाम हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी होगा.

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जो सब हिन्दुस्तानियों की मिली जुली कलचर हो.

(2) ऐसे पढ़ाई घरों का क़ायम करना जहाँ इस हिन्दुस्तानी कलचर की तालीम दी जाय और जिनके ज़रिये हिन्दुस्तानी कला और कलचर के सब अंगों की जानकारी फैले.

(3) ऐसे किताब घरों का क़ायम करना जहाँ हिन्दुस्तान की तारीख़ की पढ़ाई और छान बीन की जा सके; ताकि हमारी सभ्यता के कारनामों की जांच हो, और सब धर्मों, फ़लसफ़ों, अदबों, वग़ैरा की खोज हो सके.

(4) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना और निकालना.

(5) सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेकचरों का इन्तज़ाम और सब इस तरह के कामों का करना जो एकता बढ़ाने के लिये ज़रूरी समझे जावें. सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िरक़ों की समाजी सेवा करना जिससे आपस में मेल बढ़े.

(6) उन सब लोगों और सोसाइटियों की मदद करना जिनका मक़सद हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी के मक़सद से मिलता हो.

(7) रुपया जमा करना और ऐसे सब काम करना जिनसे सोसाइटी का मक़सद और सोसाइटी बनाने की ग़रज़ पूरी हो.

इन्तज़ाम

सोसाइटी की एक इन्तज़ामी कमेटी (गवरनिंग बाडी) होगी, इस कमेटी के सुपुर्द सोसाइटी के सब कामों का इन्तज़ाम होगा. यह कमेटी यह होगी —

इन्तज़ामी कमेटी के सदर

डाक्टर भगवानदास एम० ए०, डी० लिट, लेखक, [illegible] और [illegible], बनारस.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

میمورینڈم آف ایسوسی ایشن

نام

اس سوسائٹی کا نام ہندستانی کلچر سوسائٹی ہوگا۔

مقصد

1— ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جو سب ہندستانیوں کی ملی جلی کلچر ہو۔

2— ایسے پڑھائی گھروں کا قائم کرنا جہاں اس ہندستانی کلچر کی تعلیم دی جائے اور جنکے ذریعے ہندستانی کلا اور کلچر کے سب انگوں کی جان کاری پھیلے۔

3— ایسے کتاب گھروں کا قائم کرنا جہاں ہندستان کی تاریخ کی پڑھائی اور چھان بین کی جا سکے، تاکہ ہماری سبھیتا کے کارناموں کی جانچ ہو اور سب دھرموں، فلسفوں، ادبوں وغیرہ کی کھوج ہو سکے۔

4— ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا اور نکالنا۔

5— سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں کا انتظام اور سب اس طرح کے کاموں کا کرنا جو ایکتا بڑھانے کے لئے ضروری سمجھے جاویں۔ سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں کی سماجی سیوا کرنا جس سے آپس میں میل بڑھے۔

6— اُن سب لوگوں اور سوسائٹیوں کی مدد کرنا جن کا مقصد ہندستانی کلچر سوسائٹی کے مقصد سے ملتا ہو۔

7— روپیہ جمع کرنا اور ایسے سب کام کرنا جن سے سوسائٹی کا مقصد اور سوسائٹی بنانے کی غرض پوری ہو۔

انتظام

سوسائٹی کی ایک انتظامی کمیٹی (گورننگ باڈی) ہوگی۔ اس کمیٹی کے سپرد سوسائٹی کے سب کاموں کا انتظام ہوگا۔ وہ کمیٹی یہ ہوگی:—

انتظامی کمیٹی کے صدر

ڈاکٹر بھگوان داس ایم۔ اے، ڈی لٹ، لیکھک، [illegible] اور [illegible]، بنارس۔

तरीक़ों को अपने मक़सद के पूरा करने के लिये काम में लावें—

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जो सब हिन्दुस्तानियों की मिली जुली कलचर हो.

(2) ऐसे पढ़ाई घरों का क़ायम करना जहाँ इस हिन्दुस्तानी कलचर की तालीम दी जाय, और जिनके ज़रिये हिन्दुस्तानी कला और कलचर के सब अंगों की जानकारी फैले.

(3) ऐसे किताब घरों का क़ायम करना जहाँ हिन्दुस्तान की तारीख़ की पढ़ाई और छानबीन की जा सके ताकि हमारी सभ्यता के कारनामों की जांच हो, और सब धर्मों, फ़लसफ़ों, अदबों वग़ैरा की खोज हो सके.

(4) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना और निकालना.

(5) सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेकचरों का इन्तज़ाम और सब इस तरह के कामों का करना जो एकता बढ़ाने के लिये ज़रूरी समझे जावें. सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िरक़ों की समाजी सेवा करना जिससे आपस में मेल बढ़े.

(6) उन सब लोगों और सोसाइटियों की मदद करना जिनका मक़सद हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी के मक़सद से मिलता हो.

(7) रुपया जमा करना और ऐसे सब काम करना जिनसे सोसाइटी का मक़सद और सोसाइटी बनाने की ग़रज़ पूरी हो.

सुन्दरलाल
सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

ں کو اپنے مقصد کے پورا کرنے کیلئے کام میں

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جو سب ہندستانیوں کی ملی جلی کلچر ہو.

(2) ایسے پڑھائی گھروں کا قائم کرنا جہاں اس ہندستانی کلچر کی تعلیم دی جائے اور جنکے ذریعے ہندستانی کلا اور کلچر کے سب انگوں کی جان کاری پھیلے.

(3) ایسے کتاب گھروں کا قائم کرنا جہاں ہندستان کی تاریخ کی پڑھائی اور چھان بین کی جا سکے تاکہ ہماری سبھیتا کے کارناموں کی جانچ ہو' اور سب دھرموں فلسفوں ادبوں وغیرہ کی کھوج ہو سکے.

(4) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا اور نکالنا.

(5) سبھاؤں' کانفرنسوں اور لیکچروں کا انتظام اور سب اس طرح کے کاموں کا کرنا جو ایکتا بڑھانے کے لئے ضروری سمجھے جاویں. سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں کی سماجی سیوا کرنا جس سے آپس میں میل بڑھے.

(6) اُن سب لوگوں اور سوسائٹیوں کی مدد کرنا جن کا مقصد ہندستانی کلچر سوسائٹی کے مقصد سے ملتا ہو.

(7) روپیہ جمع کرنا اور ایسے سب کام کرنا جن سے سوسائٹی کا مقصد اور سوسائٹی بنانے کی غرض پوری ہو.

سندرلال
سکریٹری' ہندستانی کلچر سوسائٹی

ीबी को मिटाना है तो हमें मिलकर कुल हिन्द के सामी
ार की ऐसी तजवीजें सोचनी पड़ेंगी जिन पर हमारी
ो समझ खर्च हो. जिन मुसीबतों में हमारे देस भाई
ज डूबे हुए हैं वह सब पर एक सा असर डालती हैं.
़ू, मुसलमान और सब बराबर ही उनके शिकार हैं.
लिये उनके दूर करने की तदबीरें सब को मिलकर
निकालनी पड़ेंगी.

हमारे इस काम का सब से जरूरी पहलू इखलाकी
नैतिक है. जिन्दगी की हार ने हमारे दिलों को छोटा
दिया है. हमें इस तंगी को दूर करना है. हमें अपने
तों को इतना बड़ा, अपनी आत्माओं को इतना ऊँचा
ाना है कि हर हिन्दुस्तानी की भलाई में हम अपनी
ाई देखें. हमें अपने अन्दर की उन दीवारों को गिराना
जिन्होंने हमें छोटे छोटे घरौंदों में बन्द कर दिया है.
प्यार और मुहब्बत की जड़ को सींचना है जिसकी
फैलकर हमारे सब देस भाइयों को अटूट रिश्तों में
ध दे.

ऊपर हमने आदर्शों की बात कही है और जीवन
बुनियादी असूलों और सच्चे मकसदों की चर्चा की है.
ने बताया है कि हर आदमी का दिल खुदा और खुदी,
मार्थ और स्वार्थ, सब के भले और अपने सुख की
हिश की निरंतर लड़ाई का मैदान है. हम कह चुके हैं
आदमी की अपनी अपनी ज़रूरतें और समाज की
रतें जुदा जुदा हैं. हमने कहा है हिन्दुस्तान के अलग
लग फ़िरकों और बिरादरियों की ज़िन्दगी मिलाकर तरह
ह के मोतियों की एक लड़ी के समान है और हमारे
धर्मों के अन्दर एक सचाई की रोशनी है. हमने इस
त की जरूरत बताई है कि हमें सोच समझ कर बड़े
ाने पर अपनी माली तरक्की की एक तजवीज तैयार
रनी चाहिये. हमने अपने काम के राजकाजी, तालीमी,
माजी, माली, मज़हबी और इखलाकी पहलुओं की तरफ़
ान दिलाया है. इन सब बातों का निचोड़ यह है कि हम
क नये हिन्दुस्तान को जन्म देना चाहते हैं, ऐसे हिन्दुस्तान
जिसके सारे रहने वालों का झुकाव जीवन की तरफ़
क सा हो, सब समाज और नीति के एक से आदर्श
ते हों, और सब सब धर्मों की बुनियादी एकता में यक़ीन
रते हों.

काम कठिन है और इसके बहुत से रुख हैं. लेकिन
सल में काम एक ही है. इसे पूरा करने के लिये चाहिये
वह सब लोग जो हिन्दुस्तान के कुल फ़िरकों और
गरोहों के मेल में विश्वास रखते हैं, जो एक मिली जुली
हिन्दुस्तानी कलचर के हामी हैं, मिलें. हम लोगों ने इस
मकसद को हासिल करने के लिये यह तजवीज़ की है कि
क सोसाइटी कायम करें. हमारा इरादा है कि नीचे लिखे

غریبی کو مٹانا ہے تو ہمیں ملکر کل ہند کے ملکی
سدھار کی ایسی ترکیبیں سوچنی پڑینگی جن پر ہماری
پوری سمجھ خرچ ہو. جن مصیبتوں میں ہمارے دیس
بھائی آج ڈوبے ہوئے ہیں وہ سب پر ایک سا اثر ڈالتی
ہیں. ہندو مسلمان اور سب برابر ہی اُن کے شکار
ہیں. اسلئے اُن کے دور کرنے کی تدبیریں بھی سبکو
ملکر ہی نکالنی پڑینگی.

ہمارے اِس کام کا سب سے ضروری پہلو اخلاقی یا
نیتک ہے. زندگی کی ہار نے ہمارے دلوں کو چھوٹا کر دیا
ہے. ہمیں اس تنگی کو دور کرنا ہے. ہمیں اپنے دلوں کو
اتنا بڑا، اپنی آتماؤں کو اتنا اونچا بنانا ہے کہ ہر
ہندستانی کی بھلائی میں ہم اپنی بھلائی دیکھیں.
ہمیں اپنے اندر کی اُن دیواروں کو گرانا ہے جنہوں نے ہمیں
چھوٹے چھوٹے گھروندوں میں بند کر دیا ہے. اُس پیار
اور محبت کی جڑ کو سینچنا ہے جسکی بیل پھیل کر
ہمارے سب دیس بھائیوں کو اٹوٹ رشتوں میں
باندھ دے.

اوپر ہم نے آدرشوں کی بات کہی ہے اور جیون کے
بنیادی اصولوں اور سچے مقصدوں کی چرچا کی ہے. ہم
نے بتایا ہے کہ ہر آدمی کا دل خدا اور خودی، پرمارتھ اور
سوارتھ، سب کے بھلے اور اپنے سکھ کی خواہش کی نرنتر
لڑائی کا میدان ہے. ہم کہہ چکے ہیں کہ آدمی کی اپنی
اپنی ضرورتیں اور سماج کی ضرورتیں جدا جدا ہیں. ہم نے
کہا ہے کہ ہندستان کے الگ الگ فرقوں اور برادریوں کی
زندگی ملا کر طرح طرح کے موتیوں کی ایک لڑی کے سمان
ہے اور ہمارے سب دھرموں کے اندر ایک سچائی کی
روشنی ہے. ہم نے اس بات کی ضرورت بتائی ہے کہ
ہمیں سوچ سمجھکر بڑے پیمانے پر اپنی مالی ترقی کی
ایک تجویز تیار کرنی چاہئے. ہم نے اپنے کام کے راج کاجی،
تعلیمی، سماجی، مالی، مذہبی اور اخلاقی پہلوؤں کی
طرف دھیان دلایا ہے. ان سب باتوں کا نچوڑ یہ ہے کہ ہم
ایک نئے ہندستان کو جنم دینا چاہتے ہیں، ایسے
ہندستان کو جسکے سارے رہنے والوں کا جھکاؤ جیون کی
طرف ایک سا ہو سب سماج اور نیتی کے ایک سے آدرش
رکھتے ہوں اور سب سب دھرموں کی بنیادی ایکتا میں
یقین کرتے ہوں.

کام کٹھن ہے اور اس کے بہت سے رخ ہیں. لیکن اصل
میں کام ایک ہی ہے. اسے پورا کرنے کے لئے چاہئے کہ وہ
سب لوگ جو ہندستان کے کل فرقوں اور گروہوں کے میل
میں وشواس رکھتے ہیں، جو ایک ملی جلی
ہندستانی کلچر کے حامی ہیں، ملیں. ہم لوگوں نے
اس مقصد کو حاصل کرنے کے لئے یہ تجویز کی ہے کہ
ایک سوسائٹی قائم کریں. ہمارا ارادہ ہے کہ نیچے لکھے

कोई राह दिखाने वाला नहीं मिलता. इसीलिये ज़रूरी है कि एक ऐसी जमात बनाई जाय जो हट, [illegible] और [illegible] की रुकावटों को नये समाज के रास्ते से दूर कर दे और उन सब ताक़तों को बढ़ाये जो समाज के बन्धनों को मज़बूत करती और राज के इन्तज़ाम को संवारती है.

हमें ऐसे लोगों को साथ लेना है जिन्हें अपने देस के आने वाले बड़प्पन का पूरा यक़ीन है, जो देस के सवालों पर तंगनज़री के साथ जुदा जुदा फ़िरक़ों की भलाई के ख़याल से विचार नहीं करते, जो सम्प्रदायों और फ़िरक़ों के झगड़ों से घबरा कर धीरज नहीं खो बैठते, जो कोशिश करते हैं कि हर तरह से देस की रंग बिरंगी रस्मों और रिवाजों का एक दूसरे से मेल बैठा कर इकरंगी सभ्यता क़ायम करें. ऐसे भाइयों और बहनों को एक जत्थे में लाना है ताकि वह एक ऐसी सभा बनायें जिससे मेल और मुहब्बत का संदेश सारे देस में फैल सके.

इस सभा का काम जितना ज़िम्मेवारी का है उतना ही कठिन भी है. इसका सम्बन्ध हमारी ज़िन्दगी के सब पहलुओं से है. इसके दो पहलू हैं. एक तरफ़ तो आपस के उन शकों को दूर करना है जो हमें एक दूसरे से अलग करते हैं. दूसरी तरफ़ हमें देस के सब लोगों को लेकर एक मिली जुली ज़िन्दगी का नया ताना बाना तैयार करना है. यह काम राजकाज से भी सम्बन्ध रखता है पर इसका दायरा राजकाज की हदों से बहुत बाहर तक फैला हुआ है. हमें वह जानकारी, वह इल्म, वह समझ पैदा करना है जिसके ज़रिये हम अपने को और एक दूसरे को पहचान सकें. ऐसे आदर्शों को क़ायम करना है जो सब को अपनी तरफ़ खींचें, सब के दिलों पर एक सा असर डालें, सब को मिलाकर एक राह पर चलने का न्यौता दें. नासमझी को दूर करना है, जहालत से लड़ना है, बीते ज़माने की उलझनों को सुलझाना है, एक दूसरे के अदबी कारनामों, एक दूसरे की मज़हबी ख़ूबियों, एक दूसरे के चलन की ऊँचाइयों को एक दूसरे पर ज़ाहिर करना है. सच्चा प्रेम तभी पैदा होगा जब हमारे दिलों में एक दूसरे की इज़्ज़त होगी और एक दूसरे की इज़्ज़त के लिये एक दूसरे को ठीक ठीक जानने और समझने की ज़रूरत है.

यह काम मेल मिलाप का है. लोगों के जीवन में, आए दिन के कारबार में सैकड़ों मौक़ों पर एक दूसरे का संग साथ होता है. हम मदरसों पाठशालाओं में, कारख़ानों दूकानों में, हाट बाज़ारों में, खेल कूद तमाशों में, मेलों त्योहारों में एक दूसरे से मिलते हैं. संगत हमें एक दूसरे के पास लाती है, हमें प्रेम और दोस्ती की डोरियों से बांधती है. पेशों और धन्धों, दस्तकारी और कारीगरी, व्योपार और लेनदेन में भी हमारे सभी देसवासियों को एक दूसरे से वास्ता पड़ता है. अगर हमें अपने देस की

[illegible] نہیں ملتا۔ اسی لئے ضروری [illegible] ہے کہ ایک ایسی جماعت بنائی جائے جو ہٹ [illegible] علمی اور اس کی رکاوٹوں کو نئے سماج کے راستے سے دور کر دے اور اُن سب طاقتوں کو بڑھائے جو سماج کے بندھنوں کو مضبوط کرتی اور راج کے انتظام کو سنوارتی ہے۔

ہمیں ایسے لوگوں کو ساتھ لینا ہے جنہیں اپنے دیس کے آنے والے بڑپن کا پورا یقین ہے، جو دیس کے سوالوں پر تنگ نظری کے ساتھ جدا جدا فرقوں کی بھلائی کے خیال سے وچار نہیں کرتے، جو سمپردایوں اور فرقوں کے جھگڑوں سے گھبرا کر دھیرج نہیں کھو بیٹھتے، جو کوشش کرتے ہیں کہ ہر طرح سے دیس کی رنگ برنگی رسموں اور رواجوں کا ایک دوسرے سے میل بٹھا کر یکرنگی سبھیتا قائم کریں۔ ایسے بھائیوں اور بہنوں کو ایک جتھے میں لانا ہے تاکہ وہ ایک ایسی سبھا بناویں جس سے میل اور محبت کا سندیش سارے دیس میں پھیل سکے۔

اس سبھا کا کام جتنا ذمہ داری کا ہے اتنا ہی کٹھن بھی ہے۔ اس کا سمبندھ ہماری زندگی کے سب پہلوؤں سے ہے۔ اس کے دو پہلو ہیں۔ ایک طرف تو آپس کے اُن شکوں کو دور کرنا ہے جو ہمیں ایک دوسرے سے الگ کرتے ہیں۔ دوسری طرف ہمیں دیس کے سب لوگوں کو لیکر ایک ملی جلی زندگی کا نیا تانا بانا تیار کرنا ہے۔ یہ کام راج کاج سے بھی سمبندھ رکھتا ہے پر اس کا دائرہ راج کاج کی حدوں سے بہت باہر تک پھیلا ہوا ہے۔ ہمیں وہ جانکاری، وہ علم، وہ سمجھ پیدا کرنا ہے جسکے ذریعے ہم اپنے کو اور ایک دوسرے کو پہچان سکیں۔ ایسے آدرشوں کو قائم کرنا ہے جو سب کو اپنی طرف کھینچیں، سب کے دلوں پر ایک سا اثر ڈالیں، سب کو ملا کر ایک راہ پر چلنے کا نیوتا دیں۔ ناسمجھی کو دور کرنا ہے، جہالت سے لڑنا ہے، بیتے زمانے کی اُلجھنوں کو سلجھانا ہے، ایک دوسرے کے ادبی کارناموں، ایک دوسرے کی مذہبی خوبیوں، ایک دوسرے کی چلن کی اونچائیوں کو ایک دوسرے پر ظاہر کرنا ہے۔ سچا پریم تبھی پیدا ہوگا جب ہمارے دلوں میں ایک دوسرے کی عزت ہوگی اور ایک دوسرے کی عزت کیلئے ایک دوسرے کو ٹھیک ٹھیک جاننے اور سمجھنے کی ضرورت ہے۔

یہ کام میل ملاپ کا ہے۔ لوگوں کے جیون میں، آئے دن کے کاروبار میں، سیکڑوں موقعوں پر، ایک دوسرے کا سنگ ساتھ ہوتا ہے۔ ہم مدرسوں پاٹھشالاؤں میں، کارخانوں دوکانوں میں، ہاٹ بازاروں میں، کھیل کود تماشوں میں، میلوں تیوہاروں میں ایک دوسرے سے ملتے ہیں۔ سنگت ہمیں ایک دوسرے کے پاس لاتی ہے، ہمیں پریم اور دوستی کی ڈوریوں سے باندھتی ہے۔ پیشوں اور دھندوں، دستکاری اور کاریگری اور بیوپار اور لین دین میں بھی ہمارے سبھی دیس واسیوں کو ایک دوسرے سے واسطہ پڑتا ہے۔ اگر ہمیں اپنے دیس کی

[illegible] के लिये [illegible] की ज़रूरत है, अपने दिलों [illegible] करनी होंगी, अपने दिमागों को [illegible] से खोलना होगा.

पिछले ज़माने में हमने एक मज़बूत और ख़ूबसूरत सभ्यता की शानदार इमारत खड़ी कर ली थी. यह इस वजह से कि हिन्दू धर्म ने अपनी आत्मा के भीतरी कुंज में इसलाम को जगह दी और अपने प्रेम के दायरे को बढ़ाकर उसमें इसलामी विचारों को घेर लिया, जिससे उसकी अपनी तंगनज़री कम हुई. ऐसे ही मुसलमानों ने भी हिन्दू मज़हब और फ़लसफ़े के ऊँचे उसूलों को अपनाया जिसका नतीजा यह हुआ कि उनका अपना कट्टरपन नरम पड़ा. दोनों ने मिलकर एक ऐसी सभ्यता को पैदा किया जिसने अपनी आनबान और बलबूते से दुनिया को अचरज में डाल दिया. आज हमें अतीत की उस रीत को जगाना है. अपने पुराने तजुरबों को नई हालतों में फिर से दुहराना है. अपनी रवादारी और प्रेम की भूली हुई रसमों को एक बार फिर से जगाना है. हिन्दू और मुसलमानों की आत्मा के आइने से आपाधापी के मैल को साफ़ करना है, ताकि वह अपने हक़ीक़ी, असली रूप को पहचाने और अपने में दूसरे को और दूसरे में अपने को देख अपनी एकता को समझें और उसका रस लें.

बड़ी मुद्दत से हमारे मुल्क के लोग कष्ट सहते, दुख उठाते, उस दिन की बाट जोह रहे हैं जब एक नए हिन्दुस्तान का जन्म होगा. वह दिन तो आयेगा ही इसमें कोई शक नहीं. पर हो सकता है कि हमारी निगाह की कमज़ोरी या अपने ऊपर भरोसे की कमी उस दिन के आने में देर लगा दे. याद रखना चाहिये कि होनहार होकर रहेगी. उसका टालना नामुमकिन है. आएं वह सब लोग जिनकी आंखें आजकल के आपसी झगड़ों से धुंधला नहीं गई हैं. आएं और मिलें, पगडंडियों को छोड़ एक सीधे रास्ते पर चलें, और नई आज़ादी के सूरज को अपनी पूरी आबताब के साथ उगता देखें. हमें यक़ीन है कि उस सूरज की रोशनी में शक और शुबह के बादल छट जायेंगे, दुविधा और विरोध का कुहरा दूर हो जायगा और मेल और मुहब्बत का साफ़ आसमान हमारी आंखों की ज्योत को जगा देगा.

इस मक़सद को हासिल करने के लिये हमें एक संगठन की ज़रूरत है. हमारे देश में बहुत से ऐसे लोग हैं जो देश का भला चाहते हैं, जो समझते हैं कि सब फ़िरक़ों और [illegible] के मेल और आपसी समझौते में ही हमारा भला और हमारा निस्तार है. ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो [illegible] और निरास मालूम होते हैं कि उन्हें

[illegible] کی طرح [illegible] آتما کو ہمارے [illegible] کی ضرورت ہے [illegible] کی جنم کرنی ہوگی، اپنے دماغوں کو تعصب سے [illegible] کھلنا ہوگا.

پچھلے زمانے میں ہم نے ایک مضبوط اور خوبصورت سبھیتا کی شاندار عمارت کھڑی کر لی تھی. یہ اس وجہ سے کہ ہندو دھرم نے اپنی آتما کے بھیتری کنج میں اسلام کو جگہ دی اور اپنے پریم کے دائرے کو بڑھا کر اس میں اسلامی وچاروں کو گھیر لیا، جس سے اسکی اپنی تنگ نظری کم ہوئی. ایسے ہی مسلمانوں نے بھی ہندو مذہب اور فلسفے کے اونچے اصولوں کو اپنایا جسکا نتیجہ یہ ہوا کہ ان کا اپنا کٹرپن نرم پڑا. دونوں نے مل کر ایک ایسی سبھیتا کو پیدا کیا جس نے اپنی آن بان اور بل بوتے سے دنیا کو اچرج میں ڈال دیا. آج ہمیں اتیت کی اس ریت کو جگانا ہے. اپنے پرانے تجربوں کو نئی حالتوں میں پھر سے دہرانا ہے. اپنی رواداری اور پریم کی بھولی ہوئی رسموں کو ایک بار پھر سے جگانا ہے. ہندو اور مسلمانوں کی آتما کے آئینے سے آپا دھاپی کے میل کو صاف کرنا ہے، تاکہ وہ اپنے حقیقی، اصلی روپ پہچانیں اور اپنے میں دوسرے کو اور دوسرے میں اپنے کو دیکھ اپنی ایکتا کو سمجھیں اور اسکا رس لیں.

بڑی مدت سے ہمارے ملک کے لوگ کشٹ سہتے، دکھ اٹھاتے اس دن کی باٹ جوہ رہے ہیں جب ایک نئے ہندوستان کا جنم ہوگا. وہ دن تو آئے گا ہی اسمیں کوئی شک نہیں. پر ہو سکتا ہے کہ ہماری نگاہ کی کمزوری یا اپنے اوپر بھروسے کی کمی اس دن کے آنے میں دیر لگا دے. یاد رکھنا چاہئے کہ ہونہار ہو کر رہے گی. اس کا ٹالنا ناممکن ہے. آئیں وہ سب لوگ جن کی آنکھیں آجکل کے آپسی جھگڑوں سے دھندلا نہیں گئی ہیں. آئیں اور ملیں، پگڈنڈیوں کو چھوڑ ایک سیدھے راستے پر چلیں اور نئی آزادی کے سورج کو اپنی پوری آب و تاب کے ساتھ اگتا دیکھیں. ہمیں یقین ہے کہ اس سورج کی روشنی میں شک اور شبہہ کے بادل چھٹ جائیں گے. دبدھا اور ورودھ کا کہرا دور ہو جائیگا اور میل اور محبت کا صاف آسمان ہماری آنکھوں کی جوت کو جگا دیگا.

اس مقصد کو حاصل کرنے کے لئے ہمیں ایک سنگٹھن کی ضرورت ہے. ہمارے دیش میں بہت سے ایسے لوگ ہیں جو دیش کا بھلا چاہتے ہیں، جو سمجھتے ہیں کہ سب فرقوں اور [illegible] کے میل اور آپسی سمجھوتے میں ہمارا بھلا اور نستار ہے. ایسے لوگوں کی کمی نہیں [illegible] اسلئے [illegible] اور [illegible] معلوم ہوتے ہیں کہ انہیں

[illegible] बदलने से हमारे देश में नई ताक़तें पैदा हो गई हैं. हमारी सारी ज़िन्दगी एक बवंडर में [illegible] है. [illegible] की इस नई बुनियाद पर समाज और राज के नए नए ख़याल और नए नए आदर्श हमारे सामने आ रहे हैं. हमारे दिमाग़ों में ख़यालों की नई नई लहरें गूंज रही हैं. हमारी निगाहों में आदमी की क़दर बढ़ रही है. बराबरी और इनसाफ़ के बरताव का चर्चा ज़ोर पकड़ रहा है. हमारे दिलों में एक नये समाज की तसवीर बनती जा रही है, हम चाहते हैं कि हम अपने ही बनाए हुये क़ानूनों को मानें और ऐसी हकूमत के हुक्मों पर अमल करें जिसमें ग़ैरों का दख़ल न हो. समाज की इस आज़ादी की ज़ाहिरी निशानी राज का बल है. इसी लिये देश में आवाज़ उठ रही है कि राज यानी हकूमत को हमारे हाथों सौंप दिया जाए.

यह आवाज़ ठीक भी है. लेकिन इस खेंचातानी में हमें यह नहीं भूल जाना चाहिये कि हकूमत ही ज़िन्दगी का मक़सद या ध्येय नहीं है. हकूमत तो एक हथियार है. इस हथियार से अगर आदमी और समाज की ज़िन्दगी का असली मंशा पूरा होता है तो हथियार अच्छा है, सराहने लायक़ है, और अगर इससे इनसानी जीवन के सच्चे मतलब के हासिल करने में रुकावट पड़ती है तो हथियार बुरा है, नफ़रत के क़ाबिल है.

दुनिया की तारीख़, ख़ुद अपने समाज का तजुरबा और अपनी समझ, सब हमें यही बताते हैं कि हकूमत की ताक़त का दारमदार लोगों के मेल मिलाप पर, समाज के संगठन पर, जीवन के बुनियादी असूलों और असली नफ़े नुक़सान की एकता पर है. जहाँ लोगों के मक़सद एक होते हैं और उनके मन मिल जाते हैं, वहाँ उनके दिलों में एक सी उमंगों की लहरें उठती हैं, उनकी भुजाओं की रगें एक साथ फड़कती हैं, उनमें हिम्मत, हौसला और बल बढ़ता है. इसके ख़िलाफ़ जहाँ बुनियादी असूलों पर लोगों की रायें जुदा जुदा होती हैं, जहाँ उनके विचारों में फ़रक़ और जीवन के मक़सदों में विरोध होता है, वहाँ सारे समाज के बदन में लहू रुक रुक कर चलता है और समाज के रग पट्ठे ढीले पड़ जाते हैं, जिसकी वजह से लोगों के चालचलन और इख़लाक़ सब में कमज़ोरी आ जाती है.

हकूमत समाज की वह अमानत है जो आपस के समझौते पर ही क़ायम रह सकती है. ज्योंही इस समझौते में विघन पड़ा, एक दूसरे का भरोसा उठा, त्योंही राज की साख टूटी और ताक़त का नाश होने लगा. हिन्दुस्तान को बल की ज़रूरत है, पर हमें यह जान लेना चाहिये कि यह बल क़ौमी आत्मा की एकता में ही वास करता है. अगर सब हिन्दुस्तानी एक बार अपनी आत्मा की दुविधा को मिटा दें, अपने आप को पहचान लें तो हकूमत की ताक़त

[illegible] کی اس نئی بنیاد پر سماج اور راج کے نئے نئے خیال اور نئے آدرش ہمارے سامنے آرہے ہیں. ہمارے دماغوں میں خیالوں کی نئی نئی لہریں گونج رہی ہیں. ہماری نگاہوں میں آدمی کی قدر بڑھ رہی ہے. برابری اور انصاف کے برتاؤ کا چرچا زور پکڑ رہا ہے. ہمارے ذہن میں ایک نئے سماج کی تصویر بنتی جارہی ہے. ہم چاہتے ہیں کہ ہم اپنے ہی بنائے ہوئے قانونوں کو مانیں اور ایسی حکومت کے حکموں پر عمل کریں جسمیں غیروں کا دخل نہ ہو. سماج کی اس آزادی کی ظاہری نشانی راج کا بل ہے. اسی لئے دیش میں آواز اٹھ رہی ہے کہ راج یعنی حکومت کو ہمارے ہاتھوں میں سونپ دیا جائے.

یہ آواز ٹھیک بھی ہے. لیکن اس کھینچا تانی میں ہمیں یہ نہیں بھول جانا چاہئے کہ حکومت ہی زندگی کا مقصد یا دھییہ نہیں ہے. حکومت تو ایک ہتھیار ہے. اس ہتھیار سے اگر آدمی اور سماج کی زندگی کا اصلی منشا پورا ہوتا ہے تو ہتھیار اچھا ہے، سراہنے لائق ہے، اور اگر اس سے انسانی جیون کے سچے مطلب کے حاصل کرنے میں رکاوٹ پڑتی ہے تو ہتھیار برا ہے، نفرت کے قابل ہے.

دنیا کی تاریخ، خود اپنے سماج کا تجربہ اور اپنی سمجھ، سب ہمیں یہی بتاتے ہیں کہ حکومت کی طاقت کا دار مدار لوگوں کے میل ملاپ پر، سماج کے سنگٹھن پر، جیون کے بنیادی اصولوں اور اصلی نفع نقصان کی ایکتا پر ہے. جہاں لوگوں کے مقصد ایک ہوتے ہیں اور انکے من مل جاتے ہیں، وہاں انکے دلوں میں ایک سی امنگوں کی لہریں اٹھتی ہیں، ان کی بھجاؤں کی رگیں ایک ساتھ پھڑکتی ہیں، ان میں ہمت، حوصلہ اور بل بڑھتا ہے. اسکے خلاف جہاں بنیادی اصولوں پر لوگوں کی رائیں جدا جدا ہوتی ہیں، جہاں انکے وچاروں میں فرق اور جیون کے مقصدوں میں ورودھ ہوتا ہے، وہاں سارے سماج کے بدن میں لہو رک رک کر چلتا ہے اور سماج کے رگ پٹھے ڈھیلے پڑ جاتے ہیں، جس کی وجہ سے لوگوں کے چال چلن اور اخلاق سب میں کمزوری آجاتی ہے.

حکومت سماج کی وہ امانت ہے جو آپس کے سمجھوتے پر ہی قائم رہ سکتی ہے. جیوں ہی اس سمجھوتے میں وگھن پڑا، ایک دوسرے کا بھروسہ اٹھا، تیوں ہی راج کی ساکھ ٹوٹی اور طاقت کا ناش ہونے لگا. ہندستان کو بل کی ضرورت ہے، پر ہمیں یہ جان لینا چاہئے کہ یہ بل قومی آتما کی ایکتا میں ہی باس کرتا ہے. اگر سب ہندستانی ایک بار اپنی آتما کی دبدھا کو مٹا دیں، [illegible] حکومت کی طاقت

[illegible] के लिये हमारी [illegible] ज़िन्दगी एक [illegible] थी. हमारी जनता की इमारत के सवारों, कई सदियों में [illegible] था ई थी. जातों और फ़िर्कों, धर्मों और वर्गों के अलग अलग भागों से मिलकर एक सुरीला संगीत निकलता था जो सब के दिलों को गुदगुदाने वाला था. हिन्दू और मुसलमान एक ही ज़बान बोलते थे. हर सूबे की अपनी एक अलग बोली थी जिसे दोनों एक सा इस्तेमाल करते थे. अदब की भाषाएँ दोनों की एक थीं जिनमें वह कविता शायरी करते और अपने दिल की उमंगों को ज़ाहिर करते थे. एक ही तरह के नीति के उसूल और फ़लसफ़े, दर्शन के ऊँचे ऊँचे सिद्धान्त दोनों के दिमाग़ों को ख़ुराक पहुँचाते थे. दोनों की समाजों के ढंग और राज के संगठन इतने मिलते थे कि एक दूसरे की नक़ल मालूम होते थे.

इसके बाद जब हमारी तारीख़ का मंझला ज़माना आख़िरी साँसें ले रहा था, पच्छिमी सभ्यता हमारी सभ्यता से टकराई. इस मुठभेड़ का नतीजा यह हुआ कि हमारे देस में नए विचारों, नई शक्तियों ने घर कर लिया. हमारे पुराने राज टूटे, हमारे ब्योपार और धन्धों का पुराना ढांचा चकनाचूर हो गया, लेकिन फिर कुछ दिनों बाद ही टूटे खंडरों की बिखरी हुई ईंटों में एक नई इमारत के आसार दिखाई देने लगे. मुर्दा बदन के अंगों में ज़िन्दगी के निशान झलकने लगे. नए जीवन और नए ख़यालों के असर से एक नई क़ौम उभरती दिखाई दी. समाज के एक नए पुतले की शक्ल तैयार होने लगी. इस पुतले में नई जान और नई ताक़त है, इसमें एक नई एकता का अनुपम भाव है. अब अगर इस एकता या उसके रंग रूप को फ़िर्क़ों के झगड़े, सूबों की लड़ाइयाँ, धर्मों के बखेड़े बिगाड़ना चाहें तो नुक़सान उन्हीं का है. ऐसा करना ज़माने के बहाव के ख़िलाफ़ समाज की नाव को उलटा चलाना है. क़ुदरत ने हमारे देस को पहाड़ों और समुन्दरों के एक चौखटे में बाँधा है. इनही के ज़रिये क़ुदरत ने बाहर से हमला करने वालों के मुक़ाबले के लिये आसानियाँ पैदा की हैं. इस देस की धरती में उसने इधर उधर तरह तरह के धन दौलत को छितरा रखा है. फ़ौजी ज़रूरतों की निगाह से ही नहीं खेत और खान की उपज के ख़याल से भी हमारा देस एक है. हर इलाके, पर दूसरे इलाके का ऐसा भरोसा और सहारा है कि सब मिल कर ही आराम की ज़िन्दगी बसर कर सकते हैं. हम चाहें तो अपनी इस क़ुदरती एकता को बनाए रखें और बढ़ाएँ, चाहें तोड़ें और मिट्टी में मिला दें. हमारे अख़्तियार में है कि चाहे क़ुदरत के साथ मिलकर अपने समाजी जीवन को सुखी बनाएँ और चाहें क़ुदरत की इन देनों को ठुकरा कर मुसीबत, भूख और मौत का शिकार बनें.

[illegible] ہماری [illegible] ایک بھی [illegible] ہماری سبھیتا کی عمارت کے [illegible] صدیوں میں بھی سنواری نکھاری گئی تھی. جاتیوں اور فرقوں، مذہبوں اور دھرموں کے الگ الگ باجوں سے مل کر ایک سریلا سنگیت نکلتا تھا جو سب کے دلوں کو گدگدانے والا تھا. ہندو اور مسلمان ایک ہی زبان بولتے تھے. ہر صوبے کی اپنی ایک الگ بولی تھی جسے دونوں ایک سا استعمال کرتے تھے. ادب کی بھاشائیں دونوں کی ایک تھیں، جن میں وہ کویتا شاعری کرتے اور اپنے دل کی امنگوں کو ظاہر کرتے تھے. ایک ہی طرح کی نیتی کے اصول اور فلسفے، درشن کے اونچے اونچے سدھانت دونوں کے دماغوں کو خوراک پہنچاتے تھے. دونوں کی سماجوں کے ڈھنگ اور راج کے سنگٹھن اتنے ملتے تھے کہ ایک دوسرے کی نقل معلوم ہوتے تھے.

اسکے بعد جب ہماری تاریخ کا منجھلا زمانہ آخری سانسیں لے رہا تھا، پچھمی سبھیتا ہماری سبھیتا سے ٹکرائی. اس مٹ بھیڑ کا نتیجہ یہ ہوا کہ ہمارے دیس میں نئے وچاروں، نئی شکتیوں نے گھر کر لیا. ہمارے پرانے راج ٹوٹے، ہمارے بیوپار اور دھندوں کا پرانا ڈھانچا چکنا چور ہوگیا. لیکن پھر کچھ دنوں بعد ہی ٹوٹے کھنڈروں کی بکھری ہوئی اینٹوں میں ایک نئی عمارت کے آثار دکھائی دینے لگے. مردہ بدن کے انگوں میں زندگی کے نشان جھلکنے لگے. نئے جیون اور نئے خیالوں کے اثر سے ایک نئی قوم ابھرتی دکھائی دی. سماج کے ایک نئے پتلے کی شکل تیار ہونے لگی. اس پتلے میں نئی جان اور نئی طاقت ہے، اس میں ایک نئی ایکتا کا انوپم بھاؤ ہے. اب اگر اس ایکتا یا اسکے رنگ روپ کو فرقوں کے جھگڑے، صوبوں کی لڑائیاں، دھرموں کے بکھیڑے بگاڑنا چاہیں تو نقصان انہیں کا ہے. ایسا کرنا زمانے کے بہاؤ کے خلاف سماج کی ناؤ کو الٹا چلانا ہے. قدرت نے ہمارے دیس کو پہاڑوں اور سمندروں کے ایک چوکھٹے میں باندھا ہے. ان ہی کے ذریعے قدرت نے باہر سے حملہ کرنے والوں کے مقابلے کیلئے آسانیاں پیدا کی ہیں. اس دیس کی دھرتی میں اس نے اِدھر سے اُدھر تک طرح طرح کے دھن دولت کو چھترا رکھا ہے. فوجی ضرورتوں کی نگاہ سے ہی نہیں کھیت اور کھان کی اپج کے خیال سے بھی ہمارا دیس ایک ہے. ہر علاقے پر دوسرے علاقے کا ایسا بھروسہ اور سہارا ہے کہ سب ملکر ہی آرام کی زندگی بسر کر سکتے ہیں. ہم چاہیں تو اپنی اس قدرتی ایکتا کو بنائے رکھیں اور بڑھائیں، چاہے توڑیں اور مٹی میں ملا دیں. ہمارے اختیار میں ہے کہ چاہے قدرت کے ساتھ ملکر اپنے سماجی جیون کو سکھی بنائیں اور چاہے قدرت کی ان دینوں کو ٹھکرا کر مصیبت، بھوک اور موت کا شکار بنیں.

में दिखाई देती है. शकों और हूणों के हमलों की आंधी ने इस सभ्यता की नदी को गंदला किया. लेकिन उस तूफ़ान की मौजों के थपेड़े धीमे पड़ते ही गुप्त, सातवाहन और राजपूत राजों ने नदी के बहाव को ऐसे रजबहों में बांटा कि जिनसे मुल्क भर में जीवन की खेती सेराब हुई और समाजी खलियानों को अटाटूट भर देने वाली फ़सल पैदा हुई. सारनाथ और सांची के टोप, बाघ और अजंता की तसवीरें, खजुराहो और भुवनेश्वर के मन्दिर, कालिदास और भवभूति के नाटक उस सुनहले ज़माने की जगमगाती यादगारें हैं.

ज़माने ने फिर पलटा खाया, और नई नई नसलों ने हमारे देस में डेरा डाला. अरब, तुर्क और मंगोल हिन्दुस्तान की सरहदों में घुसे. उनके साथ समाज का एक नया संगठन आया, धर्म के नए असूल आए जिनका ढांचा मज़बूत और जिनकी तरकीब पक्की थी. हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता ने इन आनेवालों से कड़ी टक्कर ली. लेकिन राजकाज के मैदान में अभी खींचातानी बन्द न हुई थी कि फिर एक नई तहज़ीब के निर्मान का काम शुरू हो गया.

इसलाम और हिन्दू धर्म, जिन के बीच आसमान ज़मीन का अंतर जान पड़ता था, एक दूसरे के पास आये. एक ने दूसरे की अथाह गहराई में हिलोरें उठाइं. इनके मेल से भक्ति और तसव्वुफ़ का दरिया उमंड पड़ा. प्रेम के मतवालों और इश्क़ के दीवानों ने लोगों के दिलों को मोह लिया! इस नए पंथ के चलाने वाले साधू, संतों और दरवेशों ने समाज और सभ्यता पर गहरा असर डाला. कबीर, नानक, चैतन्य, तुकाराम, मुईनुद्दीन चिश्ती, बाबा फ़रीद, निज़ामुद्दीन औलिया और इन सरीखे सैकड़ों सूफ़ी सन्तों ने समाज के जीवन में हलचल मचा दी. बड़े बड़े सम्राटों और शहंशाहों को इनके नये आदर्शों के सामने सिर झुकाना पड़ा. जिस लहर ने हिन्दुस्तान के जीवन समुन्दर को धुर नीचे तक मथ डाला उसका असर सभ्यता के हर अंग पर पड़ना लाज़मी था. इसीलिये मंझले ज़माने की कलचर के हर पहलू पर इस मेल की छाप दिखाई देती है. शायरी और संगीत में, इमारतों और तसवीरों, में रहने सहने के तरीक़ों और चालचलन में, खेल कूद और तमाशों में, मेलों और त्योहारों में, जातों और फ़िर्क़ों में, हर तरफ़, हर जगह नई ज़िन्दगी की चमक दमक और गरमा गरमी महसूस होती है. नए जीवन की उमंगों में नई मौजों का उभार नज़र आता है.

एक बार फिर सारा हिन्दुस्तानी समाज एकता के धागों में बँधा. समाज के जीवन की बुनियादें काम धंदों और व्योपार पर क़ायम होती हैं. इन्हीं पर समाज के निबाह का सहारा है. इनही बुनियादों पर कला और फ़न, विद्या और इल्म, ज्ञान और मारफ़त का महल खड़ा होता

... کے ... اور ... کے
... نے اس سبھیتا کی ندی کو
... لیکن اس طوفان کی موجوں کے تھپیڑے
... ہی گپت، سات واہن اور راجپوت راجوں نے
... بانٹ کر ایسے رج بہوں میں بانٹا کہ جن سے ملک
... جیون کی کھیتی سیراب ہوئی اور سماجی
... کو اٹاٹوٹ بھر دینے والی فصل پیدا ہوئی. سار
... سانچی کے ٹوپ، باگھ اور اجنتا کی تصویریں
اور بھوبنیشور کے مندر، کالی داس اور بھو بھوتی
اس سنہلے زمانے کی جگمگاتی یادگاریں ہیں.

... نے پھر پلٹا کھایا، اور نئی نئی نسلوں نے ہمارے
... میں ڈیرا ڈالا. عرب، ترک اور منگول ہندستان
... وں میں گھسے. انکے ساتھ سماج کا ایک نیا
... آیا، دھرم کے نئے اصول آئے جن کا ڈھانچا مضبوط
... ترکیب پکی تھی. ہندستان کی پرانی سبھیتا
... والوں سے کڑی ٹکر لی. لیکن راج کاج کے میدان
... کھینچا تانی بند نہ ہوئی تھی کہ پھر ایک
... یب کے نرمان کا کام شروع ہوگیا.

... اور ہندو دھرم، جنکے بیچ آسمان زمین کا انتر
... تھا، ایک دوسرے کے پاس آئے. ایک نے دوسرے
... گہرائی میں ہلوریں اٹھائیں. انکے میل سے
... تصوف کا دریا امنڈ پڑا. پریم کے متوالوں اور
... دیوانوں نے لوگوں کے دلوں کو موہ لیا! اس نئے پنتھ
... سادھو، سنتوں اور درویشوں نے سماج اور سبھیتا
... اثر ڈالا. کبیر، نانک، چیتن، تکارام، معین الدین
... بابا فرید، نظام الدین اولیا اور ان سریکھے سیکڑوں
... سنتوں نے سماج کے جیون میں ہل چل مچا دی.
... سمراٹوں اور شہنشاہوں کو انکے نئے آدرشوں کے
... جھکانا پڑا. جس لہر نے ہندستان کے جیون
... دھر نیچے تک متھ ڈالا اس کا اثر سبھیتا کے ہر
... پڑنا لازمی تھا. اسی لئے منجھلے زمانے کی کلچر
... پہلو پر اس میل کی چھاپ دکھائی دیتی ہے.
... سنگیت میں، عمارتوں اور تصویروں میں، رہنے
... طریقوں اور چال چلن میں، کھیل کود اور
... میلوں اور تیوہاروں میں، جاتوں اور فرقوں
... طرف، ہر جگہ نئی زندگی کی چمک دمک اور
... محسوس ہوتی ہے. نئے جیون کی امنگوں
... موجوں کا ابھار نظر آتا ہے.

... بار پھر سارا ہندستانی سماج ایکتا کے دھاگوں
... بندھا. سماج کے جیون کی بنیادیں کام دھندوں
... پر قائم ہوتی ہیں. انہیں پر سماج کے
... نباہ کا ... انہی بنیادوں پر کلا اور فن،
... ... کا محل کھڑا ہوتا

नया हिन्द

نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تارا چند' بھگوان دین' مظفر حسن' بشمبھر ناتھ' سندر لال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, महमूद अहमद 'हुनर'

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی' محمود احمد 'ہنر'

❀ ❀ ❀

इस नम्बर के ख़ास लेख

हमारी राय

اس نمبر کے خاص لیکھ

ہماری رائے

(10)

❀ ❀ ❀

नी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ستانی کلچر سوسائٹی' الہ آباد

जुलाई 1951 جولائی

क़ीमत दस आना

قیمت دس آنہ